सत्यजीत राय

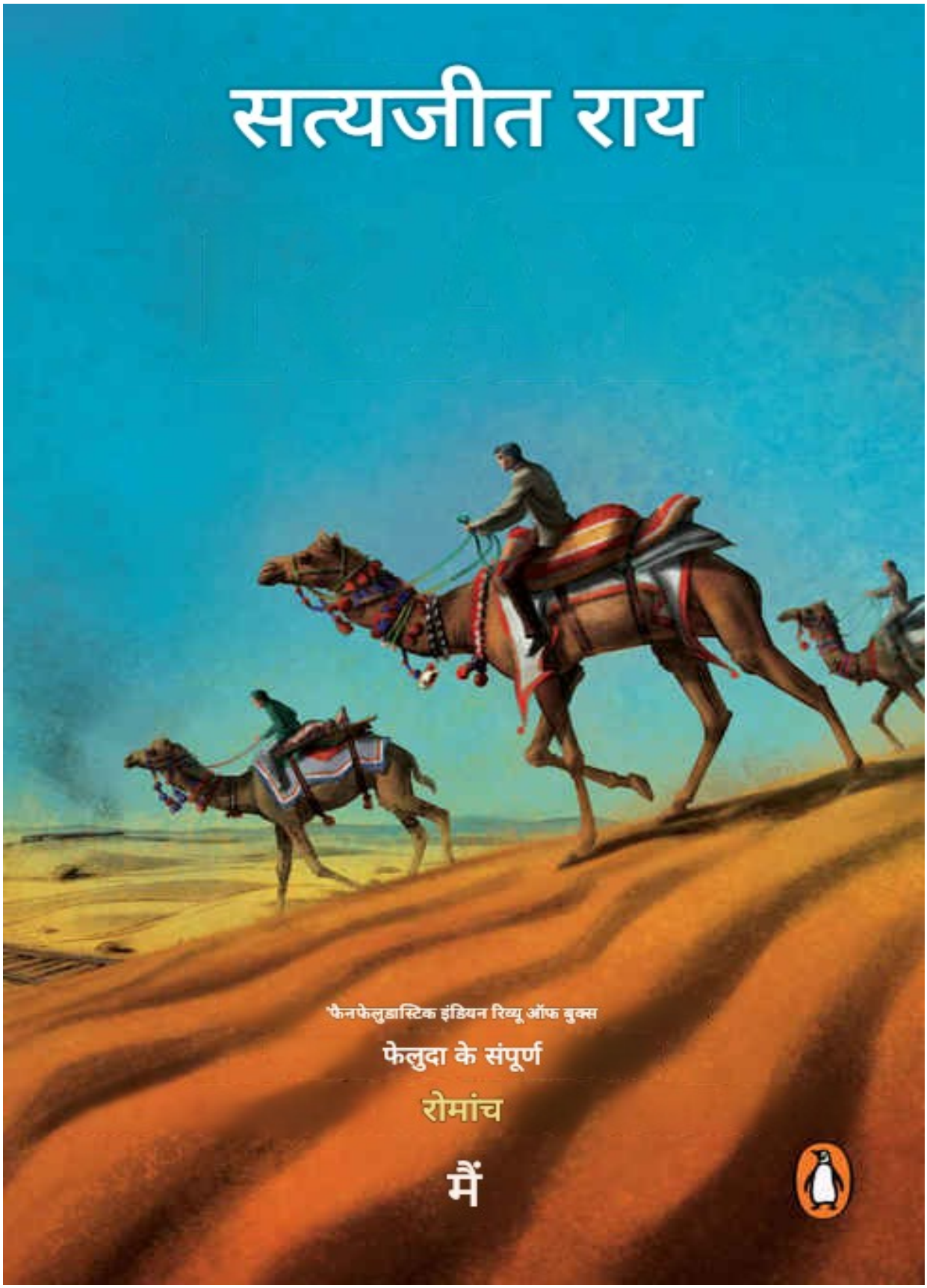

फैनफेलुडास्टिक इंडियन रिव्यू ऑफ बुक्स

फेलुदा के संपूर्ण

रोमांच

मैं

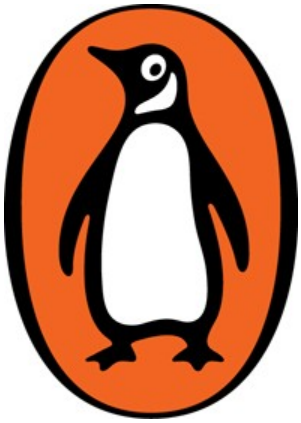

[redacted]

[redacted]

I

□□□□□□□□□□

□□□□ □□ □□□□ □□□
□□□□□□□□□□
□□□□□□
□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□
□□□□□□□□□□ □□□ □□□□
□□□□□□ □□ □□□□□□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□
□□□
□□
□□
□□
□□□□□□
□□□□
□□□□□ □□□□□ □□ □□□□
□□□□□□ □□□□□
□□□□□□ □□□ □□□□□□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□
□□□
□□
□□
□□
□□□□□□
□□□□
□□□□□□ □□□□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□
□□□
□□
□□
□□
□□□□□□
□□□□
□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□
□□
□□

□□□
□□□
□□□□
□□
□□□
□□
□□
□□
□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□
□□□
□□
□□
□□
□□□□□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□□□ □□□□□ □□□□□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□
□□□
□□
□□
□□
□□□□□□
□□□□
□□□ □□□□□
□□□□ □□□□□ □□ □□□□□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□
□□□
□□
□□
□□
□□□□□□
□□□□□ □□ □□□□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□

पेंगुइन बुक्स
फेलुदा के संपूर्ण कारनामे I

सत्यजीत रे का जन्म 2 मई 1921 को कलकत्ता में हुआ था। 1940 में कलकत्ता के प्रेसिडेंसी कॉलेज से स्नातक होने के बाद, उन्होंने रवींद्रनाथ टैगोर के विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन में कला का अध्ययन किया। 1943 तक, रे कलकत्ता लौट आए थे और एक विज्ञापन कंपनी में विज़ुअलाइज़र के रूप में काम करने लगे थे। उन्होंने सिग्नेट प्रेस द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के कवर डिज़ाइन करने और चित्र बनाने का काम भी शुरू किया। फिल्मों में उनकी गहरी रुचि ने उन्हें 1947 में कलकत्ता फिल्म सोसाइटी की स्थापना करने के लिए प्रेरित किया। 1950 में यूरोप की छह महीने की यात्रा के दौरान, रे लंदन फिल्म क्लब के सदस्य बने और केवल साढ़े चार महीनों में निन्यानवे फिल्में देखने में सफल रहे।
सन् 1955 में, अनगिनत कठिनाइयों का सामना करते हुए, सत्यजीत रे ने पश्चिम बंगाल सरकार की वित्तीय सहायता से अपनी पहली फिल्म 'पथेर पांचाली' पूरी की। इस फिल्म को कान फिल्म फेस्टिवल में पुरस्कार मिला और इसने रे को अंतरराष्ट्रीय स्तर के निर्देशक के रूप में स्थापित किया। 'अपराजितो' (1956) और 'अपुर संसार' (1959) के साथ मिलकर यह 'अपू त्रयी' का निर्माण करती है और संभवतः रे की सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है। रे की अन्य फिल्मों में जलसाघर (1958), चारुलता (1964), अरण्येर दिन रात्रि (1970), शतरंज के खिलाड़ी (1977), घरे बाइरे (1984), गणशत्रु (1989), शाखा प्रोशाखा (1990) और अगंतुक (1991) शामिल हैं। रे ने टैगोर पर बनी एक डॉक्यूमेंट्री सहित कई वृत्तचित्र भी बनाए। 1987 में, उन्होंने अपने पिता, जो संभवतः बंगाल के सबसे प्रसिद्ध व्यंग्य-प्रधान कविता और बच्चों की पुस्तकों के लेखक थे, की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सुकुमार रे नामक वृत्तचित्र बनाया। सत्यजीत रे ने अपनी फिल्मों के लिए अनेक पुरस्कार जीते। ब्रिटिश फेडरेशन ऑफ फिल्म सोसाइटीज और मॉस्को फिल्म फेस्टिवल कमेटी दोनों ने उन्हें बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के महानतम निर्देशकों में से एक माना। 1992 में, उन्हें एकेडमी ऑफ मोशन पिक्चर आर्ट्स एंड साइंसेज द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट के लिए ऑस्कर से सम्मानित किया गया और उसी वर्ष उन्हें भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया।

सत्यजीत रे एक प्रख्यात फिल्म निर्माता होने के साथ-साथ एक प्रसिद्ध लेखक भी थे। 1961 में उन्होंने बच्चों की पत्रिका 'संदेश' का पुनरुद्धार किया, जिसे उनके दादा उपेंद्रकिशोर रे ने शुरू किया था और जिसमें उनके पिता नियमित रूप से योगदान देते थे। सत्यजीत रे ने 'संदेश' में अनेक कविताएँ, कहानियाँ और निबंध लिखे और बंगाली में कई पुस्तकें भी प्रकाशित कीं, जिनमें से अधिकतर बेस्टसेलर रहीं। 1978 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने उन्हें 'डीलिट' की उपाधि से सम्मानित किया।
सत्यजीत रे का निधन अप्रैल 1992 में कलकत्ता में हुआ था।

***

गोपा मजूमदार ने बंगाली से अंग्रेजी में कई रचनाओं का अनुवाद किया है, जिनमें आशापूर्णा देवी की सुवर्णलता, तस्लीमा नसरीन की माई गर्लहुड और बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय की अपराजितो प्रमुख हैं, जिसके लिए उन्हें 2001 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था। उन्होंने सत्यजीत रे की लघु कथाओं के कई संग्रह, प्रोफेसर शोंकु की कई कहानियाँ और फेलुदा की सभी कहानियाँ पेंगुइन बुक्स इंडिया के लिए अनुवादित की हैं। वर्तमान में वे पेंगुइन के लिए रे की सिनेमाई रचनाओं का अनुवाद कर रही हैं।

प्रस्तावना

मेरे पति को विज्ञान कथा कहानियों में हमेशा से गहरी रुचि रही है। इसलिए, जब उन्होंने अपने बच्चों की पत्रिका 'संदेश' के लिए ऐसी कहानियाँ लिखने का फैसला किया, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी।
एक दिन उन्होंने मुझसे कहा कि वह विज्ञान कथाओं के अलावा अन्य कहानियों के साथ प्रयोग करना चाहते हैं।
‘और किस तरह की?’ मैंने पूछा, हालाँकि मुझे सहज ही जवाब पता था, क्योंकि हम दोनों ही जासूसी कहानियों के शौकीन पाठक थे। उन्हें बताने की ज़रूरत नहीं थी, इसलिए वे मुस्कुराए और उदास स्वर में बोले, ‘लेकिन इसमें एक बड़ी अड़चन है…’ मैंने जिज्ञासा भरी नज़रों से उनकी ओर देखा। ‘यह पत्रिका बच्चों और किशोरों के लिए है, जिसका मतलब है कि मुझे यौन संबंध और हिंसा से बचना होगा — जो अपराध कथाओं का आधार होते हैं… आप इस मुश्किल को समझते हैं, है ना?’ मैंने सचमुच ऐसा किया। फिर भी, मैंने उससे कहा कि वह कोशिश करके देखे— मुझे उस पर इतना भरोसा था!
उन्होंने ऐसा किया। और इस तरह 'फेलुदा' का जन्म हुआ और वह रातोंरात लोकप्रिय हो गया। एक के बाद एक कहानियां प्रकाशित होती गईं और सभी को जबरदस्त सफलता मिली। जब उन्हें पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया, तो वे बेस्टसेलर बन गईं। यह सचमुच अद्भुत था!
हर कहानी खत्म करने के बाद, वह हाथ ऊपर उठाकर कहता, 'मेरे पास अब कोई कथानक नहीं बचा है। बिना किसी यौन संकेत और नाममात्र की हिंसा के कोई जासूसी कहानियां कैसे लिख सकता है?'
मैं उनकी बात से पूरी तरह सहमत थी, लेकिन साथ ही मुझे यह भी पता था कि वे कभी हार नहीं मानेंगे और अपने प्रयास में अवश्य सफल होंगे। और उन्होंने ठीक वैसा ही किया। वे कभी रुके नहीं और अपने जीवन के अंतिम दिनों तक लिखते रहे। यही थे मेरे पति सत्यजीत रे, जिन्होंने तमाम मुश्किलों को पार किया और सफलता हासिल की!
कलकत्ता, अक्टूबर 1995

□□ □□□□□

परिचय

मेरे बचपन की सबसे शुरुआती यादों में से एक यह है कि मैं अपने पिता की किताबों की अलमारी से दो मोटी-मोटी किताबें निकालने के लिए संघर्ष कर रही थी, ताकि उन्हें अपने गुड़ियाघर की दीवारों के रूप में इस्तेमाल कर सकूँ। मुझे पूरी तरह से हैरानी हुई जब मेरे पिता ने मुझे ऐसा करते देखा और तुरंत उन्हें वापस रखने को कहा। क्यों? आखिर वे सिर्फ किताबें ही तो थीं। 'नहीं,' उन्होंने समझाया, और उन दोनों किताबों को उसी कोमलता से संभाला जो वे आमतौर पर मेरे लिए रखते थे, 'ये सिर्फ किताबें नहीं हैं। ये संदेश पत्रिका के जिल्दबंद अंक हैं, जिसे हम बचपन में पढ़ा करते थे। अब यह नहीं मिलती।' हम दोनों को तब पता नहीं था कि संदेश कुछ ही वर्षों बाद फिर से सामने आएगी, जिसे इसके मूल संस्थापक उपेंद्रकिशोर के पोते सत्यजीत रे ने पुनर्जीवित और नया जीवन दिया था।
सत्यजीत रे एक फिल्म निर्माता थे, यह बात मुझे और मेरी पीढ़ी के कई बच्चों को बड़े होने पर ही पता चली। कम से कम हमने इतना तो सुना था कि वे ऐसी फिल्में बनाते थे जो बड़ों को भी मंत्रमुग्ध कर देती थीं, लेकिन हमारे लिए वे बस वही शख्स थे जिन्होंने एक ऐसी पत्रिका के पन्नों में अनंत मनोरंजन और आनंद का द्वार खोल दिया था जो सिर्फ हमारे लिए थी। यह बात 1961 की है। 1965 में, संदेश ने दार्जिलिंग में छुट्टियां मना रहे दो चचेरे भाइयों की एक नई कहानी (दार्जिलिंग में खतरा) प्रकाशित करना शुरू किया। इनमें से बड़ा भाई फेलुदा था, जिसका असली नाम प्रदोष सी. मित्तर था। छोटा भाई, जिसने कहानी सुनाई, तपेश कहलाता था; लेकिन फेलुदा उसे प्यार से टॉपशे कहता था। उनकी मुलाकात राजेन बाबू नाम के एक मिलनसार बुजुर्ग से हुई, जिन्हें रहस्यमय धमकियां मिलनी शुरू हो गई थीं। फेलुदा, जिसने कई अपराध कथाएं पढ़ी थीं और बहुत ही चतुर व्यक्ति था (टॉपशे ने हमें बताया), ने जल्द ही अपराधी का पता लगा लिया।
यह अपेक्षाकृत छोटी और सरल कहानी थी, जो तीन-चार किस्तों में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुई थी। फिर भी, इसने संदेश के युवा पाठकों के बीच इतनी

हलचल मचा दी कि फेलुदा के रचयिता को उन्हीं पात्रों के साथ एक और कहानी लिखने के लिए बाध्य होना पड़ा, जो इस बार लखनऊ में आधारित थी (सम्राट का छल्ला), 1966 में। इस कहानी में फेलुदा का चरित्र अधिक स्पष्ट रूप से सामने आया। हमें पता चला कि वह न केवल तीक्ष्ण अवलोकन क्षमता और तेज बुद्धि वाला व्यक्ति था, बल्कि इतिहास से लेकर सम्मोहन तक, लगभग हर विषय का गहन और व्यापक ज्ञान भी रखता था। वह क्रिकेट में निपुण था, कम से कम सौ इनडोर खेल जानता था, कई ताश के करतब जानता था और दोनों हाथों से लिख सकता था। उसकी निजी नोटबुक में लिखी गई प्रविष्टियाँ ग्रीक भाषा में थीं। सम्राट की अंगूठी के बाद, फेलूदा ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा: उसकी लोकप्रियता लगातार बढ़ती ही गई। अगले तीन वर्षों में, कैलाश चौधरी की ज्वेल और अनुबिस मिस्ट्री, कलकत्ता में रचित फेलूदा की पहली दो कहानियाँ प्रकाशित हुईं, जिसके बाद एक और रोमांचक यात्रा, ट्रबल इन गंगटोक आई। अगले दो दशकों में, रे ने हर साल कम से कम एक फेलूदा कहानी लिखी। 1965 और 1992 के बीच, फेलूदा की चौंतीस कहानियाँ प्रकाशित हुईं। इस श्रृंखला की अंतिम कहानी, द मैजिकल मिस्ट्री, 1995-96 में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई। 1970 में, फेलुदा पहली बार 'देश' पत्रिका में दिखाई दिया, जो निस्संदेह वयस्कों के लिए एक पत्रिका थी। इससे कई लोग हैरान हुए, लेकिन वास्तव में यह बच्चों और बड़ों, दोनों के बीच फेलुदा की लोकप्रियता का प्रमाण था। 1970 से 1992 के बीच, 'देश' के वार्षिक पूजा अंक में फेलुदा की उन्नीस कहानियाँ प्रकाशित हुईं (बाकी कहानियाँ 'संदेश' में प्रकाशित हुईं, सिवाय एक कहानी के जो बच्चों की एक अन्य पत्रिका 'आनंदमेला' में प्रकाशित हुई थी)। घर में सभी को चतुराई से मना करने के बाद, 'देश' की प्रति आते ही उसे पाने की होड़ लग जाना, पूजा उत्सव का उतना ही अहम हिस्सा बन गया था जितना कि नए कपड़े पहनना या मंदिर जाना।
एक साल बाद, रे ने एक नए किरदार को पेश किया। लालमोहन गांगुली (उर्फ जटायु), सस्ते और लोकप्रिय थ्रिलर लिखने वाला एक लेखक, जिसने 'द गोल्डन फोर्ट्रेस' से अपनी शुरुआत की। सरल, भोला, मिलनसार और जीवन की अधिकांश बातों से अनभिज्ञ या गलतफहमी रखने वाला, वह फेलुदा के लिए एक आदर्श साथी साबित हुआ और रे के शब्दों में, 'हास्य का तड़का' लगाने का एक जरिया बन गया। अगले साल (1972) पाठकों को 'अ मिस्टीरियस केस' से रूबरू कराया गया, जिसमें जटायु ने एक बार फिर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इसके बाद, वह दोनों चचेरे भाइयों के

साथ लगातार बना रहा, बहुत जल्द ही टीम का एक महत्वपूर्ण सदस्य बन गया और लाखों लोगों का स्नेह जीत लिया। वास्तव में, अब फेलुदा के बारे में सोचते समय जटायु का जिक्र किए बिना सोचना असंभव है। दिलचस्प बात यह है कि रे द्वारा फेलुदा की कहानियों पर आधारित बनाई गई दोनों फिल्मों (1974 में द गोल्डन फोर्ट्रेस और 1978 में द एलिफेंट गॉड) में लालमोहन बाबू ने अभिनय किया था, जैसा कि संदीप रे द्वारा कुछ साल बाद बनाई गई टेलीविजन फिल्म किस्सा काठमांडू का (द क्रिमिनल्स ऑफ काठमांडू पर आधारित) में भी हुआ था। रे अक्सर अपराध कथाओं में अपनी रुचि के बारे में बात करते थे। स्कूल छोड़ने से पहले ही उन्होंने शर्लक होम्स की सभी कहानियाँ पढ़ ली थीं। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि उन्होंने खुद भी अपराध कथाएँ लिखना शुरू कर दिया। लेकिन फेलुदा के आगमन ने पाठकों पर इतना गहरा प्रभाव क्यों डाला? आखिर बंगाल में बच्चों की कहानियों में जासूसों का होना तो आम बात थी। दरअसल, इसका कारण बहुत सरल था। अपनी तमाम उपलब्धियों के बावजूद, फेलुदा एक ऐसे महापुरुष के रूप में उभरे नहीं, जिनकी दूर से पूजा-अर्चना की जाए, लेकिन कभी उनसे नज़दीकी न हो। इसके विपरीत, टॉपशे के मनमोहक वर्णन में उन्हें इतना सामान्य और मानवीय बताया गया था कि उन्हें अपने परिवार के सदस्य के समान समझना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं था। वे बेशक प्रतिभाशाली थे, लेकिन उनका व्यवहार बिल्कुल वैसा ही था जैसा किसी बड़े चचेरे भाई से उम्मीद की जा सकती है। वे टॉपशे को खूब चिढ़ाते और अक्सर तंग करते थे, लेकिन अपने छोटे वॉटसन के प्रति उनका प्यार और चिंता कभी संदेह से परे नहीं थी। संदेश पढ़ने वाला हर बच्चा टॉपशे में खुद को—या कहें तो, अपनी सहेली को—देख सकता था। रे की सबसे बड़ी खूबी यहीं थी। फेलुदा ने आकर सब कुछ देखा और जीत हासिल की, मुख्यतः इसलिए क्योंकि हर घटना को एक किशोर के नजरिए से देखा और प्रस्तुत किया गया था। रे की भाषा सरल, स्पष्ट, स्नेहपूर्ण और सीधी थी, फिर भी कभी उबाऊ या उपदेशात्मक नहीं हुई, यहाँ तक कि तब भी जब फेलुदा ने टॉपशे की गलती सुधारी या उसे कोई नई जानकारी दी। इसके अतिरिक्त, फेलुदा और टॉपशे द्वारा देखी गई विभिन्न जगहों का उनका वर्णन भी सराहनीय था। कभी-कभी यह बताना मुश्किल हो जाता था कि कोई फिल्म देख रहा है या किताब, क्योंकि प्रासंगिक विवरणों को कुछ ही संक्षिप्त शब्दों में इतनी कुशलता से समेटा गया था, चाहे घटना बंगाल के किसी छोटे

गाँव में घटित हो रही हो, सिक्किम के किसी मठ में या हांगकांग की सड़कों पर।
हालांकि, यह सोचना गलत होगा कि सब कुछ हमेशा सुचारू रूप से चलता रहा। फेलुदा और उनकी टीम को, अधिकांश मशहूर हस्तियों की तरह, प्रसिद्धि की कीमत चुकानी पड़ी। वयस्कों के बीच उनकी लोकप्रियता ही समस्या का कारण बनने लगी। स्वाभाविक रूप से, वयस्कों की अपेक्षाएँ अलग थीं। वे कहानियों में रोमांच चाहते थे और शायद अवैध प्रेम या अंतरंग अपराध जैसे विषयों पर आपत्ति नहीं करते। दूसरी ओर, फेलुदा के रचयिता कभी यह नहीं भूल सकते थे कि वे मुख्य रूप से बच्चों के लिए लिखते हैं और इसलिए कहानियों को 'साफ-सुथरा' रखना उनका कर्तव्य था। स्पष्ट रूप से, आलोचनात्मक या निराश पाठकों के पत्र इतने संवेदनशील बन गए कि फेलुदा ने रे के जीवनकाल में प्रकाशित अंतिम उपन्यास, 'द मिस्ट्री ऑफ नयन' में इस बारे में खुलकर बात की। पहले अध्याय में फेलुदा कहते हैं, 'यह मत भूलिए कि टॉपशे मेरी कहानियाँ मुख्य रूप से किशोरों के लिए लिखते हैं। समस्या यह है कि ये कहानियाँ बच्चों के माता- पिता, चाचा-चाची और सभी लोग पढ़ते हैं। हर स्तर पर प्रत्येक पाठक की अपनी विशिष्ट मांग होती है। भला वह उन सभी को कैसे संतुष्ट कर सकते हैं?' पाठकों को उचित सबक मिला। और फेलुदा की लोकप्रियता और भी बढ़ गई। 1990 में, जब वह पच्चीस वर्ष के हुए, तो दिल्ली में उनके एक कट्टर प्रशंसक ने इस अवसर को यादगार बनाने के लिए एक विशेष कार्ड बनवाया। कहा जाता है कि रे इस तरह की गहरी भक्ति को देखकर आश्चर्यचकित और बेहद प्रसन्न हुए थे।
इस समय तक, फेलुदा बंगाल से बाहर निकल चुके थे। 1988 में, फेलुदा की कहानियों का पहला संग्रह अंग्रेजी अनुवाद में प्रकाशित हुआ (चित्रिता बनर्जी द्वारा अनुवादित 'द एडवेंचर्स ऑफ फेलुदा')। इसके बाद, मैंने शेष फेलुदा कहानियों का अनुवाद किया, जो 'द एम्परर्स रिंग: द फर्दर एडवेंचर्स ऑफ फेलुदा' (1993), 'द मिस्ट्री ऑफ द एलिफेंट गॉड: मोर एडवेंचर्स ऑफ फेलुदा' (1994), 'फेलुदाज लास्ट केस एंड अदर स्टोरीज' (1995), 'द हाउस ऑफ डेथ एंड अदर फेलुदा स्टोरीज' (1997), 'द रॉयल बंगाल मिस्ट्री एंड अदर फेलुदा स्टोरीज' (1997) और 'द मिस्ट्री ऑफ द पिंक पर्ल: द फाइनल फेलुदा स्टोरीज' (1998) में प्रकाशित हुईं। 'द मैजिकल मिस्ट्री' 2000 में रे की लघु कहानियों के संग्रह 'इंडिगो' में प्रकाशित हुई।

शुरुआत में, रे फेलुदा की कहानियों के अनुवाद की अनुमति देने में हिचकिचा रहे थे क्योंकि उन्हें गैर-बंगाली पाठकों की प्रतिक्रिया के बारे में संदेह था। हालांकि, उनके द्वारा बनाई गई दो फिल्मों और उनके बेटे द्वारा बनाई गई टेलीविजन श्रृंखला ने अन्य समुदायों में रुचि जगाई थी। जब उन्होंने अंततः अपनी सहमति दी, तो उन्हें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उनकी चिंता व्यर्थ थी। प्रदोष सी. मित्तर, एक निजी जासूस, और उनके दो सहायकों की कहानी 'थ्री मस्केटियर्स' को भारत के अन्य हिस्सों में भी उतना ही उत्साह मिला जितना बंगाल में मिला था।
फेलुदा की कहानियों का अनुवाद करना मेरे लिए बेहद संतोषजनक अनुभव रहा है। कुछ शुरुआती कहानियों ने मुझे मेरे किशोरावस्था के दिनों की याद दिला दी, जब टैक्सी का किराया मात्र एक रुपया सत्तर पैसे होता था और रंगीन कपड़े पहने दाढ़ी वाले किसी विदेशी को अक्सर 'हिप्पी' कहा जाता था (अनुबिस रहस्य और गंगटोक में परेशानी)। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इन कहानियों का अनुवाद करने से मुझे लेखक के मन की एक नई समझ मिली और संगीत, जादू, इतिहास, सम्मोहन और सिनेमा जैसे उनके विविध रुचियों को फिर से जानने का अवसर मिला। इस प्रामाणिक संस्करण में रे द्वारा पूर्ण की गई फेलूदा की सभी कहानियाँ दो खंडों में संकलित हैं। इसमें 'द गोल्डन फोर्ट्रेस', 'द बैंडिट्स ऑफ बॉम्बे' और 'द सीक्रेट ऑफ द सिमेट्री' के मेरे द्वारा किए गए नए अनुवाद भी शामिल हैं। पहली बार, कहानियों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित किया गया है, और कोई भी फेलूदा के एक बिल्कुल अनजान शौकिया जासूस से एक प्रसिद्ध पेशेवर निजी जासूस बनने तक के विकास को देख सकता है। जिन लोगों ने इन्हें पहले पढ़ा है, वे इन्हें एक ही संग्रह में पाकर प्रसन्न होंगे। जिन्होंने नहीं पढ़ा है, उनके लिए आशा है कि यह बंगाल के एक महान व्यक्तित्व से परिचित होने और इसके रचयिता की प्रतिभा की झलक पाने का एक उत्कृष्ट अवसर होगा।
लंदन, जून 2004
Gopa Majumdar

[illegible] of [illegible] of [illegible]

No	Name of story	Bengali title	Published	Written in
1	Danger in Darjeeling	Feludar Goendagiri	Sandesh	1965-66
2	The Emperor's Ring	Badshahi Aangti	Sandesh	1966-67
3	Kailash Chowdhury's Jewel	Kailash Chowdhury'r Pathar	Sandesh	1967
4	The Anubis Mystery	Sheyal-Debota Rahasya	Sandesh	1970
5	Trouble in Gangtok	Gangtokey Gandogol	Desh	1970
6	The Golden Fortress	Sonar Kella	Desh	1971
7	Incident on the Kalka Mail	Baksho Rahasya	Desh	1972
8	A Killer in Kailash	Kailashey Kelenkari	Desh	1973
9	The Key	Samaddarer Chabi	Sandesh	1973
10	The Royal Bengal Mystery	Royal Bengal Rahasya	Desh	1974
11	The Locked Chest	Ghurghutiyar Ghatona	Sandesh	1975
12	The Mystery of the Elephant God	Joy Baba Felunath	Desh	1975
13	The Bandits of Bombay	Bombaiyer Bombetey	Desh	1976
14	The Mystery of the Walking Dead	Gosaipur Sargaram	Sandesh	1976
15	The Secret of the Cemetery	Gorosthaney Sabdhan	Desh	1977
16	The Curse of the Goddess	Chhinnamastar Abhishaap	Desh	1978
17	The House of Death	Hatyapuri	Sandesh	1979
18	The Mysterious Tenant	Golokdham Rahasya	Sandesh	1980
19	The Criminals of Kathmandu	Joto Kando Kathmandutey	Desh	1980
20	Napoleon's Letter	Napoleoner Chitthi	Sandesh	1981
21	Tintoretto's Jesus	Tintorettor Jishu	Desh	1982
22	The Disappearance of Ambar Sen	Ambar Sen Antardhan Rahasya	Anandamela	1983
23	The Gold Coins of Jehangir	Jahangirer Swarnamudra	Sandesh	1983
24	Crime in Kedarnath	Ebar Kando Kedarnathey	Desh	1984
25	The Acharya Murder Case	Bospukurey Khunkharapi	Sandesh	1985
26	Murder in the Mountains	Darjeeling Jamjamat	Sandesh	1986
27	The Magical Mystery	Indrajal Rahasya	Sandesh, 1995-96	1987
28	The Case of the Apsara Theatre	Apsara Theatre'r Mamla	Sandesh	1987
29	Peril in Paradise	Bhuswargya Bhayankar	Desh	1987
30	Shakuntala's Necklace	Shakuntalar Kontthohar	Desh	1988
31	Feluda in London	Londoney Feluda	Desh	1989
32	The Mystery of the Pink Pearl	Golapi Mukta Rahasya	Sandesh	1989
33	Dr Munshi's Diary	Dr Munshir Diary	Sandesh	1990
34	The Mystery of Nayan	Nayan Rahasya	Desh	1990
35	Robertson's Ruby	Robertsoner Ruby	Desh, 1992	1990

दार्जिलिंग में खतरा

मैंने राजेन बाबू को हर दिन मॉल आते देखा था। वे मुझे एक मिलनसार बुजुर्ग लगे। उनके सारे बाल सफ़ेद हो चुके थे, और उनके चेहरे पर हमेशा एक प्रसन्नता का भाव रहता था। वे आम तौर पर कोने की उस दुकान में कुछ मिनट बिताते थे जहाँ नेपाली और तिब्बती पुरानी चीज़ें बिकती थीं; फिर वे मॉल में आकर लगभग आधे घंटे तक एक बेंच पर बैठते थे, जब तक कि अंधेरा नहीं होने लगता था। उसके बाद वे सीधे घर चले जाते थे। एक दिन, मैं चुपके से उनके पीछे-पीछे गया यह देखने के लिए कि वे कहाँ रहते हैं। जैसे ही हम उनके घर के सामने पहुँचे, वे मुड़े और पूछा, 'तुम कौन हो? मेरा पीछा क्यों कर रहे हो?'
मैंने तुरंत जवाब दिया, 'मेरा नाम तपेश रंजन है।'
“तो फिर, ये लो आपके लिए एक लॉज़ेंज,” उसने मुझे एक लेमन ड्रॉप देते हुए कहा। “एक दिन मेरे घर आना। मैं तुम्हें अपने मास्क का संग्रह दिखाऊंगा,” उसने आगे कहा।
किसने सोचा था कि यह मिलनसार बुजुर्ग व्यक्ति इतनी बड़ी मुसीबत में पड़ जाएगा? अरे, वह तो किसी भी तरह के खतरनाक काम में शामिल होने के काबिल ही नहीं लगता था!
जब मैंने इस बारे में बताया तो फेलुदा ने मुझ पर झल्लाते हुए कहा, 'किसी को देखकर कैसे बता सकते हो कि वह किसके साथ मिल सकता है?'
इससे मुझे गुस्सा आया। मैंने कहा, ‘राजेन बाबू के बारे में आप क्या जानते हैं?’ उन्होंने कहा, ‘वह एक अच्छे इंसान हैं। बहुत दयालु हैं। उन्होंने झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले गरीब नेपाली लोगों के लिए बहुत कुछ किया है। उनके लिए मुसीबत में पड़ने का कोई कारण नहीं है। मुझे पता है। मैं उन्हें हर दिन देखता हूँ। आपने उन्हें एक बार भी नहीं देखा। सच तो यह है कि जब से हम दार्जिलिंग आए हैं, मैंने आपको मुश्किल से ही बाहर जाते देखा है।’ ‘ठीक है, ठीक है। तो चलिए सारी जानकारी देते हैं। वैसे भी, आप जैसे छोटे लड़के को खतरे के बारे में क्या पता होगा?’
अब, यह उचित नहीं था। मैं अब छोटा बच्चा नहीं था। मैं साढ़े तेरह साल का था। फेलुदा सत्ताईस साल का था।
सच कहूँ तो, मुझे राजेन बाबू की परेशानी के बारे में बिलकुल अचानक पता चला। आज मैं मॉल में एक बेंच पर बैठा बैंड के बजने का इंतज़ार कर रहा था। मेरे बाईं ओर टिंकोरी बाबू अखबार पढ़ रहे थे। वो हाल ही में कलकत्ता से दार्जिलिंग में गर्मी की छुट्टियाँ बिताने आए थे और राजेन बाबू के घर में

एक कमरा किराए पर लिया था। मैं उनके कंधे के ऊपर से झुककर खेल पृष्ठ देखने की कोशिश कर रहा था, तभी राजेन बाबू हाँफते हुए आए और टिंकोरी बाबू के बगल में हमारी बेंच के खाली हिस्से पर गिर पड़े। वो साफ़ तौर पर घबराए हुए लग रहे थे।
‘क्या बात है?’ टिंकोरी बाबू ने अपना अखबार मोड़ते हुए पूछा। ‘क्या तुम अभी- अभी पहाड़ी पर दौड़ कर आए?’
‘नहीं, नहीं,’ राजेन बाबू ने सावधानी से जवाब दिया और अपने स्कार्फ के एक कोने से अपना चेहरा पोंछा। ‘कुछ अविश्वसनीय घटित हुआ है।’
मुझे पता था कि 'अविश्वसनीय' का क्या मतलब होता है। फेलुदा को यह शब्द बहुत पसंद था।
‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ टिंकोरी बाबू ने पूछा।
‘देखो, ये रहा,’ राजेन बाबू ने नीले रंग का एक मुड़ा हुआ कागज़ टिंकोरी बाबू को थमा दिया। मैं समझ गया था कि ये एक पत्र है, लेकिन जब टिंकोरी बाबू ने उसे खोला तो मैंने उसे पढ़ने की कोशिश नहीं की। मैंने नज़रें फेर लीं और धीरे से गुनगुनाया, जिससे यह ज़ाहिर हो गया कि मुझे उन दोनों बुज़ुर्गों की बातों में कोई दिलचस्पी नहीं है। लेकिन मैंने टिंकोरी बाबू को कहते सुना, ‘तुम सही कह रहे हो, ये अविश्वसनीय है! भला कोई तुम्हें ऐसा धमकी भरा पत्र कैसे लिख सकता है?’
‘मुझे नहीं पता। यही तो सबसे हैरान करने वाली बात है। मुझे याद नहीं कि मैंने जानबूझकर किसी को कोई नुकसान पहुंचाया हो। जहाँ तक मुझे पता है, मेरा कोई दुश्मन नहीं है।’
टिंकोरी बाबू अपने पड़ोसी की ओर झुके। उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा, 'हमें इस बारे में सबके सामने बात नहीं करनी चाहिए। चलो घर चलते हैं।'
दोनों सज्जन चले गए।
मेरी कहानी खत्म होने के बाद फेलुदा कुछ देर चुप रहे। फिर उन्होंने भौंहें चढ़ाकर कहा, 'तुम्हारा मतलब है कि तुम्हें लगता है कि हमें जांच करनी चाहिए?'
‘अरे, क्या तुमने मुझे नहीं बताया था कि तुम एक रहस्य की तलाश में हो? और तुमने तो यह भी कहा था कि तुमने इतनी जासूसी उपन्यासें पढ़ी हैं कि तुम खुद एक जासूस के रूप में काम कर सकते हो!’

'हां, यह सच है। मैं इसे साबित भी कर सकता हूं। मैं आज मॉल नहीं गया था, है ना? लेकिन मैं आपको बता सकता हूं कि आप किस तरफ बैठे थे।'
‘ठीक है, वह कौन सा पक्ष था?’
‘आपने राधा रेस्टोरेंट के दाहिनी ओर वाली बेंच चुनी थी, है ना?’
‘वाह, बहुत बढ़िया। आपने कैसे अनुमान लगाया?’
'आज शाम धूप निकली थी। आपका बायां गाल धूप से झुलसा हुआ लग रहा है, लेकिन दायां गाल ठीक है। ऐसा तभी हो सकता है जब आप मॉल के उस तरफ बैठे हों। शाम की धूप उसी हिस्से पर पड़ती है।'
'अविश्वसनीय!'
'हां। वैसे, मुझे लगता है कि हमें श्री राजेन मजूमदार से मिलने जाना चाहिए।'
‘अभी सत्तरह कदम और बाकी हैं।’
और अगर ऐसा नहीं हुआ तो?
'ऐसा ही होना चाहिए, फेलुदा। मैंने पिछली बार गिनती की थी।'
'याद रखना, अगर तुम गलत हुए तो तुम्हारे सिर पर चोट लगेगी।'
‘ठीक है, लेकिन ज़्यादा ज़ोर से नहीं। ज़ोर से धक्का लगने से मेरे दिमाग को नुकसान पहुँच सकता है।’ मुझे आश्चर्य हुआ कि सतहत्तर कदम चलने के बाद भी हम राजेन बाबू के गेट से काफ़ी दूर थे। तेईस कदम और चलने पर हम बिल्कुल गेट के पास पहुँच गए। फेलुदा ने मेरे सिर पर हल्के से थपथपाया और पूछा, ‘वापस आते समय तुमने कदम गिने थे क्या?’
'हाँ।'
'अब समझ में आया। वापस आते समय तुम पहाड़ी से नीचे उतरे थे, बेवकूफ। तुमने ज़रूर बहुत बड़े-बड़े कदम उठाए होंगे।'
‘अच्छा… हाँ, शायद।’
'मुझे यकीन है कि आपने ऐसा किया होगा। देखिए, युवा लोग ढलान पर जाते समय हमेशा बड़े-बड़े कदम उठाते हैं। बुजुर्ग लोगों को अधिक सतर्क रहना पड़ता है, इसलिए वे छोटे-छोटे, नाप-तोलकर कदम उठाते हैं।'
हम फाटक से अंदर गए। फेलुदा ने घंटी बजाई। दूर कहीं कोई रेडियो सुन रहा था। मैंने पूछा, 'क्या तुमने तय कर लिया है कि तुम उससे क्या कहोगी?' उसने कहा, 'यह मेरा निजी मामला है। मेरी प्यारी, तुम चुप रहो।'
‘अगर वे मुझसे कुछ पूछें तो भी? मतलब, मुझे जवाब भी नहीं देना चाहिए?’

'चुप रहो।'
A Nepali servant opened the door. ‘Andar aaiye,’ he said.
हम बैठक कक्ष में दाखिल हुए। लकड़ी से बने इस घर में एक प्यारा पुराना आकर्षण था। कमरे का सारा फर्नीचर बेंत का बना था। दीवारें अजीबोगरीब मुखौटों से ढकी थीं, जिनमें से अधिकांश में बड़े-बड़े दांत दिख रहे थे और चेहरे पर अप्रिय भाव थे। कुछ मुखौटे मुझे डरा रहे थे। इनके अलावा, कमरा पुराने हथियारों से भरा हुआ था—ढालें, तलवारें और कटारें। इनके बगल में कपड़े पर चित्रित बुद्ध के चित्र टंगे थे। पता नहीं वे कितने पुराने थे, लेकिन उन पर इस्तेमाल किया गया सुनहरा रंग जरा भी फीका नहीं पड़ा था। हमने बेंत की दो कुर्सियाँ लीं। फेलुदा थोड़ी देर के लिए दीवारों का निरीक्षण करने के लिए उठे। फिर वापस आकर बोले, 'सारी कीलें नई हैं। इसलिए राजेन बाबू का पुरातन वस्तुओं के प्रति शौक हाल ही में जागा होगा।'
राजेन बाबू कमरे में आए। फेलुदा उछलकर खड़े हो गए और बोले, 'क्या आपको मैं याद हूँ? मैं जॉयकृष्ण मित्तर का बेटा, फेलु हूँ।'
राजेन बाबू पहले तो थोड़ा चौंक गए। फिर उनके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी। 'फेलू? मुझे तो याद है ना तुम। अरे वाह, तुम तो बड़े जवान हो गए! घर पर सब कैसे हैं? क्या तुम्हारे पिताजी यहाँ हैं?'
जब फेलुदा इन सवालों के जवाब दे रहा था, मैं अपनी हैरानी छिपाने की कोशिश कर रहा था। ये सब कितना अन्यायपूर्ण था—फेलुदा ने मुझे ये क्यों नहीं बताया कि वो राजेन बाबू को जानता है?
पता चला कि राजेन बाबू ने कलकत्ता में कई वर्षों तक वकील के रूप में काम किया था। उन्होंने एक बार फेलुदा के पिता को एक मुकदमे में मदद की थी। वे अपनी सेवानिवृत्ति के तुरंत बाद दस साल पहले दार्जिलिंग आए और यहीं बस गए थे।
फेलुदा ने मुझे उससे मिलवाया। उसने मुझे पहचाना नहीं। शायद एक हफ्ते पहले मुझे एक गोली देने की बात वह पूरी तरह भूल गया था।
‘लगता है आपको प्राचीन वस्तुओं का शौक है,’ फेलुदा ने बातचीत के लहजे में कहा। ‘हाँ। यह लगभग एक जुनून में बदल गया है।’
'कितनी देर-?'
पिछले छह महीनों में। लेकिन मैं काफी सारी चीजें इकट्ठा करने में कामयाब रहा हूं।

फेलुदा ने गला साफ किया। फिर उसने राजेन बाबू को वह सब बताया जो उसने मुझसे सुना था, और अंत में कहा, 'मुझे आज भी याद है कि आपने मेरे पिता की कैसे मदद की थी। अगर मैं बदले में कुछ कर सकूँ तो...'
राजेन बाबू प्रसन्न और राहत महसूस कर रहे थे। लेकिन इससे पहले कि वे कुछ कह पाते, टिंकोरी बाबू कमरे में आ गए। उनकी साँसों से लग रहा था कि वे शाम की सैर से अभी-अभी लौटे हैं। राजेन बाबू ने परिचय कराया। ‘टिंकोरी बाबू मेरे मित्र ज्ञानेश के पड़ोसी हैं। जब मेरे इस मित्र को पता चला कि मैं अपना एक कमरा किराए पर देने जा रहा हूँ, तो उसने सुझाव दिया कि मैं इसे टिंकोरी बाबू को दे दूँ। नहीं तो वे किसी होटल में चले जाते।’
टिंकोरी बाबू हँसे। “मुझे उनका प्रस्ताव स्वीकार करने में थोड़ी झिझक हुई, यह मुझे मानना पड़ेगा; मुख्यतः सिरूट के प्रति मेरी विशेष कमजोरी के कारण। देखिए, राजेन बाबू को शायद उसकी गंध से आपत्ति हो सकती थी। इसलिए मैंने पहले उन्हें पत्र लिखकर बता दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें कोई आपत्ति नहीं है, इसलिए मैं यहाँ हूँ।”
क्या आप यहाँ महज़ हवा बदलने के लिए आए हैं?
'हां, लेकिन मैंने गौर किया है कि हवा उतनी ठंडी और ताज़ी नहीं है जितनी उम्मीद की जा सकती थी।'
‘क्या आपको संगीत पसंद है?’ फेलुदा ने अचानक पूछा।
‘जी हाँ, लेकिन आपको कैसे पता चला?’ टिंकोरी बाबू ने चौंककर मुस्कुराते हुए कहा। ‘दरअसल, मैंने आपकी उंगली देखी,’ फेलुदा ने समझाया। ‘आप रेडियो पर बज रहे उस गाने की धुन पर अपनी छड़ी के ऊपर उंगली थपथपा रहे थे।’
‘आप बिलकुल सही कह रहे हैं,’ राजेन बाबू हँसे, ‘वह श्यामसंगीत गाते हैं।’ फेलुदा ने विषय बदल दिया। उसने पूछा, 'क्या आपके पास वह पत्र यहाँ है?'
‘ओह हाँ। बिल्कुल मेरे दिल के पास,’ राजेन बाबू ने कहा और उसे अपनी जैकेट की अंदरूनी जेब से बाहर निकाला। फेलुदा ने उसे फैला दिया।
यह हस्तलिखित नहीं था। कुछ छपे हुए शब्द किताबों या अखबारों से काटकर कागज के एक पन्ने पर चिपकाए गए थे। उस पर लिखा था, 'अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए तैयार रहो।'
‘क्या यह डाक से आया है?’
'हां। इसे दार्जिलिंग से पोस्ट किया गया था, लेकिन मुझे अफसोस है कि मैंने लिफाफा फेंक दिया।'

क्या आपको किसी पर शक करने का कोई कारण है?
नहीं। मुझे बिल्कुल याद नहीं कि मैंने कभी किसी को नुकसान पहुंचाया हो। क्या कुछ खास लोग आपसे नियमित रूप से मिलने आते हैं?
‘वैसे, मेरे पास ज्यादा आगंतुक नहीं आते। अगर मैं बीमार होती हूँ तो कभी- कभार डॉ. फोनी मित्रा आ जाती हैं।’
क्या वह एक अच्छा डॉक्टर है?
'औसत दर्जे का, मैं कहूंगा। लेकिन वैसे भी, मेरी शिकायतें हमेशा से काफी मामूली रही हैं—मेरा मतलब है, सामान्य खांसी और जुकाम से ज्यादा कुछ नहीं। इसलिए मुझे किसी अच्छे डॉक्टर की तलाश नहीं करनी पड़ी।'
क्या वह कोई शुल्क लेता है?
'बिल्कुल। लेकिन इससे कोई खास समस्या नहीं है। भगवान का शुक्र है, मेरे पास बहुत पैसा है।'
‘आपके पास और कौन-कौन आता है?’
‘श्री घोषाल हाल ही में मेरे घर आने लगे हैं... देखिए, ये रहे!’ एक मध्यम कद का आदमी, जिसने गहरा सूट पहना हुआ था, कमरे में लाया गया।
‘क्या मैंने अपना नाम सुना?’ उसने मुस्कुराते हुए पूछा।
'जी हां, मैं अभी इन लोगों को बताने ही वाला था कि आप भी मेरी तरह प्राचीन वस्तुओं में रुचि रखते हैं। मुझे इनसे इनका परिचय कराने दीजिए।'
अभिवादन का आदान-प्रदान करने के बाद, श्री घोषाल—जिनका पूरा नाम अबानीमोहन घोषाल था—ने राजेन बाबू से कहा, 'मैंने सोचा कि मैं आपसे मिलने आ जाऊं क्योंकि आप आज दुकान पर नहीं आए।'
‘नहीं, मेरी तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए मैंने घर पर ही रहने का फैसला किया।’ यह स्पष्ट था कि राजेन बाबू श्री घोषाल को पत्र के बारे में बताना नहीं चाहते थे। श्री घोषाल के आते ही फेलुदा ने पत्र छिपा दिया था।
‘ठीक है, अगर आप आज व्यस्त हैं, तो मैं किसी और दिन आऊंगा... दरअसल, मैं उस तिब्बती घंटी को देखना चाहता था,’ श्री घोषाल ने कहा।
‘अरे, कोई बात नहीं। मैं आपके लिए ले आता हूँ।’ राजेन बाबू घंटी लाने के लिए घर के अंदर चले गए।
‘क्या आप दार्जिलिंग में रहते हैं?’ फेलुदा ने श्री घोषाल से पूछा, जिन्होंने एक कटार उठा रखी थी और उसे ध्यान से देख रहे थे। ‘नहीं,’ उन्होंने कटार को हाथ में घुमाते हुए उत्तर दिया। ‘मैं किसी एक जगह पर

ज्यादा देर नहीं रुकता। मुझे बहुत यात्रा करनी पड़ती है। लेकिन मुझे दुर्लभ कलाकृतियाँ इकट्ठा करना पसंद है।’ फेलुदा ने बाद में मुझे बताया कि दुर्लभ कलाकृति एक दुर्लभ और प्राचीन कला वस्तु होती है।
राजेन बाबू घंटी लेकर लौटे। देखने में वह वाकई बहुत आकर्षक थी। उसका आधार चांदी का बना था, हैंडल पीतल और तांबे का मिश्रण था, जिस पर रंग-बिरंगे पत्थर जड़े हुए थे। श्री घोषाल ने उसे ध्यान से देखने में काफी समय लगाया। फिर उन्होंने उसे मेज पर रखा और कहा, 'तुम्हें तो बहुत अच्छा सौदा मिला है। यह बिल्कुल असली है।'
'अरे वाह, ये तो राहत की बात है। आप तो विशेषज्ञ हैं ही। दुकान वाले ने मुझे बताया कि ये सीधे दलाई लामा के घर से आया है।'
'यह बात सच हो सकती है। लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप इसे बेचना चाहेंगे? मेरा मतलब है... मान लीजिए आपको कोई अच्छा प्रस्ताव मिल जाए?'
राजेन बाबू ने मीठी मुस्कान के साथ सिर हिलाया।
'नहीं। देखिए, मैंने वह घंटी सिर्फ इसलिए खरीदी क्योंकि मुझे वह पसंद थी, मेरा उसे सिर्फ पैसे कमाने के लिए बेचने का कोई इरादा नहीं है।'
‘बहुत खूब,’ श्री घोषाल उठे। ‘मुझे उम्मीद है कि आप कल बाहर घूमने निकलेंगे।’
'धन्यवाद। मुझे भी यही उम्मीद है।'
जब श्री घोषाल चले गए, तो फेलुदा ने राजेन बाबू से कहा, 'क्या आपको नहीं लगता कि अगले कुछ दिनों तक घर से बाहर न निकलना ही समझदारी होगी?'
'हां, शायद आप सही कह रहे हैं। लेकिन गुमनाम चिट्ठी का यह मामला इतना अविश्वसनीय है कि मैं इसे गंभीरता से नहीं ले सकता। यह तो बस एक मूर्खतापूर्ण मज़ाक जैसा लगता है!'
‘अच्छा, जब तक हम इस बारे में निश्चित न हो जाएं, तब तक आप यहीं क्यों नहीं रुक जाते? आपके पास वह नेपाली नौकर कब से है?’
‘शुरू से ही। वह पूरी तरह भरोसेमंद है।’
अब फेलुदा ने टिंकोरी बाबू की ओर रुख किया। 'क्या आप ज्यादातर समय घर पर ही रहते हैं?'
हां, लेकिन मैं सुबह और शाम को टहलने जाता हूं, इसलिए मैं हर दिन कुछ घंटों के लिए घर से बाहर रहता हूं। वैसे भी, अगर कोई वास्तविक खतरा हो, तो मुझे

संदेह है कि मैं मदद के लिए कुछ कर पाऊंगा। मेरी उम्र चौंसठ वर्ष है, मैं राजेन बाबू से केवल एक वर्ष छोटा हूं।
‘कृपया बेचारे टिंकोरी बाबू को इसमें मत घसीटिए,’ राजेन बाबू ने कहा। ‘आखिरकार, वो यहाँ आराम करने आए हैं, तो उन्हें आनंद लेने दीजिए। अगर आप ज़िद करते हैं तो मैं अपने नौकर के साथ अंदर ही रहूँगा। आप दोनों चाहें तो रोज़ मुझसे मिलने आ सकते हैं।’
'ठीक है।'
फेलुदा खड़ा हो गया। मैं भी खड़ा हो गया। जाने का समय हो गया था।
हमारे सामने एक चिमनी थी। उसके ऊपर, शेल्फ पर, तीन फ्रेम वाली तस्वीरें रखी थीं। फेलुदा उन्हें देखने के लिए चिमनी के पास गया। 'मेरी पत्नी,' राजेन बाबू ने पहली तस्वीर की ओर इशारा करते हुए कहा। 'हमारी शादी के ठीक पाँच साल बाद ही उनका निधन हो गया था।'
दूसरी तस्वीर एक छोटे लड़के की थी, जिसकी उम्र तस्वीर खींचते समय लगभग मेरी ही उम्र रही होगी। वाकई बहुत सुंदर लड़का था। 'यह कौन है?' फेलुदा ने पूछा।
राजेन बाबू हंसने लगे। ‘वह तस्वीर तो बस यह दिखाने के लिए है कि समय सब कुछ कैसे बदल देता है। क्या आप विश्वास करेंगे कि यह मेरी ही तस्वीर है, जो मेरे बचपन में ली गई थी? उन दिनों मैं बांकुरा के एक मिशनरी स्कूल में पढ़ता था। मेरे पिता वहां मजिस्ट्रेट थे। लेकिन मेरी मासूम सूरत देखकर धोखा मत खाइए। मैं दिखने में सुंदर तो था, लेकिन बेहद शरारती था। मेरे शिक्षक मुझसे तंग आ चुके थे। सच तो यह है कि मैं छात्रों को भी नहीं छोड़ता था। मुझे याद है कि मैंने स्कूल के सबसे अच्छे धावक को सौ गज की दौड़ में लात मारकर उसे जीतने से रोक दिया था।’
तीसरी तस्वीर में लगभग तीस वर्ष की आयु का एक युवक था। बाद में पता चला कि वह राजेन बाबू का इकलौता बेटा प्रबीर मजूमदार था।
‘वह अब कहाँ है?’ फेलुदा ने पूछा।
राजेन बाबू ने गला साफ किया। कुछ देर रुककर उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं पता। वह सोलह साल पहले घर छोड़कर चला गया था। हमारा आपस में कोई संपर्क नहीं है।'

फेलुदा सामने के दरवाजे की ओर चलने लगा। ‘यह तो बहुत ही दिलचस्प मामला है,’ उसने बुदबुदाते हुए कहा। अब वह उन जासूसों की तरह बात कर रहा था जिनके बारे में हम किताबों में पढ़ते थे।
हम घर से बाहर निकले। बाहर अंधेरा हो चुका था। पहाड़ियों में बसे हर घर में बत्तियाँ जल चुकी थीं। नीचे रंगीत घाटी से धुंध उठ रही थी। राजेन बाबू और टिंकोरी बाबू हमें विदा करने के लिए द्वार तक आए। राजेन बाबू ने धीमी आवाज़ में फेलुदा से कहा, 'सच कहूँ तो, सब कुछ होने के बावजूद, मुझे थोड़ी घबराहट हो रही है। आख़िरकार, इस शांत वातावरण में ऐसा होना बिल्कुल अप्रत्याशित था...'
‘चिंता मत करो,’ फेलुदा ने दृढ़ता से कहा। ‘मैं इस मामले की तह तक जरूर पहुँचूँगा।’
‘धन्यवाद। अलविदा!’ राजेन बाबू ने कहा और घर के अंदर चले गए। टिंकोरी बाबू वहीं रुक गए। उन्होंने कहा, ‘मैं आपकी अवलोकन क्षमता से सचमुच प्रभावित हूँ। मैंने भी बहुत सारे जासूसी उपन्यास पढ़े हैं। शायद मैं इस मामले में आपकी मदद कर सकूँ।’
'सच्ची कैसे?'
‘अपने हाथ में मौजूद पत्र को देखो। उस पर छपे विभिन्न शब्दों को देखो। क्या वे तुम्हें कुछ बताते हैं?’
फेलुदा ने कुछ सेकंड सोचा। उसने कहा, 'शब्दों को कैंची से नहीं, बल्कि ब्लेड से काटा गया था।'
'बहुत अच्छा।'
'दूसरा, प्रत्येक शब्द एक अलग स्रोत से आया है—टाइपफेस और कागज की गुणवत्ता एक दूसरे से भिन्न होती है।'
'हां। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि वे विभिन्न स्रोत क्या हो सकते हैं?' ‘ये दो शब्द—“तैयार” और “भुगतान”—किसी समाचार पत्र के प्रतीत होते हैं।’ ‘ठीक है। आनंद बाजार।’
‘आप कैसे बता सकते हैं?’
‘केवल आनंद बाज़ार में ही उस फ़ॉन्ट का इस्तेमाल होता है। और बाकी शब्द किताबों से लिए गए हैं, मुझे लगता है। वैसे, बहुत पुरानी किताबें नहीं, क्योंकि ये अलग-अलग फ़ॉन्ट पिछले बीस सालों से ही इस्तेमाल हो रहे हैं,

इससे ज़्यादा नहीं। इसके अलावा, क्या गोंद की गंध से आपको कुछ पता चलता है?’
मुझे लगता है कि भेजने वाले ने ग्रिपेक्स गोंद का इस्तेमाल किया है। 'शानदार!'
मैं भी शायद आपके लिए यही कहूंगा।
टिंकोरी बाबू मुस्कुराए। 'मैं कोशिश तो करता हूँ, लेकिन तुम्हारी उम्र में, मेरे प्यारे दोस्त, मुझे शक है कि मुझे 'जासूस' शब्द का मतलब भी पता होगा।'
इसके बाद हमने नमस्कार किया और अपने रास्ते चल दिए। होटल लौटते समय फेलुदा ने कहा, 'मुझे अभी पता नहीं है कि मैं इस रहस्य को सुलझा पाऊंगा या नहीं, लेकिन टिंकोरी बाबू को जान पाना मेरे लिए एक अतिरिक्त लाभ होगा।'
'अगर वह अपराध का पता लगाने में इतना माहिर है, तो आप उसे ही सारा कठिन काम क्यों नहीं करने देते? पूछताछ करने में अपना समय क्यों बर्बाद करते हैं?' ‘खैर, टिंकोरी बाबू को छपाई और टाइपफेस के बारे में बहुत कुछ पता हो सकता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें सब कुछ पता होगा!’
फेलुदा का जवाब सुनकर मुझे खुशी हुई। मैंने सोचा, मुझे यकीन है कि टिंकोरी बाबू फेलुदा जितना चालाक नहीं होगा। मैंने जोर से कहा, 'तुम्हें क्या लगता है कि अपराधी कौन है?'
‘दोषी—’ फेलुदा की बात अधूरी रह गई। मैंने देखा कि वह मुड़ा और सामने से आ रहे एक आदमी की ओर देखा जो अभी-अभी हमारे पास से गुजरा था।
क्या तुमने उसे देखा?
नहीं, मैंने उसका चेहरा नहीं देखा।
‘उस स्ट्रीट लैंप की रोशनी एक पल के लिए ही उसके चेहरे पर पड़ी, और मैंने सोचा—’
'क्या?'
'नहीं, कोई बात नहीं। चलो चलते हैं, मुझे बहुत भूख लग रही है।'
फेलुदा मेरा चचेरा भाई है। हम दोनों अपने पिताजी के साथ छुट्टियाँ मनाने दार्जिलिंग गए थे। पिताजी होटल में ठहरे कुछ अन्य मेहमानों से अच्छी तरह परिचित हो गए थे और अपना अधिकांश समय उन्हीं के साथ बिता रहे थे। उन्होंने हमें अपनी मर्जी से कहीं भी जाने से नहीं रोका और न ही हमसे ज्यादा सवाल पूछे।

अगले दिन मैं सामान्य से थोड़ा देर से उठा। पिताजी कमरे में थे, लेकिन फेलुदा का कोई अता-पता नहीं था।
पिताजी ने बताया, ‘फेलू आज सुबह जल्दी निकल गया। उसने कहा कि वह कंचनजंगा की एक झलक पाने की कोशिश करेगा।’
मुझे पता था कि यह सच नहीं हो सकता। फेलुदा ज़रूर जाँच-पड़ताल करने बाहर गया होगा, जो कि बहुत ही निराशाजनक था क्योंकि उसे मेरे बिना बाहर नहीं जाना चाहिए था। खैर, मैंने जल्दी से एक कप चाय पी और फिर मैं खुद बाहर चली गई।
मैंने फेलूदा को टैक्सी स्टैंड के पास देखा। ‘यह ठीक नहीं है!’ मैंने शिकायत की। ‘तुम अकेले बाहर क्यों गए थे?’
मुझे हल्का बुखार महसूस हो रहा था, इसलिए मैं डॉक्टर के पास गया।
‘डॉ. फोनी मित्रा?’
‘अहा, अब तुम भी दिमाग का इस्तेमाल करने लगे हो!’
‘उसने क्या कहा?’
उन्होंने मुझसे चार रुपये लिए और एक पर्ची लिख दी।
क्या वह एक अच्छा डॉक्टर है?
‘क्या आपको लगता है कि कोई अच्छा डॉक्टर किसी स्वस्थ व्यक्ति के लिए पर्ची लिखेगा? इसके अलावा, उसका घर पुराना और जर्जर लग रहा था। मुझे नहीं लगता कि उसका क्लिनिक अच्छा है।’
‘तो फिर वह वह पत्र नहीं भेज सकता था।’
'क्यों नहीं?'
एक गरीब आदमी ऐसा करने की हिम्मत नहीं करेगा।
'हां, अगर उसे पैसों की सख्त जरूरत होती तो वह ऐसा करता।'
लेकिन उस पत्र में पैसों के बारे में कुछ नहीं कहा गया था। ‘खुले तौर पर पूछने की कोई जरूरत नहीं थी।’
'आपका क्या मतलब है?'
‘कल राजेन बाबू ने आपको कैसे मारा?’
वह थोड़ा डरा हुआ लग रहा था।
‘डर किसी को भी बीमार कर सकता है।’
'ओह?'

'हां, वह गंभीर रूप से बीमार है। और अगर ऐसा हुआ, तो वह स्वाभाविक रूप से अपने डॉक्टर के पास जाएगा। उसके बाद क्या हो सकता है, यह तो तुम्हारे जैसे मूर्ख भी समझ सकते हैं, मुझे यकीन है।'
फेलुदा कितना चतुर था! लेकिन अगर डॉ. मित्रा ने वास्तव में पूरी योजना उसी तरह बनाई थी जैसा फेलुदा ने बताया था, तो वह भी असाधारण रूप से चालाक रहा होगा।
तब तक हम मॉल पहुँच चुके थे। जैसे ही हम फव्वारे के पास पहुँचे, फेलूदा ने अचानक कहा, 'मुझे कलाकृतियों के बारे में थोड़ी जिज्ञासा हो रही है।' दरअसल, हम नेपाल क्यूरियो शॉप के काफी करीब खड़े थे। राजेन बाबू और श्री घोषाल रोज़ इस दुकान पर आते थे। फेलूदा और मैं दुकान में चले गए। दुकान के मालिक ने हमारा स्वागत करने के लिए आगे कदम बढ़ाया। उन्होंने हल्के भूरे रंग की जैकेट पहनी हुई थी, गले में मफलर था और सिर पर सुनहरी कढ़ाई वाली काली टोपी थी। उन्होंने मुस्कुराते हुए हमारा अभिवादन किया।
दुकान पुरानी और प्राचीन वस्तुओं से भरी पड़ी थी। उनमें से एक अजीब सी सीलन भरी गंध आ रही थी। अंदर सन्नाटा था। फेलुदा ने कुछ देर इधर-उधर देखा, फिर बड़े ही महत्वपूर्ण लहजे में बोला, 'क्या आपके पास अच्छे टंखा हैं?' 'अगले कमरे में आइए, महोदय। जो सामान वाकई अच्छा था, वह बिक चुका है। लेकिन हमें जल्द ही कुछ नया माल आने की उम्मीद है।'
मैंने फुसफुसाते हुए पूछा, 'टान्खा क्या होता है?'
'जब तुम उसे देखोगे तो तुम्हें पता चल जाएगा,' फेलुदा ने फुसफुसाते हुए जवाब दिया।
अगला कमरा और भी छोटा और अंधेरा था। दुकान के मालिक ने रेशम के कपड़े पर बनी बुद्ध की एक पेंटिंग निकाली। उन्होंने कहा, 'यह आखिरी बची हुई पेंटिंग है, लेकिन थोड़ी क्षतिग्रस्त है।' तो यह एक टंखा थी! राजेन बाबू के घर में तो ऐसे कई टंखा थे। फेलुदा ने एक विशेषज्ञ की तरह टंखा का निरीक्षण किया, उसे बारीकी से देखा और फिर अलग-अलग कोणों से निहारा। तीन मिनट बाद उन्होंने कहा, 'यह सत्तर साल से ज़्यादा पुरानी नहीं लगती। मैं इससे कहीं ज़्यादा पुरानी कोई पेंटिंग ढूंढ रहा हूँ, कम से कम तीन सौ साल पुरानी।' “आज शाम को हमारे पास कुछ नई चीजें आ रही हैं, महोदय। अगर आप आज बाद में वापस आएंगे तो शायद आपको वह मिल जाए जिसकी आप तलाश कर रहे हैं।”
‘क्या आपने आज शाम की बात कही थी?’

'जी श्रीमान।'
‘ओह, मुझे राजेन बाबू को सूचित करना होगा।’
‘श्री मजूमदार? उन्हें तो पहले से ही पता है। मेरे सभी नियमित ग्राहक शाम को नए सामान देखने आते हैं।’
क्या श्री घोषाल को पता है?
'बिल्कुल।'
‘और कौन-कौन नियमित खरीदार है?’
‘एक हैं श्री गिलमोर, जो एक चाय बागान के प्रबंधक हैं। वे सप्ताह में दो बार मेरी दुकान पर आते हैं। फिर हैं श्री नौलखा। लेकिन वे फिलहाल सिक्किम में हैं।’
‘ठीक है, मैं शाम को आने की कोशिश करूँगा… टॉपशे, क्या आपको मास्क चाहिए?’ मैं इस प्रस्ताव को ठुकरा नहीं सका। फेलुदा ने खुद एक मास्क चुना और उसके पैसे दिए। ‘यह सबसे भयानक था,’ उसने मुझे मास्क देते हुए कहा। उसने एक बार मुझसे कहा था कि ‘भयानक’ जैसा कोई शब्द नहीं होता। यह वास्तव में ‘अत्यंत’ और ‘भयानक’ का मिश्रण है। लेकिन मुझे कहना पड़ेगा कि मास्क के लिए यह शब्द काफी उपयुक्त था।
दुकान से बाहर निकलते ही फेलुदा कुछ कहने लगा, पर अचानक रुक गया। मैंने देखा कि वह फिर से एक आदमी को घूर रहा था। क्या यह वही आदमी था जिसे उसने कल रात देखा था? वह लगभग चालीस साल का आदमी था, जिसने महंगे सूट पहने थे। वह मॉल के बीच में रुककर अपनी पाइप जला रहा था। उसकी आँखें काले चश्मे के पीछे छिपी थीं। किसी तरह वह जाना-पहचाना सा लग रहा था, पर मुझे याद नहीं आ रहा था कि मैं उससे पहले कभी मिला था।
फेलुदा आगे बढ़ा और उसके पास पहुंचा। उसने कहा, 'माफ़ कीजिए, क्या आप श्री चटर्जी हैं?'
‘नहीं,’ उस आदमी ने अपनी पाइप का सिरा चबाते हुए जवाब दिया, ‘मैं नहीं हूँ।’ फेलुदा पूरी तरह से हैरान रह गया। ‘अजीब बात है! क्या आप सेंट्रल होटल में नहीं ठहरे हैं?’
उस आदमी ने थोड़ी तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ कहा, 'नहीं, मैं माउंट एवरेस्ट पर हूँ; और मेरा कोई जुड़वा भाई नहीं है,' और वह ऑब्जर्वेटरी हिल की दिशा में चल पड़ा।

मैंने देखा कि वह एक भूरे रंग का पार्सल ले जा रहा था, जिस पर 'नेपाल क्यूरियो शॉप' शब्द छपे हुए थे।
‘फेलुदा!’ मैंने धीरे से कहा। ‘क्या तुम्हें लगता है कि उसने मेरे जैसा मुखौटा खरीदा होगा?’
‘हाँ, हो सकता है उसने ऐसा किया हो। आखिर वो सारे मास्क सिर्फ तुम्हारे लिए तो नहीं थे, है ना? चलो, कॉफी पीते हैं।’ हम एक कॉफी शॉप की तरफ मुड़े। ‘क्या तुमने उस आदमी को पहचाना?’ फेलुदा ने पूछा।
मैंने जवाब दिया, 'मैं कैसे पहचान सकता था, जब आप खुद उसे पहचानने में असफल रहे?'
‘किसने कहा कि मैं असफल हो गया?’
‘बेशक तुमने ही किया होगा! तुमने उसका नाम गलत लिखा था, है ना?’
‘तुम इतने बेवकूफ क्यों हो? मैंने जानबूझकर ऐसा किया, सिर्फ इसलिए कि वो मुझे बता दे कि वो कहाँ रह रहा है। क्या तुम्हें उसका असली नाम पता है?’ नहीं। क्या बात है?
‘Prabeer Majumdar.’
'जी हां, जी हां, आप सही कह रहे हैं! राजेन बाबू के बेटे हैं, है ना? हमने कल उनकी तस्वीर देखी थी। इसीलिए तो वो जाने-पहचाने लग रहे थे। लेकिन अब तो वो काफी बड़े हो गए हैं।'
फिर भी, पिता और पुत्र में बहुत सी समानताएँ हैं। लेकिन क्या आपने उनके कपड़ों पर ध्यान दिया? उनका सूट लंदन का, टाई पेरिस की और जूते इटली के ही होंगे। संक्षेप में, इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे हाल ही में विदेश से लौटे हैं।
लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि राजेन बाबू को यह नहीं पता कि उनका अपना बेटा शहर में है?
'हो सकता है कि उसके बेटे को यह भी न पता हो कि उसके पिता यहां रहते हैं। हमें और जानकारी जुटाने की कोशिश करनी चाहिए।'
मैंने खुद से कहा, मामला और भी पेचीदा हो रहा है, और मैं कॉफी शॉप की खुली छत पर चढ़ गया। मुझे यहाँ बैठना बहुत अच्छा लगता था। यहाँ से शहर और बाज़ार का शानदार नज़ारा दिखता था।
टिंकोरी बाबू एक कोने की मेज पर बैठे कॉफी पी रहे थे। उन्होंने हमें हाथ हिलाकर बैठने का न्योता दिया।

‘तुम्हारी गहरी नज़र और जासूसी की कुशलता के इनाम के तौर पर, मैं तुम्हें दो कप हॉट चॉकलेट पिलाना चाहता हूँ। उम्मीद है तुम्हें कोई आपत्ति नहीं होगी?’ उसने आँखों में शरारत भरी चमक के साथ कहा। हॉट चॉकलेट की बात सुनकर मेरे मुँह में पानी आ गया। टिंकोरी बाबू ने वेटर को बुलाया और अपना ऑर्डर दिया। फिर उसने अपनी जैकेट की जेब से एक किताब निकाली और फेलुदा को देते हुए कहा, ‘यह तुम्हारे लिए है। मेरे पास इसकी सिर्फ़ एक ही कॉपी बची थी। यह मेरी नई किताब है।’
फेलुदा ने कवर को घूरकर देखा। ‘आपकी किताब? आपका मतलब... आप 'सीक्रेट एजेंट' के छद्म नाम से लिखते हैं?’ टिंकोरी बाबू की आँखें झुक गईं। उन्होंने हल्की सी मुस्कान के साथ सिर हिलाया। फेलुदा और भी उत्साहित हो गए। ‘लेकिन आप मेरे पसंदीदा लेखक हैं! मैंने आपकी सारी किताबें पढ़ी हैं। कोई और लेखक रहस्य कथाएँ उस तरह नहीं लिख सकता जैसे आप लिखते हैं।’
'धन्यवाद, धन्यवाद। सच कहूं तो, मैं अपने अगले उपन्यास की कहानी लिखने के लिए दार्जिलिंग आया था। लेकिन अब मैंने अपना अधिकांश समय एक वास्तविक जीवन के रहस्य को सुलझाने में बिताया है।'
मैं खुद को बहुत भाग्यशाली मानता हूं। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि मुझे आपसे इस तरह मिलने का मौका मिलेगा!
‘दुख की बात सिर्फ यह है कि मुझे कलकत्ता वापस जाना होगा। मैं कल लौट रहा हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि जाने से पहले मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूँ।’ मुझे यह सुनकर बहुत खुशी हुई। वैसे, आज हमने राजेन बाबू के बेटे को देखा। 'क्या!'
‘महज दस मिनट पहले।’
‘क्या आपको यकीन है? क्या आपने उसे ठीक से देखा?’
'हां, मुझे लगभग सौ प्रतिशत यकीन है। हमें बस माउंट एवरेस्ट होटल से पुष्टि करनी है, और फिर कोई संदेह नहीं रह जाएगा।'
अचानक, टिंकोरी बाबू ने आह भरी। उन्होंने पूछा, 'क्या राजेन बाबू ने अपने बेटे के बारे में आपसे बात की?'
नहीं, ज्यादा नहीं।
मैंने बहुत कुछ सुना है। लगता है, उसका बेटा बुरी संगत में पड़ गया था। उसे अपने पिता की अलमारी से पैसे चुराते हुए पकड़ा गया था। राजेन बाबू ने उसे घर से निकाल दिया। इसके बाद प्रबीर घर छोड़कर चला गया और उसका कोई पता नहीं

चला। उस समय वह चौबीस साल का था। कुछ साल बाद, राजेन बाबू को अपने किए पर पछतावा होने लगा और उन्होंने अपने बेटे को ढूंढने की कोशिश की। लेकिन प्रबीर का कहीं कोई सुराग नहीं मिला। करीब दस साल पहले, राजेन बाबू का एक दोस्त आया और उसने बताया कि उसने प्रबीर को इंग्लैंड में कहीं देखा था। बस इतना ही।
इसका मतलब है कि राजेन बाबू को नहीं पता कि उनका बेटा दार्जिलिंग में है। ‘मुझे यकीन है कि उसे नहीं पता। और मुझे नहीं लगता कि उसे बताना चाहिए। आखिर, उसे पहले ही एक झटका लग चुका है। एक और झटका उसे और भी परेशान कर सकता है...’ टिंकोरी बाबू रुक गए। फिर उन्होंने सीधे फेलुदा की ओर देखा और सिर हिलाया। ‘मुझे लगता है मैं पागल हो रहा हूँ। सच में, मुझे रहस्य कथाएँ लिखना छोड़ देना चाहिए।’
फेलुदा हँस पड़ा। 'तुम्हारा मतलब है कि तुम्हें अभी-अभी यह ख्याल आया कि यह पत्र खुद प्रबीर मजूमदार ने भेजा होगा?'
‘बिल्कुल सही। लेकिन... मुझे नहीं पता...’ टिंकोरी बाबू अनमने ढंग से बोलते- बोलते रुक गए।
वेटर वापस आया और हमारे सामने हॉट चॉकलेट रख दी। इससे वह खुश हो गया। उसने पूछा, 'डॉ. फोनी मित्रा के बारे में आपको कैसी जानकारी मिली?'
'हे भगवान, आपको कैसे पता चला कि मैं वहां गया था?'
'आपके जाने के कुछ ही समय बाद मैं उनसे मिलने गया था।'
क्या तुमने मुझे उसके घर से बाहर आते देखा?
नहीं। मुझे उसके फर्श पर सिगरेट का एक टुकड़ा मिला। मुझे पता था कि वह धूम्रपान नहीं करता, इसलिए मैंने उससे पूछा कि क्या उसका कोई मरीज़ था। उसने हाँ कहा, और उसके विवरण से मैं समझ गया कि वह आप ही थे। हालाँकि, तब मुझे नहीं पता था कि आप धूम्रपान करते हैं। अब, आपकी थोड़ी पीली उंगलियों को देखकर, मैं पूरी तरह से निश्चित हो सकता हूँ।
‘आप वाकई बहुत चतुर व्यक्ति हैं। लेकिन मुझे बताइए, क्या आपको डॉ. मित्रा पर भी शक था?’
'हां। वह बिल्कुल भी विश्वास जगाने वाला नहीं है, है ना?'
‘आप सही कह रहे हैं। मुझे आश्चर्य है कि राजेन बाबू किसी और के बजाय उनसे सलाह क्यों नहीं लेते।’

‘इसके पीछे एक कारण है। दार्जिलिंग पहुंचने के कुछ ही समय बाद, राजेन बाबू अचानक धार्मिक हो गए थे। उस समय डॉ. मित्रा ने ही उनके लिए एक गुरु ढूंढा था। एक ही गुरु के अनुयायी होने के नाते, अब वे भाइयों की तरह हैं।’
‘मैं समझ गया। लेकिन क्या डॉ. मित्रा ने कुछ उपयोगी बताया? आपने किस बारे में बात की?’
‘ओह, बस इतना ही। मैं तो बस उनकी अलमारियों में रखी किताबें देखने गया था। ज्यादा किताबें नहीं थीं। जो भी मैंने देखीं, सब पुरानी थीं।’
'हां, मैंने भी इसे देखा।'
ध्यान रहे, हो सकता है कि उसने सही छपे हुए शब्दों को पाने के लिए कहीं और से अलग-अलग किताबें मंगवाई हों। लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि ऐसा नहीं है। वह आदमी इतना आलसी लगता था कि इतनी मेहनत करने की उसे कोई ज़रूरत ही नहीं थी।
अच्छा, तो डॉ. मित्रा का मामला सुलझ गया। श्री घोषाल के बारे में आपकी क्या राय है?
मुझे उस पर भरोसा नहीं है। वह एक धोखेबाज है। वह कला और प्राचीन वस्तुओं में रुचि होने का दिखावा करता है, लेकिन मुझे लगता है कि वह वास्तव में विदेशी खरीदारों को वही चीजें बहुत अधिक कीमत पर बेचना चाहता है जो वह यहां अपेक्षाकृत सस्ते में खरीद सकता है।
लेकिन क्या आपको लगता है कि राजेन बाबू को धमकी भरा पत्र भेजने के पीछे उसका कोई मकसद हो सकता है?
मैंने इसके बारे में ज्यादा सोचा नहीं है।
मुझे लगता है कि मुझे कुछ महत्वपूर्ण खोज निकल आई है।
मैंने अचरज से फेलुदा की ओर देखा। उसकी आँखें उत्साह से चमक रही थीं। 'आपका क्या मतलब है?'
फेलुदा ने अपनी आवाज धीमी करते हुए कहा, 'मुझे आज पता चला कि जिस दुकान पर वे दोनों जाते हैं, वहां आज शाम को कुछ ताजा सामान आने वाला है।'
टिंकोरी बाबू तुरंत चौकन्ने हो गए। ‘मैं समझ गया, मैं समझ गया!’ उन्होंने कहा। ‘ऐसा पत्र स्वाभाविक रूप से राजेन बाबू को डराकर कुछ दिनों के लिए घर पर ही रोक देगा। इस बीच, अबानी घोषाल अंदर जाकर सब कुछ तहस-नहस कर देंगे।’ 'बिल्कुल।'

टिंकोरी बाबू ने चॉकलेट और गुलाब का बिल चुकाया। हम साथ बाहर गए। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। अबानी घोषाल, प्रबीर मजूमदार और डॉ. फोनी मित्रा। तीन संदिग्ध। असली अपराधी कौन था?
टिंकोरी बाबू घर चले गए। मैं और फेलुदा माउंट एवरेस्ट होटल गए। उन्होंने पुष्टि की कि प्रबीर मजूमदार नाम का एक व्यक्ति पाँच दिन पहले होटल में चेक-इन कर चुका था।
हमें शाम को राजेन बाबू से मिलने जाना था। लेकिन शाम करीब चार बजे इतनी तेज बारिश होने लगी कि हमें घर में ही रुकना पड़ा। फेलुदा ने पूरी शाम एक नोटबुक में कुछ न कुछ लिखते हुए बिताई। मैं यह जानने के लिए बेताब थी कि वह क्या लिख रहा है, लेकिन पूछने की हिम्मत नहीं कर पाई। आखिर में, मैंने टिंकोरी बाबू द्वारा फेलुदा को दी गई किताब उठाई और उसे पढ़ना शुरू किया। वह इतनी रोमांचक थी कि कुछ ही मिनटों में राजेन बाबू के सारे विचार मेरे दिमाग से निकल गए।
रात 8 बजे बारिश रुक गई। लेकिन तब तक बाहर बहुत ठंड हो चुकी थी। पिताजी ने पहली बार दृढ़ता दिखाई और हमें बाहर जाने से मना कर दिया।
अगली सुबह फेलुदा ने मुझे जगाया। 'उठो, टॉपशे। जल्दी!'
‘क्या—क्या बात है?’ मैं उठकर बैठ गया।
फेलुदा ने दांत भींचते हुए मेरे कान में फुसफुसाया, “राजेन बाबू का नेपाली नौकर कुछ देर पहले यहाँ आया था। उसने कहा कि राजेन बाबू हमसे मिलना चाहते हैं, और यह बहुत जरूरी है। क्या तुम मेरे साथ चलना चाहोगे?”
'बिल्कुल!'
हम तैयार हुए और बीस मिनट से भी कम समय में राजेन बाबू के घर पहुँच गए। हमने उन्हें बिस्तर पर लेटे हुए पाया, उनका चेहरा पीला और मुरझाया हुआ लग रहा था। डॉक्टर मित्रा उनके पास थे और उनकी नब्ज़ देख रहे थे; और टिंकोरी बाबू ठंड के बावजूद उनके सामने खड़े होकर हाथ के पंखे से उन्हें हवा दे रहे थे।
जैसे ही हम अंदर आए, डॉ. मित्रा ने अपना हाथ छोड़ दिया। राजेन बाबू ने कुछ मुश्किल से बोलना शुरू किया। “कल रात... आधी रात के बाद... मैं अचानक जाग गया और वहाँ... इसी कमरे में... मैंने एक नकाबपोश चेहरा देखा!” राजेन बाबू ने आगे कहा, “मैं आपको बता नहीं सकता... कि मैंने रात कैसे बिताई!”
क्या कुछ चोरी हुआ है?

नहीं। लेकिन मुझे यकीन है कि वह मेरे ऊपर झुका... सिर्फ मेरे तकिए के नीचे से चाबियां निकालने के लिए। ओह, यह भयानक था... भयानक!
डॉक्टर ने कहा, 'आराम करो। मैं तुम्हें नींद लाने के लिए दवा दूंगा। तुम्हें पूरी तरह से आराम की जरूरत है।' वह खड़ा हो गया।
‘डॉक्टर मित्रा,’ फेलुदा ने अचानक कहा, ‘क्या आप कल रात किसी मरीज को देखने गए थे? आपकी जैकेट पर मिट्टी का एक धब्बा लगा हुआ है।’
‘जी हां,’ डॉ. मित्रा ने सहजता से जवाब दिया। ‘मुझे कल रात बाहर जाना पड़ा था। चूंकि मैंने अपना जीवन अपने मरीजों की सेवा में समर्पित करने का निर्णय लिया है, इसलिए जब मेरी जरूरत होती है, तो मैं बाहर जाने से मना नहीं कर सकता, चाहे बारिश हो या धूप।’
उन्होंने अपनी फीस ली और चले गए। राजेन बाबू अपने बिस्तर पर उठ बैठे। उन्होंने कहा, “आपके आने से मुझे काफी अच्छा लग रहा है। सच कहूँ तो मैं काफी घबराया हुआ था। लेकिन अब मुझे लगता है कि मैं जाकर बैठक में बैठ सकता हूँ।” फेलुदा और टिंकोरी बाबू ने उन्हें उठने में मदद की। हम बैठक में चले गए।
‘मैंने रेलवे स्टेशन पर फोन करके अपना टिकट बदलवाया,’ टिंकोरी बाबू ने कहा। ‘मैं आज जाना नहीं चाहता। लेकिन उन्होंने कहा कि अगर मैंने अभी टिकट रद्द करवाया तो वे मुझे अगले दस दिनों तक कोई बुकिंग नहीं दे पाएंगे। इसलिए मुझे डर है कि मुझे जाना ही पड़ेगा।’ यह सुनकर मुझे खुशी हुई। मैं चाहता था कि फेलुदा अकेले ही इस रहस्य को सुलझाए।
राजेन बाबू ने बताया, “मेरे नौकर को कल यहाँ रुकना था, लेकिन मैंने खुद उसे छुट्टी लेने को कहा। उसके पिता बहुत बीमार हैं। वह कल रात घर चला गया।” ‘वह मुखौटा कैसा दिखता था?’ फेलुदा ने पूछा।
‘यह एक बिल्कुल साधारण मुखौटा था, जैसा दार्जिलिंग में कहीं भी मिल जाता है। इस कमरे में ऐसे कम से कम पाँच मुखौटे हैं। देखो, एक और है!’ उसने जिस मुखौटे की ओर इशारा किया, वह लगभग हूबहू वैसा ही था जैसा फेलुदा ने कल मेरे लिए खरीदा था।
टिंकोरी बाबू ने फिर कहा, ‘मुझे लगता है हमें पुलिस को सूचित कर देना चाहिए। अब इसे मज़ाक नहीं कहा जा सकता। राजेन बाबू को सुरक्षा की ज़रूरत पड़ सकती है। फेलू बाबू, आप अपनी जाँच जारी रख सकते हैं, कोई आपत्ति नहीं करेगा। लेकिन सब कुछ सोचने के बाद, मुझे लगता है कि पुलिस को पता होना

चाहिए कि क्या हुआ है। मैं अभी पुलिस स्टेशन जा रहा हूँ। मुझे नहीं लगता कि आपकी जान को कोई खतरा है, राजेन बाबू, लेकिन कृपया उस तिब्बती घंटी पर नज़र रखें।’
हमने जाने का फैसला किया। लेकिन जाने से पहले, फेलुदा ने कहा, 'चूंकि टिंकोरी बाबू आज जा रहे हैं, तो आपके पास एक कमरा खाली हो जाएगा, है ना? क्या आपको कोई आपत्ति होगी अगर हम आकर आज रात उसमें ठहरें?'
नहीं, नहीं, मुझे क्या आपत्ति हो सकती है? तुम मेरे बेटे जैसे हो। मुझे बहुत खुशी होगी। सच कहूँ तो, मेरा हौसला अब टूटने लगा है। जवानी में लापरवाह लोग अक्सर बुढ़ापे में कमजोर हो जाते हैं। कम से कम मेरे साथ तो यही हुआ है।
फेलुदा ने टिंकोरी बाबू से कहा, 'मैं तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने आऊंगा।' लौटते समय हम एक अनोखी चीज़ों की दुकान के पास से गुज़रे। हम दोनों खुद को अंदर देखने से रोक नहीं पाए। हमने देखा कि दो आदमी इधर-उधर देखते हुए बातें कर रहे थे। उनकी बातचीत में जो सहजता और अपनापन झलक रहा था, उससे लग रहा था मानो वे एक-दूसरे को बहुत दिनों से जानते हों। उनमें से एक अबानी घोषाल थे। दूसरे प्रबीर मजूमदार थे। मैंने फेलुदा की तरफ देखा। उन्हें ज़रा भी हैरानी नहीं हुई।
हम तिनकोरी बाबू को विदाई देने के लिए साढ़े दस बजे स्टेशन गए। वे पाँच मिनट में आ गए। उन्होंने कहा, “पहाड़ी पर चलने से मेरे पैर दुख रहे हैं।” मैंने देखा कि वे थोड़ा लंगड़ाकर चल रहे थे। उन्होंने आगे कहा, “इसके अलावा, इसे खरीदने में मुझे थोड़ा समय लग गया। मुझे पता है कि राजेन बाबू स्मृति चिन्ह की दुकान पर नहीं जा सके, लेकिन कल वहाँ वाकई बहुत सारी अच्छी चीज़ें आई थीं। इसलिए मैंने आज सुबह उनके लिए कुछ चुना। क्या आप कृपया इसे मेरी शुभकामनाओं के साथ उन्हें दे देंगे?”
‘ज़रूर,’ फेलुदा ने टिंकोरी बाबू से एक भूरा लिफाफा लेते हुए कहा। ‘एक बात मैं आपसे पूछना चाहता था। अगर मैं इस रहस्य को सुलझा लेता हूँ, तो मैं आपको इसके बारे में बताना चाहूँगा। क्या आप मुझे अपना पता दे सकते हैं?’
‘मेरी किताब में आपको मेरे प्रकाशक का पता मिल जाएगा। वो मुझे संबोधित सभी पत्र आगे भेज देंगे। अलविदा... शुभकामनाएं!’
वह नीले रंग के प्रथम श्रेणी के डिब्बे में चढ़ गया। ट्रेन चल पड़ी।

'अगर वह विदेश में रहता तो खूब पैसा कमाता और नाम कमाता। उसमें अपराध कथाएँ लिखने की अद्भुत प्रतिभा है,' फेलुदा ने टिप्पणी की।
हम स्टेशन से अपने होटल लौट आए। लेकिन फेलुदा फिर बाहर चला गया और इस बार उसने मुझे अपने साथ ले जाने से इनकार कर दिया। जब वह आखिरकार लौटा, तो राजेन बाबू के घर रात बिताने का समय हो गया था। जब हम रवाना हुए, तो मैंने उससे कहा, 'कम से कम मुझे यह तो बता दो कि तुम दिन में कहाँ थे।'
‘मैं कई जगहों पर गया। दो बार माउंट एवरेस्ट होटल, एक बार डॉ. मित्रा के घर, फिर एक क्यूरियो शॉप, पुस्तकालय और एक-दो अन्य जगहों पर।’
'अच्छा ऐसा है।'
क्या आप कुछ और जानना चाहेंगे?
‘क्या आप यह पता लगा पाए हैं कि असली हत्यारा कौन है?’
‘अभी उस बात का खुलासा करने का समय नहीं आया है। नहीं, अभी नहीं।’
लेकिन आपको सबसे ज्यादा शक किस पर है?
मुझे आप समेत सभी पर शक है।
'मुझे?'
'हां। मास्क पहने हुए कोई भी व्यक्ति संदिग्ध है।'
'सच में? तो फिर आप खुद को भी अपनी सूची में क्यों नहीं शामिल कर लेते?' ‘बकवास मत करो।’
‘मैं नहीं! तुमने मुझे यह नहीं बताया कि तुम राजेन बाबू को जानते हो, जिसका मतलब है कि तुम मेरे साथ पूरी तरह ईमानदार नहीं थे। इसके अलावा, तुम आसानी से उस मुखौटे का इस्तेमाल कर सकते थे। मैंने उसे कहीं छिपाया तो नहीं था, है ना?’
'चुप रहो, चुप रहो!'
जब हम राजेन बाबू के घर पहुँचे तो उनकी हालत काफी बेहतर लग रही थी, हालाँकि उनमें अभी भी थोड़ी बेचैनी झलक रही थी। उन्होंने हमसे कहा, 'दिन भर तो मैं ठीक महसूस कर रहा था, लेकिन अब अंधेरा होने लगा है और मुझे फिर से घबराहट होने लगी है।'
फेलुदा ने टिंकोरी बाबू का पैकेट राजेन बाबू को दिया। राजेन बाबू ने उसे झटपट खोला और उसमें से बुद्ध की एक सुंदर मूर्ति निकाली, जिसे देखकर उनकी आंखों में आंसू आ गए।
फेलुदा ने पूछा, 'क्या पुलिस पूछताछ करने आई थी?'

'हाँ, बिल्कुल। उन्होंने हज़ार सवाल पूछे। पता नहीं उन्हें कुछ पता चलेगा या नहीं, लेकिन कम से कम वे रात में घर के बाहर किसी को तैनात करने के लिए तो राज़ी हो गए हैं। राहत की बात है। वैसे, अगर आप अपने होटल वापस जाना चाहें तो कोई दिक्कत नहीं होगी।'
'नहीं, अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो हम यहीं रहना पसंद करेंगे। हमारे होटल में बहुत शोर है। मुझे इस मामले के बारे में सोचने के लिए शांति और सुकून चाहिए।'
राजेन बाबू मुस्कुराए। “बेशक आप यहाँ रुक सकते हैं। आपको यहाँ शांति और सुकून मिलेगा, और मैं आपको बेहतरीन भोजन का वादा कर सकता हूँ। वह नेपाली लड़का बहुत अच्छा खाना बनाता है। मैंने उससे उसकी खास चिकन करी बनाने को कहा है। मुझे पूरा यकीन है कि आपके होटल का खाना इसके आधे स्वाद का भी नहीं हो सकता।”
हमें हमारे कमरे में ले जाया गया। फेलुदा अपने बिस्तर पर लेट गया और सिगरेट जलाई। मैंने उसे लगातार पांच बार धुएं के छल्ले उड़ाते देखा। उसकी आंखें आधी बंद थीं। कुछ पल की चुप्पी के बाद उसने कहा, 'डॉक्टर मित्रा कल रात एक मरीज को देखने गए थे। मुझे आज सुबह पता चला। एक अमीर व्यापारी जो कार्ट रोड में रहता है। वह अपने मरीज के साथ ग्यारह बजकर साढ़े बारह बजे तक थे।'
क्या इससे वह पूरी तरह से बाहर हो जाता है?
फेलुदा ने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उन्होंने कहा, 'प्रबीर मजूमदार इतने लंबे समय से विदेश में रह रहा है और उसके पास इतना पैसा है कि मुझे समझ नहीं आता कि वह अचानक यहाँ आकर अपने पिता को क्यों धमकाना चाहेगा। असल में, उसे इससे कुछ खास फायदा नहीं होगा। अरे, मुझे तो पता चला है कि उसने हाल ही में स्थानीय घुड़दौड़ में खूब पैसा कमाया है!'
मैं सांस रोककर बैठा रहा। यह स्पष्ट था कि फेलुदा ने अपनी बात पूरी नहीं की थी। मैं सही था। फेलुदा ने अपनी सिगरेट बुझाई और आगे कहा, 'श्री गिलमोर अपने चाय बागान से दार्जिलिंग आए हैं। मैं उनसे प्लांटर्स क्लब में मिला। उन्होंने मुझे बताया कि दलाई लामा के महल से केवल एक ही तिब्बती घंटी आई है, और वह उनके पास है। राजेन बाबू के पास जो घंटी है वह नकली है। अबानी घोषाल को इसकी जानकारी है।'
'आपका मतलब है कि जो घंटी हमने यहां देखी, वह उतनी कीमती नहीं है?'

नहीं। इसके अलावा, अबानी घोषाल और प्रबीर मजूमदार दोनों कल रात 9 बजे से सुबह 3 बजे तक एक पार्टी में थे। मुझे लगता है कि वे पूरी तरह से नशे में धुत हो गए थे।
'नकाबपोश वह आदमी आधी रात के कुछ ही देर बाद यहां आया था, है ना?'
'हाँ।'
मुझे कुछ अजीब सा महसूस होने लगा। 'तो फिर हमारे पास कौन बचता है?'
फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने आह भरी और उठ खड़ा हुआ। उसने कहा, 'मैं थोड़ी देर के लिए बैठक में बैठूंगा। मुझे परेशान मत करना।'
उसके जाने के बाद मैं बिस्तर पर उसकी जगह लेट गया। अंधेरा हो रहा था, लेकिन मुझे उठकर लाइट जलाने में बहुत आलस आ रहा था। खुली खिड़की से मुझे दूर ऑब्जर्वेटरी हिल पर रोशनी दिखाई दे रही थी। मॉल का शोर कम हो गया था। थोड़ी देर बाद मुझे घोड़ों के खुरों की आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ धीरे-धीरे तेज़ होती गई, फिर धीरे-धीरे कम होती गई।
कुछ ही देर में लगभग पूरा अंधेरा छा गया। पहाड़ी और उस पर बने घर अब लगभग अदृश्य हो गए थे। शायद फिर से कोहरा छा रहा था। मुझे नींद आने लगी। जैसे ही मेरी आँखें बंद होने लगीं, अचानक मुझे कमरे में किसी और की मौजूदगी का एहसास हुआ। मेरा खून जम गया। डर के मारे मैं दरवाजे की तरफ देखने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी, इसलिए मैंने अपनी नज़रें खिड़की पर टिकाए रखीं। लेकिन मैं उस आदमी को बिस्तर के करीब आते हुए महसूस कर सकती थी। अब वह मेरे ठीक बगल में खड़ा था और मेरे चेहरे के ऊपर झुका हुआ था। मैं स्तब्ध होकर उसके चेहरे को करीब आते हुए देखती रही... ओह, यह कितना भयानक था... एक मुखौटा! उसने मुखौटा पहन रखा था!
मैंने चीखने के लिए अपना मुंह खोला, लेकिन एक अदृश्य हाथ ने नकाब हटा दिया, और मेरी चीख घबराहट भरी हांफ में बदल गई। 'फेलुदा! हे भगवान, यह तुम हो!' ‘क्या तुम सो गए थे? बिलकुल, मैं ही हूँ। तुम्हें क्या लगा था…?’ फेलुदा हँसने लगा, लेकिन अचानक गंभीर हो गया। फिर वह मेरे बगल में बैठ गया और बोला, ‘मैं बस बैठक में रखे सारे मुखौटे पहनकर देख रहा था। क्यों न तुम भी थोड़ी देर के लिए यह वाला पहन लो?’ उसने अपना मुखौटा मुझे पकड़ा दिया। मैंने उसे पहन लिया।
क्या आपको कुछ असामान्य महसूस हो रहा है?
'नहीं, बिलकुल नहीं! यह मेरे लिए एक साइज बड़ा है, बस इतना ही।'

‘ध्यान से सोचो। क्या ऐसा कुछ और नहीं है जो तुम्हें अजीब लगे?’
'अच्छा... मुझे लगता है कि हल्की सी गंध आ रही है।'
'किस?'
‘चेरूट?’
'बिल्कुल।'
फेलुदा ने मुखौटा उतार दिया। मेरा दिल फिर से तेज़ी से धड़कने लगा। ‘ट-ट-ट-इनकोरी बाबू?’ मैंने हकलाते हुए कहा।
फेलुदा ने आह भरी। ‘हाँ, मुझे लगता है ऐसा ही है। उसके लिए यह बहुत आसान रहा होगा। उसके पास हर तरह की छपी हुई सामग्री उपलब्ध थी; और आपने देखा ही होगा कि वह आज सुबह लंगड़ा रहा था। शायद कल रात खिड़की से कूदने का यही नतीजा हो। लेकिन जो बात मेरी समझ से बिल्कुल परे है, वह है उसका मकसद। वह राजेन बाबू का बहुत सम्मान करता हुआ प्रतीत होता था। फिर उसने ऐसा क्यों किया? किसलिए? शायद हम कभी नहीं जान पाएंगे।’
रात शांतिपूर्वक और बिना किसी हलचल के गुज़री। सुबह, जैसे ही हम अपने मेज़बान के साथ नाश्ता करने बैठे, उनका नेपाली नौकर उनके लिए एक पत्र लेकर आया। यह एक बार फिर दार्जिलिंग की डाक टिकट वाला नीला लिफाफा था।
राजेन बाबू का चेहरा पीला पड़ गया। उन्होंने कांपते हाथों से पत्र निकाला और फेलुदा को देते हुए धीमी आवाज में कहा, 'तुम इसे पढ़ो।'
फेलुदा ने इसे ज़ोर से पढ़ा। इसमें यह लिखा था:
प्रिय राजू, जब ज्ञानेश ने मुझे बताया कि दार्जिलिंग में तुम्हारा घर है, तब मैंने कलकत्ता से तुम्हें पहली बार पत्र लिखा था। उस समय मुझे पता नहीं था कि तुम कौन हो। लेकिन तुम्हारी अलमारी में रखी उस तस्वीर को देखकर मैं तुरंत समझ गया कि तुम वही लड़के हो जो पचास साल पहले बांकुरा के मिशनरी स्कूल में मेरा सहपाठी था। मुझे नहीं पता था कि इतने सालों बाद भी बदला लेने की भावना जाग उठेगी। दरअसल, खेल दिवस पर सौ गज की दौड़ में तुमने मुझे ही लात मारी थी। न सिर्फ मैं पदक जीतने और नया रिकॉर्ड बनाने से चूक गया, बल्कि तुमने मुझे बुरी तरह घायल भी कर दिया था। दुर्भाग्य से, इस घटना के कुछ ही दिनों बाद मेरे पिताजी का तबादला दूसरे शहर में हो गया, इसलिए मुझे तुमसे आमने-सामने बात करने का मौका ही नहीं मिला; और न ही तुम्हें कभी पता चला कि तुमने मुझे मानसिक और शारीरिक रूप से कितना गहरा आघात पहुँचाया था। मुझे तीन महीने अस्पताल में पैर में प्लास्टर लगवाकर रहना पड़ा था। जब

मैंने आपको दार्जिलिंग में इतना सुखमय और शांतिपूर्ण जीवन जीते हुए देखा, तो अचानक मेरे मन में कुछ ऐसा करने का विचार आया जिससे आपको बहुत चिंता हो और कम से कम थोड़े समय के लिए आपकी मानसिक शांति भंग हो जाए। यह आपके पिछले पापों का हिसाब चुकाने और आपको दंडित करने का मेरा तरीका था। शुभकामनाओं सहित, आपका सादर, टीनू (टिंकोरी मुखोपाध्याय)

[illegible] [illegible]

एक

जब मैंने बाबा को यह कहते सुना, ‘चलो इस साल लखनऊ में छुट्टियाँ मनाते हैं। धीरू बहुत दिनों से हमसे मिलने जाने के लिए कह रहा है,’ तो मुझे पहले तो काफी निराशा हुई। मेरा मानना था कि लखनऊ नीरस और उबाऊ है। बाबा ने यह भी कहा कि हम हरिद्वार और लक्ष्मणझूला भी जाएंगे, और लक्ष्मणझूला तो पहाड़ों में ही है—लेकिन यह यात्रा बस कुछ दिनों के लिए ही होगी। हम आमतौर पर या तो दार्जिलिंग या पुरी जाते थे। मुझे समुद्र और पहाड़ दोनों ही पसंद थे। लखनऊ में न तो समुद्र था और न ही पहाड़। इसलिए मैंने बाबा से कहा, ‘क्या हम फेलुदा को अपने साथ आने के लिए नहीं कह सकते?’
फेलुदा का अपने बारे में एक सिद्धांत है। उनका कहना है कि वे जहाँ भी जाते हैं, उनके आसपास रहस्यमय घटनाएँ घटने लगती हैं। और यह बात बिल्कुल सच है, पिछली बार जब वे हमारे साथ दार्जिलिंग गए थे, तो राजेन बाबू के साथ भी वही अजीबोगरीब घटनाएँ घटी थीं। अगर लखनऊ में भी कुछ ऐसा ही हो, तो भले ही वह जगह थोड़ी उबाऊ हो, कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा।
बाबा ने कहा, 'फेलू का हार्दिक स्वागत है, लेकिन क्या वो आ-जा पाएगा?' जब मैंने फेलूदा को यह बताया तो वो काफी उत्साहित दिखे। उन्होंने कहा, 'मैं 1958 में क्रिकेट मैच खेलने वहाँ गया था। वो जगह बिल्कुल भी बुरी नहीं है। अगर आप बुर्रा इमामबाड़ा में बने भूलभुलैया के अंदर जाएँगे, तो यकीनन आपकी आँखें फटी रह जाएँगी। उन नवाबों की कल्पनाशीलता तो गजब की थी—हे भगवान!' ‘तुम्हें छुट्टी मिल जाएगी, है ना?’
फेलुदा ने मेरे सवाल को अनसुना कर दिया और बोलना जारी रखा: 'और यह सिर्फ भूलभुलैया ही नहीं है। आपको गोमती नदी पर बना बंदर पुल और बेशक जर्जर हो चुकी रेसिडेंसी भी देखने को मिलेगी।'
‘रेजिडेंसी क्या है?’
‘विद्रोह के दौरान यह ब्रिटिश सेना का केंद्र था। वे कुछ नहीं कर सके। सिपाहियों ने इसे तहस-नहस कर दिया।’

फेलुदा को अपनी नौकरी करते हुए दो साल हो गए थे। चूंकि उसने पहले साल कोई छुट्टी नहीं ली थी, इसलिए अब उसे दो हफ्ते की छुट्टी मिलना मुश्किल नहीं था।
शायद मुझे यहाँ यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि फेलुदा मेरा चचेरा भाई है। मैं चौदह साल का हूँ और वह सत्ताईस साल का। कुछ लोग उसे पागल समझते हैं, कुछ कहते हैं कि वह सिर्फ़ सनकी है, और कुछ उसे सीधा-सादा आलसी कहते हैं। लेकिन मैं जानता हूँ कि उसकी उम्र के बहुत कम लोग उसकी जैसी बुद्धि रखते हैं। और अगर उसे कोई ऐसा काम मिल जाए जिसमें उसकी रुचि हो, तो वह मेरे जानने वालों में सबसे ज़्यादा मेहनत कर सकता है। इसके अलावा, वह क्रिकेट में माहिर है, कम से कम सौ इनडोर गेम जानता है, कई ताश के करतब जानता है, थोड़ा-बहुत सम्मोहन भी जानता है और दोनों हाथों से लिख सकता है। जब वह स्कूल में था, उसकी याददाश्त इतनी अच्छी थी कि उसने टैगोर की रचना 'देवताओं से छीना गया' के हर शब्द को सिर्फ़ दो बार पढ़ने के बाद याद कर लिया था।
लेकिन फेलुदा की सबसे उल्लेखनीय विशेषता उसकी अनुमान लगाने की क्षमता है। यह कौशल उसने केवल पढ़ने और नियमित अभ्यास से हासिल किया है। पुलिस को अभी तक उसकी प्रतिभा का पता नहीं चला है, इसलिए फेलुदा एक शौकिया निजी जासूस ही बना हुआ है।
किसी व्यक्ति को एक नज़र देखने मात्र से ही उसके बारे में कई बातों का सटीक अनुमान लगाया जा सकता है।
जब हम लखनऊ रेलवे स्टेशन पर धीरू काका से मिले, तो फेलुदा ने मेरे कान में फुसफुसाकर पूछा: 'क्या आपके काका को बागवानी का शौक है?'
मुझे पता था कि धीरू काका का एक बगीचा था, लेकिन फेलुदा को इसके बारे में पता नहीं हो सकता था। आखिर धीरू काका रिश्तेदार तो नहीं थे; बाबा और वे बचपन के दोस्त थे।
मैंने आश्चर्य से पूछा, 'आपने कैसे अनुमान लगाया?'
फेलुदा ने फुसफुसाते हुए कहा, 'जब वह मुड़ेगा, तो तुम्हें उसके दाहिने जूते की एड़ी के नीचे से गुलाब की एक पत्ती निकली हुई दिखाई देगी। और उसके दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली पर आयोडीन का टिंचर लगा होगा। शायद आज सुबह-सुबह गुलाब की झाड़ी में कुछ करने का नतीजा होगा।'
स्टेशन से धीरू काका के घर जाते समय मुझे एहसास हुआ कि लखनऊ वाकई एक खूबसूरत जगह है। चारों ओर बुर्ज और मीनारों वाली इमारतें थीं; सड़कें

चौड़ी और साफ थीं और गाड़ियों के अलावा दो तरह की घोड़ागाड़ियाँ भी चल रही थीं। मुझे पता चला कि एक को तांगा और दूसरी को इक्का कहते हैं। अगर धीरू काका अपनी पुरानी शेवरले में हमसे न मिले होते, तो शायद हमें उन्हीं में से किसी एक में बैठना पड़ता।
धीरू काका ने कहा, 'क्या अब आपको इस अच्छी जगह पर आकर खुशी नहीं हो रही? यह कलकत्ता की तरह गंदी तो नहीं है?'
बाबा और धीरू काका पीछे बैठे थे। मैं और फेलुदा दोनों ड्राइवर दीन दयाल सिंह के बगल में बैठे थे। फेलुदा ने फिर फुसफुसाते हुए कहा, 'उससे भूलभुलैया के बारे में पूछो?'
अगर फेलुदा मुझसे कुछ करने को कहें तो मुझे मना करना मुश्किल लगता है। इसलिए मैंने कहा, 'ढीरु काका, यह भूलभुलाइया क्या है?'
‘आप खुद ही देख लेंगे!’ धीरू काका हँसे, ‘दरअसल यह इमामबाड़ा के अंदर एक भूलभुलैया है। नवाब अपनी रानियों के साथ इसमें लुका-छिपी खेला करते थे।’ इस बार फेलुदा ने स्वयं कहा, 'क्या यह सच है कि आप बिना किसी प्रशिक्षित गाइड के इससे बाहर नहीं निकल सकते?'
'हां, मुझे ऐसा ही लगता है। एक बार एक ब्रिटिश सैनिक—ओह, यह कई साल पहले की बात है—ने कुछ गिलास शराब पी ली थी और किसी के साथ शर्त लगा ली थी। उसने कहा था कि कोई भी उसके पीछे भूलभुलैया में न जाए, वह खुद बाहर आ जाएगा। दो दिन बाद, उसका शव भूलभुलैया की एक गली में मिला।'
मेरे दिल की धड़कन तेज़ हो गई। मैंने फेलुदा से पूछा, 'तुम अकेले गए थे या गाइड के साथ?'
मैंने एक गाइड लिया था। लेकिन अकेले जाना भी संभव है।
'वास्तव में?'
मैं घूरता रहा। खैर, मुझे पता था कि फेलुदा के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं था। 'यह कैसे संभव है?'
फेलुदा की आँखें झुक गईं। उसने दो बार सिर हिलाया, लेकिन चुप रहा। मैं समझ गया कि वह कुछ नहीं बोलेगा। उसकी आँखें अब लखनऊ शहर के हर एक पहलू को निहार रही थीं।
धीरू काका एक वकील थे। वे बीस साल पहले लखनऊ आए थे और यहीं बस गए। मेरा मानना है कि वे विधि जगत में काफी जाने-माने व्यक्ति थे। तीन साल पहले उनकी पत्नी का देहांत हो गया था और उनका बेटा फ्रैंकफर्ट में था। वे अपने नौकर

जगमोहन, एक रसोइया और एक माली के साथ अकेले रहते थे। सिकंदर बाग स्थित उनका घर स्टेशन से तीन मील से थोड़ा अधिक दूरी पर था। मुख्य द्वार पर उनका नाम लिखा था: डी. के. सान्याल, एमए, बीएलबी, एडवोकेट।
पत्थरों से बनी एक पक्की सड़क बंगले तक जाती थी। उसका बगीचा सड़क के दोनों ओर फैला हुआ था। जब हम मुख्य द्वार पर रुके, तो मैंने एक माली को लॉनमूवर चलाते हुए देखा।
दोपहर के भोजन के बाद बाबा ने कहा, 'यात्रा के बाद तुम थक गए होगे। मेरा सुझाव है कि हम कल से दर्शनीय स्थलों की सैर शुरू करें।' इसलिए मैंने पूरी दोपहर फेलुदा से ताश के करतब सीखने में बिताई। फेलुदा ने मुझे बताया, 'भारतीयों की उंगलियां यूरोपियों की तुलना में कहीं अधिक लचीली होती हैं, इसलिए हमारे लिए हाथ की सफाई वाले करतब सीखना आसान होता है।'
शाम को हम चाय पीने के लिए बगीचे में गए। हम यूकेलिप्टस के पेड़ के नीचे कप और तश्तरियाँ लिए बैठे थे कि मुख्य द्वार के बाहर एक कार आकर रुकी। फेलुदा ने बिना देखे ही कहा, 'फिएट।' इसके बाद ड्राइववे पर कदमों की आहट सुनाई दी और थोड़ी देर बाद एक सज्जन भूरे रंग के सूट में दिखाई दिए। उनका रंग गोरा था, उन्होंने चश्मा पहना हुआ था और उनके बाल लगभग सफेद थे। फिर भी, यह स्पष्ट था कि वे बाबा से बहुत ज्यादा बड़े नहीं थे।
धीरू काका मुस्कुराते हुए उठे, उनके हाथ नमस्कार की मुद्रा में जुड़े हुए थे। उन्होंने कहा, 'जगमोहन, एक और कुर्सी लाओ।' बाबा की ओर मुड़ते हुए उन्होंने आगे कहा, 'मुझे एक विशेष मित्र से आपका परिचय कराने दीजिए। ये हैं डॉ. श्रीवास्तव।'
तब तक फेलुदा और मैं दोनों उठ चुके थे। फेलुदा ने धीमी आवाज़ में कहा, 'यह लड़का किसी वजह से घबराया हुआ है। यह तुम्हारे पिता को नमस्कार करना भूल गया।'
धीरू काका ने आगे कहा, 'श्रीवास्तव एक अस्थि रोग विशेषज्ञ और सच्चे लखनऊवासी हैं।'
मैंने फेलुदा को फिर फुसफुसाते हुए सुना। 'क्या तुम जानते हो कि ऑस्टियोपैथ क्या होता है?'
'नहीं।'
‘एक डॉक्टर जो आपकी हड्डियों की समस्याओं में विशेषज्ञता रखता है।’

एक अतिरिक्त कुर्सी आई और हम सब बैठ गए। डॉक्टर श्रीवास्तव ने अनजाने में बाबा का चाय का प्याला उठाया और एक घूंट पीने ही वाले थे कि बाबा ने धीरे से खांसा। डॉक्टर श्रीवास्तव चौंक गए, बोले, 'मुझे बहुत खेद है,' और प्याला नीचे रख दिया।
धीरू काका ने सोच-विचार करते हुए कहा, 'आज आप कुछ परेशान लग रहे हैं। क्या आप किसी मुश्किल मामले के बारे में सोच रहे हैं?'
इस मौके पर बाबा ने हस्तक्षेप किया।
‘धिरु, तुम उससे बंगाली में बात कर रहे हो। क्या उसे समझ आ रहा है?’ धिरु काका हँसे, ‘समझना? हे भगवान—श्रीवास्तव, टैगोर की कुछ पंक्तियाँ क्यों नहीं सुना देते?’
डॉ. श्रीवास्तव थोड़े असहज दिखे। उन्होंने स्वीकार किया, 'मुझे थोड़ी बंगाली आती है, और मैंने टैगोर की कुछ रचनाएँ पढ़ी हैं।'
'वास्तव में?'
‘जी हां। महान कवि।’
मैंने सोचा, शायद अब वे कविता पर एक बड़ी चर्चा शुरू करेंगे। लेकिन डॉ. श्रीवास्तव ने इस बार कांपते हाथों से अपना प्याला उठाया और कहा, 'कल रात एक डाकू मेरे घर आया था।'
डाकू? ये क्या था?
धीरू काका के अगले शब्दों ने बात स्पष्ट कर दी। 'आपका मतलब डाकू से है? हे भगवान! मुझे लगा था कि वे सिर्फ मध्य प्रदेश में ही होते हैं। कोई लखनऊ में कैसे घुस गया?'
‘इसे डकैत कहो या साधारण चोर। आप मेरे गिरोह के बारे में जानते ही होंगे, है ना, श्रीमान सान्याल?’
‘प्यारेलाल ने तुम्हें जो दिया था? क्या वो चोरी हो गया है?’
नहीं, नहीं। लेकिन मुझे यकीन है कि चोर इसे चुराने आया था।
बाबा ने कहा, 'यह अंगूठी के बारे में क्या बात है?'
डॉ. श्रीवास्तव धीरू काका की ओर मुखातिब हुए। 'तुम उसे बता दो।'
धीरू काका ने बताया, ‘प्यारेलाल सेठ लखनऊ के एक प्रसिद्ध और धनी व्यापारी थे। जन्म से गुजराती, वे कुछ समय तक कलकत्ता में रहे थे। इसलिए उन्हें बंगाली भाषा का थोड़ा-बहुत ज्ञान था। जब उनका बेटा महावीर लगभग तेरह वर्ष का था, तब वह हड्डियों से संबंधित एक गंभीर बीमारी से ग्रसित हो गया। डॉ.

चुराने आया था? क्या कुछ और भी नहीं चुराया गया? आखिर, हो सकता है वो—या वो — सिर्फ मामूली चोर हों, जिन्हें सिर्फ पैसों में दिलचस्पी हो।’ श्रीवास्तव ने कहा, “अच्छा, मैं समझाता हूँ। हमारे इलाके में चोर और सेंधमार अक्सर नहीं आते, इसका मुख्य कारण बोनोबिहारी बाबू हैं। इसके अलावा, श्री झुनझुनवाला मेरे पड़ोस में रहते हैं, और श्री बिलिमोरिया उनके बगल में। दोनों बहुत अमीर हैं। उनके घर देखकर ही यह पता चलता है। तो फिर कोई चोर मेरे साधारण से घर में क्यों आएगा?”
धीरू काका ने कहा, “अगर आपके पड़ोसी अमीर हैं, तो उन्होंने अपनी दौलत की सुरक्षा के लिए जरूर इंतजाम किए होंगे। एक छोटा-मोटा चोर इतनी कड़ी सुरक्षा में सेंध लगाने का जोखिम नहीं उठाएगा। आखिर, बड़ी रकम उसका खेल तो नहीं है, है ना? मुझे लगता है कि अगर उसे पांच सौ रुपये मिल जाएं, तो वह छह महीने तक आराम से गुजारा कर लेगा। इसलिए मुझे हैरानी नहीं है कि चोर आपके घर में घुसे, आपके पड़ोसी के घर में नहीं।”
डॉ. श्रीवास्तव का चेहरा अब भी संशय में था। उन्होंने कहा, 'मुझे सच में नहीं पता, श्री सान्याल। मुझे पूरा यकीन है कि वे उस अंगूठी के पीछे पड़े थे। उन्होंने मेरे कमरे के बगल वाले कमरे में एक अलमारी खोली। उसके सारे दराज बाहर निकले हुए थे। उसमें और भी कीमती चीजें थीं और उन्हें चुराने के लिए काफी समय था। फिर भी, जब मैं अचानक जागा, तो वे बिना कुछ लिए भाग गए। मुझे यह अजीब लगता है। इसके अलावा—'
श्रीवास्तव अचानक रुक गए और भौंहें चढ़ा लीं। कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद उन्होंने कहा, 'जब प्यारेलाल ने मुझे वह अंगूठी दी, तो मुझे लगा कि वह बस उससे छुटकारा पाना चाहते थे। किसी कारणवश वह उसे अपने घर में और नहीं रखना चाहते थे। और—'
वह फिर रुक गया और एक बार फिर भौंहें चढ़ा लीं।
‘And what, Dr Srivastava?’ asked Dhiru Kaka.
श्रीवास्तव ने आह भरी। 'मैं उनके दूसरे दौरे के बाद उनसे मिलने गया था। उन्होंने मुझे कुछ बताने की कोशिश की, लेकिन बता नहीं सके। लेकिन मैंने एक बात साफ-साफ सुनी।'
'वह क्या था?'
उसने यह बात दो बार कही—“एक जासूस... एक जासूस...”
Dhiru Kaka rose from the sofa.

‘नहीं, डॉक्टर,’ उन्होंने कहा, ‘प्यारेलाल ने जो भी कहा हो, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे पूरा यकीन है कि वह एक आम चोर था। शायद आपने सुना न हो, लेकिन हाल ही में बैरिस्टर भुदेब मित्रा के घर में भी चोरी हुई थी। चोर एक रेडियो और कुछ चांदी के गहने लेकर फरार हो गए। लेकिन अगर आपको अंगूठी घर में रखने में घबराहट हो रही है, तो आप बेझिझक उसे मेरे पास छोड़ सकते हैं। मैं उसे अपनी गोदरेज अलमारी में रख दूंगा और वह बिल्कुल सुरक्षित रहेगी। जब आपकी घबराहट दूर हो जाए, तब आप उसे ले सकते हैं।’
श्रीवास्तव के चेहरे पर राहत साफ झलक रही थी। उनके होंठों पर मुस्कान फैल गई। 'मैं यही तो प्रस्ताव लेकर आया था, लेकिन कह नहीं पाया। बहुत-बहुत धन्यवाद, श्रीमान सान्याल। अगर आप अंगूठी रख लें तो मुझे बहुत राहत मिलेगी।'
उसने अपनी जेब से अंगूठी निकाली और धीरू काका को सौंप दी, जो उसे लेकर सीधे अपने बेडरूम में चले गए।
इस पर फेलुदा ने अपना मुंह खोला। 'बोनोबिहारी कौन है?'
'बाबू?' उसने पूछा।
‘क्षमा करें?’ डॉ. श्रीवास्तव अभी भी कुछ चिंतित थे।
‘क्या आपने अभी-अभी यह नहीं कहा था कि आपके इलाके के घर बोनोबिहारी बाबू की वजह से चोरों से सुरक्षित हैं? वह कौन है? क्या वह पुलिस में कोई है?’ श्रीवास्तव हँसे, “अरे नहीं, नहीं। उनका पुलिस से कोई लेना-देना नहीं है— लेकिन वे हमें ऐसी विशेष सुरक्षा प्रदान करते हैं जो पुलिस से भी बेहतर है। वे एक बहुत ही दिलचस्प व्यक्ति हैं। उनके पूर्वज बंगाल में ज़मींदार थे। जब उनकी ज़मीन छिन गई, तो बोनोबिहारी बाबू ने व्यापार शुरू किया। उन्होंने जानवरों का निर्यात शुरू किया।”
'जानवर?' बाबा और फेलुदा एक साथ बोले।
जी हां। यूरोप, अमेरिका या ऑस्ट्रेलिया में चिड़ियाघरों, सर्कसों और टेलीविजन के लिए अक्सर यहां के जानवरों की जरूरत पड़ती है। कई भारतीय इस व्यवसाय में हैं। मुझे लगता है बोनोबिहारी बाबू ने खूब पैसा कमाया। वे करीब तीन साल पहले सेवानिवृत्त हुए और अपने कुछ जानवरों के साथ लखनऊ आ गए।
उन्होंने मेरे घर से कुछ ही दूरी पर एक घर खरीदा और उसे चिड़ियाघर में बदल दिया।
‘यह तो बहुत अजीब बात है!’ बाबा ने हैरानी से कहा।

'हाँ। इस चिड़ियाघर की खासियत यह है कि इसके सभी जानवर बहुत... बहुत... मैं इसे कैसे कहूँ...'
'दुष्ट?'
'हां, हां। बस यही है। बेहद क्रूर।'
मैंने सुना था कि लखनऊ में पहले से ही एक बहुत अच्छा चिड़ियाघर है। वहां जानवरों को खुले में, एक कृत्रिम द्वीप पर रखा जाता है। लेकिन यह निजी चिड़ियाघर क्या था?
श्रीवास्तव ने आगे कहा, 'उसके पास एक जंगली बिल्ली है। और एक लकड़बग्घा, एक मगरमच्छ और एक बिच्छू भी है। इनमें से कुछ जानवरों की आवाजें दूर से भी सुनी जा सकती हैं। चोर हमारे रास्ते में आने की हिम्मत नहीं करते!'
अब फेलुदा ने वही सवाल पूछा जो मेरे होठों पर अटका हुआ था। 'क्या इस चिड़ियाघर को देखना संभव है?'
इसी क्षण धीरू काका वापस लौटे और बोले, 'यह तो बहुत आसान है। हम कभी भी जा सकते हैं। बोनोबिहारी बाबू बहुत ही मिलनसार व्यक्ति हैं, बिलकुल भी दुष्ट नहीं!'
श्रीवास्तव विदा लेने के लिए उठे। 'मुझे अब जाना होगा। मुझे एक मरीज को देखना है।'
हम उन्हें विदा करने के लिए मुख्य द्वार तक उनके साथ गए। उन्होंने सबको शुभ रात्रि कहा, धीरू काका को फिर से धन्यवाद दिया और अपनी फिएट कार में बैठकर चले गए। बाबा और धीरू काका घर की ओर वापस चलने लगे। फेलुदा ने अपनी जेब से सिगरेट निकाली और जलाने ही वाले थे कि एक काली कार तेज़ी से हमारे पास से गुज़री और डॉ. श्रीवास्तव की कार की दिशा में ही गायब हो गई। फेलुदा ने कहा, 'स्टैंडर्ड हेराल्ड, मुझसे नंबर छूट गया।'
आप उस संख्या का क्या करेंगे?
ऐसा लग रहा था जैसे वह कार डॉ. श्रीवास्तव का पीछा कर रही थी। क्या आपको सड़क के दूसरी तरफ का अंधेरा नहीं दिख रहा? वह वहीं इंतजार कर रही थी। ड्राइवर ने हमारे गेट के सामने गियर बदला। क्या आपने ध्यान नहीं दिया? फेलुदा घर की ओर मुड़ा। वह फाटक से कम से कम पचास गज दूर था। मैं यह बता सकता था, क्योंकि मैंने स्कूल में अक्सर सौ गज की दौड़ में हिस्सा लिया था। बैठक में बत्ती जल रही थी। मैं खिड़की से साफ देख सकता था। बाबा और धीरू काका कमरे में जा रहे थे। फिर मैंने फेलुदा की ओर देखा। वह खुली खिड़की को

घूर रहा था। उसके चेहरे की शिकन और होंठ चबाने के तरीके से मुझे पता चला कि वह किसी बात को लेकर चिंतित था।
‘तुम्हें पता है, टॉपशे—’
मेरा असली नाम टॉपशे नहीं है। मेरा नाम तपेश है, लेकिन फेलुदा ने इसे बदलकर टॉपशे कर दिया है।
मैंने पूछा, ‘क्या?’
मुझे ऐसा होने नहीं देना चाहिए था।
'तुम किस बारे में बात कर रहे हो?'
‘वह खिड़की बंद होनी चाहिए थी। गेट से उस कमरे में होने वाली हर बात दिखाई देती है। एक साधारण बल्ब से शायद फर्क पड़ जाता; लेकिन धीरू काका ने फ्लोरोसेंट लाइट लगवा रखी है, जिससे स्थिति और खराब हो गई है।’
‘अगर आप सब कुछ देख सकते हैं तो क्या हुआ?’
क्या आप अपने पिता को देख सकते हैं?
‘सिर्फ उसका सिर। वह कुर्सी पर बैठा है।’
‘दस मिनट पहले उस कुर्सी पर कौन बैठा था?’
‘डॉ. श्रीवास्तव।’
‘वह तुम्हारे पिता को अंगूठी दिखाने के लिए खड़ा हुआ था, याद है?’
'हां। मैं चीजों को इतनी जल्दी नहीं भूलता।'
'अगर कोई गेट से देख रहा होता, तो वह उसे ऐसा करते हुए आसानी से देख सकता था।'
‘अरे नहीं! लेकिन आपको क्या लगता है कि वहाँ कोई हो सकता था?’ फेलुदा झुका और पथरीले रास्ते से एक छोटी सी वस्तु उठाई। चुपचाप उसने मुझे दे दी। वह सिगरेट का टुकड़ा था। ‘इसके सिरे को ध्यान से देखो,’ फेलुदा ने कहा।
मैंने उसे ध्यान से देखा और स्ट्रीट लैंप की हल्की रोशनी में, मुझे जो देखना था वह देख लिया।
‘तो?’ फेलुदा ने कहा।
मैंने जवाब दिया, 'चारमीनार, और जो भी इसे पी रहा था, वह पान भी चबा रहा था। इसका एक सिरा पान के रस से सना हुआ है।'
'बहुत बढ़िया। चलो, अंदर चलते हैं।'
उस रात, सोने से पहले, फेलुदा ने धीरू काका से अंगूठी दोबारा दिखाने को कहा। हम दोनों ने उसे ध्यान से देखा। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि

फेलुदा पत्थरों के बारे में इतना कुछ जानते हैं। उन्होंने मेज पर रखे लैंप के नीचे अंगूठी को बार-बार घुमाया और लगातार बताते रहे: 'ये नीले पत्थर जो आप देख रहे हैं, इन्हें नीलम कहते हैं। लाल वाले माणिक हैं और हरे वाले पन्ना। बाकी, मुझे लगता है, पुखराज हैं। लेकिन असली देखने लायक चीज तो यह बीच में लगा हीरा है। इतने बड़े पत्थर को हाथ में पकड़ने का सौभाग्य तो बहुत कम लोगों को मिला होगा!'
फिर उसने अंगूठी को अपने बाएं हाथ की तीसरी उंगली में पहनाया और कहा, 'देखो, मेरी उंगली का आकार औरंगजेब की उंगली के बराबर है!'
जी हां, अंगूठी एकदम फिट बैठ गई।
फेलुदा ने चमकते पत्थरों को घूरते हुए कहा, 'कौन जाने, इस अंगूठी का अतीत कितना रहस्यमय रहा होगा। लेकिन जानते हो क्या, टॉपशे—मुझे इसके इतिहास में कोई दिलचस्पी नहीं है। चाहे यह कभी औरंगजेब की रही हो, अल्तमश की या अकरम खान की, यह मायने नहीं रखता। हमें यह जानना है कि इसका भविष्य क्या है, और क्या इस समय कोई इसका चाहने वाला है। अगर हाँ, तो वह कौन है और इसे पाने के लिए इतना बेताब क्यों है?'
फिर उन्होंने अपनी उंगली से अंगूठी उतारकर मुझे दी और कहा, 'अब जाओ, इसे धीरू काका को लौटा देना। और जब तुम वापस आओ तो कृपया उन खिड़कियों को खोल देना।'

दो

अगले दिन, हमने जल्दी दोपहर का भोजन करने के बाद इमामबाड़ा के लिए प्रस्थान किया। बाबा और धीरू काका कार से गए। फेलुदा और मैंने तांगे में बैठने का विकल्प चुना।
बहुत मज़ा आया। मैंने इससे पहले कभी घोड़े से चलने वाली गाड़ी में सफर नहीं किया था। फेलूदा ने तो ज़रूर किया था। उनका मानना था कि तांगे में ऊबड़-खाबड़ सफर पाचन के लिए बहुत अच्छा होता है।
उन्होंने कहा, 'धीरू काका के पास इतना बेहतरीन खाना बनाने का हुनर है कि मुझे लगता है कि खुद को रोक पाना मुश्किल होगा, इसलिए मुझे लगता है कि कभी- कभार तांगे की सवारी करना एक अच्छा विचार है।'
नई और अपरिचित सड़कों से गुजरते हुए, हम आखिरकार एक ऐसी जगह पर पहुंचे जिसे तांगेवाले ने 'कैसर बाग' बताया।
‘देखो, इन्होंने उर्दू को जर्मन के साथ कैसे मिला दिया है?’ फेलुदा ने टिप्पणी की। अधिकांश प्रसिद्ध मुगल इमारतें कैसर बाग के आसपास थीं। तांगावाला उन्हें दिखाते हुए कहने लगा: ‘ये रही बादशाह मंजिल... और ये रही चांदीवाली बरदारी... और ये रही लखू फाटक...’
रास्ता एक विशाल द्वार से होकर गुजरता था। हमें बताया गया, 'यह रूमी दरवाजा है।' रूमी दरवाजे के आगे 'मछली भवन' था, जहाँ बुर्रा इमामबाड़ा स्थित था। मैं इसकी विशालता देखकर अवाक रह गया। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि कोई महल इतना विशाल हो सकता है।
हमने अपने तांगे से धीरू काका की कार देख ली थी। हमने तांगेवाले को पैसे दिए और बाकी लोगों के साथ शामिल हो गए। बाबा और धीरू काका एक लंबे, अधेड़ उम्र के आदमी से बात कर रहे थे।
फेलुदा ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और धीमी आवाज़ में बोला:
‘ब्लैक स्टैंडर्ड हेराल्ड!’
यह बिल्कुल सच था कि धीरू काका की कार के बगल में एक काली स्टैंडर्ड हेराल्ड कार खड़ी थी।

'मडगार्ड पर उस ताजा निशान को देखो!'
‘आपको कैसे पता चलता है कि यह ताजा है?’
‘यह सफेद रंग है, क्या आपको दिखाई नहीं दे रहा? वह कार किसी नई रंगी हुई दीवार या गेट से टकराई होगी। अगर कार को आज सुबह नहीं धोया गया था, तो यह निशान पिछली रात को ही लग गया होगा।’
धीरू काका ने हमारा अभिवादन करते हुए कहा, 'आइए और बोनोबिहारी बाबू से मिलिए, जिनके घर में चिड़ियाघर है।'
आश्चर्यचकित होकर मैंने नमस्कार किया। क्या वाकई यह वही अजनबी आदमी था? वह गोरा था, लगभग छह फीट लंबा, पतली मूंछें और नुकीली दाढ़ी रखे हुए था और सोने के फ्रेम का चश्मा पहने हुए था। उसका पूरा रूप-रंग काफी प्रभावशाली था।
उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई और कहा, 'लक्ष्मण की राजधानी आपको कैसी लगी? आपको पता है ना कि प्राचीन काल में लखनऊ को लक्ष्मणवती के नाम से जाना जाता था?'
उनकी आवाज उनके व्यक्तित्व से मेल खाती थी। धीरू काका ने कहा, 'बोनोबिहारी बाबू चौक बाजार जा रहे थे, वे हमारी गाड़ी देखकर ही यहां रुके।'
‘जी हां,’ उस सज्जन ने कहा, ‘मैं आमतौर पर दोपहर में बाहर जाता हूं। मेरी सुबह और शाम का अधिकांश समय जानवरों की देखभाल में ही बीतता है।’
धीरू काका ने कहा, 'दरअसल, हम आपके यहाँ आने की योजना बना रहे थे। ये दोनों आपके चिड़ियाघर को देखने में बहुत रुचि रखते हैं।'
अच्छा। आपका कभी भी स्वागत है। आज ही क्यों नहीं आ जाते? मुझे आगंतुकों से मिलकर हमेशा खुशी होती है, लेकिन ज्यादातर लोग मेरे घर में कदम रखने से डरते हैं। उन्हें लगता है कि मैंने अपने जानवरों को जिन पिंजरों में रखा है, वे किसी चिड़ियाघर के पिंजरों जितने मजबूत नहीं हैं। अगर ऐसा है, तो आप क्या सोचते हैं कि मैं इतने सालों तक कैसे जीवित रहा?
इस छोटे से मजाक पर सब हंस पड़े, सिवाय फेलुदा के। वह मेरे करीब झुककर धीरे से बोला, 'इस आदमी से इत्र की बदबू आ रही है। शायद जानवरों की गंध छुपाने की कोशिश कर रहा है।'
बाद में पता चला कि 'द स्टैंडर्ड' अखबार बोनोबिहारी बाबू का नहीं था, क्योंकि मैंने उन्हें एक नीली एम्बेसडर कार से अपने ड्राइवर को बुलाते और

उसे कुछ चिट्ठियाँ डाक से भेजने के लिए देते हुए देखा। फिर उन्होंने हमसे कहा: 'आप इमामबाड़ा देखेंगे ना? उसके बाद हम मेरे घर वापस चलेंगे।'
क्या आप हमारे साथ अंदर आ रहे हैं?
‘हां, क्यों नहीं? मैं इससे पहले सिर्फ एक बार इसमें शामिल हुआ था। यह 1963 में हुआ था, लखनऊ पहुंचने के दो दिन बाद। अब समय आ गया है कि मैं फिर से देखूं कि वे नवाब क्या-क्या कर सकते हैं।’
हम फाटक से होकर गुजरे और एक बड़े आंगन को पार करते हुए मुख्य भवन की ओर चलने लगे।
मेरे बगल में चलते हुए बोनोबिहारी बाबू ने कहा, “दो सौ साल पहले नवाब आसफ-उद-दौला ने इस महल का निर्माण करवाया था। वे चाहते थे कि यह आगरा और दिल्ली की सभी इमारतों से कहीं अधिक भव्य हो। इसलिए सबसे प्रसिद्ध डिज़ाइनरों और वास्तुकारों के बीच एक प्रतियोगिता आयोजित की गई। सर्वश्रेष्ठ डिज़ाइन का चयन किया गया—और आप अंतिम परिणाम देख सकते हैं। यह शायद मुगल काल की कुछ अन्य इमारतों जितना सुंदर न हो, लेकिन महल के आकार के मामले में यह निसंदेह अद्वितीय है। दुनिया के किसी भी महल में इतना बड़ा दरबार कक्ष नहीं है।”
हॉल को घूरते हुए मैंने सोचा, इसमें तो पूरा फुटबॉल स्टेडियम समा सकता है। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। बाहर एक विशाल कुआँ था। नवाब ने वाकई बड़ी योजना बनाई थी। गाइड ने बताया कि इस कुएँ का इस्तेमाल अपराधियों को सज़ा देने के लिए किया जाता था। उन्हें सीधे इसमें फेंक दिया जाता था और फिर उन्हें कोई दोबारा नहीं देख पाता था।
लेकिन सबसे ज़्यादा हैरानी मुझे भूलभुलैया देखकर हुई। छोटी-छोटी गलियाँ हर दिशा में फैली हुई थीं। मैं चाहे जहाँ भी जाता या जिस भी मोड़ पर मुड़ता, ऐसा लगता था मानो मैं वहीं लौट आया हूँ जहाँ से शुरू किया था। सभी गलियाँ एक जैसी थीं—दोनों तरफ दीवारें, नीची छत और दीवार के बीचोंबीच एक छोटा सा ताक। गाइड ने बताया कि जब नवाब अपनी रानियों के साथ लुका-छिपी खेलते थे, तो उन छोटे-छोटे ताकों में तेल के दीपक जलाए जाते थे। उन डरावनी गलियों में टिमटिमाते दीपकों की कल्पना से ही मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मैंने देखा कि फेलूदा दीवार के बिल्कुल करीब चल रहा था। लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वह हम सबसे पीछे क्यों रह गया था। फिर मैं घुमावदार

भूलभुलैया में घूमने के रोमांच में इतना खो गया कि उसके बारे में सब कुछ भूल गया, तभी मैंने बाबा को यह कहते हुए सुना: 'अरे, फेलू कहाँ है?'
मैंने झट से पीछे मुड़कर देखा। फेलुदा कहीं नज़र नहीं आया। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। हालांकि, कुछ ही सेकंड बाद, बाबा की आवाज़ सुनकर वह फिर से प्रकट हो गया। उसने कहा, 'अगर मैं इतनी तेज़ी से चलूँ, तो मुझे भूलभुलैया की बनावट का अंदाज़ा लगाना नामुमकिन हो जाएगा।'
भूलभुलैया के आखिरी गलियारे के अंत में स्थित दरवाजा इमामबाड़ा की विशाल छत पर खुलता था। वहां से नजारा अद्भुत था। वहां से लगभग पूरा लखनऊ दिखाई देता था। छत पर पहले से ही कुछ लोग मौजूद थे। उनमें से एक युवक मुस्कुराते हुए धीरू काका की ओर बढ़ा।
'महाबीर!' धीरू काका ने कहा, 'तुम कब आये?'
‘तीन दिन पहले। मैं साल के इस समय हमेशा लखनऊ लौटता हूँ। मैं दिवाली के बाद वापस जाऊँगा। मेरे साथ दो दोस्त हैं, इसलिए हम घूमने निकले हैं।’
‘This is Pyarelal’s son,’ said Dhiru Kaka, ‘he lives in Bombay. He’s an actor.’ मैंने महावीर की ओर देखा। वह बोनोबिहारी बाबू को ऐसे घूर रहा था मानो उसने उन्हें पहले भी देखा हो।
'क्या हम पहले मिल चुके हैं?' बोनोबिहारी बाबू ने मेरे ही विचारों को दोहराते हुए पूछा।
'हां, मुझे लगता है ऐसा ही है,' महाबीर ने जवाब दिया, 'लेकिन लाख कोशिश करने पर भी मुझे याद नहीं आ रहा कि कहां।'
‘मैं तुम्हारे पिता से एक बार मिला था। लेकिन तब तुम यहाँ नहीं थे।’
‘ओह। मैं समझ गया,’ महाबीर ने शर्मिंदा होकर कहा, ‘मुझसे गलती हो गई होगी। क्षमा करें। खैर, मुझे अपने दोस्तों के पास वापस जाना होगा। नमस्कार।’
वह चला गया। मैंने सोचा, वह फेलुदा से छोटा होगा। सुंदर और अच्छी कद-काठी का आदमी। शायद उसे खेलों में रुचि थी।
बोनोबिहारी बाबू ने कहा, 'अभी मेरे घर जाना अच्छा रहेगा। अगर आपको जानवरों को देखना ही है, तो दिन के उजाले में देखना सबसे अच्छा रहेगा। मैं अभी तक उनके पिंजरों में रोशनी की व्यवस्था नहीं कर पाया हूँ।'
हमने गाइड को पैसे दिए और नीचे उतर गए। छत से सीधे भूतल तक सीढ़ियाँ जाती थीं।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

तीन

जब हम बोनोबिहारी बाबू के घर पहुँचे तब तक शाम के लगभग 4 बज चुके थे। बाहर से देखकर यह बताना असंभव था कि घर में एक छोटा चिड़ियाघर है। सभी जानवर पीछे के बगीचे में रखे गए थे।
बोनोबिहारी बाबू ने हमें बताया, 'यह घर विद्रोह से लगभग तीस साल पहले एक धनी मुस्लिम व्यापारी द्वारा बनवाया गया था। मैंने इसे एक अंग्रेज से खरीदा था।'
घर स्पष्ट रूप से काफी पुराना था। दीवार पर की गई नक्काशी मुगल शैली की विशिष्ट थी।
बोनोबिहारी बाबू ने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि आपको कॉफी पीने में कोई आपत्ति नहीं होगी। मुझे खेद है कि मेरे घर में चाय नहीं है।'
मुझे इस बात से काफी खुशी हुई क्योंकि घर पर मुझे ज्यादा कॉफी पीने की इजाजत नहीं थी। लेकिन हमें पहले जानवरों को देखना था।
बैठक कक्ष से एक बरामदा खुलता था, जिसके पीछे एक विशाल बगीचा फैला हुआ था। इस बगीचे में जगह-जगह जानवरों के लिए अलग-अलग पिंजरे बने हुए थे। बीच में एक तालाब था जिसके चारों ओर लोहे की ऊंची-ऊंची कीलें लगी हुई थीं। उसमें एक मगरमच्छ आराम से धूप सेंक रहा था। बोनोबिहारी बाबू ने बताया, 'दस साल पहले, जब मैंने इसे मुंगेर में पाया था, तब यह सिर्फ एक बच्चा था। मैंने इसे कलकत्ता स्थित अपने घर की एक पानी की टंकी में रखा था। फिर एक दिन मैंने देखा कि यह फिसलकर बाहर निकल गया और एक बिल्ली के बच्चे को निगल गया!' तालाब से दूसरे पिंजरों तक छोटे-छोटे रास्ते बने हुए थे। उनमें से एक से अजीब सी फुफकारने की आवाज आ रही थी। हमने मगरमच्छ को वहीं छोड़ दिया और उसकी ओर चल दिए।
एक विशालकाय बिल्ली, जो लगभग मध्यम आकार के कुत्ते जितनी बड़ी थी, अपनी चमकीली हरी आँखों से हमें घूर रही थी। उसका शरीर धारीदार था और वह बिल्ली से ज़्यादा बाघ जैसी लग रही थी।

‘यह अफ्रीका से आया है। कलकत्ता में जानवरों का व्यापार करने वाले एक एंग्लो-इंडियन व्यापारी ने इसे मुझे बेचा था। अलीपुर चिड़ियाघर में भी इस जैसा कोई प्राणी नहीं है।’
जंगली बिल्ली को देखने के बाद हम आगे बढ़े और पहले लकड़बग्घे को, फिर भेड़िये को और उसके बाद एक अमेरिकी रैटलस्नेक को देखा। मुझे पता था कि यह बेहद ज़हरीला होता है। इसकी पूंछ से एक लंबी, पतली सी सीप जैसी कोई चीज़ जुड़ी हुई थी, जो पुरी के समुद्र तटों पर अक्सर मिलने वाली सीपों से मिलती- जुलती थी। चलते समय सांप अपनी पूंछ को हल्का सा हिलाता था, जिससे सीप ज़मीन पर घिसटती थी और रैटल जैसी आवाज़ आती थी। अमेरिका के पश्चिमी राज्यों में, इसी आवाज़ से लोग रैटलस्नेक की हलचल से आगाह होते थे।
हमने दो और जीव देखे जिन्हें देखकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए। एक कांच के पिंजरे में अमेरिका का विशाल और भयानक नीला बिच्छू रखा था। दूसरे पिंजरे में एक मकड़ी थी, जो अपने काले, बालों वाले पैर फैलाए खड़ी थी। वह शायद मेरी हथेली जितनी बड़ी थी, जिसमें मेरी सारी उंगलियां फैली हुई थीं। मुझे बाद में पता चला कि यह अफ्रीका की मशहूर ब्लैक विडो मकड़ी थी।
बोनोबिहारी बाबू ने कहा, 'बिच्छू और इस मकड़ी का जहर न्यूरोटॉक्सिन है। इसका मतलब यह है कि इनमें से किसी के भी एक डंक से इंसान की मौत हो सकती है।' हम बैठक कक्ष में लौट आए और सोफे पर बैठ गए। बोनोबिहारी बाबू ने खुद एक कुर्सी ली और बोले, “अक्सर, रात के सन्नाटे में, मुझे लकड़बग्घे की हंसी, बिल्ली की फुफकार, भेड़िये की चीख और सांप की सरसराहट सुनाई देती है। यह एक अजीब सा संगीत जैसा लगता है, लेकिन इससे मुझे चैन की नींद आती है। मुझे इससे बेहतर अंगरक्षकों की टुकड़ी कहां मिलेगी, बताओ? लेकिन अगर कोई बाहरी घुसपैठिया अंदर घुस भी जाए, तो ये बंदी जानवर कुछ नहीं कर पाएंगे। मैंने इसके लिए एक अलग व्यवस्था कर रखी है। बादशाह!”
बगल वाले कमरे से एक विशाल काला शिकारी कुत्ता उछलता हुआ बाहर आया। यह था बोनोबिहारी बाबू का असली अंगरक्षक। बादशाह ने न केवल अपने मालिक की रक्षा की, बल्कि चिड़ियाघर के जानवरों को भी कोई नुकसान न पहुंचे, इसका भी पूरा ख्याल रखा।
फेलुदा मेरे बगल में बैठा था। उसने धीरे से कहा, 'लैब्राडोर हाउंड, वही नस्ल जो बास्करविल्स के हाउंड में थी!'

बाबा अब तक चुप रहे थे। अब उन्होंने कहा, 'मुझे बताओ, क्या तुम्हें सचमुच अपने घर में इन जंगली जानवरों के साथ रहना अच्छा लगता है?'
बोनोबिहारी बाबू ने एक पाइप निकाला और उसे भरने लगे। उन्होंने कहा, 'क्यों नहीं? डरने की क्या बात है? एक ज़माना था जब मैं नियमित रूप से शिकार पर जाता था और मेरा निशाना अचूक था। लेकिन मैंने जंगली जानवरों के अलावा कभी किसी और जानवर को नहीं मारा। सिर्फ़ एक बार—सिर्फ़ एक बार—मैंने एक हिरण को मारा था। मैं बस अपने एक अमेरिकी दोस्त को दिखा रहा था कि मेरा निशाना कितना अच्छा है, और हिरण मुझसे लगभग डेढ़ सौ गज दूर था। मुझे बाद में इतना पछतावा हुआ कि मुझे शिकार करना पूरी तरह छोड़ना पड़ा। लेकिन जानवर मेरे जीवन का हिस्सा बन गए थे। इसलिए मैंने उनमें से कुछ को निर्यात करने का व्यवसाय शुरू किया। फिर, जब मैं सेवानिवृत्त हुआ, तो अपने घर में चिड़ियाघर बनाना स्वाभाविक ही लगा। इन जानवरों के साथ रहने का फ़ायदा यह है कि वे अपने असली रूप—क्रूर और ज़हरीले—के अलावा कुछ और होने का दिखावा नहीं करते। लेकिन इंसान को देखो! जो दिखने में बिल्कुल अच्छा और ईमानदार लगता है, वह एक नंबर का अपराधी निकल सकता है। आजकल तो आप अपने करीबी दोस्त पर भी भरोसा नहीं कर सकते, है ना?' इसलिए मैंने अपना शेष जीवन जानवरों के साथ बिताने का फैसला किया है। आप जानते हैं, मैं दूसरों के मामलों में दखल नहीं देता। मैं अपने आप में रहता हूँ। इसलिए मेरी जीवनशैली के बारे में दूसरे क्या सोचते या कहते हैं, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन मुझे बताया गया है कि मेरे छोटे से चिड़ियाघर ने चोरों को दूर रखने में मदद की है। अगर यह सच है, तो मुझे कहना होगा कि मैंने अनजाने में पूरे समुदाय का भला किया है।
इस आखिरी टिप्पणी ने मुझे पहले धीरू काका और फिर फेलुदा की ओर देखने पर मजबूर कर दिया। क्या ऐसा हो सकता है कि बोनोबिहारी बाबू को डॉ. श्रीवास्तव के घर में हुई चोरी की कोशिश के बारे में पता ही न हो?
मुझे जवाब पाने के लिए ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। बोनोबिहारी बाबू के नौकर के कॉफी और कुछ मिठाई लेकर आने के लगभग तुरंत बाद ही डॉ. श्रीवास्तव स्वयं आ गए।
सभी का अभिवादन करने के बाद, डॉ. श्रीवास्तव ने धीरू काका से कहा, 'आपके घर से कुछ ही दूरी पर एक लड़का पेड़ से गिर गया और उसकी बांह टूट गई। उसे

देखकर मैं आपके घर गया। आपके सहायक ने मुझे बताया कि आप वापस नहीं लौटे हैं। इसलिए मैं सीधे यहां आ गया।'
धीरू काका ने डॉ. श्रीवास्तव को आश्वस्त करने वाली नज़र से देखा, जिससे यह संकेत मिला कि उनकी अंगूठी सुरक्षित है।
श्रीवास्तव बोनोबिहारी बाबू को अच्छी तरह से जानते प्रतीत होते थे। शायद छोटे शहरों में पड़ोसियों के बीच मित्रता अधिक सहजता से पनपती है। उन्होंने मजाक में कहा, 'बोनोबिहारी बाबू, आपके चौकीदार लापरवाह हो रहे हैं।'
बोनोबिहारी बाबू अचंभित प्रतीत हुए।
‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ उसने पूछा।
'परसों मेरे घर में एक चोर घुस आया था, और आपके किसी भी जानवर ने कोई आवाज नहीं की।'
‘क्या? एक चोर? तुम्हारे घर में? कब?’
लगभग सुबह 3 बजे। नहीं, उसने वास्तव में कुछ नहीं लिया। मैं अचानक जाग गया, इसलिए वह भाग गया।
फिर भी, मुझे कहना पड़ेगा कि बादशाह की नजरों से बच निकलने के लिए वह जरूर कोई माहिर रहा होगा। अरे, तुम्हारा घर मेरे घर से कुछ सौ गज से ज्यादा दूर नहीं हो सकता! जो भी था, वह मेरे आंगन से होकर गुजरा होगा। इसके अलावा कोई और रास्ता हो ही नहीं सकता!
श्रीवास्तव ने कहा, 'कोई बात नहीं, मैं बस आपको बताना चाहता था कि क्या हुआ था।'
मिठाइयाँ अभी भी हमारी थालियों में रखी थीं। बोनोबिहारी बाबू ने आमंत्रित करते हुए कहा, 'ये भी खा लीजिए। इन्हें संडीले का लड्डू और गुलाबी रेओरी कहते हैं। ये और भूना पेरा—ये तीनों लखनऊ की खासियत हैं।'
मुझे मिठाई ज़्यादा पसंद नहीं थी, इसलिए मैंने इन बातों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया और बोनोबिहारी बाबू को गौर से देखने लगा। वो कुछ सोच में डूबे हुए लग रहे थे। वहीं, फेलुदा खाने में मशगूल था। दो लड्डू खाकर उसने हाथ बढ़ाया और मेरी कॉफी के कप से मक्खी भगाने का नाटक किया। देखते ही देखते उसने बड़ी बेपरवाही से मेरी थाली से एक लड्डू उठा लिया।
इस समय, अप्रत्याशित रूप से, बोनोबिहारी बाबू ने मुड़कर देखा... श्रीवास्तव ने पूछा, 'आशा है कि आपके पास अभी भी सम्राट की अंगूठी है?'

डॉ. श्रीवास्तव का गला भर आया। फिर बड़ी मुश्किल से खुद को संभालते हुए, उन्होंने अचानक आई खांसी को हल्की हंसी से छुपाया और कहा, 'हे भगवान—आप भूले नहीं हैं!'
बोनोबिहारी बाबू ने अपनी पाइप से धुआं फूंका।
‘मैं कैसे भूल सकता हूँ? वैसे, मुझे ऐसी चीजों में कोई खास दिलचस्पी नहीं है। लेकिन आपको इतनी अद्भुत चीज देखने का मौका अक्सर नहीं मिलता, है ना?’ डॉ. श्रीवास्तव ने कहा, 'ओह, अंगूठी बिल्कुल सुरक्षित है, मुझे इसकी कीमत का अंदाजा है।'
बोनोबिहारी बाबू खड़े हो गए। उन्होंने कहा, 'माफ़ कीजिए, मेरी बिल्ली को खाना खिलाने का समय हो गया है।'
हमने भी उनसे संकेत लेकर उनके साथ विदा लेने के लिए उठ खड़े हुए।
बाहर निकलते समय हमने एक आदमी को घर में थैला ले जाते देखा। वह निस्संदेह एक ताकतवर आदमी था। उसकी कमीज़ के नीचे उसकी मांसपेशियां उभरी हुई थीं। हमें पता चला कि उसका नाम गणेश गुहा था। वह जाहिर तौर पर बोनोबिहारी बाबू के साथ लंबे समय से काम कर रहा था, जानवरों के निर्यात के दिनों से ही। अब वह चिड़ियाघर की देखभाल करता था।
बोनोबिहारी बाबू ने हमसे कहा, 'गणेश के बिना मेरा काम नहीं चलता। वह आदमी निर्भीक है। एक बार जंगली बिल्ली ने उसे नोंच डाला था। इसके बावजूद वह डटा रहा।'
जब हम कार में बैठ रहे थे, तब उन्होंने आगे कहा, 'आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। फिर जरूर आइएगा। आप कुछ समय के लिए लखनऊ में रहने वाले हैं, है ना?'
‘जी हां,’ बाबा ने कहा, ‘लेकिन हम कुछ दिनों के लिए हरिद्वार जा सकते हैं।’ ‘मैं समझ गया। किसी ने मुझे बताया था कि लक्ष्मणझूला के पास एक बारह फुट का अजगर मिला है। दरअसल, मैं खुद भी वहां जाने के बारे में सोच रहा था।’
हमने डॉक्टर श्रीवास्तव को उनके घर पर छोड़ दिया। जैसे ही वे गाड़ी से उतरे, बोनोबिहारी बाबू के बगीचे से अचानक एक अजीब, डरावनी सी आवाज़ आई, जिससे हम सब चौंक गए। केवल फेलुदा ने जम्हाई ली और कहा, 'लकड़बग्घा।' हे भगवान—तो यह थी लकड़बग्घे की मशहूर हंसी? यह सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए।
डॉ. श्रीवास्तव ने खिड़की से कहा, 'हां, उस आवाज से मुझे अक्सर डर लगता था, लेकिन अब मुझे उसकी आदत हो गई है।'

‘कल रात आपको कोई और समस्या तो नहीं हुई?’ धीरू काका ने पूछा।
‘नहीं, नहीं। कुछ नहीं,’ डॉ. श्रीवास्तव हंसते हुए बोले।
जब हम घर पहुँचे तब तक लगभग अंधेरा हो चुका था। दूर से ढोल की आवाज़ सुनाई दी। धीरू काका ने बताया, 'राम लीला की तैयारियाँ चल रही हैं।'
‘राम लीला क्या है?’
“ओह, ये तो दशहरा के दौरान होने वाला उत्तर भारतीय प्रदर्शन है। रामायण की पूरी कहानी नाटक के रूप में प्रस्तुत की जाती है। इसका अंत राम और लक्ष्मण के रथ पर सवार होकर रावण के विशाल पुतले पर बाण चलाने से होता है। पुतला बारूद से भरा होता है। इसलिए, जब बाण उस पर लगते हैं, तो वह आग के गोले में तब्दील हो जाता है। पटाखे फूटते हैं और रॉकेट उड़ते हैं... और अंत में, शक्तिशाली रावण राख हो जाता है। ओह... ये तो देखने लायक शानदार नजारा है!” घर पहुँचते ही धीरू काका के सहायक ने हमें बताया, ‘जब आप बाहर गए थे, तब डॉ. श्रीवास्तव और एक साधुबाबा आए थे। वे लगभग आधे घंटे तक रुके और फिर चले गए।’
‘साधुबाबा?’
यह स्पष्ट था कि धीरु काका को किसी संत के आगमन की उम्मीद नहीं थी।
‘वह कहाँ इंतजार कर रहा था?’
'लिविंग रूम में।'
और वह मुझसे मिलना चाहता था?
'हाँ।'
‘क्या उसने सचमुच मेरा नाम लिया?’
'हाँ।'
'यह आश्चर्यजनक है!'
धीरू काका ने एक मिनट सोचा, फिर अचानक अपने शयनकक्ष की ओर दौड़ पड़े। हमने उन्हें अपनी गोदरेज अलमारी खोलते सुना, जिसके बाद एक दर्द भरी चीख सुनाई दी: 'अरे नहीं! विपत्ति!' बाबा, फेलुदा और मैं उनके पीछे भागे।
धीरू काका अपने हाथ में नीले मखमली रंग का छोटा डिब्बा खोले खड़े थे, उनकी आंखें फटी हुई थीं। डिब्बा खाली था।
वह कुछ सेकंड तक मूर्खतापूर्ण ढंग से खाली जगह को घूरता रहा। फिर धड़ाम से अपने बिस्तर पर गिर पड़ा।

चार

अगली सुबह मौसम ठंडा लग रहा था, इसलिए बाबा ने मुझे अपने गले में मफलर लपेटने को कहा। उनके चेहरे पर शिकन और चिंता देखकर मैं समझ गया कि वे बहुत परेशान हैं। धीरू काका सुबह बहुत जल्दी घर से बिना किसी को बताए निकल गए थे। कल की घटना के बाद से वे बार-बार एक ही बात कह रहे थे: 'अब मैं श्रीवास्तव का सामना कैसे करूँगा?'
बाबा ने उन्हें दिलासा देते हुए कहा, “पर इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं थी! तुम्हें कैसे पता चलता कि चोर तुम्हारी गैरमौजूदगी में साधु के वेश में आएगा? तुम पुलिस के पास क्यों नहीं जाते? तुमने कहा था ना कि तुम इंस्पेक्टर गरगारी को जानते हो?” इसलिए हो सकता है कि धीरू काका पुलिस को सूचना देने गए हों।
बाबा ने नाश्ते के दौरान कहा: 'मैंने तुम्हें रेजिडेंसी ले जाने का सोचा था। लेकिन शायद आज मेरा घर पर रहना ही बेहतर होगा। अगर तुम चाहो तो थोड़ी देर के लिए बाहर जा सकते हो।'
यह सुनकर मेरे चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई, क्योंकि फेलुदा पहले ही कह चुका था कि वह पैदल चलकर उस जगह को देखना चाहता है और मैंने भी उसके साथ जाने का फैसला कर लिया था। मैं जानता था कि उसके मन में कुछ और ही इरादा था, न कि सिर्फ यूं ही घूमना। कल रात से उसकी आँखों में एक अलग ही दृढ़ता आ गई थी।
हम आठ बजे के कुछ देर बाद रवाना हुए।
घर से निकलते ही फेलुदा ने कहा, 'टॉपशे, मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ। अगर तुमने ज्यादा बात की या ज्यादा सवाल पूछे तो मैं तुम्हें वापस भेज दूँगा। बस चुप रहो और मेरे साथ चलो।'
लेकिन अगर धीरू काका पुलिस को सूचना दे दें तो क्या होगा?
‘अगर वो ऐसा करता है तो क्या हुआ?’
'मान लो कि वे तुमसे पहले चोर को पकड़ लें?'
‘कोई बात नहीं। मैं अपना नाम बदल लूंगा, बस इतना ही।’

धीरू काका फ्रेजर रोड पर रहते थे। यह एक शांत गली थी, जिसके दोनों ओर बड़े- बड़े बगीचों वाले घर थे। यह सड़क डुप्लिंग रोड की ओर जाती थी। कलकत्ता के विपरीत, लखनऊ में सभी सड़कें स्पष्ट रूप से चिह्नित थीं।
डुप्लिंग रोड और पार्क रोड के चौराहे पर एक पान की दुकान थी। फेलुदा धीरे- धीरे उस दुकान की ओर चल पड़ा।
‘क्या मुझे एक मीठा पान मिल सकता है?’ उसने पूछा।
‘जी बाबू, मैं आपके लिए खास मसाले वाला पान बना दूंगा,’ पानवाले ने कहा। 'धन्यवाद।'
पान उसे विधिवत रूप से दे दिया गया। फेलुदा ने पैसे देकर पान अपने मुंह में डाला और बोला, 'देखिए, मैं इस शहर में नया हूँ। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि रामकृष्ण मिशन कहाँ है?'
‘Ramakrishna Mishir?’
नहीं, नहीं। रामकृष्ण मिशन। मैंने सुना है कि एक महान साधु लखनऊ आ रहे हैं और रामकृष्ण मिशन में ठहरे हुए हैं।
पानवाले ने सिर हिलाया और कुछ बुदबुदाया जो मुझे समझ नहीं आया। लेकिन हमें किसी और स्रोत से कुछ जानकारी मिली।
पास ही एक रस्सी के पलंग पर एक बड़ी मूंछों वाला आदमी लेटा हुआ था, खुशी से गा रहा था और एक पुराने जंग लगे टिन को पीट रहा था। उसने गाना बंद कर दिया और बोला, 'क्या वह दाढ़ी वाला साधुबाबा है? काले चश्मे पहने हुए? कल मैंने ऐसे ही एक आदमी से बात की थी। उसने मुझसे पूछा कि सबसे नज़दीकी तांगा स्टैंड कहाँ है, और मैंने उसे दिखाया।'
'कहाँ है?'
'यहां से पांच मिनट की दूरी पर। उस चौराहे के ठीक बाद, आपको तांगों की पूरी कतार दिखाई देगी।'
‘Shukriya,’ said Feluda.
उन्होंने मुझसे कहा, 'उर्दू में इसका मतलब है "धन्यवाद"।' मैंने यह शब्द पहले कभी नहीं सुना था।
हमने जिस आठवें तांगेवाले से पूछा, उसने स्वीकार किया कि पिछली शाम वास्तव में एक दाढ़ी वाले, भगवा वस्त्रधारी व्यक्ति ने उसका तांगा किराए पर लिया था।
‘तुम उसे कहाँ ले गए?’

'इस्तिशान,' ताँगेवाले ने कहा।
‘आपका मतलब रेलवे स्टेशन से है?’
'हां हां।'
‘वहां जाने के लिए आप कितना शुल्क लेते हैं?’
पचहत्तर पैसे।
और इसमें कितना समय लगता है?
‘दस मिनट।’
'अगर मैं आपको पूरा एक रुपया दूं, तो क्या आप हमें आठ मिनट में स्टेशन पहुंचा सकते हैं? अभी?'
‘क्या आपको ट्रेन पकड़नी है?’
'जी हां, दुनिया की सबसे बेहतरीन ट्रेन। इंपीरियल एक्सप्रेस!'
तांगेवाले ने मूर्खतापूर्ण ढंग से मुस्कुराते हुए कहा, 'ठीक है। मैं आपको आठ मिनट में वहाँ पहुँचा दूँगा।'
रास्ते में मैंने थोड़ी झिझक के साथ पूछा, 'क्या आपको लगता है कि साधु अभी भी उस अंगूठी को पकड़े स्टेशन पर इंतजार कर रहा है?' इस पर फेलुदा ने मुझे इतनी गुस्से से घूरा कि मैं तुरंत चुप हो गया।
थोड़ी देर बाद, उन्होंने हमारे ड्राइवर से पूछा, 'क्या साधुबाबा के पास कोई सामान था?'
ड्राइवर ने एक मिनट सोचा और कहा, 'हां, मुझे लगता है कि उसका मामला बनता है। लेकिन बड़ा नहीं।'
'अच्छा ऐसा है।'
स्टेशन पहुँचते ही हमने उन सभी लोगों से पूछना शुरू किया जिन्हें साधु को देखने की याद हो सकती थी। लेकिन टिकट काउंटर या गेट पर मौजूद लोग मदद नहीं कर सके; न ही कुली। रेलवे स्टेशन पर एक रेस्तरां के मैनेजर ने कहा, 'क्या आप पवित्रानंद ठाकुर की बात कर रहे हैं? वही जो देहरादून में रहते हैं? वे तो सिर्फ तीन दिन पहले ही आए थे। इतनी जल्दी वापस नहीं जा सकते। वैसे भी, वे हमेशा अपने साथ बहुत सारे लोगों को लेकर चलते हैं।'
अंत में, प्रथम श्रेणी के प्रतीक्षालय के चौकीदार ने कहा कि उसने एक ऐसे व्यक्ति को देखा था जो हमारे विवरण से मेल खाता था।
क्या वह यहाँ प्रतीक्षाकक्ष में बैठा था?
नहीं, उसने ऐसा नहीं किया।

'कुंआ?'
वह बाथरूम में गया। उसके पास एक छोटा सा बैग था।
'फिर क्या हुआ?'
‘मुझे नहीं पता, बाबू। उसके बाद मैंने उसे नहीं देखा।’
‘क्या आप शुरू से अंत तक यहीं थे?’
'हां। दून एक्सप्रेस आने ही वाली थी। यहां बहुत सारे लोग थे। मैं कमरे से बिल्कुल बाहर नहीं निकला।'
'शायद आपने उसे दोबारा नहीं देखा।'
'अच्छा—ठीक है, शायद मैंने ऐसा नहीं किया।'
लेकिन उस आदमी को देखकर ऐसा लग रहा था मानो वह वास्तव में यह कहना चाहता हो कि अगर साधुबाबा बाथरूम से बाहर आए होते, तो वह निश्चित रूप से उसे देख लेता।
अगर ऐसा था तो साधु कहाँ गायब हो गया था?
हम स्टेशन से बाहर निकले। यहाँ भी तांगों की एक कतार खड़ी थी। हम एक में बैठ गए। अब मुझे इन मशीनों के प्रति एक नया सम्मान महसूस होने लगा था। आखिरी तांग को स्टेशन तक पहुँचने में ठीक सात मिनट और सत्तावन सेकंड लगे थे।
जैसे ही हम रवाना हुए, मैंने एक और सवाल पूछने से खुद को रोक नहीं पाया। 'क्या साधुबाबा बाथरूम में अचानक गायब हो गए?'
‘हां, हो सकता है उसने ऐसा किया हो,’ फेलुदा ने कहा। ‘पुराने जमाने में साधु और संन्यासी अपनी इच्छा से गायब हो सकते थे—कम से कम मैंने तो यही सुना है।’
मुझे पता था कि वह गंभीर नहीं था, लेकिन उसने इतने शांत चेहरे से बात की कि यह बताना असंभव था।
मुख्य सड़क पर पहुँचते ही हमें एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई बैंड बज रहा हो, और आवाज़ करीब आती जा रही थी। बैंग, बैंग, ट्विडल-डी-डम!
फिर हमने देखा कि यह हमारे जैसी ही एक तांगा थी, फर्क सिर्फ इतना था कि इसे कृत्रिम फूलों, गुब्बारों और रंगीन झंडों से सजाया गया था। लाउडस्पीकर से संगीत बज रहा था, और एक आदमी जोकर की टोपी पहने लोगों पर छपे हुए कागजों के बड़े-बड़े बंडल फेंक रहा था।

फेलुदा ने कहा, 'यह एक हिंदी फिल्म का विज्ञापन है।'
वह सही था। मैंने देखा कि जब दूसरा तांगा हमारे पास से गुजरा, तो उसके किनारे पर एक चमकीले रंग का पोस्टर चिपका हुआ था। फिल्म का नाम था डाकू मंसूर। हमारे तांगे में कुछ पर्चे गिरे, और उनके साथ एक सफेद कागज का टुकड़ा भी आया, जिसे मोड़कर गेंद की तरह बनाया गया था। वह फेलुदा की छाती से टकराया और ज़मीन पर गिर गया।
मैंने चिल्लाकर कहा, 'मैंने उसे फेंकने वाले को देखा था, फेलुदा को। उसने अफगानी कपड़े पहने हुए थे। लेकिन—'
मेरे बोलने से पहले ही, फेलुदा ने कागज़ का टुकड़ा उठाया, नीचे उतरा और उस आदमी की ओर दौड़ने लगा। मैं भीड़ के बीच से भी बिना किसी से टकराए उसकी दौड़ने की गति को देखकर आश्चर्यचकित रह गया।
तब तक ड्राइवर ने तांगा रोक दिया था। मैं बस इंतज़ार करता रह गया। लाउडस्पीकर से आ रही आवाज़ धीमी पड़ गई थी, हालाँकि कुछ बच्चे अभी भी पर्चे बाँटने में व्यस्त थे। कुछ देर बाद फेलुदा हाँफता हुआ लौटा। वह तांगे में कूद गया, ड्राइवर को चलने का इशारा किया और बोला, 'वह सिर्फ इसलिए बच निकला क्योंकि मैं इस जगह की तंग गलियों से वाकिफ नहीं था!'
मैंने पूछा, 'क्या तुमने सचमुच उसे देखा था?'
'जब तुमने भी उसे देखा था, तो मैं उसे कैसे नहीं देख पाया?'
मैंने और कुछ नहीं कहा। अगर फेलुदा ने उस आदमी को पहले ही न देखा होता, तो मैं कहता कि हालाँकि उसने अफगानी पोशाक पहनी हुई थी, लेकिन वह अफगानी आदमी के हिसाब से आश्चर्यजनक रूप से छोटा था।
फेलूदा ने अब मुड़ा हुआ कागज़ का टुकड़ा निकाला, उसे सीधा किया और उस पर लिखी बातें पढ़ीं। फिर उसने उसे तीन बार मोड़ा और अपने बटुए में रख लिया। मैंने उससे पूछने की हिम्मत नहीं की कि उस पर क्या लिखा था।
घर लौटने पर हमने पाया कि धीरू काका वापस आ गए थे और उनके साथ श्रीवास्तव भी थे। श्रीवास्तव अपनी अंगूठी खोने से ज़्यादा परेशान नहीं लग रहे थे। उन्होंने कहा, “उस अंगूठी पर बुरी नज़र लगी हुई थी, मैं आपको बता दूं, वह जहाँ भी जाती थी, मुसीबत खड़ी कर देती थी। आप खुशकिस्मत हैं कि वह आपकी गैरमौजूदगी में चोरी हो गई। मान लीजिए, रात में कोई आपके घर में घुस जाता? मान लीजिए, वे हिंसक हो जाते?”
यह देखकर धीरू काका मुस्कुरा उठे।

उन्होंने कहा, 'यह ज्यादा तर्कसंगत होता। इस आदमी ने मुझे सरासर मूर्ख बना दिया। यही बात मुझे स्वीकार करने में बहुत मुश्किल हो रही है!'
‘चिंता करना बंद करो, धीरू बाबू। वो अंगूठी तो वैसे भी चली जाती, चाहे मैं उसे तुम्हें न देता। और कृपया पुलिस के पास मत जाओ। इससे मामला और बिगड़ जाएगा। जिसने भी ये किया है, वो तुम पर दोबारा हमला करने की कोशिश कर सकता है!’
इस पूरे समय फेलुदा लाइफ पत्रिका के पन्ने पलट रहा था। अब उसने पत्रिका को एक तरफ रख दिया, सोफे पर पीछे की ओर झुक गया और पूछा, 'क्या महावीर को इस अंगूठी के बारे में पता है?'
‘आपका मतलब प्यारेलाल के बेटे से है?’
'हाँ।'
‘खैर, मुझे पक्का पता नहीं है। वह दून स्कूल में पढ़ता था। फिर उसने सैन्य अकादमी में दाखिला लिया, लेकिन आखिरकार उसे छोड़कर बॉम्बे चला गया। अब वह अभिनेता बन गया है, मुझे लगता है।’
क्या प्यारेलाल ने अपने बेटे के फिल्मों में अभिनय करने को मंजूरी दी थी? उन्होंने मुझसे कभी कुछ नहीं कहा। लेकिन मुझे पता है कि वे अपने बेटे को बहुत प्यार करते थे।
‘क्या प्यारेलाल की मृत्यु के समय महावीर लखनऊ में थे?’
‘नहीं, वह बंबई में थे। खबर सुनते ही वह तुरंत आ गए।’ धीरू काका ने कहा, ‘हे भगवान, फेलू, तुम तो पुलिस की तरह सवाल पूछ रहे हो!’
‘वह एक शौकिया जासूस है,’ बाबा ने समझाया। ‘इन मामलों में उसकी एक खास... प्रतिभा है।’
डॉ. श्रीवास्तव ने स्पष्ट आश्चर्य के साथ फेलुदा की ओर देखा। उन्होंने कहा, 'यह तो बहुत अच्छा है, सचमुच बहुत अच्छा।'
केवल धीरू काका ने थोड़ी रूखेपन से टिप्पणी की, "मुझे लगा: 'और चोर ने उसी घर से कुछ चुराया है जहाँ हमारा एक जासूस ठहरा हुआ है! यह तो अफसोसजनक है, है ना?'"
फेलुदा ने कोई टिप्पणी नहीं की। इसके बजाय, उन्होंने श्रीवास्तव की ओर मुड़कर एक और प्रश्न पूछा।
‘क्या महाबीर फिल्मों से पर्याप्त कमाई कर रहा है?’
मुझे इसके बारे में जानकारी नहीं है। वह दो साल पहले ही बॉम्बे गया था।

उसके पास तो काफी पैसा है, है ना? मेरा मतलब है...
जी हां। प्यारेलाल ने अपनी सारी संपत्ति उन्हें विरासत में दे दी है।
फिल्मों में अभिनय करना उनके लिए लगभग एक शौक मात्र है।
‘हम्म,’ फेलुदा ने कहा और फिर से लाइफ पत्रिका उठा ली।
श्रीवास्तव ने अचानक अपनी घड़ी देखी और कहा, 'हे भगवान! इतना समय हो गया! मैं अपने मरीज के बारे में तो बिल्कुल भूल ही गया था! क्षमा करें, आपको मुझे क्षमा करना होगा।'
धीरू काका और बाबा उसके साथ बाहर गए। फेलुदा ने पत्रिका को मेज पर रख दिया और पूछा, 'आप कहाँ जाना चाहेंगे—चाँद पर या मंगल पर?'
मैंने जवाब दिया, ‘इस समय मैं सिर्फ एक काम करना चाहता हूँ।’ फेलुदा ने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। ‘मैंने अभी उस पत्रिका में चंद्रमा की सतह की एक तस्वीर देखी है। वह मुझे कुछ खास दिलचस्प नहीं लगी। मुझे मंगल ग्रह के बारे में जानने की उत्सुकता है।’
मैं अपनी कुर्सी से उठा। मैंने कहा, 'फेलुदा, मुझे उस कागज के टुकड़े के बारे में जानने की उत्सुकता है जो तुम्हारे बटुए में है।'
‘अरे वो! यहाँ देखो!’
उसने करीने से तह किया हुआ कागज मेरी तरफ ऐसे उछाला जैसे कैरम खेल रहा हो। मैंने उसे खोला तो उसमें सिर्फ दो शब्द थे: सावधान!
लेखक ने किसी लाल रंग के तरल पदार्थ का प्रयोग किया था। वह स्याही तो नहीं थी। आखिर वह क्या हो सकता था? फेलुदा ने शायद मेरे मन की बात समझ ली थी, क्योंकि उन्होंने कहा: 'कभी-कभी, पान में मसाला भरने के बाद, उसका कुछ रस डंठल पर गिर जाता है। ये शब्द पान के उसी लाल रस से लिखे गए हैं।'
मैंने कागज को अपनी नाक के पास लाया। उसमें से पान की तेज़ गंध आ रही थी। 'पर इसे किसने लिखा होगा?'
'मुझें नहीं पता।'
‘तुम्हें सावधान रहने के लिए कोई क्यों कहेगा? तुमने अंगूठी नहीं चुराई!’ फेलुदा जोर से हंस पड़ा।
‘अपराधी को चेतावनी या धमकी नहीं मिलती, मूर्ख! ये तो अपराधी के दुश्मन को दी जाती हैं। और एक जासूस हमेशा दुश्मन होता है। इसलिए जो भी अपराधी का पीछा करता है, उसे अपनी जान जोखिम में डालनी पड़ती है!’

मेरे दिल की धड़कन तेज हो गई और मेरा गला सूखने लगा। मैंने मुश्किल से निगलते हुए कहा, 'ऐसे में शायद हमें अपनी सुरक्षा के लिए कुछ कदम उठाने चाहिए।'
‘और आपको किसने बताया कि मैंने ये कदम पहले ही नहीं उठाए हैं?’ फेलुदा ने कहा और अपनी जेब से एक छोटा गोल डिब्बा निकाला।
उस पर लिखा था, 'डेंटिकेयर'।
अरे, ये तो बस टूथपाउडर का एक डिब्बा था। मैंने तो सालों पहले अपने दादाजी को इसे इस्तेमाल करते देखा था। हैरानी से मैंने पूछा, 'फेलुदा, तुम टूथपाउडर का क्या करते हो?'
‘मूर्खता मत करो! यह टूथपाउडर नहीं है।’
'तो वो क्या है?'
फेलुदा ने अपनी आंखें चौड़ी कीं, अपनी गर्दन लंबी की और गर्व से घोषणा की, 'यह पाउडर थंडर है!'

पाँच

उस रात, खाना खाने के बाद, फेलुदा ने अचानक कहा, 'तोपशे, तुम इस सब के बारे में क्या सोचते हो?'
‘क्या सब?’
अब तक जो कुछ भी हुआ है।
‘अरे, आपको तो पता होना चाहिए! आप तो जासूस हैं! वैसे भी, जब तक हमें पता नहीं चलता कि वह संन्यासी कौन था, तब तक मैं कोई निष्कर्ष कैसे निकाल सकता हूँ?’
लेकिन कुछ बातें तो बिल्कुल स्पष्ट हैं, है ना? उदाहरण के लिए, संन्यासी का बाथरूम में जाना और बाहर न आना। यह तो काफी कुछ उजागर करता है, है ना? इससे क्या पता चलता है?
क्या तुम यह नहीं समझ सकते?
'खैर, इसका मतलब सिर्फ यही हो सकता है कि चौकीदार ठीक से ध्यान नहीं दे रहा था।'
नहीं, नहीं, तुम बेवकूफ!
'तो क्या?'
'अगर संन्यासी सचमुच बाहर आया होता, तो चौकीदार उसे जरूर देख लेता।'
‘आपका मतलब है कि उसने कभी ऐसा नहीं किया?’
‘क्या आपको याद है कि वह क्या ले जा रहा था?’
‘देखो, मैं नहीं था... ओह हाँ, उसके पास एक छोटा सा अटैची केस था।’
क्या आपने कभी किसी संन्यासी को अटैची केस के साथ देखा है?
नहीं, मैं ऐसा नहीं कह सकता।
'खैर, मुझे लगता है कि यह बेहद संदिग्ध है।'
आपको क्या संदेह है?
‘वह संन्यासी हम और आप जैसे ही एक गैर-संन्यासी था। और उसके सामान्य कपड़े उस अटैची बॉक्स में थे। भगवा वस्त्र एक छलावा था। संभवतः दाढ़ी भी नकली थी।’

'ओह, मैं समझ गया। आपका मतलब है कि उसने कपड़े बदले, अपना चोला बैग में ठूंस दिया और एकदम अलग रूप में बाहर आया। इसीलिए चौकीदार उसे पहचान नहीं पाया!' ‘हाँ, अब तुम सही बात कर रहे हो!’
लेकिन वह कागज का टुकड़ा आप पर किसने फेंका?
'या तो वह नकली संन्यासी खुद, या उसका कोई आदमी। उसने थाने में हमारी पूछताछ सुन ली होगी, इसलिए उसने हमें चेतावनी देने का फैसला किया।'
ठीक है। लेकिन क्या अभी और भी रहस्य बाकी हैं?
‘इनका कोई अंत नहीं है, मेरे बेटे! उस काली कार में डॉ. श्रीवास्तव का पीछा किसने किया? गेट से हमें कौन देख रहा था, चारमीनार सिगरेट पीते और पान चबाते हुए? क्या वह वही संन्यासी था, या कोई और? प्यारेलाल ने किस “जासूस” की बात की थी? बोनोबिहारी बाबू अपने घर में जंगली जानवर क्यों रखते हैं? महावीर ने बोनोबिहारी बाबू को पहले कहाँ देखा था? उसे गिरोह के बारे में कितना पता है?’
उस रात मैं जागता रहा और इन बातों पर सोचता रहा। फेलुदा एक नीली नोटबुक में कुछ लिख रहा था। फिर उसने नोटबुक रख दी और साढ़े दस बजे सोने चला गया। थोड़ी ही देर में वह गहरी नींद में सो गया।
दूर से ढोल बज रहे हैं। ओह हाँ, राम लीला। मुझे बीच में किसी जानवर की आवाज़ सुनाई दी—शायद कुत्ता या सियार था, लेकिन आवाज़ लकड़बग्घे जैसी लग रही थी।
फेलूदा बोनोबिहारी बाबू के जंगली जानवरों को देखकर हैरान क्यों था? हर काम के पीछे कोई खास वजह तो जरूरी नहीं होती, है ना? लोगों के शौक अजीबोगरीब होते हैं। तो शायद जंगली जानवर पालना उसके लिए भी एक शौक ही था? मुझे याद नहीं कि मैं कब सो गई; और न ही यह कि मुझे किसने जगाया। अभी भी अंधेरा था। और चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। ढोल की आवाज़ें बंद थीं, जानवरों की आवाज़ें भी। मुझे बस अपने बगल में सो रहे फेलुदा की गहरी साँसें और मेरे सिर के पीछे बज रही अलार्म घड़ी की टिक-टिक सुनाई दे रही थी। तभी मेरी नज़र खिड़की पर पड़ी।
सामान्यतः, खुली खिड़की से मुझे तारों से भरा आकाश काफी हद तक दिखाई देता था। आज रात, किसी चीज ने उसका अधिकांश भाग ढक रखा था।

मेरी आंखों से नींद के आखिरी निशान हटते ही, मुझे अचानक एहसास हुआ कि यह क्या था। एक आदमी खिड़की के बाहर खड़ा था, उसकी सलाखों को पकड़े हुए, और हमारे कमरे में घूर रहा था।
मेरा दिल थम सा गया। फिर भी, मैं उस आकृति से अपनी निगाहें नहीं हटा पा रही थी। कमरा घोर अंधेरा था और बाहर तारों की रोशनी इतनी कम थी कि उस आदमी का चेहरा ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था। लेकिन मैं इतना ज़रूर समझ पाई कि उसके चेहरे का निचला हिस्सा एक काले कपड़े से ढका हुआ था।
अब उसने खिड़की की सलाखों में से हाथ डाला। लेकिन नहीं, यह सिर्फ उसका हाथ नहीं था। उसके हाथ में एक छड़ी थी।
एक मीठी, लेकिन तेज़ गंध मेरी नाक में घुस गई। मैं पहले से ही डर से बेहाल था। अब मेरे हाथ-पैर सुन्न होने लगे।
मैंने अपनी पूरी इच्छाशक्ति जुटाने की कोशिश की। फिर धीरे-धीरे, बिना शरीर हिलाए, मैंने अपना बायां हाथ फेलुदा की ओर बढ़ाया। वह अभी भी सो रहा था।
मेरी नज़र खिड़की से हटी ही नहीं थी। वह आदमी अभी भी छड़ी पकड़े हुए था और वह गंध और तेज़ होती जा रही थी। मुझे चक्कर आने लगा।
इसी क्षण मेरा हाथ फेलुदा की कमर से छू गया। मैंने उसे हल्का सा धक्का दिया। फेलुदा थोड़ा सा हिला और हिलने से उसका बिस्तर ज़ोर से चरमरा उठा।
उसी क्षण वह आदमी खिड़की से गायब हो गया।
‘तुम मुझे क्यों परेशान कर रहे हो?’ फेलुदा ने नींद में पूछा। मैंने घबराकर बोलने की कोशिश की।
मैंने किसी तरह कहा, 'खिड़की।'
‘खिड़की का क्या? कौन है... हे भगवान, ये कैसी बदबू है?’ पूरी तरह जागकर फेलुदा उछल पड़ा और खिड़की की ओर भागा। उसने कुछ पल खिड़की से बाहर देखा, फिर मेरी ओर मुड़ गया।
‘मुझे ठीक-ठीक बताओ कि तुमने क्या देखा।’
मुझे अभी भी बोलने में कठिनाई हो रही थी। ‘एक आदमी…’ मैंने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा, ‘जिसके अंदर एक छड़ी थी…’
क्या उसने छड़ी हमारे कमरे में बढ़ा दी थी?
'हाँ।'
‘मैं समझ गया। उसने उस छड़ी पर क्लोरोफॉर्म लगाया होगा। वह चाहता था कि हम बेहोश हो जाएं।’

'लेकिन क्यों?'
‘हो सकता है कोई दूसरा चोर हो। शायद उसे लगा हो कि अंगूठी अभी भी हमारे घर में है। कोई बात नहीं। अब वापस सो जाओ, और कृपया अपने पिताजी या धीरू काका को इसके बारे में मत बताना। वे घबरा जाएंगे और मेरा सारा काम बिगाड़ देंगे।’
अगली सुबह बाबा और धीरू काका दोनों अधिक शांत नज़र आ रहे थे। पुलिस को सूचना दे दी गई थी और इंस्पेक्टर गरगारी ने मामले पर काम शुरू कर दिया था। इसलिए आगे कोई समस्या होने की संभावना नहीं थी।
मैंने फेलुदा के लिए मन ही मन प्रार्थना की। हे भगवान, पुलिस को जीतने मत देना। अंगूठी फेलुदा को ही मिले। सारा श्रेय उसे ही मिले, पुलिस को नहीं। बाबा ने कहा, 'मैं आज तुम्हें कुछ और जगहों पर घुमाने ले जाने की सोच रहा हूँ।'
हमने दोपहर के भोजन के बाद निकलने का फैसला किया। लेकिन इससे पहले कि हम यह तय कर पाते कि हमें कहाँ जाना चाहिए, बोनोबिहारी बाबू घर आ गए। अंततः उन्होंने ही इस मामले को सुलझाया।
“दिनदहाड़े हुई इस लूट के बारे में सुनकर मुझे आना ही पड़ा,” उन्होंने कहा। “काश आपके पास कोई शिकारी कुत्ता होता, धीरू बाबू, तो ऐसा न होता। एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित नस्ल का शिकारी कुत्ता साधु के इरादों को समझने में सिर्फ पांच सेकंड लेता। लेकिन अब आपको सलाह देने का क्या फायदा? नुकसान तो हो चुका है! कोई बात नहीं। ये लीजिए,” उन्होंने अपने हाथ में पकड़े छोटे पैकेट को खोलते हुए कहा, “ये लखनऊ के सबसे अच्छे पान हैं। बनारस ही एकमात्र ऐसी जगह है जहाँ आपको इतनी अच्छी गुणवत्ता का पान मिलेगा।” मुझे थोड़ी बेचैनी होने लगी। अगर बोनोबिहारी बाबू ज़्यादा देर तक रुकते, तो दोपहर के हमारे सारे प्लान बिगड़ जाते। लेकिन तभी उन्होंने पूछा, 'क्या आप बाहर जाने का प्लान बना रहे हैं या घर पर ही रहेंगे?'
बाबा ने कहा, 'इन लोगों ने इमामबाड़ा के अलावा कुछ नहीं देखा है। इसलिए मैं इन्हें कहीं और ले जाने की सोच रहा था।'
‘क्या आपने रेजीडेंसी नहीं देखी?’ बोनोबिहारी बाबू ने मुझसे पूछा। मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया।
‘तो चलिए, मैं आपको दिखाता हूँ। मेरे जैसा मार्गदर्शक आपको कहीं नहीं मिलेगा। मुझे विद्रोह की पूरी जानकारी है।’

फिर उन्होंने धीरू काका की ओर मुड़कर कहा, 'मुझे बस एक ही बात जानने की जिज्ञासा है। आपने अंगूठी कहाँ रखी थी? किसी संदूक में?'
‘नहीं, मेरे घर में चाबी नहीं है। चोर ने इसे मेरी गोदरेज अलमारी से चुरा लिया। चाबी तो मेरी जेब में ही थी। उसने नकली चाबी का इस्तेमाल किया होगा।’ ‘मुझे लगता है कि वह डिब्बा वहीं छोड़ गया था?’
'हाँ।'
'बहुत अजीब! क्या डिब्बा किसी दराज में था?'
'हाँ।'
'और आपने दराज की अच्छी तरह से तलाशी ली, मेरा अनुमान है?'
'इसका हर एक इंच।'
‘आप उंगलियों के निशान तो देख सकते हैं, है ना? मतलब, अलमारी के हैंडल पर और उस छोटे से डिब्बे पर...?’
‘इससे कोई फायदा नहीं होगा। दोनों पर मेरे खुद के उंगलियों के निशान हैं।’ बोनोबिहारी बाबू ने सिर हिलाते हुए कहा, 'प्यारेलाल एक अजीब आदमी था। उसने अंगूठी का बीमा तक नहीं करवाया। और जिसे उसने अंगूठी दी, वह भी उतना ही मूर्ख था। खैर, मुझे उम्मीद है कि अब उसे सबक मिल गया होगा।'
इस बार हमें तांगा चलाने का मौका नहीं मिला। हम सब बोनोबिहारी बाबू की कार में बैठ गए। मैं और फेलुदा आगे की सीट पर बैठे।
जब हम क्लाइव रोड से गुजर रहे थे, बोनोबिहारी बाबू ने हमसे पूछा, 'क्या आपने कभी सोचा था कि आप लखनऊ में ऐसी रहस्यमय घटना में शामिल हो जाएंगे?'
मैंने अपना सिर हिलाया। फेलुदा हँस पड़ा।
बाबा ने उसकी ओर से बात की। उन्होंने कहा, 'फेलू यहां आकर बहुत खुश है, क्योंकि उसे ऐसी चीजों में बहुत दिलचस्पी है। आप जानते हैं, वह एक शौकिया जासूस है।'
‘सचमुच?’ बोनोबिहारी बाबू आश्चर्यचकित और प्रसन्न दोनों लग रहे थे, ‘यह दिमाग की कसरत का एक बेहतरीन तरीका है। अच्छा, फेलू बाबू, आप अब तक कितना आगे बढ़ चुके हैं?’
मैंने अभी-अभी शुरुआत की है।
मुझे नहीं पता कि आप रहस्य किसे कहेंगे। लेकिन निश्चित रूप से कई चीजें मुझे आश्चर्यचकित करती हैं।
‘आपका क्या मतलब है?’ धीरू काका ने पूछा।

‘अच्छा, आपको क्या लगता है कि उस संन्यासी को नकली चाबी कैसे मिली? इसके अलावा, आपका घर पूरी तरह से खाली नहीं था। जब घर में नौकर और रसोइया मौजूद थे, तो वह आपके शयनकक्ष में कैसे जा सकता था? खैर, एक छोटी सी बात मुझे हमेशा से परेशान करती रही है।’
'वह क्या है?'
‘क्या प्यारेलाल ने सचमुच वह अंगूठी डॉ. श्रीवास्तव को दी थी, या श्री ने —?’
‘आप क्या कह रहे हैं, बोनोबिहारी बाबू? आपको बेचारे डॉ. श्रीवास्तव पर शक तो नहीं होगा!’
‘क्यों नहीं? जब तक यह मामला सुलझ नहीं जाता, हर कोई शक के घेरे में है। और इसमें आप और मैं भी शामिल हैं। है ना, फेलू बाबू?’
‘बिल्कुल। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उस शाम डॉ. श्रीवास्तव और वह साधु दोनों हमारे घर आए थे,’ फेलुदा ने कहा।
‘बिल्कुल!’ बोनोबिहारी बाबू बेहद उत्साहित हो गए। बाबा थोड़ा हिचकिचाते हुए बोले, ‘लेकिन... अगर श्रीवास्तव ने वाकई उस अंगूठी को हासिल करने के लिए गलत तरीके अपनाए थे, तो उन्होंने उसे हमें सुरक्षित रखने के लिए क्यों दिया? और फिर उसे दोबारा क्यों चुराया?’
बोनोबिहारी बाबू जोर से हँसे। 'यह तो बहुत आसान है! उनके घर में चोरी हो गई थी। इसलिए वे डर गए और अंगूठी आपको दे दी। लेकिन लालच ने उनका पीछा नहीं छोड़ा, इसलिए उन्होंने अंगूठी वापस चुरा ली, असली चोर को चकमा दिया और एक तीर से दो निशाने साध लिए!'
मैं काफी उलझन में पड़ गया। श्रीवास्तव जैसा सौम्य व्यक्ति चोर कैसे हो सकता है? क्या फेलुदा अभी कही गई बातों से सहमत था? या बोनोबिहारी बाबू के बोलने के बाद ही उसका शक डॉ. श्रीवास्तव पर गया?
दरअसल, उनकी बात अभी खत्म नहीं हुई थी। बोनोबिहारी बाबू ने आगे कहा, ‘श्रीवास्तव एक अच्छे इंसान हैं, मैं मानता हूँ। लेकिन ज़रा सोचिए— उन्होंने अपना घर खुद बनवाया है, उसे महंगे फर्नीचर से भर दिया है और वो शान-शौकत से रहते हैं। अब, उन्होंने ऐसा कैसे किया होगा? मेरा मतलब है, लखनऊ जैसे छोटे शहर में एक अस्थि रोग विशेषज्ञ के तौर पर वो कितना कमाते होंगे?’

धीरू काका ने कहा, 'कौन जाने, शायद उसके पिता ने उसके लिए कुछ पैसे छोड़े हों?'
नहीं। उनके पिता इलाहाबाद के एक डाकघर में सिर्फ एक क्लर्क थे।
इस समय, फेलुदा ने अचानक एक बिल्कुल ही अप्रासंगिक सवाल पूछ लिया।
क्या आपको कभी आपके किसी पालतू जानवर ने काटा है?
'नहीं, कभी नहीं।'
‘तुम्हारी दाहिनी कलाई पर वह निशान क्या है?’
‘ओह हो हो—आपकी नज़रें तो वाकई तेज़ हैं! यह निशान आमतौर पर मेरी आस्तीन के नीचे छिपा रहता है। यह तलवारबाज़ी का नतीजा है। मेरे प्रतिद्वंदी की तलवार से मेरी कलाई पर खरोंच आ गई थी।’
रेजिडेंसी वाकई देखने लायक थी। यह एक खूबसूरत जगह थी—चारों ओर पेड़ थे और उनके बीच कुछ टूटे-फूटे पुराने ब्रिटिश मकान थे, जो सभी उन्नीसवीं सदी के मध्य में बने थे। पेड़ों पर बंदरों के बड़े-बड़े झुंड बैठे थे। मैंने सुना था कि लखनऊ अपने बंदरों के लिए मशहूर है। अब मैं खुद देख सकता था कि ये जीव क्या-क्या करतब दिखा सकते हैं।
कुछ आवारा बच्चे गुलेल से बंदरों पर पत्थर फेंक रहे थे। बोनोबिहारी बाबू उनके पास गए और उन्हें खूब खरी-खोटी सुनाई। फिर वे हमारे पास लौटकर बोले, 'मुझे जानवरों पर होने वाली क्रूरता बर्दाश्त नहीं होती। दुर्भाग्य से, हमारे देश में यह बहुत देखने को मिलती है।'
मैंने सिपाही विद्रोह के बारे में पढ़ा था। रेजीडेंसी में रहने के दौरान वे घटनाएँ मेरे दिमाग में स्क्रीन पर तस्वीरों की तरह कौंध गईं। इसी बीच बोनोबिहारी बाबू ने अपनी टिप्पणी शुरू कर दी थी।
विद्रोह के समय लखनऊ पर नवाब का शासन था। ब्रिटिश सेना के सभी जवान यहीं रेजीडेंसी में तैनात थे। हेनरी लॉरेंस उनके कमांडर-इन-चीफ थे। जब अशांति फैली, तो लखनऊ में मौजूद अधिकांश अन्य ब्रिटिश पुरुष और महिलाएं एक अस्पताल में शरण लेने चले गए। सर हेनरी ने बहादुरी से लड़ाई लड़ी, लेकिन अंततः सिपाहियों के हाथों मारे गए। उसके बाद अंग्रेजों का क्या हाल हुआ, यह इस इमारत की हालत से स्पष्ट है। अगर सर कॉलिन कैंपबेल अतिरिक्त सैनिकों के साथ नहीं आते, तो भगवान ही जाने लखनऊ में अंग्रेजों को और कितनी भयानक यातनाएं सहनी पड़तीं... यह उनका बिलियर्ड रूम था। ज़रा देखिए तोप के गोलों ने इसका क्या हाल कर दिया!

बाबा और धीरू काका टहलने गए थे क्योंकि वे दोनों पहले भी रेजीडेंसी देख चुके थे। अंदर सिर्फ मैं और फेलुदा थे, हम दोनों बोनोबिहारी बाबू की बातों में पूरी तरह मग्न थे और दो सौ साल पहले बनी टूटी-फूटी इमारतों के अवशेषों को देख रहे थे। अचानक, दीवार में एक छेद से कुछ अंदर आया। वह फेलुदा के कान के पास से गुजरा, सामने वाली दीवार से टकराया और धड़ाम से जमीन पर गिर गया। पता चला कि वह एक पत्थर था।
अगले ही पल मैंने देखा कि बोनोबिहारी बाबू ने फेलुदा को तेज़ी से एक तरफ खींच लिया, ठीक उसी समय एक और पत्थर आया और ज़मीन पर गिर गया। इसमें कोई शक नहीं था कि दोनों पत्थर गुलेल से फेंके गए थे।
बोनोबिहारी बाबू, अपनी उम्र के बावजूद, असाधारण फुर्ती से चल रहे थे। उन्होंने दीवार में बने एक बड़े छेद से छलांग लगाई और बाहर घास पर जा गिरे। फेलुदा और मैं भी लगभग तुरंत उनके पास पहुँच गए। हम सबने एक दाढ़ी वाले आदमी को भागते हुए देखा। उसने काला कोट और लाल टोपी पहन रखी थी। फेलुदा बिना कुछ कहे उठ खड़ा हुआ और उसके पीछे भागा। मैं भी उसके पीछे जाने ही वाला था कि बोनोबिहारी बाबू ने मुझे रोकते हुए कहा: 'तपेश, तुम अभी सिर्फ एक स्कूली बच्चे हो। बेहतर होगा कि तुम इस सब से दूर रहो।'
कुछ ही मिनटों में फेलुदा लौट आया।
‘क्या तुमने उसे पकड़ लिया?’ बोनोबिहारी बाबू ने पूछा।
‘नहीं,’ फेलुदा ने कहा, ‘मैं बहुत पीछे रह गया था। वह एक काली स्टैंडर्ड कार में बैठा और भाग गया।’
‘बदमाश!’ बोनोबिहारी बाबू बड़बड़ाए। ‘चलो अब, हमें यहाँ से निकलना चाहिए।’ थोड़ी देर बाद, हमारी मुलाकात बाबा और धीरू काका से हुई। बाबा ने पूछा, 'फेलू, तुम इतनी हांफ क्यों रहे हो?'
बोनोबिहारी बाबू ने कहा, 'शायद उसे जासूस बनना छोड़ देना चाहिए, मुझे लगता है कोई गुंडा उसके पीछे पड़ा है!'
हमारी कहानी सुनकर बाबा और धीरू काका दोनों ही घबरा गए। लेकिन अंत में बोनोबिहारी बाबू हंस पड़े। उन्होंने कहा, ‘इतना परेशान मत होइए, मैं तो बस मजाक कर रहा था। वो पत्थर असल में मेरे लिए थे, फेलू के लिए नहीं। क्या तुमने मुझे उन लड़कों पर चिल्लाते हुए नहीं देखा? वो तो बस उनका मुझे सबक सिखाने का तरीका था।’ फिर उन्होंने फेलूदा की ओर मुड़कर कहा, ‘फिर भी, फेलू बाबू, मैं यही कहूंगा कि आपको और सावधान रहना चाहिए। आखिर आप जवान हैं और

इस जगह पर नए हैं। ऐसी बात में क्यों पड़ रहे हो जिसका आपसे कोई लेना-देना नहीं?’
फेलुदा चुप रहा। हम वापस कार की ओर चलने लगे।
‘क्या वे सचमुच उसे निशाना बनाने की कोशिश कर रहे थे? या तुम्हें?’ मैंने फेलुदा से फुसफुसाकर पूछा।
‘क्या आपको लगता है कि अगर वह उनका निशाना होता तो वह इसे इतनी शांति से सहन कर लेता? क्या वह जोर-जोर से चिल्लाकर हंगामा नहीं मचा देता—या जो कुछ बचा है उसे भी?’
'मैं आपसे सहमत हूँ।'
‘पर मेरे पास एक छोटी सी चीज़ है। उस आदमी ने उसे गिरा दिया था।’ फेलुदा ने अपनी जेब से एक छोटी सी काली वस्तु निकाली। यह एक नकली मूंछ थी। एक तरफ अभी भी गोंद के निशान थे। उसने उसे वापस अपनी जेब में रख लिया और कहा, ‘बोनोबिहारी बाबू अच्छी तरह जानते हैं कि वे पत्थर मुझ पर फेंके गए थे।’ ‘तो फिर उसने ऐसा क्यों नहीं कहा?’
‘खैर, या तो इसलिए कि वह नहीं चाहता था कि हम चिंतित हों, या...’
'या क्या?'
फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उसने अपना सिर झुकाया, उंगलियां चटकाईं और कहा, 'मामला और भी पेचीदा होता जा रहा है, टॉपशे! मुझे बिल्कुल भी परेशान मत करना!'
उस दिन उन्होंने मुझसे दोबारा बात नहीं की। घर लौटने पर उन्होंने अपना अधिकांश समय या तो बगीचे में इधर-उधर टहलते हुए या अपनी नीली नोटबुक में कुछ लिखते हुए बिताया। जब वे बगीचे में गए तो मैंने सरसरी नज़र डाली कि उन्होंने क्या लिखा था; लेकिन मैं एक भी शब्द नहीं पढ़ सका, क्योंकि जिस लिपि का इस्तेमाल किया गया था वह मैंने पहले कभी नहीं देखी थी।

छह

फेलुदा तांगे में बैठा और चालक से बोला: 'हजरतगंज।'
मैंने पूछा, 'वह कहाँ है?'
‘यह लखनऊ का चौरंगी है। इस शहर में शाही महलों के अलावा भी बहुत कुछ देखने लायक है। मैं आज यहां की दुकानें देखना चाहता हूं।’
कल, हम रेजिडेंसी से बोनोबिहारी बाबू के घर कॉफी पीने गए थे, और हमने एक बार फिर सभी जानवरों को देखा - लकड़बग्घा, रैटलस्नेक, मकड़ी, जंगली बिल्ली और बिच्छू।
बैठक कक्ष में कॉफी पीते समय, फेलुदा ने एक बंद दरवाजे को देखा और बोनोबिहारी बाबू से कहा, 'पिछली बार जब हम यहां आए थे तब मैंने देखा था कि यह बंद है। यह कहां जाता है?'
'ओह हाँ—यह तो बस एक अतिरिक्त कमरा है। जब से मैं यहाँ आई हूँ, मैंने इसे हमेशा बंद ही रखा है। आप जानते हैं, मैं इसे साफ करवाने की झंझट में नहीं पड़ना चाहती थी।'
‘अगर ऐसा है, तो इस पर लगा ताला हाल ही में बदला गया होगा—क्योंकि इसमें बिल्कुल भी जंग नहीं लगी है।’
बोनोबिहारी बाबू की मुस्कान जरा भी फीकी नहीं पड़ी, लेकिन उन्होंने फेलुदा को बहुत तीखी नजर से देखा।
'हां,' उसने कहा, 'पुराना वाला इतना जंग खा गया था कि मुझे उसे बदलना पड़ा।' बाबा ने विषय बदल दिया। उन्होंने कहा, 'हम हरिद्वार और लक्ष्मणझूला जाने की सोच रहे थे।'
बोनोबिहारी बाबू ने अपनी पाइप जलाई और उससे तीखा धुआं निकाला।
‘आप कब जाना चाहेंगे?’ उसने पूछा। ‘अगर आप परसों निकलेंगे, तो मैं आपके साथ आ सकता हूँ। मैंने आपको उस बारह फुट के अजगर के बारे में बताया था ना? मुझे उसे देखना ही होगा। इसके अलावा, हमारा जासूस इतना सक्रिय हो गया है कि हम सभी के लिए कुछ समय के लिए शहर से बाहर जाना अच्छा विचार हो सकता है।’

धीरू काका ने कहा, 'मैं इतनी आसानी से ऐसा नहीं कर सकता। लेकिन आप तीनों के न जाने का कोई कारण नहीं है। फेलू और तपेश को लक्ष्मणझूला देखे बिना वापस नहीं जाना चाहिए।'
बोनोबिहारी बाबू ने कहा, “अगर तुम मेरे साथ आओ, तो मैं तुम्हारे लिए एक धर्मशाला में ठहरने का इंतजाम कर सकता हूँ जिसे मैं जानता हूँ; और हरिद्वार से लक्ष्मणझूला तक जाने के लिए गाड़ी का इंतजाम भी करवा सकता हूँ। वहाँ मैं बहुत से लोगों को जानता हूँ। अब तुम्हें खुद तय करना है कि तुम क्या करना चाहते हो।”
हमने शुक्रवार को बोनोबिहारी बाबू के साथ जाने का फैसला किया, जो परसों था। कुछ दिन पहले तक, मुझे बोनोबिहारी बाबू के साथ जाने में काफी खुशी होती। लेकिन रेजिडेंसी में हुई घटना ने मुझे उस आदमी के बारे में संदेह में डाल दिया था। लेकिन फेलुदा को इससे कोई फर्क नहीं पड़ा, इसलिए मैंने खुद को समझाया कि चिंता न करें।
आज सुबह फेलुदा ने कहा, ‘मेरे पास रेज़र ब्लेड खत्म हो गए हैं। चलो जाकर कुछ ले आते हैं।’ और हम एक तांगे में बैठकर हजरतगंज के लिए निकल पड़े। कहा जाता था कि हजरतगंज में मनचाही हर चीज़ मिल जाती थी।
कल से फेलुदा अंगूठी के बारे में बिलकुल चुप था। आज सुबह जब वह नहाने गया, तो मैंने उसकी लिखी हुई बातें एक बार फिर पढ़ने की कोशिश की, लेकिन फिर भी कुछ समझ नहीं आया। एक-दो अक्षर अंग्रेज़ी में लग रहे थे, लेकिन बाकी सब बिलकुल अजीब थे।
तांगा में उसके बगल में बैठे हुए, मैं अपनी जिज्ञासा को और रोक नहीं सका और उसे सब कुछ बता दिया। पहले तो वह बहुत क्रोधित हुआ। उसने कड़े स्वर में कहा, 'तुमने जो किया है वह घिनौना है! तुम्हें तो अपराधी कहा जा सकता है!' फिर वह थोड़ा नरम पड़ गया।
उन्होंने अधिक सौहार्दपूर्ण ढंग से कहा, 'तुम उन शब्दों को कभी नहीं पढ़ सकते, क्योंकि तुम्हें लिपि का ज्ञान नहीं है।'
‘यह कौन सी स्क्रिप्ट है?’
‘ग्रीक।’
और भाषा? क्या वह भी ग्रीक है?
नहीं, यह अंग्रेजी है।
‘आपने ग्रीक में लिखना कहाँ से सीखा?’

बहुत समय पहले की बात है, जब मैंने कॉलेज में दाखिला लिया था। इनमें से कुछ अक्षर तो मैंने गणित की कक्षा में सीखे थे। जैसे अल्फा, बीटा, गामा, डेल्टा, म्यू, पाई, अप्सिलॉन। बाकी मैंने एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका से सीखे थे। अगर आप अंग्रेजी में कुछ ग्रीक अक्षरों से लिखते हैं, तो वह किसी कोड की तरह लगता है। कोई भी उसे समझ नहीं सकता!
‘ग्रीक भाषा में लखनऊ की स्पेलिंग क्या होगी?’
‘Lambda upsilon kappa nu omicron upsilon. ग्रीक में अक्षर “c” और “w” मौजूद नहीं हैं, इसलिए वर्तनी LUKNOU होगी।’
‘और कलकत्ता की स्पेलिंग क्या होगी?’
'अल्फा शिप लैम्डा शिप अप्सिलॉन लोग अल्फा लोग।'
‘हे भगवान! सिर्फ तीन शब्दों की स्पेलिंग लिखने में ही एक घंटा लग जाएगा!’ हजरतगंज चौरंगी जैसा तो नहीं था, लेकिन वहाँ कुछ अच्छी दुकानें थीं। हमने तांगा का किराया चुकाया और पैदल चलना शुरू कर दिया।
‘देखो, फेलुदा, वहाँ एक स्टेशनरी की दुकान है। वहाँ ब्लेड मिल जाएँगे।’ ‘रुको। मुझे कुछ और काम करना है।’
फेलुदा अचानक एक दुकान के सामने रुक गया। दुकान के बोर्ड पर बड़े अक्षरों में लिखा था, 'मलकानि एंड कंपनी, प्राचीन वस्तुओं और कलाकृतियों के विक्रेता'।
बाहर लगे शोकेस को देखकर ही मुझे पता चल गया था कि यह पुरानी चीजों की दुकान है। अंदर, यह प्राचीन आभूषणों, कालीनों, घड़ियों, फर्नीचर, झूमरों, फ्रेम की हुई तस्वीरों और न जाने क्या-क्या चीजों से भरा पड़ा था।
सुनहरे फ्रेम वाले चश्मे पहने एक चांदी जैसे बालों वाले सज्जन हमारा अभिवादन करने के लिए आगे आए।
क्या आपके पास मुगल काल के कोई आभूषण हैं?
नहीं, मुझे खेद है कि ऐसा संभव नहीं है। लेकिन मैं आपको उस काल की ढालें और कवच दिखा सकता हूँ। क्या इससे काम चल जाएगा?
फेलुदा ने एक इत्र की बोतल उठाई और उसे हाथ में घुमाया। उसने लापरवाही से कहा, 'मैंने प्यारेला के घर में कुछ पुराने गहने देखे थे। वह यहाँ नियमित ग्राहक था, है ना?'
वह व्यक्ति अचंभित प्रतीत हुआ।
‘कौन? आप किस प्यारेलाल की बात कर रहे हैं?’

‘प्यारेलाल सेठ। वही जिनकी कुछ महीने पहले मृत्यु हो गई थी?’
श्री मलकानि ने सिर हिलाते हुए कहा, 'नहीं, उन्होंने हमसे कभी कुछ नहीं खरीदा, हालांकि लखनऊ में इस तरह की हमारी दुकान सबसे बड़ी है।'
‘मैं समझ गया। उस स्थिति में उसने वे चीजें कलकत्ता में ही खरीदी होंगी।’ 'शायद।'
‘यहां आपके सबसे बड़े खरीदार कौन हैं?’
श्री मलकानि के चेहरे के भाव से यह स्पष्ट था कि उनके पास बहुत बड़े खरीदार नहीं थे।
उन्होंने कहा, “विदेश से आने वाले पर्यटक कभी-कभी हमसे अच्छी कीमत पर सामान खरीदते हैं। स्थानीय लोगों में श्री मेहता हैं जो कभी-कभार कुछ चीजें खरीदते हैं; और श्री पेस्टनजी हैं, जो मेरे सबसे पुराने ग्राहकों में से एक हैं। उन्होंने अभी कुछ दिन पहले ही तीन हजार रुपये में एक असली फारसी कालीन खरीदा था।”
फेलुदा ने अचानक एक नाव की ओर इशारा करते हुए पूछा, 'क्या यह बंगाल से नहीं है?'
'जी हां, मुर्शिदाबाद।'
‘बस इसे देखो, टॉपशे। क्या यह सुंदर नहीं है?’
यह सचमुच अद्भुत था। हाथीदांत से बना यह महल हर तरह से परिपूर्ण था। इसकी छत पर एक नवाब चंदवा के नीचे बैठा हुक्का पी रहा था, उसके बगल में दरबारी बैठे थे और उसके सामने संगीतकारों और नर्तकों का एक समूह खड़ा था। सोलह नाविक चप्पू चला रहे थे और एक व्यक्ति पतवार संभाले बैठा था। इनके अलावा, पहरेदार, संदेशवाहक और शाही दल के लिए आवश्यक हर अन्य व्यक्ति मौजूद था। मैं अपनी निगाहें उससे हटा नहीं पा रहा था।
‘यह तुम्हें कहाँ से मिला?’ फेलुदा ने पूछा।
श्री सरकार ने इसे मुझे बेचा था।
‘कौन से श्री सरकार?’
'श्री बी. सरकार, जो बादशाह नगर में रहते हैं। उन्होंने भी कभी-कभार मुझसे कुछ चीजें खरीदी हैं। उनके पास अच्छा खासा संग्रह है।'
‘मैं समझ गया। अच्छा, ठीक है। आपकी दुकान बहुत अच्छी है। मुझे इसे देखकर खुशी हुई। धन्यवाद।’
'शुभ दिन हो महोदय।'

हम दुकान से बाहर आ गए।
‘इसका मतलब है कि बोनोबिहारी सरकार अक्सर इन दुकानों पर आते-जाते हैं,’ फेलुदा ने कहा। ‘मुझे शुरू से ही इस बात का शक था।’
लेकिन उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसी चीजों में कोई दिलचस्पी नहीं है!
'अगर वह ऐसा नहीं होता, तो वह एक नजर में कैसे बता सकता था कि पत्थर असली है या नकली?'
मलकानी एंड कंपनी के बगल में 'द एम्पायर बुक स्टॉल' नाम की एक दुकान थी। फेलुदा हरिद्वार और लक्ष्मणझूला पर एक किताब खरीदना चाहता था। तो हम अंदर गए और वहाँ हमें प्यारेलाल का बेटा महावीर मिला।
फेलुदा ने धीरे से फुसफुसाते हुए कहा, 'मैं देख सकता हूँ कि वह क्रिकेट पर एक किताब खरीद रहा है। बहुत बढ़िया।'
महाबीर हमारी तरफ पीठ करके खड़ा था। फेलुदा काउंटर के पीछे खड़े आदमी के पास गया और बोला, 'क्या आपके पास नेविल कार्डस की कोई किताब है?'
महावीर तुरंत घूम गया। मुझे पता था कि कार्डस ने क्रिकेट पर कुछ बहुत अच्छी किताबें लिखी हैं।
‘क्या आप कोई खास किताब ढूंढ रहे हैं?’ किताब विक्रेता ने पूछा। ‘हां, वही जिसका नाम ‘सेंचुरीज़’ है।’
नहीं, मुझे खेद है कि हमारे पास वह किताब नहीं है। क्या मैं आपको कोई दूसरी किताब दिखाऊं?
महावीर मुस्कुराते हुए आगे आया। उसने पूछा, 'क्या आप क्रिकेट के शौकीन हैं?'
‘हाँ। तो, जाहिर तौर पर, आप भी वही हैं!’ फेलुदा ने जवाब दिया।
महाबीर ने अपने हाथ में पकड़ी किताब पर नजर डाली।
‘हां,’ उन्होंने कहा, ‘मैंने यही वाली मंगवाई थी। यह ब्रैडमैन की आत्मकथा है।’
‘ओह, मुझे समझ आ गया। मैंने वह किताब पढ़ी है। एक शानदार किताब!’
‘आपके हिसाब से कौन ज़्यादा महान क्रिकेटर था—रणजी या ब्रैडमैन?’ जल्द ही दोनों एक गरमागरम बहस में मशगूल हो गए। कुछ मिनट बाद, महावीर ने कहा, ‘क्वालिटी रेस्टोरेंट यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं है। क्यों न हम बैठें और एक कप चाय पी लें?’

फेलुदा मान गया। हम तीनों रेस्तरां में चले गए। मैंने कोका-कोला मंगवाया और बाकी सबने चाय मंगाई।
‘क्या आप खुद का किरदार निभाते हैं?’ महाबीर ने पूछा।
‘मैं खेलता था,’ फेलुदा ने कहा। ‘मैंने लखनऊ में खेला है। आपका क्या ख्याल है?’
‘मैं दून स्कूल में प्रथम ग्यारह खिलाड़ियों में था। मेरे पिता भी स्कूल में एक अच्छे खिलाड़ी थे।’
उसके चेहरे पर उदासी छा गई। फेलुदा ने चाय डालनी शुरू की। उसने कहा, 'तुमने अंगूठी के बारे में तो सुना ही होगा।'
‘हां,’ महाबीर ने जवाब दिया। ‘मैं डॉक्टर श्रीवास्तव से मिलने गया था। उन्होंने मुझे बताया।’
‘क्या आपको पता था कि आपके पिता के पास वह अंगूठी थी और वह उसे डॉ. श्रीवास्तव को देना चाहते थे?’
‘मेरे पिता ने बहुत समय पहले मुझसे कहा था कि मुझे ठीक करने के लिए वे श्रीवास्तव को कुछ मूल्यवान वस्तु देना चाहते हैं। मुझे यह बात उनकी मृत्यु के बाद ही पता चली। स्वयं डॉ. श्रीवास्तव ने मुझे बताई।’
फिर उसने सीधे फेलुदा की ओर देखा। 'तुम इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहे हो?' फेलुदा मुस्कुराया। 'यह... बस एक तरह का शौक है।'
महाबीर ने अपनी चाय की चुस्की ली और कुछ नहीं कहा।
‘तुम्हारे घर में और कौन है?’ फेलुदा ने धीमी आवाज़ में पूछा।
एक बूढ़ी चाची और कुछ नौकर।
‘क्या वे कुछ समय से आपके साथ हैं?’
‘यह सब मेरे जन्म से भी पहले का है। हमारे शववाहक प्रीतम सिंह पैंतीस साल पहले कलकत्ता में मेरे पिता के साथ थे।’
‘क्या आपके पिता के पास उस अंगूठी जैसी कोई और वस्तुएँ थीं?’
‘मुझे नहीं पता। दरअसल, मैं अपने पिता की इस रुचि के बारे में पूरी तरह भूल ही गई थी। उन्होंने मेरे बचपन से ही प्राचीन वस्तुएं इकट्ठा करना शुरू कर दिया था। मैंने अभी कुछ दिन पहले ही एक पुराना संदूक खोला था। उसमें उस दौर की कुछ और चीजें भी थीं, लेकिन अंगूठी जितनी कीमती कोई नहीं थी।’
मैंने स्ट्रॉ से अपनी कोका-कोला पी। महाबीर रुका, फिर धीमी आवाज़ में बोला, 'प्रीतम सिंह ने मुझे कुछ अजीब सी बात बताई।'

फेलुदा ने उसके बोलने का इंतज़ार किया। महाबीर ने चारों ओर ध्यान से देखा और आगे झुककर धीरे-धीरे बोलना जारी रखा।
उन्होंने कहा कि उन्होंने उस सुबह मेरे पिता को चीखते हुए सुना था, इससे पहले कि उन्हें दूसरा दौरा पड़ा।
'ओह?'
प्रीतम सिंह ने पहले तो ज्यादा ध्यान नहीं दिया क्योंकि मेरे पिता को अक्सर पीठ दर्द रहता था और कुर्सी या बिस्तर से उठते समय वे दर्द से चीख उठते थे। फिर भी, वे कभी किसी को उन्हें उठाने में मदद नहीं करने देते थे। प्रीतम सिंह को लगा कि उस सुबह भी उनकी पीठ का दर्द ही उन्हें परेशान कर रहा था। लेकिन अब उनका कहना है कि शायद वे गलत थे क्योंकि जाहिर तौर पर मेरे पिता बहुत जोर से चीखे थे।
क्या आपको पता है कि उस दिन आपके पिता से कोई मिलने आया था? क्या प्रीतम सिंह को कुछ याद है?
‘मैंने उनसे इस बारे में पहले ही पूछ लिया है, लेकिन वे निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकते। पिताजी से कभी-कभी सुबह मिलने लोग आते थे, लेकिन प्रीतम को अब याद नहीं आ रहा कि उस दिन उनसे कोई खास मिलने आया था या नहीं। जब वह आखिरकार पिताजी के कमरे में गया, तो उसने उन्हें बहुत खराब हालत में पाया; लेकिन वे अकेले थे। प्रीतम ने तब डॉ. श्रीवास्तव को फोन किया क्योंकि पिताजी का नियमित इलाज करने वाले डॉक्टर ग्राहम इलाहाबाद में एक सम्मेलन में भाग लेने गए हुए थे।’
और उस जासूस का क्या हुआ?
‘जासूस? कौन सा जासूस?’ महाबीर बेहद चौंक गया।
'ओह, जाहिर है आपने यह कहानी नहीं सुनी है। आपके पिता ने डॉक्टर श्रीवास्तव को एक जासूस के बारे में बताना शुरू किया था, लेकिन बोलने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई।'
महाबीर ने सिर हिलाते हुए कहा, 'मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था। और मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि मेरे पिता का किसी जासूस से क्या संबंध हो सकता है!'
मैंने अभी-अभी अपना पेय समाप्त किया और स्ट्रॉ को घुमाया ही था कि मैंने देखा कि बगल की मेज पर एक लंबा-चौड़ा आदमी चाय पी रहा था और हमें घूर रहा था। जैसे ही उसकी नज़र मुझ पर पड़ी, वह उठा और आगे बढ़ा।

‘नमस्कार,’ उसने फेलुदा से कहा, ‘आशा है तुम्हें मैं याद हूँ?’
'हाँ बिल्कुल।'
मैंने उसे पहले तो पहचाना नहीं था, लेकिन अब पहचान लिया। हमने इस आदमी को बोनोबिहारी बाबू के घर में देखा था। वह चिड़ियाघर का प्रभारी था। आज उसकी ठुड्डी पर रुई का एक टुकड़ा चिपका हुआ था, जिसे दो पट्टियों से टिकाया गया था। शायद शेविंग करते समय उसे चोट लग गई थी।
‘बैठ जाइए,’ फेलुदा ने आमंत्रित किया। ‘महाबीर सेठ से मिलिए। ये गणेश गुहा हैं।’
अब मैंने उसकी गर्दन पर एक खरोंच देखी, हालांकि यह स्पष्ट रूप से एक पुरानी खरोंच थी।
‘तुम्हारी ठुड्डी को क्या हुआ?’ फेलुदा ने पूछा।
गणेश बाबू ने बगल वाली मेज से अपना कप उठाया और हमारे साथ आ गए। ‘मुझे याद मत दिलाओ!’ उन्होंने मुंह बनाते हुए कहा। ‘मुझे हैरानी है कि मेरा पूरा शरीर अभी तक टुकड़े-टुकड़े नहीं हो गया। आप मेरे काम के बारे में जानते ही हैं, है ना?’
'हां। लेकिन मुझे लगा था कि यह काम आपने स्वेच्छा से स्वीकार किया था।' ‘मज़ाक कर रहे हो! मैं ये सब मजबूरी में करता हूँ—सिर्फ़ पैसों के लिए। एक ज़माने में मैं सर्कस में एक बाघ का रखवाला था। लेकिन वो बाघ ज़्यादातर समय नशे में रहता था। सच कहूँ तो, बोनोबिहारी बाबू के चिड़ियाघर में जिन जानवरों की मैं देखभाल करता हूँ, उनके मुकाबले वो बाघ तो बस एक बच्चा था! पिछले दिन एक जंगली बिल्ली ने मुझे नोंच डाला, और अब लकड़बग्घा मेरी ठोड़ी पर थप्पड़ मार रहा है! मैं ये सब बर्दाश्त नहीं कर पाया। इसलिए आज सुबह मैंने श्री सरकार को बताया कि मैंने मन बना लिया है। मैं उस सर्कस में वापस जाना चाहता हूँ। वो मुझे जाने देने के लिए राज़ी हो गए।’
‘क्या!’ फेलुदा ने हैरानी से कहा। ‘आपने अपनी नौकरी छोड़ दी? अरे, हम तो कल ही आपके चिड़ियाघर में आए थे!’
“हाँ, मुझे पता है। और बेशक कई और लोग भी मेरे चिड़ियाघर को देखने आना चाहेंगे। लेकिन मैं जा रहा हूँ! मैं यहाँ से सीधे स्टेशन जाऊँगा और हावड़ा का टिकट खरीदूँगा। फिर मैं जल्दी ही घर पहुँच जाऊँगा, इन सब से दूर। बात ये है कि—’ वो झुककर फेलुदा के कान में फुसफुसाया, ‘वो आदमी उतना सीधा-सादा नहीं है जितना दिखता है।’

‘आपका मतलब बोनोबिहारी बाबू से है?’
'जब तक उसने किसी चीज को हाथ नहीं लगाया था, तब तक वह ठीक था, शायद। फिर उसने अपना आपा खो दिया।'
'क्या बात है?'
नहीं, मैंने पहले ही बहुत कुछ कह दिया है!
गणेश गुहा ने बगल वाली मेज पर कुछ सिक्के गिराए और गायब हो गया।
फेलुदा ने महावीर की ओर मुड़कर कहा, 'क्या तुमने कभी बोनोबिहारी बाबू का चिड़ियाघर देखा है?'
नहीं। मैं इसे देखना चाहती थी, लेकिन मेरे पिता इसके सख्त खिलाफ थे। उन्हें उस चिड़ियाघर में मौजूद जानवरों से सख्त नफरत थी। दरअसल, एक तिलचट्टा देखकर ही उनकी धड़कनें तेज हो जातीं! लेकिन अब... हां, मुझे लगता है मैं जाकर इसे देखूंगी।
महाबीर ने वेटर पर उंगली उठाई। फेलुदा ने पहले ही बिल चुकाने की पेशकश की थी, लेकिन महाबीर ने उसे ऐसा करने नहीं दिया। खैर, मैंने मन ही मन सोचा, एक फिल्म अभिनेता को तो खूब पैसा कमाना ही पड़ता है। इसलिए एक कप चाय और एक कोल्ड ड्रिंक का बिल चुकाने में उसे कोई बड़ी बात नहीं है।
बिल चुकाने के बाद उसने सिगरेट का एक पैकेट निकाला और फेलुदा को दिया। मैंने देखा कि वे चारमीनार सिगरेट थीं।
‘आप यहां कितने समय के लिए रहेंगे?’ उसने पूछा।
'कल हम कुछ दिनों के लिए हरिद्वार जा रहे हैं, लेकिन उसके बाद हम अगले महीने तक यहीं रहेंगे।'
क्या आप सब हरिद्वार जा रहे हैं?
‘नहीं, धीरू काका बच नहीं सकते। इसलिए हम तीनों जा रहे हैं, और शायद बोनोबिहारी बाबू भी। वह लक्ष्मणझूला में अजगर की तलाश में जा रहे हैं।’ हम रेस्टोरेंट से बाहर निकल गए।
महाबीर ने कहा, 'मेरे पास कार है, मैं आपको लिफ्ट दे सकता हूं।'
‘नहीं, धन्यवाद,’ फेलुदा ने कहा। ‘हम कलकत्ता में कभी भी मोटरकार में सवारी कर सकते हैं। तांगा एक नया अनुभव है, और वह भी आनंददायक!’
महाबीर ने फेलुदा का हाथ थाम लिया और गर्मजोशी से उसे थाम लिया। ‘आपसे मिलकर सचमुच बहुत खुशी हुई,’ उसने कहा। ‘मैं आपको बस एक बात बताना चाहता हूँ—अगर मुझे सबूत मिल गया कि मेरे पिता की मौत स्वाभाविक नहीं थी और

इसके लिए कोई ज़िम्मेदार था, तो मैं तब तक चैन से नहीं बैठूंगा जब तक अपराधी को ढूंढकर उससे हिसाब न चुका दूं। मैं भले ही जवान हूँ, लेकिन मैंने चार साल मिलिट्री अकादमी में बिताए हैं। मेरे पास लाइसेंसी रिवॉल्वर है, और मैं एक अचूक निशानेबाज हूँ… अलविदा!’
उसने सड़क पार की, अपनी काली स्टैंडर्ड कार में बैठा और चला गया। फेलुदा ने बस इतना कहा, 'शाबाश!'
जी हां, मामला वाकई पेचीदा हो गया था। ऐसा लग रहा था मानो एक पहेली के भीतर एक और पहेली हो, एक भूलभुलैया के भीतर एक और भूलभुलैया हो।
हम एक तांगे की तलाश में चलने लगे। मुझे एहसास हुआ कि फेलुदा को वास्तव में ब्लेड की ज़रूरत नहीं थी।

सात

हरिद्वार जाने के लिए हमें दून एक्सप्रेस लेनी पड़ी। यह शाम को लखनऊ से रवाना हुई और सुबह 4:30 बजे हरिद्वार पहुंची।
जब बाबा ने कलकत्ता से निकलने से पहले हरिद्वार जाने की बात कही थी, तो मुझे बहुत खुशी हुई थी। मैंने सिर्फ पुरी ही देखा था। इसलिए किसी और पवित्र स्थान को देखने का ख्याल काफी रोमांचक था। लेकिन अब, चोरी हुई अंगूठी को लेकर हुए इस हंगामे के बाद, मेरा लखनऊ छोड़ने का मन नहीं कर रहा था।
लेकिन फेलुदा का उत्साह कम नहीं हुआ था। ‘आपको पता चलेगा कि हरिद्वार से ऋषिकेश और फिर लक्ष्मणझूला तक जाना कितना रोचक है। नदी हर जगह अलग है। जितना उत्तर की ओर जाओगे, उतनी ही तेज़ होती जाएगी। लक्ष्मणझूला में तो यह इतनी ज़ोर से बहती है कि इसके किनारे बातचीत करना लगभग नामुमकिन है।’ क्या आप इन सभी जगहों पर जा चुके हैं?
'हां, लखनऊ की अपनी आखिरी यात्रा के बाद मैं उन तीनों जगहों पर गया था।' धीरू काका खुद हमें स्टेशन तक लेकर आए। सामान के साथ कोच में बैठते ही, डॉ. श्रीवास्तव आ गए। उनका हमें विदा करने आना अच्छा लगा। लेकिन नहीं, उनका सूटकेस एक कुली उठाए खड़ा था! हम उसे घूरने लगे। कुली के सूटकेस नीचे रखते ही डॉ. श्रीवास्तव हँसते हुए बोले, 'मैंने धीरू बाबू से कहा था कि किसी को न बताएं। उन्हें पता था कि मैं तुम्हारे साथ जाना चाहता हूँ। तुम्हें सरप्राइज दे दिया, है ना?'
बाबा बहुत प्रसन्न प्रतीत हुए।
‘अच्छा,’ उसने कहा। ‘मुझे नहीं लगा था कि तुम आ पाओगे, वरना मैं खुद तुमसे पूछ लेता।’
श्रीवास्तव ने कुर्सी के एक कोने से धूल झाड़ी और बैठ गए। उन्होंने कहा, 'सच कहूं तो, मैंने इसे दिखाने की कोशिश नहीं की, लेकिन प्यारेलाल के उपहार के खो जाने से मैं बहुत दुखी हूं। इसलिए मैंने सोचा कि इन सब से दूर जाना शायद मेरे लिए अच्छा रहेगा।'

बोनोबिहारी बाबू पांच मिनट के भीतर ही काफी सारा सामान लेकर आ गए। उन्होंने मुस्कुराते हुए सबका अभिवादन किया और कहा, 'अब एक शानदार आयोजन के लिए तैयार हो जाइए। पवित्रानंद स्वामी इस ट्रेन में यात्रा कर रहे हैं। उनके अनुयायी उन्हें विदाई देने आ रहे हैं। उनकी भक्ति देखिए!'
कुछ देर बाद भगवा वस्त्र पहने एक हट्टा-कट्टा व्यक्ति आया, जिसके लंबे बाल कंधों पर लहरा रहे थे। उसके साथ दर्जनों लोग थे जिनके हाथों में मालाएँ थीं। वह हमारे बगल वाले प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठ गया। कुछ अन्य लोग द्वार के चारों ओर जमा हो गए। संभवतः ये सभी उसके भक्त थे।
ट्रेन छूटने में महज पाँच मिनट बचे थे। हम सब अपने-अपने डिब्बे में चढ़ चुके थे। धीरू काका प्लेटफार्म पर खड़े थे और खुली खिड़की से बाबा से बातें कर रहे थे, तभी भगवा वस्त्र पहने एक व्यक्ति समूह से अलग होकर मुस्कुराते हुए और हाथ फैलाए धीरू काका की ओर बढ़ा।
‘धीरू? क्या तुम्हें मैं याद हूँ?’
धीरू काका कुछ सेकंड तक अवाक होकर देखते रहे, फिर खुशी से चिल्लाते हुए आगे बढ़े और लगभग दूसरे आदमी को गले लगा लिया।
‘अंबिका! क्या सच में तुम हो? हे भगवान—तुमने ये कपड़े क्यों पहने हैं?’ ‘अरे, मैं तो सात साल से केसरिया रंग के कपड़े पहन रही हूँ!’
Dhiru Kaka introduced him.
‘अंबिका और मैं स्कूल में सहपाठी थे। हम आखिरी बार लगभग पंद्रह साल पहले मिले थे।’
गार्ड ने सीटी बजाई। पहिए चरमराते हुए चलने लगे और हमने अंबिका बाबू को अपने दोस्त से कहते सुना, 'मैं परसों तुम्हारे घर गया था। तुम घर पर नहीं थे, इसलिए मैंने लगभग आधे घंटे तक इंतजार किया। क्या तुम्हारे नौकर ने तुम्हें नहीं बताया?'
धीरू काका ने जवाब में क्या कहा, यह हम सुन नहीं पाए, क्योंकि ट्रेन ने रफ्तार पकड़ ली थी।
आश्चर्यचकित होकर मैंने पहले फेलुदा की ओर देखा, और फिर बाबा की ओर। फेलुदा की भौंहें गहरी frown में सिकुड़ी हुई थीं।
‘बहुत अजीब!’ बाबा ने कहा।
बोनोबिहारी बाबू ने पूछा, 'क्या आपको उस सज्जन पर अंगूठी चुराने का संदेह था?'

'हां, लेकिन जाहिर है कि अब इसे खारिज किया जा सकता है। लेकिन फिर अंगूठी किसने ली? वह कहां गई?'
ट्रेन खड़खड़ाते हुए प्लेटफार्म से निकल गई। मैं स्टेशन के ऊपर बने मीनारों को खाली निगाहों से देखता रहा। वे खूबसूरत तो थीं, लेकिन उन्हें निहारने का मेरा मन नहीं था। मेरे सारे विचार उलझे हुए थे। फेलुदा क्या सोच रहा होगा? क्या उसे थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हो रही होगी? आखिर वह साधुबाबा को ढूंढने के लिए इतनी दूर स्टेशन तक दौड़कर आया था।
लेकिन अगर वह आदमी जिसे हमने अभी धीरू काका से बात करते देखा, सचमुच एक संन्यासी था, तो अटैची बैग लिए वह दूसरा आदमी कौन था? क्या वह उसी शाम धीरू काका के घर के बाहर घूम रहा था? अगर हाँ, तो क्या वह अंगूठी के बारे में जानता था, या कोई और कारण था? और फेलुदा पर 'सावधान!' लिखा हुआ वह कागज़ का टुकड़ा किसने फेंका था?
क्या फेलुदा भी खुद से यही सवाल पूछ रहा था? मैंने उसे दोबारा देखा और पाया कि वह यूनानी भाषा में लिखी अपनी नीली नोटबुक को पढ़ने में पूरी तरह मग्न था और बीच-बीच में उसमें कुछ और नोट्स भी लिख रहा था।
बोनोबिहारी बाबू अचानक डॉ. श्रीवास्तव की ओर मुड़े और पूछा, 'डॉक्टर साहब, बताइए, क्या आप ही वह आखिरी व्यक्ति थे जिन्होंने प्यारेलाल को जीवित देखा था?'
डॉ. श्रीवास्तव एक थैले से संतरे निकाल रहे थे। उन्होंने सभी को संतरे देते हुए उत्तर दिया, 'जी हां, जब उनकी मृत्यु हुई तो मैं निश्चित रूप से उनके बिस्तर के पास था। उनकी विधवा बहन, उनका सहायक और एक अन्य नौकर भी वहीं थे।'
‘हम्म,’ बोनोबिहारी बाबू ने गंभीरता से कहा। ‘क्या आपको हमले के बाद इसकी सूचना मिली थी?’
'हाँ।'
क्या आप हृदय संबंधी बीमारियों का भी इलाज करते हैं?
‘जरूरत पड़ने पर एक ऑस्टियोपैथ हृदय रोगी की जांच क्यों नहीं कर सकता, इसमें कोई कारण नहीं है। इसके अलावा, उनके अपने डॉक्टर—डॉ. ग्राहम—उस दिन शहर से बाहर थे। इसलिए उन्होंने मुझे बुलाया।’
‘किसने किया?’
‘उसका वाहक।’

‘वाहक?’ बोनोबिहारी बाबू ने अपनी भौंहें उठाईं।
'जी हां। प्रीतम सिंह। वह कई सालों से परिवार के साथ हैं। बहुत ही समझदार और भरोसेमंद आदमी।'
बोनोबिहारी बाबू ने अपने मुंह से पाइप निकाला और उसमें संतरे का एक टुकड़ा डाल दिया।
‘आपने हमें बताया था कि प्यारेलाल ने अपने पहले दौरे के बाद आपको वह अंगूठी दी थी। जब उसे दूसरा दौरा पड़ा, तो आपको बुलाया गया, लेकिन उसकी मृत्यु हो गई।’
'हाँ यह सही है।'
जब आपको वह अंगूठी दी गई थी, क्या उस समय कमरे में कोई और भी मौजूद था? ‘ऐसा कैसे हो सकता है, बोनोबिहारी बाबू? कोई भी कीमती और मूल्यवान चीज़ें सबके सामने दान नहीं करता। इसके अलावा, आप जानते हैं कि प्यारेलाल किस तरह के इंसान थे। वे कभी भी अपने नेक काम का प्रचार नहीं करना चाहते थे। क्या आप जानते हैं कि उन्होंने कितनी संस्थाओं को गुपचुप तरीके से मदद की? उन्होंने अस्पतालों और अनाथालयों को बहुत दान दिया, फिर भी इसकी खबर कभी अखबारों में नहीं आई। वे ऐसा होने ही नहीं देते!’
‘हम्म।’
श्रीवास्तव ने बोनोबिहारी बाबू को घूर कर देखा।
‘क्या आपको मेरी कही बातों पर कोई आपत्ति है?’ उन्होंने पूछा। ‘देखिए, बात यह है कि मुझे लगता है कि अगर आपने किसी को इस घटना का गवाह बना लिया होता तो बेहतर होता। इतनी कीमती वस्तु का लेन-देन हुआ, और फिर भी कोई गवाही नहीं दे सकता…’
श्रीवास्तव अब भी अवाक होकर घूर रहे थे। फिर अचानक वे जोर से हंस पड़े। ‘अद्भुत!’ उसने कहा। ‘यह तो हद ही हो गई। आपका इशारा यह है कि मैंने प्यारेलाल से अंगूठी चुराई, फिर उसे धीरू बाबू को दे दी, और फिर जाकर उसे वापस चुरा लिया! कमाल है!’
बोनोबिहारी बाबू के चेहरे के भाव नहीं बदले। उन्होंने शांत स्वर में कहा, 'तुमने समझदारी से काम लिया, मैं भी ऐसा ही करता। तुमने अंगूठी धीरू बाबू को दे दी ताकि वह तुम्हारे घर में सेंध लगाने वाले चोर से सुरक्षित रहे। फिर तुमने उसे वापस ले लिया और सोचा कि चोर दोबारा तुम्हारे घर पर हमला

नहीं करेंगे। बताओ, फेलू बाबू, मैं जासूसी करने में इतना बुरा भी नहीं हूँ, है ना?'
फेलुदा ने अपनी नोटबुक बंद की और एक संतरा छीलने लगा।
उन्होंने पूछा, 'निश्चित रूप से ऐसे कई गवाह होंगे जो इस बात की गवाही देंगे कि डॉ. श्रीवास्तव ने वास्तव में महावीर की जान बचाई थी?'
‘हां, शायद हैं,’ बोनोबिहारी बाबू को स्वीकार करना पड़ा।
‘ऐसे में, मेरा मानना है कि वह अंगूठी चाहे कितनी भी कीमती क्यों न हो, उसकी कीमत एक बच्चे की जान से ज्यादा नहीं हो सकती। अगर डॉ. श्रीवास्तव ने वह अंगूठी चुराई है, तो वह निश्चित रूप से अपराधी हैं। लेकिन जो लोग अब उसके पीछे पड़े हैं, वे असली अपराधी हैं; और खतरनाक अपराधी हैं।’
बोनोबिहारी बाबू ने गंभीरता से कहा, 'मैं समझ गया, आपको विश्वास नहीं है कि श्रीवास्तव के पास अभी भी अंगूठी है, है ना?'
'नहीं, मैं ऐसा नहीं मानता, क्योंकि मेरे पास इसके विपरीत सबूत हैं।'
कोच में सब चुप थे। मैंने फेलुदा को घूर कर देखा। बोनोबिहारी बाबू ने सबसे पहले बोलना शुरू किया।
‘क्या मैं पूछ सकता हूँ कि यह क्या सबूत है?’
'हां, आप निश्चित रूप से ऐसा कर सकते हैं, लेकिन आपको कोई जवाब नहीं मिलेगा, क्योंकि इस पर चर्चा करने का सही समय अभी नहीं आया है।'
मैंने फेलुदा को इतने अधिकारपूर्वक बोलते कभी नहीं सुना था। बोनोबिहारी बाबू ने व्यंग्य भरे स्वर में फिर कहा, 'उम्मीद है कि मैं वह दिन देखने के लिए जीवित रहूँ!'
फेलुदा ने कहा, 'इसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा। बस जासूस का मामला सुलझाना बाकी है।'
‘जासूस?’ बोनोबिहारी बाबू ने आश्चर्य से पूछा। ‘कौन सा जासूस?’
इस बार डॉ. श्रीवास्तव ने बात की।
मुझे लगता है कि फेलू बाबू प्यारेलाल के आखिरी शब्दों का जिक्र कर रहे हैं। मरने से ठीक पहले उन्होंने "जासूस" शब्द कहा था। दरअसल, उन्होंने यह शब्द दो बार कहा था।
बोनोबिहारी बाबू के माथे पर शिकन और गहरी हो गई।
‘अजीब बात है! लखनऊ में कोई जासूस?’ फिर, हाथ में पाइप लिए, वह ज़मीन की ओर घूरने लगा। ‘हाँ, हो सकता है... मुझे शक था...’ उसने बुदबुदाया।

'क्या?'
'नहीं, कोई बात नहीं। हो सकता है मैं गलत हूँ।'
स्पष्टतः वह इस बारे में बात नहीं करना चाहता था। खैर, हम हरदोई पहुँच चुके थे, इसलिए हमारी बातचीत वहीं रुक गई।
फेलुदा ने कहा, 'एक कप चाय पीना अच्छा रहेगा,' और वह प्लेटफार्म पर उतर गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे चला गया क्योंकि मुझे स्टेशन पर खड़ी ट्रेन के अंदर बैठने का कोई मतलब नहीं दिख रहा था।
जैसे ही मैं अपनी बस से उतरा, भगवा कपड़े पहने एक और आदमी कहीं से आया और बस में बैठ गया।
बोनोबिहारी बाबू ने तुरंत कहा, 'यह आरक्षित है, यहाँ कोई जगह नहीं है।' ‘कृपया महोदय,’ उस व्यक्ति ने विनती करते हुए कहा, ‘मुझे बरेली तक जाने की अनुमति दीजिए। फिर मैं कहीं और चला जाऊंगा। मैं रात में आपको परेशान नहीं करूंगा।’
बड़ी अनिच्छा से बोनोबिहारी बाबू ने उनके बैठने के लिए जगह बनाई। 'ये संन्यासी मुझे पागल कर देंगे,' फेलुदा ने चायवाले की ओर इशारा करते हुए कहा।
चाय लेकर आदमी दौड़ता हुआ आया। 'क्या आप थोड़ी चाय लेना चाहेंगे?'
‘हां, क्यों नहीं?’
फेलुदा ने दूसरों से पूछा, लेकिन सभी ने मना कर दिया।
मुझे तुरंत एक मिट्टी का बर्तन दिया गया, जो गरमागरम चाय से भरा हुआ था। मैंने उसे एक हाथ से दूसरे हाथ में बदलते हुए उसके ठंडा होने का इंतजार किया और कहा, 'अगर डॉ. श्रीवास्तव चोर निकले तो मुझे बहुत गुस्सा आएगा।' ‘क्यों?’ फेलुदा ने गरमा गरम चाय की चुस्की लेते हुए लापरवाही से पूछा। क्योंकि मुझे वो पसंद है—वो बहुत ही नेक इंसान लगते हैं!
‘तुम मूर्ख हो! क्या तुमने जासूसी उपन्यास नहीं पढ़े? जो व्यक्ति सबसे कम संदिग्ध प्रतीत होता है, वही अक्सर अपराधी निकलता है।’
लेकिन यह कोई कहानी नहीं है।
तो क्या हुआ? क्या लेखक अपनी कहानियों को वास्तविक जीवन में देखी गई चीजों पर आधारित नहीं करते?
इससे मुझे बहुत गुस्सा आया।

मैंने पूछा, 'तो फिर, जब डॉ. श्रीवास्तव अंगूठी लेकर हमारे घर आए थे, तब गेट से उन्हें कौन देख रहा था और चारमीनार सिगरेट पी रहा था?'
'वह चोर हो सकता था—या उसका साथी।'
'आपका मतलब यह है कि श्रीवास्तव एक अपराधी है और चोर भी अपराधी हैं, जिससे हर कोई खलनायक बन जाएगा क्योंकि गणेश गुहा ने कहा था कि बोनोबिहारी बाबू भी सीधे-सादे नहीं थे!'
फेलुदा ने एक और घूंट लिया। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, कागज का एक और मुड़ा हुआ टुकड़ा उड़कर आया, उसके माथे पर लगा और उसके मिट्टी के बर्तन में गिर गया।
फेलुदा ने तुरंत उसे उठाया, उस पर नजर डाली और प्लेटफार्म पर मौजूद भीड़ पर एक नज़र डाली। तभी हमें गार्ड की सीटी सुनाई दी। अब उसे फेंकने वाले को ढूंढने का समय नहीं था।
अपने डिब्बे में वापस जाने से पहले, फेलुदा ने कागज पर लिखी हुई बातों को एक बार फिर देखा और मुझे दिखाने के बाद उसे दोबारा मोड़कर पटरी पर फेंक दिया।
उस पर लिखा था: ‘सावधान!’ और ये शब्द पान के लाल रस से ही लिखे गए थे।
सम्राट की अंगूठी का रोमांचक और रहस्यमय मामला लखनऊ में बिल्कुल भी पीछे नहीं छूटा था। यह हमारे साथ ही चल रहा था।

आठ

अंधेरा होने लगा था। ट्रेन की बत्तियाँ अभी-अभी जली थीं। हम बरेली की ओर तेज़ी से बढ़ रहे थे।
कुल सात लोग थे। फेलुदा और मैं एक बर्थ पर थे, बाबा और श्रीवास्तव दूसरे पर और तीसरे पर बोनोबिहारी बाबू और संन्यासी बैठे थे। बोनोबिहारी बाबू ने बाबा और श्रीवास्तव की बर्थ के ऊपर वाली बर्थ पर एक बड़ा संदूक और लकड़ी का एक पैकिंग बॉक्स रखा हुआ था। मेरे ऊपर वाली बर्थ पर एक अजनबी सो रहा था। वह पूरी तरह से चादर में लिपटा हुआ था। मुझे बस उसके पैर की उंगलियां दिखाई दे रही थीं। लखनऊ से निकलने के बाद से वह हिला तक नहीं था।
मैंने चारों ओर देखा। बोनोबिहारी बाबू पालथी मारकर बैठे हुए पाइप पी रहे थे, श्रीवास्तव गीतांजलि पढ़ रहे थे, और बाबा मानो जागते रहने की बहुत कोशिश कर रहे थे। सीधे बैठने की कोशिश करते हुए वे बार-बार अपनी आँखें मल रहे थे।
संन्यासी को हमारी तरफ बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं थी। वह हिंदी अखबार के पन्ने पलट रहा था। फेलुदा उर्दू में गाना गा रहा था और पहियों की ताल पर अपने पैर थपथपा रहा था।
Jab chhor chaley Lucknow nagari Kahen haal ke hum par kya guzri.
उसने बाकी के बोल गुनगुनाए। मैं समझ गया कि उसे पहली दो पंक्तियों के बाद के बोल नहीं पता थे।
बोनोबिहारी बाबू ने अप्रत्याशित रूप से बात की।
‘आपको वाजिद अली शाह के इस गाने के बारे में कैसे पता चला?’
‘मेरे एक चाचा इसे गाया करते थे,’ फेलुदा ने जवाब दिया। ‘वे बहुत ही प्रतिभाशाली ठुमरी गायक थे।’
बोनोबिहारी बाबू ने गहरी सांस ली, पश्चिम की ओर लाल आसमान को निहारा और कहा, 'नवाब वाजिद अली शाह एक अद्भुत व्यक्ति थे। वे गायक और संगीतकार दोनों थे। उन्होंने पहला भारतीय ओपेरा रचा - जो पश्चिमी ओपेरा की शैली से काफी मिलता-जुलता था। लेकिन वे योद्धा नहीं थे। इसलिए अंग्रेजों ने लखनऊ पर

कब्जा कर लिया और नवाब बंगाल चले गए। उनके अंतिम दिन मटियाबुरुज में बीते, जहां अब कलकत्ता के सभी मुस्लिम दर्जी रहते हैं। सबसे दिलचस्प बात यह थी कि वाजिद अली ने राजेन मुल्लिक से मुलाकात की, जो अपनी दौलत के लिए मशहूर थे, और कलकत्ता में पहले चिड़ियाघर की योजना बनाई।'
वह उठा और अपना संदूक खोला। फिर उसने उसमें से एक टेप रिकॉर्डर निकाला। ‘मुझे अपना कुछ पसंदीदा संगीत बजाने दीजिए,’ उसने कहा। उसने ढक्कन उठाया और एक बटन दबाया। रिकॉर्डर के अंदर कुछ घूमने लगा।
‘अगर आप सचमुच इस संगीत का आनंद लेना चाहते हैं, तो खिड़की से बाहर देखिए।’ मैंने देखा। तेज़ी से घिरती शाम में, मैंने एक पूरा जंगल हमारी खिड़की के सामने से तेज़ी से गुज़रते देखा, और उसकी गहराई से एक जंगली बिल्ली की कर्कश चीख सुनाई दी। या कम से कम ऐसा ही लगा।
बोनोबिहारी बाबू ने कहा, 'मैंने आवाज़ धीमी रखी है, ताकि ऐसा लगे कि आवाज़ दूर से आ रही है।'
बिल्ली के पीछे-पीछे लकड़बग्घा चल रहा था। यह बहुत ही रोमांचक था। ट्रेन घने जंगल से गुज़र रही थी, और ऐसा लग रहा था मानो लकड़बग्घे की हंसी बाहर से आ रही हो, पेड़ों में गूंज रही हो। तभी एक अलग सी आवाज़ सुनाई दी। ‘किर-र-र-र-र-र-र किट किट! किर-र-र-र-र-र-र किट किट!’
मेरे दिल की धड़कन तेज हो गई। यहां तक कि संन्यासी भी उठकर ध्यान से सुन रहे थे।
बोनोबिहारी बाबू ने समझाया, 'यह रैटलस्नेक है। इसकी आवाज़ आपको डरा सकती है, लेकिन सांप इसे केवल इसलिए निकालता है ताकि दूसरे जानवरों को अपनी मौजूदगी का पता चल सके और वे उसे कुचल न दें।'
‘तुम्हारा मतलब है कि यह आम तौर पर मनुष्य पर हमला नहीं करेगा?’ बाबा ने पूछा।
नहीं, सामान्य तौर पर नहीं। वैसे भी, कोई दूसरा सांप भी ऐसा नहीं करता। लेकिन अगर उसे घेर लिया जाए या उकसाया जाए, तो वह निश्चित रूप से आक्रामक हो जाएगा। उदाहरण के लिए, अगर उसे किसी छोटे कमरे में कैद कर लिया जाए और आप भी उस कमरे में मौजूद हों, तो मेरे ख्याल से आप पर हमला होने की संभावना काफी अधिक होगी। एक और बात है। ये सांप अंधेरे में भी देख सकते हैं।

उसने रिकॉर्डर बंद कर दिया और कहा, 'दुर्भाग्य से, मेरे चिड़ियाघर के अन्य जीव यहाँ मौजूद नहीं हैं। उनमें से दो - मकड़ी और बिच्छू - बिल्कुल चुप हैं। अब अगर मुझे वह अजगर मिल गया, तो मैं उसकी फुफकार रिकॉर्ड करूँगा।' बाबा ने कहा, 'उन आवाजों को सुनकर अजीब सा लगा।'
'हां, ऐसा ही हुआ होगा। लेकिन मेरे लिए यह अलग बात है। आपने अभी जो सुना, वह मेरे कानों को संगीत से भी मधुर लगा। चूंकि मैं यात्रा करते समय अपने जानवरों को साथ नहीं ले जा सकती, इसलिए मैं उनकी आवाज़ें अपने साथ ले जाती हूँ—ऐसा कह सकते हैं।'
ट्रेन बरेली में आकर रुकी। एक वेटर हमारा खाना लेकर आया और संन्यासी चले गए।
अपनी थाली का खाना खत्म करने के बाद, फेलुदा ने बड़े आराम से मेरी थाली से चिकन का एक टुकड़ा उठा लिया।
उन्होंने स्पष्टीकरण देते हुए कहा, 'जब चिकन को इतना व्यायाम कराया जाता है तो यह मस्तिष्क के लिए अच्छा होता है।'
‘मैं समझ गया। और क्या मैं अपने दिमाग का इस्तेमाल नहीं कर रहा हूँ?’ नहीं। तुम्हारे लिए तो यह सब महज एक खेल है।
तो अपनी सारी बुद्धि का इस्तेमाल करके तुम कहाँ पहुँच गए हो?
फेलुदा ने अपनी आवाज़ इतनी धीमी कर ली कि सिर्फ़ मैं ही सुन सकूँ कि उसने क्या कहा। ‘मुझे कुछ अंदाज़ा है कि किस जासूस के बारे में प्यारेलाल ने बात करने की कोशिश की थी।’ उसने इसके आगे कुछ भी कहने से इनकार कर दिया।
ट्रेन बरेली से रवाना हुई।
बाबा ने कहा, 'हमें सुबह चार बजे उठना होगा। मुझे लगता है अब सोने का समय हो गया है।'
बोनोबिहारी बाबू ने बत्ती बंद कर दी।
उन्होंने कहा, 'मैं सोऊंगा नहीं। लेकिन निश्चिंत रहें, हरिद्वार पहुंचने से पहले मैं आपको जगा दूंगा।'
मैं अपने बर्थ के एक हिस्से पर लेट गया, दूसरा हिस्सा फेलुदा के लिए छोड़ दिया। खिड़की से बाहर देखते हुए मुझे चाँद दिखाई दिया। ऐसा लग रहा था मानो वह हमारे साथ ही चल रहा हो।
हम हरिद्वार में क्या करने वाले थे? न जाने किस वजह से चांद ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया। मुझे पता था कि हरिद्वार में देखने लायक बहुत कुछ है।

लेकिन अगर हम सिर्फ गंगा और मंदिरों को देखकर ही वापस आ जाते, तो सब कुछ नीरस हो जाता। कुछ तो होना ही था। मैं कुछ रोमांचक चाहता था।
ट्रेन इतना शोर मचा रही थी। भला इसमें कोई कैसे सो सकता था? लेकिन फिर भी लोग सो रहे थे। ये अजीब बात थी। अगर घर पर लगातार खड़खड़ाहट की आवाज़ आती रहे और कोई मेरा बिस्तर हिलाता रहे, तो क्या मैं एक पल भी सो पाऊँगी? मुझे फेलुदा से पूछना ही पड़ा।
उन्होंने जवाब दिया, “अगर कोई खास आवाज़ लंबे समय तक चलती रहे, तो कान उसके आदी हो जाते हैं; इसलिए एक समय के बाद वह परेशान नहीं करती। और झूलने से वास्तव में नींद आने में मदद मिलती है। क्या आपने बच्चों को झूला झुलाकर सोते हुए नहीं देखा? दरअसल, अगर आवाज़ या हलचल बंद हो जाए, तो आप तुरंत जाग जाएंगे, इसीलिए अक्सर लोग ट्रेन के स्टेशन पर रुकने पर जाग जाते हैं।” फेलुदा सही था। जल्द ही, मेरी आँखें नींद से भारी हो गईं और मुझे चीज़ें दिखने लगीं। एक पल के लिए, मुझे लगा कि ऊपर की बर्थ पर सो रहा आदमी नीचे उतरा और डिब्बे में इधर-उधर घूमने लगा। फिर मुझे हँसी सुनाई दी—हो सकता है वो किसी आदमी की हो या किसी लकड़बग्घे की। लेकिन सोचने का समय नहीं था क्योंकि मैं भूलभुलैया में खो गया था, बाहर निकलने का रास्ता ढूँढ़ने की कोशिश में पागल हो रहा था। हर मोड़ पर, एक विशाल मकड़ी मेरा रास्ता रोककर अपनी हरी, चमकदार आँखों से मुझे घूर रही होती। फिर उसने अपना एक बड़ा, बालों वाला पैर उठाया और मेरे कंधे पर रख दिया। उसी क्षण, मैंने अपनी आँखें खोलीं और पाया कि फेलुदा मुझे कंधे से हिला रहा है।
‘उठो, टॉपशे। ये रहा हरिद्वार!’

नौ

‘पांडा? क्या आप पांडा लेना चाहेंगे?’
'क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ, बाबू? आप कहाँ से हैं?'
‘इधर आइए, बाबू। आपने किस धर्मशाला में बुकिंग कराई है?’
‘आप बाबा दक्षेश्वर के मंदिर जाएंगे, है ना?’
मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि चबूतरे पर इंतजार कर रहे पांडाओं का झुंड हमें इस तरह घेर लेगा, जबकि फेलुदा ने मुझे पहले ही चेतावनी दे दी थी। ऐसा लगता है कि ये पांडा बड़े-बड़े बहीखाते रखते थे जिनमें सैकड़ों साल पुराने पूर्वजों का रिकॉर्ड होता था—यानी उन लोगों का जिन्होंने हरिद्वार की यात्रा की थी। मेरे परदादा संन्यासी बनने के लिए घर से निकले थे। उन्होंने हरिद्वार में काफी समय बिताया था। शायद उन्हीं बहीखातों में उनका नाम और पता हो, या शायद उनकी लिखावट भी? कौन जानता है?
बोनोबिहारी बाबू ने कहा, “पांडा की कोई ज़रूरत नहीं है, उससे तो बस उलझन ही बढ़ेगी। चलिए शीतल दास की धर्मशाला चलते हैं। मैं उस जगह को जानता हूँ। हम साथ रह सकते हैं, और खाना भी ठीक-ठाक है। वैसे भी, बस एक रात की बात है। कल हम ऋषिकेश और लक्ष्मणझूला के लिए निकलेंगे।”
एक कुली ने हमारा सामान उठाया। हम स्टेशन से बाहर आए और तीन तांगे किराए पर लिए। मैं और फेलुदा एक तांगे में बैठे, बाबा और डॉ. श्रीवास्तव दूसरे में और बोनोबिहारी बाबू तीसरे में। अभी भी अंधेरा था।
फेलुदा ने कहा, 'एक पवित्र स्थान हमेशा गंदा होता है। लेकिन एक बार जब आप नदी के किनारे पहुँच जाते हैं, तो यह काफी सुखद लगता है।'
हरिद्वार की गलियों में हमारा तांगा खड़खड़ाता हुआ चल रहा था। अभी तक एक भी दुकान नहीं खुली थी। सड़क किनारे रस्सियों पर कंबल ओढ़कर आदमी सो रहे थे। जगह-जगह मिट्टी के तेल के दीपक टिमटिमा रहे थे। कुछ बूढ़े आदमी हाथों में घड़े लिए गुजरे। फेलुदा ने बताया कि वे नदी पर जा रहे थे। वे कमर तक पानी में खड़े होकर सूर्योदय का इंतजार करेंगे और नए दिन का स्वागत करने के लिए भजन गाएंगे। बाकी पूरा शहर अभी भी सो रहा था।

बोनोबिहारी बाबू का तांगा हमें आगे ले जा रहा था। वह एक सफेद रंग के एक मंजिला मकान के सामने रुका, जिसमें बड़े-बड़े खंभे थे। यह स्पष्ट रूप से शीतल दास की धर्मशाला थी।
जैसे ही हम गेट से अंदर गए, सामने एक आंगन था। उसके चारों ओर गलियारे बने हुए थे और कमरे व्यवस्थित पंक्तियों में बने हुए थे।
धर्मशाला से एक आदमी बाहर आया और हमारा सामान अंदर ले गया। हम उसके पीछे दरवाजे से अंदर जाने ही वाले थे कि तभी एक और तांगा आया और मुख्य द्वार पर रुक गया। बरेली तक हमारे साथ यात्रा कर रहे साधु उससे नीचे उतरे।
मैंने फेलुदा की आस्तीन खींची।
‘देखो, ये वही आदमी है! वही जो ट्रेन में था…’
फेलुदा ने उस आदमी को तिरछी नजर से देखा और कहा, 'क्या तुम्हारा मतलब यह है कि यह आदमी भी संदिग्ध है?'
‘खैर, यह दूसरी बार है...’
‘चुप रहो। एक शब्द भी नहीं। चलो अंदर चलते हैं।’
बाबा, फेलुदा और मुझे एक कमरा दिया गया था। उसमें चार पलंग थे। चौथे पलंग पर लेटा व्यक्ति गहरी नींद में सो रहा था।
बोनोबिहारी बाबू और डॉ. श्रीवास्तव को हमारे कमरे के बगल वाला कमरा दिया गया। साधु भी उनके साथ बैठ गए।
जब तक हम सब नहा-धोकर चाय मंगवा चुके थे, तब तक काफी उजाला हो चुका था। कई लोग जाग चुके थे और पूरा परिसर काफी शोरगुल भरा हो गया था। अब मुझे एहसास हुआ कि धर्मशाला में कितने विविध प्रकार के लोग ठहरे हुए थे। वहाँ बंगाली, मारवाड़ी, उत्तर प्रदेश के लोग, गुजराती, महाराष्ट्रीयन—सभी मिलकर उस शोरगुल में बराबर योगदान दे रहे थे।
बाबा ने पूछा, ‘क्या तुम बाहर जाने का सोच रहे हो?’
'हां, मैं नदी पर जाना चाहूंगा,' फेलुदा ने कहा।
ठीक है। मैं बोनोबिहारी बाबू के साथ कल के लिए दो टैक्सियाँ बुक कराने जा रहा हूँ। और अगर आप किसी बाज़ार के आस-पास जा रहे हैं, तो एक एवररेडी टॉर्च ज़रूर ले लें। आख़िरकार, यह लखनऊ जैसी जगह नहीं है। टॉर्च काम आ सकती है। हम वहां से चले गए। फेलुदा ने कहा कि तांगा की सवारी के लिए वह जगह बहुत छोटी थी। पैदल चलना बेहतर था।

मुझे जल्द ही तापमान में अंतर महसूस होने लगा। हरिद्वार लखनऊ से काफी ठंडा था और शायद नदी के इतने करीब होने के कारण, चारों ओर धुंध छाई हुई थी। फेलुदा ने कहा, 'यह धुंध से ज्यादा धुआं है, ये धुआं अंगीठियों से आ रहा है।' थोड़ी देर बाद हमने रास्ता पूछने के लिए रुक गए। हमें बताया गया, 'यहाँ से आधा मील दूर।'
नदी तक पहुँचने से पहले ही दूर से एक अलग ही तरह का शोरगुल सुनाई दिया। पता चला कि ये नहाने वालों के समूह थे। इसके अलावा, नदी किनारे जाने वाले रास्ते पर फेरीवाले और भिखारी भी कतार में खड़े थे, और उनका शोर भी कम नहीं था।
हम भीड़ को चीरते हुए पानी के किनारे तक जाने वाली सीढ़ियों की ओर बढ़े। जो दृश्य मेरी आँखों के सामने आया, वैसा मैंने फिर कभी नहीं देखा। ऐसा लग रहा था मानो नदी किनारे कोई उत्सव चल रहा हो। सीढ़ियों के पास बने मंदिर में घंटियाँ बज रही थीं। मंदिर के पास एक वैष्णव भजन गा रहे थे, उनके चारों ओर कुछ बूढ़े पुरुष और महिलाएं बैठी थीं। गायें, बकरियाँ, कुत्ते और बिल्लियाँ मनुष्यों के साथ खुशी-खुशी इधर-उधर घूम रही थीं।
फेलुदा ने सीढ़ियों पर एक अपेक्षाकृत शांत जगह ढूंढ ली और हम बैठ गए। उन्होंने कहा, 'अगर आप प्राचीन भारत की एक झलक देखना चाहते हैं, तो नीचे का दृश्य देखिए।'
यह सब लखनऊ से इतना अलग था कि मैं चोरी हुई अंगूठी के बारे में लगभग भूल ही गया था। क्या फेलुदा को भी ऐसा ही लग रहा था, या उसका दिमाग अभी भी उस मामले पर काम कर रहा था? मैंने फेलुदा की तरफ देखा, लेकिन उससे पूछने की हिम्मत नहीं हुई। वह संतुष्ट भाव से अपनी जेब से सिगरेट और माचिस निकाल रहा था। जाहिर है, यह सिगरेट पीने का अच्छा मौका था क्योंकि बाबा की मौजूदगी में वह सिगरेट नहीं पी सकता था।
उसने अपने होठों के बीच एक सिगरेट रखी और माचिस की डिब्बी खोली। अंदर से कुछ तेज रोशनी चमकी।
चौंककर मैंने पूछा, 'फेलुदा, यह क्या था?' तब तक उसने डिब्बा फिर से बंद कर दिया था।
‘क्या हुआ था?’ उसने हैरानी से पूछा।
‘वो... वो चीज़ जो तुम्हारी माचिस की डिब्बी में है। मैंने उसे चमकते हुए देखा।’

फेलुदा ने सिगरेट जलाने के लिए अपने दोनों हाथों से मुंह ढका और धुआं अंदर खींचा। फिर उसने धुआं बाहर निकाला और कहा, 'माचिस की तीलियों में फास्फोरस होता है, क्या तुम्हें नहीं पता? सूरज की रोशनी में वही चमक रहा था।'
मैं इससे ज़्यादा कुछ नहीं पूछ सका, लेकिन यह कहानी अविश्वसनीय लग रही थी। माचिस की तीलियाँ धूप में नहीं चमकतीं!
हम नदी किनारे थोड़ी देर और रुके और फिर दक्षेश्वर मंदिर देखने चले गए। मंदिर से बाहर निकलकर स्टेशनरी की दुकान से टॉर्च खरीदते समय लगभग साढ़े दस बज चुके थे। लेकिन हमने जो कुछ भी किया या देखा, माचिस की डिब्बी मेरे दिमाग से निकल ही नहीं रही थी।
मुझे किसी तरह यह यकीन हो गया था कि सूरज की रोशनी में जो चमक रहा था, वह औरंगजेब की अंगूठी का हीरा था। अगर फेलुदा ने कहा होता कि यह एक सिक्का है, तो शायद मैं उसकी बात मान लेता। लेकिन माचिस की तीलियों में फास्फोरस होने की उसकी कहानी सरासर बकवास थी, और मैं यह जानता था।
लेकिन क्या पता वो अंगूठी ही हो? क्या चोरों को पता था कि फेलुदा के पास अंगूठी है? क्या इसीलिए वे उसे धमका रहे थे और उसे चोट पहुँचाने की कोशिश कर रहे थे? अरे, उन्होंने तो हमें क्लोरोफॉर्म देने की भी कोशिश की थी! लेकिन फेलुदा बिल्कुल शांत दिखाई दिए। वे धीरे-धीरे गुनगुना रहे थे। एक जगह रुककर उन्होंने समझाया, ‘एक राग है जिसे खाट कहते हैं, इसे सुबह गाया जाता है। मैं जो गुनगुना रहा हूँ वह भी वही राग है।’
मैं कहना चाहता था, ‘अपने राग अपने पास रखो। मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है और सच कहूँ तो मैं तुमसे बहुत नाराज़ हूँ। तुमने मुझसे झूठ क्यों बोला?’ लेकिन मैं ये शब्द बोल नहीं पाया क्योंकि हम धर्मशाला पहुँच चुके थे। मैंने शाम को इस विषय पर फेलुदा से बात करने का फैसला किया।
बाबा, बोनोबिहारी बाबू और डॉ. श्रीवास्तव बरामदे में बैठे एक अन्य सज्जन से बात कर रहे थे, जिन्होंने धोती और कुर्ता पहन रखा था और वे भी बंगाली प्रतीत हो रहे थे।
हमारे पहुंचने पर बाबा ने कहा, 'हमने दो टैक्सियाँ बुक कर ली हैं और हम कल सुबह छह बजे निकलेंगे। बोनोबिहारी बाबू उन लोगों को जानते थे, इसलिए हमें रियायत मिल गई है।'

बिलाश बाबू नाम के बंगाली सज्जन इलाहाबाद के रहने वाले थे। वे हस्तरेखा विशेषज्ञ निकले। बोनोबिहारी बाबू ने अपनी हथेली दिखाते हुए पूछा, 'क्या किसी जानवर के काटने से मेरी मृत्यु होने की कोई संभावना है?'
बिलाश बाबू ने बोनोबिहारी बाबू के हाथ की रेखाओं पर लौंग फेरते हुए कहा, 'अरे नहीं! मुझे तो यह स्वाभाविक मृत्यु लग रही है!'
मेरी नज़र हस्तरेखा विशेषज्ञ के पैरों पर पड़ी। वे वाकई अजीब थे। दोनों पैरों के अंगूठे बाकी अंगूठों से कम से कम आधा इंच लंबे थे। मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने ये पैर—या ऐसे ही पैर—हाल ही में देखे हों। लेकिन कहाँ? मुझे बिल्कुल याद नहीं आ रहा था।
बोनोबिहारी बाबू ने राहत की सांस ली।
‘भगवान का शुक्र है!’ उसने कहा।
‘तुम ऐसा क्यों कह रहे हो? क्या तुम शिकारी हो? क्या तुम बाघ का शिकार करते हो या क्या?’ बिलाश बाबू असमंजस में लग रहे थे।
‘नहीं, नहीं,’ बोनोबिहारी बाबू ने उत्तर दिया, ‘लेकिन सावधानी बरतना अच्छा रहेगा। मेरे एक चचेरे भाई को एक बार पागल कुत्ते ने काट लिया था। बिल्कुल अचानक। बेचारा हाइड्रोफोबिया (पानी से डर) के कारण मर गया। इसलिए मैंने सोचा...’
क्या आप पहले कलकत्ता में रहते थे?
‘हे भगवान, क्या यह भी मेरे हाथ से लिखा हुआ है?’
'हां, ऐसा ही लगता है। और... क्या आपको प्राचीन वस्तुएं इकट्ठा करने में रुचि है?'
‘पुरातन वस्तुएं? कौन, मैं? अरे नहीं। यह तो प्यारेलाल ने किया था। मुझे तो जानवरों में रुचि है।’
‘क्या सच में? क्या इसीलिए तुम काटे जाने की बात कर रहे थे? लेकिन...’ ‘लेकिन क्या?’ बोनोबिहारी बाबू ने उत्सुकता से पूछा।
क्या आप हाल ही में तनाव में रहे हैं?
‘कितनी हाल ही में?’
'पिछले तीस दिनों में?'
बोनोबिहारी बाबू हंस पड़े।

नहीं, महोदय। मुझे दुनिया की कोई चिंता नहीं है, और मैं परेशान भी नहीं हूँ। मेरी एकमात्र चिंता यह है कि क्या मुझे वह अजगर कल लक्ष्मणझूला में मिलेगा।
बिलाश बाबू को देखकर ऐसा लग रहा था मानो वह अपनी हथेलियों को थोड़ी देर और निहारना चाहते हों, लेकिन बोनोबिहारी बाबू ने अचानक अपनी हथेलियाँ हटा लीं और जम्हाई ली।
उन्होंने कहा, ‘सच तो यह है कि मैं हस्तरेखा शास्त्र में विश्वास नहीं करता। कृपया मेरी बात का बुरा न मानें, लेकिन मुझे नहीं लगता कि हम अपने बारे में जो सोचते हैं उसका हमारी हाथों की रेखाओं से कोई लेना-देना है। मैं केवल मनुष्य की अपनी ताकत और सफल होने की क्षमता में विश्वास करता हूं।’
इतना कहकर वह उठा और अपने कमरे में चला गया।
मेरी नजर एक बार फिर बिलाश बाबू के पैरों पर पड़ी।
लेकिन नहीं, मुझे अभी भी याद नहीं आ रहा था कि मैंने उन्हें कहाँ देखा था।

दस

उस दिन मुझे फेलुदा से उनकी उस शानदार माचिस की डिब्बी के बारे में बात करने का बिल्कुल भी मौका नहीं मिला।
बाबा चाहते थे कि हम जल्दी सो जाएं क्योंकि हमें अगली सुबह तड़के उठना था; लेकिन जब तक हमने खाना खत्म किया और सोने की जगह पर पहुंचे, तब तक रात के 10 बज चुके थे।
जैसे ही मैं बिस्तर पर लेटा, मुझे हमारे कमरे और अगले कमरे के बीच के साझा दरवाजे से किसी के बहुत जोर से खर्राटे लेने की आवाज सुनाई दी।
‘Bilash Babu,’ said Feluda briefly.
'आपको कैसे मालूम?'
‘अरे, वो कल ट्रेन में खर्राटे ले रहा था। क्या तुमने नहीं सुना?’ ट्रेन में? क्या बिलाश बाबू हमारे साथ ट्रेन में थे? बिलकुल! पहेली का एक छोटा सा टुकड़ा अपनी जगह पर आ गया।
‘वो बड़े अंगूठे!’
फेलुदा ने धीरे से मेरे कंधे पर थपथपाया।
‘अच्छा!’ उसने कहा।
जी हाँ, यह सही था। बिलाश बाबू ही वह व्यक्ति थे जो ऊपर की बर्थ पर सिर से पैर तक चादर में लिपटे हुए लेटे थे। लेकिन मैंने उनके पैर की उंगलियां देखी थीं।
अब समय आ गया था कि मैं फेलुदा से वह सवाल पूछूँ जो मुझे दिन भर परेशान कर रहा था। लेकिन मुझे बाबा के सो जाने का इंतज़ार करना पड़ा। उनकी हरकतों से मुझे पता चल गया था कि वे अभी भी जाग रहे हैं।
धर्मशाला धीरे-धीरे शांत होती जा रही थी, और पूरा शहर भी। सर्दी का मौसम शुरू हो चुका था, इसलिए लोग वैसे भी जल्दी सो जाते थे। हमारे कमरे में अंधेरा था, लेकिन बाहर आंगन से आती रोशनी दहलीज पर पड़ रही थी। बिस्तर के नीचे से कैसी आवाज़ आ रही थी? शायद कोई चूहा या गिलहरी।

बाबा अब सो रहे थे। मुझे उनकी गहरी, नियमित साँसें सुनाई दे रही थीं। मैंने फेलुदा की ओर मुड़कर फुसफुसाते हुए कहा, 'अंगूठी का ही असर था, है ना?'
कुछ पल तक फेलुदा चुप रहा। फिर उसने आह भरी और फुसफुसाते हुए कहा, 'ठीक है। चूंकि तुम सब पहले ही समझ चुके हो, तो तुमसे कुछ छिपाने का कोई मतलब नहीं है। अंगूठी तो मेरे पास पहले दिन से ही थी। जब तुम सब—धीरू काका समेत—सो गए थे, तो मैंने देखा कि उसकी पतलून एक रैक पर टंगी हुई थी। मुझे पता था कि उसकी अलमारी की चाबियां उसकी एक जेब में थीं। इसलिए मैंने उन्हें निकाला, अलमारी खोली और अंगूठी निकाल ली। मैंने जानबूझकर डिब्बा नहीं लिया, ताकि किसी को शक न रहे कि सिर्फ अंगूठी ही गायब हुई है।'
'लेकिन क्यों?'
क्योंकि मुझे पता था कि इससे असली चोर और भी भड़क उठेगा। और फिर उसे पकड़ना आसान हो जाएगा।
क्या इसका मतलब यह है कि संन्यासी केवल अंगूठी चुराने के लिए आया था? 'हां, लेकिन वो अंबिका बाबू नहीं थे। वो दूसरा नकली आदमी था, जिसके हाथ में अटैची केस था। जब उसने लिविंग रूम में एक और संन्यासी को देखा होगा, तो उसे ज़बरदस्त झटका लगा होगा! मुझे यकीन है कि तभी वो थाने गया होगा और अपने कपड़े बदले होंगे।'
‘यह नकली संन्यासी कौन है?’
मुझे कुछ संदेह हैं, लेकिन अभी तक पर्याप्त सबूत नहीं हैं।
'क्या मतलब, तुम इतने दिनों से वो अंगूठी अपनी जेब में लेकर घूम रहे हो?' 'नहीं।'
‘फिर तुमने क्या किया?’
मैंने इसे सुरक्षित स्थान पर रखा था।
'कहाँ?'
‘भूलभुलाइया में। उन छोटी-छोटी जगहों में से एक में।’
हे भगवान! कितना बुद्धिमान व्यक्ति है! अब मुझे समझ में आया कि वह कुछ मिनटों के लिए उस भूलभुलैया में क्यों गायब हो गया था।
लेकिन आप उसे ढूंढने के लिए वापस कैसे जा सकते थे? आपको नहीं पता था कि भूलभुलैया कैसे बनाई गई थी? मेरा मतलब है, उसकी योजना...
मैंने इसके लिए इंतज़ाम कर रखा था। आपने शायद गौर किया होगा कि मेरे बाएं हाथ की छोटी उंगली का नाखून लंबा है। मैंने उसी नाखून से उन गलियारों की

दीवारों पर नंबर उकेरे थे। अंगूठी सातवें गलियारे में थी। लखनऊ छोड़ने से पहले मैं वापस गया और उसे निकाल लिया। मुझे यह अच्छा नहीं लग रहा था कि अंगूठी मेरे शहर से बाहर जाने के दौरान वहीं पड़ी रहे।
मेरी धड़कन फिर से तेज हो गई।
'अगर उन चोरों को शक हो जाए कि तुम्हारे पास अंगूठी है तो क्या होगा?'
‘तो क्या हुआ? वे इसे साबित नहीं कर सके। वैसे भी, मुझे नहीं लगता कि वे इतने चतुर हैं कि अंगूठी का पता लगा सकें।’
‘तो फिर वे आपको धमकी क्यों दे रहे हैं?’
क्योंकि उन्होंने इसे हासिल करने की उम्मीद नहीं छोड़ी है। और वे अच्छी तरह जानते हैं कि मैं उनकी सारी योजनाओं को बर्बाद करने में सक्षम हूं। ‘लेकिन—’ मेरा गला इतना सूख गया था कि मैं मुश्किल से बोल पा रहा था, ‘आप बहुत बड़े खतरे में हो सकते हैं!’
'फेलू मिटर जोखिम और खतरे में ही आगे बढ़ती है।'
'लेकिन-'
‘अब कोई किंतु-परंतु नहीं। सो जाओ।’
फेलुदा ने जम्हाई ली और करवट बदल ली।
धर्मशाला में अब एकदम सन्नाटा पसरा हुआ था। कहीं से एक कुत्ते के भौंकने की आवाज आई। बगल वाले कमरे में खर्राटे की आवाज लगातार आ रही थी। माचिस की डिब्बी और उसके अंदर की चीजें मेरे दिमाग से निकल ही नहीं रही थीं। फेलुदा ने जो साहस दिखाया था, उस पर आश्चर्य होता था। अगर उसने ऐसा न किया होता, तो अंगूठी चोरी हो जाती और चोर उसे लेकर भाग जाता।
‘किर-र-र-र-र-र किट किट किट! किर-र-र-र-र-र-र किट किट किट!’
बगल वाले कमरे से सांप की हल्की सी आवाज सुनाई दी; लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे वह दूर से आ रही हो। बोनोबिहारी बाबू शायद अपना पसंदीदा संगीत सुन रहे होंगे। हैरानी की बात है कि इस अजीब सी आवाज ने मुझे जल्दी ही नींद में सुला दिया।
बाबा ने अपनी घड़ी में सुबह 5 बजे का अलार्म लगा रखा था। मैं अलार्म बजने से थोड़ा पहले ही जाग गया। एक कप चाय पीने के बाद हमें तैयार होने में ज्यादा समय नहीं लगा। डॉ. श्रीवास्तव ने कहा, 'हमें खाने-पीने की चिंता करने की जरूरत नहीं है, लक्ष्मणझूला में पुल के नीचे दुकानें हैं जहाँ बहुत बढ़िया पूरी-सब्जी मिलती है।'

दाढ़ी वाले सिख ड्राइवर ने हमारी टैक्सी की गति धीमी कर दी और बाबा की कार और हमारी कार के बीच की दूरी काफी बढ़ गई।
मैं तो दोनों कारों को एक साथ चलाना चाहता था, धूल की परवाह किए बिना। लेकिन बोनोबिहारी बाबू से कुछ कहने की हिम्मत नहीं हुई। आखिर वो अपनी कहानियां कब शुरू करेंगे?
हमारी कार के पीछे एक कार थी, जो जाहिर तौर पर हमें ओवरटेक करने की जल्दी में थी। उसके हॉर्न बजाने से परेशान होकर बोनोबिहारी बाबू ने ड्राइवर से कहा, 'इससे मेरा दिमाग खराब हो जाएगा। इसे जाने दो, ड्राइवर। रास्ता दो।' ड्राइवर ने बड़ी आज्ञाकारीता से गाड़ी को थोड़ा बाईं ओर मोड़ा और एक पुरानी शैली की शेवरलेट टैक्सी हमारे बगल से तेज़ी से गुज़र गई। उसके यात्री ने खिड़की से बाहर झुककर हमें एक झलक दिखाई।
मैंने उसे तुरंत पहचान लिया—वह तो ट्रेन वाला संन्यासी था!

ग्यारह

यह पहले से तय था कि हम पहले लक्ष्मणझूला जाएंगे, वहां दिन का अधिकांश समय बिताएंगे और वापसी में ऋषिकेश में रुकेंगे। सच कहूं तो, मुझे ऋषिकेश जाने की कोई खास इच्छा नहीं थी, क्योंकि मुझे पता था कि वह अन्य सभी धार्मिक स्थलों की तरह भीड़भाड़ वाला और गंदा होगा। बस नदी थोड़ी अलग हो सकती थी। बोनोबिहारी बाबू अब वही उर्दू गीत गा रहे थे जो फेलुदा ट्रेन में गा रहे थे:
Jab chhor chaley Lucknow nagari Kahen haal ke hum par kya guzri . . .
वह अचानक रुक गया और पूछा, 'क्या आपने जिम कॉर्बेट के बारे में सुना है?' 'हाँ।'
‘उन्होंने इन घाटियों में आदमखोर जानवरों का वध किया, लेकिन मेरी तरह वे भी जानवरों को समझते थे और उनसे प्यार करते थे। मैं हमेशा से इस बात के लिए उनका प्रशंसक रहा हूँ।’ बोनोबिहारी बाबू ने फिर से गाना शुरू कर दिया। हमारी कार पहाड़ियों से होते हुए लक्ष्मणझूला की ओर तेज़ी से बढ़ रही थी। हमारे दाहिनी ओर, घने जंगल के बीच से नदी कभी-कभार दिखाई दे रही थी। आसमान में बादल छा रहे थे। जैसे ही सूरज बादलों से ढक जाता, हवा और ठंडी होती चली जाती।
मैंने चोरी हुई अंगूठी के बारे में फिर से सोचना शुरू कर दिया। पिछले कुछ दिनों में मैंने काफी कुछ सीखा था, लेकिन बहुत सी बातें अभी भी अनसुलझी थीं। महावीर को ऐसा क्यों लगा कि प्यारेलाल की मौत स्वाभाविक नहीं थी? प्यारेलाल क्यों चिल्लाया था? उसने किस जासूस के बारे में बात करने की कोशिश की थी? क्या वह कोई जाना-पहचाना व्यक्ति था, या कोई बाहरी व्यक्ति? ये सारे विचार मेरे मन में एक के बाद एक उमड़ रहे थे, जब मैं यूँ ही इधर-उधर देख रहा था। अचानक मेरी नज़र रियर-व्यू मिरर पर पड़ी। मैंने उसमें फेलुदा को देखा, जो ध्यान से सामने देख रहा था। मैंने अपना सिर घुमाया। वह ड्राइवर को घूर रहा था। मेरी आँखें अपने आप उसी दिशा में मुड़ गईं। फिर मेरा दिल

मानो थम सा गया। ड्राइवर की गर्दन पर, उसकी पगड़ी और कमीज़ के कॉलर के बीच, एक लंबा खरोंच का निशान था।
हमने हाल ही में किसी ऐसे व्यक्ति को देखा था जिसके शरीर पर बिल्कुल वैसा ही निशान था।
वह गणेश गुहा थे।
मैंने एक बार फिर फेलुदा की ओर देखा। वह अब खिड़की से बाहर देख रहा था।
मैंने उसे इतना गंभीर पहले कभी नहीं देखा था।
क्वालिटी रेस्टोरेंट में हमारे साथ बैठे गणेश गुहा ने बताया कि उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी है और उसी दिन कलकत्ता जा रहे हैं। आज वे सिखों के वेश में थे और हमें लक्ष्मणझूला ले जा रहे थे। इसका क्या मतलब हो सकता है? तभी मुझे ख्याल आया कि यह टैक्सी खुद बोनोबिहारी बाबू ने बुक करवाई है। हे भगवान... अगर ऐसा है तो...?
मैं और कुछ सोच नहीं पा रहा था। मेरा सिर चकराने लगा। हम कहाँ जा रहे थे? क्या लक्ष्मणझूला था या कोई और जगह? बोनोबिहारी बाबू क्या करने वाले थे? वे काफी शांत दिख रहे थे और ऐसा बिल्कुल नहीं लग रहा था कि उनका कोई बुरा इरादा है।
इस समय, उसने अचानक बोलकर मुझे चौंका दिया।
‘अब हम बाईं ओर मुड़ेंगे। यहाँ से जंगल के बीच से एक रास्ता जाता है। फिर हम एक घर के पास पहुँचेंगे जहाँ मुझे अजगर मिलने की उम्मीद है। चलो अभी एक नज़र डाल लेते हैं, फिर वापस आते समय उसे ले लेंगे। ठीक है, फेलू बाबू?’
‘जी हाँ, ठीक है,’ फेलुदा ने बड़ी सहजता से कहा। लेकिन मैं पूछे बिना नहीं रह सका, ‘क्या आपने यह नहीं कहा था कि अजगर लक्ष्मणझूला में है?’ बोनोबिहारी बाबू जोर से हंस पड़े।
उन्होंने पूछा, ‘और किसने कहा कि यह लक्ष्मणझूला नहीं है? हावड़ा का मतलब सिर्फ हावड़ा पुल नहीं होता, है ना? इसका मतलब पूरा क्षेत्र होता है। लक्ष्मणझूला यहीं से शुरू होता है। गंगा पर बना पुल यहाँ से एक मील से भी अधिक दूर है।’
हमारी कार जंगल में बाईं ओर मुड़ गई। जंगली झाड़ियों से ढका हुआ रास्ता लगभग अदृश्य था।
मैंने देखा कि ड्राइवर ने निर्देशों का इंतजार तक नहीं किया। वह ऐसे गाड़ी चला रहा था मानो उसे पता हो कि उसे कहाँ जाना है।

‘फेलू बाबू, आपको यह जगह कैसी लगी?’ बोनोबिहारी बाबू ने पूछा। उनकी आवाज़ में एक अलग ही भाव था। उनके सरल शब्दों के पीछे एक दबी हुई उत्तेजना झलक रही थी।
‘बहुत सुंदर!’ फेलुदा ने कहा और धीरे से अपने बाएं हाथ से मेरा दाहिना हाथ दबाया। मैं समझ गया कि यह उनका कहने का तरीका था—‘डरो मत, मैं तुम्हारे साथ हूँ।’
‘क्या तुम रुमाल लाए हो, टॉपशे?’ फेलुदा ने पूछा। मैं ऐसे सवाल के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं था। इसलिए मैं हकलाते हुए बस इतना ही कह पाया, ‘रु- रु-रुमाल?’
क्या तुम नहीं जानते कि यह क्या है?
'हां, बिल्कुल। लेकिन... मैं लाना भूल गया।'
बोनोबिहारी बाबू ने कहा, 'क्या आपको धूल की चिंता है? यहां इतनी धूल नहीं होगी।'
‘नहीं, ये धूल नहीं है,’ फेलुदा ने जवाब दिया और मेरी जेब में एक रुमाल ठूंस दिया। मुझे बिल्कुल समझ नहीं आया कि उसने ऐसा क्यों किया।
बोनोबिहारी बाबू की गोद में उनका टेप रिकॉर्डर पड़ा था। उन्होंने उसे चालू किया। पेड़ों के बीच एक लकड़बग्घा हंसने लगा।
जंगल घना और अंधेरा होता जा रहा था। वैसे भी, सूरज शायद बादलों के पीछे छिप गया था। मैं सोच रहा था कि बाबा की गाड़ी कहाँ होगी। क्या वे लक्ष्मणझूला पहुँच गए होंगे? अगर हमें कुछ हो भी गया, तो उन्हें पता भी नहीं चलेगा। क्या इसीलिए बोनोबिहारी बाबू ने उन्हें आगे जाने दिया था?
मैंने अपनी पूरी हिम्मत जुटाने की कोशिश की। हालाँकि मुझे फेलुदा पर पूरा भरोसा था, फिर भी मुझे अंदर से महसूस हो रहा था कि उसकी हिम्मत और सूझबूझ की हर एक किरण की परीक्षा होने वाली है।
हमारी गाड़ी घने जंगल में रेंगती हुई जा रही थी। बोनोबिहारी बाबू ने रिकॉर्डर बंद कर दिया था; और न ही वे खुद गा रहे थे। मुझे बस एक झिंगुर की आवाज़ और पहियों के नीचे पत्तों के कुचलने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। लगभग दस मिनट बाद, पेड़ों के तनों और घनी झाड़ियों के बीच से हमें एक घर दिखाई दिया। भला ऐसी जगह पर घर कौन बना सकता है? तभी मुझे अपने एक चाचा की याद आई जो वन अधिकारी थे। उनका घर जंगल के बीचोंबीच था, जहाँ उनके साथ सिर्फ बाघ और दूसरे जंगली जानवर होते थे। शायद यह घर भी उन्हीं जैसा हो?

जैसे-जैसे हम घर के करीब पहुँचे, मुझे एहसास हुआ कि यह लकड़ी का बना हुआ था और एक ऊँचे चबूतरे पर निर्मित था। सामने के दरवाजे तक लकड़ी की सीढ़ियाँ जाती थीं। यह स्पष्ट रूप से बहुत पुराना था और देखने में ऐसा बिल्कुल नहीं लगता था कि इसमें कोई रहता हो।
हमारी टैक्सी इस घर के सामने रुक गई। बोनोबिहारी बाबू ने कहा, ‘मुझे नहीं लगता पांडेजी घर पर हैं, लेकिन चलिए अंदर जाकर इंतज़ार करते हैं, क्योंकि हम इतनी दूर आ गए हैं। हो सकता है वो कुछ मिनटों के लिए लकड़ी लेने या किसी और काम से बाहर गए हों। आप जानते हैं, वो अकेले रहते हैं और सारा काम खुद ही करते हैं। लेकिन मेरी तरह उन्हें भी जानवरों से डर नहीं लगता। तो आप दोनों अंदर आ जाइए। आपने नकली संन्यासी तो देखे ही होंगे, है ना? अब आप एक असली संन्यासी को देखेंगे और शायद उनके रहन-सहन के बारे में कुछ सीख भी लेंगे।’ हम तीनों कार से बाहर निकले। मैं बता नहीं सकती कि फेलुदा की आश्वस्त करने वाली उपस्थिति के बिना मैं अपना धैर्य कैसे बनाए रख पाती। वास्तव में, उनकी शांत मुद्रा ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि कहीं यह सब मेरी कल्पना ही तो नहीं थी—क्या पता ड्राइवर एक साधारण सिख हो और बोनोबिहारी बाबू सच कह रहे हों और इस घर में वाकई पांडेजी नाम का एक साधु रहता हो जिसके पास बारह फुट का अजगर हो?
हम सीढ़ियों की ओर बढ़े, हमारे पैरों के नीचे सूखे पत्ते कुचल रहे थे। फिर हम सीढ़ियाँ चढ़कर अंदर चले गए।
जिस कमरे में हम दाखिल हुए, वह रेलगाड़ी के डिब्बे से थोड़ा ही बड़ा था। वहाँ एक और दरवाज़ा था जो शायद दूसरे कमरे में जाता था, लेकिन वह दूसरी तरफ से बंद लग रहा था। सामने वाली दीवार पर दो छोटी खिड़कियाँ थीं, जिनसे होकर हम पेड़ देख सकते थे। जिस चबूतरे पर घर बना था, उसकी ऊँचाई औसत कद के आदमी से ज़्यादा नहीं थी।
बोनोबिहारी बाबू के कंधे पर उनका टेप रिकॉर्डर लटका हुआ था। उन्होंने उसे फर्श पर रख दिया और कहा, 'आप देख सकते हैं कि वह कितना सादा जीवन जीते हैं।' वहाँ एक टूटी हुई मेज, एक बेंच जिसका एक हाथ टूटा हुआ था और एक टिन की कुर्सी थी। फेलुदा बेंच के पास गया और बैठ गया। मैंने भी वैसा ही किया। बोनोबिहारी बाबू ने अपनी पाइप में धुआँ भरना शुरू किया। फिर उन्होंने उसे जलाया, माचिस बुझाई, खिड़की से बाहर फेंक दिया और कुर्सी की सीट को दबाकर

[illegible] [illegible] [illegible] [

बारह

‘आपकी अंगूठी?’
मुझे समझ आ गया कि फेलुदा सवाल सुनकर काफी हैरान हो गया था। बोनोबिहारी बाबू ने कोई जवाब नहीं दिया। वह बस फेलुदा को घूरता रहा, उसके मुंह के एक कोने में पाइप लटका हुआ था और होठों पर हल्की सी मुस्कान थी। बाहर झींगुर बिल्कुल शांत थे।
‘इसके अलावा,’ फेलुदा ने आगे कहा, ‘आपको ऐसा क्यों लगता है कि मुझे यह समझ आ गया है?’ इस बार बोनोबिहारी बाबू बोले।
मुझे शुरू से ही शक था। मुझे पता था कि इसे कोई बाहरी व्यक्ति नहीं चुरा सकता। कोई भी यूं ही घर में घुसकर धीरू बाबू के शयनकक्ष से कुछ भी बिना किसी को देखे या सुने नहीं ले जा सकता था। मुझे इस बात पर यकीन करना नामुमकिन लग रहा था। लेकिन हालांकि मुझे आप पर शक था, मेरे पास अपनी बात साबित करने के लिए कोई सबूत नहीं था। अब मेरे पास है।
और वह सबूत क्या है?
चुपचाप बोनोबिहारी बाबू ने अपना टेप रिकॉर्डर उठाया और उसे एक बार फिर अपनी गोद में रखकर चालू कर दिया। जो कुछ मैंने सुना, उसे सुनकर मेरा खून जम गया।
‘वह अंगूठी ही थी, है ना?’ मशीन से मेरी ही आवाज सुनाई दी।
चूंकि आप पहले ही अनुमान लगा चुके हैं, इसलिए आपसे कुछ भी छिपाने का कोई मतलब नहीं है...
बोनोबिहारी बाबू ने मशीन को क्लिक करके बंद कर दिया। उन्होंने कहा, 'कल रात आपके कमरे में लौटने से पहले मैंने इसे आपके बिस्तर के नीचे रख दिया था। मुझे पक्का पता नहीं था कि आप अंगूठी के बारे में बात करेंगे ही। लेकिन चूंकि आपने बात कर ही दी, तो मैंने अपना काम निकलवाने का यह मौका कैसे गंवाया? इससे बेहतर सबूत और क्या चाहिए, है ना, फेलू बाबू?'
लेकिन आप यह दावा कैसे कर सकते हैं कि अंगूठी आपकी है?

बोनोबिहारी बाबू ने रिकॉर्डर को मेज पर रखा, अपने पैर मोड़े और कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गए।
उन्होंने कहा, “1948 में, यानी ठीक अठारह साल पहले, मैंने कलकत्ता की नौलखा कंपनी से वह अंगूठी खरीदी थी। उसकी कीमत दो लाख रुपये थी। इसके कुछ समय बाद ही मेरी मुलाकात प्यारेलाल से हुई। उन्होंने मुझे यह नहीं बताया कि उन्हें प्राचीन वस्तुओं में रुचि है, लेकिन मैंने उन्हें अंगूठी दिखाई। अंगूठी देखते ही उनके चेहरे के हावभाव ने मुझे तुरंत आशंकित कर दिया। दो दिन बाद, वह मेरे घर से गायब हो गई। पुलिस को सूचना दी गई, लेकिन वे चोर को पकड़ नहीं पाए। फिर मैं लखनऊ आ गया, और प्यारेलाल भी। मुझे पता चला कि अंगूठी इतने सालों से उनके पास थी, जब श्रीवास्तव ने मुझे वह दिखाई। मुझे नहीं लगता कि प्यारेलाल ने सोचा होगा कि वे अपने पहले दिल के दौरे से बच पाएंगे। इसलिए उन्होंने कई साल पहले जो चोरी की थी, उसे फेंक दिया। लेकिन फिर वे ठीक हो गए, और मैं उनसे मिलने गया। मैंने सोचा था कि अगर वे चोरी कबूल कर लें, तो शायद मैं श्रीवास्तव से अंगूठी वापस ले सकूं। मुझे यकीन है कि वे मान जाते, और मैं उन्हें कुछ मुआवजा देने के लिए भी तैयार था। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आगे क्या हुआ?” प्यारेलाल ने तो इस पूरी बात से साफ इनकार कर दिया। दरअसल, उन्होंने तो यहां तक कह दिया कि उन्होंने कलकत्ता स्थित मेरे घर में कभी अंगूठी देखी ही नहीं!
इस मौके पर फेलुदा ने बीच में दखल दिया, उनकी आवाज में जरा भी डर नहीं था, 'मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूं, बोनोबिहारी बाबू, और मुझे उम्मीद है कि आप मुझे जवाब देंगे।'
नहीं, पहले आप मुझे बताइए कि अंगूठी अभी आपके पास है या आपने उसे कहीं छोड़ दिया है? मैं अपनी चीज़ वापस पाना चाहता हूँ!
‘ओह?’ फेलुदा ने खुलेआम तिरस्कार भरे लहजे में कहा। ‘तो फिर तुमने अंगूठी चुराने के लिए दूसरे लोगों को भेजने में ज़रा भी संकोच क्यों नहीं किया, या मुझे पीछा करने और धमकाने में भी? तुम्हारा वो गुंडा—गणेश गुहा, है ना?— आज सिख टैक्सी ड्राइवर की तरह कपड़े पहने है। मुझे लगता है वही नकली संन्यासी था, है ना? तुमने उसे श्रीवास्तव के घर में सेंध लगाने और अगले दिन उसकी कार का पीछा करने के लिए कहा था। लेकिन फिर उसे मुझ पर नज़र रखने के लिए कहा गया था। रेजिडेंसी में मुझ पर पत्थर फेंकना, हम दोनों को

क्लोरोफॉर्म देने की कोशिश करना, मुझे धमकियाँ देना—ये सब उसी का काम था, है ना?’
बोनोबिहारी बाबू मुस्कुराए, “हर छोटा-मोटा काम तो कोई खुद नहीं कर सकता, है ना? एक सहायक बहुत काम आ सकता है, आप जानते हैं। इसके अलावा, गणेश हट्टा- कट्टा और तंदुरुस्त है और उसने सालों जंगली जानवरों की देखभाल की है। इसलिए मुझे पता था कि वह इस जोखिम भरे खेल में माहिर होगा। और मुझे यह कहना ही होगा—अगर उसने कुछ गलत किया है, तो सिर्फ इसलिए किया है क्योंकि मैंने उसे ऐसा करने को कहा था। फेलू बाबू, आपने जो किया है, वह कहीं ज्यादा बुरा है। आप उस चीज से चिपके हुए हैं जो आपकी नहीं है। यह मेरी है, मैं आपको बता रहा हूँ, और मैं इसे वापस चाहता हूँ। आज ही! अभी!”
आखिरी कुछ शब्द उसने लगभग चिल्लाते हुए कहे। मैं अब भी शांत रहने की पूरी कोशिश कर रही थी, लेकिन मेरे हाथ पसीने से तर होने लगे थे।
जब फेलुदा बोलता था तो उसकी आवाज लोहे की तरह ठंडी लगती थी।
‘जब आप पर हत्या का आरोप लगेगा, तो बोनोबिहारी बाबू, उस अंगूठी का आपके लिए क्या उपयोग होगा?’
बोनोबिहारी बाबू क्रोध से कांपते हुए अपनी कुर्सी से उठे। 'क्या... क्या गुस्ताखी! तुम्हें पता नहीं कि तुम क्या बोल रहे हो। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई!'
‘मैं हिम्मत इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि मेरे सामने एक हत्यारा है। अब क्या आप मुझे उस जासूस के बारे में थोड़ा और बताएँगे जिसका जिक्र प्यारेलाल ने किया था? ऐसा लग रहा था कि आपको उसके बारे में कुछ पता है।’
बोनोबिहारी बाबू ने रूखी मुस्कान के साथ कहा, 'इसमें कुछ समझाने की जरूरत नहीं है। सब कुछ बहुत सरल है। मैंने कुछ आदमियों को उसके पीछे लगा रखा था ताकि अंगूठी के बारे में और जानकारी मिल सके। मुझे यकीन है कि उसका यही मतलब था।'
और अगर मैं आपसे कहूँ कि "जासूस" शब्द का आपकी गुप्त सेवा से कोई लेना-देना नहीं था?
'आपका क्या मतलब है?'
‘जिस सुबह प्यारेलाल को दूसरा दौरा पड़ा, उस सुबह आप उनसे मिलने गए थे, है ना? दौरा पड़ने से पहले आपने उन्हें देखा था।’

तो क्या हुआ? क्या आपका मतलब यह है कि मुझे देखते ही उन्हें दिल का दौरा पड़ जाएगा? मैं उस दिन से पहले भी उनसे अक्सर मिलने जाता था।
'हां, लेकिन उस दिन आप खाली हाथ नहीं थे।'
‘खाली हाथ? आपका मतलब क्या है?’
‘तुम एक बक्सा लेकर गए थे। उस बक्से में तुम्हारे चिड़ियाघर का एक कैदी था — वह विशाल, जहरीली अफ्रीकी मकड़ी—ब्लैक विडो। है ना? प्यारेलाल कहना चाह रहा था “मकड़ी”, लेकिन वह शब्द पूरा नहीं कर पाया। इसलिए “एक मकड़ी” “एक जासूस” बन गया…’
बोनोबिहारी बाबू का चेहरा अचानक पीला पड़ गया। वे फिर से बैठ गए। ‘लेकिन...लेकिन उसे मकड़ी दिखाने से मुझे क्या फायदा होता?’ उसने पूछा। “शायद आपको पता नहीं था कि तिलचट्टे को देखकर ही उन्हें दिल की धड़कन तेज हो जाती थी। आपका इरादा शायद सिर्फ उन्हें डराकर अंगूठी छीनना था। लेकिन बात बिगड़ गई, है ना? प्यारेलाल के डर से उन्हें दिल का दौरा पड़ गया और उनकी मृत्यु हो गई। अब इसके लिए जिम्मेदार कौन है? सिवाय आपके? और आप मुझे बता रहे हैं कि आपने अंगूठी कलकत्ता से खरीदी थी। अगर मैं आपको बताऊं कि अठारह साल पहले प्यारेलाल ने ही आपको वह अंगूठी दिखाई थी और तब से आप उसे पाना चाहते थे, तो क्या होगा? आपके घर के उस कमरे में—जिसे आप हमेशा बंद रखते थे—और भी कई पुरानी और कीमती चीजें रखी हैं। और चिड़ियाघर का मकसद चोरों और लुटेरों को दूर रखना है। क्या आप इनमें से किसी भी बात से इनकार करेंगे?”
बोनोबिहारी बाबू ने गंभीरता से कहा, 'क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि आप और किस बात पर विश्वास करते हैं?'
‘जी हां, बिल्कुल,’ फेलुदा ने उतने ही गंभीर स्वर में उत्तर दिया। ‘मेरा मानना है कि तुम सम्राट की अंगूठी को फिर कभी नहीं देख पाओगे, और तुम्हारा भविष्य तुम्हें तुम्हारे कर्मों का फल देगा।’
‘गणेश!’ बोनोबिहारी बाबू की चीख हवा में गोली की तरह गूंज उठी।
गणेश गुहा पैकिंग का डिब्बा लेकर कमरे में दाखिल हुए। बोनोबिहारी बाबू ने अपना टेप रिकॉर्डर उठाया और कमरे से बाहर निकलने लगे।
‘अपना चेहरा ढक लो!’ फेलुदा ने मुझसे कहा। मैंने यह नहीं पूछा कि क्यों, और जैसा मुझे कहा गया था, मैंने वही किया, मुझे जो रुमाल दिया गया था, उसी का इस्तेमाल करते हुए।

फेलुदा ने अपनी जेब से एक और रूमाल निकाला और उसके साथ ही टूथपाउडर का छोटा डिब्बा भी।
तब तक गणेश गुहा ने डिब्बा ज़मीन पर रख दिया था और उसका ढक्कन उठा दिया था। जैसे ही वह वापस जाने ही वाला था कि फेलुदा ने अपने हाथ में पकड़े डिब्बे को खोला और मुट्ठी भर पाउडर गणेश गुहा और बोनोबिहारी बाबू दोनों पर फेंक दिया। फिर उसने झट से अपना चेहरा ढक लिया।
मेरे रुमाल के जरिए मुझे एक जानी-पहचानी चीज की हल्की सी गंध आई: काली मिर्च।
बाकी दोनों पर इसका क्या असर हुआ, इसका वर्णन करना कठिन है। उनके चेहरे दर्द से विकृत हो गए थे, जिसके बाद लगातार छींकें और पीड़ा भरी चीखें सुनाई देने लगीं। बोनोबिहारी बाबू लड़खड़ाते हुए कमरे से बाहर निकले, सीढ़ियों से लुढ़कते हुए बाहर ज़मीन पर जा गिरे। गणेश गुहा की हालत भी कुछ बेहतर नहीं थी, लेकिन उन्होंने किसी तरह दरवाज़ा बंद कर लिया, जिससे हमारा भागना संभव नहीं रहा।
अब मेरी नजर फर्श पर पड़े खुले हुए डिब्बे पर पड़ी। एक सांप धीरे-धीरे अपना सिर उसमें से बाहर निकाल रहा था और वही भयानक आवाज निकाल रहा था जो मैंने पहले सुनी थी।
‘किर-र-र-र-र-र किट किट किट. . . किर-र-र-र-र-र किट किट किट!’
मुझे अचानक चक्कर आने लगे। मैं अपने अंगों को हिला नहीं पा रहा था, बस इतना महसूस कर पा रहा था कि फेलुदा ने मुझे बेंच पर खड़े होने में मदद की और फिर खुद भी उस पर चढ़ गया।
मुझे पहली बार एहसास हुआ कि आतंक किसी पर क्या असर डाल सकता है। मेरी आँखें साँप से हटने को तैयार नहीं थीं। या शायद साँप में सचमुच सम्मोहित करने की शक्ति थी। मेरी भयभीत आँखों के सामने, वह अपने डिब्बे से बाहर निकला, अपनी पूंछ हिलाई और इधर-उधर देखने लगा। फिर उसने अपनी निगाहें हम पर टिका दीं और लगातार खड़खड़ाहट की आवाज़ करते हुए, दरवाजे पर अगल-बगल रेंगते हुए, हमारी बेंच की ओर बढ़ने लगा। ऐसा लग रहा था कि मैं ही उसका सीधा निशाना हूँ। मेरी नज़र धुंधली होने लगी। साँप करीब आ रहा था, और मैं बस वहीं जड़वत खड़ा रह गया। फिर, जब वह बस दो-तीन गज दूर रह गया, तो अचानक ऐसा लगा जैसे हमारे घर पर बिजली गिर गई हो। एक ज़ोरदार धमाका हुआ, तेज़ रोशनी चमकी—और बारूद की गंध आई।

और सांप?
सांप का सिर कुचलकर उसके शरीर से अलग हो गया था। उसकी पूंछ दो-तीन बार हिली और फिर स्थिर हो गई।
इस बिंदु पर, मैं विस्मृति में डूब गया।
जब मुझे होश आया तो मैंने खुद को एक पेड़ के नीचे दरी पर लेटा हुआ पाया। मेरा सिर और माथा ठंडा और गीला महसूस हो रहा था। साफ था कि किसी ने मुझ पर पानी छिड़का था। मेरी नजरें धीरे-धीरे पहले डॉ. श्रीवास्तव पर और फिर बाबा पर टिकीं।
‘तपेश बाबू, आप कैसे हैं?’ एक जानी-पहचानी सी आवाज़ सुनाई दी। चौंककर मैंने अपना सिर घुमाया और महाबीर को देखा। लेकिन उसने भगवा कपड़े क्यों पहने थे? महाबीर मुस्कुराते हुए बोला, 'मैं तुम्हारे साथ बरेली तक गया था, फिर भी तुमने मुझे पहचाना नहीं!'
वह ज़रूर एक प्रतिभाशाली अभिनेता होंगे। और उन्होंने बेहतरीन मेकअप किया हुआ था। लंबी, लहराती दाढ़ी में तो उन्हें पहचानना नामुमकिन सा लग रहा था। इसके अलावा, उन्होंने अपनी आवाज़ और बोलने का तरीका भी बदल लिया था।
अब आपको पता चल गया होगा कि मेरा निशाना कितना सटीक है। दरअसल, मुझे बोनोबिहारी बाबू पर शक उसी दिन से होने लगा था जब हम भूलभुलैया में मिले थे और उन्होंने मुझसे पहले कभी मिलने से इनकार कर दिया था। सच्चाई यह थी कि वे अक्सर कलकत्ता स्थित हमारे घर आते थे और मुझसे कई बार बात कर चुके थे। एक बार उस अंगूठी को लेकर उनका और मेरे पिता का झगड़ा हुआ था। मुझे वह घटना कुछ ही दिन पहले याद आई।
बाबा ने आगे कहा, ‘जब हमें आपकी कार नहीं दिखी, तो हमने अपनी कार रिवर्स की और टायर के निशानों का पीछा करते हुए जंगल में चले गए। लेकिन यह महावीर का विचार था।’
और उन दोनों का क्या हुआ?
‘उन्हें उचित दंड मिल चुका है। फेलू की बिजली के पाउडर का दोनों पर सबसे उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा। अब पुलिस उनकी निगरानी कर रही है।’
‘पुलिस? पुलिस इसमें कैसे शामिल हो गई?’
‘अरे, ये तो हमारे साथ आए थे! दरअसल बिलाश बाबू ही इंस्पेक्टर गरगारी हैं।’

कितना अजीब है! किसने सोचा होगा कि वह हस्तरेखा विशेषज्ञ असल में एक पुलिस इंस्पेक्टर होगा? मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि सम्राट की अंगूठी का रहस्य इस तरह समाप्त होगा।
लेकिन फेलुदा कहाँ था?
मेरी आँखों में फिर एक चमक उठी। लेकिन इस बार कोई तेज़ आवाज़ नहीं थी। मैंने देखा कि फेलुदा कुछ दूरी पर खड़ा था, उसकी उंगली में अंगूठी थी। वह पत्तों से छनकर आती धूप में अंगूठी को घुमा रहा था, और उसकी रोशनी सीधे मेरी आँखों में पड़ रही थी।
मैंने मन ही मन चुपचाप सोचा: अगर इस पूरे मामले में कोई सचमुच सम्राट की तरह विजेता बनकर उभरा है, तो वह फेलुदा के अलावा और कोई नहीं था।

[redacted]

‘देखिए आपको मेरा कार्ड कैसा लगा।’
फेलुदा ने अपने बटुए से एक विजिटिंग कार्ड निकाला और मेरे सामने रखा। उस पर लिखा था: प्रदोष सी. मित्तर, निजी जासूस। फेलुदा स्पष्ट रूप से अपने पेशे का प्रचार करना चाह रहा था। और क्यों नहीं? सम्राट औरंगजेब की खोई हुई हीरे की अंगूठी के मामले में मिली सफलता के बाद, उसे सबको यह बताने का पूरा अधिकार था कि वह कितना चतुर था। लेकिन, ज़ाहिर है, उसे प्रचार की चिंता करने की ज़रूरत नहीं थी। वैसे भी, बहुत से लोगों को इस मामले के बारे में पता चल चुका था। दरअसल, फेलुदा को पहले ही कुछ प्रस्ताव मिल चुके थे, लेकिन उसने उन्हें स्वीकार नहीं किया क्योंकि वे पर्याप्त चुनौतीपूर्ण नहीं थे।
उसने कार्ड वापस अपने बटुए में रख लिया और अपने सामने रखी छोटी मेज पर पैर फैला लिए। उसने लापरवाही से कहा, 'लगता है मुझे इस क्रिसमस की छुट्टियों में अपने दिमाग को कसरत देने का मौका मिल जाएगा।'
‘क्यों? क्या तुम्हें कोई नया रहस्य मिल गया है?’ मैंने पूछा। फेलुदा की बातों ने मुझे काफी उत्साहित कर दिया था, लेकिन मैंने इसे ज़ाहिर नहीं किया। उसने अपनी जेब से एक छोटी सी डिब्बी निकाली और उसमें से थोड़ी सुपारी निकाली। ‘तुम बहुत उत्साहित लग रहे हो,’ उसने कहा।
क्या? उसने कैसे अंदाज़ा लगाया? मेरे पूछने से पहले ही फेलुदा ने समझा दिया। 'क्या तुम सोच रहे हो कि मुझे कैसे पता चला? तुम्हें पता है, अपनी भावनाओं को छुपाना हमेशा मुमकिन नहीं होता, चाहे तुम कितनी भी कोशिश करो। छोटी-छोटी बातें अक्सर राज़ खोल देती हैं। जब मैंने क्रिसमस की छुट्टियों में काम करने के बारे में वो बात कही, तो तुम जम्हाई लेने ही वाले थे। मेरे शब्दों ने तुम्हें अचानक अपना मुँह बंद करने पर मजबूर कर दिया। अगर तुम्हें मेरी बातों से सच में कोई फ़र्क नहीं पड़ता, तो तुम अपनी जम्हाई हमेशा की तरह पूरी करते, बीच में नहीं रुकते।'
एक बार फिर मैं उनकी अवलोकन क्षमता से चकित रह गया। फेलुदा अक्सर मुझसे कहा करते थे, 'बिना अवलोकन करने और सूक्ष्मतम विवरण को समझने की क्षमता के कोई भी जासूस होने का दावा नहीं कर सकता। शर्लक होम्स ने हमें रास्ता दिखाया है। हमें बस उनका अनुसरण करना है।'
मैंने उसे याद दिलाया, 'आपने मुझे यह नहीं बताया कि आपको अपने दिमाग का इस्तेमाल करने की जरूरत क्यों पड़ेगी।'

क्या आपने श्यामपुकुर के कैलाश चौधरी के बारे में सुना है?
नहीं। हमारे शहर में इतने सारे मशहूर लोग हैं। मैंने उन सभी के बारे में नहीं सुना होगा। मैं तो सिर्फ पंद्रह साल की हूँ!
फेलुदा ने सिगरेट जलाई। ‘उनके परिवार के पास राजशाही में बहुत सारी ज़मीन थी। वे ज़मींदार थे। लेकिन कलकत्ता में भी उनकी संपत्ति थी, इसलिए विभाजन के बाद वे यहाँ आ गए। कैलाश चौधरी एक वकील हैं। वे शिकार पर जाया करते थे और वास्तव में एक शिकारी के रूप में काफी प्रसिद्ध हो गए थे। उन्होंने इस विषय पर दो किताबें भी लिखीं। कुछ समय पहले, जलदापारा आरक्षित वन में एक हाथी पागल हो गया और इतना उत्पात मचाने लगा कि कैलाश बाबू को उसे मारने के लिए बुलाया गया। उनका नाम लगभग हर अखबार में छपा था।’
‘मैं समझ गया। इन सब बातों का आपके दिमाग से क्या लेना-देना है? क्या कैलाश चौधरी से जुड़ा कोई रहस्य है?’
मुझे जवाब देने के बजाय, फेलुदा ने अपनी जैकेट की सामने वाली जेब से एक पत्र निकाला और मुझे थमा दिया। उसने कहा, 'इसे पढ़ो।' मैंने पत्र खोला और उसमें लिखी बातें पढ़ीं:
प्रिय श्री मित्तर, अमृता बाज़ार पत्रिका में आपका विज्ञापन देखकर मैंने आपको पत्र लिखने का निर्णय लिया। यदि आप उपरोक्त पते पर आकर मुझसे मिल सकें तो मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा। मैं यह पत्र एक्सप्रेस डाक से भेज रहा हूं। इसलिए यह कल तक आप तक पहुंच जाएगा। मैं आपसे परसों, यानी शनिवार को सुबह 10 बजे मिलने की उम्मीद करूंगा। आपका सादर, कैलाश चौधरी।
‘लेकिन आज शनिवार है!’ मैंने हैरानी से कहा। ‘और नौ बज भी गए!’
‘आप दिन-प्रतिदिन बेहतर हो रहे हैं। मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि आपको दिन और तारीखें इतनी अच्छी तरह याद रहती हैं।’
अचानक मेरे मन में एक शंका उत्पन्न हुई। 'इस पत्र में तो सिर्फ आपसे मिलने की बात लिखी है। अगर वह किसी अतिरिक्त व्यक्ति के आने पर आपत्ति जताए तो क्या होगा?'
फेलुदा ने मुझसे पत्र वापस ले लिया और उसे सावधानीपूर्वक मोड़कर अपनी जेब में रख लिया।
‘उसे ऐसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि तुम अभी छोटे हो। हो सकता है कि वह तुम्हें इतना महत्वपूर्ण न समझे कि आपत्ति करे। लेकिन अगर वह ऐसा करता है,

तो हम तुम्हें दूसरे कमरे में भेज देंगे। तुम वहाँ तब तक इंतज़ार कर सकते हो जब तक हम अपनी बात पूरी नहीं कर लेते।’
मेरे दिल की धड़कन तेज़ हो गई। मैं सोच रहा था कि क्रिसमस की छुट्टियों में क्या करूँ। अब ऐसा लग रहा था जैसे मेरा समय बहुत दिलचस्प होने वाला है। हम रात दस बजने से पांच मिनट पहले श्यामपुकुर स्ट्रीट के पास ट्राम से उतरे। फेलुदा रास्ते में कैलाश चौधरी की एक किताब खरीदने के लिए रुका था। उसका नाम था 'शिकार का जुनून'। उसने ट्राम में ही किताब के पन्ने पलटे और उतरते ही बोला, 'पता नहीं क्यों उसके जैसे बहादुर आदमी को किसी जासूस से मिलने की ज़रूरत है!'
कैलाश चौधरी का घर, 51 श्यामपुकुर स्ट्रीट, एक विशाल पुराना महल निकला। मुख्य घर तक जाने के लिए एक लंबा रास्ता था। दोनों ओर बगीचे, संगमरमर की मूर्तियाँ और एक फव्वारा था। हम इन्हें पार करते हुए मुख्य द्वार की ओर बढ़े। घंटी बजाते ही तीस सेकंड के भीतर दूसरी तरफ कदमों की आहट सुनाई दी। दरवाजा खोलने वाले व्यक्ति को देखते ही मैं समझ गया कि वह कैलाश चौधरी नहीं थे। कोई भी बहादुर शिकारी इतना दुबला-पतला कैसे हो सकता है? वह मध्यम कद के, थोड़े मोटे, शायद तीस साल से अधिक उम्र के नहीं थे। उनकी आँखों में मासूमियत झलक रही थी। उनके हाथ में एक आवर्धक लेंस था।
‘आप किसे देखना चाहेंगे?’ उसने पूछा। उसकी आवाज उसके रूप की तरह ही सौम्य थी।
फेलुदा ने अपना एक कार्ड निकाला और उस सज्जन को दे दिया। 'मेरी श्री चौधरी से मुलाकात है। उन्होंने मुझे यहां आने के लिए कहा है।'
उस आदमी ने कार्ड पर सरसरी नज़र डाली और कहा, 'कृपया अंदर आइए।' हम उसके पीछे-पीछे गलियारे से होते हुए सीढ़ियों से ऊपर गए और हमें एक छोटे से दफ्तर जैसे दिखने वाले कमरे में ले जाया गया।
‘कृपया बैठ जाइए। मैं जाकर अपने चाचा को सूचित करता हूँ,’ उसने कहा और चला गया।
हमने बाजूबंद वाली दो पुरानी कुर्सियाँ लीं, जो एक उतनी ही पुरानी, काले रंग से रंगी हुई मेज के सामने थीं। कमरे की तीन दीवारों पर किताबों से भरे काँच के बक्से लगे थे। मेज पर मेरी नज़र एक दिलचस्प चीज़ पर पड़ी। तीन मोटे स्टाम्प एल्बम एक के ऊपर एक रखे थे, और चौथा खुला पड़ा था। उसमें स्टाम्पों की पंक्तियाँ बड़े करीने से चिपकाई गई थीं। कुछ खुले स्टाम्प एक सेलोफ़ेन

पैकेट में पड़े थे, साथ ही स्टाम्प संग्राहकों का आम सामान भी था: कब्ज़े, एक चिमटी और एक स्टाम्प कैटलॉग। अब समझ में आया कि दरवाज़े पर हमारा स्वागत करने वाला आदमी आवर्धक लेंस क्यों लिए बैठा था। ज़ाहिर है, वही इन स्टाम्पों का संग्राहक था।
फेलुदा भी इन वस्तुओं को देख रहा था, लेकिन इससे पहले कि हम दोनों कुछ कह पाते, वही आदमी वापस आया और बोला, 'चाचा ने आपको ड्राइंग रूम में इंतजार करने के लिए कहा है। वह थोड़ी देर में आपके पास आ जाएंगे।'
हमें ड्राइंग रूम में ले जाया गया। यह एक बड़ा कमरा था, जिसमें झूमर, तेल चित्रकलाएँ, संगमरमर की मूर्तियाँ और ढेर सारे फूलदान बिखरे पड़े थे। कमरे की हर चीज़ राज काल के जीवन की, कम से कम एक समृद्ध परिवार के जीवन की, झलक दिखा रही थी। फर्श पर एक शाही बंगाल बाघ की खाल पड़ी थी, और दीवारों से चार हिरणों के सिर, दो चीते और एक जंगली भैंसा दिखाई दे रहे थे।
लगभग दस मिनट बाद, एक अधेड़ उम्र का आदमी कमरे में दाखिल हुआ। अपनी उम्र के हिसाब से वह काफी मजबूत और फुर्तीला लग रहा था। उसके चेहरे की बनावट तीखी थी और उसने पतली मूंछें रखी हुई थीं। उसने पजामा-कुर्ता के ऊपर लाल रेशमी ड्रेसिंग गाउन पहना हुआ था।
हम खड़े हो गए और 'नमस्कार' कहा। श्री चौधरी ने हमारे अभिवादन का जवाब दिया, लेकिन मुझे देखकर उन्होंने अपनी भौंहें थोड़ी ऊपर उठा लीं।
‘यह मेरा चचेरा भाई है,’ फेलुदा ने समझाया। श्री चौधरी हमारे बगल वाले छोटे सोफे पर बैठ गए और पूछा, ‘क्या आप दोनों मिलकर जांच करते हैं?’
फेलुदा हँसते हुए बोले, 'नहीं, ऐसा नहीं है। लेकिन तपेश उन सभी मामलों में शामिल रहा है जिन्हें मैंने अब तक संभाला है। उसने कभी कोई परेशानी खड़ी नहीं की।'
‘बहुत खूब। निर्वासित, अब तुम जा सकते हो; और देखो कि क्या तुम इन लोगों के लिए एक कप चाय का इंतजाम कर सकते हो।’
डाक टिकट संग्रहकर्ता दरवाजे के पास खड़ा था। ये शब्द सुनकर वह अंदर चला गया। कैलाश चौधरी ने फेलुदा की ओर देखा और कहा, 'मुझे उम्मीद है कि आपको बुरा नहीं लगेगा, लेकिन मैं वह पत्र देखना चाहता हूँ जो मैंने आपको लिखा था। क्या आप उसे लाए हैं?'
फेलुदा मुस्कुराया। 'क्या यह सुनिश्चित करने के लिए है कि मैं ही सही व्यक्ति हूँ? लीजिए, आपका पत्र।'

श्री चौधरी ने पत्र पर सरसरी नजर डाली, 'धन्यवाद' कहा और उसे फेलुदा को लौटा दिया।
‘इन मामलों में सावधानी बरतनी पड़ती है, मुझे यकीन है आप समझते हैं। खैर, मुझे लगता है कि आप मेरे काम के बारे में थोड़ा बहुत जानते ही होंगे। मैं एक शिकारी के रूप में जाना जाता हूँ।’
जी हां, महोदय। मुझे यह पता था।
श्री चौधरी ने दीवारों पर टंगे विभिन्न जानवरों के सिरों की ओर इशारा करते हुए कहा, “मैंने इन सबको मारा है। मैंने सत्रह साल की उम्र में राइफल चलाना सीखा। उससे पहले, बचपन में, मैं एयरगन चलाता था और छोटी चिड़ियों को मारता था। मैं किसी से भी—या किसी भी चीज़ से—लड़ने से नहीं डरता, अगर मैं अपने प्रतिद्वंदी का सामना कर सकूँ, अगर मैं उसे देख सकूँ। लेकिन अगर दुश्मन छिपा हुआ हो... अगर वह खुलकर सामने न आए... तो फिर क्या किया जाए?”
वह रुक गया। मुझे महसूस हुआ कि मेरा दिल फिर से तेज़ी से धड़कने लगा है। एक रहस्य का खुलासा होने ही वाला था, लेकिन श्री चौधरी घुमा-फिराकर बात कर रहे थे जिससे हर मिनट सस्पेंस बढ़ता जा रहा था। कुछ सेकंड बाद, उन्होंने फिर बोलना शुरू किया। 'मुझे उम्मीद नहीं थी कि तुम इतनी छोटी हो,' उन्होंने कहा। 'तुम्हारी उम्र कितनी है?'
'अट्ठाईस।'
‘मैं समझ गया। वैसे, मैं पुलिस के पास जा सकता था। लेकिन मुझे उन पर ज़्यादा भरोसा नहीं है। मदद करने के बजाय, वे अक्सर बेवजह परेशानी खड़ी करते हैं। इसके अलावा, मैं युवाओं का सम्मान करता हूँ। इसलिए आप इस काम के लिए सही व्यक्ति हो सकते हैं। मुझे लगता है कि एक युवा, समझदार व्यक्ति पूरी पुलिस फोर्स से कहीं ज़्यादा काम कर सकता है।’
वह फिर रुक गया। फेलुदा ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए तुरंत पूछा, 'क्या आप मुझे बता सकते हैं कि समस्या क्या है...?'
श्री चौधरी ने चुपचाप अपनी जेब से एक कागज़ निकाला और उसे फेलुदा को दे दिया। उन्होंने कहा, 'देखो तुम इससे क्या समझ पाते हो।' फेलुदा ने उसे खोला। मैंने झुककर उस पर लिखा हुआ पढ़ा:
अपने लिए मुसीबतें और न बढ़ाएँ। जो चीज़ आपकी नहीं है, उसे लौटा दें। सोमवार को विक्टोरिया मेमोरियल जाएँ और उसे दक्षिण द्वार की ओर मुख किए हुए लिली की पहली पंक्ति के पहले पौधे के नीचे रख दें। यह काम शाम 4 बजे तक

कर देना है। पुलिस को सूचना देने या किसी जासूस के पास जाने की कोशिश न करें। अगर आपने ऐसा किया, तो आपका भी वही हाल होगा जो आपने अपने शिकार में मारे गए जानवरों का हुआ।
‘आप क्या सोचते हैं?’ श्री चौधरी ने गंभीरता से पूछा।
फेलुदा ने कुछ क्षण तक उस नोट को घूरकर देखा। फिर उसने कहा, 'लेखक ने अपनी लिखावट छिपाने की कोशिश की है, क्योंकि एक ही अक्षर को अलग-अलग तरीकों से लिखा गया है। और उसने एक नए पैड के सबसे ऊपरी पन्ने पर लिखा है।'
‘आप कैसे बता सकते हैं?’
‘अगर आप किसी पैड पर लिखते हैं, तो सबसे ऊपर वाले पन्ने के नीचे वाले पन्नों पर हमेशा ऊपर वाले पन्ने पर लिखी हुई चीज़ का हल्का सा निशान रह जाता है। हो सकता है वह स्पष्ट न हो, लेकिन निशान होता ज़रूर है। यह पन्ना बिल्कुल चिकना है।’
'बहुत बढ़िया। क्या आप कुछ और बता सकते हैं?'
नहीं, इसे देखकर इससे ज्यादा कुछ कहना असंभव है। क्या यह डाक से आया है? 'हां। डाक टिकट पर पार्क स्ट्रीट डाकघर लिखा था। मुझे यह पत्र तीन दिन पहले मिला था। आज शनिवार, 20 तारीख है।'
फेलुदा ने श्री चौधरी को पत्र लौटाते हुए कहा, 'अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ, यदि अनुमति हो तो। देखिए, आपके जीवन के बारे में मुझे कुछ भी नहीं पता, सिवाय उन शिकार की कहानियों के जो आपने लिखी हैं।'
बहुत खूब। आप अपने सवाल पूछ सकते हैं। लेकिन शुरू करने से पहले कृपया मिठाई का आनंद ले लें।
कुछ मिनट पहले एक वेटर आया और हमारे सामने मिठाइयों से भरी एक चांदी की थाली रख दी। फेलुदा को दोबारा कुछ कहने की ज़रूरत नहीं पड़ी। उसने एक रसगुल्ला उठाया और मुंह में डाल लिया। थोड़ी देर बाद उसने पूछा, 'यह क्या चीज़ है जो तुम्हारी नहीं है?'
‘सच कहूँ तो, श्री मिटर, मुझे ऐसा कुछ भी नहीं सूझता। इस दुनिया में मेरे पास जो कुछ भी है, इस घर की चीज़ों समेत, वह या तो मुझे विरासत में मिला है या मैंने खुद खरीदा है। सब कुछ... सिवाय...’ वह अचानक रुक गया।
‘सिवाय किसके?’
'खैर, कुछ ऐसा है जो मूल्यवान भी है और लुभावना भी।'
'यह क्या है?'

एक पत्थर।
‘एक कीमती पत्थर?’
'हाँ।'
‘क्या तुमने इसे खरीदा?’
'नहीं।'
क्या यह आपके पूर्वजों का था?
नहीं, मुझे यह मध्य प्रदेश के एक जंगल में मिला। हम चार लोग थे। हमने एक बाघ का जंगल में पीछा किया और आखिरकार उसे मार डाला। फिर हमें यह प्राचीन और वीरान मंदिर मिला। वह पत्थर देवता की मूर्ति के माथे पर लगा हुआ था। मुझे नहीं लगता कि किसी को इसके अस्तित्व के बारे में पता भी था।
क्या आप इसे देखने वाले पहले व्यक्ति थे?
'बाकी सबने मंदिर देखा, लेकिन हां, पत्थर पर सबसे पहले मेरी ही नजर पड़ी।' ‘आपके साथ और कौन था?’
‘राइट नाम का एक अमेरिकी, किशोरीलाल नाम का एक पंजाबी और मेरा भाई केदार।’ क्या तुम्हारा भाई भी शिकारी है?
‘वह कभी-कभी मेरे साथ शिकार पर जाया करता था, लेकिन अब मुझे नहीं पता कि वह क्या करता है। वह चार साल पहले विदेश चला गया।’
'विदेश?'
‘स्विट्जरलैंड। घड़ियों के निर्माण से संबंधित कुछ।’
जब आपको वह पत्थर मिला, तब क्या हुआ? क्या बाकी लोगों में से कोई उसे लेना नहीं चाहता था?
'नहीं, क्योंकि तब हममें से किसी को भी इसकी कीमत का एहसास नहीं था। मुझे तो तब पता चला जब मैंने कलकत्ता के एक जौहरी से इसका मूल्यांकन करवाया।'
‘और किसे पता चला?’
'ज्यादा लोग नहीं। मेरे ज्यादा रिश्तेदार नहीं हैं। मैंने केदार को बताया कि मेरे कुछ दोस्त इसके बारे में जानते हैं, और मुझे लगता है कि मेरा भतीजा अबनीश भी इसकी अहमियत से वाकिफ है।'
क्या आप इस पत्थर को अपने घर में रखते हैं?
'हां, मेरे बेडरूम में।'
‘आप इसे बैंक के लॉकर में क्यों नहीं रख देते?’

‘मैंने एक बार ऐसा किया था। ठीक अगले दिन, मैं बाल-बाल एक कार से टकराते- टकराते बचा। ओह, मैं बाल-बाल बचा, मैं आपको बता सकता हूँ। इससे मुझे लगा कि अगर मैं उस पत्थर से अलग हो गया तो यह मेरे लिए दुर्भाग्य लाएगा। हाँ, मुझे पता है कि यह अंधविश्वास है। फिर भी, मैं उसे बैंक से वापस ले आया।’ फेलुदा ने खाना खत्म कर लिया था। उसके चेहरे पर बनी भौंहों से मैं समझ गया कि वह सोचने लगा है। उसने अपना मुंह पोंछा, थोड़ा पानी पिया और बोला, 'इस घर में और कौन रहता है?'
‘मेरा भतीजा, अबानिश, और तीन बूढ़े नौकर। फिर मेरे पिता हैं, लेकिन वे बहुत बूढ़े हैं और लगभग पूरी तरह से बुढ़ापे के कारण कमजोर हो चुके हैं। नौकरों में से एक अपना सारा समय उनकी देखभाल में बिताता है।’
‘आपका भतीजा क्या करता है?’
'कुछ खास नहीं, बस इतना ही। उन्हें डाक टिकट संग्रह का शौक है। वे डाक टिकट बेचने के लिए एक दुकान खोलने की बात कर रहे हैं।'
फेलुदा कुछ पल चुप रहा, मानो किसी बात पर फैसला लेने की कोशिश कर रहा हो। फिर उसने धीरे से कहा, 'क्या आप चाहेंगे कि मैं पता लगाऊं कि वह नोट किसने लिखा था?'
श्री चौधरी ने बनावटी मुस्कान बिखेरी। ‘मैं बूढ़ा हो रहा हूँ, श्री मिटर। मुझे चिंता और तनाव की ज़रूरत नहीं है। और बात सिर्फ़ उस नोट की नहीं है। कल रात एक आदमी ने मुझे फ़ोन किया। मैं उसकी आवाज़ पहचान नहीं पाया। उसने कहा कि अगर मैंने वह चीज़ तय समय और जगह पर नहीं रखी, तो वह मेरे घर आकर मुझे शारीरिक नुकसान पहुँचाएगा। लेकिन फिर भी, मैं वह पत्थर देने को तैयार नहीं हूँ। इसके अलावा, उस आदमी का उस पर कोई वैध दावा नहीं हो सकता। वह बस अपनी धमकियों से मुझे डराना चाहता है। उस जैसे बदमाश को सज़ा मिलनी चाहिए। आपको सोचना होगा कि कैसे।’
'मैं सिर्फ एक ही काम कर सकता हूँ। मुझे सोमवार को विक्टोरिया मेमोरियल जाना होगा और लिली के फूलों पर नज़र रखनी होगी। इस आदमी को वहाँ आना ही होगा।'
‘हो सकता है कि वह स्वयं न आए।’
‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए। अगर हम पत्थर लेने की उम्मीद में आने वाले किसी भी व्यक्ति को पकड़ लेते हैं, तो यह पता लगाना मुश्किल नहीं होगा कि असल में इसके पीछे कौन है।’

लेकिन वो आदमी खतरनाक हो सकता है। जब वो विक्टोरिया मेमोरियल पहुंचेगा और उसे पता चलेगा कि मैंने पत्थर को उस पौधे के नीचे नहीं रखा है, तो भगवान जाने वो क्या करेगा। क्या आप सोमवार से पहले पता लगाने के लिए कुछ नहीं कर सकते कि वो कौन है? मतलब, वो नोट और फोन कॉल तो है ही। क्या इतना काफी नहीं है?
फेलुदा उठकर इधर-उधर टहलने लगा। उसने कहा, ‘देखिए, श्रीमान चौधरी, इस आदमी ने कहा है कि अगर आप किसी निजी जासूस के पास गए तो आप मुसीबत में पड़ जाएँगे। अब, चाहे मैं कोई कार्रवाई करूँ या न करूँ, आप शायद पहले से ही मुसीबत में हों। इसलिए, वास्तव में, आपको ही तय करना होगा कि आप चाहते हैं कि मैं आगे बढ़ूँ या नहीं।’ श्रीमान चौधरी ने रूमाल से अपना चेहरा पोंछा, हालाँकि कमरे के अंदर काफी ठंड थी। ‘आप और आपका यह युवा चचेरा भाई... खैर, आप जासूस नहीं लगते। यह एक फायदा है। मेरा मतलब है, लोगों ने आपका नाम तो सुना होगा, लेकिन कितने लोग जानते हैं कि आप कैसे दिखते हैं? नहीं, मुझे नहीं लगता कि आपको उस जासूस के रूप में पहचाना जा सकेगा जिसे मैंने नियुक्त किया है। अगर आप अब भी यह काम करने के लिए तैयार हैं, तो मैं आपको आपकी फीस ज़रूर दूँगा।’
'धन्यवाद। लेकिन जाने से पहले, मैं वह पत्थर देखना चाहूंगा।'
'ज़रूर।'
हम सब उठ गए। श्री चौधरी ने बताया कि पत्थर उनके शयनकक्ष की अलमारी में रखा है। हम उनके पीछे-पीछे ऊपर गए। संगमरमर की सीढ़ियाँ पहली मंजिल तक जाती थीं, जो एक लंबे, अंधेरे गलियारे के एक छोर पर जाकर खत्म होती थीं। गलियारे के दोनों ओर कमरे थे। मैंने उन्हें गिना तो नहीं, लेकिन अंदाजे से कम से कम दस कमरे थे। उनमें से कुछ बंद थे। आसपास कोई नहीं दिख रहा था। सन्नाटे में हल्की सी भी आवाज असामान्य रूप से तेज सुनाई दे रही थी। मुझे बेचैनी होने लगी।
श्री चौधरी का शयनकक्ष दाहिनी ओर का आखिरी कमरा था। जब हम गलियारे में लगभग आधे रास्ते तक पहुँच गए, तो अचानक मुझे एहसास हुआ कि एक कमरे का दरवाजा थोड़ा खुला हुआ है। उस छोटे से छेद से एक बहुत बूढ़ा आदमी झाँक रहा था, गर्दन झुकाकर हमें देख रहा था। उम्र के कारण उसकी आँखें धुंधली हो गई थीं, लेकिन जैसे ही हम उसके करीब पहुँचे, उसकी आँखों के भाव देखकर मैं दंग

रह गया। बूढ़ा आदमी गुस्से से घूर रहा था। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। अब मैं सचमुच डर गया था।
‘ये मेरे पिता हैं,’ श्री चौधरी ने जल्दी से समझाते हुए आगे बढ़ते हुए कहा। ‘मैंने आपको बताया था ना कि वे बुढ़ापे के कारण कमजोर हो गए हैं? वे दरवाजों और खिड़कियों से झांकते रहते हैं। और उन्हें लगता है कि सब उनकी उपेक्षा करते हैं। इसीलिए वे ज्यादातर समय इतने चिड़चिड़े दिखते हैं। लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि उनकी देखभाल के लिए हर संभव प्रयास किया जाता है।’
बेडरूम में एक बड़ा, ऊंचा पलंग था और उसके बगल में अलमारी थी। श्री चौधरी ने उसे खोला, एक दराज खींची और उसमें से एक छोटा, नीले मखमल का डिब्बा निकाला। उन्होंने हमें बताया, 'मैंने यह डिब्बा एक जौहरी से सिर्फ इस पत्थर को रखने के लिए खरीदा था,' और फिर उन्होंने डिब्बा खोला। अंदर एक चमकता हुआ पत्थर था, जो लगभग लीची के आकार का था और हरे-नीले रंग की रोशनी बिखेर रहा था।
‘यह एक नीला बेरिल है। यह आमतौर पर ब्राजील में पाया जाता है। भारत में ऐसे रत्न बहुत कम ही होंगे, और निश्चित रूप से इतने बड़े आकार का तो कोई होगा ही नहीं। मुझे यह बात पक्के तौर पर पता है।’
फेलुदा ने पत्थर उठाया, उसे अपनी तर्जनी और अंगूठे के बीच पकड़ा और कुछ पल तक ध्यान से देखने के बाद उसे उसके मालिक को लौटा दिया। श्री चौधरी ने उसे वापस दराज में रख दिया, फिर अपनी जेब से बटुआ निकाला। उन्होंने पाँच नए दस-दस रुपये के नोट देते हुए कहा, 'यह अग्रिम भुगतान है। बाकी का भुगतान मैं इस मामले के निपटारे के बाद करूँगा। ठीक है?'
‘धन्यवाद,’ फेलुदा ने पैसे लेते हुए कहा। यह पहली बार था जब मैंने उसे अपनी सेवाओं के लिए भुगतान लेते हुए देखा।
‘मुझे वह पत्र चाहिए जो आपको भेजा गया था, और मैं आपके भतीजे से बात करना चाहता हूँ,’ फेलुदा ने सीढ़ियों से उतरते हुए कहा। जैसे ही हम आखिरी सीढ़ी पर पहुँचे, ड्राइंग रूम का फोन बजने लगा। श्री चौधरी जल्दी से फोन उठाने चले गए और हमें वहीं छोड़ दिया। ‘हैलो!’ हमने उन्हें कहते सुना। इसके बाद सन्नाटा छा गया।

कुछ सेकंड बाद जब हम ड्राइंग रूम में दाखिल हुए, तो श्री चौधरी ने रिसीवर वापस रख दिया और जल्दी से बैठ गए। उनका चेहरा पीला और डरा हुआ लग रहा था। 'यह... यह वही आवाज थी!' उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा।
‘उसमें क्या लिखा था?’
'उसने वही धमकी दोहराई, लेकिन इस बार यह अधिक विशिष्ट थी। उसने वास्तव में कहा कि वह वह चीज चाहता है जो मुझे एक परित्यक्त मंदिर में मिली थी।'
क्या उसने कुछ और कहा?
'नहीं।'
‘और आपने उस आवाज को नहीं पहचाना?’
नहीं, मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि वह बहुत ही अप्रिय आवाज़ थी। शायद आप इस मामले को लेने के बारे में दोबारा सोचना चाहेंगे?
फेलुदा मुस्कुराया। उसने जवाब दिया, 'मैंने सोचना समाप्त कर दिया है।' इसके तुरंत बाद हम ड्राइंग रूम से निकलकर श्री चौधरी के भतीजे अबनीश बाबू के कमरे की ओर चल दिए। हमने देखा कि वह मेज पर रखी किसी चीज को आवर्धक लेंस से बारीकी से देख रहे थे। जैसे ही हम कमरे में दाखिल हुए, उन्होंने झट से एक हाथ से उस वस्तु को ढक लिया और खड़े हो गए।
‘अंदर आइए, अंदर आइए!’ उसने आमंत्रित किया।
‘मैं देख सकता हूँ कि आपको डाक टिकटों में बहुत रुचि है,’ फेलुदा ने कहा। अबनीश बाबू की आँखें चमक उठीं। ‘जी हाँ, साहब। यही मेरी ज़िंदगी की एकमात्र रुचि है, मेरा एकमात्र जुनून है। मैं बस डाक टिकटों के बारे में ही सोचता रहता हूँ!’
क्या आप किसी एक देश में विशेषज्ञता रखते हैं, या आप पूरी दुनिया से डाक टिकटें एकत्र करते हैं?
'मैं उन्हें जहां कहीं भी मिलते थे, वहां से इकट्ठा कर लेता था, लेकिन हाल ही में मैंने भारत पर ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया है। मुझे उन्हें पाने के लिए सैकड़ों पुराने पत्रों को छानना पड़ा।'
‘क्या आपको कुछ अच्छा मिला?’
‘अच्छा? अच्छा?’ अबनीश बाबू बेहद खुश नज़र आने लगे। ‘क्या आपको इस विषय में रुचि है? अगर मैं समझाऊं तो क्या आपको समझ आएगा?’
‘मुझे बता दीजिए,’ फेलुदा मुस्कुराया। ‘मैं खुद को विशेषज्ञ तो नहीं मानता, लेकिन बाकी लोगों की तरह मुझे भी एक समय डाक टिकटें इकट्ठा करने का शौक था

और मैं मशहूर डाक टिकटें हासिल करने का सपना देखता था। जैसे, केप ऑफ गुड होप का एक पैसे का डाक टिकट, मॉरीशस का दो पैसे का डाक टिकट और ब्रिटिश गुयाना के 1856 के डाक टिकट। दस साल पहले इनकी कीमत लगभग एक लाख रुपये थी। अब तो इनकी कीमत कहीं ज्यादा होगी।’
अबनीश बाबू और भी उत्साहित हो गए। चमकती आँखों से उन्होंने कहा, “अच्छा, तो फिर, मुझे यकीन है कि आप समझ जाएँगे। मैं आपको कुछ दिखाना चाहता हूँ। ये रहा।” उन्होंने मेज से हाथ हटाया और वह चीज़ दिखाई जिसे वे छिपा रहे थे।
पता चला कि वह एक बहुत पुराना डाक टिकट था, जो एक लिफाफे से अलग हो गया था।
उसका मूल रंग हरा रहा होगा, लेकिन वह लगभग पूरी तरह से फीका पड़ गया था।
अबनीश बाबू ने उसे फेलुदा को दे दिया।
‘क्या? आप क्या देख सकते हैं?’ उसने उत्सुकता से पूछा।
'एक भारतीय डाक टिकट, लगभग सौ साल पुराना। इस पर महारानी विक्टोरिया की तस्वीर है। मैंने ऐसे डाक टिकट पहले भी देखे हैं।'
‘क्या आपने देखा है? हां, मुझे यकीन है कि आपने देखा होगा। तो अब, इस आवर्धक लेंस से एक बार फिर देख लीजिए।’
फेलुदा ने पेश किए गए गिलास से झाँका।
‘अब आपको क्या दिख रहा है?’ अबनीश बाबू ने चिंता से पूछा। ‘इसमें छपाई की गलती है।’
'बिल्कुल!'
‘शब्द स्पष्ट रूप से POSTAGE है, लेकिन “G” के स्थान पर उन्होंने “C” छाप दिया है।’
अबनीश बाबू ने स्टाम्प वापस ले लिया। 'क्या आपको पता है कि उस गलती की वजह से उस स्टाम्प की कीमत कितनी हो गई है?'
'कितना?'
'बीस हजार।'
'क्या!'
जी हाँ, महोदय। मैंने ब्रिटेन के अधिकारियों से इसकी पुष्टि कर ली है। सूची में इस त्रुटि का उल्लेख नहीं है। इसे खोजने वाला मैं पहला व्यक्ति था।
‘बधाई हो! लेकिन... उह... मैं आपसे कुछ और बात करना चाहता था, अबनीश बाबू।
मेरा मतलब है, डाक टिकटों के अलावा कुछ और।’

'हाँ?'
‘तुम्हारे चाचा कैलाश चौधरी के पास एक अनमोल रत्न है। क्या तुम्हें इस बात की जानकारी है?’
अबनीश बाबू को जवाब देने से पहले कुछ पल सोचना पड़ा, फिर उन्होंने कहा, 'ओह जी हाँ, जी हाँ। मैंने इसके बारे में सुना था। मुझे इसके मूल्य के बारे में कुछ नहीं पता, लेकिन इसे 'भाग्यशाली' माना जाता है, ऐसा मेरे चाचा ने कहा था। कृपया मुझे क्षमा करें, श्रीमान मित्तर, लेकिन आजकल मैं अपने डाक टिकटों के अलावा किसी और चीज़ पर ध्यान नहीं दे पा रहा हूँ।'
‘आप इस घर में कब से रह रहे हैं?’
'पिछले पांच सालों से। मेरे पिता की मृत्यु के तुरंत बाद मैं यहां आ गया था।'
क्या आपके अपने चाचा के साथ अच्छे संबंध हैं?
‘आप किसकी बात कर रहे हैं? मेरे दो चाचा हैं। उनमें से एक विदेश में रहते हैं।’
‘ओह? मैं कैलाश बाबू की बात कर रहा था।’
‘मैं समझ गया। वैसे तो वह बहुत अच्छे आदमी हैं, लेकिन...’
'क्या पर?'
अबनीश बाबू ने माथे पर शिकन डाली। 'पिछले कुछ दिनों से... वो कुछ अलग सा व्यवहार कर रहा है।'
‘आपका क्या मतलब है? आपने इसे पहली बार कब देखा?’
‘दो-तीन दिन पहले। मैंने उसे इस डाक टिकट के बारे में बताया था, लेकिन उसने बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। आम तौर पर, वह बहुत रुचि लेता है। इसके अलावा, उसकी कुछ पुरानी आदतें बदलती हुई प्रतीत हो रही हैं।’
'कैसे?'
‘वह नाश्ते से पहले हर सुबह बगीचे में टहलने जाया करता था। पिछले कुछ दिनों से उसने ऐसा नहीं किया है। दरअसल, वह काफी देर से उठता है। शायद उसे अच्छी नींद नहीं आ रही है।’
‘क्या आपके पास ऐसा कहने का कोई विशेष कारण है?’
'हां। मेरा शयनकक्ष भूतल पर है। मेरे ठीक ऊपर वाला कमरा मेरे चाचा का है। मैंने उन्हें आधी रात को इधर-उधर टहलते सुना है। मैंने उनकी आवाज भी सुनी है। मुझे लगता है कि उनका किसी से झगड़ा हो रहा था।'

‘बहस? किसके साथ?’
'शायद दादाजी होंगे। और कौन हो सकता है? मैंने तो सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे जाते कदमों की आवाज भी सुनी है। एक रात मैं उठा और यह देखने के लिए सीढ़ियों के नीचे गया कि क्या हो रहा है। मैंने अपने चाचा को छत से नीचे आते देखा, उनके हाथ में बंदूक थी।'
‘उस समय क्या समय रहा होगा?’
'लगभग सुबह के दो बजे के आसपास, मुझे लगता है।'
‘छत पर क्या है?’
'वहां सिर्फ एक छोटी सी अटारी थी। वह पुराने कागजातों और चिट्ठियों से भरी हुई थी, लेकिन मैंने उन्हें एक महीने पहले वहां से हटा दिया था।'
फेलुदा उठ खड़ा हुआ। मैं समझ गया कि उसके पास पूछने के लिए और कोई सवाल नहीं थे। अबनीश बाबू ने कहा, 'आपने मुझसे ये सब क्यों पूछा?'
फेलुदा मुस्कुराया। ‘तुम्हारे चाचा इस समय बहुत परेशान हैं। लेकिन तुम्हें चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। सब कुछ ठीक हो जाने पर मैं आकर तुम्हारे डाक टिकट देख लूंगा। ठीक है?’
हम श्री चौधरी को अलविदा कहने के लिए ड्राइंग रूम में वापस आ गए।
‘ज़ाहिर है, मैं किसी बात की गारंटी नहीं दे सकता, लेकिन मैं एक बात कहना चाहता हूँ,’ फेलुदा ने उससे कहा। ‘कृपया चिंता करना छोड़ दें और सब कुछ मुझ पर छोड़ दें। रात को सोने की कोशिश करें। ज़रूरत पड़ने पर नींद की गोली ले लें; और कृपया छत पर न जाएँ। आपकी गली के घर इतने पास-पास हैं कि हमें क्या पता, आपका दुश्मन आप पर नज़र रखने के लिए बगल वाले घर की छत पर छिपा हो। अगर ऐसा है, तो वह कूदकर आप पर हमला कर सकता है।’
'क्या आपको ऐसा लगता है? मैं एक रात छत पर गया था, लेकिन अपने साथ बंदूक ले गया था। मैंने एक अजीब सी आवाज सुनी थी, आप जानते हैं। लेकिन मुझे कोई दिखाई नहीं दिया।'
‘मुझे उम्मीद है कि आप हमेशा अपनी बंदूक तैयार रखते हैं?’
'हाँ, बिल्कुल। लेकिन मानसिक तनाव और चिंता अक्सर किसी के लक्ष्य को प्रभावित कर सकती है। अगर यह मामला जल्द ही नहीं सुलझा, तो भगवान ही जाने मेरे लक्ष्य का क्या होगा।'

अगला दिन रविवार था। फेलुदा ने अपना अधिकांश समय अपने कमरे में टहलते हुए बिताया। लगभग चार बजे, मैंने उसे अपने आरामदायक कुर्ते-पायजामे से पतलून और कमीज में बदलते हुए देखा।
मैंने पूछा, ‘क्या तुम बाहर जा रहे हो?’
'हां। मुझे लगा कि विक्टोरिया मेमोरियल में लगे लिली के फूलों को देखना अच्छा रहेगा। अगर आप चाहें तो मेरे साथ आ सकते हैं।'
हमने ट्राम ली और लोअर सर्कुलर रोड के चौराहे पर उतर गए। फिर हम धीरे-धीरे स्मारक के दक्षिणी द्वार की ओर चले। यहाँ ज़्यादा लोग नहीं आते थे। खासकर शाम के समय, ज़्यादातर लोग इमारत के सामने, उत्तरी द्वार की ओर जाते थे। हम फाटक से अंदर घुस गए। बाईं ओर बीस गज की दूरी पर लिली की कतारें थीं। नीले बेरिल के फूल को अगले दिन इन्हीं कतारों के नीचे रखा जाना था। इन फूलों को देखकर—हालाँकि ये बेहद खूबसूरत थे—अचानक मुझे डर लगने लगा। 'क्या आपके पिता के पास दूरबीन नहीं थी, जिसे वे दार्जिलिंग ले गए थे?' फेलुदा ने पूछा।
'हां, उनके पास अभी भी वे चीजें हैं।'
'अच्छा।'
हमने इमारत के चारों ओर फैले खुले मैदान में करीब पंद्रह मिनट तक सैर की। फिर हमने टैक्सी लेकर लाइटहाउस सिनेमाघर गए। मैं फेलुदा के साथ उतरा और काफी हैरान था। उसे अचानक फिल्म देखने की इच्छा क्यों हुई? लेकिन नहीं, असल में उसकी दिलचस्पी सिनेमाघर के सामने वाली किताबों की दुकान में थी। कुछ और किताबें पलटने के बाद उसने एक मोटी सी डाक टिकट सूची उठाई और उसके पन्ने पलटने लगा। मैंने उसके कंधे के ऊपर से झाँककर फुसफुसाते हुए कहा, 'क्या तुम्हें अबनीश बाबू पर शक है?'
'खैर, अगर उन्हें डाक टिकटों से इतना लगाव है, तो मुझे यकीन है कि उन्हें कुछ नकद पैसे मिलने में कोई आपत्ति नहीं होगी।'
लेकिन... याद है वो फोन कॉल जो हमें तब आया था जब हम अभी भी मिस्टर चौधरी के घर पर थे? अबनीश बाबू तो आ ही नहीं सकते थे, पक्का?
नहीं। वह अकबर बादशाह ने बनवाया था। या फिर शायद महारानी विक्टोरिया ने बनवाया हो।
इससे मुझे एहसास हुआ कि फेलुदा अब मेरे सवालों के सीधे जवाब देने के मूड में नहीं था, इसलिए मैं चुप हो गया।

जब हम घर लौटे तब तक आठ बज चुके थे। फेलुदा ने अपनी जैकेट उतारकर बिस्तर पर फेंक दी। उन्होंने कहा, 'मैं जल्दी से नहा लेता हूँ, तब तक डायरेक्टरी में कैलाश चौधरी का टेलीफोन नंबर ढूंढ लो।'
मैंने निर्देशिका को गोद में लेकर बैठ गया, लेकिन एक भी पन्ना पलटने से पहले ही फोन बजने लगा। मैं काफी घबरा गया और मैंने फोन उठा लिया। 'नमस्ते।'
'आप कोन बात कर रहे है?'
कितनी अजीब आवाज़ थी! मैंने इसे पहले कभी नहीं सुना था। मैंने पूछा, 'आप किससे बात करना चाहते हैं?' जवाब उसी कठोर आवाज़ में आया: 'तुम्हारे जैसे नौजवान को जासूस के साथ घूमने की क्या ज़रूरत है? क्या तुम्हें अपनी जान का डर नहीं है?'
मैंने फेलुदा को आवाज़ देने की कोशिश की, लेकिन बोल नहीं पाई। मेरे हाथ कांपने लगे थे। इससे पहले कि मैं रिसीवर वापस रख पाती, उस आदमी ने अपनी बात पूरी कर दी, 'मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ—तुम दोनों को। रुक जाओ। वरना परिणाम... भयानक होंगे।'
मैं अपनी कुर्सी पर बिल्कुल स्थिर बैठा रहा, हिलने-डुलने में असमर्थ। कुछ मिनट बाद फेलुदा कमरे में आया और बोला, 'अरे, क्या बात है? तुम उस कोने में इतनी खामोशी से क्यों बैठे हो? अभी किसने घंटी बजाई थी?'
मैंने बड़ी मुश्किल से अपनी बात कही और उसे सब कुछ बताया। उसका चेहरा गंभीर हो गया। फिर उसने मेरे कंधे पर थपथपाते हुए कहा, 'चिंता मत करो। पुलिस को सूचना दे दी गई है। सादे कपड़ों में कुछ लोग वहाँ होंगे। हमें कल विक्टोरिया मेमोरियल पहुँच जाना चाहिए।'
उस रात मुझे नींद नहीं आई। सिर्फ़ फ़ोन की कॉल ही नहीं, और भी कई बातें थीं जिनकी वजह से मैं जागता रहा। मैं श्री चौधरी के घर और उसमें देखी हर चीज़ के बारे में सोचता रहा: लोहे की रेलिंग वाली सीढ़ियाँ जो छत तक जाती थीं; पहली मंज़िल पर संगमरमर के फ़र्श वाला लंबा, अँधेरा बरामदा, और आधे खुले दरवाज़े से झाँकते बूढ़े श्री चौधरी। वो अपने बेटे को ऐसे क्यों घूर रहे थे? और कैलाश बाबू अपनी बंदूक लेकर छत पर क्यों गए थे? उन्होंने कैसी आवाज़ सुनी होगी?

फेलुदा ने बत्ती बंद करने से पहले बस एक ही बात कही, 'क्या तुम्हें पता है, टॉपशे, कि जो लोग गुमनाम संदेश भेजते हैं और फोन पर दूसरों को धमकाते हैं, वे असल में कायर होते हैं?' शायद इसी बात की वजह से मुझे आखिरकार नींद आ गई। अगली सुबह फेलुदा ने कैलाश चौधरी को फोन किया और उनसे कहा कि वे आराम करें और घर पर ही रहें। फेलुदा खुद सब कुछ संभाल लेंगे।
मैंने उनसे पूछा, 'आप विक्टोरिया मेमोरियल कब जाएंगे?'
'कल के ठीक उसी समय। वैसे, क्या आपके पास स्केच पैड, पेन और ड्राइंग का अन्य सामान है?'
मैं पूरी तरह से अचंभित रह गया। 'क्यों? मुझे इनकी क्या ज़रूरत है?'
कोई बात नहीं। क्या आपके पास वे हैं या नहीं?
'जी हां, बिल्कुल। मेरे पास मेरी स्कूल की ड्राइंग की किताब है।'
‘अच्छा। इसे अपने साथ ले जाओ। मैं चाहूँगा कि तुम लिली के फूलों से थोड़ी दूरी पर खड़े होकर कुछ भी बनाओ—पेड़, इमारत, फूल, कुछ भी। मैं तुम्हारा चित्रकारी शिक्षक बनूँगा।’
फेलुदा बहुत अच्छी चित्रकारी कर सकता था। दरअसल, उसे एक बार देखने के बाद ही मुझे पता चल गया था कि वह किसी भी व्यक्ति का ठीक-ठाक चित्र बना सकता है। चित्रकारी शिक्षक की भूमिका उसके लिए एकदम उपयुक्त रहेगी।
सर्दियों में दिन छोटे होते हैं, इसलिए हम विक्टोरिया मेमोरियल चार बजे से कुछ मिनट पहले पहुँच गए। आज तो और भी कम लोग थे। तीन नेपाली आयाएँ अपने बच्चों को प्रैम में बिठाकर इधर-उधर घूम रही थीं। एक भारतीय परिवार—शायद मारवाड़ी—और कुछ बुज़ुर्ग भी टहल रहे थे, लेकिन आस-पास कोई और नज़र नहीं आ रहा था। गेट से कुछ दूरी पर, कंपाउंड की दीवार के पास, एक पेड़ के नीचे दो आदमी खड़े थे। फेलुदा ने उन पर नज़र डाली और फिर मुझे धीरे से कोहनी मारी। इसका मतलब था कि वे दोनों पुलिस में उसके दोस्त थे। वे सादे कपड़ों में थे, लेकिन शायद हथियारबंद थे। फेलुदा पुलिस में काफ़ी लोगों को जानता था। मैं लिली की पंक्तियों के सामने बैठ गया और रेखाचित्र बनाने लगा, हालाँकि मेरा ध्यान अपने काम पर केंद्रित नहीं हो पा रहा था। फेलुदा अपने हाथों में दूरबीन लिए इधर-उधर घूम रहा था, कभी-कभी मेरी पैड छीनकर सुधार करता और गलतियाँ करने पर मुझे डांटता। फिर वह दूर चला जाता और दूरबीन से देखने लगता।

सूरज डूबने ही वाला था। पास के एक चर्च की घड़ी में पाँच बज गए। अब ठंड बढ़ने वाली थी। मारवाड़ी लोग एक बड़ी गाड़ी में निकल पड़े। आयाएँ भी अपने बच्चों की घुड़दौड़ गेट की ओर बढ़ाने लगीं। लोअर सर्कुलर रोड पर यातायात बढ़ गया था। शाम की भीड़ में फँसी गाड़ियों और बसों के लगातार हॉर्न सुनाई दे रहे थे। फेलूदा मेरे पास लौटा और घास पर बैठने ही वाला था कि गेट के पास किसी चीज़ ने उसका ध्यान खींचा। मैंने भी उसकी नज़र का पीछा किया, लेकिन मुझे वहाँ एक भूरे रंग की शॉल ओढ़े हुए आदमी के अलावा कोई नहीं दिखा, जो गेट से काफी दूर सड़क के किनारे खड़ा था। फेलूदा ने दूरबीन से देखा, एक नज़र डाली और फिर मुझे दे दी। 'देख लो,' उसने धीरे से कहा।
‘आपका मतलब उस आदमी से है जो वहाँ खड़ा है? जिसने शॉल ओढ़ी हुई है?’
‘हम्म।’
दूरबीन से देखते ही वह व्यक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा, मानो वह कुछ ही फीट की दूरी पर खड़ा हो। मैं अनजाने में ही चौंक गया। 'अरे... ये तो स्वयं कैलाश चौधरी हैं!'
‘ठीक है। शायद वह हमें ढूंढने आया हो। चलो चलते हैं।’
लेकिन जैसे ही हम चलने लगे, वह आदमी जाने लगा। जब हम फाटक से बाहर निकले, तब तक वह जा चुका था। 'चलो उसके घर चलते हैं,' फेलुदा ने सुझाव दिया, 'मुझे नहीं लगता कि उसने हमें देखा होगा। वह शायद चिंतित होकर वापस चला गया होगा।'
इस समय टैक्सी मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी, इसलिए हम ट्राम पकड़ने की उम्मीद में चौरंगी की ओर पैदल चलने लगे। सड़क पर गाड़ियों की लंबी कतारें लगी हुई थीं। थोड़ी देर में हम कलकत्ता क्लब के बाहर पहुँच गए। यहाँ जो कुछ हुआ वह इतना अप्रत्याशित और भयावह था कि लिखते समय भी मुझे पसीना आ रहा है। मैं फेलुदा के साथ चल रहा था कि अचानक बिना किसी चेतावनी के उसने मुझे सड़क से खींच लिया। फिर वह खुद भी एक तरफ कूद गया, क्योंकि एक तेज़ रफ्तार कार बाल-बाल उससे टकराने से बच गई।
‘अरे बाप रे!’ फेलुदा ने हैरानी से कहा। ‘मैं उस कार का नंबर भूल गया।’
अब कुछ भी करने का समय नहीं था। भगवान ही जाने वो कार कहाँ से आई थी, या उसके ड्राइवर को इस ट्रैफिक में इतनी तेज़ गाड़ी चलाने की क्या सूझी थी। लेकिन वो मेरी नज़रों से बिल्कुल ओझल हो गई थी। मैं फुटपाथ पर गिर पड़ा था, मेरा स्केच पैड और पेंसिलें अलग-अलग दिशाओं में बिखर गई थीं। मैंने उन्हें ढूंढने की ज़हमत उठाए बिना ही खुद को उठाया। अगर फेलुदा ने उस कार को आते

हुए न देखा होता और तुरंत कुछ न किया होता, तो इसमें कोई शक नहीं था कि हम दोनों उसके पहियों के नीचे कुचल जाते।
ट्राम में फेलुदा ने एक शब्द भी नहीं बोला। वह बस गंभीर भाव से बैठा रहा। श्री चौधरी के घर पहुँचते ही उसने सबसे पहले कहा: 'क्या आपने हमें नहीं देखा?'
श्री चौधरी ड्राइंग रूम में सोफे पर बैठे थे। हमारे अचानक आने से वे काफी हैरान लग रहे थे। ‘आपको देखा?’ वे हिचकिचाए। ‘कहाँ? आप किस बारे में बात कर रहे हैं?’
'आपका मतलब है कि आप विक्टोरिया मेमोरियल नहीं गए थे?'
‘कौन, मैं? हे भगवान! नहीं! मैं तो घर से बाहर ही नहीं निकली। दरअसल, मैंने पूरी दोपहर ऊपर अपने बेडरूम में चिंता से बेहाल होकर बिताई। मैं अभी-अभी नीचे आई हूँ।’
'तो फिर, श्री चौधरी, क्या आपका कोई जुड़वां भाई या बहन है?'
श्री चौधरी का मुंह खुला का खुला रह गया। 'हे भगवान, क्या मैंने आपको उस दिन नहीं बताया था?'
'मुझे क्या बताओ?'
‘केदार के बारे में? वो मेरा जुड़वा भाई है।’
फेलुदा झट से बैठ गया। श्री चौधरी के चेहरे का रंग मानो उड़ गया था। ‘क्यों, क्या तुमने... क्या तुमने केदार को देखा? क्या वह वहाँ था?’ उसने चिंता से पूछा।
'हां। यह कोई और हो ही नहीं सकता था।'
'हे भगवान!'
‘तुम ऐसा क्यों कह रहे हो? क्या तुम्हारे जुड़वां भाई/बहन का उस पत्थर पर कोई अधिकार है?’
श्री चौधरी अचानक सुस्त पड़ गए, मानो उनके शरीर की सारी ऊर्जा समाप्त हो गई हो। वे सोफे के आर्मरेस्ट से टिक गए और आह भरी। धीरे से बोले, 'हाँ, हाँ, वह करता है। देखिए, केदार ने ही सबसे पहले पत्थर को खोजा था। मैंने मंदिर देखा था, लेकिन केदार ने ही मूर्ति पर जड़े पत्थर को देखा था।'
‘आगे क्या हुआ?’
“खैर, मैंने उससे ले लिया। मतलब, मैंने उसे इतना परेशान किया कि आखिरकार वो तंग आकर मुझे दे ही गया। एक तरह से ये सही ही था, क्योंकि केदार उसे बेचकर

पैसे बर्बाद कर देता। जब मुझे पता चला कि पत्थर कितना कीमती है, तो मैंने केदार को नहीं बताया। सच कहूँ तो, जब वो देश छोड़कर गया, तो मुझे काफी राहत मिली। लेकिन अब... शायद वो वापस आ गया है क्योंकि उसे विदेश में काम नहीं मिला। हो सकता है वो पत्थर बेचकर अपना खुद का कारोबार शुरू करना चाहता हो।”
फेलुदा कुछ पल चुप रहा। फिर उसने कहा, 'क्या तुम्हें कोई अंदाजा है कि वह आगे क्या कर सकता है?'
नहीं। लेकिन मुझे इतना पता है: वह यहाँ आकर मुझसे मिलेगा। मैंने घर से बाहर जाना बंद कर दिया है, और मैंने पत्थर को वहाँ नहीं रखा जहाँ मुझे रखने के लिए कहा गया था। अब उसके लिए कोई और रास्ता नहीं बचा है। अगर उसे पत्थर चाहिए, तो उसे यहाँ आना ही होगा।
‘क्या आप चाहेंगे कि मैं यहीं रुकूं? शायद मैं आपकी मदद कर सकूं।’
नहीं, धन्यवाद। इसकी कोई आवश्यकता नहीं होगी। मैंने अब अपना मन बना लिया है, श्रीमान मित्तर। अगर केदार को पत्थर चाहिए, तो वह ले सकता है। मैं उसे सीधे सौंप दूँगा। बस उसके आने का इंतज़ार करना है। आपने पहले ही बहुत कुछ किया है, अपनी जान जोखिम में डाली है। मैं आपका बहुत आभारी हूँ। अगर आप मुझे बिल भेज दें, तो मैं आपको चेक दे दूँगा।
'धन्यवाद। खतरे के बारे में आपकी बात सही है। हम बाल-बाल कार से कुचले जाने से बचे।'
मुझे कुछ देर पहले ही एहसास हो गया था कि मेरी एक कोहनी पर काफी खरोंच आ गई है, लेकिन मैं उसे छुपाने की कोशिश कर रहा था। जब हम जाने के लिए उठे, तो फेलुदा की नज़र उस पर पड़ी। ‘अरे, तुम्हें चोट लगी है, है ना?’ वह चिल्लाया, ‘तुम्हारी कोहनी से खून बह रहा है! अगर आपको कोई आपत्ति न हो, श्री चौधरी, तो मुझे लगता है कि तपेश को घाव पर डेटॉल लगा देना चाहिए, वरना उसमें संक्रमण हो सकता है। क्या आप—?’
‘जी हां,’ श्री चौधरी झटपट उठ खड़े हुए। ‘आप बिलकुल सही कह रहे हैं। सड़कें बहुत गंदी हैं, है ना? रुकिए, मैं अबानिश से पूछ लेता हूं।’
हम श्री चौधरी के पीछे-पीछे अबनीश बाबू के कमरे में गए। श्री चौधरी ने पूछा, 'अबनीश, क्या घर में डेटॉल है?' अबनीश बाबू ने उन्हें हैरानी भरी नजरों से देखा।

‘अरे, मैंने तो तुम्हें एक हफ्ते पहले ही नई बोतल लाते देखा था!’ उसने कहा। ‘कहीं ये खत्म तो नहीं हो गई?’
श्री चौधरी ने शर्मिंदा होकर हंसते हुए कहा, 'हां, बिल्कुल। मैं पूरी तरह भूल गया था। मैं पागल हो रहा हूं।'
पांच मिनट बाद, मेरी कोहनी पर डेटॉल अच्छी तरह से लगा हुआ था, और हम घर से बाहर निकले। घर जाने के लिए ट्राम पकड़ने के लिए मुख्य सड़क की ओर जाने के बजाय, फेलुदा विपरीत दिशा में चलने लगा। इससे पहले कि मैं उससे कुछ पूछ पाता, उसने कहा, 'मेरा दोस्त गणपति पास में ही रहता है। उसने मुझे टेस्ट मैच का टिकट दिलाने का वादा किया है। मैं उससे मिलना चाहता हूँ।'
गणपति चटर्जी का घर मेरे घर से सिर्फ दो घर दूर था। मैंने उनके बारे में सुना तो था, लेकिन उनसे पहले कभी नहीं मिला था। जब फेलुदा ने दरवाजा खटखटाया तो उन्होंने ही दरवाजा खोला: एक थोड़े मोटे-ताज़े आदमी, जिन्होंने पुलओवर और पतलून पहनी हुई थी।
‘फेलू! मेरे दोस्त, तुम यहाँ क्यों आए हो?’
‘आप अनुमान लगा सकते हैं ना?’
'ओह, मैं समझ गया। आपको मुझे याद दिलाने के लिए व्यक्तिगत रूप से आने की ज़रूरत नहीं थी। मैं भूला नहीं था। मैंने वादा किया था, है ना?'
'हां, मुझे पता है। लेकिन मैं यहाँ सिर्फ इसी वजह से नहीं हूँ। मेरा मानना है कि आपकी छत से उत्तरी कोलकाता का शानदार नज़ारा दिखता है।'
अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं इसे देखना चाहूंगा। फिल्म कंपनी में मेरे एक परिचित ने मुझे पता लगाने के लिए कहा था। वे कलकत्ता पर एक फिल्म बना रहे हैं।'
‘ठीक है, कोई बात नहीं। वह सीढ़ी सीधे छत तक जाती है। मैं हमारे लिए एक कप चाय लाने का इंतजाम करता हूँ।’
घर चार मंज़िला था। हम सबसे ऊपर पहुँचे और देखा कि दाईं ओर श्री चौधरी का घर बहुत ही सुंदर दिख रहा था। पूरा घर—बगीचे से लेकर छत तक—साफ़ नज़र आ रहा था। पहली मंज़िल के एक कमरे में बत्ती जल रही थी और एक आदमी उसमें इधर-उधर घूम रहा था। वह कैलाश चौधरी के पिता थे। मुझे छत पर अटारी भी दिखाई दे रही थी। कम से कम उसकी खिड़की तो दिख ही रही थी; उसका दरवाज़ा शायद दूसरी तरफ़ था, जो दिखाई नहीं दे रहा था।

दूसरी मंजिल पर एक और बत्ती जल उठी। यह सीढ़ियों की बत्ती थी। फेलुदा ने फिर से दूरबीन निकाली और उसे अपनी आँखों के सामने लगाया। एक आदमी सीढ़ियाँ चढ़ रहा था। कौन था वो? कैलाश चौधरी। इतनी दूरी से भी मैं उनका लाल रेशमी गाउन पहचान गया। कुछ पलों के लिए वो नज़र से ओझल हो गए, फिर अचानक अपने घर की छत पर दिखाई दिए। फेलुदा और मैं तुरंत झुक गए और गणपति चटर्जी की छत के चारों ओर बनी दीवार के पीछे छिप गए, और सावधानी से उसके किनारे से झाँकने लगे।
श्री चौधरी ने इधर-उधर दो-तीन बार नज़र डाली, फिर अटारी के दूसरी तरफ चले गए, शायद उस दरवाजे से अंदर जाने के लिए जो हमें दिखाई नहीं दे रहा था। एक पल बाद अटारी की बत्ती जल उठी। श्री चौधरी अब अटारी की खिड़की के पास खड़े थे, उनकी पीठ हमारी तरफ थी। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। श्री चौधरी कुछ पल तक स्थिर खड़े रहे, फिर नीचे झुके, शायद ज़मीन पर बैठ गए। थोड़ी देर बाद, वे उठे, बत्ती बंद की और एक बार फिर सीढ़ियों से नीचे चले गए।
फेलुदा ने दूरबीन एक तरफ रख दी और सिर्फ एक ही बात कही: 'कुछ गड़बड़ है। बहुत गड़बड़ है।'
वापसी के रास्ते में उन्होंने मुझसे बात नहीं की। जब वे ऐसे मूड में होते हैं, तो मैं उन्हें परेशान करना पसंद नहीं करती। आम तौर पर, अगर वे किसी बात से परेशान होते हैं, तो अपने कमरे में इधर-उधर घूमने लगते हैं। लेकिन आज मैंने उन्हें अपने बिस्तर पर लेटकर छत को घूरते हुए देखा। साढ़े नौ बजे वे उठे और अपनी नीली नोटबुक में कुछ लिखने लगे। मुझे पता था कि वे अंग्रेजी में लिख रहे थे, ग्रीक अक्षरों का इस्तेमाल कर रहे थे। इसलिए मेरे लिए यह पढ़ना और समझना नामुमकिन था कि उन्होंने क्या लिखा था। बस एक बात साफ थी कि वे अभी भी मिस्टर चौधरी के केस पर काम कर रहे थे, हालांकि उनके मुवक्किल ने उनकी सेवाएं खत्म कर दी थीं।
मैं काफी देर तक जागता रहा, शायद इसीलिए अगली सुबह तक मैं नहीं जागा, जब तक कि फेलुदा ने मुझे जगाकर नहीं कहा, 'टोप्शे! जल्दी उठो, हमें तुरंत श्यामपुकुर जाना है।'
‘क्यों?’ मैं उठकर बैठ गया।
मैंने घर पर फोन किया, लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। जाहिर है कुछ गड़बड़ है।

दस मिनट में हम एक टैक्सी में सवार होकर श्यामपुकुर स्ट्रीट की ओर तेज़ी से बढ़ रहे थे। फेलुदा ने मुझे इसके अलावा कुछ भी बताने से इनकार कर दिया, सिवाय इसके कि, 'वह कितना चालाक आदमी है! काश मैंने थोड़ा पहले ही अंदाजा लगा लिया होता, तो यह सब न होता!'
जब हम श्री चौधरी के घर पहुँचे, तो फेलुदा ने देखा कि सामने का दरवाज़ा खुला है और वह घंटी बजाए बिना ही अंदर चला गया। हम गलियारा पार करके अबनीश बाबू के कमरे में पहुँचे। वहाँ का दृश्य देखकर मैं भयभीत हो गया। एक कुर्सी मेज के सामने उलटी पड़ी थी और उसके बगल में अबनीश बाबू लेटे हुए थे। उनके हाथ पीछे बंधे हुए थे और मुँह पर एक बड़ा रुमाल था। फेलुदा जल्दी से उनके ऊपर झुका और उनके हाथ खोल दिए।
‘ओह, ओह, भगवान का शुक्रिया! आपका धन्यवाद!’ उसने हांफते हुए कहा। ‘तुम्हारे साथ यह किसने किया?’
‘तुम्हें क्या लगता है?’ वह हांफते हुए उठ बैठा, ‘मेरे चाचा—कैलाश मामा ने ये किया है। मैंने तुमसे कहा था ना कि वो पागल हो रहे हैं? मैं आज सुबह जल्दी उठ गया और कुछ काम निपटाने का सोचा। बाहर अभी भी अंधेरा था, इसलिए मैंने लाइट जला दी। मेरे चाचा थोड़ी देर बाद अंदर आए। उन्होंने सबसे पहले लाइट बंद की। फिर उन्होंने मेरे सिर पर मारा और मैं तुरंत गिर गया। चारों तरफ अंधेरा छा गया। तुम्हारे आने से कुछ मिनट पहले मुझे होश आया, लेकिन मैं न हिल पा रहा था और न बोल पा रहा था। हे भगवान!’ वह दर्द से कराह उठा।
‘और कैलाश बाबू? वो कहाँ हैं?’ फेलुदा चिल्लाया।
'कोई अनुमान नहीं।'
फेलुदा मुड़ा और कमरे से बाहर कूद गया। मैं उसके एक पल बाद उसके पीछे गया। ड्राइंग रूम में कोई नहीं था। हम बिना देर किए तीन-तीन सीढ़ियाँ चढ़ते हुए ऊपर चले गए। कैलाश चौधरी का शयनकक्ष खाली था, हालाँकि बिस्तर देखकर ऐसा लग रहा था जैसे उस पर सोया गया हो। अलमारी खुली हुई थी। फेलुदा ने एक दराज खींची और उसमें से नीले मखमल का छोटा सा डिब्बा निकाला। जब उसने उसे खोला, तो मुझे यह देखकर थोड़ा आश्चर्य हुआ कि नीला बेरिल अभी भी उसमें सुरक्षित था।
तब तक अबनीश बाबू दयनीय हालत में दरवाजे पर पहुँच चुके थे। 'अटारी की चाबी किसके पास है?' फेलुदा ने पूछा। वह सवाल सुनकर स्तब्ध रह गए।
‘वो...वो मेरे चाचा के पास है!’ उसने कहा।

‘ठीक है, चलो ऊपर चलते हैं,’ फेलुदा ने घोषणा की और अबनीश बाबू को कंधों से पकड़कर अंधेरी सीढ़ियों से ऊपर खींच ले गया।
हम छत पर पहुँचे, तो देखा कि अटारी बंद थी। दरवाजे पर ताला लगा हुआ था। कोई और होता तो यह नजारा देखकर डर जाता। लेकिन फेलुदा एक कदम पीछे हटा, फिर दौड़कर आगे बढ़ा और पूरी ताकत से अपने कंधे से दरवाजे पर प्रहार किया। तीसरे प्रयास में दरवाजा जोर से खुला। दीवार से कुछ पुरानी जंग लगी कीलें भी निकल आईं। फेलुदा की शारीरिक शक्ति देखकर मैं भी हैरान रह गया।
अंदर का कमरा अंधेरा था। हम सावधानी से अंदर दाखिल हुए। कुछ सेकंड बाद, जब मेरी आँखें अंधेरे की आदी हुईं, तो मैंने एक कोने में एक और आकृति देखी, जो अबनीश बाबू की तरह बंधी और मुंह पर पट्टी लगी हुई थी। यह कौन था? कैलाश चौधरी? या केदार?
बिना कुछ कहे, फेलुदा ने उसे बंधनों से मुक्त कर दिया और उसे उठाकर शयनकक्ष में ले गया। उस व्यक्ति ने तभी कुछ कहा जब उसे आराम से उसके बिस्तर पर लिटा दिया गया था।
‘क्या तुम… वही… हो?’ उसने फेलुदा को घूरते हुए कमजोर आवाज में पूछा।
जी हाँ, महोदय। मैं प्रदोष मित्र हूँ, जासूस। मुझे लगता है कि आपने ही मुझे वह पत्र लिखा था, लेकिन ज़ाहिर है, मुझे आपसे मिलने का मौका कभी नहीं मिला। अबनीश बाबू, क्या आप उनके लिए थोड़ा गर्म दूध ला सकते हैं?
मैं उस आदमी को हैरानी से देखता रहा। तो ये थे असली कैलाश चौधरी! उन्होंने तकिए का सहारा लेकर कहा, 'मैं शारीरिक रूप से मजबूत था, इसलिए किसी तरह बच गया। वरना... इन चार दिनों में...'
फेलुदा ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'चुप रहो। तुम्हें खुद पर ज़ोर नहीं डालना चाहिए।'
नहीं, लेकिन मुझे आपको कुछ बातें बतानी होंगी। वरना आपको पूरी बात समझ नहीं आएगी। दरअसल, आपसे व्यक्तिगत रूप से मिलना मेरे लिए नामुमकिन था, क्योंकि जिस दिन मैंने आपको पत्र लिखा था, उसी दिन उसने मुझे पकड़ लिया था। उसने मेरी चाय में कुछ मिला दिया था, जिससे मैं लगभग बेहोश हो गई थी। वह मुझे किसी और तरीके से काबू नहीं कर सकता था।
और उस दिन से वह खुद को कैलाश चौधरी के रूप में पेश करने लगा?
कैलाश बाबू ने उदास होकर सिर हिलाया, “यह मेरी ही गलती है, श्री मित्तर।
मैं किसी और को दोष नहीं दे सकता। हमारे पूरे परिवार में एक बड़ी कमजोरी

है। हम सब छोटी-छोटी बातों को बढ़ा-चढ़ाकर बताने और बेवजह मनगढ़ंत कहानियां सुनाने के आदी हैं। मैंने वह पत्थर जबलपुर से पचास रुपये में खरीदा था। मुझे नहीं पता कि मैंने केदार को जंगल में एक मंदिर और उस पत्थर से सजी मूर्ति की अजीब कहानी क्यों सुनाई। उसने मेरी सारी बात मान ली और उस दिन से उस पत्थर पर उसकी नजर टिक गई। वह कई कारणों से मुझसे ईर्ष्या करता था। शायद वह समझ नहीं पाता था कि मैं इतना भाग्यशाली, इतना सफल कैसे हो सकता हूं, जबकि वह हर काम में असफल होता दिख रहा था। आखिर हम जुड़वां भाई थे, हमारी किस्मत इतनी अलग नहीं होनी चाहिए थी। केदार हमेशा से ही बिगड़ा हुआ था—लापरवाह और बेईमान। एक बार वह नकली नोट बनाने वाले गिरोह के साथ मिल गया था। वह जेल चला जाता, लेकिन मैंने उसे बचा लिया।”
फिर वो मुझसे बहुत सारा पैसा उधार लेकर विदेश चला गया। मुझे खुशी हुई। अच्छा हुआ, मैंने सोचा। लेकिन करीब एक हफ्ते पहले, एक दिन मैं घर लौटी और देखा कि पत्थर गायब है। मैंने एक पल के लिए भी नहीं सोचा था कि केदार वापस आया होगा और मेरे कमरे से उसे चुरा ले गया होगा। मैंने सारे नौकरों को इकट्ठा किया और उन पर चिल्लाई, लेकिन कुछ नहीं हुआ। दो दिन बाद, मैंने आपको पत्र लिखा। उसी शाम केदार वापस आया और मुझे पत्थर लौटा दिया। वो बहुत गुस्से में था, क्योंकि तब तक उसे पता चल चुका था कि उसकी कोई कीमत नहीं है। वो इसके लिए कम से कम एक लाख रुपये पाने का सपना देख रहा था। उसने कहा कि उसे पैसों की सख्त जरूरत है, क्या मैं उसे बीस हजार रुपये दूंगी? मैंने मना कर दिया। तो उसने तब तक इंतजार किया जब तक मैंने चाय का ऑर्डर नहीं दिया, फिर उसने मुझे नशीली दवा देकर अटारी में ले गया। जब मैं उठी, तो उसने मुझसे कहा कि जब तक मैं उसकी बात नहीं मान लेती, तब तक वो मुझे वहीं रखेगा। इस बीच, वो मेरा नाटक करेगा और मेरे दफ्तर को बताएगा कि मैं बीमारी की छुट्टी पर हूं।
फेलुदा ने आगे कहा, “ज़ाहिर है, उसे पता नहीं था कि तुमने मुझे चिट्ठी लिखी है। इसलिए जब हम वहाँ पहुँचे, तो उसने दस मिनट में एक नकली गुमनाम चिट्ठी लिखी और फिर एक काल्पनिक दुश्मन के बारे में मनगढ़ंत कहानी सुना दी। अगर वह ऐसा नहीं करता, तो उसे पता था कि मुझे शक हो जाएगा। साथ ही, इस घर में या उसकी ज़िंदगी में मेरी मौजूदगी उसे बिल्कुल भी मंज़ूर नहीं थी। इसलिए उसने फ़ोन पर धमकी देने की कोशिश की, फिर कार में बैठकर हमें कुचलने की कोशिश की।”

कैलाश चौधरी ने भौंहें चढ़ा लीं। उन्होंने कहा, 'यह बात तो बिल्कुल समझ में आती है। लेकिन समझ में नहीं आता कि वह इतनी अचानक क्यों चला गया। मैंने उसे एक पैसा भी देने की सहमति नहीं दी थी। तो फिर वह क्यों चला गया? यकीनन वह खाली हाथ तो नहीं गया होगा?'
‘नहीं, नहीं, नहीं!’ दरवाजे पर एक आवाज आई। हममें से किसी ने भी अबनीश बाबू को दूध का गिलास लेकर लौटते नहीं देखा था। ‘वह खाली हाथ क्यों जाएगा?’ वह चिल्लाया, ‘उसने मेरी मुहर ले ली! वह कीमती, दुर्लभ विक्टोरियन मुहर गायब हो गई।’
फेलुदा ने हैरानी से उसकी ओर देखा। 'क्या! उसने तुम्हारी मुहर चुरा ली?' ‘हां, हां। केदार मामा ने मुझे बर्बाद कर दिया!’
आपने इसकी कीमत कितनी बताई थी?
'बीस हजार।'
‘लेकिन—’ फेलुदा ने अबनीश बाबू की ओर मुड़कर अपनी आवाज धीमी करते हुए कहा, ‘सूची के अनुसार, अबनीश बाबू, इसकी कीमत पचास रुपये से अधिक नहीं हो सकती।’ अबनीश बाबू का चेहरा पीला पड़ गया।
फेलुदा ने आगे कहा, ‘चौधरी परिवार प्रभाव डालने के लिए हर बात को बढ़ा- चढ़ाकर बताने का आदी है, और तुम उनके भतीजे हो। तो शायद तुमने भी वही आदत विरासत में पाई है। क्या मैं सही कह रहा हूँ?’
अबनीश बाबू का चेहरा उस बच्चे जैसा हो गया जिसने अपना पसंदीदा खिलौना खो दिया हो। उन्होंने उदास स्वर में कहा, 'मैं क्या करता?' 'मैंने तीन साल चार हज़ार डाक टिकट लगे लिफाफों को छाँटने में बिताए। उनमें से एक भी काम का नहीं था, सिवाय उस एक के। खैर, ठीक है, वह कोई खास नहीं था, लेकिन लोगों ने मेरी कहानी पर विश्वास किया। मैंने उन्हें दिलचस्पी दिलाई!'
फेलुदा हंसने लगा। ‘कोई बात नहीं, अबनीश बाबू,’ उसने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, ‘मुझे लगता है तुम्हारे चाचा को उचित दंड मिलेगा, और इससे तुम्हें कुछ राहत मिलेगी। मैं एयरपोर्ट पर फोन करता हूँ। देखो, मुझे पहले से ही शक था कि वह आज सुबह भागने की कोशिश कर सकता है। इसलिए मैंने इंडियन एयरलाइंस को फोन किया, और उन्होंने मुझे बताया कि उसकी बॉम्बे जाने वाली उनकी सुबह की फ्लाइट में बुकिंग है। मुझे तुम्हारे चाचा पर शक तभी हुआ जब उन्होंने कहा कि उन्हें याद नहीं कि उन्होंने कुछ दिन पहले ही डेटॉल की नई बोतल खरीदी थी।’

पुलिस को केदार चौधरी को गिरफ्तार करने में कोई दिक्कत नहीं हुई; और अबनीश बाबू की स्टांप उन्हें विधिवत लौटा दी गई। कैलाश बाबू ने फेलुदा को इतनी अच्छी रकम दी थी कि तीन बार बाहर खाना खाने और मेरे साथ दो फिल्में देखने के बाद भी उनके बटुए में काफी पैसे बचे थे।
आज जब हम घर पर चाय पी रहे थे, तो मैंने उनसे कहा, 'फेलुदा, मैंने इस बारे में काफी सोचा है और एक निष्कर्ष पर पहुंचा हूं। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि मैं सही हूं या नहीं?'
‘ठीक है। तुम क्या सोच रहे थे?’
‘यह कैलाश चौधरी के पिता के बारे में है। मुझे लगता है कि उन्हें पता था कि केदार ने क्या किया था। मेरा मतलब है, शायद एक पिता जुड़वां बच्चों में फर्क बता सकता है। शायद यही कारण था कि वह अपने बेटे को इतनी गुस्से भरी निगाहों से देख रहे थे।’
'ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी। लेकिन चूंकि इस विषय पर आपके विचार मेरे विचारों से मिलते-जुलते प्रतीत होते हैं, इसलिए मैं आपकी बुद्धिमत्ता के लिए आपको पुरस्कृत कर रहा हूं।'
इतना कहकर फेलुदा ने बड़े आराम से मेरी थाली से एक जलेबी उठा ली।

अनुबिस रहस्य

‘फेलूदा, आपको किसने फोन किया था?’ मैंने पूछा, और तुरंत समझ गया कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था, क्योंकि फेलूदा योगाभ्यास कर रहे थे। शीर्षासन समेत हर आसन पूरा करने तक वे कुछ नहीं बोलते थे। उन्होंने करीब छह महीने पहले योगाभ्यास शुरू किया था। इसका असर दिखने लगा था। फेलूदा पहले से कहीं ज्यादा चुस्त-दुरुस्त लग रहे थे, और उन्होंने खुलकर माना कि योगाभ्यास से उन्हें बहुत फायदा हुआ है।
मैंने घड़ी पर नज़र डाली। साढ़े सात मिनट बाद फेलुदा का जवाब आया। ज़मीन से उठते हुए उसने कहा, 'तुम उसे नहीं जानते।' सच में, फेलुदा कभी-कभी बहुत परेशान करने वाला होता था। अगर मैं उस आदमी को नहीं जानता था तो क्या हुआ? वह मुझे अपना नाम तो बता ही सकता था, है ना?
मैंने अधीरता से पूछा, 'क्या आप उसे जानते हैं?' फेलुदा रात भर भिगोए हुए चने चबाने लगा। यह उसके फिटनेस कार्यक्रम का हिस्सा था।
उन्होंने जवाब दिया, 'मैं उन्हें पहले नहीं जानता था, लेकिन अब जानता हूं।' हमारी पूजा की छुट्टियां कुछ दिन पहले शुरू हो गई थीं। बाबा जमशेदपुर घूमने गए थे। घर पर सिर्फ मां, फेलुदा और मैं ही थे। इस बार हमने शहर से बाहर जाने का प्लान नहीं बनाया था। मुझे घर पर रहने में कोई दिक्कत नहीं थी, बस मुझे फेलुदा के साथ रहना अच्छा लग रहा था। वो एक शौकिया जासूस के तौर पर काफी मशहूर हो चुके थे। इसलिए मुझे लगा कि अगर वो किसी और मामले में शामिल हो जाएं तो इसमें कोई हैरानी की बात नहीं होगी। मुझे बस यही डर था कि कहीं वो एक दिन मुझे अपने साथ ले जाने से मना न कर दें। लेकिन अभी तक ऐसा नहीं हुआ था। शायद एक छोटे लड़के के साथ देखे जाने का कोई फायदा था। अगर हम साथ यात्रा करते तो कोई आसानी से अंदाजा नहीं लगा सकता था कि वो एक जासूस हैं।
‘मुझे यकीन है कि आप यह जानने के लिए बेताब होंगे कि वह फोन किसने किया था,’ फेलुदा ने आगे कहा। यह उसकी पुरानी तरकीब थी। अगर उसे पता चल जाता कि मैं जानकारी के लिए उत्सुक हूँ, तो वह घुमा-फिराकर बात किए बिना और काफी सस्पेंस पैदा किए बिना सीधे मुद्दे पर नहीं आता था। मैंने सहज रहने की कोशिश की। ‘खैर, अगर उस फोन कॉल का किसी रहस्य से कोई संबंध था, तो स्वाभाविक रूप से मुझे उसमें दिलचस्पी होगी,’ मैंने हल्के से कहा।

फेलुदा ने धारीदार कमीज पहन ली। अंत में उन्होंने बताया, 'उस आदमी का नाम निलमोनी सान्याल है। वह रोलैंड रोड पर रहता है और मुझसे तुरंत मिलना चाहता है। उसने कारण तो नहीं बताया, लेकिन उसकी आवाज़ में घबराहट झलक रही थी।' आपको कब जाना है?
मैंने उससे कहा कि मैं नौ बजे तक वहाँ पहुँच जाऊँगा। टैक्सी से हमें कम से कम दस मिनट लगेंगे, तो चलो चलते हैं!
रोलैंड रोड जाते समय मैंने फेलुदा से कहा, 'लेकिन मान लो कि यह श्री सान्याल एक बदमाश है? मान लो कि उसने तुम्हें नुकसान पहुंचाने के इरादे से ही अपने घर बुलाया है? तुम उससे पहले कभी नहीं मिले हो, है ना?'
‘नहीं,’ फेलुदा ने खिड़की से बाहर देखते हुए कहा। ‘इस तरह के मामले में बाहर जाने में हमेशा जोखिम रहता है। लेकिन ध्यान रहे, अगर उसका एकमात्र इरादा मुझे शारीरिक नुकसान पहुंचाना होता, तो वह मुझे अपने घर नहीं बुलाता। अगर पुलिस को पता चल गया तो उसके लिए कहीं ज्यादा जोखिम भरा होगा। एक भाड़े का गुंडा यह काम कहीं ज्यादा आसानी से कर सकता है।’
पिछले साल फेलुदा ने अखिल भारतीय राइफल प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीता था। मात्र तीन महीने के अभ्यास के बाद उसका निशाना इतना सटीक हो गया था कि देखकर आश्चर्य होता था। अब उसके पास एक रिवॉल्वर थी, हालांकि किताबों के जासूसों की तरह वह उसे हर समय अपनी जेब में नहीं रखता था। मैंने पूछा, 'क्या आपको पता है कि श्री सान्याल क्या काम करते हैं?'
‘नहीं। मैं उस आदमी के बारे में बस इतना ही जानता हूँ कि वह पान खाता है, शायद थोड़ा बहरा है और वाक्य शुरू करने से पहले “एर…” कहता है।’ इसके बाद मैंने और कोई सवाल नहीं पूछा।
हम जल्द ही नीलमोनी सान्याल के घर पहुँच गए। मीटर में एक रुपया सत्तर पैसे दिखा रहा था। फेलुदा ने ड्राइवर को दो रुपये का नोट दिया और इशारे से बताया कि बाकी पैसे वह रख सकता है। हम टैक्सी से उतरे और सामने के दरवाजे तक गए। फेलुदा ने घंटी बजाई। घर दो मंजिला था। देखने में बहुत पुराना नहीं लग रहा था। सामने एक बगीचा था, लेकिन वह थोड़ा अस्त-व्यस्त और उपेक्षित सा लग रहा था। एक आदमी, जो शायद चौकीदार था, ने दरवाजा खोला और फेलुदा से उसका कार्ड ले लिया। फिर हमें बैठक कक्ष में ले जाया गया। मैं यह देखकर हैरान रह गया कि वह कितना सुसज्जित था। यह स्पष्ट था कि फर्नीचर, पेंटिंग, फूलदान और

कांच के केस में रखी पुरानी कलाकृतियों को खरीदने में काफी पैसा खर्च किया गया था। किसी ने इन्हें बड़ी सावधानी से सजाया था।
कुछ मिनट बाद श्री सान्याल कमरे में दाखिल हुए। उन्होंने ढीले कुर्ते के ऊपर स्लीपिंग सूट पायजामा पहना हुआ था। उनकी उंगलियों में कई अंगूठियां थीं। उनकी लंबाई मध्यम थी, दाढ़ी साफ थी और ऐसा लग रहा था जैसे वे सो रहे हों। मैंने उनकी उम्र का अंदाज़ा लगाने की कोशिश की। वे पचास से ज़्यादा के नहीं लग रहे थे। उन्होंने पूछा, 'आप श्री प्रदोष मित्र हैं? मुझे पता ही नहीं था कि आप इतने जवान हैं।' फेलुदा ने विनम्रता से मुस्कुराते हुए कहा, 'यह मेरा चचेरा भाई है। यह बहुत बुद्धिमान लड़का है, लेकिन अगर आप मुझसे अकेले में बात करना चाहें, तो मैं इसे बाहर भेज सकता हूँ।'
मैंने श्री सान्याल की ओर चिंता भरी नजर से देखा, लेकिन उन्होंने कहा, 'नहीं, नहीं, मुझे कोई आपत्ति नहीं है। उह... क्या आप चाय या कॉफी लेना चाहेंगे?'
'जी नहीं, धन्यवाद।'
ठीक है, तो चलिए मैं आपको बताता हूँ कि मैंने आपको यहाँ क्यों बुलाया। लेकिन इससे पहले, मुझे लगता है कि मुझे अपने बारे में कुछ बताना चाहिए। मुझे यकीन है कि आपने पहले ही ध्यान दिया होगा कि मैं काफी धनी हूँ, और मुझे प्राचीन वस्तुओं और अन्य सुंदर चीजों का शौक है। आपको शायद यह जानकर हैरानी होगी कि मैं अमीर पैदा नहीं हुआ था। मुझे कोई विरासत नहीं मिली; न ही मेरे पास कोई नौकरी है, न ही कोई व्यवसाय।
नीलमोनी बाबू रुक गए और उम्मीद भरी निगाहों से हमारी ओर देखने लगे। 'लॉटरी?' फेलुदा ने कहा।
'क्षमा?'
मैंने पूछा, क्या तुमने लॉटरी जीती है?
‘बिल्कुल, बिल्कुल!’ नीलमोनी बाबू एक उत्साहित बच्चे की तरह चिल्लाए। ‘ग्यारह साल पहले मैंने रेंजर्स लॉटरी में ढाई लाख रुपये जीते थे। मैं मानता हूँ कि इतने सालों से मैंने उसी पैसे से अपना गुजारा किया है। मैंने यह घर आठ साल पहले बनवाया था। अब आप सोच रहे होंगे कि मैं अपना समय कैसे बिताता हूँ, क्या मेरा कोई काम ही नहीं है? बात यह है कि मेरा एक ही मुख्य काम है। मैं अपना ज़्यादातर समय नीलामी घरों में जाकर इस कमरे में रखी चीज़ों को खरीदने में बिताता हूँ।’ उन्होंने अपनी बात समझाने के लिए हाथ

हिलाए। फिर उन्होंने आगे कहा, ‘हाल ही में जो हुआ, उसका मेरी कलाकृतियों से सीधा संबंध न हो, लेकिन मैं इस बारे में निश्चित नहीं हो सकता। देखिए—’ उन्होंने अपनी जेब से कुछ कागज़ निकाले और फैला दिए। कुल तीन कागज़ थे, जिन पर कुछ लिखा हुआ था। ध्यान से देखने पर पता चला कि शब्दों की जगह छोटी-छोटी तस्वीरों की कतारें बनी हुई थीं। उनमें से कुछ को मैं पहचान सका—उल्लू, साँप, सूरज और इंसान की आँख की तस्वीरें थीं। कुछ बातें समझना ज़्यादा मुश्किल था। लेकिन कुल मिलाकर सब कुछ जाना-पहचाना सा लग रहा था। मैंने ऐसा पहले कहाँ देखा था? किसी किताब में?
फेलुदा ने कहा, 'ये चित्रलिपि जैसे दिखते हैं।'
‘क्या?’ नीलमोनी बाबू ने हैरानी से पूछा।
‘प्राचीन मिस्र में प्रयुक्त लेखन शैली। यह कुछ इस तरह दिखती है।’
'वास्तव में?'
'हां, लेकिन इस बात की संभावना बेहद कम है कि हमें कलकत्ता में कोई ऐसा व्यक्ति मिल सके जो हमें इसका अर्थ बता सके।'
नीलमोनी बाबू का चेहरा उतर गया। 'ऐसे में मैं क्या करूँ? पिछले कुछ दिनों से कोई मुझे इस तरह के पत्र लगातार भेज रहा है। अगर मैं इन्हें पढ़ या समझ नहीं पाई, तो यह वाकई चिंताजनक होगा... कहीं ये चेतावनी तो नहीं हैं? कहीं कोई मुझे जान से मारने की धमकी तो नहीं दे रहा?'
फेलुदा ने कुछ देर सोचा। फिर उसने कहा, 'क्या आपके संग्रह में मिस्र से संबंधित कोई वस्तु है?'
नीलमोनी बाबू ने हल्की सी मुस्कान दी। 'मुझे नहीं पता, और यही सच है। मैंने ये चीजें सिर्फ इसलिए खरीदीं क्योंकि ये खूबसूरत, दुर्लभ और महंगी थीं। मुझे इस बात का बहुत कम अंदाजा है कि नीलामी घर पहुंचने से पहले ये मूल रूप से कहां से आई थीं।'
लेकिन ये सारी चीजें बिल्कुल असली लगती हैं। कोई भी यकीन नहीं करेगा कि आप सच्चे पारखी नहीं हैं!
“अह... ये तो काफी आसान है। ज्यादातर नीलामी घर अपना काम ठीक से करते हैं और हर वस्तु का मूल्यांकन किसी विशेषज्ञ से करवाते हैं। इसलिए अगर कोई चीज महंगी है, तो आप निश्चिंत हो सकते हैं कि वह असली है। मुझे सबसे ज्यादा खुशी अपने प्रतिद्वंद्वियों को बोली में हराने में मिलती है, और क्यों

नहीं, जब मेरे पास साधन हैं? अगर इस प्रक्रिया में मुझे कोई वाकई कीमती चीज मिल जाए, तो और भी अच्छा।”
‘लेकिन आपको कैसे पता चलेगा कि इनमें से कोई चीज़ मिस्र की है?’ नीलमोनी बाबू उठे और कांच के बक्से की ओर चले गए। उन्होंने ऊपर की शेल्फ से एक छोटी सी मूर्ति निकाली और फेलुदा को दे दी। वह लगभग छह इंच लंबी थी। किसी अजीब से हरे पत्थर से बनी उस मूर्ति पर कई रंगीन पत्थर जड़े हुए थे। सबसे अनोखी बात यह थी कि उसका शरीर तो इंसान जैसा था, लेकिन उसका सिर सियार जैसा था। ‘मैंने इसे महज दस दिन पहले नीलामी में खरीदा था। क्या यह मिस्र का हो सकता है?’
फेलुदा ने प्रतिमा पर सरसरी नजर डाली और कहा, 'अनुबिस।'
'क्षमा?'
‘अनुबिस। प्राचीन मिस्र का मृत्यु का देवता। यह एक खूबसूरत कलाकृति है।’ ‘लेकिन,’ नीलमोनी। बाबू चिंतित स्वर में बोले, ‘क्या आपको लगता है कि इसका… इस अनुबिस का और मुझे मिल रहे उन संदेशों का कोई संबंध है? क्या इसे खरीदकर मैंने कोई गलती की है? क्या कोई इसे मुझसे छीनने की धमकी दे रहा है?’ फेलुदा ने सिर हिलाते हुए निलमोनी बाबू को मूर्ति लौटा दी। 'यह कहना मुश्किल है। पहला पत्र कब आया था?'
पिछले सोमवार।
‘आपका मतलब है, इसे खरीदने के तुरंत बाद?’
'हाँ।'
‘क्या तुमने लिफाफे रखे हैं?’
नहीं, मुझे खेद है कि ऐसा नहीं हुआ। शायद मुझे उन्हें रख लेना चाहिए था, लेकिन वे साधारण लिफाफे थे और पता टाइप किया हुआ था। डाक टिकट पर एल्गिन रोड लिखा था। यह मैंने देखा था।
‘ठीक है,’ फेलुदा उठे। ‘मुझे नहीं लगता कि अभी हमें कुछ करने की ज़रूरत है। लेकिन एहतियात के तौर पर, मेरा सुझाव है कि आप उस मूर्ति को कहीं और रख दें। मेरे एक परिचित के यहाँ हाल ही में चोरी हुई थी। हमें कोई जोखिम नहीं लेना चाहिए।’
हम बैठक से बाहर निकले और सीढ़ियों पर खड़े हो गए। फेलुदा जानना चाहता था, 'क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोच सकते हैं जो आप पर कोई शरारत करना चाहे?'

नीलमोनी बाबू ने सिर हिलाया। 'नहीं। मेरे सारे दोस्तों से मेरा संपर्क टूट गया है।'
‘दुश्मनों के बारे में क्या?’
खैर... ज्यादातर अमीर लोगों के दुश्मन होते हैं, लेकिन जाहिर है उन्हें पहचानना मुश्किल है। मेरे सामने तो सब लोग बहुत अच्छे से पेश आते हैं। वे मेरे पीठ पीछे क्या करते होंगे, यह मैं नहीं कह सकता।
‘क्या आपने यह नहीं कहा था कि आपने वह वस्तु नीलामी में खरीदी थी?’
'हां। अराटून ब्रदर्स में।'
क्या इसमें किसी और की भी दिलचस्पी थी?
इस सवाल पर नीलमोनी बाबू अचानक उत्तेजित हो गए। उन्होंने उत्तेजित होकर कहा, 'श्री मित्तर, आपने इस मामले में एक नया पहलू जोड़ दिया है। देखिए, मेरा एक खास प्रतिद्वंदी है जिससे मेरी लगभग हर नीलामी में टक्कर होती है। वह भी इस अनुबिस के लिए बोली लगा रहा था।'
'कौन है ये?'
'प्रतुल दत्त नाम का एक आदमी।'
'वह क्या करता है?'
‘मुझे लगता है वो वकील थे। अब वो रिटायर हो चुके हैं। उस मूर्ति के लिए बोली लगाने वाले सिर्फ वो और मैं ही थे। जब मैंने बारह हज़ार कहा तो वो रुक गए। बाद में जब मैं अपनी कार में बैठ रही थी, तो संयोग से मेरी नज़र उन पर पड़ी। मैं आपको बता सकती हूँ कि मुझे उनकी नज़र में वो भाव बिल्कुल पसंद नहीं आया!’
'अच्छा ऐसा है।'
तब तक हम घर से बाहर निकल चुके थे और गेट की ओर चल रहे थे।
‘क्या इस घर में बहुत सारे लोग रहते हैं?’ फेलुदा ने पूछा।
'अरे नहीं। मैं इस दुनिया में बिल्कुल अकेला हूँ। मैं यहाँ अपने ड्राइवर, माली और दो बूढ़े और भरोसेमंद नौकरों के साथ रहता हूँ, बस इतना ही।'
‘क्या इस घर में कोई छोटा बच्चा नहीं है?’ फेलुदा ने बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से पूछा।
नीलमोनी बाबू कुछ पल तक घूरती रहीं, फिर ज़ोर से हंस पड़ीं। ‘अरे मुझे ही देख लो! मैं तो अपने भतीजे के बारे में बिल्कुल भूल ही गई थी। दरअसल, मैं तो घर के बड़ों के बारे में ही सोच रही थी। जी हां, मेरा भतीजा झुंटू मुझसे

मिलने आया हुआ है। उसके माता-पिता जापान में हैं। उसके पिता का अपना व्यवसाय है। झुंटू को मेरी देखरेख में छोड़ा गया है। लेकिन बेचारा जब से आया है, उसे फ्लू हो गया है। लेकिन आपको ऐसा कैसे लगा कि मेरे घर में कोई बच्चा भी हो सकता है?’
मैंने आपके बैठक कक्ष में एक अलमारी के पीछे से एक पतंग को झांकते हुए देखा।
ठीक उसी समय एक टैक्सी हमारे लिए आ गई, जिसके टायरों से बजरी की आवाज़ आ रही थी। नीलमोनी बाबू ने अपने नौकर को टैक्सी लाने के लिए भेजा था, यह उनकी बड़ी मेहरबानी थी। टैक्सी में बैठते ही फेलुदा ने कहा, 'धन्यवाद। अगर कुछ भी संदिग्ध लगे तो मुझे बता देना। लेकिन अभी कुछ नहीं किया जा सकता।'
वापस लौटते समय मैंने कहा, 'अनुबिस की उस मूर्ति में कुछ भयावह सा है, है ना?'
'अगर आप किसी मूर्ति में इंसान के सिर की जगह जानवर का सिर लगा दें, तो वह भयावह दिखने लगेगी।'
‘प्राचीन मिस्र के देवी-देवताओं की मूर्तियों को रखना खतरनाक है।’
'किसने कहा तुमसे ये?'
‘अरे हाँ, तुमने किया था! बहुत समय पहले।’
'नहीं, बिल्कुल नहीं। मैंने तो बस इतना ही बताया था कि प्राचीन मिस्र की मूर्तियों की खुदाई करने वाले कुछ पुरातत्वविदों को बाद में काफी परेशानी का सामना करना पड़ा।'
'हां, हां, मुझे अब याद आ गया... एक ब्रिटिश सज्जन थे, है ना... उनका नाम क्या था?'
‘लॉर्ड कार्नार्वोन।’
और उसका कुत्ता?
'कुत्ता उनके साथ नहीं था। लॉर्ड कार्नरवॉन मिस्र में थे। उनका कुत्ता इंग्लैंड में था। तुतनखामेन की कब्र खोदने में मदद करने के कुछ ही समय बाद, वे बीमार पड़ गए और उनकी मृत्यु हो गई। बाद में पता चला कि उनका कुत्ता, जो हजारों मील दूर था, अपने मालिक के साथ ही रहस्यमय तरीके से मर गया। वह पूरी तरह स्वस्थ था, और कोई भी कभी उसकी मृत्यु का कारण पता नहीं लगा सका।' मिस्र का नाम सुनते ही मुझे फेलुदा से सुनी वो अजीब कहानी याद आ जाती थी। अनुबिस की वो मूर्ति शायद किसी मिस्री फराओ के मकबरे से आई होगी। क्या

नीलमोनी बाबू को इस बात का एहसास नहीं था? उन्हें इतना बड़ा जोखिम उठाने की क्या ज़रूरत थी?
अगली सुबह पौने छह बजे, जैसे ही मैंने अखबार को बालकनी पर धड़ाम से गिरते सुना, फोन की घंटी बजी। मैंने झट से रिसीवर उठाया और 'हैलो' कहा, लेकिन इससे पहले कि मैं दूसरी तरफ से कुछ सुन पाती, फेलुदा अंदर आया और मुझसे फोन छीन लिया। मैंने उसे तीन बार 'मैं समझ गया' कहते सुना, फिर उसने कहा, 'हाँ, ठीक है,' और फोन रख दिया।
‘अनुबिस कल रात गायब हो गया,’ उसने मुझे बताया, उसकी आवाज भारी लग रही थी। ‘हमें तुरंत वहाँ जाना होगा!’
सुबह-सुबह ट्रैफिक काफी कम होने के कारण हमें नीलमोनी बाबू के घर पहुँचने में केवल सात मिनट लगे। वे अपने गेट के बाहर हमारा इंतज़ार कर रहे थे और बेहद हैरान-परेशान दिख रहे थे। जैसे ही हम टैक्सी से उतरे, उन्होंने कहा, 'मेरे साथ कितना बुरा अनुभव हुआ है! मैंने इससे पहले कभी इतना भयानक अनुभव नहीं किया।'
हम बैठक कक्ष में गए। हम दोनों के बैठने से पहले ही नीलमोनी बाबू सोफे पर बैठ गए और हमें अपनी कलाइयाँ दिखाईं। यह स्पष्ट था कि उनके हाथ बंधे हुए थे। रस्सी के निशान उनकी त्वचा पर लाल रंग के थे।
फेलुदा ने कहा, 'मुझे बताओ क्या हुआ।'
नीलमोनी बाबू ने गहरी सांस ली और बोलना शुरू किया, “मैंने आपकी सलाह मानी और कल रात उस मिस्र की मूर्ति को अपने तकिए के नीचे ही रखा। अब मुझे लगता है कि अगर मैंने उसे वहीं छोड़ दिया होता तो शायद ज्यादा आसान होता। कम से कम इस शारीरिक पीड़ा से तो बच जाता। खैर, मैं चैन से सो रहा था, तभी अचानक मेरी नींद खुल गई—नहीं, मैं आपको समय नहीं बता सकता—मुझे बहुत सांस फूल रही थी। मुझे तुरंत एहसास हुआ कि मेरा मुंह बांध दिया गया है। मैंने अपने हाथों से हमलावर का विरोध करने की कोशिश की, लेकिन वह मुझसे कहीं ज्यादा ताकतवर था। उसने मेरे हाथ पीछे बांध दिए, मेरे तकिए के नीचे से अनुबिस की मूर्ति उठाई और कुछ ही मिनटों में गायब हो गया! मुझे उसका चेहरा देखने का मौका ही नहीं मिला।” नीलमोनी बाबू सांस लेने के लिए रुके। थोड़ी देर रुकने के बाद उन्होंने बोलना फिर शुरू किया, “जब मेरा नौकर सुबह की चाय लेकर आया, तो उसने मुझे मेरे कमरे में पाया, मेरे हाथ अभी भी पीछे बंधे हुए थे, मुंह

पर पट्टी बंधी हुई थी। तब तक मेरे पूरे शरीर में झुनझुनी हो रही थी।” खैर, उसने मुझे खोल दिया और मैंने तुरंत आपको फोन किया।'
फेलुदा चुपचाप, गंभीर चेहरे के साथ उसकी बात सुनता रहा। फिर उसने कहा, 'मैं आपके शयनकक्ष का निरीक्षण करना चाहूंगा, और यदि अनुमति हो तो आपके घर की कुछ तस्वीरें लेना चाहूंगा।' फोटोग्राफी भी हाल ही में उसका एक नया शौक बन गया था।
नीलमोनी बाबू हमें ऊपर अपने शयनकक्ष में ले गए। कमरे में कदम रखते ही फेलुदा ने हैरानी से कहा, 'क्या! तुमने खिड़की पर ग्रिल नहीं लगवाई?' ‘नहीं, मुझे खेद है,’ नीलमोनी बाबू ने अफसोस जताते हुए सिर हिलाया। ‘यह घर विदेशी बंगलों की तर्ज पर बना है। इसलिए खिड़कियों में ग्रिल नहीं लगी हैं। और दुख की बात है कि मैं कभी भी खिड़कियां बंद करके सो नहीं पाया।’ फेलुदा ने खिड़की से बाहर एक नज़र डाली और कहा, ‘यह बहुत ही साधारण रहा होगा। एक चौखट है और एक पाइप है। कोई भी तंदुरुस्त आदमी बड़ी आसानी से कमरे में चढ़ सकता है।’
फेलुदा ने अपना कैमरा निकाला और तस्वीरें खींचने लगा। फिर उसने कहा, 'क्या मैं तुम्हारे घर का बाकी हिस्सा देख पाऊँ?'
जी हां, बिल्कुल। नीलमोनी बाबू हमें अगले कमरे में ले गए। वहां हमने बिस्तर पर एक बंडल पड़ा हुआ देखा, जो पूरी तरह से कंबल में लिपटा हुआ था। जैसे ही उस छोटे लड़के ने कंबल का कुछ हिस्सा हटाया, उसका चेहरा दिखाई दिया और उसने असामान्य रूप से बड़ी-बड़ी आंखों से हमारी ओर देखा। लड़का स्पष्ट रूप से बीमार था।
‘यह मेरा भतीजा झुंटू है,’ नीलमोनी बाबू ने कहा। ‘मुझे कल रात डॉक्टर बोस को बुलाना पड़ा। उन्होंने उसे नींद की गोली दी। इसलिए झुंटू पूरी रात सोता रहा, उसे कुछ भी दिखाई या सुनाई नहीं दिया।’
हमने पहली और भूतल पर बने अन्य कमरों में सरसरी नज़र डाली और फिर बगीचे और उसके आसपास के इलाकों को देखने के लिए नीचे आ गए। नीलमोनी बाबू के शयनकक्ष की खिड़की के ठीक नीचे तीन गमले रखे थे। फेलुदा ने उनमें झाँकना शुरू किया। पहले दो गमलों में कुछ नहीं मिला। तीसरे में उसे एक खाली डिब्बा मिला। ढक्कन उठाते हुए उसने पूछा, 'क्या इस घर में कोई नसवार लेता है?' नीलमोनी बाबू ने सिर हिलाकर मना कर दिया। फेलुदा ने डिब्बा अपनी जेब में रख लिया।

‘देखिए, श्री मित्तर,’ नीलमोनी बाबू ने स्पष्ट रूप से हताश होकर कहा, ‘मुझे उस मूर्ति के खोने का इतना दुख नहीं है। शायद एक दिन मैं दूसरी खरीद सकूँ। लेकिन जो बात मुझे बर्दाश्त नहीं हो रही, वह यह है कि कोई घुसपैठिया इतनी आसानी से मेरे घर में घुस जाए और मुझे इस तरह के… इस तरह के… सदमे से गुज़ार दे! आपको इसके बारे में कुछ करना होगा। अगर आप चोर को पकड़ लें तो मैं… मैं… आपको… मतलब… दूँगी।’
'इनाम?'
'हां हां!'
“धन्यवाद, श्रीमान सान्याल, यह आपकी बहुत बड़ी मेहरबानी है। लेकिन मैं वैसे भी आगे की जांच करने वाला था, इसलिए नहीं कि मुझे इनाम की उम्मीद थी, बल्कि इसलिए कि मुझे यह मामला दिलचस्प और चुनौतीपूर्ण लगता है।” अब वह मशहूर अपराध कहानियों के जाने-माने जासूसों की तरह बात कर रहे थे। मुझे बहुत खुशी हुई।
इसके बाद, फेलुदा ने अगले दस मिनट नीलमोनी बाबू के ड्राइवर गोविंद, उनके नौकरों (नंदलाल और पंचू) और उनके माली नटबर से बात करने में बिताए। अफसोस की बात है कि उनमें से कोई भी हमें कोई उपयोगी जानकारी नहीं दे सका। उन्होंने बताया कि घर में आने वाला एकमात्र बाहरी व्यक्ति डॉ. बोस थे। वे रात करीब 9 बजे झुंटू से मिलने आए थे। उनके जाने के बाद, नीलमोनी बाबू स्थानीय दवाखाने से कुछ दवाइयां खरीदने बाहर गए थे। बस इतना ही।
इसके तुरंत बाद हम वहां से निकल गए। वापस आते समय, मैंने अचानक देखा कि हमारी टैक्सी घर की दिशा में नहीं जा रही थी। फेलुदा मुझे कहाँ ले जा रहा था? लेकिन वह इतना गंभीर दिख रहा था कि मैंने उससे पूछने की हिम्मत नहीं की।
हमारी टैक्सी फ्री स्कूल स्ट्रीट में एक दुकान के बाहर रुकी। उस पर लगे साइनबोर्ड पर लिखा था, 'अरतून ब्रदर्स - नीलामी घर', हर अक्षर चमकदार चांदी से रंगा हुआ था। मैंने पहले कभी नीलामी घर नहीं देखा था। इसे देखकर मैं दंग रह गया। किसने सोचा था कि एक ही छत के नीचे इतनी अलग-अलग चीजें जमा हो सकती हैं? इन्हीं विभिन्न वस्तुओं के बीच नीलमोनी सान्याल को अपना 'अनुबिस' मिल गया था। फेलुदा ने अपना काम सिर्फ दो मिनट में खत्म कर दिया। नीलामी घर ने उसे प्रतुल दत्ता का पता दिया - 7/1 लवलॉक स्ट्रीट। क्या हम अब वहाँ जाने वाले थे? नहीं, फेलुदा ने ड्राइवर से हमें घर ले जाने को कहा।

जब हम दोपहर बाद खाना खाने बैठे, तब भी मैं सब कुछ समझने की कोशिश कर रहा था, पर कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। हे भगवान, मैंने मन ही मन प्रार्थना की, फेलुदा को कोई सुराग या कुछ तो मिल जाए, ताकि उसके पास कुछ ठोस आधार हो जिस पर वह काम कर सके। नहीं तो, उसे हार माननी पड़ सकती है, जो मेरे लिए बिल्कुल असहनीय होगा।
‘अब आगे क्या, फेलुदा?’ मैंने उससे पूछा।
'मछली करी,' उसने चावल में दाल मिलाते हुए जवाब दिया, 'और फिर मैं सब्जियां खाऊंगा, उसके बाद चटनी और दही।'
'और तब?'
‘फिर मैं अपने हाथ धोऊंगा, कुल्ला करूंगा और पान खाऊंगा।’
'इसके बाद?'
मैं एक फोन कॉल करूंगा और फिर थोड़ी देर आराम करने का इरादा रखता हूं। मुझे आगे कुछ भी पूछने का कोई फायदा नहीं लगा। मैं बस धैर्यपूर्वक उसके फोन करने का इंतजार कर सकता था। मुझे पता था कि वह प्रतुल दत्ता को फोन करेगा, इसलिए मैंने पहले ही डायरेक्टरी से उसका नंबर ले लिया था।
जब आखिरकार फेलुदा ने फोन किया, तो मुझे बातचीत का सिर्फ उसका हिस्सा ही सुनाई दिया। बातचीत कुछ इस तरह हुई:
फेलुदा (अपनी आवाज बदलकर और एक बूढ़े आदमी की तरह बोलते हुए): 'हैलो, मैं नक्तोला से बोल रहा हूँ।'
'मेरा नाम जॉयनारायण बागची है। मुझे पुरातन वस्तुओं और प्राचीन कलाओं में रुचि है। दरअसल, मैं इस विषय पर एक किताब लिख रहा हूं।'
'जी हां। जी हां, मैंने आपके संग्रह के बारे में सुना है। इसलिए मैंने सोचा कि क्या मैं जाकर देख सकता हूं कि आपके पास क्या है?'
नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं!
जी हाँ, धन्यवाद। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद!
फेलुदा ने रिसीवर नीचे रखा और मेरी ओर मुड़ा। 'वह अपने घर में सफेदी करवा रहा है, इसलिए उसे कुछ सामान इधर-उधर करना पड़ा है। लेकिन वह आज शाम हमें घर देखने देने के लिए सहमत हो गया है।'
लेकिन,’ मैंने पूछे बिना नहीं रह सका, ‘अगर उसने वाकई अनुबिस की मूर्ति चुराई है, तो वह हमें दिखाने वाला नहीं है, है ना?’

‘मुझे नहीं पता। अगर वह तुम्हारी तरह बेवकूफ है, तो शायद हो। लेकिन मैं चोरी की हुई चीज की तलाश में उससे मिलने नहीं जा रहा। मैं बस उस आदमी से मिलना चाहता हूं।’
अपने वादे के मुताबिक, फेलुदा इसके बाद झपकी लेने के लिए अपने कमरे में चले गए। उनमें जब भी जरूरत होती, कुछ मिनटों की नींद लेने की अद्भुत क्षमता थी। जाहिर है, नेपोलियन में भी यही क्षमता थी। वह घोड़े पर सवार होकर भी सो सकते थे और कुछ ही क्षणों बाद तरोताजा होकर जाग जाते थे। या कम से कम मैंने तो यही सुना था। मैंने फेलुदा की मिस्र की कला पर लिखी किताबों में से एक को पलटकर दोपहर बिताने का फैसला किया। लेकिन कुछ ही मिनटों बाद फोन की घंटी बज उठी। मैं फोन उठाने के लिए दौड़कर बैठक में गया।
‘हैलो!’ मैंने कहा।
दूसरी तरफ से तुरंत कोई जवाब नहीं आया, हालांकि मुझे महसूस हुआ कि कोई रिसीवर कान से लगाए बैठा है। मुझे बेचैनी होने लगी। कुछ क्षण बाद एक कर्कश आवाज ने पूछा, 'क्या मैं प्रदोष मित्र से बात कर सकता हूँ?'
मैंने एक बार घूंट भरते हुए जवाब दिया, 'वह आराम कर रहे हैं। क्या मैं जान सकता हूँ कि कौन फोन कर रहा है?'
वह आदमी फिर चुप हो गया। फिर उसने कहा, 'ठीक है। बस उसे बता दो कि मिस्र का देवता वहीं है जहाँ उसे होना चाहिए। श्री मिटर को अनुबिस की गतिविधियों की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। अगर वह इस मामले में दखलंदाजी करता रहा, तो इसके परिणाम बहुत भयानक हो सकते हैं।' एक क्लिक के साथ ही लाइन कट गई।
मैं मूर्खतापूर्वक बैठा रहा—पता नहीं कितनी देर तक—अभी भी रिसीवर हाथ में पकड़े हुए। आखिरकार मुझे समझ तब आई जब फेलुदा कमरे में आया और मैंने उसे वापस रख दिया। ‘फोन पर कौन था?’ उसने पूछा। मैंने वही दोहराया जो उस अनजान आवाज ने मुझे बताया था। फेलुदा ने भौंहें चढ़ाईं और झुंझलाहट में अपनी जीभ चटकाई।
आपको मुझे फोन करना चाहिए था।
‘मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ? अगर मैं तुम्हारी दोपहर की नींद में खलल डालता हूँ तो तुम हमेशा नाराज़ हो जाते हो।’
‘हम्म। उस आदमी की आवाज कैसी थी?’
'कठोर और रूखा।'

‘मैं समझ गया। खैर, अब प्रतुल दत्ता के लिए तैयार होने का समय आ गया है। मुझे उम्मीद की किरण नजर आने लगी थी, लेकिन अब चीजें फिर से पेचीदा हो गई हैं।’
उस शाम पौने छह बजे हम प्रतुल दत्ता के घर के सामने टैक्सी से उतरे। हम दोनों ने अपने-अपने किरदारों के हिसाब से कपड़े पहने थे—इतनी चतुराई से भेस बदला था कि मुझे यकीन है बाबा भी हमें पहचान नहीं पाते। फेलुदा एक बूढ़े आदमी की तरह लग रहे थे, लगभग साठ साल के, चौड़ी मूंछों वाले (जिनमें काफी सफेद बाल थे) और नाक पर मोटे चश्मे लगाए हुए। उन्होंने ऊँची गर्दन वाली काली जैकेट, सफेद धोती, लंबे मोजे और भूरे रंग के टेनिस जूते पहने हुए थे। उन्हें तैयार होने में लगभग आधा घंटा लगा। फिर उन्होंने मुझे अपने कमरे में बुलाया और कहा, 'तुम्हारे लिए कुछ चीजें हैं। इन्हें जल्दी से पहन लो।'
‘क्या! मुझे मेकअप भी लगाना पड़ेगा?’
‘ज़रूर।’ दो मिनट में ही मैंने अपने असली बालों को ढकने के लिए विग पहन ली और फेलुदा की तरह अपनी आँखों को छिपाने के लिए चश्मा लगा लिया। फिर उसने एक आइब्रो पेंसिल निकाली और मेरी करीने से कटी हुई साइडबर्न्स को तब तक संवारा जब तक वे बेतरतीब और बढ़ी हुई नहीं लगने लगीं। आखिर में उसने कहा, ‘तुम मेरे भतीजे हो। तुम्हारा नाम सुबोध है। तुम्हारे जीवन का एकमात्र उद्देश्य चुप रहना है। बस इतना याद रखना।’
जैसे ही हम गेट से अंदर गए, हमने देखा कि प्रतुल दत्ता बरामदे में बैठे हुए थे। उनका घर तीस साल पहले बना होगा, लेकिन दीवारों, दरवाजों और खिड़कियों पर नए रंग की परत चढ़ जाने के बाद वे चमक रहे थे।
फेलुदा ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया और अपनी पतली, वृद्ध आवाज में कहा, 'क्षमा कीजिए, क्या आप श्री प्रतुल दत्ता हैं?'
'जी हां,' श्री दत्ता ने बिना मुस्कुराए जवाब दिया।
‘मैं जॉयनारायण बागची हूं, और यह मेरा भतीजा सुबोध है।’
‘तुम उसे क्यों लाए हो? तुमने फोन पर भतीजे के बारे में कुछ नहीं कहा था!’ ‘नहीं, लेकिन देखिए, उन्होंने हाल ही में चित्रकारी शुरू की है और कला में उनकी बहुत रुचि है, इसलिए...’ श्री दत्ता ने इसके बाद कुछ नहीं कहा। वे खड़े हो गए।

मुझे आपके सामान देखने से कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन सफेदी के काम की वजह से मुझे सारा सामान हटाना पड़ा था; और अब हर छोटी-छोटी चीज़ को बाहर निकालना पड़ा है। यह आसान नहीं था, मैं आपको बता सकती हूँ। वैसे भी, मैं दिन भर काम करने वालों के मेरे सारे फर्नीचर को धकेलने और इधर-उधर करने से परेशान हो रही हूँ। पेंट की गंध से मेरा जी मिचला रहा है। जब यह सब काम खत्म हो जाएगा तो मुझे बहुत खुशी होगी। खैर, कृपया अंदर आइए।
मुझे उनके बोलने का रूखापन पसंद नहीं आया, लेकिन पहली मंजिल पर स्थित उनके ड्राइंग रूम में प्रवेश करते ही मैं आश्चर्य से दंग रह गया। उनका संग्रह नीलमोनी बाबू के संग्रह से भी कहीं अधिक विशाल प्रतीत हुआ।
'ऐसा लगता है कि तुमने मिस्र से बहुत सी चीजें इकट्ठा की हैं,' फेलुदा ने टिप्पणी की।
'हां। मैंने इनमें से कुछ काहिरा में खरीदे थे। बाकी स्थानीय स्तर पर खरीदे गए थे।'
‘देखो, सुबोध, मेरे बेटे,’ फेलुदा ने मेरी पीठ पर हाथ रखते हुए और बड़े ही सहजता से मुझे चुटकी काटते हुए कहा। ‘इन सभी जानवरों को देखो? मिस्रवासी इन्हें देवता मानकर पूजते थे। यह उल्लू यहाँ, और वह बाज़ वहाँ—ये पक्षी भी उनके लिए देवता थे।’
श्री दत्ता सोफे पर बैठ गए और एक सिगार जलाया। मुझे नहीं पता कि मुझे क्या सूझा, लेकिन अचानक मैंने खुद से कहा, 'चाचा जी, क्या उनका कोई देवता सियार जैसा नहीं दिखता था?'
श्री दत्ता का गला भर आया। कुछ देर बाद, खांसते हुए उन्होंने कहा, 'यह सिगार! अब अच्छी क्वालिटी का सिगार मिलना मुश्किल हो गया है। पहले यह इतना असरदार नहीं होता था।'
फेलुदा ने इस टिप्पणी को अनसुना कर दिया। ‘हे हे,’ उसने अपनी पतली आवाज में कहा, ‘मेरा भतीजा अनुबिस की बात कर रहा है। मैंने उसे अनुबिस के बारे में कल रात ही बताया था।’
श्री दत्ता अचानक भड़क उठे। ‘अनुबिस? हा! मूर्ख!’ फेलुदा ने चश्मे से उन्हें घूरते हुए कहा, ‘मुझे समझ नहीं आ रहा। आप प्राचीन मिस्र के देवता को मूर्ख क्यों कह रहे हैं?’
नहीं, नहीं, अनुबिस नहीं। वो आदमी है। मैंने उसे पहले भी नीलामी में देखा है। वो बेवकूफ है। उसकी बोली का कोई मतलब ही नहीं बनता। एक खूबसूरत मूर्ति

थी, आप जानते हैं। लेकिन उसने इतनी ऊंची बोली लगाई कि मुझे बोली से पीछे हटना पड़ा। भगवान जाने उसे इतना पैसा कहां से मिलता है।
फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने एक बार फिर कमरे में नज़र घुमाई, फिर 'नमस्कार' कहा। 'बहुत-बहुत धन्यवाद,' उन्होंने कहा और उस दरवाजे की ओर बढ़े जिससे हम आए थे। 'यह सचमुच आपकी बहुत बड़ी मेहरबानी थी। इससे मुझे बहुत खुशी मिली, और मेरे भतीजे... हा हा... ने बहुत कुछ सीखा है।' नीचे जाते समय, फेलुदा ने बड़े सहजता से एक और सवाल पूछा। 'क्या आप इस घर में अकेले रहते हैं?'
‘नहीं,’ जवाब आया। ‘मैं यहाँ अपनी पत्नी के साथ रहता हूँ। मेरा एक बेटा है, लेकिन वह यहाँ नहीं रहता।’
हम श्री दत्ता के घर से बाहर निकले और टैक्सी की तलाश में चलने लगे। शाम के 7 बजे भी नहीं बजे थे, फिर भी बाहर आश्चर्यजनक रूप से सन्नाटा था। दो छोटे लड़के भीख मांग रहे थे, उनके अलावा दूर-दूर तक कोई नजर नहीं आ रहा था। उनमें से एक श्यामसंगीत गा रहा था; दूसरा खंजनी बजा रहा था। जैसे ही वे पास आए, फेलुदा ने भी वही शब्द गुनगुनाना शुरू कर दिया:
मेरी मदद करो, माँ, क्योंकि मेरे पास मदद के लिए कोई नहीं है...
कुछ मिनट बाद, हम बल्लीगंज सर्कुलर रोड पर पहुँचे और हमें एक खाली टैक्सी दिखाई दी। फेलुदा ने गाना बंद कर दिया और इतनी ज़ोर से चिल्लाया, 'टैक्सी!' कि टैक्सी तुरंत ही रुक गई। जैसे ही हम अंदर बैठे, मैंने देखा कि ड्राइवर फेलुदा को हैरानी भरी नज़रों से देख रहा था। वह शायद सोच रहा था कि उसके जैसे बूढ़े और कमज़ोर आदमी के फेफड़े इतने शक्तिशाली कैसे हो सकते हैं! अगली सुबह जब फोन की घंटी बजी, मैं ब्रश कर रहा था। इसलिए फोन फेलुदा ने उठाया। जब मैं बाथरूम से बाहर आया, तो उसने मुझे बताया कि नीलमोनी बाबू ने अभी-अभी फोन करके बताया है कि कल रात प्रतुल दत्ता के घर में चोरी हो गई है। सारा कैश वैसे ही पड़ा है। जो चीज़ें गायब हैं, वे हैं कई पुरानी और कीमती मूर्तियाँ और कला की अन्य वस्तुएँ, जिनकी कुल कीमत लगभग पचास हजार रुपये होगी। चोरी की खबर प्रेस में छप चुकी है और पुलिस ने अपनी जांच शुरू कर दी है।
जब तक हम प्रतुल दत्ता के घर पहुँचे, सात बज चुके थे। कहने की ज़रूरत नहीं, इस बार हम बिना मेकअप के ही गए थे। जैसे ही हम अंदर दाखिल हुए, पुलिस की वर्दी पहने एक हट्टे-कट्टे आदमी घर से बाहर निकला। पता चला कि वह फेलुदा को

जानता था। 'सुप्रभात, फेलु बाबू,' उसने मुस्कुराते हुए हमारा अभिवादन किया और फेलुदा की पीठ थपथपाई, 'देखा, आपको यहाँ आने में ज़्यादा समय नहीं लगा!' फेलुदा ने विनम्रता से मुस्कुराते हुए कहा, 'खैर, मुझे आना ही पड़ा, क्योंकि यह मेरा काम है।'
नहीं, यह मत कहो कि यह तुम्हारा काम है। यह काम हमारा है। तुम्हारे लिए तो यह महज एक शौक है, है ना?
फेलुदा ने इसे नजरअंदाज करना बेहतर समझा। इसके बजाय उन्होंने कहा, 'क्या आप कुछ पता लगा पाए हैं? क्या यह सिर्फ चोरी का मामला है?'
'जी हां, और क्या हो सकता है? लेकिन श्री दत्ता बहुत परेशान हैं। उन्होंने हमें एक बूढ़े आदमी और उसके भतीजे के बारे में बताया जो कल उनसे मिलने आए थे। उन्हें लगता है कि वे ही इसके लिए जिम्मेदार हैं।'
अचानक मेरा गला सूख गया। शायद इस बार फेलुदा कुछ ज्यादा ही लापरवाह हो गया था। अगर—? लेकिन फेलुदा बिल्कुल शांत रहा। ‘तो फिर, तुम्हें बस इस बूढ़े आदमी और उसके भतीजे को पकड़ना है। आसान है!’ उसने कहा।
‘वाह!’ मोटे पुलिस अधिकारी ने जवाब दिया। ‘यह बिल्कुल वैसी ही टिप्पणी है जैसी किसी उपन्यास में कोई शौकिया जासूस कर सकता है।’
'क्या हम घर के अंदर जा सकते हैं?' फेलुदा ने पूछा, अधिकारी द्वारा किए गए ताने-बाने पर ध्यान न देने का दृढ़ निश्चय करते हुए।
'जी हां, आगे बढ़ो।'
प्रतुल दत्ता उसी बरामदे में बैठे थे। लेकिन वे स्पष्ट रूप से इतने व्यस्त थे कि हमारी ओर ध्यान ही नहीं दे रहे थे। पुलिस से आए हमारे दोस्त ने पूछा, 'क्या आप वह कमरा देखना चाहते हैं जहाँ सारी घटना घटी?'
'जी कहिये।'
हमें ऊपर ड्राइंग रूम में ले जाया गया। फेलुदा सीधे बालकनी में गया और उसकी रेलिंग पर झुक गया। 'देखो, यहाँ एक पाइप है। इसलिए अंदर जाना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं था।'
'सच है। वैसे भी, दरवाजा बंद नहीं किया जा सकता था क्योंकि पेंट अभी भी गीला था। इसलिए वास्तव में यह एक तरह का खुला निमंत्रण था।'
‘यह घटना किस समय घटी?’
रात 9.45 बजे
‘सबसे पहले किसे इस बात का एहसास हुआ—?’

‘वहाँ एक बूढ़ा नौकर है। वह उस दूसरे कमरे में बिस्तर लगा रहा था। उसने शायद कोई आवाज़ सुनी और देखने के लिए यहाँ आया। कमरा बिलकुल अंधेरा था। लेकिन इससे पहले कि वह लाइट जला पाता, किसी ने उसे बेहोश कर दिया। जब तक वह होश में आया और शोर मचाने लायक हुआ, तब तक चोर गायब हो चुका था।’
फेलुदा ने भौंहें चढ़ाईं। मैं उसकी इस भौंहों को अच्छी तरह पहचान चुका था। इसका मतलब अक्सर यह होता था कि उसके मन में कोई नया विचार आया है। उसने तीखे स्वर में कहा, 'मैं इस नौकर से बात करना चाहता हूँ।'
'अचे से।'
श्री दत्ता के नौकर का नाम बंगशालोचन था। वह अभी भी सदमे में लग रहा था। 'कहां दर्द हो रहा है?' फेलुदा ने उससे पूछा, क्योंकि वह स्पष्ट रूप से दर्द में था।
‘पेट में,’ उसने कर्कश आवाज में कहा।
‘पेट? चोर ने तुम्हारे पेट पर मारा?’
जी हाँ, महोदय। और यह कितना जोरदार प्रहार था—मुझे ऐसा लगा जैसे कोई बम आकर मेरे शरीर पर गिरा हो। फिर सब कुछ अंधेरा हो गया।
‘आपको वो आवाज कब सुनाई दी? आप उस समय क्या कर रहे थे?’
‘बाबू, मैं आपको ठीक समय नहीं बता सकता। मैं माँ के कमरे में पलंग लगा रहा था। वो बगल वाले कमरे में पूजा कर रही थीं। गली में दो भिखारी लड़के गाना गा रहे थे। माँ ने मुझे उन्हें कुछ पैसे देने को कहा। मैं जाने ही वाला था कि इस कमरे में एक अजीब सी आवाज़ आई। ऐसा लगा जैसे कोई भारी चीज़ गिर गई हो। तो मैं देखने आया कि क्या हो रहा है, और...’ बंगशालोचन और कुछ नहीं कह सका। ऐसा लग रहा था कि हमारे जाने के कुछ ही घंटों बाद चोर घर में घुस आया था। फेलुदा ने बंगशालोचन और पुलिस वाले दोनों को ‘धन्यवाद’ कहा और हम चले गए।
फेलुदा बिना कुछ बोले चलने लगा। उसका चेहरा दृढ़ था, उसकी आँखों में एक चमक थी जिससे पता चलता था कि उसे कुछ महत्वपूर्ण सुराग मिल गया है।
लेकिन मुझे पता था कि वह अभी इस बारे में बात करने को तैयार नहीं थे। इसलिए मैं चुपचाप उनके बगल में चलता रहा, खुद ही सब कुछ समझने की कोशिश करता रहा। अफसोस की बात है कि मुझे कोई सुराग नहीं मिला। यह साफ था कि श्री दत्ता वह चोर नहीं थे जिन्होंने नीलमोनी बाबू पर हमला किया था। वह काफी मजबूत लग रहे थे—और उनकी आवाज भी भारी थी—लेकिन किसी तरह मैं उन्हें पाइप पर

चढ़ते हुए सोच भी नहीं सकता था। यह काम किसी बहुत कम उम्र के आदमी ने किया होगा। लेकिन वह कौन हो सकता है? और फेलुदा क्या सोच रहे थे?
हम चलते रहे, हर खाली टैक्सी को नज़रअंदाज़ करते हुए जो हमारे सामने से गुज़र रही थी। कुछ देर बाद, मुझे अचानक एहसास हुआ कि हम निलमोनी डाबू के घर की चारदीवारी के काफी करीब खड़े हैं। फेलुदा दीवार को बाईं ओर रखते हुए सीधा चलने लगा। कुछ सेकंड बाद, हमें एहसास हुआ कि दीवार बाईं ओर मुड़ी हुई है। हम उसका पीछा करने के लिए बाईं ओर मुड़ गए। लगभग बीस कदम चलने के बाद, फेलुदा अचानक रुक गया और दीवार के एक हिस्से का निरीक्षण करने लगा। फिर उसने अपना छोटा जापानी कैमरा निकाला और उस खास हिस्से की तस्वीर खींची। इस बार, मैंने भी गौर से देखा और पाया कि वहाँ एक हाथ का भूरा निशान था। वास्तव में केवल दो उंगलियाँ और हथेली का एक हिस्सा ही दिखाई दे रहा था, लेकिन यह स्पष्ट था कि यह किसी बच्चे के हाथ का निशान था।
हम वापस उसी रास्ते पर चले और इस बार मुख्य द्वार की ओर बढ़े। हमने उसे धक्का देकर खोला और अंदर चले गए। नीलमोनी बाबू हमसे मिलने के लिए दौड़ते हुए नीचे आए। जब हम सब उनके बैठक कक्ष में बैठ गए, तो उन्होंने हमसे कहा, 'यह सुनने में शायद बुरा लगे, लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि आज मेरा दिल बहुत हल्का महसूस कर रहा है। हाँ, मुझे यह जानकर अच्छा लग रहा है कि मेरे सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी का भी वही हश्र हुआ है। लेकिन... मेरा अनुबिस कहाँ गया? उसे कौन ले गया? आप तो एक जाने-माने जासूस हैं, श्री मिटर। क्या दो चोरी के मामलों के बाद भी आपको कुछ पता नहीं चला?'
जवाब देने के बजाय, फेलुदा ने एक ऐसा सवाल पूछा जो देखने में अटपटा लग रहा था। 'आपका भतीजा कैसा है?'
‘कौन, झुंटू? आज तो वो काफी बेहतर हैं, शुक्रिया। उनका बुखार उतर गया है।’ ‘क्या आपको पता है कि उसके कोई दोस्त हैं? मेरा मतलब है, क्या कोई बच्चा है जो उस चारदीवारी को फांदकर यहाँ अंदर आकर झुंटू के साथ खेल सकता है?’ ‘दीवार फांदकर जाना? तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?’
मुझे दीवार के दूसरी तरफ एक बच्चे के हाथ का निशान मिला।
‘क्या यह ताजा चोट थी?’
'यह कहना मुश्किल है, लेकिन यह बहुत पुराना नहीं हो सकता।'
“खैर, मैंने इस घर में कभी कोई बच्चा नहीं देखा। कभी-कभार हमारे यहाँ आने वाला इकलौता बच्चा एक छोटा भिखारी लड़का है। लेकिन वह फाटक से अंदर आता है,

आमतौर पर श्यामसंगीत गाते हुए। मुझे कहना पड़ेगा कि उसकी आवाज़ वाकई अच्छी है। वैसे, मेरे बगीचे में एक अमरूद का पेड़ है। तो शायद वह कभी-कभी छोटे लड़कों को आकर्षित करता हो—मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकती।” 'हम्म।'
नीलमोनी बाबू ने विषय बदलते हुए पूछा, 'क्या आपको चोर के बारे में कुछ नया पता चला?'
‘उस आदमी में असाधारण ताकत है। प्रतुल दत्ता का नौकर एक ही वार में बेहोश हो गया।’
‘तो फिर वही आदमी रहा होगा जिसने मुझ पर हमला किया था।’
'शायद। लेकिन मुझे उसकी शारीरिक शक्ति से उतनी चिंता नहीं है जितनी उसके सोचने-समझने के तरीके से है। वह असाधारण रूप से चतुर प्रतीत होता है।' नीलमोनी बाबू कुछ हद तक असहाय दिखने लगे। उन्होंने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि आपकी बुद्धिमत्ता उसकी धूर्तता का मुकाबला कर सकती है, श्री मित्तर। अन्यथा मुझे अपने अनुबिस को फिर से पाने की सारी उम्मीद छोड़नी पड़ेगी।' मुझे दो दिन और दीजिए। फेलू मिटर कभी पराजित नहीं हुआ है। नहीं, महोदय, अभी तक नहीं।
इसके तुरंत बाद हम वहां से निकल गए। जब हम सामने के गेट की ओर जाने वाले रास्ते पर चल रहे थे, तभी हमें एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी, जैसे कोई शीशे पर दस्तक दे रहा हो। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो पहली मंज़िल पर एक छोटी सी लड़की खिड़की के पास खड़ी थी। वही खिड़की के शीशे पर दस्तक दे रही थी।
'झुंटू!' मैंने कहा।
'हां, मैंने भी उसे देखा है,' फेलुदा ने जवाब दिया।
फेलुदा ने दोपहर का समय अपनी मशहूर नीली नोटबुक में कुछ लिखते हुए बिताया। अब तक मैं यह सीख चुका था कि वह क्या लिख रहा है, इस पर ध्यान न दूं, क्योंकि मुझे पता था कि वह अपनी नोटबुक में जो कुछ भी लिखता है, वह अंग्रेज़ी में, यूनानी अक्षरों में ही लिखा होता है। मैं कोशिश करने पर भी उसे पढ़ नहीं सकता था; और निश्चित रूप से फेलुदा मुझसे पूछता भी नहीं। असल में, उसने मुझसे बात करना पूरी तरह बंद कर दिया था। मैंने उसे परेशान नहीं किया। उसे सोचने के लिए समय चाहिए था। लेकिन वह गुनगुना रहा था। यह वही गाना था जो हमने उस भिखारी लड़के को गाते हुए सुना था।

शाम करीब 5 बजे फेलुदा ने अपनी चुप्पी तोड़ी। उन्होंने कहा, 'मैं कुछ मिनटों के लिए बाहर जा रहा हूँ। मुझे स्टूडियो से अपनी तस्वीर की बड़ी प्रतियां लेनी हैं।'
मैं बिलकुल अकेली रह गई थी। दिन छोटे होते जा रहे थे। फेलुदा के जाने के एक घंटे से भी कम समय में ही काफी अंधेरा हो गया था। स्टूडियो हमारे घर से ज्यादा दूर नहीं था। फेलुदा को वापस आने में इतना समय क्यों लग रहा था? मुझे उम्मीद थी कि वह मुझे बिना बताए कहीं और तो नहीं चला गया होगा। शायद उसकी तस्वीरें तैयार नहीं थीं, और उसे दुकान पर इंतजार करना पड़ रहा था। मेरे कानों में खंजानी की आवाज आई, जिसके तुरंत बाद एक परिचित गीत सुनाई दिया:
मेरी मदद करो, माँ, क्योंकि मेरे पास मदद के लिए कोई नहीं है...
वही लड़के अब हमारी गली में गा रहे थे। मैं जाकर खिड़की के पास खड़ी हो गई। अब मैं दोनों लड़कों को देख सकती थी। उनमें से एक खंजानी बजा रहा था और दूसरा गा रहा था। वह सचमुच बहुत अच्छा गाता था। वे अब हमारे घर के सामने खड़े थे। गाने वाले ने गाना बंद कर दिया और अपना चेहरा ऊपर उठाया। ‘माँ, कृपया हमें कुछ पैसे दे दीजिए, माँ!’ वह रोया। मैंने अपने बटुए से पचास पैसे का सिक्का निकाला और खिड़की से बाहर फेंक दिया। जैसे ही सिक्का उसके पैरों के पास गिरा, हल्की सी खनक के साथ, लड़के ने उसे उठा लिया। फिर उसने उसे अपने कंधे के थैले में रखा और आगे बढ़ गया, जहाँ से उसने गाना छोड़ा था, वहीं से गाना शुरू कर दिया।
मैं गहरी हैरानी से उसे देखता रहा। हमारी गली में ज़्यादा रोशनी नहीं थी। लेकिन जब लड़के ने पैसे मांगने के लिए अपना चेहरा ऊपर उठाया, तो मैंने उसे साफ़-साफ़ देखा था। उसका चेहरा झुंटू के चेहरे से अजीब तरह से मिलता-जुलता था। नहीं, मुझसे ज़रूर कोई गलती हुई होगी, मैंने खुद से कहा। फिर भी, यह बात मुझे फेलुदा के लौटते ही बतानी थी।
वह साढ़े छह बजे लौटा, उसका चेहरा गुस्से से भरा हुआ था। मेरा अंदाज़ा सही निकला कि उसे दुकान में इंतज़ार करना पड़ा होगा। उसने कहा, 'अब से मैं अपना एक अलग डार्क रूम बनाऊंगा और खुद ही प्रिंट डेवलप करूंगा। इन स्टूडियो पर समय पर काम पूरा करने के मामले में भरोसा नहीं किया जा सकता।'
उसने अपने सारे बड़े किए हुए प्रिंट बिस्तर पर फैला दिए और उनका अध्ययन करने लगा। मैं और इंतज़ार नहीं कर सका, इसलिए मैंने उसे उस भिखारी लड़के के

बारे में बता दिया। फेलुदा के चेहरे पर कोई हैरानी नहीं दिखी। उसने कहा, 'इसमें कुछ भी अजीब नहीं है।'
क्या ऐसा नहीं है?
'नहीं।'
‘ऐसे में तो यह सारा मामला मेरी सोच से कहीं ज्यादा जटिल है।’
'हाँ यह सच है।'
लेकिन क्या आपको सच में लगता है कि वह लड़का इन चोरियों में शामिल है?
'हो सकता है वो हो।'
लेकिन उसकी उम्र और कद का लड़का लोगों को नॉकआउट करने के लिए इतना ताकतवर कैसे हो सकता है?
‘किसने कहा कि नीलमोनी बाबू और बंगालोचन पर हमला करने वाला एक छोटा लड़का था?’
क्या ऐसा नहीं था?
फेलुदा ने मुझे कोई जवाब नहीं दिया। वह अपनी तस्वीरों को देखने में वापस लग गया। मैंने उसे नीलमोनी बाबू की चारदीवारी पर हाथ के निशान की उस तस्वीर के बड़े आकार को ध्यान से देखते हुए पाया, जिसे उसने आज सुबह ही खींचा था।
मैंने मजाक में कहा, 'आपने एक बार मुझसे कहा था कि आप हाथ की रेखाएं पढ़ सकते हैं। क्या आप बता सकते हैं कि उस हाथ के मालिक की उम्र कितनी होगी?' फेलुदा न तो हँसा और न ही कोई जवाब दिया। वह फिर से गंभीर मुद्रा में था, गहरी सोच में डूबा हुआ। 'इस बारे में तुम्हारा क्या विचार है?' उसने अचानक पूछा। उसके इस सवाल ने मुझे चौंका दिया।
‘मैं इसका क्या अर्थ निकालूँ?’
‘जो आपने आज सुबह देखा, और जो आप अभी देख रहे हैं।’
‘सुबह में? आपका मतलब है जब आपने वह फोटो खींची थी?’
'हाँ।'
‘यह एक बच्चे के हाथ का निशान था। और क्या देखने लायक था?’ ‘क्या इसके रंग ने आपको कुछ नहीं बताया?’
‘रंग? यह भूरा था, है ना?’
'हां, लेकिन इसका क्या मतलब था?'
‘क्या उस लड़के के हाथ पर कुछ लगा हुआ था?’

‘कुछ? सोचने की कोशिश करो, और स्पष्ट बताने की कोशिश करो।’
'अच्छा, हो सकता है कि वह पेंट ही हो, है ना?'
‘ठीक है, लेकिन यह आया कहाँ से होगा?’
‘भूरा रंग? मुझे कैसे पता चलेगा—नहीं। रुको, रुको। मुझे अब याद आया। श्री दत्ता के घर के दरवाजे और खिड़कियाँ सब भूरे रंग से रंगी हुई थीं!’ 'बिल्कुल सही। उस दिन थोड़ा सा खून आपकी आस्तीन पर लग गया था। अगर आप अपनी कमीज देखेंगे, तो शायद आपको वह अभी भी वहीं मिलेगा।'
‘लेकिन…’ मुझे थोड़ा चक्कर आने लगा, ‘क्या इसका मतलब यह है कि जिसके हाथ पर पेंट लगा था, वही चोर था जिसने प्रतुल दत्ता के घर में सेंध लगाई थी?’
'हां, संभावना है। लेकिन तस्वीर को फिर से देखिए। क्या आपको कुछ और नजर आ रहा है?'
मैंने बहुत सोचने की कोशिश की, लेकिन अंत में मुझे सिर हिलाना पड़ा। 'कोई बात नहीं,' फेलुदा ने मुझे दिलासा देते हुए कहा, 'मुझे पता था कि तुम इसे नहीं देख पाओगे। अगर तुम देख लेते, तो मुझे बहुत आश्चर्य होता—नहीं, वास्तव में, मैं सदमे में होता।'
'क्यों?'
क्योंकि इससे यह साबित हो जाता कि तुम मुझसे कम चतुर नहीं हो।
‘अरे? और आपने क्या देखा है, श्रीमान चतुर?’
‘यह महज एक जटिल मामला नहीं है। इसमें एक भयावह पहलू भी छिपा है, जिसका एहसास मुझे हाल ही में हुआ है। यह उतना ही भयानक है जितना कि स्वयं अनुबिस!’
फेलुदा ने अगले दिन नीलमोनी बाबू को फोन किया।
हेलो? श्रीमान सान्याल? . . . आपका रहस्य सुलझ गया है. . . नहीं, मेरे पास वह मूर्ति वास्तव में नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि मुझे पता है कि वह कहाँ है. . . क्या आप आज सुबह खाली हैं? . . . क्या? . . . उनकी हालत और खराब हो गई है, है ना? . . . कौन सा अस्पताल? . . . ठीक है। हम बाद में मिलेंगे। धन्यवाद।’ फेलुदा ने रिसीवर वापस रखा और झटपट दूसरा नंबर डायल किया। उसने अपनी आवाज़ धीमी कर ली थी और लगभग फुसफुसाते हुए बोला था, इसलिए मैं उसकी बात नहीं सुन पाया। लेकिन मुझे समझ आ गया कि वह पुलिस में किसी से बात कर रहा था। फिर वह मेरी तरफ मुड़ा और बोला, 'जल्दी तैयार हो जाओ। हम निकल रहे हैं। जी हाँ, अभी।'

सौभाग्य से, सुबह का समय होने के कारण सड़कों पर ज़्यादा ट्रैफिक नहीं था। इसके अलावा, फेलुदा ने ड्राइवर को पूरी तेज़ी से गाड़ी चलाने के लिए कहा था। हमें नीलमोनी बाबू की गली तक पहुँचने में कुछ ही मिनट लगे। जैसे ही हम उनके गेट पर पहुँचे, हमने उन्हें अपनी काली एम्बेसडर कार में निकलते देखा। कार में नीलमोनी बाबू और उनके ड्राइवर के अलावा और कोई नहीं था। 'उस कार का पीछा करो!' फेलुदा चिल्लाया। उत्साहित होकर हमारे ड्राइवर ने एक्सीलरेटर पर पैर रख दिया। मैंने नीलमोनी बाबू की कार को दाईं ओर मुड़ते देखा। ठीक उसी क्षण, फेलुदा ने कुछ ऐसा किया जिसकी किसी को उम्मीद नहीं थी। उसने अपनी जैकेट की अंदरूनी जेब से रिवाल्वर निकाली, खिड़की से बाहर झुका और एम्बेसडर के पिछले टायरों पर गोली चला दी।
रिवॉल्वर की आवाज़ और टायरों के फटने की आवाज़ इतनी तेज़ थी कि कान बहरे हो रहे थे। तभी मैंने देखा कि एम्बेसडर कार लड़खड़ाकर एक खंभे से टकराई और रुक गई। हमारी टैक्सी ठीक उसके पीछे आकर रुकी। दूसरी तरफ से एक पुलिस जीप आई और उसने दूसरी तरफ का रास्ता रोक दिया।
नीलमोनी सान्याल अपनी कार से उतरे और गुस्से से इधर-उधर देखने लगे। मैं और फेलुदा अपनी टैक्सी से उतरे और उनकी ओर चलने लगे। तभी पुलिस की जीप से वही मोटा-ताज़ा पुलिसवाला कूदकर बाहर निकला।
‘आखिर चल क्या रहा है?’ नीलमोनी बाबू ने हमें देखते ही पूछा।
'श्री सान्याल, ड्राइवर के अलावा कार में आपके साथ और कौन है?' फेलुदा ने ठंडे लहजे में पूछा।
‘तुम्हें क्या लगता है?’ नीलमोनी बाबू चिल्लाईं। ‘क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था कि मैं अपने भतीजे को अस्पताल ले जा रही हूँ?’
बिना कुछ कहे, फेलुदा आगे बढ़ा और एम्बेसडर कार के पीछे के दरवाजों में से एक का हैंडल खींचा। दरवाजा खुला और एक छोटा बच्चा कार से बाहर निकला और तुरंत फेलुदा के गले से लिपट गया।
फेलुदा का गला घोंटकर हत्या की जा सकती थी। लेकिन वह सिर्फ योग का ही विशेषज्ञ नहीं था। उसने जिउ-जित्सु और कराटे भी सीखे थे। बच्चे की कलाई मरोड़ने और उसे अपने सिर के ऊपर उठाकर सड़क पर फेंकने में उसे कुछ ही सेकंड लगे। बच्चा दर्द से चीख उठा, जिसे सुनकर मेरा दिल मुंह में आ गया। वह आवाज़ किसी बच्चे की नहीं थी। वह एक वयस्क की आवाज़ थी। वह कर्कश और खुरदरी लग रही थी। यही आवाज़ मैंने टेलीफोन पर सुनी थी।

तब तक पुलिस अधिकारी और उसके आदमियों ने कार को घेर लिया था और नीलमोनी बाबू, उसके ड्राइवर और 'बच्चे' को गिरफ्तार कर लिया था।
फेलुदा ने अपना कॉलर सीधा किया और कहा, 'उसके हाथ के निशान ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया था। यह किसी बच्चे का हाथ तो नहीं हो सकता, क्योंकि इस पर बहुत सारी रेखाएं थीं। एक बच्चे का हाथ इतना चिकना होता है। हालांकि, हथेली का आकार छोटा होने के कारण, इसका एक ही कारण हो सकता है। तथाकथित "बच्चा" वास्तव में एक बौना था। श्रीमान सान्याल, आपके सहायक की उम्र कितनी है?'
‘चालीस,’ नीलमोनी बाबू ने फुसफुसाते हुए कहा। उनकी अपनी आवाज़ अलग लग रही थी।
‘तुम्हें लगा कि तुम बहुत चालाक हो,’ फेलुदा ने आगे कहा। ‘तुम्हारी योजना एकदम सही थी, और तुम्हारा अभिनय इतना अच्छा था कि तुम्हें कोई पुरस्कार मिल सकता था। तुमने मुझे चित्रलिपि में लिखी चेतावनियों की एक अजीब कहानी सुनाई, फिर खुद पर से शक हटाने के लिए एक डकैती का नाटक रचा। फिर तुमने प्रतुल दत्ता के घर में चोरी करवाई, और उसकी कुछ चीजें अपनी हो गईं। मुझे बताओ, तुम्हारे घर में जो लड़का हमने देखा था, वह वही दूसरा भिखारी लड़का था, है ना? वही जो गाना गाता था?’
नीलमोनी बाबू ने चुपचाप सिर हिलाया। 'हाँ, वो लड़का गाता था,' फेलुदा ने आगे कहा, 'और बौना खंजनी बजाता था। तुम्हारा कोई भतीजा था ही नहीं। ये सब तुमने मनगढ़ंत कहानी बनाई है। तुमने उस लड़के को जबरदस्ती अपने घर में रखा है, है ना, ताकि वो तुम्हारे कुकर्मों में तुम्हारी मदद करे? मुझे अब पता चल गया है, पर इसे समझने में मुझे थोड़ा समय लगा। लड़के और बौने को एक साथ भेजा गया था। बौना प्रतुल दत्ता के घर में गायब हो गया, खंजनी गायक के पास छोड़कर, जो उसे बजाता रहा। बौना जाहिर तौर पर बंगशालोचन से निपटने के लिए काफी शक्तिशाली था। वाकई, ये एक शानदार योजना थी। श्री सान्याल, सारी बारीकियों की योजना बनाने के लिए मैं आपको पूरे नंबर देता हूँ।'
नीलमोनी बाबू ने आह भरी। उन्होंने कहा, 'सच तो यह है कि मैं प्राचीन मिस्र के प्रति आसक्त हो गया था। मैंने उस काल का गहन अध्ययन किया है। मैं यह सोच भी नहीं सकता था कि प्रतुल दत्ता मिस्र की उन कलाकृतियों को अपने पास रखे रहें। मुझे उन्हें हर हाल में हासिल करना था।'

“अच्छा, श्रीमान सान्याल, अब आप देख चुके हैं कि लालच और प्रलोभन आपको कहाँ ले जा सकते हैं। मुझे आपसे बस एक और बात पूछनी है।”
'यह क्या है?'
‘मेरा इनाम।’
निलमोनी बाबू ने फेलूदा को घूरकर देखा।
'इनाम?'
‘हां। अनुबिस की वह मूर्ति आपके पास ही है, है ना?’
नीलमोनी बाबू ने बड़ी नादानी से अपना हाथ जेब में डाला। फिर उन्होंने उसे बाहर निकाला और अपने हाथों में मिस्र के मृत्यु देवता अनुबिस की चार हज़ार साल पुरानी मूर्ति पकड़ी हुई थी। मूर्ति पर जड़े पत्थर सूर्य की रोशनी में चमक रहे थे।
फेलुदा ने हाथ बढ़ाकर नीलमोनी बाबू से मूर्ति ले ली। उन्होंने कहा, 'धन्यवाद।'
नीलमोनी बाबू कुछ बोल नहीं पा रहे थे, जैसे कुछ निगल ही रहे हों। पुलिस अधिकारी ने उन्हें धीरे से जीप की ओर धकेल दिया।

गंगटोक में अशांति

एक

कुछ देर पहले तक खिड़की से बाहर पीली धरती को निहारना संभव था, जो रेशमी रिबन जैसी दिखने वाली नदियों से घिरी हुई थी और जिसमें छोटे-छोटे प्यारे गाँव बसे हुए थे। लेकिन अब बादलों के भूरे गुच्छों ने उस दृश्य को पूरी तरह ढक लिया था। इसलिए मैंने खिड़की से नज़रें हटा लीं और विमान में अपने सहयात्रियों को देखने लगी।
मेरे बगल में फेलूदा अंतरिक्ष यात्रा पर एक किताब में डूबा बैठा था। वह हमेशा बहुत पढ़ता था, लेकिन मैंने उसे कभी एक ही विषय पर लिखी दो किताबें एक के बाद एक पढ़ते नहीं देखा था। कल ही, घर पर, वह तकला मकान रेगिस्तान के बारे में कुछ पढ़ रहा था। उससे पहले, उसने अंतरराष्ट्रीय व्यंजनों पर एक किताब और लघु कथाओं की एक और किताब खत्म की थी। उसका हमेशा से मानना था कि एक जासूस के लिए जितना हो सके उतना सामान्य ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है। कौन जाने, एक दिन क्या काम आ जाए?
मेरे ठीक सामने तिरछे में दो आदमी बैठे थे। उनमें से एक मुश्किल से दिखाई दे रहा था। मैं बस उसका दाहिना हाथ और उसकी नीली पतलून का एक हिस्सा ही देख पा रहा था। वह अपनी एक उंगली अपने घुटने पर थपथपा रहा था। शायद वह धीरे- धीरे गा रहा था। हमारे करीब बैठे दूसरे सज्जन का चेहरा चमकीला और सलीकेदार था। उनके सफ़ेद होते बालों से लग रहा था कि उनकी उम्र चालीस के आसपास होगी, लेकिन इसके अलावा वे काफी तंदुरुस्त दिख रहे थे। वे बड़े ध्यान से 'स्टेट्समैन' अखबार पढ़ रहे थे। फेलुदा उस आदमी के बारे में बहुत कुछ अंदाज़ा लगा सकता था, लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद मैं कुछ भी नहीं सोच पाया।
‘तुम किस बात को घूर रहे हो?’ फेलुदा ने दबी आवाज़ में पूछा, जिससे मैं काफी चौंक गया। फिर उसने उस आदमी पर तिरछी नज़र डाली और कहा, ‘यह उतना मोटा नहीं है जितना हो सकता था। आखिर, यह बहुत खाता है, है ना?’

जी हाँ, बिल्कुल। अब मुझे याद आया कि मैंने उसे पिछले एक घंटे में एयर होस्टेस से दो कप चाय मांगते हुए देखा था, जिसके साथ उसने आधा दर्जन बिस्कुट खाए थे।
मैंने उत्सुकता से पूछा, 'आप मुझे उनके बारे में और क्या बता सकते हैं?' उन्हें हवाई यात्रा की आदत है।
'आप यह कैसे जानते हैं?'
'कुछ मिनट पहले हमारा विमान एक वायु अवरोध में फिसल गया था, याद है?'
'ओह हां। मुझे बहुत अजीब सा महसूस हुआ! मेरे पेट में मरोड़ उठने लगी।'
'हां, और सिर्फ आप ही नहीं थे। हमारे आसपास के कई अन्य लोग भी बेचैन हो गए थे, लेकिन उस सज्जन ने अपने अखबार से अपनी नजरें तक नहीं उठाईं।'
'और कुछ?'
उसके पीछे के बाल बिखरे हुए हैं।
'इसलिए?'
‘प्लेन में वह एक बार भी अपनी सीट पर पीछे नहीं झुका। वह पूरी यात्रा के दौरान सीधा बैठा रहा, या तो पढ़ रहा था या चाय पी रहा था। तो जाहिर है कि दम दम में—’
'ओह, अब समझ आया! दमदम हवाई अड्डे पर उनके पास कुछ खाली समय तो रहा होगा, कम से कम इतना तो कि वे सोफे पर आराम से बैठ सकें। इसीलिए उनके बाल बिखरे हुए हैं।'
'बहुत बढ़िया। अब आप मुझे बताइए कि वह भारत के किस हिस्से से आता है।'
‘यह बहुत मुश्किल है, फेलुदा। उसने सूट पहना हुआ है और वह अंग्रेजी अखबार पढ़ रहा है। वह बंगाली, पंजाबी, गुजराती या महाराष्ट्रीयन, कुछ भी हो सकता है!’
फेलुदा ने नापसंदगी जताते हुए अपनी जीभ चटकाई। 'तुम कभी ठीक से देखना नहीं सीखोगे, है ना? उसके दाहिने हाथ पर क्या है?'
‘खबर—नहीं, नहीं, मैं समझ गया। उसने अंगूठी पहनी हुई है।’
और अंगूठी क्या कहती है?
मुझे आंखें सिकोड़कर ध्यान से देखना पड़ा। तब मैंने देखा कि सोने की अंगूठी के बीचोंबीच एक शब्द खुदा हुआ था: 'मां'। वह आदमी जरूर बंगाली रहा होगा।

मैं फेलुदा से अन्य यात्रियों के बारे में पूछना चाहता था, लेकिन तभी घोषणा हुई कि हम बागडोगरा पहुँचने वाले हैं। 'कृपया अपनी सीट बेल्ट बांध लें और धूम्रपान निषेध के संकेत का पालन करें।'
हम सिक्किम की राजधानी गंगटोक जा रहे थे। हम दोबारा दार्जिलिंग भी जा सकते थे, जहाँ हम गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने दो बार जा चुके थे। लेकिन आखिरी समय में फेलूदा ने गंगटोक जाने का सुझाव दिया, जो काफी दिलचस्प लगा। बाबा को बैंगलोर दौरे पर जाना था, इसलिए वे हमारे साथ नहीं आ सके। बाबा ने मुझसे कहा, 'तुम और फेलू अकेले जा सकते हो। मुझे यकीन है कि फेलू दो हफ्ते की छुट्टी ले सकता है। कलकत्ता की भीषण गर्मी में अपनी छुट्टियाँ बर्बाद मत करो।'
फेलुदा ने गंगटोक जाने का सुझाव शायद इसलिए दिया था क्योंकि उन्होंने हाल ही में तिब्बत के बारे में बहुत कुछ पढ़ा था (मैंने भी स्वेन हेडिन का यात्रा वृत्तांत पढ़ा था)। सिक्किम पर तिब्बती संस्कृति का गहरा प्रभाव था। सिक्किम के राजा तिब्बती थे, सिक्किम के गुंफाओं में अक्सर तिब्बती भिक्षु दिखाई देते थे, और कई तिब्बती शरणार्थी सिक्किम के गांवों में रहते थे। इसके अलावा, तिब्बती संस्कृति के कई पहलू—उनका संगीत, नृत्य, वेशभूषा और भोजन—सिक्किम में स्पष्ट रूप से दिखाई देते थे। गंगटोक जाने का मौका मिलते ही मैंने तुरंत हां कर दी। वैसे भी, अगर मुझे फेलुदा के साथ जाने का मौका मिलता, तो मैं दुनिया में कहीं भी खुशी-खुशी चला जाता।
हमारा विमान सुबह 7:30 बजे बागडोगरा में उतरा। बाबा ने हमारे लिए यहाँ एक जीप का इंतज़ाम किया था। लेकिन उसमें बैठने से पहले, हम नाश्ता करने के लिए हवाई अड्डे के रेस्तरां में गए। गंगटोक पहुँचने में हमें कम से कम छह घंटे लगेंगे। अगर सड़कें खराब हुईं, तो और भी ज़्यादा समय लग सकता है। हालाँकि, अप्रैल का मध्य ही था, इसलिए उम्मीद थी कि भारी बारिश शुरू नहीं हुई होगी। इसलिए सड़कें अच्छी हालत में होनी चाहिए।
मैंने एक आमलेट खत्म कर लिया था और मछली फ्राई खाना शुरू ही किया था कि तभी मैंने देखा कि वही सज्जन, जो मुझे हवाई जहाज में मिले थे, बगल वाली मेज से उठे और मुस्कुराते हुए हमारी मेज की ओर आ गए। उन्होंने रुमाल से अपना मुंह पोंछते हुए पूछा, 'क्या आप कांग हैं, या डांग, या गैंग?'

मैं मुंह से कुछ इंच की दूरी पर मछली का एक टुकड़ा पकड़े हुए घूर रहा था। आखिर इस आदमी का मतलब क्या था? वह कौन सी भाषा बोल रहा था? या यह किसी प्रकार का सांकेतिक शब्द था?
लेकिन फेलुदा ने मुस्कुराते हुए तुरंत जवाब दिया, 'हम गैंग हैं।'
'ओह अच्छा। क्या आपके पास जीप है? मतलब, अगर है तो क्या मैं आपके साथ आ सकता हूँ? मैं अपना हिस्सा दे दूँगा, बिल्कुल।'
‘स्वागत है,’ फेलुदा ने कहा, और आखिरकार मुझे समझ आया कि कांग का मतलब कलिम्पोंग, डांग का मतलब दार्जिलिंग और गैंग का मतलब गंगटोक था। मुझे भी हंसी आ गई।
‘धन्यवाद,’ उस व्यक्ति ने कहा। ‘मेरा नाम ससाधर बोस है।’
'आपसे मिलकर खुशी हुई, श्री बोस। मैं प्रदोष मित्र हूं और यह मेरा चचेरा भाई तपेश है।'
‘हेलो, तपेश। क्या आप दोनों यहां छुट्टियां मनाने आए हैं?’
'हाँ।'
मुझे गंगटोक बहुत पसंद है। क्या आप पहले कभी वहां गए हैं?
'नहीं।'
'आप कहां ठहरेंगे?'
‘हमने कहीं कमरा बुक किया है, मुझे लगता है होटल का नाम स्नो व्यू है,’ फेलुदा ने जवाब दिया और वेटर को बिल लाने का इशारा करते हुए श्री बोस को एक चारमीनार सिगरेट पेश की। फिर उन्होंने खुद भी एक सिगरेट जलाई।
श्री बोस ने हमसे कहा, ‘मैं गंगटोक को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। दरअसल, मैंने सिक्किम के हर कोने की यात्रा की है—लाचेन, लाचुंग, नामचे, नाथुला, बस नाम ही ले लो! यह सचमुच बहुत सुंदर है। यहाँ का नज़ारा अद्भुत है और सब कुछ बेहद शांत है। यहाँ पहाड़ हैं, नदियाँ हैं, फूल हैं—यहाँ ऑर्किड भी मिलते हैं—और तेज़ धूप, बारिश और कोहरा... प्रकृति अपने पूरे वैभव में है। इस जगह को पूरी तरह स्वर्ग बनने से रोकने वाली एकमात्र चीज़ यहाँ की सड़कें हैं। देखिए, यहाँ के कुछ पहाड़ अभी भी बढ़ रहे हैं। मेरा मतलब है, वे अभी अपेक्षाकृत युवा हैं, और इसलिए चंचल हैं। आप जानते ही हैं कि युवा कैसे होते हैं, है ना... हा हा हा!’
‘आपका मतलब है कि इन पहाड़ों के कारण भूस्खलन होता है?’

हाँ, और यह वाकई बहुत परेशानी का सबब बन सकता है। यात्रा के बीच में अचानक सड़क पूरी तरह से बंद हो सकती है। फिर इसका मतलब है चट्टानों को तोड़कर रास्ता बनाना, सड़क का पुनर्निर्माण करना, गंदगी साफ करना... अंतहीन समस्याएं। लेकिन यहाँ की सेना हमेशा सतर्क रहती है और बहुत कुशल है। इसके अलावा, अभी तक बारिश शुरू नहीं हुई है, इसलिए मुझे नहीं लगता कि आज हमें कोई समस्या होगी। वैसे भी, मुझे आपका साथ पाकर बहुत खुशी होगी। मुझे अकेले यात्रा करना बिल्कुल पसंद नहीं है।
क्या आप भी यहां छुट्टी मनाने आए हैं?
‘अरे नहीं,’ श्री बोस हँसे, ‘मैं यहाँ काम के सिलसिले में आया हूँ। लेकिन मेरा काम थोड़ा अजीब है। मुझे सुगंधित पौधों की खोज करनी है।’
क्या आप परफ्यूम की दुकान चलाते हैं?
जी हां, बिल्कुल सही। मेरी कंपनी रसायन उद्योग में काम करती है। अन्य चीजों के अलावा, हम पौधों से अर्क निकालते हैं। हमें जिन पौधों की आवश्यकता होती है, उनमें से कुछ सिक्किम में उगते हैं। मैं उन्हें लेने आया हूं। मेरा व्यापारिक साझेदार पहले से ही यहां है। वह एक सप्ताह पहले आया था। उसके पास वनस्पति विज्ञान की डिग्री है और वह पौधों के बारे में अच्छी जानकारी रखता है। मुझे उसके साथ यात्रा करनी थी, लेकिन मेरे भतीजे की शादी आ गई। इसलिए मुझे उसमें शामिल होने के लिए घाटशिला जाना पड़ा। मैं कल रात ही कलकत्ता लौटा हूं।
फेलुदा ने बिल का भुगतान किया। हमने अपना सामान उठाया और श्री बोस के साथ अपनी जीप की ओर चलने लगे।
‘आप कहाँ रहते हैं?’ फेलुदा ने पूछा।
‘बॉम्बे। यह कंपनी अब बीस साल पुरानी है। मैंने सात साल पहले इसमें काम शुरू किया था। एस. एस. केमिकल्स। शिवकुमार शेल्वनकर। कंपनी उन्हीं के नाम पर है।’
कुछ ही मिनटों में हम रवाना हो गए। बागडोगरा से हमें सिलीगुड़ी जाना था, जहाँ हमें सेवक रोड ढूँढनी थी। यह सड़क पहाड़ियों से होकर टेढ़े-मेढ़े रास्तों से गुज़रती थी। अंत में यह हमें रोंगपो नामक स्थान पर ले जाती, जहाँ पश्चिम बंगाल की सीमा समाप्त होती थी और सिक्किम की सीमा शुरू होती थी।

रोंगपो जाते समय हमें तीस्ता नदी पर बने एक विशाल पुल को पार करना पड़ा। पुल के दूसरी ओर तीस्ता बाज़ार नाम का एक बाज़ार था। हमने यहाँ थोड़ी देर आराम किया। तब तक सूरज निकल चुका था और हम सबको थोड़ी गर्मी लग रही थी। श्री बोस ने पूछा, ‘क्या आप कोका-कोला लेना चाहेंगे?’ फेलुदा और मैंने दोनों ने हाँ कहा और जीप से उतर गए। श्री बोस ने बताया कि दो साल पहले यह पूरा इलाका एक विनाशकारी बाढ़ में तबाह हो गया था। पुल समेत सभी इमारतें और अन्य संरचनाएँ नई थीं।
जब तक मैंने अपनी कोका-कोला की बोतल खत्म की, श्री बोस दो बोतलें खाली कर चुके थे। जब हम बोतलें लौटाने गए, तो हमने देखा कि ठंडे पेय बेचने वाले स्टॉल के पास एक जीप खड़ी है। कुछ लोग उसके पास खड़े होकर उत्साह से बातें कर रहे थे। जीप दूसरी तरफ से आई थी और शायद सिलीगुड़ी जा रही थी। अचानक हम सभी ने 'दुर्घटना' शब्द सुना और उनसे पूछने गए कि क्या हुआ था। उन्होंने हमें बताया कि एक हफ्ते पहले गंगटोक में भारी बारिश हुई थी। हालांकि कोई बड़ा भूस्खलन नहीं हुआ था, लेकिन किसी तरह पहाड़ से एक भारी चट्टान लुढ़क कर गुजर रही जीप पर गिर गई, जिससे उसमें बैठे यात्री की मौत हो गई। जीप पांच सौ फीट नीचे एक खाई में गिर गई। वह पूरी तरह से नष्ट हो गई। इनमें से किसी को भी मृतक के बारे में पता नहीं था।
‘किस्मत,’ फेलुदा ने कहा। ‘इसे और क्या कह सकते हैं? उस आदमी की मौत तय थी, वरना पहाड़ से एक छोटा सा पत्थर फिसलकर उसकी जीप पर क्यों गिरता? ऐसे हादसे बेहद दुर्लभ होते हैं।’
श्री बोस ने कहा, 'लाखों में एक मौका।' जीप में वापस बैठते हुए उन्होंने आगे कहा, 'पहाड़ों पर नज़र रखना, महोदय। सावधानी कभी कम नहीं होती।' हालांकि, तीस्ता नदी पार करने के तुरंत बाद नज़ारा इतना खूबसूरत हो गया कि मैं दुर्घटना के बारे में सब कुछ भूल गया। रोंगपो से गुज़रते समय हल्की बारिश हुई। जैसे ही हम तीन हज़ार फीट की ऊंचाई पर चढ़े, नीचे घाटी से कोहरा उठने लगा, जिससे हमें ठंड लगने लगी। हमने सूटकेस से ऊनी कपड़े निकालने के लिए थोड़ी देर के लिए गाड़ी रोकी। मैंने देखा कि श्री बोस ने एयर इंडिया के बैग से एक नीला पुलओवर निकाला और पहन लिया।
धीरे-धीरे, कोहरे के बीच से, मुझे पहाड़ियों के बीच घरों की धुंधली रूपरेखा दिखाई देने लगी। अधिकतर घर चीनी शैली के प्रतीत हो रहे थे। श्री बोस ने

कहा, 'हम यहाँ पहुँच गए। हमें पाँच घंटे से भी कम समय लगा। हम बहुत भाग्यशाली हैं।'
हमारे सामने गंगटोक शहर फैला हुआ था। हमारी जीप बड़ी सावधानी से उसकी गलियों से गुज़री, एक सैन्य शिविर, लकड़ी की बालकनियों और फूलों के गमलों वाले प्यारे-प्यारे छोटे-छोटे घर, रंग-बिरंगे कपड़े पहने पुरुषों और महिलाओं के समूह, और अंत में स्नो व्यू होटल के सामने आकर रुक गई। मुझे पता था कि गलियों में मौजूद लोग सिर्फ सिक्किम से ही नहीं थे। उनमें से कई नेपाल, भूटान या तिब्बत से भी थे।
श्री बोस ने बताया कि वे डाक बंगले में ठहरे हुए हैं। उन्होंने कहा, 'मैं खुद ही वहाँ पहुँच जाऊँगा, चिंता मत कीजिए।' उन्होंने आगे कहा, 'बहुत-बहुत धन्यवाद। हम ज़रूर फिर मिलेंगे। इस जैसी छोटी जगह में तो हर दिन एक-दूसरे से मुलाक़ात होना लगभग नामुमकिन है।'
‘खैर, चूंकि हम गंगटोक में आपके अलावा किसी को नहीं जानते, मुझे नहीं लगता कि इसमें कोई समस्या होगी। अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं आज शाम आपके डाक बंगले में आऊंगा,’ फेलुदा ने कहा।
बहुत खूब। मुझे इसका इंतजार रहेगा। अलविदा।
श्री बोस ने हाथ हिलाकर धुंध में गायब हो गए।

दो

हालांकि हमारे होटल का नाम स्नो व्यू था और पीछे के कमरों से कंचनजंगा का नज़ारा दिखना चाहिए था, लेकिन जिस दिन हम पहुँचे, उस दिन हमें बर्फ़ देखने को नहीं मिली, क्योंकि कोहरा बिल्कुल भी नहीं छटा। होटल में मौजूद अन्य मेहमानों में शायद एक ही बंगाली सज्जन थे। मैंने उन्हें दोपहर के भोजन के समय भोजन कक्ष में देखा, लेकिन उनसे बाद में ही मुलाकात हो पाई।
दोपहर के भोजन के बाद हम बाहर निकले और हमें एक पान की दुकान मिल गई। फेलुदा हमेशा दोपहर के भोजन के बाद पान खाता था, हालाँकि उसने माना कि उसे गंगटोक में ऐसी दुकान मिलने की उम्मीद नहीं थी। हमारे होटल के बाहर की मुख्य सड़क काफी चौड़ी थी। सड़क के बीचोंबीच कई बसें, लॉरी और स्टेशन वैगन खड़ी थीं। दोनों ओर तरह-तरह की दुकानें थीं। यह स्पष्ट था कि भारत के लगभग हर कोने से व्यापारी सिक्किम आए हुए थे। कई मायनों में यह दार्जिलिंग जैसा था, सिवाय इसके कि सड़कों पर लोगों की संख्या कम थी, जिससे यह जगह शांत और साफ-सुथरी बनी रहती थी।
पान की दुकान से बाहर निकलते ही हम सोच रहे थे कि आगे कहाँ जाएँ, तभी अचानक कोहरे में से श्री बोस की आकृति दिखाई दी। वे तेज़ी से हमारे होटल की ओर आते हुए प्रतीत हुए। जैसे ही वे पास आए, फेलुदा ने उन्हें हाथ हिलाकर अभिवादन किया। उन्होंने अपनी गति बढ़ाई और कुछ ही पलों में हमारे साथ आ गए।
‘विनाश!’ उसने हांफते हुए कहा।
'क्या हुआ?'
‘वह दुर्घटना... क्या आप जानते हैं कि वह कौन था?’
मुझे भय से जकड़न महसूस हुई। श्री बोस के अगले शब्दों ने मेरे डर की पुष्टि कर दी। उन्होंने कहा, 'यह एसएस था, मेरा साथी।'
‘क्या! वह कहाँ जा रहा था?’
‘कौन जाने? कितनी भयानक आपदा होगी, श्री मिटर!’
क्या उसकी तुरंत मृत्यु हो गई?

नहीं। अस्पताल ले जाने के बाद वह कुछ घंटों तक जीवित रहे। उनकी कई हड्डियां टूटी हुई थीं। जाहिर तौर पर उन्होंने मुझे पुकारा। उन्होंने कुछ बार "बोस, बोस" कहा। बस इतना ही।
‘आपको कैसे पता चला?’ फेलूदा ने होटल की ओर लौटते हुए पूछा। हम भोजन कक्ष में गए। श्री बोस जल्दी से बैठ गए और रुमाल से अपना चेहरा पोंछा। उन्होंने जवाब दिया, ‘दरअसल, यह एक लंबी कहानी है। देखिए, चालक बच गया। हुआ ये कि जब चट्टान जीप से टकराई, तो चालक ने नियंत्रण खो दिया। मेरा मानना है कि चट्टान इतनी बड़ी नहीं थी, लेकिन चालक को पता नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है, इसलिए जीप एक तरफ झुक गई, किनारे से नीचे खाई में गिर गई। हालांकि, चालक ऐन मौके पर कूदने में कामयाब रहा। उसे बस एक आँख के ऊपर मामूली चोट आई। लेकिन जब तक वह उठ खड़ा हुआ, जीप शेल्वंकर के साथ गायब हो चुकी थी। यह घटना उत्तरी सिक्किम राजमार्ग पर हुई। चालक गंगटोक वापस जाने लगा। रास्ते में उसे नेपाली मजदूरों का एक समूह मिला, जिन्होंने उसे वापस घटनास्थल पर जाकर शेल्वंकर को बचाने में मदद की। सौभाग्य से, एक सेना का ट्रक वहाँ से गुजर रहा था, इसलिए वे उसे लगभग तुरंत अस्पताल ले जा सके। लेकिन... खैर... बागडोगरा से हमारे साथ आए हंसमुख और बातूनी व्यक्ति का कोई अता-पता नहीं था। श्री बोस स्तब्ध और बेहद परेशान लग रहे थे।
‘उसके शरीर का क्या हुआ?’ फेलुदा ने नरमी से पूछा।
इसे बॉम्बे भेजा गया। यहाँ के अधिकारियों ने वहाँ उसके भाई से संपर्क किया। एसएस ने दो बार शादी की थी, लेकिन दोनों पत्नियाँ मर चुकी हैं। उसकी पहली शादी से एक बेटा था, जिसने उससे झगड़ा किया और चौदह साल पहले घर छोड़ दिया। खैर, यह एक अलग कहानी है। एसएस अपने बेटे से बहुत प्यार करता था; उसने उससे संपर्क करने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह बिना किसी निशान के गायब हो गया था। इसलिए उसका भाई ही उसका एकमात्र वारिस था। उसने पोस्टमार्टम की अनुमति नहीं दी। शव को अगले दिन बॉम्बे भेज दिया गया।
'कब की बात है ये?'
'ग्यारह तारीख की सुबह। वह सात तारीख को गंगटोक पहुंचे थे। सच कहूं तो, श्री मिटर, मुझे इस पर विश्वास करना मुश्किल हो रहा है। काश मैं उनके साथ होती... तो हम इस त्रासदी से बच सकते थे।'
‘अब आपकी क्या योजनाएँ हैं?’

खैर, अब यहाँ रुकने का कोई फायदा नहीं है। मैंने एक ट्रैवल एजेंट से बात कर ली है। मुझे उम्मीद है कि मैं कल मुंबई वापस जा सकूँगा।’ वह उठा। ‘चिंता मत कीजिए, कृपया। आप यहाँ मौज-मस्ती करने आए हैं, इसलिए मुझे उम्मीद है कि आप करेंगे। जाने से पहले आपसे मिलूँगा।’
श्री बोस चले गए। फेलुदा चुपचाप बैठे रहे, खाली जगह को घूरते हुए और माथे पर शिकन लिए। फिर उन्होंने धीरे से वही शब्द दोहराए जो श्री बोस ने आज सुबह कहे थे: 'लाखों में एक मौका... लेकिन फिर, किसी पर बिजली भी गिर सकती है। यह भी कम आश्चर्यजनक नहीं है।'
मैंने पहले जिस बंगाली सज्जन को देखा था, वे पास की मेज पर अखबार पढ़ रहे थे। श्री बोस के जाते ही उन्होंने अखबार को बड़े करीने से मोड़ा और हमारे पास आकर बैठ गए। बगल वाली कुर्सी पर बैठते हुए उन्होंने फेलुदा से कहा, 'नमस्कार। सिक्किम की गलियों में कुछ भी हो सकता है। आप तो आज सुबह ही आए हैं, है ना?'
‘हम्म,’ फेलुदा ने कहा। मैंने उस आदमी को ध्यान से देखा। वह लगभग पैंतीस साल का लग रहा था। उसकी आँखें रंगीन चश्मे से थोड़ी ढकी हुई थीं। उसकी नाक के ठीक नीचे एक छोटी, चौकोर मूंछ थी, जिसे कभी तितली मूंछ कहा जाता था। आजकल बहुत कम लोग इसे रखते हैं।
श्री शेल्वनकर एक अत्यंत मिलनसार व्यक्ति थे।
‘क्या तुम उसे जानते थे?’ फेलुदा ने पूछा।
'घनिष्ठ रूप से नहीं, नहीं। लेकिन जितना मैंने उन्हें देखा, उससे वे बहुत मिलनसार प्रतीत हुए। उन्हें कला में रुचि थी। उन्होंने अपनी मृत्यु से मात्र दो दिन पहले मुझसे एक तिब्बती मूर्ति खरीदी थी।'
क्या वह इस तरह की चीजों का संग्रहकर्ता था?
मुझे नहीं पता। एक दिन मैंने उन्हें आर्ट एम्पोरियम में कई चीज़ें देखते हुए पाया। तो मैंने उन्हें बताया कि मेरे पास यह मूर्ति है। उन्होंने मुझसे इसे डाक बंगले में लाने को कहा। जब मैंने उन्हें वहाँ यह मूर्ति दिखाई, तो उन्होंने इसे तुरंत खरीद लिया। खैर, यह एक अनमोल चीज़ थी। इसके नौ सिर और चौंतीस हाथ थे। मेरे दादाजी इसे तिब्बत से लाए थे।
‘मैं समझ गया।’ फेलुदा की आवाज़ थोड़ी सख्त और औपचारिक थी। लेकिन मुझे यह आदमी काफी दिलचस्प लगा, खासकर वह मुस्कान जो हमेशा उसके होठों पर छाई रहती

थी। ऐसा लगता था मानो श्री शेल्वंकर की मृत्यु ने भी उसे आनंदित कर दिया हो।
उन्होंने कहा, 'मेरा नाम निशिकांतो सरकार है।'
फेलुदा ने नमस्कार करते हुए हाथ उठाए लेकिन अपना परिचय नहीं दिया।
श्री सरकार ने आगे कहा, ‘मैं दार्जिलिंग में रहता हूँ। हम तीन पीढ़ियों से वहीं रह रहे हैं। लेकिन आपको इस पर यकीन करना मुश्किल लगेगा, है ना? मेरा मतलब है, मुझे ही देख लीजिए, मैं कितना सांवला हूँ!’
फेलुदा ने बिना कुछ कहे विनम्रता से मुस्कुरा दिया। श्री सरकार घबराए नहीं। उन्होंने कहा, 'मैं दार्जिलिंग और कालिम्पोंग को अच्छी तरह जानता हूँ। लेकिन सिक्किम की यह मेरी पहली यात्रा है। मुझे लगता है कि गंगटोक के पास कई दिलचस्प जगहें हैं। क्या आपने उन्हें देख लिया है?'
नहीं। हम सिक्किम में बिल्कुल नए हैं, बिल्कुल आपकी तरह।
‘अच्छा,’ श्री सरकार मुस्कुराए। ‘आप यहाँ कुछ समय के लिए रुकने वाले हैं, है ना? हम साथ में घूम सकते हैं। चलिए एक दिन पेमियांगची चलते हैं। मैंने सुना है कि वह बहुत सुंदर इलाका है।’
‘पेमियांगची? आपका मतलब उस जगह से है जहाँ सिक्किम की पुरानी राजधानी के खंडहर हैं?’
‘महोदय, केवल खंडहर ही नहीं। मेरी गाइड बुक के अनुसार, यहाँ एक जंगल है, ब्रिटिश काल में बने पुराने डाक बंगले हैं, गुम्फा हैं, कंचनजंगा का एक शानदार दृश्य है—आपको और क्या चाहिए?’
'अगर हमें मौका मिला तो हम जरूर जाना चाहेंगे,' फेलुदा ने कहा और खड़ा हो गया।
'क्या तुम बाहर जा रहे हो?'
'हां, बस टहलने के लिए। क्या हर बार बाहर जाते समय ताला लगाना जरूरी है?' “जी हां, होटल में ऐसा करना हमेशा ही उचित होता है। लेकिन इन इलाकों में चोरी के मामले बहुत कम होते हैं। सिक्किम में सिर्फ एक ही जेल है, और वह यहीं गंगटोक में है। वहां बंद अपराधियों की कुल संख्या आधे दर्जन से भी कम होगी!”
हम एक बार फिर होटल से बाहर निकले, लेकिन देखा कि कोहरा अभी तक छटा नहीं था। फेलुदा ने दुकानों पर यूं ही नज़र डाली और कहा, 'हमें अपने लिए मज़बूत

जूते खरीदने चाहिए थे। अगर बारिश हुई और सड़कें कीचड़ भरी और फिसलन भरी हो गईं तो ये जूते किसी काम के नहीं रहेंगे।'
क्या हम यहाँ से कुछ जूते नहीं खरीद सकते?
'हां, शायद हम जा सकते हैं। मुझे यकीन है कि बाटा की गंगटोक में एक शाखा होगी। हम शाम को उसे ढूंढ सकते हैं। अभी मुझे लगता है कि हमें इस जगह का पता लगाना चाहिए।'
बाज़ार से मुख्य कस्बे की ओर जाने वाली सड़क ऊपर की ओर जाती थी। जैसे-जैसे हम इस सड़क पर आगे बढ़ते गए, लोगों और घरों की संख्या काफी कम होती गई। राहगीरों में से अधिकांश वर्दी पहने स्कूली बच्चे थे। दार्जिलिंग के विपरीत, यहाँ कोई भी घोड़े पर सवार नहीं था। जीपें अक्सर चलती रहती थीं, संभवतः सेना शिविर के कारण। गंगटोक से सोलह मील दूर, चौदह हज़ार फीट की ऊंचाई पर, नाथुला स्थित था। यहीं पर भारतीय सीमा समाप्त होती थी। नाथुला के दूसरी ओर, पचास गज की दूरी पर, चीनी सेना तैनात थी।
कुछ मिनट बाद, हम एक चौराहे पर पहुँचे और अचानक रंगों की एक चमक देखकर चौंक गए। ध्यान से देखने पर पता चला कि धुंध में एक आदमी खड़ा था—संभवतः एक यूरोपीय—जो सिर से पैर तक बेहद रंगीन कपड़ों में लिपटा हुआ था: पीले जूते, नीली जींस, एक चमकीला लाल स्वेटर, जिसके भीतर से हरी शर्ट की कफ़ झाँक रही थी। उसके गले में एक काला और सफेद स्कार्फ लिपटा हुआ था। उसकी गोरी त्वचा पर हल्का सा रंग चढ़ना शुरू हो गया था।
उसकी दाढ़ी उसके चेहरे के अधिकांश हिस्से को ढके हुए थी, लेकिन वह फेलुदा की ही उम्र का लग रहा था—लगभग तीस साल से थोड़ा कम। वह कौन था? क्या वह कोई हिप्पी हो सकता था?
उन्होंने हमें दोस्ताना नजर से देखा और कहा, 'हैलो।'
‘नमस्कार,’ फेलुदा ने उत्तर दिया।
अब मैंने देखा कि उसके कंधे पर एक चमड़े का थैला लटका हुआ था, साथ में दो कैमरे भी थे, जिनमें से एक कैनन का था। फेलुदा के पास भी एक जापानी कैमरा था। शायद हिप्पी ने इसे देख लिया था, क्योंकि उसने कहा, 'रंगों के लिए बढ़िया दिन है।'
फेलुदा हँस पड़ा। 'जब मैंने तुम्हें दूर से देखा, तो मुझे भी ठीक यही ख्याल आया था। लेकिन देखो, भारत में रंगीन फिल्म इतनी महंगी है कि इसे बेधड़क इस्तेमाल करने से पहले दो बार सोचना पड़ता है।'

‘हाँ, मुझे पता है। लेकिन मेरे पास स्टॉक में कुछ हैं। अगर आपको ज़रूरत हो तो मुझे बता देना।’ मैंने यह समझने की कोशिश की कि वह किस देश से हो सकता है। उसकी आवाज़ अमेरिकी जैसी नहीं थी; न ही उसमें ब्रिटिश या फ्रेंच लहजा था।
‘क्या आप यहां छुट्टी मनाने आए हैं?’ फेलुदा ने उससे पूछा।
नहीं, ऐसा नहीं है। मैं यहाँ तस्वीरें लेने आया हूँ। मैं सिक्किम पर एक किताब लिख रहा हूँ। मैं एक पेशेवर फोटोग्राफर हूँ।
आप यहां कितने समय तक रहेंगे?
‘मैं पांच दिन पहले, नौ तारीख को आया था। मेरा मूल वीजा केवल तीन दिनों के लिए था। मैंने इसे बढ़वाने में कामयाबी हासिल कर ली। मैं एक और सप्ताह रुकना चाहूंगा।’
'आप कहाँ रहते हैं?'
‘डाक बंगला। दाईं ओर यह सड़क दिख रही है? डाक बंगला इसी सड़क पर है, यहाँ से बस कुछ ही मिनटों की दूरी पर।’
मैंने चौकन्ने होकर कान लगाए। श्री शेल्वंकर भी उसी जगह रुके थे।
'आप उस सज्जन से अवश्य मिले होंगे जिनकी हाल ही में उस दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी—' फेलुदा ने बात शुरू की।
“हाँ, यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण था,” हिप्पी ने उदास होकर सिर हिलाया। “मैं उन्हें अच्छी तरह जानता था। वे एक नेक इंसान थे, और—” वह रुक गया। फिर उसने लगभग खुद से कहा, “बहुत अजीब!” वह थोड़ा चिंतित लग रहा था।
‘क्या हुआ?’ फेलुदा ने पूछा।
‘श्री शेल्वनकर ने यहां एक बंगाली सज्जन से तिब्बती प्रतिमा खरीदी। उन्होंने इसके लिए एक हजार रुपये का भुगतान किया।’
'एक हजार!'
“जी हाँ। अगले दिन वह इसे स्थानीय तिब्बती संस्थान ले गया। उन्होंने कहा कि यह कला का एक दुर्लभ और अनमोल नमूना है। लेकिन—” वह आदमी फिर रुक गया और कुछ पल चुप रहा। अंत में, उसने आह भरी और कहा, “मुझे जो बात परेशान कर रही है, वह है इसका गायब हो जाना। यह कहाँ गया?”
‘आपका क्या मतलब है? निश्चित रूप से उनका सारा सामान बॉम्बे वापस भेज दिया गया होगा?’

हां, उसकी बाकी सारी चीज़ें बॉम्बे भेज दी गई थीं। लेकिन वो मूर्ति नहीं। वो उसे अपनी जैकेट की आगे वाली जेब में रखता था। वो कहता था, “ये मेरा शुभंकर है, ये मेरे लिए सौभाग्य लाएगा!” उस सुबह वो उसे अपने साथ ले गया था। मुझे ये बात पक्के तौर पर पता है। जब उसे अस्पताल लाया गया, मैं वहीं था। उन्होंने उसकी जेबों से सब कुछ निकाल लिया। एक नोटबुक, एक बटुआ और उसके टूटे हुए चश्मे एक डिब्बे में थे। लेकिन मूर्ति का कोई निशान नहीं था। हो सकता है कि गिरने पर वो उसकी जेब से फिसल गई हो और शायद अभी भी वहीं पड़ी हो जहां वो मिला था। या शायद उसे उठाने में मदद करने वाले किसी आदमी ने उसे देखा हो और वहां से हटा दिया हो।
लेकिन मुझे बताया गया है कि यहां के लोग बहुत ईमानदार हैं।
‘यह सच है। और इसीलिए मुझे संदेह है—’ वह व्यक्ति सोच में डूबा हुआ प्रतीत हुआ।
‘क्या आपको पता है कि श्री शेल्वंकर उस दिन कहाँ जा रहे थे?’
हां। सिंगिक के रास्ते में एक छोटा सा गाँव है। वह वहीं जा रहा था। दरअसल, मुझे भी उसके साथ जाना था। लेकिन मैंने अपना इरादा बदल दिया और बहुत पहले ही निकल गई, क्योंकि मौसम बहुत सुहाना था और मैं यहाँ कुछ तस्वीरें लेना चाहती थी। उसने मुझसे कहा था कि अगर वह मुझे रास्ते में देखेगा तो मुझे साथ ले लेगा।
‘वह इस गुम्फा में इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहा था?’
मुझे पक्का पता नहीं है। शायद डॉ. वैद्य इसके लिए कुछ हद तक जिम्मेदार थे। ‘डॉ. वैद्य?’
यह पहली बार था जब किसी ने डॉ. वैद्य का नाम लिया था। वह कौन थे?
हिप्पी हँस पड़ा। ‘सड़क के बीचोंबीच बात करना थोड़ा अजीब है, है ना? क्यों न तुम मेरे साथ डाक बंगले में आकर कॉफी पियो?’
फेलुदा तुरंत सहमत हो गया। जाहिर है, वह शेल्वंकर के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक था।
हम अपने दाहिनी ओर सड़क पर चलने लगे। हिप्पी ने आगे कहा, 'इसके अलावा, मुझे अपने पैर को आराम देना है। मैं कुछ दिन पहले पहाड़ियों में फिसल गया था और मेरे टखने में हल्का सा मोच आ गया है। अगर मैं कहीं भी पांच मिनट से ज्यादा खड़ा रहता हूँ तो उसमें दर्द होने लगता है।'

धुंध छंटने लगी थी। अब आसपास की हरियाली साफ़ दिखाई दे रही थी। धुंध छंटने के बीच से मुझे चीड़ के ऊंचे पेड़ों की कतारें नज़र आ रही थीं। डाक बंगला ज़्यादा दूर नहीं था। वह काफ़ी आकर्षक इमारत थी, ज़्यादा पुरानी नहीं। हमारे नए दोस्त हमें अपने कमरे में ले गए और जल्दी से दो कुर्सियों से कागज़ों और पत्रिकाओं के ढेर हटाकर हमें बैठने के लिए जगह दी। उन्होंने कहा, 'माफ़ कीजिए, मैंने अभी तक अपना परिचय नहीं दिया। मेरा नाम हेलमुट उंगर है।'
‘क्या यह जर्मन नाम है?’ फेलुदा ने पूछा।
‘जी हाँ, बिल्कुल सही,’ हेलमुट ने जवाब दिया और अपने बिस्तर पर बैठ गया। ज़ाहिर है, उसे कमरा साफ़-सुथरा रखने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसके कपड़े (जो उसके पहने हुए कपड़ों की तरह ही रंगीन थे) इधर-उधर बिखरे पड़े थे, उसके सूटकेस खुले हुए थे जिनमें कपड़ों से ज़्यादा किताबें और पत्रिकाएँ थीं, और मेज़ पर ढेर सारी तस्वीरें फैली हुई थीं, जिनमें से ज़्यादातर विदेश में खींची गई लगती थीं। हालाँकि फ़ोटोग्राफ़ी के बारे में मेरा ज्ञान बहुत सीमित था, फिर भी मैं बता सकता था कि ये तस्वीरें वाकई बहुत अच्छी थीं।
'मैं प्रदोष मित्तर हूं और यह मेरा चचेरा भाई तपेश है,' फेलुदा ने कहा, यह खुलासा किए बिना कि वह एक शौकिया जासूस था।
‘आप दोनों से मिलकर खुशी हुई। माफ कीजिए,’ हेलमुट कमरे से बाहर चला गया, शायद तीन कॉफी ऑर्डर करने के लिए। फिर वह वापस आया और बोला, ‘डॉक्टर वैद्य बहुत ही दिलचस्प व्यक्ति हैं, हालांकि वे बहुत ज्यादा बोलते हैं। वे कुछ दिनों के लिए इस डाक बंगले में रुके थे। वे हस्तरेखा पढ़ सकते हैं, भविष्यवाणियां कर सकते हैं और यहां तक कि मृतकों से भी संपर्क कर सकते हैं।’
‘क्या! आपका मतलब है कि वह एक माध्यम के रूप में कार्य कर सकता है?’
'हां, कुछ ऐसा ही। श्री शेल्वंकर उनकी कही कुछ बातों से चौंक गए थे।'
'जहां वह अब है?'
‘वह कलिम्पोंग के लिए रवाना हो गया। उसे वहां कुछ तिब्बती भिक्षुओं से मिलना था। लेकिन उसने कहा कि वह गंगटोक लौट आएगा।’
‘उन्होंने श्री शेल्वंकर को क्या बताया? क्या आपको इसके बारे में कुछ पता है?’

'हां, बिल्कुल। उन्होंने मेरी उपस्थिति में एक-दूसरे से बात की। डॉ. वैद्य ने श्री शेल्वंकर को अपने व्यवसाय, अपनी पत्नियों की मृत्यु और अपने बेटे के बारे में बताया। उन्होंने यह भी कहा कि श्री शेल्वंकर हाल ही में काफी तनाव में थे।'
इसका कारण क्या हो सकता है?
'मुझें नहीं पता।'
‘क्या शेल्वंकर ने आपसे कुछ नहीं कहा?’
नहीं। लेकिन मुझे महसूस हो रहा था कि कुछ गड़बड़ है। वह अक्सर परेशान रहने लगता था, और कभी-कभी मैं उसे आहें भरते हुए सुनती थी। एक दिन जब हम सामने वाले बरामदे में चाय पी रहे थे, तभी उसे एक टेलीग्राम मिला। मुझे नहीं पता उसमें क्या लिखा था, लेकिन उससे वह बहुत परेशान हो गया।
‘क्या डॉ. वैद्य ने कहा था कि श्री शेल्वंकर की मृत्यु दुर्घटना में होगी?’ नहीं, उन्होंने सीधे तौर पर तो नहीं कहा; लेकिन उन्होंने यह जरूर कहा कि श्री शेल्वंकर को अगले कुछ दिनों तक सावधान रहना होगा। जाहिर तौर पर, कुछ परेशानी और बुरे समय के संकेत मिल रहे थे।
कॉफी आ गई। हमने चुपचाप उसे पी लिया। मैंने सोचा, भले ही श्री शेल्वंकर की मृत्यु सचमुच एक आकस्मिक दुर्घटना थी, फिर भी कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ थी। यह स्पष्ट था कि फेलुदा भी यही सोच रहा था, क्योंकि वह बार-बार अपनी उंगलियां चटका रहा था। वह ऐसा तभी करता था जब उसके मन में कोई गंभीर संदेह होता था।
हमने अपनी कॉफी खत्म की और जाने के लिए उठे। हेलमुट हमारे साथ मुख्य द्वार तक आया।
फेलुदा ने उससे कहा, 'कॉफी के लिए धन्यवाद। अगर आप एक और हफ्ते यहीं रहेंगे, तो मुझे यकीन है कि हम फिर मिलेंगे। हम स्नो व्यू होटल में ठहर रहे हैं। अगर डॉक्टर वैद्य वापस आ जाएं तो मुझे जरूर बता देना।'
इसके जवाब में हेल्मुट ने सिर्फ एक बात कही: 'काश मुझे पता चल जाए कि उस मूर्ति का क्या हुआ, तो मुझे बहुत खुशी होगी।'

तीन

कोहरा छट गया था, लेकिन आसमान में बादल छाए हुए थे और बारिश हो रही थी। मुझे बारिश से कोई परेशानी नहीं थी। हल्की-हल्की बूंदा-बांदी थी, छोटी- छोटी बूँदें बिखरकर एक पतली, धूल भरी धुंध बना रही थीं। ऐसी बारिश में छाते की ज़रूरत नहीं थी; यह बहुत ताज़गी देने वाली थी।
हमें अपने होटल के पास बाटा की एक शाखा मिल गई। सौभाग्य से, उनके पास वैसे जूते थे जिनकी हमें तलाश थी। जब हम अपने पार्सल लेकर बाहर निकले, तो फेलुदा ने कहा, 'चूंकि हमें अभी इस शहर के रास्ते नहीं पता, इसलिए बेहतर होगा कि हम टैक्सी ले लें।'
'कहाँ जाना है?'
‘तिब्बती संस्थान। मैंने सुना है कि उनके पास तान्खाओं, प्राचीन पांडुलिपियों और तांत्रिक कला के नमूनों का एक बहुत ही प्रभावशाली संग्रह है।’
मैंने पूछा, 'क्या तुम्हें शक होने लगा है?' हालांकि मुझे बिल्कुल भी यकीन नहीं था कि फेलुदा मुझे सीधा जवाब देगा।
‘क्यों? मुझे किस बात पर संदेह करना चाहिए?’
‘क्या श्री शेल्वंकर की मृत्यु वास्तव में एक दुर्घटना के कारण नहीं हुई थी?’
मुझे अभी तक ऐसा कोई कारण नहीं मिला है जिससे मैं इस निष्कर्ष पर पहुंच सकूं।
लेकिन वह मूर्ति तो गायब है, है ना?
‘तो क्या हुआ? यह उसकी जेब से गिर गया और किसी ने चुरा लिया। बस इतना ही है। हत्या करना इतना आसान नहीं है। इसके अलावा, मुझे विश्वास नहीं होता कि कोई सिर्फ एक हजार रुपये में खरीदी गई मूर्ति के लिए हत्या कर देगा।’
मैंने इसके अलावा कुछ नहीं कहा, लेकिन मैं यह सोचे बिना नहीं रह सका कि अगर इस सब से कोई रहस्य पनपता है, तो यह काफी मजेदार होगा।

सड़क किनारे जीपों की एक कतार खड़ी थी। फेलुदा ने एक नेपाली ड्राइवर के पास जाकर पूछा, 'तिब्बती संस्थान। क्या आपको रास्ता पता है?'
जी हाँ, मैं करता हूँ।
हम जीप में बैठ गए, दोनों ने ड्राइवर के साथ आगे की सीट पर बैठना चुना।
उसने अपनी जेब से ऊनी स्कार्फ निकाला, उसे अपने गले में लपेटा और जीप को घुमाया। फिर हम उसी सड़क पर चल पड़े जिससे हम शहर में आए थे। बस इस बार हम विपरीत दिशा में जा रहे थे।
फेलुदा ने ड्राइवर से बात करना शुरू कर दिया।
क्या आपने हाल ही में हुई दुर्घटना के बारे में सुना है?
'हां, गंगटोक में हर किसी के पास है।'
‘उस जीप का ड्राइवर बच गया, है ना?’
'हां, वह बहुत भाग्यशाली है। पिछले साल भी इसी तरह की एक दुर्घटना हुई थी: उसमें चालक की मौत हुई थी, यात्री की नहीं।'
क्या आप इस ड्राइवर को जानते हैं?
‘बिल्कुल। गंगटोक में हर कोई एक-दूसरे को जानता है।’
वह अब क्या कर रहा है?
‘एक और टैक्सी चला रहा हूँ। एसकेएम 463। यह एक नई टैक्सी है।’
क्या आपने दुर्घटनास्थल देखा है?
'जी हां, यह उत्तरी सिक्किम राजमार्ग पर है। यहां से तीन किलोमीटर दूर।' ‘क्या आप हमें कल वहाँ ले जा सकते हैं?’
'हाँ ज़रूर, क्यों नहीं?'
तो फिर, सुबह 8 बजे स्नो व्यू होटल आ जाइए। हम आपका इंतजार करेंगे।
'बहुत खूब, महोदय।'
एक सड़क जंगल से होते हुए सीधे तिब्बती संस्थान के सामने आकर रुक गई। ड्राइवर ने हमें बताया कि इस जंगल में ऑर्किड उगते हैं, लेकिन हमारे पास रुककर उन्हें देखने का समय नहीं था। हमारी जीप संस्थान के मुख्य द्वार के बाहर रुक गई। यह एक विशाल दो मंजिला इमारत थी जिसकी दीवारों पर तिब्बती शैली की विचित्र आकृतियाँ बनी हुई थीं। वहाँ इतनी शांति थी कि मुझे लगा शायद संस्थान बंद है, लेकिन फिर हमने देखा कि मुख्य द्वार खुला हुआ था। हम एक बड़े हॉल में दाखिल हुए। दीवारों पर टंग्हा (पारंपरिक तिब्बती

कलाकृतियाँ) टंगी हुई थीं। फर्श पर कला की वस्तुओं से भरे बड़े-बड़े काँच के बक्से रखे हुए थे।
जब हम इस बात पर बहस कर रहे थे कि आगे कहाँ जाना है, तभी सिक्किम की ढीली पोशाक पहने एक तिब्बती सज्जन हमसे मिलने के लिए आगे आए।
'क्या हम क्यूरेटर से मिल सकते हैं?' फेलुदा ने विनम्रता से पूछा।
नहीं, मुझे खेद है कि वह आज बीमारी की छुट्टी पर हैं। मैं उनका सहायक हूँ। मैं आपकी किस प्रकार सहायता कर सकता हूँ?
दरअसल, मुझे एक तिब्बती मूर्ति के बारे में कुछ जानकारी चाहिए। मुझे उसका नाम तो नहीं पता, लेकिन उसके नौ सिर और चौंतीस भुजाएँ हैं। क्या वह कोई तिब्बती देवता हो सकती है?
उस सज्जन ने मुस्कुराते हुए कहा, 'जी हां, आपका मतलब यामांतक से है। तिब्बत विचित्र देवताओं से भरा पड़ा है। हमारे पास यहां यामांतक की एक मूर्ति है। मेरे साथ आइए, मैं आपको दिखाता हूं। कुछ दिन पहले कोई एक खूबसूरत नमूना लेकर आया था—मैंने अब तक का सबसे बेहतरीन नमूना देखा है—लेकिन दुर्भाग्य से, उस सज्जन का निधन हो गया।'
‘ओह, क्या उसने ऐसा किया?’ फेलुदा ने पूरी तरह से आश्चर्यचकित होने का नाटक किया।
हम सहायक क्यूरेटर के पीछे-पीछे चले और एक ऊंचे शोकेस के सामने रुक गए। उन्होंने उसमें से एक छोटी सी मूर्ति निकाली। मैं डर के मारे कांप गया। हे भगवान, क्या यह कोई देवता था या कोई राक्षस? इसके नौ चेहरों पर बेहद क्रूर भाव थे। फिर सहायक क्यूरेटर ने उसे हाथ में घुमाया और हमें मूर्ति के आधार पर एक छोटा सा छेद दिखाया। उन्होंने बताया कि यह प्रथा थी कि प्रार्थना लिखी हुई कागज की एक पर्ची को मोड़कर उस छोटे से छेद में डाला जाता था। इसे 'पवित्र आंत' कहा जाता था!
उन्होंने मूर्ति को वापस बक्से में रखा और एक बार फिर हमारी ओर मुड़े। ‘यामांतक की जिस दूसरी मूर्ति की मैं बात कर रहा था, वह तो सिर्फ तीन इंच लंबी थी। लेकिन उसकी कारीगरी बेमिसाल थी। वह सोने की बनी थी, और उसकी आंखें दो छोटे-छोटे माणिक रत्नों की थीं। हममें से किसी ने भी पहले कभी ऐसी मूर्ति नहीं देखी थी, यहां तक कि हमारे क्यूरेटर ने भी नहीं। और वह तो पूरे तिब्बत घूम चुके हैं, दलाई लामा से मिल चुके हैं—अरे, उन्होंने तो दलाई लामा के साथ मानव खोपड़ी में चाय भी पी है!’

‘क्या उस तरह की मूर्ति की कोई कीमत होगी? मेरा मतलब है, अगर वह सोने की बनी हो तो?’
सहायक क्यूरेटर फिर मुस्कुराया। 'मैं समझ गया आप क्या कहना चाहते हैं। इस आदमी ने इसे एक हजार रुपये में खरीदा था। इसकी वास्तविक कीमत दस हजार रुपये से भी अधिक हो सकती है।'
फिर हमें हॉल में थोड़ा घुमाया गया और सहायक क्यूरेटर ने हमें अन्य प्रदर्शनियों के बारे में विस्तार से बताया। फेलुदा ने विनम्रता से सुना, लेकिन मेरे दिमाग में बस श्री शेल्वंकर की मौत का ही ख्याल घूम रहा था। क्या दस हजार रुपये किसी को हत्या करने के लिए उकसाने के लिए काफी नहीं थे? लेकिन फिर मैंने खुद को दृढ़ता से समझाया, श्री शेल्वंकर को न तो चाकू मारा गया था, न गला घोंटा गया था और न ही जहर दिया गया था। उनकी मौत बस इसलिए हुई थी क्योंकि एक गिरती हुई चट्टान उनकी जीप से टकरा गई थी। यह एक दुर्घटना ही होनी चाहिए।
जब हम वहां से निकल रहे थे, तभी अचानक हमारे गाइड ने हंसते हुए कहा, 'मुझे आश्चर्य है कि यामांतक ने इतनी हलचल क्यों मचा दी है। कोई और भी मुझसे इस मूर्ति के बारे में पूछ रहा था।'
‘कौन? वो आदमी जिसकी मृत्यु हो गई?’
नहीं, नहीं, कोई और था। मुझे उसका नाम या चेहरा याद नहीं आ रहा। मुझे बस उसके पूछे गए सवाल याद हैं। दरअसल, उस दिन मैं अमेरिकी मेहमानों के एक समूह के साथ बहुत व्यस्त था। वे हमारे चोग्याल के मेहमान थे, इसलिए...
जब हम जीप में वापस बैठे, तो मेरी घड़ी में केवल पाँच बजने में पाँच मिनट बाकी थे; लेकिन अंधेरा हो चुका था। मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि मुझे पता था कि दिन का उजाला इतनी जल्दी नहीं ढल सकता। जंगल से बाहर निकलकर खुले में आने पर कारण स्पष्ट हो गया। पश्चिमी आकाश में घने काले बादल छा गए थे। हमारे ड्राइवर ने बताया, 'यहाँ आमतौर पर रात में बारिश होती है। दिन आमतौर पर शुष्क रहते हैं।' हमने होटल वापस जाने का फैसला किया क्योंकि अब अन्य स्थानों को देखने का कोई लाभ नहीं था।
वापसी के रास्ते में फेलुदा ने एक शब्द भी नहीं बोला। वह बस जीप से बाहर देखता रहा, जो कुछ भी उसे दिखाई दिया उसे निहारता रहा। अगर हम किसी और दिन फिर से इसी रास्ते से गुजरें, तो मुझे पूरा यकीन है कि वह उन सभी दुकानों

कमरे में वापस आते ही फेलुदा ने अपने जूते उतार दिए और बिस्तर पर लेट गया। ‘आह!’ उसने कहा। मुझे भी थकान महसूस हो रही थी। किसने सोचा था कि पहले ही दिन हम इतनी अलग-अलग चीजें देखेंगे और सुनेंगे?
फेलुदा ने छत की ओर देखते हुए कहा, 'ज़रा सोचो, अगर किसी अपराधी के नौ सिर होते तो हम क्या करते? कोई भी उसके पीछे से छुपकर उसे पकड़ नहीं सकता था!' ‘और चौंतीस भुजाएँ? उनका क्या होगा?’
'हां, उसे गिरफ्तार करने के लिए हमें सत्रह जोड़ी हथकड़ियों का इस्तेमाल करना पड़ता!'
बाहर काफी तेज बारिश हो रही थी। मैं उठा और लाइट जला दी। फेलुदा ने एक हाथ बढ़ाया और अपना हाथ अपने पर्स में डाला। एक पल बाद, उनके सामने उनकी मशहूर नीली नोटबुक खुली हुई थी और हाथ में कलम थी। फेलुदा ने साफ तौर पर ठान लिया था कि कहीं न कहीं कोई रहस्य जरूर है, और उन्होंने अपनी जांच शुरू कर दी थी।
'क्या आप मुझे आज मिले हर नए व्यक्ति का नाम जल्दी से बता सकते हैं?'
मैं ऐसे सवाल के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं था, इसलिए कुछ सेकंड तक मैं बस फेलुदा को अवाक होकर देखता रहा। फिर मैंने हिम्मत जुटाकर कहा, 'आज? हर नए व्यक्ति से? क्या मुझे बागडोगरा से ही शुरुआत करनी होगी?'
'नहीं, बेवकूफ। बस मुझे उन लोगों की सूची दे दो जिनसे हम गंगटोक में मिले थे।'
'कुंआ ।. . शशधर दत्त।'
‘गलत। दोबारा कोशिश करें।’
'खेद खेद। मेरा मतलब शशधर बोस से है। हम उनसे बागडोगरा के हवाईअड्डे पर मिले।'
‘ठीक है। वह गंगटोक में क्यों है?’
‘उसने कहा था ना कि इसका संबंध सुगंधित पौधों से है?’
नहीं, इस तरह का अस्पष्ट जवाब काम नहीं चलेगा। कृपया अधिक स्पष्ट उत्तर दें।
‘रुको। वह यहाँ अपने साझेदार शिवकुमार शेल्वंकर से मिलने आए हैं। उनकी एक रसायन कंपनी है। अन्य बातों के अलावा, वे...’
‘ठीक है, ठीक है, इतना काफी है। अगला?’
‘हिप्पी।’

‘उसका नाम?’
'हेलमेट-'
नहीं, हेलमेट नहीं। यह हेलमुट है। और उसका उपनाम?
‘उंगर।’
‘वह यहाँ क्यों आया?’
‘वह एक पेशेवर फोटोग्राफर हैं, जो सिक्किम पर एक किताब पर काम कर रहे हैं। उनका वीजा बढ़ा दिया गया है।’
'अगला?'
‘निशिकान्तो सरकार। दार्जिलिंग में रहते हैं। पता नहीं वो क्या काम करते हैं। उनके पास एक तिब्बती मूर्ति थी जो उनके पास थी—’
दरवाजे पर दस्तक से मेरी बात बाधित हुई। 'अंदर आओ!' फेलुदा चिल्लाया।
जिस व्यक्ति के बारे में मैं अभी बात कर रहा था, वह कमरे में आ गया। निशिकांतो सरकार ने पूछा, 'मुझे उम्मीद है कि मैं आपको परेशान नहीं कर रहा हूँ?' 'मैंने सोचा कि मैं आपको लामा नृत्य के बारे में बता दूँ।'
‘लामा नृत्य? कहाँ?’ फेलुदा ने उन्हें एक कुर्सी दी। श्री सरकार ने उसे स्वीकार कर लिया, उनके होठों पर वही अजीब सी मुस्कान अभी भी थी।
उन्होंने कहा, ‘रुमटेक में, यहाँ से मात्र दस मील दूर। यह एक भव्य आयोजन होने वाला है। भूटान और कालिम्पोंग से लोग आ रहे हैं। रुमटेक के मुख्य लामा—जो दलाई लामा के बाद तीसरे नंबर पर हैं—इतने समय तक तिब्बत में थे। वे अभी-अभी रुमटेक लौटे हैं। और मठ नया और देखने लायक बताया जा रहा है। क्या आप कल जाना चाहेंगे?’
‘सुबह नहीं। शायद दोपहर के भोजन के बाद?’
‘ठीक है। या यदि आप परम पूज्य के दर्शन करना चाहते हैं, तो हम परसों जा सकते हैं। मैं तीन सफेद स्कार्फ का इंतजाम कर सकता हूँ।’
मैंने पूछा, 'स्कार्फ ही क्यों?'
श्री सरकार की मुस्कान और चौड़ी हो गई। 'यह एक स्थानीय रिवाज है। अगर आप किसी उच्च वर्ग के तिब्बती से मिलना चाहते हैं, तो आपको उन्हें एक दुपट्टा भेंट करना होगा। वे आपसे दुपट्टा लेंगे और तुरंत लौटा देंगे। बस इतना ही, इससे सारी औपचारिकताएं पूरी हो जाती हैं।'
‘नहीं, मुझे नहीं लगता कि हमें दर्शन के लिए परेशान होने की जरूरत है,’ फेलुदा ने कहा। ‘चलो सीधे नृत्य देखने चलते हैं।’

'हां, मैं खुद भी यही पसंद करूंगा। जितनी जल्दी हम जा सकें उतना अच्छा है। सड़कों का क्या हाल हो जाए, कोई नहीं जानता।'
“ओह, वैसे क्या आपने शेल्वंकर के अलावा किसी और को उस मूर्ति के बारे में बताया था?”
श्री सरकार ने तुरंत जवाब दिया, 'नहीं। एक भी नहीं। आप क्यों पूछ रहे हैं?' मुझे बस जिज्ञासा थी, और कुछ नहीं।
मैंने इसे कहीं ले जाकर सही मूल्यांकन करवाने के बारे में सोचा था, लेकिन ऐसा करने से पहले ही मेरी मुलाकात श्री शेल्वंकर से हो गई और उन्होंने इसे खरीद लिया। हालांकि, उन्होंने मुझे तुरंत भुगतान नहीं किया। मुझे अगले दिन तक इंतजार करना पड़ा।
‘क्या उसने आपको नकद भुगतान किया?’
‘नहीं, उसके पास इतने पैसे नहीं थे। उसने मुझे चेक दिया। देखो!’ श्री सरकार ने अपने बटुए से एक मुड़ा हुआ चेक निकाला और फेलुदा को दिखाया। मैंने भी झुककर देखा। यह नेशनल एंड ग्रिंडलेज़ बैंक का चेक था। फेलुदा ने इसे श्री सरकार को लौटा दिया।
‘क्या आपको कुछ संदिग्ध लगा?’ श्री सरकार ने मुस्कुराते हुए पूछा। मुझे बाद में एहसास हुआ कि जब वे परेशान या उत्साहित होते थे तो हकलाने लगते थे। ‘नहीं, नहीं।’ फेलुदा ने जम्हाई ली। श्री सरकार जाने के लिए उठे। ठीक उसी क्षण, बिजली की एक तेज़ चमक हुई, जिसके तुरंत बाद कान फाड़ देने वाली गड़गड़ाहट सुनाई दी। श्री सरकार का चेहरा पीला पड़ गया। ‘मुझे गरज और बिजली बिल्कुल पसंद नहीं है, हा हा। शुभ रात्रि!’ वे जल्दी से बाहर चले गए। पूरी शाम बारिश होती रही। खाना खाने के बाद जब मैं सोने गया, तब भी मुझे बारिश की लगातार आवाज़ सुनाई दे रही थी, बीच-बीच में दूर से आती बिजली की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी। इसके बावजूद, मुझे जल्दी ही नींद आ गई।
आधी रात को मेरी नींद थोड़ी देर के लिए खुली और मैंने खिड़की के पास से एक आकृति को गुजरते देखा। लेकिन भला ऐसी रात में बाहर निकलने की हिम्मत कौन करेगा? शायद मैं पूरी तरह से जागा ही नहीं था। शायद लाल वस्त्र पहने वह आकृति जिसे मैंने बिजली की चमक में कुछ ही सेकंड के लिए देखा था, महज़ एक सपना था... मेरी कल्पना की उपज।

चार

अगली सुबह मैं 6:30 बजे उठा तो देखा कि बारिश रुक चुकी थी और आसमान में एक भी बादल नहीं था। सूरज चमक रहा था और हमारे कमरे से अब आसानी से दिखाई देने वाली पर्वत श्रृंखला के पीछे कंचनजंगा पर्वत खड़ा था। यहाँ से नज़ारा दार्जिलिंग से अलग था, लेकिन फिर भी यह वही कंचनजंगा पर्वत था, जो बाकी सभी पर्वतों से अलग, गौरवशाली, राजसी और सुंदर रूप में खड़ा था।
फेलुदा मुझसे पहले उठ गया था और नहा भी चुका था। उसने कहा, 'जल्दी करो, टॉपशे। हमें बहुत काम करना है।' मुझे तैयार होने में आधे घंटे से भी कम समय लगा। जब हम नाश्ते के लिए नीचे गए, तब सुबह के 7 बज चुके थे। हमें आश्चर्य हुआ कि श्री सरकार पहले से ही भोजन कक्ष में बैठे हुए थे।
‘सुप्रभात। तो आप भी जल्दी उठते हैं,’ फेलुदा ने उनका अभिवादन किया। श्री सरकार मुस्कुराए, लेकिन अजीब तरह से चिंतित और कुछ हद तक घबराए हुए लग रहे थे। ‘अह... क्या आपने अच्छी नींद ली?’ हमने पूछा।
‘ज्यादा बुरा नहीं है। अरे, क्या बात है?’
श्री सरकार ने एक संक्षिप्त नज़र इधर-उधर डाली और फिर अपनी जेब से एक मुड़ा हुआ पीला कागज़ का टुकड़ा निकाला। इसके बाद उन्होंने वह कागज़ फेलुदा को देते हुए कहा, 'इसका क्या अर्थ है?'
फेलुदा ने उसे फैलाया। उस पर काली स्याही से कुछ अजीब अक्षर लिखे हुए थे। 'यह तिब्बती शब्द जैसा लग रहा है। यह तुम्हें कहाँ से मिला?'
'कल रात... आधी रात को... मेरा मतलब है, सन्नाटे में... किसी ने इसे मेरे कमरे में फेंक दिया।'
‘क्या!’ मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। श्री सरकार का कमरा हमारे कमरे के बगल में था। बरामदे का वही हिस्सा जो हमारे कमरे के सामने से जाता था, उनके कमरे के सामने से भी गुज़रता था। अगर कल रात मैंने जिस आदमी को देखा था, वह सचमुच का था, सपने की कोई चीज़ नहीं, तो हो सकता है कि वह—! लेकिन मैंने कुछ न कहने का फैसला किया।
श्री सरकार ने आगे कहा, 'काश मुझे पता होता कि उसमें क्या लिखा है।'

‘इसमें कोई समस्या नहीं होनी चाहिए, है ना? यहाँ दर्जनों लोग तिब्बती पढ़ सकते हैं। अगर कोई और आपकी मदद न करे, तो आप तिब्बती संस्थान जा सकते हैं। लेकिन आप इसे किसी तरह की धमकी क्यों मान रहे हैं? इसका सीधा सा मतलब हो सकता है, “आपकी आयु लंबी हो”, या “ईश्वर आपके साथ हो”, या कुछ ऐसा ही। क्या इसे चेतावनी या धमकी मानने का कोई विशेष कारण है?’
श्री सरकार थोड़ा चौंक गए, फिर मुस्कुराए और बोले, 'नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं। मैं तो बस अपने काम से काम रखता हूँ। मुझे कोई क्यों धमकाएगा? लेकिन फिर, कोई मुझे अपनी शुभकामनाएँ क्यों भेजेगा? मेरा मतलब है, एकदम अचानक से?'
फेलुदा ने वेटर को बुलाया और नाश्ता मंगवाया। 'चिंता मत करो। हम तुम्हारे बिल्कुल बगल में ही हैं, है ना? हम दोनों तुम्हारा ख्याल रखेंगे। अब, अच्छे से नाश्ता करो, आराम करो और आज दोपहर के लामा नृत्य के बारे में सोचो।' हमारी जीप समय पर पहुँच गई। जैसे ही हम उसमें बैठने वाले थे, मैंने डाक बंगले की तरफ से एक और जीप आते हुए देखी। जैसे-जैसे वह पास आई, मैं उसकी नंबर प्लेट पढ़ सका। उस पर लिखा था SKM 463। यह जानी-पहचानी क्यों लग रही थी? अरे हाँ, यह वही नई जीप थी जिसे श्री शेल्वंकर का ड्राइवर चला रहा था। मैंने ड्राइवर की नीली जैकेट पर एक नज़र डाली और फिर, मुझे घोर आश्चर्य हुआ, जब मैंने श्री बोस को यात्री सीट पर बैठे देखा। हमारी जीप को देखते ही उन्होंने अपनी जीप रोक दी। बाहर झुकते हुए उन्होंने हमसे कहा, 'मैं सेना से सूचना का इंतजार कर रहा था। कल रात हुई इतनी बारिश ने मुझे चिंतित कर दिया था कि सड़कें ठीक हैं या नहीं।'
‘और क्या वे हैं?’
'हां, भगवान का शुक्र है। अगर वे नहीं होते, तो मुझे कलिम्पोंग होकर जाना पड़ता।'
‘क्या श्री शेल्वंकर ने उसी ड्राइवर का इस्तेमाल नहीं किया था?’
श्री बोस हँसे। ‘मैं देख सकता हूँ कि आपने पहले से ही पूछताछ शुरू कर दी है। लेकिन हाँ, आप सही कह रहे हैं। मैंने उन्हें जानबूझकर चुना, एक तो इसलिए कि उनकी जीप नई है, और दूसरा इसलिए कि... एक ही जगह पर दो बार बिजली नहीं गिरती, है ना? खैर, अलविदा!’
वह गाड़ी चलाकर चला गया और जल्द ही गायब हो गया। हम अपनी जीप में बैठ गए। ड्राइवर को पता था कि उसे हमें कहाँ ले जाना है, इसलिए हमने एक मिनट भी

बर्बाद किए बिना चलना शुरू कर दिया। डाक बंगले के पास पहुँचते ही मैंने हेलमुट को देखने के लिए ऊपर देखा, लेकिन वहाँ कोई नहीं था। हमारे बाईं ओर एक ढलान थी, जो इमारतों से घिरी एक और सड़क की ओर जाती थी। उनमें से एक इमारत स्कूल जैसी लग रही थी क्योंकि उसके सामने एक खुला मैदान था जिसमें दो छोटे गोलपोस्ट लगे थे। थोड़ी देर बाद, हम एक चौराहे पर पहुँचे जहाँ चार सड़कें मिलती थीं। हम सीधे आगे बढ़ते गए और जल्द ही हमें एक बड़ा बोर्ड दिखाई दिया जिस पर लिखा था, 'उत्तर सिक्किम राजमार्ग'।
फेलुदा गुनगुना रहा था। अब वह रुका और ड्राइवर से पूछा, 'यह सड़क कितनी दूर है?'
‘चुंगथम तक, महोदय। फिर यह दो भागों में बंट जाती है—एक लाचेन की ओर और दूसरी लाचुंग की ओर।’
मैंने इन दोनों जगहों के बारे में सुना था। ये दोनों ही लगभग 9,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित थीं और बहुत खूबसूरत बताई जाती थीं।
‘क्या यह अच्छी सड़क है?’
जी हाँ, महोदय। लेकिन भारी बारिश के बाद कभी-कभी यह खराब हो जाता है।
सड़क के किनारे जो कुछ इमारतें दिखाई दे रही थीं, वे जल्द ही पूरी तरह गायब हो गईं। हम अब कस्बे से काफी दूर निकल चुके थे और पहाड़ियों से होते हुए आगे बढ़ रहे थे। नीचे घाटी की ओर देखते हुए, मुझे केवल मक्के के खेत ही दिखाई दे रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो किसी ने मक्का बोने के लिए पहाड़ी पर सीढ़ियाँ बनाई हों। यह बहुत ही आकर्षक लग रहा था।
लगभग दस किलोमीटर तक खामोशी से गाड़ी चलाने के बाद, हमारे ड्राइवर ने अचानक गाड़ी धीमी कर दी और कहा, 'यही वह जगह है। यहीं दुर्घटना हुई थी।' उसने जीप को एक तरफ खड़ा किया और हम बाहर निकल गए। वह जगह आश्चर्यजनक रूप से शांत थी। मुझे दूर से आती एक चिड़िया की हल्की चहचाहट और एक छोटी नदी की कलकल की आवाज़ के अलावा कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था।
हमारे बाईं ओर एक ढलान थी। दाईं ओर पहाड़ी लगभग सीधी रेखा में ऊपर उठती थी। इसी पहाड़ी की चोटी से वह बड़ा पत्थर गिरा था। उसके टुकड़े अभी भी इधर-उधर बिखरे हुए थे। उस दुर्घटना के बारे में सोचते ही मुझे अचानक थोड़ी घबराहट होने लगी।
इस बीच, फेलुदा ने कुछ जल्दी-जल्दी तस्वीरें खींच लीं। फिर उसने अपना कैमरा मुझे थमा दिया और सड़क के बाईं ओर किनारे पर चला गया। ‘अगर मैं बहुत

सावधानी से चलूँ तो शायद इस ढलान से नीचे उतरना मुमकिन हो। मेरा इंतज़ार करो। मुझे पंद्रह मिनट से ज़्यादा नहीं लगेंगे,’ उसने कहा। इससे पहले कि मैं उसे रोकने के लिए कुछ कह पाता या कर पाता, वह सड़क से हटकर ढलान से नीचे उतरने लगा, पौधों, झाड़ियों और पत्थरों को पकड़ते हुए, बेफिक्री से सीटी बजाता हुआ। लेकिन उसकी सीटी की आवाज़ धीरे-धीरे धीमी होती गई, और कुछ ही मिनटों में फिर से सन्नाटा छा गया। खुद को रोक न पाने के कारण, मैं सड़क के किनारे की ओर बढ़ा और एक नज़र डाली। जो मैंने देखा, उससे मैं अनैच्छिक रूप से चौंक गया। मैं फेलुदा को देख तो सकता था, लेकिन वह इतनी दूर तक चढ़ चुका था कि उसकी आकृति एक छोटी गुड़िया जैसी लग रही थी।
'हां, उसने सही जगह ढूंढ ली है,' ड्राइवर ने मेरे पास आकर कहा। 'जीप वहीं गिरी थी।'
ठीक पंद्रह मिनट बाद, मैंने फेलुदा को ऊपर चढ़ते हुए सुना, वह एक बार फिर जो कुछ भी उसके हाथ लगा उसे कसकर पकड़ रहा था। जब वह करीब आया, तो मैंने अपना हाथ बढ़ाकर उसे सड़क पर चढ़ने में मदद की।
‘फेलुदा, तुम्हें क्या मिला?’
‘बस कुछ नट-बोल्ट और वाहन के टूटे-फूटे पुर्जे। कोई यामांतक नहीं।’
इससे मुझे कोई हैरानी नहीं हुई। मैंने पूछा, ‘क्या तुम्हें और कुछ नहीं मिला?’ जवाब में, फेलुदा ने अपनी जेब से एक छोटी सी वस्तु निकाली। यह एक सफेद कमीज का बटन था, संभवतः प्लास्टिक का बना हुआ। फेलुदा ने उसे वापस रख लिया और सड़क के दूसरी ओर ऊँची पहाड़ी की ओर चल पड़ा। मैंने उसे कुछ बार ‘चट्टानें और बड़े-बड़े पत्थर, चट्टानें और बड़े-बड़े पत्थर’ बुदबुदाते सुना। फिर उसने ऊँची आवाज़ में कहा, ‘फेलू मित्तर को अब तेनजिंग बनना होगा।’
‘तुम्हारा क्या मतलब है? तेनजिंग क्यों? अरे फेलुदा, मेरा इंतज़ार करो!’ इस बार, मैंने ठान लिया था कि मैं पीछे नहीं रहूँगा। जो पहाड़ी पहले काफी डरावनी लग रही थी, उसमें छोटी-छोटी दरारें और गड्ढे निकले जिन पर पैर रखा जा सकता था। ‘ठीक है, तुम मेरे आगे जाओ,’ फेलुदा ने कहा। मैं जानता था कि वह मेरे ठीक पीछे रहना चाहता था ताकि अगर मैं फिसलकर गिर जाऊँ तो वह मुझे पकड़ सके। सौभाग्य से, ऐसा नहीं हुआ। कुछ मिनट बाद, मैंने फेलुदा को कहते सुना, ‘रुको!’ हम एक ऐसी जगह पर पहुँच गए थे जो लगभग समतल थी। मैंने एक छोटे से पत्थर पर बैठकर थोड़ी देर आराम करने का फैसला किया। फेलुदा इधर-उधर टहलने

लगा और ज़मीन का ध्यान से मुआयना करने लगा। मैंने तब तक ध्यान नहीं दिया जब तक वह रुका और बोला, ‘हम्म। यहीं से वह बड़ा पत्थर फिसला होगा। वहाँ उन झाड़ियों को देखो—और उस छोटे से फर्न को—देखो वे कैसे कुचल गए हैं?’ ‘तुम्हें क्या लगता है कि यह कितना बड़ा था?’
‘तुमने टुकड़े देखे थे ना? यह बहुत बड़ा नहीं रहा होगा। धोबी के गठ्ठे के आकार का पत्थर भी इतनी ऊंचाई से गिरने पर जान लेने के लिए काफी होता।’ 'वास्तव में?'
'जी हां। यह गति का मामला है, देखिए। द्रव्यमान और वेग का अनुपात। अगर आप कुतुब मीनार के तल पर खड़े हों और कोई ऊपर से आपके सिर पर पत्थर फेंके, तो हो सकता है आपकी खोपड़ी टूट जाए। क्या आपने क्रिकेट खेलते समय ध्यान नहीं दिया कि गेंद जितनी ऊंची फेंकी जाती है, फील्डर के लिए उसे पकड़ना उतना ही मुश्किल और दर्दनाक होता है?'
'हां, मैं समझ गया कि आपका क्या मतलब है।'
फेलुदा मुड़ा और एक खास जगह को घूरने लगा जो अपने आसपास के इलाके से कहीं ज्यादा बंजर लग रही थी। बाकी हर जगह घास के मैदान थे।
‘टॉपशे, क्या तुम जानना चाहते हो कि वह पत्थर कैसे खिसक गया? आओ, देखो।’ फेलुदा ने पहाड़ी के उस बंजर हिस्से में किसी चीज़ की ओर इशारा किया। मैं उठा और ध्यान से देखा। वहाँ एक छोटा सा छेद था। इसका क्या मतलब हो सकता है? फेलुदा ने धीरे से कहा, 'जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, हाँ, मुझे लगभग सौ प्रतिशत यकीन है कि किसी ने लोहे की मजबूत छड़ या इसी तरह की किसी चीज़ का इस्तेमाल करके चट्टान को ज़मीन से बाहर निकाला है। नहीं तो यहाँ खाली जगह नहीं होती। जिसका मतलब है—'
मुझे पता था कि वह आगे क्या कहने वाला है। लेकिन मैंने अपनी सांस रोक ली और उसे अपनी बात पूरी करने दी।
“—इसका मतलब यह है कि श्री शेल्वंकर की जान लेने वाली दुर्घटना प्रकृति की नहीं, बल्कि मनुष्य के कारण हुई थी। किसी ने उनकी हत्या की... कोई बेहद क्रूर और चालाक व्यक्ति।”

पाँच

जब हम हत्या स्थल से होटल लौटे (मैं इसे अब दुर्घटना नहीं कहूंगा), तो फेलुदा ने मुझे होटल में ही रुकने को कहा। उसे कुछ काम से बाहर जाना था। मैंने उससे कोई जानकारी नहीं पूछी क्योंकि मुझे पता था कि वह मुझे कुछ नहीं बताएगा।
वापसी के रास्ते में, बड़े चौराहे के पास हमारी मुलाकात हेलमुट से हुई। जब उसे पता चला कि हम दोपहर बाद रुमटेक जा रहे हैं, तो उसने कहा कि वह हमारे साथ चलना चाहेगा। उसे लामा नृत्य के बारे में किसी ने नहीं बताया था। मैं सोच रहा था कि श्री सरकार कहाँ हैं। क्या उन्हें पता चल पाया होगा कि उस तिब्बती शब्द का क्या अर्थ है?
मैंने उसे भोजन कक्ष में उदास और निराश पाया। हालाँकि, मेरे आने से उसका चेहरा खिल उठा। उसने अपनी हमेशा वाली मुस्कान के साथ पूछा, 'तुम्हारा चचेरा भाई कहाँ है?'
वह कुछ देर के लिए बाहर गया है। वह जल्द ही वापस आ जाएगा।
‘अह... वो बहुत ताकतवर है, है ना?’
मैंने इस सवाल पर हैरानी से ऊपर देखा, लेकिन श्री सरकार ने आगे कहा, 'देखिए, मैं गंगटोक में सिर्फ इसलिए रुका हुआ हूं क्योंकि उन्होंने कहा था कि जरूरत पड़ने पर वे मेरी मदद करेंगे। वरना मैं आज ही दार्जिलिंग वापस चला गया होता।'
'क्यों?'
श्री सरकार एक बार फिर घबराए हुए दिखने लगे। फिर उन्होंने धीरे से अपनी जेब से वही पीला कागज निकाला। ‘मैंने कभी किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया। कोई मुझे धमकाने की कोशिश क्यों करेगा?’
क्या आपको पता चला कि उस शब्द का क्या अर्थ है?
जी हाँ। मैं इसे तिब्बती संस्थान ले गया था। और उन्होंने कहा... उन्होंने कहा कि इसका मतलब "मृत्यु" है। जियांगफुंग, या कुछ ऐसा ही। तिब्बती भाषा में मृत्यु के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द। इसने मुझे बहुत चिंतित कर

दिया है। आप जानते हैं, मैं अब सैंतीस साल का हो गया हूँ, और एक बार एक ज्योतिषी ने मुझसे कहा था कि सैंतीस साल का होने के बाद मेरे सारे सितारे अशुभ स्थिति में आ जाएँगे...
इससे मुझे थोड़ी झुंझलाहट हुई। मैंने थोड़ी सख्ती से कहा, 'मुझे लगता है कि आप जल्दबाजी में निष्कर्ष निकाल रहे हैं। इसमें सिर्फ "मृत्यु" लिखा है। क्या इसमें यह लिखा है कि आपको मरना ही होगा?'
‘हां, हां, आप सही कह रहे हैं। किसी की भी मौत हो सकती है, है ना? फिर भी... मुझे नहीं पता...’ मुझे कल रात लाल कपड़ों में दिखी उस शख्स की याद आ गई। लेकिन जाहिर सी बात है कि श्री सरकार से इसका जिक्र न करना ही बेहतर था। वो पहले से ही काफी परेशान थे। कुछ पल की चुप्पी के बाद, उन्होंने बड़ी मुश्किल से खुद को संभाला। ‘मुझे ज्यादा सोचना नहीं चाहिए,’ उन्होंने कहा। ‘तुम्हारा चचेरा भाई मेरी मदद के लिए वहां है। उसे देखते ही भरोसा हो जाता है। क्या वो खिलाड़ी है?’
‘वह पहले क्रिकेट खेलते थे। अब वे योगा करते हैं।’
मुझे पता था! इतने फिट दिखने वाले आदमी को अक्सर देखने का मौका नहीं मिलता। वैसे, क्या आप एक कप चाय पीना चाहेंगे?
इतनी चढ़ाई के बाद मैं काफी थका हुआ महसूस कर रहा था। इसलिए मैंने हाँ कह दी, और श्री सरकार ने हम दोनों के लिए चाय मंगवाई। जैसे ही वेटर ने हमारे सामने दो गर्म प्याले रखे, फेलूदा वहाँ पहुँच गया। श्री सरकार ने तुरंत उसे अपनी समस्या बताई। फेलूदा ने तिब्बती शब्द को फिर से देखा और पूछा, 'क्या आप समझ सकते हैं कि कोई आपके साथ ऐसा क्यों करना चाहेगा?'
'नहीं, महोदय। मैंने बहुत सोचा है, लेकिन मुझे कोई कारण समझ नहीं आ रहा है।' ठीक है। अगर आपको यकीन है कि आपसे कोई दुश्मनी नहीं रखता, तो चिंता की कोई बात नहीं है। मुझे यकीन है कि वह गलती से आपके कमरे में गिरा होगा। किसी को ऐसी भाषा में धमकाने का क्या मतलब है जिसे वह नहीं जानता? वह चेतावनी ज़रूर किसी ऐसे व्यक्ति के लिए थी जो तिब्बती पढ़ सकता हो। आप असली निशाना नहीं थे।
'हां, यह बात बिल्कुल सही है। इसके अलावा, अगर कोई परेशानी हो तो मैं आप पर भरोसा कर सकता हूं, है ना?'
'हां, लेकिन शायद मुझे अभी और यहीं आपको कुछ बताना चाहिए। मुसीबत मेरा पीछा करती है, मैं जहां भी जाता हूं।'

‘स-सच में?’
फेलुदा बिना कुछ कहे हमारे कमरे में चला गया। मैं जानता था कि उसे ऐसे लोग बिल्कुल पसंद नहीं थे जो बार-बार घबरा जाते थे। अगर श्री सरकार को उसका समर्थन चाहिए था, तो उसे हर समय शिकायत करना बंद करना होगा।
चाय खत्म करके जब मैं अपने कमरे में लौटा, तो फेलुदा अपनी नीली नोटबुक में कुछ लिख रहा था। मुझे देखते ही वह बोला, 'मुझे पता था कि टेलीग्राफ दफ्तरों में ज्यादातर लोग अनपढ़ होते हैं, लेकिन ये तो हद ही हो गई!'
‘अरे, क्या हुआ?’
मैंने श्री बोस को एक टेलीग्राम भेजा है। बॉम्बे पहुंचते ही उन्हें यह मिल जाएगा।
‘तुमने उसे क्या बताया?’
‘शेल्वनकर की मौत आकस्मिक नहीं है, ऐसा संदेह करने का कारण है। मैं इसकी जांच कर रहा हूं।’
लेकिन आप टेलीग्राफ कार्यालय से इतने नाराज क्यों हैं?
‘वो तो अलग बात है। देखिए, मैं यह पता लगाने गया था कि शेल्वंकर को यहाँ रहते हुए कोई टेलीग्राम मिला था या नहीं। यह जानकारी प्राप्त करना आसान नहीं था, लेकिन अंत में उन्होंने मुझे बताया कि दो टेलीग्राम आए थे। एक श्री बोस का था, जिसमें लिखा था, “मैं चौदहवें दिन पहुँच रहा हूँ।”’
और दूसरा?
‘लो, इसे पढ़ो,’ फेलुदा ने मुझे अपनी नोटबुक देते हुए कहा। मैंने उसमें लिखा हुआ देखा: तुम्हारा बेटा एक बीमार राक्षस हो सकता है। प्रिटेक्स। मैं घूरता रहा। आखिर इसका मतलब क्या था? क्या अब हमें राक्षसों और दानवों से निपटना पड़ेगा?
‘कुछ शब्दों की वर्तनी स्पष्ट रूप से गलत लिखी गई है। लेकिन वे क्या हो सकते हैं?’ फेलुदा ने बुदबुदाते हुए कहा।
‘प्रिटेक्स क्या है?’
'शायद इसका मतलब किसी निजी जासूस एजेंसी से है।'
'आपका मतलब है कि शेल्वंकर ने अपने बेटे का पता लगाने के लिए एक जासूस नियुक्त किया था?'
‘संभवतः। लेकिन “बीमार राक्षस”? हे भगवान!’

'यह मामला दिन-ब-दिन और जटिल होता जा रहा है, फेलुदा। तुम एक साथ कितने रहस्यों को सुलझाओगे?'
‘मैं भी यही सोच रहा था। सवालों का कोई अंत नहीं है। दरअसल, इन्हें लिख लेना बुरा विचार नहीं होगा।’ वह कलम हाथ में लिए अपनी नोटबुक पर झुक गया। ‘आगे बढ़ो,’ उसने आमंत्रित किया।
‘नंबर एक—बीमार राक्षस।’
‘हाँ। अगला?’
‘वह पत्थर किसने फेंका?’
'अच्छा।'
‘तीसरा नंबर—वह मूर्ति कहाँ गायब हो गई?’
‘जारी रखो। तुम काफी अच्छा कर रहे हो।’
'नंबर चार—वह कागज का टुकड़ा श्री सरकार के कमरे में किसने फेंका?'
‘और क्यों? ठीक है, अगला?’
‘पांचवां प्रश्न—हत्या स्थल पर आपको किसकी कमीज का बटन मिला?’
'हां, हालांकि यह संभवतः हत्या के शिकार व्यक्ति की कमीज से गिरा होगा।' 'छठा सवाल—हमारे अलावा, यामांतक के बारे में पूछने के लिए तिब्बती संस्थान कौन गया था?'
'शानदार। अगर तुम इसी तरह आगे बढ़ते रहे, तो करीब दस साल में तुम खुद एक माहिर जासूस बन जाओगे!'
मुझे पता था कि फेलुदा मजाक कर रहा था, लेकिन यह सोचकर मुझे काफी खुशी हुई कि मैंने परीक्षा पास कर ली है।
'केवल एक ही व्यक्ति है जिससे हम अभी तक नहीं मिले हैं और मुझे लगता है कि हमें उससे मिलना चाहिए।'
'कोण है वोह?'
'डॉ. वैद्य। अगर वो भविष्यवाणियां कर सकते हैं, दिवंगत आत्माओं से बात कर सकते हैं और अन्य करतब दिखा सकते हैं, तो वो जरूर एक दिलचस्प इंसान होंगे।'

छह

हम योजना के अनुसार रुमटेक के लिए रवाना हुए और सिलीगुड़ी जाने वाली सड़क पकड़ी। वही सड़क दाईं ओर मुड़कर एक नई सड़क से मिल गई जो सीधे रुमटेक की ओर जाती थी। दोनों सड़कें खूबसूरत गांवों और हरे-भरे मक्के के खेतों से होकर गुज़रती थीं। सूरज डूब चुका था और आसमान धुंधलाने लगा था, इसके बावजूद मुझे यह यात्रा बेहद सुखद लगी।
हमारा ड्राइवर बहुत सावधानी से गाड़ी चला रहा था। मैं और फेलुदा उसके साथ आगे बैठे थे। हेलमुत और श्री सरकार पीछे आमने-सामने बैठे थे। हेलमुत ने बताया कि उसके पैर में अब काफी आराम है। दर्द चला गया था, एक जर्मन दर्द निवारक बाम की वजह से। श्री सरकार काफी खुशमिजाज लग रहे थे। मुझे उनकी गुनगुनाहट सुनाई दी। सिर्फ फेलुदा बिल्कुल चुप और गुमसुम था। मैं समझ गया कि वह उन छह सवालों के जवाब ढूंढने की पूरी कोशिश कर रहा था। अगर हमने पहले से इस यात्रा की योजना न बनाई होती, तो वह दोपहर भर अपनी नोटबुक में कुछ न कुछ लिखता रहता।
हमारी जीप दाईं ओर मुड़ी, जिससे नए घर और इमारतें, और झंडियों जैसी दिखने वाली कतारें दिखाई देने लगीं। मुझे बाद में पता चला कि तिब्बती लोग बुरी आत्माओं को दूर रखने की मान्यता में अपने घरों के बाहर रस्सियों से कपड़े के चौकोर टुकड़े लटकाते हैं।
कुछ मिनट बाद, एक हल्की सी आवाज़ जो पहले ही मेरे कानों तक पहुँच चुकी थी, तेज़ हो गई। यह एक गहरे और गंभीर सींग की आवाज़, झांझ की झंकार और बांसुरी की तीखी आवाज़ का मिश्रण थी। मैंने सोचा, यह ज़रूर लामा नृत्य का संगीत होगा, क्योंकि हमारी जीप मठ के विशाल द्वार के बाहर रुक गई। श्री सरकार ने शायद हेलमुट को जानकारी देते हुए बताया, 'लामा नृत्य कर रहे हैं।' हम सब गाड़ी से उतर गए।
द्वार से गुज़रते ही हम एक विशाल खुले आँगन में पहुँच गए। वहाँ नीले और सफ़ेद रंग की कढ़ाई वाला एक सुंदर शामियाना लगा हुआ था। दर्शक शामियाने के नीचे बैठे थे। लगभग दस पुरुष, चमकीले वस्त्र और विचित्र मुखौटे पहने हुए,

संगीत की धुन पर नाच रहे थे, उछल-कूद कर रहे थे और झूम रहे थे। संगीतकार सभी लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे। दस वर्ष से भी कम उम्र के छोटे लड़के तुरही बजा रहे थे, जिनमें से प्रत्येक कई फीट लंबी थी। मैंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था।
हेल्मुट ने तस्वीरें लेना शुरू कर दिया। आज वह तीन कैमरे लेकर चल रहा था। श्री सरकार ने पूछा, 'क्या आप बैठना चाहेंगे?'
‘तुम क्या करना चाहते हो?’ फेलुदा ने कहा।
‘मैंने इस तरह की चीज पहले भी कलिम्पोंग में देखी है। मैं इस आंगन के पीछे स्थित मंदिर को देखने जा रहा हूँ। कहा जाता है कि इसकी भीतरी दीवारें बहुत ही सुंदर नक्काशी से सजी हैं।’
श्री सरकार चले गए। फेलुदा और मैं ज़मीन पर बैठ गए। फेलुदा ने कहा, 'परंपरा एक अजीब चीज़ है। इस तरह का पारंपरिक नृत्य आपको यह भुला सकता है कि आप बीसवीं सदी में जी रहे हैं। मुझे नहीं लगता कि नृत्य के इस रूप में पिछले हज़ार वर्षों में कोई बदलाव आया है।'
‘इस जगह को गुम्फा क्यों कहा जाता है?’
‘नहीं, यह कोई गुफा नहीं है। गुफा तो एक गँवार होती है। यह एक मठ है। दूसरी तरफ़ के वो छोटे-छोटे कमरे देखो? वहीं भिक्षु रहते हैं। ये सारे छोटे-छोटे लड़के, जिनके सिर मुंडे हुए हैं और जिन्होंने तिब्बती वस्त्र पहने हैं, भिक्षु बनने का प्रशिक्षण ले रहे हैं। एक मठ में—’ फेलुदा की बात अधूरी रह गई। मैंने जल्दी से उसकी तरफ देखा तो पाया कि वह भौंहें चढ़ाए, मुँह खुला रह गया। अब क्या बात थी? उसे अचानक क्या सूझा? ‘पहाड़ों की हवा का असर है,’ उसने आखिर में सिर हिलाते हुए कहा। ‘यह मेरे दिमाग पर असर कर रही है। मैंने सोचना बंद कर दिया है। मुझे उस टेलीग्राम का मतलब समझने में इतना समय क्यों लग गया? यह तो बहुत आसान था!’
‘यह इतना आसान कैसे है? मुझे अब भी समझ नहीं आ रहा—’
‘देखो, इसमें “बीमार” लिखा है। इसका मतलब सिक्किम है। और “राक्षस” का मतलब मठ है।’
अरे वाह, बात समझ में आई! इसका पूरा मतलब क्या है?
‘आपका बेटा एक बीमार राक्षस हो सकता है। अगर आप “IS” की जगह “IN” पढ़ेंगे, तो इसका मतलब होगा कि आपका बेटा सिक्किम के एक मठ में हो सकता है।’

'क्या इसका मतलब यह है कि श्री शेल्वंकर का बेटा, जो पंद्रह साल पहले घर छोड़कर चला गया था, इस समय यहीं मौजूद है?'
'प्रिटेक्स ने यही कहा था। अगर शेल्वंकर इस टेलीग्राम का अर्थ समझ पाते, तो शायद उन्हें उम्मीद जगती। मैंने जो सुना है, उससे यही लगता है कि वे अपने बेटे से बहुत प्यार करते थे और उसे वापस पाना चाहते थे।'
'शायद जिस दिन उनकी मृत्यु हुई, उस दिन वह अपने बेटे को ढूंढने के लिए ही उस गुफा में जा रहे थे।'
‘यह बिल्कुल संभव है। और अगर उसका बेटा सचमुच सिक्किम में कहीं था, तो संभावनाएँ...’ फेलुदा फिर रुक गया। फिर मैंने उसे धीमी आवाज़ में बुदबुदाते सुना, ‘क्या... क्या... अगर शेल्वंकर ने वसीयत में सब कुछ अपने बेटे के नाम कर दिया था, तो उसे बहुत फायदा होगा।’ फेलुदा उठा और भीड़ से बाहर निकल गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे गया। वह स्पष्ट रूप से बेचैन था, क्योंकि उसे अभी- अभी पता चला था कि टेलीग्राम का असली मतलब क्या था। मैंने उसे चारों ओर देखते हुए देखा। क्या वह तिब्बतियों के बीच किसी भारतीय को ढूंढ रहा था? हम मंदिर की दिशा में चलने लगे, जहाँ श्री सरकार कुछ मिनट पहले गायब हो गए थे। प्रांगण के दूसरी ओर कम लोग थे। जब हम भिक्षुओं के कमरों के पास से गुज़रे, तो हमने गलियारे में बाहर बैठे दो बहुत वृद्ध भिक्षुओं को देखा, जो चुपचाप आँखें बंद करके प्रार्थना चक्र घुमा रहे थे। उनके झुर्रियों से भरे चेहरों को देखकर लगता था कि उनकी उम्र सौ वर्ष रही होगी।
कमरों के पीछे एक लंबा बरामदा था। उसकी दीवारें बुद्ध के जीवन के दृश्यों को दर्शाने वाले चित्रों से सजी थीं। बरामदा एक अंधेरे हॉल में खुलता था। अंदर कतारों में टिमटिमाते तेल के दीपक रखे थे। लाल रंग से रंगा एक विशाल लकड़ी का दरवाजा खुला हुआ था, लेकिन दरवाजे पर कोई नहीं था। फेलुदा और मैं चुपचाप अंदर चले गए।
अँधेरे, नमी से भरे हॉल में अगरबत्ती की एक अजीब सी खुशबू फैली हुई थी। ऊँची छत से चमकीले रेशम के बेहद लंबे, भारी कढ़ाई वाले कपड़े लटक रहे थे। कोनों में रंग-बिरंगे कपड़ों से ढकी बेंचें रखी थीं, साथ ही कुछ बड़े-बड़े ढोल जैसे दिखने वाले यंत्र भी थे। ये बांस की छड़ियों पर टिके हुए थे। इनके पीछे, हॉल के सबसे अँधेरे कोने में, कई ऊँची मूर्तियाँ थीं, जिनमें ज़्यादातर बुद्ध की थीं। कई गुलदानों में फूल सजाए गए थे, और जो तेल के दीपक मैंने बाहर से देखे थे, वे मूर्तियों के नीचे रखे थे।

मैं इन चीजों को देखने में पूरी तरह मग्न था कि अचानक फेलुदा ने मेरे कंधे पर हाथ रख दिया। मैंने झट से ऊपर देखा तो पाया कि वह हॉल के एक तरफ के प्रवेश द्वार को घूर रहा था। एक तरफ का छोटा सा दरवाजा खुला हुआ था।
'चलो यहाँ से चलते हैं,' उसने दांत भींचते हुए कहा और दरवाजे की ओर बढ़ने लगा।
हॉल से बाहर निकलते ही हमें ऊपर जाने वाली सीढ़ियाँ दिखाई दीं। फेलुदा ने कहा, 'मुझे नहीं पता कि वह कहाँ गया, लेकिन चलो ऊपर चलते हैं।'
‘कौन कहाँ गया?’ मैं फुसफुसाते हुए सीढ़ियों पर दौड़ पड़ी।
'एक आदमी लाल कपड़े पहने हुए था। वह हॉल में झाँक रहा था। जैसे ही उसे एहसास हुआ कि मैंने उसे देख लिया है, वह भाग गया।'
‘क्या तुमने उसका चेहरा देखा?’
नहीं, बहुत अंधेरा था।
हमें पहली मंज़िल पर एक कमरा मिला, लेकिन उसका दरवाज़ा बंद था। शायद यह वरिष्ठ लामा का कमरा था, जो हाल ही में तिब्बत से लौटे थे। बाईं ओर एक खुली छत थी। यहाँ भी रस्सियों से कपड़े के टुकड़े लटके हुए थे। नीचे आँगन से संगीत की मधुर धुनें मेरे कानों तक पहुँच रही थीं। इस तरह का नृत्य सात-आठ घंटे तक चल सकता था।
हम छत पार करके रेलिंग के पास खड़े हो गए, जहाँ से हरी-भरी घाटी दिखाई दे रही थी। कोहरा उठने लगा था, जो धीरे-धीरे सब कुछ ढक रहा था। 'अगर शेल्वंकर का बेटा यहाँ होता तो—' फेलुदा ने बोलना शुरू किया, लेकिन एक ज़ोरदार चीख ने उसे रोक दिया।
‘मेरी मदद करो! हे भगवान... बचाओ!... मदद करो... मदद करो!’
यह श्री सरकार की आवाज थी।
हम दौड़कर सीढ़ियों की ओर वापस गए। नीचे उतरने और मठ के पिछले द्वार तक पहुँचने में हमें एक मिनट से भी कम समय लगा। हम बाहर निकले तो देखा कि मदद के लिए चीखें एक पहाड़ी की तलहटी से आ रही थीं। इलाका ऊबड़-खाबड़ था, झाड़ियों और छोटे पौधों से भरा हुआ था, जिसका एक सिरा लगभग सौ फीट की गहरी खाई में जाता था। यहीं पर श्री सरकार पहाड़ी के किनारे एक झाड़ी से लटके हुए थे। हमारे आने पर उनकी चीखें और तेज़ हो गईं। 'मैं मर रहा हूँ... मुझे बचाओ, कृपया मुझे बचाओ!'

उसे खींचकर सुरक्षित स्थान पर लाना ज़्यादा मुश्किल नहीं था। लेकिन जैसे ही उसके पैर ज़मीन पर पड़े, उसने आँखें घुमाईं और बेहोश हो गया। फिर हमें उसे उठाकर जीप तक ले जाना पड़ा और उसके चेहरे पर ठंडा पानी छिड़कना पड़ा। कुछ ही पलों में उसे होश आया और वह धीरे-धीरे उठकर बैठ गया।
‘क्या हुआ?’ फेलुदा ने पूछा।
‘मुझे याद मत दिलाओ!’ श्री सरकार ने सिसकते हुए कहा। ‘उस लंबी यात्रा के बाद, मुझे... मेरा मतलब... शौच करने जाना था... इसलिए मैंने सोचा कि मठ से बाहर जाना बेहतर होगा, और मुझे यह जगह काफी उपयुक्त लगी, लेकिन... लेकिन किसे पता था कि मेरा पीछा किया जा रहा था?’
क्या किसी ने तुम्हें पीछे से धक्का दिया?
'बिल्कुल। यह बहुत भयानक था! अगर मुझे पकड़ने के लिए वह झाड़ी न मिली होती, तो तिब्बती चेतावनी पल भर में सच हो जाती!'
‘क्या तुमने उस आदमी को देखा?’
नहीं, बिलकुल नहीं! वह मेरे पीछे से चुपके से आया था, है ना?
इस तरह की घटना के बाद रुमटेक में रुकने का कोई मतलब नहीं था। हमने तुरंत गंगटोक वापस जाने का फैसला किया। हेलमुट, जिसने हमें जीप की ओर लौटते देखा था, हमारे साथ वापस चलने के लिए तैयार हो गया, हालाँकि मुझे लगता है कि वह और तस्वीरें न ले पाने से निराश था।
फेलुदा एक बार फिर चुप हो गया था। लेकिन जैसे ही हमारे ड्राइवर ने जीप स्टार्ट की, वह अचानक बोला, 'श्रीमान सरकार, आपको इस पूरे मामले में अपनी जिम्मेदारी का एहसास जरूर होगा?'
‘जिम्मेदारी?’ श्री सरकार ने कर्कश स्वर में पूछा।
'जब तक आप हमें यह नहीं बताएंगे कि आप क्या या किसे ढूंढ रहे हैं, तब तक हमारे लिए यह पता लगाना असंभव है कि आपको कौन डराने की कोशिश कर रहा है।' श्री सरकार उठ बैठे, बेहद परेशान दिख रहे थे। 'मैं कसम खाता हूँ, महोदय— मैं वादा करता हूँ—मैंने कभी किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। कम से कम जानबूझकर तो नहीं।'
'क्या आपका कोई जुड़वां भाई या बहन है?'
नहीं, नहीं। मैं अपने माता-पिता की इकलौती संतान हूँ।
'हम्म। मुझे लगता है कि तुम सच कह रहे हो। ध्यान रहे, अगर तुमने मुझसे झूठ बोला, तो मुसीबत में तुम ही पड़ोगे।'

बाकी का सफर पूरी तरह खामोशी में बीता। फेलुदा ने तभी बोलना शुरू किया जब हमारी जीप डाक बंगले पर रुकी और हेलमुट ने अपना हिस्सा चुकाने की कोशिश की।
‘नहीं, नहीं,’ फेलुदा ने कहा, ‘हमने ही तो आपको आमंत्रित किया था, है ना? इसके अलावा, आप हमारे देश में अतिथि हैं। हम आपको एक पैसा भी देने की अनुमति नहीं दे सकते।’
‘ठीक है।’ हेल्मुट मुस्कुराया। ‘क्या आप मुझे कम से कम एक कप चाय तो पिला सकते हैं?’
यह एक बहुत अच्छा विचार लगा, इसलिए हम सब बाहर निकल गए। फेलुदा और श्री सरकार ने ड्राइवर को किराया दिया। फिर हेलमुत हमें अपने कमरे में ले गया। हमने अभी-अभी अपने लिए तीन कुर्सियाँ ढूंढी ही थीं और हेलमुट ने अपने कैमरे मेज पर रखे ही थे कि एक अजनबी कमरे में दाखिल हुआ और हेलमुट को मुस्कुराते हुए नमस्कार किया। घनी दाढ़ी, जिसमें कुछ सफ़ेद बाल भी थे, उसके चेहरे के अधिकांश हिस्से को ढके हुए थी। उसके लंबे बाल कंधों तक लटके हुए थे। उसने ढीली फलालैन की पतलून और ऊँची गर्दन वाली बेढंगी नारंगी जैकेट पहनी हुई थी। उसके हाथ में एक मोटी छड़ी थी।
हेल्मुट ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया और हमारी ओर मुड़ा। उसने कहा, 'मैं आप लोगों का परिचय कराता हूँ। ये हैं डॉ. वैद्य।'

सात

‘क्या आप बंगाल से हैं?’ डॉ. वैद्य ने पूछा। उन्होंने एक अजीब लहजे में बात की।
‘हां,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। ‘हेल्मुट ने आपके बारे में हमें बताया है।’ डॉ. वैद्य ने सिर हिलाते हुए कहा, 'हेल्मुट एक अच्छा लड़का है, लेकिन मुझे उसे एक बात के बारे में चेतावनी देनी पड़ी है। यहाँ के लोग आमतौर पर फोटो खिंचवाना पसंद नहीं करते। दरअसल, उनका मानना है कि अगर किसी व्यक्ति का कोई हिस्सा किसी और जगह पर किसी दूसरे रूप में प्रदर्शित किया जाता है, तो इससे उस व्यक्ति की जीवन शक्ति—जीने की क्षमता—कम हो जाती है।'
क्या आप स्वयं इस पर विश्वास करते हैं?
‘मेरी मान्यताएं कोई मायने नहीं रखतीं, कम से कम हेलमुट के लिए तो नहीं। उसने तस्वीरें लेना बंद तो नहीं किया है, है ना? अरे, मैं भी उसके कैमरे में कैद हो चुका हूँ! मैं बस इतना कहना चाहता हूँ: जीवन में किसी भी चीज़ को बिना अध्ययन किए या गहराई से परखे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। मुझे अभी बहुत कुछ सीखना है।’
लेकिन आपको तो पहले से ही बहुत कुछ पता है! मैंने सुना है कि आप भविष्य देख सकते हैं और यहां तक कि मृतकों से भी बात कर सकते हैं।'
‘नहीं, हमेशा नहीं।’ डॉ. वैद्य ने हल्की सी मुस्कान दी। ‘बहुत कुछ आस-पास के माहौल पर निर्भर करता है। लेकिन कुछ चीजें ऐसी हैं जिन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है। उदाहरण के लिए, मैं बता सकता हूँ कि ये सज्जन बहुत तनाव में हैं,’ उन्होंने श्री सरकार की ओर इशारा करते हुए कहा, जिन्होंने घबराहट में अपने होंठ चाटे।
‘जी हां, आप सही कह रहे हैं,’ फेलुदा ने कहा। ‘कोई उसे धमकाने की कोशिश कर रहा है। उसे लगता है कि उसकी जान खतरे में है। क्या आप बता सकते हैं कि यह कौन कर रहा है?’
डॉक्टर वैद्य ने अपनी आँखें बंद कर लीं। कुछ सेकंड बाद उन्होंने आँखें खोलीं और अनमने ढंग से खिड़की से बाहर देखने लगे। 'एजेंट,' उन्होंने कहा।

'प्रतिनिधि?'
'हां। मनुष्य को अपने पापों के लिए दंडित होना ही चाहिए। कभी-कभी उसे सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा दंडित किया जाता है। कभी-कभी ईश्वर इस कार्य को करने के लिए अपने दूतों को भेजता है।'
‘बस करो!’ श्री सरकार चिल्लाए। उनकी आवाज कांप रही थी। ‘मैं और कुछ नहीं सुनना चाहता।’
डॉ. वैद्य फिर मुस्कुराए। ‘मैं ये सब इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि तुम्हारे दोस्त ने मुझसे पूछा है। अगर तुम खुद कुछ सीख सकते हो, तो शिक्षक की तलाश करने की कोई ज़रूरत नहीं है। लेकिन एक बात मैं तुम्हें ज़रूर बता दूँ। अगर तुम जीना चाहते हो, तो तुम्हें बहुत सावधानी से आगे बढ़ना होगा।’
श्री सरकार ने पूछा, 'इसका क्या मतलब है?'
मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं कह सकता।
चाय आ गई। हेलमुट ने चाय परोसी और कपों में सबको दे दी।
फेलुदा ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा, 'मुझे लगता है आप श्री शेल्वंकर से मिले थे।' 'हाँ। यह सब बहुत दुखद है। मैंने उन्हें आने वाले मुश्किल दौर के बारे में आगाह किया था। लेकिन मृत्यु? नहीं, वह बिल्कुल अलग बात है, और उस पर किसी का कोई नियंत्रण नहीं है।'
इसके बाद किसी ने कुछ नहीं कहा। हम सब चुपचाप चाय पीते रहे। हेलमुट अपनी मेज पर कुछ कागज़ात समेटने लगा। श्री सरकार कहीं खोई-खोई सी बैठी रही, मानो उसे पता ही न हो कि उसकी चाय ठंडी हो रही है। केवल फेलुदा ही पूरी तरह से सहज लग रही थी, वह चाय के साथ आए बिस्कुट बड़े चाव से खा रही थी। थोड़ी देर बाद हेलमुट बत्ती जलाने के लिए उठा। तब तक लगभग दिन का उजाला खत्म हो चुका था। लेकिन पता चला कि बिजली चली गई थी। 'मैं कुछ मोमबत्तियाँ लाता हूँ,' हेलमुट ने कहा और बिजली लाने वाले को ढूंढने बाहर चला गया।
फेलुदा ने फिर से डॉ. वैद्य की ओर रुख किया। 'क्या आपको सच में लगता है कि श्री शेल्वंकर की मृत्यु एक दुर्घटना थी?'
डॉ. वैद्य ने जवाब देने में कुछ क्षण लिए। फिर उन्होंने कहा, 'उस प्रश्न का उत्तर केवल एक ही व्यक्ति जानता है।'
'कौन?'
‘जो व्यक्ति मर गया, वही सत्य जानता है। हम जो जीवित हैं, इस संसार और इस जीवन को उन आँखों से देखते हैं जो हर अप्रासंगिक और अनावश्यक विवरण को

ग्रहण करती हैं। बस उस खिड़की से बाहर देखिए। वे सभी पहाड़, पेड़ और नदियाँ अप्रासंगिक हैं। वे हमारे और सत्य के बीच एक परदे की तरह खड़े हैं। लेकिन मृत्यु एक ऐसी आंतरिक आँख खोलती है जो केवल वही देखती है जो वास्तविक और वास्तव में महत्वपूर्ण है।’
इस भाषण का अधिकांश भाग मेरी समझ से परे था, लेकिन मुझे यकीन था कि फेलुदा ने एक-एक शब्द समझ लिया था। 'आपका मतलब है कि केवल श्री शेल्वंकर ही बता सकते हैं कि उनकी मृत्यु कैसे हुई?' फेलुदा ने पूछा।
'हां। जब उनकी मृत्यु हुई तब उन्हें सच्चाई का पता नहीं चल सकता था। लेकिन अब... हां, अब उन्हें ठीक-ठीक पता है कि क्या हुआ था।'
मुझे अचानक कंपकंपी महसूस हुई। वातावरण में कुछ अजीब सा सन्नाटा छाया हुआ था, मृत्यु के बारे में इतनी सारी बातें हो रही थीं, और जिस तरह से डॉ. वैद्य अंधेरे में मुस्कुरा रहे थे, उससे मेरे रोंगटे खड़े हो गए।
इसी समय नौकर अंदर आया। उसने मेज साफ की और उस पर एक मोमबत्ती रखी। फेलुदा ने चारमीनार का एक पैकेट निकाला, कमरे में मौजूद सभी लोगों को दिया और फिर खुद भी एक मोमबत्ती जलाई। धुएं का छल्ला उड़ाते हुए उसने कहा, 'श्री शेल्वंकर से सलाह लेना अच्छा रहेगा, उनकी राय जान लें।' मैं जानता था कि उन्होंने प्रेतात्माओं से संपर्क करने के अनुष्ठानों और अलौकिक विषयों पर बहुत कुछ पढ़ा था। वे हर विषय पर खुले दिमाग से सोचते थे, दूसरों के विचारों को पढ़ने या सुनने में कभी संकोच नहीं करते थे, भले ही वे खुद किसी बात पर विश्वास न करते हों।
डॉक्टर वैद्य ने अपनी आँखें बंद कर लीं। कुछ क्षण बाद, उन्होंने आँखें खोलीं और कहा, 'दरवाजे और खिड़कियाँ बंद कर दो।' उनके लहजे में एक अधिकारिक भाव था। श्री सरकार सम्मोहित व्यक्ति की तरह उठे और चुपचाप उनकी बात मान ली। हम सब मेज के चारों ओर मोमबत्ती की हल्की टिमटिमाती रोशनी में बैठे रह गए। मेरे दाहिनी ओर डॉक्टर वैद्य थे। मेरे बाईं ओर फेलुदा बैठे थे। श्री सरकार उनके बगल में बैठे थे। हेलमुट ने घेरा पूरा किया।
‘अपने हाथों को हथेलियाँ नीचे की ओर करके इस मेज पर रखें। आपकी उंगलियाँ बगल वाले हाथ की उंगलियों को छूनी चाहिए,’ डॉ. वैद्य ने आदेश दिया। हमने वैसा ही किया जैसा हमें बताया गया था। डॉ. वैद्य ने अपने हाथ मेरे और हेलमुट के हाथों के बीच रखे और कहा, ‘सीधे उस मोमबत्ती को देखो और शेल्वंकर की मृत्यु के बारे में सोचो।’

मोमबत्ती लगातार जल रही थी। मेज पर मोम की कुछ बूँदें गिर गई थीं। कमरे में फंसा एक छोटा सा कीड़ा लौ के आसपास भिनभिनाने लगा। पता नहीं हम कितनी देर तक चुपचाप बैठे रहे। मैंने डॉक्टर वैद्य की तरफ तिरछी नज़रें डालीं, लेकिन वे मुझे देख नहीं पाए होंगे क्योंकि उनकी आँखें बंद थीं।
काफी देर बाद उन्होंने बोलना शुरू किया। उनकी आवाज़ बहुत धीमी थी, मानो वे बहुत दूर से बोल रहे हों। उन्होंने पूछा, 'आप क्या जानना चाहते हैं?' फेलुदा ने जवाब दिया, 'क्या श्री शेल्वंकर की मृत्यु दुर्घटना में हुई?' ‘नहीं,’ उस धुंधली, अजीब सी आवाज ने कहा।
उनकी मृत्यु कैसे हुई?
सन्नाटा छा गया। हम सब अब डॉक्टर वैद्य की ओर देख रहे थे। वे अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुके हुए थे। उनकी आँखें कसकर बंद थीं। बाहर बिजली चमकी, जिससे एक पल के लिए हमारा कमरा रोशन हो गया। उसी क्षण फेलुदा के प्रश्न का उत्तर मिल गया।
डॉ. वैद्य ने कहा, 'हत्या।'
‘मु-ह-ह-उ-रडर?’ श्री सरकार हांफते हुए बोले।
‘उसे किसने मारा?’ फेलुदा जानना चाहता था। वह डॉक्टर वैद्य के हाथों को घूर रहा था। डॉक्टर वैद्य ने आह भरी। फिर वे ज़ोर-ज़ोर से सांस लेने लगे, मानो सांस लेने में उन्हें बहुत दर्द हो रहा हो। ‘वीरेंद्र!’ उन्होंने अंत में फुसफुसाते हुए कहा। वीरेंद्र? वह कौन था? फेलुदा कुछ बोलने ही वाला था कि डॉक्टर वैद्य ने अचानक अपनी आँखें खोलीं और कहा, ‘एक गिलास पानी, कृपया।’ हेल्मुट उठा और अपनी फ्लास्क से उसे पानी पिलाया। फेलुदा ने तब तक इंतजार किया जब तक डॉ. वैद्य ने पानी पी नहीं लिया। फिर उसने पूछा, 'मुझे नहीं लगता कि यह पता लगाने का कोई मौका है कि यह वीरेंद्र कौन है?'
इस बार हेलमुट ने जवाब दिया। 'वीरेंद्र श्री शेल्वंकर का बेटा है। उन्होंने ही मुझे उसके बारे में बताया था।'
अब हमारे जाने का समय हो गया था। हम सब खड़े हो गए। हेलमुट ने दरवाजे और खिड़कियाँ खोल दीं। एक सेकंड बाद बिजली वापस आ गई।
‘आप तो बड़ी आसानी से घबरा जाते हैं, है ना?’ डॉक्टर वैद्य ने श्री सरकार के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। श्री सरकार ने मुस्कुराने की कोशिश की। ‘खैर, मुझे नहीं लगता कि अब आपको कोई खतरा है,’ डॉक्टर वैद्य ने उन्हें आश्वस्त

करते हुए कहा। इस बार श्री सरकार अधिक स्वाभाविक रूप से मुस्कुराए और स्पष्ट रूप से राहत महसूस कर रहे थे।
‘आप यहां कितने समय के लिए हैं?’ फेलुदा ने डॉ. वैद्य से पूछा।
'अगर बारिश नहीं हुई तो मैं कल पेमियांगची जाना चाहूंगा। मैंने सुना है कि वहां के मठ में कुछ प्राचीन और मूल्यवान पांडुलिपियां हैं।'
क्या आप तिब्बत और तिब्बती संस्कृति का अध्ययन कर रहे हैं?
हां, आप इसे ऐसा कह सकते हैं। यह दुनिया की एकमात्र प्राचीन सभ्यता है जो बची हुई है। मिस्र, इराक, मेसोपोटामिया... ये सभी नष्ट हो गए। लेकिन भारत में क्या बचा है, बताइए? यह सब एक बड़ा खिचड़ी मिश्रण है। केवल तिब्बत ही है जिसने अपनी अधिकांश विरासत को संरक्षित रखा है। सौभाग्य से, सिक्किम के कुछ पुराने मठों में उनकी कला और संस्कृति के अंश मौजूद हैं, इसलिए उन्हें खोजने के लिए तिब्बत तक जाने की आवश्यकता नहीं है।
हम बाहर निकले तो देखा कि आसमान घने, काले बादलों से ढका हुआ था और बिजली लगातार कड़क रही थी। यह निश्चित था कि फिर से बारिश शुरू हो जाएगी।
‘आप पेमियांगची क्यों नहीं जाते?’ डॉ. वैद्य ने पूछा। ‘हां, हम ऐसा कर सकते हैं। मैंने उस जगह के बारे में बहुत कुछ सुना है।’
अगर आप ऐसा करते हैं, तो अपने साथ नमक की एक थैली ले जाना न भूलें।
‘नमक? किसलिए?’
‘जोंक। उनसे छुटकारा पाने के लिए नमक से बेहतर कुछ नहीं है।’

आठ

फेलुदा, श्री सरकार और मैं अपने होटल वापस आ गए थे और रात का खाना खाने बैठे थे। हालाँकि होटल कई मायनों में औसत दर्जे का था, लेकिन वहाँ का रसोइया बहुत ही बढ़िया था।
श्री सरकार ने हड्डी से मज्जा निकालने की कोशिश करते हुए कहा, "सच कहूँ तो, वह बहुत ही नेक इंसान हैं।" आज रात के खाने में लज़ीज़ मेमने की करी परोसी गई थी।
‘कौन? आपका मतलब डॉ. वैद्य से है?’
'हां। वह वाकई असाधारण प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। ऐसा लगता था मानो उन्हें सब कुछ पता हो।'
‘हाँ, तुम्हें खुश होना चाहिए,’ फेलुदा ने हंसते हुए कहा। ‘क्या उसने तुम्हें यह नहीं बताया कि अब तुम खतरे में नहीं हो?’
‘क्यों, क्या आपको उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ?’
‘अगर उसकी बात सच निकली तो मैं उस पर यकीन करूँगा। लेकिन अभी मुझे लगता है कि हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम किस पर या किस बात पर यकीन करें। इस धंधे में बहुत सारे धोखेबाज हैं।’ फेलुदा फिर से भौंहें चढ़ा रहा था। ज़ाहिर है कोई बात उसे बहुत परेशान कर रही थी। काश मुझे पता होता कि क्या बात है।
‘क्या आपको लगता है कि उसने हत्या के बारे में जो कहा वह सच है?’ श्री सरकार ने जोर देकर पूछा।
'हा करता हु।'
'में क्यों?'
‘इसका एक कारण है।’ फेलुदा ने इससे ज्यादा कुछ भी कहने से इनकार कर दिया। हम दोनों रात के खाने के बाद पान खरीदने के लिए फिर बाहर गए। बारिश शुरू नहीं हुई थी, लेकिन हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी। फेलुदा ने एक पान मुंह में डाला और टहलने लगा। कुछ ही मिनटों बाद, वह रुका और बोला, 'इस तरह तो मैं अपना समय बर्बाद कर रहा हूँ। सुनो, टॉपशे, तुम आधे घंटे के लिए टहलने क्यों

नहीं चली जाती? मैं अपने कमरे में अकेले, बिना किसी रुकावट के काम करना चाहता हूँ।'
मैं मान गया, और फेलुदा चला गया। मैं धीरे-धीरे दूसरी तरफ फुटपाथ पर गया और मुख्य कस्बे की ओर जाने वाली सड़क पर धीरे-धीरे चलने लगा। सारी दुकानें बंद थीं। कुछ आदमी एक दुकान के सामने घेरा बनाकर जुआ खेल रहे थे। मैंने किसी को पासे खड़खड़ाते सुना, जिसके बाद ज़ोरदार चीख और ठहाके सुनाई दिए। सड़क की बत्तियाँ मंद थीं, फिर भी मेरी नज़र सामने से तेज़ी से आती हुई एक आकृति पर पड़ी। जैसे-जैसे वह नज़दीक आया, मुझे एहसास हुआ कि वह हेलमुट था। किसी चीज़ ने मुझे उसे पुकारने से रोक दिया। लेकिन वह इतना मग्न था कि मेरे पास से गुज़रते हुए भी उसने मुझे देखा तक नहीं। मैं उसकी पीठ को तब तक देखता रहा जब तक वह मेरी नज़रों से ओझल नहीं हो गई। फिर मैंने अपनी घड़ी देखी और होटल लौट गया।
फेलुदा पीठ के बल लेटा हुआ था और उसने अपनी नोटबुक को अपनी छाती पर टिका रखा था।
मेरे अंदर आते ही उन्होंने मुझसे कहा, ‘मैंने संदिग्धों की सूची को अपडेट कर दिया है। वीरेंद्र शेल्वंकर तो पहले से ही संदिग्ध था, है ना? बस हमें उसका नाम नहीं पता था। क्या आपने डॉ. वैद्य का नाम अपनी सूची में जोड़ दिया है?’
फेलुदा मुस्कुराया। 'मानना पड़ेगा कि उस आदमी ने खूब नाटक किया। फिर भी, यह सब सच भी हो सकता है, कौन जाने? लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उसने और शेल्वंकर ने आपस में बात की थी। जब तक हमें यह पता नहीं चल जाता कि उन दोनों ने वास्तव में क्या बात की थी, तब तक यह सुनिश्चित करने का कोई तरीका नहीं है कि डॉ. वैद्य धोखेबाज हैं या नहीं।'
लेकिन श्री सरकार के बारे में उनकी बात सही थी, है ना?
'यह तो काफी आसान था। श्री सरकार लगातार अपने नाखून चबा रहे थे। कोई भी अंदाजा लगा सकता था कि वे तनाव में थे।'
और हत्या के बारे में क्या?
'हो सकता है उसने यह बात सिर्फ प्रभाव पैदा करने के लिए कही हो। स्वाभाविक मृत्यु, या किसी वास्तविक दुर्घटना से हुई मृत्यु, बहुत ही साधारण लगती है। इसे हत्या कहिए, तो यह कहीं अधिक नाटकीय लगती है।'
तो आपकी संदिग्धों की सूची में कौन-कौन हैं?

‘हमेशा की तरह सभी लोग।’
‘डॉ. वैद्य समेत सभी लोग?’
'हां। हो सकता है कि उन्हें यमंतक की मूर्ति के बारे में पता हो।'
‘और हेलमुट? वह अभी मेरे पास से गुजरा, लेकिन ऐसा लगा जैसे उसने मुझे देखा ही नहीं।’
इससे फेलुदा को कोई हैरानी नहीं हुई। 'हेल्मुट मुझे शुरू से ही एक रहस्यमय व्यक्ति लगा। वह सिक्किम पर एक किताब के लिए तस्वीरें ले रहा था, और फिर भी उसे रुमटेक में लामा नृत्य के बारे में जानकारी नहीं थी। यही उसके बारे में संदेह करने के लिए काफी है।'
‘क्यों? इसका क्या मतलब हो सकता है?’
‘इसका मतलब यह हो सकता है कि उसने हमें सिक्किम में आने का असली कारण नहीं बताया है।’ मैं काफी उलझन में पड़ गया, इसलिए मैंने सवाल पूछना बंद कर दिया। फेलुदा अपनी नोटबुक में कुछ लिखने में वापस लग गया।
पौने ग्यारह बजे श्री सरकार ने शुभ रात्रि कहने के लिए हमारे दरवाजे पर दस्तक दी। उसके बाद मैंने किताब पढ़ने की कोशिश की, लेकिन ध्यान नहीं लगा पाया। फेलुदा या तो चुपचाप बैठे रहे या अपनी नोटबुक में लिखी बातों को पढ़ते रहे। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं कब सो गया। जब मैं जागा, तो बाहर पहाड़ धूप से जगमगा रहे थे।
फेलुदा कमरे में नहीं था। शायद वह नहा रहा था। मैंने उसके बिस्तर पर ऐशट्रे के नीचे एक कागज़ का टुकड़ा देखा। क्या उसने मेरे लिए कोई संदेश छोड़ा था? मैंने उसे उठाया और उस पर एक तिब्बती शब्द लिखा हुआ देखा। मैं समझ गया कि इसका क्या मतलब है।
मौत।

नौ

फेलुदा बाथरूम में नहीं थे। मुझे बाद में पता चला कि वो उस सुबह जल्दी उठकर बॉम्बे में एक ज़रूरी फोन करने गए थे। जब मैं नाश्ते के लिए नीचे आया, तो मैंने उन्हें किसी से फोन पर बात करते हुए पाया।
‘मैं श्री बोस से संपर्क नहीं कर पाया,’ उन्होंने रिसीवर नीचे रखते हुए मुझसे कहा। ‘वह आज सुबह बहुत जल्दी चले गए। शायद उन्हें मेरा टेलीग्राम मिल गया हो।’
हमने नाश्ता मंगवाया। कुछ मिनट बाद फेलुदा ने बताया, 'आज मुझे एक प्रयोग करना होगा। मुझे लगता है मैंने कहीं कोई गलती कर दी है। मुझे यह सुनिश्चित करना होगा।'
‘आप यह प्रयोग कहाँ करेंगे?’
मुझे एक शांत जगह चाहिए।
‘आपका मतलब खाली कमरे से है?’
नहीं, नहीं, बेवकूफ। अगर ज़रूरत हो तो मैं होटल का कमरा इस्तेमाल कर सकता हूँ। मुझे सड़क पर निकलना है, लेकिन मुझे दिखना नहीं चाहिए। अगर किसी ने मुझे देख लिया, तो वो ज़रूर सोचेगा कि मैं पागल हूँ। नाश्ते के बाद नाथुला रोड की तरफ चलते हैं। हमने अभी तक गंगटोक की कोई और बड़ी सड़क नहीं देखी थी। पैदल थोड़ा और घूमने का विचार काफी रोमांचक था।
होटल से बाहर निकलते ही हमारी मुलाकात डॉ. वैद्य से हो गई। उन्होंने आज धूप का चश्मा पहना हुआ था। उन्होंने पूछा, 'आप कहाँ जा रहे हैं?'
‘बस थोड़ी देर घूमने के लिए। हमने शहर को ठीक से देखा नहीं है। हम महल की ओर जाने की सोच रहे थे।’
‘ठीक है। मैं एक जीप ढूंढने जा रहा हूँ। पेमियांगची की यात्रा के लिए आज का दिन अच्छा है। अगर आप वहाँ नहीं गए, तो आप वाकई बहुत कुछ खो देंगे।’
हम एक दिन वहां जाने का इरादा रखते हैं।
'कोशिश करो कि जब मैं वहां रहूं तो तुम आ जाओ। गंगटोक बहुत सुरक्षित जगह नहीं है, खासकर तुम्हारे लिए।'

डॉ. वैद्य मुस्कुराते हुए और हाथ हिलाते हुए विदा हुए।
उसने पूछा, 'उसने ऐसा क्यों कहा?'
‘वह बहुत चालाक आदमी है। वह हमें चौंकाना चाहता था, बस इतना ही। जाहिर है उसने देख लिया है कि मैं एक जटिल मामले में शामिल हूं, इसलिए उसने अधिक प्रभाव डालने के लिए कुछ अजीबोगरीब बात कहने का फैसला किया।’
लेकिन आपको वाकई धमकी मिली है, है ना? मैंने वो कागज का टुकड़ा देखा था। ‘यह कोई नई बात नहीं है, है ना?’
'नहीं, लेकिन-'
लेकिन कुछ नहीं। अगर आपको लगता है कि किसी ने कागज के एक टुकड़े पर तिब्बती शब्द लिख दिया है तो मैं अब हार मान लूंगा, तो आप मुझे बिल्कुल नहीं जानते। मैंने कुछ नहीं कहा, लेकिन मन ही मन सोचा कि मैं उसे कितनी अच्छी तरह जानता हूँ। क्या मैंने लखनऊ में सम्राट की अंगूठी के मामले में उसे चमत्कार करते नहीं देखा था, जबकि उसे लगातार धमकियाँ और चेतावनियाँ मिल रही थीं?
हम पहाड़ी पर चढ़ते हुए आगे बढ़ रहे थे और अब एक ऐसे मोड़ पर पहुँच गए थे जहाँ सड़क चौड़ी हो गई थी, लगभग दार्जिलिंग के मॉल की तरह। वहाँ पीले रंग के सड़क चिन्हों वाला एक छोटा सा गोल चक्कर था। दाईं ओर वाले चिन्ह पर 'महल' लिखा था। इस सड़क के अंत में एक बड़ा, भव्य रूप से सजा हुआ द्वार था, जो स्पष्ट रूप से महल का द्वार था। बाईं ओर वाले चिन्ह पर 'नाथुला रोड' लिखा था। सड़क काफी शांत लग रही थी। हमें जो कुछ लोग दिखाई दिए, वे सभी पर्यटक लग रहे थे, जो महल की ओर जा रहे थे। 'चलो, बाईं ओर मुड़ते हैं। जल्दी!' फेलुदा ने कहा।
हम बाईं ओर मुड़े और चीन की सीमा की ओर जाने वाली सड़क पर चल पड़े। दूर-दूर तक कोई नज़र नहीं आ रहा था। फेलुदा लगातार उन पहाड़ियों की ओर देख रहा था जिनके बीच से होकर सड़क गुज़रती थी। अब हम गंगटोक के पूर्वी हिस्से में आ चुके थे। कंचनजंगा पश्चिम में था। यहाँ से मुझे बर्फ से ढकी कोई भी चोटी दिखाई नहीं दे रही थी, लेकिन मुझे एक रोपवे ज़रूर दिखाई दे रहा था।
यह इतना दिलचस्प लग रहा था कि मैं रुक गया और इसे घूरने लगा, समय का मुझे बिल्कुल भी पता नहीं चला। कुछ मिनट बाद, जब मैंने फेलुदा को मुझे पुकारते सुना, तो मुझे अचानक ऊपर देखना पड़ा। जब मैं व्यस्त रोपवे को देख रहा था, तब फेलुदा एक पहाड़ी पर चढ़ गया था और सड़क से कई फीट ऊपर से चिल्ला रहा था, 'अरे, टॉपशे, इधर आओ!'

मैं सड़क छोड़कर उसके पास गया। फेलुदा एक चट्टान के पास खड़ा था, जो लगभग फुटबॉल जितनी बड़ी थी। उसने कहा, 'मैं नीचे जा रहा हूँ। मैं पहाड़ी के पास से चलकर आऊँगा। जब मैं कहूँ, तो इस पत्थर को नीचे धकेल देना। बस थोड़ा सा धक्का देने से ही यह पहाड़ी से नीचे लुढ़क जाएगा। समझे?'
जी हाँ, महोदय। कोई समस्या नहीं!
फेलुदा नीचे उतरा और उस दिशा में गायब हो गया जहाँ से मैं आया था।
फिर मैंने उसे पुकारते हुए सुना, 'तैयार हो?'
‘तैयार!’ मैंने जवाब दिया।
फेलुदा चलने लगा। मैं उसे देख नहीं पा रहा था, लेकिन उसके कदमों की आहट सुन पा रहा था। कुछ क्षण बाद, वह धुंधला सा मेरी नज़र के सामने आया, लेकिन इससे पहले कि मैं उसे ठीक से देख पाता, मैंने उसे चिल्लाते हुए सुना, 'चलो!' मैंने पत्थर को धक्का दिया और वह लुढ़कने लगा। फेलुदा चलता रहा। जब तक पत्थर सड़क पर गिरा, वह उस जगह को पार कर कम से कम दस कदम आगे निकल चुका था। ‘वहीं रुको!’ उसने फिर चिल्लाकर कहा।
फिर वह पत्थर हाथ में लेकर वापस आया। पत्थर अभी भी साबुत था। ‘अब तुम नीचे जाओ और इस पहाड़ी के ठीक उसी तरह आगे बढ़ो जैसे मैंने किया था। मैं यह पत्थर तुम्हारी ओर फेंकूँगा, लेकिन तुम्हें चलते रहना होगा। अगर तुम इसे बहुत तेज़ी से लुढ़कते हुए देखो और महसूस करो कि यह तुम्हें लग सकता है, तो तुम्हें एक तरफ कूद जाना होगा: क्या तुम ऐसा कर सकते हो?’
'ज़रूर।'
मैं जल्दी से नीचे उतरा और फेलुदा पर नज़र रखते हुए चलने लगा। मैंने देखा कि वह सही मौके का इंतज़ार करते हुए स्थिर खड़ा था। तभी उसने पत्थर को ठोकर मारी। मैं चलता रहा। मेरे पहुँचने से कुछ सेकंड पहले ही पत्थर ज़मीन पर गिर गया। फिर वह बाईं ओर ढलान से लुढ़क गया और गायब हो गया।
फेलुदा माथे पर हाथ मारते हुए बैठ गया। मैं मूर्ख की तरह इधर-उधर खड़ा नहीं रहना चाहता था, इसलिए मैं फिर से ऊपर चढ़ गया।
‘मैं कितना बड़ा मूर्ख रहा हूँ, टॉपशे! मैं कितना बड़ा बेवकूफ था। यह तो बहुत आसान था—’
‘फेलुदा!’ मैं चीखी और जल्दी से उसे एक तरफ खींच लिया। उसी क्षण, पहाड़ी की चोटी से एक विशाल चट्टान लुढ़कती हुई नीचे आई और हमसे कुछ इंच की दूरी से गुज़री, रास्ते में एक बड़ी फूलों वाली झाड़ी को कुचलते हुए। जब तक वह सड़क

पर गिरी और आँखों से ओझल हुई, मेरी साँसें धीरे-धीरे सामान्य होने लगी थीं। शुक्र है कि फेलुदा के बोलते समय मैंने ऊपर देखा था। शुक्र है कि मैंने चट्टान को देख लिया था। अगर मैंने नहीं देखा होता... तो अंजाम सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते।
‘धन्यवाद, टॉपशे,’ फेलुदा ने कहा। ‘यह जगह वाकई असुरक्षित लग रही है। चलो वापस चलते हैं।’
हम सड़क पर उतरे और अगले चौराहे तक जितनी तेज़ी से हो सके चलने लगे। वहाँ एक तरफ चंदवा के नीचे बेंचें लगी हुई थीं। हम उनमें से एक पर बैठ गए। 'क्या तुमने किसी को देखा?' फेलुदा ने अपना चेहरा पोंछते हुए पूछा।
नहीं। वह पत्थर काफी ऊंचाई से आया था। अगर मेरे पास देखने का समय भी होता, तो भी मैं यह नहीं देख पाता कि उसे किसने फेंका था।
‘मुझे अब और तेज़ी से काम करना होगा। मुझे कोई अंतिम समाधान ढूंढना होगा!’ लेकिन ऐसे कई सवाल हैं जिनके जवाब दिए जाने बाकी हैं।
और आपको किसने बताया कि मुझे कुछ जवाब पहले ही नहीं मिल चुके हैं? क्या आप जानते हैं कि मैं कल रात कितने बजे सोया था? रात के 2 बजे। मैंने बहुत सोचा। और अब इस प्रयोग ने मेरे सभी संदेहों की पुष्टि कर दी है। श्री शेल्वंकर की जीप पर कोई गिरता हुआ पत्थर नहीं लगा था। कोई भी दस लाख में एक मौके पर हत्या नहीं कर सकता। मुझे यकीन है कि असल में हुआ यह था: श्री शेल्वंकर बेहोश हो गए थे। फिर उन्हें जीप के साथ उस खाई में फेंक दिया गया। किसी ने बाद में उस पत्थर को धक्का दिया, ताकि यह एक दुर्घटना लगे।
लेकिन ड्राइवर का क्या? उसका क्या होगा?
‘उसे रिश्वत दी गई थी। मुझे इस बात का पूरा यकीन है।’
या फिर ड्राइवर ने ही उसे मार डाला हो?
नहीं, ऐसा होने की संभावना नहीं है। उसके पास ऐसा करने का पर्याप्त मजबूत मकसद नहीं रहा होगा।
फेलुदा उठा। ‘चलो वापस चलते हैं, टॉपशे। हमें एसकेएम 463 को ढूंढना होगा।’ लेकिन पता चला कि एसकेएम 463 गंगटोक में नहीं थी। वह एक दिन पहले ही सिलीगुड़ी के लिए रवाना हो गई थी। फेलुदा ने कहा, ‘मुझे लगता है लोग इसे किराए पर लेना चाहते हैं क्योंकि यह एक नई जीप है।’
'अब क्या करें?'
‘रुको, मुझे सोचने दो। मैं उलझन में पड़ रहा हूँ।’

हम जीप स्टैंड से होटल लौट आए। भोजन कक्ष में फेलुदा ने ठंडे पेय का ऑर्डर दिया। उसके बाल बिखरे हुए थे और वह काफी परेशान लग रहा था।
‘हम यहां कब पहुंचे?’ उसने अचानक पूछा।
चौदह अप्रैल।
‘और शेल्वंकर की हत्या कब हुई थी?’
‘ग्यारह तारीख को।’
'शेल्वनकर के अलावा, श्री सरकार, हेलमुट और डॉ. वैद्य भी गंगटोक में मौजूद थे।'
‘And Virendra.’
ठीक है, चलिए यही मान लेते हैं। श्री सरकार को तिब्बतियों के बारे में वह चेतावनी कब मिली?
चौदहवीं की रात को।
‘ठीक है। उस दिन शहर में कौन-कौन था?’
'हेल्मुट, मिस्टर बोस, वीरेंद्र, और।. . और ।. .'
‘Mr Sarkar.’
'हाँ बिल्कुल।'
‘हो सकता है उसने कोई अपराध किया हो। शायद वह तिब्बती शब्द लिखे कागज का टुकड़ा दिखाकर खुद पर से शक हटाने की कोशिश कर रहा हो। हो सकता है उसने खुद ही लिखा हो। रुमटेक में मदद के लिए उसकी चीखें एक चालाकी भरी एक्टिंग भी हो सकती हैं।’
लेकिन उसने क्या किया होगा?
मुझे अभी तक यह पता नहीं है, हालांकि मुझे नहीं लगता कि उसने शेल्वनकर की हत्या की है।
तो फिर, अब कौन बचा है?
‘डॉ. वैद्य। उन्हें मत भूलिए। हमें पक्का पता नहीं है कि वे कालिम्पोंग गए थे या नहीं।’
फेलुदा ने सिक्किम संतरे का एक गिलास एक ही घूंट में खत्म कर दिया। फिर उन्होंने आगे कहा, “एकमात्र व्यक्ति जिसकी गतिविधियों पर सवाल नहीं उठाया जा सकता, वह हैं श्री बोस, क्योंकि वह हमारे साथ आए थे और अगले दिन बॉम्बे चले गए। उनके घर में किसी ने पुष्टि की कि वह वास्तव में बॉम्बे लौट गए थे। लेकिन वह अभी वहां नहीं हैं। शायद वह यहां आ रहे हों। शायद पेमियांगची की

हमारी यात्रा के दौरान—” फेलुदा बोलते-बोलते रुक गए। कोई भोजन कक्ष में आया और प्रबंधक से बात करने लगा। वह हमारा जर्मन मित्र हेलमुट उंगर था। प्रबंधक ने हमारी ओर इशारा किया। हेलमुट मुड़ा। “ओह क्षमा करें, मुझे पता नहीं था कि आप यहां हैं,” उन्होंने हिचकिचाते हुए कहा, “मुझे आपसे कुछ बात करनी है। क्या हम आपके कमरे में जा सकते हैं?”

दस

कमरे में दाखिल होते ही हेलमुट ने पूछा, 'क्या मैं दरवाज़ा बंद कर सकता हूँ?' फिर उसने जवाब का इंतज़ार किए बिना ही दरवाज़ा बंद कर दिया। मैंने उसकी तरफ देखा और मुझे थोड़ी बेचैनी होने लगी। वह लंबा और हट्टा-कट्टा था, फेलुदा से कम से कम एक इंच ज़्यादा लंबा। आखिर वह ऐसा क्या करना चाहता था जिसके लिए इतनी गोपनीयता ज़रूरी थी? मैंने सुना था कि कुछ हिप्पी नशा करते हैं। क्या हेलमुट भी उनमें से एक था? क्या वह...?
इस समय तक हेलमुट ने अपना कैमरा मेरे बिस्तर पर रख दिया था और वह एक बड़ा लाल लिफाफा खोल रहा था जिस पर एगफा लिखा हुआ था।
‘क्या आप एक कप चाय पीना चाहेंगे?’ फेलुदा ने पूछा।
नहीं, धन्यवाद। मैं यहाँ सिर्फ आपको ये तस्वीरें दिखाने आया हूँ। मैं इन्हें यहाँ प्रिंट नहीं करवा सका। इसलिए मैंने इन्हें दार्जिलिंग भेज दिया था। मुझे इनकी बड़ी प्रिंट आज सुबह ही मिली हैं।
हेल्मुट ने पहली तस्वीर निकाली। ‘यह उत्तरी सिक्किम राजमार्ग से ली गई थी। जिस सड़क पर दुर्घटना हुई, वह ठीक सामने वाली पहाड़ी तक जाती है। वहां से गंगटोक का शानदार नज़ारा दिखता है। मैं उस सुबह वहीं था, इस नज़ारे की तस्वीरें ले रहा था। श्री शेल्वंकर ने मुझे रास्ते में छोड़ने की पेशकश की थी। लेकिन उनकी जीप उस जगह तक नहीं पहुंची जहां मैं खड़ा था। तस्वीरें लेते समय मुझे एक आवाज़ सुनाई दी, जिससे मैं मुड़ गया। मैंने जहां खड़ा था, वहां से जो कुछ देखा, वह मेरे टेलीफोटो लेंस से ली गई इन तस्वीरों में कैद हो गया है।’
यह एक अजीब सी तस्वीर थी। दूर से ली गई होने के बावजूद, ज़्यादातर चीज़ें साफ़ दिख रही थीं। एक जीप पहाड़ी से नीचे फिसल रही थी। उससे कुछ फीट ऊपर, एक आदमी सड़क पर खड़ा होकर गिरती हुई जीप को देख रहा था। शायद वह ड्राइवर था। उसने नीली जैकेट पहनी हुई थी। उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था। हेल्मुट ने दूसरी तस्वीर निकाली। यह और भी अजीब थी। पहली तस्वीर के कुछ सेकंड बाद ली गई इस तस्वीर में जीप पहाड़ी के किनारे क्षतिग्रस्त पड़ी थी।

उसके बगल में, एक झाड़ी के पीछे, गहरे रंग के सूट में एक आदमी ज़मीन पर लेटा हुआ था, जिसका चेहरा आधा छिपा हुआ था। ड्राइवर अभी भी सड़क पर खड़ा था, इस बार उसकी पीठ कैमरे की तरफ थी और वह पहाड़ी की ओर देख रहा था। पहाड़ी की चोटी पर एक और आदमी एक चट्टान पर झुका हुआ था। उसका चेहरा भी साफ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन उसने लाल कपड़े पहने हुए थे।
तीसरी तस्वीर में लाल कपड़े पहने वह आदमी कहीं नज़र नहीं आ रहा था। ड्राइवर भाग रहा था—दरअसल, वह लगभग फ्रेम से बाहर निकल गया था। जीप और काले सूट वाला आदमी अभी भी ज़मीन पर पड़े थे। और पहाड़ी की चोटी पर पड़ी चट्टान अब सड़क पर पड़ी थी, टुकड़े-टुकड़े हो चुकी थी।
‘अद्भुत!’ फेलुदा ने कहा। ‘मैंने ऐसी तस्वीरें पहले कभी नहीं देखीं!’
‘खैर, ऐसा मौका अक्सर नहीं मिलता,’ हेल्मुट ने रूखेपन से जवाब दिया।
‘ये तस्वीरें लेने के बाद आपने क्या किया?’
मैं पैदल ही गंगटोक लौटा। जब तक मैं जीप के गिरने वाली जगह तक पहुँच पाता, श्री शेल्वनकर को वहाँ से ले जाया जा चुका था। मुझे बस टूटी हुई जीप और चकनाचूर चट्टान ही दिखाई दे रही थी। गंगटोक पहुँचते ही मुझे दुर्घटना के बारे में पता चला। फिर मैं सीधे उस अस्पताल गया जहाँ श्री शेल्वनकर को ले जाया गया था। मेरे वहाँ पहुँचने के बाद वे कुछ घंटों तक जीवित रहे।
‘क्या तुमने तस्वीरों के बारे में किसी को नहीं बताया?’
नहीं। इसका कोई मतलब नहीं था, कम से कम तब तक तो नहीं जब तक मैं फिल्म को डेवलप न करवा लूं और उसे सबूत के तौर पर इस्तेमाल न कर लूं। फिर भी, मुझे पता था कि यह कोई दुर्घटना नहीं, बल्कि हत्या थी। अगर मैं थोड़ा और करीब होता, तो हत्यारे का चेहरा तस्वीर में और साफ दिखाई देता।
फेलुदा ने एक आवर्धक लेंस निकाला और बड़े अक्षरों में छपे चित्रों की दोबारा जांच करने लगा। उसने कहा, 'मुझे आश्चर्य है कि क्या लाल कपड़े वाला वह आदमी वीरेंद्र है?'
‘यह असंभव है!’ हेल्मुट ने कहा। उसकी आवाज़ में कुछ ऐसा था जिससे हम दोनों आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगे।
‘क्यों? आप इतने निश्चित कैसे हो सकते हैं?’
‘Because I am Virendra Shelvankar.’
‘क्या!’ मैंने पहली बार फेलुदा को आंखें फाड़कर देखते हुए देखा।

‘तुम्हारा क्या मतलब है? तुम वीरेंद्र कैसे हो सकते हो? तुम गोरे हो, तुम्हारी नीली आँखें हैं, तुम जर्मन लहजे में अंग्रेजी बोलते हो, तुम्हारा नाम...’
‘कृपया मुझे समझाने दीजिए। देखिए, मेरे पिता ने दो बार विवाह किया था। मेरी माँ उनकी पहली पत्नी थीं। वह जर्मन थीं। उनकी मुलाकात मेरे पिता से हाइडेलबर्ग में हुई थी जब वह छात्र थे। वहीं उनका विवाह हुआ था। उनका मायके का नाम उंगर था। जब मैंने भारत छोड़कर जर्मनी में बसना शुरू किया, तो मैंने यह नाम अपना लिया और अपना पहला नाम वीरेंद्र से बदलकर हेलमुट कर लिया।’
मेरा सिर चकराने लगा। हेलमुट शेल्वनकर का बेटा था? बिल्कुल, अगर उसकी माँ जर्मन थी, तो इससे उसके रूप-रंग का पता चलता है।
‘तुम घर क्यों छोड़ कर चले गए?’ फेलुदा ने कुछ देर रुककर पूछा। ‘मेरी माँ के गुज़र जाने के पाँच साल बाद मेरे पिता ने दोबारा शादी कर ली। मैं इसे स्वीकार नहीं कर पा रहा था। मैं अपनी माँ से बहुत प्यार करता था। ऐसा नहीं था कि मुझे अपने पिता की परवाह नहीं थी, लेकिन जब उन्होंने दोबारा शादी की, तो मुझे उनसे नफ़रत होने लगी। आख़िरकार, मुझे लगा कि घर छोड़ना ही मेरी समस्याओं का एकमात्र हल है। अकेले यूरोप जाना और नई शुरुआत करना आसान नहीं था। लगभग आठ साल तक मैं एक जगह से दूसरी जगह और एक नौकरी से दूसरी नौकरी भटकता रहा। फिर मैंने फ़ोटोग्राफ़ी की पढ़ाई की और आख़िरकार पैसे कमाने लगा। कुछ साल पहले, मैं एक असाइनमेंट के सिलसिले में फ़्लोरेंस में था। मेरे पिता के एक दोस्त ने मुझे वहाँ देखा और पहचान लिया। वह वापस आया और मेरे पिता को इसके बारे में बताया, जिसके बाद उन्होंने मुझे ढूँढ़ने के लिए एक जासूस एजेंसी से संपर्क किया। जब मुझे इस बारे में पता चला, तो मैंने दाढ़ी बढ़ा ली और अपनी आँखों का रंग बदल लिया।’
'कॉन्टेक्ट लेंस?'
हेल्मुट मुस्कुराया और अपनी आँखों से लेंस निकाल लिए। उसकी असली आँखें भूरी थीं, बिल्कुल मेरी आँखों की तरह। फिर उसने लेंस वापस लगाए और बोला, 'एक साल पहले, मैं हिप्पियों के एक समूह के साथ भारत आया था। इस देश से मेरा प्यार कम नहीं हुआ था। लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि जासूस एजेंसी अभी भी मुझे ढूंढने की कोशिश कर रही है। मैं काठमांडू के एक मठ में चला गया। जब वहाँ भी किसी ने मुझे ढूंढ लिया, तो मैं सिक्किम आ गया।'

‘क्या तुम्हारे पिता तुम्हें देखकर प्रसन्न नहीं हुए?’
‘उन्होंने मुझे बिल्कुल नहीं पहचाना। जब उन्होंने मुझे आखिरी बार देखा था, तब से मेरा वज़न काफी कम हो गया है। इसके अलावा, मेरे लंबे बाल, दाढ़ी और नीली आँखें, शायद सब मिलकर उन्हें अपने ही बेटे को पहचानने से रोक रहे थे। उन्होंने मुझे वीरेंद्र के बारे में बताया और बताया कि वे उसे कितना याद करते हैं। इस समय तक, मैं भी अपने पिता के प्रति अपनी पुरानी नापसंदगी को भूल चुका था। आखिरकार, हमारे बीच जो कुछ भी हुआ था, वह अब अतीत की बात थी। लेकिन जब उन्होंने मुझे नहीं पहचाना, तो मैंने उन्हें यह नहीं बताया कि मैं कौन हूँ। शायद मैं उन्हें बाद में बता ही देता, लेकिन... खैर, मुझे कभी मौका ही नहीं मिला।’
क्या आपको इस बात का कोई अंदाजा है कि हत्यारा कौन हो सकता है?
‘क्या मैं खुलकर बोल सकता हूँ?’
'बिल्कुल।'
मुझे नहीं लगता कि हमें डॉ. वैद्य को भागने देना चाहिए।
'मैं आपसे सहमत हूं,' फेलुदा ने अपनी आवाज धीमी करते हुए कहा।
'जिस क्षण उसने उस शाम मेरे कमरे में वीरेंद्र का नाम लिया, उसी क्षण से मुझे उस पर शक होने लगा। जाहिर है, उसे नहीं पता था कि मैं वही व्यक्ति हूं। मुझे लगता है कि वह एक नंबर का धोखेबाज है, और मुझे पूरा यकीन है कि उसी ने वह मूर्ति चुराई थी।'
‘जब श्री शेल्वंकर उस सुबह रवाना हुए, तो क्या वे अकेले थे?’
‘मुझे नहीं पता। मैं तो काफी जल्दी निकल गया था। हो सकता है डॉक्टर वैद्य ने रास्ते में जीप रोककर लिफ्ट मांगी हो। ज़ाहिर है, उस समय मेरे पिता के पास उन पर शक करने का कोई कारण नहीं था। वैसे भी, वह एक सीधे-सादे इंसान थे। वह हर किसी पर भरोसा करते थे।’
फेलुदा उठ खड़ा हुआ और इधर-उधर टहलने लगा। फिर वह अचानक रुक गया और बोला, 'क्या तुम हमारे साथ पेमियांगची चलना चाहोगे?'
'हां। मैं अपने पिता के हत्यारे को पकड़ने के लिए कहीं भी जाने को तैयार हूं।'
‘क्या आपको पता है कि यह कितनी दूर है?’

'यहाँ से लगभग सौ मील दूर। अगर सड़कें अच्छी हों तो हम छह घंटे से भी कम समय में वहाँ पहुँच सकते हैं। मुझे लगता है कि हमें आज ही, जितनी जल्दी हो सके, निकल जाना चाहिए।'
'हां, आप सही कह रहे हैं। मैं एक जीप ढूंढने की कोशिश करूंगा।'
‘ठीक है, और मैं पेमियांगची में डाक बंगले में कमरे बुक करवा देता हूँ। वैसे—’ हेलमुट दरवाजे से पीछे मुड़ा, ‘उसके जैसा खतरनाक आदमी हथियारबंद हो सकता है। मेरे पास फ्लैशगन के अलावा कुछ नहीं है। क्या आपके पास—?’ बिना कुछ कहे, फेलुदा ने अपना हाथ सूटकेस में डाला और अपनी रिवॉल्वर निकाल ली। ‘और ये रहा मेरा कार्ड,’ उसने हेलमुट का एक कार्ड देते हुए कहा। उस पर लिखा था, ‘प्रदोष सी. मित्तर, प्राइवेट इन्वेस्टिगेटर’।
दुर्भाग्यवश, उस दिन हमें जीप नहीं मिल पाई। वहाँ जो कुछ जीपें थीं, वे सभी अमेरिकी पर्यटकों ने रुमटेक की एक दिवसीय यात्रा के लिए किराए पर ले ली थीं। हमने अगली सुबह के लिए एक जीप बुक की और पूरा दिन गंगटोक की गलियों में घूमते हुए बिताया।
मुख्य बाजार के पास हमारी मुलाकात श्री सरकार से हुई। फेलुदा ने उनसे कहा, 'हम कल पेमियांगची जा रहे हैं। क्या आप हमारे साथ चलना चाहेंगे?'
‘ओह, ज़रूर। धन्यवाद!’
शाम को वह एक अजीब सी चीज़ लेकर हमारे कमरे में आया। एक छोटी सी सफेद गड्डी एक छड़ी के सिरे पर बंधी हुई थी। उसने मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे यकीन है कि आप अंदाज़ा नहीं लगा सकते कि यह क्या है। इसका इस्तेमाल असल में जोंकों को भगाने के लिए किया जाता है। इस छोटी सी गड्डी में नमक और तंबाकू है। अगर कोई जोंक आपके पैर से चिपक जाए, तो बस इस छड़ी से एक बार रगड़िए, वह ज़रूर गिर जाएगी।'
लेकिन भारी चमड़े के जूते और नायलॉन के मोजे पहने होने के बावजूद एक जोंक किसी पर हमला कैसे कर सकती है?
मुझे नहीं पता, लेकिन मैंने देखा है कि जोंक मोटे कपड़ों की परतों से भी फिसल जाती हैं। जोंकों की सबसे अजीब बात यह है कि वे देख नहीं सकतीं। मान लीजिए कि कई लोग एक कतार में चल रहे हैं, तो कोई भी जोंक कतार के सबसे आगे वाले व्यक्ति पर हमला नहीं करेगी। वह बस उसके चलने से पैदा होने वाले कंपन को महसूस कर लेगी। फिर जैसे ही दूसरा व्यक्ति उसके पास से गुजरेगा, वह हमला

करने के लिए तैयार हो जाएगी; और तीसरे के लिए तो बचने का कोई रास्ता ही नहीं होगा। उसे तो निश्चित रूप से जोंक काट लेगी।
हमने अगले दिन अपने साथ इसी तरह की चार छड़ियां ले जाने का फैसला किया। जब हम सोने की तैयारी कर रहे थे, तब फेलुदा ने कहा, 'परसों बुद्ध पूर्णिमा है। यहाँ बड़ा उत्सव होगा।'
क्या हमें इसे देखने का मौका मिलेगा?
'मुझे नहीं पता। लेकिन अगर हम श्री शेल्वंकर के हत्यारे को पकड़ लेते हैं, तो इससे उन सभी चीजों की भरपाई हो जाएगी जिन्हें हम देखने से चूक गए हैं।' उस रात आसमान बिल्कुल साफ था। मैंने काफी देर तक लगभग पूरे चांद को निहारा। कंचनजंगा उसकी रोशनी में जगमगा रहा था।
अगले दिन, हम चारों सुबह पांच बजे कुछ ज़रूरी सामान लेकर पेमियांगची के लिए रवाना हुए। श्री सरकार जोंक से बचाव के लिए छड़ियां ले जाना नहीं भूले थे।

ग्यारह

पेमियांगची जाने के दो रास्ते थे। दुर्भाग्यवश, हम छोटा रास्ता नहीं ले सके क्योंकि मुख्य सड़क क्षतिग्रस्त थी। लंबे रास्ते से जाने पर कम से कम आठ घंटे का सफर तय करना पड़ता। पेमियांगची एक सौ सत्ताईस मील दूर था। लेकिन कोई चारा नहीं था। हमारे होटल ने हमें पैक किया हुआ लंच दिया था और हमारे पास दो थर्मस थे। एक में गर्म कॉफी थी और दूसरे में पानी। इसलिए हमें लंच के लिए कहीं रुकने की जरूरत नहीं थी, क्योंकि इससे काफी समय बर्बाद हो जाता।
आज हेल्मुट के पास सिर्फ एक कैमरा था। मैंने देखा कि श्री सरकार ने एक जोड़ी गैलोश (जूते) पैक किए थे। उन्होंने मुझसे कहा, 'जोखिम लेने का कोई मतलब नहीं। यह शत प्रतिशत सुरक्षित है।'
‘सौ प्रतिशत? क्या होगा अगर पेड़ से एक जोंक आपके सिर पर गिर जाए?’
नहीं, ऐसा होने की संभावना नहीं है। ऐसा जुलाई और अगस्त में होता है। इस समय में आमतौर पर जोंक जमीन पर पाई जाती हैं।
श्री सरकार को यह नहीं पता था कि हम एक अपराधी की तलाश में जा रहे हैं। इसलिए वे पूरी तरह से खुश और निश्चिंत थे।
हम सवा छह बजे सिंहथम पहुँचे। गंगटोक जाते समय हम इस कस्बे से गुज़रे थे। बाएँ मुड़ते ही हम फिर से तीस्ता नदी के पास पहुँच गए। हमने नदी पार की और एक ऐसी सड़क पर आ गए जिसे हममें से कोई नहीं जानता था। यह सड़क सीधे पेमियांगची की ओर जाती थी। हमारी जीप नई तो नहीं थी, लेकिन ठीक-ठाक हालत में थी। उसका चालक किसी पश्चिमी फिल्म के डाकू जैसा लग रहा था। उसने काले रंग के कपड़े पहने थे—पैंट, कमीज़ और चमड़े की जैकेट, सब कुछ काला था। यहाँ तक कि उसके सिर पर लगी टोपी भी इतनी काली थी कि उसे काला ही कहा जा सकता था। वह नेपाली होने के लिए बहुत लंबा था, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वह कहाँ का है। फेलुदा ने उससे उसका नाम पूछा। उसने जवाब दिया, 'थोंडुप'।

श्री सरकार ने जानकार भाव से कहा, 'यह तिब्बती नाम है।' हम लगभग बीस किलोमीटर तक चुपचाप गाड़ी चलाते रहे। पेमियांगची के रास्ते में अगला कस्बा नामची था। जैसे ही हम उसके पास पहुँचे, हमारे पीछे से आ रही एक जीप ने ज़ोर से हॉर्न बजाना शुरू कर दिया। थोंडुप ने उसे आगे जाने देने की कोई कोशिश नहीं की।
‘वह इतनी जल्दी में क्यों है?’ फेलुदा ने पूछा।
‘मुझे कोई जानकारी नहीं है, महोदय। लेकिन अगर हम इसे आगे बढ़ने देंगे, तो इससे केवल धूल के बादल ही उड़ेंगे।’
थोंडुप ने अपनी गति बढ़ा दी। लेकिन दूसरी जीप से हॉर्न की आवाज़ तेज़ होती चली गई। श्री सरकार ने चिड़चिड़ाकर पीछे मुड़कर देखा कि कौन है। फिर वे बोले, 'अरे वाह, ये तो वही सज्जन हैं!'
‘कौन?’ फेलुदा और मैंने मुड़कर देखा तो हमें आश्चर्य हुआ कि श्री बोस दूसरी जीप में थे, अभी भी जोर-जोर से हॉर्न बजा रहे थे और हाथ हिला रहे थे। फेलुदा ने कहा, 'थोंडुपजी, आपको एक मिनट के लिए रुकना होगा। वह हमारे मित्र हैं।'
थोंडुप ने गाड़ी सड़क के किनारे रोक दी। श्री बोस दूसरी जीप से उछलते हुए बाहर आए। उन्होंने पूछा, 'क्या तुम बहरे हो? मैंने सिंहथम में चिल्ला- चिल्लाकर अपनी आवाज खराब कर ली, लेकिन तुममें से किसी ने मेरी बात नहीं सुनी!'
'माफ़ कीजिए, बहुत-बहुत माफ़ कीजिए, श्री बोस। अगर हमें पता होता कि आप वापस आ गए हैं, तो हम आपको साथ लिए बिना नहीं जाते,' फेलुदा ने माफ़ी मांगी। ‘आपका टेलीग्राम मिलने के बाद मैं मुश्किल से ही बॉम्बे में रुक सका। मैं कई मील तक आपकी जीप का पीछा करता रहा।’
थोंडुप धूल के बारे में बिलकुल सही थे। श्री बोस सिर से पैर तक धूल से ढके हुए थे, मानो राख से सने कोई साधुबाबा हों, और यह सब निस्संदेह हमारी ही जीप के पहियों की वजह से हुआ था।
आपने अपने टेलीग्राम में कहा था कि आपको किसी बात पर शक है। तो अब आप कहां जा रहे हैं? आपने गंगटोक क्यों छोड़ा?
उसे सीधा जवाब देने के बजाय, फेलुदा ने पूछा, 'क्या आपके पास बहुत सारा सामान है?'
नहीं, सिर्फ एक सूटकेस।

‘तो फिर, क्यों न हम अपना सामान आपकी जीप में रख लें, और आप हमारे साथ चढ़ जाएं? मैं आपको सब कुछ समझा देता हूँ।’
सारा सामान स्थानांतरित करने में केवल कुछ ही मिनट लगे। श्री बोस, श्री सरकार और हेलमुट के साथ पीछे की सीट पर चढ़ गए और हम फिर से चल पड़े। फेलुदा ने श्री बोस को पिछले दो दिनों में हुई घटनाओं के बारे में संक्षेप में बताया। उन्होंने यह भी खुलासा किया कि हेलमुट, श्री शेल्वंकर का पुत्र है। फेलुदा के बोलने के बाद श्री बोस ने तेवर चढ़ा लिए। 'लेकिन यह डॉ. वैद्य कौन है? वह तो पक्का धोखेबाज है। आपको उसे भागने नहीं देना चाहिए था, श्री मित्तर। आप तो...'
फेलुदा ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'हेल्मुट की असली पहचान जानने के बाद मुझे उस पर शक हुआ। श्री बोस, इसमें आपकी भी कुछ गलती है। आपको हमें बताना चाहिए था कि आपके साथी की पहली पत्नी जर्मन थी।'
मुझे कैसे पता चलता कि इससे कोई फर्क पड़ेगा? वैसे भी, मुझे बस इतना पता था कि वह विदेशी थी। मुझे उसकी राष्ट्रीयता के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। शेल्वंकर ने उससे लगभग पच्चीस साल पहले शादी की थी। खैर, मुझे बस उम्मीद है कि वैद्य ने पेमियांगची नहीं छोड़ा होगा। वरना हमारी पूरी यात्रा व्यर्थ हो जाएगी!
हम दस बजकर कुछ देर बाद नामची पहुँचे। यहाँ हम कुछ मिनटों के लिए रुके, इंजन में ठंडा पानी डाला और खुद को गर्म कॉफी पिलाई। आसमान में बादल घिरते दिख रहे थे, लेकिन मुझे ज़्यादा चिंता नहीं थी क्योंकि मैंने सुना था कि नामची सिक्किम की सबसे शुष्क और स्वच्छ जगह मानी जाती है। हेलमुट तस्वीरें खींच रहा था, आदतवश, किसी खास रुचि से नहीं। जब से हम निकले थे, उसने मुश्किल से ही कुछ बोला था।
अब जब श्री सरकार को पेमियांगची जाने का असली कारण पता चल गया था, तो वे थोड़े बेचैन लग रहे थे; लेकिन रोमांच का मौका मिलना उन्हें उतना ही लुभावना लग रहा था। उन्होंने मुझसे कहा, 'एक तरफ तुम्हारा चचेरा भाई है और दूसरी तरफ जर्मन वीरेंद्र, मुझे चिंता करने का कोई कारण नहीं दिखता।'
दस मिनट बाद हम नामची से निकल गए। यहाँ से सड़क नीचे की ओर रंगीत नामक एक अन्य नदी की ओर जाती थी। यह नदी तीस्ता नदी से बिल्कुल अलग थी। इसका पानी साफ था, जिसमें हल्का हरापन था, और यह काफी तेज गति से बह रही थी। पत्थरों और चट्टानों से टकराने पर झाग के तालाब बन जाते थे। मैंने पहाड़ियों में

ऐसी खूबसूरत नदी पहले कभी नहीं देखी थी। हमें एक और पुल पार करना था और पेमियांगची पहुँचने के लिए फिर से पहाड़ी पर चढ़ना था, जो 9,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित था।
जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते गए, मुझे लगभग हर जगह भूस्खलन के निशान दिखाई देने लगे। पहाड़ियों पर घनी हरी पत्तियों में जगह-जगह बड़े-बड़े छेद हो गए थे। पहाड़ के बड़े-बड़े टुकड़े साफ तौर पर नदी की ओर खिसक गए थे। पता नहीं प्रकृति को इन 'नव पर्वतों' द्वारा किए गए नुकसान की भरपाई करने में कितना समय लगेगा!
रास्ते में हमें एक छोटा सा मंडप दिखाई दिया। उसके प्रवेश द्वार के बाहर पतली रस्सी से कई झंडे बंधे हुए थे, जिनका उद्देश्य बुरी आत्माओं को दूर भगाना था। हर झंडा साफ-सुथरा और ताजा दिख रहा था। श्री बोस ने बताया, 'बुद्ध पूर्णिमा की तैयारियां चल रही हैं।'
‘यह कब है?’ फेलुदा ने अनमने ढंग से पूछा।
‘बुद्ध पूर्णिमा? कल, मुझे लगता है। सत्रह अप्रैल को।’
‘सत्रह अप्रैल... भारतीय पंचांग के अनुसार यह बैसाख की चौथी तारीख होगी... हम्म... बैसाख...’
मैंने अचरज से फेलुदा की ओर देखा। वो अचानक तिथियों को लेकर इतना चिंतित क्यों हो गया था? और इतना उदास क्यों दिख रहा था? वो अपनी उंगलियां क्यों चटका रहा था?
उनसे पूछने का कोई मौका नहीं मिला। हमारी जीप जंगल में घुस चुकी थी। हाल ही में हुई बारिश से यहाँ की सड़क बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थी। थोंडुप अत्यंत सावधानी से रेंगती हुई आगे बढ़ी, इसके बावजूद रास्ते में कई झटके लगे। एक झटके में श्री सरकार का सिर जीप की छत से टकरा गया। 'अरे बाप रे!' मैंने उन्हें बड़बड़ाते हुए सुना।
जंगल घना और गहरा होता जा रहा था। हेलमुट ने गहरे हरे पत्तों और हल्की छाल वाले एक ऊंचे पेड़ की ओर इशारा करते हुए कहा, 'यह बर्च का पेड़ है। अगर आप कभी इंग्लैंड जाएं, तो आपको ऐसे बहुत सारे पेड़ देखने को मिलेंगे।' दोनों ओर पेड़ थे। सड़क सांप की तरह ऊपर की ओर मुड़ रही थी। जंगल के अंदर न सिर्फ अंधेरा था, बल्कि बहुत अधिक नमी भी थी। कहीं से एक अजीब पक्षी की तीखी आवाज सुनाई दी।

‘अ- रोमांचकारी है ना?’ श्री सरकार ने कहा। अचानक, बिना किसी चेतावनी के, पेड़ छंट गए। हम खुद को एक छोटी पहाड़ी के सामने, बादलों से घिरे आसमान के नीचे पाए। कुछ क्षण बाद, एक बंगले की टाइल वाली छत दिखाई दी, और फिर पूरी इमारत नज़र आ गई।
यह पेमियांगची का प्रसिद्ध डाक बंगला था। ब्रिटिश काल में निर्मित, यह एक ऐसी जगह पर स्थित था जो सचमुच अद्भुत थी। बंगले के पीछे चोटियों की कतारें फैली हुई थीं, जिनका रंग हरे-भरे से लेकर धुंधले नीले रंग तक फैला हुआ था। हमारी जीप सामने वाले दरवाजे के बाहर रुक गई। चौकीदार बाहर आया। जब उसने हमें बताया कि हम कौन हैं, तो उसने सिर हिलाकर पुष्टि की कि हमारे लिए कमरे बुक कर दिए गए हैं।
श्री बोस ने पूछा, 'क्या यहां कोई और भी ठहर रहा है?'
नहीं, महोदय। बंगला खाली है।
‘खाली? क्या हमसे पहले यहाँ कोई नहीं आया था?’ फेलुदा ने चिंता से पूछा। 'हां, लेकिन वह कल रात चला गया। दाढ़ी वाला एक आदमी, और उसने काले रंग के चश्मे पहने हुए थे।'

बारह

चौकीदार की बातों से हेलमुट सबसे ज्यादा निराश हुआ। वह बाहर घास पर बैठ गया और अपना कैमरा बगल में रख दिया।
श्री बोस ने कहा, 'अच्छा, हम अभी तुरंत कुछ नहीं कर सकते, है ना? चलिए दोपहर का भोजन कर लेते हैं। मुझे बहुत भूख लगी है।'
हम अपना सामान लेकर बंगले में दाखिल हुए। यह स्पष्ट था कि बंगला कई दशक पहले बना था। लकड़ी का फर्श और छत, लकड़ी की रेलिंग वाले चौड़े बरामदे और पुराने ज़माने का फर्नीचर, सब बीते युग की गवाही दे रहे थे। बरामदे से नज़ारा बेहद खूबसूरत था। अगर आसमान में बादल न होते, तो हम बाईस मील दूर स्थित कंचनजंगा को भी देख पाते। पक्षियों की चहचहाहट के अलावा कहीं कोई शोर नहीं था।
हम बरामदा पार करके भोजन कक्ष में गए। श्री बोस ने एक आरामकुर्सी ढूंढी और उस पर बैठ गए। उन्होंने फेलुदा से कहा, 'वैद्य के बारे में मुझे पहले पूरी तरह से यकीन नहीं था, हालांकि आपने मुझे बताया था कि आपको उस पर संदेह है। लेकिन अब मुझे पूरा यकीन है कि वह हमारा आदमी है। एसएस को उसे मूर्ति जैसी इतनी कीमती वस्तु कभी नहीं दिखानी चाहिए थी।'
हेल्मुट उठ खड़ा हुआ था, लेकिन हमारे साथ नहीं आया। मैं उसे बाहर बरामदे में टहलते हुए देख सकता था। श्री सरकार अंदर चले गए, शायद बाथरूम ढूंढने। फेलुदा बंगले के बाकी कमरों का मुआयना करने लगा। मैं भोजन कक्ष में चुपचाप बैठा रहा, बेहद उदास महसूस कर रहा था। क्या हमारी यह यात्रा सचमुच समय की पूरी बर्बादी साबित होने वाली थी?
एक तरफ दो दरवाजे थे, जो दो शयनकक्षों की ओर खुलते थे। फेलूदा इनमें से एक दरवाजे से हाथ में छड़ी लिए बाहर आया। फेलूदा ने कहा, ‘डॉक्टर वैद्य ने ज़रूर इस जगह का दौरा किया होगा, और उन्होंने इस बात के सबूत के तौर पर यह छड़ी छोड़ी है। कितना अजीब है!’ फेलूदा की आवाज़ कुछ अलग सी लग रही थी। मैंने झट से ऊपर देखा, लेकिन कुछ नहीं कहा। श्री सरकार रुमाल से अपना चेहरा पोंछते हुए वापस आए। उन्होंने कहा, ‘कितनी अजीब जगह है!’ और मेरी कुर्सी के

बगल वाली कुर्सी पर बैठते हुए ज़ोर से जम्हाई ली। फेलूदा नहीं बैठा। वह अंगीठी के सामने खड़ा रहा और छड़ी को ज़मीन पर धीरे-धीरे थपथपाता रहा। उसके होंठ गंभीर भाव से बंद थे।
‘श्रीमान सरकार!’ श्री बोस ने पुकारा। ‘होटल ने आपको जो लंच पैक करके दिया था, वो कहाँ है? चलिए खाना खाते हैं।’
‘नहीं!’ फेलुदा ने ठंडी और बेरुखी भरी आवाज में कहा। ‘यह खाने का समय नहीं है।’
श्री सरकार उठने लगे थे। फेलुदा की बातों पर वे वापस अपनी कुर्सी पर गिर पड़े। श्री बोस और मैंने दोनों ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा। लेकिन फेलुदा के चेहरे पर कोई भाव नहीं आया।
फिर वह बैठ गए, एक चारमीनार जलाई और गहरी सांस ली। उन्होंने बातचीत के लहजे में कहा, 'श्री बोस, आपने कहा था कि आप घाटशिला में किसी को जानते हैं। क्या आप कलकत्ता से उड़ान भरने से पहले वहीं थे?'
'हां। मेरे एक भतीजे की शादी हो गई।'
‘आप हिंदू हैं, है ना, श्री बोस?’
‘क्यों? तुम्हारा क्या मतलब है?’
‘तुमने मुझे सुना। तुम क्या हो? हिंदू, मुसलमान, ईसाई या कुछ और?’
‘यह कैसे हो सकता है—?’
'बस मुझे बताओ।'
‘मैं बेशक हिंदू हूं।’
‘हम्म।’ फेलुदा ने धुएं के दो छल्ले छोड़े। उनमें से एक श्री बोस की ओर बढ़ा, बड़ा होता गया, और अंत में उनके चेहरे के सामने गायब हो गया। ‘लेकिन,’ फेलुदा ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, ‘तुम और मैं एक ही विमान में साथ-साथ यात्रा कर रहे थे। तुम अभी-अभी घाटशिला से लौटे थे, है ना?’
'जी हां, लेकिन इससे आपको इतनी चिंता क्यों हो रही है? मुझे यह बिल्कुल समझ नहीं आ रहा है, श्रीमान मित्तर। घाटशिला में मेरे भतीजे की शादी का इससे क्या लेना-देना है?'
‘इसका कई बातों से संबंध है, श्री बोस। परंपरा के अनुसार, कोई भी हिंदू चैत्र माह में विवाह नहीं करता। हम 14 अप्रैल को कलकत्ता से रवाना हुए थे, जो बैसाख माह का पहला दिन था। आपके भतीजे का विवाह उससे पहले हुआ था, इसलिए

यह उससे पिछले महीने यानी चैत्र में हुआ होगा। आपने ऐसा होने की अनुमति कैसे दी?’
श्री बोस सिगरेट जला रहे थे। वे रुके, उनके हाथ थोड़े कांप रहे थे। 'आप क्या कहना चाह रहे हैं, श्री मिटर? आप आखिर कहना क्या चाहते हैं?'
फेलुदा ने श्री बोस को बिना तुरंत जवाब दिए लगातार देखा। फिर उन्होंने धीरे-धीरे और सोच-समझकर कहा, 'श्री बोस, मैं कई बातों का संकेत दे रहा हूँ। पहली बात तो यह है कि आप झूठे हैं। आप कभी घाटशिला नहीं गए। दूसरी बात, आपने किसी के भरोसे को धोखा दिया है—'
‘इसका आखिर मतलब क्या है?’ श्री बोस चिल्लाए।
हम सबने सुना है कि श्री शेल्वंकर अपनी मृत्यु से पहले कितने उदास थे। उन्होंने हेलमुट से इसका ज़िक्र भी किया था, हालाँकि उन्होंने कारण स्पष्ट नहीं किया था। अगर किसी पर आपने आँख बंद करके भरोसा किया हो और वही आपको धोखा दे, तो मन पूरी तरह टूट जाना स्वाभाविक है। मेरा मानना है कि आप ही वह व्यक्ति थे। आप उनके साथी थे, है ना? श्री शेल्वंकर एक सरल और सीधे- सादे इंसान थे। आपने इसका पूरा फ़ायदा उठाया और उन्हें लगातार धोखा दिया। लेकिन एक दिन उन्हें आपके किए का पता चल गया। जब आपको इस बात का एहसास हुआ, तो आपने उन्हें हमेशा के लिए रास्ते से हटाने का फ़ैसला किया। बॉम्बे में यह मुमकिन नहीं था, इसलिए आपको उनके सिक्किम आने का इंतज़ार करना पड़ा। आपको यहाँ नहीं होना चाहिए था। लेकिन आप आ गए—शायद अगले ही दिन—डॉक्टर वैद्य के वेश में। जी हाँ, आप ही थे डॉक्टर वैद्य! आप शेल्वंकर से मिले और उनके जीवन के बारे में कुछ ऐसी बातें बताकर उन्हें बहुत प्रभावित किया जो आप पहले से जानते थे। फिर आपने उन्हें वीरेंद्र के गुंफा में मिलने की संभावना के बारे में बताया और उसी सुबह उनके साथ उसी जीप में चले गए। रास्ते में तुमने उसके सिर पर इस भारी लाठी से वार किया। इससे वह बेहोश हो गया, लेकिन मरा नहीं। तुमने अपनी योजना पर अमल किया और जीप को खाई में धकेल दिया। ड्राइवर को, निस्संदेह, रिश्वत दी गई होगी; यह करना तो बहुत आसान रहा होगा। फिर तुमने उसी भारी लाठी का इस्तेमाल करके पहाड़ी से वह पत्थर फेंका। इन सबके बावजूद, श्री शेल्वंकर कुछ घंटों तक जीवित रहे, इतना समय कि वे तुम्हारा नाम ले सकें। शायद उन्होंने आखिरी क्षण में तुम्हें पहचान लिया हो।

‘बकवास! आप ये क्या सरासर बकवास कर रहे हैं, श्री मित्तर?’ श्री बोस चिल्लाए। ‘इस बात का क्या सबूत है कि मैं डॉ. वैद्य हूँ?’
इसके जवाब में फेलुदा ने उनसे एक अजीब सवाल पूछा। 'श्री बोस, आपकी अंगूठी कहाँ है?'
‘मेरी अंगूठी?’
“हां, वही जिस पर “मां” खुदा हुआ है। तुम्हारी उंगली पर एक सफेद निशान है, लेकिन तुमने अंगूठी नहीं पहनी है। वो कहां गई?”
‘अरे, वो...’ श्री बोस ने घबराकर कहा, ‘मैंने उसे उतार दिया क्योंकि... क्योंकि वो बहुत तंग लग रही थी।’ उन्होंने हमें दिखाने के लिए अपनी जेब से अंगूठी निकाली कि वो अभी भी उनके पास है।
‘जब आपने अपना मेकअप और पोशाक बदली, तो आप उसे वापस लगाना भूल गईं। मैंने उस शाम उस निशान को देखा था जब आपको शेल्वंकर की दिवंगत आत्मा से बात करनी थी। मुझे तब यह अजीब लगा था, लेकिन मैंने उस समय इस पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया था।’
श्री बोस उठने ही वाले थे कि फेलूदा की आवाज़ फिर से गूंजी, एकदम ठंडी, जैसे लोहे की तरह, 'हिलने की कोशिश मत करो, श्री बोस। मेरी बात अभी खत्म नहीं हुई है।' श्री बोस झट से वापस बैठ गए और अपना चेहरा पोंछने लगे। फेलूदा ने आगे कहा, 'श्री शेल्वंकर की मृत्यु के अगले दिन, डॉ. वैद्य ने कहा कि वह कलिम्पोंग जा रहे हैं। लेकिन वह नहीं गए। उन्होंने अपना वेश बदला, सासाधर बोस बन गए और कलकत्ता लौट आए। उन्होंने शेल्वंकर को पहले ही एक टेलीग्राम भेज दिया था जिसमें लिखा था, "चौदह तारीख को आ रहा हूँ।" इससे शेल्वंकर बहुत परेशान हो गए क्योंकि श्री बोस को सिक्किम में होना ही नहीं था। खैर, वह चौदह तारीख को यहाँ सिर्फ अपने लिए एक बहाना बनाने के लिए आए। फिर उन्होंने अपने साथी की मृत्यु से बहुत दुखी होने का नाटक किया और कहा कि वह अगले दिन बॉम्बे वापस चले जाएंगे। लेकिन वह फिर नहीं गए। वह गंगटोक के पास कहीं छिपकर रहे। वह डॉ. वैद्य बनकर सिर्फ भ्रम बढ़ाने और मृतकों से बात करने का नाटक करने के लिए वापस आए।' लेकिन तब तक उसे पता चल चुका था कि मैं एक जासूस हूँ। इसलिए उसने मुझ पर एक और पत्थर फेंककर मुझे भी वहाँ से हटाने की कोशिश की। उसने मुझे नाथुला रोड की ओर जाते हुए देखा होगा और शायद उसे अंदाज़ा हो गया होगा कि मैं क्या करने वाला हूँ। और वही था जो हमारा

पीछा करते हुए रुमटेक तक आया था—’ फेलुदा की बात अचानक एक तेज़ चीख से रुक गई। मुझे आश्चर्य हुआ जब मैंने पाया कि यह चीख श्री सरकार की थी।
‘ठीक है, श्रीमान सरकार,’ फेलुदा ने कहा। ‘सारा सच बताओ! और मुझे सच्चाई चाहिए। आप उस जगह क्यों गए थे जहाँ हत्या हुई थी?’
श्री सरकार ने अपने हाथ ऐसे उठाए जैसे किसी ने चिल्लाकर कहा हो, 'हाथ ऊपर करो!' फिर उन्होंने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा, 'मुझे पता नहीं था, आप देखिए, वह मूर्ति कितनी मूल्यवान थी। जब उन्होंने मुझे बताया—'
‘क्या आप ही तिब्बती संस्थान गए थे?’
'हां। उन्होंने कहा कि यह बिल्कुल अनोखा है। इसलिए मैंने सोचा—'
तो क्या आपको लगा कि अगर मूर्ति अभी भी दुर्घटनास्थल पर पड़ी है तो एक मृत व्यक्ति से चोरी करने में कोई बुराई नहीं है? खासकर तब जब वह कभी आपकी थी? जी-जी, कुछ ऐसा ही।
लेकिन क्या आपने उस खास जगह पर किसी को नहीं देखा?
'नहीं, महोदय।'
ठीक है। लेकिन ऐसा लगता है कि किसी ने आपको देख लिया था और उसे डर था कि आपने उसे देख लिया है। इसीलिए आपको धमकियाँ मिलीं।
'हां, इससे बात स्पष्ट हो जाती है।'
‘मूर्ति कहाँ है?’
‘मूर्ति? लेकिन मुझे तो मिली ही नहीं!’
‘क्या? तुम—?’ फेलुदा की बात फिर बीच में ही कट गई, इस बार श्री बोस ने। वो उछलकर खड़े हो गए, कुर्सी पलट दी और कमरे से बाहर भाग गए। दरवाजे पर खड़े हेलमुट को उन्होंने धक्का दे दिया। बाहर बरामदे की ओर जाने वाला केवल एक ही दरवाजा था, और हेलमुट के गिरने से कुछ पलों के लिए रास्ता बंद हो गया, इसलिए हमें लगभग दस सेकंड की देरी हो गई।
जब तक हम सब बाहर निकल पाते, श्री बोस अपनी जीप में वापस चढ़ चुके थे और उसका इंजन पहले ही ज़ोर से चालू हो चुका था। निस्संदेह उनके ड्राइवर को ऐसी स्थिति के बारे में चेतावनी दी गई थी और वह तैयार था। उनकी जीप ने तेज़ी से यू-टर्न लिया और जंगल की ओर बढ़ने लगी। बिना कुछ कहे, थोंडुप, जो हमारी जीप के पास खड़ा था, वापस जीप में कूद गया और इंजन चालू कर दिया, यह सोचकर कि हम श्री बोस का पीछा करना चाहेंगे। लेकिन जैसा कि बाद में पता चला, इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। फेलुदा ने अपनी जेब से रिवाल्वर निकाली

ये सारी बातें बताने के बाद फेलुदा ने श्री सरकार की ओर रुख किया। ‘आप भी तो छोटे-मोटे बदमाश हैं, है ना? शुक्र है कि आप वह मूर्ति नहीं ला पाए। अगर आप ले आते, तो हमें आपके लिए उचित दंड ढूंढना पड़ता।’
‘यकीन मानिए, मुझे उचित दंड मिल चुका है!’ श्री सरकार ने अत्यंत क्षमाप्रार्थी लहजे में कहा। ‘मुझे अपने एक मोजे में तीन-तीन जोंकें मिलीं। उन्होंने मेरा बहुत सारा खून चूस लिया होगा। सच कहूँ तो मैं काफी कमजोर महसूस कर रहा हूँ।’
‘ठीक है। खैर, मुझे उम्मीद है कि आप अपने दादाजी की कोई और चीज नहीं बेचेंगे। और देखिए, ये रहा आपका बटन।’
मैंने पहली बार देखा कि श्री सरकार की कमीज का आखिरी बटन गायब था। श्री सरकार ने फेलुदा से बटन लिया और काफी देर बाद अपनी पुरानी मुस्कान बिखेरी। ‘ध-धन्यवाद,’ उसने कहा।

[redacted]

एक

फेलुदा ने पढ़ना बंद कर दिया और अपनी किताब को ज़ोर से बंद कर दिया। फिर उसने दो बार उंगलियां चटकाईं, एक गहरी जम्हाई ली और कहा, 'ज्यामिति।' मैंने पूछा, ‘क्या तुम इतनी देर से ज्यामिति की किताब पढ़ रहे थे?’ किताब अखबार से ढकी हुई थी, इसलिए मैं उसका शीर्षक नहीं देख सका। मुझे बस इतना पता था कि फेलुदा ने इसे अंकल सिद्धू से उधार लिया था, जिन्हें किताबों का बहुत शौक था। उन्होंने कई किताबें खरीदी थीं और उनकी बहुत देखभाल करते थे। दरअसल, उन्हें अपनी किताबें किसी को उधार देना पसंद नहीं था, लेकिन फेलुदा अपवाद था। फेलुदा यह जानता था, इसलिए वह अंकल सिद्धू के घर से लाई गई किसी भी किताब पर हमेशा सुरक्षात्मक कवर लगाता था।
फेलुदा ने एक चारमीनार जलाई और एक के बाद एक दो धुएं के छल्ले छोड़े। उन्होंने मुझसे कहा, 'ज्यामिति पर कोई किताब नहीं होती। कोई भी किताब ज्यामिति की तरह मानी जा सकती है क्योंकि हमारे आसपास की हर चीज ज्यामिति से जुड़ी है। क्या तुमने वो धुएं के छल्ले देखे? जब वो मेरे मुंह से निकले, तो एकदम गोल थे। अब सोचो। हर जगह गोले हैं। अपने शरीर को देखो। तुम्हारी आंख की पुतली एक गोला है। पुतली की मदद से तुम सूरज और चांद को देख सकते हो। अगर तुम उन्हें चपटी वस्तुएं मानो, तो वो गोले हैं, लेकिन असल में वो गोले हैं—हर एक ठोस बुलबुला। यही ज्यामिति है। सौर मंडल के ग्रह सूर्य के चारों ओर दीर्घवृत्ताकार वक्रों में चक्कर लगा रहे हैं। इसमें भी ज्यामिति है। थोड़ी देर पहले जब तुमने खिड़की से थूका—तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था, ये बहुत गंदा है और अगर तुमने दोबारा ऐसा किया, तो तुम्हें सिर पर ज़ोरदार चोट लगेगी, लेकिन फिर भी—वो थूक परवलयिक वक्र में निकला। ज्यामिति, देखा? क्या आपने कभी मकड़ी के जाले को बारीकी से देखा है? यह एक साधारण वर्ग से शुरू होता है। फिर दो विकर्ण रेखाएँ इसे काटती हैं और वर्ग चार त्रिभुजों में विभाजित हो जाता है। इसके बाद, मकड़ी उन विकर्ण रेखाओं के प्रतिच्छेदन बिंदु से एक सर्पिल जाला बुनना शुरू करती है। यह आकार में

बढ़ता रहता है, जब तक कि यह पूरे वर्ग को ढक नहीं लेता। अगर आप इसके बारे में सोचेंगे, तो आपका सिर चकरा जाएगा... यह वाकई अद्भुत है!
रविवार की सुबह थी। हम दोनों भूतल पर बने अपने बैठक कक्ष में बैठे थे। बाबा हर रविवार की तरह अपने बचपन के दोस्त सुबिमाल से मिलने गए थे। फेलुदा सोफे पर बैठे थे और उनके पैर एक छोटी मेज पर रखे थे।
मैं सोफे पर बैठा था, दीवार से लगे तकिये पर टेक लगाए हुए। मेरे हाथ में एक खेल था। यह प्लास्टिक का बना एक भूलभुलैया था। भूलभुलैया के अंदर छोटी- छोटी धातु की गेंदें थीं। पिछले आधे घंटे से मैं उन धातु की गेंदों को भूलभुलैया की अलग-अलग गलियों से गुजारकर सीधे उसके केंद्र तक पहुंचाने की कोशिश कर रहा था। अब मुझे एहसास हुआ कि यह खेल जटिल ज्यामिति का भी एक हिस्सा है।
निहार और पिंटू के घर में दुर्गा पूजा हो रही थी, जो हमारे घर के पास ही था। कोई लाउडस्पीकर पर एक गाना बजा रहा था— फिल्म कटी पतंग का 'ये जो मोहब्बत है'। गोल रिकॉर्ड पर बनी बारीक घुमावदार धारियाँ। वाह!
फेलुदा ने आगे कहा, ‘ज्यामिति केवल दिखाई देने वाली वस्तुओं पर ही लागू नहीं होती। मानव मन अक्सर ज्यामितीय पैटर्न का अनुसरण करता है। एक साधारण व्यक्ति का मन सीधी रेखा में चलता है। वहीं, कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जिनका मन इतना सरल नहीं होता, उनका मन सांप की तरह टेढ़ा-मेढ़ा और लहराता है। और एक पागल का मन? कोई नहीं बता सकता कि वह कैसे चलेगा। यह तो अत्यंत जटिल ज्यामिति का मामला है!’
फेलुदा की बदौलत, मुझे हर वर्ग के कई लोगों से मिलने का मौका मिला। वह किस प्रकार के ज्यामितीय पैटर्न में फिट बैठता था? जब मैंने उससे पूछा, तो फेलुदा ने कहा, 'आप मुझे कई कोनों वाला तारा कह सकते हैं।'
और मैं? क्या मैं उस तारे का उपग्रह हूँ?
'तुम महज एक बिंदु हो, एक ऐसी चीज जो एक स्थिति को इंगित करती है, लेकिन जिसका स्वयं कोई महत्व नहीं है।'
मैं खुद को एक उपग्रह की तरह देखना पसंद करती हूँ। समस्या बस इतनी है कि मैं हर समय यह भूमिका नहीं निभा सकती। जब गंगटोक में मुसीबत आई थी, तब मैं फेलूदा के साथ थी क्योंकि उस समय स्कूल की छुट्टियाँ थीं। उसके बाद दो मामले हुए—एक धालभूमगढ़ में हत्या का और दूसरा पटना में जाली वसीयत से जुड़ा—जिनमें मैं बिल्कुल भी शामिल नहीं हो पाई। अब पूजा के कारण मेरा

स्कूल फिर से बंद था। मैं सोच रही थी कि कहीं कोई नया मामला न आ जाए। कौन जानता था कि ऐसा होगा भी या नहीं? लेकिन फिर फेलूदा ने मुझे बताया कि अगर कोई किसी चीज़ को दिल से चाहता है और उसकी इच्छाशक्ति मजबूत है, तो वह इच्छा अपने आप ही पूरी हो जाती है। मुझे यह सोचना अच्छा लगता है कि उस रविवार की सुबह जो कुछ हुआ, वह बस मेरी इच्छाशक्ति का ही नतीजा था। लाउडस्पीकर पर फिल्म 'जॉनी मेरा नाम' का एक गाना बजना शुरू ही हुआ था; फेलुदा ने ऐशट्रे में थोड़ी राख झाड़कर हिंदुस्तान स्टैंडर्ड अखबार उठा लिया था; मैं बाहर जाने के बारे में सोच ही रहा था कि तभी किसी ने हमारे दरवाजे की कुंडी बहुत जोर से खटखटाई। मुझे पता था कि बाबा बारह बजे से पहले नहीं लौटेंगे। ज़रूर कोई और होगा। मैंने दरवाजा खोला तो सामने एक सीधा- सादा, शांत दिखने वाला आदमी खड़ा था, जिसने धोती और नीली कमीज पहनी हुई थी। ‘क्या इस घर में कोई प्रदोष मित्तर रहता है?’ उसने अपनी आवाज बुलंद करते हुए पूछा ताकि उसकी बात सुनाई दे सके। लाउडस्पीकर से काफी शोर हो रहा था। अपना नाम सुनकर फेलुदा सोफे से उठा और दरवाजे तक आया। उसने पूछा, 'तुम कहाँ से आए हो?'
‘श्यामबाजार से इतनी दूर,’ उस आदमी ने जवाब दिया।
'कृपया अंदर आएं।'
वह आदमी बैठक कक्ष में दाखिल हुआ।
‘कृपया बैठ जाइए। मैं प्रदोष मित्र हूं।’
‘ओह। ओह, अब समझ आया। मुझे पता ही नहीं था... मतलब, मुझे यह एहसास ही नहीं था कि आप इतने जवान हैं!’ वह आदमी सोफे के बगल वाली कुर्सी पर बैठ गया, मानो वह बहुत प्रभावित हुआ हो। लेकिन उसके चेहरे से मुस्कान लगभग तुरंत गायब हो गई।
‘मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?’ फेलुदा ने पूछा।
उस आदमी ने गला साफ किया। ‘मैंने कैलाश चौधरी से आपके बारे में बहुत कुछ सुना है। लगता है वो आपके बारे में बहुत अच्छी राय रखते हैं। वो... वो मेरे ग्राहकों में से एक हैं। मेरा नाम सुधीर धर है। कॉलेज स्ट्रीट में मेरी एक किताबों की दुकान है—धर एंड कंपनी। शायद आपने उसे देखा होगा।’
फेलुदा ने संक्षेप में सिर हिलाया, फिर मुझसे कहा, 'टॉपशे, कृपया वह खिड़की बंद कर दो।'

मैंने सड़क की ओर खुलने वाली खिड़की बंद कर दी। इससे शोर कम हो गया और श्री धर सामान्य रूप से बात कर सके।
लगभग एक सप्ताह पहले, मेरे बेटे के बारे में एक प्रेस रिपोर्ट आई थी। क्या आपने...?
‘प्रेस रिपोर्ट? उसमें क्या लिखा था?’
‘उसके जातिस्मर होने के बारे में... मेरा मतलब है...’
‘मुकुल नाम के एक लड़के के बारे में?’
'हाँ।'
तो क्या रिपोर्ट सच है?
‘देखिए, जिस तरह से वह बोलता है, जिस तरह की बातें वह कहता है, उससे तो ऐसा ही लगता है जैसे...’ श्री धर ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।
जातिस्मर शब्द का अर्थ मुझे पता था। जो व्यक्ति पिछले जन्म की घटनाओं को याद रख सकता है, उसे जातिस्मर कहते हैं। ऐसा माना जाता है कि कुछ लोगों को समय-समय पर उन जन्मों की यादें आती हैं जो उन्होंने अपने वर्तमान जन्म से बहुत पहले जिए थे। वैसे, फेलुदा को भी नहीं पता कि इस सब में कोई सच्चाई है या नहीं।
फेलुदा ने चारमीनार का पैकेट उठाया और श्री धर को दिया, जिन्होंने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया। फिर उन्होंने कहा, 'शायद आपको याद होगा कि मेरे बेटे ने रिपोर्टर को क्या बताया था? वह सिर्फ आठ साल का है, लेकिन उसने एक ऐसी जगह का वर्णन किया है जिसे उसने कथित तौर पर देखा है। फिर भी मुझे यकीन है कि मेरे परिवार में कोई भी - मेरे पूर्वज भी - वहां नहीं गया है, मेरे बेटे की तो बात ही छोड़िए। आप देखिए, हम बहुत साधारण लोग हैं। मेरे पास बस वह दुकान है, और आजकल किताबों का व्यापार...
‘क्या आपका बेटा किसी किले की बात नहीं करता?’ फेलुदा ने बीच में ही टोकते हुए कहा। ‘जी हाँ, बिल्कुल। एक सोने का किला। उसकी छत पर एक तोप थी, बहुत लड़ाई हुई और कई लोग मारे गए... मेरा बेटा कहता है कि उसने सब कुछ देखा है। वह पगड़ी पहनता था और रेत पर ऊँट की सवारी करता था। वह अक्सर रेत का ज़िक्र करता है। और जानवरों का भी—ऊँट, हाथी और घोड़े। ओह, और मोर भी। उसकी कोहनी के पास एक निशान है। हम हमेशा सोचते थे कि यह जन्मचिह्न है, लेकिन वह कहता है कि एक बार उस पर एक मोर ने हमला किया था, और निशान दिखाता है कि पक्षी ने उसे कहाँ चोंच मारी थी।’

क्या उसने कभी यह बताया है कि वह पहले ठीक कहाँ रहता था?
नहीं, लेकिन वह कहता है कि उसे अपने घर से यह सुनहरा किला दिखाई देता था। कभी-कभी वह पेंसिल से अजीबोगरीब रेखाएँ खींचता है और कहता है, "देखो, यह मेरा घर है!" अगर आप इसे ध्यान से देखें, तो हाँ, यह घर जैसा ही दिखता है। ‘क्या वह यह सब किसी किताब में नहीं देख सकता था? मेरा मतलब है, आपकी एक किताबों की दुकान है, है ना? तो शायद उसने इस जगह की तस्वीरें किसी किताब में देखी होंगी?’
हां, ऐसा हो सकता है। लेकिन दूसरे बच्चे भी किताबों में तस्वीरें देखते हैं; वे जो देखते हैं उसके बारे में लगातार बात तो नहीं करते, है ना? अगर आपने मेरे बेटे को देखा होता, तो आप मेरी बात समझ जाते। सच कहूं तो, उसका ध्यान कहीं और ही रहता है। उसका अपना परिवार—उसके माता-पिता, भाई-बहन, दूसरे रिश्तेदार—उसके लिए कोई मायने नहीं रखता। असल में, बात करते समय वह हमारी तरफ देखता भी नहीं है।
‘यह सब कब शुरू हुआ?’
लगभग दो महीने पहले। बात उन तस्वीरों से शुरू हुई, आप जानते हैं। एक दिन, जब मैं दुकान से घर लौटा—उस दिन बहुत बारिश हुई थी—मेरा बेटा मुझे अपनी बनाई हुई तस्वीरें दिखाने लगा। पहले तो मैंने उस पर ध्यान नहीं दिया। हर बच्चा काल्पनिक दुनियाओं के बारे में बातें करना पसंद करता है, और वह लगातार बातें कर रहा था। इसलिए मैंने उसे अनदेखा कर दिया। मेरी पत्नी ने सबसे पहले महसूस किया कि कुछ अजीब है। फिर हमने उसकी बातों को और ध्यान से सुना, और अगले कुछ हफ्तों तक उसके व्यवहार पर नजर रखी... फिर, मेरे एक और ग्राहक, डॉ. हेमंगा हाजरा... क्या आपने उनके बारे में सुना है?
'जी हां, जी हां। वो एक पैरासाइकोलॉजिस्ट हैं, है ना? मैंने उनके बारे में ज़रूर सुना है। लेकिन क्या उस प्रेस रिपोर्ट में ये नहीं कहा गया था कि वो आपके बेटे के साथ कहीं यात्रा पर जा रहे हैं?'
‘नहीं जाने वाले। वे जा चुके हैं। वे पहले ही जा चुके हैं। डॉ. हाजरा तीन बार मेरे घर आए। उन्हें लगा कि मुकुल राजस्थान की बात कर रहा है। तो मैंने कहा, हाँ, ऐसा हो सकता है। फिर, अंत में, डॉ. हाजरा ने मुझे बताया कि वे पिछले जन्म की यादों से जुड़े इस पूरे मामले पर शोध कर रहे हैं। वे मुकुल को राजपूताना ले जाना चाहते थे। उन्हें लगा कि अगर मुकुल सचमुच उसी जगह वापस जा सके, तो उसे कई और बातें याद आ सकती हैं, और इससे उनके शोध में मदद

मिलेगी। इसलिए उन्होंने कहा कि वे सब कुछ का खर्च उठाएंगे, और मेरे बेटे का बहुत ख्याल रखेंगे, मुझे चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है।’
‘और फिर?’ फेलुदा आगे की ओर झुका। उसकी आवाज़ बदल गई थी। स्पष्ट रूप से, उसे यह सब काफी दिलचस्प लग रहा था।
फिर वे चले गए, बस इतना ही।
‘क्या मुकुल को घर छोड़ने में कोई आपत्ति नहीं थी?’
श्री धर थोड़ा उदास होकर मुस्कुराए। ‘बुरा लगा? अरे नहीं। डॉक्टर हाजरा ने जैसे ही उन्हें स्वर्ण किला दिखाने का प्रस्ताव दिया, मेरा बेटा तुरंत उनके साथ जाने को तैयार हो गया। देखिए, मेरा बेटा दूसरे बच्चों जैसा नहीं है। वह बहुत अलग है। कभी-कभी हम उसे सुबह तीन बजे तक जगा हुआ पाते हैं। वह कोई गाना गुनगुना रहा होता है। कोई फिल्मी गाना नहीं, बल्कि लोकगीत जैसा, गांवों में सुनाई देने वाला संगीत—लेकिन यकीनन वह बंगाल के किसी गांव का नहीं होता। इतना तो मैं आपको बता सकता हूं। मुझे संगीत की थोड़ी बहुत जानकारी है... मैं हारमोनियम बजाता हूं।’
श्री धर ने हमें अपने बेटे के बारे में बहुत कुछ बताया था। लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया था कि वह फेलुदा से मिलने क्यों आए थे, या उन्हें किसी जासूस से सलाह लेने की ज़रूरत क्यों पड़ी। फेलुदा के अगले सवाल ने पूरी बातचीत को एक नया मोड़ दे दिया।
‘क्या आपके बेटे ने छिपे हुए खजाने के बारे में कुछ कहा था?’
श्री धर और भी ज्यादा उदास दिखने लगे। ‘यही तो सबसे बड़ी समस्या है!’ उन्होंने आह भरी। ‘उन्होंने मुझे इसके बारे में कुछ समय पहले बताया था, लेकिन जब उन्होंने रिपोर्टर से इसका जिक्र किया... तो नतीजा बेहद बुरा निकला!’
‘तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?’ फेलुदा ने पूछा। फिर उसने हमारे रसोइए श्रीनाथ को बुलाया और चाय लाने को कहा।
श्री धर ने आगे कहा, ‘मुझे समझाने दीजिए। डॉ. हाजरा कल सुबह मुकुल के साथ तूफान एक्सप्रेस से राजस्थान के लिए रवाना हो गईं। और...’
‘क्या आपको पता है कि वह राजस्थान में कहाँ जाएगा?’ फेलुदा ने बीच में ही टोकते हुए पूछा। ‘उसने जोधपुर बताया। मुकुल ने रेत का ज़िक्र किया था, इसलिए उसने कहा कि वह उत्तर-पश्चिम से शुरू करेगा। खैर, हुआ ये कि कल शाम

हमारे इलाके से किसी ने एक लड़के का अपहरण कर लिया। वह मुकुल की ही उम्र का था।’
‘और आपको लगता है कि उस लड़के का अपहरण गलती से हुआ था? क्योंकि उन्हें लगा कि वह मुकुल है?’
जी हां, इसमें कोई शक नहीं है। मेरा बेटा और वह दूसरा लड़का दिखने में एक जैसे हैं। वह दूसरा लड़का शिवरतन मुखर्जी का पोता है। श्री मुखर्जी हमारे पड़ोसियों में से एक हैं, वे वकील हैं। लड़के का नाम नीलू है। वे स्वाभाविक रूप से बहुत परेशान थे, उन्हें पुलिस को बुलाना पड़ा और जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, बहुत हंगामा हुआ। लेकिन अब जब उन्हें वह वापस मिल गया है, तो मामला शांत हो गया है।
‘उसे वापस पा लिया? इतनी जल्दी?’
‘आज सुबह-सुबह। लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है, बताओ? मैं चिंता से पागल हो रही हूँ, सच में। उन अपहरणकर्ताओं को शायद एहसास हो गया है कि उन्होंने गलत लड़के को पकड़ लिया है। और नीलू ने उन्हें बताया है कि मुकुल जोधपुर गया है। मान लो कि वे उस खजाने को पाने के लिए मुकुल का जोधपुर तक पीछा करें?’ फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया। वह सोच में डूबा हुआ था; उसके माथे पर चार गहरी लकीरें उभर आई थीं। मेरा दिल तेज़ी से धड़क रहा था। क्या इसका मतलब यह हो सकता है कि हम इन पूजा की छुट्टियों में राजस्थान जाएंगे? जोधपुर, चित्तौड़, उदयपुर... मैंने इन नामों के बारे में सिर्फ सुना था और इन जगहों के बारे में इतिहास की किताबों में पढ़ा था—और हां, अबनिंद्रनाथ टैगोर की 'राज कहानी' में भी। अंकल नरेश ने मुझे मेरे जन्मदिन पर उसकी एक प्रति दी थी।
श्रीनाथ चाय लेकर अंदर आया। उसने ट्रे को मेज पर रख दिया। फेलुदा ने श्री धर को एक कप चाय दी।
श्री धर ने हिचकिचाते हुए कहना शुरू किया, ‘कैलाश चौधरी से आपके बारे में जो सुना है, उससे लगता है कि आप बहुत... मतलब... खैर, मैं बस यह जानना चाहता था कि क्या आप राजस्थान जा सकते हैं। अगर आपको डॉ. हाजरा और मुकुल सुरक्षित मिले, तो बहुत अच्छी बात है। लेकिन मान लीजिए कि वे खतरे में हों? मान लीजिए कि आपको कुछ अजीब दिखे? मेरा मतलब है, मैंने सुना है कि आप बहादुर हैं, आप अपराधियों से निपट सकते हैं। मैं तो बस एक साधारण आदमी हूँ, श्री

मित्तर। शायद आपसे पूछना मेरी गुस्ताखी है। लेकिन... अगर आप जाने का फैसला करते हैं, तो मैं आपके यात्रा खर्च का भुगतान जरूर करूँगा।’
फेलुदा का चेहरा उतरा हुआ था। एक मिनट की चुप्पी के बाद उसने कहा, 'मैं आपको कल बता दूंगा कि मैंने क्या फैसला किया है। मुझे लगता है कि आपके घर में आपके बेटे की तस्वीर होगी? अखबार में छपी तस्वीर साफ नहीं थी।'
श्री धर ने अपनी चाय का एक लंबा घूंट लिया। 'मेरे चचेरे भाई को फोटोग्राफी का शौक है। उसने मुकुल की कुछ तस्वीरें ली हैं। मेरी पत्नी उन्हें ले लेंगी।'
'अचे से।'
श्री धर ने अपनी चाय खत्म की, कप को मेज पर रखा और उठ खड़े हुए। 'मेरी दुकान में एक टेलीफोन है, नंबर 345116। मैं आमतौर पर सुबह दस बजे से दुकान में रहता हूँ।'
'आप कहाँ रहते हैं?'
‘मेछोबाजार। 7 मेछोबाजार स्ट्रीट। मेरा घर मुख्य सड़क पर है।’
मैं श्री धर को विदा करने उनके साथ गया। उनके जाने के बाद, मैंने सामने का दरवाजा बंद किया और बैठक में लौट आया। मैंने फेलुदा से कहा, 'एक शब्द है जो मुझे पूरी तरह समझ नहीं आया।'
‘आपका मतलब पैरासाइकोलॉजिस्ट से है?’
'हाँ।'
मानव मन के कुछ अस्पष्ट पहलुओं का अध्ययन करने वालों को पैरासाइकोलॉजिस्ट कहा जाता है। उदाहरण के लिए, टेलीपैथी को ही ले लीजिए। आप वास्तव में किसी दूसरे व्यक्ति के मन में प्रवेश कर सकते हैं और उनके विचारों को पढ़ सकते हैं। या, यदि आपका मन इतना शक्तिशाली है, तो आप दूसरों के विचारों को प्रभावित कर सकते हैं, यहाँ तक कि उन्हें पूरी तरह से बदल भी सकते हैं। कभी-कभी अजीबोगरीब चीजें घटित होती हैं। मान लीजिए आप यहाँ बैठे हैं और किसी पुराने मित्र के बारे में सोच रहे हैं। अचानक, बिना किसी कारण के, उसी मित्र का आपको फोन आ जाता है। एक पैरासाइकोलॉजिस्ट आपको बताएगा कि इसमें कुछ भी अचानक या अप्रत्याशित नहीं था। यदि आपके मित्र ने आपको फोन किया, तो यह शक्तिशाली टेलीपैथी के कारण था। लेकिन इसके अलावा भी बहुत कुछ है - जैसे अतिरिक्त संवेदी बोध, या संक्षेप में ईएसपी। यह आपको भविष्य की घटनाओं के बारे में चेतावनी दे सकता है। या, इस मामले में, पिछले जन्म को याद करने की

बात को ही ले लीजिए। ये सभी ऐसे विषय हो सकते हैं जिनका अध्ययन एक पैरासाइकोलॉजिस्ट करना चाहेगा।
‘क्या यह हेमंगा हाजरा एक प्रसिद्ध परा मनोविज्ञानी हैं?’
'हां, सबसे प्रसिद्ध लोगों में से एक। वे विदेश जा चुके हैं, व्याख्यान दे चुके हैं, और मुझे लगता है कि उन्होंने एक संस्था भी बनाई थी।'
क्या आप ऐसी बातों पर विश्वास करते हैं?
मेरा मानना है कि पर्याप्त सबूत के बिना किसी भी बात को स्वीकार या अस्वीकार करना मूर्खता है। अगर आप खुले दिमाग से नहीं सोचते, तो आप मूर्ख हैं। इतिहास पर एक नज़र डालने से ही आपको ऐसी मूर्खता के कई उदाहरण मिल जाएंगे। एक समय था जब कुछ लोग मानते थे कि पृथ्वी चपटी है। क्या आपको यह पता था? वे यह भी मानते थे कि पृथ्वी एक निश्चित बिंदु पर समाप्त हो जाती है और आप उससे आगे यात्रा नहीं कर सकते। लेकिन जब नाविक मैगलन ने एक जगह से दुनिया का चक्कर लगाना शुरू किया और उसी जगह पर वापस लौटे, तो पृथ्वी को चपटा मानने वाले सभी लोग हैरान रह गए। फिर ऐसे लोग भी थे जो मानते थे कि पृथ्वी स्थिर है और अन्य ग्रह, यहाँ तक कि सूर्य भी, इसके चारों ओर घूमते हैं। कुछ लोग सोचते थे कि आकाश एक उल्टे रखे हुए विशाल कटोरे जैसा है। उनका मानना था कि सभी तारे उस पर रत्नों की तरह जड़े हुए हैं। कोपरनिकस ने ही यह सिद्ध किया कि सूर्य स्थिर रहता है और पृथ्वी तथा सौर मंडल के अन्य ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं। लेकिन कोपरनिकस का मानना था कि यह गति वृत्ताकार होती है। फिर केप्लर आए और उन्होंने साबित किया कि सब कुछ दीर्घवृत्ताकार वक्रों में गति करता है। उसके बाद गैलीलियो आए... लेकिन खैर, इन सब बातों के बारे में बात करने का कोई मतलब नहीं है। तुम्हारा दिमाग अभी बहुत छोटा और अपरिपक्व है, ऐसी बातों को समझने के लिए!
फेलुदा चाहे कितना भी चतुर जासूस क्यों न हो, उसे एक साधारण सी बात का एहसास नहीं था। उसकी कोई भी चुटकी और ताना मेरे उत्साह को कम नहीं कर सकता था क्योंकि मेरा दिल पहले से ही कह रहा था कि छुट्टियाँ राजस्थान में बीतने वाली हैं। हम एक नई जगह देखेंगे और एक नए रहस्य को सुलझाएंगे। अब बस मेरी टेलीपैथी की शक्ति की परीक्षा होनी बाकी थी।

दो

फेलुदा ने श्री धर से कहा था कि वह फैसला करने के लिए एक दिन का समय लेंगे। लेकिन श्री धर के जाने के एक घंटे के भीतर ही उन्होंने राजस्थान जाने का फैसला कर लिया। जब उन्होंने मुझे यह बताया, तो मैंने पूछा, 'मैं भी आपके साथ जा रहा हूँ, है ना?'
'अगर आप एक मिनट के भीतर राजस्थान में पांच ऐसे स्थानों के नाम बता सकते हैं जहां किले हैं, तो शायद आपके पास जीतने का मौका हो।'
‘जोधपुर, जयपुर, चित्तौड़, बीकानेर और... और... बूंदी!’ फेलुदा ने अपनी घड़ी देखी और झट से खड़ा हो गया। कुर्ता-पायजामा से कमीज़-पैंट बदलने में उसे ठीक साढ़े तीन मिनट लगे। ‘आज रविवार है, इसलिए फेयरली प्लेस बारह बजे तक खुला रहेगा। मैं जल्दी से जाकर हमारे लिए बुकिंग करवा लेता हूँ,’ उसने कहा। जब फेलुदा लौटा तब तक एक बज चुका था। लौटते ही उसने सबसे पहले डायरेक्टरी में हेमंगा हाजरा का फोन नंबर ढूंढा और उसे फोन किया। जब मैंने उससे पूछा कि वह किसी ऐसे व्यक्ति को क्यों फोन कर रहा है जो शहर से बाहर है, तो फेलुदा ने कहा, 'मुझे इस बात का सबूत चाहिए था कि श्री धर ने जो बताया था वह सच था।'
‘और क्या आपको वह मिल गया?’
'हाँ।'
दोपहर के भोजन के बाद, फेलुदा ने पूरी दोपहर अपने बिस्तर पर तकिया सीने के नीचे दबाकर लेटे-लेटे बिताई और पाँच अलग-अलग किताबें पढ़ीं। इनमें से दो पैरासाइकोलॉजी पर पेलिकन प्रकाशन की किताबें थीं। फेलुदा ने बताया कि उन्होंने ये किताबें एक दोस्त से उधार ली थीं। बाकी किताबों में से एक टॉड की राजस्थान पर लिखी किताब थी, दूसरी का नाम था 'भारत, पाकिस्तान, बर्मा और श्रीलंका की मार्गदर्शिका' और तीसरी भारतीय इतिहास पर थी, लेकिन मुझे याद नहीं कि इसे किसने लिखा था।
शाम को जब हमने चाय पी ली, तो फेलुदा ने कहा, 'तैयार हो जाओ, हम बाहर जा रहे हैं। हमें श्री धर से मिलने जाना है।'

तब तक मैंने बाबा को अपनी योजनाओं के बारे में बता दिया था। राजस्थान जाने की खबर सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुए। वे अपने बचपन में मेरे दादाजी के साथ दो बार राजस्थान जा चुके थे। उन्होंने मुझसे कहा, 'चित्तौड़ देखना मत भूलना। चित्तौड़ का किला वाकई बहुत प्रभावशाली है। यह समझना आसान है कि राजपूत इतने बहादुर योद्धा क्यों थे।'
हम करीब साढ़े छह बजे श्री धर के घर पहुँचे। जब उन्होंने सुना कि फेलुदा राजस्थान जाने के लिए तैयार है, तो श्री धर राहत और कृतज्ञता दोनों से भर उठे। उन्होंने कहा, 'मैं आपका धन्यवाद कैसे करूँ, यह मुझे नहीं पता!' ‘श्रीमान धर, अभी मुझे धन्यवाद देने का समय नहीं आया है। आपको यह समझना होगा कि हम केवल पर्यटक बनकर जा रहे हैं, न कि आपके कहने पर। वैसे भी, हमारे पास बहुत कम समय है। हमें दो चीजें चाहिए। एक तो आपके बेटे की तस्वीर। दूसरी, नीलू से बात करना, उस लड़के से जिसका अपहरण हुआ था।’
‘देखती हूँ मैं क्या कर सकती हूँ। आमतौर पर नीलू शाम को घर पर नहीं होती, खासकर अब जब पूजा नजदीक है। लेकिन मुझे नहीं लगता कि आज उसे अकेले बाहर जाने दिया जाएगा। रुको, मैं वो फोटो ले आती हूँ।’
वकील शिवरतन मुखर्जी का घर सड़क के उसी तरफ, सिर्फ तीन घर छोड़कर था। हमने उन्हें घर पर, बैठक में एक अन्य सज्जन के साथ चाय पीते हुए पाया। श्री मुखर्जी के आगंतुक को त्वचा रोग लग रहा था—उनके चेहरे पर सफेद धब्बे थे। जब श्री धर ने हमें वहां आने का कारण बताया, तो श्री मुखर्जी ने कहा, 'लगता है आपके बेटे की वजह से मेरा पोता काफी मशहूर हो गया है! कृपया बैठ जाइए। मनोहर!'
मनोहर उनका नौकर निकला। श्री मुखर्जी ने उससे कहा, 'और चाय लाओ, और देखो कि क्या तुम नीलू को ढूंढ सकते हो। उसे बता देना कि मैंने उसे बुलवाया है।' हमें एक बड़ी मेज के दोनों ओर रखी तीन कुर्सियाँ मिलीं। दोनों ओर की दीवारें छत तक पहुँचने वाली बहुत ऊँची किताबों की अलमारियों से ढकी हुई थीं। वे मोटी-मोटी किताबों से भरी हुई थीं। फेलुदा ने एक बार मुझसे कहा था कि किसी वकील को किताबों से सलाह लेने की जितनी ज़रूरत होती है, उतनी किसी और को नहीं।
नीलू का इंतज़ार करते हुए मैंने मुकुल की तस्वीर देखी। यह तस्वीर उनकी छत पर ली गई थी। छोटा लड़का धूप में खड़ा था और कैमरे की तरफ़ सीधे देखते हुए भौंहें चढ़ा रहा था। उसके चेहरे पर ज़रा भी मुस्कान नहीं थी।

श्री मुखर्जी ने कहा, 'हमने नीलू से भी बहुत सारे सवाल पूछे। पहले तो वह इतने सदमे में था कि बिल्कुल बात नहीं कर रहा था। अब वह पहले से ज्यादा सामान्य लग रहा है।'
‘क्या पुलिस को सूचित कर दिया गया है?’ फेलुदा ने पूछा।
'हां, जब वह लापता हुआ था तो हमने पुलिस को सूचना दी थी। लेकिन पुलिस कुछ कर पाती उससे पहले ही वह वापस आ गया।'
नौकर नीलू को लेकर लौटा। श्री धर सही थे। नीलू वाकई तस्वीर में दिख रहे लड़के से काफी मिलती-जुलती थी। उसने हमें शक की निगाहों से देखा। स्पष्ट था कि वह अभी तक उस भयानक अनुभव से उबर नहीं पाया था।
अचानक, फेलुदा ने उससे पूछा, 'क्या तुम्हारे हाथ में चोट लगी है, नीलू?' श्री मुखर्जी कुछ कहने के लिए मुंह खोलने ही वाले थे कि फेलुदा ने इशारा करके उन्हें रोक दिया। नीलू ने खुद ही सवाल का जवाब दे दिया। 'जब उन्होंने मेरा हाथ खींचा, तो उसमें बहुत जलन हुई।'
उसकी कलाई पर एक गहरा घाव था, जो स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।
‘वे? आपका मतलब है कि एक से अधिक व्यक्ति थे?’
एक आदमी ने मेरी आंखें और मुंह ढक दिए। फिर उसने मुझे उठाया और एक कार में बिठा दिया। एक दूसरे आदमी ने कार चलाई। मुझे बहुत डर लग रहा था।
‘मैं भी ऐसा ही करता,’ फेलुदा ने उससे कहा। ‘दरअसल, मैं तुमसे कहीं ज्यादा डरा हुआ होता। तुम बहुत बहादुर हो। जब उन्होंने तुम्हें पकड़ा, तब तुम क्या कर रहे थे?’
मैं मोती के घर जा रहा था। उनके घर में दुर्गा पूजा है। मैं मूर्ति देखना चाहता था। मोती मेरी ही कक्षा में पढ़ता है।
‘क्या सड़कों पर बहुत सन्नाटा था? ज्यादा लोग नजर नहीं आ रहे थे?’
श्री मुखर्जी ने हमें बताया, ‘परसों यहां कुछ गड़बड़ हो गई थी। एक बम फटा था। इसलिए, कल शाम से सड़कों पर कम लोग निकले हैं।’
फेलुदा ने सिर हिलाकर कहा, 'हम्म।' फिर वह एक बार फिर नीलू की ओर मुड़ा। 'वे तुम्हें कहाँ ले गए?'
मुझे नहीं पता। उन्होंने मेरी आंखों पर कपड़ा बांध दिया। गाड़ी चलती ही रही।
'और तब?'

फिर उन्होंने मुझे एक कुर्सी पर बिठाया। उनमें से एक ने पूछा, “तुम किस स्कूल में पढ़ते हो?” मैंने उसे बताया। फिर उसने कहा, “हम तुमसे कुछ सवाल पूछेंगे। जो भी तुम्हें पता है, ठीक-ठीक बताओ। अगर तुम बता दोगे, तो हम तुम्हें तुम्हारे स्कूल के सामने छोड़ देंगे। क्या तुम वहाँ से घर जा सकते हो?” तो मैंने कहा, “हाँ।” फिर मैंने कहा, “आपको जल्दी करनी चाहिए, अगर मुझे देर हुई तो मेरी माँ मुझे डाँटेगी!” फिर उसने पूछा, “सुनहरा किला कहाँ है?” मैंने कहा, “मुझे नहीं पता, और न ही मुकुल को। उसे बस इतना पता है कि वहाँ एक किला है, बस।” फिर वे दोनों आदमी अंग्रेज़ी में आपस में बात करने लगे। मैंने उन्हें कहते सुना, “गलती!” एक आदमी ने मुझसे पूछा, “तुम्हारा नाम क्या है?” मैंने कहा, “मुकुल मेरा दोस्त है, लेकिन वह राजस्थान चला गया है।” उसने पूछा, “क्या तुम्हें पता है कि वह राजस्थान में कहाँ गया है?” मैंने उसे बताया, “जयपुर!”
‘आपने जयपुर कहा?’ फेलुदा ने उससे पूछा।
‘नहीं, नहीं। जोधपुर। हाँ, मैंने यही कहा था। जोधपुर।’
नीलू रुक गई। हम सब चुप रहे। नौकर ने हमारे सामने चाय और मिठाई रख दी थी, लेकिन किसी को भी उनमें कोई दिलचस्पी नहीं थी।
‘क्या तुम कुछ और सोच सकते हो?’ फेलुदा ने नीलू से पूछा। नीलू ने एक मिनट सोचा। फिर उसने कहा, ‘उनमें से एक सिगरेट पी रहा था। नहीं, नहीं, वह सिगार था।’
क्या आपको पता है कि सिगार की गंध कैसी होती है?
'हां, मेरे चाचा सिगरेट पीते हैं।'
‘ठीक है। रात को तुम कहाँ सोए थे?’
'मुझें नहीं पता।'
‘तुम्हें नहीं पता? तुम्हारा मतलब क्या है?’
उन्होंने कहा, “ये लो थोड़ा दूध। इसे पी लो।” फिर किसी ने मुझे एक बहुत भारी गिलास थमा दिया। मैंने दूध पिया और सो गया। मैं अभी भी कुर्सी पर ही बैठा था!
और फिर? जब तुम जाग गए?
नीलू ने अनिश्चितता से अपने दादाजी की ओर देखा। श्री मुखर्जी मुस्कुराए। उन्होंने बताया, “उसे घर लाने के बाद ही होश आया। उसे उसके स्कूल के बाहर छोड़ दिया गया था, शायद आज सुबह बहुत जल्दी। वह सो रहा था। हमारे अखबार को

रोज़ाना बांटने वाला व्यक्ति थोड़ी देर बाद वहाँ से गुजर रहा था और उसने उसे देखा। वही आया और उसने हमें बताया। फिर मैं अपने बेटे के साथ गया और उसे वापस ले आया। हमारे डॉक्टर ने उसकी जाँच की है। उन्होंने बताया कि नीलू को नींद की दवा दी गई थी—शायद बच्चों को दी जाने वाली सामान्य खुराक से ज़्यादा।”
फेलुदा गंभीर दिख रहे थे। उन्होंने चाय का प्याला उठाया और धीमी आवाज़ में बुदबुदाए, 'बदमाश!' फिर उन्होंने नीलू की पीठ थपथपाई और कहा, 'धन्यवाद, नीलू बाबू। अब आप जा सकते हैं।'
जब हमने श्री मुखर्जी को अलविदा कह दिया और एक बार फिर सड़क पर आ गए, तो श्री धर ने पूछा, 'क्या आपको लगता है कि चिंता का कोई कारण है?'
मुझे जो दिख रहा है वो ये है कि कुछ लालची और लापरवाह लोग आपके बेटे के बारे में ज़रूरत से ज़्यादा उत्सुक हो गए हैं। ये कहना मुश्किल है कि क्या वे सचमुच राजस्थान तक जाएंगे। वैसे, मुझे लगता है कि आपको डॉ. हाजरा को पत्र लिखना चाहिए, बस मेरा उनसे परिचय करवाने के लिए। आखिर वो मुझे जानते तो नहीं हैं। इसलिए अगर मैं उन्हें आपका पत्र दिखा सकूँ, तो इससे मदद मिलेगी।
श्री धर ने पत्र लिखा, उसे फेलुदा को सौंप दिया और हमारे यात्रा खर्च का भुगतान एक बार फिर करने की पेशकश की। फेलुदा ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। जैसे ही हम बस स्टॉप के पास पहुँचे, श्री धर ने कहा, 'कृपया मुझे बता दीजिए, महोदय, जब आप वहाँ पहुँचकर उन्हें पा लें। मुझे बहुत चिंता होगी। डॉक्टर हाजरा ने भी पत्र लिखने का वादा किया है। लेकिन अगर वह न भी लिखें, तो आपको कम से कम एक पत्र अवश्य लिखना चाहिए!'
घर पहुँचते ही, हम दोनों के सामान पैक करने से पहले ही फेलुदा ने अपनी मशहूर नीली नोटबुक (छठा खंड) निकाल ली। फिर वह अपने बिस्तर पर बैठ गया और बोला, 'चलो कुछ तारीखें पता कर लेते हैं। डॉ. हाजरा मुकुल के साथ राजस्थान कब रवाना हुईं?'
‘कल, 9 अक्टूबर।’
‘नीलू का अपहरण कब हुआ था?’
कल शाम को।
और वो आज सुबह यानी 10 अक्टूबर को वापस आ गए हैं। हम कल सुबह यानी 11 तारीख को निकलेंगे। हम 12 तारीख को आगरा पहुंचेंगे। फिर हमें वहां ट्रेन बदलनी

होगी और शाम को बांदीकुई जाने वाली ट्रेन पकड़नी होगी। बांदीकुई से आधी रात को निकलेंगे और उसी दिन मारवाड़ पहुंच जाएंगे... यानी 13 तारीख की शाम... 13 तारीख... 13 तारीख...
फेलुदा कुछ बुदबुदाते रहे और कुछ मज़ेदार गणनाएँ करते रहे। फिर उन्होंने कहा, 'ज्यामिति। यहाँ भी आपको ज्यामिति मिलेगी। एक बिंदु... और कई रेखाएँ उस बिंदु पर आकर मिलती हैं। ज्यामिति!'

तीन

आधे घंटे पहले, हम आगरा फोर्ट स्टेशन से बांदीकुई जाने वाली ट्रेन में सवार हुए। आगरा में हमारे पास लगभग तीन घंटे का समय था। इसलिए हम दस साल बाद फिर से ताजमहल देखने गए और फेलुदा ने मुझे इमारत की ज्यामिति पर एक संक्षिप्त व्याख्यान दिया।
कल, कलकत्ता से निकलने से पहले, हमें कुछ ज़रूरी काम निपटाने थे। शायद मुझे इसका ज़िक्र यहाँ कर देना चाहिए। तूफ़ान एक्सप्रेस सुबह 9:30 बजे चलती है, इसलिए हम दोनों काफ़ी जल्दी उठ गए थे। करीब छह बजे, चाय पीने के बाद, फेलुदा ने कहा, 'जाने से पहले हमें अंकल सिद्धू से मिलना चाहिए। अगर उनसे कुछ जानकारी मिल जाए, तो बहुत मदद मिलेगी।'
अंकल सिद्धू सरदार शंकर रोड में रहते हैं, जो हमारे तारा रोड से सिर्फ पांच मिनट की दूरी पर है। अंकल सिद्धू एक अनोखे इंसान हैं। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन तरह-तरह के कारोबार करने में बिताया, खूब पैसा कमाया और फिर उसमें से काफी कुछ गंवा भी दिया। अब वे सेवानिवृत्त हो चुके हैं। उनका सबसे बड़ा शौक किताबें हैं। वे बड़ी संख्या में किताबें खरीदते हैं और अपना कुछ समय पढ़ने में और बाकी समय अकेले शतरंज खेलने में बिताते हैं। कभी-कभी, चाल चलते समय वे शतरंज की कोई किताब भी देख लेते हैं।
उनकी दूसरी रुचि खाने-पीने में है—या यूं कहें कि खाने के साथ प्रयोग करने में। उन्हें एक चीज़ को दूसरी चीज़ के साथ मिलाकर खाना पसंद है। उनके अनुसार, दही को आमलेट में मिलाकर खाने से अमृत सा स्वाद आता है। सच कहूं तो, उनका हमसे कोई रिश्ता नहीं है। वो हमारे पैतृक गांव में हमारे पड़ोस में रहते थे (जिसे मैंने कभी नहीं देखा)। इसलिए वो मेरे पिताजी के लिए बड़े भाई जैसे हैं, और हम उन्हें 'चाचा' कहकर बुलाते हैं।
जब हम उनके घर पहुँचे, तो वे अपने घर के सामने वाले दरवाजे पर एक छोटी सी चौकी पर बैठे थे और अपने नाई से बाल कटवा रहे थे, जबकि उनके सिर के पीछे के कुछ बालों को छोड़कर बाकी जगह बाल नहीं थे। हमें देखकर उन्होंने अपनी चौकी

थोड़ी सी हटाई और हमें अंदर जाने दिया। उन्होंने कहा, 'आराम से बैठिए। नारायण को बुलाइए, वो आपको चाय पिला देंगे।'
अंकल सिद्धू का कमरा बहुत ही सादा था। वहाँ सिर्फ एक दीवान, दो कुर्सियाँ और तीन बड़ी-बड़ी किताबों की अलमारियाँ थीं। किताबों ने दीवान का आधा हिस्सा ढक रखा था। हमें पता था कि उस पर जो थोड़ी सी खाली जगह थी, वहाँ अंकल सिद्धू बैठना पसंद करते थे, इसलिए हमने दोनों कुर्सियाँ ले लीं। फेलुदा अपनी उधार ली हुई किताब लाना भूल गया था, जो अभी भी अखबार से ढकी हुई थी। उसने उसे अलमारी में एक खाली जगह में रख दिया।
नाई अंकल सिद्धू के बालों पर काम करता रहा। अंकल सिद्धू ने कहा, 'फेलू, तुम एक जासूस हो। मुझे उम्मीद है कि तुमने आपराधिक जांच के इतिहास के बारे में पढ़ा होगा? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम किस क्षेत्र में विशेषज्ञता रखते हो। अगर तुम्हें अपने पेशे के इतिहास के बारे में कुछ जानकारी होगी, तो तुम्हारा आत्मविश्वास बढ़ेगा और तुम्हें अपना काम कहीं अधिक रोचक लगेगा।'
'जी हां, बिल्कुल,' फेलुदा ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया।
‘किसी अपराधी की उंगलियों के निशान से उसकी पहचान करने की तकनीक का पता सबसे पहले किसने लगाया था? क्या आप मुझे बता सकते हैं?’
फेलुदा ने मेरी तरफ आँख मारी और कहा, 'मुझे याद नहीं आ रहा। मैंने इसके बारे में कहीं पढ़ा था, लेकिन अब...'।
मुझे पता चल गया था कि फेलुदा को जवाब अच्छी तरह से पता था, लेकिन वह चाचा सिद्धू को खुश करने के लिए ऐसा दिखावा कर रहा था कि उसे जवाब नहीं पता। हम्म। ज़्यादातर लोग तुरंत कहेंगे कि यह अल्फोंस बर्टिलन थे। लेकिन यह गलत है। सही नाम जुआन वुकाटिच है। याद रखना। वह अर्जेंटीना से थे।
उन्होंने ही सबसे पहले अंगूठे के निशान के महत्व पर ज़ोर दिया था। फिर उन्होंने उन निशानों को चार श्रेणियों में बाँटा। कुछ साल बाद, इंग्लैंड के हेनरी ने इस प्रणाली को और मज़बूत किया।
फेलुदा ने अपनी घड़ी पर नज़र डाली और सीधे मुद्दे पर आने का फैसला किया। 'आपने शायद पैरासाइकोलॉजिस्ट डॉ. हेमंगा हाजरा के बारे में सुना होगा—?' ‘बिल्कुल,’ अंकल सिद्धू ने कहा, ‘अरे, मैंने तो कल ही अखबारों में उसका नाम देखा था! उसने क्या किया है? कुछ गड़बड़ तो नहीं है? लेकिन वह तो ऐसे लोगों

में शामिल नहीं होता जो धोखाधड़ी में लिप्त हों। इसके विपरीत, उसने तो दूसरों का पर्दाफाश किया है... धोखेबाजों और जालसाजों का।’
‘सचमुच?’ फेलुदा ने ऊपर देखा। हम एक दिलचस्प कहानी सुनने वाले थे।
जी हाँ, क्या आपको इसके बारे में पता नहीं है? यह लगभग चार साल पहले हुआ था और अखबारों में इसकी खबर छपी थी। एक बंगाली सज्जन—नहीं, मुझे उन्हें सज्जन नहीं कहना चाहिए, वे वास्तव में एक बदमाश थे—ने शिकागो में आध्यात्मिक उपचार का एक केंद्र शुरू किया। शहर के ठीक बीचोंबीच। हर दिन ग्राहकों की भीड़ उमड़ती थी। अमेरिकियों के पास खूब पैसा है और वे नए विचारों से आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। इस बंगाली ने दावा किया कि वह सम्मोहन के द्वारा सबसे जटिल बीमारियों का भी इलाज कर सकता है। ठीक उसी तरह जैसे अठारहवीं शताब्दी में एंटोन मेस्मर ने यूरोप में किया था। शायद बंगाली ने कुछ ही मरीजों का इलाज किया होगा—यह कोई असामान्य बात नहीं है; कुछ मामलों में सफलता मिलना स्वाभाविक है। लेकिन, लगभग उसी समय, हाजरा एक व्याख्यान दौरे पर शिकागो पहुंचे। वे खुद स्थिति का जायजा लेने गए थे और उन्होंने उस आदमी को रंगे हाथों पकड़ लिया। हे भगवान, यह तो एक बड़ा घोटाला था! अंत में, अमेरिकी सरकार ने उन्हें देश छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। हाँ, हाँ... मुझे अब उनका नाम याद आ रहा है... वे खुद को भवनंदा कहते थे। हालाँकि, वह हाजरा एक बड़ा ही प्रभावशाली व्यक्ति था। कम से कम, उनके लेखों से तो यही आभास होता है। मेरे पास उनमें से दो हैं। बाईं ओर उस किताबों की अलमारी के दाहिने कोने में देखिए। आपको वहां पैरासाइकोलॉजिकल सोसायटी की तीन पत्रिकाएं मिलेंगी।
फेलुदा ने तीनों पत्रिकाएँ उधार ली थीं। अब, ट्रेन में बैठे-बैठे वो उन्हें पलट-पलट कर देख रहा था। मैं खिड़की से बाहर का नज़ारा निहार रहा था। कुछ देर पहले ही हम उत्तर प्रदेश से निकलकर राजस्थान में दाखिल हुए थे। ‘यहाँ सूर्य की चमक अलग ही है। इसीलिए तो यहाँ के पुरुष इतने शक्तिशाली हैं!’
ये बंगाली शब्द हमारे सामने वाली बेंच से आए। यह चार बर्थ वाला डिब्बा था और उसमें चार यात्री थे। ये शब्द बोलने वाला व्यक्ति एकदम शांत और विनम्र लग रहा था, बहुत पतला था और शायद मुझसे कम से कम दो इंच छोटा था। और मैं तो सिर्फ पंद्रह साल का था, इसलिए संभव था कि समय के साथ मेरी लंबाई बढ़ जाए। यह आदमी कम से कम पैंतीस साल का था; उसकी लंबाई में कभी कोई बदलाव नहीं हो

सकता था। चूंकि उसने एक देहाती कमीज और पतलून पहनी हुई थी, इसलिए मैं उसके कपड़ों से यह अंदाज़ा नहीं लगा पाया कि वह भी बंगाली है।
उसने फेलुदा की ओर देखा, मुस्कुराया और बोला, 'मैं काफी देर से तुम्हारी बातें सुन रहा हूँ। घर से इतनी दूर आकर मुझे अपने जैसे बंगाली मिल गए, यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है। दरअसल, मैंने तो यह मान लिया था कि पूरे एक महीने तक मुझे अपनी मातृभाषा का बहिष्कार करना पड़ेगा!'
फेलुदा ने शायद केवल शिष्टाचारवश पूछा, 'क्या आप बहुत दूर जा रहे हैं?' ‘जोधपुर तक। फिर मैं तय करूँगा कि मुझे और कहाँ जाना है। आप लोग क्या सोचते हैं?’
हम जोधपुर भी जा रहे हैं।
‘ओह, बहुत बढ़िया। क्या आप भी लेखक हैं?’
‘अरे नहीं,’ फेलुदा मुस्कुराया, ‘मैं तो सिर्फ एक पाठक हूँ। क्या आप लिखते हैं?’
क्या आप जटायु नाम से परिचित हैं?
‘जटायु?’ मैंने पूछा। ‘वो उन सभी रोमांचक उपन्यासों के लेखक?’ मैंने उनकी एक-दो किताबें पढ़ी थीं—सहारा में कंपकंपी और भयंकर शत्रु। मैंने उन्हें स्कूल की लाइब्रेरी से उधार लिया था।
'तुम जटायु हो?' फेलुदा ने पूछा।
'जी जनाब,' उस व्यक्ति ने दांत दिखाते हुए, सिर झुकाकर कहा। 'मैं जटायु हूं। आपकी सेवा में। मैं इसी छद्म नाम से लिखता हूं। नमस्कार।'
'नमस्कार. मेरा नाम प्रदोष मित्तर है. और ये हैं श्रीमान तपेशरंजन।' फेलुदा अपना चेहरा कैसे सीधा रख सकता था? मुझे अंदर ही अंदर हंसी उमड़ रही थी, मानो फूटने ही वाली हो। क्या ये जटायु था? और मैं तो सोचती थी कि जो लेखक ऐसी कहानियां लिख सकता है, उसका रूप-रंग भी उतना ही शानदार होगा— शायद जेम्स बॉन्ड भी उसके सामने फीका पड़ जाए!
‘मेरा असली नाम लालमोहन गांगुली है। लेकिन कृपया किसी को मत बताना। छद्म नाम—एक भेस की तरह—कभी प्रकट नहीं होना चाहिए। मेरा मतलब है, अगर यह प्रकट हो जाता है, तो इसका प्रभाव खत्म हो जाता है, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?’
हमने आगरा में मीठी गुलाबी रेवड़ी का एक पैकेट खरीदा था। फेलुदा ने पैकेट जटायु को देते हुए कहा, 'लगता है तुम काफी समय से यात्रा कर रहे हो!'

‘जी हाँ, यही तो है…’ जटायु ने एक रेवड़ी उठाई और अचानक रुक गया, थोड़ा उलझन में दिख रहा था। फिर उसने फेलुदा की ओर हैरानी से देखा और पूछा, ‘तुम्हें कैसे पता चला?’
फेलुदा मुस्कुराया। 'तुम्हारी घड़ी का पट्टा कभी-कभी फिसल जाता है। जब ऐसा होता है, तो तुम्हारी बांह का वह हिस्सा दिख जाता है जो धूप से झुलसा हुआ नहीं है।'
जटायु की आँखें चौड़ी हो गईं। 'हे भगवान, आपकी अवलोकन शक्ति तो अद्भुत है! जी हाँ, आप सही कह रहे हैं। मैं लगभग दस दिन पहले घर से निकला था और दिल्ली, आगरा और फतेहपुर सिकरी की यात्रा की थी। अब तक मैंने केवल विदेशी धरती पर अपने अनुभवों के बारे में ही लिखा है।'
मैं भद्रेश्वर में रहता हूँ। इसलिए मैंने सोचा कि मुझे थोड़ा घूमना-फिरना चाहिए, नई जगहें देखनी चाहिए, इससे मुझे लेखन में मदद मिलेगी। वैसे भी, ये इलाके रोमांचक कहानियों के लिए ज़्यादा उपयुक्त हैं, है ना? उन बंजर पहाड़ियों को देखो, जो बाइसेप्स और ट्राइसेप्स की तरह ऊँची उठती हैं। हमारे बंगाल में तो कोई मांसपेशियां ही नहीं हैं— सिवाय हिमालय के। मैदानों में तो रोमांचक कहानी हो ही नहीं सकती!
हम तीनों रेवड़ी खाते रहे। तभी मैंने देखा कि जटायु फेलुदा को तिरछी नज़रों से देख रहा था। अंत में उसने पूछा, 'आपकी लंबाई कितनी है? कृपया बुरा न मानें।'
'लगभग छह फीट,' फेलुदा ने उत्तर दिया।
‘ओह, ये तो बहुत अच्छी लंबाई है, बिल्कुल मेरे हीरो जैसी। प्रखर रुद्र—आप उनका नाम तो जानते ही होंगे, है ना? प्रखर एक रूसी नाम है, पर बंगाली पर भी जंचता है, है ना? बात ये है कि मैंने अपने हीरो को वो सब बना दिया है जो मैं खुद कभी नहीं बन पाई। भगवान जानता है मैंने कितनी कोशिश की। कॉलेज में पढ़ते समय मैंने ब्रिटिश पत्रिकाओं में चार्ल्स एटलस के विज्ञापन देखे थे। वो गर्व से खड़े थे, सीना और सारी मांसपेशियां फैली हुई थीं, हाथ कमर पर थे। वो शेर जैसे दिखते थे! उनके शरीर पर जरा भी चर्बी नहीं थी। उनकी मांसपेशियां सिर से पैर तक लहरों की तरह लहराती थीं। और विज्ञापन में लिखा था, “अगर आप मेरी विधि अपनाएंगे, तो एक महीने में आप मेरे जैसे दिखने लगेंगे!” खैर, ये बात यूरोपियों के लिए तो सच हो सकती है। बंगाल में ऐसा होना नामुमकिन है। मेरे पिताजी अमीर थे, इसलिए मैंने उनके कुछ पैसे खर्च

करके उन्हें चार्ल्स एटलस की शिक्षा दिलवाई और पूरी निष्ठा से उनका अनुसरण किया।’
कुछ नहीं हुआ। मैं पहले जैसा ही रहा। फिर एक चाचा ने कहा, “पर्दे की छड़ से झूलकर देखो। एक महीने में तुम्हारी लंबाई बढ़ जाएगी।” एक महीना? कई महीनों तक मैं छड़ से झूलता रहा, फिर एक दिन वह टूट गई और मैं गिर गया। इससे मेरे घुटने में चोट लग गई, लेकिन मेरी लंबाई पाँच फीट साढ़े तीन इंच पर ही अटकी रही। इससे मुझे साफ समझ आ गया कि चाहे मुझे रस्साकशी की तरह दो टीमें अलग-अलग दिशाओं में खींच लें, मेरी लंबाई कभी नहीं बढ़ेगी। तो आखिरकार, मैंने सोचा कि बस बहुत हो गया। अपने शरीर की मांसपेशियों के बारे में सोचने का कोई फायदा नहीं था। मैंने अपने दिमाग की मांसपेशियों पर ध्यान देने का फैसला किया। और अपनी मानसिक ऊँचाई बढ़ाने का। मैंने थ्रिलर लिखना शुरू किया। लेकिन मुझे पता था कि लालमोहन गांगुली नाम से किताबें नहीं बिकेंगी। इसलिए मैंने एक छद्म नाम रख लिया। जटायु। एक योद्धा। सोचो उसने रावण से कैसी लड़ाई लड़ी होगी!
हमारी ट्रेन को भले ही 'तेज़ यात्री' कहा जाता था, लेकिन वह इतने स्टेशनों पर रुकती थी कि एक बार में बीस मिनट से ज़्यादा नहीं चल पाती थी। फेलुदा ने परा मनोविज्ञान की पत्रिकाएँ एक तरफ़ रख दीं और राजस्थान पर लिखी एक किताब पढ़ने लगा। उसमें सभी किलों की तस्वीरें थीं। फेलुदा उन तस्वीरों को बहुत ध्यान से देख रहा था और उनके विवरण पढ़ रहा था।
हमारे सामने ऊपरी बर्थ पर एक आदमी बैठा था जिसकी मूंछें और कपड़े साफ बता रहे थे कि वह बंगाली नहीं था। वह एक के बाद एक संतरे खा रहा था और उनके छिलके व अन्य अवशेष अपने सामने बिछे उर्दू अखबार के पन्ने पर इकट्ठा कर रहा था।
फेलुदा अपनी किताब में नीली पेंसिल से कुछ जगहों पर निशान लगा रहा था, तभी लालमोहन बाबू ने कहा, 'क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ? क्या आप जासूस हैं?' 'तुम क्यों पूछ रहे हो?'
नहीं, मेरा मतलब है... आप मेरी यात्राओं के बारे में इतनी आसानी से बता सकते थे!
'हाँ, मुझे इस तरह की चीजों में दिलचस्पी है।'
‘अच्छा। आप जोधपुर भी जा रहे हैं, है ना?’
'हाँ।'

‘क्या यह किसी रहस्य से जुड़ा है? अगर ऐसा है, तो मैं आपके साथ आऊंगा... मतलब, अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो। मुझे ऐसा मौका दोबारा कभी नहीं मिलेगा।’
मुझे उम्मीद है कि आपको ऊंट की सवारी करने में कोई आपत्ति नहीं होगी? ‘ऊंट? हे भगवान!’ लालमोहन बाबू की आँखों में चमक आ गई। ‘रेगिस्तान का जहाज! यह हमेशा से मेरा सपना रहा है। मैंने अपने एक उपन्यास—ब्लडबाथ इन अरेबिया—में बद्दू लोगों के बारे में लिखा है। और शिवर्स इन द सहारा में मैंने ऊंटों का जिक्र किया है। यह एक अद्भुत प्राणी है। ज़रा उस दृश्य की कल्पना कीजिए। ऊंटों की एक पूरी कतार, मीलों तक रेत के सागर में यात्रा करती हुई, अपनी आंतों में पानी लिए हुए। कितना रोमांटिक—ओह!’
‘अह...जब आपने अपना उपन्यास लिखा था, तो क्या आपने उसमें आंतों वाली बात का जिक्र किया था?’
लालमोहन बाबू असमंजस में पड़ गए। 'क्या यह गलत है?' फेलुदा ने सिर हिलाया। 'जी हां। दरअसल, पानी का स्रोत ऊंट के कूबड़ में होता है। कूबड़ असल में वसा का जमाव होता है। ऊंट उस वसा को ऑक्सीकृत करके पानी में बदल सकता है। इसलिए वह दस से पंद्रह दिनों तक बिना पानी पिए जीवित रह सकता है। लेकिन, एक बार पानी मिल जाने पर ऊंट एक बार में पच्चीस गैलन तक पानी पी सकते हैं।'
‘शुक्र है आपने मुझे ये सब बता दिया,’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘मुझे अगले अंक में यह गलती सुधारनी होगी।’

चार

ट्रेन धीमी थी, लेकिन कम से कम बहुत ज़्यादा लेट तो नहीं थी। अगर आपको कनेक्टिंग ट्रेन लेनी पड़े, तो पहली ट्रेन लेट हो जाने से बहुत परेशानी हो सकती है।
भरतपुर पहुँचते ही हमें पहले मोर दिखाई दिए। हमारे प्लेटफार्म के ठीक सामने, तीन मोर पटरियों पर बेफिक्र होकर घूम रहे थे। फेलुदा ने मुझसे कहा, 'तुम्हें पता चलेगा कि यहाँ मोर और तोते उतने ही आम हैं जितने कलकत्ता में कौवे और गौरैया।'
हमने जितने भी पुरुषों को देखा, उन सभी के सिर पर पगड़ी थी और गालों पर दाढ़ी थी—जो यात्रा के दौरान बढ़ती जा रही थी। वे सभी राजस्थानी थे, घुटनों तक पहुँचने वाली छोटी धोती और एक तरफ बटन वाली कमीज़ पहने हुए थे। उनके पैरों में भारी नागरा जूते थे। अधिकांश पुरुषों के हाथों में मजबूत लाठियाँ थीं।
हम बांदीकुई स्टेशन के जलपान कक्ष में रात का खाना खाने गए। अपनी रोटी और मांसाहारी करी खाते हुए लालमोहन बाबू ने कहा, 'इन सभी आदमियों को देखो? पूरी संभावना है कि इनमें से कुछ डाकू हों। अरावली पहाड़ियाँ डाकुओं का अड्डा हैं - यह तो आप जानते ही हैं, है ना? और मुझे यकीन है कि मुझे आपको यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि वे कितने शक्तिशाली होते हैं। जब उन्हें जेल में डाला जाता है, तो वे अपने हाथों से खिड़कियों की लोहे की सलाखों को तोड़कर उस दरार से भाग निकलते हैं!'
‘हां, मुझे पता है,’ फेलुदा ने जवाब दिया। ‘और क्या आप जानते हैं कि वे अपने विरोधियों को कैसे दंडित करते हैं?’
‘उन्हें मार दिया गया होगा, निश्चित रूप से?’
नहीं। यही तो इसकी खूबसूरती है। अगर कोई डाकू किसी से नाराज़ हो जाता है, तो वह उसका पीछा करेगा—चाहे वह व्यक्ति कहीं भी छिपा हो—और फिर तलवार से उसकी नाक काट देगा। बस इतना ही।

लालमोहन बाबू ने अभी-अभी मांस का एक टुकड़ा उठाया था। वह उसे मुंह में डालना भूल गए। उन्होंने पूछा, 'क्या इसकी नाक काट दूं?'
'हां, मैंने भी यही सुना है।'
‘यह तो बेहद बर्बर लगता है! जैसे अंधकार युग की कोई चीज़ हो। कितना भयानक!’ हमने आधी रात को मारवाड़ जाने वाली ट्रेन पकड़ी। अंधेरे में ट्रेन पकड़ने में थोड़ी मशक्कत करनी पड़ी, लेकिन हमें पर्याप्त जगह मिल गई और हम चैन से सोए।
सुबह जब मैं उठा, तो मैंने खिड़की से बाहर देखा और दूर एक पहाड़ी की चोटी पर एक पुराना किला दिखाई दिया। एक मिनट बाद ही ट्रेन किशनगढ़ नामक स्टेशन पर आकर रुक गई।
फेलुदा ने कहा, 'यदि आपको किसी स्थान के नाम के साथ "गढ़" शब्द जुड़ा हुआ दिखाई दे, तो आप यह मान सकते हैं कि उस क्षेत्र में कहीं न कहीं पहाड़ी की चोटी पर एक किला है।'
हम प्लेटफार्म पर उतरे और चाय पी। चाय परोसने के लिए इस्तेमाल किए गए मिट्टी के बर्तन बंगाल में इस्तेमाल होने वाले बर्तनों से कहीं बड़े और मजबूत थे। चाय का स्वाद भी अलग था। फेलुदा को लगा कि उसमें ऊंटनी का दूध इस्तेमाल किया गया है। शायद इसीलिए लालमोहन बाबू ने पहला बर्तन खत्म होने पर दूसरा बर्तन मंगवाया।
जब मेरा काम खत्म हो गया, तो मैंने प्लेटफार्म पर एक नल ढूंढा और जल्दी से अपने दांत साफ किए। फिर मैंने अपने चेहरे पर ठंडा पानी डाला और अपने डिब्बे में लौट आया।
लालमोहन बाबू की बेंच के एक कोने पर एक राजस्थानी आदमी बैठा था। उसके सिर पर एक बड़ी पगड़ी थी। उसका एक पैर बेंच पर मुड़ा हुआ था और वह अपनी ठुड्डी को उठे हुए घुटने पर टिकाए बैठा था। उसने अपने चारों ओर शॉल लपेटा हुआ था, जिससे उसका चेहरा लगभग ढका हुआ था। लेकिन शॉल के आर-पार मुझे उसकी कमीज का रंग दिखाई दे रहा था। वह चमकीले लाल रंग की थी।
लालमोहन बाबू ने उस आदमी को देखा और तुरंत अपनी बेंच छोड़कर हमारी बेंच पर आ गए। उन्होंने एक कोने में दुबकने की कोशिश की। फेलुदा ने कहा, 'आप दोनों आराम से क्यों नहीं बैठते?' वह दूसरी बेंच पर चले गए और राजस्थानी के बगल में बैठ गए।

मैंने उस आदमी की पगड़ी को और गौर से देखना शुरू किया। पता नहीं, उसके सिर पर इतनी कसकर लपेटने से पहले कपड़ा कितनी बार मुड़ा होगा। लालमोहन बाबू ने फेलुदा से धीरे से कहा, "बहुत ही संदिग्ध लग रहा है। यह एक आम ग्रामीण की तरह कपड़े पहने हुए है, लेकिन यह प्रथम श्रेणी के डिब्बे में कैसे है? उस बंडल को देखो। पता नहीं उसमें हीरे और अन्य कीमती पत्थर भरे हों।"
बंडल को उस आदमी के बगल में रख दिया गया। लालमोहन बाबू की टिप्पणी सुनकर फेलुदा मुस्कुराया, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा।
ट्रेन चल पड़ी। फेलुदा ने अपने कंधे के बैग से राजस्थान की किताब निकाली। मैंने न्यूमैन ब्रैडशॉ की समय सारिणी निकाली और उन स्टेशनों को देखने लगा जहाँ ट्रेन रुकने वाली थी। हर जगह का नाम अजीब था: गलोटा, तिलोनिया, मकरेरा, वेसाना, सेंद्रा। ये नाम कहाँ से आए? फेलुदा ने मुझे एक बार बताया था कि किसी जगह के नाम में ही स्थानीय इतिहास छिपा होता है। लेकिन इन नामों के पीछे के इतिहास को कौन खोजेगा?
ट्रेन अपने रास्ते पर चलती रही। अचानक, मुझे महसूस हुआ कि कोई मेरी कमीज़ खींच रहा है। मैंने मुड़कर देखा तो लालमोहन बाबू का चेहरा पीला पड़ गया था। जब उन्होंने मेरी तरफ देखा, तो उन्होंने घबराकर फुसफुसाते हुए कहा, 'खून!'
खून? वो आदमी किस बारे में बात कर रहा था?
लालमोहन बाबू की नज़र राजस्थानी पर पड़ी। वह गहरी नींद में सो रहा था। उसका सिर पीछे की ओर झुका हुआ था, मुँह थोड़ा खुला हुआ था। मेरी नज़र बेंच पर रखे उसके पैर पर पड़ी। अंगूठे के आसपास की त्वचा बुरी तरह छिल गई थी। ज़ाहिर है, खून बह रहा था, लेकिन अब सूख चुका था। तभी मुझे कुछ और समझ आया। उसके कपड़ों पर जो गहरे धब्बे थे, जो देखने में मिट्टी के धब्बे लग रहे थे, वे असल में सूखे खून के धब्बे थे।
मैंने जल्दी से फेलुदा की तरफ देखा। वह अपनी किताब पढ़ रहा था, बिलकुल बेफिक्र। लालमोहन बाबू को उसकी यह बेपरवाही बर्दाश्त नहीं हुई। उसने फिर उसी रुंधी हुई आवाज में कहा, 'श्री मित्तर, हमारे नए सहयात्री पर खून के संदिग्ध निशान हैं!'
फेलुदा ने ऊपर देखा, राजस्थानी की ओर एक नज़र डाली और कहा, 'शायद कीड़ों की वजह से हुआ होगा।'

एक सज्जन व्यक्ति इमारत से बाहर निकले और हमसे पूछा कि क्या हम कलकत्ता से हैं, और क्या फेलुदा को प्रदोष मित्तर कहा जाता है।
'हां, यह सही है,' फेलुदा ने स्वीकार किया।
'भूतल पर आपके नाम से एक डबल रूम बुक है,' उस व्यक्ति ने जवाब दिया।
हमें हस्ताक्षर करने के लिए आगंतुक पुस्तिका दी गई। हमारे नामों से कुछ ही पंक्तियों ऊपर, हमने दो प्रविष्टियाँ देखीं: डॉ. एच.बी. हाजरा और मास्टर एम. धर।
सर्किट हाउस का निर्माण एक सरल योजना के अनुसार किया गया था। प्रवेश करते ही एक बड़ा खुला स्थान दिखाई देता था। इसके बाईं ओर स्वागत कक्ष और प्रबंधक का कमरा था। इसके सामने पहली मंजिल तक जाने वाली सीढ़ियाँ थीं, और दोनों ओर चौड़े गलियारे थे जिनके साथ-साथ कमरों की कतारें बनी हुई थीं। गलियारों में बेंत की कुर्सियाँ रखी हुई थीं।
एक वेटर आया और हमारा सामान उठा लिया, और हम उसके पीछे-पीछे दाहिनी ओर के गलियारे से होते हुए कमरा नंबर 3 तक पहुँचे। वहाँ एक अधेड़ उम्र का आदमी, जिसकी मूंछें बहुत ही शानदार थीं, बेंत की कुर्सियों में से एक पर बैठा था और राजस्थानी टोपी पहने एक आदमी से बातें कर रहा था। जब हम उनके पास से गुजरे, तो पहले आदमी ने पूछा, 'क्या आप बंगाली हैं?' फेलुदा मुस्कुराया और बोला, 'हाँ।' फिर हमें हमारे कमरे में ले जाया गया।
कमरा काफी बड़ा था। उसमें दो-दो बिस्तर थे, हर एक पर मच्छरदानी लगी थी। एक कोने में दो सीटों वाला सोफा, दो आरामकुर्सियाँ और एक गोल मेज थी जिस पर ऐशट्रे रखी थी। वहाँ एक ड्रेसिंग टेबल, अलमारियाँ और बेडसाइड टेबल भी थीं। मेजों पर लैंप, गिलास और पानी की बोतलें रखी थीं। संलग्न बाथरूम का दरवाजा बाईं ओर था।
फेलुदा ने नौकर से हमारे लिए चाय लाने को कहा और पंखा चालू कर दिया। सोफे पर बैठते हुए उसने पूछा, 'क्या तुमने वे दोनों नाम देखे?'
'हां, लेकिन मुझे उम्मीद है कि घनी मूंछों वाला वह आदमी डॉ. हाजरा नहीं है!' मैंने जवाब दिया।
‘क्यों? अगर वो है भी तो? इससे क्या फर्क पड़ता है?’
मुझे तुरंत कोई अच्छा कारण सूझा नहीं। फेलुदा ने मुझे हिचकिचाते हुए देखा और कहा, 'तुम्हें वो आदमी पसंद नहीं आया, है ना? तुम तो चाहते हो कि डॉ. हाजरा एक खुशमिजाज, हंसमुख और दोस्ताना इंसान हों। है ना?'

हाँ, फेलुदा बिल्कुल सही था। जिस आदमी से हम अभी मिले, वह कुछ चालाक सा लग रहा था। इसके अलावा, वह शायद काफी लंबा और हट्टा-कट्टा भी था। मैंने किसी डॉक्टर की ऐसी छवि नहीं बनाई थी।
जैसे ही फेलुदा ने सिगरेट खत्म की, चाय आ गई। चायवाले ने ट्रे मेज पर रखी और चला गया। तभी किसी ने हमारे दरवाजे पर दस्तक दी। फेलुदा ने एक अंग्रेज की तरह बड़े ही शान से कहा, 'अंदर आ जाओ!' मूंछों वाले आदमी ने पर्दा हटाया और अंदर आ गया।
‘मैं आपको परेशान तो नहीं कर रहा हूँ?’ उसने कहा।
नहीं, बिलकुल नहीं। कृपया बैठ जाइए। क्या आप चाय पीना चाहेंगे?
नहीं, धन्यवाद। मैंने अभी-अभी चाय पी है। सच कहूँ तो, यहाँ की चाय उतनी अच्छी नहीं है। लेकिन, यह बात तो ज़्यादातर जगहों पर लागू होती है। भारत चाय की भूमि है, फिर भी कितने होटल, डाक बंगले या सर्किट हाउस अच्छी गुणवत्ता वाली चाय परोसते हैं, बताइए? लेकिन अगर आप विदेश जाएँ, तो कहानी अलग है। अल्बानिया जैसी जगह पर भी मैंने बहुत अच्छी चाय पी है—क्या आप विश्वास करेंगे? वह प्रथम श्रेणी की दार्जिलिंग चाय थी। और अगर आप यूरोप जाएँ? हर बड़े शहर में आपको अच्छी चाय मिल जाएगी। मुझे बस टी बैग्स का चलन पसंद नहीं है। आपके कप में गर्म पानी भरा जाता है, और आपको चाय की पत्तियों से भरा एक छोटा सा बैग थमा दिया जाता है। इस बैग से एक डोरी बंधी होती है। आपको इसे डोरी से पकड़कर पानी में डुबोना होता है ताकि आप अपनी चाय बना सकें। फिर आप चाहें तो उसमें दूध मिला सकते हैं, या नींबू निचोड़ सकते हैं। मुझे व्यक्तिगत रूप से नींबू वाली चाय पसंद है। लेकिन उसके लिए आपको वाकई अच्छी चाय चाहिए। यहाँ जो चाय मिलती है वह बहुत ही साधारण है।
‘आपने बहुत यात्रा की है, है ना?’ फेलुदा ने पूछा।
‘जी हां, मैंने जीवन भर यही किया है,’ हमारे आगंतुक ने उत्तर दिया। ‘आप मुझे एक घुमक्कड़ कह सकते हैं। और मुझे शिकार का शौक है। अफ्रीका में रहते हुए मुझे इसमें रुचि पैदा हुई। मेरा नाम मंदार बोस है।’
मैंने विश्व यात्री उमेश भट्टाचार्य के बारे में तो सुना था, लेकिन मंदार बोस के बारे में नहीं।
शायद उन्हें अंदाज़ा हो गया था कि मैं क्या सोच रहा हूँ। उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि मेरा नाम आपके लिए कुछ मायने रखेगा। जब मैं पहली बार घर

से निकला था, तब मेरा नाम अखबारों में छपा था। लेकिन वह छत्तीस साल पहले की बात है। मैं भारत में सिर्फ तीन महीने से वापस आया हूँ।'
'सच में? मुझे कहना पड़ेगा कि इतने लंबे समय तक देश से बाहर रहने के बावजूद आपकी बंगाली काफी अच्छी बनी हुई है।'
‘खैर, यह तो पूरी तरह से विदेश यात्रा करने वाले व्यक्ति पर निर्भर करता है। अगर आप अपनी मातृभाषा भूलना चाहते हैं, तो आप तीन महीने में ऐसा कर सकते हैं। और अगर आप नहीं भूलते, तो तीस साल में भी नहीं भूलेंगे। लेकिन मैं खुशकिस्मत था कि मुझे अक्सर दूसरे बंगाली लोगों से मिलने का मौका मिला। जब मैं केन्या में था, तो मैं हाथी दांत का व्यापार करता था। वहां मेरा साथी एक बंगाली था। हमने लगभग सात साल साथ काम किया।’
‘क्या सर्किट हाउस में कोई और बंगाली है?’ फेलुदा ने पूछा। मैंने पहले ही गौर किया था कि वह फालतू की बातों में समय बर्बाद नहीं करता था।
हाँ! यही बात मुझे सबसे ज़्यादा हैरान करती है। लेकिन एक बात तो मुझे समझ आ गई है। कलकत्ता के लोग तंग आ चुके हैं। इसलिए जब भी मौका मिलता है, वे निकल जाते हैं। लेकिन यह आदमी एक मकसद से आया है। यह एक मनोवैज्ञानिक है। मामला थोड़ा पेचीदा है। इसके साथ एक छोटा लड़का है, लगभग आठ साल का। कहा जाता है कि उसे अपने पिछले जन्म याद हैं। वह कहता है कि बहुत समय पहले उसका जन्म राजस्थान के किसी किले में हुआ था। यह आदमी उस लड़के के साथ हर जगह घूम रहा है, उस किले की तलाश में। मैं ये नहीं समझ पा रही कि ये मनोवैज्ञानिक धोखेबाज़ है या लड़का झूठ बोल रहा है। उसका व्यवहार वाकई अजीब है। वो किसी से ठीक से बात नहीं करता, सवालों के जवाब नहीं देता। बहुत ही संदिग्ध है। मैंने दुनिया भर में बहुत सारे धोखेबाज़ और जालसाज़ देखे हैं— कभी सोचा भी नहीं था कि अपने ही देश में मुझे ऐसा कुछ देखने को मिलेगा!
क्या आपकी विश्व यात्रा ही आपको यहाँ लेकर आई?
श्री बोस मुस्कुराए और खड़े हो गए। 'सच कहूँ तो, मैंने अभी तक इस देश को ज़्यादा नहीं देखा है... वैसे, मैंने आपके नाम नहीं सुने!'
फेलुदा ने परिचय कराया। उन्होंने आगे कहा, 'और मैं इस देश से कभी बाहर नहीं निकला।'
‘ठीक है। अच्छा, अगर आप लगभग साढ़े आठ बजे भोजन कक्ष में आ जाएं, तो हम फिर मिलेंगे। मेरा मानना है कि जल्दी सोना और जल्दी उठना चाहिए।’

हम श्री बोस के साथ अपने कमरे से निकले और बाहर गलियारे में आ गए। एक टैक्सी गेट से अंदर आ रही थी। वह बरामदे के नीचे रुकी और उसमें से लगभग चालीस साल का एक आदमी एक दुबले-पतले लड़के के साथ उतरा। मुझे बताने की ज़रूरत नहीं थी कि वे डॉ. हेमंगा हाजरा और मुकुल धर थे।

पाँच

श्री बोस ने डॉ. हाजरा के पास से गुजरते हुए उन्हें 'शुभ संध्या' कहा और अपने कमरे की ओर चल दिए। डॉ. हाजरा बच्चे का हाथ पकड़े गलियारे में चलने लगे। तभी उन्होंने हमें देखा और रुक गए, थोड़ा हैरान लग रहे थे। शायद दो अजनबियों को देखकर वे चौंक गए थे। फेलुदा ने मुस्कुराते हुए उनका अभिवादन किया। 'नमस्कार। डॉ. हाजरा, मेरा अनुमान है?' उन्होंने पूछा।
‘हाँ। लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं…?’
फेलुदा ने अपनी जेब से एक कार्ड निकाला और डॉ. हाजरा को देते हुए कहा, 'मुझे आपसे बात करनी है। सच कहूं तो हम यहां श्री धर के अनुरोध पर आए हैं। उन्होंने आपको एक पत्र लिखा है।'
'अच्छा, मैं समझ गया। मुकुल, तुम अपने कमरे में क्यों नहीं चले जाते? मैं इन लोगों से बात कर लेता हूँ, फिर तुम्हारे पास आ जाता हूँ। ठीक है?'
‘मैं बगीचे में जाऊंगा,’ मुकुल ने कहा।
उनकी आवाज़ बांसुरी जैसी मधुर थी, लेकिन उनका लहजा सपाट और बेजान था, मानो शब्द किसी रोबोट ने बोले हों। डॉ. हाजरा ने कहा, 'ठीक है, तुम बगीचे में जा सकते हो, लेकिन अच्छे बच्चे बनो और गेट से बाहर मत जाना, ठीक है?'
मुकुल बिना कुछ बोले गलियारे से सीधे बजरी वाले रास्ते पर कूद गया। फिर वह फूलों की एक कतार को पार करके चुपचाप लॉन पर खड़ा हो गया। डॉ. हाजरा हमारी ओर मुड़ीं, थोड़ी शर्मिंदगी भरी मुस्कान के साथ पूछा, 'हम कहाँ बैठें?' चलो अपने कमरे में चलते हैं।
मैंने देखा कि डॉ. हाजरा के कानों के आसपास के बाल सफेद होने लगे थे। उनकी आँखों में तीक्ष्ण बुद्धि का भाव था। अब जब मैं उन्हें और करीब से देख पा रहा था, तो वे उम्रदराज लग रहे थे—शायद चालीस के आसपास।
जब हम बैठ गए, तो फेलुदा ने उन्हें श्री धर का पत्र दिया और एक चारमीनार भेंट की। डॉ. हाजरा मुस्कुराए, 'नहीं, धन्यवाद' कहा और पत्र पढ़ने लगे। जब उन्होंने पत्र पढ़ लिया, तो उन्होंने उसे मोड़कर वापस लिफाफे में रख दिया।

फेलुदा ने नीलू के अपहरण के बारे में जल्दी से बताया। उन्होंने कहा, ‘श्री धर को डर था कि कहीं वे लोग मुकुल का पीछा करते हुए यहाँ न आ गए हों। इसीलिए वे मुझसे मिलने आए हैं। दरअसल, मैं यहाँ इसलिए आया हूँ क्योंकि वे चाहते थे कि मैं आप लोगों के साथ रहूँ। लेकिन, अगर कुछ अप्रिय घटना न भी हो और आपको मेरी सुरक्षा की आवश्यकता न पड़े, तो भी मुझे लगता है कि मेरी यह यात्रा व्यर्थ नहीं जाएगी क्योंकि मैं हमेशा से राजस्थान देखना चाहता था।’
डॉ. हाजरा कुछ पल सोच में डूबे रहे। फिर उन्होंने कहा, “सौभाग्य से, अभी तक ऐसा कुछ नहीं हुआ है जिसे अनुचित माना जा सके। लेकिन सच कहूँ तो, प्रेस रिपोर्टर से बात करने और इतना सब कुछ बताने की कोई ज़रूरत नहीं थी। मैंने श्री धर से कहा था कि वे मेरी जाँच पूरी होने तक इंतज़ार करें, और फिर वे मुकुल को जितने चाहें उतने पत्रकारों से बात करने के लिए कह सकते हैं, खासकर छिपे हुए खजाने के बारे में। मुझे भले ही यह कहानी पूरी तरह निराधार लगे, लेकिन ऐसे लोग ज़रूर होंगे जो आसानी से इसे खोजने के लिए ललचा जाएँगे!”
‘पूर्व जन्मों को याद करने के इस पूरे मामले के बारे में आपका क्या विचार है? क्या आप वास्तव में जातिस्मरों में विश्वास करते हैं?’
‘मेरी राय में यह अंधेरे में तीर चलाने या महज़ अंदाज़े लगाने जैसा है। फिर भी मैं इस विचार को पूरी तरह बकवास कहकर खारिज नहीं कर सकता। आखिर, अतीत में भी ऐसे ही मामले सामने आए हैं। उन लोगों को जो कुछ याद था, वह अक्षरशः सही निकला। इसीलिए, जब मैंने मुकुल के बारे में सुना, तो मैंने गहन जांच करने का फैसला किया। अगर मुकुल को जो कुछ याद है, वह सब सच निकला, तो मैं उसके मामले को शुरुआती बिंदु मानकर आगे की अपनी रिसर्च को इसी पर आधारित करूंगा।’
‘क्या आपने कोई प्रगति की है?’
एक बात तो स्पष्ट हो गई है। राजस्थान के बारे में सोचना और उसे यहाँ लाना मेरा सही फैसला था। राजस्थान में कदम रखते ही मुकुल का पूरा व्यवहार बदल गया है। ज़रा सोचिए। अपने जीवन में पहली बार वह अपने माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों से दूर है और एक लगभग अजनबी के साथ यात्रा कर रहा है। फिर भी उसने पिछले कुछ दिनों में अपने लोगों का ज़िक्र एक बार भी नहीं किया है। ‘आपके साथ उनका रिश्ता कैसा है?’

‘हमें कोई समस्या नहीं हुई है। वह मुझे ऐसे व्यक्ति के रूप में देखता है जो उसे उसके सपनों की दुनिया में ले जा रहा है। वह बस अपने सुनहरे किले के बारे में सोचता रहता है। इसलिए जब भी वह कोई किला देखता है तो खुशी से उछल पड़ता है।’
'क्या सोने के किले का कोई निशान मिला?'
डॉ. हाजरा ने सिर हिलाया। “नहीं, मुझे अफसोस है कि ऐसा नहीं हो सकता। यहाँ आते समय मैं उसे किशनगढ़ के किले में ले गया था। कल शाम उसने जोधपुर का किला बाहर से देखा। आज हम बाड़मेर गए। हर बार वह कहता है, “नहीं, यह वाला नहीं। चलो कोई दूसरा ढूंढते हैं।” ऐसे मामलों में वाकई धैर्य की जरूरत होती है। मुझे पता है कि उसे चित्तौड़ या उदयपुर ले जाने का कोई फायदा नहीं है क्योंकि उन जगहों के आसपास रेत नहीं है। मुकुल रेत की बात करता रहता है, और रेत तो सिर्फ यहीं मिलती है। इसलिए मैं कल बीकानेर जाने की सोच रहा हूँ।”
‘क्या आपको कोई आपत्ति होगी अगर हम भी साथ आ जाएं?’
नहीं, बिलकुल नहीं। वास्तव में, अगर आप हमारे साथ होते तो मुझे काफी तसल्ली होती क्योंकि... कुछ हुआ है...
डॉक्टर हाजरा रुक गए। फेलुदा ने सिगरेट का पैकेट तो निकाल लिया था, लेकिन उसे खोला नहीं था।
डॉ. हाजरा ने धीरे-धीरे कहा, 'कल शाम एक फोन आया था।'
'कहाँ?'
‘सर्किट हाउस में। मैं यहाँ नहीं था; मुकुल और मैं किले को देखने गए थे। हमारी अनुपस्थिति में, किसी ने फोन करके पूछा कि क्या कलकत्ता से एक आदमी एक छोटे लड़के के साथ आया है। स्वाभाविक रूप से, प्रबंधक ने हाँ कहा।’ ‘लेकिन,’ फेलुदा ने सुझाव दिया, ‘हो सकता है कि कुछ स्थानीय लोगों को कलकत्ता में छपी प्रेस रिपोर्ट के बारे में पता हो और वे बस उसकी पुष्टि करना चाहते हों? आखिर जोधपुर में बहुत सारे बंगाली हैं, है ना? ऐसे मामले में थोड़ी जिज्ञासा होना तो स्वाभाविक ही है?’
'हां, मैं यह देख सकता हूं। लेकिन सवाल यह है कि जब उस आदमी को पता चला कि मैं यहां हूं, तब भी वह यहां आकर मुझसे क्यों नहीं मिला या मुझसे संपर्क क्यों नहीं किया?'

'हम्म। शायद यही बेहतर होगा कि हम दोनों साथ रहें। और मुकुल को अकेले बाहर मत जाने देना।'
‘क्या आप पागल हैं? बिलकुल नहीं।’ डॉ. हाजरा उठीं। ‘मैंने कल के लिए टैक्सी बुक कर ली है। चूंकि आप दोनों ही हैं, तो एक ही टैक्सी में हमारा काम आसानी से हो जाएगा।’
वह दरवाजे की ओर बढ़ने लगा। अचानक, फेलुदा ने अप्रत्याशित रूप से एक सवाल पूछा: 'वैसे, क्या आप लगभग चार साल पहले शिकागो में एक मामले में शामिल नहीं थे?'
डॉ. हाजरा ने भौंहें चढ़ाईं। 'एक मामला? हाँ, मैं शिकागो गया हूँ, लेकिन...' ‘क्या इसका संबंध किसी आध्यात्मिक उपचार केंद्र से है?’
डॉ. हाजरा जोर से हंस पड़े। 'अरे, क्या आप स्वामी भवनानंद के बारे में बात कर रहे हैं? अमेरिकी उन्हें ब्यावन्यंद कहते थे। हां, एक मामला था, लेकिन प्रेस में जो खबर छपी, वह बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश की गई थी। वह आदमी बेशक धोखेबाज था, लेकिन ऐसे धोखेबाज तो हर तरह के झोलाछाप डॉक्टरों में मिल ही जाते हैं। यह मामूली बात थी, इससे ज्यादा कुछ नहीं। दरअसल, उनके मरीजों ने ही उन्हें रंगे हाथों पकड़ लिया था और खबर फैल गई। प्रेस के रिपोर्टर मुझसे राय लेने आए। मैंने बहुत कम बोला और मामले को दबाने की कोशिश की। लेकिन उन रिपोर्टरों ने बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया। बाद में मेरी मुलाकात भवनानंद से हुई। मैंने उन्हें खुद पूरी बात समझाई और हम दोस्त बनकर अलग हुए।'
'धन्यवाद। मैंने अखबारों में जो पढ़ा, उससे मुझे कुछ और ही पता चला।'
हम डॉक्टर हाजरा के साथ कमरे से बाहर निकले। बाहर अंधेरा था। हालांकि पश्चिमी आकाश अभी भी लाल चमक रहा था, लेकिन स्ट्रीटलाइटें जल चुकी थीं। लेकिन मुकुल कहाँ था? उसे आखिरी बार बगीचे में देखा गया था, लेकिन अब वह वहाँ नहीं था। डॉक्टर हाजरा ने उसके कमरे में जल्दी से एक नज़र डाली और चिंतित होकर बाहर आईं।
‘वो लड़का कहाँ चला गया?’ उसने कहा और गलियारे से उतरकर बजरी वाले रास्ते पर आ गया। हम उसके पीछे-पीछे गए। मुकुल निश्चित रूप से बगीचे में नहीं था। 'मुकुल!' डॉक्टर हाजरा ने पुकारा। 'मुकुल!'
‘हां, उसने तुम्हारी बात सुन ली है। वह आ रहा है!’ फेलुदा ने कहा।

धुंधलके में, मैंने मुकुल को बाहर सड़क से लौटते हुए और फाटक की ओर मुड़ते हुए देखा। उसी समय, मैंने सामने वाले फुटपाथ पर एक आदमी को पूर्वी दिशा में बने नए महल की ओर तेज़ी से चलते हुए देखा। मैंने उसका चेहरा तो नहीं देखा, लेकिन अंधेरे में भी उसकी कमीज़ का रंग चमकीला लाल था। क्या फेलुदा ने उसे देखा था?
मुकुल हमारी ओर आया। डॉ. हाजरा उसके पास गए, बाहें फैलाए, होठों पर मुस्कान लिए। फिर उन्होंने धीरे से कहा, 'तुम्हें इस तरह बाहर नहीं जाना चाहिए!' ‘क्यों नहीं?’ मुकुल ने ठंडे स्वर में पूछा।
‘तुम इस जगह को नहीं जानते। यहाँ बहुत सारे बुरे लोग घूमते रहते हैं।’
'उसे पहचानती हूँ।'
'कौन?'
मुकुल ने सड़क की ओर इशारा करते हुए कहा, 'वह आदमी... जो यहाँ था।'
डॉ. हाजरा ने उसके कंधे पर हाथ रखा और फेलुदा की ओर मुड़े। उन्होंने कहा, 'यही तो समस्या है। यह कहना मुश्किल है कि वह इस जीवन में किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बात कर रहा है जिसे वह सचमुच जानता है, या फिर वह अभी भी अपने पिछले जीवन के बारे में बात कर रहा है।'
मैंने मुकुल के हाथ में एक चमकदार कागज का टुकड़ा देखा। फेलुदा ने भी उसे देखा था। उसने कहा, 'क्या मैं वह कागज का टुकड़ा देख सकता हूँ जो तुमने पकड़ा हुआ है?'
मुकुल ने वह टुकड़ा फेलुदा को दे दिया। वह सोने की पन्नी का एक टुकड़ा था, लगभग दो इंच लंबा और आधा इंच चौड़ा।
'तुम्हें यह कहां से मिली?'
‘वहाँ,’ मुकुल ने घास की ओर इशारा किया।
‘क्या मैं इसे रख सकता हूँ?’ फेलुदा ने पूछा।
‘नहीं। मुझे मिल गया।’ मुकुल की आवाज़ में कोई बदलाव नहीं आया था। उसका लहजा उतना ही ठंडा और सपाट था। फेलुदा को मजबूरी में पन्नी का टुकड़ा उसे लौटाना पड़ा।
डॉक्टर हाजरा ने कहा, 'चलो, मुकुल, अपने कमरे में चलते हैं। हम नहा लेंगे, फिर हम दोनों खाना खाने जाएंगे। शुभ रात्रि, श्रीमान मित्तर। कल सुबह साढ़े सात बजे जल्दी नाश्ता कर लेना, फिर हम निकलेंगे।'

भोजन कक्ष में जाने से पहले फेलुदा ने श्री धर को मुकुल की कुशलक्षेम बताते हुए एक पोस्टकार्ड लिखा। जब हम स्नान करके वहाँ पहुँचे, तब तक डॉ. हाजरा और मुकुल अपने कमरे में लौट चुके थे।
मंदार बोस सामने वाले कोने में बैठे थे और अपने साथ उस मारवाड़ी सज्जन को पुडिंग खिला रहे थे जिनसे वे थोड़ी देर पहले बात कर रहे थे। खाना खत्म करने के बाद वे उठ खड़े हुए, तभी हमें सूप परोसा गया। श्री बोस ने हाथ उठाकर 'शुभ रात्रि!' कहा और दरवाजे से बाहर निकल गए।
ट्रेन में दो रातें बिताने के बाद मैं काफी थक गया था। रात के खाने के बाद मेरा मन सिर्फ सोने का कर रहा था, लेकिन फेलुदा ने मुझे थोड़ी देर जगाए रखा। उसने अपनी नीली नोटबुक निकाली और सोफे पर बैठ गया। मैं अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था। हमारे पास मच्छर भगाने वाली क्रीम थी, इसलिए मच्छरदानी लगाने की कोई ज़रूरत नहीं थी।
फेलुदा ने अपने बॉलपॉइंट पेन का छोटा सा बटन दबाया, उसे लिखने के लिए तैयार किया और कहा, 'हम अब तक किस-किस से मिल चुके हैं? मुझे पूरी सूची दीजिए।' 'से शुरू । । ।?'
श्री धर का आगमन।
‘ठीक है, सुधीर धर। वो नंबर एक है। फिर शिवरतन। फिर नीलू। ओह, शिवरतन की नौकरानी—’
'उसका क्या नाम था?'
मुझे याद नहीं आ रहा।
‘मनोहर। अगला?’
‘Jatayu.’
उसका असली नाम क्या है?
‘Lalmohan.’
'उपनाम?'
‘उपनाम... उसका उपनाम है... गांगुली!’
'अच्छा।'
जब मैं अपनी सूची पर काम कर रहा था, तब फेलुदा लिखता रहा। 'फिर हमने लाल कमीज पहने उस आदमी को देखा।'
‘क्या हम सचमुच उनसे मिले? क्या हम उन्हें जान पाए?’
'नहीं।'

‘ठीक है। आगे बढ़ो।’
‘मंदर बोस और वह दूसरे सज्जन।’
‘और फिर हमारी मुलाकात मुकुल धर से हुई। डॉक्टर—’
‘फेलुदा!’
मेरी अचानक चीख सुनकर फेलुदा बीच वाक्य में ही रुक गया। मेरी नज़र फेलुदा के बिस्तर पर पड़ी। एक बदसूरत, डरावना जीव उसके तकिए के नीचे से निकलने की कोशिश कर रहा था। मैंने उसकी ओर इशारा किया।
फेलुदा झट से खड़ा हुआ, तेज़ी से भागा और तकिया हटाया। बिस्तर पर एक बिच्छू पड़ा था। फेलुदा ने एक झटके में चादर खींच दी और बिच्छू ज़मीन पर गिर गया। फिर उसने अपनी चप्पल उठाई और पूरी ताकत से तीन बार पटकी। उसके बाद उसने अखबार का एक टुकड़ा फाड़ा, उस कुचले हुए जीव को उठाया और बाथरूम में चला गया। मैंने उसे बिच्छू को गेंद की तरह मसलकर पिछले दरवाजे से बाहर फेंकते देखा।
वह कमरे में वापस आया और बोला, ‘सफाईकर्मियों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला दरवाजा खुला रह गया था। इसी वजह से मिस्टर स्कॉर्पियन हमारे कमरे में घुस आए। खैर, अब सो जाओ। कल हमें जल्दी उठना है।’
लेकिन मैं इस मामले को इतनी आसानी से खारिज नहीं कर सका। मेरे मन में कुछ खटक रहा था... पर मैंने उस विचार को मन से निकाल दिया। अगर मैं संभावित खतरे के बारे में सोचता रहता, और अगर मेरी टेलीपैथी काफी मजबूत होती, तो शायद वह खतरा मेरे और करीब आ जाता—कौन जाने?
सोने की कोशिश करना कहीं बेहतर होगा।

छह

अगली सुबह, जैसे ही मैं अपने कमरे से बाहर निकला, मुझे एक जानी-पहचानी आवाज़ सुनाई दी, 'सुप्रभात!' यह जटायु की आवाज़ थी। फेलुदा पहले से ही बाहर गलियारे में एक कुर्सी पर बैठा अपनी चाय का इंतज़ार कर रहा था। जटायु ने उत्साह से चारों ओर देखा और कहा, 'अरे! यह तो बहुत ही रोमांचक जगह है, श्री मित्तर! बेहद संदिग्ध लोगों से भरी हुई।'
‘आशा है आप सुरक्षित हैं?’ फेलुदा ने पूछा।
‘अरे हाँ। मैं पहले से कहीं ज़्यादा तंदुरुस्त महसूस कर रहा हूँ। आज सुबह, जानते हो मैंने क्या किया? मैंने अपने लॉज के मैनेजर को बांह-कुश्ती के लिए चुनौती दी। लेकिन उस आदमी ने चुनौती स्वीकार नहीं की।’ फिर वह थोड़ा और पास आया और फुसफुसाते हुए बोला, ‘मेरे सूटकेस में एक हथियार है!’
‘एक गुलेल?’
'नहीं, महोदय। यह नेपाली खंजर है, सीधे काठमांडू से। अगर मुझ पर हमला हुआ, तो मैं इससे अपने हमलावर को मार डालूंगा—सीधे उसके पेट में घोंप दूंगा, मैं आपको बता रहा हूं। फिर देखते हैं क्या होता है। आप जानते हैं, मुझे हमेशा से हथियारों का संग्रह बनाने का शौक रहा है।'
मुझे फिर से हंसने का मन हुआ, लेकिन मेरा आत्म-नियंत्रण बेहतर हो रहा था, इसलिए मैंने खुद को रोक लिया। लालमोहन बाबू फेलुदा के बगल वाली कुर्सी पर बैठ गए और पूछा, 'आज तुम्हारा क्या प्लान है? क्या तुम किला देखने नहीं जा रहे हो?'
'हां, लेकिन जोधपुर का किला नहीं। हम बीकानेर जा रहे हैं।'
‘बीकानेर? बीकानेर ही क्यों?’
‘हमारे साथ कुछ लोग हैं। किसी ने गाड़ी का इंतजाम कर दिया है।’
गलियारे के दूसरे हिस्से से एक और आवाज़ आई, 'सुप्रभात!' मिस्टर ग्लोबट्रॉटर हमारी ओर आ रहे थे। उन्होंने पूछा, 'क्या आप अच्छे से सोए?' मैंने लालमोहन बाबू को मंदार बोस की आकर्षक मूंछों और गठीले शरीर को निहारते हुए देखा। फेलुदा ने उन्हें श्री बोस से मिलवाया।

‘हे भगवान, आप तो दुनिया घूम चुके हैं!’ लालमोहन बाबू की आंखें चौड़ी हो गईं। ‘मुझे आपसे ज़रूर मेलजोल रखना चाहिए, महोदय। आपने ज़रूर कई रोंगटे खड़े कर देने वाले अनुभव किए होंगे!’
'बहुत सारे, मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ। बस एक ही चीज़ की कमी खल रही है, वो है नरभक्षी के खाना पकाने के बर्तन में उबलना। इसके अलावा, मैंने लगभग हर वो अनुभव किया है जो एक आदमी कर सकता है।'
अचानक मेरी नज़र मुकुल पर पड़ी। मैंने उसे गलियारे में आते नहीं देखा था। वह चुपचाप एक कोने में खड़ा बगीचे को घूर रहा था। तभी डॉक्टर हाजरा तैयार होकर बाहर जाने के लिए निकले। एक कंधे पर बोतल टंगी थी, दूसरे पर दूरबीन और गले में कैमरे का पट्टा था। उन्होंने कहा, 'वहाँ पहुँचने में हमें लगभग साढ़े चार घंटे लगेंगे। अगर आपके पास बोतल हो तो उसे साथ ले जाइए। पता नहीं रास्ते में पीने को कुछ मिलेगा या नहीं। लेकिन मैंने भोजनालय को हमारे लिए चार पैक लंच देने को कह दिया है।'
‘आप कहाँ जा रहे हैं?’ मंदार बोस ने पूछा।
जब उसे पता चला कि हम कहाँ जा रहे हैं, तो वह बहुत उत्साहित हो गया। उसने पूछा, 'क्यों न हम सब एक साथ चलें?'
‘कितना बढ़िया विचार है!’ लालमोहन बाबू ने कहा।
डॉ. हाजरा थोड़े असहज दिखे। उन्होंने पूछा, 'तो फिर असल में कितने लोग जा रहे हैं?'
‘देखिए, हम सब एक ही कार में जाने का तो सवाल ही नहीं उठता,’ श्री बोस ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा। ‘मैं दूसरी टैक्सी का इंतजाम कर दूंगा। मुझे लगता है श्री माहेश्वरी भी मेरे साथ जाना चाहेंगे।’
‘क्या आप भी जा रहे हैं?’ डॉ. हाजरा ने लालमोहन बाबू से पूछा।
अगर मैं जाऊंगी तो मैं अपना हिस्सा खुद दूंगी। मैं नहीं चाहती कि कोई और मेरे लिए भुगतान करे। सुनो, क्यों न तुम चारों एक ही टैक्सी में जाओ? मैं मिस्टर ग्लोबट्रॉटर के साथ जाऊंगी।
ज़ाहिर है, जटायु श्री बोस से कुछ कहानियाँ सुनना चाहता था और शायद किसी नई कहानी के लिए कुछ विचार लेना चाहता था। वह पहले ही कम से कम पच्चीस साहसिक कहानियाँ लिख चुका था। सच कहूँ तो, उसकी इस बात से मुझे काफ़ी राहत मिली।
एक ही कार में पाँच लोगों का होना बहुत तंग और असुविधाजनक होता।

श्री बोस ने मैनेजर से बात की और दूसरी टैक्सी बुक करवाई। लालमोहन बाबू न्यू बॉम्बे लॉज लौट आए। जाने से पहले उन्होंने कहा, 'रास्ते में मुझे भी साथ ले जाना। मैं आधे घंटे में तैयार हो जाऊंगा।'
बीकानेर की हमारी यात्रा के बारे में और कुछ बताने से पहले, शायद मुझे यह उल्लेख करना चाहिए कि मुकुल ने वहाँ के किले को देखते ही अस्वीकार कर दिया था। लेकिन यह हमारी यात्रा का मुख्य आकर्षण नहीं था। देवीकुंड में इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण घटना घटी, जिसने साबित कर दिया कि हम वास्तव में एक भयंकर शत्रु का सामना कर रहे थे।
बीकानेर जाते समय रास्ते में कुछ खास नहीं हुआ, बस हमें खानाबदोशों का एक समूह दिखाई दिया। वे सड़क किनारे डेरा डाले हुए थे। मुकुल ने हमें रुकने को कहा, गाड़ी से बाहर निकला और कुछ देर खानाबदोशों के बीच घूमा। फिर वह लौटा और बोला कि वह उन लोगों को जानता है।
उसके बाद, फेलुदा और डॉ. हाजरा ने कुछ मिनटों तक मुकुल के बारे में बात की। मैं यह नहीं कह सकता कि आगे की सीट पर बैठे मुकुल ने यह बातचीत सुनी या नहीं। अगर सुनी भी तो उनके हावभाव से इसका कोई संकेत नहीं मिला।
'डॉ. हाजरा,' फेलुदा ने बात शुरू की, 'जब मुकुल अपने पिछले जीवन के बारे में बात करता है, तो वह वास्तव में क्या कहता है?'
वह बार-बार एक ही बात का ज़िक्र करता है—एक सोने का किला। उसका घर ज़ाहिर तौर पर उस किले के पास था। उस घर में ज़मीन के नीचे सोना और रत्न दबे हुए थे। उसकी बातों से ऐसा लगता है मानो खजाना दफ़नाए जाने के समय वह वहीं मौजूद था। इसके अलावा, वह एक युद्ध की बात करता है। वह कहता है कि उसने बड़ी संख्या में हाथी, घोड़े, सैनिक, बंदूकें, तोपें देखीं—बहुत शोर था और लोग चीख रहे थे। और वह ऊँटों की बात करता है। कहता है कि उसने ऊँटों की सवारी की है। फिर वह मोरों की बात करता है। एक बार एक मोर ने उस पर हमला किया था, उसके हाथ पर इतनी ज़ोर से चोंच मारी थी कि खून बहने लगा था। एक और चीज़ है जिसका वह बार-बार ज़िक्र करता है। रेत। क्या आपने ध्यान नहीं दिया कि रेत देखते ही वह कितना उत्साहित हो जाता है?
हम पौने बारह बजे बीकानेर पहुँचे। शहर पहुँचने से कुछ पहले ही सड़क चढ़ाई वाली हो गई। शहर पहाड़ी की चोटी पर एक दीवार से घिरा हुआ था। वहाँ की सबसे आकर्षक इमारत लाल बलुआ पत्थर से बना एक विशाल किला था।

हमारी कार सीधे किले की ओर चल पड़ी। जैसे-जैसे हम किले के करीब पहुँचते गए, किला और भी विशाल लगने लगा। बाबा सही कह रहे थे। राजस्थान के किलों की बनावट राजपूतों की शक्ति का अच्छा संकेत थी।
जैसे ही हमारी टैक्सी प्रवेश द्वार पर रुकी, मुकुल ने कहा, 'हम यहां क्यों रुके हैं?'
डॉक्टर हाजरा ने उससे पूछा, 'क्या यह किला तुम्हें जाना-पहचाना लगता है, मुकुल?' मुकुल ने गंभीरता से उत्तर दिया, 'नहीं। यह एक साधारण किला है, सोने का किला नहीं।'
तब तक हम सब कार से बाहर निकल चुके थे। मुकुल के बोलते ही अचानक एक कर्कश आवाज़ हमारे कानों में पड़ी। मुकुल तुरंत डॉक्टर हाजरा के पास दौड़ा और उन्हें गले लगा लिया। आवाज़ किले के सामने वाले पार्क से आ रही थी।
‘वह एक मोर था। क्या ऐसा पहले भी हुआ है?’ फेलुदा ने पूछा।
डॉक्टर हाजरा ने मुकुल के सिर पर धीरे से हाथ फेरा। 'हां। यह कल जोधपुर में हुआ था। उसे मोर बिल्कुल पसंद नहीं हैं।'
मुकुल का चेहरा एकदम पीला पड़ गया था। उसने उसी बेजान लेकिन मधुर आवाज में कहा, 'मैं यहाँ नहीं रहना चाहता।'
डॉ. हाजरा ने फेलुदा की ओर मुड़कर कहा, ‘मैं गाड़ी लेकर पास के सर्किट हाउस जा रहा हूँ। फिर उसे वापस यहीं भेज दूँगा। आप दोनों जो चाहें देख लीजिए। जब गाड़ी आपको लेने वापस आएगी, तो आप सर्किट हाउस में मुझसे मिल सकते हैं। लेकिन कृपया ध्यान रखें कि हम यहाँ से दो बजे तक निकल जाएँ, वरना जोधपुर पहुँचने में बहुत देर हो जाएगी।’
निराश होने का कारण तो था, खासकर डॉ. हाजरा के लिए, लेकिन मुझे इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ा। मैं अपने जीवन में पहली बार राजस्थान के किसी किले में कदम रखने जा रही थी। यह सोचकर ही मेरे रोंगटे खड़े हो रहे थे।
हम किले के मुख्य द्वार की ओर बढ़े। अचानक, फेलुदा रुका और उसने मेरे कंधे पर हाथ रखा। 'क्या तुमने देखा?'
'क्या?'
‘वह आदमी।’
क्या वह लाल कमीज वाले आदमी की बात कर रहा था? मैंने उसकी नज़र का पीछा किया, लेकिन मुझे कहीं भी एक भी लाल कमीज नज़र नहीं आई। किले के ठीक बाहर

एक छोटा सा बाज़ार था, इसलिए वहाँ बहुत सारे लोग घूम रहे थे। 'वह कहाँ है?' मैंने पूछा।
‘बेवकूफ! क्या तुम लाल शर्ट ढूंढ रहे हो?’
‘हां। क्या मुझे नहीं करना चाहिए? आप किसके बारे में बात कर रहे हैं?’
‘तुम दुनिया के सबसे बड़े मूर्ख हो। तुम्हें बस वो कमीज़ याद है, और कुछ नहीं। वही आदमी था, उसने शॉल ओढ़ी हुई थी और उसका चेहरा लगभग ढका हुआ था, बस आँखें ही दिख रही थीं। लेकिन आज उसने नीली कमीज़ पहनी हुई थी। जब हम उन खानाबदोशों को देखने के लिए रुके, तो मैंने बीकानेर की तरफ जाती हुई एक टैक्सी देखी। तभी मेरी नज़र उस नीली कमीज़ पर पड़ी।’
लेकिन वह यहाँ क्या कर रहा है?
‘अगर हमें यह पता होता, तो कोई रहस्य ही नहीं रहता!’
वह आदमी गायब हो गया था। मैं फाटक से होकर किले में दाखिल हुआ, मन ही मन काफी बेचैन था। एक विशाल आंगन ने मेरा स्वागत किया। किला दाहिनी ओर शान से खड़ा था। हर जगह कबूतर थे, दीवार के हर कोने में। एक हजार साल पहले बीकानेर एक समृद्ध शहर था, लेकिन अब वह रेत में दब गया था। फेलुदा ने मुझे बताया कि चार सौ साल पहले राजा राय सिंह ने इस किले का निर्माण शुरू किया था। वह अकबर की सेना में एक प्रसिद्ध नेता थे।
कुछ समय से मुझे एक बात परेशान कर रही थी। लालमोहन बाबू और बाकी लोग अभी तक क्यों नहीं पहुंचे? क्या उन्हें निकलने में देर हो गई? या रास्ते में उनकी गाड़ी खराब हो गई? फिर मैंने खुद को समझाया कि चिंता न करें। इतने अद्भुत ऐतिहासिक स्थल को देखने का आनंद खराब करने का कोई फायदा नहीं।
मुझे सबसे ज़्यादा आश्चर्य शस्त्रागार देखकर हुआ। उसमें न केवल हथियार थे, बल्कि आलम अम्बाली नामक एक बेहद खूबसूरत चांदी का सिंहासन भी था। कहा जाता है कि यह किसी मुगल बादशाह का उपहार था। इसके अलावा, तलवारें, भाले, कटारें, ढालें, कवच, हेलमेट—हथियारों का कोई अंत नहीं था। तलवारें इतनी बड़ी और इतनी मज़बूत थीं कि यह मानना मुश्किल था कि इन्हें इंसानों द्वारा इस्तेमाल किया जाता होगा। उन हथियारों को देखकर मुझे फिर से जटायु की याद आ गई। मज़े की बात यह है कि जैसे ही मैंने उसके बारे में सोचा, वह आ गया, शायद मेरी टेलीपैथी की शक्ति से खिंचा चला आया। उस विशाल किले के उस बड़े कमरे में, एक बहुत बड़े दरवाजे के पास खड़ा जटायु पहले से भी छोटा और हास्यास्पद लग रहा था।

मुकुल सर्किट हाउस नहीं गए थे। मुकुल ने कहा था कि उन्हें वहाँ जाने की इच्छा नहीं है। तो वे कहाँ गए? ड्राइवर ने कहा, 'देवीकुंड'। वह कहाँ था? पता चला कि बीकानेर से ज़्यादा दूर नहीं था। फेलुदा ने बताया कि वहाँ राजपूत योद्धाओं की याद में बने स्मारक (जिन्हें स्थानीय भाषा में 'छतरी' कहते हैं) हैं।
हमें पाँच मील का सफर तय करना था और इसमें हमें दस मिनट लगे। देवीकुंड सचमुच बहुत सुंदर था, और वहाँ के स्मारक भी उतने ही खूबसूरत थे। हर स्मारक में पत्थर के चबूतरे से उठते हुए पत्थर के खंभे थे, जिन पर पत्थर की ही एक छोटी सी छतरी बनी हुई थी। पूरी संरचना, ऊपर से नीचे तक, अत्यंत सुंदर नक्काशी से सजी हुई थी। पूरे क्षेत्र में कम से कम पचास ऐसे स्मारक फैले हुए थे। वहाँ बहुत सारे पेड़ थे, और सभी तोतों से भरे हुए थे। कुछ पेड़ों पर पक्षी झुंड बनाकर बैठे थे, तो कुछ एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर फुदकते हुए कर्कश आवाजें निकाल रहे थे। मैंने एक जगह पर इतने सारे तोते पहले कभी नहीं देखे थे।
लेकिन डॉ. हाजरा और मुकुल कहाँ थे?
लालमोहन बाबू बेचैन हो रहे थे। उन्होंने कहा, 'बहुत ही संदिग्ध और रहस्यमय!'
‘डॉ. हाजरा!’ मंदार बोस ने जोर से आवाज लगाई। उनकी दमदार और प्रभावशाली आवाज से कई तोते उड़ गए, लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया।
हमने खोज शुरू की। वहाँ इतने सारे स्मारक थे कि वह जगह किसी भूलभुलैया जैसी लग रही थी। जब हम उनके बीच घूम रहे थे, मैंने देखा कि फेलुदा ने घास से एक माचिस की डिब्बी उठाई और उसे अपनी जेब में रख लिया।
अंत में, लालमोहन बाबू ने डॉ. हाजरा को ढूंढा। हमने उनकी चीख सुनी और उनके पास दौड़े। एक आम के पेड़ के नीचे, काई से ढके चबूतरे के सामने, डॉ. हाजरा जमीन पर बेसुध पड़े थे। उनका मुंह पट्टी से बंधा था और हाथ पीछे बंधे हुए थे। वे असहाय होकर कराह रहे थे।
फेलुदा जल्दी से उसके ऊपर झुका, मुंह पर बंधी पट्टी हटाई और उसके हाथ खोल दिए। उसके मुंह को पगड़ी के एक फटे हुए टुकड़े से ढका गया था।
श्री बोस ने पूछा, 'आखिर यह सब हुआ कैसे?'
सौभाग्य से, डॉ. हाजरा को कोई चोट नहीं आई। वे घास पर बैठ गए और कुछ देर तक हांफते रहे। फिर उन्होंने हमें बताया कि क्या हुआ था। उन्होंने कहा,

‘मुकुल ने कहा कि वह सर्किट हाउस नहीं जाना चाहता, इसलिए हम सीधे आगे बढ़ गए। फिर हम संयोग से यहाँ आ गए। मुकुल को यह जगह पसंद आई। उसने कहा, “ये छतरियां हैं।” उसने इन्हें पहले भी देखा था और वह इन्हें करीब से देखना चाहता था। इसलिए हम कार से उतर गए। मुकुल आसपास देखने लगा और मैं एक पेड़ की छांव में खड़ा हो गया। अचानक किसी ने पीछे से मुझ पर हमला कर दिया। उसने मेरे मुंह पर हाथ रख दिया और मुझे नीचे गिरा दिया। मैं मुंह के बल गिर पड़ा। फिर उसने मुझे कसकर दबाया—मुझे लगता है कि उसने अपना घुटना मेरे सिर के पिछले हिस्से पर रखा था—और मेरे हाथ बांध दिए, और फिर मेरा मुंह बंद कर दिया।’
‘मुकुल कहाँ है?’ फेलुदा ने चिंता से पूछा।
मुझे नहीं पता। मुझे बांधे जाने के तुरंत बाद एक कार के स्टार्ट होने की आवाज जरूर सुनाई दी।
‘क्या आपने इस आदमी का चेहरा नहीं देखा?’
डॉ. हाजरा ने सिर हिलाया। 'नहीं, लेकिन जब हमने संघर्ष किया, तो मुझे उसके कपड़ों का अंदाजा हो गया। उसने राजस्थानी कपड़े पहने थे, कमीज और पतलून नहीं।'
‘वह रहा!’ मंदार बोस चिल्लाए।
मुझे आश्चर्य हुआ जब मुकुल एक छतरी के पीछे से घास की एक कली चबाते हुए निकला। डॉ. हाजरा ने राहत की एक गहरी सांस ली। 'भगवान का शुक्र है!' वे चिल्लाए।
‘मुकुल, तुम कहाँ गए थे?’
कोई जवाब नहीं।
‘तुम इतने समय से कहाँ थे?’
‘उसके पीछे,’ मुकुल ने इस बार एक छतरी की ओर इशारा करते हुए जवाब दिया। ‘मैंने ऐसी चीजें पहले भी देखी हैं।’
इसके बाद फेलुदा बोला, 'क्या तुमने उस आदमी को देखा जो यहाँ था?'
'कौन सा आदमी?'
डॉ. हाजरा ने बीच में दखल देते हुए कहा, 'मुकुल ने उसे देखा ही नहीं होगा। गाड़ी से उतरते ही वह आसपास का इलाका देखने के लिए भाग गया। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि बीकानेर में ऐसा कुछ हो सकता है, इसलिए मुझे उसकी ज्यादा चिंता नहीं थी।'

फिर भी, फेलुदा ने दोबारा कोशिश की, 'क्या तुमने उस आदमी को नहीं देखा जिसने डॉक्टर के हाथ बांधे थे?'
‘मैं स्वर्ण किला देखना चाहता हूँ,’ मुकुल ने कहा। उससे और कुछ पूछना स्पष्ट रूप से व्यर्थ था।
‘अब और समय बर्बाद न करें,’ फेलुदा ने अचानक कहा। ‘एक तरह से मुझे खुशी है कि मुकुल तुम्हारे आस-पास कहीं नहीं था। वरना वह आदमी मुकुल को लेकर भाग सकता था। अगर वह जोधपुर लौट गया है, तो अगर हम तेज़ी से गाड़ी चलाएँ तो शायद हम उसे पकड़ सकें।’
दो मिनट में हम सब अपनी-अपनी कारों में सवार होकर जोधपुर की ओर तेज़ी से चल पड़े। इस बार लालमोहन बाबू ने भी हमारे साथ आने का फैसला किया। उन्होंने कहा, ‘ये लोग बहुत शराब पीते हैं। मुझे शराब की गंध बिल्कुल बर्दाश्त नहीं होती!’
हमारे पंजाबी ड्राइवर, हरमीत सिंह, ने 60 मील प्रति घंटे की रफ्तार से गाड़ी चलाई। एक बार एक छोटी चिड़िया हमारी विंडस्क्रीन से टकराई और मर गई। मुकुल और मैं ड्राइवर के साथ आगे की सीट पर बैठे थे। मैंने एक बार पीछे मुड़कर पिछली सीट पर बैठे तीन आदमियों को देखा। लालमोहन बाबू फेलुदा और डॉ. हाजरा के बीच दबे हुए बैठे थे। उनका चेहरा पीला पड़ गया था और आँखें बंद थीं; फिर भी उनके होठों पर एक मुस्कान थी, जिससे मुझे लगा कि उन्हें किसी रोमांच की आहट सुनाई दे रही है। शायद उन्होंने अपने अगले उपन्यास की कहानी भी सोच ली थी।
हम सौ मील तक उसी रफ्तार से गाड़ी चलाते रहे, लेकिन तब तक यह स्पष्ट हो चुका था कि अपराधी भाग निकला था और हम उसे पकड़ नहीं पाएंगे। आखिरकार, यह मानने का कोई कारण नहीं था कि वह किसी तेज रफ्तार नई कार में सफर नहीं कर रहा था।
जब हम जोधपुर पहुँचे, तो अंधेरा हो चुका था और शहर की सभी बत्तियाँ जल चुकी थीं। फेलुदा ने लालमोहन बाबू से कहा, 'आप न्यू बॉम्बे लॉज में उतरना चाहेंगे, है ना?'
‘जी हाँ,’ लालमोहन बाबू ने धीमी आवाज़ में कहा, ‘मेरा मतलब है, मेरा सारा सामान तो वहीं है, तो स्वाभाविक रूप से... लेकिन मैं सोच रहा था कि... रात के खाने के बाद, क्या मैं आपके घर आ सकता हूँ...?’

‘बहुत अच्छा,’ फेलुदा ने आश्वस्त करते हुए कहा, ‘मैं सर्किट हाउस में पता करूँगा कि क्या उनके पास कोई खाली कमरा है। आप मुझे लगभग नौ बजे फोन कर सकते हैं। मैं तब आपको बता पाऊँगा।’
मैं दिन भर की सारी घटनाओं पर सोच-विचार कर रहा था। हमारा सामना एक बेहद चालाक और धूर्त व्यक्ति से था—इसमें कोई शक नहीं था। क्या यह वही लाल कमीज़ वाला आदमी था, जो आज नीली कमीज़ पहनकर बीकानेर गया था? मुझे नहीं पता था। कुछ भी मेरी समझ में नहीं आ रहा था। शायद फेलुदा भी उतना ही उलझन में था। अगर उसे सब समझ आ गया होता, तो उसका पूरा व्यवहार बदल गया होता। उसके साथ इतने साल बिताने और उसकी प्रतिक्रियाओं को देखने के बाद, मैं यह अच्छी तरह समझ गया था।
सर्किट हाउस पहुँचकर हम सब अलग-अलग कमरों में चले गए। अपने कमरे में जाने से पहले फेलुदा ने डॉ. हाजरा से कहा, 'अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो क्या मैं इसे अपने पास रख सकता हूँ?' उनके हाथ में कपड़े का वह फटा हुआ टुकड़ा था जिससे डॉ. हाजरा को बांधा गया था।
‘बिल्कुल,’ डॉ. हाजरा ने जवाब दिया। फिर वे थोड़ा और पास आए और अपनी आवाज़ धीमी करते हुए बोले, ‘जैसा कि आप देख सकते हैं, श्रीमान मिटर, स्थिति अब काफी गंभीर हो गई है। आपको ठीक इसी बात का डर था, है ना? मुझे कहना पड़ेगा कि मैंने इतनी बड़ी मुसीबत की कल्पना नहीं की थी।’
‘चिंता मत करो,’ फेलुदा ने उससे कहा। ‘तुम अपना काम करते रहो, मैं तुम्हारे साथ हूँ। अगर तुम आज सीधे बीकानेर सर्किट हाउस चले जाते, तो मुझे नहीं लगता कोई समस्या होती। सौभाग्य से, तुम पर हमला करने वाले मुकुल का अपहरण नहीं कर सके। यही सबसे महत्वपूर्ण बात है। अब से हमारे करीब रहना। इससे भविष्य में ऐसी घटना होने की संभावना कम हो जाएगी।’
डॉ. हाजरा अब भी परेशान दिख रहे थे। उन्होंने कहा, 'मुझे अपनी चिंता नहीं है। अगर किसी वैज्ञानिक को शोध करना होता है, तो उसे अपना काम पूरा करने के लिए कुछ जोखिम उठाने ही पड़ते हैं। मुझे आप दोनों की चिंता है। आप बाहरी लोग हैं, इस मामले में आपका कोई लेना-देना नहीं है।'
फेलुदा मुस्कुराया। 'आपको यह मान लेना चाहिए कि मैं भी एक वैज्ञानिक हूं जो किसी शोध में शामिल हूं, और इसलिए मैं भी जोखिम उठा रहा हूं!'

मुकुल गलियारे में इधर-उधर टहल रहा था। डॉक्टर हाजरा ने उसे बुलाया, हमें 'शुभ रात्रि' कहा और मुकुल को लेकर उसके कमरे में चली गईं। वह अब भी कुछ सोच में डूबा हुआ लग रहा था।
हम अपने कमरे में गए। फेलूदा ने एक वेटर को बुलाया और दो कोका-कोला मंगवाईं। फिर उसने अपनी जेब से सिगरेट और लाइटर निकालकर मेज पर रख दिए। वह चिंतित दिख रहा था। दूसरी जेब से उसने वह माचिस निकाली जो उसे देवीकुंड में मिली थी। उस पर एक तरफ इक्का छपा था और वह खाली थी। फेलूदा ने कुछ पल उसे घूरते हुए कहा, 'जोधपुर आते समय हम कई स्टेशनों पर रुके, और तुमने कई पान की दुकानों पर माचिस और सिगरेट बिकते देखे। क्या तुमने उनमें से किसी पर इस खास ब्रांड की माचिस बिकते देखी?'
मुझे सच स्वीकार करना पड़ा। 'नहीं, फेलुदा, मैंने कुछ भी नोटिस नहीं किया।' पश्चिमी भारत में इक्के के निशान वाला यह ब्रांड कहीं नहीं बिकता—खासकर राजस्थान में तो बिल्कुल नहीं। यह माचिस की डिब्बी किसी दूसरे राज्य से आई है।
‘क्या इसका मतलब यह है कि यह लाल शर्ट वाले आदमी का नहीं है?’
‘यह एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न है। पहली बात तो यह है कि अगर कोई व्यक्ति राजस्थानी पोशाक पहने हुए है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि वह राजस्थानी ही है। राजस्थानी कपड़े कोई भी पहन सकता है। दूसरी बात, कई अन्य लोग भी देवीकुंड जाकर डॉ. हाजरा पर हमला कर सकते थे।’
'हां, बिल्कुल। लेकिन हम नहीं जानते कि वे कौन हैं, है ना? तो इसके बारे में सोचने का क्या फायदा?'
‘देखो, तुम फिर बिना सोचे समझे बोल रहे हो। लालमोहन, मंदार बोस और माहेश्वरी—ये तीनों ही बीकानेर किले में काफी देर से पहुँचे थे। ज़रा इस बारे में सोचो। इसके अलावा…’
‘ओह। हाँ, हाँ, अब मुझे समझ में आ गया कि आपका क्या मतलब है!’
मुझे पहले यह बात सूझी ही नहीं थी। लालमोहन बाबू ने हमें बताया कि उनकी गाड़ी का टायर पंचर हो गया था, जिसकी वजह से उन्हें पैंतालीस मिनट की देरी हो गई। अगर उन्होंने झूठ बोला होता तो क्या होता? भले ही उन्होंने सच कहा हो और वे पूरी तरह निर्दोष हों, मंदार बोस और माहेश्वरी स्थानीय बाजार जाने के बजाय देवीकुंड जा सकते थे।

फेलुदा ने एक गहरी साँस ली और अपनी जेब से एक और चीज़ निकाली। मेरा दिल अचानक ज़ोर से धड़कने लगा। मैं इसके बारे में पूरी तरह भूल ही गया था। यह वही पत्र था जो मंदार बोस ने उसे उस सुबह सौंपा था।
‘फेलुदा, वो चिट्ठी किसने लिखी?’ मैंने कांपती आवाज़ में पूछा। ‘पता नहीं,’ फेलुदा ने चिट्ठी मुझे देते हुए जवाब दिया। उस पर बॉलपॉइंट पेन से बड़े अक्षरों में सिर्फ एक पंक्ति लिखी थी:
अगर आपको अपनी जान प्यारी है, तो तुरंत कलकत्ता वापस चले जाइए।
मेरे हाथ में नोट कांप रहा था। मैंने उसे जल्दी से मेज पर रख दिया और उसे स्थिर करने की कोशिश करते हुए अपने हाथ गोद में रख लिए।
‘फेलुदा, तुम क्या करने वाले हो?’
फेलुदा छत के पंखे को घूर रहा था। उसकी आँखें उस पर टिकी हुई थीं और वह लगभग खुद से बुदबुदा रहा था, 'मकड़ी का जाला... ज्यामिति। अभी अंधेरा है... इसलिए तुम इसे देख नहीं सकते... लेकिन जब सूरज उगेगा, तो जाले पर उसकी रोशनी पड़ेगी... वह चमकेगा... और तब तुम उसका पैटर्न देख पाओगे। अब हमें बस सूर्योदय का इंतजार करना है...!'

सात

आधी रात को मेरी नींद कुछ पलों के लिए खुली—पता नहीं क्या समय था—और मैंने देखा कि फेलूदा बिस्तर के पास रखे लैंप की रोशनी में अपनी नीली नोटबुक में कुछ लिख रहे थे। मुझे नहीं पता कि वे कितनी देर तक जागे रहे, लेकिन जब मैं सुबह साढ़े छह बजे उठा, तो वे नहा चुके थे, दाढ़ी बना चुके थे और बाहर जाने के लिए तैयार थे। उनके अनुसार, जब दिमाग बहुत तेज़ी से काम करता है, तो नींद कम आती है, लेकिन इससे सेहत पर कोई असर नहीं पड़ता। कम से कम उनका तो यही मानना है। पिछले दस सालों में मैंने उन्हें एक दिन भी बीमार नहीं देखा। जोधपुर में भी वे रोज़ योगाभ्यास करते थे। जब मैं बिस्तर से उठा, तब तक वे अपना अभ्यास पूरा कर चुके थे।
जब हम नाश्ते के लिए भोजन कक्ष में गए, तो हमारी मुलाकात बाकी सभी से हुई। लालमोहन बाबू पिछली रात ही सर्किट हाउस में आ गए थे। उन्हें मंदार बोस के कमरे से सिर्फ दो दरवाजे दूर एक कमरा दिया गया था। हमने उन्हें आमलेट खाते हुए पाया। उन्होंने हमें बताया कि उनके दिमाग में एक शानदार योजना आई है। डॉ. हाजरा अभी भी परेशान लग रहे थे। उन्हें अच्छी नींद नहीं आई थी। केवल मुकुल ही बिल्कुल शांत दिखाई दे रहे थे।
मंदार बोस ने डॉ. हाजरा से सीधे बात करने का फैसला किया। उन्होंने कहा, “कृपया बुरा न मानें, लेकिन आप एक ऐसे विचित्र विषय पर बात कर रहे हैं जिससे मुसीबत मोल लेना तय है। एक ऐसे देश में जहाँ अंधविश्वास चरम पर है, क्या ऐसे मामलों में दखल न देना ही बेहतर नहीं है? एक दिन, आपको हर घर में छोटे लड़के जातिस्मर होने का दावा करते नज़र आएंगे! अगर आप गौर से देखें, तो पाएंगे कि उनके माता-पिता बस थोड़ी सी प्रसिद्धि चाहते हैं—बस यही बात है। लेकिन अगर ऐसा हुआ तो आप क्या करेंगे? आप कितने बच्चों को साथ लेकर पूरे देश में यात्रा करेंगे?”
डॉ. हाजरा ने कोई टिप्पणी नहीं की। लालमोहन बाबू ने बस एक-दूसरे को हैरानी भरी निगाहों से देखा, क्योंकि किसी ने भी उन्हें मुकुल के अपने पिछले जीवन को याद करने की क्षमता के बारे में नहीं बताया था।

फेलुदा ने मुझे पहले ही बता दिया था कि नाश्ते के बाद वह मुख्य बाज़ार जाना चाहता है। मैं जानता था कि उसका कोई और मकसद होगा; यह महज़ शहर देखना या खरीदारी करना तो नहीं हो सकता। हम पौने आठ बजे लालमोहन बाबू के साथ निकले। मैंने दो-तीन बार उसे एक भयंकर दुश्मन के रूप में कल्पना करने की कोशिश की, लेकिन यह विचार इतना हास्यास्पद था कि मुझे इसे अपने दिमाग से निकालना पड़ा।
सर्किट हाउस के आसपास का इलाका शांत था, लेकिन मुख्य शहर शोरगुल भरा और भीड़भाड़ वाला निकला। पुरानी दीवार लगभग हर कोने से दिखाई देती थी। उस दीवार के किनारे दुकानों, तांगों, घरों और अन्य कई चीजों की कतारें खड़ी थीं। पांच सौ साल पुराने शहर के अवशेष अब आधुनिक जोधपुर के साथ इस कदर घुलमिल गए थे कि उन्हें अलग करना मुश्किल था।
हम बाज़ार में घूमते हुए अलग-अलग दुकानें देख रहे थे। मुझे समझ आ रहा था कि फेलुदा कुछ खास ढूंढ रहा है, लेकिन मुझे पता नहीं था कि वह क्या ढूंढ रहा है। अचानक लालमोहन बाबू ने पूछा, 'डॉक्टर हाजरा किस विषय के डॉक्टर हैं? मतलब, वो किस चीज़ के डॉक्टर हैं? आज सुबह श्री ट्रॉटर कुछ कह रहे थे...?' ‘हाजरा एक पैरासाइकोलॉजिस्ट हैं,’ फेलुदा ने जवाब दिया। ‘पैरासाइकोलॉजिस्ट?’ लालमोहन बाबू ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, ‘मुझे नहीं पता था कि “साइकोलॉजिस्ट” से पहले “पैरा” भी लगाया जा सकता है! मुझे पता है कि “टाइफाइड” के साथ ऐसा किया जा सकता है। तो क्या इसका मतलब यह है कि यह आधा मनोविज्ञान है, जैसे पैराटाइफाइड आधा टाइफाइड होता है?’
नहीं, इस संदर्भ में “पैरा” का अर्थ “असामान्य” है, न कि “आधा”। मनोविज्ञान वैसे भी एक जटिल विषय है। पैरासाइकोलॉजी इसके अधिक अस्पष्ट पहलुओं से संबंधित है।
‘मैं समझ गया। और जातिस्मार के बारे में वह सब क्या था?’
‘मुकुल एक जातिस्मार है। कम से कम, उसे यही कहा जाता है।’ लालमोहन बाबू का मुंह खुला का खुला रह गया।
फेलुदा ने आगे कहा, 'आपको कहानी के लिए काफी सामग्री मिल जाएगी। वह छोटा लड़का पिछले जन्म में देखे गए एक सुनहरे किले की बात करता है। और जिस घर में वह रहता था, उसमें जमीन के नीचे छिपा हुआ खजाना था।'
‘क्या हम... क्या हम उन चीजों की तलाश करने जा रहे हैं?’ लालमोहन बाबू की आवाज बैठ गई।

मुझे आपके बारे में तो नहीं पता। लेकिन हम तो निश्चित रूप से हैं। लालमोहन बाबू सड़क के ठीक बीचोंबीच रुक गए और फेलुदा का हाथ दोनों हाथों से पकड़ लिया। “श्री मित्तर! यह जीवन का सुनहरा अवसर है! कृपया मुझे अपने साथ लिए बिना कहीं मत चले जाना। बस यही मेरी विनती है।”
‘लेकिन मुझे नहीं पता कि हम आगे कहाँ जा रहे हैं। कुछ भी तय नहीं है।’ लालमोहन बाबू कुछ देर तक गहरी सोच में डूबे रहे। फिर उन्होंने कहा, ‘क्या श्री ट्रॉटर आपके साथ चलेंगे?’
‘क्यों? अगर वह ऐसा करे तो क्या आपको कोई आपत्ति होगी?’
‘वह आदमी बेहद शंकालु है!’
सड़क किनारे एक स्टॉल था, जहाँ नागरा जूते बिक रहे थे। राजस्थान में ज्यादातर लोग यही जूते पहनते हैं। फेलुदा उस स्टॉल पर रुक गया।
‘वह शक्तिशाली हो सकता है। फिर संदेह क्यों?’ उसने पूछा।
“कल जब हम बीकानेर जा रहे थे, तो वह कार में खूब शेखी बघार रहा था। उसने कहा कि उसने तंजानिका में एक भेड़िये का शिकार किया है। जबकि मुझे पता है कि अफ्रीका में कहीं भी भेड़िये नहीं हैं। मैंने मार्टिन जॉनसन की किताबें पढ़ी हैं। कोई मुझे इतनी आसानी से बेवकूफ नहीं बना सकता!”
'तो तुमने क्या कहा?'
मैं क्या कह सकती थी? उसके सामने उसे झूठा कहना तो नामुमकिन था। मैं उन दोनों आदमियों के बीच फंसी बैठी थी। तुमने देखा ही होगा कि उसकी छाती कितनी चौड़ी है, है ना? कम से कम पैंतालीस इंच। सड़क के दोनों किनारे बड़े- बड़े कैक्टस और कांटेदार नाशपाती के पौधों से भरे थे। अगर मैंने उसका विरोध करने की हिम्मत की होती, तो वह मुझे उठाकर उन झाड़ियों में से किसी एक के पीछे फेंक देता—और फिर पल भर में मैं गिद्धों का भोजन बन जाती। गिद्धों के बड़े-बड़े झुंड मुझ पर टूट पड़ते और दावत उड़ाते!
'क्या तुम्हें ऐसा लगता है? तुम्हारी लाश पर कितने गिद्ध भोग सकते हैं?' 'हा हा हा हा!'
इस बीच, फेलुदा ने अपनी चप्पलें उतारकर नागरा पहन ली थीं। वह दुकान के सामने इधर-उधर टहल रहा था।
‘बहुत ही दमदार जूते हैं। क्या आप इन्हें खरीदने वाले हैं?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
‘आप खुद ही एक जोड़ी पहनकर क्यों नहीं देख लेते?’ फेलुदा ने सुझाव दिया।

लालमोहन बाबू के लिए कोई भी जूता इतना छोटा नहीं था कि वह उसे फिट हो सके, लेकिन उन्होंने किसी तरह सबसे छोटे जूते में पैर डाला और कांप उठे। 'हे भगवान! ये तो गैंडे की खाल से बने हैं। ऐसे जूते पहनने के लिए तो खुद गैंडा होना पड़ेगा।'
‘उस स्थिति में, आपको यह मान लेना होगा कि राजस्थान के नब्बे प्रतिशत लोग गैंडे हैं।’
दोनों आदमियों ने नागरा उतारकर अपने जूते दोबारा पहन लिए। दुकानदार भी हंसने लगा, क्योंकि उसे समझ आ गया था कि शहर के बाबू लोग मज़ाक कर रहे हैं। हम स्टॉल से निकले और आगे बढ़ गए। एक पान की दुकान से रेडियो पर बहुत तेज़ आवाज़ में एक फ़िल्मी गाना बज रहा था। इससे मुझे कलकत्ता में होने वाली दुर्गा पूजा की याद आ गई। यहाँ लोग दुर्गा पूजा नहीं, बल्कि दशहरा मनाते थे। लेकिन वह तो बहुत दूर था।
कुछ मिनट बाद, फेलुदा अचानक एक पत्थर के बर्तनों की दुकान पर रुक गया। यह एक समृद्ध दिखने वाली दुकान थी जिसका नाम सोलंकी स्टोर्स था। शोकेस में पत्थर से बने सुंदर बर्तन, कटोरे, प्लेट और गिलास सजे हुए थे। फेलुदा उन्हें टकटकी लगाकर देख रहा था। दुकानदार ने हमें देखा, दरवाजे पर आया और हमें अपनी दुकान में आने का न्योता दिया।
फेलुदा ने कांच के डिब्बे में रखे एक कटोरे की ओर इशारा करते हुए कहा, 'क्या मैं इसे देख सकता हूँ?'
दुकानदार ने प्रदर्शित कटोरे को नहीं उठाया। इसके बजाय, उसने अलमारी से उसी जैसा एक और कटोरा निकाला। वह पीले पत्थर से बना हुआ बेहद खूबसूरत कटोरा था। मुझे याद नहीं आ रहा था कि मैंने इससे पहले कभी ऐसा कटोरा देखा था।
‘क्या यह यहीं बनाया गया था?’ फेलुदा ने पूछा।
‘यह राजस्थान में बना था, जोधपुर में नहीं।’
‘नहीं? तो फिर यह कहाँ बनाया गया था?’
जैसलमेर। यह पीला पत्थर केवल जैसलमेर में ही पाया जाता है।
'अच्छा ऐसा है।'
मैंने जैसलमेर के बारे में सुना तो था, लेकिन बस थोड़ा-बहुत। मुझे ठीक से नहीं पता था कि राजस्थान में यह कहाँ है। फेलुदा ने कटोरा खरीदा। फिर हम तांगे से सर्किट हाउस वापस गए। बहुत ही ऊबड़-खाबड़ सफर के बाद जब हम लौटे

तो साढ़े नौ बज चुके थे। लेकिन इसका मतलब यह था कि इतनी लंबी यात्रा के बाद हमारा नाश्ता अच्छी तरह पच गया था।
मंदार बोस बाहर गलियारे में बैठकर अखबार पढ़ रहे थे। उन्होंने फेलुदा के हाथ में रखे पैकेट को देखते हुए पूछा, 'तुमने क्या खरीदा?'
‘एक कटोरा। आखिर, मेरे पास राजस्थानी स्मृति चिन्ह तो होना ही चाहिए।’ मैंने तुम्हारे दोस्त को बाहर जाते देखा।
‘कौन, डॉ. हाजरा?’
'हां। मैंने उसे लगभग नौ बजे टैक्सी में जाते हुए देखा।'
और मुकुल?
‘वह उसके साथ गया था। शायद वे पुलिस से बात करने गए हों। कल जो कुछ हुआ उसके बाद हाजरा अभी भी काफी सदमे में होगी।’
लालमोहन बाबू अपने कमरे में लौट गए, यह कहकर कि उन्हें अपने नए भूखंड पर काम करना है और उसमें थोड़ा बदलाव करना है। हम अपने कमरों में चले गए। मैंने पूछा, 'फेलुदा, तुमने अचानक वह कटोरा क्यों खरीद लिया?'
फेलुदा सोफे पर बैठ गया, कटोरे को खोलकर मेज पर रख दिया और कहा, 'इसमें कुछ खास बात है।'
‘इसमें क्या खास है?’
‘यह पत्थर का बना कटोरा है। फिर भी, अगर मैं कहूँ कि यह सोने का कटोरा है, तो मैं बहुत गलत नहीं होऊँगा! मैंने अपने जीवन में ऐसा कुछ कभी नहीं देखा।’ इसके बाद वह एकदम चुप हो गया और रेलवे समय सारिणी के पन्ने पलटने लगा। मैं कुछ कर नहीं सकता था। मुझे पता था कि फेलुदा कम से कम एक घंटे तक कुछ नहीं बोलेगा। अगर मैं उससे सवाल भी पूछता, तो वह जवाब नहीं देता। इसलिए मैं कमरे से बाहर निकल गया।
गलियारा अब खाली था। मंदार बोस जा चुके थे। वो यूरोपीय महिला भी जा चुकी थी, जो थोड़ी देर पहले आखिरी छोर पर बैठी थी। ढोल की आवाज़ मेरे कानों तक पहुँची। फिर कोई गाने लगा। मैंने फाटक की तरफ देखा तो वहाँ एक लड़का और एक लड़की थे, जो भिखारियों जैसे लग रहे थे। लड़का ढोल बजा रहा था और लड़की गा रही थी। वे गलियारे की तरफ चल रहे थे। मैं आगे बढ़ा।
जब मैं खुले मैदान में पहुँचा, तो अचानक मुझे ऊपर जाने की इच्छा हुई। मैं रोज़ सीढ़ियों के पास से गुज़रता था। मुझे पता था कि ऊपर एक छत है, लेकिन मैंने उसे अभी तक देखा नहीं था। इसलिए मैं सीढ़ियाँ चढ़ गया।

देख पा रहा था। मुझे केवल उसकी पगड़ी और कंधे ही दिखाई दे रहे थे। उसकी बाहें शॉल के नीचे छिपी हुई थीं।
वह चुपके से चलने लगा, इमारत के पश्चिमी हिस्से से आगे बढ़ते हुए। मैं पश्चिम की ओर मुख किए हुए छत पर था। हमारा कमरा भूतल पर, विपरीत दिशा में था।
मैं देखना चाहता था कि वह आदमी कहाँ जा रहा है। इसलिए मैं छत के बीच में बने कमरों के पास से भागा और पूर्वी तरफ की दीवार पर झुक गया।
वह आदमी एक बार फिर मेरे नीचे खड़ा था। अगर वह ऊपर देखता, तो मुझे देख लेता। लेकिन उसने नहीं देखा। वह हमारे कमरे की ओर, उसकी एक खिड़की की ओर धीरे-धीरे बढ़ रहा था। तभी उसका एक हाथ शॉल के नीचे से बाहर निकला। उसकी कलाई के पास, सूरज की रोशनी में चमकती हुई वह चीज़ क्या थी?
वह आदमी रुक गया। मेरा गला सूख गया। फिर उसने एक और कदम आगे बढ़ाया। अचानक, एक तेज़, कर्कश आवाज़ ने सन्नाटा तोड़ दिया। कहीं से मोर की आवाज़ आई थी। वह आदमी बुरी तरह चौंक गया और उसी क्षण मैंने चीख कर कहा, 'फेलुदा!' पगड़ीधारी व्यक्ति मुड़ा और उसी दिशा में भाग गया जहाँ से वह आया था। वह पलक झपकते ही गायब हो गया। मैं दो-दो कदम करके सीढ़ियों से नीचे भागा, बिना रुके गलियारे में दौड़ता हुआ अपने कमरे के दरवाजे पर सीधे फेलुदा से टकरा गया और वहीं अचंभित खड़ा रह गया।
फेलुदा मुझे अंदर खींच ले गया और पूछा, 'क्या बात है? क्या हुआ?'
मैंने छत से देखा... एक आदमी... पगड़ी पहने हुए... तुम्हारी खिड़की की ओर चल रहा था!
वह कैसा दिखता था? लंबा?
‘पता नहीं। मैंने उसे ऊंचाई से देखा था। उसके हाथ पर... एक... एक... था।’ ‘क्या?’
'घड़ी । । ।!'
मुझे लगा था कि फेलुदा या तो इस बात को हंसकर टाल देगा, या फिर मुझे मूर्ख और कायर कहकर मेरा मजाक उड़ाएगा। लेकिन उसने ऐसा कुछ नहीं किया। थोड़ा गंभीर दिखते हुए, उसने बस खिड़की से बाहर झांका और चारों ओर देखा।
किसी ने हमारे दरवाजे पर दस्तक दी।
'अंदर आएं!'
एक वेटर कॉफी लेकर आया।

‘सलाम साहब!’ उसने ट्रे मेज पर रखी और अपनी जेब से एक मुड़ा हुआ कागज निकाला। उसने उसे फेलुदा को देते हुए कहा, ‘मैनेजर साहब ने मुझे इसे आपको देने के लिए कहा है।’
वह चला गया। फेलुदा ने जल्दी से नोट पढ़ा, फिर हताशा भरे भाव से सोफे पर बैठ गया।
‘फेलुदा, यह किसका पत्र है?’
'इसे पढ़ें।'
यह डॉ. हाजरा का एक छोटा सा नोट था, जो एक कागज के पन्ने पर लिखा गया था जिसके एक कोने में उनका नाम छपा हुआ था। उसमें लिखा था:
मुझे लगता है कि जोधपुर में रहना अब मेरे लिए सुरक्षित नहीं है। मैं कहीं और जा रहा हूँ, जहाँ मुझे बेहतर सफलता की उम्मीद है। मुझे आपको और आपके चचेरे भाई को और खतरे में डालने का कोई कारण नहीं दिखता। इसलिए मैं बिना अलविदा कहे जा रहा हूँ। आप दोनों को मेरी शुभकामनाएं। आपका, एच.एम. हाजरा ‘उन्होंने बहुत जल्दबाजी की है,’ फेलुदा ने दांत भींचते हुए कहा। फिर वह अपनी कॉफी पिए बिना ही रिसेप्शन डेस्क की ओर चल दिए। आज हमें डेस्क पर एक अलग ही व्यक्ति मिला। ‘क्या डॉक्टर हाजरा ने बताया था कि वह कब लौटेंगे?’ फेलुदा ने पूछा।
'नहीं, महोदय। उन्होंने अपने सारे बिल चुका दिए। वापस आने के बारे में उन्होंने कुछ नहीं कहा।'
‘क्या आपको पता है कि वह कहाँ गया है?’
‘रेलवे स्टेशन तक। बस इतना ही मुझे पता है।’
फेलुदा ने एक पल सोचा। फिर उसने कहा, 'यहाँ से जैसलमेर ट्रेन से जाना संभव है, है ना?'
'जी हां, महोदय। हमारे पास दो साल से सीधी संपर्क व्यवस्था है।'
‘ट्रेन कब है?’
यह रात दस बजे रवाना होती है।
क्या सुबह कोई ट्रेन है?
'हां, लेकिन यह ट्रेन केवल पोखरण तक ही जाती है। इसे आधे घंटे पहले ही निकल जाना चाहिए था। अगर पोखरण से कार का इंतजाम हो जाए तो इस ट्रेन से जैसलमेर जाया जा सकता है।'
पोखरण से यह कितनी दूर है?

सत्तर मील।
‘जोधपुर से सुबह के समय और कौन-कौन सी ट्रेनें जाती हैं? मेरा मतलब है, अन्य गंतव्यों के लिए?’
उस व्यक्ति ने एक किताब देखी और कुछ पन्ने पलटे। ‘बारमेर के लिए एक ट्रेन आठ बजे निकलती है। और नौ बजे रेवाड़ी पैसेंजर है। बस इतना ही।’
फेलुदा की उंगलियां काउंटर पर बेसब्री से थपथपा रही थीं। 'जैसलमेर यहां से करीब 200 मील दूर है, है ना?'
'जी श्रीमान।'
'क्या आप हमारे लिए टैक्सी का इंतजाम कर सकते हैं? हम सुबह साढ़े ग्यारह बजे जैसलमेर के लिए निकलना चाहेंगे।'
‘जी हां, महोदय।’ रिसेप्शनिस्ट ने टेलीफोन उठाया।
‘आप कहाँ जा रहे हैं?’ एक आवाज़ ने पूछा। यह मंदार बोस थे, जो अपने कमरे से सूटकेस हाथ में लिए बाहर आ रहे थे। उन्होंने अभी-अभी स्नान किया था और अच्छे कपड़े पहने हुए थे।
'मैं थार रेगिस्तान देखना चाहूंगा,' फेलुदा ने जवाब दिया।
‘ओह। तो आप उत्तर-पश्चिम की ओर जा रहे हैं? मैं तो पूर्व की ओर जा रहा हूँ।’ ‘आप भी जोधपुर छोड़ रहे हैं?’
‘मेरी टैक्सी किसी भी पल यहाँ पहुँच जाएगी। मुझे किसी एक जगह पर बहुत देर तक रुकना पसंद नहीं है। इसके अलावा, अगर आप भी चले गए, तो सर्किट हाउस वैसे भी खाली हो जाएगा।’
रिसेप्शनिस्ट ने फोन पर बात खत्म की और हमारी तरफ मुड़ा। उसने कहा, 'व्यवस्था हो गई है।'
फेलुदा ने मुझसे कहा, 'टॉपशे, जाओ और देखो कि क्या तुम्हें लालमोहन बाबू मिल सकते हैं। उन्हें बताओ कि हम जैसलमेर जा रहे हैं। अगर वह हमारे साथ आना चाहते हैं, तो उन्हें तुरंत तैयार हो जाना चाहिए।'
मैं कमरा नंबर 10 की तरफ भागा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि हम अचानक जैसलमेर क्यों जा रहे हैं। फेलुदा ने इतनी सारी जगहों में से जैसलमेर को ही क्यों चुना? क्या रेगिस्तान के पास होने की वजह से? क्या डॉ. हाजरा और मुकुल भी वहाँ गए थे? क्या इसका मतलब यह था कि हम अब किसी खतरे में नहीं थे? या हम सीधे खतरे में पड़ने वाले थे?

आठ

पोखरण जोधपुर से 120 मील दूर था। जैसलमेर उससे 70 मील और दूर था। 190 मील की दूरी तय करने में छह या सात घंटे से ज़्यादा नहीं लगने चाहिए थे। कम से कम हमारे ड्राइवर, गुरबचन सिंह ने तो यही बताया था। वह एक हट्टे-कट्टे और हंसमुख सिख थे। मैंने उन्हें कई बार स्टीयरिंग व्हील से हाथ हटाकर अपने सिर के पीछे रखते देखा। फिर वह अपनी सीट पर पीछे झुककर थोड़ा आराम करते। लेकिन गुरबचन अपने मोटे पेट पर स्टीयरिंग व्हील टिकाए रखते थे, और ज़रूरत पड़ने पर उसे घुमा भी देते थे, बिना हाथ वापस रखे, गाड़ी अपने रास्ते पर चलती रहती थी। यह काम सुनने में जितना मुश्किल लगता है, उतना मुश्किल नहीं था, क्योंकि सड़क पर लगभग कोई ट्रैफिक नहीं था। इसके अलावा, सड़क कई जगहों पर पांच या छह मील तक सीधी थी, बिना किसी मोड़ या घुमाव के। अगर कोई गड़बड़ न हो, तो हम शाम छह बजे तक जैसलमेर पहुँच जाएँगे।
जोधपुर से मात्र दस मील दूर ही नज़ारा बदलने लगा। मैंने ऐसा नज़ारा पहले कभी नहीं देखा था। जोधपुर के चारों ओर कई पहाड़ियाँ थीं। वहाँ का किला उन्हीं पहाड़ियों से लाए गए लाल बलुआ पत्थर से बना था। लेकिन अब वे पहाड़ियाँ गायब हो गईं और उनकी जगह एक लहरदार भूभाग ने ले ली जो क्षितिज तक फैला हुआ था। यह घास, लाल मिट्टी, रेत और बिखरे पत्थरों का मिश्रण था। आम पेड़-पौधे भी गायब हो गए थे। अब मुझे केवल बबूल, कैक्टस और ऐसे ही कुछ पौधे दिखाई दे रहे थे जिनके नाम मुझे नहीं पता थे।
मैंने एक और चीज़ देखी, वो थे जंगली ऊँट। वे गाय-भेड़ों की तरह आज़ादी से घूम रहे थे। कुछ हल्के भूरे रंग के थे, जैसे दूधिया चाय; कुछ का रंग गहरा था, जैसे काली कॉफ़ी। मैंने उनमें से एक को काँटेदार पौधा चरते देखा। फेलुदा ने बताया था कि काँटे अक्सर ऊँट के मुँह को घायल कर देते हैं; लेकिन क्योंकि वही झाड़ियाँ उसके भोजन का एकमात्र स्रोत थीं, इसलिए ऊँट उस तकलीफ़ को सह लेता था।
फेलुदा ने मुझे जैसलमेर के बारे में भी कुछ बताया। इसका निर्माण बारहवीं शताब्दी में हुआ था और यह भाटी राजपूतों की राजधानी बना। यहाँ से मात्र

चौंसठ मील की दूरी पर भारत और पाकिस्तान की सीमा थी। दस साल पहले भी जैसलमेर जाना काफी मुश्किल था। वहाँ ट्रेनें नहीं चलती थीं और जो सड़कें थीं भी, वे अक्सर रेत में दब जाती थीं। वह जगह इतनी शुष्क थी कि अगर पूरे साल में एक दिन भी बारिश हो जाती थी, तो लोग खुद को भाग्यशाली समझते थे। जब मैंने उनसे लड़ाइयों के बारे में पूछा, तो फेलुदा ने बताया कि अलाउद्दीन खिलजी ने एक बार जैसलमेर पर हमला किया था।
हम लगभग नब्बे किलोमीटर (छप्पन मील) का सफर तय कर चुके थे कि अचानक ही टायर पंचर हो गया, जिससे गाड़ी से एक कर्कश आवाज निकली, झटका लगा और वह सड़क के किनारे रुक गई। मुझे गुरबचन सिंह पर बहुत गुस्सा आया। उन्होंने हमें भरोसा दिलाया था कि उन्होंने हर टायर में हवा का दबाव जांच लिया है और सब ठीक है। वास्तव में, गाड़ी नई और अच्छी हालत में लग रही थी।
हम गुरबचन के साथ बाहर निकले। टायर बदलने में कम से कम पंद्रह मिनट लगेंगे।
जैसे ही हमारी नज़र पंचर टायर पर पड़ी, हमें समझ आ गया कि पंचर किस वजह से हुआ था। सड़क के एक बड़े हिस्से में सैकड़ों कीलें बिखरी पड़ी थीं। यह स्पष्ट था कि वे नई थीं और हाल ही में खरीदी गई थीं।
हमने एक-दूसरे की ओर देखा। गुरबचन ने दांत भींचते हुए अपशब्द कहे, जिन्हें मैं यहाँ दोहराना नहीं चाहता। फेलुदा ने कुछ नहीं कहा। वह बस वहीं खड़ा रहा, हाथ कमर पर रखे, और गहरी सोच में डूबा सड़क को घूरता रहा। उसकी भौंहें गुस्से से सिकुड़ी हुई थीं। लालमोहन बाबू ने जापान एयरलाइंस के एक पुराने बैग से एक हरी नोटबुक निकाली—जो डायरी जैसी लग रही थी—और उसमें पेंसिल से कुछ लिखा।
जब तक हमने टायर बदल लिया, सड़क से सारी कीलें हटा दीं और जाने के लिए तैयार हुए, तब तक पौने दो बज चुके थे। फेलुदा ने गुरबचन से कहा, 'सरदारजी, कृपया सड़क पर नज़र रखिएगा। आप देख सकते हैं कि हमारे दुश्मन हमारे लिए मुश्किलें खड़ी करने की कोशिश कर रहे हैं!'
लेकिन अगर हमें सूर्यास्त से पहले जैसलमेर पहुंचना था, तो बहुत धीरे चलना ठीक नहीं था। इसलिए गुरबचन सिंह ने अपनी गति साठ से घटाकर चालीस कर दी। अगर वह हर समय सड़क पर नज़र रखता, तो वह मुश्किल से दस या पंद्रह मील प्रति घंटे से ज़्यादा तेज़ चल पाता।

लगभग चालीस मील आगे, जब हम लगभग सौ मील की दूरी तय कर चुके थे, तब दूसरी विपत्ति हम पर आ पड़ी। इसे टाला नहीं जा सकता था।
इस बार, कीलों की जगह, सड़क के कम से कम बीस फीट हिस्से पर हजारों ड्राइंग पिन बिखरी पड़ी थीं। जाहिर है, जो भी हमारी गाड़ी का टायर पंचर करवाना चाहता था, वह कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था।
यह बात भी स्पष्ट थी कि गुरबचन सिंह के पास दूसरा कोई स्पेयर टायर नहीं था। हम सब फिर से बाहर निकल आए। अगर गुरबचन ने पगड़ी न पहनी होती, तो शायद वह अपना सिर खुजला रहा होता। फेलुदा ने उससे पूछा, 'पोखरान कस्बा है या गाँव?' ‘यह एक कस्बा है, बाबू।’
'यह कितनी दूर है?'
लगभग पच्चीस मील।
‘हे भगवान! अब हम क्या करेंगे?’
गुरबचन ने दिलासा देने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि उस रास्ते पर चलने वाली हर टैक्सी को वे जानते हैं। अगर हम दूसरी टैक्सी आने तक इंतज़ार करें, तो वे उसके ड्राइवर से एक स्पेयर टायर ले लेंगे। फिर हम पोखरण जाकर अपने पंचर टायर ठीक करवा लेंगे। सवाल यह था कि क्या कोई टैक्सी आएगी? अगर आई, तो कब? हमें सुनसान जगह पर कब तक इंतज़ार करना पड़ेगा?
तीन आदमियों का एक समूह पाँच ऊँटों को लेकर हमारे पास से गुजरा। वे जोधपुर की ओर जा रहे थे। तीनों आदमियों की त्वचा इतनी गहरी थी कि लगभग काली लग रही थी। उनमें से एक की दाढ़ी और मूंछें बर्फ़ जैसी सफ़ेद थीं। मैंने देखा कि लालमोहन बाबू फेलुदा के पास चले गए, शायद इसलिए कि उन्होंने उन आदमियों को हमारी ओर उत्सुकता भरी निगाहों से देखते हुए पकड़ लिया था।
‘यहाँ से सबसे नज़दीकी रेलवे स्टेशन कौन सा है?’ फेलुदा ने सड़क से पिन हटाते हुए पूछा। हम सब भी उसके इस नेक काम में उसका साथ दे रहे थे, ताकि दूसरी कारों को भी इसी तरह के हादसे से बचाया जा सके।
‘रामदेओरा। यह यहाँ से सात या आठ मील दूर है।’
‘रामदेओरा. . .!’
जब सारे पिन निकाल लिए गए, तो फेलुदा ने अपने कंधे के बैग से ब्रैडशॉ की समय सारिणी निकाली। उसका एक पन्ना मुड़ा हुआ था। फेलुदा ने उस पन्ने पर समय सारिणी खोली, उस पर सरसरी नजर डाली और कहा, 'इसका कोई फायदा नहीं।

जोधपुर से चलने वाली सुबह की ट्रेन रामदेवरा 3:45 बजे पहुँचती है। उसे अब तक रामदेवरा से निकल जाना चाहिए था।'
‘लेकिन क्या जैसलमेर के लिए रात में कोई दूसरी ट्रेन नहीं है?’ मैंने पूछा। ‘हाँ, लेकिन वह रामदेवरा बहुत सुबह, 3:53 बजे पहुँचेगी। अगर हम अभी चलना शुरू करें, तो रामदेवरा पहुँचने में कम से कम दो घंटे लग जाएँगे। अगर सुबह की ट्रेन मिलने की कोई उम्मीद होती, तो इतनी दूर पैदल चलने का कोई मतलब होता। कम से कम तब तो हम पोखरण जा सकते थे। अब इस वीरान जगह में...’ फेलुदा ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।
इतनी कठिन परिस्थितियों में भी, लालमोहन बाबू मुस्कुराए और कुछ लड़खड़ाती आवाज़ में बोले, "खैर, आपको मानना पड़ेगा कि ऐसी स्थिति तो उपन्यासों में ही आसानी से मिल जाती है। असल जिंदगी में भी ऐसी स्थिति हो सकती है, यह कौन जानता था...?"
अचानक ही, फेलुदा ने हाथ उठाकर उसे रोक दिया। हमारे चारों ओर सन्नाटा छा गया, मानो पूरी दुनिया थम सी गई हो। उस सन्नाटे में एक हल्की सी आवाज़ हमारे कानों तक पहुँची। इसमें कोई शक नहीं था: छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक! यह एक ट्रेन थी, पोखरण जाने वाली ट्रेन। लेकिन पटरी कहाँ थी?
मैंने उस दिशा में देखा जहाँ से आवाज़ आ रही थी, और अचानक मुझे धुएँ का एक स्तंभ दिखाई दिया। लगभग तुरंत ही, मुझे एक टेलीग्राफ का खंभा नज़र आया। मैंने इसे पहले नहीं देखा था क्योंकि ज़मीन ढलान वाली थी और लाल खंभा लगभग लाल-भूरी मिट्टी में घुलमिल गया था। अगर यह ऊँची ज़मीन पर खड़ा होता और आसमान में इसकी आकृति साफ़ दिखाई देती, तो यह कहीं ज़्यादा आसानी से दिखाई देता।
‘भागो!’ फेलुदा चिल्लाया और धुएँ की ओर दौड़ने लगा। मैं भी उसके पीछे-पीछे भागा। लालमोहन बाबू मेरे पीछे-पीछे आए। मुझे आश्चर्य हुआ कि दुबले-पतले शरीर के बावजूद वे इतनी तेज़ी से दौड़े कि लगभग फेलुदा के पास पहुँच गए और मुझे पीछे छोड़ गए।
मेरे पैरों के नीचे घास दिखाई दे रही थी, लेकिन हरी होने के बजाय वह रुई की तरह सफेद थी। हम ढलान से नीचे उतरते हुए, जितनी तेज़ी से हो सके, भागे और रेलवे ट्रैक पर पहुँच गए। ट्रेन अब सौ गज की दूरी पर थी।
एक पल भी संकोच किए बिना, फेलुदा पटरी के बीचोंबीच कूद गया और दोनों बाहें ऊपर उठाकर पागलों की तरह लहराने लगा। ट्रेन ज़ोर से सीटी बजाने लगी, लेकिन

सीटी की आवाज़ को दबाते हुए लालमोहन बाबू की आवाज़ गूंज उठी: 'रुको! रुको! मैं कहता हूँ, रुक जाओ!'
कुछ भी काम नहीं आया। यह एक छोटी ट्रेन थी, लेकिन वैसी नहीं जैसी मार्टिन एंड कंपनी कभी चलाया करती थी। अगर कोई पटरियों के किनारे खड़ा होकर हाथ उठाता, तो वे ट्रेनें बसों की तरह रुक जातीं। लेकिन इस ट्रेन ने अपनी गति कम करने की कोई कोशिश नहीं की। ज़ोरदार सीटी बजाती हुई यह ट्रेन खतरनाक रूप से करीब आ गई, और तभी फेलुदा को जान बचाने के लिए कूदना पड़ा। हम बस खड़े होकर देखते रहे जब तक कि ट्रेन खड़खड़ाहट करती हुई हमारे पास से नहीं गुज़र गई, और पल भर के लिए घने काले धुएं के पीछे चमकते सूरज को छुपा लिया। उस समय भी, मैं यह सोचे बिना नहीं रह सका कि मैंने ऐसा दृश्य शायद सिर्फ हॉलीवुड की किसी वेस्टर्न फिल्म में ही देखा होगा। मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मुझे अपने देश में ऐसा दृश्य देखने को मिलेगा!
‘कितना घमंड!’ ट्रेन के चले जाने के बाद लालमोहन बाबू ने कहा। ‘यह तो इल्ली से भी बड़ी नहीं लग रही थी, है ना?’
‘बदकिस्मती!’ फेलुदा बुदबुदाया, ‘ट्रेन लेट थी, फिर भी हम इसका फायदा नहीं उठा पाए। अगर हम किसी तरह पोखरण पहुँच जाते, तो शायद हमें कोई दूसरी टैक्सी मिल जाती।’
गुरबचन सिंह ने बड़ी समझदारी से हमारा सामान इकट्ठा किया था और उसे लेकर आ रहे थे, लेकिन अब उसकी कोई ज़रूरत नहीं थी। मैंने एक पल के लिए पटरी पर नज़र डाली। चारों ओर सिर्फ़ धुआँ ही धुआँ दिखाई दे रहा था।
अचानक, लालमोहन बाबू ने उत्साह से कहा, 'ऊंटों के बारे में क्या?'
‘ऊंट?’
‘वहाँ देखो!’
जी हाँ। ऊँटों का एक और समूह हमारी ओर आ रहा था, इस बार जोधपुर की दिशा से। 'अच्छा विचार है, चलो चलते हैं!'
फेलुदा की बात सुनकर हम फिर से दौड़ने लगे। दौड़ते हुए लालमोहन बाबू ने मुझसे कहा, 'मैंने सुना है कि जब ऊंट पूरी रफ्तार से दौड़ने लगता है, तो वह एक घंटे में बीस मील की दूरी तय कर सकता है!'
हम उस समूह को रोकने में कामयाब रहे। इस बार उनके साथ दो आदमी और सात ऊँट थे। फेलुदा ने हिंदी में पूछा, ‘हमें तीन ऊँट चाहिए और हमें रामदेवरा जाना है। इसका कितना किराया होगा?’ तब पता चला कि वे लोग कोई स्थानीय बोली बोलते

थे। हालांकि, वे थोड़ी-बहुत हिंदी समझ सकते थे और बोल भी सकते थे, भले ही रुक-रुक कर। गुरबचन ने हमारी तरफ से बात की। अंत में, वे हमें अपने ऊँट दस रुपये में देने के लिए राजी हो गए।
‘क्या आपके ऊंट तेज दौड़ सकते हैं?’ लालमोहन बाबू जानना चाहते थे, ‘हमें ट्रेन पकड़नी है!’
फेलुदा हँसा। 'भागने की चिंता मत करो। पहले ऊँट पर बैठो।'
‘उसकी पीठ पर चढ़ जाओ…?’
शायद पहली बार किसी ऊंट को आमने-सामने देखकर लालमोहन बाबू को उसकी पीठ पर चढ़ने की पेचीदगियों का एहसास हुआ। मैं जानवरों को ध्यान से देख रहा था। वे देखने में बिल्कुल अजीब लग रहे थे, लेकिन उन्हें बड़ी सावधानी से सजाया गया था। उनकी पीठ पर वैसी ही झालरदार चादरें थीं जैसी मैंने पहले हाथियों पर देखी थीं। इस चादर के ऊपर लकड़ी की एक सीट थी। चादर पर लाल, नीले, पीले और हरे रंग के ज्यामितीय पैटर्न बने हुए थे। हर ऊंट की लंबी गर्दन कौड़ियों से सजे लाल कपड़े से लिपटी हुई थी। यह साफ था कि उनके अजीबोगरीब रूप के बावजूद, उनके मालिक उनसे प्यार करते थे और उनकी देखभाल करते थे। अब तीन ऊँट ज़मीन पर घुटने टेककर बैठ गए थे। गुरबचन सिंह तब तक हमारा सारा सामान ले आए थे, जिसमें दो सूटकेस, दो बैग और कुछ छोटी-मोटी चीज़ें थीं। गुरबचन ने हमसे कहा कि अगर हम रामदेवरा से ट्रेन पकड़ सकें तो पोखरण में उनका इंतज़ार करें। वह उस रात पोखरण ज़रूर पहुँच जाएँगे। हमारा सामान बाकी दो ऊँटों पर सुरक्षित रूप से बाँध दिया गया था।
पहले तीन ऊंट अभी भी हमारा इंतजार कर रहे थे।
‘तुमने देखा था ना कि वे कैसे बैठे थे?’ फेलुदा ने लालमोहन बाबू से पूछा। ‘ऊंट पहले अपने अगले पैर मोड़ता है, और उसके शरीर का अगला हिस्सा उसके पिछले हिस्से से पहले नीचे आता है। जब वह उठता है, तो ठीक इसका उल्टा होता है। वह पहले अपने पिछले पैर उठाएगा। अगर तुम इसे याद रख सको और उसी हिसाब से आगे-पीछे झुक सको, तो तुम बहुत सारी शर्मिंदगी से बच सकते हो।’ ‘शर्मिंदगी?’ लालमोहन बाबू ने कर्कश स्वर में कहा।
‘देखो, मुझे देखो!’
फेलुदा पहले ऊंट की पीठ पर कूद गया। एक आदमी ने दांतों से एक अजीब सी आवाज निकाली। तुरंत ही, ऊंट तेजी से लेकिन अटपटे ढंग से ठीक उसी तरह खड़ा हो गया

जैसा फेलुदा ने अभी-अभी बताया था। लेकिन उसने बड़ी कुशलता से यह काम कर लिया, कोई अटपटापन नहीं था।
‘चलो, टॉपशे! तुम दोनों मुझसे छोटे और हल्के हो, तुम्हारे लिए यह आसान होना चाहिए,’ फेलुदा ने पुकारा।
राजस्थान के दोनों आदमी हमारी हरकतों पर मुस्कुरा रहे थे। मैंने हिम्मत जुटाई और दूसरे ऊँट पर बैठ गई, जो तुरंत खड़ा हो गया। अब मुझे असली समस्या समझ में आ गई। जब ऊँट के पिछले पैर उठते थे, तो सवार एक झटके में आगे की ओर फिसल सकता था। अगर कोई पीछे की ओर झुककर उसी स्थिति में बना रहे, जब ऊँट अपने पैरों पर खड़ा हो, तो संतुलन बनाए रखना आसान होगा। मैंने मन ही मन सोचा, अगर मुझे कभी फिर से ऊँट की सवारी करनी पड़ी, तो मुझे यह बात याद रखनी होगी।
‘प्रिय जी-या-आ-द!’ लालमोहन बाबू ने कहा।
‘भगवान’ शब्द ‘ग्याद’ में बदल गया, क्योंकि जैसे ही वह ये शब्द बोल रहा था, ऊँट का पिछला हिस्सा अचानक हिल गया और लालमोहन बाबू उसकी पीठ पर आगे की ओर फिसल गए। अगले ही पल, वह विपरीत दिशा में पीछे की ओर गिर पड़े। मैंने उन्हें ऊँट की पीठ पर बेइज्जती से पड़े हुए, ज़ोर से घूँट भरते सुना। गुरबचन सिंह को विदाई देने के बाद, हम तीनों बद्दू रामदेवरा के लिए अपनी यात्रा पर निकल पड़े।
‘हमें आधे घंटे में रामदेओरा पहुंचना होगा। यह यहाँ से आठ मील दूर है, है ना? हमें ट्रेन पकड़नी है!’ फेलुदा ने दोनों आदमियों से चिल्लाकर कहा। ये शब्द सुनते ही उनमें से एक अपने ऊँट पर उछल पड़ा और तेज़ी से आगे बढ़कर सबसे आगे हो गया। दूसरे ने ‘हे! हे!’ चिल्लाया और सारे ऊँट दौड़ पड़े।
वैसे भी, जानवर भद्दे थे और उन पर बैठना आसान नहीं था। जब वे अचानक आगे बढ़ते, तो मेरा पूरा शरीर इधर-उधर हिलता और कांपता; लेकिन मुझे कोई फर्क नहीं पड़ा। हम सूखी, झुलसी हुई घास से ढके रेतीले मैदान पर दौड़ रहे थे, और जगह राजस्थान थी—तो कुल मिलाकर, यह एक रोमांचक अनुभव था।
फेलुदा मुझसे आगे था और लालमोहन बाबू का ऊंट मेरे पीछे था। फेलुदा ने अपना सिर घुमाकर पुकारा, 'श्री गांगुली, आपको रेगिस्तान का जहाज कैसा लगा?' मैंने भी पीछे मुड़कर देखा कि लालमोहन बाबू क्या कर रहे हैं। मैंने पाया कि वे भयानक रूप से मुंह बना रहे थे, मानो वे कड़ाके की ठंड में हों। उनके होंठ खुले हुए थे, दांत भींचे हुए थे और गर्दन की नसें उभरी हुई थीं।

‘क्या बात है?’ फेलुदा ने आगे पूछा। ‘तुम कुछ क्यों नहीं बोलते?’
लालमोहन बाबू के मुँह से पाँच किस्तों में छह शब्द निकले: 'जहाज... ठीक है... लेकिन... बात करना... नामुमकिन!'
मेरे अंदर एक बार फिर हंसी उमड़ने लगी, लेकिन मैंने उसे दबाकर सफर पर ध्यान केंद्रित किया। हम अब रेलवे ट्रैक के समानांतर दौड़ रहे थे। दूर क्षितिज पर धुएं का एक गुबार एक मिनट के लिए उठता हुआ दिखाई दिया; फिर गायब हो गया। सूरज पश्चिम क्षितिज में डूब रहा था और परिदृश्य बदल रहा था। दूर क्षितिज पर पहाड़ियों की एक धुंधली श्रृंखला दिखाई दे रही थी। हमारे दाहिनी ओर एक विशाल रेत का टीला था, जिस पर इंसानी पैरों के निशान नहीं थे। यह ऊपर से नीचे तक लहरदार रेखाओं से ढका हुआ था।
शायद ऊंटों को लंबे समय तक तेज दौड़ने की आदत नहीं थी, इसलिए उनकी गति बीच-बीच में धीमी पड़ जाती थी। ऐसा होने पर, एक आदमी फिर से 'हेई! हेई!' चिल्लाता और जानवर और भी तेज दौड़ने लगते।
लगभग सवा चार बजे, एक चौकोर ढांचा दिखाई दिया। यह रेलवे ट्रैक के ठीक बगल में एक इमारत लग रही थी। अगर यह रेलवे स्टेशन नहीं था, तो यह क्या हो सकता था?
जैसे-जैसे हम करीब पहुंचते गए, यह स्पष्ट हो गया कि हम सही थे। वहां एक सिग्नल भी था। इसलिए यह एक स्टेशन होना चाहिए, और यह जगह रामदेओरा ही होनी चाहिए।
ऊंटों की चाल फिर धीमी हो गई थी। लेकिन अब उन्हें डांटने की कोई ज़रूरत नहीं थी। जिस ट्रेन को पकड़ने की हम उम्मीद कर रहे थे, वह आ चुकी थी और जा भी चुकी थी। हमें ठीक से याद नहीं था कि वह कब चली, लेकिन इसमें कोई शक नहीं था कि हमारी ट्रेन छूट गई थी।
इसका सिर्फ एक ही मतलब था। सुबह तीन बजे तक हमें इस अनजान जगह पर, सुनसान इलाके में, उस छोटी सी इमारत के बगल में इंतजार करना पड़ेगा जो खुद को स्टेशन बताने की कोशिश कर रही थी। और दूर-दूर तक कोई इंसान नजर नहीं आ रहा था।

नौ

पता चला कि स्टेशन का निर्माण कार्य चल रहा था। फिलहाल वहाँ सिर्फ एक प्लेटफार्म और वह ढाँचा था, जो असल में एक टिकट काउंटर था। पता नहीं निर्माण कार्य कब पूरा होगा। हमने टिकट काउंटर के पास एक जगह चुन ली और अपने बैग पर बैठ गए, लंबी प्रतीक्षा के लिए खुद को तैयार करते हुए। पास ही एक लकड़ी के खंभे से मिट्टी के तेल का लैंप लटका हुआ था, ताकि अंधेरा होने पर हम कम से कम एक-दूसरे को देख सकें।
स्टेशन से कुछ ही दूरी पर आबादी के कुछ संकेत दिखाई दिए। फेलुदा देखने गया, फिर लौटकर बताया कि उसने घर तो देखे, लेकिन वहाँ कोई दुकान या खाने-पीने की जगह नहीं थी। हमारे पास बस बोतलों में थोड़ा सा पानी था, और लालमोहन बाबू के पास गोजा (चावल में डूबी तली हुई मिठाई) का एक डिब्बा था। शायद हमें पूरी रात इन्हीं के सहारे गुजारनी पड़ेगी।
सूरज डूबे हुए लगभग दस मिनट हो चुके थे। जल्द ही अंधेरा हो जाएगा। गुरबचन सिंह के आने की संभावना कम ही लग रही थी, क्योंकि पिछले तीन घंटों में जोधपुर या जैसलमेर की ओर जाने वाली एक भी गाड़ी नहीं दिखी थी। अब प्लेटफार्म पर बैठकर तीन बजे आने वाली अगली ट्रेन का इंतजार करने के अलावा कोई चारा नहीं था।
फेलुदा अपने सूटकेस पर बैठा था और ट्रैक को टकटकी लगाए देख रहा था। मैंने देखा कि वह अपने बाएं हाथ से अपने दाहिने हाथ की उंगलियां चटका रहा था। जाहिर है, वह किसी बात को लेकर चिंतित या परेशान था, इसीलिए वह ज्यादा कुछ नहीं बोल रहा था।
लालमोहन बाबू ने अपना डिब्बा खोला, एक गोजा खाया और कहा, 'कौन जानता था कि ऐसा होगा? अगर आगरा से आते समय मैं आपके साथ एक ही डिब्बे में सफर न करता, तो मेरी छुट्टी का पूरा स्वरूप इस तरह नहीं बदलता, है ना?'
‘क्यों, क्या आपको कोई आपत्ति है?’ फेलुदा ने पूछा।
‘नहीं, बिलकुल नहीं!’ लालमोहन बाबू हँसे। ‘लेकिन अगर कुछ बातें थोड़ी और स्पष्ट हो जाएँ तो ज़रूर मदद मिलेगी।’

‘विशेष रूप से कौन सी चीजें?’
मुझे सच में नहीं पता कि क्या हो रहा है, है ना? मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं एक शटलकॉक हूँ—एक तरफ से दूसरी तरफ और फिर वापस। मेरा मतलब है, मुझे तो यह भी नहीं पता कि तुम कौन हो। तुम हीरो हो या विलेन? हा हा!
‘तुम जानना क्यों चाहते हो? वैसे भी, अगर तुम्हें पता चल जाए तो तुम करोगे क्या?’ फेलुदा ने मुस्कुराते हुए पूछा। ‘जब तुम उपन्यास लिखते हो, तो क्या तुम शुरुआत में ही सब कुछ बता देते हो? क्यों न तुम इस पूरे राजस्थानी अनुभव को एक उपन्यास की तरह लिखो? जब यह खत्म होगा, तो सारे रहस्य सुलझ जाएंगे।’
और मैं? क्या मैं तब भी जीवित रहूंगा, और सही सलामत रहूंगा?
‘खैर, आपने पहले ही साबित कर दिया है कि जरूरत पड़ने पर आप खरगोश से भी तेज दौड़ सकते हैं। क्या यह काफी आश्वस्त करने वाला नहीं है?’
मुझे पहले पता नहीं चला था, लेकिन हमारी बातचीत के दौरान कोई आया और उसने मिट्टी के तेल का दीपक जला दिया। उसकी रोशनी में, मैंने अचानक दो आदमियों को देखा, जो राजस्थानी पारंपरिक पोशाक पहने हुए थे और उनके सिर पर पगड़ी थी, वे हमारी ओर आ रहे थे। उनके हाथों में मोटी छड़ें थीं, जिन्हें वे ज़मीन पर थपथपा रहे थे। वे कुछ दूरी पर रुक गए, उकड़ू बैठ गए और एक ऐसी भाषा में बातचीत शुरू कर दी जो बिल्कुल समझ से परे थी।
उन आदमियों को देखकर मैं दंग रह गया। दोनों की मूंछें बहुत बड़ी थीं। वे सिर्फ ऊपर की ओर ही नहीं उठी थीं, बल्कि उनके चेहरों के दोनों ओर कम से कम चार बार मुड़ी हुई थीं। उनका नजारा किसी घड़ी के स्प्रिंग जैसा था। अगर उन्हें सीधा खींचा जाए, तो हर तरफ की लंबाई शायद अठारह इंच होगी। लालमोहन बाबू भी यह नजारा देखकर पूरी तरह से हैरान रह गए।
‘डाकू!’ फेलुदा ने धीमी आवाज़ में बुदबुदाया।
‘सचमुच?’ लालमोहन बाबू ने झटपट फ्लास्क से थोड़ा पानी निकाला और गटक लिया। 'निश्चित रूप से।'
लालमोहन बाबू ने अपने टिन का ढक्कन लगाने की कोशिश की, लेकिन वह उसे चबूतरे पर ज़ोर से गिरा दिया। इस आवाज़ से वह चौंक गया और और भी घबरा गया।
मैंने उन दोनों आदमियों को गौर से देखा। उनकी त्वचा ताज़े पॉलिश किए हुए जूते की तरह काली और चमकदार थी। उनमें से एक ने सिगरेट निकाली, उसे अपने होठों के बीच रखा और अपनी सारी जेबें टटोलने लगा, जब तक कि उसे एक माचिस की

डिब्बी नहीं मिल गई। लेकिन वह खाली निकली, इसलिए उसने उसे सड़क पर फेंक दिया।
अचानक हुई एक आवाज़ से मेरी नज़र फेलुदा पर पड़ी। उसने अपना लाइटर जलाया था और उस आदमी को दे रहा था। वह आदमी पहले तो चौंक गया, फिर सिगरेट जलाने के लिए आगे झुका। उसके बाद उसने फेलुदा से लाइटर लिया और उसे ध्यान से देखा, इधर-उधर दबाकर सही जगह ढूंढी और फिर से सिगरेट जला ली। लालमोहन बाबू बोलने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन उनकी आवाज़ रुंधी हुई सी लग रही थी।
उस आदमी ने लाइटर को कुछ बार जलाया और बुझाया, फिर उसे फेलुदा को लौटा दिया। लालमोहन बाबू अपना डिब्बा सूटकेस में वापस रखने लगा, लेकिन वह उसके हाथ से फिसल गया और इस बार पूरा डिब्बा ज़मीन पर गिर गया, जिससे पहले से दस गुना ज़्यादा शोर हुआ। फेलुदा ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने बस अपने कंधे के बैग से अपनी नीली नोटबुक निकाली और मिट्टी के तेल के दीपक की हल्की रोशनी में उसके पन्ने पलटने लगा।
अचानक मेरी नज़र टिकट खिड़की से थोड़ी दूर पर एक कंटीली झाड़ी पर पड़ी। उस पर रोशनी पड़ रही थी। यह रोशनी कहाँ से आ रही थी?
उजाला बढ़ता जा रहा था। तभी मुझे एक कार की आवाज़ सुनाई दी। वो जैसलमेर की तरफ से आ रही थी। अच्छा हुआ। शायद अब गुरबचन सिंह को एक स्पेयर टायर मिल जाए।
गाड़ी नज़र आई, फिर छोटे से स्टेशन से तेज़ी से गुज़री और जोधपुर की ओर गायब हो गई। मेरी घड़ी में साढ़े सात बज रहे थे।
फेलुदा ने अपनी नोटबुक से नज़रें उठाईं और लालमोहन बाबू की ओर देखा। ‘लालमोहन बाबू,’ उसने कहा, ‘आप उपन्यास लिखते हैं, है ना? आपको बहुत कुछ पता होगा। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि छाला क्या होता है और यह किस कारण होता है?’
‘छाला? . . . छाला?’ लालमोहन बाबू पूरी तरह से अचंभित लग रहे थे। ‘आपका मतलब है कि छाले क्यों पड़ते हैं? वैसे तो आसानी से पड़ सकते हैं। मेरा मतलब है, मान लीजिए कि सिगरेट जलाते समय आपकी उंगली जल गई. . .’
'हां। लेकिन इससे छाला क्यों पड़ना चाहिए?'
‘ओह। मैं समझ गया। क्यों? आप कारण जानना चाहते हैं?’
‘ठीक है, कोई बात नहीं। मुझे कुछ और बताओ। अगर किसी आदमी को ऊंचाई से देखा जाए, तो वह छोटा क्यों दिखाई देता है?’

लालमोहन बाबू चुपचाप देखते रहे। उस धुंधली रोशनी में भी, मैं उन्हें अनिश्चितता से अपने हाथ मलते हुए देख सकता था। दोनों राजस्थानी आदमी उसी भाषा में, उसी लहजे में बात कर रहे थे। फेलुदा की निगाहें लालमोहन बाबू के चेहरे पर टिकी हुई थीं।
लालमोहन बाबू ने अपने होंठ चाटे और फिर बोलना शुरू किया, 'आप ये सारे सवाल क्यों पूछ रहे हैं...?'
‘मेरे पास एक और सवाल है। और मुझे यकीन है कि आपको इसका जवाब पता होगा।’ लालमोहन बाबू ने कुछ नहीं कहा। ऐसा लग रहा था मानो फेलुदा ने उन्हें सम्मोहित कर लिया हो।
'आज सुबह तुम सर्किट हाउस के पीछे पेड़ों के बीच क्या कर रहे थे, मेरी खिड़की तक चुपके से क्यों आ रहे थे?'
एक पल के लिए लालमोहन बाबू स्तब्ध रह गए। फिर उनके अंगों में जान लौट आई और वे बोलने लगे। “लेकिन मैं तो आपसे मिलने ही जा रहा था!” उन्होंने बेतहाशा हाथ-पैर हिलाते हुए कहा। “मान लीजिए, श्री मित्तर, मैं आपसे ही मिलना चाहता था। लेकिन उस मोर ने इतना शोर मचाया, और फिर मैंने किसी के चीखने की आवाज़ सुनी... तो मैं एकदम चौंक गया, घबरा गया और...!”
क्या मेरे कमरे तक पहुँचने का यही एकमात्र रास्ता था? और क्या मुझसे मिलने आने के लिए पगड़ी और शॉल पहनना ज़रूरी था?
‘देखो, वो शॉल तो बस एक चादर थी। मैंने उसे अपने कमरे से लिया था। और वो पगड़ी? वो सर्किट हाउस का तौलिया था। मुझे किसी न किसी तरह का भेष बदलना ही था, समझे? वरना मैं उस आदमी की जासूसी कैसे कर पाती?’
'कौन सा आदमी?'
‘श्री ट्रॉटर। वो आदमी बहुत ही संदिग्ध है। लेकिन शुक्र है कि मैं वहाँ गया। देखिए मुझे क्या मिला, उसकी खिड़की के बाहर घास पर पड़ा हुआ। यह एक गुप्त कोड है। मैं इसे आपको देने ही वाला था, तभी उस मोर ने जोर से चिल्लाया और सब गड़बड़ कर दिया!’
मैं लालमोहन बाबू की घड़ी को ध्यान से देख रहा था। जी हां, यह वही घड़ी थी जिसे मैंने सर्किट हाउस की छत से देखा था।
लालमोहन बाबू ने अपना सूटकेस खोला और उसमें टटोला। उन्होंने एक मुड़ा हुआ कागज़ का टुकड़ा निकाला और फेलुदा को दे दिया। मैंने देखा कि उसे मोड़कर गेंद जैसा बना दिया गया था, लेकिन बाद में सीधा कर दिया गया था।

मैंने फेलुदा के कंधे के ऊपर से झाँककर देखा कि उस पर पेंसिल से क्या लिखा था। उस पर लिखा था:
आईपी 1625+U
U – M
फेलुदा ने कागज के टुकड़े को घूरते हुए गहरी भौंहें चढ़ाईं। क्या यह बीजगणित था? मुझे तो कुछ समझ ही नहीं आ रहा था। लालमोहन बाबू ने दो-तीन बार फुसफुसाते हुए कहा, 'बहुत ही संदिग्ध!'
फेलुदा मन ही मन बुदबुदा रहा था, '1625...1625...मैंने यह संख्या हाल ही में कहाँ देखी है?'
मैंने पूछा, 'क्या यह किसी टैक्सी का नंबर हो सकता है?'
‘नंबर 1625... सोलह सौ पच्चीस—!’ फेलुदा ने अपना वाक्य अधूरा छोड़ दिया और अपने कंधे के बैग पर झपटा। फिर उसने रेलवे समय सारणी निकाली और उसे मुड़े हुए पृष्ठ पर खोला। उसने अपनी उंगली तेज़ी से पृष्ठ पर चलाई और अचानक रुक गया।
'हां, यह रहा। 1625 आगमन वर्ष है।'
'कहाँ?'
‘Pokhran.’
‘तो फिर,’ मैंने टिप्पणी की, ‘“P” का अर्थ “पोखरान” हो सकता है। पोखरण में 1625। बाकी के बारे में क्या?’
‘बाकी सब. . . “आईपी” और फिर “+यू” . . . यह क्या हो सकता है. . .?’
‘मुझे दूसरी पंक्ति में मौजूद वह “एम” पसंद नहीं है,’ लालमोहन बाबू ने हमसे कहा। ‘एम अक्षर मुझे हमेशा “हत्या” शब्द की याद दिलाता है।’
‘मान लीजिए, महोदय, पहले मुझे मुख्य मुद्दे को सुलझाने दीजिए!’
लालमोहन बाबू धीमी आवाज़ में बुदबुदाते रहे, 'हत्या... रहस्य... नरसंहार... राक्षस...!'
फेलुदा कागज का टुकड़ा गोद में लिए सोच में डूबा बैठा था। लालमोहन बाबू ने गोजा का डिब्बा निकाला और मुझे फिर से दिया। जब मैंने एक गोजा ले लिया, तो वह फेलुदा की ओर मुड़े और बोले, 'वैसे, तुम्हें कैसे पता चला कि मैं तुम्हारी खिड़की तक चुपके से आया था? क्या तुमने मुझे देखा था?'

फेलुदा ने एक गोजा (एक प्रकार की पगड़ी) उठा ली। 'तुमने अपनी पगड़ी तो उतार दी, लेकिन अपने बाल नहीं संवारे। घटना के कुछ समय बाद जब मैं तुमसे मिला, तो तुम्हारे बालों की हालत देखकर मुझे काफी शक हुआ।'
लालमोहन बाबू मुस्कुराए। 'मुझे उम्मीद है कि आपको बुरा नहीं लगेगा, महोदय, लेकिन आप मुझे एक जासूस लगते हैं। शत प्रतिशत, पूर्णतः एक जासूस!'
बिना कुछ कहे, फेलुदा ने उसे अपना एक कार्ड थमा दिया। लालमोहन बाबू की आँखों में चमक आ गई।
‘ओह। प्रदोष सी. मित्तर! क्या यही आपका असली नाम है?’
'हां। क्यों, क्या इसमें कुछ खराबी है?'
नहीं, नहीं। लेकिन क्या यह अजीब नहीं है?
'क्या है?'
‘आपका नाम। देखिए, यह आपके पेशे से मेल खाता है। प्रदोष, उच्चारण प्रो-दोष। “प्रो” का अर्थ है “पेशेवर”; और “दोष” बंगाली भाषा में “अपराध” का शब्द है। “सी” का अर्थ है “देखना”, यानी “जांच करना”। तो कुल मिलाकर प्रदोष सी = पेशेवर अपराध अन्वेषक!’
‘बहुत बढ़िया। शाबाश। लेकिन “मिटर” के बारे में क्या?’
‘मित्तर? ओह, वह... मुझे इसके बारे में सोचना पड़ेगा,’ लालमोहन बाबू ने अपना सिर खुजाते हुए कहा।
‘इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। मैं इसे आपके लिए हल कर सकता हूँ। आपने टैक्सियों में मीटर देखे होंगे, है ना? यह बिल्कुल वैसा ही है—यानी, यह एक संकेतक है। तो यह सिर्फ़ जाँच ही नहीं करता, बल्कि संकेत भी देता है। यह जाँच के बाद अपराधी को पहचानता है और उस पर उंगली उठाता है। क्या आप इससे सहमत होंगे?’
‘वाह!’ लालमोहन बाबू ने ताली बजाते हुए कहा। लेकिन फेलुदा फिर से गंभीर हो गया। उसने कोड पर एक नज़र डाली, उसे अपनी कमीज़ की जेब में रखा और एक सिगरेट निकाली।
उन्होंने कहा, ‘“I” और “U” को आसानी से समझाया जा सकता है, कि “I” शायद वह व्यक्ति है जिसने कोड लिखा है। और “U” “you” है। लेकिन वह प्लस चिह्न समझ में नहीं आता। और दूसरी पंक्ति तो बिल्कुल अस्पष्ट है... देखो, टॉपशे, तुम यहाँ प्लेटफार्म पर अपना बैग फैलाकर थोड़ी देर सो क्यों नहीं लेते? तुम

भी, लालमोहन बाबू। ट्रेन अभी साढ़े सात घंटे बाद आएगी। मैं तुम्हें सही समय पर जगा दूँगा।’
यह बुरा विचार नहीं था। मैंने अपना बैग खोला और उसे फैला दिया।
जैसे ही मैं पीठ के बल लेटा, मेरी नज़र आसमान पर पड़ी और मुझे एहसास हुआ कि मैंने अपने जीवन में इतने तारे कभी नहीं देखे थे। क्या रेगिस्तान के पास होने के कारण आसमान इतना साफ़ था? शायद।
जल्द ही मेरी आँखें नींद से भारी हो गईं। तभी मैंने लालमोहन बाबू को कहते सुना, ‘मैं कहता हूँ, ऊँट की सवारी करने से मेरे जोड़ों में दर्द हो रहा है!’ फिर मुझे लगा जैसे उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा, ‘एम का मतलब हत्या है।’ इसके बाद मैं सो गया।
मुझे याद नहीं कि अगली बात क्या थी, फेलुदा मुझे जगाने की कोशिश कर रहा था। 'टॉपशे! उठो, ट्रेन आ रही है!'
मैं झटपट खड़ा हुआ और अपना बैग घसीटने लगा। जब तक मैंने पट्टियाँ बाँधीं, ट्रेन की हेडलाइट दिखाई देने लगी थी।

दस

यह मीटर गेज पर चलने वाली एक यात्री ट्रेन थी। इसलिए इसके डिब्बे काफी छोटे थे। यात्रियों की संख्या भी ज्यादा नहीं थी; इसीलिए जब हमें एक खाली प्रथम श्रेणी का डिब्बा मिला, तो मुझे आश्चर्य नहीं हुआ।
डिब्बे के अंदर अंधेरा था। हमने बटन ढूंढने की कोशिश की, मिल गया और दबाया — पर कोई फायदा नहीं हुआ। लालमोहन बाबू ने कहा, 'रेलवे के डिब्बों में बल्ब तो सभ्य इलाकों में भी गायब हो जाते हैं। इस लुटेरों की धरती पर तो बल्ब मिलने की उम्मीद ही मत करो!'
‘तुम दोनों बेंचों पर बैठ जाओ। मैं ज़मीन पर दरी बिछाकर काम चला लूँगा। हमारे पास पूरे छह घंटे हैं—एक अच्छी, लंबी झपकी लेने के लिए काफ़ी समय है!’ फेलुदा ने कहा।
लालमोहन बाबू ने इस योजना पर हल्की आपत्ति जताते हुए कहा, ‘आपको ज़मीन पर क्यों लेटना चाहिए? मुझे...!’ लेकिन फेलुदा ने इतनी सख्ती से कहा, ‘बिल्कुल नहीं!’ कि उन्होंने और कुछ नहीं कहा। मैंने देखा कि उन्होंने अपना बैग एक बेंच पर फैला दिया, न केवल फेलुदा की बातों के कारण, बल्कि शायद अपने जोड़ों के दर्द के कारण भी।
ट्रेन प्लेटफार्म से चलने लगी। स्टेशन से निकलने के एक मिनट के भीतर ही अचानक एक शख्स हमारी बोगी के फुटबोर्ड पर कूद पड़ा। लालमोहन बाबू हंसते हुए बोले, 'अरे, यह तो आरक्षित डिब्बा है। सिर्फ महिलाओं के लिए!'
फिर दरवाजा तेजी से खुला और टॉर्च की तेज रोशनी से हमारी आंखें कुछ पल के लिए चौंधिया गईं। हमने एक हाथ को अपनी ओर आते देखा। उस रोशनी में बंदूक की नोक चमक रही थी। हम सबने अपने हाथ सिर के ऊपर उठा लिए।
‘उठो, प्यारे बच्चों! दरवाजा खुला है, ट्रेन से बाहर निकलो। तुम सब!’ यह आवाज मंदार बोस की थी।
‘लेकिन...लेकिन ट्रेन तो अभी भी चल रही है!’ लालमोहन बाबू ने कांपती हुई आवाज में कहा।

‘चुप रहो!’ मंदार बोस दहाड़े और थोड़ा और करीब आ गए। टॉर्च की रोशनी लगातार हमारे चेहरों पर पड़ रही थी, कुछ पलों से ज्यादा देर तक स्थिर नहीं हो रही थी।
‘क्या तुम मज़ाक कर रहे हो?’ श्री बोस ने आगे कहा। ‘तुम कलकत्ता में क्या करते हो? चलती बसों में चढ़ते-उतरते नहीं हो? उठो, मैं तुम्हें बता रहा हूँ!’
जैसे ही उन्होंने बोलना समाप्त किया, कुछ ऐसा हुआ जिसकी बिल्कुल अप्रत्याशितता थी और मैं दंग रह गया। मैं इसे जीवन भर नहीं भूलूंगा। फेलुदा का दाहिना हाथ पलक झपकते ही नीचे आया। उन्होंने दरी का एक कोना पकड़ा और उसे ज़मीन से उठा लिया। परिणामस्वरूप, मंदार बोस का संतुलन बिगड़ गया। उनके पैर फिसले, फिर एक पल के लिए हवा में उठे, और फिर वे गिर पड़े। उनके शरीर का ऊपरी हिस्सा गाड़ी की दीवार से ज़ोर से टकराया। उसी समय, रिवॉल्वर उनके हाथ से गिर गई। वह लालमोहन बाबू की बेंच पर गिरी, और टॉर्च उनके बाएं हाथ से ज़मीन पर गिर गई।
यह सब पलक झपकते ही हो गया। मंदार बोस के ज़मीन पर गिरने से पहले ही, फेलुदा उछल पड़ा और अपनी जैकेट की जेब से निकली रिवॉल्वर को कसकर पकड़ लिया।
‘उठो!’ इस बार फेलूदा ने मंदार बोस को आदेश दिया। मीटर गेज की ट्रेन रेगिस्तान में हिचकोले खाती हुई शोर मचा रही थी। इसी बीच लालमोहन बाबू ने श्री बोस की रिवॉल्वर छीनकर अपने जापान एयरलाइंस के बैग में रख ली थी। ‘उठो!’ फेलुदा ने फिर से चिल्लाया।
टॉर्च ज़मीन पर लुढ़क रही थी। मुझे लगा कि इसे श्री बोस पर फोकस करना चाहिए, वरना वो अंधेरे का फ़ायदा उठाकर हमें धोखा देने की कोशिश कर सकते हैं। इसी सोच के चलते मैं उसे उठाने के लिए झुका—जिससे एक भयानक हादसा हो गया। आज भी जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।
मंदार बोस मेरी बेंच के सामने बैठे थे। जैसे ही मैं झुका, वे अचानक आगे बढ़े, मुझे पकड़ लिया और खड़े हो गए, मुझे मजबूती से अपने सामने थामे हुए। नतीजतन, मैं उनके लिए एक सुरक्षा कवच बन गया। ऐसे नाजुक मौके पर भी, मैं उनकी चालाकी की तारीफ किए बिना नहीं रह सका। यह स्पष्ट था कि भले ही पहला राउंड अप्रत्याशित रूप से फेलुदा के नाम हो गया था, लेकिन दूसरे राउंड में

उनकी स्थिति निश्चित रूप से कठिन थी। और इसके लिए पूरी तरह से मैं ही जिम्मेदार था।
मंदार बोस ने मुझे कसकर पकड़ रखा था और खुले दरवाजे की ओर बढ़ने लगे। मुझे अपने कंधे पर किसी नुकीली चीज का दर्द महसूस हुआ। तभी मुझे एहसास हुआ कि यह उनके नाखूनों में से एक था। अचानक मुझे याद आया कि नन्हा नीलू अपने हाथ में दर्द होने की शिकायत कर रहा था।
अब हम दरवाजे के बिल्कुल करीब खड़े थे। मुझे रात की कड़ाके की ठंड महसूस हो रही थी। वह मेरे बाएं कंधे से टकरा रही थी।
मंदार बोस ने एक और कदम बढ़ाया। फेलुदा की बंदूक उनकी ओर तनी हुई थी, लेकिन अब फेलुदा कुछ भी नहीं कर सकता था। ट्रेन के इधर-उधर हिलने के कारण मशाल अभी भी ज़मीन पर लुढ़क रही थी।
अचानक, मैं ज़ोर से आगे की ओर उछल गया। इससे मेरी टक्कर फेलुदा से हो गई। एक सेकंड बाद आई आवाज़ से मुझे पता चला कि मंदार बोस चलती ट्रेन से कूद गए थे। लेकिन मैं यह नहीं बता सका कि वे जीवित बचे थे या नहीं।
फेलुदा दरवाजे पर गया और बाहर झाँका। कुछ मिनट बाद वह वापस आया, अपनी रिवाल्वर वापस रखी और बोला, 'मुझे उम्मीद है कि वह उसकी कुछ हड्डियाँ तोड़ देगा, वरना यह बहुत अफसोस की बात होगी।'
लालमोहन बाबू थोड़ा जोर से हँसे और बोले, 'क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था कि वह आदमी संदिग्ध था?'
मैंने फ्लास्क से थोड़ा पानी पिया। मेरी धड़कन और सांसें धीरे-धीरे सामान्य हो रही थीं। कुछ ही मिनटों में जो कुछ घटित हुआ था, उसकी भयावहता को समझना मेरे लिए अभी भी मुश्किल था।
फेलुदा ने कहा, “इस बार वो सिर्फ प्यारे तोपेश की वजह से बच गया, वरना मैं अपनी बंदूक से उससे पूरा जुर्म कबूल करवा लेता। लेकिन...” वो रुक गया। थोड़ी देर रुकने के बाद उसने कहा, “जब मैं किसी खतरे का सामना करता हूँ, तो मेरा दिमाग बहुत तेज़ी से काम करने लगता है। मैंने पहले भी ऐसा देखा है। अब मुझे समझ आ रहा है कि उस सांकेतिक भाषा का क्या मतलब था।”
‘सचमुच?’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से पूछा।
‘यह वास्तव में काफी सरल है। “I” वह व्यक्ति है जो नोट लिख रहा है, “P” पोखरण है, “U” “आप” हैं, और “M” “मित्तर” हैं। प्रदोष मित्तर।’
‘और प्लस और माइनस के चिह्न?’

‘आईपी 1625 + यू। इसका मतलब है “मैं पोखरण 4.25 बजे पहुँच रहा हूँ। आपको मेरे साथ आना होगा।”’
‘और यू-एम? इसका क्या मतलब है?’
‘यह तो और भी सरल है। इसका मतलब है “आप मिटर से छुटकारा पा लें”।’
‘छुटकारा पाना...?’ लालमोहन बाबू मुश्किल से बोल पाए। ‘आपका मतलब है कि माइनस का चिन्ह हत्या को दर्शाता है?’
नहीं, ऐसा ज़रूरी नहीं है। अगर आपको चलती ट्रेन से कूदने के लिए मजबूर किया जाता, तो शायद आप घायल हो जाते। और वैसे भी, अगली ट्रेन के लिए आपको चौबीस घंटे और इंतज़ार करना पड़ता। इतने समय में बदमाश अपना काम पूरा कर लेते। उनका असली मकसद हमें जैसलमेर जाने से रोकना था। इसीलिए उन्होंने सड़क पर कीलें और पिनें बिखेर दी थीं। लेकिन जब उन्हें एहसास हुआ कि इससे काम नहीं बना, तो बोस ने हमें ट्रेन से उतारने की कोशिश की।
अचानक मुझे एक गंध का एहसास हुआ। 'मुझे सिगार की गंध आ रही है, फेलुदा!' मैंने कहा।
'हां, जैसे ही वह आदमी डिब्बे में कूदा, मुझे वह गंध आ गई। सर्किट हाउस में भी साफ पता चल रहा था कि कोई सिगार पी रहा है। मुकुल को जो सुनहरी पन्नी मिली थी, याद है? सिगार उसी तरह की पन्नी में लपेटे जाते हैं।'
और एक और बात है। उसका एक नाखून बाकी नाखूनों से काफी लंबा है। मेरा कंधा भी नीलू के हाथ की तरह बुरी तरह से खरोंच गया होगा।
‘ठीक है, लेकिन ये “मैं” कौन है जो सारे निर्देश दे रहा है?’ लालमोहन बाबू जानना चाहते थे।
फेलुदा की आवाज गंभीर लग रही थी जब उसने बात की। 'सर्किट हाउस में किसी ने मेरे लिए जो चेतावनी छोड़ी थी, और यह हस्तलिखित कोड, दोनों एक ही व्यक्ति की ओर इशारा करते हैं।'
‘कौन?’ लालमोहन बाबू और मैं एक साथ चिल्लाए। ‘डॉ. हेमंगा मोहन हाजरा।’
बाकी की रात बिना किसी हलचल के गुज़र गई। मैं करीब तीन घंटे सोया। जब उठा तो बाहर तेज़ धूप थी। फेलुदा ज़मीन पर नहीं लेटा था। वह मेरी बेंच के एक कोने में बैठा खिड़की से बाहर देख रहा था। उसकी गोद में उसकी नीली नोटबुक थी और हाथों में दो नोट थे। एक चेतावनी थी और दूसरा वह पत्र जो डॉ. हाजरा ने जोधपुर से निकलने से पहले हमारे लिए छोड़ा था। मैंने घड़ी देखी। पौने सात बज रहे थे। लालमोहन बाबू अभी भी गहरी नींद में सो रहे थे। मुझे बहुत भूख

लगी थी, लेकिन और गोजा खाने की इच्छा नहीं थी। हम नौ बजे जैसलमेर पहुँचेंगे। तब तक मुझे भूख की इस पीड़ा को किसी तरह सहना ही होगा।
बाहर का नज़ारा सचमुच विचित्र था। मीलों तक फैला हुआ भूभाग लहरदार था— दूर-दूर तक एक भी घर नज़र नहीं आ रहा था, एक भी इंसान नहीं, यहाँ तक कि एक भी पेड़ नहीं। फिर भी मैं इसे रेगिस्तान नहीं कह सकता था क्योंकि, हालांकि थोड़ी रेत थी, लेकिन ज़्यादातर हिस्सा सूखी, पीली घास, लाल मिट्टी और काले- लाल पत्थरों से बना था। यह अविश्वसनीय लग रहा था कि ऐसे भूभाग के बाद हमें फिर से कोई पूरा शहर मिल जाएगा।
ट्रेन जेठाचंदन नामक स्टेशन पर रुकी। मैंने रेलवे समय सारिणी खोली और पाया कि अगला स्टेशन थायात हमीरा था, और उसके बाद वाला स्टेशन जैसलमेर था। जेठाचंदन के प्लेटफार्म पर न कोई दुकानें थीं, न कोई फेरीवाला, न कोई कुली, न कोई यात्री। ऐसा लग रहा था मानो हमारी ट्रेन किसी ऐसी जगह पर आ गई हो जिसे अभी तक इंसान ने खोजा ही न हो। यह चांद पर रॉकेट के उतरने जैसा ही था। ट्रेन के दोबारा चलने के कुछ ही देर बाद लालमोहन बाबू जाग गए। उन्होंने जम्हाई लेते हुए कहा, “मुझे एक बहुत ही अद्भुत सपना आया। डाकुओं का एक गिरोह था, जिनमें से हर एक की मूंछें भेड़ के सींगों जैसी लग रही थीं। मैंने उन्हें सम्मोहित कर लिया था और उन्हें एक किले से होकर ले जा रहा था। वहाँ एक सुरंग थी। हम सुरंग से होते हुए एक भूमिगत कक्ष में पहुँचे। मुझे पता था कि उस कक्ष में कोई खजाना दबा हुआ है, लेकिन मुझे बस एक ऊँट ज़मीन पर बैठा हुआ गोजा चबाता हुआ दिखाई दे रहा था!”
‘तुम्हें यह कैसे पता चला?’ फेलुदा ने पूछा। ‘क्या ऊंट ने अपना मुंह खोलकर तुम्हें दिखाया कि वह क्या चबा रहा था?’
नहीं, नहीं। लेकिन मैंने अपना टिन देखा—वह ऊंट के सामने पड़ा हुआ था! थायत हमीरा से निकलने के कुछ ही देर बाद, दूर से एक पहाड़ी की धुंधली आकृति दिखाई देने लगी। यह राजस्थान का एक समतल शिखर वाला पठार था। ऐसा प्रतीत हुआ कि हमारी ट्रेन उसी दिशा में जा रही है।
लगभग आठ बजे, हमें उस पहाड़ी की चोटी पर धुंधली सी कोई संरचना दिखाई दी। धीरे-धीरे यह स्पष्ट हो गया कि वह एक किला था। वह पहाड़ी की चोटी पर मुकुट की तरह खड़ा था, जिसका चपटा शिखर चारों ओर फैला हुआ था। वह सुबह के तेज सूरज की रोशनी में नहाया हुआ था, जो चकाचौंध भरे आकाश से सीधे उस पर पड़ रही थी। अनायास ही मेरे मुँह से तीन शब्द निकल गए: 'सुनहरा किला!'

‘जी हां,’ फेलुदा ने मुझसे कहा। ‘यही राजस्थान का इकलौता स्वर्ण किला है। जोधपुर की उस दुकान में रखे उस कटोरे ने मेरे मन में शंका पैदा कर दी थी। फिर मैंने गाइड बुक में देखा, और मेरी शंका सही साबित हुई। किला और कटोरा दोनों एक ही पत्थर से बने थे—पीले बलुआ पत्थर से। अगर मुकुल सचमुच जातिस्मार है, और अगर सचमुच कोई पूर्व जन्म होता है, तो मुझे लगता है कि उसका जन्म इसी क्षेत्र में कहीं हुआ होगा।’
‘लेकिन क्या डॉ. हाजरा को यह बात पता है?’ मैंने पूछा।
फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया। वह अब भी किले को घूर रहा था। अंत में उसने कहा, 'तोप्शे, तुम्हें कुछ पता है? उस सुनहरी रोशनी में कुछ खास बात है। इसकी वजह से मुझे मकड़ी के जाले का पूरा पैटर्न बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है!'

ग्यारह

जैसलमेर में ट्रेन से उतरते ही हमने सबसे पहले एक चाय की दुकान पर रुककर चाय और मिठाई खाई। मिठाई एक नई तरह की थी, जो हमने पहले कभी नहीं खाई थी। फेलुदा ने कहा कि इसमें ग्लूकोज है, इसलिए यह हमारे लिए अच्छी रहेगी। आगे काफी भागदौड़ करनी थी, ग्लूकोज से हमें अतिरिक्त ऊर्जा मिलेगी।
स्टेशन से बाहर निकलते ही हमने देखा कि किराए पर लेने के लिए एक भी वाहन उपलब्ध नहीं था—न तांगा, न इक्का, न साइकिल रिक्शा, न टैक्सी। एक जीप खड़ी थी, लेकिन जाहिर तौर पर वह किराए पर देने के लिए नहीं थी। ट्रेन से उतरते ही मैंने बाहर एक काली एम्बेसडर कार खड़ी देखी थी। लेकिन अब वह भी गायब थी। फेलुदा ने कहा, 'यह एक छोटा सा कस्बा है। मुझे नहीं लगता कि एक जगह दूसरी जगह से बहुत दूर है। मेरी गाइड बुक में लिखा है कि यहाँ एक डाक बंगला है। चलो जाकर उसे ढूंढते हैं।'
हम अपना सामान लेकर चल पड़े। थोड़ी ही देर में हमें एक पेट्रोल पंप मिला, जहाँ एक आदमी ने हमें रास्ता बताया। उसने कहा कि डाक बंगले तक पहुँचने के लिए हमें पहाड़ी पर चढ़ने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। बंगला पहाड़ी के दक्षिण में मैदान में स्थित था। जैसे ही हम दोबारा चलने लगे, फेलुदा ने रेत पर टायर के निशानों को देखकर कहा, 'वह एम्बेसडर कार ज़रूर इसी रास्ते से आई होगी!'
लगभग पंद्रह मिनट बाद, हम एक बंगले के पास पहुँचे। उसके द्वार पर लगी एक लकड़ी की तख्ती ने हमें बताया कि हम सही जगह पर आ गए हैं। उसके सामने एक काली एम्बेसडर कार खड़ी थी।
खाकी कमीज और छोटी धोती पहने एक बूढ़ा आदमी एक बाहरी कमरे से बाहर आया। उसके सिर पर पगड़ी थी। शायद उसने हमें आते हुए देख लिया था। फेलुदा ने उससे हिंदी में पूछा कि क्या वह चौकीदार है। उस आदमी ने सिर हिलाकर हाँ कहा। जिस तरह से वह हमें देख रहा था, उससे लग रहा था कि हमारा आना अप्रत्याशित था, और वह हमारे अचानक आने से पूरी तरह सहमत नहीं था, क्योंकि बिना पूर्व अनुमति के बंगले में किसी को भी रहने की इजाजत नहीं थी।

फेलुदा ने वहाँ रुकने के बारे में कुछ नहीं कहा। उसने उस आदमी से कहा कि हम बस अपना सामान बंगले में रखना चाहते हैं। फिर हम ज़रूरी अनुमति लेने की कोशिश करेंगे। चौकीदार ने कहा, 'इसके लिए आपको राजा के सचिव से मिलना होगा,' और हमें सही दिशा दिखा दी। पीले बलुआ पत्थर से बना महल कुछ दूरी पर था; लेकिन उसके कुछ हिस्से पेड़ों के ऊपर से दिखाई दे रहे थे।
चौकीदार ने हमारा सामान वहाँ छोड़ने पर कोई आपत्ति नहीं जताई। उसने हमें एक छोटे से कमरे में ले जाकर अपने सूटकेस और बैग रख दिए। फिर हमने अपनी बोतलों में ताजा पानी भरा, उन्हें अपने कंधों पर टांगा और उससे किले का रास्ता पूछा।
‘क्या तुम किले में जाना चाहते हो?’
सवाल गलियारे के आखिरी छोर से आया। एक सज्जन अभी-अभी एक कमरे से बाहर आए थे। उनकी उम्र चालीस से ज़्यादा नहीं लग रही थी, उनका रंग साफ़ था और नाक नुकीली थी, जिसके नीचे पतली मूंछें थीं, जो बहुत करीने से कटी हुई थीं। एक पल बाद, उनके साथ एक अधेड़ उम्र का आदमी भी आ गया, जिसके हाथ में एक छड़ी थी — वैसी ही जैसी हमने जोधपुर के बाज़ार में देखी थी—और उसने एक अजीब सा, थोड़ा ढीला-ढाला काला सूट पहना हुआ था। मैं यह नहीं बता सकता था कि वे देश के किस हिस्से से आए होंगे। दूसरा आदमी थोड़ा लंगड़ा रहा था, जिससे छड़ी की ज़रूरत समझ में आ गई।
'हां, किले को देखना दिलचस्प हो सकता है,' फेलुदा ने कहा।
'हमारे साथ आइए, हम उस तरफ जा रहे हैं।'
फेलुदा ने कुछ पल सोचा, फिर सहमति जताई। उन्होंने कहा, 'बहुत-बहुत धन्यवाद, यह आपकी बहुत बड़ी मेहरबानी है।'
जब हम कार की ओर जा रहे थे, लालमोहन बाबू ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा: 'मुझे उम्मीद है कि ये लोग हमें चलती कार से बाहर फेंकने की कोशिश नहीं करेंगे!'
गाड़ी ने किले की ओर अपनी यात्रा शुरू की। लाठी लिए हुए आदमी ने हमसे पूछा, 'क्या आप कलकत्ता से हैं?'
‘हां,’ फेलुदा ने उत्तर दिया।
हमारे बाईं ओर, दूर रेत से उठते हुए पत्थर के खंभे दिखाई दे रहे थे। हमने देवीकुंड में भी कुछ ऐसा ही देखा था। फेलुदा ने बताया कि राजस्थान में इस तरह की संरचनाएं काफी आम हैं।

हमारी कार पहाड़ी पर चढ़ने लगी। लगभग एक मिनट बाद, हमें एक और कार की आवाज़ सुनाई दी। वह ज़ोर-ज़ोर से हॉर्न बजा रही थी। यह थोड़ा आश्चर्यजनक था, क्योंकि हम इतनी धीमी गति से नहीं चल रहे थे और न ही उसके रास्ते में आ रहे थे। फेलुदा पीछे की सीट पर उन दोनों सज्जनों के साथ बैठा था। वह मुड़ा, शीशे से झाँका और अचानक हमारे ड्राइवर से बोला, 'रुको! कृपया रुको!'
हमारी कार सड़क के किनारे रुक गई। तभी एक टैक्सी आई और हमारे दाहिनी ओर आकर रुक गई। टैक्सी का स्टीयरिंग व्हील गुरबचन सिंह के हाथ में था, जिन्होंने मुस्कुराते हुए हमारा अभिवादन किया।
हम तीनों गाड़ी से बाहर निकले। फेलुदा ने उन दोनों आदमियों से कहा, 'आपकी मदद के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। लेकिन यह हमारी अपनी टैक्सी है। जैसलमेर जाते समय यह रास्ते में खराब हो गई थी, लेकिन अब यह हमारे पास आ गई है।'
जब हम वापस उसकी कार में बैठे, तो गुरबचन ने हमें बताया कि उस सुबह साढ़े छह बजे उसने जैसलमेर से लौट रही एक और टैक्सी देखी। वह उसके ड्राइवर को जानता था और उससे एक स्पेयर टायर लेने में कामयाब रहा। फिर उसने दो घंटे में नब्बे मील की दूरी तय की। जैसलमेर पहुँचकर वह पेट्रोल पंप पर इंतज़ार करता रहा, जब तक कि उसने हमें काली एम्बेसडर कार में नहीं देख लिया। थोड़ी देर बाद, हम खुद को एक बाजार में पाते हैं। चारों ओर दुकानें थीं, एक लाउडस्पीकर पर हिंदी गाना बज रहा था और एक छोटे सिनेमाघर के बाहर एक हिंदी फिल्म का पोस्टर लगा हुआ था।
‘क्या आप किला देखना चाहते हैं?’ गुरबचन ने पूछा।
‘हां,’ फेलुदा ने उससे कहा। गुरबचन ने टैक्सी रोकी और कहा, ‘यही इसका द्वार है।’
हमारे दाहिनी ओर एक विशाल द्वार था, जिसके आगे पत्थरों से बनी एक सड़क थी, जो दूसरे द्वार तक जाती थी। मुझे एहसास हुआ कि यही किले का असली प्रवेश द्वार था, पहला द्वार तो केवल सामने का द्वार था। प्रवेश द्वार के पीछे, तेजी से ऊपर की ओर उठता हुआ, जैसलमेर का स्वर्णिम किला था।
मुख्य द्वार के बाहर एक पहरेदार खड़ा था। फेलुदा उसके पास गया और उससे पूछा कि क्या उसने उस सुबह एक आदमी को एक छोटे लड़के के साथ देखा था। उसने मुकुल की लंबाई की ओर इशारा किया।
‘जी जनाब, वे यहाँ थे। लेकिन अब वे चले गए हैं,’ गार्ड ने जवाब दिया। ‘वे कब गए?’

लगभग आधे घंटे पहले।
क्या वे कार से आए थे?
जी हाँ, महोदय। टैक्सी में।
वे किस रास्ते गए थे? क्या आपको याद है?
गार्ड ने सिर हिलाया और पश्चिम की ओर जाने वाली सड़क की ओर इशारा किया। हम वापस कार में बैठे और उस सड़क पर चल पड़े, छोटी-छोटी गलियों और दुकानों से गुज़रते हुए। लालमोहन बाबू गुरबचन के बगल में बैठे थे। मैं और फेलूदा पीछे की सीट पर थे। कुछ मिनट बाद, फेलूदा ने अचानक पूछा, 'तुम अपना हथियार साथ तो नहीं लाए?'
इस तरह के प्रश्न से चौंककर लालमोहन बाबू ने कहा, 'वह छुरा? नहीं, माफ कीजिए, मेरा मतलब उस नेपाली छुरे से है?'
जी हाँ, महोदय। आपका खंजर।
‘वो मेरे सूटकेस में है।’
‘ऐसी स्थिति में, अपने जापान एयरलाइंस के बैग से मंदार बोस की रिवॉल्वर निकालें और उसे अपनी बेल्ट में छिपा लें। ध्यान रखें कि वह दिखाई न दे।’ लालमोहन बाबू की हरकतों से यह स्पष्ट हो गया कि वह फेलुदा के निर्देशों का पालन कर रहा था। मैं उसका चेहरा देखने के लिए बेताब था, लेकिन देख नहीं सका।
‘चिंता मत करो,’ फेलुदा ने आश्वस्त करते हुए कहा, ‘अगर हालात बिगड़ते हैं, तो तुम्हें बस वह बंदूक निकालनी है और उसे अपने सामने तान देना है।’
‘अगर मेरे पीछे... तो क्या होगा?’
अगर आपको अपने पीछे कोई आवाज़ सुनाई दे, तो बस मुड़ जाइए। फिर आपका "पीछे" आपका "आगे" बन जाएगा, समझे?
और आप? क्या आप... मतलब, आज आप अहिंसक रहेंगे?
'कि निर्भर करता है।'
हमारी टैक्सी बाज़ार को पीछे छोड़कर एक खुले मैदान में आ गई। हमने रास्ते में कुछ लोगों से पूछताछ की और पता चला कि दूसरी टैक्सी को इस तरफ आते देखा गया था। इसके अलावा, हमने रेत में समय-समय पर टायरों के निशान भी देखे, जिससे हमें पता चला कि हम उसी रास्ते पर चल रहे हैं जिस पर डॉ. हेमंगा हाजरा गए थे।

गुरबचन सिंह ने और जानकारी दी। उन्होंने कहा, ‘यह मोहनगढ़ जाने का रास्ता है। मैं एक मील और गाड़ी चला सकता हूँ, लेकिन उसके बाद सड़क बहुत खराब हो जाती है। उस सड़क पर केवल जीप ही चल सकती हैं, और कुछ नहीं।’
लेकिन हमें एक मील भी आगे नहीं जाना पड़ा। थोड़ी देर बाद ही हमें सड़क के एक किनारे एक टैक्सी खड़ी दिखाई दी। हमारे दाहिनी ओर, कुछ दूरी पर, कई पुराने, वीरान पत्थर के मकान थे। सभी की छतें ढह चुकी थीं। स्पष्ट था कि यह कभी एक गाँव रहा होगा। हमने अन्य जगहों पर भी ऐसे ही गाँव देखे थे। लोग बहुत समय पहले ही वहाँ से चले गए थे। इन मकानों की दीवारें केवल इसलिए खड़ी थीं क्योंकि वे पत्थर की बनी थीं।
हमने गुरबचन को रुकने के लिए कहा और घरों की ओर चल दिए। मैंने गुरबचन को अपनी कार से उतरकर दूसरी कार की ओर जाते देखा, शायद उसके ड्राइवर से बात करने के लिए।
चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। अगर मैं अपना सिर घुमाता, तो मुझे अपने पीछे पहाड़ी की चोटी पर किला दिखाई देता। सड़क के पार एक और पहाड़ी खड़ी ढलान पर थी। उसके तल पर, एक विस्तृत खुले मैदान में, ज़मीन में धंसे हुए पीले पत्थरों की कतारें फैली हुई थीं। वे विशाल मसाला पीसने वाली मशीनों की तरह दिख रही थीं। 'योद्धाओं की कब्रें,' फेलुदा ने फुसफुसाते हुए कहा। लालमोहन बाबू ने कर्कश लेकिन तीखी आवाज में कहा, 'मुझे... मुझे... निम्न रक्तचाप है!'
‘चिंता मत करो,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। ‘यह जल्द ही और ऊपर उठेगा, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, और ठीक उसी जगह रुक जाएगा जहाँ इसे रुकना चाहिए।’
अब हम घरों के काफी करीब पहुँच चुके थे। एक पगडंडी घरों के बीच से होकर गुजर रही थी। मुझे एहसास हुआ कि यह गाँव बंगाल में देखे गए गाँवों से अलग था। इसकी बनावट सरल और ज्यामितीय थी।
लेकिन दूसरी टैक्सी में सफर करने वाले लोग कहाँ थे? मुकुल कहाँ था? और डॉ. हाजरा कहाँ थीं?
क्या मुकुल के साथ कुछ हुआ था?
अचानक मुझे एक आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ धीमी थी, लेकिन अगर मैं ध्यान से सुनता तो सुनाई देती: धड़, धड़, धड़, धड़!

हम बहुत सावधानी से और चुपचाप चलते रहे। फिर हम एक चौराहे पर पहुँचे जहाँ दो सड़कें आपस में मिलती थीं। शोर दाईं ओर से आ रहा था। सड़क के किनारे दस-बारह मकान खड़े थे। उनकी दीवारों के बीच बड़े-बड़े खाली स्थान थे, जहाँ कभी दरवाजे हुआ करते होंगे।
हम दाईं ओर मुड़े और दबे पांव चलना शुरू कर दिया।
फेलुदा ने दांत पीसते हुए लगभग सुनाई न देने वाली आवाज़ में एक शब्द कहा, 'रिवॉल्वर!' मैंने देखा कि उसका हाथ जैकेट के नीचे गायब हो गया था। मेरी नज़र के कोने से मैंने लालमोहन बाबू के हाथ में एक रिवॉल्वर देखी, जो बुरी तरह कांप रहा था।
अचानक एक ज़ोरदार आवाज़ से हम रुक गए। अगले ही पल, हमारे बाईं ओर दूर स्थित एक घर के दरवाज़े से मुकुल तेज़ी से दौड़ता हुआ दिखाई दिया। फिर उसने हमें देखा, और भी तेज़ दौड़ा, और फ़ेलुदा की छाती पर गिर पड़ा। वह हांफ रहा था, उसका चेहरा पीला पड़ गया था।
मैंने उससे पूछने के लिए अपना मुंह खोला कि क्या हुआ था, लेकिन फेलुदा ने अपनी उंगली अपने होठों पर रख ली और मुझे जोर से बोलने से रोक दिया।
‘मेरे लौटने तक इसका ख्याल रखना!’ उसने लालमोहन बाबू से फुसफुसाते हुए कहा और मुकुल को उनके भरोसे छोड़कर चला गया। फिर वह उस घर की ओर चल पड़ा जहाँ से हमने अभी-अभी मुकुल को निकलते देखा था। मैं फेलुदा के पीछे-पीछे गया। वह अजीब सी आवाज़ तेज़ होती जा रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई पत्थर उठा रहा हो। धड़ाम! धमाका! खनखनाहट! यह सिलसिला जारी रहा।
जैसे ही हम घर के पास पहुँचे, फेलुदा दीवार से सटकर लेट गया। कुछ कदम चलने के बाद, हम टूटे हुए दरवाजे की जगह से झाँक पाए। डॉ. हाजरा, जिनकी पीठ हमारी ओर थी, मलबे के एक विशाल ढेर पर झुके हुए थे। पागलों की तरह, वे उस ढेर से एक-एक पत्थर हटा रहे थे और हर एक को अलग फेंक रहे थे। उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि हम इतने करीब खड़े हैं।
फेलुदा ने एक और कदम बढ़ाया और डॉ. हाजरा पर अपनी रिवॉल्वर तान दी। अचानक, हमें अपने सिर के ऊपर फड़फड़ाहट की आवाज सुनाई दी।
एक मोर बाड़े की दीवार से झपट्टा मारकर नीचे आया। उतरते ही वह तेजी से डॉ. हाजरा की ओर दौड़ा और उन पर हमला कर दिया, उनके बाएं कान के ठीक नीचे जोर से चोंच मारी। डॉ. हाजरा, जो अभी भी पत्थरों पर झुके हुए थे, दर्द से चीखने के

अलावा कुछ नहीं कर सके और उन्होंने अपना हाथ उस जगह पर दबा दिया। देखते ही देखते उनकी सफेद कमीज की कलाई लाल हो गई।
लेकिन मोर अभी रुका नहीं था। वह उन पर हमला करता रहा, जहाँ भी मौका मिलता चोंच मारता रहा। डॉक्टर हाजरा मुड़े, भागने की कोशिश में दरवाजे की ओर एक कदम बढ़ाया, और हमें देख लिया। वे ऐसे चौंक गए जैसे उन्होंने दो भूत देख लिए हों। हम एक तरफ हट गए। मोर उनका पीछा करते हुए दरवाजे से बाहर निकल गया।
'क्या आपने कभी सोचा था कि एक मोर अपना घोंसला उसी जगह पर बनाएगा - और उस घोंसले में उसके अंडे होंगे - जहाँ खजाना दफनाया गया था?'
फेलुदा की आवाज़ लोहे की तरह ठंडी थी। उसकी रिवॉल्वर डॉ. हाजरा पर तनी हुई थी। अब मुझे स्पष्ट हो गया था कि इस पूरे मामले में असली दोषी डॉ. हाजरा ही थे—और उन्हें पहले ही उचित दंड मिल चुका था—लेकिन कई और बातें थीं जो अभी भी अस्पष्ट लग रही थीं, जिससे मेरा सिर चकराने लगा।
फिर हमें एक कार की आवाज सुनाई दी।
डॉक्टर हाजरा जमीन पर गिर पड़े। वे पेट के बल लेटे हुए थे। उन्होंने अपना सिर उठाया और धीरे से फेलुदा की ओर घुमाया। उनका बायां हाथ, जिसमें खून से सना हुआ रूमाल था, अभी भी उनके घाव पर दबा हुआ था।
‘तुम्हारे लिए अब बिल्कुल भी उम्मीद नहीं बची है। आशा है तुम यह समझते हो? बचने के सारे रास्ते बंद हो चुके हैं, और...’
फेलुदा के बोलने से पहले ही, डॉ. हाजरा उछलकर खड़े हो गए और उस वीरान मकान से दूर, विपरीत दिशा में अंधाधुंध भागने लगे। फेलुदा ने अपनी बंदूक नीचे कर ली क्योंकि अब डॉ. हाजरा के बचने का कोई रास्ता नहीं था। दो आदमी, जिन्हें मैं पहचानता था, हमारी ओर आ रहे थे। उनमें से एक, जिसके हाथ में लाठी नहीं थी, ने डॉ. हाजरा को बड़ी फुर्ती से अपनी बाहों में उठा लिया, मानो वह कोई क्रिकेट की गेंद हो।
छड़ी पकड़े हुए दूसरा आदमी फेलुदा के पास पहुँचा। मैंने देखा कि फेलुदा ने अपना रिवॉल्वर बाएँ हाथ में लिया और उस आदमी को अपना दायाँ हाथ बढ़ाया। उसने कहा, 'नमस्कार, डॉ. हाजरा!'
क्या! वह आदमी डॉ. हाजरा थे?
उन्होंने फेलुदा से हाथ मिलाया। ‘और आप प्रदोष मित्तर हैं?’

'हां। उन नए नागरा जूतों से आपके पैरों में छाले पड़ गए थे, है ना? क्या वे अभी भी आपको परेशान कर रहे हैं?'
असली डॉ. हाजरा मुस्कुराईं। ‘मैंने परसों श्री धर को फोन किया था। उन्होंने मुझे बताया कि आप यहाँ हैं। उनके विवरण से आपको पहचानने में मुझे कोई दिक्कत नहीं हुई। मुझे आपका परिचय कराने दीजिए—ये इंस्पेक्टर राठौर हैं।’
‘और वो कौन है?’ फेलुदा ने दूसरे आदमी की ओर इशारा किया, जिसे हम अब तक डॉ. हाजरा के नाम से जानते थे। उसके हाथों में हथकड़ी लगी थी और उसने अपना सिर झुका रखा था। ‘क्या वो भवनंदा है?’
'हाँ,' डॉ. हाजरा ने उत्तर दिया, 'उर्फ अमियानाथ बर्मुन, उर्फ द ग्रेट बार-मैन-विज़ार्ड ऑफ़ द ईस्ट!'

बारह

भवनंदा को स्थानीय पुलिस के हवाले कर दिया गया। उस पर कई आरोप थे। इनमें हेमंगा हाजरा की हत्या का प्रयास, उसके सामान के साथ गायब हो जाना और खुद को डॉ. हाजरा के रूप में पेश करने की कोशिश करना शामिल था।
हम डाक बंगले में वापस आ गए थे और बरामदे में बैठकर ऊँट के दूध से बनी कॉफ़ी पी रहे थे। मुकुल हमारे सामने लॉन में खुशी से खेल रहा था। उसे पता था कि वह उसी रात कलकत्ता के लिए रवाना हो जाएगा। स्वर्णिम किला देखने के बाद अब उसकी राजस्थान में रुकने की कोई इच्छा नहीं थी।
फेलुदा ने असली डॉ. हाजरा की ओर मुड़कर कहा, 'भवानंद सचमुच एक धोखेबाज था, है ना? मेरा मतलब है, उसने शिकागो में जो कुछ किया, और प्रेस रिपोर्टों में मैंने जो कुछ पढ़ा... क्या वह सब सच था?'
जी हां। सौ प्रतिशत। भवनंदा और उसके साथी ने कई देशों में लोगों को धोखा दिया और ठगा, सिर्फ एक देश में नहीं। इसके अलावा, शिकागो में वे कुछ और ही कर रहे थे। वे न सिर्फ सबको ठगने की कोशिश कर रहे थे, बल्कि मेरे बारे में बुरी-बुरी बातें और अफवाहें भी फैला रहे थे, जिससे मेरे काम पर असर पड़ रहा था। इसलिए, अंत में मुझे कुछ कदम उठाने पड़े। लेकिन यह सब चार साल पहले हुआ था। मुझे नहीं पता कि वे भारत कब लौटे। मैं तो सिर्फ तीन महीने पहले ही वापस आया हूं। एक दिन मैं श्री धर की दुकान में था, तभी मुझे उनके बेटे के बारे में पता चला। तो मैं उनसे मिलने गया। बाकी तो आप जानते ही हैं। जब मैंने मुकुल के साथ राजस्थान जाने का फैसला किया, तो मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि मेरा पीछा किया जाएगा!
‘एक तीर से दो निशाने कौन नहीं लगाना चाहेगा?’ फेलुदा ने पूछा। ‘छिपे हुए खजाने को हथियाने का मौका था, साथ ही तुमसे हिसाब बराबर करने का भी... लेकिन क्या तुमने उन्हें कलकत्ता में कहीं नहीं देखा?’
'नहीं, एक बार भी नहीं। उनसे मेरी पहली मुलाकात बांदीकुई स्टेशन के जलपान कक्ष में हुई थी। वे दोनों आदमी मेरे पास आए और बातचीत शुरू कर दी।'
‘क्या आपने उन्हें पहचाना नहीं?’

'नहीं, मैं कैसे कर सकता था? मैंने उन्हें केवल शिकागो में देखा था, जहाँ उनके लंबे बाल, लहराती दाढ़ी और मोटी मूंछें थीं!'
‘आगे क्या हुआ?’
वे हमारे साथ एक ही मेज पर बैठे और खाना खाया। उन्होंने मुकुल को बताया कि उन्हें जादू आता है और कुछ करतब भी दिखाए। फिर वे हमारे साथ उसी डिब्बे में चढ़ गए। मैं मुकुल को किशनगढ़ किला दिखाने के लिए वहाँ उतर गया, लेकिन मुझे पता नहीं था कि वे दोनों मेरे पीछे आ रहे हैं। वे हमारे तुरंत बाद किले पर पहुँच गए और जब तक रास्ता साफ नहीं हो गया, तब तक कहीं छिप गए। वैसे भी, वह एक सुनसान जगह थी। आस-पास कोई नहीं दिख रहा था। मौका मिलते ही उन्होंने मुझे एक ढलान से नीचे धकेल दिया। मैं लगभग सौ फीट नीचे लुढ़क गया। सौभाग्य से, झाड़ियों के एक झुंड ने मुझे गिरने से बचा लिया। अगर मैं अपनी कमीज उतारूँ, तो आप देखेंगे कि मेरे शरीर पर अभी भी चोट के निशान हैं। खैर, मैं उस झाड़ी के किनारे पूरे एक घंटे तक पड़ा रहा। मैं चाहता था कि वे सोचें कि वे मुझसे पीछा छुड़ाने में कामयाब हो गए हैं और मुकुल को लेकर चले जाएँ। कम से कम, तब मुकुल सुरक्षित रहेगा। जब तक मैं उठा और स्टेशन की ओर चला, तब तक मारवाड़ जाने वाली आठ बजे की ट्रेन जा चुकी थी। वे दोनों अपराधी मुकुल और मेरे सामान के साथ उसी ट्रेन से चले गए थे। मेरे सारे कागजात मेरे सूटकेस में थे, इसलिए मेरे पास किसी को भी यह साबित करने का कोई तरीका नहीं था कि मैं वास्तव में कौन हूं।
‘क्या मुकुल को उनके साथ जाने में कोई आपत्ति नहीं थी?’
डॉ. हाजरा मुस्कुराईं। ‘मुकुल पूरी तरह से विचलित था। क्या आपको यह एहसास नहीं हुआ? उसे अपने माता-पिता को छोड़कर मेरे साथ जाने में कोई आपत्ति नहीं थी। तो फिर वह एक अजनबी और दूसरे में क्या फर्क करता? भवनंदा ने उससे कहा कि वह उसे स्वर्ण किले तक ले जाएगा। इतना ही मुकुल को लुभाने के लिए काफी था। खैर, मैंने हार नहीं मानी। बल्कि, अब मैं इस मामले की तह तक जाने के लिए और भी दृढ़ हो गई थी। सौभाग्य से, मेरा बटुआ मेरे पास था। इसलिए मैं नए कपड़े खरीद सकी—राजस्थानी कपड़े। मैंने अपने पुराने फटे हुए कपड़ों को एक गठरी में बांध लिया। आप जानते हैं, मुझे नागरा पहनने की आदत नहीं थी, इसलिए मेरे पैरों में छाले पड़ गए।’
अगले दिन, मैं किशनगढ़ स्टेशन से ट्रेन में चढ़ा और आपके डिब्बे में बैठ गया। फिर मैंने मारवाड़ से जोधपुर के लिए वही ट्रेन ली जिसमें आप बैठे थे।

मैं रघुनाथ सराय नाम की जगह पर रहने गया। जोधपुर में मैं एक व्यक्ति को जानता था—प्रोफेसर त्रिवेदी को। लेकिन, पहले तो मैंने उन्हें कुछ नहीं बताया। अगर बात पता चल जाती, तो दोनों आदमी भागने की कोशिश कर सकते थे, या मुकुल खुद डरकर सहयोग करने से इनकार कर सकता था। तब तक मुझे समझ आ गया था कि मुकुल को जैसलमेर के किले में ले जाना चाहिए। मुझे बस इतना करना था कि जब तक भवनंदा को भी यही विचार न आ जाए और वह मुकुल के साथ निकल न जाए। तब तक, मेरा
काम था उन दोनों पर नजर रखना।
‘हमने पहले ही दिन सर्किट हाउस के आसपास किसी को घूमते हुए देखा था। वह आप ही थे, है ना?’
'हां, और इसी वजह से एक और समस्या खड़ी हो गई। मुकुल ने मुझे देखा और ऐसा लगा जैसे वह मुझे पहचान गया हो! कम से कम गेट से बाहर आने और सीधे मेरी तरफ चलने के उसके तरीके से तो ऐसा ही लगा।'
तो, बाद में, आपने भवनंदा का पीछा किया और उसी ट्रेन में सवार हो गए जो पोखरण जा रही थी?
'हां। सबसे अजीब बात तो यह थी कि मैंने आपको ट्रेन से ही उसे रोकने की कोशिश करते हुए देखा था!'
'भवानंद ने भी मुझे जरूर देखा होगा। तब उन्हें समझ आ गया होगा कि हम रामदेवरा से सुबह की पहली ट्रेन पकड़ने की कोशिश करेंगे।'
डॉ. हाजरा ने अपनी कहानी जारी रखते हुए कहा, 'ट्रेन पकड़ने से पहले मैंने त्रिवेदी से जैसलमेर पुलिस को सूचित करने को कहा था। उससे पहले मैंने त्रिवेदी के घर से श्री धर से बात की थी; और फिर मैंने सामान्य कपड़े पहनने के लिए उनका एक सूट उधार लिया था।'
‘और जब आप पोखरण पहुंचे, तो आपने देखा कि भवनंदा का सहायक पहले से ही टैक्सी के साथ वहां मौजूद था, क्या यह सही है?’ फेलुदा जानना चाहता था। ‘यहीं से सब गड़बड़ शुरू हुई। मैंने उन्हें खो दिया। फिर मुझे दस घंटे और इंतज़ार करना पड़ा और सुबह की वो ट्रेन पकड़नी पड़ी। मुझे बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि आप भी उसी ट्रेन में हैं। मैंने आपको डाक बंगले में देखा था। अब मैं ये जानना चाहता हूँ कि आपको भवनंदा पर शक कब से होने लगा?’ फेलुदा मुस्कुराया। “यह कहना गलत होगा कि मुझे भवनंदा पर शक था। मुझे डॉ. हाजरा के व्यवहार पर शक हुआ। जोधपुर में नहीं, बीकानेर में। जब हम

देवीकुंड गए, तो हमने उन्हें हाथ बंधे और मुंह पर पट्टी बंधी हुई हालत में पाया। उससे ठीक पहले, मुझे एक माचिस की डिब्बी मिली जिस पर इक्का छपा हुआ था। मुझे पता था कि उस खास ब्रांड की माचिस राजस्थान में नहीं बिकती। फिर, जब हमने डॉ. हाजरा को जमीन पर असहाय पड़ा देखा, तो पहले तो मुझे लगा कि माचिस की डिब्बी उन पर हमला करने वाले ने गिरा दी होगी। लेकिन फिर मैंने देखा कि उन्हें बांधने का तरीका कुछ गड़बड़ था। मेरा मतलब है, अगर किसी आदमी के हाथ-पैर बंधे हों, तो वह पूरी तरह से हिल-डुल नहीं सकता; लेकिन अगर सिर्फ उसके हाथ पीछे बंधे हों, तो कोई भी समझदार आदमी अपने पैर मोड़कर, हाथ नीचे करके बंधन खोल लेगा। फिर वह खुद को छुड़ा सकता है। मुझे साफ हो गया कि डॉ. हाजरा ने खुद को बांधा था। लेकिन फिर भी, उस समय मेरे मन में यह ख्याल नहीं आया कि वह आदमी असली डॉ. हाजरा नहीं था।” आज सुबह जैसलमेर जाने वाली ट्रेन में मेरी आंखें खुल गईं, जब मेरी नजर भवनंदा के लिखे एक नोट पर पड़ी। उसने आपके लेटरहेड का इस्तेमाल किया था।
तो? यह महत्वपूर्ण कैसे था?
छपे हुए नाम में “हजरा” लिखा था, जिसमें “ज” था। लेकिन भवनंदा, जो तुम्हारा रूप धारण करके आया था, उसने अपने नाम पर “हजरा” लिखा था, जिसमें “ज़” था। इससे मुझे पता चला कि जोधपुर में जिस आदमी से मैं मिला था और जिसने वह नोट लिखा था, वह असली डॉ. हजरा नहीं था। लेकिन अगर ऐसा था, तो वह कौन था? वह उन आदमियों में से एक होना चाहिए था जिन्होंने नीलू का अपहरण किया था। और दूसरा आदमी मंदार बोस था, जिसके दाहिने हाथ में एक लंबा नाखून था, जो सिगार पीता था—नीलू ने उसकी गंध पहचान ली थी, और हमने भी। अब सवाल यह था कि असली डॉ. हजरा कौन था, और वह कहाँ था? इसका केवल एक ही जवाब हो सकता था—हजरा वही आदमी होना चाहिए जो किशनगढ़ में हमारे डिब्बे में घुसा था, जिसके पैरों में नए नागरा और छाले थे, जिसे सर्किट हाउस और बीकानेर किले के बाहर घूमते देखा गया था, और जिसे हमने आज सुबह जैसलमेर के डाक बंगले में हाथ में लाठी लिए लंगड़ाते हुए देखा था!
डॉ. हाजरा ने सिर हिलाया। 'श्री धर ने आपको यहाँ बुलाकर बहुत ही बुद्धिमानी का काम किया। मुझे नहीं लगता कि मैं अकेले यह सब संभाल पाती। भवनंदा के सहायक को आपने ही संभाला। अगर वह भी गिरफ्तार हो जाता है, तो हम कह सकते हैं कि सब कुछ सुखद अंत हुआ।'

फेलुदा ने लालमोहन बाबू की ओर इशारा करते हुए कहा, 'उन्होंने मंदार बोस के खिलाफ आवाज उठाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।'
लालमोहन बाबू अब तक बोलने के लिए संघर्ष कर रहे थे। अब अचानक उन्होंने कहा, 'मैं कहता हूँ, उस छिपे हुए खजाने का क्या होगा?'
डॉ. हाजरा ने कहा, 'क्यों न इसे मोर पर छोड़ दें? वह इसकी बड़ी कुशलता से रखवाली कर रहा है, है ना? आपने देखा ही होगा कि मोर से पंगा लेने पर क्या होता है!'
फेलुदा ने सुझाव दिया, 'फिलहाल, कृपया अपना छिपा हुआ खजाना लौटा दीजिए। ध्यान रहे, आपकी जैकेट कमर के पास जिस तरह से फूली हुई है, उसे देखकर तो इसे 'छिपा हुआ' कहना मुश्किल है!'
लालमोहन बाबू बेहद दुखी दिख रहे थे जब उन्होंने मंदार बोस की रिवॉल्वर निकाली और उसे फेलुदा को लौटा दिया।
‘धन्यवाद,’ फेलुदा ने उसे लेते हुए कहा। फिर अचानक उसका चेहरा गंभीर हो गया। मैंने उसे रिवॉल्वर को ध्यान से देखते हुए देखा।
‘मुझे आपकी तारीफ करनी ही पड़ेगी, मिस्टर ट्रॉटर!’ उसने बुदबुदाते हुए कहा। ‘किसने सोचा था कि आप प्रदोष मित्तर को इस तरह धोखा दे देंगे?’
‘अरे, क्या हुआ?’ हम चिल्लाए।
‘यह रिवॉल्वर नकली है! जापान में बनी है। जादूगर मंच पर ऐसी बंदूकें इस्तेमाल करते हैं!’
इससे पहले कि सब लोग हंसने लगते, लालमोहन बाबू ने फेलुदा से रिवॉल्वर वापस ले ली, मुस्कुराते हुए कहा, 'मेरे संग्रह के लिए— और राजस्थान में हमारे इस शानदार साहसिक कार्य की एक यादगार के रूप में। धन्यवाद, महोदय!'

[illegible]

एक

मैंने अभी-अभी कैप्टन स्कॉट के एक रोमांचक अभियान का वृत्तांत पढ़ा था। किसने सोचा था कि इसके तुरंत बाद मुझे कोहरे और बर्फ की धरती की यात्रा करनी पड़ेगी? खैर, मेरा मतलब उत्तरी या दक्षिणी ध्रुव से नहीं है। मुझे नहीं लगता कि फेलुदा को कभी ऐसे सुदूर इलाकों में रहस्य सुलझाने की ज़रूरत पड़ेगी। मैं जिस जगह की बात कर रहा हूँ, वह हमारे अपने देश में है। यहाँ मैंने आसमान से रुई के रेशों की तरह बर्फ के टुकड़े गिरते देखे। यह ज़मीन पर कालीन की तरह बिछ गई, सूरज की रोशनी पड़ने पर मेरी आँखें चौंधिया गईं; फिर भी यह इतनी मुलायम थी कि इसे उठाकर गेंद की तरह इकट्ठा किया जा सकता था।
यह खास घटनाक्रम पिछले साल मार्च में, एक गुरुवार की सुबह शुरू हुआ। तब तक फेलुदा एक जासूस के तौर पर काफी मशहूर हो चुके थे, इसलिए उनके मुवक्किलों की संख्या बढ़ चुकी थी। लेकिन वे तभी कोई केस लेते थे जब वह उन्हें अपने असाधारण दिमाग को और तेज़ करने का मौका देता था। जब मैंने पहली बार इस केस के बारे में सुना, तो मुझे यह कुछ खास नहीं लगा। लेकिन फेलुदा ने ज़रूर एक बड़ी चुनौती को भांप लिया होगा, इसीलिए वे इतनी आसानी से मान गए। उनके फैसले को प्रभावित करने वाला एकमात्र दूसरा कारण यह हो सकता था कि मुवक्किल काफी अमीर लग रहा था, इसलिए शायद वे मोटी फीस की उम्मीद कर रहे थे। हालांकि, जब मैंने फेलुदा से इस बारे में बात की, तो उन्होंने मुझे ऐसी घूरकर देखा कि मुझे तुरंत चुप रहना पड़ा।
ग्राहक का नाम दीनानाथ लाहिड़ी था। उन्होंने बुधवार शाम को हमें फोन किया और अगले दिन सुबह आठ बजे का समय तय किया। गुरुवार को ठीक आठ बजे, तारा रोड स्थित हमारे घर के बाहर एक कार रुकी और हॉर्न बजाया। हॉर्न की आवाज़ बाकी कारों से बिल्कुल अलग थी। मैं झट से उठ खड़ा हुआ और दरवाजे की ओर बढ़ा, लेकिन फेलुदा ने इशारे से मुझे रोक दिया।
उन्होंने कहा, 'तुम्हें शांत रहना सीखना होगा। कम से कम घंटी बजने तक तो इंतजार करो।'

कुछ ही सेकंड में घंटी बजी। जब मैंने दरवाजा खोला, तो सबसे पहले मेरे सामने एक विशाल कार खड़ी थी। रोल्स-रॉयस के अलावा मैंने इतनी बड़ी कार पहले कभी नहीं देखी थी। कार से निकले सज्जन भी उतने ही प्रभावशाली थे, हालांकि यह उनके कद से मेल नहीं खाता था। लगभग पचास वर्ष के उस व्यक्ति का रंग बेहद गोरा था और उन्होंने बढ़िया धोती और कुर्ता पहना हुआ था। उनके पैरों में सामने से मुड़ी हुई सफेद नांगरा चप्पलें थीं। उनके बाएं हाथ में हाथीदांत के हैंडल वाली छड़ी थी; और उनके दाहिने हाथ में एक नीले रंग का चौकोर अटैची बॉक्स था, जैसा मैंने पहले भी कई बार देखा था। हमारे घर में भी ऐसे दो अटैची बॉक्स थे—एक बाबा का था, दूसरा फेलुदा का। एयर इंडिया इन्हें अपने यात्रियों को मुफ्त उपहार के रूप में देती थी।
फेलुदा ने उस सज्जन को बैठक कक्ष में सबसे आरामदायक कुर्सी की पेशकश की और स्वयं उनके सामने बैठने के लिए एक साधारण कुर्सी ले ली।
‘मैंने कल रात फोन किया था,’ हमारे आगंतुक ने कहा। ‘मेरा नाम दीनानाथ लाहिड़ी है।’ फेलुदा ने गला साफ किया और कहा, ‘इससे पहले कि आप कुछ और कहें, क्या मैं आपसे कुछ सवाल पूछ सकता हूँ?’
'बिल्कुल।'
सबसे पहले, क्या आप एक कप चाय पीना चाहेंगे?
श्री लाहिड़ी ने हाथ जोड़कर, विनम्रतापूर्वक सिर झुकाकर उत्तर दिया, 'श्री मित्तर, मुझे क्षमा करें, मुझे कुछ निश्चित समयों के अलावा कुछ भी खाने की आदत नहीं है। लेकिन अगर आप चाहें तो कृपया मुझे आपको चाय पीने से रोकने न दें।'
‘ठीक है। मेरा दूसरा सवाल यह है कि क्या आपकी कार हिस्पानो सुइज़ा है?’
'जी हां, बिल्कुल सही। इस देश में ऐसी गाड़ियां ज्यादा नहीं हैं। मेरे पिताजी ने इसे 1934 में खरीदा था। क्या आपको कारों में दिलचस्पी है?' फेलुदा मुस्कुराया, 'हां, अन्य चीजों के अलावा। लेकिन मेरी रुचियां मुख्य रूप से मेरे पेशे से संबंधित हैं।'
‘मैं समझ गया। अब मुझे आपको यह बताने दीजिए कि मैं यहाँ क्यों आया हूँ। आपको शायद यह सब बिल्कुल महत्वहीन लगे। मैं आपकी प्रतिष्ठा से अवगत हूँ, इसलिए मैं आप पर केस लेने के लिए दबाव नहीं डाल सकता। मैं केवल एक अनुरोध कर सकता हूँ।’

उनकी आवाज़ और बोलने के तरीके में एक खास तरह की शालीनता और परिष्कार था, लेकिन अहंकार का जरा सा भी अंश नहीं था। इसके विपरीत, श्री लाहिड़ी विनम्रता और शांत स्वर में बोलते थे।
'चलिए, हमें आपके मामले का पूरा विवरण सुनने को मिलता है,' फेलुदा ने कहा। श्री लाहिड़ी ने मुस्कुराते हुए अपने हाथ में पकड़ी नीली वस्तु की ओर इशारा करते हुए कहा, 'आप इसे मेरा मामला कह सकते हैं, या मेरे अटैची केस की कहानी... हा हा। देखिए, मेरी कहानी इसी अटैची केस के इर्द-गिर्द घूमती है।' फेलुदा ने डिब्बे पर एक नज़र डाली और कहा, 'लगता है यह कुछ बार विदेश जा चुका है। टैग फटे हुए हैं लेकिन मुझे हैंडल पर लगी लोचदार पट्टियाँ दिखाई दे रही हैं—एक, दो, तीन, चार...'
'हां, मेरे अपने बैग के हैंडल से भी इलास्टिक बैंड लटक रहे हैं।'
‘आपका अपना मामला? आपका मतलब है कि यह आपका नहीं है?’
'नहीं। यह किसी और का है। इसका मेरे सामान से आदान-प्रदान हो गया था।'
‘मैं समझ गया। यह घटना कहाँ हुई? विमान में, या ट्रेन में?’
‘यह एक ट्रेन थी। कालका मेल। मैं दिल्ली से वापस आ रहा था। फर्स्ट क्लास के डिब्बे में मेरे समेत चार यात्री थे। मेरा अटैची केस शायद बाकी तीन लोगों में से किसी एक के साथ मिल गया होगा।’
मुझे लगता है कि आपको नहीं पता कि यह किसका था...?
नहीं। अगर मैंने ऐसा किया भी, तो मुझे नहीं लगता कि मुझे आपकी मदद की ज़रूरत पड़ेगी।
‘और आपको बाकियों के नाम नहीं पता?’
‘एक और बंगाली था। उसका नाम पाकराशी था। वह मेरी तरह दिल्ली से आया था।’ आपको उसका नाम कैसे पता चला?
‘दूसरे यात्रियों में से एक ने उन्हें पहचान लिया। मैंने उस दूसरे आदमी को कहते सुना, “हैलो, श्रीमान पाकराशी!” और फिर वे बातें करने लगे। मुझे लगता है कि दोनों व्यापारी थे। मैं बार-बार अनुबंध और निविदा जैसे शब्द सुन रहा था।’
‘क्या तुम्हें उस दूसरे आदमी का नाम नहीं पता चला?’
नहीं। वह बंगाली नहीं था, हालांकि वह बंगाली भाषा काफी अच्छी तरह से बोल रहा था। मुझे लगा कि वह शिमला से आया था।
और चौथा यात्री?

‘वह ज्यादातर समय ऊपरी बर्थ पर ही बैठा रहता था। मैंने उसे सिर्फ दोपहर और रात के खाने के समय ही नीचे उतरते देखा। वह बंगाली भी नहीं था। दिल्ली से निकलने के कुछ ही समय बाद उसने मुझे एक सेब दिया और कहा कि यह उसके अपने बगीचे का है। तो शायद वह भी शिमला से ही था।’
‘क्या तुमने वह सेब खाया?’
'हां, बिल्कुल। यह एक अच्छा और स्वादिष्ट सेब था।'
तो क्या आपको ट्रेन में अपने नियमित समय के अलावा कुछ और खाने में कोई आपत्ति नहीं है?
श्री लाहिड़ी जोर से हंस पड़े।
‘हे भगवान! मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि तुम इसे पकड़ लोगे! लेकिन तुम सही हो। चलती ट्रेन में मुझे अपने ही नियमों को तोड़ने का मन करता है।’
‘ठीक है,’ फेलुदा ने कहा, ‘अब मुझे यह जानना होगा कि वास्तव में कौन कहाँ बैठा था।’
‘मैं नीचे वाली बर्थ पर था। श्री पाकराशी मेरे ठीक ऊपर वाली बर्थ पर थे। दूसरी तरफ, जिस व्यक्ति ने मुझे सेब दिया था, वह ऊपर वाली बर्थ पर बैठा था और उसके नीचे वह व्यापारी बैठा था जो श्री पाकराशी को जानता था।’
फेलुदा कुछ पल चुप रहा। फिर उसने अपने हाथ आपस में रगड़े और बोला, 'अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो, मैं चाय मंगवाने जा रहा हूँ। अगर आप चाहें तो एक कप पी लीजिए। टॉपशे, क्या आप कृपया अंदर जाएँगे?'
मैं दौड़कर अपने रसोइए श्रीनाथ को चाय लाने के लिए कहने गया। जब मैं लौटा तो फेलुदा ने अटैची केस खोल रखा था।
‘क्या वह बंद नहीं था?’ उसने पूछा।
नहीं। न ही यह मेरा था। इसलिए जिसने भी इसे लिया होगा, वह आसानी से देख सकता था कि इसमें क्या था। यह तो रोज़मर्रा की साधारण चीज़ों से भरा है।
सच है। उसमें दो अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्र, एक साबुन की टिकिया, एक कंघी, एक हेयरब्रश, एक टूथब्रश, टूथपेस्ट, एक शेविंग किट, एक रुमाल और एक पेपरबैक किताब के अलावा और कुछ खास नहीं था।
‘क्या आपके पास कोई कीमती सामान था?’ फेलुदा जानना चाहता था।
नहीं, कुछ नहीं। वास्तव में, मेरे पास जो कुछ था, वह शायद यहाँ दिखाई देने वाली चीज़ों से कम मूल्यवान था। उसमें एकमात्र दिलचस्प चीज़ एक पांडुलिपि

[illegible]
‘[illegible]?’ [illegible]
‘[illegible] 1917 [illegible]
[illegible]
[illegible]
'[illegible]'
Feluda grew a little thoughtful. ‘Shambhucharan?’ he muttered to himself. ‘Shambhucharan . . . Shambhucharan . . .’
[illegible]

श्रीनाथ चाय लेकर आए। फेलुदा आजकल चाय को लेकर कुछ ज्यादा ही नखरे करने लगे थे। अब जो चाय वो पीने वाले थे, वो कुर्सियोंग के मकाइबारी चाय बागान से आई थी। जैसे ही श्रीनाथ ने कप हमारे सामने रखे, चाय की खुशबू पूरे कमरे में फैल गई। फेलुदा ने चुपचाप एक घूंट लिया और कहा, 'क्या आपको ट्रेन में अपना चाय का डिब्बा कई बार खोलना पड़ा?'
नहीं, बिलकुल नहीं। मैंने इसे केवल दो बार खोला। ट्रेन के दिल्ली से रवाना होने के तुरंत बाद मैंने पांडुलिपि निकाली और फिर सोने से पहले उसे वापस रख दिया।
फेलुदा ने एक चारमीनार सिगरेट जलाई और धुएं के कुछ छल्ले उड़ाए। 'तो आप चाहते हैं कि मैं यह डिब्बा इसके मालिक को लौटा दूं और आपका डिब्बा आपके लिए वापस ले आऊं—है ना?'
'हां। लेकिन क्या इससे आपको निराशा होती है? क्या आपको लगता है कि यह सब कुछ कुछ ज्यादा ही शांत है?'
फेलुदा ने अपने बालों में उंगलियां फिराईं। 'नहीं,' उसने कहा, 'मैं आपकी भावनाओं को समझता हूं। और मुझे यह स्वीकार करना होगा कि आपका मामला उन मामलों से अलग है जिन्हें मैं आमतौर पर संभालता हूं।'
दीनानाथ बाबू काफी राहत महसूस कर रहे थे। उन्होंने गहरी सांस लेते हुए कहा, 'आपकी स्वीकृति मेरे लिए बहुत मायने रखती है।'
फेलुदा ने उत्तर दिया, ‘मैं निश्चित रूप से अपनी पूरी कोशिश करूंगा, लेकिन मैं सफलता की गारंटी नहीं दे सकता। आपको यह समझना होगा। हालांकि, अब मुझे कुछ जानकारी चाहिए।’
'हाँ?'
फेलुदा झटपट उठे और अगले कमरे में चले गए। वे अपनी मशहूर नीली नोटबुक लेकर लौटे। फिर, हाथ में पेंसिल लिए, उन्होंने सवाल पूछना शुरू कर दिया।
‘आपने दिल्ली कब छोड़ी?’
'5 मार्च को शाम 6:30 बजे। मैं अगली सुबह साढ़े नौ बजे कलकत्ता पहुंचा।' 'आज 9 तारीख है। तो आप तीन दिन पहले यहां पहुंचे थे, और आपने मुझे कल फोन किया था।'
फेलुदा ने अटैची बॉक्स खोला और उसमें से पीले रंग का कोडक फिल्म का डिब्बा निकाला। जैसे ही उसने उसका ढक्कन खोला, उसमें से सुपारी के कुछ टुकड़े मेज

पर गिर गए। फेलुदा ने उनमें से एक टुकड़ा अपने मुंह में डाला और बोलना जारी रखा।
क्या आपके मामले में ऐसा कुछ था जिससे आपके नाम और पते का अंदाजा लगाया जा सके?
'नहीं, जहाँ तक मुझे याद है, ऐसा नहीं है।'
‘हम्म। क्या अब आप कृपया अपने सहयात्रियों का वर्णन कर सकते हैं?’ दीनानाथ बाबू ने अपना सिर झुकाया और थोड़ा भौंहें चढ़ाते हुए छत को घूरने लगे। 'पक्राशी की उम्र लगभग मेरी ही रही होगी। साठ से पैंसठ के बीच। उनके बाल सफ़ेद-काले रंग के थे, जिन्हें पीछे की ओर कंघी किया हुआ था। वे चश्मा पहनते थे और उनकी आवाज़ थोड़ी कर्कश थी।'
'अच्छा।'
जिस आदमी ने मुझे सेब दिया, उसका रंग गोरा था। वह लंबा और पतला था, उसकी नाक नुकीली थी, उसने सोने के फ्रेम वाला चश्मा पहना हुआ था और उसके कानों के आसपास कुछ काले बालों को छोड़कर वह लगभग गंजा था। उसने मुझसे केवल अंग्रेजी में बात की, और उसका उच्चारण बिल्कुल सही था। और उसे जुकाम था। वह बार-बार टिश्यू से अपनी नाक पोंछ रहा था।
‘एकदम पक्के साहब, मैं देख रहा हूँ! और तीसरे सज्जन?’
'उनका रूप-रंग सचमुच काफी साधारण था—ऐसा कुछ भी नहीं था जिस पर किसी का ध्यान जाता। लेकिन वे अकेले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने शाकाहारी थाली का ऑर्डर दिया था।'
फेलुदा ने यह सब अपनी नोटबुक में लिख लिया। फिर उसने ऊपर देखा और पूछा, 'और कुछ?'
नहीं, मुझे बताने लायक कुछ और याद नहीं आ रहा। दरअसल, मैंने दिन का अधिकांश समय पढ़ने में बिताया। और खाना खाने के तुरंत बाद मुझे नींद आ गई। मैं आमतौर पर ट्रेन में अच्छी तरह नहीं सोता। लेकिन इस बार मैं हावड़ा पहुँचने तक बच्चे की तरह सोता रहा। दरअसल, मुझे श्री पाक्राशी ने जगाया।
‘तो ऐसे में, संभवतः आप ही कोच से निकलने वाले आखिरी व्यक्ति थे?’
'हाँ।'
'तब तक बाकी तीन में से कोई एक तुम्हारा अटैची केस लेकर बाहर चला गया होगा?' 'हाँ।'

‘हम्म,’ फेलुदा ने अपनी नोटबुक बंद करते हुए कहा, ‘मैं देखता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ।’ दीनानाथ बाबू उठ खड़े हुए।
‘मैं आपकी फीस जरूर चुका दूंगा। लेकिन आपको अपनी जांच शुरू करने के लिए कुछ पैसों की जरूरत तो होगी ही। इसी उद्देश्य से मैं आज कुछ नकद लाया हूं।’ उसने अपनी जेब से एक सफेद लिफाफा निकाला और फेलुदा को दिया, जिसने सहज भाव से ‘ओह, धन्यवाद’ कहते हुए उसे अपनी जेब में पेंसिल के साथ रख लिया। दीनानाथ बाबू बाहर आए और अपनी कार की ओर चलने लगे। उन्होंने कहा, ‘आपको मेरा फ़ोन नंबर डायरेक्टरी में मिल जाएगा, अगर आपको कोई खबर मिले तो मुझे बता देना। दरअसल, ज़रूरत पड़ने पर आप सीधे मेरे घर भी आ सकते हैं। मैं आमतौर पर शाम को घर पर ही रहता हूँ।’
पीली रंग की हिस्पानो सुइज़ा कार शंख की तरह हॉर्न बजाते हुए रशबेहारी एवेन्यू की ओर चली गई, जिससे राहगीर चौंक गए। हम बैठक में लौट आए। फेलुदा उस कुर्सी पर बैठ गया जिस पर दीनानाथ बाबू बैठे थे। फिर उसने आलस से पैर फैलाकर कहा, 'और पच्चीस साल... ऐसे शाही अंदाज वाले लोग गायब हो जाएंगे।' नीले रंग का बक्सा अभी भी मेज पर पड़ा था। फेलुदा ने उसमें रखी चीजें एक-एक करके निकालीं। हर वस्तु सचमुच बहुत साधारण थी। जिसने भी इन्हें खरीदा होगा, उसने पचास रुपये से ज्यादा खर्च नहीं किए होंगे।
‘चलो एक सूची बनाते हैं,’ फेलुदा ने कहा। यह सूची जल्द ही तैयार हो गई, और इसमें निम्नलिखित बातें शामिल थीं:
दिल्ली के दो अंग्रेज़ी दैनिक, करीने से तह किए हुए। एक संडे स्टेट्समैन था, दूसरा संडे हिंदुस्तान टाइम्स। बिनाका टूथपेस्ट की आधी इस्तेमाल की हुई ट्यूब। खाली हिस्सा मोड़ा हुआ था। एक हरा बिनाका टूथब्रश। एक जिलेट सेफ्टी रेज़र। एक पैकेट में जिलेट के तीन पतले ब्लेड। एक पुरानी और इस्तेमाल की हुई ओल्ड स्पाइस शेविंग क्रीम। लगभग खत्म हो चुकी थी। एक शेविंग ब्रश। एक नेल कटर—काफी पुराना। सेलोफेन शीट में लिपटी एस्प्रो की तीन गोलियां। कलकत्ता का एक तह किया हुआ नक्शा। खोलने पर इसका आकार 4’ x 5’ था। कोडक फिल्म का एक डिब्बा जिसमें कटी हुई पान की पत्तियां थीं। एक माचिस की डिब्बी, एकदम नई। एक वीनस लाल-नीली पेंसिल। एक सफेद रुमाल, जिसके एक कोने में ‘G’ अक्षर कढ़ाई किया हुआ था। एक पेन-चाकू, शायद मुरादाबाद से। एक छोटा सा फेस-टॉवेल। एक जंग लगी पुरानी सेफ्टी पिन। तीन उतनी ही जंग लगी

पेपर क्लिप। एक शर्ट का बटन। एक जासूसी उपन्यास—एलरी क्वीन का ‘द डोर बिटवीन’।
फेलुदा ने किताब उठाई और कुछ पन्ने पलटे।
उन्होंने कहा, 'नहीं, मालिक के नाम का कोई ज़िक्र नहीं है, लेकिन उन्हें पन्ने के कोने को मोड़कर निशान लगाने की आदत थी। इस किताब में 236 पन्ने हैं। मोड़ने का आखिरी निशान 212 वें पन्ने पर है। मेरा मानना है कि उन्होंने इसे पढ़ना पूरा कर लिया था।'
अब फेलुदा ने अपना ध्यान रूमाल की ओर मोड़ा।
‘उसके नाम या उपनाम का पहला अक्षर “जी” होना चाहिए। नहीं, यह उसका पहला नाम ही होना चाहिए, यह कहीं अधिक स्वाभाविक है।’
फिर उसने कलकत्ता का नक्शा खोला और उसे मेज पर फैला दिया। ‘लाल निशान,’ उसने ध्यान से देखते हुए कहा, ‘किसी ने लाल पेंसिल से निशान लगाए हैं... हम्म... एक, दो, तीन, चार, पाँच... हम्म... चौरंगी... पार्क स्ट्रीट... समझ गया। टॉपशे, टेलीफोन डायरेक्टरी लाओ।’
फेलुदा ने नक्शा वापस बक्से में रख दिया। फिर उसने टेलीफोन डायरेक्टरी के पन्ने पलटने शुरू किए। ‘प... ये रहा,’ उसने कहा। ‘यहाँ सिर्फ सोलह पक्राशी सूचीबद्ध हैं। इनमें से दो डॉक्टर हैं, इसलिए हम इन्हें आसानी से छोड़ सकते हैं।’
'क्यों?'
'ट्रेन में जिस आदमी ने उन्हें पहचाना, उसने उन्हें डॉक्टर नहीं, बल्कि मिस्टर पाकराशी कहा था, याद है ना?'
'ओह जी हाँ, यह सही है।'
फेलुदा ने टेलीफोन उठाया और नंबर डायल करने लगा। हर बार जब कॉल लग जाती, तो मैं उसे यह कहते सुनता, 'क्या श्री पाक्राशी दिल्ली से लौट आए हैं? ... ओह, क्षमा करें!'
ऐसा लगातार पांच बार हुआ। लेकिन छठी बार जब उसने नंबर डायल किया तो शायद उसे सही आदमी मिल गया, क्योंकि इस बार उसने काफी देर तक बात की। फिर उसने 'धन्यवाद' कहा और फोन रख दिया।
उन्होंने मुझसे कहा, 'मुझे लगता है मैंने उसे पकड़ लिया है। एन.सी. पाकराशी। उन्होंने खुद फोन उठाया था। वे परसों दिल्ली से कालका मेल से लौटे थे। सब कुछ मेल खाता है, सिवाय इसके कि उनका सामान बदला नहीं गया।'

‘तो फिर आपने आज शाम उनसे मिलने का समय क्यों तय किया?’
‘क्यों, वो हमें बाकी यात्रियों के बारे में कुछ जानकारी दे सकता है, है ना? वो देखने में चिड़चिड़ा लगता है, लेकिन फेलू मिटर को नाराज़ करने के लिए सिर्फ़ चिड़चिड़ापन काफ़ी नहीं होगा। चलो, टॉपशे, बाहर चलते हैं।’
‘अभी? मुझे लगा था कि हम श्री पाकराशी से शाम को मिलेंगे?’
'हां, लेकिन पाकराशी से मिलने से पहले मुझे लगता है कि हमें आपके चाचा सिद्धू से मिलना चाहिए। अभी।'

दो

अंकल सिद्धू का मुझसे कोई रिश्ता नहीं था। मेरे जन्म से बहुत पहले, जब बाबा हमारे पुराने पैतृक घर में रहते थे, तब वे उनके पड़ोसी हुआ करते थे। बाबा उन्हें भाई की तरह मानते थे और हम सब उन्हें अंकल कहते थे। अंकल सिद्धू को लगभग हर चीज का असाधारण ज्ञान था और उनकी याददाश्त बहुत अच्छी थी। फेलुदा और मैं दोनों ही उनका बहुत आदर करते थे।
लेकिन फेलुदा इस समय उनसे क्यों मिलना चाहते थे? फेलुदा के पहले ही सवाल से यह बात स्पष्ट हो गई। 'क्या आपने शंभूचरण बोस नाम के एक यात्रा लेखक के बारे में सुना है? वे लगभग साठ साल पहले अंग्रेजी में लिखते थे।'
अंकल सिद्धू की आंखें चौड़ी हो गईं।
‘हे भगवान, फेलू, क्या तुमने तराई पर लिखी उनकी किताब नहीं पढ़ी?’
‘ओह हाँ,’ फेलुदा ने कहा, ‘अब मुझे याद आ गया। उस आदमी का नाम जाना-पहचाना सा लग रहा था, लेकिन नहीं, मैंने वह किताब नहीं पढ़ी है।’
इसका नाम 'तराई का आतंक' था। इसे लंदन के एक ब्रिटिश प्रकाशक ने 1915 में प्रकाशित किया था। शंभूचरण एक घुमंतू और शिकारी दोनों थे। पेशे से वे चिकित्सक थे। वे काठमांडू में चिकित्सा करते थे। यह वर्तमान राजपरिवार के सत्ता में आने से बहुत पहले की बात है। उस समय नेपाल में शक्तिशाली लोग राणा थे। शंभूचरण ने राणाओं के कई रोगों का इलाज किया। उन्होंने अपनी पुस्तक में उनमें से एक का जिक्र किया है: विजयेंद्र शमशेर जंग बहादुर। उन्हें शिकार का बहुत शौक था, लेकिन वे बहुत शराब पीते थे। कहा जाता है कि वे एक हाथ में बोतल और दूसरे हाथ में राइफल लेकर मचान पर चढ़ जाते थे। लेकिन ट्रिगर दबाने के समय उनके दोनों हाथ स्थिर रहते थे। सिर्फ एक बार। सिर्फ एक बार उनका निशाना चूक गया और बाघ मचान पर कूद गया। शंभूचरण ने ही दूसरे मचान से बाघ पर गोली चलाई और राणा की जान बचाई। राणा ने उन्हें एक अनमोल रत्न देकर अपना आभार व्यक्त किया। एक बेहद रोमांचक कहानी। राष्ट्रीय पुस्तकालय से इसकी एक प्रति प्राप्त करने का प्रयास करें। मुझे नहीं लगता कि यह आपको कहीं और आसानी से मिल जाएगा।'

क्या वह कभी तिब्बत गया था?
'जी हां, बिल्कुल। उनका निधन 1921 में हुआ था, मेरे कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के कुछ ही समय बाद। मुझे याद है, मैंने उनकी मृत्यु की खबर पढ़ी थी। उसमें लिखा था कि सेवानिवृत्ति के बाद वे तिब्बत चले गए थे, हालांकि उनकी मृत्यु काठमांडू में हुई थी।'
'अच्छा ऐसा है।'
फेलुदा कुछ क्षणों तक चुप रहे। फिर उन्होंने स्पष्ट और सुस्पष्ट स्वर में कहा, “मान लीजिए कि आज तिब्बत यात्रा के बाद लिखी गई कोई अप्रकाशित पांडुलिपि मिल जाए, तो क्या वह एक मूल्यवान दस्तावेज होगी?”
अरे वाह!’ अंकल सिद्धू का गंजा सिर उत्साह से चमक उठा। ‘फेलू, तुम क्या बोल रहे हो? कीमती? मुझे अभी भी याद है कि लंदन टाइम्स ने तराई की कितनी तारीफ की थी। सिर्फ़ कहानियाँ ही नहीं, शंभूचरण की भाषा भी सरल, स्पष्ट और एकदम साफ थी। अरे वाह, क्या तुम्हें ऐसी कोई पांडुलिपि मिली है?’
'नहीं, लेकिन शायद ऐसा कोई अस्तित्व में हो।'
“अगर आपको वो मिल जाए तो मुझे दिखाना मत भूलना, फेलू। और अगर उसकी नीलामी हो तो मुझे बता देना। मैं पाँच हज़ार रुपये तक की बोली लगाने को तैयार हूँ…”
इसके तुरंत बाद हम वहां से चले गए, लेकिन जाने से पहले हमें जबरदस्ती दो कप कोको पिलाया गया।
बाहर आते ही मैंने कहा, 'श्री लाहिड़ी को तो पता भी नहीं है कि उनके अटैची बॉक्स में इतनी सनसनीखेज चीज़ें हैं।' 'क्या तुम उन्हें नहीं बताओगे?' ‘रुको। जल्दबाजी करने की कोई जरूरत नहीं है। देखते हैं इसका क्या नतीजा निकलता है। वैसे भी, मैंने नौकरी तो ले ही ली है, है ना? बस अब मैं पहले से कहीं ज्यादा उत्साहित महसूस कर रहा हूँ।’
नरेश चंद्र पाकराशी लैंसडाउन रोड में रहते थे। यह स्पष्ट था कि उनका घर कम से कम चालीस साल पहले बना था। फेलुदा ने मुझे घर की उम्र का आकलन करना सिखाया था। उदाहरण के लिए, पचास साल पहले बने घरों में एक खास तरह की खिड़कियाँ होती थीं, जो दस साल बाद बने घरों से अलग होती थीं। बरामदों और छतों की रेलिंग, दरवाजों पर बने डिज़ाइन, पोर्टिको के खंभे—ये सभी इमारत के निर्माण काल का प्रमाण देते थे। यह घर निश्चित रूप से 1920 के दशक में बना होगा।

जैसे ही हम टैक्सी से उतरे, सबसे पहले मेरी नज़र मुख्य द्वार के बाहर लगे एक नोटिस पर पड़ी: 'कुत्ते से सावधान रहें'।
फेलुदा ने टिप्पणी की, 'अगर इसमें लिखा होता, "कुत्ते के मालिक से सावधान रहें", तो यह ज्यादा समझदारी भरा होता।'
हम फाटक से अंदर गए और बरामदे के पास एक चौकीदार खड़ा मिला। फेलुदा ने उसे अपना विजिटिंग कार्ड दिया, जिस पर लिखा था: ‘प्रदोश सी. मित्तर, प्राइवेट इन्वेस्टिगेटर’। चौकीदार कार्ड लेकर गायब हो गया और कुछ मिनट बाद वापस आ गया।
उन्होंने कहा, 'कृपया अंदर जाइए।'
बैठक कक्ष के दरवाजे तक पहुँचने से पहले हमें संगमरमर की एक चौड़ी सीढ़ी पार करनी पड़ी। वह लगभग दस फीट ऊँची रही होगी। हमने पर्दा उठाया और अंदर चले गए, जहाँ हमें किताबों की ढेरों कतारें दिखाई दीं, जो बड़ी-बड़ी अलमारियों में रखी थीं। वहाँ काफी सारा फर्नीचर, पूरे कमरे में बिछा कालीन, दीवारों पर लगी तस्वीरें और एक झूमर भी था। लेकिन पूरा कमरा अस्त-व्यस्त सा लग रहा था। जाहिर है, किसी ने भी इसकी नियमित सफाई नहीं की थी। हमें श्री पाकराशी अपने अध्ययन कक्ष में मिले, जो बैठक कक्ष के पीछे छिपा हुआ था। टाइपिंग की आवाज़ पहले ही हमारे कानों तक पहुँच चुकी थी। अब हमने एक व्यक्ति को एक पुराने टाइपराइटर के पीछे बैठे देखा, जो हरे रंग के रेक्सिन से ढकी एक विशाल मेज पर रखा था। मेज दाईं ओर थी। जैसे ही हम अंदर दाखिल हुए, बाईं ओर हमें तीन सोफे और एक छोटी गोल मेज दिखाई दी। इस मेज पर शतरंज का बोर्ड रखा था, जिस पर सभी मोहरे अपनी जगह पर थे, और खेल पर एक किताब भी थी। अंत में मेरी नज़र एक बड़े कुत्ते पर पड़ी, जो कमरे के एक कोने में सिकुड़कर सो रहा था।
वह आदमी दीनानाथ बाबू के विवरण से मिलता-जुलता था। उसके मुंह में एक पाइप लटक रहा था। हमारे आते ही उसने टाइप करना बंद कर दिया और हम दोनों को एक नज़र से देखा। अंत में उसने पूछा, 'आप दोनों में से कौन श्री मित्तर हैं?' शायद यह उनका मजाक करने का तरीका था, लेकिन फेलुदा हँसे नहीं। उन्होंने बड़ी शालीनता से जवाब दिया, 'मैं प्रदोष मित्र हूँ। यह मेरा चचेरा भाई है।' श्री पाकराशी ने कहा, ‘मुझे कैसे पता चलता? छोटे लड़के तो कितनी अलग-अलग चीज़ों में हाथ आजमाते हैं... संगीत, अभिनय, चित्रकला; अरे, कुछ तो धार्मिक गुरु भी बन जाते हैं! तो हो सकता है कि तुम्हारा यह चचेरा भाई खुद ही कोई

महान जासूस रहा हो। खैर, बताओ तुम यहाँ क्यों आए हो? उस आदमी से तुम्हें क्या चाहिए जिसने अपने काम से काम रखने के अलावा कभी कुछ नहीं किया?’ फेलुदा सही थे। अगर कभी क्रोध की प्रतियोगिता होती, तो यह आदमी विश्व चैंपियन होता।
‘तुम्हारे अनुसार तुम्हें यहाँ किसने भेजा था?’ वह जानना चाहता था।
‘श्री लाहिड़ी ने आपका नाम लिया था। वे तीन दिन पहले दिल्ली से आए थे। आप और उन्होंने एक ही डिब्बे में यात्रा की थी।’
‘मैं समझ गया। और क्या वह वही व्यक्ति है जिसका अटैची केस खो गया था?’ 'खोया नहीं है। बस किसी और का समझ लिया गया है।'
‘लापरवाह मूर्ख। लेकिन उसे इसे वापस लाने के लिए तुम्हें काम पर क्यों रखना पड़ा? उसमें कौन सी कीमती वस्तु थी?’
'वहाँ वास्तव में कुछ खास नहीं था, सिवाय एक पुरानी पांडुलिपि के। उसकी कोई दूसरी प्रति नहीं है।'
मैं समझ सकता था कि फेलुदा ने पांडुलिपि का ज़िक्र क्यों किया। अगर वह श्री पाकराशी को अपनी नौकरी का असली कारण बता देता, तो निस्संदेह श्री पाकराशी उसका उपहास उड़ाते।
‘पांडुलिपि?’ उसने कुछ संदेह भरे लहजे में पूछा।
'जी हां। शंभूचरण बोस द्वारा लिखित एक यात्रा वृत्तांत। श्री लाहिड़ी ने इसे ट्रेन में पढ़ा था, फिर इसे वापस केस में रख दिया था।'
‘खैर, वह आदमी सिर्फ मूर्ख ही नहीं, झूठा भी लगता है। देखिए, हालांकि मुझे ऊपरी बर्थ मिली थी, लेकिन मैंने दिन का अधिकांश समय उसके ठीक बगल में बैठकर बिताया। वह अखबार और बंगाली पत्रिका के अलावा कुछ नहीं पढ़ता था।’
फेलुदा ने कुछ नहीं कहा। श्री पाकराशी ने सांस लेने के लिए थोड़ी देर रुककर कहा, 'मुझे नहीं पता कि आप एक जासूस के तौर पर इस मामले को कैसे समझेंगे। मुझे तो यह सब कुछ बेहद संदिग्ध लग रहा है। खैर, अगर आप व्यर्थ की खोज में लगना चाहते हैं, तो लगिए। मैं कोई मदद नहीं कर सकता। मैंने आपको फोन पर बताया था कि मेरे पास एयर इंडिया के ऐसे लगभग तीन बैग हैं, लेकिन इस यात्रा में मैं उनमें से कोई भी अपने साथ नहीं ले गया।'
'दूसरे यात्रियों में से एक आपको जानता था, है ना?'
‘कौन, बृजमोहन? जी हाँ। वह साहूकार है। मेरा उससे कुछ लेन-देन हुआ है।’ ‘क्या उसे नीला पड़ गया होगा?’

‘मुझे भला कैसे पता चलेगा?’ श्री पाकराशी ने गुस्से से भौंहें चढ़ा लीं। ‘क्या आप मुझे बृजमोहन का टेलीफोन नंबर दे सकते हैं?’
“डायरेक्टरी में देख लो। एस. एम. केडिया एंड कंपनी। एस. एम. बृजमोहन के पिता थे। उनका दफ्तर लेनिन सरानी में है। और एक बात और—यह सोचना गलत है कि मैं बाकी यात्रियों में से सिर्फ एक को जानता था। असल में, मैं उनमें से दो को जानता था।”
‘दूसरा कौन है?’ फेलुदा ने हैरानी से पूछा।
‘दीनानाथ लाहिड़ी। मैंने उन्हें पहले रेस में देखा था। वो काफी चुलबुले लड़के हुआ करते थे। अब मुझे लगता है कि उन्होंने अपनी जीवनशैली बदल ली है और दिल्ली में अपना एक गुरु भी ढूंढ लिया है। भगवान ही जाने इनमें से कुछ सच है या नहीं।’
‘आपके कोच में चौथे व्यक्ति के बारे में क्या?’ फेलुदा ने पूछा। जाहिर तौर पर वह ज्यादा से ज्यादा जानकारी हासिल करने की कोशिश कर रहा था।
‘क्या हो रहा है?’ श्री पाकराशी ने मुँह बनाते हुए चिल्लाकर कहा, हालाँकि उनके मुँह से अभी भी पाइप लटका हुआ था। ‘क्या आप लोग यहाँ सिर्फ सवाल पूछने आए हैं? क्या मैं कोई आरोपी हूँ जिस पर मुकदमा चल रहा है या क्या?’
‘जी नहीं, महोदय,’ फेलुदा ने शांत भाव से कहा। ‘मैं ये सवाल सिर्फ इसलिए पूछ रहा हूँ क्योंकि आप अकेले ही शतरंज खेलते हैं, आप स्पष्ट रूप से तेज बुद्धि और अच्छी याददाश्त वाले हैं, और...’
श्री पाकराशी का गुस्सा थोड़ा शांत हुआ। उन्होंने गला साफ किया और कहा, 'शतरंज एक लत बन गया है। मेरा साथी जिसके साथ मैं खेलता था, अब इस दुनिया में नहीं है। इसलिए अब मैं अकेले खेलता हूं।'
'रोज रोज?'
'हां। इसका एक और कारण मेरी अनिद्रा है। मैं सुबह करीब तीन बजे तक खेलता रहता हूं।'
क्या आप कभी नींद लाने वाली गोली नहीं लेते?
'मैं कभी-कभी ऐसा करता हूँ। लेकिन इससे हमेशा फायदा नहीं होता। वैसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं तीन बजे सोता हूँ और आठ बजे उठता हूँ। मेरी उम्र में पाँच घंटे की नींद काफी है।'
‘क्या टाइपिंग भी... आपकी लतों में से एक है?’ फेलुदा ने अपनी टेढ़ी मुस्कान के साथ पूछा।

नहीं, लेकिन कभी-कभी मुझे खुद टाइप करना अच्छा लगता है। मेरे पास एक सेक्रेटरी है, जो बिल्कुल बेकार है। खैर, आप चौथे यात्री के बारे में बात कर रहे थे, है ना? उसके चेहरे की बनावट तीखी थी, वह लगभग गंजा था, बंगाली नहीं था, बहुत अच्छी अंग्रेजी बोलता था और उसने मुझे एक सेब दिया। मैंने उसे नहीं खाया। आप और क्या जानना चाहते हैं? मैं तिरपन साल का हूँ और मेरा कुत्ता साढ़े तीन साल का है। वह एक बॉक्सर है और उसे आधे घंटे से ज़्यादा देर तक मेहमानों का रुकना पसंद नहीं है। तो...
‘एक दिलचस्प आदमी,’ फेलुदा ने टिप्पणी की। हम सड़क पर थे, लेकिन घर की ओर नहीं जा रहे थे। फेलुदा ने विपरीत दिशा में जाना क्यों चुना, यह मैं नहीं बता सकता था; और न ही उसने पास से गुजर रही दो खाली टैक्सियों में से किसी को रोकने का प्रयास किया।
एक छोटी सी बात मुझे परेशान कर रही थी। मुझे फेलुदा से इस बारे में बात करनी ही पड़ी। ‘क्या दीनानाथ बाबू ने यह नहीं कहा था कि उन्हें लगता है कि पाकराशी की उम्र लगभग साठ साल है? लेकिन श्री पाकराशी ने खुद कहा कि उनकी उम्र तिरपन साल है और सच कहूँ तो वे उससे ज़्यादा उम्र के नहीं लगते। है ना ये मज़ेदार बात?’
फेलुदा ने कहा, 'इससे केवल यही साबित होता है कि दीनानाथ बाबू की अवलोकन क्षमता उतनी अच्छी नहीं है जितनी होनी चाहिए।'
कुछ मिनट बाद हम लोअर सर्कुलर रोड पर पहुँच गए। फेलुदा ने बाएँ मुड़ा। मैंने पूछा, ‘क्या आप उस डकैती के मामले को देखने जा रहे हैं?’ तीन दिन पहले ही अखबारों में दिनदहाड़े हुई एक डकैती की खबर छपी थी। बताया जा रहा था कि तीन नकाबपोश लोग लोअर सर्कुलर रोड पर एक ज्वैलरी की दुकान में घुस गए थे और कीमती गहने और पत्थर लेकर भाग निकले थे। वे एक काली एम्बेसडर कार में बैठकर हवा में अंधाधुंध गोलियां चलाते हुए फरार हो गए थे। फेलुदा ने कहा था, ‘उन बदमाशों का पीछा करना मजेदार हो सकता है।’ लेकिन अफसोस, किसी ने भी उनसे इस मामले की जांच करने के लिए नहीं कहा था। इसलिए मैंने सोचा कि शायद वह खुद ही कुछ सवाल पूछने जा रहे होंगे। लेकिन फेलुदा ने मेरी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। ऐसा लग रहा था मानो उस समय उनका एकमात्र उद्देश्य बस थोड़ी कसरत करना था, और इसलिए वह चलते ही रहे।
थोड़ी देर बाद, वह अचानक बाईं ओर मुड़ा और तेज़ी से हिंदुस्तान इंटरनेशनल होटल में चला गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे तेज़ी से चला गया।

‘क्या 6 मार्च को शिमला से कोई आपके होटल में रुका था?’ फेलुदा ने रिसेप्शनिस्ट से पूछा। ‘उसका पहला नाम “G” से शुरू होता है... मुझे उसका पूरा नाम याद नहीं आ रहा है।’
बृजमोहन और नरेश पाकराशी दोनों के नाम 'जी' से शुरू नहीं होते थे। इसलिए यह काम सेबवाले ने ही किया होगा।
रिसेप्शनिस्ट ने अपनी किताब देखी।
उन्होंने कहा, '6 मार्च को यहां दो विदेशियों के नाम दर्ज हैं, जेराल्ड प्रैटली और जी. आर. होम्स। दोनों विदेश से आए थे।'
‘धन्यवाद,’ फेलुदा ने कहा और चला गया।
बाहर निकलते ही हमने एक टैक्सी ली। फेलुदा ने ड्राइवर से कहा, 'पार्क होटल' और एक चारमीनार सिगरेट जलाई।
उन्होंने मुझसे कहा, ‘अगर आपने नक्शे पर बने उन लाल निशानों को ध्यान से देखा होता, तो आपको पता चल जाता कि वे होटलों के निशान थे। यह स्वाभाविक है कि वह व्यक्ति किसी अच्छे होटल में ठहरना चाहेगा। फिलहाल, कलकत्ता में पाँच प्रसिद्ध होटल हैं—ग्रैंड, हिंदुस्तान इंटरनेशनल, पार्क, ग्रेट ईस्टर्न और रिट्ज़ कॉन्टिनेंटल। और ये लाल निशान इन्हीं होटलों पर लगाए गए थे। पार्क होटल हमारा अगला पड़ाव होगा।’
पता चला कि 6 मार्च को पार्क में 'G' से शुरू होने वाले नाम का कोई भी व्यक्ति नहीं आया था। लेकिन ग्रैंड होटल से एक अच्छी खबर मिली। फेलुदा वहाँ के एक बंगाली रिसेप्शनिस्ट दासगुप्ता को जानता था। उसने हमें आगंतुकों की सूची दिखाई। 6 तारीख को केवल एक भारतीय आया था। वह शिमला से आया था और उसका नाम जी. सी. धमीजा था।
क्या वह अभी भी यहीं है?
नहीं, महोदय। उन्होंने कल ही अस्पताल से छुट्टी ले ली थी।
मेरे मन में आशा की जो थोड़ी सी लौ थी, वह पल भर में बुझ गई।
फेलुदा भी भौंहें चढ़ाए खड़ा था। लेकिन उसने सवाल पूछना बंद नहीं किया।
वह किस कमरे में था?
कमरा नंबर 216।
‘क्या अब यह खाली है?’
'हां। आज शाम को हमारे यहां एक मेहमान आने वाला है, लेकिन फिलहाल यह कमरा खाली है।'

‘क्या मैं रूम बॉय से बात कर सकता हूँ?’
'ज़रूर। मैं किसी को भेजकर आपको रास्ता दिखा दूंगा।'
हम लिफ्ट से दूसरी मंजिल पर गए। एक लंबे गलियारे से गुज़रते हुए हम आखिरकार कमरा नंबर 216 पर पहुँचे। तभी कमरा कर्मचारी प्रकट हुआ। हम उसके साथ कमरे में गए। फेलुदा बेचैनी से इधर-उधर घूमने लगा।
‘क्या आपको वह आदमी याद है जो कल चला गया था? वह इसी कमरे में रुका हुआ था।’ 'जी श्रीमान।'
‘अब ध्यान से याद करने की कोशिश करो। उसके पास क्या-क्या सामान था?’
एक बड़ा सूटकेस और एक छोटा सूटकेस।
क्या यह नीला था?
'हां। जब मैं उसकी बोतल भरने के बाद कमरे में वापस आया, तो मैंने उसे नीले रंग के डिब्बे से कुछ चीजें निकालते हुए पाया। ऐसा लग रहा था कि वह कुछ ढूंढ रहा था।'
'बहुत बढ़िया। क्या आपको याद है कि उस आदमी के पास कुछ सेब थे— शायद कागज़ के थैले में?'
'हां। तीन सेब थे। उसने उन्हें निकालकर एक प्लेट में रख दिया।'
‘वह आदमी कैसा दिखता था?’
लेकिन कमरे में काम करने वाले लड़के द्वारा दिया गया विवरण मददगार नहीं था। कलकत्ता में कम से कम एक लाख लोग उस विवरण से मेल खाते।
हालांकि, खुश होने का कारण था। अब हमारे पास उस व्यक्ति का नाम और पता था जिसका अटैची केस श्री लाहिड़ी के अटैची केस से बदल गया था। श्री दासगुप्ता ने बाहर जाते समय हमें एक कागज का टुकड़ा दिया। मैंने फेलुदा के कंधे के ऊपर से देखा और उस पर जो लिखा था, वह पढ़ा:
जी. सी. धमीजा
‘द नूक’
वाइल्ड फ्लावर हॉल
शिमला.

तीन

हमें बताया गया, 'काका बाहर गए हैं। वे करीब सात बजे लौटेंगे।'
तो ये दीनानाथ बाबू के भतीजे थे। हम ग्रैंड होटल से सीधे दीनानाथ बाबू के घर अपनी प्रगति की रिपोर्ट देने आए थे, रास्ते में न्यू एंपायर के बाहर एक दुकान से मीठा पान खरीदने के लिए रुके थे।
श्री लाहिड़ी के घर के गेट के एक तरफ चार गैरेज थे। इनमें से तीन खाली थे। चौथे में एक पुरानी, अजीब सी दिखने वाली कार खड़ी थी। 'इटैलियन है,' फेलुदा ने कहा। 'यह लगोंडा है।'
चौकीदार ने हमारा कार्ड ले लिया, लेकिन दीनानाथ बाबू की जगह एक युवक घर से निकला। उसकी उम्र तीस से ज़्यादा नहीं रही होगी। मध्यम कद का वह अपने चाचा की तरह गोरा था; उसके बाल लंबे और बिखरे हुए थे; और कानों से नीचे तक चौड़ी दाढ़ी थी, जो आजकल फैशनेबल पुरुषों में खूब चलन में थी। वह आदमी फेलुदा को घूर रहा था।
फेलुदा ने पूछा, 'क्या हम उसके लौटने तक इंतजार कर सकते हैं? हमें कुछ बहुत महत्वपूर्ण बात करनी है।'
'कृपया इस तरफ आएं।'
हमें बैठक कक्ष में ले जाया गया। दीवारें और फर्श बाघ और भालू की खालों से भरे हुए थे; मुख्य द्वार के ऊपर दीवार पर भैंस का एक विशाल सिर सजा हुआ था। शायद दीनानाथ बाबू के चाचा भी शिकारी रहे होंगे। शायद इसीलिए वह और शंभूचरण इतने करीब थे?
‘मेरे चाचाजी हर शाम टहलने जाते हैं। वो जल्दी लौट आएंगे।’ दीनानाथ बाबू के भतीजे की आवाज़ बेहद पतली थी। मुझे लगा कि शायद श्री धमीजा का अटैची केस उसी को दिया गया था।
उसने पूछा, 'क्या आप वही फेलू मिटर हैं जिन्होंने स्वर्णिम किले का रहस्य सुलझाया था?'
'हां,' फेलुदा ने संक्षेप में कहा और अपनी कुर्सी पर पीछे झुककर, पैर मोड़कर, पूरी तरह से आराम से बैठ गया।

मैं दूसरे आदमी को देखता रहा। उसका चेहरा जाना-पहचाना लग रहा था। मैंने उसे पहले कहाँ देखा था? तभी अचानक मुझे कुछ याद आया।
मैंने पूछा, 'क्या आपने कभी किसी फिल्म में अभिनय किया है?'
उस व्यक्ति ने अपना गला साफ किया।
'हां, 'द घोस्ट' में। यह एक थ्रिलर फिल्म है। मैं इसमें खलनायक की भूमिका निभा रहा हूं। लेकिन यह अभी तक रिलीज नहीं हुई है।'
'आपका नाम । । ।?'
‘मेरा असली नाम प्रबीर लाहिड़ी है। लेकिन मेरा स्क्रीन नाम अमर कुमार है।’ 'ओह हां, अब मुझे याद आया। मैंने आपकी तस्वीर एक फिल्म पत्रिका में देखी थी।'
हे भगवान, ऐसी आवाज के साथ वह किस तरह का खलनायक बनेगा?
‘क्या आप पेशेवर अभिनेता हैं?’ फेलुदा ने पूछा। पता नहीं क्यों, प्रबीर बाबू अभी भी खड़े थे।
उन्होंने जवाब दिया, 'मुझे अपने चाचा के कारोबार में मदद करनी पड़ती है, जिसका मतलब है उनकी प्लास्टिक फैक्ट्री जाना। लेकिन मेरी असली रुचि अभिनय में है।'
‘तुम्हारे चाचा क्या सोचते हैं?’
‘चाचाजी को इसमें ज्यादा दिलचस्पी नहीं है।’
'क्यों नहीं?'
वह ऐसा ही है।
अमर कुमार का चेहरा गंभीर हो गया। स्पष्ट रूप से, फिल्मों में अपने करियर को लेकर उनके चाचा के साथ उनकी बहस हुई थी।
'मुझे आपसे कुछ पूछना है,' फेलुदा ने विनम्रता से कहा, शायद इसलिए क्योंकि अमर कुमार आक्रामक दिखने लगा था।
उन्होंने कहा, 'मुझे आपके सवालों का जवाब देने में कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन मुझे अपने चाचा का लगातार मुझ पर ताने मारना बिल्कुल पसंद नहीं है।' ‘क्या आपके चाचा ने हाल ही में आपको एयर इंडिया का अटैची केस दिया है?’ 'हां, लेकिन किसी ने उसे चुरा लिया। देखो, हमारे पास एक नया नौकर है...' फेलुदा ने आश्वस्त करने वाला हाथ उठाया और मुस्कुराया।
'नहीं, किसी ने वह केस नहीं चुराया, मैं आपको यकीन दिलाता हूं। वह मेरे पास है।'

‘आपके साथ?’ प्रबीर बाबू पूरी तरह से अचंभित दिखे।
'जी हां। आपके चाचा ने केस को उसके मालिक को लौटाने का फैसला किया। उन्होंने मुझे इसी उद्देश्य से नियुक्त किया था। मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या आपने उसमें से कुछ निकाला था।'
‘मैंने किया, बिल्कुल। ये रहा।’
प्रबीर बाबू ने अपनी जेब से एक बॉलपॉइंट पेन निकाला। उन्होंने आगे कहा, 'मैं ब्लेड और शेविंग क्रीम का इस्तेमाल करना चाहता था, लेकिन ज़ाहिर है मुझे कभी मौका नहीं मिला।'
‘आपको इस बात का एहसास तो है ना कि यह मामला मालिक को हर वस्तु के साथ सही सलामत वापस भेजा जाना चाहिए?’
'जी हां, बिल्कुल।'
उसने कलम फेलुदा को सौंप दी। लेकिन ज़ाहिर तौर पर वह अब भी अपने चाचा से बहुत नाराज़ था। ‘कम से कम,’ उसने बुदबुदाते हुए कहा, ‘मुझे बता तो दिया जाना चाहिए था कि मामला वापस भेजा जा रहा है। आख़िरकार, उन्होंने दिया तो था ही...’
वह अपना वाक्य पूरा नहीं कर सका। ठीक उसी समय दीनानाथ बाबू की कार ने हॉर्न बजाया, जिससे फिल्म का खलनायक तेजी से पीछे हट गया।
‘अरे नहीं, आप लोग बहुत देर से इंतज़ार कर रहे हैं?’ दीनानाथ बाबू थोड़े उदास चेहरे के साथ, हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए कमरे में दाखिल हुए। हम उनका अभिवादन करने के लिए खड़े हो गए। ‘नहीं, नहीं, कृपया बैठ जाइए,’ उन्होंने जल्दी से कहा। ‘आपको एक कप चाय पीने में कोई आपत्ति नहीं होगी, है ना?’
उनका नौकर लगभग तुरंत ही आया और हमें चाय लाने का आदेश देकर चला गया। दीनानाथ बाबू हमारे बगल वाले सोफे पर बैठ गए।
‘तो… मुझे बताओ…?’ उसने आमंत्रित किया।
‘आपका सामान उस व्यक्ति से बदल दिया गया है जिसने आपको सेब दिया था। उसका नाम जी.सी. धमीजा है।’
दीनानाथ बाबू की आंखें फटी रह गईं। 'आपने यह सब सिर्फ एक दिन में पता लगा लिया? यह क्या है—जादू?'

फेलुदा ने अपनी मशहूर टेढ़ी मुस्कान के साथ आगे कहा, 'वह शिमला में रहता है और मेरे पास उसका पता है। उसे ग्रैंड होटल में तीन दिन बिताने थे, लेकिन वह एक दिन पहले ही चला गया।'
‘क्या वह पहले ही चले गए हैं?’ दीनानाथ बाबू ने थोड़ी निराशा के साथ पूछा। ‘हाँ। वह होटल से चले गए हैं, लेकिन हमें नहीं पता कि वह शिमला लौट आए हैं या नहीं। शिमला स्थित उनके घर पर एक टेलीग्राम भेज दीजिए, आपको इसका जवाब मिल जाएगा।’
दीनानाथ बाबू कुछ पल सोचते रहे। फिर उन्होंने कहा, 'ठीक है। मैं आज ही एक तार भेज दूंगा। लेकिन अगर मुझे पता चला कि वह वाकई शिमला वापस चला गया है, तो भी मुझे उसका मामला उसे वापस करना ही होगा, है ना?'
'जी हां, बिल्कुल। और आपकी यात्रा वृत्तांत आपको वापस मिल जाना चाहिए। मुझे उस यात्रा वृत्तांत के बारे में जानने की बहुत उत्सुकता है।'
बहुत बढ़िया। श्रीमान मित्तर, मुझे एक प्रस्ताव रखने दीजिए। आप अपने चचेरे भाई के साथ शिमला क्यों नहीं जाते? मैं आपके सभी खर्चों का वहन करूँगा। मैंने सुना है शिमला में बर्फ़बारी हो रही है। खोका, क्या तुमने कभी बर्फ़बारी देखी है?
किसी और समय होता तो मुझे बच्चा कहलाने पर बुरा लगता। लेकिन अब तो इससे कोई फर्क ही नहीं पड़ता था। शिमला जाना है? ओह, कितना रोमांचक! मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा।
लेकिन फेलुदा के अगले शब्द बेहद परेशान करने वाले थे। उन्होंने कहा, 'श्री लाहिड़ी, आपको इस बारे में अच्छी तरह सोच लेना चाहिए। शिमला में एक अटैची बॉक्स ले जाना और दूसरा वापस लाना तो बस इतना ही है, है ना? तो कोई भी यह काम कर सकता है। जरूरी नहीं कि मैं ही करूं।'
‘नहीं, नहीं, नहीं,’ दीनानाथ बाबू ने काफी उग्रता से विरोध किया, ‘मुझे आप जैसा भरोसेमंद व्यक्ति कहाँ मिलेगा? और चूंकि आपने जांच शुरू की है, मेरा मानना है कि आपको ही इसे समाप्त करना चाहिए।’
‘अरे, आपका एक भतीजा है ना?’
दीनानाथ बाबू के चेहरे पर उदासी छा गई।
“वह बिल्कुल भी अच्छा नहीं है। मुझे डर है कि मेरे भतीजे में ज़िम्मेदारी की भावना लगभग न के बराबर है। क्या आप जानते हैं कि उसने क्या किया है? वह फिल्मों में चला गया है! नहीं, मैं उस पर बिल्कुल भी भरोसा नहीं कर सकता।

मैं चाहता हूँ कि आप दोनों जाएँ। मैं अपने ट्रैवल एजेंटों को सभी व्यवस्थाएँ करने के लिए कहूँगा। आप दिल्ली के लिए उड़ान भर सकते हैं और फिर ट्रेन पकड़ सकते हैं। जब आपका काम पूरा हो जाए, तो आप शिमला में कुछ दिनों की छुट्टी भी मना सकते हैं। आप जैसे व्यक्ति की सेवा करना मेरे लिए बहुत खुशी की बात होगी। आपने कुछ ही घंटों में जो किया है वह सचमुच सराहनीय है!”
चाय, केक और सैंडविच आ गए। फेलुदा ने चॉकलेट केक का एक टुकड़ा उठाया और कहा, 'धन्यवाद। एक छोटी सी बात है जिसके बारे में मुझे अभी भी जिज्ञासा है। वह नेपाली बक्सा जिसमें आपको पांडुलिपि मिली थी। क्या उसे देखना संभव है?' 'बिल्कुल। इसमें कोई दिक्कत नहीं है। मैं अपने सामान लाने वाले को इसे लाने के लिए कह दूंगा।'
कुछ ही क्षणों में बक्सा प्रकट हो गया। लगभग दो फुट लंबा और दस इंच ऊँचा, इसकी लकड़ी की सतह तांबे की चादर से ढकी हुई थी। ढक्कन पर लाल, नीले और पीले पत्थर जड़े हुए थे। ढक्कन उठाते ही जो गंध मेरी नाक में आई, वह नरेश पाकराशी के अध्ययन कक्ष जैसी ही थी। धूल से ढके पुराने फर्नीचर और फटे- पुराने पर्दों से वही बासी गंध आ रही थी।
दीनानाथ बाबू ने कहा, 'जैसा कि आप देख सकते हैं, बक्से में दो खाने हैं। पांडुलिपि पहले खाने में थी, जो एक नेपाली अखबार में लिपटी हुई थी।'
‘हे भगवान, इसमें तो कितनी सारी अलग-अलग चीजें भरी हुई हैं!’ फेलुदा ने हैरानी से कहा।
‘जी हां,’ दीनानाथ बाबू मुस्कुराए। ‘आप इसे एक छोटी सी अनोखी चीजों की दुकान कह सकते हैं। लेकिन यह इतनी गंदी है कि मुझे किसी भी चीज को छूने का मन ही नहीं हुआ।’
पता चला कि उन डिब्बों को हटाया जा सकता था। फेलुदा ने दूसरा डिब्बा निकाला और उसमें रखी वस्तुओं का निरीक्षण किया। उसमें पत्थर के हार, तांबे और पीतल से बनी छोटी-छोटी नक्काशीदार डिस्क, दो मोमबत्तियाँ, एक छोटी घंटी, कुछ छोटे कटोरे, किसी अज्ञात जानवर की हड्डी, कुछ सूखी जड़ी-बूटियाँ और फूल थे, जो धूल में बदल चुके थे—सचमुच एक छोटी सी कबाड़ की दुकान।
‘क्या यह डिब्बा तुम्हारे चाचा का था?’
'यह उसके साथ आया था, इसलिए मुझे लगता है कि यह उसके साथ ही आया होगा।'
‘वह काठमांडू से कब लौटा?’

1923 में। उसी साल उनका निधन हो गया। मैं सात साल का था।
‘बहुत दिलचस्प,’ फेलुदा ने कहा। फिर उसने अपने प्याले से आखिरी घूंट लिया और खड़ा हो गया। ‘श्री लाहिड़ी, मैं आपका प्रस्ताव स्वीकार करता हूँ, लेकिन हम कल नहीं जा सकते। हमें ड्राई क्लीनर से अपने गर्म कपड़े लेने होंगे।
परसों जाना शायद बेहतर रहेगा। और कृपया धमीजा को तार भेजना न भूलें।’
हम लगभग साढ़े आठ बजे घर लौटे तो देखा कि जटायु बैठक कक्ष में हमारा इंतजार कर रहा था, उसकी गोद में एक भूरा पार्सल था।
‘क्या आप सिनेमा देखने गए थे?’ उसने मुस्कुराते हुए पूछा।

चार

जटायु, मशहूर क्राइम थ्रिलर लेखक लालमोहन गांगुली का छद्म नाम था। राजस्थान के स्वर्ण किले की यात्रा के दौरान हमारी पहली मुलाकात उनसे हुई थी। कुछ लोग बिना किसी स्पष्ट कारण के अजीबोगरीब ढंग से हास्यास्पद लगते हैं। लालमोहन बाबू उन्हीं में से एक थे। वे कद में छोटे थे—उनका सिर मुश्किल से फेलुदा के कंधे तक पहुँचता था; वे पाँच नंबर के जूते पहनते थे, बेहद दुबले-पतले थे, फिर भी कभी-कभी अनजाने में अपना एक हाथ मोड़कर दूसरे हाथ से अपनी बाइसेप्स को सहलाते थे। अगले ही पल, अगर बगल वाले कमरे में कोई ज़ोर से छींक भी दे तो वे चौंक जाते थे।
‘मैं तुम्हारे और तपेश के लिए अपनी नवीनतम पुस्तक लाया हूँ,’ उसने भूरे रंग का पार्सल फेलुदा को देते हुए कहा। राजस्थान में हमारे उस साहसिक अनुभव के बाद से वह हमारे घर नियमित रूप से आने लगा था।
‘इस बार तुमने कौन सा देश चुना?’ फेलुदा ने पार्सल खोलते हुए पूछा। लालमोहन बाबू के नायक के रोंगटे खड़े कर देने वाले कारनामों में अलग-अलग देशों की यात्रा शामिल थी।
‘ओह, मैंने इस बार लगभग पूरी दुनिया का भ्रमण कर लिया है,’ लालमोहन बाबू ने गर्व से उत्तर दिया।
‘उम्मीद है इस बार कोई तथ्यात्मक त्रुटि नहीं होगी?’ फेलुदा ने जिज्ञासावश मुझसे कहा और किताब मुझे थमा दी। फेलुदा को अपनी पिछली किताब, ‘द सहारा शिवर्स’, में ऊंट के पानी की आपूर्ति से संबंधित एक गलती को सुधारना पड़ा था।
‘जी नहीं, महोदय,’ लालमोहन बाबू मुस्कुराए। ‘मेरे पड़ोसियों में से एक के पास “एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिया” का पूरा सेट है। मैंने हर एक विवरण की जाँच की है।’
'लालमोहन बाबू, अगर आपने ब्रिटानिया की बजाय ब्रिटानिका से सलाह ली होती तो मुझे ज्यादा तसल्ली होती।'

लेकिन जटायु ने इस टिप्पणी को अनसुना कर दिया और आगे कहा, 'चरमोत्कर्ष तब आता है - आपको इसे पढ़ना होगा - जब मेरा नायक, प्रखर रुद्र, एक दरियाई घोड़े से लड़ता है।'
‘एक दरियाई घोड़ा?’
'हां, यह वाकई एक रोमांचक मामला है।'
‘यह लड़ाई कहाँ होती है?’
‘क्यों, उत्तरी ध्रुव में, बिल्कुल। एक दरियाई घोड़ा, मैंने कहा था ना?’ ‘उत्तरी ध्रुव में दरियाई घोड़ा?’
‘जी हाँ, जी हाँ। क्या आपने इस जानवर की तस्वीरें नहीं देखीं? इसकी मूंछें बगीचे की झाड़ू के रेशों जैसी हैं, इसके नुकीले दांत सफेद मूली की तरह बाहर निकले हुए हैं, यह बर्फ पर धीरे-धीरे चलता है...’
‘ये तो वालरस है, है ना? दरियाई घोड़ा तो अफ्रीका में रहता है!’ जटायु शर्म से लाल हो गया और उसने अपने होंठ दबा लिए। ‘एह हेह हेह!’ उसने कहा। ‘बहुत बड़ी गलती हो गई! सुनो, अब से मैं अपनी पांडुलिपि प्रकाशक को देने से पहले तुम्हें दिखाऊंगा।’
फेलुदा ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। 'माफ़ कीजिए,' उसने कहा और अपने कमरे में चला गया।
‘तुम्हारा चचेरा भाई कुछ शांत सा लग रहा है,’ लालमोहन बाबू ने मुझसे कहा। ‘क्या उसे कोई नया केस मिला है?’
‘नहीं, यह कोई महत्वपूर्ण बात नहीं है,’ मैंने उससे कहा। ‘लेकिन हमें अगले कुछ दिनों में शिमला जाना है।’
‘एक लंबा दौरा?’
नहीं, लगभग चार दिन।
‘हम्म… मैं उस इलाके में कभी नहीं गया…’ लालमोहन बाबू कुछ सोच में पड़ गए। लेकिन जैसे ही फेलुदा वापस लौटे, उनमें फिर से जोश आ गया।
‘तपेश ने मुझे बताया कि आप शिमला जा रहे हैं। क्या इसका किसी जांच से कुछ संबंध है?’
नहीं, बिलकुल ऐसा नहीं है। बात बस इतनी सी है कि टॉम का मामला डिक के मामले से बदल गया है। इसलिए हमें डिक का मामला उसे वापस करना होगा और टॉम का मामला वापस लेना होगा।
‘हे भगवान, गुमशुदा मामले का रहस्य? या, बस एक रहस्यमय मामला?’

‘देखो, मुझे नहीं पता कि इसमें कोई असली रहस्य शामिल है या नहीं। लेकिन एक-दो बातें मुझे थोड़ा सा सोचने पर मजबूर करती हैं...’
‘फेलू बाबू,’ जटायु ने बीच में ही टोकते हुए कहा, ‘इन कुछ महीनों में मैं आपको काफी अच्छे से जान गया हूँ। मुझे पूरा यकीन है कि आपने यह केस तब तक नहीं लिया होता जब तक आपको इसमें… कुछ तो बात न लगती। मुझे बताइए क्या बात है।’
मुझे महसूस हुआ कि फेलुदा इस समय ज्यादा कुछ बताने से हिचकिचा रहे थे। उन्होंने संभलकर कहा, 'यह कहना मुश्किल है कि कौन झूठ बोल रहा है, कौन सच बोल रहा है, या कौन सिर्फ सच छिपाने की कोशिश कर रहा है। मुझे बस इतना पता है कि कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ है।'
‘ठीक है, बस बहुत हो गया!’ जटायु की आँखें चमक उठीं। ‘बस कह दो, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।’
क्या आप ठंड सहन कर सकते हैं?
‘ठंड? मैं तो पिछले साल दार्जिलिंग गया था।’
'कब?'
मई में।
शिमला में इस समय बर्फबारी हो रही है।
‘क्या!’ लालमोहन बाबू उत्साह से अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए। ‘बर्फ? ऐसा कैसे! पिछली बार तो रेगिस्तान था और अब बर्फ गिरने वाली है? कड़ाही से निकलकर फ्रिज में? ओह, मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता!’
‘यह एक महंगा सौदा होने वाला है।’
मुझे पता था कि फेलुदा उसे धीरे से समझाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन जटायु ने उसकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया।
‘मुझे खर्चों से डर नहीं लगता,’ उसने फिल्मी खलनायक की तरह हंसते हुए जवाब दिया। ‘मैंने इक्कीस थ्रिलर प्रकाशित किए हैं, जिनमें से हर एक के कम से कम पांच संस्करण छप चुके हैं। भगवान की कृपा से मैंने कलकत्ता में तीन घर खरीदे हैं। जितना हो सके यात्रा करना मेरे हित में है। जितनी ज्यादा जगहें मैं देखता हूं, नए कथानक सोचना उतना ही आसान हो जाता है। और हर कोई तुम्हारी तरह चतुर नहीं होता, इसलिए ज्यादातर लोग वालरस और हिप्पो में फर्क नहीं कर पाते। वे खुशी-खुशी मेरी बातें मान लेते हैं, और इसका सीधा सा

मतलब है कि पैसा आता ही रहता है। अरे नहीं, मुझे खर्चों की कोई चिंता नहीं है। लेकिन अगर तुम मुझे सीधे-सीधे ‘ना’ कह दोगे, तो जाहिर है बात अलग होगी।’ फेलुदा मान गया। जाने से पहले, जटायु ने हमारे जाने का समय, तरीका और अवधि का ब्यौरा अपनी नोटबुक में लिख लिया और कहा, 'ऊनी बनियान, दो पुलओवर, एक ऊनी जैकेट और एक ओवरकोट... शिमला के लिए भी इतना काफी होना चाहिए, है ना?'
‘जी हां,’ फेलुदा ने गंभीरता से कहा, ‘लेकिन तभी जब आप इसमें एक जोड़ी दस्ताने, एक बालाक्लावा हेलमेट, एक जोड़ी गैलोश, ऊनी मोजे और ठंड से बचाव के लिए कुछ और भी जोड़ लें। तब आप निश्चिंत हो सकते हैं।’
मुझे स्कूल में परीक्षाएँ और टेस्ट बिल्कुल पसंद नहीं हैं, लेकिन फेलुदा द्वारा तैयार किए गए टेस्ट मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। ये मज़ेदार होते हैं और इनसे मेरा दिमाग शांत होता है।
फेलुदा ने मुझे रात के खाने के बाद अपने कमरे में आने को कहा। वहाँ वह अपने बिस्तर पर पेट के बल लेट गया और मुझसे सवाल पूछने लगा। पहला सवाल था, 'इस मामले से जुड़े उन सभी लोगों के नाम बताइए जिन्हें हम जानते हैं।' ‘Dinanath Lahiri.’
‘ठीक है। आपको क्या लगता है कि वह किस तरह का आदमी है?’
ठीक है, मुझे लगता है। लेकिन उसे किताबों और लेखकों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। और जिस तरह से वह हमें शिमला भेजने के लिए इतना पैसा खर्च कर रहा है, उस पर मुझे थोड़ा संदेह है।
‘जो व्यक्ति इस तरह की दो-चार कारों का रखरखाव कर सकता है, उसे पैसे की चिंता करने की जरूरत नहीं है। इसके अलावा, आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि फेलू मिटर को काम पर रखना प्रतिष्ठा की बात है।’
खैर, उस स्थिति में संदेह की कोई बात नहीं है। जिस दूसरे व्यक्ति से हम मिले, वह नरेश चंद्र पाकराशी थे। बहुत ही चिड़चिड़े स्वभाव के थे।
लेकिन स्पष्टवादी होना अच्छी बात है। बहुत कम लोगों में यह गुण होता है। लेकिन क्या वह हमेशा सच बोलता है? मेरा मतलब है, हमें कैसे पता चलेगा कि दीनानाथ लाहिड़ी सचमुच घुड़दौड़ देखने जाते थे?
'हो सकता है कि वह अब भी ऐसा करता हो। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि वह एक धोखेबाज है।'
फिर हमारी मुलाकात प्रबीर लाहिड़ी उर्फ अमर कुमार से हुई। ऐसा लग रहा था कि वह अपने चाचा को पसंद नहीं करता था।

‘यह बिल्कुल स्वाभाविक है। उनके चाचा फिल्मों में उनकी तरक्की में बाधा हैं, एक दिन वे उन्हें चीजों से भरा एक थैला देते हैं, और फिर बिना बताए उसे वापस ले लेते हैं... इसलिए जाहिर है कि वह अपने चाचा से नाराज हैं।’
'प्रबीर बाबू काफी हष्ट-पुष्ट लग रहे थे।'
“हाँ, उसकी कलाइयाँ मज़बूत और चौड़ी हैं। शायद इसीलिए उसकी आवाज़ इतनी अजीब लगती है। उसकी मर्दाना कद-काठी से बिल्कुल मेल नहीं खाती। अब मुझे दीनानाथ लाहिड़ी के साथ यात्रा करने वाले अन्य यात्रियों के नाम बताइए।” उनमें से एक बृजमोहन था। और उसका उपनाम... मुझे देखने दीजिए...
‘केडिया. मारवाड़ी.’
'हां। वह साहूकार है। देखने में कुछ खास नहीं लगता। श्री पाकराशी को जानता था।'
'उनका लेनिन सरानी में वाकई एक कार्यालय है। मैंने टेलीफोन डायरेक्टरी में इसकी जाँच की।'
‘मैं समझ गया। अच्छा, दूसरा व्यक्ति जी.सी. धमीजा था। वह शिमला में रहता है। उसका एक बाग है।’
उन्होंने ऐसा कहा। हमें इस बारे में पक्का पता नहीं है।
लेकिन श्री लाहिड़ी के साथ तो उनके अटैची केस का ही आदान-प्रदान हुआ था। इसमें तो कोई संदेह ही नहीं है।
वह बक्सा फेलुदा के बिस्तर के बगल में खुला पड़ा था। वह अनमने ढंग से उसके अंदर रखी चीजों को घूर रहा था और बुदबुदाया, 'हम्म... हाँ, शायद यही एक चीज है जो कोई हो सकता है...' वह रुका और बक्से में रखे दो अंग्रेजी अखबार उठाए और उन पर एक नज़र डाली। 'ये,' वह बुदबुदाता रहा, 'एकमात्र ऐसी चीजें हैं जो... तुम्हें पता है... मुझे संदेह में डालती हैं। ये किसी तरह मेल नहीं खातीं।' इस समय, फोन की घंटी बजने पर उसे बड़बड़ाना बंद करना पड़ा। फेलुदा ने अपने कमरे में एक एक्सटेंशन लगवा लिया था।
'नमस्ते।'
‘क्या आप ही हैं, श्रीमान मिटर?’
मुझे दूसरी तरफ से बोले गए शब्द सुनाई दे रहे थे, शायद इसलिए कि बाहर शांति थी।
जी हां, श्री लाहिड़ी।
‘सुनो, मुझे अभी-अभी धमीजा से एक संदेश मिला है।’

‘क्या मतलब, उसने तुम्हारे टेलीग्राम का जवाब दे दिया है? अभी से?’
नहीं, नहीं। मुझे नहीं लगता कि मुझे कल से पहले कोई जवाब मिलेगा। मैं फोन कॉल की बात कर रहा हूँ। लगता है धमीजा रेलवे रिजर्वेशन ऑफिस गया था और वहाँ से मेरा नाम और पता ले आया था। लेकिन क्योंकि उसे अचानक जाना पड़ा, इसलिए वह मुझसे खुद संपर्क नहीं कर पाया। उसने मेरा अटैची केस कलकत्ता में अपने एक दोस्त के पास छोड़ दिया था। उसी दोस्त ने मुझे फोन किया था। अगर मैं धमीजा का अटैची केस ले आऊँ तो वह मेरा अटैची केस मुझे लौटा देगा। तो, आप समझ रहे हैं ना...
‘क्या आपने उनसे पूछा कि पांडुलिपि अभी भी वहां है?’
‘ओह हाँ। सब ठीक है।’
‘तो यह अच्छी खबर है। आपकी समस्या हल हो गई।’
'हां, बिलकुल अप्रत्याशित रूप से। मैं पांच मिनट में निकल रहा हूँ। मैं आपसे धमीजा का सामान ले लूँगा और फिर प्रिटोरिया स्ट्रीट जाऊँगा।'
‘क्या मैं एक अनुरोध कर सकता हूँ?’
'निश्चित रूप से।'
‘आपको बाहर जाने की क्या ज़रूरत है? हम तो शिमला तक जाने वाले थे, है ना? तो हम खुशी-खुशी प्रिटोरिया स्ट्रीट जाकर आपका सामान ले आएंगे। अगर आप मुझे इसे आज रात अपने पास रखने दें, तो मैं शंभूचरण की तिब्बत की कहानी सरसरी तौर पर पढ़ लूँगा। आप इसे मेरी फीस समझ लीजिए। कल सुबह मैं सामान और पांडुलिपि दोनों आपको लौटा दूँगा।’
'बहुत अच्छा। मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं है। मुझे फोन करने वाले व्यक्ति का नाम श्री पुरी है और उनका पता 4/2 प्रिटोरिया स्ट्रीट है।'
‘धन्यवाद। अंत भला तो सब भला।’
फेलुदा ने रिसीवर वापस रख दिया और भौंहें चढ़ाकर बैठ गया। मैं भी चुपचाप बैठा रहा, निराशा की लहर से जूझता हुआ। मैं शिमला जाकर बर्फबारी देखना चाहता था। अब वह मौका हाथ से निकल गया था और मुझे कलकत्ता में सड़ना पड़ेगा, जहाँ मार्च में भी असहनीय गर्मी थी। खैर, मुझे लगता है कि कहानी के इस आखिरी अध्याय में मुझे फेलुदा के साथ ही होना चाहिए।
मैंने कहा, 'फेलुदा, मुझे कपड़े बदलने दो। मुझे एक मिनट भी नहीं लगेगा।' ‘ठीक है। जल्दी करो।’

बीस मिनट बाद, हम एक टैक्सी में थे और प्रिटोरिया स्ट्रीट पर इधर-उधर घूम रहे थे। यह एक शांत गली थी और रात के लगभग साढ़े ग्यारह बज रहे थे, इसलिए दूर-दूर तक कोई नज़र नहीं आ रहा था। हम गली के एक छोर से दूसरे छोर तक गए, लेकिन कार से घरों के नंबर देखना नामुमकिन था। 'सरदारजी, कृपया यहीं रुकिए,' फेलुदा ने ड्राइवर से कहा। 'हम घर ढूंढकर वापस आ जाएंगे। हमें बस यह केस छोड़ना है। इसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा।'
एक मिलनसार व्यक्ति, ड्राइवर इंतज़ार करने के लिए राज़ी हो गया। हम सड़क के एक छोर पर टैक्सी से उतरे और पैदल चलने लगे। हमारे बाईं ओर दीवार के उस पार, विशाल और शांत बिरला इमारत खड़ी थी, जो अपनी बाईस मंज़िलों के साथ आसपास की हर इमारत को बौना बना रही थी। मैंने अक्सर फेलुदा को यह कहते सुना था कि रात होने के बाद शहर में सबसे डरावनी चीज़ें उसकी गगनचुंबी इमारतें होती हैं। एक बार उसने मुझसे पूछा था, 'क्या तुमने कभी किसी लाश को खड़े होते देखा है?' 'अंधेरे में ये इमारतें बस एक लाश जैसी लगती हैं—बिना जीवन या आत्मा के एक शरीर!'
कुछ मिनट बाद, हमें एक घर मिला जिसके गेट पर '4' लिखा था। अगला घर, जो कुछ दूरी पर था, नंबर 5 निकला। तो 4/2 शायद उस छोटी सी गली में था जो नंबर 4 और 5 के बीच से गुजरती थी। कुछ भी साफ-साफ देखना बहुत मुश्किल था। कुछ धुंधली स्ट्रीटलाइट्स से भी कोई मदद नहीं मिल रही थी। हम सावधानी से चलते हुए गली में दाखिल हुए। कितनी खामोशी थी!
यहां एक और गेट था। यह 4/1 ही होना चाहिए। 4/2 कहां था? कहीं आगे, अंधेरे में छिपा हुआ? गली में कोई और घर नहीं दिख रहा था और अगर होता भी, तो उसमें बत्ती तो नहीं जल रही थी। गली के दोनों ओर दीवारें थीं। दूसरी तरफ पेड़ों की घनी शाखाएं इन दीवारों पर लटक रही थीं। मुख्य सड़क से वाहनों की बहुत धीमी आवाज आ रही थी। दूर कहीं एक घड़ी की आवाज आई। यह सेंट पॉल चर्च की घड़ी ही होगी। अब ठीक साढ़े ग्यारह बज रहे थे। लेकिन इन आवाजों से प्रिटोरिया स्ट्रीट की भयानक खामोशी में कोई खलल नहीं पड़ा। पास ही एक कुत्ता भौंका। और, उसी क्षण—
'टैक्सी! सरदारजी, सरदारजी!' मैं अनायास ही चिल्ला उठा।
हमारे दाहिनी ओर की दीवार फांदकर एक आदमी फ़ेलुदा पर गिर पड़ा। उसके पीछे दूसरा आदमी भी आ गिरा। फ़ेलुदा के हाथ में जो थैला था, वह अब उसके हाथ में नहीं था। उसने उसे ज़मीन पर गिरा दिया था और पहले आदमी को पकड़ने की कोशिश

कर रहा था। मैं दोनों आदमियों को आपस में जूझते हुए महसूस कर सकता था, लेकिन कुछ देख नहीं पा रहा था। नीला थैला सड़क पर, ठीक मेरे सामने पड़ा था। मैंने उसे उठाने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन तभी दूसरा आदमी मुड़ा और मुझे धक्का देकर एक तरफ कर दिया। फिर उसने थैला छीना और उस गली के प्रवेश द्वार की ओर भागा, जिसमें हम अभी-अभी दाखिल हुए थे। मेरे बाईं ओर, फ़ेलुदा और दूसरा आदमी अभी भी आपस में लड़ रहे थे, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि समस्या क्या थी। इस समय तक फ़ेलुदा को अपने प्रतिद्वंदी पर काबू पा लेना चाहिए था।
'ईश्वर!'
यह चीख हमारे ड्राइवर की थी। उसने मेरी चीख सुनी और मदद के लिए दौड़ पड़ा। लेकिन सामान लेकर भाग रहे आदमी ने उसे धक्का देकर गिरा दिया और गायब हो गया। मैंने बेचारे ड्राइवर को स्ट्रीटलाइट के नीचे ज़मीन पर पड़ा देखा।
इसी बीच, पहला आदमी फेलुदा की पकड़ से छूटकर दीवार फांद गया।
फेलुदा ने अपना रुमाल निकाला और अपने हाथ पोंछने लगा। उसने गौर किया, ‘उस आदमी ने अपने शरीर पर खूब तेल लगाया हुआ था। उसने अपने शरीर पर कम से कम एक किलो सरसों का तेल मला होगा, जिससे वह मछली की तरह फिसलनदार हो गया था। मुझे लगता है यह चोरों की कोई पुरानी तरकीब है।’
सच है। दोनों आदमियों के आते ही मुझे तेल की गंध आ गई थी, लेकिन मैं यह अंदाजा नहीं लगा पाया था कि यह कहां से आ रही है।
'भगवान का शुक्र है!'
मुझे बिल्कुल समझ नहीं आया कि फेलुदा ने ऐसा क्यों कहा। इतनी बड़ी आपदा के बाद भी वो ऐसा कैसे कह सकता था? ‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ मैंने हैरानी से पूछा। फेलुदा ने तुरंत जवाब नहीं दिया। उसने ड्राइवर को, जो देखने में unharmed लग रहा था, उठने में मदद की। फिर जब हम तीनों टैक्सी की ओर चलने लगे, तो उसने कहा, ‘तुम्हें नहीं लगता कि वो बदमाश जो लेकर भागे, वो धमीजा की संपत्ति थी, है ना?’
‘क्या ऐसा नहीं था?’ मैं और भी ज्यादा हैरान हो गया।
‘जो सामान वे ले गए, वह प्रदोष सी. मिटर की संपत्ति थी। उसमें तीन फटी हुई बनियानें, पाँच घिसे-पिटे रूमाल, चिथड़े के कई टुकड़े और कुछ पुराने अखबार थे, जो बुरी तरह से फटे हुए थे। जब आप कपड़े बदलने गए, तो मैंने टेलीफोन पूछताछ केंद्र पर फोन किया। उन्होंने मुझे बताया कि 4/2 प्रिटोरिया

स्ट्रीट पर कोई टेलीफोन नहीं है। लेकिन, ज़ाहिर है, मुझे यह नहीं पता था कि पता भी फर्जी था।’
मेरा दिल एक बार फिर ज़ोर से धड़कने लगा। मुझे अंदर से महसूस हुआ कि शिमला जाना अब बेहद ज़रूरी है।

पाँच

घर पहुंचते ही हमने दीनानाथ बाबू को फोन किया। वे बिल्कुल हैरान थे। ‘अरे बाप रे!’ वे चौंक गए, ‘मुझे तो पता ही नहीं था कि ऐसा भी कुछ हो सकता है! एक संभावना तो यही है कि वे दोनों आदमी साधारण चोर थे, जिनका धमीजा का अटैची केस चुराने का कोई खास मकसद नहीं था। लेकिन फिर भी, सच्चाई यही है कि पुरी में फोन करने वाला वह आदमी और उसने जो पता दिया, दोनों ही पूरी तरह से फर्जी थे। इसका मतलब है कि श्री धमीजा कभी रेलवे रिजर्वेशन ऑफिस गए ही नहीं थे। तो फिर फोन किसने किया?’
‘अगर हमें यह पता होता, तो आगे की जांच की कोई जरूरत नहीं होती, श्री लाहिड़ी।’
लेकिन मुझे बताओ, तुम्हें सबसे पहले शक क्यों हुआ?
उस आदमी ने आपको इतनी देर रात फोन किया। श्री धमीजा कल वापस चले गए। तो श्री पुरी ने आपको कल या आज दिन में फोन क्यों नहीं किया?
‘ठीक है। लगता है हमें आपको शिमला भेजने की अपनी मूल योजना पर वापस लौटना होगा। लेकिन इस पूरे मामले की स्थिति को देखते हुए, सच कहूँ तो अब मुझे आपको कहीं भी भेजने से डर लग रहा है।’
फेलुदा हँसते हुए बोला, 'चिंता मत कीजिए, श्रीमान लाहिड़ी। मैं अब आपके मामले को नीरस और उबाऊ नहीं कह सकता। इसमें रोमांच का स्वाद ज़रूर है। और मुझे खुशी है, क्योंकि अन्यथा मुझे आपका पैसा लेने में शर्म आती। खैर, अब मैं आपसे कुछ काम करवाना चाहता हूँ, कृपया।'
'हाँ?'
‘मुझे आपके सामान की सूची दीजिए। इससे मुझे धमीजा द्वारा इसे लौटाए जाने पर जांच करने में आसानी होगी।’
‘यह तो आसान है, वैसे भी कुछ खास था नहीं। लेकिन जब मैं आपको टिकट भेजूंगा, तब आपको सूची भी दे दूंगा।’
अगली सुबह फेलुदा जल्दी घर से निकल गया। कुछ ही घंटों में उसका पूरा व्यवहार बदल गया था। उसकी उंगलियों की चटकने की आवाज़ से मैं समझ गया था कि

मेरी आवाज हाल ही में बदलने लगी थी। इसलिए मुझे पूरा यकीन था कि मैं जिससे भी बात कर रहा हूँ, उसे कभी अंदाजा नहीं होगा कि मेरी उम्र वास्तव में साढ़े पंद्रह साल से ज्यादा नहीं है।
'जी हां, ये श्री गुरु पिक्चर्स हैं।'
‘यह अमर कुमार के बारे में है, आप जानते हैं... आपकी नवीनतम फिल्म में नवागंतुक—’
‘कृपया श्री मल्लिक से बात करें।’ फोन दूसरे व्यक्ति को सौंप दिया गया। 'हाँ?'
‘Mr Mallik?’
'बोला जा रहा है।'
क्या आपकी नवीनतम फिल्म में अमर कुमार नाम का कोई व्यक्ति काम कर रहा है? मुझे लगता है कि इसका नाम 'द घोस्ट' है?
‘अमर कुमार को टीम से बाहर कर दिया गया है।’
'गिरा दिया?'
'मैं किससे बात कर रहा हूँ, कृपया बताएं?'
मैं... खैर, मैं...
एक मूर्ख की तरह, मुझे कुछ भी कहने को नहीं सूझा और मैंने जल्दबाजी में रिसीवर नीचे रख दिया।
तो अमर कुमार अब फिल्म में नहीं थे! उनकी आवाज़ की वजह से ही ऐसा हुआ होगा। हालांकि, पत्रिका में उनकी तस्वीर छपने के बाद उन्हें इस तरह से निकाल देना कितना अन्यायपूर्ण था। लेकिन क्या उन्हें यह बात पता नहीं थी, या उन्होंने हमसे बस यह दिखावा किया कि वह अभी भी फिल्म में काम कर रहे हैं? मैं विचारों में डूबा हुआ था तभी टेलीफोन की घंटी बजी, जिससे मैं काफी चौंक गया।
‘हेलो!’ मैंने हांफते हुए कहा।
कुछ सेकंड तक कोई जवाब नहीं आया। फिर मुझे एक हल्की सी क्लिक की आवाज़ सुनाई दी। ओह, मैं समझ गया। कोई सार्वजनिक पे फोन से कॉल कर रहा था।
‘हेलो?’ मैंने फिर कहा। इस बार मुझे एक आवाज़ सुनाई दी, धीमी लेकिन स्पष्ट।
‘क्या आप शिमला जा रहे हैं?’
एक अजनबी आवाज से ऐसी बात सुनने की मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी। मैं अवाक रह गया और चुपचाप निगलने के अलावा मेरे पास कोई शब्द नहीं बचा था।

आवाज फिर सुनाई दी। वह कर्कश थी और उसके शब्दों ने मेरे रोंगटे खड़े कर दिए। ‘खतरा। क्या तुम सुन रहे हो? अगर तुम शिमला गए तो तुम दोनों बहुत बड़े खतरे में पड़ जाओगे।’ इसके बाद एक और क्लिक की आवाज आई। लाइन कट गई। लेकिन मुझे और कुछ सुनने की जरूरत नहीं थी। वे कुछ शब्द ही काफी थे। अंकल सिद्धू की कहानी के उस नेपाली राणा की तरह, जिसका हाथ बाघ पर गोली चलाते समय कांप रहा था, मैंने भी कांपते हुए हाथ से रिसीवर वापस रख दिया।
फिर मैं एक कुर्सी पर बैठ गया और एकदम शांत बैठा रहा। लगभग आधे घंटे बाद, मुझे एक और घंटी सुनाई दी। इससे मैं लगभग कुर्सी से गिर ही गया था, लेकिन इस बार मुझे एहसास हुआ कि यह दरवाज़े की घंटी थी, टेलीफोन नहीं। ग्यारह बज चुके थे, इसलिए मैंने खुद दरवाज़ा खोला और फेलुदा अंदर आया। उसके हाथों में बड़े-बड़े पैकेट देखकर लगा कि वह हमारे गर्म कपड़े लेने लॉन्ड्री गया था।
फेलुदा ने मुझे तिरछी नज़र से देखा और कहा, 'तुम अपने होंठ क्यों चाट रहे हो? क्या कोई अजीब फोन आया था?'
मैंने आश्चर्यचकित होकर पूछा, 'आपने कैसे अनुमान लगाया?'
‘जिस तरह से तुमने रिसीवर रखा है, उससे तो यही लगता है। वैसे भी, मामला इतना पेचीदा हो गया है कि अगर हमें कुछ अजीबोगरीब कॉल न आतीं तो मुझे हैरानी होती। किसने कॉल की थी? उसने क्या कहा?’
‘पता नहीं कौन था। उसने कहा कि शिमला जाना हम दोनों के लिए खतरा है।’ फेलुदा ने पंखे के रेगुलेटर को उसकी अधिकतम गति पर सेट किया और आराम से सोफे पर बैठ गया।
'आपने उससे क्या कहा?'
'कुछ नहीं।'
‘बेवकूफ! तुम्हें यह कहना चाहिए था कि शिमला जाना कलकत्ता की सड़कों पर निकलने से ज्यादा खतरनाक नहीं हो सकता। एक असली युद्धक्षेत्र ही शायद एकमात्र ऐसी जगह है जो इस शहर की सड़कों से ज्यादा खतरनाक होने का दावा कर सकती है।’
फेलुदा की बेफिक्री ने मुझे शांत कर दिया। मैंने विषय बदलने का फैसला किया।
मैंने पूछा, 'तुम कहाँ गए थे? मेरा मतलब है, कपड़े धोने के अलावा।'
एस. एम. केडिया के कार्यालय को।

‘क्या आपने कुछ नया सीखा?’
‘बृजमोहन काफी मिलनसार व्यक्ति लग रहा था। उसका परिवार तीन पीढ़ियों से कलकत्ता में रह रहा है। और हाँ, वह श्री पाकराशी को जानता है। मुझे ऐसा लगा कि पाकराशी पर अभी भी उसका कुछ कर्ज़ बाकी है। बृजमोहन ने भी धमीजा द्वारा दिया गया सेब खा लिया था। लेकिन नहीं, उसके पास नीले रंग का एयर इंडिया का अटैची बैग नहीं है; और उसने ट्रेन में अपना अधिकांश समय या तो सोते हुए या आँखें बंद करके लेटे हुए बिताया।’
मैंने फेलुदा को अमर कुमार के बारे में बताया।
फेलुदा ने टिप्पणी करते हुए कहा, "अगर उसे पता है कि उसे फिल्म से निकाल दिया गया है लेकिन वह ऐसा दिखावा कर रहा है कि उसे पता नहीं है, तो वह वास्तव में एक बेहतरीन अभिनेता है।"
हमने दोपहर बाद तक पैकिंग पूरी कर ली। चूंकि हम एक हफ्ते से कम समय के लिए जा रहे थे, इसलिए मैंने ज्यादा कपड़े नहीं लिए। शाम साढ़े छह बजे जटायु ने हमें फोन किया।
उन्होंने हमें बताया, ‘मैं एक नया हथियार ले जा रहा हूं। दिल्ली पहुंचते ही मैं आपको दिखाऊंगा।’
हमें पता था कि उसे तरह-तरह के हथियार इकट्ठा करने में दिलचस्पी थी। राजस्थान की हमारी यात्रा में वह अपने साथ एक नेपाली कटार लाया था, हालांकि उसे उसका इस्तेमाल करने का मौका नहीं मिला।
उन्होंने आगे कहा, 'मैंने अपना टिकट खरीद लिया है। कल हवाई अड्डे पर मिलते हैं।'
कुछ घंटों बाद हमारे टिकट आ गए, साथ में दीनानाथ बाबू का एक नोट भी था। उसमें लिखा था:
प्रिय श्री मित्तर, मैं आपको दिल्ली के हवाई टिकट और शिमला के ट्रेन टिकट भेज रहा हूँ। मैंने आपके लिए दिल्ली के जनपथ होटल में एक दिन का आरक्षण करा दिया है; और शिमला के क्लार्क्स होटल में चार दिनों के लिए आपका कमरा बुक है। मुझे अभी श्री धमीजा का जवाब मिला है। उन्होंने बताया है कि मेरा अटैची केस उनके पास सुरक्षित है। वे चाहते हैं कि आप परसों शाम 4 बजे उनसे मिलने आएं। आपको उनका पता मिल गया है, इसलिए मैं उसे यहाँ नहीं दोहरा रहा हूँ। मैंने अपने अटैची केस में रखी वस्तुओं की सूची नहीं बनाई है क्योंकि, सोचने पर मुझे लगा कि इसमें केवल एक ही चीज़ मेरे लिए उपयोगी है। वह है

एंटरोवियोफॉर्म गोलियों की एक बोतल। ये इंग्लैंड में बनी हैं और यहाँ बनी गोलियों से कहीं अधिक प्रभावी हैं। मुझे बस ये गोलियां वापस मिल जाएं तो मैं प्रसन्न हो जाऊंगा। आशा है आपकी यात्रा सुरक्षित और सफल होगी। आपका सादर, दीनानाथ लाहिड़ी
हम जल्दी सोने और रात दस बजे तक बिस्तर पर जाने की योजना बना रहे थे, लेकिन पौने दस बजे दरवाजे की घंटी बजी। इस समय कौन हो सकता है? मैंने दरवाजा खोला और देखते ही मैं दंग रह गया, क्योंकि सामने एक ऐसा आदमी था जिसके बारे में मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि वह हमसे मिलने आएगा। अगर फेलुदा भी इसी तरह हैरान था, तो उसने इसे ज़ाहिर नहीं किया।
‘शुभ संध्या, श्रीमान पाकराशी,’ उन्होंने शांत स्वर में कहा, ‘कृपया अंदर आइए।’ श्रीमान पाकराशी अंदर आए, उनके चेहरे पर थोड़ी शर्मिंदगी झलक रही थी, होठों पर हल्की सी मुस्कान थी। उनका चिड़चिड़ापन गायब हो गया था। एक ही दिन में ऐसा क्या हुआ था जिससे यह चमत्कारिक बदलाव आ गया? और इतनी देर शाम को वे हमें क्या बताने आए थे?
वह कुर्सी पर बैठ गया और बोला, 'आपको परेशान करने के लिए क्षमा करें। मुझे पता है कि देर हो गई है। मैंने आपको फोन करने की कोशिश की थी, लेकिन कॉल नहीं लग पाई। इसलिए मैंने सोचा कि व्यक्तिगत रूप से फोन करना ही बेहतर होगा। कृपया बुरा न मानें।'
'हमें नहीं पता। कृपया हमें बताएं कि आप यहां क्यों आए हैं।'
मैं एक निवेदन करने आया हूँ। यह एक बहुत ही विशेष निवेदन है। वास्तव में, यह आपको बेहद अजीब लग सकता है।
'वास्तव में?'
आपने दीनानाथ लाहिड़ी के अटैची केस में मिली एक पांडुलिपि के बारे में कुछ कहा था। क्या वह... शंभूचरण बोस द्वारा लिखी गई कोई चीज़ थी? आप जानते हैं, वही व्यक्ति जिसने तराई के बारे में लिखा था?
'जी हां, बिल्कुल। तिब्बत की उनकी यात्रा का विवरण।'
'हे भगवान!'
फेलुदा ने कुछ नहीं कहा। नरेश पाकराशी भी कुछ पल चुप रहे। फिर उन्होंने कहा, 'क्या आपको पता है कि कलकत्ता में मेरे यात्रा वृत्तांतों का संग्रह सबसे बड़ा और सबसे अच्छा है?'

'मैं इस बात पर पूरी तरह से विश्वास करने को तैयार हूं। मैंने आपके कमरे में उन अलमारियों पर एक नजर डाली थी; और मुझे उनमें कई जाने-माने यात्रा लेखकों के नाम दिखाई दिए।'
आपकी अवलोकन क्षमता बहुत अच्छी होनी चाहिए।
'मैं इसी सिद्धांत पर जीता हूं, श्रीमान पाकराशी।'
श्री पाकराशी ने अब अपने मुंह से पाइप निकाला, फेलुदा की ओर सीधे देखा और कहा, 'तुम शिमला जा रहे हो, है ना?'
अब फेलूदा की बारी थी आश्चर्यचकित होने की। उसने सीधे तौर पर यह नहीं पूछा, 'तुम्हें कैसे पता?' लेकिन उसकी आँखों में जिज्ञासा का भाव था।
श्री पाकराशी मुस्कुराए। उन्होंने कहा, ‘आप जैसे चतुर व्यक्ति को यह पता लगाने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए थी कि दीनू लाहिड़ी का अटैची केस धमीजा के अटैची केस से बदल गया था। मैंने धमीजा के सूटकेस पर उसका नाम लिखा देखा था। वास्तव में, उसने नीले एयर-इंडिया के सूटकेस से अपने शेविंग के सामान निकाले थे, इसलिए मुझे पता चल गया कि यह उसी का है।’
‘आपने यह बात कल क्यों नहीं कही?’
‘क्या खुद से सब कुछ सुलझा लेना ज्यादा खुशी की बात नहीं है? आखिर यह आपका मामला है। आप इस पर काम करेंगे और अपनी मेहनत का फल पाएंगे। मैं स्वेच्छा से आपकी मदद क्यों करूं?’
फेलुदा भी सहमत प्रतीत हुआ। उसने बस इतना कहा, 'लेकिन तुमने अभी तक मुझे यह नहीं बताया कि तुम्हारी अजीबोगरीब विनती क्या है।'
मैं उसी पर आ रहा हूँ। आप निःसंदेह दीनानाथ का मामला और उसके साथ पांडुलिपि भी वापस लाने में कामयाब हो जाएँगे। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप उसे दीनानाथ को वापस न दें।
‘क्या!’ इस बार फेलुदा अपनी हैरानी छिपा नहीं सका। और न ही मैं।
'मेरा सुझाव है कि आप पांडुलिपि मुझे सौंप दें।'
‘तुम्हारे लिए?’ फेलुदा ने अपनी आवाज ऊंची की।
‘मैंने कहा था ना कि ये बात अटपटी लगेगी। लेकिन तुम्हें मेरी बात सुननी ही होगी,’ श्री पाकराशी थोड़ा आगे झुकते हुए, कोहनियों को घुटनों पर टिकाते हुए बोले। ‘दीनानाथ लाहिड़ी उस किताब की अहमियत नहीं समझते। क्या तुमने उनके घर में एक भी अच्छी किताब देखी? नहीं, मुझे पता है तुमने नहीं देखी। और ये मत सोचो कि मैं तुम्हें इसके लिए मुआवज़ा नहीं दूंगा। मेरे पास—’

यहाँ रुककर उसने अपनी जैकेट की अंदरूनी जेब से एक लंबा नीला लिफाफा निकाला। फिर उसने उसे खोलकर फेलुदा को दे दिया। उसमें नए, कुरकुरे और खुशबूदार सौ-सौ रुपये के नोट भरे हुए थे। उसने कहा, ‘मेरे पास यहाँ दो हज़ार रुपये हैं, और यह तो बस अग्रिम भुगतान है। पांडुलिपि सौंपने पर मैं आपको दो हज़ार रुपये और दे दूँगा।’
फेलुदा ने लिफाफे की ओर देखा तक नहीं। उन्होंने अपनी जेब से सिगरेट निकाली, लापरवाही से जलाई और कहा, 'मुझे नहीं लगता कि दीनानाथ लाहिड़ी पांडुलिपि की कीमत समझते हैं या नहीं, इससे कोई फर्क पड़ता है। मैंने शिमला के धमीजा से उनका केस लेने और उसे पूरी तरह सुरक्षित वापस करने का वादा किया है। और मैं वही करने जा रहा हूँ।'
श्री पाकराशी को इसका कोई उपयुक्त जवाब नहीं सूझ रहा था। कुछ क्षण बाद उन्होंने बस इतना कहा, 'ठीक है। आपके भुगतान की बात छोड़िए। मैं आपसे बस इतना ही कह रहा हूँ कि मुझे पांडुलिपि दे दीजिए। लाहिड़ी को बता दीजिए कि वह गुम हो गई है। कहिए कि धमीजा ने कहा कि उसने उसे नहीं देखा।'
फेलुदा ने पूछा, ‘मैं श्री धमीजा को ऐसी स्थिति में कैसे डाल सकता हूँ? क्या आप इसके परिणामों के बारे में सोच सकते हैं? क्या आप मुझसे सचमुच यह उम्मीद कर सकते हैं कि मैं एक पूरी तरह निर्दोष व्यक्ति के बारे में झूठ बोलूँ? नहीं, श्री पाक्राशी, मैं आपकी बात नहीं मान सकता।’
फेलुदा उठे और अत्यंत विनम्रता से बोले, 'शुभ रात्रि, श्रीमान पाकराशी। मुझे आशा है कि आप मुझे गलत नहीं समझेंगे।'
श्री पाकराशी बैठे रहे, मानो खाली जगह को घूर रहे हों। फिर उन्होंने लिफाफा वापस अपनी जेब में रखा, खड़े हुए, फेलुदा को एक फीकी मुस्कान दी और बिना कुछ कहे बाहर चले गए। उनके चेहरे से यह बताना असंभव था कि वे क्रोधित थे, निराश थे या अपमानित महसूस कर रहे थे।
क्या कोई और जासूस ऐसे प्रलोभन का विरोध कर पाता और फेलुदा की तरह व्यवहार कर पाता? शायद नहीं।

छह

मैं, फेलुदा और जटायु इंडियन एयरलाइंस की फ्लाइट नंबर 263 में दिल्ली जा रहे थे। विमान सुबह 7:30 बजे रवाना हुआ। प्रस्थान लाउंज में इंतज़ार करते हुए फेलुदा ने जटायु को प्रिटोरिया स्ट्रीट की हमारी यात्रा और उसके बाद हुई घटनाओं के बारे में बताया। जटायु आँखें फाड़कर सुन रहा था और बीच-बीच में 'रोमांचकारी!' और 'बहुत ही संदिग्ध!' जैसे उद्गार निकाल रहा था। फिर उसने अपनी नोटबुक में चोर और सरसों के तेल की छोटी-सी घटना लिख ली।
मैंने उनसे पूछा, 'क्या आपने पहले कभी हवाई यात्रा की है?'
उन्होंने बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से उत्तर दिया, “यदि किसी व्यक्ति की कल्पनाशीलता पर्याप्त रूप से जीवंत हो, तो वह वास्तव में कुछ किए बिना ही किसी अनुभव का आनंद ले सकता है। नहीं, मैंने कभी हवाई यात्रा नहीं की है। लेकिन अगर आप मुझसे पूछें कि क्या मैं घबरा रहा हूँ, तो मेरा जवाब होगा “बिल्कुल नहीं”, क्योंकि मेरी कल्पना में, मैंने न केवल हवाई जहाज में बल्कि रॉकेट में भी यात्रा की है। हाँ, मैं चाँद पर जा चुका हूँ!”
इन साहसी शब्दों के बावजूद, जब विमान उड़ान भरने से ठीक पहले रनवे पर तेज़ी से दौड़ने लगा, तो मैंने लालमोहन बाबू को अपनी सीट के आर्मरेस्ट को इतनी कसकर पकड़े हुए देखा कि उनकी उंगलियों के जोड़ सफ़ेद पड़ गए थे। जब विमान सचमुच हवा में ऊपर उठा, तो उनका रंग पीला पड़ गया और उनके चेहरे पर एक भयानक पीड़ा का भाव आ गया।
मैंने बाद में उससे पूछा, 'तुम्हारे साथ क्या हुआ?'
‘लेकिन यह तो स्वाभाविक था!’ उन्होंने कहा। ‘जब कोई रॉकेट अंतरिक्ष में उड़ान भरता है, तो अंतरिक्ष यात्रियों के चेहरे भी विकृत हो जाते हैं। दरअसल, जब आप जमीन से ऊपर उठते हैं, तो गुरुत्वाकर्षण के नियम आपको वापस खींचते हैं। इस टकराव में, चेहरे की मांसपेशियां सिकुड़ जाती हैं, और इसी वजह से पूरा चेहरा विकृत हो जाता है।’
मैं पूछना चाहता था कि अगर वाकई ऐसा है, तो गुरुत्वाकर्षण के नियमों से प्रभावित होने वाले एकमात्र व्यक्ति लालमोहन बाबू ही क्यों हैं, बाकी लोग

इसी तरह प्रभावित क्यों नहीं हुए; लेकिन यह देखकर कि उन्होंने अपना संयम वापस पा लिया था और वास्तव में काफी खुश दिख रहे थे, मैंने और कुछ नहीं कहा।
नाश्ता जल्द ही आ गया, साथ में कटलरी भी सेलोफेन शीट में लिपटी हुई थी। लालमोहन बाबू ने कॉफी के चम्मच से अपना ऑमलेट खाना शुरू किया, चाकू को चम्मच की तरह इस्तेमाल करके छोटे से बर्तन से मुरब्बा निकाला और उसे रोटी पर फैलाने की ज़हमत उठाए बिना सीधे मुंह में डाल लिया; फिर उन्होंने कांटे से संतरा छीलने की कोशिश की, लेकिन जल्द ही हार मान ली और उसकी जगह अपनी उंगलियों का इस्तेमाल किया।
अंत में, वह आगे झुका और फेलुदा से बोला, 'मैंने तुम्हें थोड़ी देर पहले पान चबाते देखा था। क्या तुम्हारे पास अभी भी कुछ बचा है?'
फेलुदा ने नीले अटैची केस से कोडक का डिब्बा निकाला और लालमोहन बाबू को दे दिया। मैं श्री धमीजा के डिब्बे पर एक बार फिर नज़र डालने से खुद को रोक नहीं पाई। क्या उसे पता था कि हम बारह सौ मील की यात्रा करके सात हज़ार फीट की ऊंचाई पर स्थित बर्फ से ढके एक स्थान पर जा रहे हैं, सिर्फ़ उसे उसके मालिक को लौटाने और उसके जैसा ही दूसरा डिब्बा लेने के लिए? यह सोचकर अचानक मुझे कंपकंपी आ गई।
उड़ान भरने के बाद फेलुदा ने लगभग कुछ नहीं कहा। उसने अपनी मशहूर नीली नोटबुक (सातवाँ खंड) निकाली और उसमें कुछ लिख रहा था, बीच-बीच में खिड़की से बाहर मुलायम सफेद बादलों को निहारता हुआ कलम का सिरा चबा रहा था। यह समझना नामुमकिन था कि वह क्या सोच रहा था। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने तो सोचना ही छोड़ दिया था। सब कुछ बहुत जटिल था।
हम जल्द ही दिल्ली में उतरे और हवाई अड्डे से बाहर निकले। हवा में हल्की ठंडक महसूस हो रही थी। 'शायद शिमला में हाल ही में बर्फबारी हुई है,' फेलुदा ने कहा। वह अब भी नीले रंग का सूटकेस पकड़े हुए था। एक पल के लिए भी उसने खुद को उससे अलग नहीं होने दिया था।
‘मुझे लगता है कि आगरा होटल में मुझे एक कमरा मिल जाएगा,’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘मैं दोपहर तक जनपथ पर आपसे मिलूंगा। फिर हम साथ में दोपहर का भोजन करेंगे और थोड़ा घूम लेंगे। शिमला जाने वाली ट्रेन आज शाम आठ बजे तक नहीं निकलती, है ना?’

जनपथ एक काफी बड़ा होटल था। हमें पाँचवीं मंजिल पर कमरा नंबर 532 दिया गया। फेलुदा ने हमारा सामान सामान रखने वाले रैक पर रखा और खुद बिस्तर पर लेट गया। मैंने इस मौके का फायदा उठाकर उससे कुछ ऐसा पूछने का सोचा जिसके बारे में मैं काफी समय से उत्सुक था।
मैंने कहा, 'फेलुदा, पुलिस के मामलों और गुंडों के इस पूरे मामले में, आपको सबसे संदिग्ध क्या लगता है?'
‘अखबार।’
‘अह... क्या आप इस बारे में विस्तार से बताएँगे?’ मैंने हिचकिचाते हुए पूछा। मुझे समझ नहीं आ रहा कि श्री धमीजा ने दोनों अखबारों को इतनी सफाई से मोड़कर इतनी सावधानी से अपने बैग में क्यों रखा। एक बार पढ़ लेने के बाद अखबार, खासकर ट्रेन में, बेकार हो जाता है। ज्यादातर लोग बिना सोचे समझे उसे वहीं छोड़ देते हैं। तो फिर क्यों...?
यह फेलुदा की तकनीक थी। वह एक ऐसे मुद्दे पर चिंता जताने लगता था जो देखने में बिल्कुल ही अप्रासंगिक लगता था और बाकी सब लोगों की समझ से परे होता था। मुझे तो यह बात बिल्कुल भी समझ नहीं आई।
दिल्ली में बचे हुए घंटों में दो घटनाएं घटीं। पहली घटना कोई खास नहीं थी, लेकिन दूसरी भयावह थी।
लालमोहन बाबू लगभग साढ़े बारह बजे आए। हमने जंतर-मंतर जाने का फैसला किया, जो हमारे होटल से ज्यादा दूर नहीं था। जटायु और मैं दोनों ही सवाई जय सिंह द्वारा ढाई सौ साल पहले निर्मित इस वेधशाला को देखने के लिए उत्सुक थे। फेलुदा ने कहा कि वह होटल में ही रहना पसंद करेंगे, ताकि धमीजा के अटैची केस पर नज़र रख सकें और इस रहस्य के बारे में और सोच सकें।
जंतर-मंतर पहुँचने के दस मिनट के भीतर ही पहली घटना घटी। हम शांति से टहल रहे थे, तभी अचानक लालमोहन बाबू ने मेरी आस्तीन पकड़ ली और फुसफुसाते हुए कहा, 'मुझे लगता है... मुझे लगता है कोई संदिग्ध व्यक्ति हमारा पीछा करने की कोशिश कर रहा है!'
मैंने उस आदमी की ओर देखा जिसकी ओर उसने इशारा किया था। वह एक बूढ़ा आदमी था, सिर पर नेपाली टोपी, कानों में रुई, और आँखों पर काले रंग का चश्मा। ऐसा लग रहा था मानो वह हमारी हरकतों में दिलचस्पी ले रहा हो। कितना अजीब!
‘मैं उस आदमी को जानता हूँ!’ जटायु ने कहा।
'क्या!'

'वह विमान में मेरे बगल में बैठा था। उसने मेरी सीट बेल्ट बांधने में मेरी मदद की।'
‘क्या उसने तुमसे बात की?’
नहीं। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा। बहुत ही संदिग्ध बात है!
शायद उस आदमी को अंदाजा हो गया था कि हम उसी के बारे में बात कर रहे हैं। कुछ ही मिनटों बाद वह गायब हो गया।
जब हम होटल लौटे, तब तक लगभग साढ़े तीन बज चुके थे। मैंने रिसेप्शन पर चाबी माँगी, लेकिन रिसेप्शनिस्ट ने कहा कि उसके पास चाबी नहीं है। इससे मैं थोड़ा घबरा गया, लेकिन फिर मुझे याद आया कि मैंने चाबी जमा ही नहीं कराई थी। वह अभी भी मेरी जेब में थी। वैसे भी, चाबी की चिंता करना बेवकूफी थी, क्योंकि फेलुदा हमें अंदर आने देने के लिए कमरे में ही था। मैंने खुद से कहा, 'इससे यही पता चलता है कि तुम्हें होटलों में रहने की आदत नहीं है।' हमारा कमरा दाहिनी ओर था, गलियारे से लगभग तीस गज आगे। मैंने दरवाजे पर दस्तक दी। कोई जवाब नहीं मिला।
‘शायद तुम्हारा चचेरा भाई झपकी ले रहा है,’ लालमोहन बाबू ने कहा। मैंने दोबारा दरवाजा खटखटाया। कुछ नहीं हुआ।
फिर मैंने हैंडल घुमाया और पाया कि दरवाजा खुला हुआ था। लेकिन मुझे पता था कि हमारे जाने के बाद फेलुदा ने इसे अंदर से बंद कर दिया था।
मैंने दरवाजा धक्का दिया, लेकिन वह थोड़ा सा भी नहीं खुला। इसके पीछे कोई भारी चीज़ पड़ी होगी। आखिर क्या हो सकता है?
मैंने उस छोटे से छेद से अंदर झाँका और मेरा खून जम गया।
फेलुदा ज़मीन पर औंधे मुंह पड़ा था। उसका दाहिना कोना ही वह जगह थी जहाँ दरवाज़ा टकरा रहा था।
मेरी सांस फूल रही थी, लेकिन मुझे पता था कि मुझे घबराना नहीं चाहिए। लालमोहन बाबू के साथ मिलकर मैंने दरवाजे को और जोर से धक्का दिया और आखिरकार हम दोनों अंदर घुसने में कामयाब हो गए।
फेलुदा बेहोश था। लेकिन, शायद हमारे धक्के देने और हिलाने-डुलाने के कारण, वह हिलने-डुलने और कराहने लगा था। पता चला कि लालमोहन बाबू संकट की स्थिति में भी शांत रह सकते थे। उन्होंने ही फेलुदा के चेहरे पर ठंडा पानी छिड़का और तब तक ज़ोर से पंखा किया जब तक कि उसने अपनी आँखें नहीं खोल दीं।

फिर उसने धीरे से हाथ उठाया और अपने सिर के बीचोंबीच छूते हुए मुंह बनाया। 'लगता है वो चला गया है?' उसने पूछा। मैंने पहले ही जाँच कर ली थी।
‘जी हां, फेलुदा,’ मुझे उससे कहना पड़ा, ‘वह अटैची केस गायब हो गया है।’ फेलुदा लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ और हमारी मदद की पेशकश को ठुकरा दिया। ‘कोई बात नहीं,’ उसने जोर देकर कहा, ‘मैं संभाल लूंगा। मेरे सिर पर हल्की चोट आई है, बस इतना ही। इससे बुरा भी हो सकता था।’
ऐसा हो सकता है। फेलुदा ने कुछ मिनट आराम किया और यह सुनिश्चित किया कि कुछ टूटा तो नहीं है। फिर उसने रूम सर्विस को फोन किया, हम सबके लिए चाय मंगवाई और हमें बताया कि क्या हुआ था।
'आपके जाने के बाद मैंने लगभग आधे घंटे तक अपनी नोटबुक में लिखी बातों का अध्ययन किया। फिर मुझे थकान महसूस होने लगी। आप जानते हैं, मैं कल रात दो घंटे से ज़्यादा नहीं सोई थी। इसलिए मैंने सोचा कि थोड़ा आराम कर लूँ, लेकिन ठीक उसी समय टेलीफोन की घंटी बज उठी।'
‘टेलीफोन? किसने किया था?’
‘रुको, मुझे अपनी बात पूरी करने दो। यह रिसेप्शनिस्ट था। उसने कहा, श्रीमान मिटर, यहाँ एक सज्जन हैं जिन्होंने आपको पहचान लिया है। उनका कहना है कि वे आप जैसे प्रतिभाशाली जासूस का ऑटोग्राफ लेना चाहते हैं। क्या मैं उन्हें ऊपर भेज दूं?’
फेलुदा यहाँ रुका, मेरी ओर मुड़ा और बोला, ‘आज मुझे एक बात समझ में आई, टॉपशे, और मुझे इसे स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं है—ऑटोग्राफ देना उतना ही लुभावना होता है जितना लेना। मैं भविष्य में निश्चित रूप से अधिक सावधान रहूंगा। लेकिन मुझे इस सबक की ज़रूरत थी।’
'इसका क्या मतलब है?'
मुझे इतनी खुशी हुई कि मैंने रिसेप्शनिस्ट से उस आदमी को ऊपर भेजने को कहा। वह आया, उसने दरवाजा खटखटाया, मैंने दरवाजा खोला, तभी मेरे सिर पर एक ज़ोरदार चोट लगी और... सब कुछ अंधेरा हो गया। उस आदमी ने अपना चेहरा एक बड़े रुमाल से ढक रखा था, इसलिए मुझे यह भी नहीं पता कि वह कैसा दिखता था। जटायु ने सुझाव दिया, 'चूंकि हम दिल्ली में हैं, तो क्या प्रधानमंत्री को सूचित करना अच्छा विचार नहीं होगा?'

इस पर फेलुदा ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा, 'भगवान ही जाने उस आदमी को वह नीला बक्सा चुराकर क्या मिला होगा, लेकिन उसने हमें वाकई एक मुश्किल स्थिति में डाल दिया है। कितना लापरवाह आदमी है!'
अगले कुछ मिनटों तक कोई नहीं बोला। कमरे में केवल आहों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। अंत में, फेलुदा ने कुछ महत्वपूर्ण शब्द कहे। उन्होंने धीरे से कहा, 'एक रास्ता है। मैं मानता हूँ, यह आसान रास्ता नहीं है। लेकिन यही एक रास्ता है जो मुझे सूझ रहा है, और हमें इसे अपनाना ही होगा क्योंकि हम शिमला खाली हाथ नहीं जा सकते।'
उसने अपनी नीली नोटबुक उठाई और धमीजा के मामले में मौजूद सामग्री की सूची पर सरसरी नजर डाली।
उन्होंने कहा, ‘इस सूची में ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो हमें दिल्ली में न मिले। हमें हर एक चीज़ लानी होगी। मुझे याद है कि हर एक चीज़ कैसी दिखती थी और उसकी क्या हालत थी। तो इस बारे में हमें चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। मैं टूथपेस्ट और शेविंग क्रीम को पुराना और इस्तेमाल किया हुआ दिखा सकता हूँ। और एक सफेद रुमाल भी मिल जाना चाहिए और उस पर कढ़ाई करवा लेनी चाहिए। मुझे उसका डिज़ाइन याद है। अखबारों में बेशक तारीख अलग होगी, लेकिन मुझे नहीं लगता कि श्री धमीजा को इसका पता चलेगा। बस एक महंगी चीज़ होगी कोडक फिल्म का एक रोल...’
‘अरे!’ लालमोहन बाबू ने बीच में ही टोकते हुए कहा। ‘अरे, देखो, मैं इसे तुम्हें वापस देना बिल्कुल भूल गया था। तुमने ही तो मुझे हवाई जहाज में दिया था, याद है?’ उन्होंने कोडक का डिब्बा फेलुदा को लौटा दिया।
'अच्छा, एक समस्या तो हल हो गई... लेकिन तुम्हारी जेब से ये क्या निकला हुआ है?'
पान के छोटे से डिब्बे के साथ एक कागज का टुकड़ा गिर गया था। हम सभी उस पर लिखी हुई बातें देख सकते थे:
‘अगर आपको अपनी जान प्यारी है तो शिमला मत जाइए।’

सात

रात के 9:30 बज रहे थे। हमारी ट्रेन अंधेरे में कालका की ओर तेज़ी से बढ़ रही थी। शिमला जाने के लिए हमें कालका में ट्रेन बदलनी थी। हमारे डिब्बे में सिर्फ़ हम तीन लोग थे। चौथा बर्थ खाली था। मैं अंदाज़ा नहीं लगा सकती थी कि बाकी दो लोग कैसा महसूस कर रहे होंगे, लेकिन मेरे मन में कई तरह की भावनाएँ उमड़ रही थीं, जिन्हें समझना नामुमकिन था: उत्साह, खुशी, उत्सुकता या डर।
लालमोहन बाबू ने कुछ हिचकिचाहट के साथ चुप्पी तोड़ते हुए कहा, 'मुझे बताइए, श्रीमान मित्तर, एक प्रतिभाशाली जासूस और एक शातिर अपराधी के बीच की रेखा वास्तव में बहुत पतली होती है, है ना?'
फेलुदा इतना मग्न था कि उसने कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन मैं अच्छी तरह जानता था कि सवाल किस वजह से पूछा गया था। यह शाम को घटी एक घटना से संबंधित था। मुझे इसका विस्तार से वर्णन करना चाहिए, क्योंकि इससे फेलुदा के चरित्र का एक अप्रत्याशित पहलू सामने आया।
श्री धमीजा को धोखा देने के लिए आवश्यक अधिकांश चीजें इकट्ठा करने में हमें मुश्किल से आधा घंटा लगा। एकमात्र बड़ी समस्या अटैची केस ही थी। हमें नीले रंग का एयर इंडिया का बैग कहाँ मिल सकता है? दिल्ली में हमारा कोई परिचित नहीं था जिससे हम पूछ सकें। शायद किसी दुकान में ऐसा ही नीला बैग मिल जाए—लेकिन उस पर एयर इंडिया लिखा नहीं होगा। और अगर लिखा होता, तो सारा भेद खुल जाता।
लेकिन अंत में, घोर हताशा में, हमने एक सादा नीला बैग खरीदा और उसे एक हाथ में पकड़े हुए, फेलुदा हमें एयर-इंडिया के मुख्य कार्यालय में ले गया। सबसे पहले हमारी नज़र एक बूढ़े आदमी पर पड़ी, जिसके सिर पर पारसी टोपी थी और वह पूछताछ काउंटर के ठीक बगल में बैठा था। उसकी कुर्सी के बाईं ओर, उससे सटा हुआ, एक बिल्कुल नया नीले रंग का एयर इंडिया का अटैची केस रखा था, ठीक वैसा ही जैसा हम ढूंढ रहे थे।

फेलुदा सीधे काउंटर तक गए और अपना सूटकेस उस बूढ़े आदमी के सूटकेस के बगल में रख दिया। उन्होंने काउंटर पर बैठे आदमी से पूछा, 'क्या दिल्ली से फ्रैंकफर्ट के लिए एयर इंडिया की कोई फ्लाइट है?' कुछ ही सेकंड में उन्हें ज़रूरी जानकारी मिल गई, उन्होंने 'धन्यवाद' कहा, बूढ़े आदमी का सूटकेस उठाया और अपना सूटकेस वहीं रख दिया जहाँ वह रखा था और बड़े आराम से बाहर निकल गए। लालमोहन बाबू और मैं उनके पीछे-पीछे बिल्कुल अवाक रह गए। फिर हम होटल लौट आए और फेलुदा अटैची बॉक्स खोलने में जुट गए। जब तक उन्होंने काम पूरा किया, कोई भी - यहाँ तक कि श्री धमीजा भी - यह नहीं कह सकता था कि यह वही अटैची बॉक्स नहीं था जो हमें दीनानाथ लाहिड़ी ने दिया था। यही बात अटैची बॉक्स के अंदर रखी चीज़ों पर भी लागू होती थी।
फेलुदा अपनी नोटबुक को घूर रहा था। अब उसने उसे बंद किया, उठा और इधर-उधर टहलने लगा। ‘बिल्कुल ऐसा ही था,’ वह बुदबुदाया। ‘वे चारों आदमी ठीक इसी तरह की एक गाड़ी में थे…’
मुझे हमेशा से यह समझना मुश्किल लगता रहा है कि फेलुदा का ध्यान किस चीज़ पर जाएगा। इस समय वह दीवार पर टंगी धातु की रिंगों में रखे चश्मों को घूर रहा था। भला ये चीज़ें उसके लिए क्यों दिलचस्प होंगी?
‘क्या आप चलती ट्रेन में सो सकते हैं, या नहीं?’ उसने लालमोहन बाबू से अचानक ही पूछ लिया।
‘अच्छा, मैं…’ लालमोहन बाबू ने एक बड़ी जम्हाई को दबाने की कोशिश करते हुए जवाब दिया, ‘मुझे झूला झूलना काफी पसंद है।’
‘हाँ। मुझे पता है कि हिलने-डुलने से आमतौर पर नींद आ जाती है। लेकिन ध्यान रहे, हर किसी को नहीं। मेरे एक चाचा हैं जो ट्रेन में एक पल भी नहीं सो पाते,’ फेलुदा ने कहा और खाली बर्थ पर उछल पड़ा। फिर उसने पढ़ने वाला लैंप जलाया, धमीजा के अटैची बैग में रखी किताब खोली और कुछ पन्ने पलटे। हमने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के एक बुक स्टॉल से उसकी दूसरी कॉपी खरीदी थी।
किताब को एक तरफ रखकर, फेलुदा ऊपर की बर्थ पर लेट गया और छत की ओर देखने लगा। बाहर घना अंधेरा था। दूर कुछ टिमटिमाती रोशनी के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।
मैं लालमोहन बाबू से पूछने ही वाला था कि क्या उन्हें अपना हथियार लाना याद है और अगर हां, तो वह हमें कब दिखाएंगे, तभी उन्होंने अप्रत्याशित रूप से बोलना शुरू कर दिया।

उन्होंने कहा, 'हम एक चीज़ भूल गए, सुपारी। हमें खाने के डिब्बे वाले आदमी से पूछना होगा कि क्या उनके पास सुपारी है। अगर नहीं, तो हमें अगले स्टेशन पर खरीदनी पड़ेगी। इस छोटी सी डिब्बी में बस एक ही बची है।'
लालमोहन बाबू ने धमीजा के अटैची बॉक्स से कोडक का डिब्बा निकाला, जो उस बैग में बची एकमात्र असली वस्तु थी, और उसे अपनी हथेली पर झुकाया। पान का पत्ता बाहर नहीं गिरा।
‘कितना परेशान करने वाला है!’ उसने कहा। ‘मैं इसे देख तो सकता हूँ, लेकिन यह बाहर नहीं निकल रहा!’ वह बर्तन को ज़ोर से हिलाने लगा और उस जिद्दी पान के टुकड़े पर अपशब्दों की बौछार करने लगा, लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ।
‘मुझे दे दो!’ फेलुदा ने कहा और ऊपर की बर्थ से कूदकर लालमोहन बाबू के हाथ से डिब्बा छीन लिया। लालमोहन बाबू पूरी तरह से अचंभित होकर उसे देखते रह गए।
फेलुदा ने अपनी छोटी उंगली डिब्बे में डाली और थोड़ी सी ताकत लगाकर उस छोटी सी वस्तु को धक्का दिया। अब वह एक आज्ञाकारी बच्चे की तरह बाहर आ गई। फेलुदा ने दो-तीन बार सूंघा और बोला, 'अरलदाइट। किसी ने इस सुपारी पर अरलदाइट का इस्तेमाल किया है। पता नहीं क्यों—? टॉपशे, दरवाजा बंद करो।' गलियारे में बाहर कदमों की आहट सुनाई दी। मैंने दरवाजा बंद कर दिया, लेकिन इससे पहले कि मैं उस आदमी को देख पाता जो हमारे डिब्बे के पास से गुजरा था। यह वही बूढ़ा आदमी था जिसे हमने जंतर-मंतर पर देखा था। उसने अभी भी काले चश्मे पहने हुए थे और उसके कान अभी भी रुई से बंद थे।
‘श्...
वह अपनी हथेली पर पड़े छोटे से सुपारी को टकटकी लगाकर देख रहा था। मैंने करीब से देखने के लिए आगे बढ़कर देखा। यह स्पष्ट था कि वह सुपारी बिल्कुल नहीं थी। किसी अन्य वस्तु को भूरा रंग लगाकर उसे छिपाया गया था।
फेलुदा ने धीरे से कहा, 'मुझे पहले ही समझ जाना चाहिए था। मुझे बहुत पहले ही पता चल जाना चाहिए था। ओह, मैं कितना मूर्ख था, टॉपशे!'
फेलूदा ने अब एक गिलास को उसके छल्ले से उठाया, हमारी फ्लास्क से थोड़ा पानी डाला और उसमें सुपारी डुबो दी। जैसे ही उसने सुपारी को धीरे से रगड़ा, पानी हल्का भूरा होने लगा। फिर उसने उसे रुमाल से पोंछा और वापस अपनी हथेली पर रख लिया।

सुपारी गायब हो गई थी। उसकी जगह एक खूबसूरती से तराशा हुआ, चमकीला पत्थर था। हमारे अर्ध-अंधेरे डिब्बे में भी उसकी चमक देखकर मैं समझ गया कि वह हीरा है। और यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि हममें से किसी ने भी इतना बड़ा हीरा पहले कभी नहीं देखा था। कम से कम लालमोहन बाबू ने तो इस बात को साफ-साफ कह दिया था।
‘क्या वो...’ उसने हांफते हुए कहा, ‘एक... वो... वो...?’
फेलुदा ने पत्थर पर अपनी मुट्ठी कसी, दरवाजे को बंद करने के लिए गया, फिर वापस आकर बोला, 'हमें पहले ही जान से मारने की चेतावनी मिल चुकी है। तुम मरने की बात क्यों कर रहे हो?'
नहीं, नहीं, मरना नहीं। मेरा मतलब है, क्या वो हीरा है?
'संभवतः, वरना इतनी लगन से इसकी तलाश न की जाती। लेकिन ध्यान रहे, मैं कोई विशेषज्ञ नहीं हूं।'
तो फिर, क्या यह वैल-वैल-वैल- है?
मुझे खेद है कि हीरों के मूल्य के बारे में मुझे ज्यादा जानकारी नहीं है। मैं केवल एक मोटा अनुमान लगा सकता हूँ। मुझे लगता है कि यह हीरा लगभग बीस कैरेट का है। इसलिए इसका मूल्य निश्चित रूप से पांच लाख रुपये से अधिक होगा।
लालमोहन बाबू चुपचाप अटक गए। फेलुदा अभी भी अपनी उंगलियों के बीच पत्थर को घुमा रहे थे।
‘धमीजा को इतनी कीमती चीज कैसे मिली?’ मैंने दबी आवाज में पूछा।
'मुझे नहीं पता, प्यारे बेटे। धमीजा के बारे में मुझे बस इतना पता है कि उसने कहा था कि उसके पास एक फलों का बगीचा है और उसे ट्रेनों में थ्रिलर पढ़ना पसंद है।'
इस बीच, लालमोहन बाबू कुछ हद तक स्वस्थ हो गए थे। उन्होंने पूछा, 'क्या अब यह पत्थर धमीजा को वापस जाएगा?'
'अगर हमें यकीन हो जाए कि यह वाकई उनका ही है, तो निश्चित रूप से यह उन्हें वापस मिल जाएगा।'
'क्या इसका मतलब यह है कि आपको संदेह है कि यह वास्तव में किसी और का हो सकता है?'

'हां, लेकिन कुछ और सवाल हैं जिनके जवाब देने की जरूरत है। उदाहरण के लिए, मुझे नहीं पता कि बंगाल के बाहर के लोग कटे हुए सुपारी चबाने की आदत रखते हैं या नहीं।'
‘लेकिन अगर ऐसा है तो—’ मैंने कहना शुरू किया।
‘नहीं। आज रात और कोई सवाल नहीं, टॉपशे। इस पूरे मामले ने एक नया मोड़ ले लिया है। हमें हर कदम बेहद सावधानी से उठाना होगा। मैं अब और समय बातचीत में बर्बाद नहीं कर सकता।’
फेलुदा ने अपना बटुआ निकाला, चमकते पत्थर को सुरक्षित रखा, ज़िप खींची और अपनी बर्थ पर चढ़ गया। मैं जानता था कि वह परेशान नहीं होना चाहता था। लालमोहन बाबू बोलने के लिए मुंह खोलने ही वाले थे कि मैंने उन्हें रोकने के लिए अपनी उंगली होठों पर रख दी। उन्होंने एक बार फेलुदा की ओर देखा और फिर मेरी ओर मुड़े। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि मैं सस्पेंस थ्रिलर लिखना छोड़ दूंगा।'
'क्यों?'
पिछले कुछ दिनों में जो कुछ घटित हुआ है... वो कल्पना से परे है, है ना? आपने ये कहावत तो सुनी ही होगी, सच्चाई कल्पना से कहीं अधिक शक्तिशाली होती है? 'मजबूत नहीं। मुझे लगता है कि 'अजनबी' शब्द अधिक उपयुक्त है।'
'अजनबी?'
'हां, मतलब और भी... अद्भुत। और भी जिज्ञासा जगाने वाला।'
‘अरे सच में? मुझे लगा अजनबी वो होता है जिससे पहले कभी मुलाकात न हुई हो। अरे नहीं, नहीं, मैं समझ गया। अजीब, और भी अजीब, सबसे अजीब...’
मैंने उसे खुश करने का फैसला किया। मैंने उससे कहा, 'हीरा हमें सिर्फ तुम्हारी वजह से मिला। अगर तुमने सारे असली सुपारी खत्म न किए होते, तो वह हीरा हमेशा के लिए छिपा रह जाता।'
लालमोहन बाबू के चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान आ गई।
‘क्या आपका मतलब यह है कि मैंने भी इस बड़े रहस्य में थोड़ा योगदान दिया है? हा हा हा हा...’ फिर उन्होंने एक मिनट सोचा और कहा, ‘आप जानते हैं कि मैं वास्तव में क्या सोचता हूँ? मुझे यकीन है कि आपके चचेरे भाई को हीरे के बारे में शुरू से ही पता था। वरना हम इसे चुराने के दो प्रयासों से कैसे बच पाते?’

इससे मुझे सोचने पर मजबूर होना पड़ा। चोर अभी तक असली चीज़ पर हाथ नहीं डाल पाया था। हमारे होटल के कमरे में सेंध लगाकर भी नहीं। वह कीमती पत्थर अभी भी हमारे पास था। इसका मतलब था कि शायद अभी भी हमारा पीछा किया जा रहा था, और इसलिए हम लगातार खतरे में थे।
और हम शिमला में भी सुरक्षित नहीं रहेंगे...
पता नहीं कब मुझे नींद आ गई। आधी रात को अचानक नींद खुल गई। डिब्बे में एकदम अंधेरा था, मतलब फेलुदा ने भी पढ़ने वाला लैंप बुझाकर सो गया था। लालमोहन बाबू मेरे सामने वाली निचली बर्थ पर सो रहे थे। समय देखने के लिए मैं अपना लैंप जलाने ही वाला था कि मेरी नज़र दरवाजे पर पड़ी। हमारी तरफ का पर्दा धुंधले शीशे पर थोड़ा सा लगा हुआ था। लेकिन वहाँ एक खाली जगह थी, और उस खाली जगह पर एक आदमी की परछाई पड़ रही थी।
वह वहाँ क्या कर रहा था? मुझे यह समझने में कुछ सेकंड लगे कि वह वास्तव में दरवाजे का हैंडल घुमाने की कोशिश कर रहा था। मुझे पता था कि दरवाजा बंद है और बाहर से दबाव डालने पर भी नहीं खुलेगा; फिर भी, मैं डर के मारे बेहाल होने लगी।
वह आदमी कब तक डटा रहता, यह कहना मुश्किल है। लेकिन, कुछ ही सेकंड बाद, लालमोहन बाबू ने नींद में ही 'बूमरैंग!' चिल्लाया और परछाई गायब हो गई।
मुझे एहसास हुआ कि ठंडी रात की हवा में भी मुझे पसीना आ रहा था।

आठ

मैंने पहले भी बर्फ से ढके पहाड़ देखे थे—दार्जिलिंग में कंचनजंगा और हवाई जहाज से अन्नपूर्णा की चोटी; और फिल्मों में बर्फ तो देखी ही थी। लेकिन शिमला में जो देखा, उतना चौंकाया मुझे पहले कभी नहीं लगा था। अगर सड़कों पर दूसरे भारतीय टहल नहीं रहे होते, तो मुझे पक्का यकीन हो जाता कि हम किसी दूसरे देश में हैं।
फेलुदा ने मुझसे कहा, 'दार्जिलिंग की तरह इस शहर को भी अंग्रेजों ने बसाया था, इसलिए यह देखने में किसी विदेशी शहर जैसा लगता है। लेफ्टिनेंट रॉस ने 1819 में यहाँ अपने लिए एक लकड़ी की कुटिया बनवाई थी। यहीं से शुरुआत हुई। जल्द ही अंग्रेजों ने इसे अपनी ग्रीष्मकालीन राजधानी बना लिया, क्योंकि गर्मियों के महीनों में मैदानी इलाकों में जीवन काफी असुविधाजनक हो जाता था।'
हम कालका से मीटर गेज ट्रेन लेकर शिमला पहुंचे थे। रास्ते में कुछ खास नहीं हुआ, हालांकि मैंने देखा कि कान में इयरप्लग लगाए वह बुजुर्ग भी हमारी ही तरह उसी ट्रेन में सफर कर रहे थे और उन्होंने भी क्लार्क्स होटल में चेक-इन किया। चूंकि अभी मुख्य सीजन शुरू नहीं हुआ था, इसलिए काफी कमरे उपलब्ध थे और लालमोहन बाबू को भी क्लार्क्स होटल में बिना किसी परेशानी के एक कमरा मिल गया।
चेक-इन करने के तुरंत बाद फेलुदा डाकघर ढूंढने निकल गया। मैंने उसके साथ चलने की पेशकश की, लेकिन उसने कहा कि नए अटैची केस की रखवाली के लिए किसी को पीछे रुकना चाहिए; इसलिए लालमोहन बाबू और मैं होटल में ही रुक गए। फेलुदा ने बर्फ या खूबसूरत शहर के बारे में एक भी टिप्पणी नहीं की। दूसरी ओर, लालमोहन बाबू पूरी तरह से मुग्ध लग रहे थे। उन्हें जो कुछ भी दिखाई दे रहा था, वह उन्हें बेहद अद्भुत लग रहा था। जब मैंने बताया कि सही शब्द 'फैंटास्टिक' है, तो उन्होंने बड़े ही सहज अंदाज में कहा कि उनकी अंग्रेजी पढ़ने की गति इतनी अद्भुत है कि उन्हें शब्दों को ध्यान से देखने का समय ही नहीं मिलता। इसके अलावा, उनके कई और सवाल थे जिनके जवाब वे जानना चाहते थे

— क्या शिमला में ध्रुवीय भालू पाए जाते हैं, क्या यहाँ ऑरोरा बोरेलिस दिखाई देता है, क्या एस्किमो लोग अपने इल्गू बनाने के लिए उसी बर्फ का इस्तेमाल करते हैं (जिस पर मुझे उन्हें फिर से सुधारना पड़ा और कहना पड़ा कि एस्किमो लोग इग्लू बनाते हैं, इल्गू नहीं)। वह व्यक्ति रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था।
क्लार्क्स होटल एक ढलान पर बना था। इसकी दूसरी मंजिल के बगल में एक बरामदा था जो सड़क की ओर खुलता था। प्रबंधक का कमरा, लाउंज और हमारे कमरे, सभी दूसरी मंजिल पर थे। लकड़ी की सीढ़ियाँ नीचे पहली मंजिल तक जाती थीं जहाँ और कमरे और भोजन कक्ष थे।
फेलुदा को वापस आने में देर हो गई, इसलिए दोपहर 2 बज चुके थे जब हमने अपना लंच खत्म किया। डाइनिंग हॉल के एक कोने में एक बैंड बज रहा था। लालमोहन बाबू उसे संगीत कार्यक्रम कहते थे। कान में इयरप्लग लगाए वह बूढ़ा आदमी भी उसी कमरे में लंच कर रहा था, साथ ही तीन विदेशी भी थे—दो पुरुष और एक महिला। जब हम अंदर आए तो मैंने काले चश्मे और नुकीली दाढ़ी वाले एक आदमी को कमरे से बाहर जाते देखा था। ऐसा लग रहा था कि होटल में इन लोगों और हमारे अलावा कोई और नहीं था।
‘हम आज श्री धामीजा से मिलने जा रहे हैं, है ना?’ मैंने गरमागरम सूप की घूंट धीरे-धीरे लेते हुए पूछा।
‘हां, चार बजे। हमें तीन बजे से पहले निकलने की जरूरत नहीं है,’ फेलुदा ने जवाब दिया।
वह वास्तव में कहाँ रहता है?
‘वाइल्डफ्लावर हॉल कुफरी के रास्ते में है। यहाँ से आठ मील दूर।’
‘वहाँ पहुँचने में एक घंटा क्यों लगना चाहिए?’
“रास्ता लगभग पूरी तरह बर्फ से ढका हुआ है। अगर हम रेंगने के अलावा कुछ और करने की कोशिश करेंगे तो गाड़ी फिसल सकती है।” फिर फेलुदा ने लालमोहन बाबू से कहा, “अपने सारे गर्म कपड़े पहन लो। हम जिस जगह जा रहे हैं वह शिमला से हज़ार फीट ऊँची है। वहाँ बर्फ़ की हालत और भी खराब है।”
लालमोहन बाबू ने एक चम्मच सूप मुंह में डाला और जोर से सूप पीते हुए पूछा, 'क्या कोई शेरपा हमारे साथ चलेगा?'

मुझे लगभग हंसी आ गई, लेकिन फेलुदा ने अपना चेहरा गंभीर बनाए रखा। 'नहीं,' उसने गंभीरता से कहा, 'दरअसल वहां तक जाने के लिए एक सड़क है। हम कार से जाएंगे।'
हमने अपना सूप खत्म कर लिया था और अगले व्यंजन का इंतजार कर रहे थे, तभी फेलुदा ने फिर से बोलना शुरू किया। उसने लालमोहन बाबू से पूछा, 'तुम्हारे हथियार का क्या हुआ?'
‘यह मेरे पास ही है,’ लालमोहन बाबू ने ब्रेड स्टिक चबाते हुए जवाब दिया, ‘मुझे इसे आपको दिखाने का मौका ही नहीं मिला, है ना?’
'यह क्या है?'
एक बूमरैंग।
आह, अब समझ में आया। मैं सोच रहा था कि नींद में उसने 'बूमरैंग!' क्यों चिल्लाया था।
‘तुम्हें ऐसी चीज़ कहाँ से मिली?’
‘एक ऑस्ट्रेलियाई व्यक्ति अपना कुछ सामान बेच रहा था। उसने अखबार में विज्ञापन दिया था। और भी कई दिलचस्प चीजें थीं, लेकिन मैं इसे खरीदने से खुद को रोक नहीं पाया। मैंने सुना है कि अगर इसे सही ढंग से फेंका जाए, तो यह आपके लक्ष्य पर लगेगा और आपके पास वापस आ जाएगा।’
नहीं, यह पूरी तरह सच नहीं है। यह आपके पास तभी वापस आएगा जब यह लक्ष्य से चूक जाएगा, न कि अगर यह लक्ष्य पर लगेगा।
हाँ, आप सही हो सकते हैं। लेकिन मैं आपको एक बात बता दूँ। इसे फेंकना बहुत मुश्किल है। मैंने अपनी छत से कोशिश की, और यह जाकर सामने वाले घर की बालकनी पर रखे गमले को तोड़ दिया। शुक्र है, वे लोग मुझे जानते थे और इतने दयालु थे कि उन्होंने अपने गमले को लेकर कोई हंगामा किए बिना मेरा हथियार लौटा दिया।
'कृपया इसे आज अपने साथ ले जाना न भूलें।'
लालमोहन बाबू की आंखें उत्साह से चमक उठीं।
क्या आपको किसी परेशानी की आशंका है?
‘खैर, मैं किसी बात की गारंटी तो नहीं दे सकता, है ना? आखिरकार, जिसने भी उस हीरे को चुराने की कोशिश की है, उसे अभी तक वह मिला तो नहीं है, है ना?’ फेलुदा ने हल्के स्वर में कहा, लेकिन मैं समझ गया कि वह मन ही मन पूरी तरह से निश्चिंत नहीं था।

पौने तीन बजे, एक नीली एम्बेसडर कार आई और मुख्य द्वार के सामने रुक गई। 'ये रही हमारी टैक्सी,' फेलुदा ने कहा और खड़ा हो गया। लालमोहन बाबू और मैं भी उसके पीछे खड़े हो गए। ड्राइवर एक स्थानीय आदमी था, जवान और हट्टा-कट्टा। फेलुदा श्री धमीजा के (नकली) अटैची केस को पकड़े हुए आगे की सीट पर उसके साथ बैठ गया। जटायु और मैं पीछे बैठे थे। बूमरैंग जटायु के बड़े से ओवरकोट के अंदर छिपा हुआ था। मैंने उसे ध्यान से देखा था। वह लकड़ी का बना था और देखने में हॉकी स्टिक के निचले हिस्से जैसा लग रहा था, हालांकि वह उससे काफी पतला और चिकना था।
आसमान धुंधलाने लगा था और तापमान में काफी गिरावट आ गई थी। लेकिन बादल ज्यादा घने नहीं थे, इसलिए बारिश होने की संभावना नहीं लग रही थी। हम ठीक दोपहर 3 बजे वाइल्डफ्लावर हॉल के लिए रवाना हुए।
हमारा होटल शहर के मुख्य इलाके में था। आगमन के बाद से हमें होटल से बाहर निकलने का मौका ही नहीं मिला था। बर्फ से ढके ठंडे, उदास पहाड़ों का असली नज़ारा मुझे तभी महसूस हुआ जब हमारी कार शहर से निकली और एक शांत, संकरे रास्ते पर अपनी यात्रा शुरू की।
एक तरफ ऊंचे पहाड़ थे, दूसरी तरफ गहरी खाई। सड़क इतनी चौड़ी थी कि एक और कार मुश्किल से निकल सके, लेकिन बस इतना ही संभव था। पहाड़ों पर घने चीड़ के जंगल थे।
शुरुआती चार मील का सफर हमने ठीक-ठाक गति से तय किया क्योंकि सड़क पर बर्फ लगभग न के बराबर थी। चीड़ के पेड़ों के बीच से मुझे दूर पहाड़ों पर भारी बर्फबारी की झलक दिख रही थी; लेकिन जल्द ही, जिस सड़क पर हम चल रहे थे, उस पर बर्फ बहुत मोटी हो गई। फेलुदा सही थे।
हमें अपनी गति धीमी करनी पड़ी और आगे चल रही कारों के टायरों के निशानों का पीछा करते हुए धीरे-धीरे रेंगना पड़ा। ज़मीन इतनी फिसलन भरी थी कि कई बार गाड़ी आगे नहीं बढ़ पाती थी और पहिए तेज़ी से घूमने लगते थे।
मेरी नाक की नोक और कान ठंडे होने लगे। लालमोहन बाबू ने एक पल बताया कि उनके कानों में घंटियाँ बज रही हैं। पाँच मिनट बाद उन्होंने कहा कि उनकी नाक बंद हो गई है। मैंने इस पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। मुझे इस बात की ज़रा भी चिंता नहीं थी कि मेरा शरीर ठंड को कैसे सहन करेगा। मैं बस अपने चारों ओर देख रहा था और इस अद्भुत जगह को देखकर हैरान था। क्या सच में यहाँ इंसान रहते थे? क्या यह प्रकृति का वह कोना नहीं था जो केवल बर्फीले

पहाड़ों में रहने वाले जानवरों, पक्षियों और कीड़ों के लिए बनाया गया था? क्या इसे इंसानी दखल से अछूता नहीं रहना चाहिए था? लेकिन नहीं, जिस सड़क पर हम चल रहे थे, वह इंसान ने ही बनाई थी, दूसरी गाड़ियाँ भी उसी सड़क पर चल चुकी थीं और निस्संदेह आगे भी चलेंगी। दरअसल, अगर इस अद्भुत जगह की खोज इंसान ने पहले ही न की होती, तो मैं आज यहाँ न होता।
लगभग बीस मिनट बाद, वह बेदाग, विचित्र सफेदी अचानक सड़क के किनारे एक काले लकड़ी के तख्ते पर आकर खत्म हो गई, जिस पर सफेद अक्षरों में लिखा था: वाइल्डफ्लावर हॉल। मुझे उम्मीद नहीं थी कि हमारी यात्रा इतनी शांतिपूर्वक समाप्त होगी।
थोड़ी देर बाद हमें एक गेट दिखाई दिया जिस पर 'द नूक' लिखा हुआ था। हमारी कार दाईं ओर मुड़ी और हम इस गेट से अंदर चले गए। एक लंबा रास्ता एक बड़े, पुराने ज़माने के बंगले तक जाता था, जो स्पष्ट रूप से ब्रिटिश काल में बना था। इसकी छत और चौखटें बर्फ की मोटी परत से ढकी हुई थीं। इसमें रहने वाला कोई वाकपटु साहब ही होगा, वरना वह ऐसी जगह पर नहीं रहता।
हमारी टैक्सी बरामदे के नीचे आकर रुकी। वर्दी पहने एक आदमी बाहर आया और उसने फेलुदा का कार्ड ले लिया। एक मिनट बाद, घर का मालिक खुद हाथ फैलाए बाहर आया।
'शुभ दोपहर, श्रीमान मिटर। मैं आपकी समय की पाबंदी से बहुत प्रभावित हूं। कृपया अंदर आइए।'
श्री धमीजा संभवतः एक अंग्रेज थे। उनका उच्चारण त्रुटिहीन था। उनका रूप-रंग श्री लाहिड़ी के वर्णन से मेल खाता था। फेलुदा ने मेरा और लालमोहन बाबू का परिचय कराया, और फिर हम सब अंदर चले गए। विशाल ड्राइंग रूम का फर्श और दीवारें लकड़ी की थीं। अंगीठी में आग की लपटें चटक रही थीं।
फेलुदा ने बैठने से पहले नीले रंग का अटैची केस श्री धमीजा को सौंप दिया। श्री धमीजा के चेहरे से मुस्कान जरा भी नहीं हटी। इस प्रकार, हमारी छल-कपट की कोशिश पूरी तरह सफल रही।
'बहुत-बहुत धन्यवाद। मैंने श्री लाहिड़ी का मामला अपने पास रखा हुआ है।' 'कृपया अपने सामान की जांच कर लें,' फेलुदा ने हल्की मुस्कान के साथ कहा। श्री धमीजा ने हंसते हुए जवाब दिया, 'अगर आप ऐसा कहते हैं, तो ठीक है,' और उन्होंने संदूक खोला। फिर उन्होंने उसमें रखी उन चीज़ों पर सरसरी नज़र

डाली जिन्हें हमने बड़ी सावधानी से रखा था और कहा, 'जी हां, सब ठीक है, सिवाय इसके कि ये अखबार मेरे नहीं हैं।'
‘ये तुम्हारे नहीं हैं?’ फेलुदा ने दोनों अंग्रेजी अखबार उठाते हुए पूछा। ‘नहीं, और न ही ये तुम्हारा है।’
श्री धमीजा ने सुपारी का डिब्बा लौटा दिया, जिसे कालका रेलवे स्टेशन पर भरा गया था। 'ओह, मैं समझ गया,' फेलुदा ने कहा। 'ये गलती से वहाँ पहुँच गए होंगे।'
खैर, कम से कम इससे यह तो साबित हो गया कि श्री धमीजा को हीरे के बारे में कुछ भी पता नहीं था। लेकिन, अगर ऐसा है तो डिब्बा अटैची केस के अंदर कैसे पहुंचा?
‘और ये रहा श्री लाहिड़ी का मामला,’ श्री धमीजा ने बगल की मेज से एक समान अटैची बॉक्स उठाते हुए और उसे फेलुदा को सौंपते हुए कहा। ‘क्या मैं भी यही अनुरोध कर सकता हूँ? कृपया इसकी सामग्री की जाँच कर लें।’
'श्री लाहिड़ी की दिलचस्पी सिर्फ एक ही चीज में है। एंटरोवियोफॉर्म टैबलेट की एक बोतल में।'
'हां, यह वहां है।'
‘…और, एक पांडुलिपि?’
‘पांडुलिपि?’
फेलुदा ने संदूक खोला था। दूर से ही सरसरी नजर डालने पर मुझे पता चल गया कि उसमें कागज का एक टुकड़ा भी नहीं था, पांडुलिपि तो दूर की बात है।
फेलुदा गहरी भौंहें चढ़ाए खुले हुए अटैची बॉक्स को घूर रहा था। श्री धमीजा ने पूछा, 'आप किस पांडुलिपि की बात कर रहे हैं?'
फेलुदा ने कुछ नहीं कहा। मैं समझ सकता था कि वह कितनी मुश्किल स्थिति में था; या तो श्री धमीजा पर चोरी का आरोप लगाना पड़ता, या फिर हमें शंभूचरण की तिब्बत की कहानी सुने बिना ही विनम्रतापूर्वक विदा लेनी पड़ती। सौभाग्यवश, श्री धमीजा ने बोलना जारी रखा। ‘मुझे बहुत खेद है, श्री मित्तर, लेकिन उस अटैची बॉक्स में ठीक वही है जो मुझे ग्रैंड होटल में अपने कमरे में खोलने पर मिला था। मैंने उसके मालिक का पता खोजने की उम्मीद में उसे अच्छी तरह से तलाशा। लेकिन कुछ नहीं मिला, और निश्चित रूप से कोई पांडुलिपि तो नहीं। शिमला लौटने पर, मैंने उसे अपनी अलमारी में बंद करके

रख दिया। एक पल के लिए भी किसी और ने उसे नहीं छुआ। मैं इसकी गारंटी दे सकता हूँ।’
उस तरह के भाषण के बाद, फेलुदा के पास करने के लिए कुछ खास नहीं बचा था। वह खड़ा हुआ और थोड़ी शर्मिंदगी के साथ बोला, 'तो फिर यह मेरी ही गलती होगी। श्री धामीजा, कृपया बुरा न मानें। आपकी मदद के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। अब हमें आगे बढ़ना चाहिए।'
‘क्यों? कम से कम मैं आपको एक कप चाय तो दे दूं। या आप कॉफी पीना पसंद करेंगे?’
नहीं, नहीं, कुछ नहीं, धन्यवाद। देर हो रही है। हमें सच में जाना चाहिए। अलविदा।
हम बंगले से बाहर निकले और टैक्सी में बैठ गए। मैं और भी ज़्यादा उलझन में था। पांडुलिपि कहाँ गायब हो गई होगी? नरेश पाकराशी ने हमें बताया था कि उन्होंने श्री लाहिड़ी को ट्रेन में पढ़ते हुए नहीं देखा था। क्या यह सच था?
क्या दीनानाथ लाहिड़ी ने हमें सरासर झूठ का पुलिंदा बताया था?

नौ

हमारे निकलने के कुछ ही देर बाद अंधेरा छा गया। लेकिन शाम के सिर्फ 4:25 बजे थे। क्या सच में सूरज डूब रहा था? मैंने आसमान की तरफ देखा और मुझे वजह पता चल गई। हल्के भूरे बादल घने काले बादलों में बदल गए थे। हे भगवान, बारिश न हो। सड़क पहले से ही फिसलन भरी थी। अब हमें ढलान पर उतरना था, इसलिए फिसलने का खतरा और भी बढ़ गया था। अच्छी बात सिर्फ यह थी कि गाड़ियाँ लगभग न के बराबर थीं, इसलिए किसी दूसरी गाड़ी से टकराने का डर नहीं था। फेलुदा ड्राइवर के बगल में बैठा था। मैं उसका चेहरा तो नहीं देख पा रहा था, लेकिन समझ गया था कि वह अभी भी नाराज़ है। और मैं यह भी जानता था कि वह क्या सोच रहा है। या तो दीनानाथ बाबू ने या श्री धमीजा ने हमसे झूठ बोला था। श्री धमीजा का बैठक कक्ष किताबों से भरा हुआ था। शायद वह शंभूचरण का नाम जानता हो। पचास साल पहले तिब्बत की यात्रा का वृत्तांत—और वह भी अंग्रेज़ी में लिखा हुआ—उसके लिए एक प्रलोभन हो सकता था। यह पूरी तरह असंभव तो नहीं था, है ना? लेकिन अगर पांडुलिपि श्री धमीजा के पास थी, तो फेलुदा उसे कैसे वापस लाएगा?
स्पष्टतः, अब दो रहस्य थे। एक हीरे से जुड़ा था, और दूसरा गुम हुई पांडुलिपि से। क्या होगा यदि यह भयानक उलझन फेलुदा के लिए भी सुलझाना असंभव साबित हो?
तापमान और भी गिर गया था। मुझे हर पल अपनी सांसों पर भाप जमती हुई दिखाई दे रही थी। लालमोहन बाबू ने अपने ओवरकोट का ऊपर वाला बटन खोला, हाथ अंदर डाला और बोले, 'बूमरैंग भी एकदम ठंडा लग रहा है। यह किसी गर्म देश से आया है, है ना? उम्मीद है कि यहाँ के मौसम में यह काम करेगा।' मैंने उन्हें यह बताने के लिए मुंह खोला कि ऑस्ट्रेलिया में भी ऐसी जगहें हैं जहाँ बर्फ पड़ती है, लेकिन मुझे चुप रहना पड़ा। हमारी कार पूरी तरह रुक गई थी। और कारण सीधा-सा था। एक काली एम्बेसडर कार ने हमारा रास्ता रोक रखा था। लगभग सौ गज दूर, सड़क के दूसरी ओर तिरछे में, एक और कार खड़ी थी, जिसके कारण हमारा आगे बढ़ना नामुमकिन था।

पीछे कूद गया। हालाँकि वह जवान और तंदुरुस्त था, लेकिन ज़ाहिर है कि उसने पहले कभी ऐसी स्थिति का सामना नहीं किया था।
पहाड़ियों में गोली की आवाज़ गूंज उठी। चीड़ के जंगल में छिपे किसी व्यक्ति ने हम पर गोली चलाई थी। संभवतः, काले रंग की एम्बेसडर कार के पीछे छिपने के कारण वह हमें देख नहीं पा रहा था।
ज़मीन पर लेटे हुए, मैं इस नई घटना को समझने की कोशिश कर रहा था। कोई ठंडी और गीली चीज़ मेरी गर्दन के पीछे गुदगुदी कर रही थी। मैंने अपना सिर कुछ डिग्री घुमाया और देखा कि क्या है। आसमान से बर्फ का एक पतला सफेद पर्दा बरस रहा था। खतरे के ऐसे क्षण में भी, मैं उन छोटे-छोटे बर्फ के टुकड़ों को टकटकी लगाकर देखने से खुद को रोक नहीं पाया, जो रुई के रेशों की तरह गिर रहे थे। जीवन में पहली बार, मुझे पता चला कि गिरती हुई बर्फ बिल्कुल भी आवाज़ नहीं करती। लालमोहन बाबू कुछ कहने ही वाले थे, लेकिन फेलुदा के एक इशारे ने उन्हें अपना इरादा बदलने पर मजबूर कर दिया।
ठीक इसी क्षण, सन्नाटा एक बार फिर टूट गया, लेकिन न तो पिस्तौल की गोली से, न बर्फ के टुकड़े से, और न ही फिसलन भरी बर्फ में पहियों के घूमने की आवाज़ से। इस बार, हमने एक आदमी की आवाज़ सुनी।
‘श्री मिटर!’
यह कौन था? आवाज़ कुछ जानी-पहचानी सी क्यों लग रही थी? ‘ध्यान से सुनो, श्रीमान मिटर,’ आवाज़ आगे बोली। ‘अब तक तो तुम्हें समझ ही गया होगा कि मैंने तुम्हें अपने काबू में कर लिया है। इसलिए कोई चालाकी मत करना। इससे कुछ नहीं होगा, बल्कि तुम्हारी जान खतरे में पड़ सकती है।’
शब्दों की अंतिम गूंज थमने में कुछ समय लगा। फिर उस व्यक्ति ने दोबारा बोलना शुरू किया।
'मुझे आपसे सिर्फ एक ही चीज चाहिए, श्रीमान मिटर।'
‘क्या बात है?’ फेलुदा ने चिल्लाकर पूछा।
‘जहां तुम छिपे हो, वहां से बाहर आ जाओ। मैं तुमसे मिलना चाहता हूं, हालांकि तुम कोशिश करने पर भी मुझे नहीं देख पाओगे। जब तुम बाहर आओगे, मैं तुम्हारे सवाल का जवाब दूंगा।’
कुछ मिनटों से मुझे अपने आस-पास एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दे रही थी। पहले तो मुझे लगा कि यह कार के अंदर से आ रही है। अब मैंने अपना सिर घुमाया और महसूस किया कि यह लालमोहन बाबू के दांत किटकिटाने की आवाज़ थी।

फेलुदा उठ खड़ा हुआ और बिना कुछ बोले धीरे-धीरे कार के दूसरी तरफ चला गया। शायद वह जानता था कि इन परिस्थितियों में, जैसा उसे कहा गया था वैसा करना ही सबसे अच्छा था। मैंने उसे पहले कभी इतनी कठिन परिस्थिति से जूझते हुए नहीं देखा था।
‘मुझे उम्मीद है,’ आवाज ने कहा, ‘कि आपके तीनों साथी यह समझते होंगे कि उनकी एक भी हरकत तबाही ला सकती है।’
'कृपया मुझे बताएं कि आप क्या चाहते हैं,' फेलुदा ने कहा।
मैं उसे एक पहिए के पीछे खड़े देख सकता था। वह पहाड़ की ओर देख रहा था।
उसके सामने बर्फ का एक विशाल मैदान फैला हुआ था। कुछ दूरी पर चीड़ का जंगल शुरू हो रहा था।
‘अपना रिवॉल्वर निकालो,’ आवाज ने आदेश दिया। फेलुदा ने बात मानी। ‘इसे ढलान पर फेंक दो।’ फेलुदा ने वैसा ही किया।
क्या आपके पास कोडक का डिब्बा है?
'हाँ।'
'मुझे दिखाओं।'
फेलुदा ने अपनी जेब से पीला डिब्बा निकाला और उसे ऊपर उठाया।
अब मुझे वह पत्थर दिखाओ जो तुम्हें इसमें मिला था।
फेलुदा ने अपना हाथ जैकेट की जेब में डाला। फिर उसने उसे बाहर निकाला और एक बार फिर ऊपर उठाया, अपने अंगूठे और तर्जनी के बीच एक छोटी सी वस्तु पकड़े हुए।
कुछ सेकंड तक कोई नहीं बोला। इसमें कोई शक नहीं कि वह आदमी हीरे को ध्यान से देखने की कोशिश कर रहा था। मैंने सोचा, क्या उसके पास दूरबीन थी?
‘ठीक है,’ आवाज़ वापस आई। ‘अब उस पत्थर को वापस उसके पात्र में रखो और सड़क के किनारे पड़े उस बड़े भूरे पत्थर पर रख दो। फिर तुम्हें सीधे शिमला लौटना है। अगर तुम्हें लगता है...’
फेलुदा ने उसकी बात बीच में ही काट दी।
‘तुम्हें वाकई यह पत्थर चाहिए, है ना?’ उसने पूछा।
‘भगवान के लिए, क्या मुझे इसे स्पष्ट-स्पष्ट करके बताना पड़ेगा?’ आवाज ने तीखे स्वर में जवाब दिया।
तो फिर, ये रहा!

फेलुदा ने अपना हाथ घुमाया और पत्थर को जंगल की ओर फेंक दिया। इसके बाद घटनाओं का एक बेहद रोमांचक सिलसिला शुरू हुआ।
हमारा अदृश्य शत्रु हीरे को पकड़ने की कोशिश में अपने छिपने की जगह से बाहर कूद पड़ा, लेकिन अधजली बर्फ की एक पटिया पर जा गिरा। अगले ही पल, उसका संतुलन बिगड़ गया और वह एक विशाल बर्फ के गोले की तरह पहाड़ी से नीचे लुढ़कने लगा। अंत में वह सड़क के किनारे बहने वाली बर्फ से ढकी नाली के पास आकर रुका। तब तक पिस्तौल और दूरबीन उसके हाथों से गिर चुकी थीं। इनके पास ही काले चश्मे और नुकीली दाढ़ी पड़ी थी।
अब छिपने का कोई फायदा नहीं था। हम तीनों उछलकर खड़े हुए और फेलुदा के पास दौड़ पड़े। मुझे उम्मीद थी कि दूसरा आदमी कम से कम बेहोश तो होगा ही, अगर मरा नहीं तो। वह काफी ऊंचाई से बहुत तेज गति से गिरा था। लेकिन, मुझे आश्चर्य हुआ कि वह पीठ के बल लेटा हुआ था, फेलुदा को गुस्से से घूर रहा था और गहरी सांसें ले रहा था।
अब यह समझना आसान था कि उसकी आवाज़ जानी-पहचानी क्यों लग रही थी। बर्फ पर लेटा हुआ व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि असफल फिल्म स्टार अमर कुमार उर्फ प्रबीर लाहिड़ी था, जो दीनानाथ बाबू का भतीजा था।
फेलुदा ने ठंडे स्वर में कहा, 'तुम्हें एहसास तो है ना कि पासा पलट गया है? तो ये खेल खेलना बंद करो और हमें बताओ कि तुम्हें क्या कहना है।'
प्रबीर लाहिड़ी ने कोई जवाब नहीं दिया। वह पीठ के बल लेटा रहा, बर्फ उसके ऊपर की ओर मुड़े हुए चेहरे पर गिरती रही, और वह लगातार फेलुदा को देखता रहा।
मुझे अभी तक कुछ भी स्पष्ट नहीं था, लेकिन मुझे उम्मीद थी कि प्रबीर बाबू इस रहस्य पर कुछ प्रकाश डालेंगे। लेकिन उन्होंने अभी तक कुछ नहीं कहा। ‘ठीक है,’ फेलुदा ने कहा, ‘अगर तुम कुछ नहीं बोलोगे, तो मुझे बोलने दो। अगर मैं कुछ गलत कहूँ तो मुझे बता देना। तुम्हें वह हीरा उस नेपाली बक्से से मिला था, है ना? संभवतः वही हीरा था जो नेपाल के राणा ने शंभूचरण को कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में दिया था। वह बक्सा वास्तव में शंभूचरण की संपत्ति रहा होगा; और उसने मरने से पहले उसे अपने मित्र सतीनाथ लाहिड़ी के पास छोड़ दिया होगा। सतीनाथ उसे अपने साथ भारत ले आया, लेकिन हीरे के बारे में किसी को बता नहीं पाया, शायद इसलिए कि जब वह लौटा तब तक वह गंभीर रूप से बीमार हो चुका था। तुम्हें वह कुछ ही दिन पहले संयोग से मिला। फिर तुमने

उसे भूरा रंग दिया और कटी हुई पान-सुपारी के साथ उस खाली फिल्म के डिब्बे में रख दिया। जब तुम्हारे चाचा ने तुम्हें एयर इंडिया का अटैची केस दिया, तो तुमने सोचा कि उसमें हीरा छिपाना पूरी तरह सुरक्षित होगा। लेकिन तुमने यह नहीं सोचा था कि एक दिन बाद ही वह बॉक्स तुम्हारे कमरे से मेरे कमरे तक पहुँच जाएगा।’ आपने चुपके से हमारी बातें सुनीं, है ना, जब उस शाम आपके घर में आपके चाचा हमसे बात कर रहे थे? इसलिए आपने मुझसे हीरा चुराने का फैसला किया। जब एक काल्पनिक श्री पुरी के फोन कॉल और आपके किराए के गुंडों की कोशिशें नाकाम रहीं, तो आप हमारा पीछा करते हुए दिल्ली तक आ गए। लेकिन वह भी काम नहीं आया, है ना? आपने होटल में हमारे कमरे में घुसकर बहुत बड़ा जोखिम उठाया, लेकिन हीरा फिर भी आपके हाथ नहीं लगा। उसके बाद आपके पास बस एक ही रास्ता बचा था। आप हमारा पीछा करते हुए शिमला तक आए और इस शानदार साजिश को अंजाम दिया।
फेलुदा रुक गया। हम सब उसके चारों ओर खड़े होकर उसे निहार रहे थे, पूरी तरह से मंत्रमुग्ध थे।
'मुझे बताइए, श्री लाहिड़ी, क्या इनमें से कुछ भी असत्य है?'
प्रबीर लाहिड़ी की आँखों का भाव अचानक बदल गया। उनकी आँखें चमक उठीं और उनके होंठों पर एक धूर्त मुस्कान फैल गई। 'आप किस बारे में बात कर रहे हैं, श्रीमान मित्तर?' उन्होंने लगभग प्रसन्नता से पूछा। 'कौन सा हीरा? मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता!'
मेरा दिल एक पल के लिए रुक गया। हीरा बर्फ में खो गया था। शायद हमेशा के लिए। फेलुदा इसे कैसे साबित कर सकता था?
‘श्रीमान लाहिड़ी,’ फेलुदा ने धीमी आवाज़ में कहा, ‘क्या आप इस अनमोल रत्न से परिचित नहीं हैं?’
हमने फिर से शुरुआत की। फेलुदा ने अपना हाथ दूसरी जेब में डाला और एक और पत्थर निकाला। बादलों से घिरे आसमान की धुंधली रोशनी में भी वह पत्थर खुशी से चमक रहा था।
बर्फ में दबा हुआ वो छोटा सा पत्थर मैंने आज सुबह शिमला की मिलर जेम कंपनी से खरीदा था। जानते हो मैंने इस पर कितने पैसे खर्च किए? पाँच रुपये। ये असली है...
वह अपनी बात पूरी नहीं कर सका। प्रबीर लाहिड़ी शेर की तरह उछला और फेलुदा पर झपटा, उसके हाथ से हीरा छीन लिया।

क्लैंग!
इस बार फेलुदा भी चौंक गया। यह अप्रत्याशित आवाज़ असल में लालमोहन बाबू के बूमरैंग के प्रबीर लाहिड़ी के सिर पर लगने का नतीजा थी। वह बेहोश होकर फिर से बर्फ पर गिर पड़ा। हीरा फेलुदा के पास लौट आया।
‘धन्यवाद, लालमोहन बाबू।’
लेकिन यह कहना मुश्किल है कि लालमोहन बाबू ने वे शब्द सुने भी थे या नहीं, क्योंकि वह अपने दाहिने हाथ से हवा में निकले और सटीक निशाने पर लगे बूमरैंग को देखकर अचंभित होकर घूर रहे थे।

दस

उभरते हुए फिल्म स्टार अमर कुमार की हालत अब दयनीय थी। शिमला लौटते समय कार में ही उन्होंने अपना जुर्म कबूल कर लिया था। फेलूदा के हाथ में मौजूद रिवाल्वर ने, जो उन्होंने घटनाक्रम समाप्त होने के तुरंत बाद बरामद कर ली थी, उनके लिए यह कबूलनामा करना आसान बना दिया था। प्रबीर बाबू को होश आने में देर नहीं लगी। लालमोहन बाबू ने उन पर बूमरैंग फेंका था और बर्फ का एक मुट्ठी भर हिस्सा उनके सिर पर मलकर उन्हें शांत करने की कोशिश की थी। मैं यह तो नहीं कह सकता कि इससे कोई फायदा हुआ या नहीं, लेकिन उन्होंने जल्द ही अपनी आँखें खोल लीं।
अरविंद नाम के ड्राइवर को भी होश आ गया था और खबरों के मुताबिक उसकी हालत में सुधार हो रहा था। पहले उसे प्रबीर लाहिड़ी के साथ जुड़ने के लिए पैसे की पेशकश की गई थी। लेकिन जब उसने लालच में आकर मना कर दिया, तो प्रबीर बाबू का सब्र टूट गया और उसने उसे पीट-पीटकर बेहोश कर दिया।
फिल्म से निकाले जाने के बाद से ही प्रबीर लाहिड़ी के लिए सब कुछ गड़बड़ होने लगा था। उनका हमेशा से सपना रहा था कि एक दिन वे मशहूर फिल्म स्टार बनें, ऐशो-आराम की जिंदगी जिएं और हजारों चाहने वालों की भीड़ उनके पीछे दौड़े। जब उनकी आवाज ने उनका साथ छोड़ दिया और उनका ये सपना चकनाचूर हो गया, तो प्रबीर लाहिड़ी मानो अपना आपा खो बैठे।
उसे जो चाहिए था वो उसे पाना ही था। अगर सही तरीके से उसका सपना पूरा नहीं हो सकता था, तो वो गलत तरीके अपनाने को भी तैयार था। किस्मत के अजीब मोड़ से, नेपाली बक्सा उसके हाथ लग गया, मानो स्वर्ग से कोई अमृत बरसा हो। उसमें उसे एक बेहद खूबसूरत और चमकीला पत्थर मिला। जब उसने उसकी कीमत लगवाई, तो वो दंग रह गया; और उसकी योजनाएँ बदल गईं। उसने फैसला किया कि वो अपनी खुद की फिल्म बनाएगा और उसमें मुख्य भूमिका निभाएगा। कोई भी—बिल्कुल कोई भी— उसे फिल्म से बाहर नहीं कर सकता था। इस फैसले के बाद जो हुआ वो इतिहास बन गया।

हमने उसे हिमाचल प्रदेश राज्य पुलिस के हवाले कर दिया। पता चला कि हीरा मिलते ही फेलुदा को प्रबीर बाबू पर शक हो गया था। इसलिए शिमला पहुँचते ही उसने दीनानाथ लाहिड़ी को फोन किया और उन्हें हमारे साथ आने को कहा। श्री लाहिड़ी के अगले दिन शिमला पहुँचने की उम्मीद थी। उसके बाद उन्हें अपने भतीजे के बारे में फैसला करना था। हीरा संभवतः दीनानाथ बाबू को ही लौटा दिया जाएगा, क्योंकि वह उनके चाचा के सामान में मिला था।
फेलुदा द्वारा पूरी कहानी समझाने के बाद मैंने कहा, 'यह सब तो ठीक है, लेकिन शंभूचरण के यात्रा वृत्तांत का क्या?'
फेलुदा ने कहा, 'यह दूसरा रहस्य है। आपने दो बैरल वाली बंदूकों के बारे में तो सुना ही होगा, है ना? यह एक दो बैरल वाला रहस्य है।'
लेकिन क्या हम इसका समाधान खोजने के करीब भी हैं?
'हां, मेरे प्यारे बेटे, हां। अखबारों और उस गिलास पानी की बदौलत।'
फेलुदा के शब्द भी कम रहस्यमय नहीं थे, इसलिए मैंने आगे पूछताछ न करने का फैसला किया। उन्होंने भी कुछ नहीं कहा।
रास्ते में कोई और हलचल हुए बिना हम होटल लौट आए। कुछ मिनट बाद, हम होटल की खुली छत पर एक रंगीन चंदवा के नीचे बैठे गर्म चॉकलेट पी रहे थे। छत पर सात और मेजें थीं। बगल वाली मेज पर दो जापानी पुरुष बैठे थे और कुछ दूरी पर वह बुजुर्ग व्यक्ति बैठा था जो दिल्ली से हमारे साथ आया था। उसने अपने कानों से रुई हटा दी थी।
आकाश अब साफ था, लेकिन शाम की रोशनी तेजी से कम हो रही थी। शिमला का मुख्य शहर पूर्वी पहाड़ियों के बीच स्थित था। मैं उसकी सड़कों और घरों को एक-एक करके रोशन होते हुए देख सकता था।
लालमोहन बाबू काफी शांत थे, अपने विचारों में खोए हुए। अब उन्होंने अपनी चॉकलेट का एक लंबा घूंट लिया और बोले, “शायद यह सच है कि हर इंसान के मन में द्वेष की एक दबी हुई धारा होती है। क्या आप सहमत नहीं हैं, फेलू बाबू? जब मेरे बूमरैंग के एक ही वार से वह आदमी घूमकर गिर पड़ा, तो मुझे कितना... रोमांच महसूस हुआ। यहाँ तक कि खुशी भी हुई। यह अजीब है!”
‘मनुष्य बंदरों से विकसित हुए हैं,’ फेलुदा ने कहा। ‘आप यह जानते ही होंगे, है ना? खैर, एक आधुनिक सिद्धांत कहता है कि वास्तव में अफ्रीका में पाई जाने वाली एक विशेष नस्ल ही मनुष्य की पूर्वज थी। यह अपनी हिंसक प्रवृत्ति

के लिए जानी जाती है। इसलिए, अगर आपको प्रबीर लाहिड़ी को मारने पर खुशी हो रही है, तो इसके लिए आपके पूर्वज ही जिम्मेदार हैं।’
यह एक दिलचस्प सिद्धांत है, इसमें कोई शक नहीं। लेकिन मेरा बंदरों के बारे में बात करने का मन नहीं था। मेरा दिमाग बार-बार शंभूचरण की तरफ जा रहा था। उनकी पांडुलिपि कहाँ थी? वह किसे मिली थी? या फिर ऐसा हो सकता है कि किसी को मिली ही न हो और यह सब झूठ हो? लेकिन भला कोई इतना झूठ क्यों बोलेगा? मुझे बोलना ही था।
'फेलूदा,' मैंने चिल्लाकर कहा, 'झूठा कौन है? धमीजा या दीनानाथ बाबू?'
'कोई भी नहीं।'
‘आपका मतलब है कि पांडुलिपि वास्तव में मौजूद है?’
'हां, लेकिन क्या हम इसे कभी वापस पा सकेंगे, यह बेहद संदिग्ध है।' फेलुदा की आवाज गंभीर थी।
मैंने हिचकिचाते हुए पूछा, 'क्या आपको पता है कि यह किसके पास है?'
'हां, मुझे पता है। अब सब कुछ मेरे लिए बिल्कुल स्पष्ट है। लेकिन जिसके पास यह है वह इतना असाधारण रूप से चतुर है कि उसके खिलाफ कुछ भी साबित करना वास्तव में बहुत मुश्किल होगा। सच कहूं तो, वह लगभग मुझे धोखा देने में कामयाब हो ही गया था।'
‘लगभग?’ यह शब्द सुनकर मुझे खुशी हुई क्योंकि मैं यह सोचना बिल्कुल नहीं चाहता था कि फेलुदा किसी के द्वारा पूरी तरह से मूर्ख बना दिया गया था। ‘मित्तर साहब!’
यह आवाज दरवाजे के पास खड़े एक कर्मचारी की थी, जो अनिश्चितता से इधर-उधर देख रहा था।
‘लो!’ फेलुदा ने हाथ हिलाते हुए चिल्लाया। पार्सल देने वाला भूरे रंग का पार्सल पकड़े हुए हमारी मेज की ओर बढ़ा।
‘किसी ने यह आपके लिए मैनेजर के कमरे में छोड़ दिया है,’ उसने कहा। उस पर बड़े मोटे अक्षरों में फेलुदा का नाम लिखा था: श्री पी. सी. मिटर, क्लार्क्स होटल।
पार्सल मिलते ही फेलुदा के चेहरे का भाव बदल गया। उसने झटपट उसे खोला और हैरानी से बोला, 'क्या! यह कहाँ से आया?'

पार्सल से एक जानी-पहचानी खुशबू आई। फेलुदा ने उसके अंदर की चीज़ें ऊपर उठाईं। मैंने एक प्राचीन नोटबुक को देखा, जो आजकल मिलना नामुमकिन है। उसके पहले पन्ने पर बहुत साफ-सुथरी लिखावट में ये शब्द लिखे थे:
A Bengalee in Lamaland Shambhucharan Bose
June 1917
‘हे भगवान! यह तो वही मशहूर हस्तलिखित लेख है!’ लालमोहन बाबू ने कहा। मैंने उसे टोकने की ज़हमत नहीं उठाई। मैं बस फेलुदा को देखता रहा, जो किसी खास चीज़ को घूर रहा था। मैंने भी उसी दिशा में देखा। वे दोनों जापानी जा चुके थे। हमारे अलावा, छत पर सिर्फ़ एक ही व्यक्ति बचा था। वही बूढ़ा आदमी था जिसे हमने पहले भी कई बार देखा था। उसने अभी भी टोपी और काले चश्मे पहने हुए थे। फेलुदा उसे घूर रहा था।
वह आदमी उठा और हमारी मेज की ओर चल पड़ा। फिर उसने अपना चश्मा और टोपी उतार दी। हाँ, वह निश्चित रूप से जाना-पहचाना लग रहा था। लेकिन कुछ अजीब था... कुछ गायब सा... मैंने उसे पहले कहाँ देखा था...?
‘क्या तुम अपने नकली दांत नहीं पहनोगे?’ फेलुदा ने पूछा। ‘ज़रूर।’
उस आदमी ने अपनी जेब से नकली दांतों का एक सेट निकाला और उसे अपने मुंह में लगा लिया। पल भर में, उसके पिचके हुए गाल भर गए, उसका जबड़ा मजबूत हो गया और वह दस साल छोटा दिखने लगा। और उसे पहचानना आसान हो गया।
यह कोई और नहीं बल्कि वही बेहद चिड़चिड़ा आदमी था, जिससे हम लैंसडाउन रोड में मिलने गए थे, श्री नरेश चंद्र पाकराशी।
फेलुदा ने पूछा, 'आपने ये नकली दांत कब बनवाए थे?'
मैंने इन्हें कुछ समय पहले ऑर्डर किया था। लेकिन दिल्ली से कलकत्ता लौटने के एक दिन बाद ही इनकी डिलीवरी हुई।
इससे यह बात समझ में आ गई कि दीनानाथ बाबू ने उन्हें बूढ़ा क्यों समझा था। उन्होंने ट्रेन में अपने नकली दांत नहीं पहने थे। लेकिन जब हम उनसे उनके घर पर मिले, तब तक उन्होंने नकली दांत पहनना शुरू कर दिया था।
फेलुदा ने उससे कहा, 'मैंने शुरू से ही अनुमान लगा लिया था कि अटैची केस जानबूझकर बदले गए थे। मुझे पता था कि यह कोई दुर्घटना नहीं थी। लेकिन जो बात मुझे नहीं पता थी - और इसे समझने में मुझे काफी समय लगा - वह यह थी कि इसके लिए आप जिम्मेदार थे।'

श्री पाकराशी ने शांत भाव से उत्तर दिया, 'यह तो स्वाभाविक ही है। आपको यह समझ आ ही गया होगा कि मैं मूर्ख नहीं हूँ।'
नहीं, बिलकुल नहीं। लेकिन क्या आपको पता है कि आपसे गलती कहाँ हुई? आपको वो अखबार श्री धमीजा के अटैची बैग में नहीं रखने चाहिए थे। वैसे मुझे पता है आपने ऐसा क्यों किया। दीनानाथ लाहिड़ी का बैग धमीजा के बैग से भारी था क्योंकि उसमें एक नोटबुक थी। इसलिए आपने अखबार धमीजा के बैग में ठूंस दिए, ताकि उसका वजन लगभग दीनानाथ के बैग के बराबर हो जाए। जब दीनानाथ बाबू ने उसे उठाया, तो स्वाभाविक रूप से उन्हें कुछ भी असामान्य नहीं लगा। लेकिन लोग आमतौर पर ट्रेन में पढ़े हुए अखबारों को अपने बैग में भरकर नहीं रखते, है ना?
‘आप सही कह रहे हैं। लेकिन फिर, आप अधिकांश लोगों से अधिक बुद्धिमान हैं। बहुत कम लोग इसे समझ पाते।’
फेलुदा ने आगे कहा, 'मुझे एक सवाल पूछना है। उस रात आप को छोड़कर बाकी सब लोग चैन से सोए थे, है ना?'
‘हम्म... हाँ, आप ऐसा कह सकते हैं।’
“और फिर भी, दीनानाथ लाहिड़ी कहते हैं कि उन्हें चलती ट्रेन में नींद नहीं आती। क्या आपने उन्हें नशीली दवा दी है?”
'सही।'
'एक गोली को पीसकर पानी के गिलास में डालकर?'
'हां। मैं हमेशा अपने साथ नींद की गोलियां रखती हूं। खाना परोसे जाने पर सभी को एक गिलास पानी दिया गया था, और दो यात्री हाथ धोने गए थे। केवल धमीजा नहीं गई।'
'क्या इसका मतलब यह है कि आप श्री धमीजा के पीने के पानी में छेड़छाड़ नहीं कर सकते थे?'
नहीं, और इसी वजह से मैं रात भर कुछ नहीं कर पाया। सुबह छह बजे धमीजा दाढ़ी बनाने के लिए उठा और फिर बाथरूम गया। उसके वापस आने से पहले मैंने अपना काम निपटा लिया, लाहिड़ी और दूसरा अभी भी गहरी नींद में सो रहे थे।
‘मैं समझ गया। तुमने बहुत बड़ा जोखिम उठाया, है ना, जब धमीजा वास्तव में डिब्बे में मौजूद थी, तब तुमने दीनानाथ के पानी में गोली डाली?’
मैं भाग्यशाली थी। उसने मेरी तरफ देखा तक नहीं।

'हां, आप वाकई भाग्यशाली थे। लेकिन बाद में आपने कुछ ऐसा किया जिससे आपकी पोल खुल गई। यह एक चालाकी भरा कदम था, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन शंभूचरण की पांडुलिपि हासिल करने के बाद भी आपने मुझे पैसे देने की पेशकश क्यों की?' श्री पाकराशी जोर से हंस पड़े, लेकिन कुछ नहीं बोले।
‘कलकत्ता में वो फोन कॉल और दिल्ली में वो कागज का टुकड़ा... दोनों के पीछे तुम्हारा ही हाथ था, है ना?’
जी हां, बिल्कुल। मैं नहीं चाहता था कि तुम शिमला जाओ—कम से कम शुरू में तो बिल्कुल नहीं। मुझे पता था कि तुम्हारे जैसा आदमी मेरे इस सुनियोजित अपराध को उजागर कर देगा। इसलिए मैंने तुम्हारे घर फोन किया और जब मैंने तुम्हें विमान में अपने बगल में बैठे तुम्हारे दोस्त को देखा, तो उसकी जेब में एक लिखित धमकी भी डाल दी। लेकिन फिर... धीरे-धीरे मेरा मन बदलने लगा। शिमला पहुंचते-पहुंचते मैं आश्वस्त हो गया कि मुझे चोरी की संपत्ति तुम्हें लौटा देनी चाहिए।
'क्यों?'
क्योंकि अगर आप पांडुलिपि के बिना वापस जाते, तो आप खुद संदेह के घेरे में आ सकते थे। मैं ऐसा नहीं चाहता था। इन कुछ दिनों में मुझे आपकी और आपके तरीकों की अहमियत समझ में आ गई है।
'धन्यवाद, श्रीमान पाकराशी। एक और प्रश्न।'
'हाँ?'
‘आपने मुझे पांडुलिपि लौटाने से पहले उसकी एक डुप्लिकेट प्रति बना ली थी, है ना?’
श्री पाकराशी के चेहरे का सारा रंग पल भर में उड़ गया। फेलुदा ने अपना तुरुप का पत्ता खेल दिया था।
जब हम आपके घर गए, तो आप कुछ टाइप कर रहे थे। यह इसी नोटबुक में लिखी हुई चीजें थीं, है ना? आप इसमें लिखे हर एक शब्द को टाइप कर रहे थे।
'परन्तु आप । । ।'
‘तुम्हारे कमरे में एक अजीब सी गंध आ रही थी, बिल्कुल वैसी ही जैसी शंभूचरण के पुराने नेपाली बक्से में आती थी। और अब मुझे दिख रहा है कि इस नोटबुक में भी वही गंध है।’
लेकिन प्रतिलिपि—

‘मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए। शंभूचरण का निधन 1921 में हुआ था। इक्यावन साल पहले। इसका मतलब है कि पचास साल की कॉपीराइट अवधि एक साल पहले ही समाप्त हो गई थी। तो अब कोई भी इसे छपवा सकता है, है ना?’
‘बिल्कुल!’ श्री पाकराशी ने उत्तेजित होकर चिल्लाते हुए कहा। ‘क्या आप मुझे यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि मैंने कुछ गलत किया है? बिलकुल नहीं! यह एक असाधारण कहानी है, मैं आपको बता रहा हूँ। दीनानाथ को इसकी अहमियत का पता नहीं होता, न ही वह इसे प्रकाशित करवाते। मैं इसे अभी छापने जा रहा हूँ, और कोई मुझे रोक नहीं सकता।’
'ओह, बिल्कुल। आपको कोई नहीं रोक सकता, श्रीमान पाकराशी, लेकिन थोड़ी स्वस्थ प्रतिस्पर्धा में क्या बुराई है?'
‘प्रतियोगिता? आपका क्या मतलब है?’
फेलुदा की मशहूर टेढ़ी मुस्कान झलक उठी। उन्होंने अपना दाहिना हाथ श्री पाकराशी की ओर बढ़ाया।
‘अपने प्रतिद्वंदी नरेश बाबू से मिलो,’ उसने कहा। ‘जब दीनानाथ लाहिड़ी कल आएंगे, तो मैं इस रहस्यमय मामले के लिए अपनी फीस नहीं मांगूंगा। मुझे उनसे बस यह पुरानी नोटबुक चाहिए। और मैं कुछ ऐसे प्रकाशकों को जानता हूं जिन्हें इसमें दिलचस्पी हो सकती है। अब क्या तुम्हें मेरी बात समझ में आ रही है?’
नरेश पाकराशी चुपचाप घूरता रहा।
हालांकि, लालमोहन बाबू को अचानक बोलने की शक्ति मिल गई और उन्होंने बिना किसी स्पष्ट कारण या तर्क के एक शब्द कहा।
‘बूमरैंग!’ वह चिल्लाया।

[redacted]

एक

जून का महीना चल रहा था। मेरी स्कूल की अंतिम परीक्षाएँ खत्म हो चुकी थीं और मैं नतीजों का इंतज़ार कर रहा था। फेलुदा और मुझे आज फिल्म देखने जाना था, लेकिन निकलने से दस मिनट पहले ही इतनी तेज़ बारिश होने लगी कि हमें अपना प्लान बदलना पड़ा। मैं अब अपने लिविंग रूम में बैठा टिनटिन कॉमिक्स (टिनटिन इन तिब्बत) में डूबा हुआ था। फेलुदा और मुझे ये कॉमिक्स बहुत पसंद थीं, जिनमें रहस्य, रोमांच और हास्य भरपूर मात्रा में होते थे। मेरे पास पहले से ही ऐसी तीन कॉमिक्स थीं। ये नई थी। मैंने वादा किया था कि इसे खत्म करने के बाद फेलुदा को दे दूंगा। फेलुदा सोफे पर लेटा हुआ 'चैरियट्स ऑफ द गॉड्स' नाम की किताब पढ़ रहा था। वह लगभग खत्म कर चुका था।
कुछ देर बाद उसने किताब बंद की, उसे अपनी छाती पर रखा और चुपचाप लेटकर घूमते हुए छत के पंखे को घूरने लगा। फिर उसने कहा, 'क्या तुम्हें पता है गीज़ा के पिरामिड में कितने पत्थर के टुकड़े हैं? दो लाख।'
उन्हें अचानक पिरामिडों में दिलचस्पी क्यों हो गई? उन्होंने आगे बताया, “हर ब्लॉक का वजन लगभग पंद्रह टन है। प्राचीन इंजीनियरिंग के बारे में जो जानकारी उपलब्ध है, उसके अनुसार मिस्रवासी एक दिन में दस से अधिक ब्लॉकों को पूरी तरह से पॉलिश करके जोड़ नहीं सकते थे। इसके अलावा, जिस पत्थर से यह बना है, उसे नील नदी के दूसरी ओर से लाना पड़ता था। एक मोटे अनुमान के अनुसार, उस एक पिरामिड को बनाने में उन्हें कम से कम छह सौ साल लगे होंगे।” क्या आपकी किताब में यही लिखा है?
जी हां, लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती। इस किताब में कई और अजूबों का ज़िक्र है जिन्हें पुरातत्वविदों और इतिहासकारों के बस की बात नहीं है। उदाहरण के लिए, हमारे अपने देश को ही ले लीजिए। दिल्ली के कुतुब मीनार में एक लोहे का खंभा है। यह दो हज़ार साल पुराना है, लेकिन इसमें जंग नहीं लगी। कोई नहीं जानता कि ऐसा क्यों है। क्या आपने ईस्टर द्वीप के बारे में सुना है? यह दक्षिण प्रशांत महासागर में एक छोटा सा द्वीप है। वहां समुद्र की ओर मुंह किए विशाल-बड़े पत्थर हैं, जिन पर हज़ारों साल पहले इंसानों के

चेहरे उकेरे गए थे। इन पत्थरों को द्वीप के बीच से खींचकर किनारे तक लाया गया और इस तरह से व्यवस्थित किया गया कि वे समुद्र से दिखाई दें। हर पत्थर का वज़न लगभग पचास टन है। यह किसने किया होगा? प्राचीन आदिवासी लोगों को यह काम करने के लिए ज़रूरी तकनीक कहां से मिली होगी? उनके पास ट्रक, ट्रैक्टर, क्रेन या बुलडोज़र जैसी चीज़ें तो थीं ही नहीं।
फेलुदा रुका, फिर सीधा बैठा और एक चारमीनार सिगरेट जलाई। किताब ने उसे स्पष्ट रूप से बहुत प्रभावित किया था। उसने आगे कहा, 'पेरू में एक ऐसा इलाका है जहाँ ज़मीन पर ज्यामितीय आकृतियाँ बनी हुई हैं। इन आकृतियों के बारे में सभी जानते हैं, ये हवा से दिखाई देती हैं, लेकिन कोई नहीं बता सकता कि ये कब और कैसे बनीं। यह इतना बड़ा रहस्य है कि वैज्ञानिक अक्सर इसके बारे में बात नहीं करते।'
‘क्या आपकी किताब के लेखक ने इसके बारे में बात की है?’
हाँ, और उन्होंने एक बहुत ही दिलचस्प सिद्धांत पेश किया है। उनके अनुसार, पच्चीस हज़ार साल से भी पहले किसी दूसरे ग्रह से जीव पृथ्वी पर आए थे। उनकी तकनीकी विशेषज्ञता मनुष्य से कहीं अधिक थी। उन्होंने अपना ज्ञान मनुष्यों के साथ साझा किया और पिरामिड जैसी संरचनाएँ बनाईं—जिन्हें, यह मानना पड़ेगा कि आधुनिक मनुष्य अपनी तमाम तकनीकी जानकारी के बावजूद भी नहीं बना पाया है। ध्यान रहे, यह केवल एक सिद्धांत है और ज़रूरी नहीं कि यह सच ही हो। लेकिन यह सोचने पर मजबूर करता है, है ना? हमारे महाभारत में वर्णित हथियार परमाणु हथियारों से मिलते-जुलते हैं। तो शायद... ‘...कुरुक्षेत्र का युद्ध दूसरे ग्रह के प्राणियों द्वारा लड़ा गया था?’ फेलुदा जवाब देने के लिए मुंह खोलने ही वाला था कि बीच में ही रुक गया। कोई बारिश में भीगते हुए हमारे दरवाजे पर आ गया था और लगातार तीन बार घंटी बजाई। मैं दौड़ा और दरवाजा खोला। अंकल सिद्धू पानी की बौछारों के साथ अंदर आ गए। फिर उन्होंने अपना छाता झटका और बंद कर लिया, जिससे पानी की और बूंदें चारों ओर उड़ने लगीं।
अंकल सिद्धू असल में रिश्तेदार नहीं थे। कई साल पहले वो और मेरे पिताजी पड़ोसी हुआ करते थे। चूंकि मेरे पिताजी उन्हें बड़े भाई की तरह मानते थे, इसलिए हम उन्हें अंकल कहते थे।
‘आज का दिन कितना खराब है! जल्दी से एक कप चाय बना दो, जो सबसे अच्छी हो,’ उन्होंने एक ही सांस में कहा। मैं दौड़कर अंदर गई, श्रीनाथ को जगाया और उसे

तीन कप चाय बनाने को कहा। जब मैं बैठक में लौटी, तो अंकल सिद्धू सोफे पर बैठे थे, गुस्से से भौंहें चढ़ाए हुए और चीनी मिट्टी की ऐशट्रे को घूर रहे थे।
‘आपने रिक्शा क्यों नहीं लिया? इस मौसम में तो आपको रिक्शा लेना ही नहीं चाहिए था—’ फेलुदा ने कहना शुरू किया।
“रोजाना लोगों की हत्याएं होती हैं। क्या तुम्हें पता है कि एक अलग तरह की हत्या भी होती है जो कहीं ज्यादा भयानक होती है?” अंकल सिद्धू ने पूछा, मानो फेलुदा ने कुछ कहा ही न हो। हम चुप रहे, क्योंकि हम जानते थे कि वह अपने सवाल का जवाब खुद ही देने वाले हैं।
अंकल सिद्धू ने आगे कहा, ‘मुझे लगता है कि ज्यादातर लोग इस बात से सहमत होंगे कि हमारी वर्तमान दुर्दशा के बावजूद, हमारा एक ऐसा अतीत है जिस पर हर भारतीय गर्व कर सकता है।’ ‘और आज, हम इस गौरवशाली अतीत की झलक कहाँ देखते हैं? क्या यह हमारी कला, विशेष रूप से चित्रकला और मूर्तिकला नहीं है? मुझे बताओ, फेलू, क्या यह सही नहीं है?’
'बिल्कुल,' फेलुदा ने सिर हिलाया।
‘इनके सबसे अच्छे उदाहरण—विशेषकर मूर्तियां—पुराने मंदिरों की दीवारों पर पाए जाते हैं, है ना?’
'सही।'
अंकल सिद्धू को जीवन के लगभग सभी पहलुओं का ज्ञान था, लेकिन कला के बारे में उनका ज्ञान शायद सबसे गहरा था, क्योंकि उनकी तीन अलमारियों में से दो भारतीय कला की किताबों से भरी हुई थीं। लेकिन आखिर यह सब हत्या का मामला क्या था?
वह एक मिनट के लिए रुका और सिगार जलाया। फिर उसने दो बार खांसा, जिससे पूरा कमरा धुएं से भर गया, और आगे बोला, 'अतीत में कई शासकों ने हमारे कई मंदिरों को नष्ट किया। अकेले कालापहाड़ ही बंगाल में दर्जनों मंदिरों के विनाश के लिए जिम्मेदार था। आप यह जानते थे, है ना? लेकिन क्या आप जानते हैं कि आज एक नया कालापहाड़ उभर आया है? मेरा मतलब है, अब, 1973 में?'
'क्या आप उन लोगों की बात कर रहे हैं जो मंदिरों से मूर्तियां चुराकर उन्हें विदेशों में बेचते हैं?' फेलुदा ने पूछा।
‘बिल्कुल!’ अंकल सिद्धू उत्साह से लगभग चिल्ला उठे। ‘क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि यह कितना बड़ा अपराध है? और यह धर्म के नाम पर भी नहीं किया जा

रहा है, यह तो बस सीधा-सादा व्यापार है। हमारी अपनी कला, हमारी अपनी विरासत धनी अमेरिकियों तक पहुँच रही है, लेकिन यह इतनी चालाकी से किया जा रहा है कि किसी को पकड़ना नामुमकिन है। क्या आप जानते हैं कि मैंने आज क्या देखा? भुवनेश्वर के राजा-रानी मंदिर से एक यक्षी का सिर। वह ग्रैंड होटल में एक अमेरिकी पर्यटक के पास था।’
‘अरे वाह!’
मैं बचपन में भुवनेश्वर गया था। मेरे पिताजी ने मुझे राजा-रानी मंदिर दिखाया था। वह टेराकोटा से बना था और उसकी दीवारों पर सुंदर मूर्तियां और नक्काशी की गई थी।
अंकल सिद्धू ने अपनी कहानी जारी रखी। ‘मेरे पास कुछ पुरानी राजपूत पेंटिंग थीं जो मैंने 1934 में वाराणसी से खरीदी थीं। मैं उन्हें बेचने के लिए नागरमल के पास ले गया। मैं उन्हें सालों से जानता हूँ। ग्रैंड होटल के आर्केड में उनकी एक दुकान है। जैसे ही मैं अपनी पेंटिंग काउंटर पर रख रहा था, एक अमेरिकी वहाँ आया। ऐसा लग रहा था कि उसने पहले भी नागरमल से कुछ सामान खरीदा था। उसके हाथ में अखबार में लिपटी कोई चीज थी। वह भारी लग रही थी। फिर उसने उसे खोला, और—हे भगवान!—मेरा दिल मुंह में आ गया। वह लाल पत्थर से बना एक यक्षी का सिर था। मैंने उसे पहले भी कई बार देखा था। लेकिन मैंने पूरा शरीर देखा था। अब सिर कटा हुआ था।’
नागरमल को नहीं पता था कि यह कहाँ से आया है, लेकिन वह बता सकता था कि यह असली है, नकली नहीं। उस अमेरिकी ने कहा कि उसने इसके लिए दो हज़ार डॉलर दिए थे। मैंने मन ही मन सोचा, अगर इसमें दो और शून्य जोड़ दिए जाएँ, तब भी यह सही कीमत नहीं होगी। खैर, वह आदमी अपने कमरे में चला गया। मैं इतना हैरान था कि मैंने उससे यह भी नहीं पूछा कि उसे यह किसने बेचा था। मैं जल्दी से घर लौटा और अपनी कुछ किताबें देखीं, बस यह सुनिश्चित करने के लिए। अब मुझे पूरा यकीन है कि यह राजा-रानी की दीवार पर लगी किसी मूर्ति का ही हिस्सा था। मुझे नहीं पता यह कैसे हुआ होगा—शायद रात में चौकीदार को रिश्वत देकर। आजकल कुछ भी हो सकता है। मैंने भुवनेश्वर पुरातत्व विभाग को पत्र लिखा है और इसे एक्सप्रेस डिलीवरी से भेजा है, लेकिन इससे क्या फायदा? नुकसान तो हो ही चुका है!
श्रीनाथ चाय लेकर अंदर आए। अंकल सिद्धू ने एक कप उठाया, एक घूंट लिया और बोले, 'फेलू, इसे रोकना होगा। मैं अब इतना बूढ़ा हो गया हूँ कि खुद कुछ नहीं

कर सकता, लेकिन तुम एक जासूस हो, अपराधियों को ढूंढना तुम्हारा काम है। बताओ, हमारी प्राचीन कला को नष्ट करने और उसे विकृत करने से बुरा और क्या हो सकता है? क्या इन अपराधियों को पकड़ा नहीं जाना चाहिए? मैं बेशक अखबारों को लिख सकता हूँ और पुलिस का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर सकता हूँ, लेकिन क्या तुम जानते हो कि समस्या क्या है? हर कोई कला का सही मूल्य नहीं समझता। मेरा मतलब है, मंदिर की दीवार पर लगी एक पुरानी मूर्ति सोने या हीरे के बराबर तो नहीं होती, है ना? आप उस पर बाजार मूल्य नहीं लगा सकते।' इस पूरे समय फेलुदा चुप रहा। अब उसने पूछा, 'क्या तुम उस अमेरिकी का नाम पता कर पाए?'
‘जी हाँ। मैंने उनसे बहुत संक्षेप में बात की थी। उन्होंने मुझे अपना कार्ड दिया था। ये रहा।’ अंकल सिद्धू ने अपनी जेब से एक छोटा सा सफेद कार्ड निकाला और फेलुदा को दे दिया। उस पर लिखा था, सॉल सिल्वरस्टीन। उनके नाम के नीचे उनका पता छपा हुआ था।
‘एक यहूदी,’ अंकल सिद्धू ने टिप्पणी की। ‘निस्संदेह बहुत धनी होगा। उसने जो घड़ी पहनी हुई थी, उसकी कीमत शायद एक हजार डॉलर होगी। मैंने इससे पहले कभी इतनी महंगी घड़ी नहीं देखी थी।’
‘क्या उसने आपको बताया कि वह यहां कितने दिन रहेगा?’
‘वह कल सुबह काठमांडू जा रहा है। लेकिन अगर आप उसे अभी फोन करें, तो शायद उससे बात हो जाए।’ फेलुदा उठा और नंबर डायल करने लगा। ग्रैंड होटल का टेलीफोन नंबर उन कई महत्वपूर्ण नंबरों में से एक था जो उसे याद थे। रिसेप्शनिस्ट ने बताया कि श्री सिल्वरस्टीन अपने कमरे में नहीं हैं। किसी को नहीं पता कि वे कब लौटेंगे। फेलुदा ने रिसीवर वापस रख दिया और निराश होकर बोला, 'अगर हमें उस आदमी का हुलिया भी पता चल जाए जिसने उन्हें वह मूर्ति बेची थी, तो शायद हम कुछ कर सकें।'
‘मुझे पता है। मुझे उनसे यही पूछना चाहिए था,’ अंकल सिद्धू ने आह भरते हुए कहा, ‘लेकिन मैं ठीक से सोच ही नहीं पा रहा था। वह मेरी पेंटिंग्स देख रहे थे। उन्होंने कहा कि उन्हें तांत्रिक कला में रुचि है, इसलिए अगर मेरे पास बेचने के लिए कुछ हो तो मैं उनसे संपर्क करूँ। फिर उन्होंने मुझे वह कार्ड दिया। लेकिन सच कहूँ तो मुझे समझ नहीं आ रहा कि आप इस मामले में आगे कैसे बढ़ेंगे।’

‘चलिए देखते हैं क्या होता है। प्रेस चोरी की खबर छाप सकती है। आखिर राजा- रानी भुवनेश्वर का बहुत प्रसिद्ध मंदिर है।’
अंकल सिद्धू ने अपनी चाय खत्म की और उठ खड़े हुए। छाता समेटते हुए उन्होंने कहा, ‘यह सिलसिला सालों से चल रहा है। अब तक तो छोटे और कम प्रसिद्ध मंदिर ही निशाने पर रहे हैं। लेकिन अब इसमें शामिल लोग और भी ज्यादा बेखौफ हो गए हैं। शायद कुछ असंवेदनशील और बेहद ताकतवर लोगों का हाथ इसके पीछे है। फेलू, अगर तुम इसके बारे में कुछ कर सको तो पूरा देश तुम्हारी सराहना करेगा। मुझे इस बात का पूरा यकीन है।’
अंकल सिद्धू चले गए। फेलूदा ने सारा दिन सॉल सिल्वरस्टीन से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन वह अपने कमरे में नहीं लौटा। रात 11 बजे फेलूदा ने हार मान ली। उसने माथे पर शिकन डालते हुए कहा, 'अगर अंकल सिद्धू की बात सच है, तो इसके लिए जो भी जिम्मेदार है, वह एक नंबर का अपराधी है। सबसे निराशाजनक बात यह है कि उसे ढूंढने का मेरे पास कोई रास्ता नहीं है। बिलकुल भी नहीं।' अगले ही दिन एक रास्ता खुल गया, इतने अप्रत्याशित तरीके से कि जब भी मैं इसके बारे में सोचता हूं तो मेरा सिर चकरा जाता है।

दो

जो कुछ हुआ वह एक भयानक दुर्घटना थी। लेकिन, इससे पहले कि मैं इसके बारे में बात करूं, मुझे एक और बात बतानी है। अगले दिन अखबार में एक छोटी सी खबर छपी, जिसने अंकल सिद्धू के संदेह की पुष्टि कर दी:
सिर कटी यक्षी: भुवनेश्वर के राजा-रानी मंदिर की दीवार से यक्षी की मूर्ति का सिर चोरी हो गया है। यह मंदिर प्राचीन भारतीय वास्तुकला के बेहतरीन नमूनों में से एक है। मंदिर का चौकीदार लापता बताया जा रहा है। ओडिशा के पुरातत्व विभाग ने पुलिस जांच का आदेश दिया है।
मैंने यह रिपोर्ट जोर से पढ़ी और पूछा, 'क्या इसका मतलब यह होगा कि चौकीदार ही चोर है?'
फेलुदा ने फोरहंस टूथपेस्ट की ट्यूब से टूथपेस्ट निचोड़कर उसे सावधानी से अपने टूथब्रश पर लगाया। फिर उसने कहा, 'नहीं, मुझे नहीं लगता कि सिर चुराना सिर्फ चौकीदार का विचार था। उसके जैसे बेचारे आदमी में इतनी हिम्मत नहीं होगी। कोई और इसके लिए ज़िम्मेदार है, कोई इतना बड़ा और ताकतवर आदमी जो सोचता है कि वह कभी पकड़ा नहीं जाएगा। शायद उसने—या उन्होंने—चौकीदार को कुछ दिनों के लिए रास्ते से हटाने के लिए पैसे दिए होंगे।'
अंकल सिद्धू ने भी वह रिपोर्ट देखी होगी। शायद वो फिर से हमारे घर आकर गर्व से बताएंगे कि वो सही थे।
वह आ तो गए, लेकिन साढ़े दस बजे से पहले नहीं। आज गुरुवार था, और हमारे इलाके में सुबह नौ बजे से ही नियमित बिजली कटौती थी। मैं और फेलुदा अपने बैठक कक्ष में बैठे, बीच-बीच में बादलों से घिरे आसमान को निहार रहे थे, तभी किसी ने ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाया। एक मिनट बाद ही अंकल सिद्धू अंदर आ गए और एक बार फिर चाय माँगने लगे। फेलुदा ने बिना सिर वाली यक्षी के बारे में बात करना शुरू किया, लेकिन उन्हें चुप रहने को कहा गया।
‘यह तो पुरानी खबर है, नौजवान!’ अंकल सिद्धू गरजते हुए बोले। ‘क्या तुमने आखिरी समाचार सुना?’
नहीं, मुझे खेद है। हमारा रेडियो काम नहीं कर रहा है। आज...

‘मुझे पता है, आज गुरुवार है और आपके यहाँ लंबे समय से बिजली नहीं है।
इसीलिए, फेलू, मैं तुमसे ट्रांजिस्टर खरीदने के लिए बार-बार कह रहा हूँ।
खैर, जैसे ही मुझे खबर मिली, मैं तुरंत आ गया। तुम यकीन नहीं करोगे। काठमांडू जाने वाला विमान कलकत्ता के पास ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया। उसने साढ़े सात बजे उड़ान भरी थी, लेकिन सिर्फ पंद्रह मिनट बाद ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया। तूफान था, इसलिए शायद वह वापस आने की कोशिश कर रहा था। उसमें अट्ठावन यात्री सवार थे। सभी की मौत हो गई, जिनमें साउल सिल्वरस्टीन भी शामिल थे। हाँ, रेडियो पर उनका नाम लिया गया था।’
कुछ क्षणों के लिए हम दोनों चुप हो गए। फिर फेलुदा ने पूछा, 'यह कहाँ दुर्घटनाग्रस्त हुआ? क्या उन्होंने उस जगह का ज़िक्र किया?'
'हां, हसनबाद जाने वाले रास्ते पर सिदिकपुर नाम के एक गांव के पास। फेलू, मैं उस मूर्ति के देश से बाहर न जाने के लिए बहुत प्रार्थना कर रहा था। किसने सोचा था कि मेरी प्रार्थना का जवाब इतनी भयानक त्रासदी के रूप में मिलेगा?'
फेलुदा ने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। क्या वह सिदिकपुर जाने की सोच रहा था? अंकल सिद्धू ने उसे तीखी निगाहों से देखा। 'मैं जानता हूँ तुम क्या सोच रहे हो। ज़रूर कोई धमाका हुआ होगा और विमान में मौजूद सारा सामान मीलों तक बिखर गया होगा। मान लो, यात्रियों के सामान में—?'
फेलुदा ने दो मिनट में फैसला कर लिया कि वह टैक्सी लेकर सिदिकपुर जाएगा और यक्षी का सिर ढूंढेगा। दुर्घटना तीन घंटे पहले हुई थी। वहां पहुंचने में हमें डेढ़ घंटा लग जाएगा। तब तक पुलिस और दमकलकर्मी भी पहुंच चुके होंगे और अपनी जांच शुरू कर चुके होंगे। कोई नहीं कह सकता कि हम अपने मिशन में सफल होंगे या नहीं, लेकिन जो खो गया था उसे वापस पाने का यह मौका हम गंवा नहीं सकते थे।
‘नागरमल को बेची गई उन पेंटिंग्स से मुझे अच्छी खासी रकम मिली,’ चाचा सिद्धू ने फेलुदा से कहा। ‘मैं तुम्हें उसमें से कुछ देना चाहता हूँ। आखिर तुम तो मेरी वजह से ही तो इसमें शामिल हो रहे हो, है ना?’
‘नहीं,’ फेलुदा ने दृढ़ता से उत्तर दिया। ‘यह सच है कि आपने मुझे सारी जानकारी दे दी। लेकिन, मेरा विश्वास कीजिए, अगर मुझे खुद इस बारे में इतनी गंभीरता से महसूस न होता तो मैं कोई कार्रवाई नहीं करता। मैंने इस बारे में बहुत सोचा है, और आपकी तरह ही मैं भी इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि जो

लोग हमारी प्राचीन विरासत को बेचकर अपनी जेबें भरना चाहते हैं, उन्हें पकड़ा जाना चाहिए और कड़ी सजा दी जानी चाहिए।’
‘शाबाश!’ अंकल सिद्धू मुस्कुराते हुए बोले। ‘एक बात याद रखना, फेलू। भले ही तुम्हें पैसों की ज़रूरत न हो, लेकिन कला और मूर्तिकला के बारे में जानकारी की ज़रूरत पड़ सकती है। मैं इसमें तुम्हारी हमेशा मदद कर सकता हूँ।’
'हां, मुझे पता है। धन्यवाद।'
हमने तय किया कि अगर हमें वह चीज़ मिल गई जिसकी हम तलाश कर रहे थे, तो हम उसे सीधे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के कार्यालय ले जाएंगे। चोर भले ही फरार हो, लेकिन कम से कम चोरी की गई वस्तु अधिकारियों के पास तो वापस पहुँच जाएगी।
हम जल्दी से तैयार हुए और एक पीली टैक्सी में बैठ गए। सुबह के 10:55 बज रहे थे जब हम रवाना हुए। फेलुदा ने कहा, 'मुझे नहीं पता इसमें कितना समय लगेगा। वापसी में हम जेस्सोर रोड पर किसी ढाबे पर दोपहर का खाना खा सकते हैं।' इससे मुझे बहुत खुशी हुई। ढाबों का खाना—जो आमतौर पर ट्रक चालकों का अड्डा हुआ करते थे—हमेशा स्वादिष्ट होता था। रोटी, दाल, मीट करी... मेरे मुंह में पानी आ गया। फेलुदा कहीं भी कुछ भी खा सकता था। मैंने भी उसकी राह पर चलने की कोशिश की।
मुख्य शहर से निकलते ही वीआईपी रोड पर बारिश शुरू हो गई। लेकिन बारासात के पास पहुँचते ही धूप निकल आई। हसनबाद कलकत्ता से चालीस मील दूर था। हमारे ड्राइवर ने कहा, 'अगर सड़क गीली और फिसलन भरी न होती, तो मैं एक घंटे में वहाँ पहुँच जाता।' 'सर, वहाँ विमान दुर्घटना हुई है, क्या आपको पता है? मैंने रेडियो पर सुना था।'
जब उन्हें पता चला कि हम वहीं जा रहे हैं, तो वे बहुत उत्साहित हो गए। उन्होंने पूछा, 'जी साहब, क्या आपके कोई रिश्तेदार उस विमान में थे?'
'नहीं - नहीं।'
फेलुदा उसे पूरी कहानी मुश्किल से ही बता सका, लेकिन उसकी जिज्ञासा जागृत हो गई और उसने सवाल पूछना जारी रखा।
मुझे लगता है कि सब कुछ राख में तब्दील हो चुका है। अब देखने को मिलेगा क्या?
'मुझें नहीं पता।'

‘क्या आप पत्रकार हैं?’
मैं... खैर, मैं कहानियां लिखता हूं।
'ओह, मैं समझ गया। आप सारी जानकारी जुटाकर उसे एक कहानी में इस्तेमाल करेंगे? बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया।'
हम बारासात को पीछे छोड़ चुके थे। अब हमें बार-बार रुककर लोगों से पूछना पड़ रहा था कि सिदिकपुर कहाँ है। आखिरकार, एक साइकिल मरम्मत की दुकान के पास खड़े कुछ युवकों ने हमें सही रास्ता बता दिया। उनमें से एक ने कहा, “यहाँ से दो मील आगे, आपको बाईं ओर एक कच्ची सड़क दिखाई देगी। यह सड़क आपको सिदिकपुर ले जाएगी। यह वहाँ से केवल एक मील दूर है।” उसके बोलने के तरीके से यह स्पष्ट था कि उसने और उसके दोस्तों ने पहले भी कई लोगों को यही रास्ता बताया था।
कच्ची सड़क एक धूल भरी पगडंडी से ज़्यादा कुछ नहीं थी। हाल ही में हुई बारिश के कारण वह कीचड़ से भरी थी और उस पर कई टायरों के निशान थे। शुक्र है कि अभी जून का महीना ही था। एक महीने बाद, इस सड़क पर गाड़ी चलाना नामुमकिन हो जाएगा। तीन और एम्बेसडर कारें हमारे पास से गुज़रीं। कई लोग पैदल जा रहे थे, और कुछ लोग दुर्घटनास्थल से लौट रहे थे।
एक बरगद के पेड़ के नीचे कई लोग जमा थे। उसके पास तीन कारें और एक जीप खड़ी थीं। हमारी टैक्सी उनके पीछे आकर रुकी। दुर्घटना का कोई निशान नहीं था, लेकिन यह स्पष्ट हो गया कि हम आगे नहीं जा सकते। हमारे दाहिनी ओर एक खुला मैदान था, जो बड़े-बड़े पेड़ों से भरा हुआ था। इन पेड़ों के आगे, दूरी पर, कुछ छोटे-छोटे घर दिखाई दे रहे थे।
‘हां, यह सिदिकपुर है,’ उनमें से एक व्यक्ति ने हमें बताया। ‘गांव जहां खत्म होता है, वहां एक छोटा सा जंगल है। विमान वहीं दुर्घटनाग्रस्त हुआ था।’ तब तक हमारे ड्राइवर ने अपना परिचय दे दिया था। उसका नाम बलराम घोष था। उसने अपनी कार लॉक की और हमारे साथ आ गया। पता चला कि जंगल बड़ा नहीं था। वहाँ केले के पेड़ सबसे ज़्यादा थे। उनके बीच केवल आधा दर्जन आम और कटहल के पेड़ खड़े थे। हर पेड़ बुरी तरह झुलसा हुआ था। उनकी शाखाओं पर लगभग कोई पत्तियाँ नहीं बची थीं, और कुछ शाखाएँ ऐसी लग रही थीं मानो जानबूझकर काटी गई हों। पूरा इलाका अब वर्दीधारी लोगों से भरा हुआ था, और कुछ अन्य लोग शायद एयरलाइन से थे। वहाँ एक बहुत तेज़ बदबू आ रही थी, जिससे मुझे अपना चेहरा रुमाल से ढकना पड़ा। ज़मीन पर टूटी-फूटी, जली हुई और अधजली चीज़ों के

अनगिनत टुकड़े बिखरे पड़े थे, कुछ इतनी बुरी तरह क्षतिग्रस्त थीं कि उन्हें पहचानना मुश्किल था, जबकि कुछ किसी तरह इस्तेमाल करने लायक थीं। फेलुदा ने झुंझलाहट में अपनी जीभ चटकाई और कहा, 'काश हम एक घंटा पहले यहाँ पहुँच गए होते!'
मुख्य स्थल को चारों ओर से घेर लिया गया था। हमारे लिए वहाँ से आगे जाना नामुमकिन था। इसलिए हम घेराबंदी के चारों ओर से घूमकर चलने लगे। कुछ पुलिसकर्मी ज़मीन से चीज़ें उठाकर उनकी जाँच कर रहे थे: एक स्टेथोस्कोप का टुकड़ा, एक ब्रीफ़केस, एक बोतल, एक छोटा सा दर्पण जो धूप में चमक रहा था। स्थल हमारे दाहिनी ओर था। हम धीरे-धीरे उस दिशा में बढ़ रहे थे, तभी अचानक फ़ेलुदा ने हमारे बाईं ओर एक आम के पेड़ पर कुछ देखा और रुक गया।
एक छोटा लड़का एक नीची डाल पर बैठा था, और उसने एक आधा जला हुआ चमड़े का जूता पकड़ रखा था। उसे यह जूता मलबे में मिला होगा। फेलुदा ने ऊपर देखा और पूछा, 'तुम्हें बहुत सी चीजें मिलीं, है ना?' लड़के ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि गंभीरता से फेलुदा को देखता रहा। 'क्या बात है? क्या तुम बोल नहीं सकते?' फेलुदा ने फिर पूछा। फिर भी कोई जवाब नहीं मिला। 'निराशाजनक!' वह चिल्लाया और मलबे से दूर गाँव की ओर चल पड़ा। बलराम घोष एक बार फिर उत्सुक हो गए।
‘क्या आप कुछ खास ढूंढ रहे हैं, महोदय?’ उसने पूछा।
'हां। लाल पत्थर से बनी एक मूर्ति का सिर।'
‘ठीक है। सिर्फ़ सिर? ठीक है।’ वह घास में खोजने लगा। लगभग सौ गज दूर एक पीपल का पेड़ था, जिसके नीचे कुछ बूढ़े लोग हुक्का पीते हुए बैठे थे। उनमें से सबसे बूढ़े ने फेलुदा से पूछा, ‘आप कहाँ से हैं?’
‘कलकत्ता। आपके गांव को कोई नुकसान तो नहीं हुआ, है ना?’
नहीं, बाबू। अल्लाह ने हमें बचा लिया। विमान के गिरते ही आग लग गई—इतनी ज़ोरदार आवाज़ हुई कि हम सबको लगा जैसे कोई बम फट गया हो—और फिर पूरा गाँव धुएँ से भर गया। हमें जंगल में आग दिख रही थी, लेकिन हममें से किसी को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें... लेकिन जल्द ही बारिश शुरू हो गई, और फिर दमकलकर्मी आ गए।
'जब आग बुझी तो क्या आप में से कोई विमान के पास गया था?'
नहीं, बाबू। हम बूढ़े आदमी हैं, हमें बस इस बात की खुशी है कि हम बच गए।

‘उन छोटे लड़कों का क्या हुआ? क्या वे पुलिस के आने से पहले जाकर सामान इकट्ठा नहीं कर लाए थे?’
बुजुर्ग लोग चुप हो गए। तब तक कई और लोग भी यह बातचीत सुनने के लिए इकट्ठा हो गए थे। फेलुदा ने एक लड़के को देखा और उसे अपने पास बुलाया। जैसे ही लड़का पास आया, उसने पूछा, 'तुम्हारा नाम क्या है?' उसका लहजा कोमल और दोस्ताना था।
‘अली।’
फेलुदा ने उसके कंधे पर हाथ रखा और धीमी आवाज़ में बोला, “विमान दुर्घटनाग्रस्त होने पर बहुत सी चीज़ें इधर-उधर बिखर गईं। तुमने खुद देखा है ना? अब, उन चीज़ों के बीच एक मूर्ति का सिर होना चाहिए था। बस एक महिला की मूर्ति का सिर। क्या तुम्हें पता है कि किसी ने उसे देखा था?”
‘उससे पूछो!’ अली ने दूसरे लड़के की ओर इशारा करते हुए जवाब दिया। फेलुदा को पूरी प्रक्रिया एक बार फिर दोहराना पड़ा।
'तुम्हारा नाम क्या है?'
'भगवान।'
‘क्या तुमने किसी मूर्ति का सिर देखा? क्या तुमने उसे ले लिया?’
सन्नाटा छा गया। 'देखो, पानु,' फेलुदा ने और भी नरमी से कहा, 'कोई बात नहीं। कोई तुमसे नाराज़ नहीं होगा। लेकिन अगर तुम मुझे वो ओरल सेक्स दे सको, तो मैं तुम्हें उसके पैसे दे दूंगा। क्या वह तुम्हारे पास है?'
फिर सन्नाटा छा गया। इस बार, बूढ़े लोगों में से एक ने उस पर चिल्लाते हुए कहा, 'चलो पानु, सज्जन को जवाब दो। उनके पास पूरा दिन नहीं है।'
पानु ने आखिरकार अपना मुंह खोला। 'अभी वह मेरे पास नहीं है।'
'आपका क्या मतलब है?'
‘मैंने इसे ढूंढ लिया, बाबू। कसम से, मैंने ही ढूंढा था। लेकिन मैंने इसे कुछ मिनट पहले ही किसी और को दे दिया।’
क्या! क्या यह सचमुच सच हो सकता है? मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा।
‘वह कौन था?’ फेलुदा ने तीखे स्वर में पूछा।
‘मुझे नहीं पता। वह शहर का रहने वाला आदमी था, बिल्कुल तुम्हारी तरह। वह एक कार में आया था, एक नीली कार में।’
वह कैसा दिखता था? क्या वह लंबा था? छोटा था? पतला था? मोटा था? क्या वह चश्मा पहनता था?

इससे पानु के कई दोस्त बातचीत में शामिल हो गए। उनके विवरण से ऐसा प्रतीत हुआ कि एक मध्यम कद का व्यक्ति, जो न दुबला था न मोटा, न गोरा न काला, और जिसकी उम्र तीस से पचास के बीच थी, हमसे आधा घंटा पहले वहाँ पहुँचा था और उसने भी इसी तरह की पूछताछ की थी। पानु ने उसे यक्षी का सिर दिखाया था और उसने उसे नाममात्र की कीमत पर खरीद लिया था। फिर वह एक नीली कार में बैठकर चला गया।
जब हम सिदिकपुर जा रहे थे, तभी सामने से एक नीली एम्बेसडर कार आई, हमें ओवरटेक किया और मुख्य सड़क की ओर चली गई। हम सभी को याद था कि हमने उसे देखा था।
‘ठीक है। चलो, टॉपशे। चलिए, श्रीमान घोष।’
अगर फेलुदा को अभी-अभी मिली जानकारी से निराशा हुई भी तो उसने इसे ज़ाहिर नहीं किया। इसके विपरीत, ऐसा लगा जैसे उसे नई ऊर्जा मिल गई हो। वह दौड़ते हुए टैक्सी तक वापस गया, और ड्राइवर और मैं उसके पीछे-पीछे चल रहे थे।
भगवान को ही पता था कि आगे क्या होने वाला है।

तीन

अब हम उसी रास्ते से वापस जा रहे थे जिससे आए थे। डेढ़ बज चुका था, लेकिन हममें से किसी को भी दोपहर के भोजन की याद नहीं आ रही थी। बलराम घोष ने जेस्सोर रोड पहुँचने पर चाय के लिए रुकने का सुझाव दिया, लेकिन फेलुदा ने इस पर ध्यान नहीं दिया। शायद हमारे ड्राइवर को इसमें कुछ रोमांच नज़र आ रहा था, इसलिए उसने भी खाने की बात दोबारा नहीं उठाई।
हमारी कार अब 75 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही थी। मेरे मन में बस एक ही बात बार-बार गूंज रही थी: हम यक्षी का सिर बरामद करने के कितने करीब पहुँच गए थे! अगर आज सुबह बिजली न कटी होती, तो हमें रेडियो पर खबर मिल जाती, और फिर हम सिदिकपुर बहुत जल्दी पहुँच जाते और यकीनन पानु को पकड़ लेते। अगर ऐसा होता, तो अब तक हम भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के कार्यालय की ओर जा रहे होते। कौन जाने, फेलुदा को देश की खोई हुई धरोहर को बरामद करने के लिए पद्म श्री पुरस्कार मिल जाता!
सूरज की गर्मी से सड़क सूख चुकी थी। मैं सोचने लगा था कि हम थोड़ी और तेज़ी से क्यों नहीं चल सकते, तभी मेरी नज़र सड़क के किनारे किसी चीज़ पर पड़ी जिससे मेरी धड़कन तेज़ हो गई।
एक नीली एम्बेसडर कार एक छोटे से गैरेज के बाहर खड़ी थी। 'क्या मुझे यहाँ रुकना चाहिए, महोदय?' बलराम घोष ने अपनी गति धीमी करते हुए पूछा। जाहिर है, उन्होंने उन लड़कों की बातों पर पूरा ध्यान दिया था।
‘जी हां, उस चाय की दुकान पर,’ फेलुदा ने जवाब दिया। श्री घोष तेजी से उस दुकान के पास पहुंचे और गाड़ी को जोर से ब्रेक लगाते हुए उसके बगल में रोक दिया। हम बाहर निकले और फेलुदा ने तीन कप चाय मंगवाई। मैंने देखा कि चाय छोटे गिलासों में परोसी जा रही थी, कप नहीं थे।
‘तुम्हारे पास और क्या है?’ फेलुदा ने पूछा।
‘बिस्किट। क्या आप कुछ लेना चाहेंगे? ये ताज़े हैं, महोदय, और बहुत स्वादिष्ट हैं।’ काउंटर पर दो कांच के जार रखे थे, जो बड़े-बड़े गोल बिस्कुटों से भरे हुए थे। फेलुदा ने उनमें से आधा दर्जन बिस्कुट मांगे।

मेरी नज़र बार-बार नीली कार पर जा रही थी। एक मैकेनिक पंचर टायर बदल रहा था। एक आदमी—मध्यम कद का, लगभग चालीस साल का, घनी भौहें, पीछे की ओर कंघी किए बाल—इधर-उधर टहल रहा था और बीच-बीच में आधी जली सिगरेट से कश खींच रहा था।
हमारी चाय लगभग तैयार थी। फेलुदा ने एक चारमीनार निकाली, फिर बहाना किया कि उसका लाइटर खो गया है। उसने अपनी जेब दो बार थपथपाई, फिर कंधे उचकाए और दूसरे आदमी के पास जाकर बैठ गया। मैं और ड्राइवर अपनी टैक्सी के पास ही खड़े रहे, लेकिन हम उनकी बातें सुन सकते थे।
‘माफ़ कीजिए,’ फेलुदा ने कहना शुरू किया, ‘क्या आप...?’
उस आदमी ने लाइटर निकाला और फेलुदा की सिगरेट जला दी। फेलुदा ने कश लेते हुए कहा, 'धन्यवाद।' 'बहुत बुरा अनुभव था, है ना?'
उस आदमी ने फेलुदा की तरफ एक नजर डाली, फिर बिना जवाब दिए दूसरी तरफ देखने लगा। फेलुदा ने एक बार फिर कोशिश की।
‘क्या आप उस जगह पर नहीं थे जहां विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ था? मुझे लगा कि मैंने आपकी कार वहां देखी थी!’
इस बार उस आदमी ने जवाब दिया, 'कौन सा विमान हादसा?'
‘हे भगवान! क्या आपने नहीं सुना? काठमांडू जा रहा एक विमान सिदिकपुर के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया।’
मैं टाकी से आ रहा हूँ। नहीं, मैंने दुर्घटना के बारे में नहीं सुना था। ताकी हसनबाद के पास एक कस्बा था। क्या वह आदमी सच कह रहा था? काश, जब वह हमारे पास से गुजरा था, तब हमने उसकी कार का नंबर नोट कर लिया होता!
उसने अधीरता से मैकेनिक से पूछा, 'इसमें और कितना समय लगेगा?'
‘बस कुछ मिनट, महोदय, इससे ज्यादा नहीं।’
तब तक हमारी चाय परोसी जा चुकी थी। फेलुदा एक गिलास लेने वापस आया। हम तीनों दुकान के सामने एक बेंच पर बैठ गए। 'उसने सब कुछ नकार दिया... वो आदमी झूठा है,' फेलुदा ने बुदबुदाया।
‘फेलुदा, तुम इतने आश्वस्त कैसे हो सकते हो? नीले रंग के एम्बेसडर तो लाखों की संख्या में हैं।’
उसके जूते राख से ढके हुए हैं। क्या तुमने अपने सैंडल देखे हैं?
मैंने जल्दी से नीचे देखा और पाया कि मेरी सैंडल का रंग पूरी तरह बदल गया था। दूसरे आदमी के भूरे जूते भी इसी तरह गहरे धब्बों से ढके हुए थे।

फेलुदा ने आराम से अपनी चाय खत्म की। हमने नीली कार में नया टायर लगने तक इंतज़ार किया—इसमें दो मिनट के बजाय पंद्रह मिनट और लग गए—और फिर हम जेस्सोर रोड की ओर चल पड़े। हमारी टैक्सी एक मिनट बाद ही निकल गई। दोनों कारों के बीच काफी दूरी थी, जिसे फेलुदा ने कहा कि कोई बुरी बात नहीं है। उन्होंने श्री घोष से कहा, 'उसे यह पता नहीं चलना चाहिए कि हम उसका पीछा कर रहे हैं।'
दमदम पहुँचते ही फिर से बारिश शुरू हो गई। कुछ मिनटों के लिए सब कुछ धुंधला हो गया और नीली कार को देखना मुश्किल हो गया। इसलिए बलराम घोष को थोड़ा और पास जाना पड़ा, जिससे हमें कार का नंबर पता चल गया। यह WMA 5349 था। श्री घोष ने उत्साह से कहा, 'यह तो बिल्कुल हिंदी फिल्म जैसा है! मैंने अभी कुछ दिन पहले ही एक फिल्म देखी थी - उसमें शत्रुघ्न सिन्हा थे - जिसमें ठीक ऐसा ही एक पीछा करने वाला दृश्य था। लेकिन दूसरी कार पहाड़ी से टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई।'
'आज पहले ही एक दुर्घटना हो चुकी है, धन्यवाद।'
‘अरे, चिंता मत कीजिए, महोदय। मैं तेरह साल से गाड़ी चला रहा हूँ। मेरा अभी तक एक भी एक्सीडेंट नहीं हुआ है। मतलब, अभी तक तो नहीं।’
'अच्छा। इसे ऐसे ही रहने दो।'
बलराम घोष एक कुशल ड्राइवर थे, यह मुझे मानना ही पड़ा। हम वापस कलकत्ता पहुँच चुके थे, लेकिन वे व्यस्त सड़कों पर नीली कार को नज़रों से ओझल होने दिए बिना ही गाड़ी चला रहे थे। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह कहाँ जा रही है। कुछ देर बाद मैंने फेलुदा से पूछा, 'तुम्हें क्या लगता है कि वह आदमी मूर्ति का क्या करेगा?'
‘खैर, वो इसे भुवनेश्वर वापस तो नहीं ले जाएगा,’ फेलुदा ने जवाब दिया। ‘वो शायद कोई दूसरा खरीदार ढूंढ ले। आखिर, एक ही चीज को दो बार बेचने का मौका तो बार-बार नहीं मिलता!’
नीली कार आखिरकार हमें पार्क स्ट्रीट ले आई। हम पुराने कब्रिस्तान, लोवडन स्ट्रीट, कैमक स्ट्रीट से गुज़रे और फिर अचानक, वह बाईं ओर मुड़ी और क्वीन्स मेंशन नामक एक इमारत में जा घुसी।
‘क्या मुझे अंदर जाना चाहिए, महोदय?’
'बिल्कुल।'

हमारी टैक्सी मुख्य द्वार से अंदर गई। हमारे सामने एक विशाल खुला चौक था, जिसके चारों ओर ऊंची-ऊंची इमारतें थीं। इन इमारतों के सामने कई कारें और कुछ स्कूटर खड़े थे। नीली कार सबसे आखिरी छोर तक गई और रुक गई। हम अपनी टैक्सी में बैठकर आगे की स्थिति देखने के लिए इंतजार करने लगे।
वह आदमी एक काला थैला लेकर बाहर निकला, अपनी कार की खिड़कियाँ बंद कीं, उसे लॉक किया और एक बड़े दरवाजे से क्वीन्स मेंशन में घुस गया। फेलुदा एक मिनट और इंतजार करता रहा, फिर उसके पीछे चला गया।
जब तक हम दरवाजे तक पहुँचे, लॉबी में लगी पुरानी शैली की लिफ्ट शोर मचाते हुए ऊपर जा चुकी थी। कुछ ही सेकंड बाद वह वापस आ गई। उसके फोल्डेबल गेट के पीछे से एक बूढ़ा लिफ्टकर्मी निकला। फेलुदा उसके पास गया।
‘क्या मैं अभी-अभी श्री सेनगुप्ता से चूक गया?’ उसने घबराकर पूछा। ‘श्रीमान सेनगुप्ता?’
‘वह आदमी जो अभी ऊपर गया?’
‘वह व्यक्ति नंबर पांच के श्री मल्लिक थे। इस इमारत में कोई सेनगुप्ता नहीं है।’
‘ओह। मुझसे गलती हो गई होगी। क्षमा करें।’
हम वहां से चले गए। श्री मल्लिक, फ्लैट नंबर पांच। मुझे ये विवरण याद रखने होंगे।
फेलुदा ने बलराम घोष को पैसे दिए और कहा कि अब उसकी ज़रूरत नहीं है। गाड़ी चलाते हुए जाने से पहले उसने हमें एक कागज़ का टुकड़ा दिया जिस पर एक फ़ोन नंबर लिखा हुआ था। उसने कहा, 'यह मेरे पड़ोसी का नंबर है। अगर कभी मेरी ज़रूरत पड़े तो इस नंबर पर फ़ोन कर देना। मेरा पड़ोसी मुझे फ़ोन कर देगा। मुझे आपकी मदद करके बहुत खुशी होगी, महोदय। देखिए, ज़िंदगी आमतौर पर इतनी नीरस होती है कि ऐसी कोई चीज़ बहुत बड़ी... मतलब, बदलाव तो अच्छा लगता है, है ना?'
हम पार्क स्ट्रीट पुलिस स्टेशन की ओर चल पड़े। फेलुदा वहां के पुलिस अधिकारी श्री हरेन मुत्सुद्दी को जानता था। दो साल पहले, उन्होंने हैप्पी- गो-लकी नाम के एक रेस के घोड़े को जहर देने वाले अपराधी का पता लगाने के लिए साथ काम किया था। पता चला कि श्री मुत्सुद्दी भुवनेश्वर में हुई चोरी के बारे में जानते थे। फेलुदा ने उन्हें श्री मल्लिक से हुई हमारी मुलाकात के बारे में संक्षेप में बताया और कहा, 'भले ही मल्लिक असली चोर न हो, लेकिन

उसने चोरी की गई वस्तु को बरामद करने और किसी और को सौंपने का जिम्मा खुद पर ले लिया है। श्री मुत्सुद्दी, मैं आपसे दो निवेदन करने आया हूँ। किसी को उसकी गतिविधियों पर नज़र रखनी चाहिए, और मुझे यह जानना है कि वह वास्तव में कौन है और कहाँ काम करता है। वह क्वीन्स मेंशन के फ्लैट नंबर पांच में रहता है, और नीली एम्बेसडर कार, WMA 5349 चलाता है।'
श्री मुत्सुद्दी चुपचाप फेलुदा की बात सुनते रहे। फिर उन्होंने अपने कान के पीछे रखी पेंसिल निकाली और कहा, 'बहुत खूब, श्री मित्तो। अगर आप ये सब करवाना चाहते हैं, तो करवा दिया जाएगा। एक विशेष कांस्टेबल आपके आदमी का हर जगह पीछा करेगा, और मैं देखूंगा कि क्या हमारे पास उसकी फाइलों में कोई सबूत है। ध्यान रहे, इसकी कोई गारंटी नहीं है कि मुझे कुछ मिलेगा ही, खासकर अगर उसने वास्तव में कानून नहीं तोड़ा है।'
'धन्यवाद। लेकिन कृपया इस मामले को अत्यावश्यक समझें। अगर वह मूर्ति किसी और को सौंप दी गई, तो हम बड़ी मुसीबत में पड़ जाएंगे।'
‘क्यों?’ श्री मुत्सुद्दी मुस्कुराए, ‘श्री मित्तर, आपको इतनी बड़ी मुसीबत में क्यों पड़ना चाहिए? मैं और पूरी पुलिस आपके साथ है। क्या यह मायने नहीं रखता? हम बिल्कुल बेकार नहीं हैं, आप जानते हैं। लेकिन मैं आपको बस एक बात बताना चाहता हूँ। ऐसे गिरोहों के पीछे जो लोग होते हैं, वे आमतौर पर काफी ताकतवर होते हैं। मैं शारीरिक ताकत की बात नहीं कर रहा हूँ। मेरा मतलब है कि वे अक्सर आम छोटे-मोटे अपराधियों से कहीं ज्यादा बुरे और घिनौने काम करने में कामयाब हो जाते हैं। श्री मित्तर, मैं आपको यह सब इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि आप युवा और प्रतिभाशाली हैं, और मैं आपको अपना मित्र मानता हूँ।’
'धन्यवाद, श्री मुत्सुद्दी। आपकी चिंता के लिए धन्यवाद।'
हम पुलिस स्टेशन से निकलकर दोपहर का खाना खाने के लिए वाल्डोर्फ नामक चीनी रेस्तरां में गए। ऑर्डर देने के बाद फेलुदा फोन करने के लिए मैनेजर के कमरे में गई।
वापस आकर उसने कहा, “मैंने मल्लिक को फोन किया। वह अभी भी अपने कमरे में था और उसने खुद फोन उठाया। मैंने बिना कुछ कहे फोन काट दिया।” उसकी आवाज़ में थोड़ी राहत झलक रही थी।
हम तीन बजे घर लौटे। श्री मुत्सुद्दी ने हमें चार बजे के कुछ देर बाद फोन किया। फेलुदा ने लगभग पाँच मिनट तक बात की और अपनी नोटबुक में बातें नोट

करते रहे। फिर उन्होंने फोन रख दिया और मेरे कुछ पूछने से पहले ही मुझे सब कुछ बता दिया।
‘उस आदमी का नाम जयंत मल्लिक है। वह करीब दो हफ्ते पहले उस फ्लैट में रहने आया था। असल में वह फ्लैट श्री अधिकारी का है, जो इस समय दार्जिलिंग में हैं। शायद वह मल्लिक के दोस्त हैं और उन्होंने अपनी गैरमौजूदगी में मल्लिक को अपना फ्लैट इस्तेमाल करने की इजाजत दी है। वह नीली एम्बेसडर कार अधिकारी की है। मल्लिक आज दोपहर तीन बजे उसी कार से ग्रैंड होटल गए थे। वह पांच मिनट के लिए अंदर गए, फिर बाहर आए और बीस मिनट तक अपनी कार में इंतजार करते दिखे। उसके बाद, वह एक बार फिर अंदर गए और दस मिनट में बाहर आ गए। फिर वह डलहौजी स्क्वायर चले गए। इसके बाद मुत्सुद्दी के आदमी ने उन्हें कुछ देर के लिए खो दिया, लेकिन फिर उन्हें फेयरली प्लेस स्थित रेलवे बुकिंग ऑफिस में ढूंढ लिया। उन्होंने औरंगाबाद के लिए आरक्षित द्वितीय श्रेणी का टिकट खरीदा। अगर कोई और खबर मिलती है तो मुत्सुद्दी का आदमी उन्हें फिर से फोन करेगा।’
‘Aurangabad?’
'हां, मल्लिक वहीं जा रहे हैं। और हम तुरंत सरदार शंकर रोड जा रहे हैं, अंकल सिद्धू से मिलने। मुझे उनसे तुरंत सलाह लेनी है।'

चार

‘औरंगाबाद!’ अंकल सिद्धू की आँखें फटी रह गईं। ‘क्या तुम्हें पता है इसका क्या मतलब है? औरंगाबाद एलोरा से सिर्फ बीस मील दूर है, जो भारतीय कला के बेहतरीन नमूनों का एक तरह का भंडार है। वहाँ कैलाश मंदिर है, जो पहाड़ को काटकर बनाया गया है। फिर वहाँ डेढ़ मील तक फैली तैंतीस गुफाएँ हैं—हिंदू, बौद्ध, जैन—जो सुंदर मूर्तियों और अद्भुत नक्काशी से भरी हुई हैं… हे भगवान, मैं सोच भी नहीं पा रहा! लेकिन यह आदमी ट्रेन से क्यों जा रहा है, जबकि वह हवाई जहाज से औरंगाबाद जा सकता है?’
मुझे लगता है कि वह यक्षी का सिर हर समय अपने पास रखना चाहता है। अगर वह हवाई जहाज से जाता है, तो सुरक्षाकर्मी उसके सामान की तलाशी ले सकते हैं। ट्रेन में तो कोई ऐसा करने की जहमत नहीं उठाएगा, है ना?
फेलुदा अचानक खड़ा हो गया।
‘आपने क्या फैसला किया?’ अंकल सिद्धू ने चिंता से पूछा।
'हमें हवाई मार्ग से जाना होगा,' फेलुदा ने उत्तर दिया।
इस पर अंकल सिद्धू के चेहरे पर गर्व और खुशी के भाव झलक रहे थे। लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा। बस उठकर उन्होंने अपनी किताबों की अलमारी से एक पतली सी किताब निकाली। उन्होंने कहा, 'यह तुम्हारे काम आ सकती है।' मैंने किताब का शीर्षक देखा। उस पर लिखा था, 'एलोरा की गुफाओं की मार्गदर्शिका'। घर लौटते ही फेलुदा ने अपने ट्रैवल एजेंट श्री बख्शी को फोन किया।
मैंने उसे कहते सुना, ‘मुझे कल मुंबई जाने वाली फ्लाइट के तीन टिकट चाहिए।’ यह सुनकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। उसे तीन टिकट क्यों चाहिए थे? क्या अंकल सिद्धू भी हमारे साथ आने वाले थे? जब मैंने उससे पूछा, तो फेलुदा ने सिर्फ इतना कहा, ‘जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही मज़ा आएगा। हमें एक और व्यक्ति की ज़रूरत पड़ सकती है।’
श्री बख्शी ने दोबारा फोन उठाया। उन्होंने कहा, 'मुझे आपको प्रतीक्षा सूची में डालना होगा, लेकिन स्थिति ज्यादा खराब नहीं लग रही है, मुझे लगता है सब ठीक हो जाएगा।'

उन्होंने औरंगाबाद और एलोरा में हमारे होटल बुक करने पर भी सहमति जताई। मुंबई जाने वाली फ्लाइट हमें नौ बजे तक वहाँ पहुँचा देगी। फिर हमें साढ़े बारह बजे औरंगाबाद के लिए फ्लाइट पकड़नी होगी और एक घंटे बाद वहाँ पहुँचना होगा। इसका मतलब यह था कि हम शनिवार को औरंगाबाद पहुँचेंगे और श्री मल्लिक रविवार को वहाँ पहुँचेंगे।
फेलुदा ने फोन रखा और दूसरा नंबर डायल करने लगा। उसके डायल पूरा करने से पहले ही दरवाजे की घंटी बज उठी। मैंने दरवाजा खोला तो सामने लालमोहन बाबू खड़े थे। फेलुदा ऐसे घूरने लगा जैसे उसने कोई भूत देख लिया हो और बोला, 'अरे वाह, क्या संयोग है! मैं तो अभी-अभी आपका ही नंबर डायल कर रहा था।'
‘सच में? अब तो इसका मतलब है कि मेरा आपसे टेलीपैथिक कनेक्शन है,’ लालमोहन बाबू हँसते हुए बोले, उन्हें बहुत खुशी हुई। हम दोनों में से किसी की भी हिम्मत नहीं हुई कि उन्हें बताएँ कि सही शब्द ‘टेलीपैथिक’ था।
'बहुत गर्मी और उमस है... अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो क्या आप अपने नौकर से फ्रिज से कुछ बर्फ डालकर नींबू का रस बनाने के लिए कह सकते हैं?'
फेलुदा ने श्रीनाथ को अपना अनुरोध बताया और फिर सीधे मुद्दे पर आ गया। ‘क्या आप इन दिनों बहुत व्यस्त हैं? क्या आपने कुछ नया लिखना शुरू किया है?’
नहीं, नहीं। अगर मैंने लिखना शुरू कर दिया होता तो मैं यहाँ बातचीत के लिए नहीं आ पाता। मेरे पास बस एक कथानक है। मुझे लगता है कि इस पर एक अच्छी हिंदी फिल्म बन सकती है। इसमें पाँच फाइट सीन हैं। मेरा हीरो, प्रखर रुद्र, इस बार बलूचिस्तान जाता है। बताइए, आपको क्या लगता है कि अर्जुन मेहरोत्रा प्रखर रुद्र का किरदार कैसे निभाएँगे? मुझे लगता है कि वो इस रोल में बिल्कुल फिट बैठेंगे—बशर्ते आप, फेलू बाबू, इसके लिए राज़ी हो जाएँ? ‘मैं हिंदी नहीं बोल सकता। खैर, मेरा सुझाव है कि आप कुछ दिनों के लिए हमारे साथ कैलाश चलें। वापस आने पर आप बलूचिस्तान के बारे में सोचना शुरू कर सकते हैं।’
‘कैलाश? तिब्बत तक? क्या वह चीन के अधीन नहीं है?’
नहीं। इस कैलाश का तिब्बत से कोई लेना-देना नहीं है। क्या आपने एलोरा के बारे में सुना है?

‘ओह, मैं समझ गया, मैं समझ गया। आपका मतलब मंदिर से है? लेकिन क्या वह मूर्तियों, पत्थरों और पहाड़ों से भरा नहीं है? फेलू बाबू, आपका उनसे क्या लेना-देना है? आपका धंधा तो इंसानों का है, है ना?’
'बिल्कुल सही। कुछ लोगों ने उन पत्थरों और मूर्तियों का इस्तेमाल करके एक घिनौना रैकेट शुरू कर दिया है। मैं इसे रोकना चाहता हूँ।'
लालमोहन बाबू घूरते रहे। फेलुदा ने उन्हें जल्दी से सारी बात बता दी, जिससे उनकी आंखें और भी ज्यादा चौड़ी हो गईं।
‘फेलू बाबू, आप क्या कह रहे हैं? मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि पत्थर की मूर्तियां इतनी कीमती हो सकती हैं। मुझे तो सिर्फ माणिक, पन्ना और हीरे जैसे कीमती पत्थरों का ही ख्याल आता है। लेकिन यह—!’
‘यह कहीं अधिक अनमोल है। दुनिया में कहीं और हीरे और माणिक मिल सकते हैं। लेकिन कैलाश, सांची और एलिफेंटा तो एक ही हैं। अगर ये नष्ट हो गए, तो हमारी प्राचीन कला की अद्भुत ऊँचाइयों का कोई प्रमाण नहीं बचेगा। आधुनिक कलाकार इन नमूनों में दिखाई देने वाली कुशलता और पूर्णता के आस-पास भी नहीं पहुँच सकते। जो कोई भी इनमें से किसी को विकृत करने का प्रयास करता है, वह एक खतरनाक अपराधी है। मेरी राय में, यक्षी की मूर्ति से सिर निकालने वाला व्यक्ति किसी हत्यारे से कम नहीं है। उसे दंडित किया जाना चाहिए।’
यह बात लालमोहन बाबू को मनाने के लिए काफी थी। वैसे भी, उन्हें यात्रा का बहुत शौक था। वे तुरंत हमारे साथ चलने के लिए तैयार हो गए और कई सवाल पूछने लगे, जिनमें यह भी शामिल था कि क्या उन्हें मच्छरदानी ले जानी चाहिए और क्या सांप के काटने का कोई खतरा है? फिर वे हवाई अड्डे पर हमसे मिलने का वादा करके चले गए।
हम दोनों को नहीं पता था कि हमें औरंगाबाद में कितने दिन रुकना पड़ेगा, लेकिन हमने एक हफ्ते के लिए पर्याप्त कपड़े पैक करने का फैसला किया। चूंकि फेलुदा को अक्सर यात्रा करनी पड़ती थी, इसलिए उसके पास हमेशा एक सूटकेस होता था जिसमें पचास फुट का स्टील टेप, एक बहुमुखी चाकू, रेल और हवाई यात्रा की समय सारिणी, सड़क के नक्शे, एक लंबी नायलॉन की रस्सी, शिकार के जूते और कई तार होते थे जो चाबी न होने पर दरवाजे और मेज की दराजें खोलने में काम आते थे। इनमें से किसी भी चीज से ज्यादा जगह नहीं घिरती थी, इसलिए वह अपने कपड़े भी उसी सूटकेस में पैक कर लेता था।

उसके पास देश के विभिन्न हिस्सों पर गाइड बुक और पर्यटक पुस्तिकाएँ भी थीं। मैंने उनमें से कुछ को सरसरी तौर पर देखा जो मुझे इस यात्रा के लिए उपयोगी लग रही थीं। फेलुदा ने रात दस बजे सोने से पहले सुबह 4 बजे का अलार्म लगाया, फिर 173 पर फोन करके सुबह जगाने के लिए कहा, ताकि अगर किसी कारण से अलार्म न बजे तो उसे जगाया जा सके।
दस मिनट बाद, श्री मुत्सुद्दी ने फिर फोन किया। उन्होंने बताया, ‘मल्लिक को बॉम्बे से एक ट्रंक कॉल आया था। मल्लिक ने ये शब्द कहे: “बेटी अपने ससुराल से अपने पिता के पास लौट आई है। पिता उसे अपने साथ 2075 में ले जा रहे हैं।” बॉम्बे से फोन करने वाले ने कहा: “जारी रखिए, शुभकामनाएं।” बस इतना ही।’
फेलुदा ने उन्हें धन्यवाद दिया और फोन काट दिया। मल्लिक की बातें मुझे समझ नहीं आईं। जब मैंने इस बारे में फेलुदा से बात की, तो उन्होंने बस इतना कहा, 'लड़के, तुम्हारी बची-खुची अक्ल भी मानो गायब हो रही है। चिंता करना छोड़ो और सो जाओ।'
मुंबई जाने वाली फ्लाइट एक घंटे देरी से चली। आखिरकार यह साढ़े सात बजे रवाना हुई। काफी सारी उड़ानें रद्द हो गई थीं, इसलिए हमें तीन सीटें आसानी से मिल गईं।
श्री धमीजा के मामले के सिलसिले में जब हम दिल्ली और शिमला गए थे, तब लालमोहन बाबू पहली बार हमारे साथ हवाई यात्रा पर गए थे। संभवतः यह उनकी दूसरी हवाई यात्रा थी। मैंने गौर किया कि इस बार उड़ान भरते समय उन्होंने मुंह नहीं बनाया और न ही कुर्सी की भुजाओं को कसकर पकड़ा; लेकिन थोड़ी देर बाद, जब मौसम खराब हुआ, तो वे झुककर बोले, 'फेलू बाबू, यह चितपुर रोड पर खस्ताहाल पुरानी बस में सफर करने से अलग नहीं है। मैं कैसे यकीन करूँ कि पूरा विमान टूट नहीं रहा है?'
'ऐसा नहीं है, निश्चिंत रहें।'
नाश्ते के बाद, ऐसा लगा कि वह थोड़ा ठीक हो गया है, क्योंकि मैंने उसे एक बटन दबाकर एयर होस्टेस को बुलाते हुए देखा। उसने चुटीले अंदाज़ में कहा, 'माफ़ कीजिए मैडम, एक टूथपिक चाहिए।' फिर वह बॉम्बे पर एक गाइड बुक पढ़ने लगा। हममें से कोई भी पहले बॉम्बे नहीं गया था। फेलुदा ने वापसी में एक दोस्त के साथ वहाँ कुछ दिन बिताने का फैसला किया था—बशर्ते कि एलोरा में हमारा काम संतोषजनक ढंग से पूरा हो जाए।

लैंडिंग से ठीक पहले जब 'सीट बेल्ट बांधें' का संकेत दिखाई दिया, तो मुझे लगा कि मुझे फेलुदा से कुछ पूछना ही चाहिए। 'क्या आप कृपया समझाएंगे कि श्री मल्लिक के शब्दों का क्या अर्थ था?'
फेलुदा अचंभित होकर बोला, 'क्या, तुम्हारा मतलब है कि तुम्हें सच में समझ नहीं आया?'
'नहीं।'
‘बेटी अपने ससुराल से अपने पिता के पास लौट आई है। “बेटी” यक्षी की मुखिया है, “ससुराल” से तात्पर्य सिल्वरस्टीन से है जिसने इसे खरीदा था, और “पिता” स्वयं मल्लिक हैं।’
‘मैं समझ गया... “सत्ताईस सौ पचहत्तर” के बारे में क्या?’
‘यह अक्षांश को संदर्भित करता है। यदि आप मानचित्र देखेंगे, तो आपको पता चलेगा कि औरंगाबाद वहीं दर्शाया गया है।’
हम सुबह दस बजे सांता क्रूज़ हवाई अड्डे पर उतरे। औरंगाबाद के लिए हमारी उड़ान साढ़े बारह बजे थी, इसलिए हमें शहर में जाने का कोई फायदा नहीं लगा, हालाँकि हवाई दृश्य ने मुझे बहुत प्रभावित किया था। हम हवाई अड्डे पर ही रुके रहे, हवाई अड्डे के रेस्तरां में दोपहर का भोजन चिकन करी और चावल से किया, और पौने एक बजे औरंगाबाद जाने वाले विमान में सवार हो गए। चूंकि यह पर्यटन का मौसम नहीं था, इसलिए विमान में केवल ग्यारह यात्री थे।
इस बार लालमोहन बाबू और मैं साथ बैठे थे। फेलुदा गलियारे के दूसरी तरफ, एक अधेड़ उम्र के आदमी के बगल में बैठे थे, जिनकी नाक तोते जैसी थी, घने घुंघराले सफ़ेद-काले बाल पीछे की ओर कंघी किए हुए थे और उन्होंने मोटे काले फ्रेम का चश्मा पहना हुआ था। औरंगाबाद के छोटे से हवाई अड्डे पर उतरने के बाद हमारी उनसे जान-पहचान हुई। उन्होंने बताया कि उन्हें किसी के आने की उम्मीद थी, लेकिन कोई नहीं आया। इसलिए उन्होंने एयरलाइन द्वारा उपलब्ध कराई गई बस में हमारे साथ शहर जाने का फैसला किया।
‘तुम कहाँ ठहरोगे?’ उसने फेलुदा से पूछा।
‘होटल औरंगाबाद।’
'ओह, मैं भी यहीं ठहरूँगा। आप यहाँ क्यों आए हैं? छुट्टियाँ मनाने?'
'हां, आप इसे ऐसा कह सकते हैं। और आप?'
‘मैं एलोरा पर एक किताब लिख रहा हूँ। यह मेरी दूसरी यात्रा है। मैं मिशिगन में भारतीय कला का इतिहास पढ़ाता हूँ।’

‘मैं समझ गया। क्या आपके छात्र इस विषय के प्रति उत्साहित हैं?’
'हां, अब पहले से कहीं ज्यादा। ऐसा लगता है कि भारत युवाओं को किसी भी अन्य चीज से ज्यादा प्रेरित करता है।'
‘मुझे लगता है कि वैष्णवों का वहाँ काफी प्रभाव है?’ फेलुदा ने हल्के- फुल्के अंदाज़ में पूछा। दूसरे सज्जन हँस पड़े। ‘क्या आप हरे कृष्ण अनुयायियों की बात कर रहे हैं?’ उन्होंने पूछा। ‘हाँ, उनकी उपस्थिति को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। वे वास्तव में अपने काम और पहनावे को लेकर बहुत गंभीर हैं। क्या आपने उनका कीर्तन सुना है? कभी-कभी तो यह बताना मुश्किल हो जाता है कि वे विदेशी हैं।’
हमें होटल पहुँचने में केवल पंद्रह मिनट लगे। होटल छोटा था, लेकिन साफ-सुथरा था। हमने चेक-इन किया और हमें कमरा नंबर 11 में ले जाया गया। लालमोहन बाबू कमरा नंबर 14 में चले गए। फेलुदा ने मुंबई हवाई अड्डे पर एक अखबार खरीदा था। मैंने उन्हें विमान में उसे पढ़ते हुए देखा था। अब वह हमारे कमरे के बीच में एक कुर्सी पर बैठ गए, अखबार को एक बार फिर फैलाया और बोले, 'क्या आप जानते हैं कि "तोड़फोड़" का क्या मतलब होता है?'
मैंने पढ़ा तो था, लेकिन बस थोड़ा-बहुत। फेलुदा ने समझाया, ‘पांचवीं शताब्दी में रोम को लूटने वाले बर्बर आक्रमणकारियों को वंडल कहा जाता था। किसी सुंदर वस्तु को विकृत करने, नुकसान पहुंचाने या नष्ट करने से संबंधित किसी भी कार्य को बर्बरता कहा जाने लगा।’ फिर उन्होंने अखबार मुझे देते हुए कहा, ‘इसे पढ़ो।’
मैंने ‘और तोड़फोड़’ शीर्षक से एक छोटी सी रिपोर्ट देखी। इसके अनुसार, खजुराहो के कंदरिया महादेव मंदिर की एक दीवार से एक महिला की मूर्ति तोड़कर उसका सिर निकाल लिया गया था। बड़ौदा से आए कला छात्रों का एक समूह मंदिर परिसर घूमने आया था और उन्होंने सबसे पहले इस घटना को देखा। पिछले चार हफ्तों में यह तीसरी घटना थी। इसमें कोई संदेह नहीं था कि इन मूर्तियों और अन्य कलाकृतियों को विदेशों में बेचा जा रहा था।
जब मैं रिपोर्ट के पूरे निहितार्थों को समझने की कोशिश कर रहा था, तभी फेलुदा ने बोलना शुरू किया। उनका लहजा गंभीर था।
उन्होंने कहा, ‘जहाँ तक मुझे समझ आता है, वहाँ केवल एक ही ऑक्टोपस है। इसने देश के विभिन्न हिस्सों में स्थित कई मंदिरों में अपने तंबू फैला रखे हैं।
अगर इसका एक भी तंबू पकड़कर काट दिया जाए, तो पूरा शरीर छटपटाने लगेगा।

□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□’

पाँच

औरंगाबाद एक ऐतिहासिक शहर था। मलिक अंबर नामक एक अबीसीनियाई गुलाम को भारत लाया गया था। समय के साथ, वह अहमदनगर के राजा का प्रधानमंत्री बना और उसने खड़के नामक शहर बसाया। औरंगजेब के शासनकाल में, खड़के का नाम बदलकर औरंगाबाद कर दिया गया। मुगलकालीन इमारतों और संरचनाओं के अलावा, यहाँ लगभग दस बौद्ध गुफाएँ थीं - जो तेरह सौ वर्ष पुरानी थीं - जिनमें देखने लायक मूर्तियाँ थीं।
हवाई अड्डे पर हमारी मुलाकात शुभंकर बोस नाम के जिस सज्जन से हुई थी, वे शाम को हमारे कमरे में बातचीत करने आए। उन्होंने हमसे कहा, 'एलोरा जाने से पहले आपको यहां की गुफाएं जरूर देखनी चाहिए। अगर आप ऐसा करेंगे, तो आपको पता चलेगा कि दोनों में कुछ समानताएं हैं।'
बाहर हल्की बारिश हो रही थी, इसलिए हमने तुरंत बाहर न जाने का फैसला किया। कल, अगर मौसम सुहाना रहा, तो हम गुफाएँ और औरंगज़ेब की पत्नी की याद में बने मकबरे, जिसे बीबी का मकबरा कहते हैं, को देखेंगे। वैसे भी हमें अगले दिन दोपहर तक औरंगाबाद में ही रुकना पड़ेगा, क्योंकि जयंत मल्लिक को ग्यारह बजे यहाँ पहुँचना था। वह शायद उसी दिन एलोरा चले जाएँगे, और फिर हम उनके पीछे-पीछे चले जाएँगे।
रात के खाने के बाद, फेलुदा एलोरा पर अपनी गाइड बुक लेकर बैठ गया। मैं सोच रहा था कि क्या करूं, तभी लालमोहन बाबू आ गए।
“तपेश, क्या तुमने खिड़की से बाहर देखा है?” उसने पूछा। “चाँद निकल आया है। क्या तुम टहलने चलना चाहोगे?”
'ज़रूर।'
होटल से बाहर निकलते ही चारों ओर चाँदनी छाई हुई थी। दूर पहाड़ियों की एक श्रृंखला दिखाई दे रही थी। शायद वहीं बौद्ध गुफाएँ स्थित थीं। पास ही एक पान की दुकान पर ट्रांजिस्टर पर हिंदी गाना बज रहा था। दो आदमी एक बेंच पर बैठे ज़ोर-ज़ोर से बहस कर रहे थे। वे शायद मराठी में बात कर रहे थे, क्योंकि मुझे एक शब्द भी समझ नहीं आया। बाहर की सड़क दिन भर लोगों और

वाहनों से भरी रहती थी, लेकिन अब एकदम शांत थी। कहीं दूर एक ट्रेन ने सीटी बजाई और पगड़ी पहने एक आदमी साइकिल चलाते हुए पास से गुज़रा। मुझे इस नई जगह पर थोड़ा अजीब सा लगा—जो कुछ भी मैंने देखा, उसमें रहस्य की झलक थी, कुछ रोमांच और थोड़ा डर भी। तभी लालमोहन बाबू अचानक मेरे कान के पास आए और फुसफुसाए, 'क्या शुभंकर बोस तुम्हें थोड़ा संदिग्ध नहीं लगते?'
मैंने काफी चौंकते हुए पूछा, 'क्यों?'
‘आपको क्या लगता है उसके सूटकेस में क्या है? उसका वजन 35 किलो क्यों है?’ ‘पैंतीस?’ मुझे बहुत आश्चर्य हुआ।
'हां। बॉम्बे में चेक-इन करने के लिए जब हमें कहा गया, तो वह मुझसे पहले कतार में थे। मैंने देखा कि उनके सूटकेस का वजन कितना था। उनका वजन पैंतीस किलोग्राम था, आपके चचेरे भाई का बाईस किलोग्राम, आपका चौदह किलोग्राम और मेरा सोलह किलोग्राम। बोस को अतिरिक्त सामान के लिए भुगतान करना पड़ा।' यह मेरे लिए बिल्कुल नई बात थी। मैंने श्री बोस का सूटकेस देखा था। वह बहुत बड़ा नहीं था। आखिर किस वजह से वह इतना भारी हो गया होगा?
लालमोहन बाबू ने इसका उत्तर दिया।
‘पत्थर,’ उसने अभी भी फुसफुसाते हुए कहा, ‘या पत्थर तोड़ने के औजार। क्या तुम्हारे चचेरे भाई ने हमें नहीं बताया था कि इस पूरे धंधे के पीछे एक बड़ा गिरोह काम कर रहा है? मुझे लगता है बोस उनमें से एक है। क्या तुमने उसकी नाक देखी? वह बिल्कुल घनश्याम करकट जैसी है।’
'घनश्याम कर्कट कौन हैं?'
अरे वाह, मैंने आपको बताया था ना? वो मेरी अगली किताब का खलनायक है। क्या आप जानते हैं कि मैं उसकी नाक का वर्णन कैसे करने वाली हूँ? “वो शार्क के पंख की तरह पानी के ऊपर उठी हुई थी।”
मैंने आखिरी बात पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन श्री बोस के बारे में उनकी टिप्पणियों को अनदेखा नहीं कर सका। मुझे उन पर ज़रा भी शक नहीं था। कला के बारे में इतना ज्ञान रखने वाला व्यक्ति अपराधी कैसे हो सकता है? लेकिन फिर, जो लोग कला की चोरी करते हैं, उन्हें इस विषय में कुछ तो पता ही होगा। इसके अलावा, उनकी शक्ल-सूरत में वाकई कुछ तीखापन था।
लालमोहन बाबू बोलते रहे, ‘मैं तो बस आपको चेतावनी देना चाहता था, उस पर नज़र रखना। उसने मुझे टॉफी दी, लेकिन मैंने नहीं ली। क्या पता उसमें ज़हर

मिला हो? अपने चचेरे भाई से कहना कि वह किसी को यह न बताए कि वह जासूस है। अगर उसने ऐसा किया, तो उसकी जान को खतरा हो सकता है।’
अगले दिन, हम सुबह साढ़े छह बजे टैक्सी से निकले और बीबी का मकबरा (जिसे 'दूसरा ताजमहल' भी कहा जाता है) देखने गए। फिर हम बौद्ध गुफाओं की ओर चल पड़े। टैक्सी ने हमें एक पहाड़ी की तलहटी में उतार दिया। गुफाओं तक जाने के लिए सीढ़ियाँ थीं। श्री बोस हमारे साथ थे और लगातार प्राचीन कला के बारे में बातें कर रहे थे, जिनमें से ज़्यादातर बातें मेरी समझ से परे थीं। मैं अब भी उन्हें अपराधी नहीं मान पा रहा था, लेकिन मैंने लालमोहन बाबू को उन्हें तिरछी नज़रों से देखते हुए देखा। इससे अक्सर वो लड़खड़ा जाते थे, लेकिन रुकते नहीं थे।
दो अन्य व्यक्ति पहले ही गुफाओं में जा चुके थे। मैंने उन्हें हमसे पहले सीढ़ियाँ चढ़ते देखा था। उनमें से एक गंजा अमेरिकी पर्यटक था, जिसने रंगीन बुश शर्ट और शॉर्ट्स पहन रखे थे; दूसरा पर्यटन विभाग का एक गाइड था। फेलुदा ने अपने कंधे के बैग से अपना पेंटैक्स कैमरा निकाला और पहाड़ियों, नज़ारे और कभी-कभी हमारी तस्वीरें खींचने लगा। हर बार जब वह कैमरे से हमारी तरफ देखता, लालमोहन बाबू रुक जाते और थोड़ा झिझकते हुए मुस्कुराते। थोड़ी देर बाद, मुझे उन्हें बताना पड़ा कि उन्हें चलना बंद करने की ज़रूरत नहीं है और वास्तव में, बिना मुस्कुराए भी तस्वीरें अक्सर अच्छी आती हैं। जब हम गुफाओं तक पहुंचे, तो फेलुदा ने अचानक कहा, 'तुम दोनों आगे बढ़ो, मैं एक मिनट में आता हूँ। मुझे दूसरी तरफ से कुछ तस्वीरें लेनी हैं।'
श्री बोस ने हमें पुकारते हुए कहा, ‘दूसरी और सातवीं गुफा देखना न भूलें। पहली पाँच गुफाएँ इसी क्षेत्र में हैं, लेकिन छठी से नौवीं गुफाएँ आधा मील दूर पूर्वी तरफ हैं। पहाड़ी के किनारे-किनारे एक सड़क जाती है।’
बाहर तेज़ धूप से मुझे असहनीय गर्मी लग रही थी, लेकिन जैसे ही मैं पहली गुफा में दाखिल हुआ, मुझे एहसास हुआ कि अंदर ताज़गी भरी ठंडक थी। लेकिन देखने लायक कुछ खास नहीं था। यह स्पष्ट था कि गुफा अधूरी छोड़ दी गई थी, और जो थोड़ा-बहुत काम हुआ था वह भी टूटने लगा था। फिर भी, श्री बोस ने बड़ी दिलचस्पी से छत और खंभों का निरीक्षण करना शुरू कर दिया और अपनी नोटबुक में बातें लिख लीं। लालमोहन बाबू और मैं दूसरी गुफा में गए। फेलुदा ने हमें एक टॉर्च दी थी। अब हमें उसे जलाना था। हम एक बड़े हॉल में थे, जिसके अंत में बुद्ध की एक विशाल मूर्ति थी। मैंने टॉर्च की रोशनी दीवारों पर

डाली, तो पाया कि उन पर सुंदर आकृतियाँ उकेरी गई थीं। लालमोहन बाबू कुछ पल चुप रहे, सब कुछ निहारते रहे। फिर उन्होंने कहा, 'क्या तुम्हें एहसास है, तपेश, कि ये प्राचीन कलाकार शारीरिक रूप से कितने बलवान रहे होंगे? मेरा मतलब है, कला का ज्ञान और रचनात्मक कल्पना ही काफी नहीं थी, है ना? उन्हें हथौड़े और छेनी उठानी पड़ीं और इतनी कठोर चट्टान को तोड़ना पड़ा...' यह बात दिमाग चकरा देती है, है ना?
तीसरी गुफा उससे भी बड़ी थी, लेकिन गाइड इतनी जोर से और तेजी से बोल रहा था कि हम उसमें कुछ सेकंड से ज्यादा नहीं रुक सके। बाहर निकलते ही लालमोहन बाबू ने पूछा, 'तुम्हारा चचेरा भाई कहाँ गया?' 'मुझे वह कहीं नहीं दिख रहा।' यह बात सच थी। मैंने सोचा था कि फेलुदा हमसे मिल जाएगा, लेकिन वह कहीं नज़र नहीं आया। श्री बोस भी नहीं दिखे। 'चलिए, बाकी गुफाओं में देखते हैं,' लालमोहन बाबू ने सुझाव दिया।
चौथी और पाँचवीं गुफाएँ ज़्यादा दूर नहीं थीं, लेकिन मुझे कहीं न कहीं यह महसूस हो रहा था कि फेलुदा वहाँ नहीं गया होगा। मुझे थोड़ी बेचैनी होने लगी। हम गुफा संख्या छह की ओर चलने लगे, जो आधा मील दूर थी। पहाड़ी का यह हिस्सा बंजर और पथरीला था, इक्का-दुक्का छोटी झाड़ियों के अलावा यहाँ कुछ ही पौधे थे। मैंने अपनी घड़ी देखी। सवा आठ बजे थे, लेकिन हम यहाँ दस बजे के बाद नहीं रुक सकते थे, क्योंकि श्री मल्लिक ग्यारह बजे आने वाले थे। पंद्रह मिनट बाद, हमने ऊपर देखा और एक और गुफा दिखाई दी। यह शायद गुफा संख्या छह थी। यह पता लगाना असंभव था कि फेलुदा इस रास्ते से आया था या नहीं। लालमोहन बाबू पैरों के निशान ढूंढने की उम्मीद में ज़मीन पर टकटकी लगाए रहे। लेकिन यह व्यर्थ ही था, क्योंकि ज़मीन बिल्कुल सूखी थी।
क्या आगे बढ़ने का कोई फायदा था? क्या उसका नाम पुकारने से कुछ मदद मिल सकती थी?
‘फेलुदा! फेलुदा!’ मैं चिल्लाने लगा।
‘Pradosh Babu! Felu Babu! Mr Mit-te-er!’ Lalmohan Babu joined me.
कोई जवाब नहीं मिला। मेरे पेट में एक अजीब सी बेचैनी होने लगी।
क्या वह पहाड़ी पर चढ़कर दूसरी तरफ चला गया था? क्या उसने कुछ ऐसा देखा या सुना था जिससे वह हमारे बारे में सब कुछ भूल गया था?
कुछ देर बाद लालमोहन बाबू ने हार मान ली। उन्होंने सिर हिलाते हुए कहा, “ज़ाहिर है वो यहाँ कहीं नहीं है, वरना उसने हमारी आवाज़ सुन ली होती। चलो

वापस चलते हैं। मुझे पूरा यकीन है कि इस बार हम उसे ढूंढ लेंगे। वो बिना कुछ कहे हमें छोड़कर नहीं जा सकता। वो ऐसा गैरजिम्मेदाराना काम तो नहीं करेगा, है ना?”
हम पीछे मुड़े और अपने कदमों के निशान पर वापस चलने लगे। कुछ ही मिनटों में हमने उस विदेशी और उसके गाइड को छठी गुफा की ओर जाते देखा। मैं देख सकता था कि अमेरिकी को गाइड और उसकी लगातार बकबक से तालमेल बिठाना मुश्किल हो रहा था। 'देखो, श्री बोस आ रहे हैं!' लालमोहन बाबू चिल्लाए। श्री बोस कुछ खोई-खोई सी मुद्रा में हमारी ओर आ रहे थे। अपना नाम सुनते ही उन्होंने अपनी नज़रें ऊपर उठाईं। मैं जल्दी से उनके पास गया और पूछा, 'क्या आपने मेरे चचेरे भाई को देखा है?'
नहीं। क्या उसने यह नहीं कहा था कि वह तस्वीरें लेने जा रहा है?
'हां, लेकिन यह बहुत पहले की बात है। शायद वह इनमें से किसी गुफा में हो?' नहीं। मैं उन सभी जगहों पर जा चुका हूं। अगर वह वहां होता, तो मैं उसे जरूर देख लेता।
शायद मेरे चेहरे पर मेरी घबराहट झलक रही थी, क्योंकि उनकी आवाज़ नरम पड़ गई। 'हो सकता है वो थोड़ा और ऊपर चढ़ गया हो। दरअसल, अगर आप पहाड़ी की चोटी तक पहुँच जाएँ तो वहाँ से पूरे औरंगाबाद शहर का शानदार नज़ारा दिखता है। आप आगे बढ़ते रहिए और उसका नाम पुकारते रहिए? वो आपको देर-सवेर ज़रूर सुन लेगा,' श्री बोस ने तसल्ली भरे लहजे में कहा और गुफा संख्या छह की ओर चल दिए।
लालमोहन बाबू ने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहा, 'मुझे यह पसंद नहीं है, तपेश। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि एलोरा पहुँचने से पहले ही चिंता का कोई कारण होगा।'
मैंने खुद को संभाला और चलना जारी रखा। मेरी गति अपने आप तेज हो गई थी। मेरे दिमाग में बस यही चल रहा था कि समय कम होता जा रहा है, हमें ग्यारह बजे तक होटल वापस पहुंचना था ताकि पता चल सके कि श्री मल्लिक आए हैं या नहीं, लेकिन अगर हमें फेलुदा नहीं मिला तो हम क्या करेंगे?
उसके बिना...
‘चारमीनार!’ लालमोहन बाबू अचानक चिल्लाए, जिससे मैं चौंक गया। हम पाँचवीं गुफा के खंभों के पास खड़े थे। खंभों से कुछ ही दूरी पर एक झाड़ी के नीचे चारमीनार का एक पीला पैकेट पड़ा था। या तो यह पहले यहाँ नहीं था, या फिर

किसी तरह हमारी नज़र से छूट गया था। क्या यह फेलुदा की जेब से गिर गया था? मैंने जल्दी से उसे उठाया और उसका ढक्कन खोला। वह खाली था। जैसे ही मैं उसे फेंकने वाला था, लालमोहन बाबू ने कहा, ‘मुझे देखने दो, मुझे देखने दो!’ और मुझसे वह ले लिया। फिर उन्होंने उसे पूरी तरह खोला, और उसमें से कागज का एक छोटा सा टुकड़ा बाहर गिर गया। उस पर फेलुदा की लिखावट में एक छोटा सा संदेश लिखा था।
उसमें लिखा था, 'होटल वापस जाओ।'
काफी राहत महसूस करते हुए, हमने आगे क्या करना है इस पर चर्चा की। मैं ठीक से सोच नहीं पा रहा था क्योंकि फेलुदा के संदेश में यह नहीं बताया गया था कि वह कहाँ है या हमें वापस जाने के लिए क्यों कह रहा है। मेरे पेट में खालीपन का एहसास अभी भी बना हुआ था।
‘हम वापस कैसे जा सकते हैं?’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘श्री बोस हमारे साथ हैं, और उन्हें अभी चार और गुफाएं देखनी हैं।’
मैंने धीरे से कहा, खुद को सोचने के लिए मजबूर करते हुए, ‘क्यों न हम होटल वापस चले जाएं और टैक्सी को उसे लाने के लिए वापस भेज दें?’
'जी हां, हम ऐसा कर सकते हैं, लेकिन क्या हमें उसकी गतिविधियों पर नजर रखने के लिए यहीं नहीं रुकना चाहिए?'
नहीं। मुझे ऐसा नहीं लगता, लालमोहन बाबू। फेलुदा ने श्री बोस के बारे में कुछ नहीं कहा। वह बस चाहते थे कि हम वापस चले जाएं, और हमें वही करना चाहिए।
‘ठीक है। ऐसा ही हो,’ लालमोहन बाबू ने थोड़ी निराशा भरे लहजे में जवाब दिया।
रहस्य कथाएँ लिखने के कारण लालमोहन बाबू कभी-कभी पेशेवर जासूस बनने का मन बना लेते थे। मैं समझ गया था कि वह श्री बोस का पीछा करना चाहते थे, लेकिन मुझे उन्हें रोकना ज़रूरी लगा। हमारी टैक्सी ने हमें होटल पर छोड़ा और फिर गुफाओं की ओर वापस चली गई। नौ बज चुके थे। पता नहीं हमें फेलुदा के लिए कितना इंतज़ार करना पड़ेगा।
हम दोनों अपने कमरे में नहीं रह सकते थे, इसलिए हम होटल से बाहर निकल आए और बाहर सड़क पर टहलने लगे। आसमान में बादल छाने लगे थे। मैंने सोचा, अगर बारिश हुई तो शायद थोड़ी ठंडक हो जाएगी।

श्री बोस सुबह नौ बजकर पैंतालीस मिनट पर लौटे और जब हमने उन्हें बताया कि फेलुदा नहीं लौटा है, तो वे काफी हैरान दिखे। स्वाभाविक रूप से, हम उन्हें अपनी चिंता का असली कारण नहीं बता सकते थे। आखिर, हम उन्हें अच्छी तरह से नहीं जानते थे और लालमोहन बाबू को अब भी पूरा यकीन था कि वह इस मामले में शामिल अपराधियों में से एक है। उन्हें और सवाल पूछने से रोकने के लिए, मैंने जल्दी से कहा, 'मुझे डर है कि मेरा चचेरा भाई अक्सर बिना बताए काम कर देता है। उसने पहले भी ऐसा किया है—मेरा मतलब है, वह इस तरह चला जाता है, लेकिन बाद में लौट आता है। मुझे यकीन है कि वह जल्द ही वापस आ जाएगा।'
हम लगभग एक घंटे तक बाहर रहे, फिर मैं अपने कमरे में वापस गया और 'टिनटिन इन तिब्बत' पढ़ना शुरू किया। ग्यारह बजने के ठीक बाद, मुझे लगा जैसे किसी ट्रेन की सीटी की आवाज़ आई हो, और पौने बारह बजे एक डिब्बा बरामदे में आकर रुका। मैं खुद को रोक नहीं पाया और देखने के लिए बाहर चला गया।
दो आदमी टैक्सी से उतरे। उनमें से एक मध्यम कद का और काफी हट्टा-कट्टा था। उसके चौड़े कंधे ठुड्डी के ठीक नीचे से शुरू होते प्रतीत होते थे; उसकी गर्दन लगभग न के बराबर थी। किसी कारणवश, ऐसा लगता था मानो वह आसानी से क्रोधित हो सकता है। दूसरा आदमी बिल्कुल विपरीत था: लंबा, दुबला-पतला, बेल-बॉटम पैंट और ढीली, कढ़ाईदार सूती कमीज़ पहने हुए। उसका चेहरा बिखरी हुई दाढ़ी से ढका हुआ था और उसके बाल कंधों तक लहरा रहे थे। वह एक हिप्पी जैसा दिखता था। हट्टे-कट्टे आदमी के पास एक पुराना चमड़े का सूटकेस था; हिप्पी के पास एक नया कैनवास का थैला था। दोनों होटल में चले गए। उनके अंदर जाते ही एक और टैक्सी आ गई।
जयंत मल्लिक इससे बच निकले।
अचानक मुझे राहत की लहर दौड़ गई। कम से कम इसका मतलब यह था कि हम सही रास्ते पर थे। कलकत्ता से हमारी यात्रा व्यर्थ नहीं गई थी।
लेकिन फेलुदा आखिर था कहाँ?

छह

मैंने फेलुदा के आने का इंतज़ार करते हुए दस मिनट और बिताए। जब वह नहीं आया, तो मैं अंदर गया और लालमोहन बाबू के दरवाजे पर दस्तक दी। उन्होंने तुरंत दरवाजा खोला और बड़ी-बड़ी गोल आँखों से बोले, 'मैंने लॉबी से सब कुछ देख लिया! क्या वे दोनों लोग बहुत संदिग्ध नहीं लग रहे? मुझे लगता है कि वे एलोरा जाएंगे? उनमें से एक—यानी दाढ़ी वाला—गांजा और अन्य नशीले पदार्थों का सेवन करता होगा।'
मैंने सिर हिलाया। मैंने उनसे कहा, 'जयंत मल्लिक भी आ गए हैं और उन्होंने चेक-इन कर लिया है।'
'सच में? मैंने उसे नहीं देखा। जैसे ही वह हिप्पी अंदर आया, मैं तुरंत अपने कमरे में वापस आ गया। मल्लिक कैसा दिखता है?'
जब मैंने उसके बारे में बताया, तो लालमोहन बाबू और भी उत्साहित हो गए। ‘ओह, मुझे लगता है उसे मेरे बगल वाला कमरा दिया गया है। मैंने उसे आते देखा और मुझे एक बात बहुत अजीब लगी। एक वेटर उसका सूटकेस ले जा रहा था, लेकिन वह ज़ाहिर तौर पर बहुत भारी था। बेचारा मुश्किल से हिल पा रहा था। और इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है। आखिर उसमें यक्षी का सिर तो होना ही चाहिए?’ मुझे फेलुदा के लापता होने के अलावा और कुछ सूझ नहीं रहा था, इसलिए मैंने कहा, 'अभी सबसे ज़रूरी है फेलुदा को ढूंढना। मल्लिक के सूटकेस की चिंता छोड़ो। हमने एलोरा जाने का कोई इंतज़ाम नहीं किया है। मुझे यकीन है कि मल्लिक सिर्फ औरंगाबाद के दर्शनीय स्थल देखने नहीं आया है। अगर वह हमसे पहले एलोरा पहुँच गया, तो वह और भी नुकसान कर सकता है—'
‘ये क्या है?’ लालमोहन बाबू ने मुझे टोकते हुए दरवाजे की ओर देखा। कमरे में आने के बाद मैंने दरवाजा बंद कर दिया था। किसी ने उसके नीचे कागज का एक टुकड़ा सरका दिया था। मैं उछल पड़ा और झट से उसे पकड़ लिया। यह फेलुदा द्वारा लिखा गया एक और नोट था।

'अपना सारा सामान इकट्ठा कर लें और डेढ़ बजे होटल के बाहर इंतज़ार करें। 530 नंबर की काली एम्बेसडर टैक्सी देखें। निकलने से पहले अपना लंच कर लें। होटल के सभी बिलों का भुगतान पहले ही कर दिया गया है।'
मैंने इन कुछ पंक्तियों पर सरसरी नज़र डाली और दरवाज़ा खोल दिया। वहाँ कोई नहीं था। लेकिन एक पल बाद, जयंत मल्लिक अपने कमरे से बाहर आए और रिसेप्शन डेस्क की ओर तेज़ी से बढ़े। उन्होंने एक पल के लिए मेरी ओर देखा, लेकिन ऐसा लगा जैसे उन्होंने मुझे पहचाना नहीं हो।
‘उसने अपना कमरा बंद नहीं किया,’ लालमोहन बाबू ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘अंदर कोई नहीं है। क्या मैं अंदर जाकर देख लूँ? चोरी हुई मूर्ति के बारे में सोचो—!’
नहीं! हमें फेलुदा को बताए बिना ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए। अब लगभग एक बज चुका है। मुझे लगता है कि हम दोनों को अब जाने की तैयारी कर लेनी चाहिए। कभी-कभी लालमोहन बाबू का उत्साह गंभीर समस्याएँ पैदा कर देता था। सौभाग्यवश, उन्होंने खुद पर नियंत्रण रखने पर सहमति जताई।
हमने जल्दी से दोपहर का खाना खाया और अपना सामान—जिसमें फेलुदा का सामान भी शामिल था—सौ बजे बाहर निकले। कुछ ही मिनटों में एक खाली टैक्सी आई, लेकिन वह हरे रंग की थी और उसका नंबर अलग था। उसका ड्राइवर हमसे कुछ ही दूरी पर रुका। मैंने उसे आलस से अपनी बाहें उठाते और अंगड़ाई लेते देखा। तीन मिनट बाद, एक और टैक्सी हमारे पास आकर रुकी। एक काली एम्बेसडर, नंबर
530। उसके ड्राइवर ने खिड़की से बाहर झाँककर कहा, 'श्री मिटर की पार्टी?' ‘जी हां,’ लालमोहन बाबू ने बड़े ही महत्वपूर्ण अंदाज में जवाब दिया। ड्राइवर बाहर निकला और हमारे लिए डिग्गी खोल दी। मैंने तीनों सूटकेस उसमें रख दिए।
होटल से दो आदमी बाहर आए: शुभंकर बोस और जयंत मल्लिक। मैंने उन्हें साथ में दोपहर का भोजन करते देखा था। वे हरी टैक्सी में बैठ गए। टैक्सी स्टार्ट हुई और पश्चिम की ओर जाने वाली अदालत रोड पर तेज़ी से चल पड़ी। एलोरा भी उसी दिशा में था।
मैंने सोचा, ये सारा सस्पेंस मुझे मार डालेगा। हम कहाँ जाएँगे? फेलुदा हमारे साथ क्यों नहीं है? उसके गायब हो जाने पर मुझे गुस्सा आ रहा था, हालाँकि मैं ये अच्छी तरह जानती थी कि वो बिना किसी अच्छे कारण के कुछ नहीं करता था।

होटल से एक और आदमी निकला। वह लंबा-चौड़ा हिप्पी था, जिसके हाथ में कैनवास का थैला था। वह सीधे हमारे पास आया, रुका और बोला, 'अंदर आ जाओ, टॉपशे। जल्दी करो, लालमोहन बाबू!'
मुझे पता भी नहीं चला और मैं टैक्सी की पिछली सीट पर बैठा था। उस हिप्पी ने आगे का दरवाजा खोला, हैरान-परेशान लालमोहन बाबू को अंदर धकेला, फिर खुद मेरे बगल में बैठ गया। उसने ड्राइवर से कहा, 'चलिए, दीनदयाल जी।'
मुझे पता था कि फेलुदा मेकअप और वेश बदलने में माहिर है, लेकिन मुझे यह बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि वह अपनी आवाज, अपनी चाल, यहां तक कि अपनी आंखों का भाव भी इतनी पूरी तरह से बदल सकता है। लालमोहन बाबू मानो अवाक रह गए, लेकिन उन्होंने मुड़कर फेलुदा से हाथ मिलाया। मेरा दिल अभी भी घोड़े की तरह धड़क रहा था और मैं यह जानने के लिए बेताब था कि फेलुदा ने वेश क्यों बदला था।
जब हम मुख्य शहर से निकलकर खुले मैदान में पहुँच गए, तभी फेलुदा ने अपना मुँह खोला। उसने समझाया, ‘भेष बदलना ज़रूरी था, क्योंकि मल्लिक मुझे पहचान सकता था, हालाँकि बारासात के उस गैराज में हमारी बस कुछ ही बातें हुई थीं। ज़ाहिर है, अगर उसे पता चलता कि जिस आदमी ने उससे अटपटे सवाल पूछे थे, वही एलोरा भी जा रहा है, तो उसे शक ज़रूर होता। मैंने तुम्हें अपनी योजना के बारे में नहीं बताया, क्योंकि मैं देखना चाहता था कि मेरा मेकअप ठीक है या नहीं। जब तुम दोनों में से किसी ने मुझे नहीं पहचाना, तो मुझे पता चल गया कि मुझे मल्लिक के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है... ये कपड़े और बाकी सारा सामान आज सुबह मेरे कंधे के बैग में था। जब मैंने कहा कि मैं फ़ोटो खींचने जा रहा हूँ, तो असल में मैं आगे चला गया और गुफा नंबर छह में गायब हो गया। वहाँ ज़्यादा लोग नहीं जाते, क्योंकि वह बाकी गुफाओं से काफ़ी दूर है और वहाँ पहुँचने के लिए ऊँचाई पर चढ़ना पड़ता है। काम खत्म होने पर, मैं नीचे उतरा और वापस शहर आ गया। पहले मैंने यह टैक्सी बुक की, फिर स्टेशन गया यह देखने के लिए कि मल्लिक ट्रेन से उतरा है या नहीं।’ जब उसने ऐसा किया, तो मैं उसकी टैक्सी के पीछे-पीछे गया, क्योंकि मैंने एक और यात्री को भी साथ ले लिया था जो हमारे होटल जाना चाहता था। इससे मुझे फायदा हुआ क्योंकि मैं उसके साथ टैक्सी का किराया बाँट सकता था। अब, अगर शुभंकर बोस मुझसे मेरे बारे में कुछ भी पूछे, तो उसे बता देना कि मैंने तुम्हें संदेश भेजा है कि मुझे किसी ज़रूरी काम से बॉम्बे जाना है। मैं सोने से

पहले अपना भेष नहीं हटा सकता। असल में, हमें मल्लिक को यह भी नहीं दिखाना चाहिए कि हम दोनों एक-दूसरे को जानते हैं। तुम और लालमोहन बाबू एक ही कमरे में रहोगे। हम जहाँ भी रुकेंगे, मैं अलग कमरे में रहूँगा।
'लेकिन तुम कौन हो?'
'आपको नाम बताने की ज़रूरत नहीं है। मैं एक फोटोग्राफर हूँ। मैं यहाँ हांगकांग की एशिया पत्रिका के लिए तस्वीरें लेने आया हूँ।'
‘ठीक है। लालमोहन बाबू और मेरे बारे में क्या?’
‘तुम उनके भतीजे हो। वे सिटी कॉलेज में इतिहास पढ़ाते हैं। तुम सिटी स्कूल के छात्र हो। तुम्हें चित्रकला में रुचि है, लेकिन तुम अगले साल अपने चाचा के कॉलेज में इतिहास पढ़ने के लिए दाखिला लेना चाहते हो। तुम्हारा नाम तपेश मुखर्जी है। लालमोहन बाबू को अपना नाम बदलने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन कृपया एलोरा के बारे में पढ़ लो। मूल रूप से, तुम्हें बस इतना याद रखना है कि कैलाश मंदिर का निर्माण राष्ट्रकूट वंश के राजा कृष्ण के शासनकाल में आठवीं शताब्दी में हुआ था।’
लालमोहन बाबू ने ये शब्द मन ही मन दोहराए, फिर अपनी छोटी लाल नोटबुक निकाली और उन्हें लिख लिया, हालाँकि चलती गाड़ी में लिखना आसान नहीं था। अब मुझे समझ आया कि फेलुदा ने उन्हें हमारे साथ आने के लिए क्यों कहा था। उन्हें पता होगा कि उन्हें भेस बदलना होगा और ऐसा दिखाना होगा कि वे मुझे नहीं जानते। लालमोहन बाबू की मौजूदगी से मल्लिक की हरकतों पर नज़र रखने के लिए एक और व्यक्ति मौजूद था, और मेरे साथ एक वयस्क भी था। मुझे लालमोहन बाबू को 'अंकल' कहने में कोई आपत्ति नहीं थी, लेकिन फेलुदा को पूरी तरह अजनबी होने का दिखावा करना बहुत मुश्किल होने वाला था। खैर—मेरे पास कोई चारा नहीं था।
मैंने खिड़की से बाहर देखा। दूर पहाड़ियाँ थीं, और सड़क के दोनों ओर की ज़मीन सूखी और बंजर थी। कहीं-कहीं कैक्टस उग रहे थे, लेकिन ये एक अलग तरह के कैक्टस थे, वो जाने-पहचाने कांटेदार नाशपाती नहीं थे जो मैंने कहीं और देखे थे। ये झाड़ियाँ कई फीट बड़ी और ऊँची थीं।
हमारे पीछे एक और कार काफी देर से हॉर्न बजा रही थी। हमारे ड्राइवर ने उसे रास्ता देने के लिए गाड़ी थोड़ी धीमी कर दी। उसमें वही गंजा अमेरिकी बैठा था जिसे हमने आज सुबह देखा था, और वही हट्टा-कट्टा आदमी भी था जिसने फेलुदा के साथ उसी टैक्सी में सफर किया था।

आधे घंटे बाद, हम दूर पहाड़ियों के करीब पहुँचने लगे। हमारे बाईं ओर खुल्दाबाद नाम का एक छोटा सा कस्बा फैला हुआ था। हम यहाँ डाक बंगले में रुकने वाले थे। किसी और समय में, इतनी जल्दी कमरे मिलना नामुमकिन होता। शुक्र है कि यह पर्यटकों का नियमित मौसम नहीं था। हालांकि, पर्यटकों की अनुपस्थिति का मतलब यह भी था कि चोरों और बदमाशों को लूटपाट करने का भरपूर मौका मिल सकता था।
थोड़ी देर बाद, हमारे दाहिनी ओर, एलोरा की कई गुफाओं में से पहली गुफा दिखाई देने लगी।
‘डाक बंगले तक?’ हमारे ड्राइवर ने पूछा। ‘या आप पहले गुफाएं देखना चाहेंगे?’
‘नहीं, चलो सीधे डाक बंगले चलते हैं,’ फेलुदा ने जवाब दिया।
खुल्दाबाद की ओर जाने वाली सड़क पर हमारी कार ने बाएँ मोड़ लिया। मैं अब भी पहाड़ियों में बनी गुफाओं की कतारों को निहार रहा था। इनमें से कैलाश कौन सी गुफा थी?
खुल्दाबाद में ठहरने के दो मुख्य स्थान थे। एक डाक बंगला था जहाँ हमने कमरा बुक कराया था, और दूसरा अधिक महंगा और आलीशान टूरिस्ट गेस्ट हाउस था। दोनों बंगले एक मजबूत बाड़ से अलग होकर अगल-बगल बने हुए थे। मैंने गेस्ट हाउस के बाहर हरी टैक्सी खड़ी देखी, जिसका मतलब था कि जयंत मल्लिक ने वहीं चेक-इन किया था। हमारा बंगला छोटा था, लेकिन साफ-सुथरा और सुविधाजनक था। फेलुदा ने ड्राइवर को किराया दिया और उसे पंद्रह मिनट इंतजार करने को कहा। हम अपना सामान कमरों में छोड़कर कैलाश चले जाएंगे। ड्राइवर हमें वहाँ छोड़कर औरंगाबाद लौट आएगा।
बंगले में चार कमरे थे। हर कमरे में तीन पलंग थे। फेलुदा हमारे साथ रह सकता था, लेकिन उसने अलग कमरा लेने का फैसला किया। जाते समय उसने फुसफुसाते हुए कहा, ‘याद रखना, तुम्हारा उपनाम मुखर्जी है। लालमोहन बाबू तुम्हारे चाचा हैं... राष्ट्रकूट वंश... आठवीं शताब्दी... राजा कृष्ण... मैं दस मिनट में तुम्हारे पास आ रहा हूँ।’ फिर वह अपने कमरे में गया और अपनी आवाज़ से बिल्कुल अलग स्वर में चिल्लाया, ‘चौकीदार!’
लालमोहन बाबू और मैंने जल्दी से हाथ-मुँह धोकर भोजन कक्ष में प्रवेश किया, जहाँ हमें फेलुदा का इंतज़ार करना था। वहाँ हमें एक और सज्जन मिले, वही व्यक्ति जिसे हमने अभी-अभी अमेरिकी के साथ यात्रा करते देखा था। स्पष्ट था

कि वह हमारे साथ बंगले में ही रुकने वाले थे। पहले तो मुझे लगा कि वह कोई मुक्केबाज़ या पहलवान हैं। अब मेरी नज़र उनकी आँखों पर पड़ी: वे चमकीली और बुद्धिमान थीं, जिससे लगा कि वे शिक्षित हैं और वास्तव में, हो सकता है कि वे कोई लेखक या कलाकार हों। जैसे ही उनकी नज़रें मेरी आँखों से मिलीं, उनकी आँखों में एक चमक आ गई।
‘क्या आप कैलाश जा रहे हैं?’ उसने मुस्कुराते हुए पूछा।
‘जी हां,’ लालमोहन बाबू ने उत्सुकता से उत्तर दिया, ‘हम कलकत्ता से हैं। मैं... इसे क्या कहते हैं... सिटी कॉलेज में इतिहास का प्रोफेसर हूं; और ये मेरा भतीजा है, आप देख रहे हैं।’
उन्हें और कुछ बताने की ज़रूरत नहीं थी। लेकिन, शायद एक नई भूमिका निभाने को लेकर घबराए हुए लालमोहन बाबू बोलते रहे, 'मैंने सोचा... आप जानते हैं... कि हमें राष्ट्रपुट—मेरा मतलब कुट—वंश की इस अद्भुत रचना को ज़रूर देखना चाहिए। मेरा भतीजा... आप जानते हैं... कला में बहुत रुचि रखता है। वह कला महाविद्यालय में दाखिला लेना चाहता है। वह अच्छी चित्रकारी करता है, आप जानते हैं। भुतो, अपनी चित्रकारी की किताब लाना मत भूलना।'
मैंने कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि मैं अपनी ड्राइंग की किताब नहीं लाया था। सौभाग्य से, इसी समय फेलुदा बाहर आया और उसने हम पर सरसरी नजर डाली। ‘अगर आप में से कोई गुफाओं में जाना चाहता है, तो मेरे साथ आ सकता है। मेरे पास अभी भी मेरी टैक्सी है,’ उसने अपनी नई आवाज में कहा।
‘ओह, धन्यवाद, यह तो बहुत बड़ी मेहरबानी है,’ लालमोहन बाबू राहत भरी नज़रों से उनकी ओर मुड़े। फिर शिष्टाचारवश वे दूसरे सज्जन की ओर मुड़े। ‘क्या आप हमारे साथ आना चाहेंगे?’ उन्होंने पूछा।
‘नहीं, धन्यवाद। मैं बाद में जाऊंगी। मुझे पहले नहाना है।’ हम बंगले से बाहर निकल गए।
‘फेलू बाबू, मुझे इस जगह के इतिहास के बारे में थोड़ा और बताइए,’ लालमोहन बाबू ने धीमी आवाज में विनती की। ‘मुझे कुछ और जानकारी मिले बिना काम नहीं चलेगा।’
क्या आपको भारतीय इतिहास के विभिन्न कालों के नाम पता हैं?
'जैसे कि?'
‘जैसे मौर्य, शुंग, गुप्त, कुषाण, चोल... इस तरह के?’

लालमोहन बाबू का चेहरा पीला पड़ गया। फिर टैक्सी में बैठते हुए उन्होंने कहा, 'सुनो, क्यों न मैं बहरा होने का नाटक करूँ? फिर अगर कोई मुझसे गुफाओं के इतिहास या किसी और ऐसे सवाल के बारे में पूछे जिसका जवाब देना मेरे लिए मुश्किल हो, तो मैं बस उन्हें नज़रअंदाज़ कर दूँगा। है ना ये अच्छा विचार?' ‘ठीक है। मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन याद रखें कि आपका अभिनय हर समय सुसंगत होना चाहिए।’
‘इसमें कोई दिक्कत नहीं है। ऐतिहासिक तथ्यों को याद रखने की कोशिश करने से तो कुछ भी बेहतर होगा। क्या आपने नहीं देखा कि मैंने अभी-अभी कैसे गड़बड़ कर दी? मेरा मतलब है, “कुट” की जगह “पुट” कहना तो बिल्कुल सही नहीं था, है ना?’
हम गेस्ट हाउस के पास से गुज़र रहे थे। जयंत मल्लिक बाहर खड़े थे, हाथ जेब में डाले, हमारे बंगले को घूर रहे थे। हरी रंग की एम्बेसडर कार अभी भी सड़क किनारे खड़ी थी। श्री मल्लिक को देखते ही फेलुदा ने अपने बैग से एक छोटी सी कंघी निकाली और मुझे दे दी। उन्होंने कहा, 'अपनी मांग बदल लो, सही मांग बनाओ।' मैंने रियरव्यू मिरर में खुद को देखा और फेलुदा के सुझाव के अनुसार झटपट अपनी मांग बदल ली। किसने सोचा था कि इतनी छोटी सी बात इतना बड़ा फर्क ला देगी? मुझे खुद भी लगा कि मेरा चेहरा बदल गया है।
हम मुख्य सड़क पर पहुँच गए। यहाँ से एक और सड़क पहाड़ी पर ऊपर की ओर जाती थी, घूमती हुई अंततः हमें प्रसिद्ध कैलाश मंदिर तक ले आई। हम यहाँ उतर गए और टैक्सी औरंगाबाद लौट गई।
पहले तो मुझे समझ ही नहीं आया कि मंदिर कैसा है। लेकिन जैसे ही मैं उसके विशाल प्रवेश द्वार से अंदर गया, मेरा सिर चकराने लगा। कुछ पलों के लिए मैं यक्षी के सिर, बदमाशों के गिरोह, श्री मल्लिक, शुभंकर बोस, सब कुछ भूल गया। मुझे बस पूरी तरह से अचंभित होने का एहसास हो रहा था। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और कल्पना करने की कोशिश की कि बारह सौ साल पहले कुछ लोगों ने हथौड़ों और छेनी के अलावा किसी और औजार का इस्तेमाल किए बिना पूरी पहाड़ी को तराशकर मंदिर बनाया होगा। लेकिन मैं कल्पना नहीं कर पाया। ऐसा लग रहा था मानो मंदिर हमेशा से वहीं था। यह इंसानों का बनाया हुआ बिल्कुल नहीं हो सकता था। या शायद इसे जादू से बनाया गया था; या शायद—जैसा कि फेलुदा की किताब में बताया गया था—किसी दूसरे ग्रह के जीव आए और इसे बनाया।

मंदिर के तीन ओर पहाड़ियाँ थीं। उसके चारों ओर एक संकरा रास्ता था। मंदिर के दोनों ओर कई गुफाएँ थीं—जो कोठरियों जैसी दिखती थीं—जिनमें और भी मूर्तियाँ थीं। हम मंदिर के चारों ओर घूमने के लिए उस रास्ते पर चलने लगे। फेलुदा लगातार वर्णन करते रहे: “यह स्थान 300 फीट लंबा, 150 फीट चौड़ा और मंदिर की ऊँचाई 100 फीट है। इसे बनाने के लिए 2000 टन चट्टान खोदी गई होगी... उन्होंने पहले शिखर बनाया, फिर आधार की ओर काम किया... मूर्तियों में देवी-देवता, पुरुष और स्त्रियाँ, पशु, रामायण और महाभारत की घटनाएँ, सब कुछ शामिल हैं। उनकी कुशलता, उनकी गणनाओं की सटीकता, उनकी इंजीनियरिंग की जानकारी के बारे में सोचिए, सौंदर्यशास्त्र की तो बात ही छोड़िए...” वे रुक गए। हमारे पास कदमों की आहट सुनाई दी। फेलुदा जानबूझकर पीछे रह गए और कैलाश पर्वत को हिलाते रावण की मूर्ति का निरीक्षण करने लगे।
शुभंकर बोस मंदिर के पीछे से निकले। उनके हाथ में एक नोटबुक थी और कंधे पर एक थैला लटका हुआ था। वे नक्काशी को ध्यान से देख रहे थे। तभी उनकी नज़र हम पर पड़ी। वे मुस्कुराए, फिर कुछ याद आने पर चिंतित होकर पूछा, 'अपने चचेरे भाई के बारे में कोई खबर?'
‘हां,’ मैंने सहज लहजे में जवाब दिया, ‘उसने संदेश भेजा है। उसे कुछ जरूरी काम से बॉम्बे जाना पड़ा। वह जल्द ही वापस आ जाएगा।’
‘ओह, अच्छा।’ श्री बोस मूर्तियों को निहारने में मग्न हो गए। हमारे पीछे से आई हल्की सी क्लिक की आवाज़ से मुझे पता चला कि फेलुदा ने एक तस्वीर खींची है। उनका कैमरा उनके गले में लटका हुआ था। अगर उन्हें खुद को फोटोग्राफर साबित करना था, तो स्वाभाविक रूप से कैमरा उनके साथ ही रहना चाहिए था जब भी वे बाहर जाते।
मैंने अपना सिर थोड़ा सा घुमाया और देखा कि फेलुदा हमारा पीछा कर रहा है। हमने मंदिर का चक्कर पूरा किया और लगभग मुख्य द्वार पर पहुँच ही गए थे कि तभी हमारी नज़र किसी और पर पड़ी। नीली कमीज़, सफ़ेद पतलून। श्री जयंत मल्लिक। शायद वे अभी-अभी आए थे। वे चुपचाप खड़े थे, लेकिन जैसे ही उन्होंने हमें देखा, वे हाथी की मूर्ति की ओर बढ़ गए। उनके हाथ में वही थैला था जो मैंने उन्हें पहले ले जाते देखा था। वे इसे लेकर बारासात से कलकत्ता आए थे। मैंने उन्हें क्वीन्स मेंशन में जाते हुए देखा था, थैला पकड़े हुए। फेलुदा अब लगभग हमारे पास पहुँच ही गया था। मैं यह जानने के लिए बेताब था कि उस थैले में क्या है। फेलुदा उस आदमी के पास जाकर, उसका कॉलर पकड़कर उसे

चुनौती क्यों नहीं देता? वह यह क्यों नहीं कहता, 'वह टूटा हुआ सिर कहाँ है? उसे तुरंत बाहर निकालो!'
लेकिन नहीं, मुझे पता था कि फेलूदा ऐसा नहीं करेगा। पर्याप्त सबूत के बिना वह ऐसा कर ही नहीं सकता था। यह सच था कि मल्लिक सिदिकपुर गया था जहाँ विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ था; यह सच था कि वह एलोरा तक गया था और उसे बंबई में किसी से बात करते हुए सुना गया था, जिसमें वह अपनी बेटी के पिता के पास लौटने की बात कर रहा था। लेकिन इतना काफी नहीं था। फेलूदा को उससे बात करने से पहले थोड़ा और इंतजार करना होगा।
हालांकि, मल्लिक के बैग में कोई भारी सामान है या नहीं, यह पता लगाने का एक तरीका था। मैंने फेलुदा को हमारे पास से गुजरते हुए देखा, वह मल्लिक के पास गया और उसे धक्का दिया। 'ओह, माफ़ कीजिए!' उसने जल्दी से कहा और अपना कैमरा एक मूर्ति पर केंद्रित करने लगा। मैंने देखा कि धक्का लगने से बैग इधर-उधर हिल रहा था। उसमें रखा सामान ज़्यादा भारी नहीं लग रहा था।
हम मंदिर से निकल गए। बाहर निकलते समय हमने दो और आदमियों को देखा। उनमें से एक वही हट्टे-कट्टे सज्जन थे जिन्हें लालमोहन बाबू ने हाल ही में प्रभावित करने की कोशिश की थी, और दूसरे गंजे अमेरिकी थे।
पहला व्यक्ति हाव-भाव के साथ कुछ समझा रहा था; दूसरा व्यक्ति सहमति में सिर हिला रहा था।
पता नहीं क्यों, अचानक मुझे लगने लगा कि हमारे आसपास के सभी लोग संदिग्ध हैं। उन सभी पर कड़ी नजर रखनी चाहिए।
क्या फेलुदा भी यही सोच रहा था?

सात

फेलुदा वापसी के रास्ते में गेस्ट हाउस में रुकना चाहता था। उसने स्पष्टीकरण देते हुए कहा, 'मैं देखना चाहता हूं कि वे कौन से अखबार बेचते हैं।'
लालमोहन बाबू और मैं बंगले में लौट आए। हम दोनों को भूख लग रही थी, इसलिए लालमोहन बाबू ने चौकीदार को बुलाया और चाय-बिस्किट लाने को कहा। भोजन कक्ष छोटी सी लॉबी के सामने था। उसके दाहिनी ओर का कमरा - कमरा नंबर एक - हमारा था। कमरा नंबर दो खाली था। इन दोनों कमरों के सामने कमरा नंबर तीन और चार थे। एक कमरे में हट्टे-कट्टे सज्जन थे और दूसरे में फेलुदा।
लालमोहन बाबू अब भी जासूसी करने के मूड में थे। चाय की चुस्की लेते हुए उन्होंने कहा, ‘सुनो, तपेश, मुझे लगता है कि हम फिलहाल अमेरिकी को इस मामले से अलग रख सकते हैं। इससे हमारे पास तीन और लोग बचते हैं: बोस, मल्लिक और वह आदमी जो यहाँ ठहरा हुआ है। हम बोस और मल्लिक के बारे में कुछ जानते हैं—सच या झूठ, यह तो भगवान ही जानता है—लेकिन तीसरे आदमी के बारे में हमें बिल्कुल कुछ नहीं पता, उसका नाम तक नहीं। हम अभी उसके कमरे में झाँक सकते हैं, लगता है कि वह बंद नहीं है।’
मुझे यह विचार पसंद नहीं आया, इसलिए मैंने कहा, 'अगर चौकीदार हमें देख ले तो क्या होगा?'
‘अगर मैं अंदर जाऊं तो वो हमें देख नहीं पाएगा, तुम यहीं रुककर उस पर नज़र रखना। अगर चौकीदार इधर आता दिखे तो खांसना शुरू कर देना। मैं तुरंत उस कमरे से बाहर निकल जाऊंगा। मुझे लगता है तुम्हारे चचेरे भाई को मदद की ज़रूरत होगी। इस आदमी का सूटकेस भी मुझे काफी भारी लगा।’
अचानक पूरी दुनिया भारी सूटकेसों से भर गई। लेकिन मैं उसे रोक नहीं सका। सच कहूँ तो, हालाँकि मैंने फेलुदा के अलावा किसी और के लिए ऐसा पहले कभी नहीं किया था, फिर भी उसके सुझाव में रोमांच की झलक थी, इसलिए मैंने हाँ कर दी।

मैं पीछे वाले बरामदे में गया। बरामदे के सामने एक छोटा सा आंगन था, जिसके पार रसोईघर था और उसके बगल में चौकीदार का कमरा था। इस कमरे के बाहर एक साइकिल खड़ी थी। लगभग बारह साल का एक लड़का—शायद उसका बेटा—पूरी एकाग्रता से उसकी सफाई कर रहा था। हल्की सी चरमराहट की आवाज सुनकर मैंने सिर घुमाया और लालमोहन बाबू को कमरा नंबर तीन में चुपके से जाते देखा। कुछ मिनट बाद, उन्होंने जोर से खांसकर इशारा किया कि उनका काम खत्म हो गया है। मैं अपने कमरे में लौट आया।
‘उसमें कुछ खास नहीं था,’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘उसका सूटकेस काफी पुराना लग रहा था, लेकिन वह बंद था और हैंडल खींचने पर भी नहीं खुला। मेज पर “स्टीफंस कंपनी, कलकत्ता” की मुहर लगी एक खाली चश्मे की पेट की डिब्बी और ओडोमोस की एक ट्यूब पड़ी थी। इन चीजों के अलावा, मुझे और कुछ नहीं मिला…’ ‘तुम किसकी संपत्ति की बात कर रहे हो?’ फेलुदा ने पूछा। हम चौंककर ऊपर देखने लगे। वह लगभग भूत की तरह चुपचाप हमारे कमरे में आ गया था।
इसके लिए ईमानदारी से कबूलनामा करना ज़रूरी था। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह हम दोनों में से किसी पर भी नाराज़ नहीं हुआ। उसने बस इतना कहा, 'क्या ऐसा करने का कोई खास कारण था?'
‘नहीं, बात बस इतनी सी है कि हम उस आदमी के बारे में कुछ नहीं जानते, है ना?’ लालमोहन बाबू ने समझाने की कोशिश की। ‘मेरा मतलब है, उसने हमें अपना नाम तक नहीं बताया। और वो देखने में थोड़ा हट्टा-कट्टा लगता है, है ना? आपने कहा था ना कि इसमें पूरा एक गिरोह शामिल है? तो मैंने सोचा…’
तो आपको लगा कि वह उनमें से एक होगा? उसका नाम जानने के लिए उसके कमरे की तलाशी लेने की कोई ज़रूरत नहीं थी। उसका नाम आर.एन. रक्षित है। उसका नाम उसके सूटकेस के एक तरफ लिखा हुआ है। मुझे नहीं लगता कि इस समय हमें उसके बारे में और कुछ जानने की ज़रूरत है। कृपया उसके कमरे में दोबारा न जाएं। इसका सीधा मतलब है अनावश्यक जोखिम उठाना। आखिरकार, हमारे पास उस पर शक करने का कोई ठोस कारण नहीं है।
'बहुत बढ़िया। अब बस अमेरिकी ही बचा है।'
'उनका नाम लेविसन है, सैम लेविसन। एक और यहूदी, और वह भी बहुत धनी हैं। न्यूयॉर्क में उनकी एक आर्ट गैलरी है।'
मैंने आश्चर्य से पूछा, 'आपको यह सब कैसे पता?'

'गेस्ट हाउस के मैनेजर ने मुझे बताया। हमारी बातचीत शुरू हुई। वह बहुत ही नेक इंसान हैं, जासूसी उपन्यासों के बेहद शौकीन हैं। दरअसल, जब से उन्होंने दूसरे मंदिरों में हुई चोरियों के बारे में पढ़ा है, तब से वह यहां चोरों और बदमाशों के आने का इंतजार कर रहे हैं।'
‘क्या आपने उसे बताया कि आप यहाँ क्यों आए थे?’
'हां। वह हमारी बहुत मदद कर सकता है। यह मत भूलिए कि मल्लिक उसके गेस्ट हाउस में रुका हुआ है। लगता है मल्लिक ने पहले ही बॉम्बे में किसी को फोन करने की कोशिश की थी, लेकिन कॉल नहीं लगी।'
उस रात बंगले में चारों मेहमान एक साथ खाना खाने बैठे। फेलुदा एक शब्द भी नहीं बोला। श्री रक्षित ने लालमोहन बाबू की ओर मुड़कर उनसे बातचीत शुरू करने की कोशिश की और पूछा कि क्या उन्हें इतिहास के किसी विशेष कालखंड का ज्ञान है। इसके जवाब में लालमोहन बाबू ने कहा कि उन्हें पिरामिडों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है, सिवाय इसके कि वे मिस्र में हैं। फिर वे दाल के कटोरे में चपाती के टुकड़े डुबोने लगे। श्री रक्षित ने मुझे हैरानी भरी नजरों से देखा। मैंने कान पर हाथ रखकर सिर हिलाकर यह संकेत दिया कि मेरे 'चाचा' को कम सुनाई देता है। श्री रक्षित ने जोर से सिर हिलाया और आगे कोई सवाल नहीं पूछा।
रात के खाने के बाद, फेलुदा सीधे अपने कमरे में चले गए और मैं और लालमोहन बाबू टहलने निकल गए। बाहर काफी हवा चल रही थी। काले बादलों के बीच से हल्का चाँद चमक रहा था। कहीं से हसनाहना की खुशबू आ रही थी। इन सब से प्रेरित होकर लालमोहन बाबू ने एक शास्त्रीय राग गाना शुरू कर दिया। मुझे अचानक बहुत हल्कापन महसूस हुआ। ठीक उसी समय, हमने गेस्ट हाउस से एक आदमी को हमारी ओर आते देखा। लालमोहन बाबू ने गाना बंद कर दिया (जो एक राहत की बात थी क्योंकि वह बिल्कुल बेसुरा गा रहे थे) और वहीं रुक गए। जैसे ही वह आदमी करीब आया, मैंने उसे पहचान लिया। वह शुभंकर बोस थे। 'काश तुम्हारा चचेरा भाई यहाँ होता!' लालमोहन बाबू ने धीरे से कहा।
‘टहलने निकले हो क्या?’ श्री बोस ने पूछा। फिर उन्होंने गला साफ किया, इधर-उधर दो-तीन बार देखा, अपनी आवाज धीमी की और बोले, ‘अह... क्या आप नीली शर्ट वाले उस आदमी को जानते हैं?’
इस बार लालमोहन बाबू बहरे होने का नाटक नहीं कर सके। श्री बोस उनसे पहले ही बात कर चुके थे।

‘क्या उसने कहा कि वह हमें जानता है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
श्री बोस ने एक बार फिर पीछे मुड़कर देखा। उन्होंने हमसे कहा, ‘वह आदमी बड़े अजीब हैं। उनका कहना है कि उन्हें भारतीय कला में रुचि है और यह एलोरा की उनकी पहली यात्रा है। फिर भी, जब मैं उनसे मंदिर में मिला, तो वे किसी भी चीज़ से प्रभावित नहीं दिखे। मेरा मतलब है, बिल्कुल भी नहीं। मुझे तो हर चीज़ से उतना ही रोमांच हुआ, जबकि यह मेरी दूसरी यात्रा है। अब, अगर उस आदमी को कला और मूर्तिकला की परवाह नहीं है, तो वह यहाँ क्यों है? वह ऐसा दिखावा क्यों कर रहा है जो वह स्पष्ट रूप से नहीं है?’
हम चुप रहे। हम क्या कह सकते थे?
‘क्या आपने हाल ही में अखबार पढ़े हैं?’ श्री बोस ने आगे पूछा।
'तुम क्यों पूछ रहे हो?'
'हमारी प्राचीन कलाकृतियों को बेचा जा रहा है। मंदिरों से मूर्तियां रातोंरात गायब हो रही हैं।'
‘सच में? नहीं, मुझे तो पता ही नहीं था। कितनी शर्म की बात है! ये तो आम बात है, है ना?’ लालमोहन बाबू ने कहा। उनका अभिनय कुछ खास असरदार नहीं था, लेकिन सौभाग्य से श्री बोस ने इस पर ध्यान नहीं दिया। वे पास आए और बोले, ‘वह आदमी कुछ देर पहले ही गेस्ट हाउस से चला गया।’
'कौन सा आदमी?'
‘Mr Mallik.’
‘क्या!’ हम दोनों एक साथ बोले। लालमोहन बाबू सही थे। फेलुदा को यहाँ होना चाहिए था।
'हम भी क्यों न चलें?' श्री बोस ने उत्साह से कांपती आवाज में पूछा।
‘क-अब? क-कहाँ जाना है?’ लालमोहन बाबू हकलाते हुए बोले।
गुफाओं की ओर।
लेकिन अब तो वे बंद ही होंगे। चौकीदार तो होंगे ही?
हाँ, लेकिन चौंतीस गुफाओं के लिए सिर्फ़ दो ही गार्ड हैं। इसलिए कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। मैंने मल्लिक को बैग लेकर जाते देखा। वो और तुम्हारे बंगले में रहने वाला वो हिप्पी, बैग लेकर इधर-उधर घूमते रहते हैं। असल में, मुझे वो हिप्पी भी संदिग्ध लगता है। क्या तुम जानते हो कि वो कौन है?

लालमोहन बाबू लगभग चौंक गए। 'वह... वह एक फोटोग्राफर हैं। बहुत अच्छे फोटोग्राफर। उन्होंने हमें अपनी कुछ तस्वीरें दिखाईं। वह यहां एक असाइनमेंट पर आए हैं।'
बंगले से कोई बाहर आया। वह श्री रक्षित थे, एक हाथ में मजबूत छड़ी और दूसरे हाथ में टॉर्च लिए हुए। उन्होंने गहरे रंग का भारी रेनकोट पहना हुआ था। वे एक मिनट के लिए रुके और लालमोहन बाबू के कान में फुसफुसाए: 'खाने के बाद एक मील पैदल चलना!' फिर वे मुस्कुराए और गेस्ट हाउस की ओर चल दिए। श्री बोस ने 'शुभ रात्रि!' कहा और उनके पीछे चल दिए। लालमोहन बाबू ने भौंहें चढ़ाकर कहा, 'उस आदमी ने मुझे एक मील पैदल चलने के लिए क्यों कहा?'
इससे तुम्हारा पाचन ठीक हो जाएगा। चलो अब, फेलूदा को ढूंढते हैं। उसे बताना होगा कि हमने अभी क्या सुना। लगता है सब लोग गुफाओं में चले गए हैं। मुझे अच्छा नहीं लग रहा। देखते हैं फेलूदा क्या सोचता है।
बंगले के अंदर अंधेरा था, चौकीदार के कमरे में जल रही लालटेन को छोड़कर। इससे हमें हैरानी हुई। श्री रक्षित ने बाहर जाने से पहले अपनी लाइट बंद कर दी थी, और हमने भी। लेकिन फेलुदा का दरवाजा बंद क्यों था? मुझे उसके नीचे कोई रोशनी क्यों नहीं दिख रही थी? क्या वह सो गया था? अभी तो सिर्फ साढ़े दस बजे थे।
उनके कमरे में एक खिड़की थी जो बरामदे की ओर खुलती थी। लेकिन इस समय वह खिड़की मजबूती से बंद थी और पर्दे लगे हुए थे। मैं उसके पास गया और धीरे से फेलुदा का नाम पुकारा। कोई जवाब नहीं आया। वह ज़रूर बाहर गए होंगे। लेकिन अगर उन्होंने मुख्य द्वार का इस्तेमाल किया होता, तो हम उन्हें ज़रूर देख लेते। शायद वह चौकीदार के कमरे के पीछे वाले छोटे से दरवाजे से बाहर गए हों?
बड़ी मूर्खता से हम अपने कमरे में वापस गए और बत्ती जला दी। तभी हमारी नज़र ज़मीन पर पड़े एक कागज़ के टुकड़े पर पड़ी। उस पर फेलुदा की लिखावट में लिखा था, 'अपने कमरे में रहो।'
‘तपेश, मेरे बेटे,’ लालमोहन बाबू ने आह भरते हुए कहा, ‘जानते हो मुझे सबसे ज्यादा क्या परेशान कर रहा है? तुम्हारे चचेरे भाई का व्यवहार। यही सबसे ज्यादा रहस्यमय है। वरना, सच कहूँ तो, मुझे इस मामले में ज्यादा रहस्य नजर नहीं आता।’

फेलुदा ने हमें अंदर ही रहने को कहा था, लेकिन अपने लौटने के समय के बारे में कुछ नहीं बताया था। सोने का तो सवाल ही नहीं था। इसलिए मैंने अगले तीस मिनट लालमोहन बाबू के साथ noughts-and-crosses खेला। फिर उन्होंने कहा कि वे मुझे अपने अगले उपन्यास की कहानी सुनाएंगे। उन्होंने घोषणा की, ‘इस बार मैंने एक नए प्रकार की लड़ाई शामिल की है। मेरे नायक के हाथ-पैर बंधे होंगे, लेकिन फिर भी वह केवल अपने दिमाग का इस्तेमाल करके खलनायक को हरा देगा।’
मैं पूछने ही वाला था कि क्या उसका मतलब प्रखर रुद्र की बुद्धि से है, या उसका हीरो सिर्फ़ अपनी धौंस जमाकर जीत हासिल करने वाला है, तभी फेलुदा लौट आया। हम उम्मीद भरी निगाहों से ऊपर देखने लगे, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। तब तक हम दोनों यह जान चुके थे कि अगर फेलुदा जानकारी देना नहीं चाहता, तो हज़ार सवाल भी उसका मुँह नहीं खोलते। दूसरी तरफ, अगर वह चाहे तो हमें सब कुछ बता सकता है।
अंत में उन्होंने जो कहा, उससे हम सब चौंक गए। उन्होंने गंभीरता से पूछा, 'लालमोहन बाबू, क्या आप इस बार हथियार लाए हैं?'
लालमोहन बाबू को हथियार इकट्ठा करने का शौक था। जब हम राजस्थान गए थे, तब वे अपने साथ एक नेपाली कटार ले गए थे। फिर जब वे शिमला गए, तब उनके पास एक बूमरैंग था। फेलुदा के सवाल पर उनकी आँखों में चमक आ गई। उन्होंने कहा, 'जी हाँ, इस बार मेरे पास बम है।'
'एक बम?'
मुझे उसकी बात पर मुश्किल से ही यकीन हुआ। लालमोहन बाबू ने अपना सूटकेस खोला और उसमें से एक भारी-भरकम भूरे रंग की वस्तु निकाली, जो कुछ-कुछ टॉर्च जैसी दिखती थी। उन्होंने उसे फेलुदा को देते हुए कहा, “मेरे पड़ोसी श्री समद्दार का बेटा उत्पल सेना में है। वह पिछले मार्च में मेरे घर आया था और उसने मुझे यह दिया था। “देखो चाचा जी, मैं आपके लिए क्या लाया हूँ!” उसने कहा, “यह एक बम है। इसका इस्तेमाल गंभीर युद्ध में होता है।” उत्पल को मेरे उपन्यास पढ़ना बहुत पसंद है।’
फेलुदा ने इसका संक्षिप्त निरीक्षण करने के बाद कहा, 'मुझे इसे अपने पास रखने दो। इसे कहीं और रखना बहुत खतरनाक है।'
'बहुत बढ़िया। आपके हिसाब से इसका वजन कितनी मेटागन के बराबर होगा?'

उसका इशारा ज़ाहिर तौर पर 'मेगाटन' की ओर था, लेकिन फेलुदा ने उसकी इस आखिरी टिप्पणी को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया। उसने 'बम' को अपने कंधे के बैग में रखा और कहा, 'चलो बाहर चलते हैं। बाकी सब तो चले गए हैं, तो हम अंदर क्यों रहें?'
जब हम डाक बंगले से निकले, तब साढ़े ग्यारह बज रहे थे। चाँद बादलों से लगभग पूरी तरह ढक चुका था। हवा अभी भी चल रही थी। गेस्ट हाउस के एक कमरे में बत्ती जल रही थी। फेलुदा ने बताया कि वह अमेरिकी का कमरा था। यह बताना नामुमकिन था कि बोस और मल्लिक वापस लौटे थे या नहीं।
जब तक हम मुख्य सड़क पर पहुँचे, पूर्वी आकाश घोर बादलों से घिरा हुआ था। आकाश में एक तेज़ गड़गड़ाहट सुनकर लालमोहन बाबू चौंक गए, 'हे भगवान, अगर हम बारिश में भीग गए तो क्या होगा?'
'अगर हम बारिश शुरू होने से पहले गुफाओं तक पहुंच जाते हैं, तो हमारे पास आश्रय लेने के लिए बहुत सारी जगहें होंगी,' फेलुदा ने हमें आश्वस्त किया। सौभाग्य से, इसके बाद काफी देर तक मौसम सूखा रहा। हम कैलाश पहुँच गए, लेकिन फेलुदा मुख्य द्वार से अंदर नहीं गए। वे बाईं ओर मुड़ गए। थोड़ी देर बाद, वे मुख्य मार्ग से हटकर पहाड़ी पर चढ़ने लगे। मैं उनकी इस आदत से इतना परिचित था कि समझ गया कि वे मुख्य मार्ग का उपयोग किए बिना मंदिर में प्रवेश करने का कोई दूसरा रास्ता तलाश रहे थे। चारों ओर झाड़ियाँ और बिखरे हुए पत्थर थे, लेकिन चाँदनी—भले ही क्षणिक थी—ने हमें रास्ता खोजने में मदद की।
फेलुदा दाईं ओर मुड़ा। अब हम उसी रास्ते से वापस जा रहे थे जिससे आए थे, लेकिन हम उस रास्ते से कुछ फीट ऊपर चल रहे थे जिसका इस्तेमाल आम तौर पर पर्यटक करते थे। कुछ मिनट बाद, फेलुदा अचानक रुक गया। वह अपनी दाईं ओर किसी चीज़ को देख रहा था। मैंने भी उसकी नज़र का पीछा किया।
दूर से देखने पर ऐसा लग रहा था मानो ज़मीन पर रेशम की एक लंबी पट्टी बिछी हो। यह मुख्य कस्बे की ओर जाने वाली सड़क थी। एक आदमी तेज़ी से इस सड़क पर चल रहा था, या तो गेस्ट हाउस की ओर या बंगले की ओर।
‘रक्षित नहीं,’ लालमोहन बाबू ने फुसफुसाते हुए कहा।
'आपको कैसे मालूम?'
‘रक्षित ने रेनकोट पहना हुआ था।’ वह सही था।

कुछ पल चुप रहने के बाद लालमोहन बाबू ने कहा, 'यह सर्कस में बहुत अच्छा प्रदर्शन करेगा!'
गुफा संख्या पंद्रह निचले स्तर पर थी। फेलूदा वहीं गया था। तीन मिनट बाद (ऐसा लगा जैसे तीन घंटे बीत गए हों), वह लगभग उसी तरह से फिर ऊपर चढ़ गया। एक हाथ में टॉर्च, कंधे पर लटका थैला और कमर में रिवाल्वर रखे हुए वह यह सब कैसे कर पाता था, यह मेरी समझ से परे है।
हांफते हुए उसने हमें बताया, 'वह दास अवतार गुफा है। उसमें दो मंजिलें हैं और कुछ बेहद खूबसूरत मूर्तियां हैं।'
‘क्या आपने... क्या आपने देखा कि वह कौन था?’ मैंने हांफते हुए पूछा। फेलुदा ने तुरंत जवाब नहीं दिया। फिर उसने कहा, ‘यह उतना आसान नहीं है जितना मैंने सोचा था। इस उलझे हुए मामले को सुलझाने में मुझे थोड़ा समय लगेगा।’
हमें फिर से मुख्य रास्ता मिल गया और हम मंदिर के तल तक उतर गए। लेकिन फेलुदा का काम अभी खत्म नहीं हुआ था। उसने एक चौकीदार को ढूंढा और उससे पूछा कि क्या उसने किसी को ऊपर जाते देखा है।
'नहीं, सर,' चौकीदार ने उत्तर दिया।
‘क्या आपने कोई आवाज़ सुनी? क्या आपको कुछ भी संदिग्ध लगा?’
'नहीं, महोदय। बहुत तेज बिजली कड़क रही थी। मुझे और कुछ सुनाई नहीं दिया।' क्या हम मंदिर में जा सकते हैं?
मुझे पता था कि वह आदमी मना कर देगा, और उसने मना कर दिया।
‘जी नहीं, महोदय। मुझे आदेश है कि रात के इस समय किसी को भी अंदर न आने दूं।’ हम बंगले की ओर वापस चल पड़े। जैसे ही हम पास पहुंचे, हमने कुछ बेहद अजीब देखा। इमारत के पूर्वी हिस्से में दो खिड़कियाँ थीं जो सड़क की ओर खुलती थीं। हम इन्हें बाहर से देख सकते थे। इनमें से एक फेलुदा की थी, दूसरी श्री रक्षित की। फेलुदा का कमरा अंधेरा था, लेकिन श्री रक्षित के कमरे में एक रोशनी चमकी। यह टॉर्च की रोशनी थी, लेकिन यह स्थिर नहीं थी। दरअसल, जिसने भी इसे पकड़ा हुआ था, वह पागल सा लग रहा था। रोशनी पूरे कमरे में नाचती रही, फिर खिड़की पर आई, गेस्ट हाउस की दिशा में एक बार चमकी, गिरी और सड़क के किनारे झाड़ियों पर जाकर वापस कमरे में चली गई। हम यह नहीं देख पाए कि वह कौन था। ‘बेहद दिलचस्प!’ फेलुदा ने बुदबुदाया।
हम बंगले में लौट आए। तब तक हल्की-हल्की बारिश शुरू हो चुकी थी और बाहर घना अंधेरा छा चुका था।

आठ

मैंने पहले भी गौर किया था कि हमारे कारनामों में अक्सर अप्रत्याशित मोड़ आ जाते थे। ऐसा होने पर फेलुदा शायद ही कभी अपना धैर्य खोते थे। दरअसल, अप्रत्याशित मुश्किलों से निपटते हुए भी शांत रहने की उनकी क्षमता पर मैं हमेशा मुग्ध रहता था। लेकिन इस बार जो हुआ, उससे वे बहुत नाराज़ हो गए। रात को सोने से पहले हमने सुबह जल्दी निकलकर उस जगह पर जाने का फैसला किया था जहाँ से वह अजीब सी आवाज़ आई थी। फेलुदा ने कहा कि इसकी जाँच ज़रूरी है। इसलिए हम सुबह पाँच बजे उठे और चाय पीने के बाद आधे घंटे बाद बंगले से निकल गए। फेलुदा हमसे पहले उठकर अपना मेकअप ठीक कर रहे थे। मैंने अपने बालों में सही मांग निकालना याद रखा। लालमोहन बाबू ने भी अपने पहनावे में कुछ बदलाव करने की इच्छा जताई, लेकिन फेलुदा ने इतनी दृढ़ता से 'ना!' कहा कि उन्हें रुकना पड़ा।
सूरज उगते ही गुफाएं आगंतुकों के लिए खुलने वाली थीं। हम सबसे पहले पहुंचना चाहते थे, इसलिए हम सुबह 6 बजे ही वहां पहुंच गए। हमें यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि वहां लोगों की भारी भीड़ थी। बाहर बड़ी संख्या में कारें और वैन खड़ी थीं। एक रिफ्लेक्टर की रोशनी से मुझे पता चला कि क्या हो रहा है। यह एक फिल्म यूनिट थी। हमें पता चला कि वे एक हिंदी फिल्म की शूटिंग के लिए मुंबई से आए थे। कलाकार अभी तक नहीं पहुंचे थे, लेकिन बाकी क्रू तैयारियां कर रहा था। 'अरे नहीं!' फेलुदा ने निराशा से कहा। 'वे कोई और जगह क्यों नहीं ढूंढ पाए?'
एक युवक फिल्म पत्रिका पकड़े इधर-उधर भाग रहा था। लालमोहन बाबू ने उसे एक तरफ बुलाया।
‘क्या आपको इस फिल्म का नाम पता है?’ उसने पूछा।
‘ओह हाँ। करोड़पति।’
इसमें कौन-कौन अभिनय कर रहा है?
‘तीन शीर्ष सितारे। आज के शॉट्स में रूपा, अर्जुन मेहरोत्रा और बलवंत चोपड़ा शामिल होंगे। नायिका, नायक और खलनायक।’

अर्जुन मेहरोत्रा का नाम सुनते ही लालमोहन बाबू की आंखें फटी रह गईं। उन्होंने पूछा, 'क्या गाने होंगे?'
नहीं, नहीं। हम लड़ाई के दृश्य फिल्माने आए हैं। स्टंटमैन, डबल और फाइट डायरेक्टर सब यहाँ मौजूद हैं। हीरो एक गुफा से विलेन का पीछा करते हुए मुख्य मंदिर तक जाएगा।
और नायिका?
‘वह गुफा में ही रहेगी। खलनायक ने उसे वहाँ कैद कर रखा है। लेकिन अब नायक आ गया है, इसलिए खलनायक को अपनी जान बचाकर भागना पड़ेगा। कहानी का चरमोत्कर्ष शिखर पर घटित होगा।’
‘शिखर?’
'हाँ।'
‘निर्देशक कौन है?’
‘मोहन शर्मा। लेकिन आज के ये शॉट्स फाइट डायरेक्टर अप्पा राव लेंगे।’ आपको क्या लगता है कि इस पूरी प्रक्रिया में कितना समय लगेगा?
‘खैर... यह कहना मुश्किल है। हमें उम्मीद है कि हम दस बजे तक शुरू कर देंगे। फिर हमें एक बजे तक काम खत्म कर देना चाहिए।’
इसका मतलब यह था कि वे लगभग पूरे दिन पूरे परिसर पर कब्जा जमाए रखेंगे। ‘मुझे विश्वास नहीं हो रहा!’ फेलुदा ने दांत भींचते हुए कहा। ‘इन्हें पूरी जगह पर कब्जा करने की अनुमति कैसे मिली?’
चूंकि हम मंदिर में प्रवेश नहीं कर सके, इसलिए हमने पिछली रात की तरह ही मंदिर के ऊपर से चढ़ने का फैसला किया। लेकिन मंदिर के आसपास की पहाड़ियों पर भी फिल्म यूनिट के लोग उपकरण लगा रहे थे। हमें यहाँ पता चला कि फिल्म क्रू आम आगंतुकों को मंदिर में प्रवेश नहीं करने दे रहा था, लेकिन वे खुद भी अंदर नहीं जा सकते थे, क्योंकि शूटिंग की अनुमति देने वाला आधिकारिक पत्र अभी तक नहीं आया था। उसे एक अलग गाड़ी में लाया जा रहा था। ड्यूटी पर तैनात चौकीदार ने पत्र दिखाए बिना मुख्य द्वार खोलने से साफ इनकार कर दिया था।
फेलुदा ने झुंझलाहट में अपनी जीभ चटकाई और कहा, 'अब और समय बर्बाद न करें। देखते हैं कि क्या हम गुफा नंबर पंद्रह में जा सकते हैं। कम से कम हम इस शोर-शराबे से दूर उन खूबसूरत मूर्तियों को देख तो सकते हैं।'

‘क्या हुआ? क्या गड़बड़ है?’ लालमोहन बाबू ने उससे पूछा। ‘मंदिर के पीछे एक लाश पड़ी है। यह बहुत भयानक है!’
‘हे भगवान! वो कौन आदमी था जिसे वे कार तक ले गए?’
‘अप्पा राव। शव को सबसे पहले उन्होंने ही देखा था। एक नजर देखते ही वे बेहोश हो गए।’
फेलुदा और श्री रक्षित मंदिर के अंदर चले गए थे। फिल्म की पूरी टीम बाहर आ रही थी। अब यहाँ आज फिल्म की शूटिंग का कोई सवाल ही नहीं था।
लालमोहन बाबू और मैं बाईं ओर बने रास्ते पर चलने लगे। हमारे दाईं ओर, नीचे, हाथियों और शेरों की कई मूर्तियाँ थीं। ऐसा लग रहा था मानो वे पूरे मंदिर को अपने कंधों पर ढो रहे हों। जैसे ही रास्ता दाईं ओर मुड़ा, हम रुक गए। वहाँ पुरुषों का एक समूह खाई में झाँक रहा था। शायद वहीं शव पड़ा था। श्री रक्षित भीड़ से निकले और हमें रोक दिया। उन्होंने कहा, 'आगे मत जाओ। यह दृश्य अच्छा नहीं है।' सच कहूँ तो, मुझे शव देखने की कोई इच्छा नहीं थी, लेकिन मुझे उस मृत व्यक्ति के बारे में जानने की जिज्ञासा ज़रूर थी। वह कौन था? फेलुदा बाहर आया और मेरे पूछने से पहले ही उसने इस सवाल का जवाब दे दिया।
उन्होंने कहा, 'शुभंकर बोस। मुझे लगता है कि वह चट्टान के किनारे से सीधे नीचे चट्टानों पर गिर गए।'
‘अजीब बात है, कितनी अजीब बात है!’ लालमोहन बाबू ने धीरे से बुदबुदाया। ‘मेरे अपने खलनायक घनश्याम कर्कट की मृत्यु बिल्कुल इसी तरह होनी चाहिए थी!’
फेलुदा आगे बढ़ने लगा, इसलिए लालमोहन बाबू और मुझे भी आगे बढ़ना पड़ा। श्री रक्षित हमसे आगे थे, लेकिन वे मुड़कर रुक गए। उन्होंने सिर हिलाते हुए कहा, 'मैंने उसे कल रात देखा था। मैंने उसे अंधेरे में चढ़ने की कोशिश न करने के लिए कहा था। लेकिन उसने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। मुझे कैसे पता चलता कि वह आत्महत्या करने की योजना बना रहा था?'
श्री रक्षित हमें सोचने के लिए कुछ देकर चले गए। आत्महत्या का विचार मेरे मन में कभी नहीं आया था। मैंने फेलुदा की ओर देखा, लेकिन वह मंदिर के बाईं ओर की पहाड़ी पर चढ़ने लगा था। श्री बोस भी उसी पहाड़ी पर चढ़े होंगे।

चट्टान के पास जमा हुए लोग जा चुके थे। श्री बेस की मृत्यु ने एक तरह से हमारी जांच को आसान बना दिया था। फेलुदा चट्टान के किनारे के पास गया और उस क्षेत्र का सावधानीपूर्वक निरीक्षण किया।
ज़मीन में एक छोटा सा गड्ढा था, किनारे से बस कुछ ही फीट दूर। लोग उस पर और उसके चारों ओर से चलते-चलते उसे लगभग गायब कर चुके थे। लेकिन जब फेलुदा ने अपने बैग से एक स्टील का टेप निकाला और उसे उसमें धकेला, तो हमें एहसास हुआ कि वह काफी गहरा गड्ढा था। अब फेलुदा ने फिर से ज़मीन को ध्यान से देखा। लालमोहन बाबू और मैंने दोनों ने देखा कि किस चीज़ ने उनका ध्यान खींचा था। जमीन पर एक गहरी दरार थी, जो चट्टान के किनारे से लेकर गड्ढे तक फैली हुई थी।
‘क्या तुम जानते हो यह क्या है?’ फेलुदा ने मुझसे पूछा। मैं जवाब नहीं दे सका। फेलुदा ने आगे कहा, ‘यह निशान रस्सी का है। किसी ने एक लोहे की छड़ से रस्सी बांधी, छड़ को ज़मीन में गहराई तक गाड़ा और उस रस्सी का इस्तेमाल करके चट्टान से नीचे उतरने की कोशिश की। याद है कल हमने जो आवाज़ सुनी थी? वह रस्सी के पीछे खींचने की आवाज़ थी। चूंकि सामने से नीचे गुफा में जाने का कोई रास्ता नहीं था, इसलिए किसी ने पीछे से वहाँ पहुँचने का यह रास्ता खोज निकाला।’
‘लेकिन... वो किस तरह की रस्सी रही होगी?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। ‘मेरा मतलब है... अगर आपको सौ फीट नीचे उतरना हो, तो आपको एक बेहद मजबूत रस्सी की जरूरत होगी, है ना?’
'हां। नायलॉन की रस्सी से काम बन जाएगा। यह हल्की होगी, लेकिन बहुत मजबूत होगी।'
मैंने धीरे से कहा, 'इसका मतलब है कि यहां एक दूसरा व्यक्ति भी था।' 'मेरा मतलब है, श्री बोस के अलावा।'
'ठीक है। इस दूसरे व्यक्ति ने रस्सी और लोहे की छड़ हटा दी। हमें अभी तक यह नहीं पता कि वह बोस का दोस्त था या दुश्मन, लेकिन कुछ संकेत ऐसे हैं जो बताते हैं कि वह दुश्मन हो सकता था।'
मैंने जल्दी से फेलुदा की तरफ देखा। उसका क्या मतलब था? जवाब में, उसने अपनी जेब से एक छोटी सी चीज़ निकाली और उसे अपनी हथेली पर रख लिया। यह नीले कपड़े का एक टुकड़ा था, जो शायद किसी कमीज़ से फाड़ा गया था। कल नीली कमीज़ किसने पहनी थी?

Mr Jayant Mallik!
मैंने कांपती हुई आवाज़ में पूछा, 'यह तुम्हें कहाँ मिला?'
बोस पेट के बल लेटे हुए थे। उनकी बाहें फैली हुई थीं। उनका दाहिना हाथ कपड़े के इस टुकड़े पर था, लेकिन इसका एक छोटा सा हिस्सा दो उंगलियों के बीच से बाहर निकला हुआ था। ऐसा लगता है कि वे और दूसरा आदमी चट्टान के किनारे एक-दूसरे से जूझ रहे थे। बोस ने दूसरे आदमी की कमीज को कसकर पकड़ लिया। लेकिन फिर वे गिर पड़े, और कपड़े का यह छोटा सा टुकड़ा भी उनके साथ गिर गया।
‘आपका मतलब है कि उसे जानबूझकर चट्टान से नीचे धकेला गया था?’ लालमोहन बाबू हांफते हुए बोले, ‘आपका मतलब है कि यह हत्या थी?’
फेलुदा ने सीधा जवाब नहीं दिया। कुछ सेकंड की चुप्पी के बाद, उन्होंने बस इतना कहा, 'अगर मंदिर में मूर्तियाँ अभी भी सुरक्षित हैं, तो इसके लिए हमें श्री बोस का शुक्रिया अदा करना चाहिए। कल रात उनकी उपस्थिति के कारण ही चोर भाग नहीं सका।'

नौ

जब हम अंततः नीचे उतरे और मंदिर के मुख्य द्वार पर वापस गए, तो फिल्म यूनिट के सभी सदस्य गायब हो चुके थे। वहाँ उत्सुक और उत्साहित स्थानीय लोगों के समूह जमा थे। बड़ी अमेरिकी कार की जगह एक जीप खड़ी थी। एक बुद्धिमान और चुस्त-दुरुस्त दिखने वाला व्यक्ति—संभवतः तीस के आसपास—ने फेलुदा को देखा और उनका अभिवादन करने के लिए आगे बढ़ा। पता चला कि वह पर्यटक अतिथि गृह के प्रबंधक श्री कुलकर्णी थे।
उन्होंने खेद से सिर हिलाते हुए कहा, 'हमें आज सुबह ही पता चला कि श्री बोस कल रात तक वापस नहीं लौटे थे। मैंने एक संदेशवाहक को उन्हें ढूंढने के लिए भेजा था, लेकिन ज़ाहिर है, वह उन्हें कहीं नहीं ढूंढ पाया।'
‘अब क्या होगा?’ फेलुदा ने पूछा।
औरंगाबाद पुलिस को सूचित कर दिया गया है। वे शव लेने के लिए एक वैन भेज रहे हैं। श्री बोस का एक भाई दिल्ली में रहता था। उन्हें भी सूचित करना होगा, स्वाभाविक रूप से... यह वास्तव में बहुत दुखद है। वह एक सच्चे विद्वान थे। वह 1968 में एक बार पहले भी आए थे। मेरा मानना है कि वह एलोरा पर एक किताब लिख रहे थे।
क्या यहाँ कोई पुलिस स्टेशन नहीं है?
'हां, लेकिन यह एक छोटी सी चौकी है। एक सहायक सब-इंस्पेक्टर प्रभारी है, जिसका नाम घोटे है। वह इस समय शव का निरीक्षण कर रहा है।'
क्या मैं उनसे मिल सकता हूँ?
‘ज़रूर। वैसे, एक बात बता दूं—’ श्री कुलकर्णी रुक गए और लालमोहन बाबू और मेरी ओर संदेह भरी नज़रों से देखने लगे।
'वे दोस्त हैं, आप उनके सामने खुलकर बोल सकते हैं,' फेलुदा ने तुरंत कहा। ‘ओह। ओह, मैं समझ गया,’ श्री कुलकर्णी ने राहत भरी आवाज में कहा। ‘अच्छा, आज सुबह किसी ने बॉम्बे में फोन किया था।’
‘Mallik?’
'हाँ।'

‘उसने क्या कहा?’
श्री कुलकर्णी ने अपनी जेब से एक कागज का टुकड़ा निकाला और उस पर लिखा हुआ पढ़ा: 'बेटी ठीक है। आज जा रही है।'
‘आज? क्या उसने आपको आज जाने के बारे में कुछ बताया?’
“हाँ, वो जाना चाहता था। वो आज सुबह ही निकलना चाहता था। लेकिन मुझे आपकी याद आई, श्री मिटर, और मैंने उसके ड्राइवर से बात की। मल्लिक को बताया गया है कि उसकी कार में कुछ खराबी है, उसे ठीक करने में थोड़ा समय लगेगा। इसलिए वो तुरंत नहीं जा सकता।”
‘शाबाश! धन्यवाद, श्रीमान कुलकर्णी, आपने बहुत मदद की।’
श्री कुलकर्णी प्रसन्न दिखे। फेलुदा ने एक चारमीनार जलाई और पूछा, 'बताओ, यह घोटे किस तरह का आदमी है?'
‘मैं कहूँगी कि वो बहुत अच्छे आदमी हैं। लेकिन उन्हें यहाँ अच्छा नहीं लगता। वो पदोन्नति और औरंगाबाद में पोस्टिंग के लिए तरस रहे हैं। मेरे साथ आइए, मैं आपको उनसे मिलवा दूँगी।’
श्री घोटे गुफा से बाहर निकले। श्री कुलकर्णी उन्हें अपने पास लाए और फेलुदा का परिचय देते हुए उन्हें 'एक बहुत प्रसिद्ध निजी जासूस' बताया। श्री घोटे की लंबाई लगभग पाँच फीट पाँच इंच थी। उनकी चौड़ाई भी उनकी लंबाई के बराबर थी और सबसे बड़ी बात, उनकी मूंछें चार्ली चैपलिन जैसी थीं। लेकिन उनकी हरकतें आश्चर्यजनक रूप से फुर्तीली और चुस्त थीं।
‘तुम बंगले पर वापस क्यों नहीं चले जाते?’ फेलुदा ने मुझसे कहा। ‘मैं श्री घोटे से बात कर लूंगा, और फिर तुम्हारे पास आ जाऊंगा।’
हम दोनों में से किसी को भी फेलुदा के बिना वापस जाने की ज़रा भी इच्छा नहीं थी, लेकिन बहस करने का कोई फायदा नहीं था। इसलिए हम वापस चले गए। बंगले पर पहुँचकर हमें एहसास हुआ कि हम दोनों को बहुत भूख लगी है; इसलिए मैं चौकीदार को टोस्ट और अंडे भेजने के लिए कहने रुक गया। फिर मैं अपने कमरे में गया, जहाँ लालमोहन बाबू अपने बिस्तर पर बैठे हुए थोड़े मूर्ख लग रहे थे।
मुझे देखकर उसने कहा, 'मुझे बताओ, तपेश, क्या हमने आज सुबह बाहर जाने से पहले अपना कमरा बंद किया था?'

'अरे नहीं! इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी। हमारे पास चोरी करने लायक कुछ भी नहीं है। वैसे भी, सफाईकर्मी आमतौर पर सुबह आते हैं, इसलिए मैंने सोचा... कहीं कुछ चोरी तो नहीं हो गया?'
नहीं। लेकिन किसी ने मेरे सामान को छुआ है। जिसने भी ऐसा किया, वह मेरे बिस्तर पर बैठा और मेरा सूटकेस खोला। दरअसल, जब मैं अंदर आई, तो बिस्तर अभी भी गर्म था। देखो, क्या उसने तुम्हारा सूटकेस भी छुआ है?
हाँ, उसने किया था; मुझे यह बात बिस्तर का कवर खोलते ही समझ आ गई। कोई भी चीज़ अपनी जगह पर नहीं थी। इतना ही नहीं, मेरा एक तकिया ज़मीन पर पड़ा था। मेरी चप्पलें दो अलग-अलग दिशाओं में बिखरी हुई थीं, इससे लगता है कि घुसपैठिए ने बिस्तर के नीचे भी देखा था।
लालमोहन बाबू ने बताया, 'मुझे सबसे ज्यादा अपनी नोटबुक की चिंता थी, लेकिन शुक्र है कि उसने उसे नहीं लिया।'
क्या उसने कुछ और भी लिया?
नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। आपका क्या विचार है?
‘बिल्कुल वही। मुझे लगता है कि जो भी अंदर आया था, वह किसी खास चीज की तलाश में था। उसे वह चीज यहां नहीं मिली।’
चलो चौकीदार से पूछते हैं कि उसने कुछ देखा या नहीं।
लेकिन चौकीदार कुछ नहीं कर सका। वह कुछ देर के लिए खरीदारी करने बाहर गया था, इसलिए अगर उसके जाने के दौरान कोई चोरी करने आया भी तो वह उसे देख नहीं पाया होगा। आम तौर पर, इन इलाकों में चोरी की घटनाएं बहुत कम होती थीं। चौकीदार को सबसे ज्यादा हैरानी इस बात पर हुई कि किसी के कमरे में जबरदस्ती घुसकर उसके सामान की तलाशी क्यों ली जाए।
क्या फेलुदा के कमरे में भी इसी तरह की लूटपाट हुई थी? मैं देखने गया, लेकिन देखा कि उसका कमरा बंद था। भेस बदलने की वजह से उसे बहुत सावधान रहना पड़ता था। 'क्या हमें रक्षित से पूछने की कोशिश करनी चाहिए?' लालमोहन बाबू ने पूछा।
पिछली रात उसके कमरे में चमकती रोशनी देखकर मुझे उस आदमी के बारे में काफी जिज्ञासा हो रही थी। इसलिए मैं मान गया और हम दोनों उसके कमरे में गए। मैंने धीरे से दरवाजा खटखटाया। दरवाजा लगभग तुरंत खुल गया।
‘क्या बात है? अंदर आओ।’

श्री रक्षित हमें देखकर कुछ खास खुश नहीं दिखे; लेकिन फिर भी हम उनके कमरे में चले गए।
‘क्या तुम्हारे कमरे में भी कोई घुस आया था?’ लालमोहन बाबू ने अंदर कदम रखते ही पूछा।
श्री रक्षित के लालमोहन बाबू को देखने के तरीके से यह स्पष्ट था कि उनका मूड ठीक नहीं था। उन्होंने धीमी आवाज़ में बात की, लेकिन उनका लहजा तीखा था। उन्होंने कहा, 'तुमसे बात करने का क्या फायदा? तुम्हें एक शब्द भी सुनाई नहीं देता, है ना? मुझे तुम्हारे भतीजे से बात करने दो। न केवल कोई मेरे कमरे में घुसा, बल्कि वह एक कीमती सामान भी चुरा ले गया।'
‘क्या… क्या हुआ था?’ मैंने झिझकते हुए पूछा।
‘मेरा रेनकोट। मैंने इसे इंग्लैंड में खरीदा था और पिछले पच्चीस सालों से इसे इस्तेमाल कर रहा हूँ।’ लालमोहन बाबू चुपचाप मेरी तरफ देखते रहे। उन्हें कुछ भी नहीं सुनना चाहिए था। मैंने हँसी रोकने की कोशिश करते हुए, ज़ोर से बोलते हुए, उनके सामने वही शब्द दोहराए।
‘क्या यह कल रात चोरी हो गया होगा?’ लालमोहन बाबू ने सुझाव दिया। ‘हमने आपको कुछ ढूंढते हुए देखा था। मेरा मतलब है, हमने आपकी टॉर्च देखी थी…’
नहीं। कल रात किसी तरह एक छोटा चमगादड़ मेरे कमरे में घुस आया था। मैंने मुख्य लाइट बंद कर दी और टॉर्च से उसे भगा दिया। कल कुछ भी चोरी नहीं हुआ। यह आज सुबह हुआ। मुझे लगता है कि चोर चौकीदार का वह छोटा लड़का है।
मुझे एक बार फिर चिल्लाना पड़ा और लालमोहन बाबू को पूरी बात दोहराकर बतानी पड़ी।
‘यह सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ,’ लालमोहन बाबू ने गंभीर स्वर में कहा। ‘हमें लड़के पर नजर रखनी होगी।’
कहने के लिए और कुछ नहीं बचा था। हमने उन्हें परेशान करने के लिए माफी मांगी और वहां से चले गए।
चौकीदार ने हमें भोजन कक्ष में नाश्ता परोसा। हमने खाना शुरू किया। मुझे अमेरिकी तले हुए अंडों का स्वाद बिल्कुल नहीं पता था, लेकिन जो मुझे यहाँ मिला था वह काफी स्वादिष्ट था। मैं सोचता रहा कि हमारे कमरे में कौन घुसा होगा, लेकिन अंत में मैंने यही सोचा कि चौकीदार का बेटा ही होगा। मैंने उसे पिछवाड़े में घूमते हुए और हमारे कमरों की ओर उत्सुकता भरी निगाहें डालते हुए देखा था।

फेलुदा ने हमें बंगले में वापस जाने के लिए कहा था, लेकिन यह नहीं कहा था कि हमें अंदर ही रहना है। इसलिए नाश्ते के बाद, हमने अपना कमरा बंद किया और सड़क पर निकल गए।
हमारे बंगले के मुख्य द्वार से गेस्ट हाउस साफ़ दिखाई नहीं दे रहा था, क्योंकि एक बड़ा पेड़ दृश्य को आंशिक रूप से बाधित कर रहा था। अचानक कार के स्टार्ट होने की आवाज़ सुनकर हम तेज़ी से आगे बढ़े। अब गेस्ट हाउस पूरी तरह से दिखाई दे रहा था। औरंगाबाद से श्री रक्षित और लेविसन को लाने वाली टैक्सी अब चलने के लिए तैयार थी। उसकी छत पर सामान रखने का रैक भरा हुआ था। अमेरिकी करोड़पति श्री सैम लेविसन एक टैक्सी ड्राइवर को टिप दे रहे थे। लेकिन वह कौन था?
एक और आदमी गेस्ट हाउस से बाहर आया और लेविसन से बात करने लगा। लेविसन ने दो बार सिर हिलाया, जिसका साफ मतलब था कि वह उस दूसरे आदमी के लिए कुछ करने को तैयार हो गया था। वह आदमी गेस्ट हाउस वापस गया और एक सूटकेस लेकर लौटा। ड्राइवर ने कार का बूट खोला और सूटकेस उसमें रख दिया। मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा। लालमोहन बाबू ने मेरी आस्तीन पकड़ ली। हमने जो अभी देखा था, उसके निहितार्थों में कोई संदेह नहीं हो सकता था। श्री जयंत मल्लिक अपनी कार के ठीक होने का इंतजार नहीं करने वाले थे। वह सैम लेविसन के साथ भागने की कोशिश कर रहे थे।
ड्राइवर अपनी सीट पर बैठ गया।
‘साइकिल!’ मैं चिल्लाया। ‘चौकीदार की साइकिल!’
गाड़ी स्टार्ट हो गई। मैं दौड़कर बंगले की तरफ गया और किसी तरह साइकिल को बाहर निकालने में कामयाब रहा। किस्मत से किसी ने मुझे नहीं देखा।
‘चलो!’ मैंने लालमोहन बाबू से कहा। वह वहाँ ऐसे खड़ा था मानो उसने पहले कभी साइकिल की चौखट पर सवारी न की हो। लेकिन बहस करने का समय नहीं था, हमारा अपराधी भाग रहा था। एक पल बाद ही वह उछलकर खड़ा हो गया, और मैंने पूरी तेज़ी से पैडल मारना शुरू कर दिया। फेलूदा ने मुझे सात साल की उम्र में साइकिल चलाना सिखाया था। अब मैं इसका सही इस्तेमाल कर सकता था।
अगर हम पैदल चलते तो मंदिर तक वापस पहुँचने में बीस मिनट लगते। मैंने वह दूरी पाँच मिनट में तय कर ली। वहाँ फेलुदा, घोटे और कुलकर्णी थे!
‘फेलुदा!’ मैं हांफते हुए बोला। ‘श्री मल्लिक चले गए... उस अमेरिकी की कार में... पांच मिनट पहले!’

मेरी उस एक टिप्पणी ने इतनी सारी घटनाओं को जन्म दिया कि अब सब कुछ धुंधला सा लगता है। श्री घोटे अपनी जीप में कूद पड़े, उनके बगल में फेलुदा थे और लालमोहन बाबू और मैं पीछे बैठे थे। मुझे तो यह भी नहीं पता था कि जीप 60 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चल सकती है। थोड़ी ही देर में हमने लेविसन की टैक्सी देखी, उसे ओवरटेक किया और रोक दिया। लेविसन गुस्से से आग बबूला होकर बाहर निकला और चुनिंदा अमेरिकी गालियों का इस्तेमाल करते हुए अपना गुस्सा निकाल रहा था। इन गालियों का श्री घोटे पर कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने लेविसन को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया और मल्लिक के पास गए, जिसका चेहरा पीला पड़ गया। फिर श्री घोटे ने अपना सूटकेस खोला, मल्लिक के रोकने के असफल प्रयास को नाकाम करते हुए, और एक बड़ी तुर्की तौलिये में लिपटी हुई वस्तु निकाली। एक झटके में उन्होंने तौलिया हटाया और यक्षी का सिर सामने आ गया। सैम लेविसन तुरंत चुप हो गया, डर से मुंह खोलकर हकलाते हुए बोला, 'ले-ले-लेकिन... ले-लेकिन मैं... मैं...' लालमोहन बाबू ने राहत की सांस ली और कहा, 'अंत भला तो सब भला!' अंततः लेविसन को औरंगाबाद वापस जाने की अनुमति मिल गई। हम अपराधी को रंगे हाथों पकड़कर खुल्दाबाद लौट आए। श्री घोटे मल्लिक को अपने साथ ले गए और उसे पुलिस चौकी में कहीं छिपा कर रखा। मल्लिक चुपचाप चला गया, इतना स्तब्ध था कि कुछ बोल नहीं पाया।
हमें गेस्ट हाउस पर छोड़ दिया गया, क्योंकि श्री कुलकर्णी बेसब्री से हमारे लौटने का इंतज़ार कर रहे थे। हमारी मिशन की सफलता की खबर सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुए। हालांकि, फेलुदा ने उनकी खुशी पर पानी फेरते हुए कहा, 'श्री कुलकर्णी, हमारा काम अभी खत्म नहीं हुआ है। अभी बहुत कुछ करना बाकी है। बॉम्बे वाले उस नंबर के बारे में पता करना न भूलें और जैसे ही आपको कोई खबर मिले, मुझे बता देना।'
मुझे इस आखिरी निर्देश का मतलब समझ नहीं आया, लेकिन मैंने इसके बारे में और नहीं सोचा।
श्री कुलकर्णी ने हम सबके लिए कॉफ़ी मंगवाई थी। जब कॉफ़ी आई, तो मुझे अचानक याद आया कि हमने फ़ेलुदा को अपने कमरे की तलाशी के बारे में नहीं बताया था। जब मैंने जल्दी से सारी बात बताई, तो फ़ेलुदा चुपचाप अपनी कॉफ़ी पी रहा था। फिर उसने भौंहें चढ़ाकर श्री कुलकर्णी से पूछा, 'वह चौकीदार किस तरह का आदमी है?'

‘कौन, मोहनलाल? एक बहुत ही अच्छे आदमी, बेहद भरोसेमंद। वह पिछले सत्रह वर्षों से यह काम कर रहे हैं। मैंने कभी किसी को उनके खिलाफ शिकायत करते नहीं सुना।’
फेलुदा ने एक पल सोचा, फिर मेरी ओर मुड़ा। 'क्या आपको यकीन है कि कुछ भी चोरी नहीं हुआ?'
'हां। हम दोनों को पूरा यकीन है। श्री रक्षित को लगता है कि चौकीदार के लड़के ने ही यह काम किया है।'
“बहुत खूब। चलिए, जाकर देखते हैं, खासकर इसलिए क्योंकि लालमोहन बाबू का कहना है कि घुसपैठिया सचमुच उनके बिस्तर पर बैठा था और उसे गर्म रखा था। जल्द मिलते हैं, श्रीमान कुलकर्णी; शायद आप इसे अपने पास ही रखें तो बेहतर होगा।” उन्होंने यक्षी का सिर—जो अभी भी तौलिए में लिपटा हुआ था— श्रीमान कुलकर्णी को सौंप दिया, जिन्होंने उसे अपने कार्यालय में एक तिजोरी में रख दिया और ताला लगा दिया।
हम बंगले में लौट आए। फेलूदा हमारे साथ कमरे में आया, दरवाज़ा बंद किया और फिर बड़ी सावधानी से हमारे सामान की तलाशी ली। लालमोहन बाबू के सूटकेस में उनके कपड़ों के अलावा होम्योपैथिक गोलियों का एक छोटा डिब्बा, अपराध विज्ञान की दो किताबें, बलूचिस्तान पर एक किताब और उनकी अपनी नोटबुक थी। पता नहीं क्यों, फेलूदा ने उस नोटबुक को पढ़ने में काफी समय लगाया, लेकिन हमें यह नहीं बताया कि उसमें ऐसा क्या था जो इतना दिलचस्प था। आखिर में, उन्होंने सब कुछ समेटते हुए कहा, 'अगर मेरा अनुमान सही निकला, तो यह सारा मामला आज रात किसी न किसी तरह सुलझ जाएगा। अगर ऐसा हुआ, तो आप दोनों को एक अहम भूमिका निभानी होगी। कृपया हमेशा याद रखें कि मैं आपके साथ हूं, आप पर नज़र रख रहा हूं, भले ही आप मुझे देख न सकें। मल्लिक की गिरफ्तारी के बारे में किसी को मत बताना। और अपने कमरे से बाहर मत निकलना। वैसे भी, मुझे नहीं लगता कि आप निकल सकते हैं, क्योंकि बारिश होने वाली है।'
फेलुदा बोलते-बोलते खिड़की से बाहर झाँक रहा था, फिर चुपचाप उठा और उसके पास जाकर खड़ा हो गया। मैं भी उसके पीछे गया। हम पश्चिमी तरफ देख रहे थे। वहाँ एक लॉन था, जिसके पार कई ऊँचे पेड़ खड़े थे। मैंने उनमें से यूकेलिप्टस के पेड़ों को पहचान लिया। एक आदमी पेड़ों से निकला, लॉन पार किया और बंगले के सामने चला गया। एक मिनट बाद, वह भोजन कक्ष में दाखिल हुआ।
इसके बाद एक कमरे का ताला खुलने और फिर अंदर से बंद होने की आवाज़ आई।

फेलुदा ने सिर हिलाया और लगभग मन ही मन बुदबुदाया, 'हाँ, हाँ!' अंदर आने वाला व्यक्ति श्री रक्षित था।
फेलुदा ने कहा, 'मेरी ओर से सूचना मिलने तक प्रतीक्षा करो, और फिर बस वही करो जो तुम्हें बताया जाए। डरो मत।'
उसने दरवाजा खोला और बाहर चला गया।
हम अपने कमरे में ही रहे। बाहर गरज सुनाई दे रही थी। आसमान में बादल छाए हुए थे।
दीवारों को घूरते हुए, चीजों पर विचार करते हुए, अचानक मेरे मन में यह बात आई कि शायद सबसे रहस्यमय व्यक्ति श्री रक्षित थे। हम उनके बारे में कुछ भी नहीं जानते थे।
और मल्लिक? हमने जयंत मल्लिक के बारे में कितना सीखा था? ज़्यादा नहीं।
पर्याप्त नहीं। अचानक मुझे लगा कि हमने कोई प्रगति ही नहीं की है।

दस

बारह बजने के कुछ ही देर बाद मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। बारिश के साथ-साथ लगातार बिजली भी कड़क रही थी। लालमोहन बाबू और मैं अपने कमरे में बैठे यह सोचने की व्यर्थ कोशिश कर रहे थे कि दिन में आगे हमारी क्या भूमिका हो सकती है। मल्लिक को गिरफ्तार कर लिया गया था, यक्षी का सिर सुरक्षित रूप से बंद कर दिया गया था। जहाँ तक हमारा सवाल था, कहानी यहीं खत्म हो गई थी। फेलुदा और क्या सोच रहा होगा?
चौकीदार ने हमें एक बजे बताया कि खाना तैयार है। हम फेलुदा के बिना ही भोजन कक्ष में चले गए। शायद वह गेस्ट हाउस में श्री कुलकर्णी के साथ दोपहर का भोजन कर रहा होगा।
श्री रक्षित हमारे साथ शामिल हुए। आज सुबह जब हमने उनसे बात की थी, तब वे बेहद नाराज़ लग रहे थे, लेकिन अब वे फिर से खुश नज़र आ रहे थे। उन्होंने कहा, “ऐसे दिन में एक बंगाली को खड्डेरी, पकौड़े और तली हुई हिलसा मछली खानी चाहिए। मैं कई वर्षों से बंगाल से बाहर रह रहा हूँ, लेकिन बंगाली आदतें नहीं भूला हूँ।”
यहाँ जो खाना परोसा गया, वह अलग था, पर उतना ही स्वादिष्ट था। मैंने दाल का कटोरा खत्म किया और जैसे ही मैंने मांस की करी उठाई, तभी सामने के दरवाजे के बाहर एक कार आकर रुकी और एक पतली, कर्कश आवाज आई: 'चौकीदार!' चौकीदार छाता पकड़े हुए दौड़कर बाहर आया। श्री रक्षित ने अपनी चपाती का एक टुकड़ा करी में डुबोया, उसे मुंह में डाला और कहा, 'एक पर्यटक? इस मौसम में?'
एक लंबा आदमी अंदर आया और अपना रेनकोट उतार दिया। उसके ज़्यादातर बाल सफ़ेद थे। उसकी छोटी मूंछें और दाढ़ी थी, और उसने चश्मा पहन रखा था। उसने अपने पुराने चमड़े के सूटकेस को ले जा रहे चौकीदार से कहा, 'मैंने अपना खाना खा लिया है।' फिर वह हमारी तरफ मुड़ा और पूछा, 'किसे गिरफ़्तार किया गया है?'

फेलुदा ने हमें मल्लिक की गिरफ्तारी के बारे में कुछ भी न कहने को कहा था, इसलिए हम बस मूर्खतापूर्वक देखते रहे। श्री रक्षित चौंक गए और बोले, 'गिरफ्तार?'
हां। कोई उपद्रवी था। वह गुफाओं में से एक से मूर्ति चुराने की कोशिश कर रहा था और पकड़ा गया। कम से कम मैंने तो यही सुना है। मुझे बस यही उम्मीद है कि वे इस वजह से गुफाओं को बंद करने का फैसला नहीं करेंगे। मैं यहाँ की मूर्तियों को देखने के लिए काफी दूर से आया हूँ। अरे, क्या तुमने कुछ नहीं सुना?
'नहीं।'
खैर, मुझे खुशी है कि वह आदमी पकड़ा गया। मुझे कहना पड़ेगा कि यहाँ की पुलिस काफी कुशल है।
उस आदमी को तीसरा खाली कमरा दिया गया। वह उसमें चला गया, लेकिन हम उसे खुद से बात करते हुए सुन सकते थे। शायद वह थोड़ा पागल था।
लगभग ढाई बजे बारिश रुक गई। आधे घंटे बाद, मैंने नए आए व्यक्ति को यूकेलिप्टस के पेड़ों की ओर जाते देखा। वह पाँच मिनट में वापस आ गया। चौकीदार साढ़े चार बजे हमारे लिए चाय लेकर आया। उसके जाते समय मैंने फर्श पर कागज का एक छोटा सा टुकड़ा देखा। पता चला कि वह फेलुदा का एक और संदेश था: 'सात बजे गुफा संख्या पंद्रह पर आना। पहली मंजिल के दक्षिण-पूर्वी कोने में प्रतीक्षा करना।'
वह अब भी पूरी तरह से गुमनाम रहकर चुनाव प्रचार कर रहा था। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था।
सौभाग्य से, फिर बारिश नहीं हुई। जब हम साढ़े छह बजे बंगले से निकले, तो श्री रक्षित और दाढ़ी वाले आदमी दोनों अपने कमरों में थे, क्योंकि उनके कमरों की बत्तियाँ जल रही थीं। निकलते समय लालमोहन बाबू ने एक छोटी सी प्रार्थना बुदबुदाई। मेरी भावनाएँ इतनी उलझी हुई थीं कि मैं उन्हें बयान करने की कोशिश भी नहीं करूँगा। मेरे हाथ ठंडे पड़ गए थे। मैंने उन्हें अपनी जेबों में डाल लिया।
हम सुबह सात बजने से दस मिनट पहले कैलाश पहुँच गए। पश्चिम का आकाश अभी भी काफी उजाला था क्योंकि इस समय यहाँ सूर्य साढ़े छह बजे के बाद ही अस्त होता है। गुफाएँ और पहाड़ियाँ थोड़ी अंधेरी लग रही थीं, लेकिन आकाश साफ हो चुका था।

कैलाश पहुँचने के बाद हम दाईं ओर मुड़ गए। अगली गुफा पंद्रहवीं थी, दस अवतार गुफा। इसी गुफा में फेलुद ने कल रात एक पत्थर फेंका था।
आस-पास कोई नहीं था। हम आगे बढ़ते रहे। गुफा के सामने का आंगन बड़ा था। उसके बीच में एक छोटा सा मंदिर था। हमने उसे जल्दी से पार किया और कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर गुफा के मुख्य द्वार से अंदर गए। हमें पहली मंजिल ढूंढने के लिए कहा गया था। मुझे धुंधली सी सीढ़ियाँ ऊपर जाती हुई दिखाई दीं। पता नहीं अंधेरे में कोई छिपा हुआ था या नहीं। हम बिना कोई आवाज़ किए सीढ़ियाँ चढ़ते गए।
सीढ़ियाँ हमें एक विशाल हॉल में ले गईं। नक्काशीदार खंभों की कतारें छत को सहारा दे रही थीं, मानो वे छत को अपने सिर पर ढो रही हों। उत्तरी और दक्षिणी दीवारों पर भारतीय पौराणिक कथाओं के दृश्य खूबसूरती से उकेरे गए थे।
हमें दक्षिण-पूर्वी कोना मिल गया। अंदर इतना अंधेरा था कि कुछ साफ़ दिखाई नहीं दे रहा था। सीढ़ियाँ चढ़ने से पहले मैंने अपनी चप्पलें उतार दी थीं, लेकिन अब पथरीली ज़मीन इतनी ठंडी लग रही थी कि मुझे उन्हें दोबारा पहनना पड़ा। हम दोनों को नहीं पता था कि हमें कितनी देर इंतज़ार करना पड़ेगा, इसलिए हम दीवार से टेक लगाकर बैठ गए। कौन जाने इस गुफा में, जो बारह सौ साल पहले बनी थी और प्राचीन कला के अद्भुत नमूनों से भरी हुई थी, आगे क्या होने वाला था?
लगभग तुरंत ही कुछ घटित हुआ। बैठते ही मेरी नज़र एक ऐसी चीज़ पर पड़ी जिसे देखकर मैं चौंक गया। जहाँ हम बैठे थे, उससे कुछ ही दूरी पर, अँधेरे में मुश्किल से दिखाई दे रही एक ठोस गोल वस्तु ज़मीन पर पड़ी थी। उसके नीचे से एक सफ़ेद चौकोर वस्तु निकली हुई थी। ये दोनों ही मंदिर की सजावट का हिस्सा नहीं थीं। किसी ने इन्हें जानबूझकर वहाँ रखा था। ये क्या हो सकती हैं? इन्हें किसने वहाँ रखा था, और किसके लिए?
‘पी-पेपर?’ लालमोहन बाबू ने सफेद वस्तु की ओर इशारा करते हुए फुसफुसाया। हम उठे और पास गए। जो हमने देखा, उस पर हमें विश्वास ही नहीं हुआ। वह सचमुच एक कागज़ का टुकड़ा था, लेकिन जिसे पेपरवेट की तरह इस्तेमाल किया गया था, वह यक्षी का सिर था! इसमें कोई गलती नहीं हो सकती थी। हमने इसे आज सुबह ही देखा था—पहले श्री घोटे के हाथ में, और फिर श्री कुलकर्णी के हाथ में, जिन्होंने इसे अपनी तिजोरी में बंद कर दिया था।

मैंने टॉर्च की रोशनी कागज के टुकड़े पर डाली। यह फेलुदा का एक और संदेश था, इस बार लालमोहन बाबू को संबोधित। उसमें लिखा था, 'सिर अपने पास रखना। अगर कोई मांगे तो उसे सौंप देना।'
इसका क्या मतलब हो सकता है? लेकिन सोचने का समय नहीं था। लालमोहन बाबू ने 'जय गुरु!' कहा और सिर उठा लिया। मैंने फेलुदा का संदेश अपनी जेब में रख लिया और हम अपने-अपने स्थानों पर लौट गए।
हमारी आँखें अब अंधेरे की आदी हो रही थीं। बाहर हल्की चाँदनी दिखाई दे रही थी। खंभों के बीच से हमें पश्चिम दिशा का थोड़ा सा आकाश दिखाई दे रहा था। उसका रंग गहरा बैंगनी हो गया था। धीरे-धीरे उसका रंग बदलता गया। शायद चाँद ऊपर चढ़ गया था। गुफा के अंदर अब पहले जितना अंधेरा नहीं लग रहा था।
‘आठ बज गए!’ लालमोहन बाबू ने लंबी आह भरते हुए बुदबुदाया।
अचानक, एक हल्की सी आवाज़ मेरे कानों में पड़ी। कोई सीढ़ियों से ऊपर आ रहा था, हर कदम बड़ी सावधानी से रखते हुए। फिर आवाज़ बंद हो गई। एक पल बाद, कदमों की आहट फिर सुनाई दी। वह आदमी अब खंभों के बीच समतल ज़मीन पर चल रहा था। वहाँ, अब वह कुछ खंभों के बीच से दिखाई दे रहा था। वह रुका और चारों ओर देखा। फिर, एक क्लिक की आवाज़ के साथ, उसने लाइटर जलाया। छोटी सी लौ लगभग जलते ही बुझ गई, लेकिन उसके चेहरे को रोशन करने के लिए काफी थी। हमने उसे तुरंत पहचान लिया।
Jayant Mallik!
वो यहाँ कैसे हो सकता है? उसे तो पुलिस हिरासत में होना चाहिए था। मेरा सिर चकराने लगा। इसके बाद मैंने सोचा, अगर मृत शुभंकर बोस खुद सामने आ जाएँ, तो मुझे आश्चर्य नहीं होना चाहिए।
श्री मल्लिक ने चलना फिर शुरू किया, लेकिन हमारी ओर नहीं आए। वे उत्तर-पूर्वी कोने की ओर चले गए। हॉल का वह हिस्सा घोर अंधेरे में डूबा हुआ था। वे नज़रों से ओझल हो गए।
मेरा गला सूख गया था। मैं मुश्किल से ही कुछ सोच पा रहा था। बस एक ही बात मेरे दिमाग में बार-बार घूम रही थी। फेलुदा कहाँ था? फेलुदा कहाँ था? फेलुदा कहाँ था? लालमोहन बाबू ने एक बार ऐलान किया था कि वे अपराध कथाएँ लिखना छोड़ देंगे क्योंकि उनके असल जीवन के अनुभव कहीं ज़्यादा अजीब थे। आज के बाद वे क्या कहेंगे?

जैसे-जैसे हम इंतजार करते गए, चांदनी तेज होती गई। दूर कहीं से एक कुत्ते के भौंकने की आवाज आई। फिर से सन्नाटा छा गया।
लेकिन ज्यादा देर तक नहीं। एक दूसरा आदमी सीढ़ियाँ चढ़ रहा था। श्री मल्लिक की तरह, वह भी सीढ़ियों के अंत में समतल जगह पर पहुँचकर एक पल के लिए रुक गया। फिर हम उसे चलते हुए देख सके, लेकिन यह नहीं बता सके कि वह कौन था। वह लाइटर जलाने के लिए नहीं रुका।
वह हमारी ओर आ रहा था, धीरे-धीरे करीब आता जा रहा था, धीमी और सधी हुई चाल से चल रहा था। तभी, बिना किसी चेतावनी के, एक तेज़ रोशनी ने हमारी आँखों को चकाचौंध कर दिया। वह आदमी सीधे हमारी आँखों में टॉर्च की रोशनी डाल रहा था। कदमों की आहट और भी करीब आती गई, और एक आवाज़ धीमी, लेकिन तीखे व्यंग्य से भरी सुनाई दी।
‘चाँद के सपने देख रहे थे, है ना, नन्हे से बौने? धमकी भरे पत्र लिखना किसने सिखाया? “रात 8 बजे दस अवतार गुफा में आ जाओ... तब तुम्हें तुम्हारा खोया हुआ वापस मिल जाएगा, वरना...” ये सब तुमने कहाँ से सीखा, प्रोफ़ेसर? इतिहास के प्रोफ़ेसर, है ना? क्या अब तुम मुझे सुन पा रहे हो? या अब भी बहरे होने का नाटक कर रहे हो? वैसे भी तुम इसमें कैसे शामिल हो गए? तुमने सब कुछ अपनी नोटबुक में लिख रखा था, है ना? मैंने खुद देखा था—“एक फोकर फ्रेंडशिप विमान दुर्घटनाग्रस्त”, “भुवनेश्वर की एक यक्षी का अपहरण”, “एलोरा का कैलाश मंदिर”, यहाँ तक कि विमानों का समय भी...! तुम्हारे साथ बच्चा क्यों है? क्या वह तुम्हारा अंगरक्षक है? क्या तुम देख सकते हो कि मेरे दाहिने हाथ में क्या है?’
मैंने उसकी आवाज़ को बोलते ही पहचान लिया था। यह श्री रक्षित की आवाज़ थी। उनके बाएं हाथ में टॉर्च थी और दाहिने हाथ में पिस्तौल।
‘मैं… मैं…’ लालमोहन बाबू हकलाते हुए बोले।
‘रोना बंद करो!’ श्री रक्षित की आवाज गूंज उठी। ‘असली चीज कहां है?’
‘ये लीजिए। मैंने इसे आपके लिए ही रखा था,’ लालमोहन बाबू ने उन्हें यक्षी का सिर भेंट किया।
श्री रक्षित ने उसे अपने बाएं हाथ से उठाया और सुनिश्चित किया कि उनका दाहिना हाथ न हिले। “हर कोई यह खेल नहीं खेल सकता, समझे?” वे गुस्से में बोलते रहे। “यह तुम्हारे जैसे मूर्खों के लिए नहीं है—” उन्होंने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।

एक अजीब घटना घटने लगी थी। गुफा में धुएं के बड़े-बड़े बादल आने लगे, जो ऊपर की ओर घूमते हुए धीरे-धीरे सब कुछ ढकने लगे—स्तंभ, नक्काशी, मूर्तियाँ। हम सब इस घने कोहरे को देखकर अचंभित खड़े थे, तभी एक और आवाज़ आई, मानो गोली की तरह। यह फेलुदा की आवाज़ थी।
‘श्री रक्षित!’ उसने पुकारा, उसकी आवाज़ उतनी ही ठंडी और कठोर थी जितनी कि वह पथरीली ज़मीन जिस पर हम खड़े थे। ‘इस समय एक नहीं, बल्कि दो रिवाल्वर आपकी ओर तनी हुई हैं। अपनी बंदूक नीचे रख दो। चलो, उसे नीचे फेंक दो।’ ‘इसका... इसका क्या मतलब है?’ श्री रक्षित अचानक अनिश्चित स्वर में चिल्लाए।
‘मुझे समझाने दीजिए,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। ‘हम यहाँ आपको आपके अपराध के लिए दंडित करने आए हैं, और यह केवल एक अपराध नहीं है। पहला, आपने भारत के इतिहास के एक हिस्से को नष्ट और क्षतिग्रस्त किया। दूसरा, आपने अपनी—और हमारी—विरासत के कुछ अंश विदेशियों को बेच दिए। तीसरा, आपने शुभंकर बोस की हत्या की।’
‘नहीं! झूठ, ये सब झूठ है!’ श्री रक्षित चीखे। ‘बोस फिसलकर खाई में गिर गए थे। यह एक दुर्घटना थी।’
अगर कोई झूठ बोल रहा है, तो वो तुम हो। तुमने जिस लोहे की छड़ का इस्तेमाल किया था, वो बोस के शव मिलने की जगह से पचास गज दूर एक कैक्टस की झाड़ी के पीछे मिली है। उस पर खून के गहरे धब्बे हैं। अगर श्री बोस गलती से फिसलकर गिर गए होते, तो वो ज़रूर मदद के लिए चिल्लाते। यहाँ मौजूद किसी भी गार्ड ने उनकी चीख नहीं सुनी। इसके अलावा, तुमने उस बंगले के पीछे पौधों के बीच एक नीली कमीज़ छिपा रखी थी जहाँ हम सब ठहरे हुए थे। इस कमीज़ का एक हिस्सा फटा हुआ है। मैंने उसे ढूँढा है। बोस के हाथ में जो नीले कपड़े का टुकड़ा मिला था, वो भी वही है—’
श्री रक्षित ने आगे कुछ भी सुनने की जहमत नहीं उठाई। वे उछलकर उठे और धुएँ के पर्दे से बाहर निकलने की कोशिश की, लेकिन तभी तीन अलग-अलग आदमियों ने उन्हें गले लगा लिया। हमारे दाहिनी ओर, जयंत मल्लिक ने अपनी टॉर्च जलाई। अब मैं फेलुदा को देख सकता था, जिसने अपना मेकअप उतार दिया था। उसके बगल में श्री घोटे और एक कांस्टेबल खड़े थे। उनके इशारे पर कांस्टेबल ने श्री रक्षित को हथकड़ी पहना दी।

फेलुदा ने श्री मल्लिक की ओर मुड़कर कहा, ‘मुझे आपसे एक काम करवाना है। वह दूसरी गुफा देखी? उसमें आपको श्री रक्षित का रेनकोट मिलेगा, जो बाईं ओर कोने में छिपा हुआ है। क्या आप उसे मेरे लिए ला सकते हैं? खैर, हमें इस धुएं में और नहीं रुकना चाहिए। चलिए, टॉपशे। क्या आप ठीक हैं, लालमोहन बाबू? इधर आइए।’
उस रात खाने के दौरान फेलुदा ने हमें सब कुछ समझाया। हमने गेस्ट हाउस में खाना खाया। हमारे साथ श्री कुलकर्णी, श्री घोटे और श्री मल्लिक भी थे। फेलुदा ने शुरू किया, ‘सबसे पहले तो मैं आपको बता दूं कि रक्षित उसका असली नाम नहीं है। उसका असली नाम चट्टोराज है। वह दिल्ली से काम करने वाले अपराधियों के एक गिरोह का सदस्य है। उनका मुख्य उद्देश्य पुराने मंदिरों से कीमती मूर्तियां, या यहां तक कि मूर्तियों के हिस्से भी चुराना और उन्हें विदेशी खरीदारों को बेचकर मोटी रकम कमाना है। ऐसे और भी कई गिरोह होंगे, लेकिन कम से कम हमने एक को पकड़ लिया है। चट्टोराज से सच उगलवाया गया और उसने हमें सारी जानकारी दे दी जिसकी हमें ज़रूरत थी। उसी ने वह सिर चुराया था, उसे कलकत्ता लाया और सिल्वरस्टीन को बेच दिया। फिर, जब उसने विमान दुर्घटना के बारे में सुना, तो वह तुरंत घटनास्थल पर पहुंचा, पानु नाम के उस लड़के से उसे सिर्फ दस रुपये में वापस खरीद लिया और फिर लेविसन का एलोरा तक पीछा किया। वह एक तीर से दो निशाने साधना चाहता था। यक्षी का सिर लेविसन को बेचा जा सकता था और चट्टोराज कैलाश से एक और मूर्ति चुरा सकता था।’ दुर्भाग्य से, वह इनमें से कोई भी काम नहीं कर सका। लेविसन चोरी हुई मूर्ति खरीदने के लिए सहमत हो गया, लेकिन चट्टोराज ने उसे लेविसन को सौंपने से पहले ही खो दिया। परिणामस्वरूप, लेविसन उससे बहुत नाराज़ हो गया और चला गया। वह कैलाश से मूर्ति हटाने में सफल हो सकता था, लेकिन दो चीजों ने उसे रोक दिया। एक था शुभंकर बोस का अचानक प्रकट होना। दूसरा था गुफा संख्या पंद्रह के सामने प्रांगण में फेंका गया एक छोटा सा कंकड़।
फेलुदा सांस लेने के लिए रुका। मैं बहुत उलझन में पड़ गया। 'श्री मल्लिक का क्या हुआ?' मैंने झट से पूछ लिया।
फेलुदा मुस्कुराया। 'जयंत मल्लिक की उपस्थिति को बहुत आसानी से समझाया जा सकता है। वास्तव में, यह इतना सरल था कि मैं भी पहले इसे समझ नहीं पाया। श्री मल्लिक बस चट्टोराज का पीछा कर रहे थे।'
'क्यों?'

‘ठीक उसी वजह से जिसके लिए मैं उसका पीछा कर रहा था! वह भी मेरी तरह मूर्ति वापस पाना चाहता था। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती। हम दोनों एक ही काम करते हैं। जी हां, वह भी मेरी तरह एक प्राइवेट जासूस है।’
मैंने श्री मल्लिक की ओर हैरानी भरी नज़र डाली। उन्होंने कुछ नहीं कहा, लेकिन मैंने देखा कि वे फेलुदा की ओर देखकर मुस्कुरा रहे थे और उनके आगे की व्याख्या का इंतज़ार कर रहे थे।
फेलुदा ने आगे बताया, “जब मैंने उनके बारे में पूछताछ की, तो मुझे पता चला कि वे बॉम्बे की एक एजेंसी में काम करते हैं। हाल ही में एक मामले के सिलसिले में उन्हें कलकत्ता भेजा गया था। वे क्वीन्स मेंशन में अपने एक दोस्त के फ्लैट में रुके थे और जब उनका दोस्त छुट्टी पर बाहर गया हुआ था, तब उन्होंने उसकी कार का इस्तेमाल किया। आम तौर पर, ये एजेंसियां जिस तरह के मामले संभालती हैं, वे सभी साधारण और मामूली होते हैं। श्री मल्लिक अपने काम से ऊब गए थे। वे कुछ रोमांचक, कुछ अधिक सार्थक और मशहूर होना चाहते थे। क्या यह सही है?”
‘जी हां,’ श्री मल्लिक ने स्वीकार किया। ‘मुझे इस तरह के मामले पर काम करने का मौका बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से मिला। मेरी पुरानी नौकरी के सिलसिले में मुझे पिछले गुरुवार को ग्रैंड होटल जाना पड़ा, और मैं संयोगवश नागरमल की दुकान में था जब एक अमेरिकी पर्यटक ने उन्हें यक्षी का वह सिर दिखाया। उस समय मैंने ध्यान नहीं दिया। मुझे बस इतना समझ आया कि वह व्यक्ति बेहद धनी था और उसका नाम सिल्वरस्टीन था। लेकिन, जब अगली सुबह मुझे विमान दुर्घटना के बारे में पता चला और यह बताया गया कि वह उस विमान में था, तो अचानक मेरे मन में आया कि शायद उस मूर्ति को वापस लाना संभव हो सकता है। मुझे प्राचीन कला का थोड़ा-बहुत ज्ञान है, और मैं जानता था कि सिल्वरस्टीन जो ले जा रहा था वह अत्यंत मूल्यवान था। इसलिए मैंने सोचा कि अगर मैं उसे वापस ला सकूं, तो शायद यह खबर प्रेस में छपेगी, जो एजेंसी के लिए भी अच्छी बात होगी। इसलिए मैंने बॉम्बे में अपने बॉस को फोन किया और उन्हें बताया कि मैं क्या करना चाहता हूं। वह मान गए और मुझे उन्हें सूचित करते रहने के लिए कहा। मैं तुरंत सिदिकपुर के लिए रवाना हो गया, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। मैं चट्टोराज से सिर्फ पांच मिनट से चूक गया। वह पहले वहां पहुंच गए और सिर वापस ले आए।’ मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं कुछ नहीं कर सकता, लेकिन—'

‘क्या तुम्हें उसकी कार का रंग याद है?’ फेलुदा ने उसे बीच में ही रोकते हुए पूछा। ‘हाँ, बिल्कुल। वह नीली फिएट थी। मैंने चट्टोराज का पीछा करने का फैसला किया। लेकिन मुझे कुछ और समस्याओं का सामना करना पड़ा। टायर फटने से बेवजह देरी हो गई... इसलिए मैं उस पल के लिए उससे अलग हो गया। हालांकि, तब तक मैं पूरी तरह से दृढ़ था कि हार नहीं मानूंगा। मुझे पता था कि वह मूर्ति को फिर से बेचना चाहेगा। इसलिए मैं ग्रैंड होटल वापस चला गया। इसका मतलब था कुछ देर इंतजार करना, लेकिन आखिरकार मैंने उसे ढूंढ लिया और रेलवे बुकिंग ऑफिस तक उसका पीछा किया। उसने औरंगाबाद का टिकट खरीदा। मैंने भी खरीदा। वह अभी भी एक भारी बैग लिए हुए था, इसलिए यह स्पष्ट था कि वह मूर्ति से छुटकारा नहीं पा सका था। मैं अपने फ्लैट पर वापस आया, बॉम्बे में अपने कार्यालय को फोन किया और उन्हें सब कुछ बताया।’
'हां, हमें इसके बारे में पता है। आपने कहा था, "बेटी अपने पिता के पास लौट गई है"। हमें यह नहीं पता था कि "पिता" से आपका मतलब चट्टोराज से था, न कि आपसे।'
श्री मल्लिक मुस्कुराए और फिर बोले, 'मैं चोरी की वस्तु को हटाने के लिए उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करता रहा। मुझे पता था कि अगर मैं उसी समय चोर को भी पकड़ लूँ तो और भी अच्छा होगा। लेकिन यह बहुत मुश्किल साबित हुआ। खैर, कल रात मैं कैलाश के पास जाकर छिप गया। जब मैंने देखा कि बंगले के सभी लोग गुफाओं की ओर चले गए हैं, तो मैं जल्दी से वापस आया, सफाईकर्मियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले बगल के दरवाजे से बंगले में घुस गया और चट्टोराज के कमरे से मूर्ति निकाल ली।'
‘मैं समझ गया। क्या आपको इस बात का जरा भी अंदाजा था कि एक जासूस आप पर नजर रख रहा है?’
'अरे नहीं। इसीलिए तो जब आपने मुझे गिरफ्तार किया था तब मैं एक शब्द भी नहीं बोल पाया था! मैं बहुत मूर्ख दिख रहा होगा।'
श्री घोटे जोर से हंस पड़े। फेलुदा ने कहानी आगे बढ़ाते हुए कहा, 'जब मैंने देखा कि आप लेविसन के साथ कई मील तक एक ही कार में सफर कर चुके हैं, लेकिन आपने उसे मूर्ति बेचने के लिए कुछ नहीं किया, तब मुझे एहसास हुआ कि आप निर्दोष हैं। तब तक, हालांकि मुझे पता चल गया था कि आप एक जासूस हैं, मैं आपको संदिग्धों की सूची से नहीं हटा सका था।'
‘लेकिन चट्टोराज का नाम भी इस सूची में था, है ना?’

जी हाँ। ध्यान रहे, शुरू में तो बस थोड़ा सा ही शक था। जब मैंने देखा कि एक पुराने सूटकेस पर उसका नाम नए सिरे से लिखा हुआ है, तो मुझे शक होने लगा कि कहीं नाम नकली तो नहीं है। फिर, लालमोहन बाबू ने कल हमें बताया कि वह रेनकोट पहनकर बाहर गया था। जब हम गुफा नंबर पंद्रह के पास से गुजर रहे थे, तो मैंने देखा कि उसमें कोई है, और मैंने आंगन में एक छोटा पत्थर फेंका। इससे वह आदमी भाग गया। फिर मैं गुफा में गया और आसपास के इलाके की तलाशी लेने लगा। बड़ी गुफा के पीछे एक छोटी गुफा में मुझे रेनकोट मिला। उसमें एक खास बड़ी जेब थी, जिसमें एक हथौड़ा, एक छेनी और एक नायलॉन की रस्सी थी। मैंने सब कुछ वहीं छोड़ दिया। यह साफ हो गया कि रक्षित—या चट्टोराज—ही असली अपराधी था। जब हम बंगले पर लौटे, तो हमने उसे अपने कमरे में कुछ ढूंढते हुए देखा। दरअसल, वह पागल सा लग रहा था, जो समझ में आता है क्योंकि जब वह अपने कमरे में लौटा तो उसने देखा कि उसकी कीमती मूर्ति गायब थी। आज सुबह, श्री कुलकर्णी ने मुझे बताया कि आपने बॉम्बे फोन किया था और कहा था, “बेटी ठीक है।” इसका मतलब था कि चोरी की गई मूर्ति आपके पास थी। इसलिए आपको गिरफ्तार किया जाना था।'
फेलुदा रुक गया। किसी ने कुछ नहीं कहा। थोड़ी देर रुकने के बाद, उसने आगे कहा, “जब हम मूर्तियों और चोरों की चिंता कर रहे थे, तभी शुभंकर बोस की हत्या हो गई। उनके शव की जाँच करने पर हमें उनके एक हाथ में नीले कपड़े का एक टुकड़ा मिला। कल तुमने नीली कमीज़ पहनी थी। लेकिन मैंने तुम्हारे बारे में नहीं सोचा, क्योंकि मेरा शक पहले ही चट्टोराज पर था। असल में हुआ ये था कि वो मुझसे पहले बोस के शव के पास पहुँच गया और उनकी नब्ज़ जाँचने का बहाना करके उस फटे हुए टुकड़े को मृत व्यक्ति के हाथ में ठूँस दिया। चट्टोराज के लिए बोस की मौत का शक किसी और पर डालना ज़रूरी हो गया था। वो फटा हुआ टुकड़ा तो चट्टोराज की अपनी कमीज़ का ही था। उसने एक टुकड़ा काटकर बंगले के पीछे पौधों और झाड़ियों के बीच कमीज़ में छिपा दिया था। मैंने उसे खुद ढूँढा।”
हालाँकि, मैंने चट्टोराज के खिलाफ कुछ सबूत तो जुटा लिए थे, लेकिन उन पर हत्या और चोरी का आरोप लगाने के लिए पर्याप्त नहीं थे। जब मैं सोच ही रहा था कि क्या करूँ, तभी तपेश और लालमोहन बाबू ने मुझे बताया कि किसी ने उनके सामान की तलाशी ली है। यह चट्टोराज ही होना चाहिए था, क्योंकि उसकी कोई कीमती चीज खो गई थी और स्वाभाविक रूप से वह उसे हर जगह ढूंढ रहा था।

लालमोहन बाबू के सूटकेस में उसकी नोटबुक थी, जिसमें भुवनेश्वर से मूर्ति की चोरी, सिल्वरस्टीन और विमान दुर्घटना का जिक्र था। मैं तुरंत समझ गया कि चट्टोराज ने हर बात पढ़ ली है और उसे डर लग रहा है, क्योंकि उसे लग रहा था कि लालमोहन बाबू को ही सच्चाई पता चल गई है। इसलिए मैंने उसे एक छोटा सा नोट भेजा, मानो वह लालमोहन बाबू ने लिखा हो, जिसमें चट्टोराज को रात 8 बजे दश अवतार गुफा में मिलने के लिए कहा था। लेकिन उससे पहले, मैंने चट्टोराज को बताया कि जिसने भी पिछली रात कैलाश से मूर्ति चुराने की कोशिश की थी, उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। मुझे पता था कि इससे उसका मन शांत हो जाएगा और वह सतर्क रहना छोड़ देगा।
‘दाढ़ी वाले उस आदमी को देखो!’ लालमोहन बाबू और मैं एक साथ चिल्लाए, ‘क्या वह तुम ही थे?’
‘हां,’ फेलुदा हंसते हुए बोला। ‘यह मेरा दूसरा भेष था। मुझे लगा कि मुझे आपके करीब रहना चाहिए, क्योंकि हम एक खतरनाक आदमी से निपट रहे थे। खैर, वह मेरी चाल में तुरंत फंस गया। उसने सोचा कि मेरे कुछ तीखे शब्दों से लालमोहन बाबू सचमुच सिर लौटा देगा और वह एक बार फिर बच निकलेगा। खैर, हम सब जानते हैं कि आगे क्या हुआ।’
अब मुझे बस एक ही बात कहनी है: श्री मल्लिक और उनकी एजेंसी को इस गिरोह को पकड़ने में उनके योगदान के लिए पूरा श्रेय मिलेगा। और मैं श्री घोटे की पदोन्नति के लिए प्रार्थना करूंगा। मुझे श्री कुलकर्णी को भी उनके द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका के लिए धन्यवाद देना चाहिए, लेकिन अगर साहस और वीरता का पदक किसी को दिया जा सकता है, तो वह संयुक्त रूप से तपश्रंजन मित्तर और लालमोहन गांगुली को मिलना चाहिए।
श्री मल्लिक ने कहा, 'वाह वाह!' और बाकी सबने उत्साहपूर्वक ताली बजाई।
जब तालियाँ थम गईं, तो लालमोहन बाबू ने फेलुदा की ओर मुड़कर थोड़ा हिचकिचाते हुए कहा, 'क्या इसका मतलब यह है कि... इस बार मेरा हथियार बिल्कुल भी काम नहीं आया?'
फेलुदा पूरी तरह से हैरान दिख रहा था। 'इस्तेमाल में नहीं आया? आप क्या कह रहे हैं? आपको क्या लगता है कि वह सारा धुआँ कहाँ से आया? वह कोई साधारण बम नहीं था, महोदय। क्या आप जानते हैं कि वह क्या था? एक तीन सौ छप्पन मेगाटन का विशेष सैन्य धुआँ बम!'

□□□□□

एक

फेलुदा ने पूछा, “क्या आप जानते हैं कि पेड़-पौधों को देखने से हमारी आँखों को इतनी ताजगी क्यों मिलती है?” फेलुदा ने जवाब दिया, “इसका कारण यह है कि मनुष्य प्राचीन काल से ही अपने चारों ओर हरियाली के बीच रहे हैं, जिससे उनकी आँखों का अपने वातावरण के साथ एक स्वस्थ संबंध विकसित हो गया है। बेशक, आजकल बड़े शहरों में पेड़ मिलना मुश्किल हो गया है। नतीजतन, जब भी आप शहर से बाहर निकलते हैं, आपकी आँखें और मन दोनों आराम करने लगते हैं। आँखों की बीमारियों से पीड़ित लोग ज्यादातर शहरों में ही दिखाई देते हैं। किसी गाँव या पहाड़ी इलाके में जाइए, तो आपको शायद ही कोई चश्मा पहने हुए मिलेगा।”
फेलुदा की आंखें बहुत तेज थीं, वह चश्मा नहीं पहनता था और बिना पलक झपकाए किसी भी वस्तु को तीन मिनट पंद्रह सेकंड तक घूर सकता था। मुझे यह अच्छी तरह पता था, क्योंकि मैंने कई बार उसकी इस क्षमता को परखा था। लेकिन वह कभी किसी गांव में नहीं रहा था। मुझे उसे यह बात बताने का मन तो हुआ, पर हिम्मत नहीं हुई। अगर मैंने ऐसा किया तो मेरा सिर काट दिए जाने का खतरा बहुत ज्यादा था।
हम मोनिमोहन समाद्दार नाम के एक व्यक्ति के साथ यात्रा कर रहे थे। वह चश्मा पहनते थे (वैसे भी, वह शहर में रहते थे), उनकी उम्र लगभग पचास वर्ष थी और उनके चेहरे की बनावट तीखी थी। उनके कानों के आसपास के बाल सफ़ेद होने लगे थे। हम उनकी फिएट कार में बैठकर बामुंगाछी जा रहे थे, जो कलकत्ता का एक उपनगर था। मोनि बाबू से हमारी मुलाक़ात कल ही हुई थी।
दोपहर में वह अचानक आ गया, जब मैं और फेलुदा अपने बैठक कक्ष में बैठकर पढ़ रहे थे। मैं फेलुदा को अंकशास्त्र की एक किताब पढ़ते हुए देख रहा था, और वह आश्चर्य और प्रशंसा दोनों भावों से कभी-कभी अपनी भौहें उठा रहा था। यह डॉ. मैट्रिक्स के बारे में एक किताब थी। फेलुदा ने मुझे उसे देखते हुए पकड़ लिया और मुस्कुराया। 'तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि संख्याओं में कितनी शक्ति होती है, और डॉ. मैट्रिक्स जैसे लोगों के जीवन में उनकी क्या

भूमिका होती है। सुनो, यह डॉ. मैट्रिक्स की खोज थी। तुम उन दो अमेरिकी राष्ट्रपतियों के नाम जानते हो जिनकी हत्या कर दी गई थी, है ना?'
‘हां। लिंकन और कैनेडी, है ना?’
‘ठीक है। अब मुझे बताओ कि प्रत्येक नाम में कितने अक्षर हैं।’ ‘लिंकन—सात। कैनेडी—भी सात।’
ठीक है। अब ध्यान से सुनो। लिंकन की हत्या 1865 में हुई थी और कैनेडी की मृत्यु 1963 में, लगभग सौ साल बाद हुई। दोनों की हत्या शुक्रवार को हुई थी और दोनों की पत्नियाँ उनके साथ थीं। लिंकन की हत्या फोर्ड थिएटर में हुई थी। कैनेडी की हत्या फोर्ड कंपनी द्वारा निर्मित लिंकन नामक कार में हुई थी। लिंकन के बाद अगले राष्ट्रपति का नाम जॉनसन था, एंड्रयू जॉनसन। कैनेडी के बाद लिंडन जॉनसन राष्ट्रपति बने। पहले जॉनसन का जन्म 1808 में हुआ था, दूसरे का 1908 में, ठीक सौ साल बाद। क्या आप जानते हैं कि लिंकन की हत्या किसने की थी?
'हां, लेकिन मुझे अभी उसका नाम याद नहीं आ रहा है।'
‘वह जॉन विल्क्स बूथ था। उसका जन्म 1839 में हुआ था। और कैनेडी की हत्या ली हार्वे ओसवाल्ड ने की थी। उसका जन्म 1939 में हुआ था! अब दोनों नामों में अक्षरों की संख्या गिनिए।’
‘हे भगवान, दोनों में पंद्रह अक्षर हैं!’
फेलुदा मुझे डॉ. मैट्रिक्स की कुछ और चौंकाने वाली खोजों के बारे में बता सकते थे, लेकिन तभी श्री समाद्दार बिना पूर्व नियुक्ति के वहाँ पहुँच गए। उन्होंने अपना परिचय देते हुए कहा, 'मैं लेक प्लेस में रहता हूँ, जो यहाँ से ज्यादा दूर नहीं है।'
'अच्छा ऐसा है।'
‘अह... आपने शायद मेरे चाचा, राधारमन समाद्दार के बारे में सुना होगा।’
'ओह हाँ। उनका हाल ही में निधन हो गया, है ना? मुझे लगता है कि उन्हें संगीत में बहुत रुचि थी?'
'हाँ यह सही है।'
मैंने स्थानीय अखबार में उनकी मृत्यु की खबर पढ़ी। मुझे अफसोस है कि मैंने इससे पहले उनके बारे में नहीं सुना था। वे काफी बूढ़े थे, है ना?
जी हां, जब उनका निधन हुआ तब उनकी उम्र बयासी वर्ष थी। मुझे आश्चर्य नहीं कि आपने उनके बारे में नहीं सुना होगा। जब उन्होंने गाना छोड़ दिया था, तब

आप शायद छोटे बच्चे रहे होंगे। उन्होंने पंद्रह साल पहले सेवानिवृत्ति ले ली थी और बामुंगाछी में एक घर बनवाया था। वहीं वे लगभग एकांतवासी की तरह अपनी मृत्यु तक रहे। 18 सितंबर को उन्हें दिल का दौरा पड़ा और उसी रात उनका निधन हो गया।
'अच्छा ऐसा है।'
श्री समाद्दार ने अपना गला साफ किया। कुछ सेकंड की चुप्पी के बाद, उन्होंने थोड़ी हिचकिचाहट के साथ कहा, 'मुझे यकीन है कि आप सोच रहे होंगे कि मैं आपको इस तरह परेशान करने क्यों आया हूँ। मैं बस आपको थोड़ी पृष्ठभूमि बताना चाहता था, बस इतना ही।'
‘ज़रूर। चिंता मत कीजिए, श्रीमान समाद्दार, आप आराम से समय लीजिए।’ मोनी बाबू ने बोलना जारी रखा। ‘मेरे चाचा अन्य पुरुषों से अलग थे। वे वास्तव में एक वकील थे और खूब पैसा कमाते थे। लेकिन उन्होंने लगभग पचास वर्ष की आयु में वकालत छोड़ दी और पूरी तरह संगीत की ओर मुड़ गए। वे केवल गाते ही नहीं थे, बल्कि भारतीय और पश्चिमी, सात-आठ अलग-अलग वाद्य यंत्र बजा सकते थे। मैंने स्वयं उन्हें सितार, वायलिन, पियानो, हारमोनियम, बांसुरी और तबला बजाते हुए देखा है। उन्हें वाद्य यंत्रों को इकट्ठा करने का शौक था। वास्तव में, उनका घर संगीत वाद्ययंत्रों का एक छोटा संग्रहालय बन गया था।’ ‘आप किस घर की बात कर रहे हैं?’
“उन्होंने कलकत्ता छोड़ने से पहले ही संग्रह करना शुरू कर दिया था। फिर उन्होंने अपना संग्रह बामुंगाछी स्थित अपने घर में स्थानांतरित कर दिया। वे वाद्य यंत्रों की तलाश में दूर-दूर तक यात्रा करते थे। एक बार उन्होंने बंबई में एक इतालवी से वायलिन खरीदा। कुछ ही महीनों बाद, उन्होंने उसे कलकत्ता में तीस हजार रुपये में बेच दिया।”
फेलुदा ने एक बार मुझसे कहा था कि तीन सौ साल पहले इटली में मुट्ठी भर लोग ऐसे थे जिन्होंने इतनी उच्च गुणवत्ता वाले वायलिन बनाए थे कि आज उनकी कीमत एक लाख रुपये से अधिक है।
श्री समाद्दार बोलते रहे, “जैसा कि आप देख सकते हैं, मेरे चाचा प्रतिभाशाली थे। उनके चरित्र में कई सकारात्मक गुण थे जो उन्हें अधिकांश लोगों से अलग बनाते थे। लेकिन, साथ ही, उनमें एक प्रबल नकारात्मक पहलू भी था जिसने अंततः उन्हें एकांतप्रिय बना दिया। वे बेहद कंजूस थे। उनके जो थोड़े-बहुत रिश्तेदार थे, उन्होंने भी इसी वजह से उनसे मिलना बंद कर दिया।

उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, क्योंकि वैसे भी उन्हें उनसे संपर्क बनाए रखने में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी।”
उसके कितने रिश्तेदार थे?
‘ज़्यादा कुछ नहीं। उनके तीन भाई और दो बहनें थीं। उनकी बहनें और दो भाई अब इस दुनिया में नहीं हैं। तीसरा भाई तीस साल पहले घर छोड़कर चला गया था। किसी को नहीं पता कि वह ज़िंदा है या नहीं। राधारमन की पत्नी और इकलौता बेटा मुरलीधर, दोनों ही मर चुके हैं। मुरलीधर का बेटा धरानीधर उनका इकलौता पोता है। राधारमन उसे बहुत प्यार करते थे। लेकिन जब उसने पढ़ाई छोड़कर दूसरे नाम से थिएटर में काम करना शुरू किया, तो मेरे चाचा ने उससे नाता तोड़ लिया। मुझे नहीं लगता कि उन्होंने उसे फिर कभी देखा होगा।’
‘आप उनसे किस प्रकार संबंधित हैं?’
'ओह, मेरे पिता उनके बड़े भाइयों में से एक थे। उनका निधन कई साल पहले हो गया था।'
‘मैं समझ गया; और क्या धरानीधर अभी भी जीवित है?’
हां, लेकिन मुझे लगता है कि वह अब किसी दूसरे समूह में शामिल हो गए हैं और जात्रा कर रहे हैं। मेरे चाचा के निधन के बाद मैंने उनसे संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन वह कलकत्ता में नहीं थे। किसी ने मुझे बताया कि वह छोटे- छोटे गांवों का दौरा करते हुए टूर पर गए हैं। अब वह थिएटर जगत में काफी मशहूर हैं। उन्हें संगीत में भी रुचि थी, इसीलिए उनके दादाजी उन्हें बहुत पसंद करते थे।
श्री समाद्दार रुक गए। फिर वे कुछ अनमने ढंग से बोलने लगे। “ऐसा नहीं था कि मैं अपने चाचा से नियमित रूप से मिलता था। मैं उनसे मिलने जाता था, शायद हर दो महीने में एक बार। आजकल तो यह भी मुश्किल हो गया था क्योंकि काम में बहुत व्यस्त रहता था। मैं भवानीपुर में यूरेका प्रेस नाम से एक प्रिंटिंग प्रेस चलाता हूँ। हाल ही में बिजली इतनी बार कटी है कि सारा पेंडिंग काम निपटाना बहुत मुश्किल हो गया है। खैर, मेरे चाचा के पड़ोसी, अबानी बाबू ने मुझे फोन किया जब उन्हें दिल का दौरा पड़ा। मैं तुरंत हृदय रोग विशेषज्ञ चिंतामणि बोस के साथ निकल गया। मेरे चाचा पहले तो बेहोश थे, लेकिन मरने से ठीक पहले उन्होंने अपनी आँखें खोलीं और मुझे पहचान लिया। उन्होंने कुछ शब्द भी बोले, लेकिन फिर... सब खत्म हो गया।”
‘उसने क्या कहा?’ फेलुदा आगे की ओर झुका।

उसने कहा, “मेरे नाम पर।” फिर उसने बोलने की कोशिश की, लेकिन बोल नहीं पाया। कुछ देर संघर्ष करने के बाद, वह केवल एक शब्द ही बोल पाया। “चाबी… चाबी,” उसने कहा। बस इतना ही।
फेलुदा ने श्री समाद्दार को घूरते हुए, चेहरे पर शिकन लिए देखा। 'क्या आपको कुछ अंदाजा है कि उनके शब्दों का क्या अर्थ हो सकता है?'
‘खैर, पहले तो मुझे लगा कि शायद वह अपने नाम और प्रतिष्ठा को लेकर चिंतित थे। शायद उन्हें एहसास हो गया था कि लोग उन्हें कंजूस कहते हैं। लेकिन “चाबी” शब्द उनके लिए मायने रखता था। मेरा मतलब है, वह इस चाबी को लेकर सचमुच चिंतित लग रहे थे। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है कि वह किस चाबी की बात कर रहे थे। उनके बेडरूम में एक अलमारी और एक संदूक है। इनकी चाबियां उनके बिस्तर के बगल में रखी मेज के दराज में रखी थीं। उनके बेडरूम से जुड़े बाथरूम को छोड़कर घर में केवल तीन कमरे हैं। घर में नाममात्र का फर्नीचर है, और ऐसी कोई चीज नहीं है जिसके लिए चाबी की जरूरत हो। उनके बेडरूम के मुख्य दरवाजे पर लगा ताला जर्मन कॉम्बिनेशन लॉक था, जो चाबी से बिल्कुल नहीं खुलता था।’
‘अलमारी और संदूक में उसके पास क्या था?’
‘कुछ कपड़ों और कागजों के अलावा कुछ नहीं था। ये अलमारी में थे। संदूक पूरी तरह से खाली था।’
‘क्या आपको कोई पैसा मिला?’
नहीं। मेज की दराज में कुछ खुले पैसे और दो-पाँच रुपये के कुछ नोट थे, बस इतना ही। उसके तकिए के नीचे एक बटुआ था, लेकिन उसमें भी बहुत कम पैसे थे। जाहिर है, वह इस बटुए में रोजमर्रा के खर्च के पैसे रखता था। कम से कम, उसके पुराने नौकर अनुकूल ने मुझे यही बताया।
'जब उसके बटुए या दराज में जो कुछ भी था, वह खर्च हो गया, तो उसने क्या किया? निश्चित रूप से उसके पास खर्च करने के लिए कोई बड़ा स्रोत होगा?'
'हां, यही मानना पड़ेगा।'
‘आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? क्या उनका कोई बैंक खाता नहीं था?’
श्री समाद्दार मुस्कुराए। ‘नहीं, उनके पास नहीं था। अगर होता, तो उनमें कोई असामान्य बात नहीं होती, है ना? सच कहूँ तो, एक समय था जब वे अपना पैसा बैंक में रखते थे। लेकिन कई साल पहले, वह बैंक बंद हो गया और उन्होंने उसमें जमा सारा पैसा खो दिया। उसके बाद उन्होंने किसी और बैंक पर भरोसा करने से

इनकार कर दिया। लेकिन—’ श्री समाद्दार ने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहा, ‘मुझे पता है कि उनके पास बहुत पैसा था। वरना आप क्या सोचते हैं कि वे उन सभी दुर्लभ और महंगे वाद्ययंत्रों को कैसे खरीद सकते थे? इसके अलावा, उन्हें अपने ऊपर खूब खर्च करने में कोई आपत्ति नहीं थी। वे अच्छा खाते थे, खास तौर पर सिलवाए गए कपड़े पहनते थे, एक बड़ा बगीचा रखते थे और यहाँ तक कि एक पुरानी ऑस्टिन कार भी खरीदी थी। वे कभी-कभी कलकत्ता जाया करते थे। तो…’ उनकी आवाज़ धीमी पड़ गई।
फेलुदा ने एक चारमीनार जलाई और श्री समद्दार को भी एक दी। श्री समद्दार ने उसे ले लिया और फेलुदा द्वारा उनके लिए जलाने तक प्रतीक्षा की। फिर उन्होंने गहरी साँस लेते हुए कहा, ‘अब समझ में आया कि मुझे आपके पास क्यों आना पड़ा? इस चाबी से क्या खुलेगा? मेरे चाचा का सारा पैसा कहाँ गया? वैसे, वह किस चाबी की बात कर रहे थे? क्या हमें कुछ पैसा या कुछ और मिलेगा? क्या उन्होंने वसीयत बनाई थी? कौन जाने? अगर बनाई थी, तो हमें उसे ढूँढ़ना होगा। वसीयत न होने की स्थिति में, उनके पोते को सब कुछ मिलेगा, लेकिन किसी को तो पता लगाना होगा कि उसमें क्या-क्या शामिल है। मैंने आपकी बुद्धिमत्ता और कौशल के बारे में बहुत कुछ सुना है। क्या आप मेरी मदद करेंगे, श्री मित्तर?’
फेलुदा मान गया। फिर तय हुआ कि श्री समाद्दार आज सुबह 7 बजे हमें लेने आएंगे और बामुंगाछी में अपने चाचा के घर ले जाएंगे। मुझे समझ आ गया कि फेलुदा को इसमें दिलचस्पी थी क्योंकि यह एक नए तरह का रहस्य था। या शायद यह रहस्य से ज़्यादा एक पहेली थी।
पहले तो मुझे यही लगा। बाद में मुझे एहसास हुआ कि यह महज एक पहेली से कहीं अधिक जटिल मामला था।

दो

हम जेस्सोर रोड पर गाड़ी चलाते हुए बारासात के बाद दाहिने मुड़ गए। यह सड़क सीधे बामुंगाछी की ओर जाती थी। श्री समद्दार यहाँ एक छोटी सी चाय की दुकान पर रुके और हमें चाय और जलेबी खिलाई। इसमें लगभग पंद्रह मिनट लगे। जब तक हम राधारमन समद्दार के घर पहुँचे, तब तक आठ बज चुके थे।
एक विशाल भूखंड (बाद में हमें बताया गया कि यह सात एकड़ का था) के बीचोंबीच एक बंगला खड़ा था, जिसके चारों ओर गुलाबी रंग की चारदीवारी और नीलगिरी के पेड़ों की कतारें थीं। हमारे लिए द्वार खोलने वाला व्यक्ति शायद माली था, क्योंकि उसके हाथ में एक टोकरी थी। हम गाड़ी से मुख्य द्वार तक पहुँचे, रास्ते में एक गैरेज दिखाई दिया। उसमें एक काली ऑस्टिन कार खड़ी थी।
जैसे ही मैं कार से बाहर निकल रहा था, बगीचे से अचानक आई एक आवाज़ ने मुझे चौंका दिया और मैंने तुरंत ऊपर देखा। मैंने देखा कि लगभग दस साल का एक लड़का कुछ ही दूरी पर नीले रंग के शॉर्ट्स पहने और हाथ में एयर गन लिए खड़ा था। उसने गंभीरता से मेरी ओर देखा।
श्री समद्दार ने पूछा, 'क्या आपके पिताजी घर पर हैं? उन्हें बता दीजिए कि कलकत्ता से मोनी बाबू वापस आ गए हैं और अगर उन्हें कोई आपत्ति न हो तो वे उनसे मिलना चाहते हैं।'
लड़का अपनी बंदूक में गोलियां भरकर चला गया।
‘क्या वह पड़ोसी का बेटा है?’ फेलुदा ने पूछा।
'जी हां। उनके पिता, अबानी सेन, एक फूल विक्रेता हैं। उनकी कलकत्ता के न्यू मार्केट में एक दुकान है। वे बिल्कुल बगल में रहते हैं। उनकी नर्सरी भी यहीं है। कभी-कभी वे यहां आकर अपने परिवार के साथ कुछ सप्ताह बिताते हैं।' एक बुजुर्ग व्यक्ति घर से बाहर निकला और जिज्ञासा भरी निगाहों से हमारी ओर देखने लगा। श्री समद्दार ने कहा, 'यह अनुकूल है। इसने मेरे चाचा के यहाँ तीस साल से अधिक समय तक काम किया है। जब तक हमें घर के बारे में कोई निर्णय नहीं मिल जाता, तब तक यह यहीं रहेगा।'

सामने के दरवाजे के पीछे एक छोटा सा हॉल था। इसे कमरा कहना तो नामुमकिन था, बीच में बस एक गोल मेज थी और दीवार पर एक फटा हुआ कैलेंडर टंगा था। दीवार पर बिजली के स्विच भी नहीं थे क्योंकि पूरे इलाके में बिजली नहीं आती थी। इस हॉल के आगे एक दरवाजा था। श्री समाद्दार उसके पास गए और बोले, 'देखो, यह वही जर्मन ताला है जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया था। द्वितीय विश्व युद्ध से पहले कलकत्ता में ऐसा ताला आसानी से मिल जाता था। इसका कॉम्बिनेशन है आठ-दो-नौ-एक।'
यह गोल आकार का था और इसमें चाबी लगाने की कोई व्यवस्था नहीं थी। चाबी की जगह चार खांचे बने हुए थे। हर खांचे के सामने एक से नौ तक संख्याएँ लिखी हुई थीं। हर खांचे से एक छोटा सा हुक जैसा कुछ निकला हुआ था। इस हुक को खांचे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक धकेला जा सकता था। इसे किसी भी संख्या के पास भी रखा जा सकता था। ताला खोलना तब तक असंभव था जब तक किसी को यह ठीक से पता न हो कि हुक को किन संख्याओं के सामने रखना है।
श्री समद्दार ने चारों हुकों को धक्का दिया, हर एक को अलग-अलग संख्या—आठ, दो, नौ और एक—के सहारे टिका दिया। हल्की सी क्लिक की आवाज़ के साथ ताला खुल गया। ऐसा लगा मानो मैं किसी जादू के शो में हूँ। श्री समद्दार ने कहा, 'दरवाजा बंद करना तो और भी आसान है। आपको बस किसी भी हुक को सही संख्या से दूर धकेलना है। फिर यह अपने आप बंद हो जाता है।'
जर्मन ताले वाला दरवाजा राधारमन समाद्दार के शयनकक्ष में खुलता था। यह एक बड़ा कमरा था, और इसमें वह सारा फर्नीचर मौजूद था जिसका वर्णन राधारमन के भतीजे ने किया था। सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि कमरे में कितने सारे वाद्य यंत्र भरे पड़े थे। इनमें से कुछ अलमारियों पर रखे थे, कुछ एक लंबी बेंच और छोटी मेजों पर। कुछ और दीवार पर टंगे हुए थे।
फेलुदा कमरे के बीच में रुका और कुछ पल इधर-उधर देखा। फिर उसने अलमारी और संदूक खोला और दोनों की तलाशी ली। इसके बाद उसने मेज की दराजों, बिस्तर के नीचे मिले एक छोटे से संदूक (जिसमें केवल एक जोड़ी पुराने जूते और कुछ चिथड़े मिले) और कमरे में रखे सभी उपकरणों की जाँच की। फेलुदा ने उन्हें उठाया, उनका वजन महसूस किया और उन्हें पलटकर देखा कि क्या उनमें से कोई चाबी से चलता है। फिर उसने बिस्तर की चादरें हटाईं, गद्दा पलटा और फर्श पर थपथपाकर देखने लगा कि क्या उसमें से कोई खोखलापन सुनाई देता है। ऐसा नहीं था। उसे संलग्न बाथरूम की जाँच करने में एक और मिनट लगा। उसे फिर भी कुछ

नहीं मिला। अंत में, उसने कहा, 'क्या आप माली को एक मिनट के लिए यहाँ बुला सकते हैं?' जब माली आया, तो उसने उससे खिड़की के नीचे रखे दो गमलों की सामग्री निकलवाई। दोनों गमले खाली थे। 'ठीक है, आप सब कुछ वापस गमलों में रख सकते हैं, और धन्यवाद,' उसने माली से कहा।
इसी बीच, अनुकूल ने कमरे में एक मेज और चार कुर्सियाँ लगा दीं। फिर उसने मेज पर नींबू पानी के चार गिलास रखे और चला गया। श्री समद्दार ने हमें दो गिलास देते हुए पूछा, 'श्री मित्तर, आप इस सब के बारे में क्या सोचते हैं?' फेलुदा ने सिर हिलाया। 'अगर ये उपकरण न होते, तो यह मानना असंभव होता कि इस कमरे में कोई संपन्न व्यक्ति रहता था।'
‘बिल्कुल सही। आपको क्या लगता है कि मैं मदद के लिए आपके पास क्यों आया? मैं अपने जीवन में इतना असमंजस में कभी नहीं पड़ा!’ श्री समाद्दार ने अपने गिलास से एक घूंट लेते हुए कहा।
मैंने वाद्ययंत्रों को देखा। मैं उनमें से कुछ ही पहचान पाया, जैसे सितार, सरोद, तानपुरा, तबला और बांसुरी। मैंने बाकी वाद्ययंत्र कभी नहीं देखे थे, और मुझे यकीन नहीं था कि फेलुदा ने भी देखे होंगे। 'क्या आप जानते हैं कि इनमें से प्रत्येक को क्या कहते हैं?' उसने श्री समाद्दार से पूछा। 'दीवार पर हुक से लटके उस तार वाले वाद्ययंत्र का नाम क्या आप बता सकते हैं?'
‘जी नहीं, महोदय!’ श्री समद्दार हँसे। ‘मुझे संगीत के बारे में कुछ नहीं पता। मुझे जरा भी अंदाजा नहीं है कि इन्हें क्या कहा जाता है या ये कहाँ से आए हैं।’
कमरे के बाहर कदमों की आहट सुनाई दी। कुछ देर बाद, एयरगन लिए लड़का करीब चालीस साल के एक आदमी के साथ आया। श्री समद्दार ने परिचय कराया। वह आदमी अबानी सेन था, जो बगल में रहने वाला फूलवाला था। लड़का उसका बेटा साधन था। 'श्री प्रदोष मित्तर?' उसने कहा। 'बेशक मैंने आपके बारे में सुना है!' फेलुदा ने हल्की सी मुस्कान दी और गला साफ किया। श्री सेन खाली कुर्सी पर बैठ गए और उन्हें नींबू पानी का चौथा गिलास दिया गया। 'इससे पहले कि मैं भूल जाऊं, श्री समद्दार,' उन्होंने गिलास उठाते हुए कहा, 'क्या आपको पता है कि आपके चाचा अपने कोई वाद्य यंत्र बेचना चाहते थे?'
‘अरे नहीं!’ श्री समद्दार काफी अचंभित लग रहे थे।
“कल एक सज्जन आए थे। यहाँ कोई नहीं मिला, इसलिए मेरे घर आए। उनका नाम सुरजीत दासगुप्ता है। वो आपके चाचा की तरह ही वाद्य यंत्रों का संग्रह

करते हैं। उन्होंने मुझे राधारमन बाबू का लिखा एक पत्र दिखाया और बताया कि वो पहले भी इस घर में आ चुके हैं और राधारमन बाबू से बात कर चुके हैं। बाद में अनुकूल ने बताया कि उसने उन्हें पहले भी देखा था। ये पत्र आपके चाचा की मृत्यु से कुछ समय पहले लिखा गया था। खैर, मैंने उनसे कहा कि आज फिर आना। मुझे आभास था कि आप लौट सकते हैं।”
मैंने भी उसे देखा है।
यह बात साधन ने कही। वह एक छोटे से वाद्य यंत्र से खेल रहा था जो कुछ-कुछ हारमोनियम जैसा दिखता था और उससे हल्की झंकार निकल रही थी। उसके पिता उसकी बातों पर हँस पड़े। ‘साधन अपना अधिकांश समय इसी घर में या इसके आसपास बिताता था। वास्तव में, वह अभी भी ऐसा ही करता है। वह और उसके दादाजी बहुत अच्छे दोस्त थे।’
‘तुम्हें अपने दादाजी कैसे लगे?’ फेलुदा ने उससे पूछा।
साधन ने हमारी ओर पीठ करके जवाब दिया, 'मैं उसे बहुत पसंद करता था, लेकिन कभी-कभी वह मुझे परेशान कर देता था।'
'कैसे?'
वह मुझसे बार-बार सरगम गाने के लिए कहता रहता था।
‘और आप ऐसा नहीं करना चाहते थे?’
नहीं। लेकिन मैं गा सकता हूँ।
‘अरे, सिर्फ हिंदी फिल्मों के गाने।’ श्री सेन फिर हँस पड़े।
‘क्या तुम्हारे दादाजी को पता था कि तुम गा सकते हो?’
'हाँ।'
‘क्या उसने कभी तुम्हारी बात सुनी थी?’
'नहीं।'
तो फिर, आपको क्या लगता है कि उसे कैसे पता चला?
‘दादू अक्सर मुझसे कहा करते थे कि जिनके नाम में मधुरता का भाव होता है, उनकी आवाज भी मधुर ही होती है।’
यह बात हमें बिल्कुल समझ नहीं आई, इसलिए हमने हैरानी भरी नजरों से एक-दूसरे को देखा। 'उसका मतलब क्या था?' फेलुदा ने पूछा।
'मुझें नहीं पता।'
क्या आपने कभी उन्हें गाते हुए सुना है?
नहीं। लेकिन मैंने उसे बजाते हुए सुना है।

‘क्या!’ श्री समद्दार ने हैरानी से कहा। ‘क्या आप सच कह रहे हैं, साधन? मुझे लगा था कि उन्होंने खेलना बिल्कुल छोड़ दिया है। क्या उन्होंने आपके सामने खेला?’
नहीं, नहीं। मैं बगीचे में बाहर था, अपनी बंदूक से नारियल तोड़ रहा था। तभी मैंने उसे बजाते हुए सुना।
‘क्या यह कोई और हो सकता था?’
‘नहीं, घर में दादू के अलावा कोई नहीं था।’
‘क्या वह लंबे समय तक खेलता रहा?’ फेलुदा यह जानना चाहता था।
नहीं, बस थोड़ी देर के लिए।
फेलुदा ने श्री समद्दार की ओर मुड़कर कहा, 'क्या आप कृपया अनुकुल को यहाँ आने के लिए कह सकते हैं?'
कुछ ही क्षणों में अनुकुल आ गया। फेलुदा ने उससे पूछा, 'क्या तुमने कभी अपने गुरु को इनमें से कोई वाद्य यंत्र बजाते हुए सुना है?'
‘अच्छा…’ अनुकुल ने हिचकिचाते हुए उत्तर दिया। ‘मेरे स्वामी अपना अधिकांश समय इसी कमरे में बिताते थे। उन्हें परेशान होना पसंद नहीं था। इसलिए, वास्तव में, मुझे नहीं पता कि वे खेलते थे या नहीं।’
‘मैं समझ गया। उसने कभी आपकी मौजूदगी में नहीं खेला, है ना?’
'नहीं, महोदय।'
क्या आपने कभी बाहर से या घर के किसी अन्य हिस्से से कोई आवाज सुनी?
'खैर... बस कुछ ही बार... मुझे लगता है... लेकिन मुझे ठीक से सुनाई नहीं देता, महोदय।'
क्या मरने से पहले कोई अजनबी उससे मिलने आया था? वही आदमी जो कल आया था? जी हाँ, महोदय। उन्होंने इसी कमरे में मेरे स्वामी से बात की थी।
‘वह पहली बार कब आया था?’
जिस दिन उनकी मृत्यु हुई।
‘क्या! उसी दिन?’ श्री समद्दार अपनी हैरानी छिपा नहीं सके। ‘जी हाँ।’ अनुकूल की आँखों में आँसू आ गए। उसने अपनी चादर के एक सिरे से उन्हें पोंछा और रुंधे हुए स्वर में बोला, ‘उस सज्जन के जाने के तुरंत बाद मैं यहाँ आया था, अपने बाबू को यह बताने के लिए कि उनके नहाने के लिए गर्म पानी तैयार है, लेकिन उन्हें सोते हुए पाया। कम से कम मुझे तो यही लगा कि वे सो रहे हैं, जब

तक कि मैंने उन्हें जगाने की कोशिश ही नहीं की। फिर मैं सेन बाबू के घर गया और उन्हें बताया।’
‘जी हां, बिल्कुल सही,’ श्री सेन ने कहा। ‘मैंने तुरंत श्री समाद्दार को फोन किया और उनसे डॉक्टर को बुलाने को कहा। लेकिन मुझे पता था कि डॉक्टर ज्यादा कुछ नहीं कर सकता।’
बाहर एक कार रुकी। अनुकूल यह देखने के लिए चला गया कि कौन है। एक मिनट बाद, एक आदमी कमरे में दाखिल हुआ और उसने अपना परिचय सुरजीत दासगुप्ता के रूप में दिया। उसकी लंबी और झुकी हुई मूंछें, चौड़ी साइडबर्न और घने, बेतरतीब बाल थे। उसने भारी फ्रेम वाला चश्मा पहना हुआ था। श्री सेन ने श्री समाद्दार की ओर इशारा करते हुए कहा, 'श्री दासगुप्ता, आपको उनसे बात करनी चाहिए। वे राधारमन बाबू के भतीजे हैं।'
‘ओह, मैं समझ गया। आपके चाचा ने मुझे पत्र लिखा था। इसलिए मैं आपसे मिलने आया था—’
‘क्या मैं वह पत्र देख सकता हूँ?’ श्री समद्दार ने उन्हें बीच में ही रोकते हुए कहा।
सुरजीत दासगुप्ता ने अपनी जैकेट की अंदरूनी जेब से एक पोस्टकार्ड निकाला और श्री समद्दार को दे दिया। श्री समद्दार ने उस पर सरसरी नज़र डाली और उसे फेलुदा को दे दिया। मैंने झुककर उस पर लिखा हुआ पढ़ा: ‘कृपया 18 सितंबर को सुबह 9 से 10 बजे के बीच मुझसे मिलने आइए। मेरे सभी वाद्य यंत्र मेरे घर में हैं। आप आने पर उन्हें देख सकते हैं।’ फेलुदा ने पता देखने के लिए पोस्टकार्ड को पलटा: मिनर्वा होटल, सेंट्रल एवेन्यू, कलकत्ता 13। फिर उन्होंने बिस्तर के बगल में रखी छोटी मेज पर रखी नीली-काली स्याही की बोतल पर नज़र डाली। ऐसा लग रहा था कि पत्र भी उसी स्याही से लिखा गया था।
श्री दासगुप्ता अधीर भाव से बिस्तर पर बैठ गए। श्री समाद्दार ने उनसे एक और सवाल पूछा। 'उस सुबह आपने और मेरे चाचा ने क्या बात की?'
दरअसल, मुझे राधारमन समाद्दार के बारे में तभी पता चला जब मैंने संगीत प्रेमियों की एक पत्रिका में उनका एक लेख पढ़ा। इसलिए मैंने उन्हें पत्र लिखा और उनके अनुरोध पर अठारह तारीख को यहाँ आया। उनके संग्रह में दो वाद्य यंत्र थे जिन्हें मैं खरीदना चाहता था। हमने उनकी कीमतों पर चर्चा की और मैंने उनके लिए दो हजार रुपये का प्रस्ताव रखा। वे मान गए और मैंने तुरंत चेक लिखना शुरू कर दिया। लेकिन उन्होंने मुझे रोक दिया और कहा कि

उन्हें नकद ज़्यादा पसंद है। मेरे पास इतने पैसे नहीं थे, इसलिए उन्होंने मुझे अगले बुधवार को वापस आने को कहा। मंगलवार को मैंने अखबारों में पढ़ा कि उनका निधन हो गया है। फिर मुझे देहरादून के लिए निकलना पड़ा। मैं परसों वापस लौटा।
श्री समद्दार ने पूछा, 'उस सुबह जब आपने उनसे बात की थी, तब वे कैसे लग रहे थे?'
‘अरे, वो तो ठीक लग रहा था! लेकिन शायद उसे लगने लगा था कि वो ज्यादा दिन नहीं जिएगा। उसकी कुछ बातों से तो यही लगता था।’
'क्या आप लोगों के बीच किसी तरह की बहस तो नहीं हुई?'
श्री दासगुप्ता कुछ सेकंड तक चुप रहे। फिर उन्होंने ठंडे स्वर में कहा, 'क्या आप अपने चाचा के दिल के दौरे के लिए मुझे जिम्मेदार ठहरा रहे हैं?' ‘नहीं, मेरा यह मतलब नहीं है कि आपने जानबूझकर कुछ किया,’ श्री समाद्दार ने उतने ही शांत स्वर में जवाब दिया। ‘लेकिन आपके जाने के तुरंत बाद ही वह बीमार पड़ गए, इसलिए...’
‘ठीक है। श्रीमान समाद्दार, मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि जब मैं आपके चाचा को छोड़कर गया था, तब वे बिल्कुल ठीक थे। वैसे भी, मेरे प्रस्ताव पर फैसला करना आपके लिए मुश्किल नहीं होना चाहिए। मेरे पास पैसे हैं।’ उन्होंने अपना बटुआ निकाला। ‘ये लीजिए दो हजार नकद। अगर मैं आज ही ये दोनों वाद्य यंत्र ले जा सकूँ तो अच्छा होगा। मुझे कल देहरादून लौटना है। आप जानते हैं, मैं वहीं रहता हूँ। मैं संगीत पर शोध करता हूँ।’
‘आप किन दो की बात कर रहे हैं?’
श्री दासगुप्ता उठे और दीवार पर टंगे वाद्ययंत्रों में से एक के पास गए। ‘यह उनमें से एक है। इसे खमनचे कहते हैं, यह ईरान का है। मैं इसके बारे में जानता था, लेकिन इसे देखा नहीं था। यह काफी पुराना वाद्ययंत्र है। और दूसरा था—’
श्री दासगुप्ता कमरे के दूसरे छोर पर गए और उसी वाद्ययंत्र के सामने रुक गए जिसे साधन बजा रहा था। उन्होंने कहा, 'यही वह दूसरा वाद्ययंत्र है जो मुझे चाहिए था। इसे मेलोकॉर्ड कहते हैं। यह इंग्लैंड में बना है। मेरा मानना है कि निर्माताओं ने इसके कुछ ही टुकड़े बनाए और फिर किसी कारणवश उत्पादन बंद कर दिया। मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा था, और चूंकि अब यह

कहीं नहीं मिलता, इसलिए मैंने इसके लिए एक हजार रुपये की पेशकश की। आपके चाचा इसे मुझे उस कीमत पर बेचने के लिए राजी हो गए।'
‘माफ़ कीजिए, श्री दासगुप्ता, लेकिन आप इन्हें नहीं ले सकते,’ फेलुदा ने दृढ़ता से कहा। श्री दासगुप्ता मुड़े और हम सब पर तीखी नज़र डाली। फिर उनकी नज़र फेलुदा पर टिकी। ‘तुम कौन हो?’ उन्होंने रूखेपन से पूछा।
श्री समद्दार ने उत्तर दिया, ‘वह मेरा मित्र है, और वह सही कह रहा है। हम आपको इनमें से कोई भी वस्तु नहीं खरीदने दे सकते। आपको इसका कारण समझना चाहिए। आखिर, ऐसा कोई सबूत तो है नहीं, है ना, कि मेरे चाचा ने वास्तव में इन्हें आपके द्वारा बताई गई कीमत पर बेचने के लिए सहमति दी थी?’
श्री दासगुप्ता एक मूर्ति की तरह स्थिर खड़े रहे, बिना कुछ बोले। फिर वे जितनी जल्दी हो सके कमरे से बाहर निकल गए।
फेलुदा भी उठ खड़ा हुआ और धीरे-धीरे उस वाद्ययंत्र की ओर बढ़ा जिसे श्री दासगुप्ता ने खमनचे बताया था। श्री दासगुप्ता के अचानक चले जाने से वह ज़रा भी विचलित नहीं हुआ। वह वाद्ययंत्र सड़क किनारे बच्चों को बेचे जाने वाले छोटे वायलिनों जैसा दिखता था, हालांकि आकार में वह काफी बड़ा था और उसका गोल हिस्सा खूबसूरती से तराशा गया था। फिर वह मेलोकॉर्ड के पास गया और उसके काले-सफेद कीबोर्ड को दबाया। उससे निकली मधुर ध्वनि पियानो और सितार के एक अनोखे मिश्रण जैसी लग रही थी।
‘क्या यही वह वाद्य यंत्र है जिसे तुमने अपने दादाजी को बजाते हुए सुना था?’
'शायद।'
साधन एक बहुत ही शांत और गंभीर छोटा लड़का लग रहा था, जो उसकी उम्र के लड़के के लिए काफी असामान्य था।
फेलुदा ने उससे और कुछ नहीं कहा और अलमारी को दोबारा खोलने के लिए आगे बढ़ा। उसने दराज से कागजों का एक बंडल निकाला और श्री समद्दार से पूछा, 'क्या मैं इन्हें घर ले जा सकता हूँ? मुझे लगता है कि मुझे इन्हें विस्तार से पढ़ना चाहिए।'
‘ओह जी हाँ, ज़रूर। क्या और कुछ है...?’
नहीं, और कुछ नहीं है, धन्यवाद।

जब हम कमरे से बाहर निकले, तो मैंने साधन को खिड़की से बाहर देखते हुए, एक अजीब धुन गुनगुनाते हुए देखा। यह निश्चित रूप से किसी हिंदी फिल्म की धुन नहीं थी।

तीन

बामुंगाछी से लौटते समय श्री समद्दार ने पूछा, 'श्री मित्तर, आपको क्या लगता है? क्या इस रहस्य को सुलझाने की कोई उम्मीद है?'
‘मुझे सोचने की ज़रूरत है, श्रीमान समाद्दार। और मुझे ये कागज़ात पढ़ने की ज़रूरत है जो मैं आपके चाचा के कमरे से लाया हूँ। शायद इससे मुझे उस आदमी को बेहतर समझने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, मुझे संगीत और वाद्ययंत्रों पर थोड़ा पढ़ना और शोध करना है। कृपया मुझे दो दिन का समय दें ताकि मैं खुद को संभाल सकूँ।’
यह बातचीत कार में हो रही थी जब हम आखिरकार अपनी वापसी की यात्रा पर निकले। फेलुदा ने पूरे घर को दूसरी बार अच्छी तरह से तलाशा था, लेकिन उससे भी कुछ नहीं मिला था।
'जी हां, बिल्कुल,' श्री समद्दार ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया।
आपको कुछ तारीखों के बारे में मेरी मदद करनी होगी।
'हाँ?'
‘When did Radharaman’s son Muralidhar die?’
‘1945 में, अट्ठाईस साल पहले।’
उस समय उनके बेटे की उम्र कितनी थी?
‘धरानी? वह सात या आठ साल का रहा होगा।’
क्या वे हमेशा से कलकत्ता में ही रहते थे?
नहीं, मुरलीधर बिहार में काम करते थे। मुरलीधर के निधन के बाद उनकी पत्नी कलकत्ता में हमारे साथ रहने आ गईं। जब उनका देहांत हुआ, तब धरानी कॉलेज में पढ़ रहे थे। वे काफी होशियार थे, लेकिन अपनी माँ के निधन के बाद उनमें बदलाव आने लगा। बहुत जल्द ही उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया और एक थिएटर ग्रुप में शामिल हो गए। एक साल बाद, मेरे चाचा बामुंगछी चले गए। उनका घर बना था—’ “उन्नीस सौ उनसठ। हाँ, मैंने मुख्य द्वार पर यही लिखा देखा था।”
राधारमन समाद्दार के कागजात पुराने पत्रों, कुछ नकद ज्ञापनों, दो पुराने नुस्खों, स्पिग्लर नामक एक जर्मन कंपनी द्वारा निर्मित संगीत

वाद्ययंत्रों की एक सूची, एक नोटबुक से फाड़े गए पन्नों पर लिखे संगीत संकेतन और पांच नाटकों की प्रेस समीक्षाओं का संग्रह साबित हुए, जिनमें संजय लाहिड़ी का उल्लेख नीली पेंसिल से रेखांकित किया गया था।
‘हम्म,’ फेलुदा ने नोटेशन को देखते हुए कहा। ‘इन पर लिखावट सुरजीत दासगुप्ता के पत्र की लिखावट से बिल्कुल मिलती-जुलती है।’ फिर उन्होंने कैटलॉग देखा और कहा, ‘इसमें मेलोकॉर्ड का कोई ज़िक्र नहीं है।’ समीक्षाएँ पढ़ने के बाद उन्होंने टिप्पणी की, ‘धरणीधर और यह संजय लाहिड़ी एक ही व्यक्ति लगते हैं। जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, हालाँकि राधारमन ने अपने पोते से कोई संबंध नहीं रखा, फिर भी उन्होंने उसके बारे में जानकारी इकट्ठा की, खासकर अगर वह उसके अभिनय की प्रशंसा हो।’
फेलुदा ने सारे कागज़ात सावधानी से एक प्लास्टिक बैग में रखे और संजय लाहिड़ी किस थिएटर ग्रुप के लिए काम करते हैं, यह पता लगाने के लिए मंचलोक नाम की एक थिएटर पत्रिका को फोन किया। पता चला कि वह ग्रुप मॉडर्न ओपेरा था। जाहिर है, संजय लाहिड़ी सभी मुख्य भूमिकाएँ निभाते थे। फेलुदा ने फिर उनके कार्यालय में फोन किया और उन्हें बताया गया कि ग्रुप फिलहाल जलपाईगुड़ी में है। वे एक हफ्ते बाद ही लौटेंगे।
दोपहर के भोजन के बाद हम बाहर निकले। मुझे एक ही दिन में इतनी अलग-अलग जगहों पर जाने का मौका पहले कभी नहीं मिला था! फेलुदा मुझे सबसे पहले राष्ट्रीय संग्रहालय ले गया। उसने मुझे यह नहीं बताया कि हम वहाँ क्यों जा रहे हैं, और मैंने पूछा भी नहीं क्योंकि वह चुप हो गया था और अपनी उंगलियां चटका रहा था। इसका साफ मतलब था कि वह गहरी सोच में डूबा हुआ था और उसे परेशान नहीं किया जाना चाहिए था। हम सीधे संगीत वाद्ययंत्रों वाले अनुभाग में गए। सच कहूँ तो, मुझे पता भी नहीं था कि संग्रहालय में ऐसा कोई अनुभाग भी है। वह अनुभाग महाभारत काल से लेकर अब तक के सभी प्रकार के वाद्ययंत्रों से भरा हुआ था। आधुनिक वाद्ययंत्र भी प्रदर्शित थे, हालाँकि पश्चिम से आया हुआ कोई वाद्ययंत्र वहाँ नहीं था।
फिर हम दो संगीत की दुकानों पर गए, एक फ्री स्कूल स्ट्रीट में और दूसरी लाल बाजार में। दोनों में से किसी ने भी मेलोकॉर्ड नाम की किसी चीज़ के बारे में नहीं सुना था। लाल बाजार में दुकान चलाने वाली मोंडोल एंड कंपनी के श्री मोंडोल ने कहा, 'श्री समद्दार हमारे पुराने और सम्मानित ग्राहक थे। लेकिन नहीं, हमने उन्हें वह वाद्य यंत्र कभी नहीं बेचा जिसके बारे में आप

बात कर रहे हैं। यह कैसा दिखता है? क्या यह शहनाई जैसा कोई वाद्य यंत्र है?'
नहीं। यह हारमोनियम जैसा है, लेकिन आकार में बहुत छोटा है। इससे निकलने वाली ध्वनि पियानो और सितार की मिश्रित ध्वनि है।
इसमें कितने सप्तक हैं?
मुझे पता था कि आठ स्वर—सा रे गा मा पा धा नी सा—मिलकर एक सप्तक बनाते हैं। मोंडोल की दुकान में रखे बड़े हारमोनियमों में तीन सप्तक तक बजाने की व्यवस्था थी। जब फेलुदा ने उन्हें बताया कि मेलोकॉर्ड में केवल एक सप्तक होता है, तो श्री मोंडोल ने सिर हिलाकर कहा, 'नहीं महोदय, मुझे नहीं लगता कि हम आपकी मदद कर सकते हैं। यह वाद्य यंत्र शायद सिर्फ एक खिलौना ही हो। आप चाहें तो न्यू मार्केट की बड़ी खिलौनों की दुकानों में देख सकते हैं।' हमने श्री मोंडोल को धन्यवाद दिया और कॉलेज स्ट्रीट की ओर चल दिए। फेलुदा ने संगीत की तीन किताबें खरीदीं और फिर हम मंचलोक का कार्यालय ढूंढने निकल पड़े। हमें वह आसानी से मिल गया, लेकिन संजय लाहिड़ी की तस्वीर ढूंढने में हमें काफी समय लग गया। आखिरकार, फेलुदा ने कहीं से एक मुड़ी-तुड़ी तस्वीर निकाली और उसके पैसे देने की पेशकश की। पत्रिका के संपादक ने हंसते हुए कहा, 'अरे, मैं आपसे उस तस्वीर के पैसे नहीं मांग सकता, महोदय! आप फेलु मित्तर हैं, है ना? आपकी मदद कर पाना मेरे लिए सौभाग्य की बात है।'
एक कैफे में लस्सी पीने के बाद जब हम घर लौटे, तब शाम के 7:30 बज चुके थे। बिजली कटौती के कारण पूरा इलाका अंधेरे में डूबा हुआ था। फिर भी, फेलुदा ने हिम्मत नहीं हारी और कुछ मोमबत्तियां जलाकर अपनी किताबें पलटने लगा। जब रात नौ बजे बिजली वापस आई, तो उसने मुझसे कहा, 'टॉपशे, क्या तुम अपने दोस्त पोल्टू के घर जाकर उससे पूछ सकती हो कि क्या मैं आज शाम के लिए उसका हारमोनियम उधार ले सकता हूँ?'
हारमोनियम लाने में मुझे बस कुछ ही मिनट लगे। जब मैं रात को काफी देर से सोने गया, तब भी फेलुदा उसे बजा रहा था।
उस रात मुझे एक अजीब सपना आया। मैंने खुद को एक विशाल लोहे के दरवाजे के सामने खड़ा देखा, जिसके बीच में एक बहुत बड़ा छेद था। वह इतना बड़ा था कि मैं उसमें से फिसलकर निकल सकता था; लेकिन ऐसा करने के बजाय, फेलुदा, मोनिमोहन समाद्दार और मैं तीनों मिलकर एक बड़ी सी चाबी को उसमें डालने की

□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□, '□□ □□ □□ □□ □□! □□ □□ □□ □□ □□!'

चार

श्री समाद्दार ने हमें बताया था कि वे अगले बुधवार को हमें फोन करेंगे। हालांकि, उन्होंने एक दिन पहले, मंगलवार को सुबह 7 बजे फोन किया।
सुबह मैंने फोन उठाया। जब मैंने उससे कहा कि मैं फेलुदा को लेने जा रहा हूँ, तब तक वह थोड़ी देर रुक जाए, तो उसने कहा, 'नहीं, ऐसा करने की कोई ज़रूरत नहीं है। बस अपने चचेरे भाई को बता दो कि मैं अभी तुम्हारे घर आ रहा हूँ। कोई ज़रूरी काम आ गया है।'
वह पंद्रह मिनट में पहुँच गया। उसने कहा, 'अबानी सेन ने बामुंगाछी से फोन किया था। कल रात किसी ने मेरे चाचा के कमरे में सेंध लगाई।'
‘क्या किसी और को पता है कि उस जर्मन ताले को कैसे खोला जाता है?’ फेलुदा ने तुरंत पूछा।
‘धरानी को पता था। मुझे अबानी बाबू के बारे में पक्का नहीं पता—नहीं, मुझे नहीं लगता कि उन्हें पता है। लेकिन जिसने भी सेंध लगाई, उसने उस दरवाजे का इस्तेमाल बिल्कुल नहीं किया। वह बाथरूम के छोटे बाहरी दरवाजे से अंदर गया। आप जानते हैं, वह दरवाजा जो सफाईकर्मियों के लिए होता है।’
लेकिन वह दरवाजा अंदर से बंद था। मैंने खुद देखा था।
“हो सकता है हमारे जाने के बाद किसी ने इसे खोला हो। खैर, अच्छी बात यह है कि वह कुछ भी नहीं ले जा सका। अनुकुल को घर में घुसते ही पता चल गया और उसने शोर मचा दिया। देखो, क्या तुम अब खाली हो? क्या तुम मेरे साथ घर वापस जा सकते हो?”
'जी हां, बिल्कुल। लेकिन मुझे एक बात बताइए। अगर आप अब राधारमण के पोते धरानी को देखें, तो क्या आपको लगता है कि आप उसे पहचान पाएंगे?'
श्री समाद्दार ने भौंहें चढ़ाईं। 'खैर, मैंने उसे सालों से नहीं देखा है, लेकिन... हाँ, मुझे लगता है कि मैं कर सकता हूँ।'
फेलुदा संजय लाहिड़ी की तस्वीर लेने चला गया। जब उसने वह तस्वीर श्री समद्दार को सौंपी, तो मैंने देखा कि उसने संजय के चेहरे पर लंबी मूंछें बना

दी थीं और मोटे फ्रेम वाला चश्मा भी लगा दिया था। श्री समद्दार चौंक गए। ‘अरे!’ वे चिल्लाए, ‘ये तो बिलकुल—!’
‘Surajit Dasgupta?’
'हां! लेकिन शायद नाक बिल्कुल एक जैसी नहीं है। फिर भी, कुछ समानता तो है ही।'
‘यह तस्वीर आपके चचेरे भाई मुरलीधर के बेटे की है। मैंने इसे और रोचक बनाने के लिए इसमें कुछ चीजें जोड़ी हैं।’
‘यह तो कमाल है। दरअसल, कल जब दासगुप्ता अंदर आए तो मुझे थोड़ा अजीब लगा। सच कहूँ तो, मैं कल रात आपको फोन करके बताना चाहता था, लेकिन प्रेस कॉन्फ्रेंस में देर हो गई। आप जानते हैं, हम लोग ओवरटाइम काम कर रहे थे। लेकिन फिर, मुझे पूरी तरह यकीन नहीं था। मैंने पंद्रह साल से धरानी को नहीं देखा था, मंच पर भी नहीं। मुझे थिएटर में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं है। अगर आपकी बात सच है तो...’
फेलुदा ने बीच में ही टोकते हुए कहा, ‘अगर मेरी बात सच है, तो हमें दो बातें साबित करनी होंगी। एक तो यह कि सुरजीत दासगुप्ता असल जिंदगी में है ही नहीं; और दूसरी यह कि संजय लाहिड़ी अपने समूह को छोड़कर तुम्हारे चाचा की मृत्यु से कुछ दिन पहले कलकत्ता लौट आए थे। टॉपशे, कृपया मिनर्वा होटल का नंबर ले आओ।’ होटल ने हमें बताया कि सुरजीत दासगुप्ता नाम का एक व्यक्ति वास्तव में वहाँ रुका था, लेकिन एक दिन पहले ही चेक आउट कर चुका था। मॉडर्न ओपेरा को फोन करने का कोई फायदा नहीं था, क्योंकि उन्होंने पहले ही हमें बता दिया था कि संजय लाहिड़ी शहर से बाहर हैं।
बामुंगाछी पहुँचकर फेलुदा ने चारदीवारी के किनारे-किनारे चलते हुए घर का बाहर से निरीक्षण किया। जो भी आया होगा, उसे कार से आना पड़ा होगा, कुछ दूरी पर कार खड़ी करनी पड़ी होगी और बाकी का रास्ता पैदल चलना पड़ा होगा। फिर उसे चारदीवारी फांदकर अंदर आना पड़ा होगा। यह ज़्यादा मुश्किल नहीं रहा होगा, क्योंकि चारों ओर पेड़ थे, जिनकी घनी शाखाएँ चारदीवारी पर झुकी हुई थीं। ज़मीन बिल्कुल सूखी होने के कारण कहीं भी पैरों के निशान नहीं थे।
फिर हम अनुकूल को ढूंढने गए। उसकी तबीयत ठीक नहीं थी और वह अपने कमरे में आराम कर रहा था। उसने बड़ी मुश्किल से हमें बताया कि मच्छरों और सिरदर्द की वजह से वह पिछली रात सो नहीं पाया था। वह जहां लेटा था, वहां से उसे

राधारमण के शयनकक्ष की खिड़की दिखाई दे रही थी। तभी अचानक कमरे में एक बत्ती टिमटिमाती दिखी, तो वह झट से उठा और चिल्लाया, 'कौन है?' लेकिन इससे पहले कि वह कमरे तक पहुंच पाता, उसने देखा कि कोई व्यक्ति बाथरूम के छोटे से दरवाजे से निकलकर अंधेरे में गायब हो गया। अनुकूल ने रात का बाकी समय अपने मालिक के शयनकक्ष के फर्श पर लेटकर बिताया।
श्री समद्दार ने पूछा, 'मुझे नहीं लगता कि आप उस आदमी को पहचान पाएंगे?' 'नहीं, महोदय। मैं बूढ़ा हो चुका हूँ, महोदय, और मेरी नज़र उतनी अच्छी नहीं है। इसके अलावा, उस रात चाँद नहीं निकला था।'
राधारमन का शयनकक्ष बिल्कुल सुरक्षित प्रतीत हो रहा था। किसी भी चीज़ को छुआ हुआ नहीं लग रहा था। फिर भी, फेलुदा का चेहरा गंभीर दिख रहा था। उन्होंने कहा, 'मोनी बाबू, आपको पुलिस को सूचित करना होगा। आज रात से इस घर की सुरक्षा करनी होगी। घुसपैठिया वापस आ सकता है। भले ही सुरजीत दासगुप्ता संजय लाहिड़ी न हो, फिर भी वह हमारा मुख्य संदिग्ध है। कुछ वसूलीकर्ता अजीब तरह से दृढ़ निश्चयी होते हैं। वे अपनी मनचाही चीज़ पाने के लिए कुछ भी कर सकते हैं।'
‘मैं बगल वाले कमरे से पुलिस को फोन कर देता हूँ। मैं संयोग से पुलिस अधिकारी को जानता हूँ,’ श्री समद्दार ने कहा और व्यस्तता से कमरे से बाहर चले गए।
फेलुदा ने मेलोकॉर्ड उठाया और उसे ध्यान से देखने लगा। यह एक मजबूत छोटा वाद्य यंत्र था। इस पर दो पैनल थे, दोनों पर सुंदर नक्काशी की गई थी। फेलुदा ने इसे पलटा और एक पुराना और धुंधला लेबल देखा। 'स्पीग्लर,' उसने कहा। 'जर्मनी में बना है, इंग्लैंड में नहीं।' फिर उसने इसे बजाना शुरू किया। हालांकि वह कोई माहिर वादक नहीं था, लेकिन कमरे में गूंजने वाली ध्वनि मधुर और सुकून देने वाली थी। 'काश मैं इसे तोड़कर देख पाता कि इसके अंदर क्या है,' उसने इसे वापस मेज पर रखते हुए कहा, 'और जाहिर है मैं ऐसा नहीं कर सकता। संभावना है कि मुझे कुछ नहीं मिलेगा, और वाद्य यंत्र पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा। सोचो, दासगुप्ता इसके लिए एक हजार रुपये देने को तैयार थे!'
तेज सिरदर्द के बावजूद, अनुकुल उठा और हमारे लिए फिर से नींबू पानी ले आया। फेलुदा ने उसे धन्यवाद दिया और अपने गिलास से कुछ घूंट लिए। इसी समय श्री समद्दार वापस लौटे। उन्होंने हमें बताया, ‘पुलिस को सूचित कर दिया गया है।

आज रात से यहां दो कांस्टेबल तैनात किए जाएंगे। अबानी बाबू घर पर नहीं थे। वह और साधन दिन भर के लिए कलकत्ता गए हैं।’
‘मैं समझ गया। अच्छा, बताओ, मोनी बाबू, तुम्हारे अलावा और किसे राधारमन की सारी दौलत छिपाने की आदत के बारे में पता था?’
“सच कहूँ तो, श्री मित्तर, मुझे तो उनकी मृत्यु के बाद ही पता चला कि पैसा छिपाया गया था। बगल वाले अबानी बाबू को पता है कि हम मेरे चाचा का पैसा ढूंढ रहे हैं, लेकिन मुझे यकीन है कि उन्हें इस रकम का कोई अंदाजा नहीं है। अगर धरानी दासगुप्ता का वेश बनाकर यहाँ आया था, तो हो सकता है कि मेरे चाचा की मृत्यु से पहले उस सुबह उसे कुछ पता चल गया हो। दरअसल, मुझे पूरा यकीन है कि धरानी सिर्फ पैसे मांगने आया था। फिर उनके बीच झगड़ा हुआ होगा, और—” श्री समाद्दार ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।
फेलुदा ने उसे स्थिर निगाहों से देखते हुए कहा, “—और इस झगड़े के परिणामस्वरूप तुम्हारे चाचा को दिल का दौरा पड़ गया। लेकिन इससे धरानी नहीं रुका। जाने से पहले उसने कमरे की तलाशी ली। क्या तुम यही सोच रहे हो?” 'हां। लेकिन मुझे पता है कि उसे कोई पैसा नहीं मिला।'
'अगर उसने ऐसा किया होता, तो वह सुरजीत दासगुप्ता बनकर वापस नहीं आता, है ना?'
'ठीक है। शायद किसी बात ने उसे यह सोचने पर मजबूर कर दिया होगा कि पैसा उन दो उपकरणों में से किसी एक में छिपा हुआ है।'
‘मेलोकॉर्ड।’
श्री समद्दार ने फेलुदा को तीखी नजर से देखा। 'क्या तुम सचमुच ऐसा सोचते हो?'
‘मेरी अंतरात्मा यही कह रही है। लेकिन मैं अंदाजे से काम नहीं करना चाहता। वैसे भी, मैं तुम्हारे चाचा के आखिरी शब्द नहीं भूल सकता। उन्होंने “चाबी” शब्द का इस्तेमाल किया था, है ना? तुम्हें इस बात का पूरा यकीन है?’
श्री समाद्दार असमंजस में दिखने लगे। ‘मुझे नहीं पता... ऐसा ही लग रहा था,’ वे लड़खड़ाते हुए बोले और शर्मिंदगी से अपने हाथ मलने लगे। ‘या फिर ऐसा भी हो सकता है कि मेरे चाचा बिलकुल बकवास कर रहे हों। ये भ्रम भी हो सकता है, है ना? शायद “चाबी” शब्द का कोई महत्व ही न हो।’
इन शब्दों को सुनकर मुझे अचानक निराशा का गहरा झटका लगा। लेकिन फेलुदा अविचलित रहे। उन्होंने कहा, 'चाहे मैं भ्रम में हूँ या नहीं, इस कमरे में

पैसा है। मुझे उसकी गंध आ रही है। चाबी ढूंढना उतना महत्वपूर्ण नहीं है। हमें पैसा ढूंढना है।'
‘कैसे? आप क्या करने का प्रस्ताव रखते हैं?’
‘इस समय, मैं घर वापस जाना चाहती हूँ। कृपया अनुकुल को बता देना कि वह चिंता न करे, मुझे नहीं लगता कि दिन में कोई घर में घुसने की कोशिश करेगा। उसे बस इतना करना है कि किसी भी अजनबी को घर में न आने दे। रात में पुलिस वाले होंगे। मुझे वापस जाकर बहुत सोच-विचार करना होगा। मुझे उम्मीद की एक किरण दिख रही है, लेकिन जब तक वह और तेज़ नहीं होती, मैं कुछ नहीं कर सकती। क्या मैं आज रात यहीं रुक सकती हूँ?’
श्री समाद्दार इस प्रश्न पर थोड़ा आश्चर्यचकित दिखे। लेकिन उन्होंने तुरंत कहा, 'जी हां, बिल्कुल, अगर आप यही चाहते हैं। क्या मैं आपको रात 8 बजे लेने आऊं?'
‘ठीक है। धन्यवाद, मोनी बाबू।’
‘सबसे पहले, मेरे बेटे, मरे हुए आदमी का नाम लिख लो।’
फेलुदा अपने कमरे में वापस आ गया था और अपने बिस्तर पर बैठा था। मैं उसके बगल में एक कुर्सी पर बैठा था, मेरी गोद में एक नोटबुक और हाथ में एक कलम थी।
'राधारमण समद्दर,' मैंने लिखा।
उनके पोते का नाम क्या है?
‘Dharanidhar Samaddar.’
और वो मंच पर किस नाम का इस्तेमाल करता है?
‘संजय लाहिड़ी।’
देहरादून में रहने वाले संगीत वाद्ययंत्रों के संग्रहकर्ता का नाम क्या है?
‘Surajit Dasgupta.’
‘राधरमन का पड़ोसी कौन है?’
‘अबानी सेन।’
और उसका बेटा?
‘Sadhan.’
राधारमन के अंतिम शब्द क्या थे? ‘मेरे नाम पर... कुंजी... कुंजी।’

‘सर्गम में आठ स्वर कौन-कौन से होते हैं?’
मैं अभी भी यहीं हूँ।
‘बहुत अच्छा। अब जाओ और मुझे परेशान मत करो। जाते समय दरवाजा बंद कर देना। मैं अब काम पर जा रहा हूँ।’
मैं बैठक में गया और पढ़ने के लिए अपनी पसंदीदा किताबों में से एक उठा ली। एक घंटे बाद, मैंने फेलुदा को अपने कमरे में टेलीफोन एक्सटेंशन पर एक नंबर डायल करते हुए सुना। खुद को रोक न पाने के कारण, मैं दबे पांव उसके कमरे के दरवाजे तक गया और बेशर्मी से उसकी बातें सुनने लगा। 'हेलो? क्या मैं डॉ. चिंतामणि बोस से बात कर सकता हूँ?'
फेलुदा हृदय रोग विशेषज्ञ को फोन कर रहे थे, जो राधारमन की मृत्यु के दिन श्री समाद्दार के साथ थे। मेरी जिज्ञासा शांत हो गई और मैं बैठक कक्ष में लौट आया। दस मिनट बाद, फिर से फोन की आवाज आई। मैं एक बार फिर उठा और दरवाजे पर कान लगाकर सुनने लगा।
‘यूरेका प्रेस? कौन बोल रहा है?’
इस बार फेलुदा श्री समद्दार के प्रेस को फोन कर रहा था। मुझे और कुछ सुनने की ज़रूरत नहीं थी, इसलिए मैं अपनी किताब पढ़ने में वापस लग गया।
जब हमारा रसोइया श्रीनाथ चार बजे चाय लेकर आया, तो फेलुदा अभी भी अपने कमरे में ही थे। जब तक मैंने अपनी चाय खत्म की और अपनी किताब के कुछ और पन्ने पढ़े, तब तक 4:35 बज चुके थे। मैं अब पहले से कहीं ज़्यादा उलझन में था। आखिर फेलुदा क्या कर रहे थे, मेरी नोटबुक में लिखे उन कुछ शब्दों को लेकर परेशान? आखिर उनमें ऐसा कुछ था ही नहीं जो उन्हें पहले से पता न हो। इससे पहले कि मैं और कुछ सोच पाता, फेलुदा ने अपना दरवाजा खोला और हाथ में आधी पढ़ी हुई चारमीनार लिए बाहर आए। ‘मेरा दिमाग चकरा रहा है, टॉपशे!’ उन्होंने दबी हुई उत्तेजना भरी आवाज़ में कहा। ‘कौन जानता था कि एक बूढ़े आदमी के मृत्युशय्या पर बोले गए कुछ शब्दों का अर्थ समझने में मुझे इतना समय लग जाएगा?’
जवाब में, मैं बस फेलुदा को अवाक होकर देखता रह गया। उसने जो कुछ कहा था, वह मुझे समझ नहीं आया, लेकिन मैं देख सकता था कि उसका चेहरा अलग लग रहा था, जिसका सीधा सा मतलब यह हो सकता है कि उसने पहले जो रोशनी देखी थी, वह अब पहले से कहीं अधिक तीव्र थी।
‘सा धा नी सा नी... सरगम से लिए गए नोट्स। क्या इससे आपको कुछ पता चलता है?’

नहीं, फेलुदा। मुझे बिलकुल भी समझ नहीं आ रहा कि तुम किस बारे में बात कर रहे हो।
'अच्छा। अगर आप मेरी बात समझ गए होते, तो यह मानना पड़ता कि आपकी बुद्धिमत्ता का स्तर फेलू मिटर जितना ही ऊंचा है।'
मुझे इस बदलाव से खुशी हुई। मैं फेलुदा का उपग्रह बनकर पूरी तरह से संतुष्ट था, बस इतना ही।
फेलुदा ने अपनी सिगरेट फेंक दी और एक बार फिर टेलीफोन उठा लिया।
'हेलो? श्रीमान समाद्दार? क्या आप तुरंत आ सकते हैं? जी हां, हमें जितनी जल्दी हो सके बामुंगाछी जाना है... मुझे लगता है कि मुझे आखिरकार जवाब मिल गया है... हां, मेलोकॉर्ड... यही सबसे महत्वपूर्ण बात है जिसे याद रखना है।' फिर उसने रिसीवर को वापस रख दिया और गंभीरता से कहा, 'इसमें जोखिम तो है, टॉपशे। लेकिन मुझे यह जोखिम उठाना ही होगा, मेरे पास कोई और विकल्प नहीं है।'

पाँच

श्री समद्दार का ड्राइवर बूढ़ा था, लेकिन वीआईपी रोड पहुँचते ही उसने 85 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गाड़ी चलाना शुरू कर दिया। फेलुदा बेचैनी से बैठा था, मानो वह और तेज़ गाड़ी चलाना चाहता हो। जल्द ही, सड़क संकरी और भीड़भाड़ वाली होने के कारण हमें अपनी गति धीमी करनी पड़ी। हालांकि, थोड़ी देर बाद ही, हमने रफ्तार बढ़ाकर 60 कर दी, जबकि सड़क की हालत बहुत अच्छी नहीं थी और अंधेरा होने लगा था।
राधारमन के घर के मुख्य द्वार पर कोई नहीं था। फेलुदा ने कहा, 'शायद अभी पुलिस कांस्टेबलों के आने का समय नहीं हुआ है।'
हमने साधन को बगीचे में उसकी एयरगन के साथ पाया।
‘साधन बाबू, अंधेरे में तुम क्या मार रहे हो?’ फेलूदा ने कार से बाहर निकलते हुए उससे पूछा।
‘चमगादड़,’ साधन ने तुरंत जवाब दिया। परिसर के ठीक बाहर एक पीपल के पेड़ की शाखाओं से कई चमगादड़ लटके हुए थे।
हमारी कार की आवाज़ सुनकर अनुकुल दरवाजे तक आ गया। श्री समाद्दार ने उसे लालटेन जलाने को कहा और जर्मन ताला खोलने लगे। उन्होंने कहा, 'मैं यह जानने के लिए बेताब हूँ कि तुमने रहस्य कैसे सुलझाया।' मैं उनकी भावनाओं को समझ सकता था, क्योंकि फेलुदा ने कार में एक शब्द भी नहीं बोला था। मैं भी जिज्ञासा से फूला नहीं समा रहा था।
फेलुदा ने अपनी चुप्पी नहीं तोड़ी। बिना कुछ कहे, वह कमरे में दाखिल हुए और एक शक्तिशाली टॉर्च जला दी। रोशनी पहले दीवार पर पड़ी, फिर छोटी मेज पर शांति से रखे हुए मेलोकॉर्ड पर। मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा। वाद्य यंत्र की सफेद कुंजियाँ रोशनी में चमक उठीं, मानो वह मुस्कुरा रहा हो। फेलुदा ने अपना हाथ नहीं हिलाया। ‘कुंजियाँ…’ उन्होंने धीरे से कहा। ‘इन कुंजियों को देखो। राधारमण का मतलब ताला और चाबी बिल्कुल नहीं था। उनका मतलब किसी वाद्य यंत्र की कुंजियों से था, जैसे पियानो, या—’

वह अपनी बात पूरी नहीं कर सका। उसके ठीक एक पल बाद जो कुछ हुआ, उसने मुझे स्तब्ध कर दिया। अब भी, जब मैं इसके बारे में लिख रहा हूँ, मेरा हाथ काँप रहा है।
फेलुदा की बात सुनकर श्री समाद्दार अचानक हवा में उछले और भूखे बाघ की तरह अपने शिकार पर झपटे। फिर उन्होंने उसे उठाया, फेलुदा के सिर पर वार किया, मुझे धक्का देकर गिरा दिया और दरवाजे से बाहर भाग गए।
फेलूदा ने ठीक समय पर अपने हाथ उठाकर अपना सिर बचा लिया। नतीजतन, वार उसके हाथों पर पड़ा, जिससे टॉर्च उसके हाथ से छूट गई और वह दर्द से कराहते हुए बिस्तर पर गिर पड़ा। जैसे ही मैं उठ खड़ा हुआ, मैंने श्री समाद्दार को अपने पीछे दरवाजा बंद करते सुना। फिर भी, मैं आगे बढ़ा और अपने कंधे से दरवाजा धकेलने की कोशिश की। तभी मैंने फेलूदा को फुसफुसाते हुए सुना, 'बाथरूम।' मैंने जल्दी से टॉर्च उठाई और हम दोनों छोटे से बाथरूम के दरवाजे से बाहर भागे।
गाड़ी स्टार्ट होने की आवाज़ आई, फिर ज़ोरदार धमाका हुआ। बाहर निकलते ही हमें अफरा-तफरी का शोर सुनाई दिया। मैं अनुकुल को घबराहट में चिल्लाते हुए और अबानी सेन को अपने बेटे से बहुत गुस्से में बात करते हुए सुन सकता था। जब तक हम मुख्य दरवाजे तक पहुँचे, गाड़ी जा चुकी थी, लेकिन कोई व्यक्ति ड्राइववे पर बैठा था।
‘साधन, तुमने क्या किया?’ श्री सेन अब भी अपने बेटे को गुस्से से डांट रहे थे। ‘तुमने ऐसा क्यों किया? यह गलत था, सरासर गलत था!’
साधन ने अपनी पतली, बचकानी आवाज में जोश से जवाब दिया, 'मैं क्या कर सकता था? वह दादू का वाद्य यंत्र लेकर भागने की कोशिश कर रहा था!'
‘श्रीमान सेन, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं,’ फेलुदा ने थोड़ी हांफते हुए कहा। ‘अपराधी को घायल करके उन्होंने हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है, हालांकि भविष्य में उन्हें अपनी एयरगन का इस्तेमाल अधिक सावधानी से करना सीखना होगा। कृपया घर जाकर पुलिस को सूचित करें। उस कार के चालक को भागने नहीं देना चाहिए। उन्हें बता देना कि कार का नंबर WMA 6164 है।’
फिर वह सड़क के किनारे बैठे व्यक्ति के पास गया और अनुकुल के साथ मिलकर उसे उठने में मदद की। श्री समद्दार ने बिना कोई विरोध किए, आधा धकेलते और आधा घसीटते हुए घर के अंदर जाने दिया। साधन की एयरगन की एक गोली उनके माथे के एक कोने पर लगी थी। घाव से अभी भी खून बह रहा था।

मेलोकॉर्ड अभी भी वहीं पड़ा था जहाँ वह पत्थरों से बने रास्ते पर गिरा था। मैंने उसे सावधानी से उठाया और घर ले आया।
फेलुदा, श्री सेन, बारासात पुलिस स्टेशन के इंस्पेक्टर दिनेश गुइन और मैं राधारमन के शयनकक्ष में चाय पी रहे थे। एक आदमी—संभवतः कांस्टेबल— दरवाजे पर खड़ा था। दूसरा कुर्सी पर दुबका बैठा था। यही हमारा अपराधी, मोनिमोहन समाद्दार था। उसके माथे पर लगी चोट पर पट्टी बंधी हुई थी। साधन भी कमरे में खिड़की के पास खड़ा बाहर देख रहा था। हमारे सामने मेज पर एक वाद्य यंत्र रखा था।
फेलुदा ने गला साफ किया। अब वह हमें बताने वाला था कि उसे सच्चाई का पता कैसे चला। उसकी घड़ी टूटी हुई थी और उसके एक हाथ पर बुरी तरह खरोंच आ गई थी। उसने बाथरूम में डेटॉल की एक बोतल पाई और उससे अपने हाथ पर हल्के हाथ से दाग लगाए। फिर उसने अपने हाथ पर एक रुमाल बांध लिया। अगर उसे अभी भी दर्द हो रहा था, तो उसने इसे ज़ाहिर नहीं किया।
उन्होंने अपना प्याला नीचे रखा और बोलना शुरू किया। ‘मुझे मोनिमोहन समाद्दार पर आज दोपहर से ही शक होने लगा था। लेकिन मेरे पास इस बात का कोई सबूत नहीं था कि मेरा शक निराधार नहीं था। इसलिए, जब तक वह कोई गलत कदम नहीं उठाता, मैं उसे पकड़ नहीं सकता था। सौभाग्य से, अंत में उसने अपना आपा खो दिया और मेरे जाल में फंस गया। वह बच नहीं सकता था, लेकिन साधन ने उसे तुरंत पकड़ने में मेरी मदद की... सोमवार को देर तक काम करने के बारे में उसने जो बताया, उससे मुझे पहले शक हुआ, उस समय तो नहीं, लेकिन बाद में। उसने कहा कि सोमवार शाम को उसे बहुत देर हो गई क्योंकि उसे ओवरटाइम करना पड़ा था। यह अजीब था क्योंकि मेरा एक दोस्त उसी इलाके में रहता है जहाँ उसका प्रेस है, और मैंने अक्सर उसे शिकायत करते सुना है कि वहाँ बिजली कटौती बहुत लंबी होती है, हमेशा शाम से शुरू होकर देर रात तक चलती है। इसलिए मैंने यूरेका प्रेस को फोन किया, और मुझे बताया गया कि सोमवार शाम को लंबे समय तक बिजली कटौती के कारण कोई काम नहीं हुआ था। मोनि बाबू खुद दोपहर में प्रेस से चले गए थे, और किसी ने उन्हें वापस आते नहीं देखा था।’ इससे मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि जिस व्यक्ति ने मुझसे एक झूठ बोला था, उसने कहीं दूसरा झूठ तो नहीं बोला था? क्या राधारमन के अंतिम शब्द उससे अलग थे जो मुझे बताया गया था? मुझे याद आया कि उनकी मृत्यु के समय केवल वही उपस्थित नहीं थे। मैंने डॉ. चिंतामणि बोस को फोन किया और पता चला कि

राधारमन ने वास्तव में क्या कहा था, “धरानी… मेरे नाम पर… चाबी… चाबी।” यह धरानी का ही नाम था जिसे मोनी बाबू ने लेना भूल गए थे। धरानी, आखिरकार, राधारमन का इकलौता पोता था। वह अब भी उससे बहुत प्यार करते थे। अगर उसके प्रदर्शन की अच्छी समीक्षाएँ होतीं, तो राधारमन उन समाचार पत्रों की कटिंग संभाल कर रखते थे। इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि वह अपने धन का रहस्य अपने भतीजे को नहीं, बल्कि अपने पोते को बताने की कोशिश करें। मुझे नहीं लगता कि उन्होंने अपने भतीजे को पहचाना भी होगा। फिर भी, उनके अंतिम शब्द उनके भतीजे ने ही सुने। वह समझ गया कि राधारमन अपने छिपे हुए धन के बारे में बात कर रहे थे। लेकिन उन्हें कहीं चाबी नहीं मिली, इसलिए उन्होंने मेरे पास आने का फैसला किया। उनका इरादा था कि मैं चाबी का पता लगाऊँगा और मोनी बाबू सारा पैसा हड़प लेंगे। किसी को नहीं पता था कि वसीयत थी या नहीं। अगर वसीयत नहीं मिलती, तो राधारमन की सारी संपत्ति सीधे धरानी को मिल जाती। वैसे भी, मुझे बहुत संदेह है कि राधारमन अपने भतीजे के लिए कुछ भी छोड़ते। मेरा मानना है कि उन्हें मोनी बाबू बिल्कुल पसंद नहीं थे। फेलुदा रुक गया। कोई नहीं बोला। थोड़ी देर रुकने के बाद उसने आगे कहा, “अब सवाल यह था कि मोनी बाबू ने सोमवार को देर तक काम करने के बारे में मुझसे झूठ क्यों बोला? क्या इसलिए कि उसने सोमवार शाम किसी आपराधिक गतिविधि में बिताई थी, जिसका मतलब था कि उसे एक पुख्ता सबूत चाहिए था? उसी शाम राधारमन के कमरे में चोरी हुई थी। क्या घुसपैठिया खुद मोनी बाबू हो सकता था? जितना मैं इसके बारे में सोचता गया, उतना ही यह संभावना बढ़ती गई। वही अकेला था जो कॉम्बिनेशन लॉक का इस्तेमाल कर सकता था, कमरे में जा सकता था, बाथरूम का दरवाजा खोल सकता था, फिर बाहर आकर बेडरूम के मुख्य दरवाजे को बंद कर सकता था। जब मैंने दिन में देखा था, तो वह छोटा बाथरूम का दरवाजा निश्चित रूप से अंदर से बंद था। हमारे जाने के बाद कोई सफाईकर्मी अंदर नहीं आ सकता था क्योंकि उसका इस्तेमाल बिल्कुल नहीं होता। मुझे शक है कि मोनी बाबू समझ गया था कि उसके चाचा का “चाबी” शब्द से क्या मतलब था, इसलिए वह आधी रात को वापस आकर मेलोकॉर्ड चुरा लाया होगा। क्या मैं सही हूँ?”
हम सबने श्री समाद्दार की ओर देखा। उन्होंने बिना सिर उठाए ही सहमति में सिर हिलाया। फेलुदा ने आगे कहा, 'भले ही मोनी बाबू मेलोकॉर्ड चुराकर बच निकला हो, मुझे पूरा यकीन है कि वह राधारमन के संदेश के बाकी हिस्से को कभी

नहीं समझ पाता। मुझे इसका जवाब आज शाम ही मिला, और इसके लिए भी मैं छोटे साधन का शुक्रगुजार हूं।'
हमने आश्चर्य से साधन की ओर देखा। उसने अपना सिर घुमाया और गंभीरता से फेलुदा को घूरने लगा। फेलुदा ने कहा, 'साधन, हमें एक बार फिर बताओ कि तुम्हारे दादा ने संगीत और लोगों के नामों के बारे में क्या कहा था।'
साधन ने फुसफुसाते हुए कहा, 'जिनके नाम में मधुरता होती है, उनकी आवाज में भी मधुरता अवश्य होती है।'
‘धन्यवाद। यह तो बस राधारमन की असाधारण बुद्धिमत्ता का एक उदाहरण है। उन्होंने कहा, “जिनके नाम में मधुरता है।” चलिए, एक नाम लेते हैं। उदाहरण के लिए, साधन को लीजिए। साधन सेन। अगर आप कुछ स्वर हटा दें, तो आपको सरगम के स्वर मिलते हैं—सा धा नी सा नी। जब मुझे यह समझ आया, तो मेरे मन में एक नया विचार आया। उनके अंतिम शब्द थे “मेरे नाम में... कुंजी”। क्या उनका मतलब मेलोकॉर्ड की उन कुंजियों से था जो उनके अपने नाम से मेल खाती थीं? राधारमन—रे धा रे मा नी। समद्दार—सा मा धा धा रे। धरणीधर भी एक गायक थे; और उनके नाम में भी मधुरता थी—धा रे नी धा रे। कितना चतुर विचार था, सरल लेकिन अद्भुत। राधारमन स्पष्ट रूप से यांत्रिक उपकरणों में रुचि रखते थे। वह जर्मन संयोजन ताला इसका एक उदाहरण है। मेलोकॉर्ड भी जर्मनी में स्पिग्लर नामक कंपनी द्वारा बनाया गया था।’ यह खास तौर पर बनवाया गया था, शायद राधारमन द्वारा दी गई विशिष्टताओं के आधार पर। यह उनके बैंक का काम करता था। शुक्र है सुरजीत दासगुप्ता इसे लेकर नहीं गए, हालांकि मुझे यकीन है कि राधारमन इसे सौंपने से पहले इसका सारा पैसा निकाल लेते। शायद उन्हें अब बैंक की जरूरत नहीं रही। शायद उन्हें पता था कि उनके पास जीने के लिए ज्यादा समय नहीं बचा है... मैंने दो और बातें सीखीं। सुरजीत दासगुप्ता एक सच्चे संगीतकार हैं, संगीत और वाद्ययंत्रों के प्रति उनका गहरा लगाव है। पिछले दो दिनों में मैंने संगीत पर जो कुछ किताबें पढ़ीं, उनमें उनका नाम आया था। मुझे लगा था कि यह भेस बदलकर आया धरानी है, लेकिन मैं पूरी तरह गलत था। धरानी सचमुच जलपाईगुड़ी में हैं, उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं है कि क्या हो रहा है। अब हमें यह देखना होगा कि क्या उनके लिए विरासत में कुछ बचा है। मंचलोक में प्रकाशित एक साक्षात्कार के अनुसार, वह अपना खुद का समूह बनाना चाहते हैं। इसलिए मुझे यकीन है कि अगर उन्हें अचानक कुछ मिल जाए तो उन्हें बहुत खुशी होगी। टॉपशे, वह लालटेन यहाँ लाओ।

मैंने लालटेन उठाई और उसे मेलोकॉर्ड के पास ले आया। फेलुदा ने उसे अपनी गोद में रख लिया। उन्होंने कहा, “आज इसे थोड़ा ज़ोर से इस्तेमाल किया गया है, लेकिन इसकी बनावट इतनी बढ़िया है कि मुझे नहीं लगता कि इसे कोई नुकसान हुआ है। अब देखते हैं राधारमन के दिमाग और जर्मन कारीगरी ने क्या कमाल किया है।” फेलुदा ने राधारमन के पूरे नाम की कुंजियाँ दबानी शुरू कीं—रे धा रे मा नी सा मा धा धा रे। हर कुंजी दबाने पर एक मधुर स्वर निकलता था। जैसे ही फेलुदा ने आखिरी कुंजी दबाई, दायाँ पैनल चुपचाप खुल गया। हम उत्सुकता से वाद्य यंत्र के पास झुके और देखा कि इस पैनल के पीछे एक गहरा डिब्बा था, जो लाल मखमल से ढका हुआ था और सौ रुपये के नोटों के बंडलों से भरा हुआ था।
हम सब अचंभे से कुछ क्षणों के लिए स्थिर हो गए। फिर फेलुदा ने धीरे-धीरे गठ्ठियाँ निकालना शुरू किया। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है यहाँ कम से कम पचास हज़ार हैं। आइए, श्रीमान सेन, मेरी गिनती में मदद कीजिए।' आश्चर्यचकित अबानी सेन उठ खड़े हुए और आगे बढ़े। लालटेन की रोशनी फेलुदा के चेहरे पर पड़ी और उनकी आँखों की चमक को उजागर कर दिया। मैं जानता था कि यह लालच नहीं था, बल्कि एक बार फिर अपने तेज दिमाग का इस्तेमाल करने और एक और रहस्य सुलझाने की शुद्ध खुशी थी।

शाही बंगाल रहस्य

एक

ओल्ड मैन हॉलो,
अनुसरण करने के लिए गति,
लोगों का पेड़।
साढ़े दस, फिर से साढ़े
सदी।
उगता सूरज,
जहाँ से यह हो गया है,
क्या तुम नहीं देख सकते?
हाथों के बीच,
उनके नीचे खड़ा है,
तुम्हारा है।
फेलुदा ने मुझसे कहा, 'जब तुम जंगल में हमारे साहसिक कार्य के बारे में लिखोगे, तो तुम्हें इस पहेली से शुरुआत करनी होगी।'
‘क्यों? हमें तो पहेली के बारे में तब तक पता ही नहीं चला जब तक हम वास्तव में वहां नहीं पहुंच गए!’
मुझे पता है। लेकिन यह तो बस एक तकनीक है, पाठक की कल्पना को लुभाने के लिए।
मैं इस जवाब से संतुष्ट नहीं था। फेलुदा को यह बात समझ आ गई, इसलिए कुछ मिनट बाद उन्होंने कहा, 'जो कोई भी शुरुआत में उस पहेली को पढ़ेगा, उसे अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करने का मौका मिलेगा, आप समझ रहे हैं ना?'
इसलिए मैंने अपनी कहानी की शुरुआत इससे करने पर सहमति जताई। हालांकि, मैं यह बात पहले ही स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि इसका अर्थ समझने की कोशिश करना व्यर्थ है। यह बिल्कुल भी आसान नहीं है। वास्तव में, फेलूदा को भी इसका अर्थ समझने में काफी समय लगा था, हालांकि जब उन्होंने अंततः मुझे इसका अर्थ समझाया, तो यह काफी सरल लगा।

अपने बीते अनुभवों के बारे में बात करते हुए, मैंने अब तक असली नामों और असली जगहों का इस्तेमाल किया है। इस बार मुझे ऐसा न करने के लिए विशेष रूप से कहा गया है। मुझे काल्पनिक नामों के बारे में सलाह लेने के लिए फेलुदा से संपर्क करना पड़ा। फेलुदा ने कहा, 'आप बता सकते हैं कि वह जगह भूटान की सीमा के पास थी, इसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन आप उसका नाम बदलकर लक्ष्मणबाड़ी रख सकते हैं। मुख्य पात्र का नाम श्री सिन्हा-रॉय रखा जा सकता है। कई पुराने जमींदार परिवारों का यही नाम हुआ करता था। दरअसल, उनमें से कुछ मूल रूप से राजपूताना से आए थे। वे बंगाल आए और पठानों से लड़ने के लिए टोडरमाल की सेना में शामिल हो गए। फिर वे वहीं बस गए, और उनके वंशज बंगाली बन गए।'
मैं वही कर रहा हूँ जो फेलुदा ने मुझे करने को कहा था। स्थानों और व्यक्तियों के नाम काल्पनिक हैं, लेकिन घटनाएँ नहीं। मैं हर बात को ठीक वैसे ही बताने की कोशिश करूँगा जैसे मैंने देखा या सुना था।
कहानी कलकत्ता से शुरू हुई। रविवार, 27 मई का दिन था। सुबह के 9:30 बज रहे थे। मेरी गर्मियों की छुट्टियां शुरू हो चुकी थीं। हाल ही में तापमान 100 डिग्री फारेनहाइट तक पहुंच गया था, इसलिए मैं घर के अंदर ही था और भूटान की टिकटें अपने स्टाम्प एल्बम में चिपका रहा था। फेलुदा ने हाल ही में एक हत्या का मामला सुलझाया था (एक साधारण पिन को सुराग बनाकर अपराधी को पकड़ा था), जिससे वह काफी मशहूर हो गया था। उसे मोटी रकम भी मिली थी। इस समय वह घर पर सोफे पर आराम कर रहा था और थोर हेयर्डाहल की किताब 'अकु-अकु' पढ़ रहा था। एक मिनट बाद, जटायु आ गया।
बेहद लोकप्रिय क्राइम थ्रिलर के लेखक लालमोहन गांगुली उर्फ जटायु, महीने में कम से कम दो बार हमारे यहाँ आने लगे थे। उनके उपन्यासों की लोकप्रियता के कारण वे काफी संपन्न थे। दरअसल, एक समय उन्हें अपनी लेखन क्षमता पर गर्व भी था। लेकिन जब फेलुदा ने उनकी किताबों में दर्जनों तथ्यात्मक त्रुटियाँ बताईं, तो लालमोहन बाबू उन्हें सम्मान और प्रशंसा की मिली-जुली भावना से देखने लगे। अब वे अपनी पांडुलिपियों को प्रकाशक को सौंपने से पहले फेलुदा से ही संशोधित करवाते थे।
लेकिन आज उनके हाथ में कागजों का गट्ठा नहीं था, जिसका स्पष्ट अर्थ था कि उनके आने का कारण कुछ और था। वे सोफे पर बैठ गए, अपनी जेब से एक हरा तौलिया

निकाला, उससे अपना चेहरा पोंछा और फेलुदा की ओर देखे बिना बोले, 'फेलू बाबू, क्या आप जंगल देखना चाहेंगे?'
फेलुदा थोड़ा सा उठ खड़ा हुआ और कोहनी के बल झुक गया। 'जंगल की आपकी परिभाषा क्या है?'
'बिल्कुल तुम्हारे जैसा, फेलू बाबू। पेड़ों का समूह। घनी पत्तियाँ। कुछ इसी तरह का।'
‘पश्चिम बंगाल में?’
'जी श्रीमान।'
‘कहाँ? सुंदरबन या तराई के अलावा मुझे कोई और जगह याद नहीं आ रही। बाकी सब कुछ तो पूरी तरह से नष्ट हो चुका है।’
क्या आपने महितोष सिन्हा-रॉय के बारे में सुना है?
सवाल के साथ-साथ उनके चेहरे पर एक शरारती मुस्कान भी थी। मैंने भी उनके बारे में सुना था। वे एक जाने-माने शिकारी और लेखक थे। फेलुदा के पास उनकी एक किताब थी। मैंने उसे पढ़ा तो नहीं था, लेकिन फेलुदा ने बताया था कि वह बहुत दिलचस्प थी।
'क्या वह उड़ीसा में रहता है, या असम में?' फेलुदा ने पूछा।
‘जी नहीं, महोदय,’ लालमोहन बाबू ने अपनी जेब से एक लिफाफा निकालते हुए बड़े ही सलीके से जवाब दिया, ‘वह भूटान की सीमा के पास दुआर्स वन में रहते हैं। मैंने अपनी नवीनतम पुस्तक उन्हें समर्पित की है। हम पत्रों का आदान-प्रदान करते रहे हैं।’
‘अरे? आपका मतलब है कि आप अपनी किताबें जीवित लोगों को भी समर्पित करते हैं?’ शायद मुझे यहाँ लालमोहन बाबू की किताबों के समर्पण के बारे में कुछ समझाना चाहिए। उनकी लगभग सभी किताबें उन प्रसिद्ध लोगों को समर्पित हैं जो अब इस दुनिया में नहीं हैं। ‘द अंटार्कटिक एंथ्रोपोफैगी’ रॉबर्ट स्कॉट की स्मृति को समर्पित थी; ‘द गोरिल्लाज़ ग्रास्प’ में लिखा था, ‘डेविड लिविंगस्टोन की स्मृति में’, और ‘द एटॉमिक डेमन’ (जिसे फेलुदा ने अब तक पढ़ी सबसे बेतुकी चीज़ बताया था) आइंस्टीन को समर्पित थी। फिर, जब उन्होंने ‘द हिमालयन हेमलॉक’ लिखी, तो उन्होंने इसे सर एडमंड हिलेरी की स्मृति को समर्पित किया। फेलुदा इस बात से बहुत नाराज़ हुए थे।
‘लालमोहन बाबू, आपने उस व्यक्ति को क्यों मार डाला जो पूरी तरह से जीवित था?’

‘क्या! हिलेरी ज़िंदा हैं?’ लालमोहन बाबू ने माफ़ी और शर्मिंदगी भरे लहजे में पूछा, ‘मुझे पता नहीं था। मतलब... वो काफ़ी समय से खबरों में नहीं हैं, और वो पहाड़ों पर चढ़ाई भी करते हैं, है ना? तो मैंने सोचा शायद वो फिसल गए होंगे और... खैर, आप जानते ही हैं...’ उनकी आवाज़ धीमी पड़ गई।
पुस्तक के दूसरे संस्करण के प्रकाशन के समय इस गलती को सुधार लिया गया था। महितोष सिन्हा-रॉय एक जाने-माने शिकारी हो सकते हैं, लेकिन क्या वे वाकई इन सभी अन्य लोगों जितने प्रसिद्ध थे? आखिरी किताब उन्हें समर्पित क्यों की गई थी?
‘देखिए,’ लालमोहन बाबू ने समझाया, ‘जब मैं अपनी किताब लिख रहा था, तब मुझे उनकी किताब ‘द टाइगर एंड द गन’ से कई बार सलाह लेनी पड़ी। दरअसल,’ उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, ‘मैंने तो उसका पूरा एक प्रसंग ही इस्तेमाल कर लिया था। इसलिए मुझे लगा कि मुझे किसी न किसी तरह उन्हें खुश करना ही होगा।’ ‘क्या आप सफल हुए?’
लालमोहन बाबू ने लिफाफे से पत्र निकाला। 'हां। वरना वो निमंत्रण नहीं भेजता, है ना?'
‘खैर, उन्होंने आपको तो आमंत्रित किया होगा, लेकिन मुझे तो नहीं किया होगा?’ लालमोहन बाबू थोड़े नाराज़ दिखे। ‘देखिए, फेलू बाबू,’ उन्होंने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, ‘मैं जानता हूँ कि आप बिना बुलाए कहीं नहीं जाते। आप स्वयं प्रसिद्ध हैं और आपका अपना रुतबा है। मैं इस बात से भलीभांति अवगत हूँ। हुआ ये कि मैंने उन्हें बताया कि किताब के चार महीने में चार संस्करण छप चुके हैं। और मैंने उन्हें ये भी बताया—सिर्फ एक संकेत के तौर पर—कि मैं आपको जानता हूँ। इसलिए उन्होंने मुझे ये पत्र भेजा। आप खुद पढ़ लीजिए। हम दोनों को आमंत्रित किया गया है।’
महितोष सिन्हा-रॉय के पत्र की आखिरी कुछ पंक्तियों में लिखा था, 'मुझे विश्वास है कि आपका मित्र प्रदोष मित्र एक बहुत ही चतुर जासूस है। यदि आप उसे अपने साथ ला सकें, तो वह एक मामले में मेरी मदद कर सकता है। कृपया मुझे बता दें कि क्या वह आने के लिए सहमत है।'
फेलुदा ने कुछ क्षण तक पत्र को घूर कर देखा। फिर उसने कहा, 'क्या वह एक बूढ़ा आदमी है?'
‘बूढ़े से आपका क्या मतलब है?’ लालमोहन बाबू ने आधी बंद आँखों से पूछा। 'लगभग सत्तर?'

नहीं, महोदय। श्री सिन्हा-रॉय उससे कहीं अधिक युवा हैं।
उनकी लेखन शैली किसी बूढ़े व्यक्ति जैसी है।
‘आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? यह लेखन तो बिल्कुल खूबसूरत है।’
‘मैं सहमत हूँ। लेकिन हस्ताक्षर देखिए। मुझे लगता है कि यह पत्र उनके सचिव ने लिखा है।’
यह तय हुआ कि हम अगले बुधवार को लक्ष्मणबारी के लिए रवाना होंगे। हम ट्रेन से न्यू जलपाईगुड़ी तक जा सकते थे। उसके बाद हमें कार से लक्ष्मणबारी जाना पड़ता, जो छियालीस मील दूर था। महितोष बाबू ने पहले ही न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन पर हमें लेने के लिए अपनी कार भेजने की पेशकश कर दी थी।
मुझे इस बात पर ज़रा भी हैरानी नहीं हुई कि फेलुदा इतनी आसानी से जंगल जाने के लिए राज़ी हो गया। मेरा दिल खुशी से झूम उठा। दरअसल, हमारे एक चाचा भी शिकारी थे। हमारा पैतृक घर ढाका के पास शोनादीघी गाँव में था। मेरे पिता तीन भाइयों में सबसे छोटे थे। सबसे बड़े भाई मयमनसिंह में एक एस्टेट के मैनेजर थे। वे मयमनसिंह के उत्तर में स्थित मधुपुर जंगल में जंगली हिरण, सूअर और यहाँ तक कि बाघों का शिकार करने के लिए इलाके में मशहूर थे। दूसरे भाई—फेलुदा के पिता—एक स्कूल में गणित और संस्कृत पढ़ाते थे। लेकिन इसके बावजूद वे तैराकी, कुश्ती और निशानेबाज़ी जैसे खेलों में बेहद कुशल थे। दुर्भाग्य से, कुछ ही समय की बीमारी के बाद उनका बहुत कम उम्र में निधन हो गया। उस समय फेलुदा नौ साल का था। ज़ाहिर है, उसके पिता की मृत्यु हम सभी के लिए एक बहुत बड़ा सदमा थी। फेलुदा को हमारे घर लाया गया और मेरे माता-पिता ने उसका पालन-पोषण किया। मेरे पिता ने कभी भी ऐसी किसी चीज में दिलचस्पी नहीं दिखाई जिसमें बहुत अधिक शारीरिक शक्ति की आवश्यकता हो, लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूं कि उनकी इच्छाशक्ति और मानसिक शक्ति अधिकांश लोगों की तुलना में कहीं अधिक मजबूत है।
फेलुदा को शिकार की कहानियों में हमेशा से गहरी दिलचस्पी रही है। उन्होंने कॉर्बेट और केनेथ एंडरसन की लिखी हर किताब पढ़ी है। हालांकि वे कभी शिकार पर नहीं गए, लेकिन उन्होंने निशानेबाजी सीखी और अब वे इसमें माहिर हैं। मुझे इसमें कोई शक नहीं कि जरूरत पड़ने पर वे आसानी से बाघ को मार सकते हैं। उन्होंने मुझसे अक्सर कहा है कि जानवरों का दिमाग इंसानों के दिमाग से कहीं कम जटिल होता है। एक साधारण से साधारण इंसान का दिमाग भी

एक खूंखार बाघ से कहीं ज्यादा जटिल होता है। इसलिए, किसी अपराधी को पकड़ना बाघ को मारने से कम मुश्किल नहीं है।
फेलुदा ट्रेन में लालमोहन बाबू को यही समझाने की कोशिश कर रहा था। लालमोहन बाबू के पास महितोष सिन्हा-रॉय की पहली किताब थी। पहले पन्ने पर लेखक की तस्वीर थी, जिसमें वह एक मृत रॉयल बंगाल टाइगर पर एक पैर रखकर खड़े थे और उनके हाथ में राइफल थी। उनका चेहरा साफ नहीं दिख रहा था, लेकिन उनके जबड़े, चौड़े कंधे और नुकीली लंबी नाक के नीचे उनकी प्रभावशाली मूंछें आसानी से पहचानी जा सकती थीं।
लालमोहन बाबू ने कुछ सेकंड तक तस्वीर को घूरते हुए कहा, 'शुक्र है आप मेरे साथ जा रहे हैं, फेलू बाबू। ऐसी शख्सियत के सामने तो मैं... एक कीड़े जैसा दिखता!' जटायु की लंबाई पाँच फुट चार इंच थी, और पहली नज़र में उनका रूप-रंग देखकर लगता था कि वे मंच या फिल्मों में कोई हास्य कलाकार होंगे। उनसे थोड़ा भी लंबा और सुगठित शरीर वाला कोई भी व्यक्ति उन्हें कीड़े जैसा दिखाता था। वाकई, जब वे फेलूदा के बगल में खड़े हुए, तो यह वर्णन बिल्कुल सटीक लगा।
उन्होंने आगे कहा, ‘अजीब बात यह है कि हालांकि यह उनकी पहली किताब है—और उन्होंने पचास साल की उम्र में लिखना शुरू किया—लेकिन इसे पढ़कर ऐसा लगता है जैसे इसे किसी अनुभवी लेखक ने लिखा हो। उनकी लेखन शैली अद्भुत है।’ फेलुदा ने टिप्पणी की, ‘शायद उन्होंने लेखन का रुख तब किया जब भारतीय सरकार ने शिकार को एक खेल के रूप में प्रतिबंधित कर दिया था। कई अन्य शिकारी भी कुशल लेखक साबित हुए हैं। कॉर्बेट की भाषा अद्भुत है। शायद इसका संबंध प्रकृति के करीब रहने से है। उन ऋषियों के बारे में सोचिए जिन्होंने शास्त्रों की रचना की। क्या वे जंगलों में नहीं रहते थे?’
कलकत्ता से निकलने के तुरंत बाद ही मैंने आसमान में बिजली कड़कते हुए देखी। जब हम न्यू फराक्का स्टेशन पहुंचे, तब तक आधी रात हो चुकी थी। ट्रेन रुकने पर मेरी नींद खुली और देखा कि बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी और लगातार गरज सुनाई दे रही थी। हालांकि, सुबह जब हम न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन पर उतरे, तो बारिश का कोई नामोनिशान नहीं था, हालांकि आसमान में बादल छाए हुए थे।
हमसे मिलने के लिए जिसे भेजा गया था, वह महितोष बाबू का सचिव तोरित सेनगुप्ता निकला। वह तीस वर्ष से कम आयु का, दुबला-पतला, गोरा था, मोटे

काले फ्रेम का चश्मा पहने हुए था और उसके बाल बिखरे हुए थे। उसने विनम्रता से हमारा अभिवादन किया, लेकिन बिना किसी दिखावे के। मैंने मन ही मन सोचा कि शायद इसका मतलब यह नहीं है कि वह हमें देखकर नाराज़ है। फेलुदा ने मुझे कई बार आगाह किया था कि किसी के बाहरी व्यवहार से ही उसके बारे में कोई राय न बना लूँ। लेकिन श्री सेनगुप्ता स्पष्ट रूप से एक बुद्धिमान व्यक्ति थे, क्योंकि उन्हें यह बताने की ज़रूरत नहीं थी कि हममें से कौन लालमोहन गांगुली है और कौन प्रदोष मित्र है।
हम दस मिनट के लिए रुके और टोस्ट और ऑमलेट खाए। फिर हम बाहर खड़ी जीप में बैठ गए। हमारे सामान में केवल दो सूटकेस और एक शोल्डर बैग था। जीप में आराम से बैठने के लिए पर्याप्त जगह थी। श्री सेनगुप्ता ने रवाना होने से पहले कहा, 'श्री सिन्हा-रॉय ने आपको स्वयं लेने न आ पाने के लिए क्षमा मांगी है। उनके भाई की तबीयत ठीक नहीं है। इसलिए उन्हें घर पर ही रहना पड़ा क्योंकि डॉक्टर के आने का इंतज़ार था।'
यह हमारे लिए बिल्कुल नई बात थी। हममें से किसी को भी नहीं पता था कि महितोष बाबू का एक भाई भी है।
‘उम्मीद है कि कुछ गंभीर नहीं होगा?’ फेलुदा ने पूछा। मैं समझ गया कि वह ऐसे घर में रुकने से खुश नहीं था जहाँ कोई बीमार हो। हमारी यह यात्रा मेज़बान के लिए बोझ बन सकती थी।
‘नहीं, नहीं,’ श्री सेनगुप्ता ने उत्तर दिया, ‘देवतोष बाबू—वह उनके भाई हैं — को कोई शारीरिक समस्या नहीं है। उनकी समस्या मानसिक है, और वे… खैर, कई वर्षों से… पूरी तरह से सामान्य नहीं हैं। लेकिन मुझे गलत मत समझिए। वे पागल नहीं हैं। वास्तव में, वे ज्यादातर समय ठीक ही लगते हैं। लेकिन कभी- कभी वे बहुत बेचैन हो जाते हैं। इसलिए डॉक्टर को उन्हें नींद की दवा देनी पड़ती है।’
'उसकी क्या उम्र है?'
चौंसठ वर्ष। वह मुझसे पांच साल बड़े हैं। वह कभी बहुत विद्वान व्यक्ति थे। उन्हें इतिहास का व्यापक ज्ञान था... है।
मैंने जीप से बाहर देखा। उत्तर दिशा में हिमालय पर्वतमाला थी। उस दिशा में कहीं दार्जिलिंग स्थित था। मैं वहाँ तीन बार जा चुका था, लेकिन लक्ष्मणबाड़ी कभी नहीं गया था। धूप न होने के कारण मौसम ज़्यादा गर्म नहीं

था। शहर से निकलते ही नज़ारा बदल गया। हम कुछ चाय बागानों से गुज़रे। अब मुझे पूरब की ओर भी पहाड़ दिखाई दे रहे थे।
श्री सेनगुप्ता ने इन पौधों की ओर इशारा करते हुए संक्षेप में कहा, 'भूटान।' तीस्ता नदी पार करते ही चाय के बागान खत्म होकर जंगल शुरू हो गए। एक जगह हमें बकरियों का एक झुंड जंगल से निकलता दिखाई दिया। लालमोहन बाबू बहुत उत्साहित हो गए और चिल्लाए, 'देखो, हिरण, हिरण!'
‘कम से कम उसने बाघों का नाम तो नहीं लिया। भगवान का शुक्र है!’ फेलुदा ने धीरे से बुदबुदाया।
श्री सेनगुप्ता ने हमें बताया, “हमारे घर से एक मील के भीतर कलबुनी नाम का एक जंगल है। यह कभी बाघों से भरा हुआ था, जिनमें से कई को सिन्हा-रॉय परिवार ने मार डाला था। अब, मुझे यकीन नहीं है कि कोई रॉयल बंगाल बाघ बचा है या नहीं, लेकिन लगभग तीन महीने पहले कलबुनी में एक आदमखोर बाघ के होने की अफवाहें थीं।”
‘अफवाहें? आपका क्या मतलब है?’
"जंगल में एक आदिवासी लड़के का शव मिला। उस पर खरोंच के निशान थे जिनसे पता चलता है कि उस पर बाघ ने हमला किया था।"
‘सिर्फ खरोंचें? क्या बाघ ने मांस नहीं खाया?’
'हां, मांस आंशिक रूप से खाया गया था। लेकिन इसके लिए लकड़बग्घा या सियार जिम्मेदार हो सकते हैं।'
'महतोष बाबू को क्या कहना था?'
‘वह उस समय यहाँ नहीं थे। वे हासिमारा के पास स्थित अपने चाय बागान का दौरा करने गए थे। वन विभाग के अधिकारियों को लगा कि यह बाघ हो सकता है, लेकिन जब श्री सिन्हा-रॉय वापस आए, तो उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। पिछले कुछ महीनों में उस बाघ को खोजने के लिए बहुत प्रयास किए गए हैं, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली है।’
‘ठीक है। उस एक घटना के बाद किसी और पर हमला नहीं हुआ?’
'नहीं।'
आदमखोर का नाम सुनते ही मेरे रोंगटे खड़े हो गए। लेकिन महितोष बाबू शायद सही थे। लालमोहन बाबू ने कहा, 'बेहद दिलचस्प!' और भौंहें चढ़ाकर पेड़ों को घूरने लगे।

हमने एक छोटी नदी पार की, एक गाँव और एक और जंगल से गुज़रे, और बाईं ओर मुड़ गए। यहाँ सड़क कच्ची थी, इसलिए हमारी सवारी काफ़ी ऊबड़-खाबड़ हो गई। हालाँकि, यह ज़्यादा देर तक नहीं चली। केवल पाँच मिनट बाद, मुझे पेड़ों के ऊपर एक इमारत की चोटी दिखाई दी। कुछ ही पलों में उसका बाकी हिस्सा भी नज़र आने लगा। पेड़ कम होते गए और ऊँचे लोहे के दरवाजों के पीछे एक विशाल हवेली दिखाई दी। कभी यह सफ़ेद रही होगी, लेकिन अब इसकी दीवारों पर काले निशान थे, जिससे पूरा घर ऐसा लग रहा था जैसे उस पर हमला हुआ हो और वह बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया हो। केवल खिड़कियों के शीशे ही रंगीन चमक रहे थे। इंद्रधनुष के रंगों में से एक भी रंग गायब नहीं था।
द्वार खुले थे। हमारी जीप उनसे गुज़री और बरामदे पर रुक गई। मैंने द्वार पर एक संगमरमर की शिला देखी जिस पर लिखा था: 'सिन्हा-रॉय महल'।

दो

महितोष सिन्हा-रॉय अपनी तस्वीर से कुछ अलग निकले। तस्वीर में उनका रंग ठीक से नहीं दिख रहा था। वे बेहद गोरे थे। उनकी लंबाई लगभग फेलुदा के बराबर लग रही थी और तस्वीर खिंचवाने के बाद से उनका वजन थोड़ा बढ़ गया था। उनकी आवाज़ गहरी और दमदार थी। मुझे लगा कि अगर वे सिर्फ बात भी कर लें तो किसी बाघ को भी डरा सकती है।
वह हमें मुख्य द्वार पर मिला और हमें एक विशाल ड्राइंग रूम में ले गया। ‘कृपया बैठ जाइए,’ उन्होंने स्नेहपूर्वक आमंत्रित किया। हम सभी के परिचय होते ही फेलुदा ने अपने लेखन का जिक्र किया। ‘आपने जिन घटनाओं का वर्णन किया है वे वाकई अद्भुत हैं। लेकिन इनके अलावा भी, आपकी भाषा और शैली इतनी उत्कृष्ट हैं कि साहित्यिक दृष्टि से भी, मुझे लगता है कि आपने उल्लेखनीय योगदान दिया है।’
एक वेटर अंदर आया और उसने एक छोटी मेज पर आम के शरबत के गिलास रख दिए। महितोष बाबू ने उनकी ओर इशारा करते हुए कहा, 'आप स्वयं ले लीजिए।' फिर मुस्कुराते हुए उन्होंने कहा, 'आप बहुत दयालु हैं, श्री मित्तर। हो सकता है लेखन मेरे खून में ही हो, लेकिन मुझे इसका एहसास चार साल पहले तक नहीं हुआ, जब मैंने पहली बार लिखना शुरू किया। मेरे दादा और पिता दोनों लेखक थे। वैसे, मुझे नहीं लगता कि उनके पूर्वजों का साहित्य से कोई संबंध था। हम मूल रूप से राजपूताना के क्षत्रिय थे। ओह, आपको यह पता था, है ना? तो, एक समय हम दूसरे पुरुषों से लड़ने के धंधे में थे। फिर हमने पुरुषों को छोड़ दिया और जानवरों की ओर रुख किया। अब मुझे मजबूरी में अपनी बंदूक छोड़कर कलम उठानी पड़ी है।'
'क्या वह तुम्हारे दादाजी हैं?' फेलुदा ने दीवार पर लगी एक तेल चित्रकला को देखते हुए पूछा।
जी हां। ये आदित्यनारायण सिन्हा-रॉय हैं।
वह एक प्रभावशाली व्यक्तित्व था। उसकी आँखें चमक रही थीं, बाएँ हाथ में राइफल थी और दायाँ हाथ मेज पर हल्के से रखा हुआ था। वह सीधे हमारी ओर देख

रहा था, शरीर सीधा था और सिर गर्व से झुका हुआ था। उसकी दाढ़ी और मूंछें मुझे किंग जॉर्ज पंचम की याद दिला रही थीं।
'मेरे दादाजी बंकिम चंद्र चटर्जी के साथ पत्रों का आदान-प्रदान करते थे। जब देवी चौधरी रानी प्रकाशित हुई थी, तब वे कॉलेज में थे। उन्होंने किताब पढ़ने के बाद बंकिम को पत्र लिखा था।'
‘उपन्यास की कहानी इन्हीं इलाकों में आधारित थी, है ना?’
‘जी हां,’ महितोष बाबू ने उत्साह से उत्तर दिया, ‘आज आपने जिस तीस्ता नदी को पार किया, वह वही त्रिस्रोता नदी है जिसका वर्णन पुस्तक में किया गया है। देवी की नाव इसी नदी पर चलती थी। लेकिन बंकिम द्वारा वर्णित जंगल अब चाय बागान बन गए हैं।’
‘आपके दादाजी शिकारी कब बने?’ लालमोहन बाबू ने अचानक पूछा।
महितोष बाबू मुस्कुराए। उन्होंने जवाब दिया, “अरे वाह, ये तो बहुत ही दिलचस्प कहानी है। मेरे दादाजी को कुत्तों से बहुत प्यार था। वो इस पूरे इलाके से पिल्ले लाकर लाते थे। एक समय ऐसा भी था जब हमारे घर में कम से कम पचास कुत्ते रहे होंगे, हर नस्ल, आकार, कद और स्वभाव के। इनमें से उनका सबसे पसंदीदा कुत्ता भूटानी कुत्ता था। यहाँ पास में ही जलपेश्वर नाम का एक शिव मंदिर है। स्थानीय लोग हर साल शिवरात्रि के दौरान एक बड़ा मेला लगाते हैं। भूटान से बहुत से लोग उस मेले में आते हैं और अपने साथ कुत्ते और पिल्ले बेचने के लिए लाते हैं। मेरे दादाजी ने उनमें से एक कुत्ता खरीदा—एक बड़ा, रोएँदार, बहुत प्यारा जानवर—और उसे घर ले आए। जब कुत्ता साढ़े तीन साल का था, तो उस पर एक चीते ने हमला कर दिया और वो उसे मार डाला। दादाजी तब जवान थे। उन्होंने ठान लिया कि वो जितने भी चीते और दूसरे बड़े जानवर मिलेंगे, उन सबको मारकर बदला लेंगे। उन्होंने राइफल और बंदूकें खरीदीं, निशाना लगाना सीखा और फिर... बस फिर क्या था।” उसने बाईस वर्षों में लगभग डेढ़ सौ बाघ मारे होंगे। मैं आपको यह नहीं बता सकता कि उसने कितने अन्य जानवरों को मारा - उनकी संख्या अनगिनत थी।'
'और आप?'
‘मैं?’ महितोष बाबू मुस्कुराए, फिर अपनी दाहिनी ओर मुड़े। ‘चलो, शशांका, उन्हें बताओ।’

मुझे अचानक यह देखकर हैरानी हुई कि जब हम सभी महितोष बाबू की कहानी सुन रहे थे, तभी एक और सज्जन चुपचाप कमरे में दाखिल हुए और हमारे बाईं ओर वाली कुर्सी पर बैठ गए।
‘बाघ? आपने तो इतनी किताबें लिखी हैं, आप ही उन्हें बताइए!’ शशांका बाबू ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।
महितोष बाबू हमारी ओर मुड़े। ‘मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मैं तीन अंकों तक नहीं पहुँच पाया हूँ। मैंने इकहत्तर बाघ और पचास से अधिक तेंदुए मारे हैं। मेरे मित्र शशांका सान्याल से मिलिए। हम बचपन से एक-दूसरे को जानते हैं। वह मेरे लकड़ी के कारोबार की देखभाल करते हैं।’
महितोष बाबू और उनके दोस्त में ज़मीन-आसमान का फ़र्क था। महितोष बाबू की लंबाई मुश्किल से पाँच फ़ीट आठ इंच थी, रंग सांवला था, आवाज़ धीमी थी और वे बहुत ही नरमी से बोलते थे। फिर भी, दोस्ती को जोड़े रखने के लिए उनमें कोई न कोई साझा रुचि तो ज़रूर रही होगी।
‘श्री सेनगुप्ता ने आदमखोर सांप के बारे में कुछ बताया था। क्या इस बारे में कोई और खबर मिली है?’ फेलुदा ने पूछा।
महितोष बाबू अपनी कुर्सी पर थोड़ा हिले। ‘कुछ लोगों के कहने से कोई बाघ आदमखोर नहीं बन जाता। अगर मैं यहाँ होता और शव देख पाता, तो मुझे पता चल जाता। खैर, अच्छी खबर यह है कि जिस भी जानवर ने उस बेचारे लड़के पर हमला किया था, उसने अभी तक इंसानी मांस में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई है।’ फेलुदा मुस्कुराया। उसने कहा, 'अगर वाकई वह आदमखोर होता, तो मुझे यकीन है कि तुम कम से कम कुछ समय के लिए ही सही, अपनी कलम छोड़कर बंदूक उठा लेते।' 'हाँ, बिल्कुल। अगर मेरे इलाके में कोई बाघ इंसानों को खाने लगे, तो निश्चित रूप से मैं उसे मारना अपना कर्तव्य समझूंगा।'
हमने अपने पेय समाप्त कर लिए थे। महितोष बाबू ने कहा, 'यात्रा के बाद आप थक गए होंगे। क्यों न आप अपने कमरे में जाकर थोड़ा आराम कर लें? मैं शाम को किसी को अपनी जीप में आपको घुमाने के लिए भेज दूंगा। एक सड़क जंगल से होकर जाती है। आपको हिरण या शायद हाथी भी दिख जाएं, अगर आपकी किस्मत अच्छी रही तो। तोरित, कृपया उन्हें ट्रॉफी रूम दिखा देना और फिर उन्हें उनके कमरे में छोड़ देना।'
ट्रॉफी रूम बाघों, भालुओं, जंगली भैंसों और हिरणों के सिरों से भरा एक हॉल निकला। एक दीवार पर मगरमच्छों की खालें लटकी हुई थीं। हम सबके लिए वहाँ

मुश्किल से ही जगह थी। दर्जनों मरे हुए जानवरों को अपनी काँच जैसी आँखों से मुझे घूरते हुए देखकर मुझे थोड़ा असहज महसूस हुआ। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। इन जानवरों को मारने के लिए इस्तेमाल किए गए हथियार भी एक बड़े रैक पर रखे हुए थे। हममें से किसी ने भी इतनी बंदूकें पहले कभी नहीं देखी थीं: एक बैरल वाली, दो बैरल वाली, पक्षियों को मारने वाली बंदूकें, बाघों के लिए बंदूकें, और यहाँ तक कि हाथियों के लिए भी कुछ बंदूकें। ऐसा लग रहा था मानो उनका कोई अंत ही न हो।
‘क्या आप कभी शिकार पर गए हैं?’ फेलुदा ने विभिन्न हथियारों को देखते हुए तोरित सेनगुप्ता से पूछा। श्री सेनगुप्ता हँसे और सिर हिलाया। ‘नहीं, नहीं, मैं नहीं। आप एक जासूस हैं। क्या आप मुझे देखकर नहीं बता सकते कि मेरा जानवरों को मारने से कोई लेना-देना नहीं है?’
'शिकारी बनने के लिए शारीरिक रूप से बहुत बड़ा और भारी-भरकम होना ज़रूरी नहीं है। यह सब दृढ़ निश्चय पर निर्भर करता है, है ना? आपमें इसकी कमी तो मुझे नहीं लगती।'
नहीं, मेरा हौसला काफी मजबूत है। लेकिन मैं कलकत्ता के एक साधारण मध्यमवर्गीय परिवार से आती हूं। शिकार के बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था।
हम ट्रॉफी रूम से बाहर निकले और सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। 'शहर से आया हुआ आदमी ऐसी जगह पर क्या कर रहा है?' फेलुदा ने पूछा।
‘मिस्टर मिटर, वह बस एक नौकरी कर रहे हैं। कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद मुझे शहर में कोई नौकरी नहीं मिली। फिर मैंने मिस्टर सिन्हा-रॉय का सचिव पद के लिए विज्ञापन देखा। मैंने आवेदन किया, साक्षात्कार के लिए यहां आया और मुझे नौकरी मिल गई।’
'आप यहाँ पर कितने समय से हैं?'
‘पांच साल।’
‘तुम्हें जंगल में घूमना पसंद है, है ना? मेरा मतलब है, भले ही तुम शिकारी न हो?’
श्री सेनगुप्ता ने फेलुदा की ओर आश्चर्य से देखा। 'क्यों, तुम्हारा मतलब क्या है?'
‘तुम्हारे दाहिने हाथ पर खरोंच के निशान हैं। क्या ये कांटेदार झाड़ी के हैं?’

श्री सेनगुप्ता फिर मुस्कुराए। 'जी हां, आप सही कह रहे हैं। मुझे कहना पड़ेगा कि आप वाकई बहुत ध्यान से देखते हैं। मुझे ये अंक कल ही मिले हैं। जंगल में घूमना मेरे लिए एक लत जैसा बन गया है।'
‘क्या तब भी जब आप निहत्थे हों?’
‘जी हां। आमतौर पर डरने की कोई बात नहीं है,’ श्री सेनगुप्ता ने शांत स्वर में उत्तर दिया। ‘मुझे केवल सांपों और पागल हाथियों से सावधान रहना पड़ता है।’
‘और आदमखोर?’ लालमोहन बाबू ने फुसफुसाते हुए पूछा।
'अगर एक दिन आदमखोर सांप का अस्तित्व साबित हो जाता है, तो मुझे लगता है कि मुझे अपनी सैर छोड़नी पड़ेगी।'
सीढ़ियों के शीर्ष पर एक दरवाजा था, जिसके आगे एक लंबा बरामदा था। एक तरफ कई कमरे बने हुए थे। इनमें से पहला कमरा महितोष बाबू का अध्ययन कक्ष था। श्री सेनगुप्ता दिन के समय इसमें काम करते थे। बरामदा थोड़ा आगे बाईं ओर मुड़कर इमारत के पश्चिमी भाग में पहुँच जाता था। हमारे कमरे बरामदे के इस हिस्से में बने कमरों में से थे।
‘क्या ये सभी कमरे इस्तेमाल में हैं? इनमें कौन रहता है?’ फेलुदा ने पूछा। ‘कोई नहीं। इनमें से अधिकतर बंद रहते हैं। श्री सिन्हा-रॉय और उनके भाई पूर्वी हिस्से में रहते हैं। शशांका सान्याल और मैं दक्षिणी हिस्से में रहते हैं। हमारे हिस्से के दो कमरे श्री सिन्हा-रॉय के बेटों के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। उनके दो बेटे हैं। दोनों कलकत्ता में काम करते हैं। वे कभी-कभार यहाँ आते हैं।’
तभी मेरी नज़र सामने वाले बरामदे पर एक और आकृति पर पड़ी: एक आदमी बैंगनी रंग का गाउन पहने, रेलिंग से टिका हुआ, सीधे हमारी तरफ़ देख रहा था। 'क्या ये महितोष बाबू का भाई है?' फेलुदा ने पूछा। श्री सेनगुप्ता के जवाब देने से पहले ही उस आदमी ने बोलना शुरू कर दिया। उसकी आवाज़ उसके भाई की तरह ही गहरी थी।
‘क्या तुमने राजू को देखा है? वह कहाँ है?’
यह सवाल स्पष्ट रूप से हमसे ही पूछा गया था। वह तेजी से हमारे करीब आया। दोनों भाइयों में, खासकर जबड़े के आसपास, स्पष्ट समानताएं थीं। श्री सेनगुप्ता ने हमारी ओर से जवाब दिया, 'नहीं, उन्होंने उसे नहीं देखा है।' ‘नहीं? हुसैन के बारे में क्या? क्या उन्होंने हुसैन को देखा है?’

उसकी आँखें अजीब और भावहीन थीं। उसके बाल उसके भाई के बालों से बहुत पतले और लगभग पूरी तरह सफेद थे। वह शायद कद में उसके भाई जितना ही लंबा था, लेकिन वह झुककर चलता था, इसलिए छोटा दिखता था।
‘नहीं, उन्होंने हुसैन को भी नहीं देखा है,’ श्री सेनगुप्ता ने कहा और हमें अपने कमरे में जाने का इशारा किया। ‘उन्हें कुछ नहीं पता,’ उन्होंने दृढ़ता से कहा, ‘वे केवल कुछ दिनों के लिए आए हैं।’ देवतोष बाबू स्पष्ट रूप से निराश दिखे। हम जल्दी से अपने कमरे में चले गए।
‘राजू और हुसैन कौन हैं?’ फेलुदा जानना चाहता था। श्री सेनगुप्ता हंस पड़े।
‘राजू, कालापहाड़ का दूसरा नाम है। और हुसैन, हुसैन खान है, जो गौर का सुल्तान हुआ करता था। इन दोनों ने बंगाल में कई हिंदू मंदिरों को नष्ट किया। यहाँ जलपेश्वर मंदिर में स्थित मूर्ति का सिर हुसैन खान ने तोड़ा था।’
‘क्या आप इतिहास के छात्र थे?’
नहीं, साहित्य। लेकिन श्री सिन्हा-रॉय अपने परिवार का इतिहास लिख रहे हैं। इसलिए, उनके सचिव के रूप में, मुझे इस क्षेत्र में हुई पिछली घटनाओं के बारे में कुछ जानकारी इधर-उधर से जुटानी पड़ रही है।
श्री सेनगुप्ता चले गए। हमारे आने के बाद पहली बार हम अकेले रह गए थे। अब मैं पूरी तरह से आराम कर सकता था। कमरा बड़ा और आरामदायक था। दरवाजे के ऊपर दो हिरणों के सिर लगे हुए थे। फर्श पर एक तेंदुए की खाल बिछी हुई थी, जिसमें उसका सिर भी शामिल था। शायद इसे कहीं और रखने की जगह नहीं थी। दो अच्छे पलंग थे, और एक छोटी लकड़ी की चारपाई थी, जिसे शायद इसलिए रखा गया था क्योंकि हम तीन लोग थे। तीनों पलंग बड़े करीने से बिछे हुए थे, मोटे गद्दे, कढ़ाई वाली चादरें और तकिए के कवर थे। हर पलंग के चारों ओर मच्छरदानी लगी हुई थी। फेलुदा ने चारपाई को देखकर कहा, 'शायद यह कभी मचान के रूप में इस्तेमाल होती थी। देखो, इस पर रस्सियों से बांधने के निशान हैं। टॉपशे, तुम इस पर सो सकती हो।'
लालमोहन बाबू जो कुछ उन्होंने देखा उससे काफी संतुष्ट लग रहे थे। वे अपने बिस्तर पर बैठ गए और बोले, “मुझे लगता है कि अगले तीन दिन हम खूब आनंद लेंगे। लेकिन मुझे उम्मीद है कि देवतोष बाबू अपने दोस्त राजू के बारे में

पूछने वापस नहीं आएंगे। सच कहूं तो, मानसिक रूप से विक्षिप्त व्यक्ति की उपस्थिति में मुझे बहुत असहजता महसूस होती है।”
मेरे मन में भी यही ख्याल आया था। लेकिन फेलुदा जरा भी चिंतित नहीं दिखे। उन्होंने सामान खोलना शुरू किया, बस एक पल के लिए रुककर भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'हमें अभी तक नहीं पता कि महितोष बाबू मुझसे किस तरह की मदद की उम्मीद कर रहे हैं।'

तीन

श्री सेनगुप्ता शाम को हमारे साथ नहीं जा सके क्योंकि उन्हें कुछ ज़रूरी काम था। उनकी जगह महितोष बाबू के मित्र शशांका सान्याल हमारे साथ आए। कई वर्षों से यहीं रहने के कारण उन्हें भी यहाँ के पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं की अच्छी जानकारी थी। अंधेरा होने लगा था और जीप के पीछे से ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था, फिर भी वे हमें पेड़-पौधे दिखाते रहे। उन्होंने बताया कि वे यहाँ तीस साल से रह रहे हैं। इससे पहले वे कलकत्ता में रहते थे। महितोष बाबू और उन्होंने एक ही स्कूल और कॉलेज में पढ़ाई की थी।
हमारी जीप एक छोटी नदी के किनारे रुक गई। सूरज डूबने ही वाला था।
श्री सान्याल ने कहा, 'चलिए थोड़ी देर के लिए नीचे उतरते हैं। चलती जीप से आपको जंगल का असली माहौल, उसका एहसास कभी नहीं मिलेगा।'
जैसे ही हम जंगल से बाहर निकले, मुझे एहसास हो गया कि जंगल कितना घना और शांत था। नदी की हल्की कलकल और पक्षियों के अपने घोंसलों में लौटने की आवाज़ के अलावा कोई शोर नहीं था। अगर वहाँ एक आदमी राइफल लिए न होता, तो मैं ज़रूर बेचैन हो जाता। उस आदमी का नाम माधवलाल था। वह एक पेशेवर शिकारी था। जब विदेश से शिकारी यहाँ आते थे, तो माधवलाल ही उनका मार्गदर्शक हुआ करता था। ज़ाहिर है, उसे पता था कि मचान कहाँ लगाना चाहिए, बाघ कहाँ दिख सकता है, और अगर कोई जानवर चिल्लाए तो उसका क्या मतलब हो सकता है। वह लगभग पचास साल का था, लंबा और गठीला, उसके शरीर पर ज़रा भी चर्बी नहीं थी। मुझे बहुत खुशी हुई कि उसे हमारे साथ भेजा गया था।
हम धीरे-धीरे रेतीले किनारे की ओर चले और ज़मीन पर बिछे कंकड़ों पर खड़े हो गए जो कालीन की तरह बिछे थे। श्री सान्याल से कुछ मिनट बातचीत करने के बाद, फेलुदा ने अचानक पूछा, 'देवतोष बाबू को क्या हुआ है? ये सब कैसे हुआ...?' ‘वंशानुगत। उनके परिवार में पागलपन का इतिहास रहा है। महितोष के दादाजी बुढ़ापे में पागल हो गए थे।’
‘सच में? क्या उसे शिकार करना बंद करना पड़ा?’

“हाँ, बिल्कुल। सभी हथियार नज़र से हटा दिए गए थे। लेकिन एक दिन, उन्हें ड्राइंग रूम की दीवार पर टंगी एक पुरानी तलवार मिली। उन्होंने उसे उठाया और एक और बाघ को मारने के लिए जंगल में चले गए। अफवाह है कि वे वही करना चाहते थे जो शेर शाह ने किया था। आपने स्कूल में इतिहास की कक्षाओं में पढ़ा होगा कि शेर शाह को उनकी उपाधि कैसे मिली: “कहा जाता है कि अपने जीवन के अंतिम वर्षों में उन्होंने अपनी तलवार के एक ही वार से एक बाघ का सिर काट दिया था, जिससे उन्हें शेर शाह की उपाधि मिली।” पागलपन के आवेश में, आदित्यनारायण भी यही करना चाहते थे।
‘और फिर?’ लालमोहन बाबू ने पूछा, उनकी आंखें गोल हो गईं और आवाज दबी हुई थी। ‘वह कभी वापस नहीं लौटा। इस बार बाघ जीत गया। उसकी तलवार के अलावा वस्तुतः कुछ भी नहीं बचा था।’
झाड़ी के पीछे से एक जानवर की तेज़ आवाज़ आई। लालमोहन बाबू डर के मारे उछल पड़े। श्री सान्याल हँसे। 'श्री गांगुली, आप तो साहसिक कहानियों के लेखक हैं। आपको इतनी आसानी से डरना नहीं चाहिए। वह तो बस एक लोमड़ी थी।' लालमोहन बाबू ने खुद को संभाला। ‘अह... देखिए, मैं एक लेखक हूँ, इसलिए मेरी कल्पना शक्ति दूसरों से कहीं अधिक जीवंत है। हम बाघों के बारे में बात कर रहे थे, है ना, और तभी मुझे उस जानवर की आवाज़ सुनाई दी। तो मुझे लगा कि उस झाड़ी के पीछे सचमुच पीले रंग की एक झलक दिखाई दी।’
“अच्छा... अगर हम यहीं रुके रहे तो झाड़ियों के पीछे कुछ पीला और धारीदार सा दिखने लग सकता है,” श्री सान्याल ने अचानक अपनी आवाज धीमी करते हुए कहा। 'क्या!'
‘क्या वह भौंकने वाला हिरण था?’ फेलुदा ने फुसफुसाते हुए कहा।
एक अलग जानवर की आवाज सुनाई देने लगी। यह कुत्ते के भौंकने जैसी लग रही थी। फेलुदा ने मुझे एक बार बताया था कि अगर कोई बाघ आस-पास दिखाई दे, तो अक्सर हिरण दूसरे जानवरों को चेतावनी देने के लिए आवाज निकालते हैं। श्री सान्याल ने चुपचाप सिर हिलाया और हमें जीप में वापस बैठने का इशारा किया। हम दबे पांव वापस गए और पूरी खामोशी से अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए। अब काफी अंधेरा हो चुका था। मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। माधवलाल भी अपनी राइफल को कसकर पकड़े हुए जीप के पास आ गया था। लालमोहन बाबू ने मेरा हाथ हल्के से छुआ। उनकी हथेली बर्फ जैसी ठंडी थी।

हम छह बजे तक बेसब्री से इंतजार करते रहे; लेकिन कोई जानवर नजर नहीं आया। हमें निराश होकर लौटना पड़ा।
जब हम अपने कमरे में पहुँचे तब तक घना अंधेरा हो चुका था। हमें आश्चर्य हुआ कि इतने कम समय में ही पश्चिमी आकाश में घने बादल छा गए थे। दूर कहीं गरज सुनाई दी और बिजली की कड़क से हमारी आँखें चौंधिया गईं। हम सब खिड़की से बाहर इस नजारे को देख रहे थे, तभी किसी ने दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुला रह गया था। हमने मुड़कर देखा तो वहाँ महितोष सिन्हा-रॉय खड़े थे।
‘जंगल की तुम्हारी यात्रा कैसी रही?’ उसने अपनी गहरी आवाज में पूछा। ‘हमने लगभग एक बाघ देख ही लिया था!’ लालमोहन बाबू बच्चे की तरह उत्साहित होकर चिल्लाया।
हमारे मेज़बान ने कहा, ‘अगर आप दस साल पहले भी यहाँ आए होते, तो आपको एक ज़रूर दिख जाता। अगर आज आपको एक भी नहीं दिखा, तो मैं मानता हूँ कि इसके लिए मैं और मेरे जैसे दूसरे शिकारी ज़िम्मेदार हैं, क्योंकि शिकार को एक खेल माना जाता था। प्राचीन काल में भी राजा शिकार पर जाया करते थे, जिसे वे मृगया कहते थे। मुग़ल बादशाह भी ऐसा ही करते थे, और आधुनिक काल में हमारे अंग्रेज़ शासक भी। यह एक परंपरा बन गई, जिसका हमने आँख बंद करके पालन किया। ज़रा सोचिए, इन दो हज़ार सालों में कितने जानवर मारे गए होंगे? लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती, है ना? ज़रा सोचिए, चिड़ियाघरों और सर्कसों के लिए हर साल कितने जानवर पकड़े जाते हैं!’
हममें से किसी को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहें। क्या एक मशहूर शिकारी को अब अपने किए पर पछतावा हो रहा था? फेलुदा ने उसे कुर्सी की पेशकश की, लेकिन उसने मना कर दिया। 'नहीं, धन्यवाद,' उसने कहा, 'मैं यहाँ रहने नहीं आया हूँ। मैं तो बस आपको कुछ दिखाने आया हूँ। चलिए मेरे दादाजी के कमरे में चलते हैं। मुझे लगता है आपको यह दिलचस्प लगेगा।'
आदित्यनारायण का कमरा उत्तरी भाग में था। 'हमने सुना था कि बुढ़ापे में उनका मानसिक संतुलन बिगड़ गया था,' फेलुदा ने कहा जब हम उस दिशा में बढ़ने लगे।
महितोष बाबू मुस्कुराए। 'हां, लेकिन जब तक ऐसा नहीं हुआ, जब तक वह लगभग साठ वर्ष के नहीं हो गए, तब तक उनकी जैसी बुद्धि और तीक्ष्ण बुद्धि वाले लोग बहुत कम थे।'

‘क्या तुम्हारे पास अभी भी वह तलवार है जिसे उसने बाघ को मारने के लिए लिया था?’
'हां, यह उनके कमरे में रखा है। आइए, मैं आपको दिखाता हूं।'
आदित्यनारायण के कमरे की तीन तरफ किताबों की अलमारियां थीं। हर अलमारी किताबों, कागजों, पांडुलिपियों और पुराने अखबारों के ढेरों से भरी हुई थी। चौथी तरफ दो संदूक और एक कांच का बक्सा था। उसमें रखी चीजों की सूची बनाना असंभव है, जिनमें बाघ के नाखून और गैंडे के सींग से लेकर भूटान की धातु की मूर्तियां और गहने तक शामिल थे। उनके पसंदीदा कुत्ते का पट्टा भी वहीं था। भूटान के सभी गहनों की तरह, यह भी पत्थरों से जड़ा हुआ था। इनके अलावा, एक चांदी की कलम और स्याही की दवात, मुगल काल की दूरबीन और दो मानव खोपड़ियां भी थीं। ये सभी चीजें ऊपर की दो अलमारियों पर रखी थीं। नीचे की दो अलमारियों में केवल हथियार थे: तीन सौ साल पुरानी नक्काशीदार पिस्तौल, आठ कटार और कुकरी, और वह प्रसिद्ध तलवार। केवल एक पागल ही सोच सकता था कि यह बाघ को मारने के लिए काफी होगी, क्योंकि यह न तो बहुत बड़ी थी और न ही बहुत भारी। बीकानेर किले में मैंने जो तलवारें देखी थीं, जो कभी राजपूत शासकों की थीं, वे कहीं अधिक प्रभावशाली थीं।
जब हम इन वस्तुओं की जांच कर रहे थे, तभी महितोष बाबू ने एक संदूक खोला और उसमें से एक छोटी हाथीदांत की पेटी निकाली। फिर उन्होंने उसमें से एक मुड़ा हुआ कागज निकाला और कहा, 'मेरा मानना है कि जासूसों में पहेलियों और रहस्यों को सुलझाने की एक विशेष क्षमता होती है। देखिए, श्री मित्तर, आप इसे कैसे सुलझाते हैं।'
‘एक पहेली? मुझे कभी ऐसी चीजों में दिलचस्पी हुआ करती थी, लेकिन...’ महितोष बाबू ने कागज का टुकड़ा फेलुदा को देते हुए कहा, ‘आपने कहा था कि आप यहाँ तीन दिन बिताना चाहते हैं। अगर आप उस समय में इसे हल नहीं कर पाते हैं, तो मैं आपको तीन दिन और देने को तैयार हूँ; लेकिन इससे ज्यादा नहीं।’
अंतिम कुछ शब्द बोलते ही उनके लहजे में बदलाव आया, उनकी आँखों का भाव भी बदल गया। मुझे अचानक एहसास हुआ कि हमारे मिलनसार मेज़बान के भीतर एक कठोर, निर्मम, शायद बेरहमी भी छिपी हुई थी। ज़ाहिर है, ऐसे भी मौके आए होंगे जब उनके चरित्र का यह पहलू सामने आया होगा। महितोष बाबू की आँखों से वह ठंडा, उदासीन भाव हटने से पहले ही फेलुदा ने झट से पूछा: 'और अगर मैं सफल हो गया तो?' उनका लहजा हल्का था और उनके होठों पर हल्की सी मुस्कान थी। लेकिन यह

स्पष्ट था कि फेलुदा में महितोष बाबू से निपटने की क्षमता की कमी नहीं थी, चाहे वह कितने भी कठोर क्यों न हों।
महितोष सिन्हा-रॉय हँस पड़े, उनका हास्यबोध फिर से लौट आया। 'अगर आप सफल होते हैं, श्री मित्तर, तो मैं आपको एक पूरी बाघ की खाल दूंगा, जो मैंने अब तक मारे गए सबसे बड़े बाघों में से एक की उतारी है।'
यह वाकई बहुत उदारतापूर्ण था, मुझे यह स्वीकार करना पड़ा। आज के समय में पूरे बाघ की खाल का मूल्य कम नहीं था।
फेलुदा ने अब कागज के टुकड़े को देखा और पहेली को जोर से पढ़ा:
बूढ़ा आदमी खोखला, अनुसरण करने के लिए गति, लोगों का पेड़। साढ़े दस, फिर से साढ़े दस, सदी। उगता सूरज, जहाँ से यह हो चुका है, क्या तुम देख नहीं सकते? हाथों के बीच, उनके नीचे खड़ा है, तुम्हारा ही है।
'छिपा हुआ खजाना,' फेलुदा ने धीरे से कहा।
'आपको ऐसा लगता है?'
हां, आखिरी पंक्ति से तो यही लगता है। मेरा मतलब है, "तुम्हारा ही हो" का मतलब तो यही हो सकता है कि उस पहेली को सुलझाने के बाद कुछ मिले और उसके लिए इनाम मिले। पैसा ही होना चाहिए। लेकिन हमें यह भी सोचना होगा कि क्या तुम्हारे दादाजी ऐसे व्यक्ति थे जो अपनी दौलत छिपाकर उसे वापस पाने के लिए कोई गुप्त संदेश छोड़ देते? ऐसा करने के बारे में तो बहुत कम लोग सोचते हैं।
‘मेरे दादाजी ऐसा करते थे। वो आम आदमियों से बहुत अलग थे, मैंने तुम्हें बताया भी है। उन्हें शरारतें करना और दूसरों को चिढ़ाकर हँसना बहुत पसंद था। मुझे याद है, बचपन में एक दिन वो किसी बात पर सारे बड़ों से नाराज़ हो गए थे। तो उन्होंने आधी रात को उनके जूते चुरा लिए और उन्हें एक पेड़ की सबसे ऊँची डालियों पर गठ्ठों में बाँधकर लटका दिया। हाँ, मुझे इस पर पूरा यकीन है—क्या बात है, टोरिट?’
हममें से किसी ने भी टोरिट सेनगुप्ता को कमरे में आते हुए नहीं देखा था। वह दरवाजे के पास खड़े थे। उन्होंने धीमी आवाज़ में जवाब दिया, 'मैं उस शेल्फ से ली गई एक डिक्शनरी लौटाने आया था।'
‘बहुत अच्छा, इसे वापस रख दो। और... क्या तुमने उन प्रमाणों को पूरा कर लिया है?’
'जी श्रीमान।'

‘तो तुम्हें उन्हें कल अपने साथ ले जाना होगा। और उनसे पूछना होगा कि दूसरे प्रूफ में भी इतनी सारी गलतियाँ क्यों थीं। उन्हें बख्शना मत!’
श्री सेनगुप्ता ने अपने साथ लाई किताब को शेल्फ पर खाली जगह में सरका दिया और चले गए।
‘टोरिट कल एक हफ्ते के लिए कलकत्ता जा रहा है। उसकी मां बीमार है,’ महितोष बाबू ने समझाया। फेलुदा अभी भी कविता को घूर रहा था।
उन्होंने पूछा, 'इस पहेली के बारे में और किसे पता है?'
महितोष बाबू ने बत्ती बंद की और दरवाजे की ओर बढ़ने लगे। ‘हमें यह दस दिन पहले ही मिला है। मैं पुराने कागजात और चिट्ठियाँ देख रहा था क्योंकि मैं अपने परिवार का इतिहास लिखना शुरू करना चाहता हूँ। मेरे दादाजी के कई निजी कागजात एक पुराने स्टील के बक्से में मिले। वह हाथीदांत का बक्सा चिट्ठियों के ढेर के नीचे छिपा हुआ था। इसके बारे में सिर्फ तीन लोगों को पता है: शशांका, तोरित और मुझे। लेकिन हममें से किसी के पास भी उस संदेश को समझने की काबिलियत नहीं है। शब्दों का ज्ञान होना जरूरी है—एक ही शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं, है ना? क्या आपको लगता है कि आप इसे समझ सकते हैं, श्री मित्तर?’
फेलुदा ने माहितोष बाबू को कागज का टुकड़ा लौटा दिया।
‘क्या! क्या तुम अभी से हार मान रहे हो?’ उसने निराशा से चिल्लाते हुए कहा। ‘नहीं, नहीं,’ फेलुदा मुस्कुराया, ‘मुझे सारे शब्द याद हैं। मैं जाकर उन्हें अपनी नोटबुक में लिख लेता हूँ। वह कागज़ आपका और आपके परिवार का है। वह आपके पास ही रहना चाहिए।’

चार

‘फेलू बाबू, आपको तो बाघ की खाल मिलेगी, लेकिन मेरा क्या होगा?’ लालमोहन बाबू ने निराशा भरे स्वर में पूछा।
हमने एक घंटा पहले खाना खा लिया था। खाने के बाद हमारे मेज़बान ने हमें जंगल में अपने अनुभवों की रोमांचक कहानियाँ सुनाईं। हमने अभी-अभी उन्हें शुभ रात्रि कहा था और ड्राइंग रूम से वापस लौटे थे।
‘लालमोहन बाबू, आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? जो भी इस कोड को हल करेगा, उसे वो खाल मिलेगी। कम से कम मिलनी तो चाहिए। तो क्यों न आप खुद ही कोशिश कर लें? आप लेखक हैं, आपकी भाषा पर अच्छी पकड़ है और आपकी कल्पनाशीलता भी कमाल की है। तो चलिए, शुरू कीजिए!’
‘छी! भाषा पर मेरी पकड़ मुझे उन खोखले करतबों, हाथों के बल खड़े होने के करतबों और ऐसी ही दूसरी कलाबाजियों में कभी कामयाब नहीं होने देगी। इनाम तो तुम्हें ही मिलेगा। क्या तुम्हें लगता है कि वो तुम्हें ये वाला इनाम देगा?’ उसने ज़मीन पर फैली खाल की ओर देखा।
नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। क्या उसने किसी बड़े बाघ का ज़िक्र नहीं किया था? मुझे तेंदुओं में कोई दिलचस्पी नहीं है।
फेलुदा ने पहेली को बनाने वाली कुछ पंक्तियाँ पहले ही लिख ली थीं और अब वह अपनी नोटबुक को घूर रहा था।
‘क्या इसका कोई मतलब भी है?’ लालमोहन बाबू ने जोर देकर पूछा।
'नहीं, वास्तव में नहीं, सिवाय इसके कि मुझे पूरा यकीन है कि इसमें छिपा हुआ खजाना शामिल है,' फेलुदा ने ऊपर देखे बिना जवाब दिया।
‘तुम्हें कैसे पता? एक खोखले बूढ़े आदमी का पीछा करने का क्या मतलब है?’ ‘मुझे अभी पता नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि “अनुसरण” शब्द महत्वपूर्ण है, और “गति” भी। शायद यह बस आपको बता रहा है कि आपको कहाँ जाना चाहिए—किसी चीज़ की ओर या किसी चीज़ से कदम बढ़ाते हुए। इसके अलावा कुछ स्पष्ट नहीं है। इसलिए हमें—’ फेलुदा अपनी बात पूरी नहीं कर पाए। कोई खुले दरवाजे से अंदर आ गया। वह देवतोष बाबू थे।

वह अब भी बैंगनी रंग का गाउन पहने हुए था। उसकी आँखों में वही उग्र भाव था, मानो उसे हर उस व्यक्ति पर शक हो जिससे वह मिलता है कि उसने कोई अपराध किया है। उसने सीधे लालमोहन बाबू की ओर देखा और कहा, 'क्या तुम्हें भोट राजा ने भेजा है?'
‘Bh-bhot?’ Lalmohan Babu gulped. ‘Do you mean vote? El-elections?’
‘नहीं, मुझे लगता है कि वह भूटान के राजा की बात कर रहे हैं,’ फेलुदा ने धीरे से कहा। देवतोष बाबू ने तुरंत फेलुदा की ओर देखा, जिससे लालमोहन बाबू एक बेहद असहज स्थिति से बच गए।
‘क्या भोट वापस आ रहे हैं?’ वह जानना चाहता था।
'नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता,' फेलुदा ने बिल्कुल सामान्य आवाज में जवाब दिया, 'लेकिन अब भूटान की यात्रा करना काफी आसान है।'
‘सच में?’ देवतोष बाबू की आवाज़ में ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने यह खबर पहली बार सुनी हो। ‘अच्छा,’ उन्होंने कहा, ‘यह अच्छी बात है। वे एक समय बहुत मददगार साबित हुए थे। उन्हीं की वजह से नवाब के सैनिक कुछ नहीं कर पाए। उन्हें लड़ना आता है। लेकिन यह तो सबको नहीं आता, है ना?’ उन्होंने गहरी साँस ली और फिर कहा, ‘हर कोई हथियार नहीं चला सकता। नहीं, हर कोई आदित्यनारायण जैसा नहीं हो सकता।’
वह अचानक मुड़ा और दरवाजे की ओर चलने लगा। फिर वह रुका, पीछे मुड़ा, फर्श पर पड़ी तेंदुए की खाल को देखा और कुछ बेहद अजीबोगरीब बात कही।
‘क्या आप युधिष्ठिर के रथ के पहियों के बारे में जानते हैं? वे कभी ज़मीन को नहीं छूते थे। फिर भी... अंत में, उन्हें छूना ही पड़ा।’ यह कहकर वह जल्दी से कमरे से बाहर निकल गया।
उसके जाने के बाद हम चुपचाप बैठे रहे। कुछ मिनट बाद, मैंने फेलुदा को धीरे से कहते सुना: 'उसने लकड़ी की चप्पलें पहनी हुई थीं। शोर को कम करने के लिए उनके तलवों पर रबर की परत चढ़ी हुई थी।'
हमारी पहली रात काफी रोमांचक रही। मैं घटी घटनाओं का सही क्रम में वर्णन करने की कोशिश करूंगा। सीढ़ियों के ऊपर लगी एक बड़ी घड़ी ने मुझे समय का ध्यान रखने में मदद की।
बिस्तर पर जाने के दस मिनट के भीतर ही हमें सबसे पहले यह एहसास हुआ कि मोटे गद्दे और सुंदर चादरें तो हमें दी गई थीं, लेकिन मच्छरदानी की जाँच करने की किसी ने परवाह नहीं की थी। तीनों में छेद थे, जिसका सीधा मतलब था कि इलाके

के सारे मच्छरों को खुला निमंत्रण। शुक्र है कि फेलुदा हमेशा अपने साथ ओडोमोस की एक ट्यूब रखता था। हममें से हर किसी को बिस्तर पर वापस जाने से पहले उसका इस्तेमाल करना पड़ा। जब मैंने, पूरी तरह से तैयार होकर, उसका इस्तेमाल किया, तो मुझे बाहर घड़ी में ग्यारह बजने की आवाज़ सुनाई दी। बादल छंट गए थे और चाँद दिखाई देने लगा था। मुझे ज़मीन पर चाँदनी का एक धब्बा दिखाई दिया और मैं उसे देख ही रहा था कि अचानक बरामदे में किसी ने कुछ कहा।
मैं तुम्हें आखिरी बार चेतावनी दे रहा हूँ। इससे तुम्हें कोई फायदा नहीं होने वाला!
यह महितोष सिन्हा-रॉय थे। उनकी आवाज़ में गुस्सा झलक रहा था। दूसरे व्यक्ति की ओर से कोई जवाब नहीं आया। मेरे दाहिनी ओर, लालमोहन बाबू खर्राटे लेने लगे थे। मैं बाईं ओर मुड़ा और फुसफुसाकर बोला, 'फेलुदा, क्या तुमने वह आवाज़ सुनी?'
‘हां,’ फेलुदा ने फुसफुसाते हुए जवाब दिया, ‘सो जाओ।’
मैंने कुछ और नहीं कहा। मुझे लगभग तुरंत ही नींद आ गई, लेकिन थोड़ी देर बाद फिर जाग गया। चाँद अभी भी वहीं था, लेकिन दूर से गड़गड़ाहट की आवाज़ फिर से आने लगी थी। मैं चुपचाप लेटा उसे सुनता रहा, लेकिन जैसे ही आखिरी गड़गड़ाहट शांत हुई, उसकी जगह एक और आवाज़ सुनाई दी: खुत-खुत, खुत-खुत, खुत-खुत! यह एक नियमित गति से नहीं चल रही थी, बल्कि अचानक रुक गई। फिर से शुरू हो गई। अब यह स्पष्ट हो गया कि यह हमारे कमरे के अंदर से आ रही थी। बाहर की गड़गड़ाहट में यह कभी-कभी दब जाती थी, लेकिन यह ज़्यादा देर तक शांत नहीं रहती थी। मैं फेलुदा की गहरी और नियमित साँसें सुन सकता था। वह स्पष्ट रूप से गहरी नींद में सो रहा था।
लेकिन लालमोहन बाबू ने खर्राटे लेना क्यों बंद कर दिया था? मैंने उनके बिस्तर की ओर देखा, लेकिन जाली के कारण कुछ भी दिखाई नहीं दिया। तभी मुझे एक और आवाज़ सुनाई दी, एक हल्की सी, खड़खड़ाहट जैसी आवाज़ जिसे मैंने तुरंत पहचान लिया। कुछ साल पहले, शिमला की यात्रा के दौरान, लालमोहन बाबू बर्फ पर फिसलकर गिर गए थे, तभी एक गोली उनके पैरों के पास आकर लगी थी। तब भी उन्होंने ऐसी ही आवाज़ निकाली थी। वह बस उनके दांतों के अनियंत्रित रूप से किटकिटाने की आवाज़ थी।
Khut-khut, khut-khut, khut!

फिर वही आवाज़ आई। मैंने ज़मीन की तरफ देखने के लिए अपना सिर उठाया। मच्छरदानी में हल्की सी सरसराहट हुई, जिससे लालमोहन बाबू को पता चल गया कि मैं जाग गया हूँ।
‘त-त-त-तपेश!’ वह एक अजीब, कर्कश आवाज में चिल्लाया। ‘वह तं-तं-तेंदुआ!’
मैं तेंदुए की खाल को ध्यान से देखने के लिए उठ बैठा। जो मैंने देखा, उससे मेरा खून जम गया। खिड़की से चांदनी अभी भी अंदर आ रही थी और सीधे तेंदुए के सिर पर पड़ रही थी। वह उठ रहा था और बीच-बीच में करवटें बदल रहा था, पहले बाईं ओर, फिर दाईं ओर, और एक अजीब सी आवाज़ निकाल रहा था। 'फेलुदा!' मैंने खुद को रोक नहीं पाया और पुकारा। मुझे पता था कि फेलुदा चाहे कितनी भी गहरी नींद में सोया हो, वह तुरंत जाग जाएगा और पूरी तरह सतर्क हो जाएगा।
‘क्या बात है? तुम क्यों चिल्ला रहे हो?’ उसने पूछा। मैंने उसे बताने की कोशिश की, लेकिन पाया कि लालमोहन बाबू की तरह मेरा गला भी पूरी तरह सूख गया था। मैं बस इतना ही कह पाया, ‘देखो... ज़मीन!’
फेलुदा अपने बिस्तर से उठा और तेंदुए के हिलते हुए सिर को घूरने लगा। फिर वह शांत भाव से आगे बढ़ा और उसकी ठुड्डी के नीचे उंगली रखकर उसे ऊपर उठाया। एक बड़ा भृंग बाहर निकला। उसने बड़े शांत भाव से उसे उठाया और खिड़की से बाहर फेंक दिया। 'क्या तुम्हें भृंग की राक्षसी ताकत के बारे में नहीं पता? अगर तुम इसके ऊपर पीतल का भारी कटोरा रख दो, तो यह उसे पूरे घर में घसीटता फिरेगा!' फेलुदा ने कहा।
मुझे राहत के मारे शरीर ढीला पड़ गया। लालमोहन बाबू की आह से मुझे समझ आ गया कि उन्हें भी ऐसा ही महसूस हो रहा था। लेकिन फेलुदा अभी भी खिड़की पर क्यों खड़ा था? रात के सन्नाटे में देखने लायक क्या था?
‘टॉपशे, आओ और देखो,’ उन्होंने आमंत्रित किया। लालमोहन बाबू और मैं उनके साथ चले गए। हमारा कमरा, जो घर के पिछले हिस्से में था, कालबुनी जंगल की ओर खुलता था। पिछले कुछ मिनटों में, घने बादलों ने एक बार फिर चाँद को ढक लिया था। बिजली चमकी और गरज की आवाज़ नज़दीक आती सुनाई दी। लेकिन जिस बात ने मुझे चौंकाया, वह यह थी कि बिजली चमकने के अलावा, दूर कहीं एक और रोशनी चमकी। वह जंगल के पेड़ों के बीच घूमती रही। कोई टॉर्च लेकर वहाँ था। इसमें कोई शक नहीं था।
‘बेहद संदिग्ध!’ लालमोहन बाबू ने बुदबुदाया।

फिर टॉर्च बंद कर दी गई। उसी क्षण, एक तेज़ रोशनी चमकी, जिसके बाद कान फाड़ देने वाला शोर हुआ। देखते ही देखते मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। हमें जल्दी से खिड़कियों के शटर गिराने पड़े।
फेलुदा ने कहा, 'एक बज चुका है। चलो थोड़ी देर सो लेते हैं। हमें सुबह जलपेश्वर मंदिर जाना है, याद है ना?'
हम तीनों मच्छरदानी के पीछे बिस्तर पर लेट गए। मैंने खिड़कियों को देखा।
हालाँकि वे बंद थीं, फिर भी बिजली चमकने पर उनके रंग-बिरंगे शीशे तेज़ी से चमक उठते थे, जिससे कमरा इंद्रधनुष के सभी रंगों से भर जाता था।
मुझे पता ही नहीं चला कि यह रंगीन नजारा कब खत्म हुआ और मैं कब सो गया।

पाँच

अगली सुबह मैं सात बजे उठा। फेलुदा पहले ही उठ चुके थे और योग, स्नान और शेविंग कर चुके थे। श्री सेनगुप्ता को हमें आठ बजे लेने आना था और मंदिर ले जाना था। तीन वेटरों में से एक, कनाई नाम का व्यक्ति, साढ़े सात बजे हमारे लिए चाय लेकर आया। फेलुदा ने अपना कप उठाया और फिर अपनी गोद में खुली नोटबुक को घूरने लगे। मैंने उन्हें धीरे से कहते सुना, 'वाह, आदित्यनारायण! क्या गजब का दिमाग था!'
लालमोहन बाबू ने चाय पीते हुए जोर से आवाज की और कहा, 'वाह, चाय तो बहुत अच्छी है। अरे, फेलू बाबू, क्या आपने कोई तरक्की की है?'
फेलुदा बुदबुदाता रहा, “साढ़े दस”। यानी पाँच। “फिर डेढ़ सौ”। सौ का मतलब सौ होता है, तो उसका आधा पचास होता है। पाँच और पचास, यानी पचपन। ठीक है, शायद उसका मतलब पचपन कदम है। लेकिन इसका किससे संबंध है? पेड़ से? लोगों का पेड़ क्या होता है? मुझे सोचना पड़ेगा…”
मेरा दिल अचानक खुश हो गया। उसने पहेली सुलझाना शुरू कर दिया था। मुझे पूरा यकीन था कि हमारे जाने से पहले वह पूरी पहेली का मतलब समझ जाएगा—हाँ, बाघ की खाल की मदद से।
बाहर लगी घड़ी में आठ बज गए थे। मैंने सोचा, श्री सेनगुप्ता जल्द ही यहाँ आ जाएँगे। कुछ मिनट बीत गए, लेकिन उनका कोई अता-पता नहीं था। फेलुदा को शायद इस देरी का एहसास ही नहीं हुआ। वह अब भी पहेली सुलझाने में मग्न थे।
‘उगता सूरज?’ मैंने उसे कहते सुना। ‘क्या इसका मतलब पूरब हो सकता है? हाँ।
किसी चीज़ से 55 कदम पूरब की ओर। इसका क्या मतलब हो सकता है? पेड़... पेड़...’ किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। वह शशांका सान्याल थे, श्री सेनगुप्ता नहीं।
‘अरे... क्या आपने अपनी चाय खत्म नहीं की? ओह, मुझे माफ करना,’ उन्होंने कहा।
फेलुदा ने अपनी नोटबुक एक तरफ रख दी और खड़े हो गए। श्री सान्याल स्पष्ट रूप से परेशान दिख रहे थे।

‘क्या बात है? क्या मामला है?’ फेलुदा ने जल्दी से पूछा। श्री सान्याल ने गला साफ किया, फिर कुछ अनमने ढंग से बोले, ‘श्री मित्तर, एक बुरी खबर है।
तोरित सेनगुप्ता... महितोष के सचिव... का कल रात निधन हो गया।’
‘क्या! कैसे?’ फेलुदा ने पूछा। लालमोहन बाबू और मैं बस अवाक होकर देखते रह गए।
ऐसा लगता है कि वह कल रात जंगल में गया था। किसी को नहीं पता कि क्यों।
उसका शव कुछ ही देर पहले एक लकड़हारे को मिला।
लेकिन उनकी मौत कैसे हुई? क्या हुआ था?
ऐसा प्रतीत होता है कि उसके शरीर का कुछ हिस्सा किसी जानवर ने खा लिया है।
संभवतः, एक बाघ ने।
आदमखोर! मेरे हाथ अचानक ठंडे और पसीने से तर हो गए। लालमोहन बाबू कमरे के बीचोंबीच खड़े थे। अब वे तीन कदम पीछे हटे और मेज का कोना पकड़कर उस पर झुक गए। फेलुदा वहीं स्थिर खड़ा रहा, बेहद गंभीर दिख रहा था।
श्री सान्याल ने फिर कहा, 'मुझे खेद है। आप तो कल ही छुट्टी मनाने आए थे और अब यह सब हो गया। मुझे डर है कि हम काफी व्यस्त रहने वाले हैं... मेरा मतलब है, हमें खुद जाकर शव देखना ही होगा।'
‘क्या हम आपके साथ चल सकते हैं?’
इस सवाल पर श्री सान्याल ने हमारी ओर तेजी से देखा और कहा, 'श्री मिटर, आप शायद खूनी मौतों के आदी हों, लेकिन बाकी मौतें...?'
‘वे जीप में ही रहेंगे। मैं उन्हें कुछ भी अप्रिय नहीं देखने दूंगा।’
श्री सान्याल मान गए। 'बहुत अच्छा। हमारे पास दो जीप हैं। आप तीनों एक में यात्रा कर सकते हैं।'
क्या हम बंदूक लेकर चलेंगे?
यह सवाल लालमोहन बाबू ने पूछा था। किसी और समय होता तो श्री सान्याल इस विचार पर हंस देते। लेकिन अब उन्होंने गंभीरता से कहा, 'हां। दिन के समय डरने की कोई बात नहीं है, लेकिन हम हथियारबंद रहेंगे।'
जीप में हममें से कोई नहीं बोला। मैं अभी तक सदमे से उबर नहीं पाया था। कल शाम तक तो वह ज़िंदा था। उसने हमसे बात की थी। और अब वह मर चुका था... एक आदमखोर जानवर ने उसे मार डाला था। आधी रात को वह जंगल में क्या कर रहा था? पेड़ों के बीच जो रोशनी हिलती हुई दिखी... क्या वह श्री सेनगुप्ता की टॉर्च की रोशनी थी?

हमारी जीप के आगे एक और जीप थी। उसमें महितोष बाबू, श्री सान्याल, वन विभाग के श्री दत्ता, शिकारी माधवलाल और वह लकड़हारा बैठा था जिसने शव देखा था और दौड़कर घर आया था। महितोष बाबू, जिन्होंने पिछली रात हमें इतनी रोमांचक कहानियाँ सुनाई थीं, पिछले कुछ घंटों में काफी बूढ़े लग रहे थे। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि यह उनके सचिव की दुखद मृत्यु के कारण था या इलाके में आदमखोर जानवर के खुलेआम घूमने के नतीजों के कारण।
हमें जंगल में ज़्यादा दूर नहीं जाना पड़ा। जंगल से गुज़रने वाली सड़क पर पाँच मिनट चलने के बाद ही हमारे आगे वाली जीप धीमी हुई और फिर रुक गई। सड़क के किनारे बड़े-बड़े पेड़ लगे हुए थे। मैंने सागौन, रेशम-कपास और नीम के पेड़ पहचान लिए। वहाँ एक विशाल कटहल का पेड़ और कई बाँस के झुरमुट थे। पिछली रात की बारिश के निशान हर जगह बिखरे हुए थे। ज़मीन का हर छोटा-सा गड्ढा पानी से भरा हुआ था।
जैसे ही हमारी जीप रुकी, फेलुदा ने कहा, 'देखो!' मैंने उसकी ओर इशारा करते हुए देखा और कुछ ही पलों में एक झाड़ी पर हल्के हरे रंग की एक वस्तु देखी। यह श्री सेनगुप्ता की पिछली रात पहनी हुई कमीज का फटा हुआ टुकड़ा था, मुझे इसे पहचानने में कोई परेशानी नहीं हुई।
हमारी जीप श्री सेनगुप्ता के शव से कम से कम पचास गज दूर खड़ी थी—शुक्र है, शव दिखाई नहीं दे रहा था। दूसरी जीप के सभी लोग बाहर निकल आए। लकड़हारा चलने लगा। फेलुदा भी बाहर निकला और बोला, 'तुम दोनों यहीं रुको। यह बहुत ही भयानक दृश्य होगा।'
बाकी लोग बांस के झुरमुट के पीछे गायब हो गए। हालांकि हम उनसे कुछ दूरी पर थे, फिर भी मैं उनकी बातें सुन पा रहा था, शायद इसलिए कि जंगल एकदम शांत था। सबसे पहले महितोष बाबू बोले। 'हे भगवान!' उन्होंने अपना माथा हथेली से पीटते हुए कहा।
श्री दत्ता ने पूछा, 'अब पगडंडियों के निशान ढूंढना बेकार है—बारिश ने उन्हें धो दिया होगा—लेकिन यह किसी बाघ के हमले जैसा दिखता है, है ना?' ‘जी हां, निःसंदेह,’ महितोष बाबू ने उत्तर दिया।
'कल रात दो बजे के बाद बारिश रुक गई। जिस तरह से खून धुल गया है, उससे लगता है कि बारिश शुरू होने से पहले ही उसकी हत्या कर दी गई थी।'

इसके बाद फेलुदा ने कहा, 'लेकिन क्या आदमखोर हमेशा अपने शिकार को उसी जगह से खाना शुरू करता है जहाँ वह उसे मारता है? क्या वह अक्सर अपने मरे हुए शिकार को एक जगह से दूसरी जगह नहीं ले जाता?'
‘जी हां, यह सच है,’ महितोष बाबू ने जवाब दिया, ‘लेकिन मुझे नहीं लगता कि हमें शव को ज़मीन पर घसीटने के कोई निशान मिलेंगे। इतनी बारिश में कोई भी निशान ज़्यादा देर तक नहीं टिकता। वैसे भी, एक बाघ किसी आदमी के शव को इस तरह ले जाने में सक्षम होता है कि वह ज़मीन को छूता ही नहीं। इसलिए मुझे नहीं लगता कि हम कभी यह पता लगा पाएंगे कि तोरित पर हमला ठीक कहाँ हुआ था।’ ‘अगर हमें उसका चश्मा मिल जाए, तो शायद…’ फेलुदा की आवाज धीमी पड़ गई। इसके बाद कुछ मिनटों तक सन्नाटा छाया रहा। पत्तों के बीच से मैंने श्री सान्याल को हिलते हुए देखा। शायद वह किसी कुत्ते के पदचिह्न ढूंढ रहे थे। 'माधवलाल!' महितोष बाबू ने पुकारा, लेकिन वह आगे कुछ कह नहीं पाए क्योंकि फेलुदा ने उन्हें बीच में ही रोक दिया।
उन्होंने पूछा, 'क्या बाघ सिर्फ एक नाखून से गहरा घाव कर सकता है?'
‘क्यों? आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?’
'शायद आपने ध्यान नहीं दिया होगा—उसके सीने पर घाव है। कोई पतली और बहुत नुकीली चीज उसके कपड़ों को भेदकर उसके शरीर में घुस गई है। अगर आप इधर आएँ, महोदय, तो मैं आपको समझा दूँगी कि मेरा क्या मतलब है।'
सभी लोग एक बार फिर शव के चारों ओर जमा हो गए। तभी मैंने महितोष बाबू को रोते हुए सुना, ‘हे भगवान! हे स्वर्ग में बैठे ईश्वर, यह तो हत्या है! इस तरह की चोट किसी जानवर के हाथों नहीं लग सकती। बाघ के आने से पहले ही किसी ने उसे मार डाला होगा। ओह, यह कितनी भयानक त्रासदी है!’
‘हत्या... या शायद हत्या का प्रयास,’ फेलुदा ने धीरे से कहा, ‘उसे चाकू मारा गया था, यह तो स्पष्ट है। लेकिन हो सकता है कि उसका हत्यारा उसे घायल छोड़कर भाग गया हो। जब बाघ वहाँ आया, तो घायल शिकार ने उसका काम आसान कर दिया होगा। काश, हमें हथियार मिल जाता!’
'शशांका, कृपया तुरंत पुलिस को सूचित करो,' महितोष बाबू ने कहा।
फिर सब लोग जीप में लौट गए, केवल माधवलाल अपनी बंदूक के साथ शव की रखवाली के लिए वहीं रह गया। जब फेलुदा हमारे पास आया, तो मैं उसे इतना गंभीर देखकर दंग रह गया। वापसी के रास्ते में उसने एक शब्द भी नहीं बोला; न ही हमारा बात करने का मन था। कुछ देर बाद हम हिरणों के झुंड के पास से गुजरे, लेकिन

उससे भी मुझे कोई खुशी नहीं मिली। हमने अतीत में कई बार खतरों का सामना किया था और अप्रत्याशित जटिलताओं से निपटना पड़ा था, लेकिन यह सब बिल्कुल अजीब लग रहा था। न केवल एक रहस्यमय मौत थी, एक संभावित हत्यारे को ढूंढकर गिरफ्तार करना था, बल्कि सबसे बड़ी बात यह थी कि एक आदमखोर भी था!
मैंने लालमोहन बाबू पर एक नजर डाली। मैंने उन्हें पहले कभी इतना पीला नहीं देखा था।

छह

हम अपने कमरे में वापस आ गए थे। शाम के 5 बज चुके थे। शशांका सान्याल ने पुलिस को सूचना दे दी थी और पुलिस ने जांच शुरू कर दी थी। इस समय हमारे पास करने के लिए कुछ भी नहीं था। हमने अभी-अभी चाय पी थी। मेरे मन में चल रही उथल-पुथल के बावजूद, मैं चाय के स्वाद को महसूस किए बिना नहीं रह सकी। हमें बताया गया था कि यह महितोष बाबू की अपनी जागीर की चाय थी। फेलुदा इधर-उधर घूम रहा था, माथे पर शिकन लिए हुए था और उंगलियां चटका रहा था। वह बीच-बीच में रुककर चारमीनार जलाता और दो-चार कश लगाकर उसे पीतल की राखदानी में बुझा देता था। मैं खिड़की से बाहर देखती रही। आज आसमान बिल्कुल साफ था। लालमोहन बाबू हमारे कमरे के फर्श पर बैठे तेंदुए का सिर उठाकर उसके दांत बार-बार देख रहे थे। मैंने उन्हें ऐसा कम से कम तीन बार करते देखा।
‘काश मुझे उन्हें बेहतर तरीके से जानने का मौका मिला होता!’ फेलुदा बुदबुदाया। यह वाकई दुर्भाग्यपूर्ण था। श्री सेनगुप्ता का देहांत उनके बारे में कुछ भी जानने से पहले ही हो गया था। फेलुदा को तब तक क्या पता चलेगा जब तक उसे यह पता न चल जाए कि वह किस तरह के इंसान थे, कौन उन्हें मारना चाहता था, और क्या उनके कोई दुश्मन थे?
बरामदे में लगी घड़ी में पाँच बजने के कुछ ही मिनट बाद, एक नौकर आकर हमें यह सूचना देने आया कि महितोष बाबू हमसे मिलना चाहते हैं। हम तुरंत उठे और ड्राइंग रूम में चले गए। हमारे मेज़बान और श्री सान्याल के अलावा, कमरे में एक तीसरा व्यक्ति भी था, जिसने पुलिस की वर्दी पहन रखी थी।
'ये इंस्पेक्टर बिस्वास हैं,' महितोष बाबू ने कहा। 'जब मैंने उन्हें बताया कि हत्या का संदेह सबसे पहले आपको हुआ था, तो उन्होंने कहा कि वे आपसे मिलना चाहेंगे।'
‘नमस्कार,’ फेलुदा ने कहा और इंस्पेक्टर के सामने एक कुर्सी पर बैठ गया। हमने अपने लिए एक सोफा ढूंढ लिया।
श्री बिस्वास का रंग गहरा था और वे लगभग गंजे थे, हालांकि उनकी उम्र चालीस से अधिक नहीं रही होगी। उनकी पतली मूंछें थीं, जिनमें से एक तरफ की मूंछ

दूसरी तरफ से लंबी थी। शायद मूंछें काटते समय उन्होंने ध्यान नहीं दिया था। उन्होंने फेलुदा पर तीखी नजर डाली और कहा, 'मुझे लगता है कि आप एक शौकिया जासूस हैं?'
फेलुदा मुस्कुराया और सिर हिलाया।
‘क्या आप जानते हैं कि आप और मैं किस तरह के लोग हैं? आमतौर पर जब आप किसी जगह जाते हैं तो वहां हत्या हो चुकी होती है; हम किसी जगह पर हत्या होने के बाद जाते हैं।’ श्री बिस्वास अपनी ही बात पर जोर से हँस पड़े।
फेलुदा ने सीधे मुद्दे पर बात की। 'क्या हत्या का हथियार मिल गया है?' श्री बिस्वास हँसना बंद करके सिर हिलाने लगे। ‘नहीं, लेकिन हम अभी भी उसकी तलाश कर रहे हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि जंगल में कुछ ढूंढना कितना मुश्किल होता है, खासकर जब उसमें कोई आदमखोर जानवर छिपा हो। पुलिस वाले भी तो आदमी ही होते हैं, है ना? मेरा मतलब है, कौन आदमी खाया जाना चाहेगा? हा हा हा हा!’
इंस्पेक्टर को इतना हंसते देख फेलुदा ने जबरदस्ती मुस्कुराने की कोशिश की, लेकिन तुरंत ही गंभीर हो गया।
उन्होंने पूछा, ‘क्या यह सच है कि उसकी मौत चाकू लगने से हुई?’ ‘शरीर के बचे हुए हिस्से से यह बताना नामुमकिन है। बाघ ने लगभग आधा शरीर खा लिया। स्वाभाविक रूप से पोस्टमार्टम होगा, लेकिन मुझे नहीं लगता कि उससे कोई फायदा होगा। इसमें कोई शक नहीं कि उसे चाकू मारा गया था। हमें जिसने भी यह किया है उसे पकड़ना होगा। अब, उसकी मौत चाकू लगने से हुई या बाघ के हमले से, यह हमें नहीं पता। वैसे भी, बाघ ने क्या किया, यह हमारा काम नहीं है। यह श्री सिन्हा-रॉय को पता लगाना है।’
महितोष बाबू कालीन को घूर रहे थे। उन्होंने गंभीर स्वर में कहा, “गांव वालों में पहले से ही काफी दहशत फैली हुई है। मेरे कुछ लकड़हारे भी पास के गांवों से आते हैं। उन्हें अभी कुछ महीने और काम करना है, उसके बाद मानसून शुरू हो जाएगा, इसलिए उनका काम बंद करना पड़ेगा। लेकिन वे अभी अपनी जान जोखिम में नहीं डालना चाहते। मैं... मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं। कुछ भी करने से पहले, मुझे यह पता लगाना होगा कि तोरित को किसने मारा, उसकी मौत क्यों हुई? अगर मैं बाघ का शिकार नहीं कर सकता, तो वन विभाग को किसी को ढूंढना होगा। आखिर, इस इलाके में मैं अकेला शिकारी तो नहीं हूं।”

श्री बिस्वास ने गला साफ करते हुए कहा, ‘मेरे मन में बस एक ही सवाल है। आपका सचिव आधी रात को जंगल में क्यों गया? मुझे लगता है हत्या का मकसद काफी सीधा-सादा है। हमें उसके पास से कोई बटुआ, पैसा या कोई और कीमती सामान नहीं मिला। इसलिए जिसने भी उसकी हत्या की, मुझे लगता है कि वह बस यही चाहता था। सीधी-सीधी लूट, यही मकसद है।’
‘अगर ऐसा होता,’ फेलुदा ने धीरे से सिगरेट जलाते हुए कहा, ‘तो उसे किसी छड़ या भारी लाठी से भी बेहोश किया जा सकता था। उसे मारने की ज़रूरत नहीं थी।’ श्री बिस्वास फिर हँसे, इस बार थोड़ा रूखेपन से। ‘नहीं,’ उन्होंने कहा, ‘लेकिन अगर आप लूटपाट की संभावना को खारिज कर दें, तो क्या आप कोई उचित मकसद सोच सकते हैं, श्री मिटर? तोरित सेनगुप्ता श्री सिन्हा-रॉय के यहाँ काम करते थे, उनकी दुनिया किताबों और कागजों तक ही सीमित थी, वे पाँच साल पहले यहाँ आए थे, ज़्यादा बाहर नहीं जाते थे और इस घर में रहने वालों के अलावा किसी को नहीं जानते थे। भला ऐसे आदमी को कौन मारना चाहेगा, जब तक कि वह—या वे—संयोग से उस पर आ न पड़े हों और उसके पास जो भी सामान हो, उसे लूटने का फैसला न कर लिया हो?’
फेलुदा चुपचाप भौंहें चढ़ाए बैठा रहा।
‘हाँ, मुझे पता है कि एक शौकिया जासूस को साधारण डकैती का विचार पसंद नहीं आएगा,’ श्री बिस्वास ने उपहास उड़ाते हुए कहा। ‘आपको पेचीदगियाँ पसंद हैं, है ना? आपको रहस्य पसंद हैं? तो फिर, श्री मित्तर, आपके लिए एक बेहतरीन रहस्य है: श्री सेनगुप्ता जंगल में गए ही क्यों थे? वे वहाँ क्या कर रहे थे? इसे सुलझाने की कोशिश कीजिए!’
किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। श्री सान्याल अपने मित्र के बगल में एकदम खामोशी से बैठे थे। महितोष बाबू अब भी पीले और थके हुए लग रहे थे। वे बार-बार अपना सिर हिलाते हुए धीमी आवाज़ में बुदबुदा रहे थे, 'मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा... कुछ भी समझ में नहीं आ रहा...!'
कहने के लिए और कुछ बचा ही नहीं था। हम एक मिनट बाद उठ खड़े हुए। मुझे आश्चर्य हुआ कि श्री बिस्वास ने हमारे जाने से पहले बड़ी विनम्रता से बात की। उन्होंने कहा, 'श्री मिटर, आप अपनी जांच जारी रख सकते हैं, हमें इसमें कोई आपत्ति नहीं है। आखिर, घाव को सबसे पहले आपने ही देखा था।'
हम ड्राइंग रूम से बाहर निकले, लेकिन अपने कमरे में वापस नहीं लौटे। फेलुदा सामने के दरवाजे से बाहर निकला, बरामदे से होते हुए दाहिनी ओर

मुड़कर घर के पीछे चला गया, पुराने अस्तबलों के पास से गुज़रते हुए, संभवतः उस जगह से जहाँ कभी हाथी रखे जाते थे।
घर के पिछले हिस्से में पहुँचकर मैंने ऊपर देखा तो पहली मंज़िल पर खिड़कियों की एक कतार नज़र आई। कुछ बंद थीं, कुछ खुली। एक खुली खिड़की से मुझे लालमोहन बाबू का तौलिया उनके पलंग के खंभे पर टंगा हुआ दिखाई दिया। अगर वह वहाँ न होता तो हमारे कमरे को पहचानना नामुमकिन हो जाता। भूतल पर, हमारी खिड़की के ठीक नीचे एक दरवाज़ा था। शायद यही पिछला दरवाज़ा था। श्री सेनगुप्ता शायद कल रात जंगल जाने के लिए इसी से निकले होंगे।
लगभग पचास गज की दूरी पर, फूस की छत वाली एक छोटी सी झोपड़ी थी। कुछ लोग उसके सामने huddled थे। मैंने उनमें से एक को पहचान लिया। वह महितोष बाबू का चौकीदार था। शायद झोपड़ी उसी की थी। फेलुदा उस दिशा में आगे बढ़ा, उसके पीछे-पीछे लालमोहन बाबू और मैं भी चल पड़े। पृष्ठभूमि में कालबुनी का जंगल फैला हुआ था, जिसके पीछे नीले-भूरे रंग के पहाड़ों की एक श्रृंखला थी। जैसे ही हम करीब पहुंचे, चौकीदार ने हमें सलाम किया।
‘तुम्हारा नाम क्या है?’ फेलुदा ने उससे पूछा।
‘चंदन मिशीर, हुजूर।’ वह एक बूढ़ा आदमी था, जिसके बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे और आँखों के आसपास झुर्रियाँ थीं। उसके बोलने के तरीके से साफ था कि वह तंबाकू चबाता था। फेलुदा उससे बातचीत करने लगा। उसने जो बताया, उससे ऐसा लगा कि स्थानीय लोग श्री सेनगुप्ता की मृत्यु से कहीं ज्यादा आदमखोर हाथी को लेकर चिंतित थे। चंदन—जिसने सिन्हा-रॉय परिवार के लिए पचास साल काम किया था—ने जंगल में कभी-कभार निकलने वाले पागल हाथियों को देखा या उनके बारे में सुना था, लेकिन कम से कम तीस सालों से कोई आदमखोर हाथी नहीं देखा था।
चंदन का मानना था कि बाघ किसी शिकारी के हमले में घायल हो गया था, जिसकी वजह से अब जंगल में शिकार ढूंढने में उसे दिक्कत हो रही थी। यह बात सच हो सकती है। या शायद बाघ बूढ़ा हो गया था। कभी-कभी दांत घिस जाने और कमजोर हो जाने पर बाघ आदमखोर बन जाते हैं। मैंने तो यह भी पढ़ा था कि साही को खाने की कोशिश करने से बाघ इतना घायल हो सकता है कि वह इंसानों को मारने पर मजबूर हो जाए, जो जंगल में दूसरे जानवरों का शिकार करने से कहीं ज्यादा आसान होता है।

‘क्या स्थानीय लोग चाहते हैं कि माहितोष बाबू इस बाघ को मार डाले?’ फेलुदा ने पूछा।
चंदन ने अपना सिर खुजाया। ‘जी हाँ, बिल्कुल। लेकिन हमारे बाबू ने इन इलाकों में कभी शिकार नहीं किया है। वो असम और उड़ीसा के जंगलों में तो गए हैं, लेकिन यहाँ नहीं,’ उन्होंने कहा।
यह हम सभी के लिए एक बड़ा आश्चर्य था।
‘क्यों? उसने यहाँ कभी शिकार क्यों नहीं किया?’
‘बाबू के दादा और पिता दोनों को बाघों ने मार डाला था, आप जानते हैं। इसलिए माहितोष बाबू यहां से चले गए।’
हमें बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि उनके पिता की भी बाघ के हमले में मौत हो गई थी। चंदन ने हमें सारी घटना बताई। बताया जाता है कि महितोष बाबू के पिता ने मचान से बाघ पर गोली चलाई थी। बाघ गिर पड़ा और इतनी शांति से पड़ा रहा कि सबको लगा कि वह मर गया है। दस मिनट बाद, जब वह मचान से नीचे उतरे और बाघ के पास गए, तो बाघ उछल पड़ा और उन पर बेरहमी से हमला कर दिया। हालांकि उन्हें अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उनके घावों में संक्रमण हो गया और कुछ दिनों में उनकी मृत्यु हो गई।
चंदन की कहानी खत्म होने पर फेलुदा भौंहें चढ़ाकर खड़ा रहा। फिर उसने झोपड़ी की ओर इशारा करते हुए कहा, 'क्या तुम यहीं रहते हो?'
‘Ji, huzoor.’
आप कब सोते हैं?
चंदन इस सवाल को सुनकर बेहद चौंक गया। फेलुदा ने घुमा-फिराकर बात करना बंद कर दिया।
‘कल रात जिस आदमी की हत्या हुई थी—’
‘टोरिट बाबू?’
'हां। वह रात को काफी देर से घर से निकला और जंगल में चला गया। क्या आपने उसे जाते हुए देखा?'
नहीं, कल रात नहीं। लेकिन मैंने उसे परसों और उससे कुछ दिन पहले वहाँ जाते देखा था। वह वहाँ एक से अधिक बार गया था, अक्सर शाम को। कल रात...
'हाँ?'
मैंने तोरित बाबू को नहीं, बल्कि किसी और को देखा।

फेलुदा के चेहरे के भाव तुरंत बदल गए। उसने घबराकर पूछा, 'तुमने किसे देखा?'
‘मुझे नहीं पता, हुजूर। तोरित बाबू जो टॉर्च इस्तेमाल करते थे, वह बड़ी थी — तीन सेल वाली पुरानी टॉर्च। इस आदमी के पास छोटी टॉर्च थी, लेकिन उसकी रोशनी भी उतनी ही तेज थी।’
‘क्या तुमने बस इतना ही देखा? सिर्फ टॉर्च की रोशनी? और कुछ नहीं?’
नहीं, हुजूर। मैंने नहीं देखा कि वह कौन था।
फेलुदा कुछ और पूछने ही वाला था कि उसे रुकना पड़ा। घर का एक नौकर हमारी तरफ दौड़ता हुआ आ रहा था।
‘कृपया घर वापस आ जाइए, महोदय!’ उसने पुकारा। ‘बाबू आपसे तुरंत मिलना चाहते हैं।’
हम जल्दी से घर के सामने वापस चले गए। महितोष बाबू बरामदे के पास हमारा इंतजार कर रहे थे।
फेलुदा को देखते ही उसने कहा, 'तुम सही थे, तोरित को जंगल में किसी राहगीर गुंडे ने नहीं मारा था।'
'आप इतने निश्चित रूप से कैसे कह सकते हैं?'
‘हत्या का हथियार हमारे घर से लिया गया था। याद है वो तलवार जो मैंने तुम्हें कल दिखाई थी? वो मेरे दादाजी के कमरे से गायब है!’

सात

कनाई नाम के नौकर ने सबसे पहले कमरे की सफाई करते समय देखा कि तलवार गायब है। उसने तुरंत अपने मालिक को सूचना दी। कमरा खुला रहता था, क्योंकि उसमें कई किताबें और कागज़ थे जिन्हें महितोष बाबू को अक्सर देखना पड़ता था। सभी नौकर बूढ़े और भरोसेमंद थे। इतने सालों से घर से कुछ भी चोरी नहीं हुआ था कि लोगों ने चोरी की चिंता करना ही छोड़ दिया था। इसका मतलब यह था कि घर में कोई भी तलवार ले जा सकता था।
फेलुदा ने कांच के बक्से की सावधानीपूर्वक जांच की, लेकिन उसे कोई सुराग नहीं मिला। केवल तलवार गायब थी। बाकी सब कुछ अपनी जगह पर था। जांच पूरी करने के बाद फेलुदा ने कहा, 'मैं श्री सेनगुप्ता का शयनकक्ष और वह अध्ययन कक्ष देखना चाहता हूँ जहाँ वे काम करते थे। लेकिन इससे पहले मुझे यह जानना होगा कि क्या आपको किसी पर शक है।'
महितोष बाबू ने सिर हिलाया। 'नहीं, मैं समझ ही नहीं पा रहा कि कोई उसे क्यों मारना चाहेगा। वह इस घर के बाहर शायद ही कभी किसी से मिलता था। वह बस लंबी सैर पर जाता था। अगर उस तलवार से उसकी हत्या की गई है, तो यह इसी घर के किसी सदस्य ने किया होगा। नहीं, श्री मित्तर, मैं आपकी बिल्कुल भी मदद नहीं कर सकता।'
हम श्री सेनगुप्ता के शयनकक्ष की ओर बढ़े। वह हमारे शयनकक्ष जितना ही बड़ा था। उनके निजी सामान में उनके कपड़े, एक नीला सूटकेस, एक शोल्डर बैग और एक शेविंग किट शामिल थे। मेज पर कुछ पत्रिकाएँ और किताबें, एक राइटिंग पैड और दो पेंसिलें रखी थीं। एक छोटी सी बेडसाइड टेबल पर एक फ्लास्क, एक गिलास, एक ट्रांजिस्टर रेडियो और सिगरेट का एक पैकेट रखा था। सूटकेस खुला हुआ था। फेलुदा ने उसे खोला तो पाया कि वह बहुत ही करीने से पैक किया हुआ था। सूटकेस बंद करते हुए उन्होंने कहा, 'ज़ाहिर है, वह कलकत्ता जाने के लिए पूरी तरह तैयार थे।'
पांच मिनट बाद, हम बेडरूम से बाहर निकले और उनके स्टडी रूम में चले गए।

‘उसके कर्तव्यों में वास्तव में क्या शामिल था?’ फेलुदा ने महितोष बाबू से पूछा।
“खैर, वो मेरे सारे पत्र-व्यवहार संभालते थे। फिर वो मेरी पांडुलिपियों की प्रतियां बनाते थे, क्योंकि मेरी लिखावट सचमुच बहुत खराब है। वो कलकत्ता जाकर मेरे प्रकाशकों से मेरी ओर से बात करते थे और प्रूफ कॉपीज़ को ठीक करते थे। हाल ही में, वो मेरे पूर्वजों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने में मेरी मदद कर रहे थे ताकि मैं अपने परिवार का इतिहास लिख सकूं। इसका मतलब था पुराने पत्रों और दस्तावेजों के ढेर को खंगालना और प्रासंगिक विवरणों को नोट करना।”
‘क्या उसने सारी जानकारी लिखने के लिए इन्हीं नोटबुक का इस्तेमाल किया था?’ फेलुदा ने मेज पर करीने से रखी मोटी, जिल्दबंद नोटबुकों की ओर इशारा करते हुए पूछा। महितोष बाबू ने सिर हिलाया।
‘क्या ये आपकी नई किताब के प्रूफ हैं जिनकी वो जाँच कर रहे थे?’ मेज पर नोटबुक के बगल में छपे पन्नों के ढेर रखे थे। फेलुदा ने कुछ पन्ने उठाए और उन्हें पलटने लगे।
‘बताइए, क्या श्री सेनगुप्ता एक बहुत ही भरोसेमंद प्रूफरीडर थे?’ महितोष बाबू इस सवाल को सुनकर काफी हैरान रह गए। ‘हां, मुझे तो ऐसा ही लगता है। आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं?’
‘देखो, पहले पृष्ठ के पहले पैराग्राफ में एक गलती है, जिसे उसने अनदेखा कर दिया। “roar” शब्द में “a” गायब है; और... फिर से देखो, “deer” में दूसरा “e” छपा ही नहीं है। लेकिन उसने इसे नहीं देखा।’
‘कितना अजीब है!’ महितोष बाबू ने अनमने ढंग से फेलुदा द्वारा बताई गई गलतियों पर नजर डाली।
क्या वह हाल ही में किसी बात को लेकर चिंतित लग रहा था? क्या उसके मन में कुछ चल रहा था?
'अरे नहीं, मैंने तो कुछ भी नोटिस नहीं किया था!'
फेलुदा डेस्क पर झुक गया और उस राइटिंग पैड को ध्यान से देखने लगा जिस पर श्री सेनगुप्ता ने कुछ चित्र और रेखाचित्र बनाए थे।
क्या आपको पता था कि वह चित्र बना सकता है?
नहीं। नहीं, उसने मुझे कभी नहीं बताया था।

देखने के लिए और कुछ नहीं था। हम कमरे से बाहर निकले और बरामदे में पहुँच गए। एक गहरी, जानी-पहचानी आवाज़ हमारे कानों में पड़ी, जो कुछ नाटकीय अंदाज़ में बोल रही थी: 'विनाश... विनाश! तबाही और विपत्ति! सत्य की नींव ही हिल रही है... अंत निकट है!'
हमें सिर्फ उसकी आवाज सुनाई दी। देवतोष बाबू नजरों से ओझल रहे। उनके भाई ने आह भरते हुए कहा, 'हर गर्मी में उनकी हालत थोड़ी और बिगड़ जाती है। बारिश शुरू होते ही और मौसम ठंडा होते ही वो ठीक हो जाएंगे।'
हम अपने कमरे में पहुँच गए थे। फेलुदा ने कहा, 'मैं कल जंगल में वापस जाने की सोच रहा था। मुझे खोजबीन करनी है... अपने लिए कुछ चीज़ें ढूँढ़नी हैं। तुम्हारा क्या ख्याल है?'
महितोष बाबू ने एक पल सोचा। फिर उन्होंने कहा, 'खैर, मुझे नहीं लगता कि बाघ उस जगह पर वापस आएगा जहाँ तोरित का शव मिला था, कम से कम दिन के समय तो नहीं। बाघों के साथ मेरा अनुभव तो यही कहता है। इसलिए अगर आप उस इलाके के आस-पास ही रहें तो आप सुरक्षित रहेंगे। सच कहूँ तो, मुझे सबसे ज़्यादा हैरानी इस बात पर होती है कि कलबुनी में अभी भी एक बड़ा बाघ मौजूद है!' ‘क्या हम माधवलाल और एक जीप अपने साथ ले जा सकते हैं?’
'निश्चित रूप से।'
महितोष बाबू चले गए। लापता तलवार के बारे में पुलिस को सूचित करना था। बाहर काफी अंधेरा हो चुका था, हालांकि आसमान बिल्कुल साफ था। लालमोहन बाबू ने पंखा चालू किया और अपने बिस्तर पर बैठ गए।
‘क्या आपको लगा था कि छोटी छुट्टी में आपको एक मर्डर मिस्ट्री देखने को मिलेगी? यह तो बोनस है, है ना, फेलू बाबू? इसके लिए आपको मेरा शुक्रिया अदा करना चाहिए,’ वह हँसे।
‘ज़रूर, लालमोहन बाबू, मैं आपका बहुत आभारी हूँ,’ फेलुदा ने कुछ चिंतित स्वर में उत्तर दिया। वह तोरित सेनगुप्ता के कमरे से दो चीज़ें लेकर वापस आए थे। एक कूचबिहार के इतिहास की किताब थी और दूसरी राइटिंग पैड। मैंने उन्हें छोटी-छोटी तस्वीरों को घूरते हुए और गहरी भौंहें चढ़ाते हुए देखा। ‘ये महज़ मज़ेदार रेखाचित्र नहीं हैं,’ उसने लगभग खुद से कहा। ‘मुझे यकीन है कि इनका कोई अर्थ है। क्या हो सकता है? मुझे इन चित्रों में कुछ जाना- पहचाना सा क्यों लग रहा है?’

लालमोहन बाबू और मैं उनके पास जाकर खड़े हो गए। श्री सेनगुप्ता ने पैड पर एक पेड़ का चित्र बनाया था। एक मजबूत तने और कई पत्तियों वाली शाखाओं वाला पेड़। पेड़ के निचले हिस्से में कुछ पत्तियां बिखरी पड़ी थीं। उनका आधार चौड़ा था, लेकिन वे ऊपर की ओर पतली नोक पर जाकर खत्म होती थीं। मुझे उन्हें पहचानने में कोई दिक्कत नहीं हुई। वे पीपल की पत्तियां थीं।
लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। उसने पेड़ से दूर जाते हुए पैरों के निशान बनाए थे, जो देखने में दो हाथों जैसे लग रहे थे। मैंने गौर से देखा तो पता चला कि वे दो हाथ थे—या यूं कहें कि दो खुली हथेलियां। उसने उन पर छोटी- छोटी रेखाएं भी खींची थीं, ठीक वैसे ही जैसे इंसानी हाथों पर होती हैं। इनके पीछे एक सूरज था। पूरा गोल सूरज नहीं, बल्कि आधा उगा हुआ सूरज। दोनों हाथों के बीच एक छोटा सा क्रॉस बना था। मेरे मन में कुछ हलचल होने लगी। इस चित्र का मकसद कोई संदेश देना था। क्या यह कोई ऐसा संदेश था जो मैंने पहले कहीं सुना था? कहां? मैं काफी उलझन में पड़ गया।
फेलुदा ने एक मिनट से भी कम समय में सारी उलझन दूर कर दी। ‘जी हाँ, जी हाँ!’ उन्होंने धीरे से कहा। ‘बिल्कुल! शाबाश, श्रीमान सेनगुप्ता, शाबाश!’ तभी उन्होंने मुझे उम्मीद भरी निगाहों से उनकी ओर देखते हुए पाया। ‘देखा क्या है ये, टॉपशे? ये पहेली की तस्वीर है। तोरित सेनगुप्ता ने इसे सुलझा लिया था, शायद आदित्यनारायण के कागज़ात में मिलने के कुछ ही समय बाद। चलिए देखते हैं।’ उन्होंने अपनी नोटबुक खोली। “बूढ़े आदमी का खोखला गड्ढा”। अब, बस यही एक हिस्सा है जो स्पष्ट नहीं है। लेकिन “पकड़ना” का मतलब है पचपन कदम—ये पैरों के निशान हैं—जो “लोगों के पेड़” से आगे जाते हैं, जो कि बस एक पीपल का पेड़ है। आदित्यनारायण ने इसे लोगों का पेड़ इसलिए कहा क्योंकि या तो यह “पीपल” से मिलता-जुलता था, या फिर किसी कारण से लोगों के लिए महत्वपूर्ण था। उगता हुआ सूरज, जैसा कि मैंने खुद अनुमान लगाया था, पूर्व दिशा को दर्शाता है। तो, पीपल के पेड़ से पूर्व की ओर पचपन कदम…’
‘…दो हाथ?’ लालमोहन बाबू ने उम्मीद से पूछा।
‘हां और ना। तस्वीर को देखो। ये ताड़ के पेड़ हैं। तो पीपल के पास दो ताड़ के पेड़ जरूर होंगे। और अगर तुम इन पेड़ों के बीच की जमीन खोदोगे, तो शायद तुम्हें खजाना मिल जाएगा।’
‘मुझे यह बात समझ में नहीं आ रही,’ लालमोहन बाबू ने शिकायत की। ‘मुझे पूरा संदेश बताओ।’

लेकिन मैंने अभी-अभी किया! जंगल में कहीं एक पीपल का पेड़ है। इस पेड़ से पूर्व दिशा में पचपन कदम—यानी लगभग पचपन गज—की दूरी पर दो ताड़ के पेड़ हैं। और...
ठीक है, उन ताड़ के पेड़ों के बीच—“उनके नीचे खड़ा है”—तो आपका मतलब है कि ज़मीन के नीचे दबा हुआ खजाना है, चाहे वो कुछ भी हो। अब समझ में आ गया। लेकिन, फेलू बाबू, उस जंगल में दर्जनों पीपल के पेड़ और सैकड़ों ताड़ के पेड़ हो सकते हैं, और वो भी पचास गज की दूरी के भीतर। आप कितनों की तलाश करेंगे?
फेलुदा चुप रहा, अब भी उसके चेहरे पर शिकन थी। ‘हाँ,’ उसने अंत में कहा, ‘पहली पंक्ति—“बूढ़े आदमी का खोखला हिस्सा”—शायद एक संकेत है। मेरा मतलब है, यही असल में पेड़ की पहचान कराती है, और बताती है कि किस खास पीपल के पेड़ को खोजना है। लेकिन इसका क्या मतलब हो सकता है? यह तस्वीर भी हमें कुछ नहीं बताती, है ना? बूढ़ा आदमी—’ उसे रुकना पड़ा।
‘बूढ़ों की बात कौन कर रहा है?’ देवतोष बाबू ने पर्दा उठाते हुए कमरे में प्रवेश करते हुए पूछा। उन्होंने अभी भी वही बैंगनी रंग का गाउन पहना हुआ था। क्या उनके पास पहनने के लिए कुछ और नहीं था?
‘जी जी, अंदर आइए, बैठिए,’ फेलुदा ने आमंत्रित किया। देवतोष बाबू ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया। ‘क्या आप जानते हैं कि युधिष्ठिर का रथ ज़मीन में क्यों फंस गया था?’ उन्होंने पूछा। उन्होंने यह सवाल पहले भी पूछा था। आखिर युधिष्ठिर के रथ को लेकर उन्हें इतना जुनून क्यों था?
‘नहीं। क्यों?’ फेलुदा ने शांत भाव से उत्तर दिया।
क्योंकि उसने झूठ बोला था। उसे सज़ा मिलनी ही थी। एक झूठ... और वो आपको बर्बाद कर सकता है।
‘देवतोष बाबू,’ फेलुदा ने बातचीत के लहजे में कहा, ‘क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?’
वह पूरी तरह से अचंभित लग रहा था। 'मुझसे कुछ पूछना? क्यों? मुझसे तो कोई कभी कुछ नहीं पूछता।'
मैं जानना चाहूंगा, क्योंकि मुझे स्थानीय इतिहास के आपके ज्ञान के बारे में पता है। क्या आप बता सकते हैं कि क्या यहाँ किसी बूढ़े व्यक्ति से जुड़ा कोई पेड़ है? मेरा मतलब है, इस जंगल में? क्या कोई बूढ़ा व्यक्ति किसी पेड़ के नीचे बैठता था?

यह एक तुक्का था। लेकिन इसने देवतोष बाबू के उदास और गंभीर चेहरे पर अचानक मुस्कान ला दी। इससे उनका पूरा रूप ही बदल गया।
नहीं, नहीं। कोई बूढ़ा व्यक्ति वास्तव में पेड़ के नीचे नहीं बैठा था। वह पेड़ के अंदर ही बैठा था।
क्या! क्या वह फिर से बकवास कर रहा था? लेकिन उसकी आँखें और उसकी आवाज़ बिल्कुल सामान्य लग रही थीं।
उन्होंने जल्दी से समझाया, “पेड़ के तने में एक खोखला हिस्सा था, जो किसी बूढ़े आदमी के चेहरे जैसा दिखता था। आपको लगता है कि मैं पागल हूँ, है ना? लेकिन कसम से, वह खोखला हिस्सा बिल्कुल ऐसा दिखता था जैसे कोई बूढ़ा आदमी मुँह खोलकर देख रहा हो। हमें वह पेड़ बहुत प्यारा था। दादाजी उसे बिना दांत वाले फकीर का पेड़ कहते थे। वे हमें वहाँ पिकनिक के लिए ले जाया करते थे।”
वह किस प्रकार का पेड़ था?
‘एक पीपल। क्या तुमने कटी हुई देवी का मंदिर देखा है? वो राजू का काम था। यह पेड़ मंदिर के पीछे था। दरअसल, माही इसी पेड़ से निकली थी—’
‘दादा! तुरंत वापस आओ!’ दरवाजे के बाहर से एक आवाज आई। देवतोष बाबू रुक गए, क्योंकि उनका भाई दरवाजे पर आ गया था, जो बेहद गुस्से में दिख रहा था और उसकी आवाज भी वैसी ही थी। महितोष बाबू कमरे में दाखिल हुए। उनका चेहरा कठोर था, आँखें ठंडी थीं।
‘क्या तुमने अपनी दवाइयां लीं?’ उसने सख्ती से पूछा।
‘कौन सी गोलियां? मैं ठीक हूँ, मुझे कोई बीमारी नहीं है। मुझे गोलियां क्यों लेनी चाहिए?’
बिना कुछ कहे, महितोष बाबू अपने भाई को हमारे कमरे से बाहर खींच ले गए। दूर जाते हुए हम उन्हें उसे डांटते हुए सुन सकते थे, 'डॉक्टर को फैसला करने दीजिए कि आप कैसे हैं। कृपया आप डॉक्टर द्वारा बताई गई दवाइयां लेते रहिए। समझे?'
उनके पदचिह्न धीरे-धीरे लुप्त हो गए।
‘अफसोस!’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की। ‘आज तो वो बिल्कुल सामान्य लग रहे थे, है ना?’
ऐसा लग रहा था मानो फेलुदा ने उसकी बात सुनी ही न हो। वह फिर से किसी व्याकुलता में डूबा हुआ दिख रहा था।

‘□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□,’ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ ‘□□□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□, □□□□□□□□!’

आठ

उस रात फेलुदा देर से सोए। लालमोहन बाबू और मैं उनके साथ रात ग्यारह बजे तक जागते रहे और तोरित सेनगुप्ता की मौत के बारे में बातें करते रहे। हममें से कोई भी यह नहीं समझ पा रहा था कि उनके जैसा युवा और स्पष्ट रूप से बुद्धिमान व्यक्ति इतनी भयानक और रहस्यमय मौत क्यों मरा। यहां तक कि फेलुदा को भी कई सवालों के जवाब नहीं मिल पाए। उन्होंने कुछ सवाल इस प्रकार लिखे:
1. श्री सेनगुप्ता के अलावा उस रात जंगल में कौन गया था? क्या वह
हत्यारा था? क्या वह वही व्यक्ति था जिसने तलवार चुराई थी? या
कोई तीसरा व्यक्ति था? वह छोटी लेकिन शक्तिशाली टॉर्च किसके पास
हो सकती थी?
2. हम सबने उसी रात महितोष सिन्हा-रॉय को किसी से बहस करते सुना था।
वो किससे बात कर रहे थे?
3. देवतोष बाबू हमें पीपल के पेड़ और अपने भाई के बारे में कुछ बताने ही वाले थे कि तभी उनके भाई ने उन्हें बीच में ही रोक दिया। आखिर
वो क्या कहने वाले थे?
4. देवतोष बाबू ने युधिष्ठिर के रथ का ज़िक्र एक से ज़्यादा बार
क्यों किया? क्या यह महज़ एक पागल की बड़बड़ाहट थी, या इसका कोई
विशेष महत्व था?
5. शशांका सान्याल इतना कम क्यों बोलते थे? क्या वे स्वभाव से शांत
और अंतर्मुखी थे, या उनकी चुप्पी के पीछे कोई विशेष कारण था?
लालमोहन बाबू ने उसे यह सूची पढ़ते हुए सुना और फिर कहा, 'देखो, फेलू बाबू, एक आदमी है जो मुझे लगातार बेचैन कर रहा है। जी हाँ, मैं देवतोष बाबू की बात कर रहा हूँ। कुछ घंटे पहले तो वह बिल्कुल सामान्य रूप से बात कर रहा था, लेकिन बाकी समय वह सामान्य नहीं रहता, है ना? क्या होगा अगर वह जंगल में गलती से किसी से मिल जाए और उसे कालापहाड़ या राजू समझ ले? वह उस व्यक्ति पर हमला कर सकता है, है ना?'

फेलुदा ने लालमोहन बाबू को कुछ पल तक घूरने के बाद बोलना शुरू किया। उन्होंने कहा, “मेरे साथ काम करने से तुम्हारी कल्पना शक्ति और अवलोकन क्षमता दोनों में स्पष्ट रूप से सुधार हुआ है। हाँ, मैं मानता हूँ कि देवतोष बाबू शारीरिक रूप से तलवार से वार करने में सक्षम हैं। लेकिन ज़रा सोचो: जिसने भी वह तलवार ली, उसे पता था कि श्री सेनगुप्ता जंगल गए हैं। इसलिए उसने जानबूझकर हथियार उठाया, उनका पीछा किया—यह मत भूलो कि वह तूफ़ानी रात थी—उन्हें ढूँढ़ा और फिर उनकी हत्या कर दी। क्या कोई पागल यह सब सोच-समझकर कर सकता था, खासकर तब जब इसका मतलब खराब मौसम में अंधेरे में रास्ता ढूँढ़ना, एक हाथ में मशाल और दूसरे हाथ में तलवार चलाना था? नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। अब ज़रूरी यह है कि हम जंगल में दोबारा जाएँ और देखें कि क्या हमें कोई सुराग मिलता है। यहाँ अटकलें लगाने का कोई फ़ायदा नहीं है। मुझे बस इतना यकीन है कि श्री सेनगुप्ता छिपे हुए खजाने की तलाश में जंगल गए थे। शायद वह उसे इकट्ठा करके कलकत्ता वापस ले जाना चाहते थे।” लेकिन फिर भी समझ में नहीं आता कि आखिर वो इतना लालच में क्यों पड़ गया। वो यहाँ बहुत आराम से रह रहा था, और जाहिर तौर पर उसे अच्छी तनख्वाह मिल रही थी। क्या तुमने उसके कपड़े और सामान देखे? सब कुछ महंगा और अच्छी क्वालिटी का था। यहाँ तक कि वो जो सिगरेट पीता था, वो भी इम्पोर्टेड थी।
लालमोहन बाबू ने सिर हिलाया और कहा कि अब उन्हें सोने की ज़रूरत है। इसके तुरंत बाद मुझे नींद आ गई, लेकिन फेलुदा काफी देर तक जागते रहे।
मैं जब जागा तो आसमान फिर से बादलों से घिरा हुआ था, और फेलुदा तैयार होकर कपड़े पहने खड़ा था। तभी हमें एक जीप के आने की आवाज सुनाई दी, और एक नौकर आकर बोला कि हमें ड्राइंग रूम में बुलाया गया है।
इंस्पेक्टर बिस्वास हमारा इंतजार कर रहे थे।
‘अब तुम खुश हो?’ उसने फेलुदा से पूछा।
मुझे खुश क्यों होना चाहिए?
‘आपको एक रहस्य मिल गया, है ना? हत्यारे ने इस घर से हथियार लिया और उसी से अपने शिकार को खत्म कर दिया। क्या यह बहुत अच्छी खबर नहीं है?’
‘यह सच है कि एक तलवार गायब है। लेकिन क्या आप सिर्फ इसलिए यह मान रहे हैं कि श्री सेनगुप्ता की हत्या उसी तलवार से की गई थी, क्योंकि वह अब यहां नहीं है?’

नहीं, मैं ऐसा कुछ भी अनुमान नहीं लगा रहा हूँ। लेकिन आपका क्या ख्याल है? क्या यह विचार आपके मन में नहीं आया?
दोनों आदमी शिष्टता से बात कर रहे थे, लेकिन यह स्पष्ट था कि उनके बीच दबी हुई प्रतिद्वंद्विता की भावना पनप रही थी। यह बिल्कुल अनावश्यक था। मुझे इंस्पेक्टर पर गुस्सा आ रहा था। शुरुआत तो उसी ने की थी। फेलुदा ने सिगरेट जलाई और धीरे से बोला, 'मैं अभी तक किसी नतीजे पर नहीं पहुँचा हूँ। और अगर आपको लगता है कि मैं इस मामले के किसी भी पहलू से खुश हूँ, तो आप बिल्कुल गलत हैं। हत्या मुझे कभी खुश नहीं करती, खासकर जब वह किसी युवा और होशियार आदमी की हत्या हो।'
‘एक चतुर आदमी?’ श्री बिस्वास ने खुलेआम उपहास उड़ाते हुए कहा। ‘एक चतुर आदमी अपने कमरे के आराम को छोड़कर आधी रात को घने जंगल में क्यों घूमने जाएगा? इसमें चतुराई वाली क्या बात है? क्या आप इस प्रश्न का कोई संतोषजनक उत्तर दे सकते हैं, श्री मित्तर?’
'हाँ मैं कर सकता हूं।'
कमरे में हम तीनों के अलावा बाकी सभी लोग फेलुदा की बातों पर एकदम सख्त हो गए। फेलुदा ने महितोष बाबू की ओर देखते हुए स्पष्ट रूप से कहा, “उस रात श्री सेनगुप्ता के जंगल जाने का एक बहुत अच्छा कारण था। आपने मुझे जो पहेली दिखाई थी, उसका अर्थ मैंने समझ लिया है। लेकिन तोरित सेनगुप्ता ने मुझसे बहुत पहले ही ऐसा कर लिया था। वह बाघ की खाल वास्तव में उन्हीं को मिलनी चाहिए थी। मेरा मानना है कि वे जंगल में खजाने की तलाश में गए थे।” महितोष बाबू बोलने के लिए मुंह खोलने ही वाले थे कि उन्हें शब्द नहीं सूझे। उनकी आंखें फटी रह गईं। फेलुदा ने जल्दी से पहेली के बारे में बताया और समझाया कि उन्होंने उसका अर्थ कैसे खोजा। लेकिन महितोष बाबू अब भी उलझन में दिख रहे थे।
‘दांतविहीन फकीर का पेड़?’ उसने आश्चर्य से कहा। ‘अरे, मैंने तो इसके बारे में कभी सुना ही नहीं!’
‘सच में? लेकिन तुम्हारे भाई ने हमें बताया था कि जब तुम दोनों छोटे थे तो अपने दादाजी के साथ पिकनिक पर जाया करते थे। उसने कहा था कि तुम उस पेड़ के नीचे बैठते थे?...’

‘मेरा भाई?’ महितोष बाबू ने थोड़ा तिरस्कारपूर्ण लहजे में कहा, ‘क्या आपको पता है कि मेरे भाई की बातों में कितना सच है और कितना झूठ? यह मत भूलिए कि वह सामान्य नहीं है।’
फेलुदा कुछ भी जवाब नहीं दे सका। वह महितोष बाबू के भाई की बीमारी पर भला कैसे टिप्पणी कर सकता था? आखिर वह तो सिर्फ एक बाहरी व्यक्ति था।
लेकिन महितोष बाबू अब खुलकर परेशान दिखने लगे थे। ‘इसका मतलब... इसका मतलब तोरित खजाने के साथ कलकत्ता भागने की योजना बना रहा था! और मुझे इसकी ज़रा भी जानकारी नहीं थी।’ श्री बिस्वास खड़े हो गए, उन्होंने अपना दाहिना हाथ मुट्ठी में कस लिया। फिर उन्होंने अपने बाएं हाथ की हथेली पर प्रहार किया और कहा, ‘अच्छा, कम से कम हमें यह तो पता चल गया कि वह जंगल में क्यों था। एक समस्या तो हल हो गई। अब हमें उसके हत्यारे को ढूंढना होगा।’
‘यह इसी घर का कोई सदस्य होना चाहिए। आशा है आपको यह बात समझ आ गई होगी, श्री बिस्वास?’ फेलुदा ने धुएं का छल्ला उड़ाया।
श्री बिस्वास ने एक विकृत मुस्कान दी। 'ज़रूर,' उन्होंने आँखें सिकोड़ते हुए उत्तर दिया, 'लेकिन इसमें आपको भी शामिल होना पड़ेगा। आपने तलवार देखी थी, आपको पता था कि वह कहाँ रखी है। इस घर में बाकी लोगों की तरह आपके पास भी उसे हटाने का पूरा मौका था। हमें नहीं पता कि यहाँ आने से पहले आप तोरित सेनगुप्ता को जानते थे या आप दोनों के बीच कोई दुश्मनी थी, है ना?'
फेलुदा ने धुएं का एक और छल्ला हवा में उड़ाया। उसने कहा, 'तुम सही कह रहे हो, इसके बारे में किसी को कुछ नहीं पता। हालांकि, दो बातें सबको पता हैं। एक, मुझे यहाँ बुलाया गया था। मैं अपनी मर्जी से नहीं आया था। दो, मैंने ही बताया था कि श्री सेनगुप्ता पर किसी धारदार हथियार से हमला किया गया था। अगर मैं ऐसा नहीं करता, तो लोग मान लेते कि किसी जंगली जानवर ने उन्हें मार डाला है, और कोई सवाल नहीं पूछा जाता।'
श्री बिस्वास अचानक हंस पड़े। उन्होंने कहा, 'शांत हो जाइए, श्री मित्तर, आप मुझे इतनी गंभीरता से क्यों ले रहे हैं? चिंता मत कीजिए, हमें आपमें कोई दिलचस्पी नहीं है। कोई और हमारे लिए कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।' मैंने गौर किया कि यह कहते हुए उन्होंने एक पल के लिए महितोष बाबू से नजरें मिलाईं। ‘आपने कल मुझसे कुछ कहा था, श्री बिस्वास। क्या वह बात अभी भी सच है?’ फेलुदा ने पूछा।
'मैंने तुमसे क्या कहा था?'

‘क्या मैं अपनी खुद की जांच जारी रख सकता हूँ?’
'बिल्कुल। लेकिन हमें आपस में टकराव नहीं करना चाहिए, आप जानते हैं।'
‘हम ऐसा नहीं करेंगे। मैं अपना पूरा ध्यान जंगल में काम करने तक ही सीमित रखना चाहता हूँ। आपको इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है, है ना?’
इंस्पेक्टर ने कंधे उचकाते हुए लापरवाही से कहा, 'जैसी आपकी इच्छा।' फेलुदा ने महितोष बाबू की ओर मुड़कर पूछा, 'क्या आपका मतलब यह है कि आपके भाई से बात करने का कोई फायदा नहीं है?'
इस सवाल पर महितोष सिन्हा-रॉय ने मानो अपने जबड़े भींच लिए। क्या उनका धैर्य खत्म होने लगा था? हालांकि, जब उन्होंने बात की तो उनकी आवाज़ में पूरी तरह से दोस्ताना भाव था। उन्होंने शांत स्वर में समझाया, 'मेरे भाई की तबीयत कुछ बिगड़ गई है। मुझे नहीं लगता कि उन्हें परेशान किया जाना चाहिए।'
फेलुदा ने ऐशट्रे में सिगरेट बुझाई और खड़ा हो गया। ‘खैर, मैं यहाँ अनिश्चित काल तक आपका मेहमान बनकर नहीं रह सकता। कल हमारी यात्रा का आखिरी दिन होगा। क्या हम आज जंगल जा सकते हैं? अगर आप माधवलाल को बता दें और हमारे लिए एक जीप का इंतजाम कर दें—’
महितोष बाबू ने सिर हिलाया। अब साढ़े आठ बज रहे थे। हमने दस बजे तक निकलने का फैसला किया। मैं और फेलुदा जंगल में चलने के लिए शिकार के जूते लाए थे। हमने उन्हें पहन लिया, हालाँकि मुझे लग रहा था कि मुझे जीप से उतरने की इजाज़त नहीं मिलेगी। मुझे उम्मीद थी कि लालमोहन बाबू जीप से उतरने की इच्छा नहीं जताएंगे, लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि वे बाथरूम में चले गए और खाकी पतलून पहन ली। फिर उन्होंने अपने सूटकेस से एक जोड़ी मज़बूत और प्रभावशाली जूते निकाले और उन्हें पहनने लगे। फेलुदा ने उन्हें तिरछी नज़र से देखा, लेकिन कुछ नहीं कहा।
‘फेलू बाबू,’ लालमोहन बाबू ने अपने नए बूटों में फौजी अंदाज़ में इधर-उधर घूमते हुए कहना शुरू किया, ‘क्या बाघ की आँखों के बारे में कही जाने वाली बात सच है? मेरा मतलब है, उसकी आँखों की नज़रें तो बिल्कुल खौफनाक होती हैं, ऐसा मैंने सुना है। क्या यह सच हो सकता है?’
फेलुदा खिड़की से बाहर देख रहा था, इस बात का इंतज़ार कर रहा था कि माधवलाल और जीप आ गए हैं। हम सब जाने के लिए तैयार थे।

‘हाँ, मैंने भी यही सुना है,’ उसने जवाब दिया। ‘लेकिन क्या आप जानते हैं कि कुछ मशहूर शिकारियों ने क्या कहा है? बाघ भी इंसानों से उतना ही डरते हैं। अगर कोई आदमी बाघ की आँखों में आँखें डालकर देख पाए और उससे नज़रें मिलाए रखे, तो बाघ मुड़कर भाग जाएगा। और अगर सिर्फ़ घूरने से काम न बने, तो चीखना- चिल्लाना और हाथ हिलाना भी वही नतीजा दे सकता है।’
लेकिन... आदमखोर के बारे में क्या?
‘यह अलग है।’
‘मैं समझ गया। तो आप यहाँ क्यों हैं?...’
मैं क्यों जा रहा हूँ? मैं इसलिए जा रहा हूँ क्योंकि दिन के समय बाघ के निकलने की संभावना लगभग न के बराबर है। अगर वह दिख भी जाए, तो हमारे पास उससे निपटने के लिए राइफल होगी। इसके अलावा, हमारे पास जीप भी होगी; इसलिए जरूरत पड़ने पर हम तुरंत भाग निकल सकते हैं।
जीप के आने तक लालमोहन बाबू ने एक शब्द भी नहीं कहा। जीप के आने पर उन्होंने बस इतना कहा, 'मुझे इस हत्या के बारे में कुछ भी समझ नहीं आ रहा है। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है, मैं पूरी तरह से अंधकार में हूँ।' ‘लालमोहन बाबू, हमें रोशनी देखने से रोकने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है। हर प्रयास को विफल करना हमारा कर्तव्य होना चाहिए।’

नौ

हम उस स्थान पर पहुँचे जहाँ श्री सेनगुप्ता का शव मिला था। बादल छंट जाने से आज काफ़ी उजाला था। सूर्य की किरणें पत्तियों से छनकर ज़मीन पर जगह-जगह छोटी-छोटी आकृतियाँ बना रही थीं। पेड़ों पर पक्षियों की चहचाहट भी पहले से कहीं ज़्यादा सुनाई दे रही थी। लालमोहन बाबू हर बार किसी पक्षी की आवाज़ सुनकर चौंक जाते थे, उन्हें लगता था कि यह किसी बाघ के आने की चेतावनी है। शव को उसी दिन हटा दिया गया था। कलकत्ता में तोरित बाबू के परिवार को सूचित कर दिया गया था और उनका भाई अंतिम संस्कार की व्यवस्था करने के लिए आ गया था। बांस के झुरमुट के पास उस भयानक घटना का कोई निशान नहीं बचा था। फिर भी, फेलुदा ने माधवलाल की सहायता से उस जगह का बारीकी से निरीक्षण करना शुरू कर दिया। जैसे-जैसे मैं माधवलाल को देखता गया, वह मुझे और भी पसंद आने लगा। वह हंसमुख स्वभाव का लग रहा था। वह अक्सर मुस्कुराता था, जिससे उसके होंठों के दोनों किनारों पर गहरी झुर्रियाँ पड़ जाती थीं। यहाँ तक कि जब वह नहीं मुस्कुराता था, तब भी उसकी आँखें चमकती रहती थीं। उसने रास्ते में हमें बताया कि आदमखोर बाघ की खबर वन विभाग के लोगों में फैल गई थी। जाहिर है, कई शिकारियों ने उसे मारने की पेशकश की थी। उनमें से एक श्री सप्रू थे, जिन्होंने तराई में कई बाघों और अन्य जानवरों का शिकार किया था। उनके अगले दिन आने की उम्मीद थी।
अब वह हमसे बातचीत करने के लिए रुका और अपने कई अभियानों की कहानियां सुनाने लगा। तभी फेलुदा ने उसे बांस के झुरमुट से पुकारा। माधवलाल ने अपनी कहानी रोक दी और तेजी से आगे बढ़ा, उसके पीछे-पीछे लालमोहन बाबू और मैं भी गए। आज फेलुदा ने जीप से उतरने पर कोई आपत्ति नहीं जताई थी।
हमने उसे जमीन पर घुटनों के बल बैठे हुए, बांस के तने पर झुके हुए पाया। ‘इसे देखो!’ उसने माधवलाल से कहा।
माधवलाल ने उस पर सरसरी नजर डाली और कहा, 'इसमें गोली लगी है, महोदय।'
तने पर एक निशान था जो मुझे अब दिखाई दिया। हम सभी—फेलूदा समेत—हैरान रह गए।

‘क्या आप मुझे बता सकते हैं कि वह निशान कितना पुराना हो सकता है?’ फेलुदा ने थोड़ी अधीरता से पूछा।
माधवलाल ने उत्तर दिया, 'दो दिन से ज्यादा पुराना नहीं।'
‘इसका क्या मतलब हो सकता है?’ फेलुदा ने धीरे से बुदबुदाया, मानो खुद से कह रहा हो। ‘तलवार... बंदूक... मैं पूरी तरह उलझन में हूँ। तोरित सेनगुप्ता को तलवार से चोट लगी, फिर किसी ने बाघ पर गोली चलाई लेकिन निशाना चूक गया, ऐसा लगता है। या फिर...’ वह रुक गया। माधवलाल को बांस के नीचे कुछ मिला था। जब मैं पास गया, तभी मुझे पता चला कि वह क्या था। वह लगभग दो इंच लंबी, रुई जैसी कोई चीज पकड़े हुए था।
‘शेर के शरीर के बाल?’ फेलुदा ने पूछा।
जी हाँ, महोदय। गोली एक तरफ से छिटक कर निकल गई होगी।
क्या इसी वजह से बाघ अपना भोजन पूरा किए बिना भाग गया?
'इसके जैसा लगता है।'
फेलुदा बिना कुछ कहे आगे बढ़ने लगा। माधवलाल राइफल हाथ में लिए, चौकस निगाहों से उसके पीछे-पीछे चल रहा था। लालमोहन बाबू और मैंने खुद को इन दोनों आदमखोरों के बीच खड़ा कर लिया, जो हमें सबसे सुरक्षित लगा। फेलुदा के पास भरी हुई रिवॉल्वर थी, लेकिन एक आदमखोर से निपटने के लिए वह काफी नहीं थी। इंजन के स्टार्ट होने की आवाज से मुझे पता चला कि हमारी जीप का ड्राइवर हमारा पीछा कर रहा है। इसका मतलब था कि वह करीब आएगा, हालांकि वह हमारे बिल्कुल पास नहीं आ सकता था क्योंकि हम सड़क छोड़कर पेड़ों और झाड़ियों के बीच आ गए थे।
तीन मिनट बाद, फेलुदा की नज़र एक कंटीली झाड़ी पर पड़ी और वह तेज़ी से दाहिनी ओर तिरछे चलते हुए उसकी ओर बढ़ा। वहाँ हरे रंग का एक कपड़ा चिपका हुआ था, जो निस्संदेह श्री सेनगुप्ता की कमीज़ का था। बाघ स्पष्ट रूप से उनके शव को लेकर इसी रास्ते से आया था और कमीज़ उस झाड़ी पर अटक गई थी।
जब हमने दोबारा चलना शुरू किया, तो माधवलाल आगे-आगे चलने लगा। शायद उसे अंदाज़ा हो गया होगा कि आदमखोर किस तरफ से आया था। वह बहुत सावधानी से चल रहा था, एक तो इसलिए कि हम उसके पीछे थे और दूसरा इसलिए कि उस इलाके में झाड़ियाँ और दूसरे कांटेदार पौधे बहुत ज़्यादा थे। वह अचानक एक बड़े इमली के पेड़ के नीचे रुक गया और ज़मीन को ध्यान से देखने लगा। हम सब उसके पास जमा हो गए और देखा कि किस चीज़ ने उसका ध्यान खींचा था। मैंने पहले कभी ऐसी

चीज़ नहीं देखी थी, लेकिन देखते ही समझ गया कि मैं किसी जानवर के पदचिह्न को देख रहा हूँ। वहाँ कई और पदचिह्न थे जो उसी दिशा से आए हुए लग रहे थे जिस दिशा में हम अब जा रहे थे।
लालमोहन बाबू ने फुसफुसाते हुए कहा, 'क्या ये दो टांगों वाला बाघ है?' माधवलाल हँस पड़ा। 'नहीं,' फेलुदा ने समझाया, 'बाघ ऐसे ही चलता है। यह अपने पिछले पैरों को ठीक उसी जगह रखता है जहाँ अगले पैर रखता है। इसलिए ऐसा लगता है जैसे यह दो टांगों वाला जानवर हो।'
माधवलाल चलता रहा। मुझे जीप की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। हल्की सी गड़गड़ाहट की आवाज़ से पता चला कि आस-पास कहीं कोई नाला है। लालमोहन बाबू के नए जूते, जो पहले काफी तेज़ आवाज़ कर रहे थे (फेलुदा ने कहा था, 'आदमखोर की जिज्ञासा जगाने के लिए एकदम सही'), अब कीचड़ से सने होने के कारण शांत हो गए थे।
हम एक रेशम-कपास के पेड़ के पास से गुजरे, और फिर माधवलाल रुक गया। ‘आपके पास रिवॉल्वर है, साहब?’ उसने फेलुदा से पूछा। उसकी आवाज धीमी थी।
हमसे कुछ गज आगे, लंबी घास में से कुछ निकल रहा था, उसे चीरते हुए अपना रास्ता बना रहा था। 'क्रेट,' माधवलाल ने धीरे से कहा। मैंने क्रेट के बारे में पढ़ा था। वे बेहद जहरीले सांप होते हैं। एक पल बाद, वह नज़र आया और रुक गया। वह काला था, पीली धारियों वाला। उसके सिर पर फन नहीं था।
मैंने फेलुदा को रिवॉल्वर निकालते हुए तो नहीं देखा, लेकिन गोली चलने की कान फाड़ देने वाली आवाज़ ज़रूर सुनी। साँप का सिर गायब हो गया और सब कुछ खत्म हो गया। कई पक्षी चिल्लाए और बंदरों का एक झुंड काफी उत्तेजित हो गया, लेकिन साँप का शरीर वहीं पड़ा रहा। 'शाबाश!' माधवलाल ने कहा। लालमोहन बाबू ने हँसी, छींक और खाँसी का मिलाजुला सा स्वर निकाला।
हम फिर से चलने लगे। जंगल हर जगह घना नहीं था। बाईं ओर पेड़ कम होते जा रहे थे। माधवलाल ने कहा, 'वहीं नाला है, और इलाका पथरीला है। बाघ अक्सर दिन के समय चट्टानों और पत्थरों के पीछे आराम करते हैं। मेरा सुझाव है कि हम सीधे आगे बढ़ें।'
हमने उनकी सलाह मानी। फेलुदा अभी भी हर तरफ सुराग की तलाश में था। इस बार, लालमोहन बाबू ने उसे संयोगवश एक सुराग ढूंढने में मदद की। वह किसी चीज़ से टकरा गया और उसे लात मार दी, जिससे वह हवा में उछलकर कुछ फीट दूर जा गिरी।

यह गहरे भूरे रंग का चमड़े का बटुआ था। फेलुदा ने इसे उठाया और खोला। इसमें दो सौ रुपये के नोट और कुछ छोटे नोट थे। इनके अलावा, छोटे खानों में दो मुड़े हुए पुराने टिकट, नकद रसीदें और एक पर्ची थी। बटुआ गीला और गंदा था, लेकिन उसमें रखे पैसे आसानी से इस्तेमाल किए जा सकते थे। फेलुदा ने सब कुछ वापस बटुआ में रखा और फिर उसे अपनी जेब में रख लिया।
हम फिर से चलने लगे। पेड़ अचानक बहुत घने हो गए थे। लगभग अनजाने में ही मैं पीपल का पेड़ ढूंढने लगा। मुझे पता था कि फेलुदा भी यही कर रहा है। मुझे कुछ पीपल के पेड़ तो दिखे, लेकिन उनके पास कोई ताड़ का पेड़ नहीं था। माधवलाल एक मिनट के लिए रुका और एक पेड़ से दो छोटी शाखाएँ तोड़ीं, जो उसने लालमोहन बाबू और मुझे दे दीं। अब हम उन्हें चलने के लिए छड़ी की तरह इस्तेमाल कर रहे थे।
'एक पंजे के निशान से बाघ के आकार के बारे में बहुत कुछ पता चल सकता है, है ना?' फेलुदा ने पूछा।
‘जी हां,’ माधवलाल ने जवाब दिया। ‘हमारा आदमखोर तो काफी बड़ा लगता है।’ फेलुदा ने एक और सवाल पूछा: 'महितोश बाबू ने इस जंगल में कभी किसी चीज को नहीं मारा है, है ना?'
जी नहीं, महोदय। कई शिकारियों में अंधविश्वास होते हैं। महितोष बाबू भी अपवाद नहीं हैं। मेरे पिता भी थे। एक बार घर से निकलते समय उनका हाथ गलती से बिच्छू बूटी से छू गया। उस दिन उन्होंने दस फुट के बाघ को मार गिराया। तब से, जब भी वे शिकार पर जाते, चाहे कितना भी दर्द हो, वे अपने हाथों को बिच्छू बूटी से रगड़ते थे।
'जिम कॉर्बेट भी अंधविश्वासी थे। अगर उन्हें बाघ की तलाश में जाने से पहले कोई सांप दिख जाता था, तो इससे उन्हें खुशी मिलती थी।'
अगर उनके दादा और पिता दोनों की हत्या यहीं हुई थी, तो यह पूरी तरह से समझ में आता है कि माहितोष बाबू असम और उड़ीसा क्यों चले गए थे।
बीस मिनट बाद, फेलुदा को आखिरकार वह मिल गया जिसकी उसे वास्तव में तलाश थी। माधवलाल को रुकने का इशारा करते हुए, वह छोटे-छोटे बैंगनी फूलों से लदी एक घनी झाड़ी के पीछे झाँकने लगा। हम भी उसके पास गए और उसे देखा।
आदित्यनारायण की तलवार का पत्थर जड़ा हुआ हैंडल झाड़ी के ठीक बाहर दिखाई दे रहा था। तलवार का ब्लेड उसके पीछे छिपा हुआ था।

फेलुदा ने एक झटके में उसे उठा लिया। ब्लेड पर खून के धब्बे थे, हालांकि वे कुछ हद तक मिट चुके थे। फेलुदा ने उसे पलटकर हैंडल का बारीकी से निरीक्षण किया। ‘माधवलाल जी,’ उसने कहा, ‘जहां हत्या हुई थी, वह जगह यहां से ज्यादा दूर नहीं हो सकती। क्या हम आगे बढ़ सकते हैं?’
'ज़रूर। लेकिन यहाँ से सौ गज की दूरी पर आपको एक मंदिर मिलेगा।'
‘एक मंदिर?’ फेलुदा ने तीखे स्वर में पूछा।
जी हाँ, महोदय। स्थानीय लोग इसे कटी हुई देवी का मंदिर कहते हैं। इसमें अब कुछ भी शेष नहीं है। केवल मूल ढांचा ही किसी तरह खड़ा है।
हममें से किसी ने कुछ नहीं कहा। इस मंदिर के पीछे बिना दांत वाले फकीर का पेड़ था। और पूरब की ओर पचपन गज...! बिना कुछ कहे, फेलुदा तलवार हाथ में लिए आगे बढ़ गया, मानो वह शेर शाह हो और किसी बाघ को मार गिराने निकला हो। माधवलाल मंदिर के बारे में सही कह रहा था। यह वाकई एक प्राचीन इमारत थी, जिसकी दीवारें टूटी-फूटी और दरारों से भरी थीं। दरारों से पौधे उग आए थे। एक बरगद के पेड़ की जड़ें चारों ओर लटक रही थीं, मानो वे छत के बचे हुए हिस्से को कुचल देना चाहती हों। गर्भगृह का हिस्सा अभी भी मौजूद था, लेकिन अंदर इतना अंधेरा था कि मुझे अंदर जाने का कोई सवाल ही नहीं था।
लेकिन फेलुदा मंदिर की ओर बिल्कुल नहीं देख रहा था। वह उसके पीछे घूर रहा था। लगभग बीस गज की दूरी पर, जैसा कि देवतोष बाबू ने कहा था, एक विशाल, पुराना पीपल का पेड़ खड़ा था। उसकी शाखाएँ सूखी, मुरझाई हुई और पत्तों से रहित थीं। उस पर लगभग कोई पत्तियाँ नहीं बची थीं। लेकिन पेड़ में जो था, जो दूर से भी दिखाई दे रहा था, वह था जमीन से कम से कम पाँच फीट ऊपर एक बड़ा खोखला हिस्सा।
हम बेसब्री से फेलुदा के पीछे-पीछे चल रहे थे। जैसे-जैसे हम करीब पहुँचे, हमने आश्चर्य से देखा कि खोखले हिस्से के पास पेड़ के तने पर बने अजीबोगरीब निशान और धब्बे, साथ ही उसकी असमान सतह, सचमुच एक बूढ़े, बिना दांत वाले, खुले मुँह वाले आदमी का रूप बना रहे थे। 'क्या यह पूरब है?' फेलुदा ने अपनी नज़र दाईं ओर घुमाते हुए पूछा।
‘जी सर,’ माधवलाल ने उत्तर दिया।
‘देखो, ये दो हथेलियाँ! और मुझे नहीं लगता कि मुझे दूरी नापने की भी ज़रूरत है। ये पचपन कदम ही होंगे।’

दो ताड़ के पेड़ 55 गज की दूरी पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। हम उनकी ओर बढ़े और तुरंत ही हमें वह चीज़ नज़र आ गई: पेड़ों के बीच की ज़मीन हाल ही में खोदी गई थी। वहाँ एक काफी बड़ा गड्ढा था, जो अब पानी से भरा हुआ था। वहाँ जो भी खजाना रहा होगा, वह गायब हो चुका था।
‘क्या! छिपा हुआ खजाना गायब हो गया?’ लालमोहन बाबू ने सबसे पहले अपनी बात कही। वह फुसफुसाना भूल गए।
फेलुदा का चेहरा एक बार फिर गंभीर हो गया था, हालाँकि जो हमने अभी देखा था उसे कोई नया रहस्य नहीं कहा जा सकता था। श्री सेनगुप्ता की हत्या करने वाले ने स्पष्ट रूप से खजाना हटा दिया था। फेलुदा ने कुछ सेकंड तक ज़मीन में बने गड्ढे को घूरा, फिर बोला, 'आप थोड़ी देर आराम क्यों नहीं कर लेते? मैं एक त्वरित सर्वेक्षण करना चाहता हूँ।'
इतनी देर तक चुपके से चलने के बाद मेरे पैरों में दर्द हो रहा था। आराम करने का यह मौका पाकर मैं बहुत खुश था, और लालमोहन बाबू भी। हमें पीपल के पेड़ के नीचे एक सूखी जगह मिली और हम बैठ गए। माधवलाल ने अपनी राइफल नीचे रख दी, उसे पेड़ के तने से टिका दिया और हमें एक कहानी सुनाने लगा कि कैसे तेरह साल की उम्र में उस पर एक भालू ने हमला किया था और कैसे वह बच निकला था। लेकिन मैं पूरी तरह से उसकी बात नहीं सुन पा रहा था, क्योंकि मेरी नज़रें लगातार फेलुदा पर टिकी हुई थीं। उसने एक सिगरेट जलाई, उसे अपने होठों के बीच रखा और प्राचीन मंदिर के आसपास की ज़मीन को देखने लगा। मैंने उसे कुछ उठाते हुए देखा—शायद सिगरेट का टुकड़ा—और फिर उसे वापस गिराते हुए। फिर वह घुटनों के बल बैठ गया और ज़मीन को ध्यान से देखने के लिए नीचे झुक गया, उसका चेहरा लगभग ज़मीन को छू रहा था।
बाहर दस मिनट तक बारीकी से निरीक्षण करने के बाद, फेलुदा अंधेरे हॉल में चला गया। मैं उसके साहस पर आश्चर्यचकित रह गया; मंदिर में शायद सांप और अन्य सरीसृप रेंग रहे थे। जब मंदिर उपयोग में था, तब इसमें दुर्गा की एक मूर्ति हुआ करती थी। कालापहाड़ ने उसका सिर और दस भुजाओं में से चार काट दीं। इसीलिए इसका वर्तमान नाम कालापहाड़ है।
एक मिनट बाद फेलुदा बाहर आया और उसने एक रहस्यमय टिप्पणी की। उसने कहा, 'यह तो अद्भुत है! किसने सोचा था कि प्रकाश देखने के लिए अंधेरे में कदम रखना पड़ेगा?'

‘फेलू बाबू, तुम्हारा मतलब क्या है कि अंधेरा चला गया?’ लालमोहन बाबू चिल्लाया।
'कुछ हद तक, हाँ। आप इसे बिना चाँद वाली रात के बाद की पहली रात कह सकते हैं।'
‘ओह। इसका मतलब तो पूर्णिमा देखने के लिए पूरे दो सप्ताह इंतजार करना पड़ेगा!’
नहीं, लालमोहन बाबू। आप सिर्फ चांद के बारे में सोच रहे हैं। सूरज भी तो होता है, याद है ना? हर अंधेरी रात के अंत में वह निकलता है, है ना?
'आपका मतलब है कि कल... कल हम इस कहानी का चरमोत्कर्ष देख सकते हैं? अंत?' ‘मैं ऐसा कुछ नहीं कह रहा, लालमोहन बाबू। मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि घंटों के अंधेरे के बाद, मुझे उम्मीद की एक किरण दिखाई देने लगी है। चलो, टॉपशे, घर चलते हैं।’

दस

हम दस बजे घर से निकले थे। जब हम वापस लौटे तो साढ़े बारह बज चुके थे। फेलुदा तलवार महितोष बाबू को लौटाना चाहता था, लेकिन लौटने पर हमें पता चला कि वह श्री सान्याल के साथ कलबुनी स्थित वन बंगले में वन विभाग के प्रमुख से मिलने गए थे। इसलिए हम तलवार लेकर अपने कमरे में चले गए।
इससे पहले, हमने कुछ समय भूतल पर बिताया। फेलुदा ट्रॉफी कक्ष में गया। मैं नहीं बता सकता कि वह क्या सोच रहा था, लेकिन उसने वहाँ प्रदर्शित सभी बंदूकों का निरीक्षण करना शुरू कर दिया। उसने एक-एक बंदूक उठाई और उसके बैरल, बट, ट्रिगर और सेफ्टी कैच की जाँच की। लालमोहन बाबू ने उससे कुछ पूछना शुरू किया, लेकिन फेलुदा ने उसे चुप रहने को कहा।
‘यह सोचने का समय है, लालमोहन बाबू,’ उन्होंने कहा, ‘बातचीत करने का नहीं।’ इस समय तक लालमोहन बाबू फेलुदा के मिजाज से काफी परिचित हो चुके थे, इसलिए वे तुरंत चुप हो गए।
फेलुदा ने ट्रॉफी रूम का निरीक्षण पूरा किया और ऊपर जाने के लिए मुड़ा। हम चुपचाप उसके पीछे-पीछे चले। पहली मंजिल पर बरामदे में पहुँचकर उसने फिर बात की। अचानक रुककर और देवतोष बाबू के कमरे को घूरते हुए उसने पूछा, 'यह क्या है? बड़े भाई का कमरा बंद क्यों है?'
दरवाजे पर ताला लगा हुआ था। वह कहाँ गया होगा? उसने कमरा बंद क्यों छोड़ा था? फेलुदा ने और कुछ नहीं कहा। हम अपने कमरे में पहुँच गए।
फेलुदा ने अगले कुछ मिनट चुपचाप बैठे-बैठे माथे पर शिकन लिए बिताए; फिर वह उठा और बेचैनी से इधर-उधर घूमने लगा, अचानक रुका और फिर बैठ गया। दो मिनट बाद, वह फिर से खड़ा हो गया। मैं इस मनोदशा को अच्छी तरह जानता था। किसी जटिल रहस्य को सुलझाने के करीब पहुँचते ही वह हमेशा ऐसा ही व्यवहार करता था।
‘चूंकि यहां कोई नहीं है, और देवतोष बाबू का कमरा बंद है,’ उसने अचानक कहा, ‘तो थोड़ी जासूसी करना बुरा विचार नहीं होगा।’

वह कमरे से बाहर चला गया। मैंने दरवाजे से झाँककर देखा तो वह महितोष बाबू के अध्ययन कक्ष में चला गया। मैं वापस अपने कमरे में आया तो देखा कि लालमोहन बाबू फर्श पर पड़ी तेंदुए की खाल पर लेटे हुए थे। वह उसके सिर को तकिए की तरह इस्तेमाल कर रहे थे। साफ था कि जंगल में बाघ के पदचिह्न देखने से उनका साहस काफी बढ़ गया था। कुछ पल की चुप्पी के बाद उन्होंने कहा, 'शुक्र है मैंने अपनी किताब महितोष सिन्हा-रॉय को समर्पित करने का सोचा! अगर मैंने ऐसा नहीं किया होता तो क्या हमें कभी इतना रोमांचक अनुभव मिल पाता? आज सुबह की ही बात ले लीजिए: बाँस के झुरमुट में एक गोली, घास में एक साँप, एक शाही बंगाल बाघ के पदचिह्न, एक खंडहर पुराना मंदिर, एक प्रसिद्ध पीपल का पेड़... और क्या चाहिए? इस अनुभव को पूरा करने के लिए बस आदमखोर बाघ से सामना बाकी है।'
मैंने पूछा, 'क्या तुम सचमुच ऐसा चाहते हो?'
‘मुझे अब डर नहीं लगता,’ उसने जोर से जम्हाई लेते हुए जवाब दिया। ‘अगर एक तरफ माधवलाल हो और दूसरी तरफ फेलू मित्तर, तो कोई आदमखोर तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता!’
उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं और मानो सो गए हों। मैंने महितोष बाबू की किताब उठाई और कुछ पन्ने पढ़े ही थे कि फेलुदा वापस आ गए। उनके कदमों की आहट से लालमोहन बाबू ने अपनी आँखें खोलीं और उठ बैठे।
'क्या आपको कुछ मिला?'
‘नहीं। मुझे वह नहीं मिला जिसकी मुझे तलाश थी, लेकिन यही महत्वपूर्ण है।’ कुछ देर रुकने के बाद फेलुदा ने पूछा, ‘क्या आपको याद है कि युधिष्ठिर का रथ ज़मीन पर क्यों अटक गया था?’
‘क्योंकि उसने झूठ बोला?’
'बिल्कुल सही। लेकिन आजकल, झूठ बोलने वाले को हमेशा भगवान द्वारा दंडित नहीं किया जाता। दूसरे लोगों को उसे पकड़ना और दंडित करना पड़ता है।'
मैं उनसे पूछ नहीं सका कि उनका क्या मतलब था, क्योंकि उनके बोलते ही एक जीप आ गई। कुछ ही मिनटों बाद, एक नौकर आया और बताया कि महितोष बाबू लौट आए हैं और दोपहर का भोजन परोसा जा चुका है।
जो कुछ भी हुआ था, उसके बावजूद हम सभी ने हर दिन भोजन का भरपूर आनंद लिया था। महितोष बाबू के पास वाकई एक बहुत अच्छा रसोइया था। आज खाना देखने में तो स्वादिष्ट लग रहा था, लेकिन हमारे मेज़बान ने कुछ गंभीर लहजे में

बातचीत शुरू की। उन्होंने गंभीरता से कहा, 'श्री मित्तर, चूंकि आपने आदित्यनारायण के संदेश का अर्थ जान लिया है, इसलिए मुझे नहीं लगता कि आपको यहाँ और रखने का मुझे कोई अधिकार है। अगर आप चाहें, तो मैं आपकी वापसी की व्यवस्था कर सकता हूँ। मेरा एक आदमी जलपाईगुड़ी जा रहा है। वह आपके लिए टिकट बुक कर सकता है।'
फेलुदा ने तुरंत जवाब नहीं दिया। फिर उसने धीरे से कहा, 'मैं खुद वापस जाने की सोच रहा था। आपने बहुत अच्छा मेज़बानी की है, लेकिन ज़ाहिर है हम यहाँ अनिश्चित काल तक नहीं रह सकते। लेकिन, अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं आज रात यहाँ रुकना चाहूँगा और कल सुबह चला जाऊँगा। देखिए, मैं एक जासूस हूँ, और एक हत्या हुई है। मुझे यकीन है कि आप समझ जाएँगे कि मैं इस मामले पर कुछ सुराग पाने के लिए थोड़ा और क्यों रुकना चाहता हूँ। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं सच का पता लगा पाता हूँ या पुलिस अपना काम करती है। मैं बस यह जानना चाहता हूँ कि क्या हुआ और कैसे हुआ।'
महितोष बाबू ने खाना बंद कर दिया और सीधे फेलुदा की ओर देखा। उन्होंने दृढ़ता से कहा, 'इस घर में कोई भी ऐसा नहीं है जो ठंडे खून से हत्या की योजना बनाएगा, श्री मित्तर।'
फेलुदा ने कोई ध्यान नहीं दिया। उसने लापरवाही से पूछा, 'तुम्हारा भाई कहाँ है? क्या उसे कहीं और ले जाया गया है? उसका कमरा बंद था।'
महितोष बाबू ने उसी गंभीर स्वर में उत्तर दिया, “मेरा भाई अपने कमरे में है। लेकिन कल रात से उसकी... तबीयत और बिगड़ गई है। उसे काबू में रखना होगा, वरना वह अपने रास्ते में आने वाले किसी को भी, यहाँ तक कि तुम्हें भी, गंभीर नुकसान पहुँचा सकता है। कभी-कभी वह सैकड़ों साल पहले मरे हुए लोगों को देखने लगता है—जैसे इतिहास की किताबों के पात्र। फिर अगर उसे लगता है कि उन्होंने अतीत में कुछ गलत किया है, तो वह उन पर हमला कर देता है। एक बार उसने तोरित को कालापहाड़ समझ लिया और लगभग गला घोंटकर मार ही डाला था। सौभाग्य से, एक नौकर ने उसे देख लिया और उसे वहाँ से ले जाने में कामयाब रहा।”
फेलुदा खाना खाता रहा। उसने बातचीत के लहजे में कहा, 'क्या आपको पता है, श्री सेनगुप्ता की मृत्यु ही एकमात्र रहस्य नहीं है जिससे हम निपट रहे हैं? कोई आपका खजाना लेकर भाग गया, संभवतः उसी रात।'

‘क्या!’ महितोष बाबू एकदम स्थिर हो गए, खाना मुंह से कुछ इंच दूर पकड़े हुए। ‘मतलब तुमने जाकर चेक किया?’
'हां, खजाना तो चला गया, लेकिन हमें तलवार मिल गई, जिस पर खून के धब्बे लगे हुए हैं।'
महितोष बाबू बोलने के लिए मुंह खोलने ही वाले थे कि चुपचाप घूंट भरते रह गए। फेलुदा ने तीसरा चौंकाने वाला खुलासा किया। “जब बाघ ने श्री सेनगुप्ता पर हमला किया, तो किसी ने बाघ पर गोली चलाई। गोली बांस के तने पर लगी, लेकिन संभव है कि वह बाघ के शरीर को छूकर निकल गई हो, क्योंकि हमें कुछ बाल मिले हैं। तो ऐसा लगता है कि उस रात जंगल में केवल तोरित सेनगुप्ता ही नहीं गए थे। अलग-अलग लोग अलग-अलग उद्देश्यों से गए थे…”
‘शिकारी!’ श्री सान्याल ने अचानक कहा। ‘टोरिट की हत्या के बाद जंगल में कोई शिकारी ही घुसा होगा। इसी शिकारी ने बाघ पर गोली चलाई होगी।’
फेलुदा ने धीरे से सिर हिलाया। 'इस संभावना को नकारा नहीं जा सकता। इसलिए, फिलहाल हमें इस बात की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है कि गोली कहाँ से आई। हालाँकि, हमें अभी भी खून से सनी तलवार और गायब खजाने के बारे में स्पष्टीकरण देना है।'
‘तलवार की चिंता छोड़ो। खजाना कहीं अधिक महत्वपूर्ण है,’ महितोष बाबू ने घोषणा की। ‘श्री मित्तर, हमें इसे ढूंढना ही होगा। जब तक यह नहीं मिल जाता, सिन्हा-रॉय परिवार का इतिहास अधूरा रहेगा।’
‘बहुत अच्छा,’ फेलुदा ने सुझाव दिया, ‘अगर ऐसा है, तो क्यों न हम सब आज बाद में उस जगह पर वापस चलें? यह कटी हुई देवी के मंदिर के बहुत करीब है।’ महितोष बाबू हमारे साथ जंगल वापस चलने के लिए तैयार हो गए। हालांकि, साढ़े तीन बजे शुरू हुई और छह बजे के बाद तक जारी रही मूसलाधार बारिश ने हमें अपना प्लान छोड़ने पर मजबूर कर दिया। फेलुदा पहले से ही उदास दिख रहे थे; अब तो वे और भी ज्यादा निराश लग रहे थे। यह साफ था कि महितोष बाबू चाहते थे कि हम चले जाएं। अगर अगले दिन मौसम में सुधार नहीं हुआ, तो शायद हमें श्री सेनगुप्ता की मौत के रहस्य को सुलझाए बिना ही वापस लौटना पड़ेगा। मंदिर में दोबारा जाने से क्या फर्क पड़ेगा, यह मैं नहीं कह सकता था, लेकिन मुझे पता था कि फेलुदा को कुछ तो पता चल ही गया था। उनकी आंखों में कभी-कभार दिखने वाली चमक से मुझे यह बात साफ समझ आ गई थी।

अपने कमरे में निष्क्रिय बैठे रहना हमें गवारा नहीं था, इसलिए जब दादाजी की घड़ी में पाँच बजे, हम बाहर आकर बरामदे में खड़े हो गए। देवतोष बाबू के कमरे का दरवाजा अभी भी बंद था।
‘यहाँ कोई नहीं है,’ लालमोहन बाबू ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘क्यों न हम खिड़कियों के शटर से झाँक कर देखें? वह आदमी क्या कर रहा होगा?’
लालमोहन बाबू के अन्य कई सुझावों की तरह, फेलुदा ने इस सुझाव को भी नजरअंदाज कर दिया।
सात बजने के बाद आसमान साफ हो गया। जब तारे निकले, तो ऐसा लग रहा था मानो किसी ने उन्हें स्याही जैसे काले आसमान पर चिपकाने से पहले पॉलिश किया हो। फेलुदा तलवार पकड़े अपने पलंग पर बैठा था। लालमोहन बाबू और मैं खिड़की पर खड़े होकर तारों को निहार रहे थे, तभी अचानक उसने मेरी आस्तीन पकड़ी और धीमी आवाज़ में कहा, 'एक छोटी सी टॉर्च!'
हमारी खिड़की से चौकीदार की झोपड़ी दिखाई दे रही थी। उसके पास एक बड़ा पेड़ था। एक आदमी उसके नीचे खड़ा था। एक और आदमी टॉर्च लिए उसकी ओर आ रहा था। उसकी टॉर्च बिजली के सॉकेट में प्लग लगाकर चार्ज की जा सकती थी। उसमें एक छोटा सा बल्ब और उतना ही छोटा सा पॉइंट था, लेकिन उससे निकलने वाली रोशनी बहुत तेज थी।
फेलुदा ने हमारे कमरे की लाइट बंद कर दी और खिड़की पर हमारे साथ आ गई। ‘माधवलाल!’ उसने धीरे से कहा। मैंने भी पेड़ के नीचे इंतज़ार कर रहे उस आदमी को माधवलाल के रूप में पहचान लिया था, क्योंकि अंधेरे में भी मुझे उसकी पीली कमीज़ धुंधली-धुंधली दिखाई दे रही थी। लेकिन दूसरे आदमी को देखना नामुमकिन था। वह महितोष बाबू, उसका भाई, श्री सान्याल या कोई और हो सकता था।
टॉर्च बंद कर दी गई थी, लेकिन दोनों आदमी अभी भी पास खड़े होकर बातें कर रहे थे। थोड़ी देर बाद, पीली कमीज़ वाला आदमी दूर चला गया। टॉर्च की रोशनी फिर से चालू हुई और हम घर लौट आए। फेलुदा ने कुछ सेकंड इंतजार किया और फिर हमारी लाइट चालू कर दी।
लालमोहन बाबू शायद निजी तौर पर कोई जांच कर रहे थे। मैंने उन्हें चुपके से बरामदे में जाते और थोड़ी देर बाद वापस आते देखा।

‘तुमने क्या देखा? क्या वो दरवाजा अभी भी बंद है?’ फेलुदा ने पूछा। लालमोहन बाबू शर्मिंदा होकर हँसे। ‘हाँ,’ उन्होंने जवाब दिया। ‘क्या तुम्हें सच में लगा कि देवतोष बाबू माधवलाल से बात कर रहे थे?’
'हाँ। मैंने तुमसे कहा था कि मुझे उस पर भरोसा नहीं है। एक पागल आदमी पर भरोसा नहीं करना चाहिए। जहाँ मैं रहती हूँ, वहाँ एक पागल रहता था। उसे अक्सर सड़क के बीच में खड़े होकर गुजरती ट्राम और बसों पर पत्थर फेंकते देखा जाता था। सोचो, यह कितना खतरनाक था?'
‘बंद दरवाजे से क्या साबित हुआ?’
‘कि वह अभी-अभी नीचे नहीं गिरा।’
‘आप इतने निश्चित कैसे हो सकते हैं? क्या आपने आज उस कमरे से कोई आवाज सुनी है? आपको कैसे पता कि वह कमरा खाली नहीं है?’
लालमोहन बाबू काफी निराश दिखने लगे।
'फेलू बाबू, मैं आपके तरीकों का पालन करने और आपकी तरह ही काम करने की बहुत कोशिश करता हूँ, लेकिन किसी तरह... मुझसे सब कुछ गलत हो जाता है!'
'ऐसा इसलिए है क्योंकि आप उल्टी दिशा में काम करते हैं। आप पहले अपराधी को चुनते हैं, फिर उस पर अपराध का आरोप लगाने की कोशिश करते हैं। मैं अपराध करने वाले व्यक्ति की तलाश करने से पहले अपराध की प्रकृति को समझने की कोशिश करता हूं।'
क्या आप इस मामले में भी ऐसा ही कर रहे हैं?
‘बिल्कुल। इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं है।’
लेकिन आपने शुरुआत कहाँ से की थी?
‘कुरुक्षेत्र।’
इसके बाद लालमोहन बाबू ने कोई और सवाल पूछने की हिम्मत नहीं की। उस रात जब मैं सोने गया, तो मुझे नींद आने में कोई परेशानी नहीं हुई, क्योंकि मच्छरदानी बदल दी गई थी। लेकिन, आधी रात को अचानक एक चीख से मेरी नींद खुल गई। मैं चौंककर उठा तो देखा कि फेलुदा कमरे के बीचोंबीच आदित्यनारायण की तलवार पकड़े खड़ा था। खुली खिड़की से चांदनी अंदर आ रही थी, जिससे तलवार चमक रही थी। फेलुदा ने तलवार को टकटकी लगाकर देखा और जो शब्द उसने अभी-अभी बोले थे, उन्हें बहुत जोर से दोहराया। बस, इस बार उसने अपनी आवाज धीमी कर ली।
‘यूरेका! यूरेका!’ उसने कहा।

हजारों साल पहले, आर्किमिडीज ने भी यही बात कही थी जब उन्हें वह मिल गया था जिसकी उन्हें तलाश थी। यह बताना असंभव था कि फेलुदा ने क्या खोजा था।

ग्यारह

अगली सुबह, जब हम अपनी बेड टी खत्म कर चुके थे, श्री सान्याल हमारे कमरे में आ पहुँचे। इतनी सुबह उन्हें क्या चाहिए था? मैंने हैरानी से उनकी तरफ देखा, लेकिन फेलुदा ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्होंने हमारे मेहमान को बैठने के लिए कहते हुए कहा, 'हमें एक-दूसरे को ठीक से जानने का मौका ही नहीं मिला, है ना? महितोष बाबू के मित्र होने के नाते, आपके भी कई रोचक अनुभव रहे होंगे।'
श्री सान्याल मेज के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गए। 'जी हां। मैं माहितोष को पचास साल से जानता हूं, हमारे स्कूल के दिनों से।'
'एक बात पुछु तुमसे?'
‘महितोश के बारे में?’
नहीं, तोरित सेनगुप्ता के बारे में।
'हाँ?'
‘वह किस तरह का आदमी था? मेरा मतलब है, आपके मन में उसकी क्या छवि थी?’
‘वह बहुत अच्छे इंसान थे। मैंने उन्हें बुद्धिमान, मेहनती और बहुत धैर्यवान पाया।’
‘वह अपने काम में कैसा था?’
'शानदार। बिल्कुल शानदार।'
'हां, मुझे भी यही आभास हुआ।'
श्री सान्याल ने फेलुदा को एकटक देखा। उन्होंने सरल शब्दों में कहा, 'श्री मित्तर, मैं आपसे एक निवेदन करने आया हूँ।'
‘एक अनुरोध?’ फेलुदा ने सिगरेट देते हुए पूछा। श्री सान्याल ने सिगरेट ले ली और उसके जलने का इंतज़ार किया। मैंने उन्हें पहली बार सिगरेट पीते देखा। जवाब देने से पहले उन्होंने गहरी साँस ली। ‘हाँ। आपने पिछले तीन दिनों में बहुत कुछ देखा है,’ उन्होंने कहा। ‘आप आम लोगों से कहीं ज़्यादा समझदार हैं, इसलिए ज़ाहिर है कि आपने जो देखा है उससे अपने निष्कर्ष निकाले होंगे। आज शायद आपके यहाँ रहने का आखिरी दिन है। कोई नहीं जानता कि

आज क्या होने वाला है। आज जो भी हो, श्री मित्तर, अगर आप इसे अपने तक ही सीमित रखें तो मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा। मुझे यकीन है कि महितोष भी यही चाहता होगा। अगर आप बंगाल के किसी भी पुराने परिवार—खासकर ज़मींदारों— के इतिहास को देखें, तो मुझे यकीन है कि आपको उनके राज़ पता चल जाएँगे। सिन्हा-रॉय परिवार भी इसका अपवाद नहीं है। हालाँकि, मुझे कोई कारण नहीं दिखता कि जो तथ्य सामने आएँ उन्हें सार्वजनिक किया जाए। मैं यही अपील आपके दोस्त और आपके चचेरे भाई से भी कर रहा हूँ।’
‘श्री सान्याल,’ फेलुदा ने उत्तर दिया, ‘मैंने तीन दिनों तक महितोष बाबू के आतिथ्य का आनंद लिया है। मैं उनकी उदारता के लिए उनका बहुत आभारी हूँ। मैं कभी भी कलकत्ता वापस जाकर उनकी बदनामी नहीं कर सकता। हममें से कोई भी ऐसा नहीं कर सकता। मैं आपको वचन देता हूँ।’
श्री सान्याल ने चुपचाप सिर हिलाया। फिर फेलुदा ने एक और सवाल पूछा, शायद इसलिए कि वह खुद को रोक नहीं पाए। 'देवतोष बाबू का कमरा अभी भी बंद है। क्या आप इसका कारण बता सकते हैं?'
श्री सान्याल ने फेलुदा की ओर कुछ अजीब नज़र से देखा। 'श्री मित्तर, आज दिन के अंत तक आपको इसका कारण स्पष्ट हो जाएगा।'
'मेरा मानना है कि पुलिस अभी भी इस मामले पर काम कर रही है?'
'नहीं।'
‘क्या! क्यों नहीं?’
'खैर, किसी पर शक तो जा रहा है... लेकिन महितोष नहीं चाहता कि पुलिस उस व्यक्ति को किसी भी तरह से परेशान करे।'
‘आपका मतलब देवतोष बाबू से है?’
‘हां, मेरा मतलब और किससे हो सकता है?’
लेकिन अगर यह सच भी है, अगर उसने हत्या की भी है, तो उस पर सामान्य तरीके से आरोप नहीं लगाया जाएगा या उसे सजा नहीं दी जाएगी, है ना? मेरा मतलब है, उसकी चिकित्सीय स्थिति को देखते हुए?
'हां, शायद आप सही कह रहे हैं। फिर भी, खबर तो फैल ही जाएगी, है ना? महितोष ऐसा नहीं चाहता।'
‘क्या सिर्फ अपने परिवार की प्रतिष्ठा बचाने के लिए?’
'जी हां। जी हां, यही कारण है, श्रीमान मिटर। चलिए इसे यहीं छोड़ देते हैं, ठीक है?'

श्री सान्याल उठे और चले गए।
हम साढ़े आठ बजे निकले। पहले दिन की तरह आज भी दो जीपें थीं। एक जीप में फेलुदा, लालमोहन बाबू और मैं थे; दूसरी में महितोष बाबू, श्री सान्याल, माधवलाल और पर्वत सिंह नाम का एक कुली था। आज हमारे पास तीन राइफलें थीं। माधवलाल के पास, महितोष बाबू के पास और तीसरी फेलुदा के पास थी। फेलुदा ने खुद राइफल मांगी थी। माधवलाल से यह सुनकर कि उसने रिवॉल्वर से सांप को कैसे मारा था, महितोष बाबू ने कोई आपत्ति नहीं जताई। उन्होंने कहा था, 'आप जो चाहें ले सकते हैं। 375 कैलिबर की राइफल बाघ के लिए उपयुक्त रहेगी।' मुझे समझ नहीं आया कि वह संख्या क्या दर्शाती है, लेकिन मैं देख सकता था कि राइफल आकार में बेहद प्रभावशाली थी, और शायद वजन में भी।
दरअसल, मैं ही अकेला था जिसके पास हथियार नहीं थे। फेलुदा ने आज सुबह लालमोहन बाबू को तलवार सौंपते हुए कहा था, ‘इसे संभाल कर रखना। आज इस तलवार की एक अहम भूमिका है। जल्द ही तुम्हें समझ आ जाएगा कि मेरा क्या मतलब है।’ इसलिए लालमोहन बाबू उसे कसकर पकड़े हुए थे और उनके चेहरे पर दबी हुई उत्तेजना झलक रही थी।
आज सुबह जब हम उठे तो आसमान बिल्कुल साफ था। लेकिन अब फिर से बादल छाने लगे थे। सड़क कीचड़ भरी और फिसलन भरी होने के कारण जंगल तक पहुँचने में हमें ज़्यादा समय लग गया। हर ड्राइवर अपनी जीप को पिछली बार से आधा मील आगे जंगल में ले गया, लेकिन फिर आगे नहीं जा सका। माधवलाल ने कहा, 'कोई बात नहीं, मुझे रास्ता पता है। हमें एक नाला पार करके पंद्रह मिनट पैदल चलना होगा, तब जाकर मंदिर पहुँचेंगे।'
पत्तों की सरसराहट, ठंडी हवा और आसमान में कभी-कभार होने वाली गड़गड़ाहट के बीच हमने अपनी यात्रा शुरू की। जीप से उतरने से पहले फेलुदा ने अपनी बंदूक में कारतूस भर लिया। महितोष बाबू की बंदूक पर्वत सिंह के पास थी। जाहिर है, वह हमेशा अपने स्वामी के साथ शिकार अभियानों पर जाता था। कद में छोटा लेकिन मजबूत शरीर वाला पर्वत सिंह शारीरिक शक्ति में कोई कमी नहीं रखता था।
कुछ ही मिनटों में मुझे हिरणों का झुंड दिखाई दिया। अचानक मेरे दिल में खुशी की लहर दौड़ गई, लेकिन फिर डर से मैं उछल पड़ा। इस जंगल में कहीं— शायद ज़्यादा दूर नहीं—एक आदमखोर बाघ छिपा हुआ था। आम तौर पर, एक बाघ आसानी से बीस मील से ज़्यादा चल सकता है और शिकार की तलाश में एक जंगल से

दूसरे जंगल तक जा सकता है। लेकिन अगर वह घायल हो, तो शायद ज़्यादा दूर न चल पाए। वैसे भी, यहाँ का जंगल इतना बड़ा नहीं था। चाय बागानों और खेतों के लिए जंगल के बड़े-बड़े हिस्से साफ़ कर दिए गए थे। इसके अलावा, वैसे तो बाघ आमतौर पर दिन में छिपने की जगह से बाहर नहीं निकलते, लेकिन अगर दिन अंधेरा और बादलों से घिरा हो तो उनके निकलने की संभावना थी। यह बात मैंने आज सुबह ही फेलुदा से सीखी थी।
जल्द ही हम नाले के पास पहुँच गए। शायद एक दिन पहले तक यह काफी सूखा रहा होगा, लेकिन अब इसमें मधुर कलकल की आवाज़ आ रही थी। नाले के किनारे गीली रेत पर कई जानवरों के पदचिह्न थे। माधवलाल ने हिरण, जंगली सूअर और लकड़बग्घे के पदचिह्नों की ओर इशारा किया; लेकिन बाघ का कोई निशान नहीं था। हमने नाला पार किया और आगे बढ़ते रहे। मुझे दूर से एक हुदहुद पक्षी की आवाज़ सुनाई दी, एक मोर ने एक बार दहाड़ा, और जिन झाड़ियों से हम गुज़रे उनमें झींगुरों की आवाज़ आ रही थी। घास में हल्की सरसराहट की आवाज़ से मुझे पता चला कि छिपकलियाँ और अन्य छोटे सरीसृप हमारे पैरों तले कुचलकर मरने से बचने के लिए तेज़ी से हमारे रास्ते से हट रहे थे।
आज हमने जो रास्ता लिया, वह अलग था, लेकिन हमें उस जगह तक पहुँचने में ज़्यादा समय नहीं लगा जहाँ हम कल गए थे। वहाँ बैंगनी फूलों वाली झाड़ी थी। वहीं हमें तलवार मिली थी। माधवलाल चुपचाप आगे बढ़ा, और हम सबने भी वैसा ही करने की कोशिश की। दरअसल, हमारे पैरों की आवाज़ को दबाना उतना मुश्किल नहीं था, क्योंकि ज़मीन गीली थी और सूखे पत्ते नहीं थे।
टूटी ईंटों के ढेर नज़र आने लगे। हम कटी हुई देवी के मंदिर पहुँच गए थे। कोई नहीं बोला। माधवलाल मंदिर के सामने रुक गया। हम भी चुपचाप उसके पास रुक गए। चूंकि पिछले दिन मेरा पूरा ध्यान पीपल के पेड़ और दो ताड़ के पेड़ों पर था, इसलिए मैंने आसपास के अन्य बड़े पेड़ों पर ध्यान नहीं दिया था। अब ठंडी हवा उनकी पत्तियों से होकर बह रही थी, और पृष्ठभूमि में नाला अभी भी हल्की-हल्की लहरें मार रहा था।
फेलुदा ताड़ के पेड़ों की ओर चल पड़ा। महितोष बाबू भी तेज़ी से उसके पीछे- पीछे गया। ज़मीन में बना गड्ढा आज पहले से भी ज़्यादा पानी से भरा हुआ था।
थोड़ी देर बाद फेलुदा ने चुप्पी तोड़ी।
‘आदित्यनारायण ने अपना खजाना यहीं छिपाया था,’ उसने कहा। ‘लेकिन... वह कहाँ गया?’ महितोष बाबू ने कर्कश स्वर में पूछा।

'यह ज्यादा दूर नहीं गया है, जब तक कि कल हमारे जाने के बाद किसी ने इसे हटा न दिया हो।'
महितोष बाबू की आंखों में आशा की चमक आ गई।
‘क्या आपको सचमुच ऐसा लगता है? क्या आप निश्चित हैं?’ उसने उत्सुकता से पूछा। फेलुदा उसकी ओर मुड़ा और बोला, ‘महितोष बाबू, क्या आप हमें बता सकते हैं कि उस खजाने में क्या-क्या है? ज़मीन के नीचे वास्तव में क्या दबा हुआ था?’
महितोष बाबू का चेहरा उत्साह से लाल हो गया था। उनके माथे पर कुछ नसें उभर आई थीं।
‘मुझे नहीं पता, श्रीमान मित्तर, लेकिन मैं अनुमान लगा सकता हूँ,’ उन्होंने बड़ी मुश्किल से कहा। ‘मेरे पूर्वजों में से एक—यशवंत सिन्हा-रॉय— कूचबिहार रियासत में सेनापति थे। महाराजा द्वारा उन्हें दी गई धनराशि हमारे घर में रखी गई थी। उसमें एक हजार से अधिक चांदी के सिक्के थे, जो चार सौ साल पुराने थे। जब आदित्यनारायण ने इन्हें छिपाने का फैसला किया, तब उनकी उम्र साठ वर्ष से अधिक हो गई थी और वे मानसिक रूप से कमजोर होने लगे थे। वे बचकानी शरारतें करने लगे थे। उनकी मृत्यु के बाद कोई भी उन सिक्कों को नहीं ढूंढ पाया। अब, इतने वर्षों बाद, उनके सांकेतिक संदेश ने हमें बताया है कि वे कहाँ छिपे थे। श्रीमान मित्तर, मैं उन्हें दोबारा खोने का जोखिम नहीं उठा सकता। मुझे उन्हें ढूंढना ही होगा!’
फेलुदा ने महितोष बाबू से मुंह मोड़ा और मंदिर की ओर चलने लगा। मेरे पास से गुजरते हुए वह एक पल के लिए रुका और बोला, 'लो, टॉपशे, मेरी राइफल पकड़ो। मुझे नहीं लगता कि मुझे उस हॉल के अंदर इसकी ज़रूरत पड़ेगी। एक रिवॉल्वर ही काफी होगी।'
मेरे हाथ कांपने लगे, लेकिन मैंने खुद को संभाला और उससे राइफल ले ली। तब मुझे एहसास हुआ कि वह कितनी भारी थी।
फेलुदा आगे बढ़ा और एक बार फिर अंधेरे हॉल में प्रवेश किया। मैंने उसे टूटे हुए दरवाजे से गायब होने से पहले अपनी जेब में हाथ डालते हुए देखा। पांच सेकंड से भी कम समय में, हमने उसे दो बार गोली चलाते सुना। किसी ने कुछ नहीं कहा, लेकिन मुझे अपनी रीढ़ में सिहरन महसूस हुई। तभी मंदिर के अंदर से फेलुदा की आवाज़ आई: 'महितोष बाबू, क्या आप कृपया अपने संदेशवाहक को यहाँ भेज सकते हैं?'

पर्वत सिंह ने राइफल अपने स्वामी को सौंप दी और मंदिर में चला गया। कुछ ही क्षणों बाद, वह अपने हाथों में एक गंदा, कीचड़ से सना पीतल का घड़ा लिए बाहर आया। फेलुदा उसके पीछे-पीछे गया। महितोष बाबू अपने घड़े के वाहक की ओर दौड़ा।
‘किसने सोचा था कि कोबरा चांदी के सिक्कों की ओर आकर्षित होगा?’ फेलुदा ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘मैंने कल उसकी फुफकार सुनी थी। आज मैंने उसे उस घड़े के चारों ओर लिपटा हुआ पाया, मानो उसे कसकर गले लगा रहा हो!’
महितोष बाबू ने अपनी राइफल एक तरफ फेंक दी थी। मैंने देखा कि वह घड़े पर झपटा और उसमें हाथ डाला। जैसे ही उसने मुट्ठी भर सिक्के पकड़े हुए घड़ा बाहर निकाला, पास ही एक जानवर की आवाज़ सुनाई दी। वह एक भौंकता हुआ हिरण था। बंदर भी तुरंत उसके साथ शामिल हो गए, एक डाल से दूसरी डाल पर कूदते हुए लगातार शोर मचा रहे थे।
एक साथ कई घटनाएँ घटीं। अब भी, जब मैं इसके बारे में लिख रहा हूँ, तो मैं हिल गया हूँ और उलझन में हूँ। सबसे पहले, महितोष बाबू में एक उल्लेखनीय बदलाव आया। कुछ ही क्षण पहले, वह अपने खजाने को देखकर बहुत खुश लग रहे थे। अब, उन्होंने सिक्के गिरा दिए, उछल पड़े और तीन कदम पीछे हट गए, मानो उन्हें बिजली का झटका लगा हो। हम सब मूर्ति की तरह स्थिर हो गए। फेलुदा सबसे पहले बोले, लेकिन उनकी आवाज़ धीमी थी। 'टॉपशे,' उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा, 'उस पेड़ पर चढ़ो। तुम भी, लालमोहन बाबू। जल्दी करो!'
हम उस मशहूर पीपल के पेड़ के पास खड़े थे। मैंने राइफल फेलुदा को लौटा दी, पेड़ के बड़े खोखले तने में एक पैर रखा और एक डाल पकड़ ली। लगभग दस सेकंड में, मैं ज़मीन से दस फीट ऊपर था। लालमोहन बाबू ने भी बड़ी फुर्ती से मेरा अनुसरण किया, उन्होंने तलवार मुझे थमा दी थी। जल्द ही, वह मुझसे भी ऊँची डाल पर बैठ गए। बाद में उन्होंने हमें बताया कि बचपन में उन्होंने पेड़ पर चढ़ने का खूब अभ्यास किया था, लेकिन मुझे यह बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि वह चालीस साल की उम्र में भी ऐसा कर सकते हैं।
मैंने पेड़ की चोटी से आगे का दृश्य देखा। लालमोहन बाबू ने भी कुछ दृश्य देखा, फिर चुपचाप बेहोश हो गए। लेकिन उनके हाथ-पैर एक बड़ी शाखा से इतनी मजबूती से लिपटे हुए थे कि वे नीचे नहीं गिरे।
यह बात सबको स्पष्ट थी कि आसपास बाघ है। इसीलिए फेलुदा ने हमें रास्ते से हटने को कहा था। महितोष बाबू की प्रतिक्रिया सबसे चौंकाने वाली थी। मैंने

कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वह ऐसा व्यवहार करेगा। वह फेलुदा की ओर मुड़ा और दांत भींचते हुए गुस्से से बोला, 'श्री मित्तर, अगर आपको अपनी जान प्यारी है, तो तुरंत यहाँ से चले जाइए!'
‘चले जाऊं? मैं कहां जाऊं, माहितोष बाबू?’
दोनों व्यक्तियों के हाथों में राइफलें थीं। महितोष बाबू ने अपनी राइफल उठाई और उसे फेलुदा की ओर तान दिया।
‘जाओ!’ उसने फिर कहा। ‘जीप अभी भी वहाँ इंतज़ार कर रही है। यहाँ से निकल जाओ। मैं तुम्हें आदेश देता हूँ—’ वह अपनी बात पूरी नहीं कर सका। उसकी आवाज़ बाघ की दहाड़ में दब गई। ऐसा लगा जैसे एक नहीं, बल्कि पचास जंगली जानवर एक साथ चिल्ला रहे हों।
फिर मैंने मंदिर के पीछे खड़े पेड़ों की पत्तियों के बीच से पीले रंग की एक चमक देखी—जैसे कोई चलती हुई लौ। वह तेज़ी से लंबी घास और घनी झाड़ियों के बीच से गुज़री और धीरे-धीरे एक विशाल, धारीदार जानवर का रूप ले लिया: एक रॉयल बंगाल टाइगर। वह उस खुले मैदान की ओर बढ़ने लगी जहाँ बाकी लोग अभी भी खड़े थे।
महितोष बाबू ने अपनी बंदूक नीचे कर ली। उनके हाथ अनियंत्रित रूप से कांप रहे थे।
फेलुदा ने अपनी राइफल उठाई। वहाँ तीन और आदमी थे—शशांका सान्याल, माधवलाल और पर्वत सिंह। पर्वत सिंह ने अचानक छलांग लगाई और आँखों से ओझल हो गया। मैं बाकी दोनों को देख नहीं पाया, क्योंकि मेरी नज़रें फेलुदा और बाघ के बीच घूम रही थीं। बाघ अब मंदिर के पास खड़ा था। उसने अपने दाँत दिखाए और गुर्राया। इससे पहले उसे कभी इतने सारे शिकार चुनने का मौका नहीं मिला था।
फिर मैंने उसे रुकते और दुबकते हुए देखा। वह शायद एक सेकंड से भी कम समय में उछलकर हमला कर देता। मैंने इसके बारे में पढ़ा था। कभी-कभी बाघ— बैंग बैंग!
दो अलग-अलग राइफलों से लगभग एक साथ गोलियों की आवाज गूंजी। मेरे कान बजने लगे। एक पल के लिए तो मेरी दृष्टि भी धुंधली सी हो गई। लेकिन मैंने देखा कि बाघ के साथ क्या हुआ। वह हवा में उछला, फिर मानो किसी अदृश्य बाधा से टकराया, जिससे वह पलटी खाकर जमीन पर गिर पड़ा। वह वहीं गिरा जहाँ पीतल का घड़ा रखा था, उसकी पूंछ घड़े पर लगी जिससे वह शोर मचाते हुए पलट गया और

उसका सारा पानी बिखर गया। फिर बाघ चार सौ साल पुराने चांदी के सिक्कों से घिरा हुआ शांत पड़ा रहा।
फेलुदा ने धीरे से अपनी राइफल नीचे रख दी।
'यह मर गया है, महोदय,' माधवलाल ने प्रसन्नता भरे स्वर में घोषणा की।
'इसे किसने मारा? मुझे आश्चर्य है कि दोनों गोलियों में से किसने इसे मारा?' फेलुदा ने पूछा।
महितोष बाबू जवाब देने की हालत में नहीं थे। वे ज़मीन पर बैठे अपने हाथों से अपना सिर पकड़े हुए थे। उनकी राइफल उनके मित्र शशांक सान्याल ने छीन ली थी। दूसरी गोली उसी ने चलाई थी।
श्री सान्याल मृत बाघ के पास गए।
‘आइए और देखिए, श्री मिटर,’ उन्होंने आमंत्रित किया। ‘एक गोली उनके जबड़े के नीचे लगी और सिर से आर-पार हो गई; दूसरी गोली उनके कान के पास लगी। इनमें से कोई भी गोली उनकी जान ले सकती थी।’

बारह

दो गोलियों की आवाज सुनकर गांववाले दौड़ते हुए मौके पर पहुंच गए। अपने दुश्मन को मरा हुआ देखकर वे रोमांचित हो गए और अब बाघ को बांस के डंडों से बांधकर अपने गांव ले जाने की तैयारी करने लगे। इसमें कोई शक नहीं था कि यह आदमखोर बाघ ही था, क्योंकि उसके शरीर पर दो और गोलियों के निशान मिले थे: एक पिछले पैर पर और दूसरा जबड़े के पास। इन निशानों से साफ था कि बाघ ने जंगल में शिकार करने की अपनी स्वाभाविक क्षमता खो दी थी। इसके अलावा, उसके जबड़ों पर घने बाल इस बात का संकेत दे रहे थे कि वह वैसे भी बूढ़ा बाघ था। शायद यही एक कारण था कि वह आदमखोर बन गया था।
पर्वत सिंह लौट आया था और उसने अपने स्वामी को उठने और मंदिर की टूटी हुई सीढ़ियों में से एक पर बैठने में मदद की। महितोष बाबू अभी भी घबराए हुए लग रहे थे और बार-बार अपना चेहरा पोंछ रहे थे। लालमोहन बाबू को होश आ गया था और मेरी थोड़ी मदद से वह पेड़ से नीचे उतर आए। फिर उन्होंने शांति से तलवार वापस ले ली, मानो तलवार लेकर पेड़ पर चढ़ना उनका रोज़ का काम हो।
कुछ मिनटों की चुप्पी के बाद फेलुदा बोले, “महितोष बाबू, आप बेवजह चिंता कर रहे हैं। मैंने श्री सान्याल से वादा किया था कि मैं आपके किसी भी रहस्य का खुलासा नहीं करूंगा। किसी को कभी पता नहीं चलेगा कि आप शिकारी नहीं हैं और बंदूक को ठीक से पकड़ भी नहीं सकते। मुझे शुरू से ही शक था। लालमोहन बाबू के पत्र पर आपके हस्ताक्षर देखकर मुझे लगा कि आप बूढ़े हैं। इसलिए मुझे आश्चर्य होने लगा कि अगर आप स्थिर हाथ से लिख भी नहीं सकते, तो आप कैसे निशाना लगा सकते हैं। फिर मैंने सोचा कि शायद आपके हाथों में हाल ही में कोई समस्या आई हो और आपकी किताबों में लिखी सारी कहानियां सच हों। मुझे इस बात पर यकीन होने लगा था, लेकिन आपके भाई की कही एक बात ने मेरे मन में नए संदेह पैदा कर दिए। हां, मुझे पता है कि उसने जो कुछ कहा, उसमें से ज्यादातर बातें बेतुकी थीं, लेकिन मुझे नहीं लगा था कि वह सचमुच कोई कहानी गढ़ेगा। इसके विपरीत, अगर कोई सोचे तो उसकी कही बातें अक्सर बिल्कुल सही लगती थीं। वह जाहिर तौर पर जानता था कि आपने शिकार पर किताबें लिखी हैं और

यह सब झूठ पर आधारित है।” इससे वह बहुत दुखी हुआ, इसीलिए वह बार-बार युधिष्ठिर को झूठ बोलने के लिए मिली सजा के बारे में बात करता रहा। उसने मुझे यह भी बताया कि हर कोई तुम्हारे दादाजी जैसा नहीं हो सकता। हर कोई हथियार चलाना नहीं सीख सकता...
‘हाँ, वे कर सकते थे!’ महितोष बाबू ने बीच में ही टोकते हुए, हाँफते हुए और बहुत तेज़ी से बोलते हुए कहा। ‘जब मैं सात साल का था, तब मैंने पचास गज की दूरी से अपनी एयरगन से मैना और गौरैया को मारा था। लेकिन…’ उन्होंने पीपल के पेड़ की ओर देखा। ‘एक दिन हम यहाँ पिकनिक मनाने आए थे, और मैं उस पेड़ पर चढ़ गया। दरअसल, मैं उसी डाल पर बैठा था जहाँ थोड़ी देर पहले तुम्हारा चचेरा भाई बैठा था, तभी अचानक मेरे भाई ने कहा कि उसे एक बाघ आता हुआ दिखाई दे रहा है। मैं बाघ को देखने के लिए नीचे कूद गया, और—’
“—क्या तुम्हारी बांह टूट गई?”
श्री सान्याल आगे बढ़े और बोले, 'यह एक जटिल फ्रैक्चर था। यह कभी ठीक से ठीक नहीं हुआ।'
‘मैं समझ गया। फिर भी आप शिकारी कहलाना चाहते थे, सिर्फ इसलिए कि यह आपके परिवार की परंपरा थी? तो आप यहाँ से चले गए और असम और उड़ीसा चले गए जहाँ आपको कोई नहीं जानता था? श्री सान्याल ने ही उन सभी जानवरों को मारा था, लेकिन सभी को यकीन था कि आप अपने पूर्वजों के योग्य उत्तराधिकारी हैं। क्या यह सही है, महितोष बाबू?’
‘हां,’ महितोष बाबू ने गहरी सांस लेते हुए कहा, ‘बिल्कुल सही। शशांका ने अपने दोस्त के लिए जो किया वह अविश्वसनीय है। वह मेरे परिवार में किसी से भी कहीं बेहतर शिकारी है।’
लेकिन हाल ही में... क्या आप दोनों के बीच दूरियां बढ़ रही थीं?
दोनों आदमी चुप रहे। फेलुदा ने आगे कहा, 'महितोष सिन्हा-रॉय की किताबें छपने से पहले मैंने उनका नाम तक नहीं सुना था। और मुझे यकीन है कि हजारों लोगों ने भी नहीं सुना होगा। लेकिन जब ये किताबें आईं, तो सिन्हा-रॉय एक मशहूर नाम बन गए, है ना? उनकी तारीफ हुई, उनकी प्रशंसा हुई, यहां तक कि उन्हें पूजा जाने लगा। और उनकी शोहरत किस पर आधारित थी? सिर्फ झूठ पर। शशांक सान्याल का नाम कोई नहीं जानता था। कोई कभी नहीं जानेगा। श्री सान्याल, आपको इस बात का बुरा लगने लगा था, है ना? आपने अपने दोस्त के लिए बहुत कुछ किया था, लेकिन शायद अब एक सीमा तय करने का समय आ गया था? हमने

अपनी पहली रात को महितोष बाबू को किसी से बहुत सख्ती से बात करते सुना था। मुझे लगता है कि वह आपसे ही बात कर रहे थे। आप दोनों के बीच लगभग हर बात पर मतभेद होने लगे थे, है ना?'
दोनों में से किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। फेलुदा कुछ क्षणों तक महितोष बाबू को टकटकी लगाकर देखता रहा।
‘ठीक है,’ उसने कहा, ‘मैं मौन को सहमति मान लूंगा। लेकिन एक और बात है। मुझे लगता है कि इसका भी एकमात्र उत्तर मौन ही है।’
माहितोष बाबू ने फेलुदा की ओर घबराई हुई नजर से देखा।
‘अब मैं तोरित सेनगुप्ता की बात कर रहा हूँ,’ फेलुदा ने आगे कहा। ‘तुमने कभी खुद एक पंक्ति भी नहीं लिखी, ठीक वैसे ही जैसे तुमने कभी किसी जानवर को नहीं मारा। तुमने अपनी पांडुलिपि के बारे में कुछ कहा था, जिससे प्रेरित होकर मैं तुम्हारे अध्ययन कक्ष में उसे ढूंढने गया। लेकिन मुझे उस पर तुम्हारी लिखावट का कुछ भी नहीं मिला। तुम बस श्री सेनगुप्ता को अपनी कहानियाँ सुनाते थे। उन्होंने ही उन्हें खूबसूरती से लिखा था। वे उनके शब्द थे, उनकी भाषा थी, उनकी शैली थी; फिर भी, हर कोई उन्हें तुम्हारा ही समझता था, और तुम्हें एक प्रतिभाशाली लेखक के रूप में और भी प्रशंसा मिली। हाँ, यह सच है कि तुमने उन्हें अच्छा वेतन दिया और वे यहाँ बड़े आराम से रहते थे। लेकिन वे कब तक किसी और को अपनी प्रतिभा, अपनी मेहनत का श्रेय लेते हुए देखते रह सकते थे? रचनात्मक क्षमता वाला हर व्यक्ति अपने प्रयासों की सराहना देखना चाहता है। अगर वे तुम्हारे लिए काम करते रहते, तो उनका नाम कभी प्रसिद्ध नहीं हो पाता। निराश और हताश होकर, वे शायद जाने की सोच रहे थे, लेकिन अचानक तुम्हारी नज़र आदित्यनारायण द्वारा छोड़ी गई उस पहेली पर पड़ी, और श्री सेनगुप्ता ने उसे देख लिया।’ हो सकता है कि उसे आपके दादाजी के कागजातों में उन सिक्कों के बारे में पहले ही जानकारी मिल गई हो; इसलिए उसे पता था कि खजाने में क्या है। उसने पहेली सुलझा ली और खजाना लेकर जाने का फैसला किया। उसने उसे ढूंढ भी लिया... लेकिन फिर हालात बेहद बिगड़ गए।
महितोष बाबू बड़ी मुश्किल से उठ खड़े हुए। उन्होंने कहा, “जी हाँ, श्री मित्तर, आपने जो कुछ भी कहा है, वह बिल्कुल सही है। ये सब बातें सुनकर मुझे बहुत दुख हो रहा है, लेकिन मुझे यह बताइए: तोरित को किसने मारा? हो सकता है कि वह मेरे किए पर मुझसे नाराज़ रहा हो—यहाँ तक कि मुझसे नफ़रत भी करता हो

— लेकिन कौन उससे इतनी नफ़रत कर सकता था? मुझे तो किसी का नाम नहीं पता। और न ही मैं यह सोच सकता हूँ कि उस रात जंगल में और कौन आया होगा।”
'शायद मैं इसमें आपकी मदद कर सकता हूँ।'
महितोष बाबू चहलकदमी करने लगे थे। फेलुदा की बात सुनकर वे अचानक रुक गए और पूछा, 'क्या आप कर सकते हैं?'
फेलुदा ने श्री सान्याल की ओर मुड़कर कहा, 'क्या आपने उस रात ट्रॉफी रूम से विनचेस्टर राइफल नहीं उठाई थी और यहाँ नहीं आए थे, श्री सान्याल? मैंने उसकी बट पर मिट्टी के निशान देखे थे।'
शायद शिकारी होने की वजह से उनके हौसले बुलंद हो गए थे। श्री सान्याल के चेहरे पर कोई भाव नहीं था। उन्होंने शांत स्वर में पूछा, 'अगर मैंने ऐसा किया भी तो क्या हुआ, श्री मित्तर? आप असल में कहना क्या चाह रहे हैं?' फेलुदा उतने ही शांत रहे। उन्होंने कहा, ‘मैं यह बिल्कुल नहीं कह रहा कि तुम छिपे हुए खजाने की तलाश में आए थे। तुम अपने मित्र के प्रति वफादार थे और आज भी हो। तुम उसे कभी धोखा नहीं देते। लेकिन क्या यह सच नहीं है कि तुम्हें पता था कि श्री सेनगुप्ता ने पहेली सुलझा ली थी?’
‘जी हां,’ श्री सान्याल ने शांत भाव से उत्तर दिया, ‘मैंने किया। दरअसल, तोरित ने मुझे खजाने का आधा हिस्सा देने की पेशकश की थी क्योंकि उसे लगा कि हम दोनों एक ही तरह से वंचित हो रहे हैं। लेकिन मैंने मना कर दिया। इसके अलावा, मैंने उसे कई बार जंगल में न जाने के लिए कहा था, क्योंकि वहां आदमखोर बाघ था। लेकिन उस रात, जब मैंने उसकी मशाल की रोशनी देखी, तो मुझे उसके पीछे-पीछे यहां आना पड़ा। हां, मैंने ट्रॉफी रूम से वह राइफल ली थी। जब मैं यहां पहुंचा, तो मैंने देखा कि उसने जमीन खोदी थी और वह घड़ा मिला था, लेकिन उसका कोई निशान नहीं था। फिर मैंने चारों ओर गौर से देखा, और घास पर खून और पंजों के निशान देखे। इसलिए मैंने जल्दी से घड़ा मंदिर के अंदर रख दिया, और निशानों का पीछा करते हुए बांस के झुरमुट तक गया। फिर... बिजली चमकी, और मैंने बाघ को तोरित के शरीर पर दुबका हुआ देखा। अंधेरा इतना था कि साफ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन मैंने उस पर गोली चलाई, और उसे भगा दिया। मुझे पता था कि मैं तोरित की मदद के लिए कुछ नहीं कर सकता। बहुत देर हो चुकी थी। हालांकि...’ उन्होंने बोलना बंद कर दिया।

लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती, है ना? कृपया मुझे आपकी कहानी पूरी करने दीजिए। अगर मैं कुछ गलत कहूँ तो मुझे सुधार दीजिए। मैं सिर्फ अनुमान ही लगा सकता हूँ।
'अचे से।'
‘कल रात तुम माधवलाल से बात कर रहे थे, है ना?’
श्री सान्याल ने इस बात से इनकार नहीं किया। फेलुदा ने एक और सवाल पूछा: 'क्या आप उसे बाघ के लिए चारा रखने को कह रहे थे? उस पेड़ के ऊपर उन गिद्धों को देखो? मुझे लगता है कि वे वहाँ इसलिए हैं क्योंकि उसके नीचे कोई मरा हुआ जानवर पड़ा है।'
श्री सान्याल ने बुदबुदाते हुए कहा, 'एक बछड़ा।'
‘इसका मतलब है कि आप चाहते थे कि बाघ आज, जब हम यहाँ थे, बाहर आए, ताकि आप कम से कम कुछ लोगों को दिखा सकें कि असली शिकारी आप हैं, न कि आपका दोस्त। क्या यह सही है?’
श्री सान्याल ने चुपचाप सिर हिलाया। फेलुदा के कुछ और कहने से पहले ही महितोष बाबू आगे आए और फेलुदा के कंधे पर हाथ रख दिया।
‘श्री मिटर,’ उसने विनती करते हुए कहा, ‘मैं आपको कुछ देना चाहता हूँ। कृपया मना न करें।’
'तुम किस बारे में बात कर रहे हो?'
‘ये सिक्के। ये खजाना। आप इसके कुछ हिस्से के हकदार हैं। कृपया मुझे दे दीजिए—’
फेलुदा ने महितोष बाबू की ओर देखते हुए मुस्कुराया। उसने कहा, 'नहीं, मुझे तुम्हारे चांदी के सिक्के नहीं चाहिए, लेकिन मैं अपने साथ कुछ ले जाना चाहता हूँ।'
'यह क्या है?'
‘आदित्यनारायण की तलवार।’
लालमोहन बाबू तुरंत फेलुदा के पास गए और उन्हें तलवार सौंप दी।
‘क्या!’ महितोष बाबू आश्चर्यचकित होकर बोले। ‘आप इन अनमोल सिक्कों के बदले वह पुरानी तलवार लेना पसंद करेंगे?’
'हां। एक तरह से, यह तलवार भी अनमोल है। यह कोई साधारण तलवार नहीं है, महितोष बाबू। नहीं, मेरा मतलब सिर्फ इससे जुड़े इतिहास से नहीं है। इसमें कुछ और भी है।'

‘आपका मतलब टोरिट की हत्या से संबंधित किसी चीज़ से है?’
नहीं। श्री सेनगुप्ता की हत्या नहीं हुई थी।
‘क्या! तुम्हारा मतलब है कि उसने आत्महत्या कर ली?’
नहीं, यह आत्महत्या भी नहीं थी।
‘तो फिर आखिर बात क्या थी? तुम पहेलियों में क्यों बात कर रहे हो?’ महितोष बाबू ने अधीरता से कहा, उनकी आवाज एक बार फिर सख्त हो गई थी।
नहीं, नहीं, मैं पहेलियों में बात नहीं कर रहा हूँ। मुझे समझाने दीजिए कि क्या हुआ था। हम हत्यारे की तलाश में इतने व्यस्त थे कि किसी को भी स्पष्ट उत्तर का ख्याल ही नहीं आया। श्री सेनगुप्ता ने तलवार खुद ही निकाली थी। 'में क्यों?'
क्योंकि उसे जमीन खोदने के लिए किसी चीज की जरूरत थी। उसके पास फावड़ा ढूंढने का समय नहीं था। वह तलवार पास ही थी, इसलिए उसने उसे उठा लिया।
'और तब?'
मैं उस पर आ रहा हूँ। लेकिन उससे पहले, मैं आपको दिखाना चाहूँगा कि इसमें क्या खास बात है।
फेलुदा रुका और हाथ में खुली तलवार लिए श्री सान्याल की ओर बढ़ने लगा।
श्री सान्याल बहादुर तो थे, लेकिन फेलुदा के करीब आते ही वे बेचैन हो गए।
लेकिन फेलुदा ने उन्हें चोट नहीं पहुंचाई। उसने बस अपना हाथ बढ़ाया ताकि लोहे की धार श्री सान्याल के हाथ में पकड़ी बंदूक की नोक के करीब पहुंच सके। एक पल बाद, धातु के दोनों टुकड़े आपस में टकराए और हल्की सी आवाज हुई।
‘हे भगवान, यह क्या है? चुंबक?’ श्री सान्याल चिल्ला उठे।
'हां, अब यह एक चुंबक बन गई है। मेरा मतलब तलवार से है, आपकी बंदूक से नहीं। मैं आपको बता दूं कि जब मैंने इस तलवार को पहली बार देखा था, तो यह अन्य तलवारों से अलग नहीं थी। इसके पास धातु के कई टुकड़े पड़े थे, लेकिन वे इसकी धार से चिपक नहीं रहे थे। यह उसी रात चुम्बकित हो गई जिस रात श्री सेनगुप्ता की मृत्यु हुई थी।'
‘यह सब कैसे हुआ?’ महितोष बाबू ने पूछा। हम सभी बेसब्री से फेलुदा का जवाब सुनने का इंतजार कर रहे थे।
फेलुदा ने आगे बताया, “अगर बिजली गिरने के समय किसी व्यक्ति के हाथ में धातु का कोई टुकड़ा हो, तो वह धातु चुम्बकित हो जाती है। इतना ही नहीं, वह बिजली को अपनी ओर आकर्षित भी कर सकती है। मुझे लगता है उस रात कुछ ऐसा हुआ

था: श्री सेनगुप्ता के ज़मीन खोदने का काम खत्म करते ही बारिश शुरू हो गई। उन्होंने घड़ा तो उठा लिया, लेकिन उसे वहीं छोड़ना पड़ा। मुझे लगता है कि फिर वे भीगने से बचने के लिए उस पीपल के पेड़ की ओर भागे। उनके हाथ में तलवार थी, शायद उन्हें इसका एहसास भी नहीं था। कुछ ही सेकंड बाद बिजली पेड़ पर गिरी। बिजली के प्रभाव से श्री सेनगुप्ता ज़मीन से ऊपर उठ गए और एक तरफ जा गिरे... गिरते समय तलवार की नोक उनके कपड़ों को भेद गई और उनके शरीर में गहरा घाव कर दिया, यह सब संयोगवश हुआ। उन्हें किसी ने नहीं मारा। मेरा मानना है कि गिरने से पहले ही उनकी मृत्यु हो चुकी थी। फिर बाघ ने उन्हें ढूंढ लिया।”
महितोष बाबू बुरी तरह कांप रहे थे। उन्होंने ऊपर देखा और पीपल के पेड़ को घूरने लगे।
‘इसीलिए... अब समझ में आया!’ उसने रुंधे हुए स्वर में कहा। ‘मैं तो इतने समय से यही सोच रहा था कि वह पेड़ अचानक इतना बूढ़ा क्यों हो गया!’
आज हम कलकत्ता वापस जा रहे थे। सूरज खूब चमक रहा था, लेकिन हाल ही में हुई बारिश के कारण मौसम सुहावना था। हमने सामान पैक कर लिया था और अपने कमरे में बैठे थे। देवतोष बाबू का कमरा खुला हुआ था। मुझे बीच-बीच में उनकी आवाज़ सुनाई दे रही थी। लालमोहन बाबू पेड़ से उतरते समय घुटने में चोट लगा बैठे थे। वे उस पर पट्टी लगा रहे थे, तभी एक नौकर सिर पर स्टील का बक्सा लिए हुए आया। उसने बक्सा ज़मीन पर रखा और कहा कि इसे महितोष बाबू ने भेजा है। फेलुदा ने बक्सा खोला और उसमें एक सुंदर बाघ की खाल निकली, जो बहुत सावधानी से पैक की गई थी। साथ में एक पत्र भी था। उसमें लिखा था, 'प्रिय श्री मित्तर, मैं आपको यह बाघ की खाल अपनी कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में दे रहा हूँ। यदि आप इसे स्वीकार करें तो मुझे बहुत सम्मान होगा। इस बाघ को मेरे मित्र शशांक सान्याल ने 1957 में संबलपुर के पास एक जंगल में मारा था।' लालमोहन बाबू ने पत्र पढ़ा और कहा, 'अरे, तो तुम्हें तलवार और यह चमड़ा दोनों मिल जाएंगे!'
'नहीं, लालमोहन बाबू। मैं आपको बाघ की खाल भेंट करने जा रहा हूँ।'
‘मुझसे? क्यों?’
आपकी इस असाधारण उपलब्धि के लिए। मैंने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देखा जो पेड़ की चोटी पर बेहोश हो जाए और फिर भी बिना गिरे वहीं टिका रहे। मुझे

तो यह बिल्कुल भी संभव नहीं लगता था। लेकिन आपने साबित कर दिया कि यह किया जा सकता है!
लालमोहन बाबू ने हाथ हिलाकर बात को टाल दिया।
‘क्या मैंने आपको बताया कि मैं बेहोश क्यों हुई थी? ये तो बस मेरी कल्पना की वजह से हुआ था, फेलू बाबू। जब आपने बाघ का ज़िक्र किया, तो आपको पता है मैंने क्या देखा? मैंने एक जलती हुई मशाल देखी, जिसकी नारंगी लौ आसमान की ओर उठ रही थी। उसके बीचोंबीच एक भयानक राक्षस बैठा था, जो डरावने चेहरे बना रहा था, और मुझे इंजनों की गर्जना सुनाई दे रही थी। एक विमान उड़ान भरने ही वाला था... और मुझे पता था कि वो मुझ पर ही उतरेगा! अरे, इसके बाद मैं क्या कर सकती थी, सिवाय अपनी आँखें बंद करके बेहोश हो जाने के?’

□□□ □□□□□

ग्राम: घुर्घुटिया डाकघर, प्लासी, जिला: नादिया, 3 नवंबर 1974, प्रति: श्री प्रदोष सी. मित्तर, प्रिय श्री मित्तर, मैं आपको अपने घर आमंत्रित करने के लिए लिख रहा/रही हूँ। मैंने आपके काम के बारे में बहुत कुछ सुना है और आपसे व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहता/चाहती हूँ। आपको इस विशेष समय पर बुलाने का एक विशेष कारण है। आपको आगमन पर विवरण पता चल जाएगा। यदि आप एक तिहत्तर वर्षीय व्यक्ति का यह निमंत्रण स्वीकार कर सकते हैं, तो कृपया तुरंत लिखित रूप में अपनी स्वीकृति की पुष्टि करें। घुर्घुटिया पहुँचने के लिए, आपको प्लासी में उतरना होगा और वहाँ से साढ़े पाँच मील दक्षिण की ओर यात्रा करनी होगी। सियालदह से कई ट्रेनें चलती हैं, जिनमें से यूपी लालगोला पैसेंजर दोपहर 1:58 बजे प्रस्थान करती है और प्लासी शाम 6:11 बजे पहुँचती है। मैं स्टेशन पर आपके लिए किसी को लाने का इंतज़ाम करूँगा। आप मेरे घर पर रात बिता सकते हैं और अगली सुबह 10:30 बजे उसी ट्रेन से कलकत्ता जा सकते हैं। मुझे आपके जवाब का इंतज़ार रहेगा। शुभकामनाओं सहित, आपका सादर, कालिकिंकर मजूमदार
मैंने वह पत्र फेलुदा को वापस सौंप दिया और पूछा, 'क्या यह वही प्लासी है जहां वह प्रसिद्ध युद्ध लड़ा गया था?'
जी हां। बंगाल में प्लासी जैसा दूसरा कोई स्थान नहीं है, प्यारे बच्चे। लेकिन अगर तुम्हें लगता है कि उस ऐतिहासिक युद्ध के कोई सबूत अभी भी उस जगह पर बचे हैं, तो तुम बहुत बड़ी गलती कर रहे हो। वहां अब कोई निशान नहीं बचा है, यहां तक कि सिराज-उद-दौला के समय में जंगल में खड़े पलाश के पेड़ भी नहीं। प्लासी नाम इन्हीं पेड़ों से आया है। क्या तुम्हें यह पता था? मैंने सिर हिलाया। 'क्या तुम जाओगे, फेलुदा?'
फेलुदा ने कुछ सेकंड तक उस पत्र को घूर कर देखा।
‘मुझे आश्चर्य है कि एक बूढ़ा आदमी मुझसे क्यों मिलना चाहता है,’ उसने सोच-विचार करते हुए कहा। ‘मना करना ठीक नहीं लगता। सच कहूँ तो, मुझे बहुत उत्सुकता है। वैसे, क्या आप कभी सर्दियों में किसी गाँव गए हैं? क्या आपने देखा है कि सुबह और शाम को खुले खेतों में कोहरा कैसे छा जाता है? बस पेड़ों के तने और सिर के ऊपर का थोड़ा सा हिस्सा ही दिखाई देता है। अंधेरा अचानक छा जाता है, और बहुत ठंड हो जाती है... मैंने यह सब सालों से नहीं देखा है। चलो, मेरे लिए एक पोस्टकार्ड ले आओ, टॉपशे।’

श्री मजूमदार को बताया गया था कि हम 12 नवंबर को आएंगे। फेलुदा ने यह तारीख इसलिए चुनी क्योंकि कलकत्ता से पत्र आने में कम से कम तीन दिन लगेंगे।
हमने 365 अप लालगोला पैसेंजर ट्रेन ली और शाम 6:30 बजे प्लासी पहुँचे। ट्रेन से ही मुझे समझ आ गया कि फेलुदा का अंधेरा जल्दी छा जाने का क्या मतलब था। ढलते सूरज की आखिरी किरणें धान के खेतों से पलक झपकते ही गायब हो गईं। गेट पर कलेक्टर को टिकट सौंपकर जब हम स्टेशन से निकले, तब तक सारी बत्तियाँ जल चुकी थीं, हालाँकि आसमान में हल्की लालिमा अभी भी बाकी थी। बाहर खड़ी कार श्री मजूमदार की ही होनी चाहिए थी। मैंने ऐसी कार पहले कभी नहीं देखी थी। फेलुदा ने कहा कि शायद उन्होंने बचपन में एक-दो कारें देखी होंगी। उन्हें बस इतना पता था कि यह एक अमेरिकी कार थी। इसका रंग कभी गहरा लाल रहा होगा, लेकिन अब कई जगहों से पेंट उखड़ चुका था। बोनट पर भी जगह-जगह धब्बे थे और वह पुरानी लग रही थी। इन सब के बावजूद, कार में कुछ खास बात थी। मैं विस्मय से भर गया।
ऐसी कार में तो वर्दीधारी ड्राइवर होना चाहिए था। जो आदमी कार से टेक लगाकर सिगरेट पी रहा था, उसने धोती और कमीज पहनी हुई थी। हमें देखते ही उसने सिगरेट फेंक दी और सीधा खड़ा हो गया। उसने पूछा, 'श्री मजूमदार से मिलने आए हो?'
'हां, घुर्घुतिया के लिए।'
'बहुत खूब, महोदय। कृपया इधर आइए।'
ड्राइवर ने हमारे लिए दरवाज़ा खोला और हम चालीस साल पुरानी कार में बैठ गए। फिर वह कार के आगे जाकर हैंडल घुमाया, जिससे इंजन चालू हो गया। वह स्टीयरिंग व्हील के पीछे बैठा और गाड़ी चलाने लगा। हम आराम से बैठ गए, लेकिन सड़क गड्ढों से भरी होने और सीट के स्प्रिंग पुराने होने के कारण हमारा आराम ज़्यादा देर तक नहीं टिक पाया। हालांकि, प्लासी के मुख्य कस्बे को पार करके ग्रामीण इलाके में पहुँचने पर नज़ारा इतना खूबसूरत हो गया कि मुझे कोई असुविधा महसूस नहीं हुई। अभी पूरी तरह अंधेरा नहीं हुआ था और मैं बड़े-बड़े धान के खेतों के पार पेड़ों से घिरे छोटे-छोटे गाँव देख पा रहा था। उनके बीच, ज़मीन से धुंध उठ रही थी और ज़मीन से कुछ फीट ऊपर धुएँ के कंबल की तरह फैली हुई थी। मन में यही भाव आया, 'बिल्कुल तस्वीर जैसा सुंदर'।

इस तरह की जगह पर एक विशाल, पुराना महल देखकर मुझे बहुत हैरानी हुई। यात्रा शुरू करने के दस मिनट बाद ही मुझे एहसास हुआ कि हम निजी ज़मीन से गुज़र रहे हैं, क्योंकि वहाँ आम, जामुन और कटहल के पेड़ लगे हुए थे। फिर सड़क दाईं ओर मुड़ गई। हम एक टूटे-फूटे और वीरान मंदिर के पास से गुज़रे और अचानक हमारे सामने एक विशाल, सफ़ेद, काई से ढका हुआ द्वार आ गया, जिसके ऊपर नौबतखाना (संगीत कक्ष) था। द्वार से गुज़रने से पहले चालक ने तीन बार हॉर्न बजाया। महल तुरंत नज़र आ गया।
आसमान से लाल रंग के आखिरी निशान भी गायब हो चुके थे, और उसकी जगह गहरा बैंगनी रंग छा गया था। अंधेरा घर आसमान के सामने एक विशाल चट्टान की तरह खड़ा था। हम गाड़ी से उतरे और ड्राइवर के पीछे-पीछे चले। जैसे-जैसे हम करीब आते गए, मुझे एहसास हुआ कि पूरा घर किसी संग्रहालय में रखा जा सकता है। उसकी दीवारें पूरी तरह से नम थीं, कई जगहों से प्लास्टर उखड़ गया था, और खुली ईंटों की दरारों से छोटे-छोटे पौधे उग आए थे। हम मुख्य दरवाजे के सामने रुक गए।
'इस इलाके में किसी के पास बिजली नहीं है, है ना?' फेलुदा ने पूछा।
‘जी नहीं, महोदय। लगभग तीन साल से हमें सिर्फ वादे ही सुनने को मिले हैं।
लेकिन अभी तक कुछ भी नहीं हुआ है,’ ड्राइवर ने जवाब दिया।
मैंने ऊपर देखा। जहाँ मैं खड़ा था, वहाँ से पहली मंज़िल की कई खिड़कियाँ दिखाई दे रही थीं। लेकिन हर कमरा अँधेरे में डूबा हुआ था। हमारे दाहिनी ओर, कुछ झाड़ियों के पीछे, एक छोटी सी झोपड़ी में हल्की रोशनी टिमटिमा रही थी। शायद वहाँ कोई माली या चौकीदार रहता होगा। मैं चुपचाप काँप उठा। ये कैसी जगह थी? शायद फेलुदा को आने से पहले और जानकारी ले लेनी चाहिए थी।
लालटेन की रोशनी दरवाजे से अंदर आ रही थी। तभी एक बूढ़ा नौकर दरवाजे पर प्रकट हुआ। ड्राइवर शायद गाड़ी खड़ी करने गया था। नौकर ने हमारी तरफ़ हल्के से भौंहें चढ़ाकर देखा और फिर बोला, 'अंदर आइए।' हम उसके पीछे-पीछे अंदर चले गए।
इसमें कोई शक नहीं था कि घर बहुत बड़े इलाके में फैला हुआ था। लेकिन अंदर सब कुछ आश्चर्यजनक रूप से छोटा लग रहा था। दरवाजे ऊंचे नहीं थे, खिड़कियां कलकत्ता के किसी भी घर की खिड़कियों से आधी थीं, और अगर मैं अपना हाथ उठाता तो लगभग छत को छू सकता था। 'यह घर साफ तौर पर किसी जमींदार का था,' फेलुदा ने

कहा। 'लगभग दो सौ साल पहले बंगाल के गांवों में जमींदारों द्वारा बनाए गए सभी घर इसी तरह के बने होते थे।'
हम एक लंबे गलियारे को पार करके दाईं ओर मुड़े और सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने लगे। पहली मंजिल पर पहुँचते ही मेरी नज़र एक अजीबोगरीब चीज़ पर पड़ी। 'इसे "ढका हुआ दरवाज़ा" कहते हैं। यह एक तरह का गुप्त दरवाज़ा है,' फेलुदा ने मुझे बताया। 'इन्हें चोरों और डाकुओं को अंदर आने से रोकने के लिए बनाया गया था। अगर आप इसे बंद कर देते हैं, तो यह सीधा खड़ा रहना बंद कर देता है। फिर यह अपने आप मुड़कर तिरछे होकर हमारे सिर के ऊपर एक तरह की छत बना लेता है। इस तरह ऊपर चढ़ने की कोशिश करने वाला कोई भी व्यक्ति अंदर नहीं आ पाता। दरवाज़े में ये छेद देखो? घुसपैठियों से लड़ने के लिए इन छेदों से भाले निकाले जाते थे।'
सौभाग्यवश, दरवाजा अब पूरी तरह खुला हुआ था। हम एक और लंबे गलियारे को पार करने लगे। गलियारे के अंत में दीवार में बने एक आले में एक तेल का दीपक जल रहा था। नौकर ने उस आले के बगल वाला दरवाजा खोला और हमें अंदर जाने दिया। जिस कमरे में हम दाखिल हुए, वह काफी बड़ा था। अगर उसमें इतना सारा फर्नीचर न होता, तो शायद वह और भी बड़ा लगता। लगभग आधा कमरा एक विशाल पलंग से भरा हुआ था। इस पलंग के बाईं ओर एक मेज और एक संदूक था। इनके अलावा, तीन कुर्सियाँ, एक अलमारी और छत तक पहुँचने वाली किताबों की अलमारियाँ थीं। हर अलमारी किताबों से भरी हुई थी। एक बूढ़ा आदमी पलंग पर लेटा हुआ था, कंबल उसकी ठुड्डी तक ओढ़ा हुआ था। मोमबत्ती की टिमटिमाती रोशनी में मैंने देखा कि सफ़ेद-काली दाढ़ी और मूंछों के बीच से वह हमारी ओर मुस्कुरा रहा था। उन्होंने कहा, 'कृपया बैठ जाइए।'
‘धन्यवाद। ये मेरे चचेरे भाई तपेश हैं। मैंने इनके बारे में आपको लिखा था,’ फेलुदा ने कहा। श्री मजूमदार फिर मुस्कुराए और सिर हिलाया। मैंने देखा कि उन्होंने मेरे नमस्कार के जवाब में हाथ नहीं जोड़े।
हमने बिस्तर के सबसे पास वाली कुर्सियाँ ले लीं।
श्री मजूमदार ने हल्के-फुल्के अंदाज में कहा, 'मेरे पत्र ने आपको जरूर उत्सुक कर दिया होगा।'
'हां, बिल्कुल। वरना मैं इतनी दूरी तय करके कभी नहीं आता।'
‘अच्छा।’ श्री मजूमदार सचमुच प्रसन्न दिखे। ‘अगर आप नहीं आते, तो मुझे बहुत निराशा होती और मैं आपको घमंडी समझता; और आप कुछ खो देते। लेकिन शायद आपने

ये किताबें पहले ही पढ़ ली हों?’ श्री मजूमदार की नज़र मेज़ पर पड़ी। एक मोमबत्ती के पास चार जिल्दबंद किताबें ढेर में रखी थीं। फेलुदा उठे और उन्हें उठाया। ‘हे भगवान!’ वे चौंक उठे। ‘ये सभी किताबें बेहद दुर्लभ हैं और ये सभी मेरे पेशे से संबंधित हैं। क्या आपने कभी...?’
‘नहीं, नहीं,’ श्री मजूमदार हँसे, ‘मैंने कभी खुद जासूस बनने की कोशिश नहीं की। यह हमेशा से मेरा शौक रहा है। देखिए, बावन साल पहले हमारे परिवार में किसी की हत्या हो गई थी। मैल्कम नाम के एक अंग्रेज जासूस ने हत्यारे को पकड़ा। मैल्कम से बात करने और उनके काम के बारे में कुछ जानने के बाद, मुझे अपराध विज्ञान में रुचि हो गई। तभी मैंने वे किताबें खरीदीं। मुझे जासूसी उपन्यास पढ़ना भी बहुत पसंद था। क्या आपने एमिल गैबोरियो के बारे में सुना है?’
‘जी हां,’ फेलुदा ने उत्साह से जवाब दिया, ‘क्या वह एक फ्रांसीसी लेखक नहीं थे? मुझे लगता है कि उन्होंने पहला जासूसी उपन्यास लिखा था।’
‘जी हां,’ श्री मजूमदार ने सिर हिलाते हुए कहा। ‘मेरे पास उनकी सारी किताबें हैं। और हां, एडगर एलन पो और कॉनन डॉयल जैसे लेखकों की किताबें भी। मैंने ये सब चालीस साल पहले खरीदी थीं। मुझे लगता है कि हाल ही में काफी प्रगति हुई है, और अब अपराधी को पकड़ने के कई वैज्ञानिक और तकनीकी तरीके मौजूद हैं। लेकिन आपके काम के बारे में मुझे जो थोड़ी बहुत जानकारी है, उससे मुझे लगता है कि आप पुराने तरीकों पर ज्यादा भरोसा करते हैं, और अपनी बुद्धि का इस्तेमाल सबसे ज्यादा करते हैं, और इसमें आप बहुत सफल भी होते हैं। क्या मैं सही कह रहा हूं?’
'मुझे नहीं पता कि मैं कितना सफल रहा हूं, लेकिन मेरे तरीकों के बारे में आप बिल्कुल सही हैं।'
‘इसीलिए मैंने आपको मुझसे मिलने के लिए बुलाया था।’
श्री मजूमदार कुछ देर रुके। फेलुदा अपनी कुर्सी पर वापस बैठ गए। थोड़ी देर बाद, श्री मजूमदार ने मोमबत्ती की लौ को घूरते हुए बोलना शुरू किया। “मैं न केवल बूढ़ा हूँ—मेरी उम्र सत्तर साल से भी ज़्यादा हो गई है—बल्कि बीमार भी हूँ। भगवान जाने मेरे मरने के बाद मेरी किताबों का क्या होगा। इसलिए मैंने सोचा कि अगर मैं आपको कुछ किताबें दे सकूँ, तो आप उनकी कद्र करेंगे और उन्हें संभाल कर रखेंगे।”

फेलुदा ने अलमारियों में रखी किताबों को हैरानी से देखा। उसने पूछा, 'क्या ये सभी किताबें आपकी हैं?'
'हां। मेरे परिवार में किताबों में रुचि रखने वाला मैं अकेला ही था। जैसा कि आप देख सकते हैं, अपराध विज्ञान ही एकमात्र विषय नहीं था जिसमें मेरी रुचि थी।'
'जी हां, बिल्कुल। मुझे पुरातत्व, चित्रकला, बागवानी, इतिहास, जीवनी, यात्रा वृत्तांत... यहां तक कि नाटक और रंगमंच पर भी किताबें दिख रही हैं! इनमें से कुछ नई लग रही हैं। क्या आप अब भी किताबें खरीदते हैं?'
'हां, बिल्कुल। मेरा एक मैनेजर है जिसका नाम राजेन है। वह हर महीने दो-तीन बार कलकत्ता जाता है। मैं उसे किताबों की एक सूची देता हूं, और वह कॉलेज स्ट्रीट से उन्हें ले आता है।'
फेलुदा ने मेज पर रखी किताबों पर एक बार फिर नजर डाली। 'मैं नहीं जानता कि आपका शुक्रिया कैसे अदा करूं।'
'आपको ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। अगर मैं इन्हें खुद आपको सौंप पाता तो मुझे बहुत खुशी होती, लेकिन मेरे दोनों हाथ बेकार हैं।'
हम चौंककर उसे घूरने लगे। उसके हाथ कंबल के नीचे छिपे हुए थे, लेकिन मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि इसका कोई विशेष महत्व होगा।
श्री मजूमदार ने बताया, ‘गठिया ने मेरी सभी उंगलियों को प्रभावित कर दिया है। मेरा बेटा इस समय मुझसे मिलने आया हुआ है, इसलिए वह मेरी देखभाल कर रहा है। आमतौर पर मेरा नौकर गोकुल ही मुझे हर दिन खाना खिलाता है।’
‘क्या आपने अपने बेटे से मुझे पत्र लिखवाया?’
नहीं, राजेन ने लिखा है। वो सब कुछ संभालता है। अगर मुझे डॉक्टर को दिखाने की जरूरत पड़ती है, तो वो बहरामपुर से डॉक्टर बुला लाता है। प्लासी में अच्छे डॉक्टर नहीं हैं।
मैंने देखा कि श्री मजूमदार से बात करते समय फेलुदा बार-बार बिस्तर के पास रखे संदूक की ओर देख रहा था। अब उसने कहा, 'यह संदूक बाकी संदूकों से अलग लगता है। इसमें चाबी लगाने का कोई इंतजाम नहीं दिख रहा। क्या इसमें कॉम्बिनेशन लॉक है?'
‘बिल्कुल सही,’ श्री मजूमदार मुस्कुराए। ‘इसमें बस एक हैंडल है, जिसके चारों ओर संख्याएँ लिखी हैं। संदूक तभी खुलता है जब हैंडल को कुछ खास संख्याओं के पास ले जाया जाता है। ये इलाके कभी हथियारबंद चोरों के लिए

कुख्यात थे। आपको पता था ना? दरअसल, मेरे पूर्वज मुख्य रूप से दूसरों को लूटकर इतने अमीर हुए कि उन्होंने बहुत सारी जमीनें खरीद लीं। कई साल बाद, हम पर भी डाकुओं ने कई बार हमला किया। इसलिए मैंने सोचा कि कॉम्बिनेशन लॉक वाला संदूक शायद किसी भी दूसरे लॉक से ज्यादा सुरक्षित होगा।’
श्री मजूमदार ने बोलना बंद कर दिया और एक पल के लिए भौंहें चढ़ा लीं। फिर उन्होंने पुकारा, 'गोकुल!'
बूढ़ा नौकर लगभग तुरंत ही प्रकट हो गया। उसके मालिक ने आदेश दिया, 'उस पक्षी को इधर लाओ। मैं चाहता हूँ कि ये लोग उसे देखें।'
गोकुल गायब हो गया और एक मिनट बाद पिंजरे में एक तोता लेकर वापस आया। श्री मजूमदार ने तोते की ओर मुड़कर धीरे से कहा, 'बोल दो, प्यारे। बोलो। दरवाजा बंद करो... बोलो!'
कुछ सेकंड तक कुछ नहीं हुआ। फिर अचानक, तोते ने आश्चर्यजनक रूप से स्पष्ट आवाज़ में कहा, 'दरवाजा बंद करो!' मैं चौंक गया। मैंने पहले कभी किसी पक्षी को इतनी स्पष्ट आवाज़ में बोलते नहीं सुना था। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। 'ओ मोटी मुर्गी!' पक्षी ने आगे कहा। इस बार मैंने देखा कि फेलुदा ने अपना सिर तेज़ी से घुमाया। इससे पहले कि कोई कुछ कह पाता, तोते ने दोनों बातें एक साथ, बहुत तेज़ी से कह दीं: 'दरवाजा बंद करो, ओ मोटी मुर्गी!'
कुछ पल रुकने के बाद फेलुदा ने पूछा, 'इसका क्या मतलब है?' श्री मजूमदार जोर से हंस पड़े। 'मैं तुम्हें नहीं बताऊंगा। मैं बस इतना कह सकता हूं कि तुमने अभी जो सुना वह एक सांकेतिक भाषा थी, और इसका संबंध उस बंद संदूक से है जो वहां रखा है। तुम्हारे पास इसे समझने के लिए बारह घंटे हैं।'
‘मैं समझ गया। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि पक्षी को यह बोलना क्यों सिखाया गया है?’
हो सकता है, और मैं आपको बताता हूँ क्यों। उम्र के साथ याददाश्त पर अजीब असर पड़ता है। करीब तीन साल पहले, एक दिन अचानक मुझे पता चला कि मुझे संदूक खोलने वाले नंबरों का कॉम्बिनेशन याद नहीं आ रहा है। क्या आप यकीन कर सकते हैं? सालों तक, लगभग हर दिन, उन्हीं नंबरों का इस्तेमाल करने के बाद, वो अचानक मेरे दिमाग से गायब हो गए। सारा दिन मैंने उन नंबरों को याद करने की कोशिश की। फिर, आखिरकार, आधी रात को अचानक मुझे याद आ गए। मैं उन्हें लिख सकता था, लेकिन लिखना नहीं चाहता था, कहीं वो किसी के हाथ न पड़ जाएँ। उन्हें याद रखना कहीं बेहतर था, लेकिन अब मुझे एहसास हुआ कि मैं अपनी

याददाश्त पर भरोसा नहीं कर सकता। इसलिए अगली सुबह, मैंने वो कोड बनाया और अपने तोते को उसे बोलना सिखाया। अब वो उसे कभी-कभी बोलता है, जैसे दूसरे तोते "राधे श्याम" या "आप कैसे हैं?" कहते हैं।
फेलुदा अब भी संदूक को घूर रहा था। मैंने देखा कि वह अचानक भौंहें चढ़ाकर उठ खड़ा हुआ और उसे ध्यान से देखने लगा। फिर उसने मोमबत्ती उठाई और उसके ढक्कन की जांच करने लगा।
‘क्या बात है?’ श्री मजूमदार ने चिंता से पूछा। ‘आपको क्या मिला? क्या आपकी पारखी नज़रें कुछ बता पा रही हैं?’
'मुझे लगता है, श्री मजूमदार, किसी ने इस सीने को जबरदस्ती खोलने की कोशिश की है।'
‘क्या आपको यकीन है?’ श्री मजूमदार की मुस्कान गायब हो गई थी।
फेलुदा ने मोमबत्ती को वापस मेज पर रख दिया। उसने कहा, 'इस पर कुछ निशान हैं। साधारण झाड़-पोंछ से ऐसे निशान नहीं पड़ सकते। लेकिन क्या कोई इसे खोलना चाहेगा?'
श्री मजूमदार ने एक पल सोचा। फिर धीरे से बोले, “यहाँ ज़्यादा लोग नहीं रहते, श्री मित्तर। मेरे अलावा, यहाँ गोकुल, राजेन, मेरा ड्राइवर मोनिलाल, एक रसोइया और एक माली हैं। विश्वनाथ—मेरा बेटा—पाँच दिन पहले आया था। वह कलकत्ता में रहता है और मुझसे कभी-कभार ही मिलने आता है। मेरी बीमारी की वजह से वह अभी यहाँ है। देखिए, पिछले सोमवार को मैं बगीचे में बैठा था। जब मैंने उठने की कोशिश की, तो अचानक सब कुछ अंधेरा हो गया और मैं बेंच पर गिर गया। राजेन ने प्लासी से विश्वनाथ को फोन किया, और वह अगले दिन कलकत्ता से एक डॉक्टर के साथ आया। लगता है कि यह हल्का स्ट्रोक था। खैर, मुझे पता है कि मेरे पास जीने के लिए ज़्यादा दिन नहीं बचे हैं। लेकिन... कहीं ऐसा तो नहीं कि मुझे अपने आखिरी दिन संदेह और चिंता में बिताने पड़ें? हमेशा इस डर में कि कहीं कोई चोर मेरे कमरे में घुसकर उस संदूक को तोड़ न दे?” ‘नहीं, नहीं। जल्दबाजी में कोई निष्कर्ष निकालने की जरूरत नहीं है। हो सकता है मैं पूरी तरह गलत हूँ,’ फेलुदा ने तसल्ली भरे लहजे में कहा। ‘ये निशान शायद तब बने होंगे जब संदूक को पहली बार उस कोने में रखा गया था। एक मोमबत्ती की रोशनी में मुझे ठीक से दिखाई नहीं दे रहा है, इसलिए मैं यह नहीं बता सकता कि ये निशान पुराने हैं या नए। मैं सुबह फिर देख लूँगा। क्या आपका नौकर भरोसेमंद है?’

'बिल्कुल, वह तीस साल से मेरे साथ है।'
और राजेन?
‘राजेन ने भी यहां कई साल बिताए हैं। लेकिन फिर, इसकी क्या गारंटी है कि जिसने आज तक मेरे भरोसे का सम्मान किया है, वह कल उसे धोखा नहीं देगा?’ फेलुदा ने सहमति में सिर हिलाया। 'नहीं, दुर्भाग्य से इसकी कोई गारंटी नहीं है। खैर, गोकुल को कह देना कि वह स्थिति पर नज़र रखे। मुझे नहीं लगता कि अभी कोई तत्काल खतरा है।'
‘ओह। अच्छा।’ श्री मजूमदार राहत महसूस कर रहे थे। हम उठ खड़े हुए। उन्होंने कहा, ‘गोकुल आपको आपका कमरा दिखाएगा। आपको वहां कंबल, रजाई और मच्छरदानी मिलेंगी। विश्वनाथ बहरामपुर गए हैं, वे जल्द ही वापस आ जाएंगे। उनके लौटते ही आपको खाना खा लेना। कल सुबह, अगर आप चाहें तो मेरी कार में घूमने जा सकते हैं, हालांकि इस इलाके में देखने लायक कुछ खास नहीं है।’ फेलुदा ने मेज से किताबें उठाईं और उन्हें फिर से धन्यवाद दिया। शुभ रात्रि कहने से पहले, श्री मजूमदार ने उन्हें कोड के बारे में याद दिलाया। 'अगर आप इसे सुलझा सकते हैं, श्री मिटर, तो मैं आपको गैबोरियाउ द्वारा रचित पूरा सेट दे दूंगा।'
गोकुल लालटेन लेकर लौटा और हमें हमारे कमरे में ले गया। कमरा श्री मजूमदार के कमरे से छोटा था, लेकिन उसमें फर्नीचर कम था, जिससे इधर-उधर घूमना आसान था। दो पलंग बड़ी सावधानी से लगाए गए थे। एक कोने में लालटेन जल रही थी। फेलुदा अपने पलंग पर बिछी बेदाग चादर पर बैठ गया और बोला, 'क्या तुम्हें कोड याद है?'
'हाँ।'
‘बहुत खूब। ये रही मेरी नोटबुक और कलम। इसे लिख लो। मुझे गैबोरियाउ की वो किताबें बहुत पसंद आएंगी।’
मैंने शब्द लिख लिए। उनमें से किसी का भी कोई मतलब नहीं निकला। भला फेलुदा को इसका अर्थ कैसे समझ आएगा?
मैंने शिकायत करते हुए कहा, 'मुझे समझ ही नहीं आ रहा कि इस अजीब संदेश में कॉम्बिनेशन लॉक के नंबर कैसे छिपे हो सकते हैं!' 'मेरा मतलब है, यह तो सरासर बकवास है, है ना? एक मुर्गी दरवाजा कैसे बंद कर सकती है?'

‘असल चुनौती तो यहीं है, समझ नहीं आ रहा? कोई मुर्गी से दरवाजा बंद करने को नहीं कहता। यह तो बिल्कुल स्पष्ट है। हर शब्द का अपना अलग अर्थ होता है। मुझे कल सुबह तक किसी तरह इसका हल निकालना ही होगा।’
फेलुदा उठे और खिड़की खोली। तब तक चाँद निकल चुका था और चारों ओर चाँदनी फैली हुई थी। मैं उनके पास जाकर खड़ा हो गया। हमारा कमरा घर के पिछले हिस्से की ओर खुलता था। फेलुदा ने इशारा करते हुए कहा, 'दाहिनी ओर शायद कोई तालाब होगा।' घनी झाड़ियों के बीच से मुझे पानी की चमकती सतह दिखाई दी। दूर से आती सियार की आवाज़ और झाड़ियों में झींगुरों की चहचहाहट के अलावा और कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। मैंने इससे पहले कभी इतनी सुनसान और एकांत जगह नहीं देखी थी।
फेलूदा ने ठंडी रात की हवा को अंदर आने से रोकने के लिए खिड़की फिर से बंद कर दी। उसी क्षण, हमें एक कार के आने की आवाज़ सुनाई दी। ज़ाहिर है, यह कोई दूसरी कार थी, वह अमेरिकी कार नहीं जिसमें हम सफ़र कर रहे थे।
‘शायद ये विश्वनाथ मजूमदार हैं,’ फेलुदा ने कहा। अच्छा, मैंने सोचा। इसका मतलब शायद ये है कि हमें जल्द ही खाने के लिए बुलाया जाएगा। सच कहूँ तो, मुझे काफी भूख लग रही थी। हमने दोपहर का खाना जल्दी खा लिया था, क्योंकि हमारी ट्रेन दो बजे थी। हमने राणाघाट में एक कप चाय और कुछ मिठाई ज़रूर ली थी, लेकिन वो भी काफी देर पहले की बात है। आम तौर पर, मैं शाम आठ बजे खाने के बारे में नहीं सोचता, लेकिन इस जगह पर करने के लिए और कुछ नहीं था, इसलिए मुझे रात का खाना खाकर जल्दी सो जाने का ख्याल अच्छा लगा।
कमरे में चारों ओर देखते हुए, मेरी नज़र अचानक एक ऐसी चीज़ पर पड़ी जिस पर मैंने पहले ध्यान नहीं दिया था। यह सामने वाली दीवार के लगभग पूरे हिस्से पर लगी एक आदमी की तस्वीर थी। इसमें कोई शक नहीं था कि वह श्री मजूमदार के पूर्वजों में से एक थे। वह कुर्सी पर बैठे थे और गंभीर दिख रहे थे। उनका धड़ नंगा था, जिससे उनके चौड़े कंधे साफ़ नज़र आ रहे थे। उनकी आँखें बड़ी थीं, और उनकी मूंछें घनी थीं, जिनके किनारे ऊपर की ओर मुड़े हुए थे। उनके बाल कंधों तक लहरा रहे थे।
फेलुदा ने फुसफुसाते हुए कहा, 'मुझे यकीन है कि वह कुश्ती लड़ता होगा और नियमित रूप से भारी लाठियों का इस्तेमाल करता होगा। शायद वह पहला डाकू था जो जमींदार बना।'

बाहर कदमों की आहट सुनाई दी। हम दोनों ने दरवाजे की तरफ देखा। गोकुल ने बरामदे में एक लालटेन रखी थी। एक पल के लिए एक परछाई ने उसकी रोशनी को रोक दिया, फिर दहलीज पर आ गिरी। उसके पीछे एक आदमी की आकृति दिखाई दी। क्या यह विश्वनाथ मजूमदार हो सकते हैं? ज़रूर नहीं? इस आदमी ने छोटी धोती और भूरे रंग का कुर्ता पहना हुआ था, उसकी घनी मूंछें थीं और मोटे लेंस वाला चश्मा लगा हुआ था। वह कमरे में झाँक रहा था, हमें ढूंढने की कोशिश कर रहा था। ‘क्या बात है, राजेन बाबू?’ फेलुदा ने पूछा।
राजेन बाबू को आखिरकार वह मिल गया जिसकी उन्हें तलाश थी। उनकी नजर फेलुदा पर पड़ी।
उन्होंने कर्कश स्वर में कहा, "छोटो बाबू अभी-अभी लौटे हैं। मैंने गोकुल को खाना परोसने के लिए कहा है। वह कुछ ही मिनटों में आकर आपको बुलाएंगे।" वह चला गया। उसके जाते ही मैंने पूछा, 'फेलुदा, यह कैसी गंध है?' ‘नेफ्थालीन। मुझे लगता है कि उसने सूटकेस से ऊनी कुर्ता निकाला और पहन लिया।’
कदमों की आहट धीमी पड़ते ही एक बार फिर सन्नाटा छा गया। अगर फेलुदा मेरे साथ न होता, तो मैं ऐसे भयानक वातावरण में पाँच मिनट भी नहीं बिता पाता। श्री मजूमदार और बाकी लोग यहाँ दिन-ब-दिन कैसे गुज़ारा करते होंगे? अचानक मुझे याद आया कि इसी घर में किसी का कत्ल हुआ था। पता नहीं किस कमरे में हुआ था।
इस बीच, फेलुदा ने लालटेन वाली मेज को खींचकर अपने बिस्तर के पास ला दिया और कोड देखने के लिए अपनी नोटबुक खोली। मैंने उसे कुछ बार बुदबुदाते हुए सुना, 'दरवाजा बंद करो... दरवाजा बंद करो...'। मैं पूरी तरह से ऊब गया था, इसलिए मैंने कमरे से बाहर निकलकर बरामदे में खड़े होने का फैसला किया।
हे भगवान, ये क्या था? मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। दूर कहीं कुछ हिल रहा था, जहाँ लालटेन की हल्की रोशनी अचानक घोर अंधेरे में बदल गई। मैंने खुद को चुप रहने के लिए मजबूर किया और उस हिलती हुई चीज़ को घूरने लगा। कुछ सेकंड बाद, मुझे एहसास हुआ कि ये तो बस एक बिल्ली थी, काली या सफेद नहीं, बल्कि बाघ जैसी धारियों वाली। उसने भी उदास नज़र से मेरी तरफ देखा, फिर जम्हाई ली और आलस से वापस अंधेरे में चली गई। कुछ देर बाद, तोते ने कर्कश आवाज़ निकाली, और फिर सब कुछ फिर से शांत हो गया। मैं सोचने लगा कि विश्वनाथ मजूमदार का कमरा कहाँ था। क्या वो भूतल पर था? राजेन बाबू कहाँ रहते थे?

हमें ऐसा कमरा क्यों दिया गया था जहाँ से घर के दूसरे हिस्सों की आवाज़ें सुनाई ही नहीं देती थीं?
मैं कमरे में वापस आया। फेलुदा पलंग पर पालथी मारकर बैठा था, उसकी नोटबुक उसकी गोद में थी। ‘इतनी देर क्यों लग रही है?’ मेरी आवाज़ में थोड़ी झुंझलाहट थी। फेलुदा ने अपनी घड़ी देखी। ‘तुम सही कह रहे हो, टॉपशे। राजेन बाबू कम से कम पंद्रह मिनट पहले चले गए।’ फिर वह अपनी नोटबुक को घूरने लगा। मैंने फेलुदा को दी गई किताबें देखना शुरू किया। एक किताब उंगलियों के निशान के विश्लेषण पर थी, दूसरी का नाम सिर्फ़ अपराध विज्ञान था, और तीसरी का नाम अपराध और उसकी पहचान था। मैंने चौथी किताब उठाई, लेकिन उसका नाम समझ नहीं आया। उसमें ढेर सारी तस्वीरें थीं, ज़्यादातर हथियारों की। क्या फेलुदा अपना रिवॉल्वर लाया था?
नहीं, उसे ऐसा क्यों करना चाहिए? आखिर वह यहाँ कोई अपराध सुलझाने तो नहीं आया था। उसके पास रिवॉल्वर लाने का कोई कारण नहीं था। मैंने किताबें सूटकेस में रखीं और बैठने ही वाली थी कि एक अपरिचित आवाज़ ने मुझे फिर चौंका दिया। एक और आदमी दरवाजे पर खड़ा था। इस बार उसे पहचानने में कोई दिक्कत नहीं हुई। वह गोकुल, राजेन बाबू या ड्राइवर मंडल नहीं था। वह कालिकिंकर का बेटा विश्वनाथ ही होना चाहिए।
‘आपको इंतजार कराने के लिए क्षमा करें,’ उन्होंने हाथ जोड़कर और फेलुदा की ओर देखते हुए कहा। ‘मेरा नाम विश्वनाथ मजूमदार है।’
अब मुझे साफ दिखाई दे रहा था कि वह अपने पिता से काफी मिलता-जुलता था। उसकी आंखें और नाक बिल्कुल वैसी ही थीं। उसकी उम्र शायद चालीस के आसपास होगी। उसके बाल अभी भी काले थे, दाढ़ी नहीं थी और होंठ बहुत पतले थे। मुझे उससे तुरंत ही घृणा हो गई, हालांकि मुझे इसका कोई ठोस कारण समझ नहीं आया। शायद इसलिए कि उसने हमें बहुत देर तक इंतजार करवाया था और मैं थकी हुई थी। या फिर ऐसा भी हो सकता है—लेकिन यह शायद सिर्फ मेरी कल्पना हो—कि जब वह मुस्कुराता था, तो उसकी आंखें ठंडी और भावहीन रहती थीं। ऐसा लगता था जैसे वह हमें देखकर सचमुच खुश नहीं था। शायद हमारे जाने पर ही उसे खुशी मिलती। मैं और फेलुदा उनके साथ नीचे भूतल पर भोजन कक्ष में गए। मुझे उम्मीद थी कि मुझे पारंपरिक भोजन के लिए ज़मीन पर बैठने को कहा जाएगा, लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि वहाँ एक मेज थी। उस पर चांदी की थालियाँ, कटोरे और गिलास रखे हुए थे।

जब हम सब बैठ गए, तो विश्वनाथ मजूमदार ने कहा, 'मुझे दिन में दो बार स्नान करना अच्छा लगता है, चाहे गर्मी हो या सर्दी। मुझे लगता है कि इसी वजह से इतना समय लग गया।'
उसके शरीर से अब भी साबुन की खुशबू आ रही थी और शायद किसी महंगे इत्र की भी। ग्रे रंग की पतलून, सफेद रेशमी कमीज और गहरे हरे रंग के बिना आस्तीन वाले स्वेटर में, वह स्पष्ट रूप से जीवन की सुख-सुविधाओं का शौकीन व्यक्ति था।
हमने खाना शुरू किया। हमारी प्लेटों के चारों ओर अर्धवृत्ताकार रूप में कई छोटी कटोरियाँ रखी थीं, जिनमें से प्रत्येक में एक अलग व्यंजन था। उनमें तीन अलग-अलग सब्जियां, दाल और मछली करी थी।
विश्वनाथ मजूमदार ने पूछा, 'क्या आपने मेरे पिता से बात की?' 'हां। उन्होंने जो किया उससे मुझे काफी शर्मिंदगी हुई है।'
‘तुम्हारा मतलब उन किताबों से है जो उसने तुम्हें दी थीं?’
'हां। अगर वे किताबें अभी भी उपलब्ध होतीं, तो उनकी कीमत कम से कम एक हजार रुपये होती।'
विश्वनाथ मजूमदार हँसे। उन्होंने हमें बताया, “जब उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने आपको यहाँ आने के लिए कहा है, तो मैं पहले तो उनसे काफी नाराज़ हो गया था। मुझे लगा कि शहर के लोगों को इस तरह की जगह पर आमंत्रित करना उचित नहीं है।”
‘क्यों नहीं?’ फेलुदा ने विरोध किया। ‘तुम्हें इस पर आपत्ति क्यों होनी चाहिए? यहाँ आने से मेरा कुछ भी नुकसान नहीं हुआ है। बल्कि, मुझे बहुत कुछ लाभ हुआ है!’
विश्वनाथ मजूमदार ने इन शब्दों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा, “मैं तो कल ही वापस जाने के लिए पूरी तरह तैयार हूँ। पिछले चार दिन मेरे लिए काफी रहे हैं, धन्यवाद। मुझे समझ नहीं आता कि मेरे पिता यहाँ स्थायी रूप से कैसे रह सकते हैं।”
क्या वह बिल्कुल भी बाहर नहीं जाता?
नहीं। वह अपना अधिकांश समय उस अंधेरे कमरे में बिताता है। वह पहले दिन में दो-तीन बार बाहर जाकर बगीचे में बैठता था। लेकिन अब डॉक्टर ने उसे किसी भी तरह की गतिविधि से मना कर दिया है।
‘क्या आपने कहा था कि आप कल लौट रहे हैं?’

जी हाँ। पिताजी को तत्काल कोई खतरा नहीं है। क्या आप साढ़े दस बजे ट्रेन पकड़ लेंगे?
'हाँ।'
‘ठीक है। इसका मतलब है कि स्टेशन पहुँचने के तुरंत बाद मैं निकल जाऊँगा।’ फेलुदा ने अपने चावल पर दाल डाली। ‘तुम्हारे पिता को तो कई अलग-अलग विषयों में रुचि है। क्या तुम्हें अपने व्यवसाय के अलावा किसी और चीज़ में रुचि है?’
'नहीं, महोदय। दिन का काम खत्म होने के बाद मेरे पास किसी और चीज के लिए समय ही नहीं बचता। मैं एक व्यवसायी बनकर ही पूरी तरह खुश हूं, इससे ज्यादा कुछ नहीं।'
जब हमने विश्वनाथ मजूमदार को शुभ रात्रि कहा और अपने कमरे में लौटे, तब तक साढ़े नौ बज चुके थे। मेरी घड़ी में जो भी समय दिख रहा था, उससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता था, क्योंकि यहाँ समय का कोई महत्व नहीं था। सात बजे भी आधी रात जैसे लग रहे थे।
मैंने फेलुदा से पूछा, 'अगर मैं अपना तकिया दूसरी तरफ रखूं तो क्या आपको कोई आपत्ति होगी?'
नहीं, लेकिन आप ऐसा क्यों करना चाहते हैं?
मैं सुबह आंखें खोलते ही दीवार पर उस भयावह चेहरे को देखना नहीं चाहता। फेलुदा हँस पड़ा। ‘ठीक है। मुझे लगता है मैं भी ऐसा ही करूँगा,’ उसने कहा। ‘मुझे यह भी कहना होगा कि मुझे उसकी आँखों में वो भाव पसंद नहीं आया।’ सोने से ठीक पहले, फेलुदा ने लालटेन उठाई और उसकी रोशनी धीमी कर दी। कमरा मानो छोटा लगने लगा। कुछ ही मिनटों में, मुझे नींद से भारी होने का एहसास होने लगा। लेकिन, जैसे ही मैं सोने ही वाला था, मैंने फेलुदा को कुछ बुदबुदाते हुए सुना, जिससे मैंने आँखें खोल दीं।
'दरवाजा बंद करो... और फाटक खोलो... नहीं, यह गलत है। लकड़ियाँ उठाओ। हाँ, वह पहले आता है।'
‘फेलुदा!’ मैंने थोड़ा घबराकर कहा। ‘जाग जाओ, फेलुदा! तुम नींद में बड़बड़ा रहे हो। तुम्हें क्या हुआ है?’
‘नहीं, नहीं,’ मैंने अंधेरे में उसकी हल्की हंसी सुनी। ‘मैं पूरी तरह से जागा हुआ हूँ, और नहीं, मैं पागल नहीं हुआ हूँ, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ।

टॉपशे, अभी जो हुआ है, वो ये है कि मुझे लगता है कि मैंने गैबोरियो से वो सेट जीत लिया है।’
‘क्या! तुमने कोड क्रैक कर लिया?’
'हां, मुझे ऐसा ही लगता है। यह वास्तव में बेहद सरल था। मुझे इसे तुरंत पहचान लेना चाहिए था।'
मुझे अब भी यह बात समझ में नहीं आती।
‘ऐसा सिर्फ इसलिए है क्योंकि आप सोच नहीं रहे हैं। आपको बचपन में गिनती करना कैसे सिखाया गया था?’
‘बिल्कुल सरल। एक, दो, तीन, चार... बस इतना ही।’
‘क्या ऐसा था? सोचो, प्यारे बच्चे, सोचो। क्या किसी ने तुम्हारे लिए इसे आसान बनाने की कोशिश नहीं की? क्या तुम्हें कोई कविता नहीं सिखाई गई?’ ‘संख्याओं के साथ तुकबंदी? तुम्हारा मतलब है कुछ ऐसा जो एक, दो से शुरू होता हो... नहीं, मुझे नहीं लगता... अरे, एक मिनट रुको! फेलुदा, फेलुदा, मैं समझ गया! हाँ, मुझे समझ आ गया।’ मैं उत्साह से उठ बैठा। मुझे धुंधला सा दिखाई दिया कि फेलुदा ने मेरी तरफ देखने के लिए अपना सिर घुमाया। वह मुस्कुरा रहा था।
‘बहुत अच्छा। तो चलिए, इसे लेते हैं।’
धीरे से, मैंने एक कविता गुनगुनाना शुरू किया जो मुझे नर्सरी स्कूल में सिखाई गई थी:
‘एक, दो, मेरे जूते का बकल लगाओ। तीन, चार, दरवाजा बंद करो। पाँच, छह, लकड़ियाँ उठाओ। सात, आठ, फाटक खोलो। नौ, दस, एक मोटी मुर्गी। ग्यारह, बारह, खोदो और छानबीन करो...’
‘बस इतना ही काफी है। अब आपको क्या लगता है कि पूरे संदेश का क्या मतलब है?’ 'दरवाजा बंद करो... इसका मतलब होगा तीन और चार। मोटी मुर्गी का मतलब होगा नौ और दस। ठीक है?'
ठीक है। लेकिन "बड़ी मोटी मुर्गी" से पहले एक "O" है। इसका मतलब है कि पूर्ण संख्या 340910 है। आसान है ना? अब सो जाओ।
मैं फिर से लेट गया, फेलुदा की चतुराई पर आश्चर्यचकित था। लेकिन जैसे ही मैंने अपनी आँखें फिर से बंद करना शुरू किया, बरामदे में कदमों की आहट सुनाई दी। यह फिर से राजेन बाबू थे। रात के इस समय उन्हें क्या चाहिए था? 'हाँ, राजेन बाबू?' फेलूदा ने फोन किया।

‘छोटो बाबू ने मुझे यह पता लगाने के लिए कहा था कि क्या आपको किसी चीज की जरूरत है।’
नहीं, नहीं। हम ठीक हैं, धन्यवाद।
राजेन बाबू चुपचाप गायब हो गए। इस बार नींद बहुत जल्दी आ गई। आँखें बंद करते समय मुझे बस इतना ही महसूस हुआ कि बंद खिड़कियों से छनकर आ रही चाँदनी अचानक फीकी पड़ गई थी। मुझे दूर से गरजने की आवाज़ सुनाई दी और बिल्ली ने दो-तीन बार म्याऊँ किया। फिर मैं सो गया।
जब मैं सुबह उठा तो फेलुदा खिड़कियाँ खोल रहा था। उसने कहा, 'कल रात बारिश हुई थी। क्या तुमने सुनी?'
मैंने नहीं देखा था। लेकिन अब खिड़की से मुझे दिख रहा था कि बादल छंट गए थे। सूरज की रोशनी पत्तियों पर तेज़ी से पड़ रही थी, जिन्हें मैं अपने बिस्तर से देख सकता था।
आधे घंटे बाद गोकुल दो कप चाय लेकर आया। दिन के उजाले में उसे देखकर मैं काफी हैरान रह गया। वह न केवल बूढ़ा लग रहा था, बल्कि उसके चेहरे पर गहरी पीड़ा के भाव भी थे।
‘क्या कालीकिंकर बाबू जाग गए हैं?’ फेलुदा ने पूछा। शायद गोकुल को कम सुनाई देता था। उसने पहले तो फेलुदा के सवाल का जवाब नहीं दिया। वह बस खाली निगाहों से उसे घूरता रहा। फेलुदा को ऊंची आवाज में दोबारा पूछना पड़ा, तब जाकर उसने सिर हिलाया और जल्दी से कमरे से बाहर निकल गया।
हम लगभग साढ़े सात बजे बूढ़े श्री मजूमदार के कमरे में पहुँचे और उन्हें ठीक उसी हालत में पाया, जैसे हमने उन्हें पिछली रात छोड़ा था। वे अभी भी अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे, कंबल से उनका अधिकांश शरीर, यहाँ तक कि उनकी बाहें भी ढकी हुई थीं। उनके बिस्तर के बगल वाली खिड़की बंद थी, शायद सीधी धूप से बचने के लिए। कमरे में केवल खुले दरवाजे से ही रोशनी आ रही थी। मैंने उनके बिस्तर के ऊपर दीवार पर एक तस्वीर देखी। यह तस्वीर कई साल पहले ली गई होगी, क्योंकि इसमें काफी युवा कालिकिंकर मजूमदार दिखाई दे रहे थे। उनके बाल और दाढ़ी दोनों ही घने काले थे।
उन्होंने मुस्कुराते हुए हमारा अभिवादन किया।
उन्होंने कहा, 'मैंने राजेन से गैबोरियाउ की किताबें निकलवाईं। मुझे पता था कि तुम यह कर सकते हो।'

'अच्छा, यह आपको तय करना है कि मैंने सही नंबर डायल किया है या नहीं। 340910. क्या यही सही नंबर है?'
‘शाबाश!’ श्री मजूमदार की आवाज़ में खुशी और प्रशंसा दोनों झलक रही थी। ‘जाओ, ये किताबें लो और अपने बैग में रख लो। और कृपया छाती पर उन निशानों को एक बार फिर देख लो। मैंने खुद देखा है। मुझे उनमें चिंता की कोई बात नहीं दिखी।’
ठीक है, तो बात यहीं खत्म होती है। अगर आपको इसकी चिंता नहीं है, तो बाकी कुछ मायने नहीं रखता।
जासूसी उपन्यास के पहले लेखक द्वारा लिखी गई चारों पुस्तकें लेने से पहले फेलुदा ने उन्हें एक बार फिर धन्यवाद दिया।
‘क्या आपने चाय पी ली है?’ श्री मजूमदार ने पूछा।
'जी श्रीमान।'
मैंने ड्राइवर से गाड़ी बाहर लाने को कहा। विश्वनाथ आज सुबह बहुत जल्दी निकल गया। उसने कहा कि उसे दस बजे तक कोलकाता पहुंचना है। राजेन स्थानीय बाजार गया है। गोकुल आपके सामान में मदद करेगा। क्या आप ट्रेन पकड़ने से पहले गाड़ी में घूमना चाहेंगे?
मैं दरअसल पहले वाली ट्रेन से जाने की सोच रहा था। हमें साढ़े दस बजे तक इंतजार करने की जरूरत नहीं है। अगर हम तुरंत निकल जाएं, तो शायद हम 372 नंबर की डाउन ट्रेन पकड़ सकें।
बहुत खूब। मैं शहर से आए किसी भी व्यक्ति को इस छोटे से गाँव में ज़रूरत से ज़्यादा देर तक रोकना नहीं चाहता। लेकिन मुझे सचमुच खुशी है कि आप आ सके। मेरा मतलब यही है।
जल्द ही हम रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़े। सड़क धान के खेतों से होकर गुज़र रही थी, जो बरसात की रात के बाद सुबह की धूप में चमक रहे थे। मैं उन्हें प्रशंसा से देख रहा था, तभी मैंने फेलुदा को एक सवाल पूछते सुना। 'क्या स्टेशन जाने का कोई और रास्ता है?'
‘नहीं, महोदय, यही एकमात्र तरीका है,’ मोनिलाल ने उत्तर दिया।
फेलुदा अचानक काफी गंभीर दिखने लगा। मैं उससे पूछना चाहता था कि क्या उसने कुछ संदिग्ध देखा है, लेकिन बोलने की हिम्मत नहीं कर पाया।
सड़क गीली और कीचड़ भरी होने के कारण हमें स्टेशन पहुँचने में अधिक समय लगा। फेलुदा ने सामान गाड़ी से निकाला और ड्राइवर को धन्यवाद दिया, जिसके

बाद ड्राइवर गाड़ी चलाकर चला गया। लेकिन फेलुदा ने वापसी की टिकट खरीदने के लिए टिकट काउंटर पर जाने की कोई कोशिश नहीं की। इसके बजाय वह स्टेशन मास्टर के कमरे में गया और हमारा सामान वहीं छोड़ दिया। फिर वह बाहर आया और बाहर खड़े साइकिल रिक्शा में से एक के पास गया।
क्या आपको पता है कि स्थानीय पुलिस स्टेशन कहाँ है?
'जी श्रीमान।'
‘क्या आप हमें वहां ले जा सकते हैं? हमें जल्दी है।’
हम झटपट रिक्शा में बैठ गए। रिक्शा चालक ने तेजी से पैडल मारना शुरू कर दिया, जितना जोर से हो सकता था हॉर्न बजाता हुआ, भीड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए, कई बार बाल-बाल टक्कर होते-होते बची। हम पाँच मिनट में पुलिस स्टेशन पहुँच गए। वहाँ सब-इंस्पेक्टर सरकार को ड्यूटी पर छोड़ा गया था। पता चला कि वह फेलुदा का नाम जानते थे। उन्होंने कहा, 'हमने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है, महोदय। आप यहाँ क्यों आए हैं?'
‘आप मुझे घुरघुतिया के कालीकिंकर मजूमदार के बारे में क्या बता सकते हैं?’ ‘कालिकिंकर मजूमदार? जहाँ तक मुझे पता है, वह एक सच्चे सज्जन व्यक्ति हैं, जो अपने आप में ही रहते हैं। मैंने तो उनके बारे में कभी कोई बुरी बात नहीं सुनी!’
‘उनके बेटे विश्वनाथ का क्या हुआ? क्या वह यहीं रहता है?’
नहीं। मुझे लगता है कि वह कलकत्ता में रहता है। क्या बात है, श्रीमान मित्तर?
‘क्या आप अपनी जीप लेकर मेरे साथ आ सकते हैं? यहाँ कुछ बहुत ही गंभीर गड़बड़ है।’
श्री सरकार ने एक मिनट भी बर्बाद नहीं किया। हम पुलिस की जीप में कीचड़ उछालते हुए घुरघुतिया की ओर वापस चल पड़े। फेलुदा के चेहरे पर दबी हुई उत्तेजना झलक रही थी, लेकिन उसने सिर्फ एक बार ही मुंह खोला। उसके शब्द सिर्फ मैं ही सुन सका:
‘गठिया, छाती पर वो निशान, देर से खाना, राजेन बाबू की आवाज में आई कर्कशता, नेफ़थलीन... हर छोटी-छोटी बात अपनी जगह पर बैठ गई है, टॉपशे। मैं कभी-कभी भूल जाता हूँ कि फ़ेलू मित्तर जितने ही बुद्धिमान और भी लोग हैं।’
पुराने महल में पहुँचते ही सबसे पहली चीज़ जो मैंने बड़े आश्चर्य से देखी, वह थी मुख्य द्वार के बाहर खड़ी एक काली एम्बेसडर कार। ज़ाहिर है, यह

विश्वनाथ मजूमदार की थी। जीप से उतरते ही फेलुदा ने कहा, 'इसके पहिए तो देखो! कहीं भी मिट्टी का निशान नहीं है। यह कार अभी-अभी गैरेज से निकली है।'
एक आदमी—संभवतः उसका ड्राइवर, जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था—गाड़ी के पास खड़ा था। हमारी जीप को देखते ही उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह डर गया।
‘क्या आप इस कार के ड्राइवर हैं?’ फेलुदा ने उससे पूछा।
जी-जी जी, जी-जी।
‘क्या विश्वनाथ मजूमदार घर पर हैं?’
वह आदमी हिचकिचाया। फेलुदा ने उसकी बात अनसुनी कर दी और सीधे घर में घुस गया, उसके पीछे-पीछे इंस्पेक्टर, मैं और एक कांस्टेबल भी गए।
हम दोनों एक साथ सीढ़ियों से ऊपर भागे और उस लंबे गलियारे से होते हुए कलिकिंकर के कमरे में पहुँचे। कमरा खाली था। कंबल पलंग पर पड़ा था, सारा फर्नीचर अपनी जगह पर था, लेकिन उसमें रहने वाला व्यक्ति गायब था।
‘अरे नहीं!’ फेलुदा चिल्लाया। मैंने देखा कि वह संदूक को घूर रहा था। वह खुला हुआ था। उसकी खालीपन को देखकर लग रहा था कि उसमें से लगभग सब कुछ निकाल लिया गया था।
गोकुल आया और दरवाजे के बाहर खड़ा हो गया। वह बुरी तरह कांप रहा था। उसकी आँखों में आंसू थे। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी भी क्षण गिर जाएगा। फेलुदा ने उसे कंधों से पकड़ लिया।
‘गोकुल, विश्वनाथ मजूमदार कहाँ हैं?’
‘वह... वह पिछले दरवाजे से भाग गया!’
‘Mr Sarkar!’
इंस्पेक्टर बिना कुछ कहे कांस्टेबल के साथ चला गया।
‘सुनो,’ फेलुदा ने गोकुल को धीरे से हिलाते हुए कहा, ‘अगर तुमने मुझसे एक भी झूठ बोला, तो तुम जेल जाओगे। समझे? तुम्हारा मालिक कहाँ है?’
गोकुल की आंखें भय से इतनी चौड़ी हो गईं कि ऐसा लग रहा था मानो वे अभी अपनी जगह से बाहर निकल जाएंगी।
‘उसकी… उसकी हत्या कर दी गई है!’ वह हांफते हुए बोला।
'उसे किसने मारा?'
‘छोटो बाबू।’

'कब?'
जिस दिन वो आया, उसी रात। उसका अपने पिता से झगड़ा हुआ और उसने संदूक खोलने के लिए नंबर मांगे। मालिक ने कहा, “मैं तुम्हें नहीं दूंगा। मेरे तोते से पूछो।” फिर... कुछ देर बाद... छोटा बाबू और उसका ड्राइवर... दोनों मिले...’ गोकुल का गला भर आया। उसने बड़ी मुश्किल से अगले कुछ शब्द कहे: ‘उन दोनों ने लाश को घर के पीछे वाली झील में फेंक दिया। उन्होंने... उसके गले में पत्थर बांध दिया। और छोटा बाबू ने कहा कि अगर मैंने किसी को एक शब्द भी बताया, तो वो मुझे भी मार डालेगा!’
‘ठीक है,’ फेलुदा ने उसे बैठने में मदद की। ‘अब बताओ, क्या मैं सही सोच रहा हूँ कि राजेन बाबू नाम का कोई व्यक्ति है ही नहीं?’
जी हाँ, महोदय। एक समय हमारे यहाँ इसी नाम का एक प्रबंधक था, लेकिन उसकी मृत्यु दो साल पहले हो गई थी।
मैं और फेलुदा कमरे से कूदकर बाहर निकले और सीढ़ियों से नीचे भागने लगे। सीढ़ियाँ जहाँ खत्म होती थीं, वहाँ बाईं ओर एक दरवाजा था, जो घर के पिछले हिस्से की ओर जाता था। जैसे ही हम इस दरवाजे से बाहर निकले, हमें श्री सरकार की आवाज सुनाई दी।
‘भागने की कोशिश करने का कोई फायदा नहीं है, श्रीमान मजूमदार। मेरे हाथ में बंदूक है!’ उसने चिल्लाकर कहा।
इसके तुरंत बाद एक जोरदार छपछपाहट हुई और रिवाल्वर चलने की आवाज सुनाई दी। हम दौड़ते रहे, छोटी-छोटी झाड़ियों को फांदते हुए और घनी पत्तियों को तोड़ते हुए आगे बढ़ते रहे। आखिरकार, हमें श्री सरकार एक बड़े इमली के पेड़ के नीचे खड़े मिले, उनके हाथ में एक रिवाल्वर थी। पेड़ के पीछे वही झील थी जिसे हमने कल रात अपनी खिड़की से देखा था। उसकी सतह लगभग पूरी तरह से खरपतवार और शैवाल से ढकी हुई थी।
श्री सरकार ने कहा, 'मेरे गोली चलाने से पहले ही वह कूद गया, लेकिन उसे तैरना नहीं आता। गिरीश, देखो क्या तुम उसे बाहर खींच सकते हो।'
विश्वनाथ मजूमदार को कांस्टेबल ने कुछ ही मिनटों में पकड़ लिया और उसके पिता के तोते की तरह उसे सलाखों के पीछे डाल दिया गया। पुलिस ने संदूक से चुराए गए पैसे और गहने बरामद कर लिए। ऐसा प्रतीत हुआ कि हालांकि वह एक सफल व्यवसाय चलाता था, लेकिन वह जुआ खेलने का आदी था और कर्ज में बुरी तरह डूबा हुआ था।

फेलुदा ने बताया कि वह सच्चाई तक कैसे पहुंचे। ‘कालीकिंकर से निकलने के बीस मिनट बाद राजेन बाबू हमारे कमरे में आए; और राजेन बाबू के जाने के आधे घंटे बाद हमने विश्वनाथ मजूमदार को देखा। फिर राजेन बाबू रात के खाने के बाद थोड़ी देर के लिए वापस आए। हमने पिता-पुत्र और उनके प्रबंधक को एक बार भी साथ नहीं देखा। इससे मुझे संदेह हुआ कि क्या वास्तव में तीन अलग-अलग लोग थे, या एक ही व्यक्ति अलग-अलग भूमिकाएँ निभा रहा था। फिर मुझे नाटक और अभिनय की किताबें याद आईं। शायद वे किताबें विश्वनाथ मजूमदार की थीं? हो सकता है कि उन्हें अभिनय में रुचि हो और वे मेकअप करने में माहिर हों? अगर ऐसा है, तो उनके लिए नकली दाढ़ी लगाना, अलग-अलग विग लगाना और अपनी आवाज बदलना, अंधेरे घर में कुछ आगंतुकों को बेवकूफ बनाना मुश्किल नहीं होता। हालांकि, उन्हें अपने हाथ छिपाने पड़े होंगे, क्योंकि शायद मेकअप का उनका ज्ञान इतना पर्याप्त नहीं था कि वे अपने हाथों को 73 वर्षीय व्यक्ति के हाथों में बदल सकें। लेकिन मेरी शंका तब पुख्ता हो गई जब मैंने आज सुबह देखा कि हालांकि उन्हें काफी जल्दी निकल जाना चाहिए था, लेकिन जमीन पर टायर के कोई निशान नहीं थे।’
‘लेकिन असल में आपको किसने पत्र लिखकर यहां आने के लिए कहा था?’ मैंने पूछा।
'ओह, मुझे यकीन है कि वह पत्र खुद कालिकांकर ने लिखा था। उसके बेटे को इसके बारे में पता था। इसलिए उसने हमारे आने को रोकने के लिए कुछ नहीं किया, क्योंकि वह जानता था कि वह संयोजन संख्याओं का पता लगाने के लिए मेरा इस्तेमाल कर सकता है।'
अंत में हमें इतनी देर हो गई कि हम साढ़े दस बजे से पहले ट्रेन नहीं पकड़ पाए। जाने से पहले, फेलुदा ने उसे दी गई आठ किताबें निकालीं और मुझे सौंप दीं। उसने कहा, 'मैं एक हत्यारे से उपहार स्वीकार नहीं करना चाहता। टॉपशे, जाओ और इन्हें वापस रख दो।'
मैंने किताबों को वापस अलमारियों में रख दिया, हर खाली जगह को भर दिया और चुपचाप बाहर आ गया। तोते का पिंजरा अभी भी बरामदे में बाहर लटका हुआ था। ‘दरवाजा बंद करो!’ उसने मुझसे कहा। ‘दरवाजा बंद करो... ओ मोटी मुर्गी!’

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

एक

लालमोहन बाबू—उर्फ जटायु—ने बड़ी सावधानी से एक मूंगफली तोड़ी और तुरंत उसका सारा रस अपने मुंह में डाल लिया। फिर उसने मूंगफली का छिलका राखदानी में फेंक दिया, हाथ मलते हुए पूछा, ‘क्या तुमने कभी वाराणसी में विजया दशमी का उत्सव देखा है? तुम्हें पता है, जब दुर्गा पूजा समाप्त होती है और दशाश्वमेध घाट पर नदी में सभी मूर्तियों का विसर्जन किया जाता है?’ फेलुदा अपने सामने शतरंज का बोर्ड लिए बैठे थे और उनके बगल में 'शतरंज के महान खेल' नाम की एक किताब रखी थी। उन्होंने हाल ही में अकेले शतरंज खेलना शुरू किया था। जब खेल लगभग आधा हो चुका था, तब जटायु वहाँ पहुँचे। उन्होंने हमारे रसोइए श्रीनाथ को चाय का एक नया बर्तन लाने को कहा और चालों के बीच जटायु के सवालों के जवाब देने लगे।
‘नहीं,’ उसने संक्षिप्त उत्तर दिया।
‘ओह, यह तो... वाकई एक शानदार आयोजन है! आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि यह कैसा होगा!’
फेलुदा ने आखिरी चाल चली, एक पल के लिए बोर्ड को घूरा और पूछा, 'क्या तुम मुझे... लुभाने की कोशिश कर रहे हो?'
‘हाँ, आपने सही अनुमान लगाया। हा हा!’
‘तो फिर, लालमोहन बाबू, आपको उस दृश्य का इससे कहीं बेहतर वर्णन करना होगा। आपने जो अभी कहा है, वह बिल्कुल भी पर्याप्त नहीं है।’
‘क्यों?’ लालमोहन बाबू ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
फेलुदा ने शतरंज के मोहरों को समेटना शुरू किया। उन्होंने कहा, “क्योंकि ‘शानदार’ शब्द अपने आप में कोई छवि नहीं जगाता। यह नहीं बताता कि विजया दशमी क्यों खास है। आप एक लेखक हैं, लालमोहन बाबू। आपको थोड़ा और सजीव वर्णन करना आना चाहिए।”
‘जी हां, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं,’ लालमोहन बाबू ने तुरंत कहा। ‘देखिए, लगभग पच्चीस साल पहले की बात है, जब मैंने वो उत्सव देखे थे। इसलिए मुझे उस

समय की बातें थोड़ी धुंधली याद हैं। लेकिन मुझे आज भी याद है कि जो कुछ मैंने देखा उससे मेरी आंखें और कान दोनों चकित रह गए थे।’
‘लो, तुमने सही कहा! आंखें और कान। तुम्हारे वर्णन में कुछ ऐसा होना चाहिए जो इंद्रियों को आकर्षित करे।’
'क्या?'
हां। ज़रा सोचिए कि आपने क्या देखा, क्या सुना या क्या सूंघा! इतना हैरान मत होइए। हर जगह की एक खास गंध होती है, आपने गौर किया है ना? वाराणसी में विश्वनाथ मंदिर की ओर जाने वाली छोटी सी गली में अगरबत्ती, फूलों, गोबर, धूल और पसीने की गंध आती है। अगर आप गली से निकलकर नदी की ओर चलने लगें, तो आप अपेक्षाकृत गंध-मुक्त क्षेत्र से गुजरेंगे, जब तक कि आपका सामना बकरियों के झुंड से न हो जाए। तब गंध बेहद अप्रिय होगी, मैं आपको बता सकता हूं। लेकिन फिर आप आगे बढ़ेंगे और जल्द ही आपको एक और सुगंध महसूस होगी जो मिट्टी, पानी, तेल, चंदन, फूलों और अगरबत्ती की मिली-जुली सुगंध होगी। ‘अरे वाह, इसका मतलब है कि आप बनारस जा चुके हैं!’
'हां, जब मैं कॉलेज में था। मैं हिंदू विश्वविद्यालय के साथ क्रिकेट मैच खेलने गया था।'
लालमोहन बाबू अपनी जेब में हाथ डालने लगे।
फेलुदा ने कहा, 'जिस कागज की कतरन को आप ढूंढ रहे हैं, वह आपके अंदर आते ही आपकी जेब से फिसलकर फर्श पर गिर गई। वह रही, उस स्टूल के पास।'
‘एह हेह... जब मैंने अपना रुमाल निकाला, तो ऐसा जरूर हुआ होगा...’
मैंने उसे उठाया और लालमोहन बाबू को दे दिया।
‘क्या ये बनारस के साधुबाबा की कहानी है?’ फेलुदा ने पूछा। ‘तुम्हें पता था!’ लालमोहन बाबू ने शिकायत की। ‘तुमने कुछ कहा क्यों नहीं? क्या ये अजीब कहानी नहीं है? बहुत रहस्यमय है।’
मैंने उससे वह कटा हुआ टुकड़ा वापस ले लिया और उसे पढ़ा। उसमें लिखा था: वाराणसी में मछली बाबा: पिछले गुरुवार को वाराणसी में एक संत के आगमन ने काफी हलचल मचा दी है। शहर के एक वरिष्ठ निवासी अभयचरण चक्रवर्ती ने केदार घाट पर सबसे पहले इस साधु से मुलाकात की और पाया कि उनके पास असाधारण अलौकिक शक्तियां हैं। तब से साधु अभयचरण के घर में ही रह रहे हैं। उनके भक्त उन्हें 'मछली बाबा' कहते हैं। उनके अनुसार, वे प्रयाग से नदी पर तैरते हुए वाराणसी पहुंचे थे।

एक और अद्भुत शख्स। रिपोर्ट में मुझे कुछ खास असाधारण नहीं लगा, लेकिन लालमोहन बाबू इसे लेकर स्पष्ट रूप से बहुत उत्साहित थे।
‘ज़रा सोचो!’ उसने कहा। ‘हो सकता है उसने अपनी यात्रा तिब्बत से, गंगा के उद्गम स्थल से शुरू की हो। ओह, यह सोचकर ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं!’ ‘आपको किसने बताया कि गंगा का उद्गम तिब्बत में है?’
ओह, मुझे माफ़ करना। क्या मेरा मतलब ब्रह्मपुत्र से है? खैर, कोई बात नहीं। गंगा तो हिमालय से ही शुरू होती है, है ना? क्या यह काफी नहीं है?
क्या आप इस आदमी से मिलना चाहेंगे?
‘क्या आप ऐसा नहीं करेंगे? मेरा मतलब है, क्या आपको इसमें कोई रहस्य नहीं दिख रहा? मछली बाबा—नाम भी अनोखा है!’
‘हाँ, नाम थोड़ा अटपटा है, मैं मानता हूँ,’ फेलुदा ने कहा, ‘लेकिन उस कहानी में बस यही एक बात है जो मुझे प्रभावित करती है। अगर बनारस जाना ही है, तो किसी साधु की वजह से क्यों? मैं तो कचौरी गली में मिलने वाली रबड़ी का स्वाद चखने के लिए ही वापस जाना चाहूँगा।’
और मान लीजिए कि आपको पता चले कि रबड़ी बनाने वाले व्यक्ति की हत्या किसी अज्ञात व्यक्ति या व्यक्तियों ने कर दी है... और उसका खून सफेद रबड़ी पर गिरकर उसे गुलाबी कर दे—तो भला, आपका दिन बन जाएगा, है ना? आपके पास काशी में एक केस होगा, और आप कुछ पैसे भी कमा लेंगे, हा हा! आजकल आप ज्यादा व्यस्त नहीं हैं, है ना?
यह सच था। लगभग तीन महीनों तक फेलुदा ने एक भी केस स्वीकार नहीं किया था, क्योंकि कोई भी केस उनके लिए पर्याप्त चुनौतीपूर्ण नहीं था। उन्होंने यह समय पढ़ने, योग करने, धूम्रपान कम करने की कोशिश करने, शतरंज खेलने और फिल्में देखने में बिताया था। उन्होंने एक हफ्ते तक दाढ़ी बढ़ाने की भी कोशिश की। आठवें दिन, उन्होंने आईने में खुद को देखा और तुरंत रेज़र उठा लिया।
‘देखो,’ लालमोहन बाबू ने आगे कहा, ‘तुम्हारे पास कोई कहानी नहीं है, और मेरे पास कोई कथानक नहीं है। पहली बार, मैं पूजा के दौरान बिकने वाली किताबों के लिए कोई बढ़िया कथानक नहीं सोच पा रहा हूँ। पहली बार, पूजा के लिए जटायु की कोई नई किताब नहीं आएगी। मैं विदेशी किताबों और फिल्मों से विचार लेकर कुछ भी बना सकता था, लेकिन मुझे पता था कि तुम मेरी पोल खोल दोगे। इसलिए मैंने

सोचा कि अगर हम कलकत्ता से बाहर निकल सकें, तो शायद कहानी के कुछ मौलिक विचार अपने आप आ जाएँ।’
‘ठीक है। मैं तुम्हारे साथ चलूंगा। लेकिन इसमें जोखिम है।’
'वह क्या है?'
'क्या आपने इस संभावना पर विचार किया है कि वाराणसी की यात्रा आपको कहानी का कथानक प्रदान करने में विफल हो सकती है, और मुझे कोई मामला मिल सकता है?' फेलुदा गलत साबित हुए। लालमोहन बाबू को कहानी का कथानक तो मिल गया, हालांकि जब उनकी किताब आखिरकार प्रकाशित हुई, तो कहानी कुछ हद तक टिनटिन कॉमिक्स जैसी लग रही थी।
और फेलुदा? उसे एक ऐसा मामला मिला जिसमें उसका सामना अब तक के सबसे धूर्त प्रतिद्वंद्वी से हुआ। उसने बाद में मुझसे कहा, 'टॉपशे, मैं जीवन भर ऐसे ही किसी व्यक्ति का इंतजार कर रहा था। ऐसे व्यक्ति से लड़ना और जीतना मेरे लिए किसी टॉनिक की तरह था!'
कलकत्ता लॉज दशाश्वमेध घाट की ओर जाने वाली सड़क के किनारे स्थित था। यह पचास साल पुराना होटल था, जिसे बंगाली चलाते थे। लालमोहन बाबू के चचेरे भाई मैनेजर को जानते थे और उन्होंने हमारे लिए आरक्षण करवा दिया था। हम सुबह करीब दस बजे वहाँ पहुँचे।
मैनेजर, निरंजन चक्रवर्ती, संयोगवश बाहर थे। एक अन्य सज्जन ने हमें चेक-इन करने में मदद की, और एक कर्मचारी हमारा सामान हमारे कमरे तक ले गया। कमरा एक छोटा सा छात्रावास निकला, जिसमें चार बिस्तर थे। उनमें से एक के नीचे एक सूटकेस था, एक चादर लापरवाही से लपेटी हुई थी, और बिस्तर के पास एक रैक पर कुछ कपड़े रखे थे।
फेलुदा ने इन वस्तुओं पर नजर डाली और कहा, 'लालमोहन बाबू, मुझे उम्मीद है कि खर्राटों की आवाज आपकी नींद में खलल नहीं डालती होगी?'
‘क्यों? तुम तो खर्राटे नहीं लेते।’
मैं अपनी बात नहीं कर रहा हूँ। मेरा मतलब हमारे रूममेट से है।
'आपका मतलब है कि आपने सिर्फ उसके कपड़े और सूटकेस देखकर ही यह निष्कर्ष निकाल लिया कि वह आदमी खर्राटे लेता है?'
नहीं, मैं तो बस अंदाज़ा लगा रहा हूँ। देखिए, आमतौर पर बड़े-बड़े आदमी ही खर्राटे लेते हैं। इस आदमी के कपड़ों का साइज़ देखकर लगता है कि उसका शरीर दुबला-पतला नहीं है। और देखिए, उस शेल्फ पर नाक में डालने वाली दवा की बोतल

रखी है। तो शायद इस आदमी की नाक कभी-कभार बंद हो जाती होगी। इससे खर्राटे लेने की संभावना बढ़ जाती है।
‘हे भगवान! क्या आपने इन कुछ सेकंडों में इस आदमी के बारे में कुछ और अनुमान लगाया है?’
‘खैर, आप देखेंगे कि यहाँ शेविंग किट कहीं नज़र नहीं आ रही है। इसलिए, अगर उसने इसे कहीं छिपाया नहीं है, तो मेरा मानना है कि उस आदमी की दाढ़ी है।’ कुछ मिनट बाद, चायवाला हमारे लिए चाय लेकर आया। हमने अपने कप लिए और बालकनी में आ गए। दशाश्वमेध घाट की ओर जाने वाली सड़क हमारे सामने फैली हुई थी। 'अगर आपसे कलकत्ता छोड़कर यहां आकर बसने के लिए कहा जाए, तो क्या आपको लगता है कि आप ऐसा कर पाएंगे?' फेलुदा ने मुझसे पूछा।
मैंने एक पल सोचा और फिर कहा, 'नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता।'
और फिर भी, आप यहां आकर काफी उत्साहित हैं, है ना?
फेलुदा सही कह रहा था। मैं अपना पूरा जीवन बनारस में बिताना नहीं चाहूंगा, लेकिन यह जानते हुए कि मुझे यहां केवल एक सप्ताह से थोड़ा अधिक समय बिताना है, यह रहने के लिए एक बहुत ही अच्छी जगह लग रही थी।
‘क्या आप जानते हैं कि आपको ऐसा क्यों लग रहा है? क्योंकि आप बनारस से जुड़ी प्राचीन परंपराओं के बारे में सोच रहे हैं। काशी, बनारस, वाराणसी— हर नाम एक विशेष भावना जगाता है, है ना? सिर्फ इसलिए नहीं कि इसे पवित्र स्थान माना जाता है, बल्कि शहर की प्राचीनता के कारण भी। हर पुरानी इमारत अपनी एक कहानी कह सकती है। एक नए आगंतुक के लिए, यही मायने रखता है, चाहे वह जगह कितनी भी गंदी या मैली क्यों न हो। यही वाराणसी का जादू है।’
लालमोहन बाबू चुपके से अंदर चले गए थे। अब वे एक सज्जन के साथ बाहर आए, जो होटल के प्रबंधक निरंजन बाबू निकले। लगभग पचास वर्ष के, बीच से मांग निकाले हुए सफ़ेद-काले बालों वाले, पान के रस से हल्के से सने होंठों वाले उन्होंने मुस्कुराते हुए हमारा अभिवादन किया।
‘लालमोहन बाबू ने अभी-अभी मुझे बताया कि आप कौन हैं। हमारे होटल में आपका ठहरना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। मेरे कमरे में आइए, महोदय। मुझे आपको एक और कप चाय पिलाने की अनुमति दीजिए।’
हम सब नीचे की ओर चल दिए। चाय के साथ मिठाई की एक थाली भी आई। निरंजन बाबू ने फेलुदा से कहा, 'आपको मेरी अतिथि पुस्तिका पर हस्ताक्षर करने होंगे। कई

मशहूर हस्तियां इस होटल में ठहर चुकी हैं। मैं चाहता हूं कि आपका नाम भी सूची में जुड़ जाए।'
'मुझे उम्मीद है कि आपको पता होगा,' फेलुदा ने हल्की मुस्कान के साथ जवाब दिया, 'कि मेरा यह मित्र एक लेखक के रूप में भी कम प्रसिद्ध नहीं है?' लालमोहन बाबू ने विनम्रता दिखाने की कोशिश की। मैनेजर हँसते हुए बोला, 'बेशक! उसके चचेरे भाई ने मुझे उसके बारे में पहले ही बता दिया था। आपका आना तो बिलकुल अप्रत्याशित था, इसलिए...'
इस मौके पर लालमोहन बाबू ने हस्तक्षेप किया। जाहिर है, उनके मन में कुछ चल रहा था और वे उसे व्यक्त करना चाहते थे।
‘हमने आने से पहले अखबारों में पढ़ा था... क्या साधुबाबा के बारे में यह सच है?’
‘कौन? तुम्हारा मतलब एबोनी बाबा से है?’
‘एबोनी? एबोनी क्यों? मुझे लगा उसका नाम मछली था—’
'जी हां, जी हां। वही आदमी है। स्थानीय लोग उसे मछली बाबा कहते हैं। मैंने उसका नाम एबोनी रखा है। जब आप उसे देखेंगे तो आपको समझ आ जाएगा कि मेरा क्या मतलब है।'
‘क्या वह सचमुच पूरी दूरी तैरकर तय कर पाया?’
लालमोहन बाबू सारे सवाल पूछ रहे थे। फेलुदा चुपचाप सुन रहा था। निरंजन बाबू ने सिर हिलाया। उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं पता। ऐसा कहते हैं। वो हरिद्वार से निकले हैं। यहाँ से मुंगेर और पटना जाएँगे। उसके बाद कौन जाने?'
‘उसकी अलौकिक शक्तियों के बारे में क्या?’
मैं आपको केवल वही बता सकता हूँ जो मैंने सुना है। अभयचरण चक्रवर्ती सत्तर वर्ष के हैं। पिछले पैंतीस वर्षों से वे प्रतिदिन सुबह चार बजे केदार घाट पर नदी में स्नान करने जाते हैं। उनकी दृष्टि कमजोर है, लेकिन यह उन्हें घाट जाने से नहीं रोकती, चाहे बारिश हो या धूप। उस विशेष दिन, जब वे सीढ़ियों से उतरकर नदी के किनारे पहुँचे, तो उनका पैर किसी नरम चीज़ पर पड़ा। जब उन्होंने गौर से देखा तो पाया कि वह एक व्यक्ति था, जो बेहोश प्रतीत हो रहा था। उसकी त्वचा झुर्रीदार थी, मानो वह लंबे समय से पानी में रहा हो। अभयचरण के कुछ कहने या करने से पहले ही, उस व्यक्ति ने अपनी आँखें

खोलीं और कहा, "देखो, चारों ओर पानी ही पानी है। फिर भी आग से क्यों डरते हो?" और बस, बात वहीं खत्म हो गई। बूढ़े अभयचरण तुरंत ही उसके वश में हो गए। हम सब देखते रह गए। निरंजन बाबू ने आगे बताया, ‘देखिए, अभयचरण एक समय कलकत्ता के पास रहते थे। उनकी पत्नी और बच्चे की आग में जलकर मौत हो गई। इस त्रासदी के बाद उनके लिए एक ही जगह पर रहना नामुमकिन हो गया; इसलिए वे काशी चले गए। वे बहुत ही मिलनसार और सीधे-सादे बूढ़े व्यक्ति हैं। तो आप कल्पना कर सकते हैं कि मछली बाबा के शब्दों का उन पर कितना गहरा प्रभाव पड़ा होगा!’
और बाबा जी तब से उनके घर में ही रह रहे हैं?
“जी हाँ। ऐसा लगता है कि अभयचरण को बाबा ने विशेष दीक्षा दी है। यह बात जंगल की आग की तरह फैल गई। लोग उमड़ने लगे। अभयचरण का घर नदी से ज्यादा दूर नहीं है। अंदर एक खुला आंगन है। यहीं बाबा जी आगंतुकों का स्वागत करते हैं। हर किसी को मछली का एक शल्क दिया जाता है, जिसे पवित्र व्यक्ति द्वारा आशीर्वादित और पवित्र किया जाता है।”
‘मछली का छिलका? ओह, मैं समझ गया। उनके नाम के अनुरूप? लेकिन क्या इसे खाना ज़रूरी है?’ लालमोहन बाबू ने मुंह बनाया।
नहीं, नहीं। आपको बस अगले दिन सूर्योदय से पहले नदी पर जाना है और उसे पानी में डाल देना है।
‘क्या इससे वाकई किसी को कोई फर्क पड़ा है?’
‘मुझे दूसरों के बारे में तो नहीं पता। मैं सिर्फ अपने बारे में बता सकती हूँ। मेरे पेट में हल्का दर्द हो रहा था। मेरे डॉक्टर ने कहा कि यह पेट दर्द हो सकता है और मुझे मैग्नीशियम फॉस लेने को कहा, जो मैंने लिया। फिर मैंने मछली बाबा के आगमन के बारे में सुना और जाकर एक मछली का छिलका ले आई। मैंने उसे अगले दिन नदी में डाल दिया और अब दर्द चला गया है। यह होम्योपैथी की वजह से है या मछली के उपचार की वजह से, मुझे नहीं पता!’
वह यहां कितने दिन रहेगा?
‘वह कहीं भी ज्यादा देर तक नहीं रुकता। लेकिन उसके जाने का समय हमेशा उसके अनुयायी ही तय करते हैं।’
'कैसे?'
अगर तुम आज शाम मेरे साथ आओगे तो तुम्हें पता चल जाएगा।

दो

हमने निरंजन बाबू के कमरे में थोड़ी देर बातचीत की, फिर टहलने चले गए। निरंजन बाबू भी हमारे साथ आए।
हम होटल से बाहर निकले और नदी की ओर चलने लगे। सड़क दाईं ओर मुड़ी और एक ढलान शुरू हुई, जो घाट की सीढ़ियों से मिल जाती थी। सीढ़ियों पर भिखारी कतार में खड़े थे और उनके बीच बड़ी संख्या में बकरियां स्वतंत्र रूप से घूम रही थीं।
‘फेलू बाबू, आपकी नाक तो कमाल की होगी!’ जटायु ने हैरानी से कहा। ‘अब तो मुझे ये गंध पहचान में आ रही है, लेकिन मैं इसे कैसे भूल सकता था?’
यातायात के शोर के बीच एक अजीब सी आवाज़ गूंजी। यह दशाश्वमेध घाट का शोर था। सैकड़ों लोग इधर-उधर घूम रहे थे, तरह-तरह के काम कर रहे थे। 'अद्भुत' शब्द अपने आप मेरे मन में आया, लेकिन मैंने इसे कहने की हिम्मत नहीं की। घाट की सीढ़ियों से मुझे रेलवे पुल दिखाई दे रहा था। नदी के उस पार राम नगर था, जहाँ महाराजा का महल था।
हम मान मंदिर घाट की ओर चले, जो दशाश्वमेध मंदिर के पास ही था। यहाँ एक इमारत थी जिसमें लगभग तीन सौ साल पहले बनाए गए कुछ खगोलीय उपकरण रखे थे। यह दिल्ली के जंतर-मंतर की तरह एक छोटा जंतर-मंतर था। फेलुदा इन उपकरणों को देखने के इरादे से इस इमारत की ओर चलने लगा, तभी कुछ घटित हुआ।
यहां बहुत शांति थी। बस कहीं लाउडस्पीकर पर बज रहे किसी हिंदी गाने की हल्की धुन सुनाई दे रही थी, और कुछ ही फीट नीचे घाट पर कपड़े धोने की आवाज़ आ रही थी। हमारे दाहिनी ओर एक बरगद का पेड़ था। उसकी ऊपरी शाखाएँ एक पीले रंग के दो मंजिला मकान की छत की ओर झुकी हुई थीं। छत से आई एक तेज़ आवाज़ ने हम सबको चौंका दिया और हमने ऊपर देखा।
एक लड़का छत की चौखट पर खड़ा था, ठीक सामने एक लाल रंग का घर था। जाहिर तौर पर लाल घर की छत पर भी कोई था, हालांकि वह दिखाई नहीं दे रहा था। लड़का इसी अनदेखे व्यक्ति को आवाज़ दे रहा था।
‘शैतान सिंह!’ उसने फिर से चिल्लाया, जैसे कोई फिल्मी हीरो चिल्ला रहा हो।

‘वो बच्चा घोषाल परिवार का है,’ निरंजन बाबू ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘एक बेशर्म शैतान!’
मेरा पेट गुड़गुड़ाने लगा। अगर लड़के का संतुलन एक बार भी बिगड़ा, तो वह सीधे कंक्रीट के फुटपाथ पर गिर जाएगा। उसे कोई नहीं बचा पाएगा।
‘अब छिपने का कोई फायदा नहीं!’ वह चिल्लाया। ‘मुझे पता है तुम कहाँ हो!’
इस बार लालमोहन बाबू बोले। उनकी आवाज कर्कश लग रही थी। 'शैतान सिंह मेरे प्रतिद्वंद्वी लेखक अक्रूर नंदी की रचना है।'
‘मैं तुम्हें लेने आ रहा हूँ!’ लड़के ने कहा। ‘आत्मसमर्पण के लिए तैयार हो जाओ।’ लड़का गायब हो गया। एक पल बाद, पीले घर की छत के एक कोने से एक लंबा बांस का खंभा निकला, जो लाल घर की छत तक फैला हुआ था, और दोनों के बीच एक पुल बना रहा था।
‘वह क्या करने की कोशिश कर रहा है?’ फेलुदा ने धीमी आवाज़ में कहा।
‘शैतान सिंह, मैं तुम्हें दस तक गिनने से पहले ही पकड़ लूंगा!’ इसके बाद जो हुआ, उससे हम सब कांप गए।
लड़का रेलिंग के ऊपर चढ़ गया और बांस के खंभे से झूलने लगा।
‘एक...दो...तीन...चार...’
शैतान सिंह लाल घर से गिनती कर रहा था। लड़का खंभे से लटकते हुए अपने दुश्मन की ओर बढ़ने लगा।
‘कुछ करो!’ निरंजन बाबू ने आग्रह किया। ‘मेरा पेट दर्द फिर से शुरू हो गया है!’
‘श-श-श,’ फेलुदा ने फुफकारा। हम कुछ नहीं कर सकते थे, सिवाय इसके कि सांस रोककर आगे जो हुआ उसे देखते रहें।
‘...छह...सात...आठ...नौ...’
लड़का सामने वाले घर तक पहुँच गया था। अब उसने दीवार फांदकर छत पर छलांग लगा दी। इसके बाद शैतान सिंह की चीख सुनाई दी और हमारे नायक ने खुशी से ठहाके लगाए।
‘क्या उसने सचमुच उसे मार डाला, आपको क्या लगता है?’ लालमोहन बाबू ने चिंता से पूछा। ‘मुझे लगा कि मैंने उसकी कमर से एक खंजर जैसी कोई चीज लटकती हुई देखी।’
फेलुदा लाल घर की ओर बढ़ने लगा। उसने कहा, 'दुष्ट कैसा होगा, यह तो भगवान ही जाने, लेकिन नायक तो स्पष्ट रूप से असाधारण रूप से बहादुर है।'

‘हमें बच्चे के पिता को बताना होगा,’ निरंजन बाबू ने कहा।
हमें वास्तव में लाल घर में प्रवेश करने की आवश्यकता नहीं थी। जैसे ही हम उसके मुख्य द्वार पर पहुँचे, हमने सीढ़ियों से नीचे आते कदमों की आहट और पहले लड़के की आवाज सुनी।
‘…फिर वह ज़ोरदार छपछपाहट के साथ नदी में गिरेगा, और नदी उसे सीधे समुद्र तक ले जाएगी। फिर एक शार्क आएगी और उसे निगल जाएगी। लेकिन जब यह शार्क कैप्टन स्पार्क पर हमला करेगी, तो कैप्टन स्पार्क उसे भाले से मार गिराएगा, और…’
वह अपनी बात पूरी नहीं कर पाया, क्योंकि दोनों लड़के दरवाजे से बाहर आ गए और हमें देख लिया। वे अचानक रुक गए और घूरने लगे। पहला लड़का बहुत सुंदर था, लगभग दस साल का। दूसरा थोड़ा बड़ा लग रहा था और साफ तौर पर बंगाली परिवार का नहीं था। दोनों के मुंह में च्युइंग गम थी।
फेलुदा ने पहले लड़के से कहा, 'मैं देख सकता हूँ कि तुम्हारा दोस्त शैतान सिंह है। तुम कौन हो?'
लड़के ने तीखे स्वर में कहा, 'कैप्टन स्पार्क।'
‘क्या तुम्हारा कोई दूसरा नाम नहीं है? तुम्हारे पिता तुम्हें क्या कहकर बुलाते हैं?’
‘मेरा नाम कैप्टन स्पार्क है। शैतान सिंह ने अफ्रीका के जंगलों में मेरे पिता को विषैले तीर से मार डाला था। तब मैं सात साल का था। मेरी आँखों में बदले की भावना की चमक है। इसीलिए मुझे कैप्टन स्पार्क कहा जाता है।’
‘हे भगवान!’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा। ‘ऐसा लगता है जैसे इस लड़के ने अक्रूर नंदी द्वारा लिखे गए हर शब्द को याद कर लिया हो!’
लड़के ने उसे घूरकर देखा, फिर अपने दोस्त के साथ बड़े ही गरिमापूर्ण ढंग से चला गया। देखते ही देखते वे दोनों नजरों से ओझल हो गए।
लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की, 'जन्मजात अभिनेता।'
‘क्या आप घोषाल परिवार को जानते हैं?’ फेलुदा ने निरंजन बाबू से पूछा। “बिल्कुल। काशी में हर कोई उन्हें जानता है। वे लगभग सौ वर्षों से यहाँ रह रहे हैं। उस छोटे लड़के के दादा, अंबिका घोषाल, यहीं स्थायी रूप से रहते हैं। वे पहले वकील थे, लेकिन अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं। लड़के के पिता, उमानाथ घोषाल, कलकत्ता में रहते हैं। उनका अपना व्यवसाय है। वे दुर्गा पूजा से पहले हर साल अपने परिवार के साथ यहाँ आते हैं। वे अपने घर में पूजा

करते हैं। उनका परिवार एक पुराना कुलीन परिवार है। मेरा मानना है कि वे कभी पूर्वी बंगाल में जमींदार हुआ करते थे।”
'क्या आपको लगता है कि उमानाथ बाबू से मिलना संभव होगा?'
“क्यों नहीं, बिल्कुल। हम आज शाम को उनसे वहीं मिल सकते हैं जहाँ एबोनी बाबा ठहरे हुए हैं। मैंने सुना है कि उमानाथ भी दीक्षा लेना चाहता है।” एबोनी बाबा को देखते ही निरंजन बाबू ने यह नाम क्यों चुना था, यह बात समझ में आ गई। मैंने इतना गहरा रंग पहले कभी नहीं देखा था। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। उनकी त्वचा इतनी चिकनी थी कि ऐसा लगता था मानो उन्होंने काले रंग का कोई चुस्त-दुरुस्त कपड़ा पहना हो। उनके लहराते बाल कंधों तक फैले हुए थे; उनकी दाढ़ी छाती तक आती थी। दोनों ही एकदम काले थे। उनका शरीर सुगठित था और वे पैंतीस साल से अधिक उम्र के नहीं लगते थे। ज़ाहिर है, अगर वे जवान और तगड़े न होते तो इतनी तैराकी न कर पाते। उन्होंने लाल रंग की लुंगी पहनी हुई थी और कंधों पर लाल रेशमी दुपट्टा लिपटा हुआ था। इससे उनका व्यक्तित्व और भी प्रभावशाली लग रहा था।
हम चारों श्रद्धालुओं के एक समूह के पीछे खड़े थे। बाबा जी आंगन की ओर खुलने वाले बरामदे में बिछी चटाई पर बैठे थे। उनके पीछे पीले मखमल से ढके दो तकिए रखे थे। उनके बाईं ओर हाथ जोड़े, आंखें बंद किए एक बुजुर्ग व्यक्ति बैठे थे। मैंने सोचा, ये अभयचरण चक्रवर्ती ही होंगे। बरामदे के एक कोने में एक और व्यक्ति बैठा हिंदी भजन गा रहा था। मछली बाबा पद्मासन में बैठे थे और भजन की धुन पर धीरे-धीरे अपना शरीर हिला रहे थे।
आज वह मछली के छिलके नहीं बाँटने वाले थे। आज हमें कुछ बिल्कुल अलग देखने को मिलने वाला था। आज बाबा के अनुयायी उन्हें बताएंगे कि उन्हें वाराणसी में कितने दिन रुकना है। यह कैसे होगा, यह किसी को ठीक से पता नहीं था। लालमोहन बाबू यहाँ आने के बाद से काफी धार्मिक हो गए थे। आज सुबह मैंने उन्हें घाट पर एक से अधिक बार 'जय बाबा विश्वनाथ!' चिल्लाते सुना था। अब बाबा के दर्शन मात्र से ही वे हाथ जोड़ बैठते थे। अगर वे अपनी धार्मिक भावना में बह जाते तो किसी थ्रिलर की कहानी कैसे सोच पाते? या फिर वे उम्मीद कर रहे थे कि बाबा उनके सपने में आकर उन्हें कहानी का कोई उपयुक्त विचार देंगे?

इसी दौरान एक युवक अंदर आया और हमारे साथ शामिल हो गया। उसने भीड़ की ओर देखा, शायद सोच रहा था कि वह आगे कैसे बढ़ेगा। निरंजन बाबू उसकी ओर झुके और पूछा, 'क्या श्री घोषाल आपके साथ नहीं आए हैं?'
‘नहीं,’ युवक ने उत्तर दिया। ‘आज कलकत्ता से कुछ मेहमान आए थे, इसलिए उन्होंने न आने का फैसला किया।’ वह व्यक्ति सुसंस्कृत और सलीकेदार दिख रहा था।
‘मैं आप लोगों का परिचय कराता हूँ,’ निरंजन बाबू ने कहा। ‘ये विकास सिन्हा हैं, उमानाथ घोषाल के सचिव। और ये प्रदोष मित्र हैं, जो अपने चचेरे भाई तपेश और मित्र लालमोहन गांगुली के साथ यहाँ आए हैं।’
विकास सिन्हा ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'प्रदोश मित्तर? आपका मतलब वही प्रदोश मित्तर है, जो जांचकर्ता हैं?'
‘जी हां, जी हां,’ निरंजन बाबू ने उत्साह से अपनी आवाज बुलंद की, ‘कोई और नहीं। बेशक, श्री गांगुली भी यहां हैं—’
उन्होंने लालमोहन बाबू की ओर इशारा किया, लेकिन श्री सिन्हा फेलुदा को ही घूरते रहे। ऐसा लग रहा था मानो वे कुछ कहना चाहते हों, लेकिन उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि शुरुआत कैसे करें।
अंत में उसने पूछा, 'आप कहाँ ठहरे हुए हैं?'
'मेरे होटल में,' निरंजन बाबू ने फेलुदा की ओर से जवाब दिया।
‘ठीक है, मतलब…’ विकास सिन्हा अभी भी हिचकिचा रहे थे। ‘शायद यही समझदारी होगी… कोई बात नहीं, मैं कल आपसे संपर्क करूँगा।’ उन्होंने हम सभी को नमस्कार किया और भीड़ में गायब हो गए। ठीक इसी क्षण, मछली बाबा बोले।
‘एक!’ उसने चिल्लाया। भजन रुक गया। भीड़ में सब लोग चुप हो गए। मैंने पहली बार देखा कि अभयचरण के सामने एक और आदमी बैठा था जिसके सामने एक चमकीले डिज़ाइन वाला थैला रखा था। थैले के पास ढेर में कुछ अजीब सी काली वस्तुएँ पड़ी थीं।
‘सूर्य एक ही है, चंद्रमा भी एक ही है। एक ही!’ बाबा जी ने आगे कहा। ‘दो कान, दो आंखें, दो हाथ और दो पैर। दो!’
यह सब मुझे सरासर बेतुका लगा। यह कहना मुश्किल था कि किसी और को भी यह समझ आ रहा था या नहीं। लेकिन बाबा बोलते रहे। ‘भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल—तीन! पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण—चार! जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश—पाँच! एक, दो, तीन, चार, पाँच!’ वे रुक गए। सबकी निगाहें उन

पर टिकी थीं। ‘रोमांचकारी!’ लालमोहन बाबू ने मेरे कान में फुसफुसाया। बाबा इसी रहस्यमयी अंदाज़ में गिनती करते रहे, दस तक पहुँचे, जिसमें छह ऋतुओं, भालू के सात नक्षत्रों, आठ शुद्ध और विशेष धातुओं, नौ ग्रहों और अंत में विष्णु के दस अवतारों का ज़िक्र था। फिर वे रुके और थैला लिए हुए आदमी को सिर हिलाकर इशारा किया, जिसने उनसे कुछ फुसफुसाया और भीड़ की ओर मुड़ गया। “इस थैले में खाली कागज के टुकड़े हैं,” उस आदमी ने पतली, कर्कश आवाज में कहा। “आपसे अनुरोध है कि आप यहां से एक कागज का टुकड़ा और कोयले का एक टुकड़ा लें और उस पर एक से दस तक कोई भी संख्या लिखें। कृपया चुनी हुई संख्या लिखे हुए कागज को मुझे वापस कर दें।”
फेलुदा ने निरंजन बाबू की ओर रुख किया।
उन्होंने पूछा, 'क्या अधिकांश लोगों द्वारा लिखी गई संख्या ही उनके ठहरने की अवधि निर्धारित करेगी?'
'शायद। उसने कहा तो नहीं, है ना?'
अगर ऐसा है तो मुझे नहीं लगता कि वह यहां सात दिन से ज्यादा रुकेगा।
क्या आप कोई संख्या लिखने जा रहे हैं?
नहीं। मुझे बाबा के यहाँ ठहरने में कोई दिलचस्पी नहीं है। मेरी जिज्ञासा कुछ और ही है। मुझे बताइए, क्या ये सभी लोग महज़ कठपुतली हैं, या यहाँ कुछ जाने-माने लोग भी मौजूद हैं?
‘क्या कह रहे हैं आप, साहब?’ निरंजन बाबू ने अपनी भौंहें उठाईं। ‘इनमें से कई लोगों को काशी का कुलीन वर्ग कहा जा सकता है। देखिए, सफेद कमीज पहने उस आदमी को देखिए? ये श्रुतिधर महेश वाचस्पति हैं, जो संस्कृत के एक प्रसिद्ध विद्वान हैं। और वहाँ एक जाने-माने डॉक्टर और एक बैंक मैनेजर भी हैं। वहाँ बैग लिए खड़ा आदमी अभयचरण का भतीजा है। वह अलीगढ़ में अंग्रेजी का प्रोफेसर है। मैं आपको बता सकता हूँ कि आपको यहाँ हर पेशे से कोई न कोई मिल जाएगा। देखिए यहाँ कितनी महिलाएँ हैं। इनमें से कुछ तो जानी-मानी और उच्च शिक्षित भी हैं। और देखिए, देखिए—’ उन्होंने सफेद कुर्ते और सिर पर सफेद जरी की टोपी पहने एक लंबे-चौड़े आदमी की ओर इशारा किया। वह हमारी ओर पीठ करके बैठा था।
‘क्या आप जानते हैं कि वह कौन है? वह मगनलाल मेघराज है। बनारस का सबसे धनी और सबसे शक्तिशाली व्यक्ति।’
‘मगनलाल मेघराज? यह नाम जाना-पहचाना सा लगता है।’

निरंजन बाबू ने अपनी आवाज धीमी करते हुए कहा, 'पुलिस ने उनके घर पर दो बार छापा मारा। कलकत्ता स्थित उनके कार्यालय पर भी छापा मारा गया।'
'लेकिन कुछ नहीं मिला, मेरा मतलब यही है?'
'नहीं, बिलकुल नहीं। उसके जैसा आदमी जानता है कि अपनी रक्षा कैसे करनी है और पुलिस को कैसे खुश रखना है।'
हम निकास द्वार की ओर चलने लगे। जैसे ही हम वहाँ पहुँचे, श्री सिन्हा भीड़ से बाहर निकले। उन्होंने फेलुदा से चिंतित होकर पूछा, 'क्या आप जा रहे हैं?' फेलुदा के जवाब देने से पहले ही उन्होंने आगे कहा, 'क्या आप अभी हमारे घर आ सकते हैं? मुझे लगता है श्री घोषाल आपसे मिलकर प्रसन्न होंगे।' फेलुदा ने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। 'हमारे आपके साथ न जाने का कोई कारण नहीं है। केवल निरंजन बाबू को ही होटल वापस लौटना पड़ सकता है।'
‘जी हां,’ निरंजन बाबू ने कहा। ‘तुम तीनों जाओ। लेकिन अगर तुम्हें गरमागरम खाना चाहिए तो वापस आने में देर मत करना। मैंने तुम्हारे लिए खास चिकन करी मंगवाई है!’

तीन

‘मैंने आपके बारे में जरूर सुना है,’ उमानाथ घोषाल ने कहा।
फेलुदा ने यथासंभव विनम्रता से मुस्कुराया। उमानाथ बाबू चालीस वर्ष के आसपास के एक व्यापारी थे। उनका रंग उनके बेटे की तरह गोरा था और उनकी आंखें हल्के भूरे रंग की थीं। उन्होंने अपनी आंखें हमारी ओर घुमाईं और पूछा, 'अह... ये क्या हैं...?'
फेलुदा ने झट से कहा, 'मेरा चचेरा भाई तपेश है, और यह मेरा दोस्त लालमोहन गांगुली है। वह जटायु के छद्म नाम से साहसिक कहानियां लिखता है।'
‘जटायु?’ उमानाथ घोषाल ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। ‘मुझे लगता है मैंने यह नाम सुना है। मुझे लगता है रुकू के पास आपकी कई किताबें हैं। है ना, विकास?’ ‘जी सर,’ विकास सिन्हा ने कहा। ‘मुझे ऐसा ही लगता है।’
‘तुम्हें तो पता होना चाहिए! तुम ही तो उसके लिए ये सारी किताबें खरीदते हो।’
'मुझे करना ही होगा, महोदय। वह रोमांच और रहस्य की कहानियों के अलावा कुछ नहीं पढ़ते।'
‘यह तो स्वाभाविक है,’ जटायु ने कहा, ‘खासकर उनकी उम्र में।’ मुझे यह देखकर खुशी हुई कि लालमोहन बाबू थोड़े खुश हो गए थे। कैप्टन स्पार्क से हमारी मुलाकात के बाद से वे काफी उदास दिख रहे थे। अक्रूर नंदी स्पष्ट रूप से एक लोकप्रिय लेखक थे और जटायु को उनसे ईर्ष्या होने की संभावना थी।
फेलुदा ने कहा, 'हम वैसे भी आपसे मिलने वाले थे। देखिए, आज सुबह हमारी मुलाकात आपके बेटे से हुई। मुझे उसका असली नाम तो नहीं पता, लेकिन मुझे उस किरदार का नाम पता चल गया है जिसे वह निभा रहा था।'
‘वह ऐसा हमेशा करता है। असल में, वह दूसरों को भी अपने साथ शामिल कर लेता है। क्या तुम उसके लिए कोई खास किरदार नहीं निभा रहे हो, विकास? वह तुम्हें किसी दूसरे नाम से पुकारता है, है ना?’
‘सर, यह सिर्फ एक नाम या एक भूमिका की बात नहीं है। मैं काफी बहुमुखी प्रतिभा का धनी हूं!’ विकास सिन्हा हंसते हुए बोले।

वैसे, आप मेरे बेटे से कहाँ मिले थे?
फेलुदा ने उसे जितना हो सके संक्षेप में बताया। उमानाथ बाबू लगभग अपनी कुर्सी से गिर पड़े। 'मुझे विश्वास नहीं हो रहा! हे भगवान, उसकी हत्या हो गई होगी! विकास, रुकू को तुरंत यहाँ बुलाओ!'
श्री सिन्हा कमरे से बाहर चले गए।
फेलुदा ने पूछा, 'रुकु का असली नाम क्या है?'
‘रुक्मिणी कुमार। वो मेरा इकलौता बच्चा है। तो आप समझ ही सकते हैं कि मैं कितनी परेशान हूँ। मुझे पता था कि वो शरारती है, लेकिन ये तो हद है—!’ रुकू के आने का इंतज़ार करते हुए मैंने चारों ओर देखा। बैठक के एक कोने से मुझे बरामदे का वह हिस्सा दिखाई दे रहा था जहाँ कलाकार दुर्गा की मूर्ति पर काम कर रहे थे। पूजा बस कुछ ही दिनों में होने वाली थी।
एक वेटर ट्रे लेकर आया। हमें चाय के कप और मिठाई की प्लेटें दी गईं।
श्री घोषाल ने कहा, 'मुझे लगता है कि आप मछली बाबा से मिलने गए थे। आपको वे कैसे लगे?'
‘हम ज्यादा देर नहीं रुके। आपको भी तो जाना था, है ना?’
खैर, मैं उससे एक बार मिलने गई थी। अब दोबारा जाने की मेरी कोई इच्छा नहीं है। काश मैं उस शाम बाहर न गई होती, तो शायद हम इस विपत्ति से बच जाते। 'आपदा?'
जी हां, श्री घोषाल ने आह भरते हुए कहा। “पिछले बुधवार को जब मैं मछली बाबा से मिलने गया था, तब मेरे पिता के कमरे से एक अत्यंत मूल्यवान वस्तु चोरी हो गई। श्री मित्तर, यदि आप उसे मेरे लिए वापस ला दें, तो मैं आपका सदा आभारी रहूंगा। और हां, मैं आपको उचित भुगतान भी करूंगा।”
मेरे दिल में एक जानी-पहचानी दौड़ शुरू हो गई।
‘क्या मैं पूछ सकता हूँ कि वह क्या था?’ फेलुदा ने कहा।
‘गणेश। यह गणेश जी की एक छोटी सी मूर्ति थी,’ श्री घोषाल ने उसका आकार बताने के लिए अपनी उंगलियां थोड़ी फैलाईं, ‘सोने की बनी हुई और कीमती पत्थरों से जड़ी हुई। यह लगभग ढाई इंच ऊंची थी।’
'किस प्रकार तुमने यह पाया?'
‘मैं आपको बताता हूँ। यह किसी परी कथा जैसा लग सकता है, लेकिन मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि यह सच है।’ उन्होंने सिगरेट जलाई और बोलना शुरू किया। ‘मेरे परदादा, सोमेश्वर घोषाल, एक महान यात्री थे। उन्होंने बैलगाड़ी से

लेकर ट्रेन तक, जो भी साधन उपलब्ध होता, उसका इस्तेमाल करते हुए पूरे देश की यात्रा की। जब उन्हें कोई साधन नहीं मिलता था, तो वे पैदल ही चलते थे। एक बार, जब वे दक्षिण भारत में थे, तो वे मदुरै के पास एक घने जंगल से बैलगाड़ी में जा रहे थे। अंधेरा था और रास्ता संकरा था। तीन लुटेरों ने उन पर हमला कर दिया। लेकिन सोमेश्वर असाधारण रूप से बलवान थे। उन्होंने एक भारी बाँस की छड़ी का इस्तेमाल किया और अपने एक हमलावर को बेहोश कर दिया। बाकी दो भाग गए, और अपने पीछे एक थैला छोड़ गए जिसमें अन्य चीजों के साथ-साथ गणपति की यह छोटी सी मूर्ति भी थी। वे मूर्ति लेकर घर लौटे, और हमारे परिवार में सब कुछ पूरी तरह बदल गया। मुझे पुराने ख्यालों वाला या अंधविश्वासी मत समझिए, लेकिन मैंने सुना है कि गणेश जी हमारे लिए सौभाग्य लेकर आए थे।’ उसके आने के दो साल बाद, एक विनाशकारी बाढ़ आई। हमारा घर नदी के काफी करीब था, लेकिन चमत्कारिक रूप से बच गया। ऐसे और भी कई उदाहरण हैं, जिनका जिक्र करने की मुझे जरूरत नहीं है। मेरी मुख्य चिंता यह है कि हमारे पास गणेश जी सौ साल से थे। अब वे हमसे छीन लिए गए हैं। कुछ दिनों में पूजा शुरू होने वाली है, घर मेहमानों से भरा हुआ है, लेकिन कोई भी आराम नहीं कर पा रहा है और आनंद नहीं ले पा रहा है। आप मेरी परेशानी समझ सकते हैं, है ना? श्री घोषाल थकी हुई सी आह भरते हुए पीछे झुक गए।
‘आपने मछली बाबा से कब मुलाकात की थी?’ पेलुदा ने पूछा।
तीन दिन पहले, बुधवार को। हम लगभग दस दिन पहले कलकत्ता से आए थे। मेरी पत्नी बाबा के दर्शन करने के लिए बहुत उत्सुक थी, इसलिए मैं उस शाम उसे और रुकू को लेकर गया।
‘क्या आपका बेटा सचमुच जाना चाहता था?’
हां, मुझे लगता है कि वह नाम से उत्सुक हो गया था। उसने मुझे बताया कि उसने एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पढ़ा था जिसने शार्क से भरे समुद्र में सत्तर मील की दूरी तय की थी। लेकिन जब उसने वास्तव में बाबा को देखा, तो वह कुछ खास प्रभावित नहीं हुआ। वह बेचैन होने लगा और लगभग दस मिनट बाद ही हम वहां से चले गए। जब हम वापस लौटे तो गणेश जी गायब थे।
‘गणेश की यह छोटी सी मूर्ति एक संदूक में रखी थी, मेरा अनुमान है? आपके पिताजी के कमरे में, क्या आपने यही कहा?’
हां, लेकिन चाबी मेरे पास है। आम तौर पर यह मेरी पत्नी के पास रहती है। उस शाम, चूंकि वह मेरे साथ आ रही थी, मैंने उससे चाबी लेकर अपने पिता के कमरे

की दराज में रख दी। यह एक मूर्खतापूर्ण काम था, क्योंकि मेरे पिता अफीम के आदी हैं और आमतौर पर शाम को सोते हैं। खैर, मैंने दराज को मजबूती से बंद कर दिया, लेकिन जब मैं वापस आया, तो वह लगभग एक इंच खुली हुई थी। इससे मुझे शक हुआ, इसलिए मैंने तुरंत दराज में देखा। चाबी वहीं थी जहां मैंने छोड़ी थी, लेकिन गणेश गायब थे।
फेलुदा ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'क्या मैं पूछ सकता हूँ कि उस समय घर में कौन-कौन मौजूद था?'
फेलुदा अपनी नोटबुक नहीं लाया था। लेकिन मुझे पूरा यकीन था कि वह श्री घोषाल की कही हर बात याद रख लेगा और बाद में हमारे होटल के कमरे में उसे लिख लेगा।
श्री घोषाल ने कहा, “जी हां, आपने द्वार पर हमारे चौकीदार त्रिलोचन को देखा होगा। वह पैंतीस वर्षों से हमारे परिवार के साथ हैं। कुछ नौकर और नौकरानियां भी हैं—ये सभी लंबे समय से हमारे साथ हैं। कलाकार शशि बाबू अपने बेटे के साथ दुर्गा की मूर्ति पर काम कर रहे हैं। मैं उन्हें तीस वर्षों से जानता हूं। वह एक बहुत ही प्रतिभाशाली कलाकार हैं। घर में इन लोगों के अलावा, हमारे माली और विकास भी थे, जो आपको यहां लाए थे।”
‘वह कब से आपके सचिव के रूप में कार्यरत हैं?’
लगभग पाँच साल। लेकिन उसने अपना लगभग पूरा जीवन हमारे घर में ही बिताया है। उसके पिता बंगाल में हमारी जागीर में काम करते थे। विकास जब छोटा था, तभी उनका निधन हो गया। मेरे एक चाचा विकास को घर ले आए ताकि उसकी देखभाल कर सकें, और तब से वह यहीं रह गया है। वह परिवार के सदस्य जैसा ही है। वह एक बुद्धिमान व्यक्ति है, उसने स्कूल और कॉलेज में अच्छा प्रदर्शन किया। क्या आपने चोरी की सूचना पुलिस को नहीं दी?
'बिल्कुल। मैंने उसी शाम उन्हें फोन किया था। लेकिन वे अभी तक कुछ नहीं कर पाए हैं।'
‘क्या आपके परिवार के बाहर किसी को गणेश जी के बारे में पता था?’ श्री घोषाल के जवाब देने से पहले ही रुकू विकास बाबू के साथ आ गई। मैंने रुकू के पिता की ओर देखा, मुझे लगा कि वे भड़क उठेंगे। लेकिन श्री घोषाल ने बड़ी समझदारी से खुद को संभाला और बस अपने बेटे को तिरछी नज़र से देखते हुए सख्त लहजे में कहा, ‘पूजा पूरी होने तक तुम्हें घर से बाहर कदम रखने की मनाही है। तुम

बगीचे और छत पर खेल सकते हो, लेकिन जब तक मैं तुम्हें खुद बाहर न ले जाऊं, तुम्हें हर समय घर के अंदर ही रहना है। समझे?’
‘शैतान सिंह का क्या हुआ?’ रुकू ने तीखे स्वर में पूछा।
‘आखिर वो कौन है?’
‘वह जेल से भाग निकला है। उसे पकड़ा जाना चाहिए!’
‘कोई बात नहीं, मैं उसे तुम्हारे लिए ढूंढ निकालूंगा,’ विकास बाबू ने हल्के-फुल्के अंदाज में कहा। रुकू ने कृतज्ञता भरी नज़र से उसे देखा और बिना कुछ कहे चुपचाप उसके साथ कमरे से बाहर चली गई।
श्री घोषाल ने कहा, ‘जैसा कि आपने देखा है, श्री मित्तर, यह बच्चा असाधारण रूप से कल्पनाशील है। खैर, चलिए मैं आपके प्रश्न का उत्तर देता हूँ। हाँ, गणेश जी के बारे में बहुत से लोग जानते थे, खासकर जब हम अपने पैतृक घर में रहते थे। सोमेश्वर और लुटेरों के बीच हुई लड़ाई की कहानी किंवदंती की तरह फैल गई थी। लेकिन यह मेरे जन्म से बहुत पहले की बात है। जब हम कलकत्ता चले गए, तो इसके बारे में बात करने वाले बहुत कम लोग बचे थे। कलकत्ता में कॉलेज में पढ़ते समय, मैंने कुछ दोस्तों से casually इसका जिक्र किया था। उनमें से एक—लेकिन ध्यान रहे, मैं अब उन्हें दोस्त नहीं मानता—अब बनारस में रहते हैं। उनका नाम मगनलाल मेघराज है।’
‘ओह जी हाँ,’ फेलुदा ने कहा, ‘मैं समझ गया कि आप किसकी बात कर रहे हैं। हमने उसे आज शाम मछली बाबा की सभा में देखा था।’
'हां, मुझे पता है। वो पिछले बुधवार को भी वहीं थे। बाबा की मदद के लिए बार-बार उनके पास जाने की एक वजह है। आप जानते हैं, वो बुरे दौर से गुजर रहे हैं। पिछले साल उनकी प्लाईवुड फैक्ट्री जल गई थी। फिर कुछ संदिग्ध लेन-देन की अफवाहें फैलीं। इसलिए पुलिस ने यहां और कलकत्ता में उनके घर और दफ्तर दोनों पर छापा मारा। मेरे आने के दो दिन बाद वो मुझसे मिलने आए। उन्होंने सीधे-सीधे कहा कि वो गणेश जी की मूर्ति खरीदना चाहते हैं। उन्हें पता था कि हमने उसे मेरे पिताजी के कमरे में रखा हुआ है। उन्होंने मुझे तीस हजार रुपये देने की पेशकश की, लेकिन मैंने मना कर दिया। आखिर में, वो ये कहते हुए चले गए कि वो किसी भी तरह से उसे हासिल कर लेंगे। उनके आने के पांच दिन बाद गणेश जी की मूर्ति गायब हो गई।'
श्री घोषाल चुप हो गए। फेलुदा भी चुप थे। वे चुपचाप बैठे रहे, उनकी भौंहों के बीच गहरी शिकन थी। मुझे अंदर से महसूस हुआ कि उनकी तीन महीने की छुट्टी

खत्म हो गई है। लालमोहन बाबू की भविष्यवाणी सच होने वाली थी। काशी में एक मामला था, लेकिन पैसा तो ज़ाहिर तौर पर...
श्री घोषाल ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा, 'हमें बहुत खुशी है कि आप इस समय यहां मौजूद हैं। अब, अगर आप मान जाएं तो...'
‘जी हाँ, बिल्कुल। ज़रूर।’ फेलुदा उठ खड़ा हुआ। ‘अगर अनुमति हो तो मैं कल वापस आकर आपके पिता से बात करना चाहूँगा। क्या यह संभव होगा?’
क्यों नहीं? मेरे पिताजी से बात करना हमेशा आसान नहीं होता, लेकिन उनका आक्रामक स्वभाव सिर्फ दिखावा है। करीब आठ बजे आ जाना। मैं ध्यान रखूंगी कि पिताजी तैयार मिलें और आपका इंतज़ार कर रहे हों। वैसे, अगर आप बगीचे में या हमारे परिसर में कहीं और घूमना चाहें, तो बेझिझक घूम सकते हैं। मैं त्रिलोचन से कह दूंगी कि जब भी आप आना चाहें, आपको अंदर आने दें। विकास भी आपकी मदद कर सकता है।
इसके तुरंत बाद हम वहां से विदा हो गए। होटल लौटते समय मैंने देखा कि एक आदमी हमारा पीछा कर रहा है। वह कंबल में लिपटा हुआ था। मैं उसका चेहरा नहीं देख पा रही थी। लेकिन जब मैंने फेलुदा को चेतावनी देने की कोशिश की कि कोई हमारा पीछा कर रहा है, तो उसने मेरी बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया और एक हिंदी फिल्म का गाना बेसुरी आवाज़ में गुनगुनाता रहा।

चार

कलकत्ता लॉज के रसोइए ने बेहतरीन चिकन करी बनाई। उन्होंने मछली भी परोसी, जो उतनी ही स्वादिष्ट थी, लेकिन लालमोहन बाबू ने उसे छुआ तक नहीं। उन्होंने हमें बताया, ‘आज शाम मछली बाबा को देखने के बाद, मैं फिर कभी मछली नहीं खा पाऊंगा।’
‘क्यों?’ फेलुदा हँसते हुए बोला, ‘क्या इससे तुम्हें ऐसा लगेगा कि तुम बाबा का मांस चबा रहे हो? क्या तुम्हें लगता है कि मछली बाबा स्वयं उस चीज़ का सेवन नहीं करते जिसे तुम त्यागने का प्रस्ताव दे रहे हो?’
क्या वह ऐसा नहीं करता?
‘अच्छा, आपने सुना ही होगा कि वह अपना अधिकांश समय पानी में बिताता है। तो मछली के अलावा वह और क्या खा सकता है? कुछ प्रजातियों की मछलियाँ दूसरी मछलियों को खाती हैं, क्या आपको यह नहीं पता था?’
लालमोहन बाबू ने कुछ नहीं कहा। मुझे पूरा यकीन था कि अगले दिन से वह फिर से मछली खाने की अपनी पुरानी आदत पर लौट आएंगे।
एक व्यस्त दिन के बाद, मैं चैन की नींद की उम्मीद कर रहा था। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। हमारा रूममेट, जीवन बाबू (छोटा, मोटा और दाढ़ी वाला, जैसा कि फेलूदा ने भविष्यवाणी की थी), ज़बरदस्त खर्राटे लेने वाला निकला। मैंने लगभग पूरी रात बिस्तर पर करवटें बदलते हुए बिताई, यह सोचते हुए कि आखिर क्यों, कम से कम इस बार तो फेलूदा गलत साबित नहीं हुआ।
अगली सुबह, नाश्ते के बाद जब हम होटल से बाहर निकल रहे थे, तो हमारी मुलाकात निरंजन बाबू से हुई। फेलुदा ने कुछ देर शिष्टाचारवश पूछा, 'क्या आपको पता है कि मगनलाल मेघराज कहाँ रहते हैं?'
‘मेघराज? जहाँ तक मुझे पता है, उनके दो घर हैं, दोनों बनारस के बीचोंबीच। उनमें से एक विश्वनाथ मंदिर से ज्यादा दूर नहीं है। कोई भी आपको रास्ता बता देगा।’

निरंजन बाबू ने हमें एक और बात बताई। मछली बाबा अगले छह दिनों तक बनारस में ही रहने वाले थे। यह सुनकर फेलुदा की मशहूर टेढ़ी मुस्कान चेहरे पर आ गई, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा।
हम ठीक आठ बजे घोषाल के घर पहुँचे। त्रिलोचन ने मुस्कुराते हुए और सलीके से अभिवादन करते हुए हमारे लिए द्वार खोला। मुझे लगा कि उनकी उम्र लगभग सत्तर होगी; लेकिन वे देखने में बिल्कुल भी ऐसे नहीं लग रहे थे। उनकी पीठ एकदम सीधी थी और उनकी मूंछें वाकई प्रभावशाली थीं।
विकास बाबू हमारा अभिवादन करने के लिए बाहर आए। उन्होंने कहा, 'मैंने आपको आते हुए देखा।' शायद उन्होंने अभी-अभी शेव की थी, क्योंकि उनके दाहिने कान के नीचे थोड़ा सा साबुन चिपका हुआ था।
‘क्या आप अंदर आना चाहेंगे? बूढ़े श्री घोषाल आपका इंतजार कर रहे हैं। आप उनसे ही मिलना चाहते थे, है ना?’
'जी हां, लेकिन इससे पहले कि हम ऐसा करें, क्या आप मुझे कुछ बातें बता सकते हैं?'
'नहीं बिलकुल नहीं।'
फेलुदा ने कुछ त्वरित प्रश्न पूछे और उनके उत्तर अपनी नोटबुक में लिख लिए। निम्नलिखित बिंदु सामने आए:
1. मगनलाल 10 अक्टूबर को श्री घोषाल से उनके घर पर मिलने आया।
2. श्री घोषाल अपनी पत्नी और बच्चे को 15 तारीख को शाम 7:30 बजे मछली बाबा के दर्शन के लिए ले गए। वे एक घंटे से कुछ अधिक समय बाद वापस लौटे। इसी दौरान गणेश जी की मूर्ति चोरी हो गई।
3. शाम 7:30 से 8:30 बजे के बीच घर में उमानाथ घोषाल के पिता, अंबिका घोषाल, विकास सिन्हा, त्रिलोचन, दो कुली, एक नौकरानी, एक रसोइया, एक माली और दो कलाकार मौजूद थे। यह मानते हुए कि बाहर से कोई नहीं आया, अंबिका घोषाल के कमरे में संदूक से गणेश जी की मूर्ति इन्हीं लोगों में से किसी एक ने निकाली होगी।
फेलुदा ने अपनी नोटबुक एक तरफ रख दी और कहा, 'इसके लिए आपको मुझे माफ करना होगा, लेकिन मैं किसी को भी नहीं छोड़ सकता, यहां तक कि आपको भी नहीं।' 'हां, मैं समझता हूं। मुझे पहले ही पुलिस का सामना करना पड़ चुका है। मुझे लगता है कि आप जानना चाहते हैं कि उस दौरान मैं घर में क्या कर रहा था?' 'हां, लेकिन इससे पहले मैं कुछ और पूछना चाहूंगा।'

‘ठीक है। लेकिन चलिए मेरे कमरे में चलते हैं।’
हम घर के अंदर गए। सामने के हॉल से सीढ़ियाँ ऊपर की ओर जाती थीं। विकास बाबू का कमरा भूतल पर बाईं ओर था।
'तुम्हें गणेश के बारे में तो पता ही होगा,' फेलुदा ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा।
'जी हां, बिल्कुल। मुझे इसके बारे में बहुत पहले से पता था।'
‘जब मगनलाल उमानथ बाबू से मिलने आए थे, तब क्या आप घर पर थे?’
जी हां। दरअसल, मैंने मगनलाल का स्वागत किया और उसे बैठक में ले गया। फिर मैंने एक नौकर को ऊपर भेजकर श्री घोषाल को सूचित करने को कहा।
'और तब?'
फिर मैं अपने कमरे में लौट आया।
क्या आपको पता था कि उन दोनों के बीच झगड़ा हुआ था?
नहीं। मेरे कमरे से आपको लिविंग रूम में कही गई कोई भी बात सुनाई नहीं देगी। वैसे भी, मैं रेडियो चला रहा था।
'क्या गणेश जी की मूर्ति चोरी होने वाली शाम को आप अपने कमरे में थे?'
'हां, ज्यादातर समय। जब श्री घोषाल अपनी पत्नी और रुकू के साथ चले गए, तो मैं उनके साथ गेट तक गया। वहां से मैं शशि बाबू और उनके बेटे को बरामदे में काम करते देखने गया। शशि बाबू थोड़े अस्वस्थ लग रहे थे। इसलिए मैं उनके लिए कुछ दवा लेने अपने कमरे में वापस आ गया।'
‘होम्योपैथिक दवा? मुझे उस शेल्फ पर होम्योपैथी की कुछ किताबें दिखाई दे रही हैं।’
'हां, आप सही कह रहे हैं। मैंने उसे पल्सेटिला 30 की एक खुराक दी थी।'
‘और फिर क्या आप अपने कमरे में लौट गए?’
'हाँ।'
'आपने क्या किया?'
मैंने रेडियो सुना। लखनऊ स्टेशन पर बेगम अख्तर के गाने बज रहे थे।
आपको क्या लगता है कि आपने रेडियो सुनने में कितना समय बिताया?
दरअसल, रेडियो काफी देर से चालू था। मैं एक पत्रिका - इलस्ट्रेटेड वीकली - पढ़ रहा था और साथ ही संगीत भी सुन रहा था।
‘क्या आप श्री घोषाल के लौटने तक अपने कमरे में ही रहे?’

जी हां। देखिए, बंगाली क्लब के कुछ सदस्य श्री घोषाल को अपने नाटक 'काबुलीवाला' में आमंत्रित करने के लिए फोन करने वाले थे। मैं उनका इंतजार कर रहा था।
‘क्या वे आए?’
'हां, लेकिन काफी देर बाद; रात 9 बजे के काफी बाद।'
फेलुदा ने सीढ़ियों की ओर इशारा करते हुए पूछा, 'क्या आपको याद है कि आपने किसी को उन सीढ़ियों से ऊपर या नीचे जाते हुए देखा था?'
नहीं। लेकिन घर के पीछे एक और सीढ़ी है। अगर कोई उस दूसरी सीढ़ी से अंदर या बाहर आया होता, तो मैं उन्हें देख नहीं पाता।
‘धन्यवाद,’ फेलुदा ने कहा और उठ खड़ी हुई। फिर विकास सिन्हा हमें अंबिका घोषाल से मिलवाने ले गए।
हमने उन्हें खिड़की के पास आरामकुर्सी पर बैठे हुए, स्टेट्समैन अखबार पढ़ते हुए पाया। हमारे कदमों की आहट सुनकर उन्होंने ऊपर देखा और अपने सुनहरे चश्मे के ऊपर से हमें गौर से देखा। उनके सिर पर बाल बिल्कुल नहीं थे, बस कानों के आसपास कुछ बर्फीले सफेद बाल थे। उनकी घनी, काली भौहें, जिनमें भूरे बाल भी थे, गुस्से में सिकुड़ी हुई थीं।
विकास बाबू ने परिचय कराया। अंबिका घोषाल ने सीधे लालमोहन बाबू की ओर देखा और पूछा, 'क्या आप पुलिस से हैं?'
अचंभित होकर लालमोहन बाबू हकलाते हुए बोले, 'नहीं-नहीं, मैं... मैं कुछ भी नहीं हूँ!'
‘कुछ नहीं? तुम कुछ भी नहीं हो? क्या यह महज़ विनम्रता है, या...?’
नहीं, मेरा मतलब है, मैं वो d-d-d नहीं हूँ...
विकास बाबू उनकी मदद के लिए आगे आए। उन्होंने फेलुदा की ओर इशारा करते हुए कहा, ‘यह प्रदोष मित्र हैं, एक जाने-माने निजी जासूस। चूंकि पुलिस चोर को पकड़ नहीं पाई, इसलिए श्री घोषाल को लगा...’
अंबिका घोषाल ने फेलुदा की ओर निगाहें घुमाईं। ‘मेरे बेटे ने तुम्हें क्या बताया? क्या उसने कहा कि गणेश जी के चले जाने से हमारा पूरा परिवार बर्बाद हो जाएगा? बकवास! उसकी उम्र कितनी है? चालीस भी नहीं। और मैं तिहत्तर साल का हूँ। क्या उसे लगता है कि वह घोषाल परिवार के इतिहास के बारे में मुझसे ज़्यादा जानता है? छी! हम इतने सालों तक कैसे जीवित रहे? हमने इतनी तरक्की कैसे की? गणेश जी की रक्षा से नहीं, बल्कि अपनी बुद्धि और मेहनत से। मेरा

बेटा एक चतुर व्यापारी तो है, लेकिन मुझे डर है कि उसे सौ साल पहले पैदा होना चाहिए था। मैंने सुना है कि वह गुरु अपनाने की भी सोच रहा है!’
‘क्या इसका मतलब यह है कि आपको गणेश जी के गायब होने का कोई अफसोस नहीं है?’ अंबिका बाबू ने अपना चश्मा उतारा और अपनी धुंधली निगाहों से एक बार फिर फेलुदा को देखा। 'क्या उमानाथ ने तुम्हें बताया था कि उस गणेश की मूर्ति पर हीरा लगा हुआ है?'
'हाँ वह था।'
‘क्या उसने आपको बताया कि वह कौन सा हीरा था?’
नहीं, मुझे खेद है कि ऐसा नहीं है।
‘देखा, ये रहा? उसने तुम्हें इसलिए नहीं बताया क्योंकि उसे खुद पता नहीं था! क्या तुमने कभी वनस्पति हीरे के बारे में सुना है?’
'आपका मतलब उस हरे रंग वाले से है?'
अंबिका बाबू उठकर बैठ गए। जब उन्होंने दोबारा बोलना शुरू किया, तो उनकी आवाज़ नरम पड़ गई थी। 'ओह, मैं समझ गया। तो आपको इन सब बातों की जानकारी है। इस तरह का हीरा बेहद दुर्लभ होता है। लेकिन इससे मुझे इतनी चिंता नहीं है; न ही मैं यह मानता हूँ कि गणेश जी ने हमें सौभाग्य दिया, या हमारी रक्षा की, या ऐसा कुछ भी। मुझे तो बस इस बात का दुख है कि वह एक कलाकृति थी। और इसलिए, उसे खोना बहुत दुख की बात है—बहुत बड़ा दुख।'
‘क्या चाबी उस मेज के दराज में रखी थी?’ फेलुदा ने पूछा। अंबिका बाबू जहाँ बैठी थीं, उससे कुछ ही गज की दूरी पर, दो खिड़कियों के बीच एक मेज थी। संदूक उसके ठीक सामने वाले कोने में था। दोनों के बीच एक बड़ा, पुराने ज़माने का पलंग था।
फेलुदा को जवाब देने के बजाय, अंबिका बाबू ने एक और सवाल पूछ लिया।
‘क्या मेरे बेटे ने भी आपको बताया कि मैं अफीम लेता हूँ?’
'जी श्रीमान।'
मैंने बहुत कम ही फेलुदा को किसी से इतनी विनम्रता से बात करते सुना था। 'शाम को मैं आमतौर पर बेसुध हो जाता हूँ। इसलिए अगर कोई सात बजे के बाद मेरे कमरे में आ भी जाए, तो मुझे पता नहीं चलेगा।'
फेलुदा मेज के पास गया और दराज को धीरे से खींचा। वह बिना आवाज किए आसानी से खुल गई। फेलुदा ने दराज को वापस अंदर धकेल दिया और संदूक की ओर बढ़ा।
बिस्तर की तरह, वह भी बहुत बड़ा था।

'मुझे लगता है कि पुलिस ने इसकी पूरी तरह से तलाशी ली होगी?'
‘जी हां, बिल्कुल,’ विकास बाबू ने जवाब दिया। ‘उन्होंने उंगलियों के निशान भी ढूंढे, लेकिन कुछ नहीं मिला।’
हमने विदा ली और अंबिका बाबू के कमरे से बाहर आ गए। दाहिनी ओर एक छोटे कमरे से गुज़रते हुए हम संगमरमर के फर्श वाले एक बड़े बरामदे में पहुँच गए। यहाँ से मुझे नीम और इमली के पेड़ों के बीच से दूर बहती नदी दिखाई दे रही थी। क्षितिज पर कई मंदिरों के शिखर नज़र आ रहे थे।
मैंने इन्हें गिनना शुरू ही किया था कि फेलुदा और विकास बाबू दोनों ने सिगरेट जला ली थी, तभी छत से कुछ नीचे गिर आया। लालमोहन बाबू ने हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लिया। पता चला कि वह च्युइंग गम का रैपर था।
‘लगता है श्री रुक्मिणी कुमार छत पर हैं,’ फेलुदा ने कहा। ‘और कहाँ खेलेंगे वो? अब तो अपने ही घर में कैदी बन गए हैं।’ विकास सिन्हा मुस्कुराए। ‘देखो, छत पर उनका अपना एक कमरा है।’
क्या हम इसे देख सकते हैं?
'ज़रूर। कृपया मेरे साथ आइए। मैं आपको दूसरी सीढ़ी भी दिखा सकता हूँ।'
पता चला कि वह एक घुमावदार सीढ़ी थी जो सीधे छत तक जाती थी। रुकू का कमरा उस तरफ था जहाँ सीढ़ी खत्म होती थी। हमने उसे ज़मीन पर घुटनों के बल बैठे हुए पतंग उड़ाने की तैयारी करते हुए पाया। जैसे ही उसने हमें आते देखा, उसने पतंग गिरा दी और वापस बैठ गया।
यह स्पष्ट था कि उसका कमरा वास्तव में एक पुराना भंडारगृह था, जो जंग लगे संदूकों, पैकिंग बॉक्स, फटे गद्दों और पुराने समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के ढेर से भरा हुआ था।
‘क्या तुम जासूस हो?’ रुकू ने फेलुदा को घूरते हुए पूछा। उसके जबड़े की हरकत से साफ था कि उसके मुंह में च्युइंग गम थी।
'कैप्टन स्पार्क को यह जानकारी कैसे मिली?' फेलुदा ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘मेरे सहायक ने मुझे बताया,’ रुकू ने गंभीरता से जवाब दिया और एक बार फिर अपनी पतंग उठा ली।
‘आपका सहायक कौन है?’
‘कैप्टन स्पार्क का सहायक लिटिल रैक्सिट है, क्या आपको नहीं पता था? आप किस तरह के जासूस हैं?’

लालमोहन बाबू ने गला साफ किया। उन्होंने बताया, ‘खुदिराम रक्षित। कद: साढ़े चार फीट। कैप्टन स्पार्क का दाहिना हाथ। वह उसे छोटा रक्षित कहकर बुलाते हैं।’
‘ओह, मैं समझ गया,’ फेलुदा ने झट से कहा। ‘अक्रूर नंदी की एक और रचना?’
'हाँ।'
फेलुदा ने रुकू की ओर मुड़कर पूछा, 'तुम्हारा सहायक कहाँ है?'
इस बार विकास बाबू ने जवाब दिया। ‘अह... मैं फिलहाल वह भूमिका निभा रहा हूं,’ उन्होंने थोड़ा शर्मिंदा होते हुए कहा।
‘क्या तुम्हारे पास रिवॉल्वर है?’ रुकू ने अचानक पूछा।
‘हां,’ फेलुदा ने उत्तर दिया।
'किस प्रकार?'
‘कोल्ट।’
और एक भाला?
नहीं, मेरे पास भाला नहीं है।
क्या तुम पानी के नीचे शिकार की तलाश में नहीं जाते?
नहीं, मुझे अभी तक ऐसा करने की जरूरत नहीं पड़ी है।
क्या तुम्हारे पास खंजर है?
‘नहीं, मेरे पास भी कोई खंजर नहीं है। इस तरह का तो बिल्कुल भी नहीं।’ फेलुदा ने दीवार पर टंगे एक प्लास्टिक के खंजर की ओर इशारा किया। हमने उसे एक दिन पहले रुकू की कमर से लटकते हुए देखा था।
मैं उस कटार से शैतान सिंह को मार डालूंगा।
‘बहुत खूब,’ फेलुदा रुकू के बगल में ज़मीन पर बैठ गया। ‘लेकिन तुम्हारे गणेश का क्या हुआ? क्या शैतान सिंह उसे ले गया? या कोई और?’
‘शैतान सिंह कभी इस घर में प्रवेश नहीं कर सकता।’
'अगर कैप्टन स्पार्क उस शाम मछली बाबा से मिलने नहीं गए होते, तो गणेश जी अब भी सुरक्षित होते, है ना?'
'मछली बाबा कांगो के गोंगोरिला की तरह काले हैं।
‘शाबाश!’ लालमोहन बाबू अचानक बोले। ‘रुकु बाबू, क्या तुमने ‘द गोरिल्लाज़ ग्रास्प’ पढ़ी है?’
लालमोहन बाबू की किताब 'द गोरिल्लाज़ ग्रास्प' में 90 फुट ऊंचे गोरिल्ला का नाम गोंगोरिल्ला था। उन्होंने किंग कांग से यह विचार चुराने की बात

खुलकर स्वीकार की। 'वह किताब, आप देखिए,' उन्होंने उत्सुकता से आगे कहा, 'लिखी थी—' फेलूदा की तीखी नज़र देखकर वे रुक गए।
लेकिन रुकू ने इस पर ध्यान नहीं दिया। उसने कहा, ‘हमारा गणेश एक राजा के पास है। शैतान सिंह उसे कभी नहीं ढूंढ पाया। कोई नहीं ढूंढ पाया। यहां तक कि डाकू गंडेरिया भी नहीं।’
‘अरे नहीं!’ लालमोहन बाबू ने आह भरी। ‘फिर से अक्रूर नंदी!’
विकास बाबू हँसे। उन्होंने कहा, 'उनकी बातचीत को समझने के लिए आपको एडवेंचर सीरीज़ की हर किताब पढ़नी पड़ेगी।'
फेलुदा अभी भी फर्श पर बैठा था, रुकू को ध्यान से देख रहा था, मानो वह उसकी আপাত रूप से अर्थहीन बातों का कुछ मतलब निकालने की कोशिश कर रहा हो। ‘रुकु, तुम किस राजा की बात कर रही हो? वह कहाँ रहता है?’ उसने धीरे से पूछा। रुकु ने तुरंत जवाब दिया।
उन्होंने कहा, 'अफ्रीका।'
श्री घोषाल के घर से निकलने से पहले हमने एक और व्यक्ति से बात की। वह कलाकार शशि भूषण पाल थे। जब हम उनसे मिले, तब वे कार्तिक की मूर्ति पर रंग-रोगन कर रहे थे। लगभग साठ वर्ष के इस व्यक्ति ने बताया कि उन्होंने लगभग पचास वर्ष दुर्गा और अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनाने में बिताए हैं।
फेलुदा ने कहा, 'हमें आपकी बीमारी के बारे में पता चला। उम्मीद है अब आप बेहतर महसूस कर रहे होंगे?'
‘जी हां, धन्यवाद। सिन्हा बाबू की दवा से बहुत फायदा हुआ,’ शशि बाबू ने अपना काम रोके बिना जवाब दिया।
‘आपको क्या लगता है कि आप यह पूरा काम कब तक खत्म कर लेंगे?’
‘परसों से पूजा शुरू होगी। मुझे उम्मीद है कि कल शाम तक सब कुछ तैयार हो जाएगा। आप जानते हैं, मैं बूढ़ा हो रहा हूँ, अब मैं पहले की तरह तेज़ी से काम नहीं कर सकता।’
फिर भी, आपका काम उत्कृष्ट है।
‘धन्यवाद, बाबू। लोग सिर्फ देवी को देखते हैं। बेचारे कलाकार की मेहनत के बारे में कौन सोचता है?’
'जिस दिन विकास बाबू ने आपको दवा दी थी, उसी दिन इस घर से कुछ चोरी हो गया था। क्या आपको इसकी जानकारी है?'

शशि बाबू के हाथ में ब्रश थोड़ा कांप रहा था। जवाब देते समय उनकी आवाज़ में हल्की सी घबराहट थी। “मैं इतने सालों से इस घर में काम कर रहा हूँ। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि एक दिन पुलिस मुझसे पूछताछ करेगी! बाबू, जब मैं अपना काम करता हूँ, तो मैं सब कुछ भूल जाता हूँ। सिन्हा बाबू से पूछ लो, उस छोटे लड़के से पूछ लो, जिसने भी मुझे काम करते देखा है, उससे पूछ लो। मैं एक मिनट के लिए भी इस बरामदे से बाहर नहीं जाता!”
लगभग बीस साल का एक युवक शशि बाबू के साथ काम कर रहा था। बाद में पता चला कि वह उनका बेटा कनाई था। उसने पुष्टि की कि जिस शाम गणेश जी लापता हुए थे, उस शाम सात से साढ़े आठ बजे के बीच उनमें से कोई भी बरामदे से बाहर नहीं निकला था।
विकास बाबू हमें विदा करने के लिए गेट तक आए थे।
फेलुदा ने उससे कहा, 'मैंने उमानथ बाबू को परेशान नहीं किया, क्योंकि मुझे पता था कि वह अपने मेहमानों के साथ व्यस्त हैं। कृपया उन्हें बता दें कि मैं बीच-बीच में इसे छोड़ सकता हूँ और कुछ सवाल पूछ सकता हूँ।'
'चूंकि उन्होंने आपको जांच करने के लिए कहा है, इसलिए यह आपका अधिकार और विशेषाधिकार है,' विकास बाबू ने टिप्पणी की।
जैसे ही हम बाहर निकले, ऊपर से अचानक एक तेज़ आवाज़ आई, जिससे हम सबने ऊपर देखा। रुकू अभी भी छत पर पतंग उड़ा रहा था। हम जहाँ खड़े थे, वहाँ से हमें केवल उसके छोटे-छोटे हाथ ही दिखाई दे रहे थे, जो पतंग का धागा खींच रहे थे। फेलुदा पतंग को घूर रहा था, जो अब आकाश में स्वतंत्र रूप से उड़ रही थी। उन्होंने विकास बाबू से कहा, 'वह बच्चा बहुत अकेला लग रहा है।'
'हां, वो है। वैसे तो वो अपने माता-पिता की इकलौती संतान है। कम से कम उसे यहां एक दोस्त तो मिल गया। आपने सूरज को देखा है ना? कलकत्ता में उसका एक भी दोस्त नहीं है।'

पाँच

श्री घोषाल के घर से लौटते समय, हमने मुख्य सड़क पर यातायात से बचने के लिए एक गली से होकर शॉर्टकट लेने का फैसला किया।
यहां भी कुछ भेड़ें और मेमने इधर-उधर घूम रहे थे। लालमोहन बाबू ने एक मेमने को छाते से हल्के से धक्का देकर रास्ते से हटाया और कहा, 'फेलू बाबू, क्या मैं आपको अपने बारे में कुछ बताऊं? देखिए, जब मैं किसी नई जगह जाता हूं, तो मुझे वहां के माहौल में ढलना अच्छा लगता है—मतलब, स्थानीय लोगों की तरह रहना, स्थानीय लोगों की तरह व्यवहार करना। दरअसल, जब हम राजस्थान में थे, तो मैं खुद को राजपूत ही समझता रहा। दो-तीन बार तो मैंने अपना हाथ उठाकर अपनी पगड़ी को महसूस करने की कोशिश भी की, और मुझे सबसे ज्यादा आश्चर्य तब हुआ जब मैंने देखा कि मेरी पगड़ी की जगह मेरा सिर गंजा है!'
और यहाँ? क्या आपको साधुओं की तरह लंबे, उलझे हुए बाल न देखकर हैरानी हुई? नहीं, लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि कल जब हम घाट पर थे, तब मेरे मन में यह विचार आया था कि यह पूरी दुनिया एक भ्रम मात्र है। आज इस गली से गुजरते हुए, मुझे अपनी कमर में खंजर लटकाने में भी कोई आपत्ति नहीं होती। यही तो माहौल है, है ना...?
वह अपनी थ्योरी समझाता रहा, लेकिन मैंने ज्यादा ध्यान नहीं दिया। मेरी नज़र उसी शख्स पर पड़ी जो कल हमारा पीछा कर रहा था। घाट से लौट रहे या घाट जा रहे लोगों और दुकानों के आसपास भीड़ लगाए लोगों के बीच यह आदमी भी था, जिसने तंग पायजामा पहना हुआ था जो उसके चेहरे समेत पूरे शरीर को ढके हुए बैंगनी कंबल के नीचे से झांक रहा था। वह करीब दस गज की दूरी पर हमारा पीछा कर रहा था। चूंकि फेलूदा कल बिल्कुल बेपरवाह लग रहा था, इसलिए मैंने इस बारे में दोबारा बात नहीं की, लेकिन मुझे बेचैनी होने लगी।
लालमोहन बाबू लगातार बोलते जा रहे थे। वे कह रहे थे, 'जहां तक मुझे लगता है, गणेश जी का यह मामला पेचीदा होने वाला है।'

किसी मामले के एक निश्चित चरण तक पहुंचने से पहले यह कहना मुश्किल है कि वह जटिल होगा या सरल। क्या आप मुझे बता रहे हैं कि हम पहले ही ऐसे चरण तक पहुंच चुके हैं?
क्या हमने ऐसा नहीं किया है?
नहीं, बिलकुल भी नहीं।
लेकिन असली खलनायक इसे नहीं ले सकता था, है ना?
‘क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप किसका जिक्र कर रहे हैं?’
अरे, ये तो मेघलाल नाम का आदमी है... या मेघराम?... वही आदमी जिसे हमने मछली बाबा के घर के पास देखा था? हे भगवान! मैंने इतने चौड़े कंधों वाला आदमी कभी नहीं देखा। अगर उसके सींग होते, तो वो आसानी से बनारस के उन विशालकाय सांडों में शामिल हो जाता, जिनके लिए बनारस मशहूर है!
'आपका मतलब यह है कि आपको लगता है कि मगनलाल मेघराज खुद दीवार फांदकर अंबिका बाबू के कमरे में घुसकर गणेश जी की मूर्ति को ले जाने के लिए खुद वहां पहुंचे होंगे?'
'ओह, मैं समझ गया। उसने किसी एजेंट का इस्तेमाल किया होगा, है ना?'
‘क्या यह अधिक स्वाभाविक नहीं है? इसके अलावा, हो सकता है उसने किसी तरह गणेश जी को लाने की धमकी दी हो, लेकिन इससे वह असली अपराधी साबित नहीं हो जाता।’
हम होटल पहुँच गए थे। निरंजन बाबू का कमरा रिसेप्शन के बगल में था। हमने देखा कि उनके सामने एक हट्टा-कट्टा युवक बैठा था, जो बड़े जोश से कुछ समझा रहा था।
जैसे ही हम पहुँचे, निरंजन बाबू ने ऊपर देखा। ‘ये रहे। यह आगंतुक लगभग बीस मिनट से आपका इंतज़ार कर रहा है। मुझे आपका परिचय कराने दीजिए। ये इंस्पेक्टर तिवारी हैं, और ये हैं…’ उन्होंने फटाफट हमारे नाम गिना दिए। श्री तिवारी सीधे फेलुदा की ओर देख रहे थे। उनकी आँखों में चमक थी। फेलुदा ने एक पल के लिए भौंहें चढ़ाईं, फिर उनके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी।
‘आप इलाहाबाद में थे, है ना?’ उसने पूछा।
'हां, लेकिन मुझे यकीन नहीं था कि आपको मैं याद रहूंगा,' श्री तिवारी ने हाथ मिलाते हुए जवाब दिया।
'यह मुश्किल होता, मुझे मानना पड़ेगा। आपने काफी वजन कम किया है। अगर मैं कहूं तो, इससे आपको कुछ फायदा हुआ है!'

श्री तिवारी हँसे। उनकी लंबाई लगभग फेलुदा के बराबर थी और वे उतने ही चुस्त-दुरुस्त दिखते थे। कुछ साल पहले फेलुदा को एक मामले के सिलसिले में इलाहाबाद जाना पड़ा था। जाहिर है, तब उनकी मुलाकात श्री तिवारी से हुई थी। श्री तिवारी ने कहा, 'कल रात आपके जाने के बाद मैं श्री घोषाल से मिलने गया था। उन्होंने मुझे आपके आने और आपके ठहरने के स्थान के बारे में बताया।' निरंजन बाबू ने चाय के लिए घंटी बजाई। हम सब बैठ गए।
‘सच कहूँ तो, मुझे बहुत राहत मिली है,’ फेलुदा ने इंस्पेक्टर से कहा। ‘मैं इस बात को लेकर चिंतित होने लगा था कि पुलिस मेरी मौजूदगी पर कैसी प्रतिक्रिया देगी। मुझे पता है कि आपके साथ मुझे कोई परेशानी नहीं होगी। दो दिमाग एक से बेहतर होते हैं, है ना? और यह मामला वाकई पेचीदा लग रहा है।’ श्री तिवारी का चेहरा उतर गया। उन्होंने जबरदस्ती मुस्कुराते हुए धीरे से कहा, 'जी हां, श्री मित्तर, मामला इतना पेचीदा है कि मैं आपको इससे दूर रहने की सलाह देने आया हूं।'
'क्यों?'
‘क्योंकि मगनलाल इसमें शामिल है। दरअसल, मुझे इस बात की चिंता है कि आप पहले ही श्री घोषाल के घर जा चुके हैं। आपको बहुत सावधान रहना चाहिए। मगनलाल के लिए भाड़े के गुंडों की एक टोली काम करती है।’
एक नौकर चाय लेकर आया। फेलुदा ने थोड़ी चिंता से एक कप उठाया और पूछा, 'लेकिन आपको कैसे यकीन है कि मगनलाल सचमुच इसमें शामिल है?'
'जिस दिशा में हम जांच कर रहे हैं, उससे मगनलाल की ओर इशारा मिलता है। मैंने कभी किसी को इतना धूर्त नहीं देखा।'
लेकिन इस जांच का स्वरूप क्या है?
मैं आपको बताता हूँ। क्या आप घोषाल परिवार के सभी सदस्यों से मिल चुके हैं?
'हां, नौकरों को छोड़कर सभी।'
‘क्या आपने शशि बाबू को देखा?’
'हां, हम उनसे आज सुबह मिले थे।'
और उसका बेटा?
'हां, वह अपने पिता के साथ काम कर रहा था।'
क्या आपको पता था कि शशि बाबू का एक और बेटा है? ‘क्या वह ऐसा करता है? नहीं, हमें यह पता नहीं था।’

‘इस दूसरे बेटे का नाम निताई है। बहुत ही बुरा लड़का है। उम्र सिर्फ अठारह साल है, लेकिन उसने हर तरह के काम में हाथ आजमाया है। मान लो वो मगनलाल के गिरोह में शामिल हो गया है...’
फेलुदा ने हाथ उठाया। 'मैं समझ गया। मगनलाल गणेश को लाने के लिए निताई को अपने पिता या भाई के माध्यम से काम करने के लिए कहता।'
‘बिल्कुल सही। निताई को आसानी से बहकाया जा सकता है और वह अपने ही परिवार पर भी बल प्रयोग कर सकता है। इसलिए मेरा सुझाव है कि आप कम से कम अभी के लिए सावधानी बरतें। दुर्गा पूजा और दशहरा के समय बनारस में देखने लायक बहुत कुछ है। इसलिए खूब आनंद लें, लेकिन घोषाल परिवार के आस-पास कहीं न जाएं।’ फेलुदा मुस्कुराया और विषय बदल दिया। उसने पूछा, 'क्या आप मछली बाबा के मामले की जांच करने के बारे में नहीं सोच रहे हैं?'
श्री तिवारी ने अपना कप मेज पर रखा और जोर से हंस पड़े। 'आप उनसे मिल चुके हैं, है ना? आपको यह सब कैसा लगा?'
'चूंकि मैंने जांच का सवाल उठाया था, इसलिए आपको यह मान लेना चाहिए कि उसने मुझमें कोई धार्मिक भावना नहीं जगाई।'
जी हां, श्रीमान मिटर, लेकिन आप तो सिर्फ अपनी बात कर रहे हैं। उनके अनुयायियों का क्या? क्या आपको लगता है कि अगर हम खुलेआम जांच करने की कोशिश करें तो वे चुपचाप खड़े होकर देखते रहेंगे? वे तो हमारी खाल उतार देंगे!
श्री तिवारी ने निरंजन बाबू की ओर तिरछी नज़र डालते हुए अंतिम वाक्य कहा, जिस पर निरंजन बाबू ने विरोध में हाथ ऊपर उठा लिए। ‘मेरी ओर मत देखिए, तिवारीजी!’ वह चिल्लाया। ‘मैं भक्ति के बारे में क्या जानता हूँ? मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि हमारे अन्यथा नीरस और घटनाहीन जीवन में, मछली बाबा एक घटना हैं, एक रोमांच हैं—बस इतना ही।’
फेलुदा ने कहा, 'आप एक काम कर सकते हैं। पता लगाने की कोशिश करें कि क्या हाल ही में हरिद्वार या इलाहाबाद में मछली बाबा नाम का कोई व्यक्ति प्रकट हुआ था।'
‘बहुत अच्छा। इसमें कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। मैं आपको यह जानकारी कुछ दिनों में उपलब्ध करा दूंगा।’
श्री तिवारी ने अपनी घड़ी देखी और उठ खड़े हुए। कमरे से बाहर निकलने से ठीक पहले, वे एक मिनट के लिए रुके और फेलुदा की पीठ थपथपाई। ‘क्यों न तुम एक दिन

मेरे दफ्तर आओ और देखो कि हम वाराणसी में अपराध से कैसे निपटते हैं? लेकिन याद रखना—और मैं यह बात गंभीरता से कह रहा हूँ—तुम्हें लापता गणेश के मामले से दूर रहना है।’
उस दोपहर लंच के बाद, हम फिर से टहलने निकल गए। मुझे नहीं पता था कि फेलुदा के मन में कोई खास जगह थी या नहीं, लेकिन लालमोहम्म बाबू और मैं उसके पीछे- पीछे होटल के सामने वाली एक गली में चले गए।
‘मुझे लगता है तुम्हारा चचेरा भाई रबड़ी की थाली खाने के लिए मिठाई की दुकान ढूंढ रहा है,’ लालमोहन बाबू ने मेरे कान में फुसफुसाया। मुझे हंसी आ गई, लेकिन मैं जानता था कि वह गलत था।
गली संकरी और घुमावदार थी। दोनों ओर दो या तीन मंजिला मकान बने हुए थे। सूरज की रोशनी मुश्किल से ही अंदर आती थी। फेलुदा ने हमें बताया कि वाराणसी के कई अन्य मकानों की तरह इनमें से अधिकांश मकान सौ साल से भी अधिक पुराने थे। कुछ मकानों की दीवारों पर जानवरों और पक्षियों के चित्र बने हुए थे। कुछ पर हिंदी में हस्तलिखित पोस्टर और विज्ञापन लगे हुए थे। जैसे-जैसे हम इस धुंधली, तंग गली से सावधानीपूर्वक आगे बढ़ रहे थे, कई नई आवाज़ें मेरे कानों तक पहुँचने लगीं। उनमें सबसे तेज़ आवाज़ घंटियों की थी। हम विश्वनाथ मंदिर के करीब पहुँच रहे थे।
यहां भेड़ों और मेमनों की जगह बड़ी-बड़ी गायें और बैल थे। जब भी हम किसी ताकतवर बैल को देखते, लालमोहन बाबू चिल्लाते, 'देखो, मेघराज जा रहा है!' आखिर में, फेलुदा को कहना पड़ा, 'देखो लालमोहन बाबू, मुझे लगता है कि बेचारे बैल मेघराज से कहीं कम खतरनाक हैं, इसलिए तुलना करना बंद करो। वैसे भी, मैं उसे पतले, क्रूर होंठों और आंखों में द्वेष की चमक वाले आदमी के रूप में देखने की कोशिश कर रहा हूं। बैलों के बारे में बार-बार बात करके तुम मेरा मज़ा किरकिरा कर रहे हो!'
जल्द ही आज़ादी से चलना नामुमकिन हो गया। भीड़ हमें एक ही दिशा में धकेल रही थी। हर जगह पांडा बिखरे हुए थे, हर एक उत्सुकता से हम पर झपट रहा था। ‘दर्शन? बाबा विश्वनाथ के दर्शन करना चाहेंगे, बाबू?’ वे बार-बार पूछ रहे थे। हम उन्हें नज़रअंदाज़ करते हुए सीधे चलते रहे। मेरा पूरा ध्यान अपनी जेब और उसमें रखे बटुए को बचाने और रास्ते में जगह-जगह बने पानी के गड्ढों में पैर रखने से बचने में लगा हुआ था। जब मैंने आखिरकार ऊपर देखा, तो लालमोहन बाबू मंदिर के सुनहरे गुंबद को निहार रहे थे, उनकी आँखों में

विस्मय और आश्चर्य था। मैंने उन्हें फेलुदा से कुछ पूछते हुए देखा, लेकिन वे क्या कह रहे थे, यह मैं ठीक से समझ नहीं पाया। केवल ‘कैरेट’ शब्द ही मेरे कानों तक पहुँचा। भगवान और धर्म के सारे विचार स्पष्ट रूप से त्याग दिए गए थे, कम से कम उस क्षण के लिए।
फिर मैंने पतंग देखी। वह लाल और सफेद रंग की पतंग थी, बिल्कुल वैसी ही जैसी रुकू पहले उड़ा रही थी। वह मंदिर के पीछे गायब हो गई।
फेलुदा भी उसे घूर रहा था। उसने संक्षेप में कहा, 'बहुत दिलचस्प।' लालमोहन बाबू ने कहा, 'यह सिर्फ दिलचस्प नहीं है, मेरे दोस्त। मुझे तो यह बेहद परेशान करने वाला लग रहा है। नहीं, मैं उस पतंग की बात नहीं कर रहा। लेकिन क्या तुम्हें एहसास है कि यह जगह मेघराज के जासूसों से भरी हो सकती है? दरअसल, उनमें से एक तुमसे नज़रें नहीं हटा पा रहा है। मैं उसे करीब तीन मिनट से देख रहा हूँ।'
'क्या यह कोई साधु के वेश में है, जिसकी लंबी लहराती दाढ़ी है और उसने एकदम नया वस्त्र पहना हुआ है?' फेलुदा ने आकाश की ओर देखते हुए पूछा।
‘पूरे नंबर,’ जटायु ने उत्तर दिया।
अब मेरी नज़र उस आदमी पर पड़ी। वह फूलों, अगरबत्ती और सिंदूर से भरी एक दुकान के पास खड़ा था। जब हम उसके पास से गुज़रे, तो फेलुदा एक पल के लिए रुका और बहुत ज़ोर से बोला, 'जय बाबा विश्वनाथ!' यह सुनकर मुझे लगभग हंसी आ गई, लेकिन मैंने खुद को संभाला।
अब तक हम मंदिर को पीछे छोड़कर गली से बाहर आ चुके थे। जहाँ हम खड़े थे, उसके पास ही औरंगज़ेब द्वारा बनवाई गई मस्जिद और एक विशाल खुला चबूतरा था। चबूतरे पर पहुँचते ही मैंने फिर ऊपर देखा, लेकिन पतंग अब कहीं नहीं दिख रही थी। चबूतरे से नीचे सड़क तक सीढ़ियाँ जा रही थीं। फेलुदा उनकी ओर मुड़ा। मुझे थोड़ा-बहुत अंदाज़ा था कि वह कहाँ जाना चाहता है, लेकिन बाद में पता चला कि लालमोहन बाबू के मन में भी यही विचार आया था।
‘क्या आप मेघराज के घर जा रहे हैं?’ उसने पूछा। ‘मैं और किससे मिलना चाहूँगा? अगर अपराधी न होते तो आपका दोस्त लालमोहन बाबू भूखा मर जाता। तो क्या आपको नहीं लगता कि हमें काशी के सबसे बड़े अपराधी के मंदिर में दर्शन करने जाना चाहिए?’

मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा। भीड़ थोड़ी कम हो जाने के कारण, लालमोहन बाबू को अगला सवाल पूछने के लिए अपनी आवाज धीमी करनी पड़ी, 'मुझे उम्मीद है कि आप बिना हथियार के नहीं आए हैं?'
'अगर हथियार से आपका मतलब मेरी रिवॉल्वर से है, तो नहीं, मैं उसे अपने साथ नहीं लाया। लेकिन मेरे पास बाकी तीनों हथियार हैं, धन्यवाद।'
लालमोहन बाबू चौंककर ऊपर देखने लगे और लगभग सीढ़ी से टकराकर गिरते-गिरते बचे। लेकिन उन्होंने कुछ और नहीं कहा। मैं समझ गया था कि जब फेलुदा ने तीन अन्य हथियारों का ज़िक्र किया, तो उनका मतलब बस अपने शक्तिशाली दिमाग, स्थिर नसों और मजबूत मांसपेशियों से था।
सीढ़ियाँ जहाँ खत्म होती थीं, वहाँ एक दर्जी की दुकान थी। दुकान के प्रवेश द्वार के ठीक बाहर एक बूढ़ा आदमी सिलाई मशीन पर काम कर रहा था। उसने हमें बताया कि मगनलाल कहाँ रहता है। उसने कहा, 'सीधे जाओ, हनुमान मंदिर के पास से गुजरो, और पहला दायाँ मोड़ लो। तुम्हें मगनलाल का घर आसानी से मिल जाएगा; यह वही घर है जिस पर तलवार लिए पहरेदारों की दो बड़ी पेंटिंग बनी हुई हैं।' ‘और क्या मुख्य द्वार के बाहर असली पहरेदार नहीं हैं?’ फेलुदा ने पूछा। 'हां, आपको वो भी मिल जाएंगे।'
दो मिनट से भी कम समय में हम मगनलाल के घर के बाहर खड़े थे। दीवार पर दो सशस्त्र रक्षकों की तस्वीर बनी हुई थी, लेकिन आस-पास कोई नहीं था। जिन गलियों से हम गुज़रे थे, उनके विपरीत यह गली आश्चर्यजनक रूप से शांत थी। यहाँ तक कि एक बकरी या मेमना भी नज़र नहीं आ रहा था।
सामने का दरवाज़ा खुला हुआ था। ये तो बहुत अजीब बात है! पहरेदार कहाँ गए? क्या वे दोपहर का खाना खा रहे थे? फेलुदा ने दो-तीन बार सूंघा और कहा, 'मुझे तंबाकू की गंध आ रही है।' फिर उसने चारों ओर देखा और बोला, 'चलो अंदर चलते हैं। अगर हमें रोक लिया गया, तो हम कह सकते हैं कि हम नए हैं और गलती से अंदर घुस आए हैं, क्योंकि हमें लगा कि यह कोई मंदिर है।'
लालमोहन बाबू और मैं उनके पीछे-पीछे अंदर गए। हे भगवान! क्या यहीं महान मगनलाल रहते थे? मैंने अचरज से सोचा, अंधेरे, नम आंगन में खड़ी गायों को घूरते हुए। हमारी उपस्थिति से उन्हें ज़रा भी फर्क नहीं पड़ा। हर गाय शांति से हमें देखते हुए जुगाली करती रही।
‘यहाँ तो यह आम बात है,’ फेलुदा ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘बहुत कम लोगों के पास गायों को रखने के लिए खुली जगह होती है। इसलिए वे उन्हें घर के अंदर

आँगन में ही रखते हैं, क्योंकि उन्हें बड़ी मात्रा में दूध और घी की आवश्यकता होती है।’
हमारे दाएं और बाएं गलियारे थे, जो दूर-दूर तक केवल अंधेरे की ओर जाते थे। संभवतः कहीं न कहीं सीढ़ियाँ होंगी, क्योंकि मैंने बाहर देखा था कि घर में तीन मंजिलें थीं।
जब हम आगे क्या करना है इस पर बहस कर रहे थे, तभी अचानक मेरी नजर एक ऐसे व्यक्ति पर पड़ी जो अंधेरे की गहराई से चुपचाप निकला था और हमारे दाहिनी ओर खड़ा था।
वह अधेड़ उम्र का, मध्यम कद का आदमी था, जिसने हरे रंग का कुर्ता-पायजामा पहना हुआ था और सिर पर कढ़ाई वाली सफेद सूती टोपी थी। उसकी घनी मूंछें नीचे लटकी हुई थीं और ठुड्डी को छू रही थीं। जब वह बोलता था, तो उसकी आवाज किसी पुराने, घिसे-पिटे ग्रामोफोन रिकॉर्ड जैसी लगती थी।
‘सेठजी आपसे मिलना चाहते हैं,’ उसने कहा। ‘कौन से सेठजी?’
‘सेठ मगनलालजी।’
'सब ठीक है चलो चलते हैं।'

छह

‘जय बाबा विश्वनाथ!’
मैं लालमोहन बाबू के चेहरे के भाव तो नहीं देख सका, लेकिन उनकी आवाज से समझ गया कि वे कैसा महसूस कर रहे थे।
‘क्या आपको विश्वनाथ पर सचमुच बहुत भरोसा है?’ फेलुदा ने पूछा। मैं समझ नहीं पा रहा था कि वह इतनी सहजता से कैसे बोल सकते हैं।
‘जय बाबा फेलुनाथ!’ लालमोहन बाबू ने फुसफुसाते हुए कहा।
'वह बेहतर है!'
हम टटोलते हुए ऊपर की ओर बढ़ रहे थे, बेहद ऊँची सीढ़ियों की एक श्रृंखला चढ़ रहे थे। चारों ओर घना अंधेरा था। हमें लेने आए आदमी ने रोशनी लाने की ज़हमत ही नहीं उठाई थी। लालमोहन बाबू अभी भी धीमी आवाज़ में कुछ बुदबुदा रहे थे। मैंने उन्हें दो-तीन बार 'ब्लैक होल' कहते सुना।
अंततः हम सबसे ऊपरी मंजिल पर पहुँच गए। हमारा दूत एक दरवाजे से अंदर चला गया। हम उसके पीछे-पीछे गए। फिर वह हमें एक कमरे, एक संकरे गलियारे, एक और कक्ष से होते हुए ले गया और अंत में एक छोटे से दरवाजे के सामने रुककर हमें अंदर जाने का इशारा किया।
हम कमरे में दाखिल हुए। पहले तो मुझे रंगीन कांच के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर मुझे एहसास हुआ कि मैं एक खिड़की को देख रहा हूँ। बाहर की रोशनी उसके रंगीन शीशों से छनकर आ रही थी।
'नमस्कार, श्री मित्तर,' एक गहरी, कर्कश आवाज ने कहा।
कुछ चीज़ें दिखाई देने लगीं। ज़मीन पर एक मोटा गद्दा बिछा हुआ था, जिस पर सफ़ेद चादर थी। उस पर चार तकिए रखे थे, वे भी सफ़ेद रंग के थे। इनमें से एक तकिए पर टिका बैठा व्यक्ति वही था जिसे हमने अभय चक्रवर्ती के घर के पीछे से देखा था।
हल्की सी क्लिक की आवाज़ के साथ छत की बत्ती जल उठी। आखिरकार हम मगनलाल मेघराज के सामने आ गए। उनकी गंभीर निगाहें धँसी हुई थीं, घनी, झाड़ीदार भौहों के नीचे। एक चपटी नाक, मोटे होंठ और नुकीली ठोड़ी ने उनकी छवि को

पूरा किया। उन्होंने भी कुर्ता-पायजामा पहना हुआ था। उनके कुर्ते के बटन मानो हीरे के थे। इनके अलावा, उनकी दस में से आठ उंगलियों पर हर रंग के दूसरे रत्न चमक रहे थे।
‘आप खड़े क्यों हैं? बैठ जाइए,’ उन्होंने आमंत्रित किया। ‘अगर चाहें तो कुर्सी ले लीजिए।’
गद्दे के बगल में नीची, गुजराती कुर्सियाँ रखी थीं। हमने उनमें से तीन कुर्सियाँ ले लीं।
‘मैं आपसे मिलना चाहता था, श्री मिटर। मैं आपको औपचारिक रूप से आमंत्रित करता, लेकिन सौभाग्य से आप स्वयं यहाँ आ गए।’ कुछ क्षण रुककर उन्होंने कहा, ‘आप मुझे शायद न जानते हों, श्री मिटर, लेकिन मैं आपके बारे में सब कुछ जानता हूँ।’
‘मैंने आपका नाम सुना है,’ फेलुदा ने विनम्रता से उत्तर दिया। ‘आप भी काफी प्रसिद्ध हैं।’
‘मशहूर?’ मगनलाल पान से सने दांत दिखाते हुए ज़ोर से हँसा। ‘मशहूर नहीं, श्री मित्तर। आपका मतलब है कुख्यात। बदनाम। मान लीजिए!’
फेलुदा चुप रहा। मगनलाल की निगाहें मेरी ओर घूमीं। 'क्या यह तुम्हारा भाई है?'
'कज़न।'
‘और ये कौन हैं? तुम्हारे चाचा?’ मगनलाल मुस्कुरा रहा था।
‘ये मेरे दोस्त लालमोहन गांगुली हैं।’
‘बहुत बढ़िया! लालमोहन, मोहनलाल, मगनलाल... सब एक जैसे ही हैं, है ना? क्या कहते हो?’
लालमोहन बाबू ‘मुझे बिल्कुल भी घबराहट नहीं है’ वाले अंदाज़ में अपने पैर हिला रहे थे। मगनलाल की बातों से उनके घुटने आपस में टकराने लगे। तभी मगनलाल ने अचानक घंटी पर हाथ मारा, जिससे वह ज़ोर से बज उठी। इससे लालमोहन बाबू इतने चौंक गए कि उनका दम घुटने लगा और वे खांसने लगे।
‘क्या आपका गला थोड़ा सूखा-सूखा सा लग रहा है?’ मगनलाल ने पूछा।
जो आदमी हमें ऊपर लाया था, वह चुपचाप फिर प्रकट हुआ। 'कुछ शरबत लाओ,' मगनलाल ने आदेश दिया।
अब सब कुछ साफ़-साफ़ दिखाई दे रहा था। एक कोने में दो स्टील की अलमारियाँ थीं। मगनलाल के पीछे की दीवार हिंदू देवी-देवताओं की तस्वीरों से सजी थी।

उनके दाहिनी ओर गद्दे पर कुछ कागज़ और फाइलें, एक छोटा सा धातु का कैश बॉक्स और एक लाल टेलीफोन रखा था। उनके बाईं ओर पान से भरा एक चांदी का डिब्बा और एक चांदी का थूकदान था।
‘अच्छा, श्रीमान मित्तर,’ उन्होंने गंभीरता से पूछा, ‘क्या आप बनारस में छुट्टियां मनाने आए हैं?’
'यही मेरी मूल योजना थी,' फेलुदा ने सीधे उसकी ओर देखते हुए उत्तर दिया। ‘तो फिर… तुम… अपना… समय… क्यों… बर्बाद… कर… रहे… हो?’ मगनलाल ने दांत भींचते हुए, हर शब्द को स्पष्ट रूप से बोलते हुए कहा।
‘क्या आप सारनाथ गए हैं?’ वह आगे बोले। ‘रामनगर? दुर्गा बारी, मान मंदिर, हिंदू विश्वविद्यालय? नहीं, मुझे पता है कि आपने इनमें से कोई भी प्रसिद्ध स्थान नहीं देखा है। आज आप विश्वनाथ मंदिर के पास से गुजरे, लेकिन अंदर नहीं गए। फिर भी, आप बार-बार उमानाथ घोषाल के घर जाते रहते हैं। क्यों? उन्होंने जो कहा उसे भूल जाइए। मैं काशी में आपके प्रवास को और भी आनंददायक बना सकता हूँ। क्या आपको पता है कि मेरे पास अपनी नाव है? किसी भी दिन नदी पर आ जाइए। मैं आपको एक छोर से दूसरे छोर तक सैर कराऊँगा। आपको बहुत अच्छा लगेगा!’
फेलुदा ने शांत स्वर में कहा, 'ऐसा लगता है कि आप भूल रहे हैं कि मैं एक पेशेवर जासूस हूँ। श्री घोषाल ने मुझे एक विशिष्ट कार्य सौंपा है। जब तक वह कार्य पूरा नहीं हो जाता, मैं छुट्टी मनाने या आपकी नाव पर सैर करने के बारे में सोच भी नहीं सकता।'
‘आपकी फीस कितनी है?’
फेलुदा कुछ सेकंड के लिए चुप रहा। फिर उसने कहा, 'यह इस पर निर्भर करता है

— '

‘लो, इसे ले लो!’
मैं अनजाने में चौंक गया। मगनलाल ने कैश बॉक्स खोला और उसमें से सौ-सौ रुपये के नोटों का एक बड़ा बंडल निकाला। अब वह इन्हें फेलुदा को दे रहा था। फेलुदा के होंठ कस गए। उसने स्पष्ट स्वर में कहा, 'मैं बिना कुछ किए कोई शुल्क स्वीकार नहीं करता।'
‘मैं समझ गया, मैं समझ गया!’ मगनलाल ने अपने पान से सने दांत फिर से दिखाए। ‘लेकिन आप इसे कमाएंगे कैसे, श्री मित्तर? जब कोई चोरी हुई ही नहीं है तो आप चोर को कैसे पकड़ेंगे?’

‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ इस बार तो फेलुदा भी हैरान लग रहा था। ‘अगर किसी ने कुछ नहीं चुराया, तो वो कहाँ गया?’
मगनलाल ने कहा, ‘यह मुझे बेचा गया था। मैंने इसके लिए उमानाथ को तीस हजार रुपये दिए थे।’
‘ये कैसी बकवास है?’
फेलुदा इस तरह कैसे बात कर सकता है? मेरे हाथ पसीने से तर होने लगे। लालमोहन बाबू भी काफी पीले दिख रहे थे।
मगनलाल हंसने लगा था, लेकिन फेलुदा के शब्दों ने तुरंत उसके चेहरे से हंसी गायब कर दी। उसकी भौंहों पर गहरी शिकन आ गई, और रोशनी में उसकी आंखें चमक उठीं। 'बकवास? मगनलाल बकवास नहीं करता, श्री मित्तर। जाहिर है, आप उमानाथ और उसके मामलों के बारे में ज्यादा नहीं जानते। क्या आपको पता है कि उसका कारोबार अच्छा नहीं चल रहा है? क्या आपको पता है कि उस पर लोगों का कितना कर्ज है? क्या किसी ने आपको बताया कि उमानाथ ने खुद मुझे अपने घर बुलाया और संदूक से गणेश जी की मूर्ति निकाली? जब अपराधी कोई और नहीं बल्कि आपका ग्राहक खुद है, तो आप उसे कैसे पकड़ेंगे?'
‘मुझे अब भी समझ नहीं आया, मगनलाल जी,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। ‘श्री घोषाल को गणेश जी की मूर्ति क्यों चुरानी पड़ी? अगर उन्होंने इसे आपको बेचने का फैसला किया था, तो वे इसे खुलेआम बाहर क्यों नहीं ले जा सकते थे?’
‘वह गणेश जी केवल उमानाथ के ही नहीं थे। वे उनके परिवार की संपत्ति थे। उनके भाई—जो इंग्लैंड में रहते हैं—और उनके पिता का भी उस पर बराबर हक था। असल में, उनके पिता ही उसके मालिक थे, और वे वाकई भाग्यशाली रहे हैं। ज़रा देखिए उन्होंने कितना पैसा कमाया है और वे कितने आराम से रहते हैं। उमानाथ अपने पिता को यह कहने की हिम्मत कभी नहीं करते कि वे अपनी सबसे अनमोल खानदानी धरोहर बेच रहे हैं!’
फेलुदा सोच में डूबा हुआ प्रतीत हो रहा था। क्या वह मगनलाल की बात पर विश्वास करने लगा था?
‘मैं आपको बताता हूँ।’ मगनलाल उठकर बैठ गया। ‘उसने मुझे 10 अक्टूबर को अपने घर बुलाया और गणेश जी को बेचने का प्रस्ताव रखा। मैं मान गया। जैसा कि आपने सुना होगा, हाल ही में मेरा भाग्य साथ नहीं दे रहा था। इसलिए मैंने सोचा कि गणेश जी मेरी किस्मत बदल देंगे। उमानाथ को उस हरे हीरे की कीमत का कुछ पता नहीं है। असल में उसकी कीमत मेरे द्वारा चुकाई गई कीमत से कहीं अधिक है।

खैर, 10 तारीख को हमारी बातचीत हुई। उसने कहा कि उसे कुछ चीज़ें व्यवस्थित करने के लिए थोड़ा समय चाहिए। तो मैंने कहा ठीक है, आराम से समय ले लो। 15 तारीख को उसने मुझे फिर फोन किया और बताया कि उसे गणेश जी मिल गए हैं। मैंने उसे मछली बाबा की सभा में आने को कहा। हम दोनों अपनी जेबों में एक छोटा सा थैला लेकर पहुँचे। उसके थैले में गणेश जी थे। मेरे थैले में 3000 रुपये के नोट थे। थैले बदलने में हमें ज्यादा समय नहीं लगा। बस, कहानी यहीं खत्म।’
अगर मगनलाल की बात सच थी, तो यह मानना पड़ेगा कि श्री घोषाल ने न सिर्फ हमें बल्कि पुलिस को भी धोखा दिया था। शायद उन्होंने फेलुदा को सिर्फ मामले को दबाने के लिए काम पर रखा था। लेकिन मगनलाल हमें ये सब क्यों बता रहा था? उसे इससे क्या फायदा होने वाला था?
मुझे आश्चर्य हुआ जब फेलुदा ने उससे वही सवाल पूछा। मगनलाल की छोटी आँखें और भी सिकुड़ गईं। ‘मैं जानता हूँ कि आप एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं, श्री मित्तर,’ उसने कहा। ‘वास्तव में, आपकी बुद्धिमत्ता असाधारण मानी जाती है। यदि आप जाँच शुरू करते, तो क्या आपको सच्चाई का पता नहीं चल जाता? और यदि पता चल जाता, तो आप क्या सोचते हैं कि उमानाथ और मैं कैसे दिखते? पुलिस हमें पागल कर देती! आख़िरकार, हमारा लेन-देन पूरी तरह से कानूनी और वैध नहीं था, है ना? आप यह देख ही सकते हैं, है ना?’
फेलुदा ने तुरंत कुछ नहीं कहा। मगनलाल के बोलते ही एक आदमी तीन गिलास शरबत लेकर आया, जो हमारे सामने एक छोटी मेज पर रख दिए गए। फेलुदा ने एक गिलास उठाया और कहा, 'इसका मतलब है कि आपको गणेश जी मिल गए हैं। क्या मैं उन्हें देख सकता हूँ? स्वाभाविक रूप से मुझे इस वस्तु को देखने की उत्सुकता है जिसने इतना हंगामा मचा रखा है।'
मगनलाल ने खेद से सिर हिलाया। 'बहुत खेद है, श्री मित्तर, यह मेरे पास यहाँ नहीं है। आपको पता है कि इस घर पर एक बार छापा पड़ा था। इसलिए मैं इसे यहाँ नहीं रख सका। मुझे इसे एक सुरक्षित स्थान पर भेजना पड़ा है।'
‘ठीक है,’ फेलुदा ने सहज भाव से कहा। ‘आपने वही किया जो आपको सही लगा, और मैं इस पर कोई बहस नहीं करूंगा। लेकिन क्या आप नहीं समझते कि मुझे अपनी जांच जारी रखनी होगी ताकि पता चल सके कि आप सच कह रहे हैं या नहीं? अगर आप सच कह रहे हैं, तो हमें चिंता करने की कोई बात नहीं है। लेकिन अगर आप झूठ बोल रहे हैं तो?’

मगनलाल की आँखें मानो गायब हो गईं। उसके होंठ खतरनाक ढंग से मुड़ गए। 'क्या मतलब, तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते?'
फेलुदा ने गिलास होठों तक उठाया और एक घूंट लिया। फिर उसने कहा, 'तुमने खुद मुझसे कहा था कि मैं तुम्हें नहीं जानता। तो तुम मुझसे यह उम्मीद कैसे कर सकते हो कि मैं तुम्हारी कही हर बात पर विश्वास कर लूँ? क्या तुम किसी ऐसे व्यक्ति की हर बात पर विश्वास कर लोगे जो तुमसे पहली बार मिलने पर कहता है? खासकर तब जब वह स्पष्ट रूप से सच को तोड़-मरोड़ कर पेश कर रहा हो?'
मगनलाल उसे घूरता रहा। सन्नाटे में, मुझे कहीं घड़ी की टिक-टिक की आवाज़ सुनाई दे रही थी, पर वह दिखाई नहीं दे रही थी। फिर मगनलाल ने अपना दाहिना हाथ उठाया और फेलुदा की ओर बढ़ाया। उसके हाथ में अभी भी पैसे थे। उसने कहा, 'मेरे पास तीन हज़ार हैं। इसे ले लीजिए, श्रीमान मित्तर, और मज़े कीजिए। अपने चचेरे भाई और चाचा के साथ अच्छी छुट्टियाँ बिताइए।'
'नहीं, मगनलाल जी, मैं इस तरह पैसे नहीं लेता।'
‘क्या इसका मतलब यह है कि आप इस मामले पर काम करना जारी रखेंगे?’
'हां मुझे यह करना है।'
'अचे से।'
मगनलाल ने फिर घंटी बजाई। वही आदमी वापस आया। मगनलाल ने उसकी ओर देखे बिना ही कहा, 'अर्जुन को बुलाओ। और वह डिब्बा—तेरह नंबर का—और लकड़ी का तख्ता भी ले आओ।'
वह आदमी गायब हो गया। भगवान ही जाने वह क्या लेकर लौटेगा। मगनलाल अब लालमोहन बाबू की ओर मुड़ा, उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान थी। लालमोहन बाबू का दाहिना हाथ एक गिलास पर लिपटा हुआ था, लेकिन ऐसा लग रहा था मानो वह उसमें से पीने की हिम्मत नहीं कर पा रहा हो।
‘क्या बात है, मोहनभोग बाबू, क्या आपको मेरा शरबत पसंद नहीं आया?’
‘नहीं, नहीं, मेरा मतलब है...’ लालमोहन बाबू ने जल्दी से गिलास को अपने होठों तक लाया और उसमें से कुछ पी लिया।
‘चिंता मत करो, मोहन बाबू, उस शरबत में जहर नहीं मिलाया गया है।’
'नहीं - नहीं-'
मुझे जहर पसंद नहीं है।
‘जी हां, बिल्कुल। पी-ज़हर,’ लालमोहन बाबू ने घबराते हुए कहा, ‘बहुत खतरनाक होता है।’

‘अन्य चीजें कहीं अधिक प्रभावी हैं।’
'अन्य बातें?'
मैं आपको समझा देता हूँ कि मेरा मतलब क्या है।
लालमोहन बाबू का गला फिर से बैठ गया। बाहर कदमों की आहट सुनाई दी। एक अजीब प्राणी कमरे में दाखिल हुआ। मुझे मानना पड़ा कि वह एक आदमी था, लेकिन मैंने उसके जैसा आदमी पहले कभी नहीं देखा था। लगभग पाँच फुट लंबा, वह बेहद पतला था। उसके शरीर की हर नस उभरी हुई थी। उसकी आँखों से लग रहा था कि वह नेपाली होगा, लेकिन उसकी नाक लंबी और नुकीली थी। उसके बाल बहुत छोटे कटे हुए थे और कान बाहर निकले हुए थे। उसके शरीर पर एक भी बाल नहीं था। मैं उसके हाथ, पैर और छाती देख पा रहा था, क्योंकि उसने एक गंदी, फटी हुई बिना आस्तीन की बनियान और एक पुरानी शॉर्ट्स पहनी हुई थी। उसकी उम्र का अंदाज़ा लगाना नामुमकिन था।
उस व्यक्ति ने मगनलाल को सलाम किया और फिर निर्देशों की प्रतीक्षा में खड़ा हो गया।
अब दो आदमी एक लंबा लकड़ी का बक्सा लेकर अंदर आए। संभवतः यही वह बक्सा था जिसका ज़िक्र मगनलाल ने तेरह नंबर के बक्से के रूप में किया था। ज़मीन पर रखने पर जो आवाज़ आई, उससे संकेत मिलता है कि इसके अंदर लोहे या पीतल की कोई चीज़ रखी थी।
फिर एक बड़ा लकड़ी का तख्ता लाया गया और हमारे पीछे बंद दरवाजे के सामने रख दिया गया। मगनलाल ने एक बार फिर अपना मुंह खोला।
'क्या आप जानते हैं कि चाकू फेंकना क्या होता है, श्रीमान मिटर? क्या आपने इसे कभी सर्कस में देखा है?'
'हाँ मेरे पास है।'
मैंने ऐसा नहीं देखा था, लेकिन मुझे पता था कि यह क्या है। एक आदमी तख्ते की तरफ पीठ करके खड़ा था। दूसरे ने उस पर चाकू फेंके, जो उसे लगने के बजाय तख्ते पर जा गिरे, उसके शरीर से बस कुछ इंच दूर। चाकू फेंकने वाले की एक छोटी सी गलती भी गंभीर—यहाँ तक कि जानलेवा—चोट का कारण बन सकती थी। क्या अर्जुन नाम का यह प्राणी चाकू फेंकने वाला था? किस पर?
उनमें से एक आदमी ने बक्सा खोला। वह बक्सा चाकूओं से भरा हुआ था, जिनमें से प्रत्येक में हाथीदांत का हैंडल लगा हुआ था और एक सिरे पर एक समान पैटर्न बना हुआ था।

हरबंसपुर के राजा का अपना निजी सर्कस था। अर्जुन उसमें प्रदर्शन किया करता था। अब वह मेरे लिए, मेरे ही सर्कस में प्रदर्शन करता है... हा हा हा! डिब्बे में से बारह चाकू चुनकर एक संगमरमर की मेज पर जापानी पंखे की तरह फैला दिए गए थे। 'चलो, चाचा जी!' मगनलाल ने कहा।
लालमोहन बाबू बुरी तरह चौंक गए और उनके गिलास में बचा हुआ लगभग सारा तरल फर्श पर गिर गया। इस बार फेलुदा बोले, 'तुम उसे क्यों बुला रहे हो?' उन्होंने ठंडे स्वर में पूछा।
मगनलाल का मोटा शरीर हंसी से हिल रहा था। 'बताओ, बोर्ड के सामने कौन खड़ा हो सकता है? अगर मैं तुम्हें वहाँ खड़ा होने को कहूँ, तो तुम खेल नहीं देख पाओगे, है ना? नहीं, एक शब्द भी मत बोलो। तुमने आज मुझे झूठा कहकर मेरा अपमान किया है। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि मेरे पास और भी हथियार हैं। मैं सिर्फ़ चाकू ही इस्तेमाल नहीं करता। उन छोटी खिड़कियों को देखो। इस समय दो बंदूकें तुम्हारी तरफ़ तनी हुई हैं। अगर तुम तमीज़ से पेश आओगे और बहस शुरू नहीं करोगे, तो तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा। न ही तुम्हारे दोस्त को। अर्जुन इस खेल का उस्ताद है, मेरा यकीन मानो।'
मैंने खिड़कियों की ओर देखने की हिम्मत नहीं की। कुछ ही देर बाद, लालमोहन बाबू लड़खड़ाते हुए उठे और बोले, 'अगर मैं ज़िंदा रहा, तो मुझे किसी साजिश की चिंता नहीं...' कुछ आदमियों ने उन्हें पकड़ लिया और बोर्ड के सामने खड़ा कर दिया। उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं। मैं और नहीं देख सका।
लालमोहन बाबू मेरे पीछे खड़े थे। मेरे सामने अर्जुन खड़ा था, जो धीरे-धीरे लेकिन लगातार एक-एक करके चाकू उठा रहा था। हर चाकू मेरे सिर के ऊपर से उड़ता हुआ बोर्ड पर हल्की सी सरसराहट के साथ टकराता था। फेलूदा ज़रूर लालमोहन बाबू की ओर मुंह करके तमाशा देख रहा होगा, वरना कोई न कोई बंदूक ज़रूर चल जाती।
अंततः, आखिरी चाकू फेंक दिया गया। अर्जुन खाली मेज के सामने चुपचाप खड़ा रहा, उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं। मगनलाल ने कहा, 'शाबाश!' अदृश्य घड़ी की टिक-टिक जारी रही।
किसी ने कुछ नहीं कहा। कोई हिला तक नहीं। फिर, कुछ ही सेकंड बाद, जैसे ही मेरी साँसें सामान्य होने लगीं, लालमोहन बाबू लड़खड़ाते हुए आगे बढ़े और अर्जुन का हाथ पकड़ लिया।
‘धन्यवाद, महोदय,’ उसने कहा।

[illegible]

सात

दोपहर के लगभग 2 बज रहे थे। आसमान धूसर हो चुका था। दशाश्वमेध घाट पर बहुत कम लोग बचे थे। हम तीनों पानी के किनारे बैठे थे।
मगनलाल के घर में उस भयानक घटना को हुए लगभग एक घंटा बीत चुका था। उनके दो आदमियों ने लालमोहन बाबू के चेहरे पर ठंडा पानी छिड़का ताकि उन्हें होश आ सके। फिर मगनलाल ने खुद उन्हें एक गिलास दूध और ब्रांडी दी और कहा, 'चाचा जी, आप तो बड़े बहादुर हैं।'
इसके कुछ ही देर बाद हमें जाने की इजाज़त मिल गई, लेकिन इससे पहले मगनलाल ने यह साफ़ कर दिया था कि अगर फेलुदा ने अपनी जाँच जारी रखने पर ज़ोर दिया तो उसकी जान को खतरा होगा। फेलुदा ने कोई बहस नहीं की, लेकिन एक छोटी सी रियायत हासिल कर ली। उसने कहा, 'मुझे कम से कम एक बार और श्री घोषाल के घर जाना होगा, कम से कम उन्हें यह बताने के लिए कि मैं इस काम से पीछे हट रहा हूँ। अगर मैं बिना कुछ कहे गायब हो जाता हूँ, तो इससे मेरी छवि को कोई फ़ायदा नहीं होगा, है ना?'
मुझे आश्चर्य हुआ कि मगनलाल मान गए। उन्होंने कहा, 'बस एक और मुलाकात। याद रखना, श्रीमान मित्तर, अगर तुमने हद पार की, तो इसका जोखिम तुम खुद उठाओगे। मुझे तुम्हें यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि मेरे पास तुम्हारे हर काम पर नज़र रखने के साधन हैं।'
मगनलाल की जीत की बात सोचकर मुझे बहुत बुरा लगा। फेलुदा को अब तक किसी भी शत्रु ने नहीं हराया था। लेकिन मगनलाल जितना क्रूर और शक्तिशाली कोई और नहीं था।
हमारे जाने के बाद लालमोहन बाबू ने बहुत कम बात की। उन्होंने बस इतना पूछा कि क्या उनके सारे बाल सफेद हो गए हैं, जिस पर मैंने और फेलुदा ने उन्हें आश्वस्त किया कि उनके सिर पर एक भी नया सफेद बाल नहीं दिख रहा है।
कुछ मिनटों की चुप्पी के बाद, फेलुदा ने आह भरते हुए कहा, 'गणेश श्री घोषाल के घर से नहीं निकला है। अब मुझे इस बात का पूरा यकीन है। अगर मगनलाल को वह मिल गया होता, तो वह मुझे इस मामले से पीछे हटने के लिए पैसे नहीं देता।

सबसे बड़ा सवाल यह है कि वह कहाँ गया? मगनलाल उसे क्यों नहीं पा सका? इसके अलावा, उसे कौन ले गया, और उस घर में मगनलाल के लिए कौन काम कर रहा है?'
जब तक हम घाट से निकले, आसमान का रंग गहरा भूरा हो गया था। क्या बारिश होने वाली थी? मैंने ऊपर देखा और मुझे फिर से लाल और सफेद चील दिखाई दी। फेलुदा ने भी उसे देखा था।
मैंने उस घर को पहचान लिया जिसके ऊपर पतंग मंडरा रही थी। यह वही लाल घर था जहाँ शैतान सिंह को कैप्टन स्पार्क के सामने आत्मसमर्पण करना पड़ा था। छत पर कौन खड़ा था? क्या वह स्वयं शैतान सिंह ही था? जी हाँ, बिल्कुल। वह रुकू का दोस्त सूरज था। हमारी तरह वह भी पतंग को घूर रहा था।
जो भी पतंग उड़ा रहा था, उसने अब धागा खींचा। पतंग तेज़ी से नीचे आने लगी। सूरज ने अपना दाहिना हाथ हवा में उठाया और पतंग की ओर निशाना साधा। हमने देखा कि एक पत्थर उड़ता हुआ आया और पतंग के पीछे गायब हो गया। पत्थर एक लंबे धागे के सिरे से बंधा हुआ था। सूरज ने लाल पतंग को पकड़ लिया था।
जैसे-जैसे वह धागा खींचता गया, पतंग उसके और करीब आती गई।
हमने उसी दोपहर श्री घोषाल के घर आखिरी बार जाने का फैसला किया। जब हम पहुंचे तो शाम के लगभग 4 बज रहे थे। त्रिलोचन ने हमें फिर से नमस्कार किया और द्वार खोल दिया।
एक बार फिर, हमने विकास सिन्हा को हमारा अभिवादन करने के लिए बाहर आते देखा।
‘कोई खबर है?’ उसने पूछा।
नहीं, मुझे लगता है ऐसा नहीं है। हम तो बस पूरे शहर में घूमते रहे।
श्री घोषाल और अन्य लोग बाहर चले गए हैं।
'कहाँ?'
'सारनाथ। आज कुछ और मेहमान आ गए हैं। कुछ देर पहले ही एक बड़ा समूह बाहर गया है। वे कुछ समय तक वापस नहीं आएंगे।'
‘क्या रुकू उनके साथ चली गई है?’
नहीं, उसके एक चाचा उसे फिल्म दिखाने ले गए थे, टार्ज़न, द एप मैन।
'अच्छा ऐसा है।'
क्या आप मेरे कमरे में बैठना चाहेंगे?
'हां, लेकिन उससे पहले, अगर अनुमति हो तो मैं एक बार फिर छत पर जाना चाहूंगा।'

'बिल्कुल।'
जैसे ही हम घर में दाखिल हुए, हमने देखा कि शशि बाबू अभी भी अपने काम में मग्न थे। 'कल तक तो वो काम खत्म कर ही लेंगे, है ना?' फेलुदा ने पूछा।
'हां, बेचारे को अभी भी तेज बुखार है, लेकिन उसने एक पल के लिए भी काम करना बंद नहीं किया है।'
हम सीढ़ियाँ चढ़कर छत पर पहुँचे। यहीं रुकू का कमरा था। मुझे पहले से ही अंदाज़ा था कि फेलुदा असल में यही कमरा देखना चाहता था। क्या वह इसकी पूरी तरह तलाशी लेगा? चूंकि रुकू बाहर गई हुई थी, इसलिए तलाशी लेने का यही सही समय लग रहा था... तभी मुझे मगनलाल की चेतावनी याद आ गई। फेलुदा को इस घर में ज़्यादा देर नहीं रुकना चाहिए।
आखिरकार, उसे जो चाहिए था वो लगभग तुरंत ही मिल गया। लाल और सफेद पतंग ज़मीन पर पड़ी थी। हमने सूरज को उसे कुछ घंटे पहले ही उठाते देखा था। यह साफ था कि वह कई जगहों से क्षतिग्रस्त थी। यह पतंग अब कभी नहीं उड़ पाएगी। फेलुदा ने उसे उठा लिया। अब हमने कुछ ऐसा देखा जो हममें से किसी ने पहले नहीं देखा था। पतंग पर एक संदेश लिखा था। नहीं, दरअसल, अलग-अलग जगहों पर दो संदेश लिखे थे। एक में लिखा था, 'मुझे कैद कर लिया गया था। लेकिन सब ठीक है, हा हा। फिर शाम को मिलते हैं। आपका, कैप्टन स्पार्क।'
दूसरा संदेश संक्षिप्त था: 'कल सुबह टार्ज़न देखने जा रहा हूँ। कैप्टन स्पार्क।'
‘हे भगवान!’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा। ‘ये लड़के क्या कर रहे हैं?’ फेलुदा ने पतंग को ठीक उसी स्थिति में वापस रख दिया जैसे उसे मिली थी, और कहा, 'यह इस बात का स्पष्ट उदाहरण है कि आपकी साहसिक श्रृंखला की किताबें एक युवा मन पर क्या प्रभाव डाल सकती हैं।'
हम विकास बाबू के कमरे में लौट आए। बूढ़ा नौकर भारद्वाज चाय लेकर आया। कमरा काफी बड़ा था। एक तरफ पलंग था, और उसके सामने एक मेज और एक कुर्सी थी। इनके अलावा मेहमानों के लिए एक सोफा भी था। फेलुदा कुर्सी पर बैठ गया, लालमोहन बाबू और मैंने सोफे को चुना। विकास बाबू पलंग पर बैठ गए।
‘श्री घोषाल का कारोबार कैसा चल रहा है?’ फेलुदा ने चाय की चुस्की लेते हुए पूछा।
‘ठीक-ठाक ही, मुझे लगता है,’ विकास बाबू ने जवाब दिया। अगर उन्हें सवाल सुनकर हैरानी हुई भी तो उन्होंने इसे ज़ाहिर नहीं होने दिया। ‘मज़दूर कभी-

कभार हड़ताल पर चले जाते हैं, लेकिन ऐसा तो हर जगह, हर व्यवसाय में होता ही है, है ना?’
‘हम्म।’ फेलुदा अचानक खड़ा हो गया और बोला, ‘क्या मैं बैठक कक्ष देख सकता हूँ?’
'जी हां, बिल्कुल। कृपया इस ओर आइए।'
हमने अपने प्याले नीचे रखे और विकास बाबू के पीछे-पीछे चले। बैठक का कमरा बरामदे के उस पार था। फेलुदा ने पूछा, 'क्या आप मुझे वह जगह दिखा सकते हैं जहाँ उमानाथ बाबू और मगनलाल उस दिन बैठे थे जब मगनलाल मिलने आए थे?'
विकास बाबू ने आमने-सामने रखी दो कुर्सियों की ओर इशारा किया।
‘मैं समझ गया। और ये दरवाजे कहाँ जाते हैं? और कमरों में? या फिर कोई और बरामदा है?’
‘नहीं, ये कमरे हैं।’ इनमें से एक कमरा पुराने श्री घोषाल का दफ्तर हुआ करता था। दूसरा उनके ग्राहकों के लिए प्रतीक्षालय था।’
हमने उनका संक्षिप्त निरीक्षण किया और फिर विकास बाबू के कमरे में वापस चले गए।
‘गणेश को सामान्यतः कहाँ रखा जाता था?’ फेलुदा ने अब पूछा। ‘क्या यह हमेशा यहीं वाराणसी में रहता था, या कभी कोई इसे कलकत्ता भी ले गया था?’
नहीं, यह हमेशा अंबिका बाबू के पास ही रहा, यहीं इसी घर में। इसके खोने से बूढ़ा आदमी अपने बेटे से कहीं ज्यादा दुखी है, भले ही वह इसे दिखाता न हो। दरअसल, उमानाथ बाबू ने आपको मुख्य रूप से अपने पिता को दिलासा देने के लिए ही नियुक्त किया था।
फेलुदा ने अनमने ढंग से सिर हिलाया। उसने मेज पर रखा ट्रांजिस्टर रेडियो उठाया और उसका एक हैंडल घुमाने लगा। कुछ नहीं हुआ, जब तक उसने उसे विपरीत दिशा में नहीं घुमाया। अचानक एक क्लिक की आवाज़ आई, जिससे उसके चेहरे पर शिकन आ गई। 'अरे, ये तो अजीब बात है,' उसने बुदबुदाया, 'तुम्हारा रेडियो चालू ही रह गया था!'
‘ओह, स-स-सच में?’ विकास बाबू हकलाते हुए बोला, अचानक वह थोड़ा असहज सा दिखने लगा। फेलुदा ने बैटरियां निकालीं। ‘इन बैटरियों से रिसाव हो गया है,’ उसने कहा, ‘इसका मतलब है कि आपका रेडियो कुछ समय पहले ही बंद हो गया था।’ विकास बाबू चुप रहे।

आपको रेडियो सुनना बहुत पसंद है, लेकिन आपने पिछले कुछ दिनों से ऐसा नहीं किया है। क्या आप मुझे इसका कारण बता सकते हैं?
फिर भी विकास बाबू चुप रहे। ‘ठीक है,’ फेलुदा ने कहा, ‘अगर तुम नहीं बोलोगे, तो मुझे ही बोलना पड़ेगा।’ उनकी आवाज़ में वही जानी-पहचानी अधिकार और आत्मविश्वास झलक रहा था। ‘जब मगनलाल उमानाथ बाबू से मिलने आया था, तब तुम छुपकर बातें सुनने के लालच से खुद को रोक नहीं पाए थे, है ना? तुमने रेडियो की आवाज़ कम कर दी थी और बरामदे में खुलने वाले बैठक कक्ष के दरवाजे तक चुपके से चले गए थे। तुमने एक-एक शब्द सुना। तुम्हें मगनलाल के तीस हज़ार रुपये के प्रस्ताव के बारे में पता था। तुमने उसे श्री घोषाल को धमकी देते हुए सुना था।’
विकास बाबू ज़मीन की ओर देख रहा था। उसने चुपचाप सिर हिलाया। 'अब कृपया इस सवाल का जवाब दीजिए, मुझे सच जानना है,' फेलुदा ने बैटरी को कूड़ेदान में फेंकते हुए कहा। 'जिस दिन गणेश जी चोरी हुए, उस दिन शाम 7:30 से 8:30 बजे के बीच आप क्या कर रहे थे? आप रेडियो तो नहीं सुन रहे होंगे, क्योंकि वह तो पाँच दिन से बंद पड़ा था—'
‘जी!’ विकास सिन्हा ने सिर उठाया और जल्दी-जल्दी, लगभग बेताबी से बोला। ‘मैं आपको सब कुछ बताऊंगा। कृपया मुझ पर विश्वास करने की कोशिश कीजिए।’ उसने गहरी सांस ली और आगे कहा, ‘मैंने मगनलाल की धमकी सुनी थी और बहुत चिंतित था। हर दिन, मैं अंबिका बाबू के कमरे में रखी पेटी खोलकर यह देखना चाहता था कि गणेश जी अभी भी वहीं हैं या नहीं। लेकिन मुझे यह मौका तभी मिला जब श्री घोषाल अपने परिवार के साथ मछली बाबा से मिलने गए। उनके जाने के बाद मैंने सिर्फ दस मिनट इंतजार किया। फिर मैं अंबिका बाबू के कमरे में गया, दराज से चाबी निकाली और पेटी खोल दी।’
‘आगे क्या हुआ?’ विकास सिन्हा ने कोई जवाब नहीं दिया।
‘श्री सिन्हा, बताइए, जब आपने संदूक खोला तो आपको क्या दिखा?’ इस बार विकास बाबू ने अपना पीला चेहरा ऊपर उठाया और फुसफुसाते हुए कहा, ‘मैंने देखा... मैंने देखा कि गणेश गायब थे!’
‘चला गया?’ फेलुदा की भौंहें और भी सिकुड़ गईं।
जी हाँ। मुझे पता है कि आपको इस पर विश्वास करना मुश्किल लग रहा होगा, लेकिन मैं कसम खाकर कहती हूँ कि मेरे संदूक खोलने से पहले ही गणेश जी चोरी हो चुके थे। आपको समझना होगा कि मैंने यह बात पहले न तो आपको बताई और न ही

पुलिस को। सच कहूँ तो, उस दिन के बाद से मेरी मानसिक स्थिति का वर्णन करना भी मुश्किल है!
फेलुदा ने चाय का प्याला उठाया। 'वह संदूक कितनी बार खोला गया होगा?' 'लगभग कभी नहीं। जहाँ तक मुझे पता है, उमानाथ बाबू के कलकत्ता से आने के अगले दिन इसे एक बार खोला गया था। उन्होंने अपनी संपत्ति से संबंधित कुछ पुराने दस्तावेज़ निकाले और अपने पिता से उनके बारे में बातचीत की। बस इतना ही।'
फेलुदा चुपचाप बैठा रहा। विकास बाबू ने उसे देखा, उसकी आँखों में विनती थी। लगभग दो मिनट बाद, वह खुद को और रोक नहीं पाया और बोल पड़ा, 'क्या आपको मुझ पर विश्वास करना असंभव लगता है, श्री मित्तर?'
जब फेलुदा बोलता था तो उसकी आवाज कर्कश लगती थी।
'मुझे खेद है, श्री सिन्हा, लेकिन अगर कोई पहली बार में सच नहीं बताता है, तो उसे संदिग्धों की सूची से हटाना काफी मुश्किल होता है।'

आठ

अगली सुबह जब मैं उठा तो आसमान बादलों से घिरा हुआ था। हल्की-हल्की बूंदा- बांदी हो रही थी और सड़क पर बने पानी के गड्ढों को देखकर लग रहा था कि रात में काफी तेज बारिश हुई थी।
फेलुदा पहले ही उठकर बालकनी में बैठ चुके थे, उनके पैर रेलिंग पर टिके हुए थे। उनकी मशहूर नीली नोटबुक उनकी गोद में खुली पड़ी थी। वे बड़े ध्यान से उसके पन्ने पलट रहे थे, इस बात से बिल्कुल बेखबर कि उनके पैर भीग रहे थे। कई लोग बारिश की परवाह किए बिना घाट की ओर जा रहे थे। लेकिन मुझे पता था कि नीचे सड़क का शोर फेलुदा को बिल्कुल भी विचलित नहीं करेगा।
लालमोहन बाबू थोड़ी देर बाद उठे। उन्होंने कहा, ‘तपेश, मैंने एक अजीब सपना देखा। सपने में मेरे शरीर के लगभग हर हिस्से से चाकू और कटार निकले हुए थे। मैं अपने प्रकाशक के सामने खड़ा था और उनसे अपने उपन्यास के प्रूफ मांग रहा था। जानते हो उन्होंने मुझसे क्या कहा? उन्होंने कहा, “लालमोहन बाबू, अपना उपनाम क्यों नहीं बदल लेते? जटायु छोड़ दो। साही ज़्यादा उपयुक्त रहेगा—और तुम्हारी किताबें ज़्यादा बिकेंगी।” हो!’
कुछ मिनट बाद फेलुदा कमरे में वापस आया, जब मैं और लालमोहन बाबू अपनी पहली कप चाय की चुस्की ले रहे थे।
उन्होंने कहा, 'श्री जटायु, बताइए, क्या आपकी किसी पुस्तक में पतंग के माध्यम से संदेश भेजने का उल्लेख है?'
‘नहीं, मुझे अफसोस है,’ लालमोहन बाबू ने अफसोस जताते हुए सिर हिलाया। ‘काश मैंने ऐसा सोचा होता। जहाँ तक मुझे पता है, रुकू को यह विचार किसी दूसरे लेखक की किताब से आया है।’
'शायद मुझे तुम्हारी एडवेंचर सीरीज़ पर नहीं हँसना चाहिए था। रुकू के दिमाग पर इसके प्रभाव को देखते हुए, इसे थोड़ा और गंभीरता से लेने की ज़रूरत है। वैसे, क्या तुम मुझे एक से दस के बीच कोई संख्या बता सकते हो?' 'सात।'

क्या आप जानते हैं कि अगर यही सवाल पूछा जाए तो सत्तर प्रतिशत लोग "सात" कहेंगे?
'वास्तव में?'
हां। और अगर आप उनसे एक से पांच के बीच कोई संख्या चुनने को कहें, तो वे "तीन" कहेंगे। उनसे किसी फूल का नाम पूछकर देखिए, और वे "गुलाब" कहेंगे। हम सुबह आठ बजे नाश्ता करने नीचे गए। लगभग आधे घंटे बाद, एक वेटर फेलुदा को ढूंढते हुए आया। उसने कहा, 'मैनेजर के कमरे में आपके लिए एक फोन कॉल है।' फेलुदा को फोन आया था? भला सुबह-सुबह कौन उसे फोन कर रहा होगा? लेकिन मेरे पास करने को कुछ नहीं था, बस धैर्यपूर्वक उसके वापस आने और समझाने का इंतज़ार करना था। कुछ ही मिनटों बाद वह वापस आ गया।
उन्होंने कहा, 'वह तिवारी थे। न तो प्रयाग और न ही हरिद्वार इस बात की पुष्टि कर सके कि हाल के दिनों में मछली बाबा नाम के किसी व्यक्ति को देखा या सुना गया है।'
‘कितना दिलचस्प! क्या इसका मतलब यह है कि यहाँ का आदमी धोखेबाज है?’
‘हो सकता है, लेकिन इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरा मतलब है, ऐसे कई लोग हैं जो जादुई शक्तियों का दावा करते हैं। हमें बस यह साबित करना है कि मछली बाबा के इस छोटे से धोखे के पीछे कोई बुरी मंशा नहीं है।’
मैंने पूछा, ‘क्या श्री तिवारी ने कुछ और नहीं कहा?’
‘जी हां,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। ‘तीन सप्ताह पहले, रायबरेली जेल से एक आदमी भाग गया था। वह धोखाधड़ी और जालसाजी के आरोप में सजा काट रहा था। उसका हुलिया कुछ हद तक मछली बाबा से मिलता है, हालांकि बताया जाता है कि वह शेव किया हुआ है और उतना सांवला नहीं है।’
‘हो सकता है उसने मेकअप किया हो,’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की। ‘क्यों न हम जाकर दिन के उजाले में उसे अच्छी तरह देख लें? हम घाट पर उसका इंतजार कर सकते हैं। यकीनन वह दशाश्वमेध जाएगा, या शायद केदार मंदिर?’
‘बिल्कुल नहीं। वह केवल शाम को ही आगंतुकों से मिलते हैं। उनका पूरा दिन बंद कमरे में ही बीतता है। मेरा मानना है कि वह अपने कमरे से बिल्कुल बाहर नहीं निकलते। अभय चक्रवर्ती के अलावा किसी को भी अंदर जाने की अनुमति नहीं है। उन्हें खाना भी उनके कमरे में ही परोसा जाता है। वह नहाने की भी जहमत नहीं उठाते।’
क्या! उनके जैसा कथित महान साधु प्रतिदिन स्नान नहीं करता था?

‘क्या श्री तिवारी ने आपको यह सब बताया?’
फेलुदा ने मेरी ओर सिर घुमाकर मुझे ठंडी निगाहों से देखा। फिर उसने उदास होकर सिर हिलाया और बोला, 'फेल। तुम अवलोकन परीक्षा में फेल हो गए। क्या तुमने ऊपर बालकनी में रस्सी पर टंगे मेरे गीले कपड़े नहीं देखे? अगर देखे भी, तो क्या उससे तुम्हें कुछ समझ नहीं आया? क्या तुमने कभी किसी को बिना बाहर निकले भीगते हुए सुना है?'
मैं एक शब्द भी नहीं बोल सका। फेलुदा बिल्कुल सही था। मुझे और ज़्यादा ध्यान देना चाहिए था। लेकिन आखिर वह बाहर गया ही क्यों था?
उन्होंने बताया, “आज सुबह मैं चार बजे उठा और अभय चक्रवर्ती का इंतज़ार करने के लिए केदार घाट चला गया। वे साढ़े चार बजे आ गए। उनसे बातचीत शुरू करना आसान था। वे बहुत अच्छे, दयालु और सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं, बिल्कुल वैसे ही जैसे निरंजन बाबू ने कहा था। मैंने उनसे बाबा की आदतों के बारे में जाना। जब उन्होंने बताया कि बाबा स्नान नहीं करते, तो शायद मैंने नाक सिकोड़ी होगी, क्योंकि उन्होंने कहा, “बेटा, क्या फर्क पड़ता है जब उनका मन साफ और शुद्ध है? आखिर दस दिन तो बस की बात है। वे पानी से उठे थे, है ना, और वे वापस पानी में ही जाएंगे।” मैंने उनसे यह पूछने की हिम्मत नहीं की कि क्या उनसे बदबू आती है! मेरा मानना है कि एक आदमी हर सुबह मछली के छिलकों से भरी टोकरी लेकर आता है। इन्हें शाम को बांटा जाता है। अभय चक्रवर्ती के जाने के बाद मैं घाट पर ही रुका रहा और लोकेनाथ नाम के एक पांडा से बात की, जो हर दिन घाट पर आता है।” लोकेनाथ ने बताया कि उन्होंने चक्रवर्ती और मछली बाबा की पहली मुलाकात को अपनी आँखों से देखा था, हालाँकि जब वे वहाँ पहुँचे तब तक बाबा पूरी तरह होश में आ चुके थे। उन्होंने लोकेनाथ को उनके नाम से पुकारा और कुछ चौंकाने वाली बातें बताईं। उन्होंने कहा, 'भले ही वह धोखेबाज हो, लेकिन उसका प्रबंधक बहुत ही चतुर और कुशल होना चाहिए।'
‘क्या ये स्वयं अभय चक्रवर्ती हो सकते हैं?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
नहीं। श्री चक्रवर्ती निःसंदेह ईमानदार हैं। मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें यह विश्वास करना मुश्किल नहीं लगता कि कोई व्यक्ति प्रयाग से तैरकर इतनी दूर तक आ सकता है? इस पर उन्होंने उत्तर दिया, “मेरे प्रिय, यदि आपका समर्पण और विश्वास दृढ़ है तो कुछ भी असंभव नहीं है।” अभयचरण चक्रवर्ती जैसे लोग ही हैं जिन्होंने काशी की भावना को जीवित रखा है।

प्राचीन मूल्यों में उनका विश्वास कभी नहीं बदलेगा। नहीं, लालमोहन बाबू, वह इसमें भागीदार नहीं हो सकते।
शाम साढ़े चार बजे के करीब बारिश रुक गई। हम पाँच बजे निकल पड़े। फेलुदा आज पूरी तरह से पर्यटक की तरह लग रहा था। उसके कंधे पर कैमरा लटका हुआ था। उसने कहा, 'चलो रबड़ी खाते हैं।' लालमोहन बाबू और मैं तुरंत मान गए। विश्वनाथ मंदिर से कचौरी गली ज़्यादा दूर नहीं थी। फेलुदा को सही दुकान आसानी से मिल गई। हम एक बेंच पर बैठ गए और हमें मिट्टी के छोटे बर्तनों में बेहद स्वादिष्ट रबड़ी परोसी गई। लालमोहन बाबू ने अभी एक चम्मच मुंह में डाला ही था कि उन्होंने कहा, 'इस अद्भुत चीज़ की खोज टेलीफोन की खोज से कम महत्वपूर्ण नहीं है, है ना?' तभी मैंने उसी आदमी को देखा जो एक दिन पहले हमारा पीछा कर रहा था। वह हमारी तरफ पीठ करके खड़ा था और किसी से बात कर रहा था।
मैं दिन भर मगनलाल और उसकी कही बातों को भूलने की कोशिश करता रहा। लेकिन इस आदमी को देखते ही उस मुलाकात की सारी भयावहता मेरे दिमाग में फिर से ताजा हो गई। फिर भी, मैंने खुद को खाने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर किया और अप्रिय विचारों में उलझने से बचने की कोशिश की।
‘चलो चलते हैं,’ फेलुदा ने कहा। मैंने चम्मच को आखिरी बार चाटा और उसके और लालमोहन बाबू के साथ बाहर आ गया।
कचौरी गली से हम गोधुलिया की ओर चल पड़े। पिछले कुछ दिनों में ये गलियाँ मेरे लिए काफी जानी-पहचानी हो गई थीं। हम धीरे-धीरे चल रहे थे, और फेलुदा बीच-बीच में रुककर तस्वीरें ले रहा था। मैं बार-बार पीछे मुड़कर देख रहा था कि कहीं वो आदमी हमारा पीछा तो नहीं कर रहा, लेकिन वो गायब हो गया था। फेलुदा ने मेरी ये हरकत देखी और कहा, 'तुम्हें ये ख्याल कहाँ से आया कि मगनलाल ने हमारी गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए सिर्फ एक ही आदमी को तैनात किया है?'
इसके बाद मैंने अपनी नजरें सीधे आगे की ओर रखीं।
वहाँ वही हार्डवेयर की दुकान थी जिसे मैंने पहले देखा था। अभय चक्रवर्ती का घर यहाँ से बस कुछ ही कदम दूर था।
‘श्री मित्तर! प्रदोष बाबू!’ हमारे पीछे से एक आवाज आई। हम सब तुरंत मुड़ गए।

दो बंगाली सज्जन हमारे सामने खड़े थे, विनम्रता से मुस्कुरा रहे थे। हम उनसे पहले कभी नहीं मिले थे।
उनमें से एक ने कहा, 'हम आपको ढूंढने के लिए आपके होटल गए थे।'
‘क्या कोई बात है?’ फेलुदा ने पूछा।
‘हम बंगाली क्लब से हैं। मेरा नाम संजय रॉय है, और ये गोकुल चटर्जी हैं। हम आपको परसों होने वाले अपने नाटक में आमंत्रित करने आए हैं।’ ‘काबुलीवाला?’
‘आपको पता था?’ दोनों व्यक्ति प्रसन्न और आश्चर्यचकित लग रहे थे। ‘क्या आपने कुछ दिन पहले श्री घोषाल को आमंत्रित नहीं किया था?’
‘हे भगवान! आपको तो सब कुछ पता है!’ संजय रॉय ने कहा। ‘इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है, है ना?’ गोकुल चटर्जी हँसे। फेलुदा की जासूसी की ख्याति बंगाली क्लब के सदस्यों से छिपी नहीं थी।
हमने कार्ड निरंजन बाबू के पास छोड़ दिया है। आप सभी को आना होगा। हम आपका इंतजार करेंगे।
'बहुत-बहुत धन्यवाद। हम वहां जरूर आएंगे, बशर्ते कि मैं किसी महत्वपूर्ण काम में न उलझ जाऊं।'
‘क्या आप किसी महत्वपूर्ण काम में लगे हुए हैं? आप... मतलब, यहाँ क्यों हैं?’ मैंने फेलुदा की ओर देखा। उनके होंठों पर वही रहस्यमयी मुस्कान थी, जिसे मैं जानता था कि वे ऐसे ही मौकों के लिए बचाकर रखते थे। इसका मतलब 'हाँ' भी हो सकता था, या 'ना' भी; यहाँ तक कि 'शायद' भी। न तो श्री रॉय और न ही श्री चटर्जी मूर्ख दिखना चाहते थे। इसलिए दोनों ने ज़ोर से सिर हिलाकर यह जता दिया कि वे उनका मतलब पूरी तरह समझ गए हैं, और फिर वे चले गए।
हम फिर चलने लगे। अंधेरा होने लगा था। स्ट्रीटलाइटें जल चुकी थीं। आसमान का रंग राजसी नीले से बदलकर नीला-काला होने लगा था, और एक दुकान में ट्रांजिस्टर पूरी आवाज़ में बज रहा था। लता मंगेशकर की आवाज़ रिक्शा के हॉर्नों की तेज़ आवाज़ से टकराने लगी। इसी समय, फेलुदा ने घोषणा की कि उसका हृदय अचानक भक्ति की लहर से भर गया है, और वह मछली बाबा के दर्शन किए बिना वापस नहीं जा सकता।
अभय चक्रवर्ती के घर पहुँचते ही हमें वहाँ काफी भीड़ मिली, शायद इसलिए क्योंकि बाबा पाँच दिन में जाने वाले थे। फेलुदा ने अपना कैमरा मेरे कंधे पर रखते हुए मुझसे कहा, 'स्थिर खड़े रहो।' फिर उन्होंने अपने टेलीफोटो लेंस

से मछली बाबा की एक तस्वीर खींची। मुझे मगनलाल कहीं नज़र नहीं आया। शायद वो हर दिन नहीं आते थे। हम पाँच मिनट में वहाँ से निकल गए।
दाहिनी ओर मुड़ने पर हम एक नई गली में पहुँच गए। एक बड़ी गाय रास्ता रोककर खड़ी थी। लालमोहन बाबू ने हल्की सी खांसी की और रुक गए। 'क्या बात है?' फेलुदा ने पूछा।
‘अह... आपको क्या लगता है इसकी ऊंचाई कितनी होगी?’
'क्यों?'
‘मैं एक समय ऊंची कूद में काफी अच्छा था। स्कूल में मेरा एक रिकॉर्ड भी था। लेकिन, कुछ साल पहले डेंगू के हमले के कारण... मतलब, मेरे घुटने अब पहले जैसे नहीं रहे...’
‘मेरे साथ आओ।’ फेलुदा आगे बढ़ा और गाय की पीठ पर धीरे से थपथपाया। गाय ने आज्ञाकारी होकर एक तरफ हटकर हमें रास्ता दे दिया।
पांच मिनट बाद लालमोहन बाबू ने पूछा, 'अब हम कहाँ जा रहे हैं?'
'मुझें नहीं पता।'
लालमोहन बाबू और मैंने एक-दूसरे की ओर देखा। सड़क के लैंप की रोशनी सीधे लालमोहन बाबू के चेहरे पर पड़ रही थी। वह काफी परेशान दिख रहे थे। फेलुदा ने समझाया, 'बिना किसी उद्देश्य के घूमना अक्सर मन को शांत करने में सहायक होता है। हमें अभी शांत मन और स्पष्ट विचारों की आवश्यकता है।'
और क्या आपका मन शांत होने के संकेत दिखा रहा है?
फेलुदा जवाब देने ही वाला था कि तभी कुछ ऐसा हुआ जिससे हम सबका ध्यान भटक गया।
पिछले कुछ मिनटों में हम जिन घुमावदार गलियों से गुज़रे थे, वे हमें एक बेहद शांत गली में ले आईं। यहाँ कोई बात नहीं कर रहा था, न ही रेडियो बज रहा था। मुझे किसी बच्चे के रोने की आवाज़ भी सुनाई नहीं दे रही थी। दूर स्थित एक मंदिर से आती घंटियों की हल्की सी आवाज़ ही सुनाई दे रही थी। लेकिन जैसे ही हम गली में आगे बढ़े, एक और लयबद्ध आवाज़ हमारे कानों में पड़ी: धप, धप, धप, धप, धप...
लालमोहन बाबू फेलुदा और मेरे बीच चल रहे थे। शोर सुनकर वे धीमे हो गए और हमारी आस्तीनें पकड़ लीं। ‘बहुत ही संदिग्ध!’ उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा।

फेलुदा ने खुद को अलग करते हुए कहा, 'इसमें कुछ भी संदिग्ध नहीं है। कोई हाथ से चलने वाली चक्की का इस्तेमाल कर रहा है, बस इतना ही। जिसे मैं संदिग्ध कहूंगा वह उधर है। देखो!'
एक आदमी गली के दूसरी तरफ से अंदर आया। हमें देखकर वह रुक गया और एक स्ट्रीट लाइट की तरफ पीठ करके खड़ा हो गया। लाइट की लंबी परछाईं हमारे पैरों को लगभग छू रही थी। परछाईं अजीब तरह से हिल रही थी। क्या वह आदमी नशे में था?
फेलुदा ने अपने कैमरे के टेलीफोटो लेंस से झाँका।
‘शशि बाबू!’ उसने कहा और आगे दौड़ पड़ा। लालमोहन बाबू और मैं भी उसके पीछे- पीछे तेजी से चले।
शशि बाबू जमीन पर गिर पड़े थे। उनकी आंखें चौड़ी खुली हुई थीं और हांफते हुए वे बोलने की कोशिश कर रहे थे।
‘क्या बात है?’ फेलुदा उसकी ओर झुक गया।
'यह यह । । ।'
‘जी? क्या हुआ, शशि बाबू? आप क्या कहना चाह रहे हैं?’
'एल-एल-ली. . . झूठ ।. . झूठ ।. .'
शशि बाबू का शरीर अचानक झटका खाकर स्थिर हो गया। स्ट्रीट लाइट उनकी पीठ पर गिरी। उनकी पीठ खून से लथपथ थी।

नौ

‘मुझे हार मान लेनी चाहिए। मैं जासूस कहलाने के लायक नहीं हूँ,’ फेलुदा ने कहा। मैंने उसे इस तरह बोलते कभी नहीं सुना था। लेकिन फिर, हम पहले कभी ऐसी स्थिति में नहीं थे।
शशि बाबू की मृत्यु के बाद पूरा एक दिन बीत चुका था। दुर्गा पूजा एक दिन पहले ही शुरू हुई थी। हमने नाश्ता कर लिया था और अपने कमरे में बैठे थे। श्री तिवारी ने कुछ मिनट पहले फोन करके बताया कि शशि बाबू के बेटे निताई को गिरफ्तार कर लिया गया है। निताई के अपने पिता से कभी अच्छे संबंध नहीं थे। दरअसल, शशि बाबू ने कई बार उसे पुलिस के हवाले करने की धमकी दी थी। इसलिए निताई के पास अपने पिता की हत्या करने का मकसद हो सकता था, हालांकि उसने इससे इनकार किया था। ऐसा लगता है कि हत्या के समय वह फिल्म देख रहा था। पुलिस को उसकी जेब से एक फटा हुआ टिकट मिला। जिस चाकू से शशि बाबू पर हमला किया गया था, वह अभी तक नहीं मिला है।
विकास सिन्हा ने पुलिस को बताया कि शशि बाबू ने शाम छह बजे तक देवी की आंखों में रंग भरकर अंतिम रूप दे दिया था। फिर बुखार बढ़ने के कारण वे सीधे विकास बाबू के पास दवा लेने गए। विकास बाबू ने उन्हें होम्योपैथिक दवा की एक नई खुराक दी और शशि बाबू कुछ ही देर बाद अपने घर के लिए निकल गए। रास्ते में किसी ने उन पर चाकू से हमला कर दिया।
फेलुदा ने हम दोनों से ज़्यादा खुद से बात करते हुए कहा, ‘शायद कभी-कभी मुंह के बल गिरना अच्छा ही है। कम से कम इससे मेरा अहंकार तो रुकता है और मुझे याद दिलाता है कि मैं ज़्यादातर पुरुषों से अलग नहीं हूँ... अरे, लालमोहन बाबू, आप हमारे साथ नाटक देखने चलेंगे ना? मुझे लगता है कि उनके अभिनय का स्तर काफी ऊंचा है।’
'जी हां, बिल्कुल, बशर्ते आप ऐसा तय करें...'
“और कल हम क्या करेंगे? फिल्म देखेंगे? क्यों नहीं? चलो टार्ज़न देखने चलते हैं। और उसके बाद एक हिंदी फिल्म। मैं तुम्हें दुर्गा बारी भी ले

चलूँगा। वहाँ तुम्हें बहुत सारे बंदर मिलेंगे। उनमें से हर एक तुम्हारे फेलू मित्तर से ज़्यादा बुद्धिमान है।”
अंततः, हम बंगाली क्लब में काबुलीवाला देखने गए और पाया कि फेलुदा सही थे। यह एक बहुत ही शानदार प्रदर्शन था।
अगले दिन महाष्टमी थी, दुर्गा पूजा का तीसरा दिन। हम पूजा स्थल देखने निकले, जिनमें श्री घोषाल का घर भी शामिल था। उन्होंने हमें दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया, लेकिन फेलुदा ने मना कर दिया।
हमने होटल में दोपहर का खाना मंगवाया। फेलुदा आम तौर पर हल्का भोजन करता था, लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि आज उसने चावल और करी की एक बड़ी थाली खाई और तुरंत बाद सो गया। बाद में मुझे एहसास हुआ कि यह तो तूफान से पहले की शांति मात्र थी। लेकिन, उस पल फेलुदा को इतना उदास देखकर मेरा दिल टूट गया।
शाम को हम टार्ज़न, द एप मैन देखने गए। लेकिन फेलुदा, किसी कारणवश, फिल्म शुरू होते ही हॉल से निकल गया। उसे बस मेट्रो-गोल्डविन-मेयर का नाम और उसके बाद फिल्म का शीर्षक ही दिखाई दिया। उसने यह नहीं बताया कि वह कहाँ जा रहा है, बल्कि अपनी कुर्सी से झट से उठा और तुरंत चला गया, बस इतना कहकर: 'तुम यहीं रुको और फिल्म देखो। मुझे कुछ काम है।'
लालमोहन बाबू और मैं फिल्म के अंत तक रुके रहे, लेकिन हम दोनों में से कोई भी इसका ठीक से आनंद नहीं ले सका। फेलुदा कहाँ चला गया था? और क्यों?
हम सवा आठ बजे होटल लौटे तो देखा कि फेलुदा अपनी नोटबुक में नई प्रविष्टियाँ करने में पूरी तरह से मग्न थे।
हमारे आते ही उन्होंने कहा, 'आप अपना खाना खा लीजिए। मैंने अपने लिए एक कप कॉफी मंगवाई है।'
क्या तुम कुछ भी नहीं खाओगे?
नहीं, मुझे भूख नहीं है। इसके अलावा, मुझे तिवारी से एक अर्जेंट कॉल आने की उम्मीद है।
आज पूजा के कारण रसोइए ने विशेष भोजन बनाया था, लेकिन मुझे उसे जल्दी-जल्दी खाना पड़ा। इस बार मैंने ठान लिया था कि मैं खुद सुनूँगी कि फेलुदा ने तिवारी से क्या कहा।
खाना खत्म करने के आधे घंटे बाद उसका फोन आया। फेलुदा ने उससे ये कहा:

जी तिवारी जी? जी हाँ, बहुत बढ़िया... नहीं, नहीं, अभी कुछ मत कीजिए, आखिरी पल तक रुकिए... जी हाँ, इसीलिए तो पहले इतनी उलझन हुई थी... और क्या आपको घर के बारे में पता चल गया? जी हाँ, ठीक है... कल मिलते हैं... शुभ रात्रि। लालमोहन बाबू रात के खाने के तुरंत बाद हमारे कमरे में आ गए थे। सिनेमा से लौटते समय उन्होंने मुझसे कहा था, 'मुझे कुछ लिखना है। तुम्हारे चचेरे भाई के व्यवहार ने मुझे पूरी तरह से उलझन में डाल दिया है। मुझे ध्यान से सोचना होगा और अपनी कहानी की रूपरेखा तैयार करनी होगी।'
जब मैं और फेलुदा कमरे में लौटे, तो वह हाथ में कलम और कागज़ लिए बैठा था, थोड़ा नाराज़ लग रहा था। फेलुदा ने मानो उसे देखा ही नहीं। उसने एक चारमीनार जलाई और कमरे में इधर-उधर टहलने लगा।
लालमोहन बाबू ने लेखन पैड को एक तरफ धकेल दिया। उन्होंने कहा, “यह सरासर अन्याय है। मैं अपने लेखन पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा हूँ; न ही मुझे समझ आ रहा है कि क्या हो रहा है। आप इतने गुप्त क्यों हैं? अगर आपको कुछ पता चल रहा है तो आप हमें क्यों नहीं बता रहे? आखिर हम पूरी तरह से मूर्ख तो नहीं हैं, है ना? आप हमें एक मौका क्यों नहीं देते?”
फेलुदा ने धुएं का छल्ला उड़ाते हुए कहा, 'ठीक है, मैं तुम्हें पांच सुराग दूंगा।'
'आगे बढ़ो।'
‘अफ्रीका का राजा, शशि बाबू का “झूठ”, शार्क का मुंह, एक से दस तक, और मगनलाल की नाव।’
लालमोहन बाबू ने कुछ सेकंड तक उसे घूर कर देखा, फिर एक लंबी आह भरी और धीरे- धीरे अपना सिर हिलाया।
फेलुदा ने गंभीरता से कहा, 'मुझसे एक बात का वादा करो। कल से तुम मुझसे कोई सवाल नहीं पूछोगे।'
मैं ऐसा करने की हिम्मत नहीं करूंगा। मैंने सबक सीख लिया है, धन्यवाद। फेलुदा ने आगे कहा, ‘मुझे कभी-कभार बाहर जाना पड़ सकता है, लेकिन तुम्हारे साथ नहीं। तुम जहाँ चाहो वहाँ जाने के लिए स्वतंत्र हो, इसमें कोई जोखिम नहीं है। अगर मुझे कहीं भी कोई खतरा महसूस होगा, तो मैं तुम्हें ज़रूर बताऊँगा। और—लालमोहन बाबू, तुम तैरना जानते हो, है ना?’
‘तैरना? हाँ, मेरा मतलब है—’

‘बस इतना काफी है। बशर्ते कि अगर तुम्हें पानी में फेंक दिया जाए तो तुम तैरते रह सको। क्या तुम ऐसा कर सकते हो?’
'हां मुझे ऐसा लगता है।'
बहुत अच्छा। इसकी शायद जरूरत न हो, लेकिन एहतियात के तौर पर जानना अच्छा है।
अगले दिन दुर्गा पूजा का आखिरी दिन था। लालमोहन बाबू और मैं घूमने निकल गए। जब हम सुबह करीब 11 बजे लौटे, तो फेलुदा अपने बिस्तर पर लेटे हुए अपनी कुछ तस्वीरों के बड़े आकार के प्रिंट ध्यान से देख रहे थे। दो दिन पहले बंगाली क्लब जाते समय वे फिल्म डेवलप करवाने के लिए एक स्टूडियो में रुके थे।
श्री तिवारी ने शाम को फिर फोन किया। फेलुदा फोन उठाने नीचे गया और कुछ ही मिनटों में लौट आया। इस बार मैं उसके साथ नहीं गया। थोड़ी देर बाद, लालमोहन बाबू और मैं फिर लंबी सैर पर निकल गए। होटल में कुछ न करने से हम दोनों ऊब गए थे।
जब हम वापस आए तो फेलुदा अभी भी कमरे में ही थी।
लालमोहन बाबू ने तीसरी बार कहा, 'मुझे नहीं लगता कि आज कोई हमारा पीछा कर रहा था।' फेलुदा ने कुछ नहीं कहा।
मैंने पूछा, ‘क्या तुम बाहर गए थे?’
नहीं। श्री घोषाल का फोन आया था। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैंने हार मान ली है।
‘तुमने उसे क्या बताया?’
‘बस इतना ही कि मैंने ऐसा नहीं किया था।’
अगली सुबह मैं छह बजे उठा और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि फेलुदा पहले ही बाहर जा चुका था। उसका बिस्तर करीने से लगा हुआ था; उस पर एक छोटा कटोरा रखा था जिसे वह ऐशट्रे की तरह इस्तेमाल कर रहा था। इस कटोरे के नीचे एक कागज का टुकड़ा था जिस पर 'मैं तुम्हें फोन करूंगा' लिखा हुआ था।
इसका मतलब था कि हम होटल से बाहर नहीं जा सकते थे। मुझे इंतज़ार करने में कोई दिक्कत नहीं थी, लेकिन फेलूदा की सुरक्षा को लेकर चिंता सता रही थी। हालाँकि उसने हमसे कुछ नहीं कहा था, फिर भी हमें शक था कि शशि बाबू को मगनलाल के किसी आदमी ने मारा होगा। अगर वह एक आदमी को मार सकता है, तो फेलूदा को क्यों छोड़ेगा?

लालमोहन बाबू ने नाश्ते के दौरान कहा, 'मगनलाल ने उस दिन जो कहा था, उसके बाद तो आपके चचेरे भाई को इस मामले से हट जाना चाहिए था।'
‘उसने किया था, है ना? फिर भगवान ही जाने उसके साथ क्या हुआ होगा जब हम वो टार्ज़न फिल्म देखने गए थे।’
‘किसने सोचा था कि टार्ज़न इतनी मुसीबत खड़ी कर देगा?’
हमने दोपहर के भोजन तक इंतजार किया, लेकिन फेलुदा ने फोन नहीं किया। दोपहर के भोजन के बाद, शायद कुछ और करने को न होने के कारण, लालमोहन बाबू ने मुझे गणेश जी की चोरी के बारे में अपना सिद्धांत बताया।
‘देखो, प्यारे तपेश,’ उसने कहा, ‘मुझे नहीं लगता कि छोटा गणेश चोरी हुआ था। अंबिका बाबू ने उस शाम अफीम का सेवन करने के बाद संदूक खोला और उसे बाहर निकाल लिया। अगली सुबह, जब नशे का असर खत्म हो गया, तो वह इसके बारे में सब कुछ भूल गया!’
‘ओह? तो फिर, अब यह कहाँ है?’
‘क्या आपने उसकी चप्पलों का आकार देखा? मैंने देखा। उसकी चप्पलें उसके पैरों से बहुत बड़ी थीं। अगर कोई बूढ़ा आदमी अपने कमरे में चप्पलें पहने बैठा रहे, तो कौन उसके पैरों के अंदर देखेगा?’
मुझे थोड़ा शक हुआ। मैंने पूछा, 'क्या आपकी नई कहानी में इस तरह का कोई छोटा सा विवरण होगा?'
लालमोहन बाबू मुस्कुराए, 'हां, आपने सही अनुमान लगाया। लेकिन मेरी कहानी में, यह कोई छोटी मूर्ति नहीं, बल्कि एक हीरा है। दो हजार कैरेट का।'
‘क्या! दो हज़ार? दुनिया का सबसे बड़ा ज्ञात हीरा 'स्टार ऑफ़ अफ्रीका' कहलाता है। क्या आप जानते हैं कि उसका वजन कितना है?’
'कितना?'
‘पांच सौ कैरेट। और कोह-ए-नूर तो सिर्फ एक सौ दस कैरेट का है।’
लालमोहन बाबू ने गंभीरता से सिर हिलाया। उन्होंने कहा, 'मेरे पाठक दो हजार से कम किसी भी चीज से प्रभावित नहीं होंगे।'
साढ़े चार बजे एक वेटर आकर बोला कि मुझे फोन आया है। मैं जितनी तेज़ी से हो सकता था, नीचे भागा और लगभग निरंजन बाबू के हाथ से रिसीवर छीन ही लिया। ‘क्या तुम फेलूदा हो?’
‘जी हाँ। ध्यान से सुनो,’ फेलुदा की आवाज़ गंभीर थी। ‘दशश्वमेध घाट के एक तरफ मुंशी घाट है। उसके बगल में राजा घाट है। क्या तुम सुन रहे हो?’

'हां हां।'
'मुंशी और राजा घाट के बीच एक शांत जगह है, जहां सीढ़ियों का एक सेट समाप्त होता है और दूसरा शुरू होता है।'
'हां, मेरे पास वह है।'
दीवार पर हाथ से चित्रित एक बड़ा पोस्टर लगा है, और ठीक उसके नीचे एक काफी बड़ा शेड है।
'ठीक है।'
‘तुम दोनों 5:30 बजे तक वहाँ पहुँच जाना और शेड के पास मेरा इंतज़ार करना। मैं तुमसे 6 बजे मिलूँगा।’
'ठीक है।'
मैं भेस बदल लूंगा।
मेरा दिल थम सा गया। मैं कुछ बोल नहीं सका। अगर फेलुदा भेस बदलकर आया था, तो इसका मतलब यही था कि नाटक अपने चरम पर पहुँच रहा था।
'क्या आप मौजूद हैं?'
'हां हां।'
मैं छह बजे तक वहाँ पहुँचने की कोशिश करूँगा। मेरा इंतज़ार करना। समझे? 'हां। लेकिन क्या आप ठीक हैं?'
'अलविदा।'
एक क्लिक के साथ ही लाइन कट गई। फेलुदा कहाँ था?

दस

हमें पता था कि विजया दशमी होने के कारण दशाश्वमेध में काफी भीड़ होगी। इसलिए हमने अभय चक्रवर्ती के घर के पास से होकर केदार घाट जाने का दूसरा रास्ता चुना। राजा घाट केदार घाट से ज्यादा दूर नहीं था।
जब हम फेलुदा के बुलावे का इंतज़ार कर रहे थे, लालमोहन बाबू एक मिनट के लिए बाहर गए और कुछ आयुर्वेदिक गोलियां खरीद लाए। उन्होंने बताया, 'अपनी घबराहट शांत करने के लिए।' अब मुझे एहसास हुआ कि गोलियों का असर हो चुका था। जिस पहली गली में हम मुड़े, वहाँ एक विशाल बैल तिरछा खड़ा था, जिसने हमारा रास्ता पूरी तरह से रोक दिया था। लालमोहन बाबू घबराए बिना, साहसपूर्वक उसके पास गए और बोले, 'रास्ते से हट जाओ!' बैल एक तरफ हट गया। लालमोहन बाबू आगे बढ़ गए। मैं जानबूझकर वहीं रुका रहा, बस यह देखने के लिए कि वह आगे क्या करेंगे। मुझे देखकर मज़ा आया, जब वह मुड़े, मुझे इशारा किया और बोले, 'चलो, तपेश। डरो मत।'
अभय चक्रवर्ती के घर के अंदर और बाहर जमा लोगों की संख्या सामान्य से कहीं अधिक लग रही थी। तभी मुझे याद आया कि आज ही के दिन मछली बाबा को वाराणसी छोड़ना था। इसका मतलब था कि दुर्गा विसर्जन के अलावा एक और बड़ा आयोजन होने वाला था।
मैंने अपने होटल के एक आदमी को बाहर खड़े देखा। मैंने उससे पूछा, ‘क्या आपको पता है कि मछली बाबा किस घाट से जाएंगे? क्या वह केदार घाट होगा?’ नहीं, मुझे लगता है कि यह दशाश्वमेध होगा।
मैंने लालमोहन बाबू से कहा, 'हमें इस घटना को दूर से ही देखना होगा।' ‘अच्छा हुआ,’ उसने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया। ‘कम से कम भीड़ में कुचले तो नहीं जाएंगे!’
केदार से राजा घाट पहुँचने में हमें पाँच मिनट लगे। एक तरफ़ कई ऊँची इमारतों ने सूरज की रोशनी रोक रखी थी। बारिश के बाद नदी का जलस्तर काफ़ी बढ़ गया था। इमारतों की लंबी-लंबी छायाएँ नदी के किनारे तक पहुँच रही थीं। कुछ ही मिनटों में सूरज पूरी तरह डूब जाएगा।

घाट के किनारे नावों की एक कतार खड़ी थी। दशाश्वमेध से लगातार शोरगुल आ रहा था। इसमें ढोल की आवाज़ और पटाखों की आवाज़ शामिल थी। दुर्गा प्रतिमा का विसर्जन शुरू हो चुका था।
हम राजा घाट पार कर चुके थे और मुंशी की ओर चल रहे थे। एक मिनट बाद ही मेरी नज़र दीवार पर लगे हाथ से बने पोस्टर पर पड़ी। फेलुदा ने जो जगह चुनी थी, वह सचमुच बहुत शांत थी। इसके अलावा, हम दशाश्वमेध नक्षत्र को काफी स्पष्ट रूप से देख पा रहे थे, हालांकि हम उसके बहुत करीब नहीं थे।
‘दुर्गा मां की जय!’ भीड़ ने जोर से पुकारा। दुर्गा की एक प्रतिमा को नाव पर रखकर पानी में उतारा गया। सूरज डूब चुका था। लेकिन दशाश्वमेध में भीड़ और भी बढ़ गई थी। लालमोहन बाबू ने अपनी घड़ी देखी। ‘छह बजने में बीस मिनट बाकी हैं,’ उन्होंने कहा। ‘काश तुम्हारा चचेरा भाई अपने टेलीफोकस कैमरे के साथ यहाँ होता—’ वे अपनी बात पूरी नहीं कर पाए। भीड़ से एक और जोरदार आवाज उठी।
'गुरुजी की जय! मछली बाबा की जय!'
दशाश्वमेध के एक छोर पर, जहाँ हम खड़े थे, उससे लगभग पच्चीस गज की दूरी पर, हमारे सामने एक चबूतरा था। उस पर कुछ लोग खड़े थे। अब वे अचानक थोड़े बेचैन हो गए। हर कोई अपनी गर्दन उठाकर घाट की सीढ़ियों को घूर रहा था। इसका कारण जल्द ही स्पष्ट हो गया।
एक बड़ा समूह सीढ़ियों से नीचे उतरकर चबूतरे की ओर बढ़ रहा था। उनका नेता कोई और नहीं बल्कि मछली बाबा थे। वे अब भी चमकीले लाल वस्त्र पहने हुए थे, सिवाय गले के चारों ओर एक पीले रंग के पैच के। स्पष्ट था कि उनके अनुयायियों ने उन पर मालाओं की बौछार कर दी थी।
अधिकांश लोग चबूतरे से नीचे उतर गए। केवल कुछ ही लोग बाबा को ऊपर चढ़ने में मदद करने के लिए रुके रहे। उन्होंने अपनी बाहें ऊपर उठाईं और भीड़ की ओर मुँह किया। हम सुन नहीं पाए कि उन्होंने क्या कहा। फिर वे मुड़े और बाहें ऊपर उठाए हुए चबूतरे के किनारे की ओर चलने लगे। वे एक क्षण के लिए नदी की ओर मुख करके स्थिर खड़े रहे। उनके भक्तों ने 'मछली बाबा की जय!' का नारा लगाया। बाबा पानी में कूद गए।
भीड़ से एक अजीब सी आवाज उठी। लालमोहन बाबू ने इसे 'सामूहिक विलाप' कहा।
मछली बाबा कुछ मिनटों तक तैरते हुए दिखाई दिए। फिर वे गायब हो गए।

‘वह बिना कहीं रुके, बिना किसी की नज़र में आए, सीधे पटना तक तैरकर जाएगा... है ना रोमांचकारी?’ लालमोहन बाबू ने कहा। मैंने जवाब देने के लिए अपना सिर घुमाया, लेकिन जो देखा उसे देखकर मैं स्तब्ध रह गया। जब हम दोनों दशाश्वमेध घाट पर हो रही घटनाओं को देख रहे थे, तभी ढलते सूरज की रोशनी में एक आकृति चुपके से हमारे पास आ गई और हमारे बगल में खड़ी हो गई। उसका चेहरा घनी दाढ़ी और मूंछों से ढका हुआ था। उसने पगड़ी, लंबी कमीज, जैकेट, ढीले पजामे और अफगानी जूते पहने हुए थे।
एक अफ़ग़ान? यहाँ? तभी मुझे याद आया। काबुलीवाला!
उस आकृति ने आश्वस्त करने वाला हाथ उठाया।
फेलुदा! वो काबुलीवाले के वेश में आया था। अरे, क्या बंगाली क्लब में एक अभिनेता ने कुछ दिन पहले यही पोशाक नहीं पहनी थी?
‘अजीब बात है—’ लालमोहन बाबू ने कहना शुरू किया। फेलुदा ने अपनी उंगली होठों पर रखकर उसे रोक दिया। हम दोनों को नहीं पता था कि क्या होने वाला है, या फेलुदा को भेष बदलने की ज़रूरत क्यों पड़ी। हम इतना ज़रूर जानते थे — अच्छी तरह से—कि अगर फेलुदा हमसे चुप रहने को कहे, तो हमें चुप रहना ही पड़ेगा।
मैंने उसकी ओर सरसरी नज़र डाली। वह दशाश्वमेध घाट की ओर सीधा देख रहा था। मेरी आँखें अपने आप उसकी नज़र का पीछा करने लगीं। नदी पर दो नावें थीं। एक सीढ़ियों के पास खड़ी थी। दूसरी कुछ दूरी पर थी, धीरे-धीरे घाट की ओर बढ़ रही थी। उसकी छत पर पाँच-छह आदमी बैठे थे। उन्हें साफ़-साफ़ देखना नामुमकिन था।
‘दुर्गा माई की जय! जय दुर्गा माई की!’ भीड़ ने एक बार फिर जोर से पुकारा। दुर्गा की एक और प्रतिमा सीढ़ियों से नीचे लाई जा रही थी। गैस के दीयों की रोशनी में वह जगमगा रही थी। मैं उसे दूर से ही आसानी से पहचान गया। यह वही प्रतिमा थी जो श्री घोषाल के घर में थी। हम तीनों मूर्ति की तरह खड़े होकर विसर्जन की प्रक्रिया देख रहे थे।
मूर्ति को नाव के ऊपरी हिस्से पर ले जाया गया, जो धीरे-धीरे नदी के मध्य की ओर बढ़ने लगी, जहाँ पानी गहरा था। फिर अचानक एक झटके के साथ, मूर्ति हवा में बहुत ऊपर उठी, एक तरफ झुकी और नाव के पीछे गायब हो गई। कुछ ही क्षण बाद एक ज़ोरदार छपछपाहट की आवाज़ सुनाई दी।

शशि बाबू ने जिस लगन से यह रचना की थी, वह अब कई फीट पानी में डूब चुकी थी।
शायद सारा रंग बह गया था।
मछली बाबा के गले में पहनी हुई कुछ मालाएं हवा में तैरती हुई दिखाई दीं।
दूसरी नाव, जो कुछ दूरी पर थी, अब तक दशाश्वमेध पार कर चुकी थी और हमारी ओर आ रही थी। अब मैं देख सकता था कि यह किसकी नाव थी। मगनलाल उसकी छत पर बैठा था। उसके साथ चार और आदमी बैठे थे।
फेलुदा का दाहिना हाथ उसकी कमर पर था। उसका बायां हाथ एक मोटी छड़ी पर लिपटा हुआ था। मैं इसे अंधेरे में भी देख सकता था।
कुछ दिन पहले उस गली में मैंने जो तेज़, धड़धड़ाहट की आवाज़ सुनी थी, वह फिर से शुरू हो गई। लेकिन इस बार यह किसी चक्की की आवाज़ नहीं थी, बल्कि मेरे अपने दिल की आवाज़ थी।
मेरा गला सूखने लगा। मैं फेलुदा के बाएं हाथ से अपनी नज़रें नहीं हटा पा रहा था। मुझे पता था कि उसके बाएं हाथ की छोटी उंगली का नाखून लंबा था।
काबुलीवाले के सारे नाखून छोटे-छोटे कटे हुए थे।
फेलुदा की बाईं कलाई पर एक तिल था।
इस व्यक्ति की कलाई पर तिल का कोई निशान नहीं था।
यह आदमी निश्चित रूप से फेलुदा नहीं था। यह कौन था? यह यहाँ क्या कर रहा था?
क्या लालमोहन बाबू को पता चल गया था कि यह आदमी धोखेबाज है? क्या मुझे उन्हें बताना चाहिए?
नाव उस चबूतरे के करीब पहुँच रही थी जहाँ से मछली बाबा ने प्रस्थान किया था। फेलुदा—नहीं, उस अजनबी ने—हमें शेड में जाने का इशारा किया। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, लालमोहन बाबू अंदर आ गए और मुझे भी अपने साथ खींच लिया। नाव अभी भी दिखाई दे रही थी, हालाँकि उसमें से कोई हमें नहीं देख सकता था।
नाव लगभग रुक ही गई थी।
प्लेटफार्म के पीछे पानी में क्या हलचल हो रही थी? पानी से एक सिर ऊपर उठा।
लालमोहन बाबू ने मेरी आस्तीन पकड़ ली।
नाव में सवार लोगों में से एक चुपचाप समूह से अलग होकर पानी में कूद गया।
नहीं, वह एक आदमी नहीं था। वह एक लड़का था।
सूरज! यह रुकू का दोस्त सूरज था। वह तैरकर प्लेटफार्म की ओर आ रहा था।

सिर फिर से ऊपर उठा; लेकिन इस बार मैं उसके कंधों तक देख पा रहा था। हे भगवान! क्या मैं सपना देख रहा था? ये तो मछली बाबा थे! वे फिर से ऊपर उठ रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने अपने हाथों में कुछ पकड़ रखा हो। क्या था वो? कोई बड़ी गेंद?
सूरज तेजी से तैर रहा था। बहुत जल्द वह बाबा के पास पहुँच जाएगा।
नाव पर मौजूद सभी लोग इन दोनों आकृतियों को देख रहे थे।
इस समय दो ऐसी घटनाएँ घटीं जिनसे मैं दंग रह गया। मछली बाबा पानी से उठे और अपने हाथ में पकड़ी हुई अजीब सी वस्तु को हमारे घाट की सीढ़ियों पर फेंक दिया। पलक झपकते ही काबुलीवाला के वेश में एक आदमी बाहर भागा, एक हाथ से उसे उठाया और दूसरे हाथ से अपनी जेब से रिवाल्वर निकालकर नाव की ओर निशाना साध दिया।
मगनलाल उछलकर खड़ा हो गया। मैंने देखा कि उसके हाथ में भी बंदूक थी। उसके साथी भी शायद हथियारबंद थे। अचानक हमारे चारों ओर हलचल मच गई। कई पुलिसकर्मी उस दीवार को फांदकर अंदर आए जिस पर पोस्टर लगा था, और हमारी झोपड़ी के पास आकर खड़े हो गए। हर एक के पास राइफल थी।
एक सेकंड बाद शोर शुरू हुआ। यह कहना मुश्किल था कि पहले गोली किसने चलाई, लेकिन कुछ क्षणों के लिए कानों को चीर देने वाली गोलियों की आवाज़ के अलावा कुछ नहीं था। एक गोली आई और हमारी झोपड़ी की दीवार से टकराई, जिससे उसका एक छोटा सा हिस्सा ढह गया। लालमोहन बाबू को छींक आ गई।
नाव से आई एक चीख सुनकर मैंने दोबारा उसकी तरफ देखा। मगनलाल के हाथ से बंदूक गिर गई थी। वह अब नाव के दूसरे छोर की ओर दौड़ रहा था, अपने कद-काठी के हिसाब से वह बहुत तेज़ी से भाग रहा था। फिर उसने ज़ोर से चिल्लाया, अपने हाथ सिर के ऊपर उठाए और पानी में कूद गया, जिससे पानी की छींटे हवा में बहुत ऊपर तक उछल गईं।
लेकिन इसका कोई फायदा नहीं हुआ। दो नावें पहले से ही उसके पास मौजूद थीं, जिनमें पुलिसकर्मी भरे हुए थे।
और मछली बाबा क्या कर रहे थे?
अरे वाह! वो सूरज को गोद में लिए पानी से बाहर आ रहा था। सीढ़ियों पर पहुँचते ही उसने कहा, 'धन्यवाद तिवारी जी।'
काबुलीवाला मुस्कुराया और उसे पानी से बाहर निकालने के लिए अपना हाथ बढ़ाया।

‘धन्यवाद, श्री मिटर,’ उन्होंने उत्तर दिया।
लालमोहन बाबू और मैं जल्दी से बैठ गए। अगर हम नहीं बैठते तो शायद बेहोश हो जाते।
सूरज को एक कांस्टेबल के हवाले कर दिया गया। अब चूंकि फेलुदा इतना करीब खड़ा था, मैं देख सकता था कि उसका मेकअप कितना अच्छा था, हालांकि कुछ हिस्सा धुल गया था। उसकी असली त्वचा इन दरारों से झलक रही थी।
उन्होंने लापरवाही से कहा, 'मुझे उम्मीद है कि ऐसा नहीं लग रहा होगा कि मुझे कोई त्वचा रोग हो गया है।'
‘अद्भुत!’ लालमोहन बाबू ने अचानक अपनी आवाज़ पाते हुए कहा। ‘अब मुझे समझ में आया कि असली मछली बाबा कभी स्नान क्यों नहीं करते थे!’
फेलुदा ने श्री तिवारी की ओर रुख किया।
'मेरा तौलिया और कपड़े आपकी जीप में हैं। क्या आप अपने किसी आदमी को मेरे लिए उन्हें लाने के लिए कह सकते हैं, कृपया?'

ग्यारह

रात के करीब दस बज रहे थे। हम श्री घोषाल के बैठक कक्ष में बैठे थे। हमारे और इंस्पेक्टर तिवारी के अलावा, कमरे में अंबिका घोषाल, उमानाथ घोषाल और उनकी पत्नी रुकू, विकास सिन्हा और कुछ मेहमान मौजूद थे। बीच-बीच में त्रिलोचन और भारद्वाज पर्दे के पीछे से झांक रहे थे।
हमने अभी-अभी मिठाई का ढेर चट किया था। आमतौर पर विसर्जन के बाद लोग उदास हो जाते हैं। लेकिन आज घोषाल परिवार में गणेश जी के आगमन की आशा से सारी उदासी दूर हो गई थी।
शायद मुझे यहां यह उल्लेख करना चाहिए कि हमें अभी तक यह नहीं पता था कि गणेश जी कहां हैं। जो जानकारी सामने आई थी वह मछली बाबा की कहानी थी। उनके भक्तों के आने से एक घंटा पहले, शाम 4 बजे, पुलिस अभय चक्रवर्ती के घर के पिछले दरवाजे से अंदर घुसी और उन्हें गिरफ्तार कर लिया। पता चला कि उनका असली नाम पुरिंदर राउत था, और वह वास्तव में वही व्यक्ति थे जो जेल से भाग निकले थे।
पुरिंदर राउत ने कलकत्ता में स्मारक के पास छोटे-मोटे जादू के शो से अपने करियर की शुरुआत की थी। कुछ समय बाद, वह गंभीर धोखाधड़ी और छल-कपट में उतर गया। इसी दौरान, वह मगनलाल मेघराज के संपर्क में आया। उसे मछली बाबा के रूप में प्रचारित करने का विचार जाहिर तौर पर मगनलाल का ही था। पुलिस ने पुरिंदर से पूरी कहानी हासिल कर ली, जिसमें मगनलाल द्वारा आज शाम घाट पर आयोजित किए जाने वाले नाटक का हर विवरण शामिल था।
फेलुदा ने अभी-अभी ये सब समझाना खत्म किया था। सबकी निगाहें उन पर टिकी थीं। सिर्फ लालमोहन बाबू ही बिना किसी वजह के बार-बार हंस रहे थे। शायद किसी ने उन्हें विजया दशमी के उपलक्ष्य में भांग पिला दी थी। मैंने सुना था कि भांग पीने से अक्सर लोग हंसने लगते हैं।
फेलुदा पानी पीने के लिए रुका था। अब उसने गिलास को कश्मीरी मेज पर सावधानी से रखा और आगे बोला, 'मगनलाल अपने निजी कारणों से मछली बाबा की तथाकथित अलौकिक शक्तियों की कहानी फैलाना चाहता था। उसके जैसे व्यक्ति के

लिए अभय चक्रवर्ती और लोकेनाथ के जीवन के बारे में कुछ जानकारी जुटाना मुश्किल नहीं था। बाकी सब आसान था, आंशिक रूप से अभय बाबू के भोलेपन और काशी के लोगों की आस्था के कारण।'
फेलुदा रुक गया। लालमोहन बाबू ने अपना सिर पीछे की ओर झुकाया और एक बार फिर हंसने के लिए मुंह खोला। मुझे उसे चुप कराने के लिए कोहनी से जोर से धक्का देना पड़ा।
फेलुदा ने कहा, 'मैंने हाल ही में मगनलाल से बात की थी। उन्होंने मुझे बताया कि उनके पास गणेश जी की मूर्ति है और उमानाथ बाबू ने उसे उन्हें बेच दिया था।'
‘क्या!’ उमानाथ घोषाल गुस्से से उछल पड़े। ‘क्या तुमने उसकी बात मान ली?’ ‘शुरू में तो मुझे यह मामला बस एक नए पहलू के रूप में नज़र आया। मैं मानता हूँ कि मैंने इस विचार को तुरंत खारिज नहीं किया। लेकिन जब मगनलाल ने मुझे जाँच रोकने के लिए पैसे की पेशकश की, तो मुझे संदेह होने लगा। उन्होंने मुझे कारण तो बताया, पर मुझे पूरी तरह विश्वास नहीं हुआ। अगर उनकी बात सच होती, तो श्री घोषाल के लिए सभी जाँचें रोक देना ज़्यादा समझदारी भरा कदम होता। आख़िरकार, अगर सच्चाई सामने आ जाती, तो वे बहुत शर्मनाक स्थिति में होते। लेकिन गणेश को खोजने के लिए तो उन्होंने ही मुझे कहा था। यह बात समझ से परे थी!’
‘बकवास!’ लालमोहन बाबू बेकाबू होकर हंसते हुए बोला। ‘बिल्कुल भी समझ में नहीं आता! हा हा हा!’
फेलुदा ने उसकी बात अनसुनी कर दी। उसने आगे कहा, ‘तभी मुझे शक होने लगा कि गणेश जी आपके घर से नहीं गए हैं, और मगनलाल को अब भी उन्हें पाने की उम्मीद है। लेकिन अगर वो संदूक में नहीं थे, तो कहाँ थे? और इस घर में मगनलाल का किससे संपर्क था? यकीनन वो गणेश जी को तभी पा सकते थे जब यहाँ कोई उनकी मदद करने वाला हो? जब मैं इन सब बातों पर सोच-विचार कर रहा था, तब मुझे पता चला कि विकास बाबू ने सबूत का एक टुकड़ा छिपा रखा था। जब मैंने उससे गहराई से पूछताछ की, तो उसने कबूल किया कि उसने मगनलाल और उमानाथ बाबू के बीच की बातचीत सुन ली थी। गणेश जी की सुरक्षा को लेकर चिंतित होकर, उसने उस दिन संदूक खोला था जिस दिन उमानाथ बाबू अपनी पत्नी और बेटे के साथ बाहर गए थे। गणेश जी गायब थे।’

‘लापता? आपका मतलब है कि वह पहले ही चोरी हो चुका था?’ श्री घोषाल ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।
‘नहीं, चोरी नहीं हुई।’ फेलुदा खड़ा हो गया। ‘यह चोरी नहीं हुई थी। एक बहुत ही बुद्धिमान व्यक्ति ने इसे छिपा दिया था, ताकि यह मगनलाल की पहुँच से दूर रहे।’
‘कैप्टन स्पार्क!’ रुकू ने कहा।
सबकी निगाहें उस पर टिक गईं। वह एक कोने में खड़ा था और पर्दे को पकड़े हुए था।
'हां, आप सही कह रहे हैं। वह कैप्टन स्पार्क उर्फ रुक्मिणी कुमार थी। मुझे बताइए, कैप्टन स्पार्क, उस दिन जब आपके पिता उस मोटे आदमी से बात कर रहे थे

— '

‘डाकू गंडेरिया! कैप्टन स्पार्क उसे हर बार बेवकूफ बना देता है!’
ठीक है। लेकिन क्या आपने बगल वाले कमरे से उनकी बातचीत सुनी?
'हां, बिल्कुल मैंने किया। और इसीलिए मैंने गणेश जी को तुरंत बाहर निकाला और छिपा दिया। वरना डाकू गंडेरिया उसे ढूंढ ही लेता, है ना?'
‘हाँ, तुमने सही कहा,’ फेलुदा ने दूसरों की ओर मुड़कर कहा। ‘मैंने रुकू से पहले पूछा था कि क्या उसे पता है कि गणेश कहाँ हैं। उसने मुझे बताया कि वे अफ्रीका के राजा के पास हैं। तब मुझे उसका मतलब समझ नहीं आया था। टार्ज़न फिल्म देखने जाने के बाद मुझे यह बात समझ में आई।’
‘क्या! टार्ज़न? टार्ज़न ही क्यों?’ कई आवाज़ें एक साथ बोलीं। फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया। वह फिर से रुकू की ओर मुड़ा। ‘कैप्टन स्पार्क, क्या आप मुझे बता सकते हैं कि वह फिल्म कैसे शुरू होती है?’
'जी हां, बिल्कुल। इस पर लिखा है, "मेट्रो-गोल्डविन-मेयर प्रस्तुत करता है", और फिर शेर दहाड़ते हैं।'
‘धन्यवाद, श्री तिवारी!’
इंस्पेक्टर तिवारी झुके और अखबार में लिपटी एक वस्तु निकाली। फिर उन्होंने अखबार हटाया, और कई लोगों की निगाहें शेर के विकृत और क्षतिग्रस्त सिर पर पड़ीं। कुछ घंटे पहले ही उस पर दुर्गा की मूर्ति विराजमान थी।
‘यह,’ फेलुदा ने शेर का सिर पकड़े हुए कहा, ‘अफ्रीका का राजा है, और वह जानवर जिस पर दुर्गा सवार होती हैं। गणेश जी को इस शेर के खुले हुए मुंह के अंदर

छिपाया गया था। कैप्टन स्पार्क का मानना था कि विसर्जन के बाद, यह तैरता हुआ समुद्र तक जाएगा और एक शार्क उसे निगल जाएगी। फिर कैप्टन स्पार्क खुद भाले से शार्क को मारकर छोटे गणेश जी को बचा लेंगे। है ना, कैप्टन स्पार्क?’
‘हां, बिल्कुल,’ रुकू ने जवाब दिया।
लेकिन मछली बाबा की योजना कुछ और ही थी। उन्होंने कुछ देर तैरने का फैसला किया था, ताकि लोगों को पता चल जाए कि वे सचमुच पानी में हैं। फिर वे पानी के नीचे तैरकर चुपके से दशाश्वमेध लौटेंगे और मूर्ति के विसर्जन तक एक नाव के पीछे छिप जाएंगे। शेर को नदी में फेंकने के बाद, उसका सिर अलग करने में उन्हें कुछ ही मिनट लगेंगे। फिर उन्हें मुंशी और राजा घाट के बीच एक सुनसान जगह पर जाने का निर्देश मिला था, जहाँ मगनलाल अपनी नाव में आकर लूट का माल इकट्ठा कर लेंगे।
‘लेकिन,’ श्री घोषाल ने एक बार फिर भौंहें चढ़ाते हुए कहा, ‘बाबा के प्रस्थान की तिथि उनके भक्तों द्वारा तय की गई थी। उन्हें कैसे यकीन हो सकता था कि वे ठीक उसी दिन प्रस्थान कर पाएंगे? इसके अलावा, उन्हें या मगनलाल को कैसे पता चल सकता था कि गणेश सिंह के मुंह के अंदर थे?’
‘बहुत आसान है। विजया दशमी से सात दिन पहले, उन्होंने अपने अनुयायियों से एक से दस के बीच एक संख्या चुनने को कहा। उन्हें पता था कि ज्यादातर लोग सात ही चुनेंगे। इस तरह उन्हें अपने प्रस्थान की तारीख मिल गई। जहाँ तक गणेश जी की बात है, रुकू ने शायद बहुत कम लोगों को बताया होगा कि उन्होंने उसे कहाँ छिपाया है, लेकिन उन्होंने अपने मित्र सूरज को इसका जिक्र जरूर किया था। है ना रुकू?’
रुकू ने चुपचाप सिर हिलाया। वह असमंजस में दिख रहा था।
फेलुदा ने आह भरी। ‘मुझे डर है कि शैतान सिंह अपने नाम के अनुरूप ही निकला। सूरज, आप जानते हैं, मगनलाल का बेटा है। उसका पूरा नाम सूरज मेघराज है। मगनलाल और उसके आदमी उसी घर में रहते हैं जहाँ हम गए थे। उसका परिवार आपके घर के पास वाले उस लाल घर में रहता है। सूरज ने ही अपने पिता को बताया था कि गणेश कहाँ छिपा है।’
‘गद्दार!’ रुकू चिल्लाई।
अंबिका बाबू ने पहली बार बात की। 'आपको शेर का सिर मिल गया। गणेश जी कहाँ हैं?'

फेलुदा ने शेर का सिर एक बार फिर उठाया और अपना हाथ उसके मुंह में डाला। जब उसने उसे बाहर निकाला, तो वह खाली था, सिवाय एक चिपचिपे सफेद पदार्थ के जो उसकी उंगली के सिरे पर लगा हुआ था।
फेलुदा ने कहा, 'कैप्टन स्पार्क ने गणेश को बाहर गिरने से रोकने का एक बेहद सरल तरीका खोज निकाला।'
‘चिकलेट!’ रुकू ने कहा।
'हां, वह च्युइंग गम का इस्तेमाल करता था। जैसा कि आप देख सकते हैं, अभी भी गम के निशान मौजूद हैं। लेकिन गणेश जी अब यहां नहीं हैं।'
सबने गहरी साँस ली और निराशा की एक गहरी आह भरी। श्री घोषाल ने अपना माथा पीट लिया। 'आप क्या कह रहे हैं, श्री मित्तर? इन सभी खुलासों के बाद, आप वहाँ खड़े होकर हमें यह कैसे कह सकते हैं कि गणेश जी वहाँ नहीं हैं?' फेलुदा ने शेर का सिर वापस मेज पर रख दिया।
‘नहीं, उमानाथ बाबू,’ उन्होंने शांत स्वर में कहा, ‘मैंने आपको यहाँ सिर्फ आपकी सारी उम्मीदों पर पानी फेरने के लिए नहीं बुलाया है। गणेश जी गायब नहीं हुए हैं। लेकिन इससे पहले कि मैं आपको बताऊँ कि वे कहाँ हैं, मैं आपको एक दुखद घटना याद दिलाना चाहता हूँ—शशि बाबू की मृत्यु।’
‘लेकिन क्या उनकी हत्या उनके बेटे ने नहीं की थी?’ श्री घोषाल ने बीच में ही टोकते हुए कहा। ‘क्या उनके बेटे ने गणेश जी को चुराया था?’
‘श्रीमान घोषाल, कृपया मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए। मैं अब जो बताने जा रहा हूँ, उसे अभी साबित करना बाकी है। लेकिन मुझे पूरा भरोसा है कि मुझे पर्याप्त सबूत मिल जाएंगे।’
कमरे में पूरी तरह सन्नाटा छा गया था। लालमोहन बाबू ने जोर से हंसना बंद कर दिया था, हालांकि उनके होठों पर हल्की सी मुस्कान अभी भी बाकी थी।
फेलुदा ने आगे कहा, 'शशि बाबू ही वह व्यक्ति थे जिन्होंने संभवतः शेर के मुंह के अंदर गणेश जी को देखा होगा, खासकर जब वे पूजा शुरू होने से एक दिन पहले शेर का चेहरा रंग रहे थे। उसी दिन उनकी हत्या कर दी गई।'
‘अगर आपको याद हो तो उस शाम आप घर पर नहीं थे। त्रिलोचन ने मुझे बताया था कि आप सब विश्वनाथ मंदिर गए थे।’ श्री घोषाल ने सिर हिलाया।
फेलुदा ने कहा, ‘हमें पुलिस से पता चला कि शशि बाबू को काम खत्म करते-करते तबीयत खराब लगने लगी थी। इसलिए उन्होंने विकास बाबू से कुछ दवा ली और

तुरंत चले गए। त्रिलोचन ने मुझे बताया कि कुछ मिनट बाद विकास बाबू भी बाहर चले गए। क्या मैं उनसे पूछ सकता हूँ कि उन्होंने ऐसा क्यों किया?’
विकास बाबू थोड़े नाराज़ दिखे। 'मुझे नहीं लगता कि इसका इससे कोई लेना- देना है। खैर, चूंकि आपने पूछा है, तो जवाब यह है कि मैं बस ताजी हवा लेने के लिए बाहर निकला था। मैं हरिश्चंद्र घाट तक पैदल गया, जहां मेरी मुलाकात एक परिचित से हुई - डॉ. अशोक दत्ता। अगर आप चाहें तो उनसे पूछ सकते हैं।' नहीं, मुझे पूरा यकीन है कि तुम सच कह रहे हो। घाट पर जाने का एक खास कारण था, लेकिन उस पर मैं बाद में बात करूंगा। अब मुझे रुकू से एक और सवाल पूछना है। कैप्टन स्पार्क, सूरज को तुम्हारा राज पता था। क्या तुमने अपने सहायक, लिटिल रक्षित को भी बताया था?
'उन्होंने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया,' रुकू ने कहा।
‘मुझे पता है। इसीलिए उसने संदूक खोला यह देखने के लिए कि रुकू ने जो बताया था वह सच है या नहीं। जब उसे पता चला कि यह सच है, तो उसे गणेश जी को चुराने का लालच हुआ। लेकिन हैरानी की बात यह है कि उसे खुद कुछ करना नहीं पड़ा। जिस दिन शशि बाबू ने उसे शेर के मुंह में पाया, उसी दिन वह उसके हाथ में आ गया। हाँ, उसे दवा देने की कहानी तो बिल्कुल सच है। लेकिन विकास बाबू ने पुलिस को यह नहीं बताया कि घर में कोई और नहीं था, इसलिए शशि बाबू ने गणेश जी की मूर्ति उसे सौंप दी थी। लेकिन फिर भी, पूरी संभावना थी कि शशि बाबू अगले दिन इस बारे में बात कर देंगे। इसलिए उन्हें चुप कराना ज़रूरी था। विकास बाबू उनके पीछे गया, रास्ते में श्रीधर वैरायटी स्टोर्स पर रुककर एक तेज़ चाकू खरीदा। एक बूढ़े, बीमार आदमी को पकड़ना और उसे एक अंधेरी गली में चाकू मारना मुश्किल नहीं रहा होगा। उसे यह नहीं पता था कि हम शशि बाबू को ढूंढ लेंगे और वह हमें शेर के बारे में बताने की कोशिश करेंगे।’ इसलिए उसने शांत भाव से हरिश्चंद्र घाट की ओर प्रस्थान किया और चाकू को नदी में फेंक दिया।
‘झूठ!’ विकास बाबू गुस्से से लाल होकर चिल्लाया, उसकी आँखें फटी रह गईं। ‘यह सब झूठ का पुलिंदा है! अगर मैंने गणेश जी को लिया था, तो वह अब कहाँ है? कहाँ चला गया?’
‘अगर हम एक दिन और इंतजार कर लेते, तो तुम इसे मगनलाल को बेच देते। लेकिन क्योंकि दुर्गा पूजा के पांच दिनों के दौरान तुम घर से बाहर नहीं निकल सकते थे, इसलिए तुम्हें इसे छिपाना पड़ा।’

'यह सच नहीं है!'
‘श्री तिवारी!’ फेलुदा ने हाथ बढ़ाया। इंस्पेक्टर ने उसे एक और वस्तु थमा दी।
यह विकास बाबू का ट्रांजिस्टर रेडियो था।
फेलुदा ने बैटरी रखने वाला डिब्बा खोला और उसमें एक उंगली डाली। एक पल बाद, उसकी हथेली पर ढाई इंच लंबी, हीरे जड़ी, सोने की गणेश प्रतिमा पड़ी थी।
थूका!
अंबिका घोषाल ने अपनी एक बड़ी चप्पल उतारकर विकास सिन्हा पर फेंक दी। वह चप्पल उनके गाल पर लगी।
'गद्दार! गद्दार! गद्दार!' रुकु चिल्लाया।
हम घोषाल परिवार के साथ शानदार भोजन करने के बाद होटल वापस जा रहे थे। हमारे जाने से पहले, श्री घोषाल ने एक मोटा सफेद लिफाफा फेलुदा के हाथ में थमा दिया, जो अब उसकी जेब में था।
लालमोहन बाबू ने हंसना बंद कर दिया था। यह कहना मुश्किल था कि क्या यह भांग का असर कम होने के कारण था, या फिर फेलुदा की लगातार सख्त निगाहों और मेरे तीखे धक्कों का नतीजा था।
हालांकि, जब हम एक पान की दुकान पर रुके, तो वह एक बार फिर जोर से हंस पड़ा। ‘तुम्हें क्या हुआ है?’ फेलुदा ने हैरानी से पूछा। ‘क्या तुम रांची जाना चाहते हो? या फिर यह सारा रहस्यमय मामला तुम्हें महज एक मजाक लगा?’
‘नहीं, नहीं,’ लालमोहन बाबू ने बड़ी मुश्किल से खुद को संभालते हुए जवाब दिया। ‘तुम्हें पता नहीं क्या हुआ। ये तो वाकई मज़ेदार है। रोमांच श्रृंखला की रहस्य कथा संख्या 63—जटायु की ‘खून बहता हीरा’—रुकु के कमरे की किताबों की अलमारी में ही पड़ी थी। क्या तुम्हें पता है किताब में क्या होता है? नायक एक हीरे को मगरमच्छ की मूर्ति में छिपा देता है ताकि वो खलनायक से सुरक्षित रहे। ज़रा सोचो, मेरे दोस्त, रुकु को ये विचार मेरी ही किताब से आया, और फिर भी मैं इसे देख नहीं पाया। तुम एक बार फिर हीरो बन गए!’ फेलुदा ने कुछ क्षण तक लालमोहन बाबू को घूरकर देखा। फिर उन्होंने कहा, 'नहीं, लालमोहन बाबू, यह सच नहीं है। आपने अपनी कलम से जो रहस्य रचा, उसी के कारण मैं लगभग अपने पेशे से सेवानिवृत्त होने वाला था! इसलिए आप भी उतने ही नायक हैं जितने कोई और।'
लालमोहन बाबू ने अपने मुंह में एक बड़ा सा पान ठूंस लिया।

‘□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□, □□□□ □□□□,’ □□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ ‘□□□□□□ □□□□ □□□□ □□!’

[redacted]

एक

एक दिन लालमोहन बाबू—उर्फ जटायु—मिठाइयों का एक डिब्बा लेकर आए। मुझे आश्चर्य हुआ, क्योंकि जब भी वे हमारे घर आते थे, तो अपने साथ सिर्फ एक छाता ही रखते थे। जब भी उनकी कोई नई किताब प्रकाशित होती थी, तो वे उसे पार्सल की तरह लाते थे—लेकिन ऐसा साल में दो बार ही होता था, इससे ज्यादा नहीं। उस दिन उनके हाथ में मिर्जापुर स्ट्रीट में खुली एक नई मिठाई की दुकान, कल्लोल, का डिब्बा था। यह सुनहरे रिबन से बंधा एक सफेद गत्ते का डिब्बा था, जिस पर 25 रुपये लिखे थे। डिब्बे के दो किनारों पर नीले रंग में 'कल्लोल की पांच तरह की मिठाइयाँ' लिखा था। मुझे पता था कि अंदर पाँच खाने थे, हर खाने में अलग-अलग तरह की मिठाई थी। बीच में कल्लोल की अपनी खास मिठाई थी — 'डायमंड'। यह चाशनी से भरा एक संदेश था, हीरे के आकार का और चांदी की पन्नी से ढका हुआ।
लालमोहन बाबू इतना बड़ा बक्सा क्यों ले जा रहे थे? और उनके चेहरे पर ऐसी विजयी मुस्कान क्यों थी?
लालमोहन बाबू ने बक्सा मेज पर रखते ही फेलुदा ने तुरंत बोलना शुरू किया, “मुंबई से अच्छी खबर है, है ना? क्या आज सुबह उनसे कोई खबर मिली?”
लालमोहन बाबू इन सवालों से चौंक गए, लेकिन उनके चेहरे से मुस्कान नहीं हटी। बस उनकी भौंहें और ऊपर उठ गईं। 'कैसे अंदाज़ा लगाया, हा हा?'
“नौ बजे का सायरन एक घंटा पहले बज चुका है। फिर भी आपकी घड़ी में 3:15 बज रहे हैं। इसका मतलब यही हो सकता है कि आज सुबह जब आपने इसे पहना था, तो आप इतने उत्साहित थे कि आपने इस पर ध्यान ही नहीं दिया। क्या आप इसे चाबी देना भूल गए थे? या इसकी स्प्रिंग खराब हो गई है?”
लालमोहन बाबू ने अपनी घड़ी के बारे में कुछ नहीं कहा। उन्होंने प्राचीन रोमनों की तरह अपने नीले शॉल का एक सिरा कंधे पर डाला और कहा, 'मैंने पच्चीस घड़ियाँ माँगी थीं। आज सुबह मेरे नौकर ने मुझे एक टेलीग्राम से जगाया। ये रही।'

उन्होंने अपनी जेब से एक गुलाबी टेलीग्राम निकाला और उसे पढ़कर सुनाया: “निर्माता डाकुओं के लिए दस डॉलर देने को तैयार हैं, कृपया अपनी सहमति का तार भेजें।” मैंने अपना जवाब भेजा, “दुखद रूप से दस डॉलर में डाकू बेच रहा हूँ, शुभकामनाएँ।”
‘दस हज़ार?’ यहाँ तक कि फेलुदा, जो शायद ही कभी अपना आपा खोता है, भी अचंभित रह गया। ‘तुम्हारी कहानी दस हज़ार में बिकी?’
लालमोहन बाबू ने एक मधुर, मखमली मुस्कान दी। 'मेरे पास अभी तक पैसे नहीं आए हैं। मतलब, अभी तक नहीं। मुझे पैसे तभी मिलेंगे जब मैं बॉम्बे जाऊंगा।' ‘तुम बॉम्बे जा रहे हो?’ फेलुदा के स्वर में अब भी हैरानी झलक रही थी।
'हां, और तुम दोनों भी। मेरे खर्चे पर। तुम्हारी मदद के बिना मैं वह कहानी नहीं लिख सकता था।'
उन्होंने जो कहा वह बिलकुल सच था। शायद मुझे इसे समझाना चाहिए।
जटायु का यह लंबे समय से संजोया हुआ सपना था कि उनकी किसी कहानी पर फिल्म बने। स्वाभाविक रूप से, वे हिंदी फिल्म के लिए उत्सुक थे, क्योंकि उसमें कमाई की संभावना कहीं अधिक थी। इसलिए उन्होंने एक ऐसी कहानी लिखना शुरू किया जो उन्हें हिंदी फिल्म के लिए उपयुक्त लगती थी। वे पुलक घोषाल नाम के एक व्यक्ति को जानते थे जो मुंबई फिल्म जगत में काम करते थे। वे कभी गोरपार में लालमोहन बाबू के पड़ोसी थे। कलकत्ता के टॉलीगंज में सहायक निर्देशक के रूप में काम करने के बाद, उन्होंने एक दिन अचानक मुंबई जाने का फैसला किया। अब वे स्वयं एक सफल निर्देशक थे। उनकी कई फिल्में बॉक्स ऑफिस पर पहले ही बहुत अच्छा प्रदर्शन कर चुकी थीं।
लालमोहन बाबू की कहानी तीसरे अध्याय के बाद अटक गई। जब उन्हें लगा कि वे आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं, तो वे फेलुदा से सलाह लेने आए। फेलुदा ने तुरंत अधूरी कहानी पर नज़र डाली और कहा, 'अच्छा हुआ कि तुम शुरुआत में ही अटक गए। अगर तुम आगे बढ़ते रहते और इसे पूरा करते, तो यह समय की पूरी बर्बादी होती। बंबई इसे अस्वीकार कर देता।'
लालमोहन बाबू ने अपना सिर खुजाया। ‘तो मैं ऐसा क्या लिखूँ जो स्वीकार हो जाए? पहले तो मैंने कुछ नई फिल्में देखने और फिर उन पर आधारित कहानी लिखने का सोचा था। मैं जहाँ भी गया, हर जगह लंबी कतारें थीं। एक दिन कतार में खड़े-खड़े मेरी जेब कट गई। दूसरे दिन, टिकट काउंटर तक पहुँचने में ही मुझे एक घंटे से ज़्यादा समय लग गया, और फिर उन्होंने कहा कि सारे टिकट बिक चुके

हैं, कोई टिकट नहीं है। मैंने देखा कि टिकट कालाबाज़ार में बिक रहे थे, लेकिन हर टिकट बारह रुपये का था। मैं एक खरीद सकता था, लेकिन आखिर में मैंने सोचा, अगर मैं इतने सारे पैसे खर्च कर दूँ और फिर मुझे सिरदर्द हो जाए तो क्या होगा? शायद मुझे बाहर आने पर दर्द निवारक लेनी पड़े। इसलिए मैं सीधे घर चला गया।’
‘चिंता मत करो, मैं तुम्हें एक तरीका बता देता हूँ,’ फेलुदा ने उसे आश्वस्त किया। ‘आजकल दोहरी भूमिकाएँ बहुत लोकप्रिय हैं, है ना?’
पता चला कि लालमोहन बाबू को तो यह भी नहीं पता था कि दोहरी भूमिका क्या होती है।
'कभी-कभी, एक फिल्म में दो नायक होते हैं, जो दिखने में बिल्कुल एक जैसे होते हैं।'
‘तुम्हारा मतलब जुड़वा बच्चों से है?’
हां, वे जुड़वां हो सकते हैं; या सिर्फ दो ऐसे पुरुष जो दिखने में एक जैसे हों, लेकिन रिश्तेदार न हों। वे दिखने में एक जैसे लग सकते हैं, लेकिन उनमें से एक अच्छा हो सकता है, दूसरा बुरा। या एक साहसी और बलवान हो सकता है, दूसरा विनम्र और शांत। आमतौर पर, फिल्मों में आपको यही देखने को मिलता है। आप थोड़ा अलग भी हो सकते हैं, और सिर्फ एक जुड़वां जोड़ी के बजाय दो जोड़ियां हो सकती हैं। पहला हीरो और पहला विलेन पहली जोड़ी हो सकती है; और दूसरा हीरो और दूसरा विलेन दूसरी जोड़ी हो सकती है। शुरुआत में, दर्शकों को दूसरी जोड़ी के बारे में बताने की जरूरत नहीं है। यह एक रहस्य हो सकता है। फिर...
लालमोहन बाबू ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'क्या इससे मामला बहुत ज्यादा जटिल नहीं हो जाएगा?'
फेलुदा ने सिर हिलाया। 'तीन घंटे तक चलने के लिए पर्याप्त सामग्री चाहिए। बहुत ज़्यादा हिंसा दिखाना अब चलन में नहीं है, इसके लिए नए नियम बन गए हैं। इसलिए आपको अपनी कहानी अलग तरीके से बतानी होगी। एक उलझा हुआ जाल बुनने में डेढ़ घंटा लगेगा और फिर उसे सुलझाने में भी डेढ़ घंटा।'
तो क्या मुझे बस इन दोहरी भूमिकाओं की ही जरूरत है?
नहीं, अभी और भी है। इसे लिख लो।
लालमोहन बाबू ने अपनी जेब से एक लाल नोटबुक और एक सुनहरी पेंसिल निकाली।

‘तस्करी, आपको तस्करी चाहिए,’ फेलुदा आगे बोले, ‘सोना, हीरे, गांजा, चरस—जो भी हो। फिर आपको कम से कम पाँच गाने चाहिए। उनमें से एक भक्ति गीत होना चाहिए, यह बहुत उपयोगी होगा। आपको कुछ नृत्य दृश्य भी चाहिए, और दो-तीन पीछा करने वाले दृश्य जिनमें कम से कम एक महंगी कार पहाड़ी से नीचे लुढ़कती हुई दिखाई दे। फिर आपको आग चाहिए। नायक की एक प्रेमिका होनी चाहिए, वही नायिका होगी; खलनायक की भी एक प्रेमिका होनी चाहिए, बस फर्क इतना है कि उसे वैम्प कहा जाएगा। और क्या चाहिए? एक पुलिस अधिकारी! जी हाँ, एक कर्तव्यनिष्ठ पुलिस अधिकारी; नायक के लिए फ्लैशबैक; हास्य; दृश्यों और घटनाओं में त्वरित बदलाव, ताकि आपकी कहानी उबाऊ न हो। साथ ही, अगर कहानी मुख्य पात्रों को समुद्र या पहाड़ों तक ले जाए तो अच्छा होगा क्योंकि फिल्म सितारों के लिए स्टूडियो में बहुत देर तक बंद रहना अच्छा नहीं होता... क्या आपको यह सब समझ आ गया?’
लालमोहन बाबू अभी भी तेजी से लिख रहे थे। उन्होंने एक पल भी रुके बिना सिर हिलाया।
अंत में, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात—वास्तव में, यह सबसे महत्वपूर्ण है— आपको एक सुखद अंत की आवश्यकता है। हालांकि, यदि आप दुखद परिस्थितियां उत्पन्न कर सकते हैं और सुखद अंत से पहले कुछ आंसू बहा सकते हैं, तो यह कहीं अधिक प्रभावी होगा।
उस दिन लालमोहन बाबू दर्द से कराहते हुए हाथ के साथ वापस लौटे। अगले दो महीनों में, अपनी कहानी पूरी करने के उनके संघर्ष के कारण उनकी दो उंगलियों पर छाले पड़ गए। शुक्र है कि फेलूदा को उन महीनों के दौरान कलकत्ता से बाहर नहीं जाना पड़ा। उन्हें केदार सरकार की रहस्यमय हत्या को सुलझाने में मदद के लिए बुलाया गया था, लेकिन उन्हें पूछताछ के लिए बैरकपुर से बाहर यात्रा नहीं करनी पड़ी। इस प्रकार लालमोहन बाबू सप्ताह में दो बार फेलूदा से सलाह लेने के लिए हमारे पास आ पाते थे। उनका उपन्यास, 'द बैंडिट्स ऑफ बॉम्बे', दुर्गा पूजा शुरू होने से एक सप्ताह पहले प्रकाशित हुआ था। कहानी में हिंदी फिल्म के सभी तत्व मौजूद थे, लेकिन उचित सीमा के भीतर। अगर उस कहानी पर फिल्म बनती, तो एक बात निश्चित थी। उसे देखने के बाद किसी को दर्द निवारक दवाइयों की ज़रूरत नहीं पड़ती।
किताब छपने से पहले ही लालमोहन बाबू ने पांडुलिपि की एक प्रति पुलक घोषाल को भेज दी थी। करीब दस दिन पहले श्री घोषाल ने जवाब दिया था कि उन्हें

कहानी बहुत पसंद आई और वे जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहते हैं। पटकथा वे खुद लिखेंगे और हिंदी संवाद त्रिभुवन गुप्ते लिखेंगे। गुप्ते के लिखे हर शब्द को तीखा कहा जाता था, जो सीधे पाठकों के दिल पर असर करता था। उस पत्र के जवाब में लालमोहन बाबू ने अपनी कहानी के लिए पच्चीस हजार रुपये की मांग की (फेलूदा से बिना कुछ कहे)। जो टेलीग्राम उन्होंने अभी हमें दिखाया, वह उनके पत्र का जवाब था। शायद उन्हें एहसास हो गया था कि पच्चीस हजार रुपये कुछ ज्यादा ही थे।
‘आह!’ लालमोहन बाबू ने गर्म चाय की चुस्की लेते हुए, आँखें आधी बंद करके कहा। ‘पुलक ने मुझे बताया कि उन्होंने मूल कहानी में कोई बदलाव नहीं किया है। मैंने—माफ़ कीजिए, हमने—जो विवरण लिखे थे, उनमें से अधिकांश. . .’ फेलुदा ने हाथ उठाकर उसे रोका। 'अगर तुम "हम" शब्द का इस्तेमाल न करो तो मुझे ज़्यादा खुशी होगी। वह कहानी तुमने ही लिखी है।'
'लेकिन । । ।'
‘कोई किंतु-परंतु नहीं। शेक्सपियर ने भी दूसरों से विचार लिए थे। लेकिन क्या किसी ने उन्हें कभी “हमारा हैमलेट” कहते सुना है? कभी नहीं। मैंने कुछ सामग्री सुझाई होगी, लेकिन रसोइया तो आप थे। मैं आपके जैसा खाना नहीं बना सकता। मुझमें आपकी कला की झलक ही नहीं है!’
लालमोहन बाबू कृतज्ञता से मुस्कुरा उठे। 'धन्यवाद, महोदय। वैसे, उन्होंने कहा कि कहानी में कोई बड़ा बदलाव नहीं किया गया है। बस एक छोटा सा बदलाव।' ओह? और वो क्या है?
‘ये तो सबसे मजेदार बात है। मुझे यकीन है आप इसे टेलीपैथी कहेंगे। देखिए, मैंने एक 43 मंजिला इमारत का जिक्र किया था। मेरा तस्कर, धुंडीराम धुरंधर, उसी इमारत के एक फ्लैट में रहता है। आप हमेशा मुझे छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने के लिए कहते हैं, इसलिए मैंने उस इमारत का नाम सोचा—शिवाजी कैसल। मुझे लगा कि एक महाराष्ट्रीयन हीरो का नाम सबसे उपयुक्त रहेगा, क्योंकि सारी कहानी बॉम्बे में घटित होती है। पुलक ने लिखा कि बॉम्बे में वाकई उसी नाम की एक ऊंची इमारत है। और सोचिए? फिल्म का निर्माता भी वहीं रहता है! इसे टेलीपैथी के अलावा और क्या कह सकते हैं?’
‘हम्म। कुंग-फू का क्या हुआ? क्या वे इसे रख रहे हैं या नहीं?’ फेलुदा ने पूछा।

हम तीनों 'एंटर द ड्रैगन' देखने गए थे। लालमोहन बाबू ने तुरंत तय कर लिया था कि उनकी कहानी में कुंग-फू जरूर होना चाहिए। फेलुदा के सवाल के जवाब में उन्होंने कहा, 'बेशक, है। मैंने उनसे खास तौर पर कहा था। पुलक का कहना है कि वे कुंग-फू के दृश्यों के लिए मद्रास से एक फाइट-मास्टर को बुला रहे हैं। मुझे लगता है कि उन्होंने हांगकांग में प्रशिक्षण लिया है!'
गोलीबारी कब शुरू होगी?
‘मुझे नहीं पता। मैं पुलक को फिर से लिखूंगा और तारीख पता करूंगा। फिर मैं हमारी यात्रा का इंतजाम करूंगा। जब वे हमारी—मेरा मतलब मेरी—कहानी की शूटिंग शुरू करेंगे, तब हम कलकत्ता में कैसे रह पाएंगे?’
मैंने एक ‘डायमंड’ (एक प्रकार का आलू) खाया। मैंने इसे पहले भी खाया था, लेकिन उस दिन जितना स्वादिष्ट लगा, उतना पहले कभी नहीं लगा था।

दो

लालमोहन बाबू अगले रविवार को लौट आए। इस बीच, फेलुदा ने तय कर लिया था कि वह बंबई जाने के हमारे आधे खर्च का वहन करेंगे। उन्होंने हाल ही में कुछ पैसे कमाए थे—न केवल अपने द्वारा संभाले गए मुकदमों से, बल्कि लेखन से भी। पिछले तीन महीनों में उन्होंने अंग्रेजी में लिखी दो पुस्तकों का अनुवाद किया था (दोनों उन्नीसवीं सदी के प्रसिद्ध यात्रियों द्वारा लिखित यात्रा वृत्तांत थे) और इसके लिए उन्हें अग्रिम राशि भी मिल गई थी। मैंने उन्हें पहले भी खाली समय में लिखते देखा था। लेकिन यह पहली बार था जब उन्होंने गंभीरता से लिखना शुरू किया था।
लालमोहन बाबू ने उनके प्रस्ताव को सिरे से खारिज कर दिया। उन्होंने पूछा, 'क्या तुम पागल हो?' 'लेखन के मामले में, महोदय, आप मेरे भगवान और संरक्षक हैं। यदि मैं आपके खर्चों को वहन करने को तैयार हूं, तो यह केवल कृतज्ञता के कारण है। इसे अपनी फीस समझिए!'
इतना कहते हुए उसने अपनी जेब से दो हवाई जहाज के टिकट निकाले और मेज पर रख दिए। ‘फ्लाइट मंगलवार सुबह 10:45 बजे है। हमें उससे एक घंटा पहले चेक-इन करना होगा। मैं आपसे हवाई अड्डे पर मिलूंगा।’
गोलीबारी कब शुरू होगी?
‘गुरुवार। वे चरमोत्कर्ष से शुरुआत कर रहे हैं—वह दृश्य जिसमें घोड़ा, कार और ट्रेन शामिल हैं।’
लालमोहन बाबू के पास हमारे लिए एक और खबर थी। ‘कल शाम को एक दिलचस्प घटना घटी। कलकत्ता का एक फिल्म निर्माता मेरे घर आया। उसने बताया कि उसका धरमतला में दफ्तर है। उसे मेरा पता प्रकाशकों से मिला था। उसने कहा कि वह मेरी किताब 'बैंडिट्स' पर फिल्म बनाना चाहता है! लगता है किसी बंगाली फिल्म का कोई चांस नहीं है, जब तक उसमें वही चीजें न दिखाई जाएं जो हिंदी फिल्मों में दिखाई जाती हैं। मुझे उसे बताना पड़ा कि मेरी कहानी तो पहले ही बिक चुकी है, जिससे वह बहुत निराश हुआ। वैसे, उसने खुद किताब नहीं पढ़ी थी, बल्कि अपने भतीजे से उसके बारे में सुना था। उसे यह जानकर हैरानी हुई कि

मैंने बिना बंबई जाए ही किताब लिख डाली। मैंने उसे यह नहीं बताया कि मैं 'मरे की गाइड टू इंडिया' और फेलू मित्तर के मार्गदर्शन के बिना यह नहीं कर सकता था।’
क्या वह बंगाली था?
जी हां। सान्याल। उसकी बोली में हल्का सा लहजा था, उसने बताया कि उसका पालन-पोषण जबलपुर में हुआ है। और उसने बहुत तेज़ इत्र लगाया हुआ था—हे भगवान, उससे मेरी नाक जलने ही वाली थी! मुझे पता ही नहीं था कि कोई आदमी इतना ज़्यादा इत्र लगा सकता है। खैर, जब उसे पता चला कि मैं बॉम्बे जा रही हूं, तो उसने मुझे एक पता दिया। उसने कहा कि यह उसके दोस्त का पता है। यह दोस्त बहुत मददगार बताया जाता है। मैं जब चाहूं उससे संपर्क कर सकती थी। हालांकि दिसंबर में कलकत्ता में काफी ठंड पड़ सकती है, मैंने सुना था कि मुंबई गर्म रहेगा। इसलिए हमें गर्म कपड़े पैक करने की ज़रूरत नहीं पड़ी, और हमारी ज़रूरत का सारा सामान दो छोटे सूटकेस में आ गया।
मंगलवार को जब मैं उठा तो चारों ओर घना कोहरा छाया हुआ था। सड़क के उस पार हमारे पड़ोसी का घर मुश्किल से दिखाई दे रहा था। हे भगवान! क्या हमारा विमान समय पर उड़ान भर पाएगा? हैरानी की बात यह थी कि नौ बजे तक कोहरा छट गया और सूरज चमकने लगा। वीआईपी रोड, जो हवाई अड्डे तक जाती है, आमतौर पर शहर के केंद्र से भी ज्यादा धुंध भरी रहती थी; लेकिन आज कोहरा न के बराबर था।
जब हम हवाई अड्डे पहुँचे, तब तक विमान को उड़ान भरने में पचास मिनट बाकी थे। लालमोहन बाबू पहले से ही वहाँ मौजूद थे। उन्होंने चेक-इन भी कर लिया था — मैंने उनकी जेब से बोर्डिंग कार्ड झाँकते हुए देखा। उन्होंने कहा, ‘मैं आपका इंतज़ार नहीं कर पाया, कृपया बुरा न मानें। इतनी लंबी कतार थी कि मुझे लगा कि अगर मैंने जल्दी चेक-इन नहीं किया, तो शायद मुझे खिड़की वाली सीट न मिले। मैं पंक्ति H में हूँ। कौन जाने, शायद आपको मेरे पास वाली सीटें मिल जाएँ?’
‘तुम्हारे पास ये पैकेट क्या है? क्या तुमने कोई किताब खरीदी है?’ फेलुदा जानना चाहता था।
लालमोहन बाबू की बगल में एक भूरा पैकेट दबा हुआ था। मैंने सोचा था कि यह उनकी अपनी ही कोई किताब होगी जिसे वे बंबई में किसी के लिए उपहार के रूप में ले जा रहे होंगे।

‘नहीं, नहीं, मैंने इसे नहीं खरीदा,’ उसने फेलुदा से कहा। ‘सान्याल याद है? जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया था? वह दस मिनट पहले आया और उसने मुझे यह दिया।’
‘तुम्हारे लिए एक उपहार?’
जी नहीं, महोदय। कोई मुझे बॉम्बे हवाई अड्डे पर लेने आएगा और किताब ले जाएगा। उसे मेरा नाम और हुलिया बता दिया गया है। जी हाँ, यह एक किताब है और बॉम्बे में रहने वाले सान्याल के एक रिश्तेदार के लिए है। फिर वह मुस्कुराया और बोला, "क्या आपको इसमें कोई रोमांच नज़र नहीं आ रहा?"
'यह थोड़ा मुश्किल है, लालमोहन बाबू,' फेलुदा ने जवाब दिया, 'क्योंकि भारत केमिकल की गुलबहार की खुशबू ने बाकी सब कुछ दबा दिया है!'
मुझे भी उसकी खुशबू आ रही थी। श्री सान्याल का परफ्यूम इतना तेज था कि उसकी महक पैकेट में भी आ गई थी।
‘बिल्कुल सही कहा, हा हा!’ लालमोहन बाबू ने हंसते हुए सहमति जताई। ‘मैंने सुना है कि लोग इस तरह की कई बातें आगे बढ़ा देते हैं— मेरा मतलब है, वो चीजें जो प्रतिबंधित और गैरकानूनी हैं!’
'जी हां, यह सच है। चेक-इन काउंटर के बाहर एक बड़ा सा नोटिस लगा हुआ है, जिसमें किसी अजनबी से पैकेट लेने के खतरे के बारे में चेतावनी दी गई है। लेकिन श्री सान्याल तकनीकी रूप से अजनबी नहीं हैं; और मुझे यह मानने का कोई कारण नहीं दिखता कि उनके पार्सल में किताब के अलावा कुछ और है।'
हमें विमान में अगल-बगल सीटें नहीं मिल पाईं। लालमोहन बाबू ने हमसे तीन पंक्तियाँ पीछे वाली खिड़की वाली सीट ले ली। उड़ान लगभग शांतिपूर्ण रही— सिवाय इसके कि जब पायलट, कैप्टन दत्ता, ने घोषणा करना शुरू किया कि हम नागपुर के ऊपर से उड़ रहे हैं, तो संयोगवश मैंने उसी क्षण पीछे मुड़कर देखा। लालमोहन बाबू अपनी सीट छोड़कर विमान के पिछले हिस्से की ओर जा रहे थे। एक एयर होस्टेस ने उन्हें रोका और विपरीत दिशा की ओर इशारा किया। लालमोहन बाबू वापस मुड़े, पूरे विमान में फिर से चले, कॉकपिट का दरवाजा खोला और तुरंत बाहर आ गए, बेहद शर्मिंदा दिख रहे थे। अंत में, उन्हें अपने बाईं ओर शौचालय का दरवाजा मिल गया।
अपनी सीट पर वापस जाते समय, वह मेरे पास रुका और मेरे कान में फुसफुसाया: 'मेरे बगल में बैठे व्यक्ति को ध्यान से देखो। अगर वह अपहरणकर्ता निकला तो मुझे आश्चर्य नहीं होना चाहिए।'

मैंने एक बार फिर अपना सिर घुमाया और उस आदमी को देखा। अगर लालमोहन बाबू रोमांच के लिए बेताब न होते, तो उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की होती कि उनका सहयात्री एक अपहरणकर्ता है। वह आदमी बहुत ही शांत और सौम्य दिख रहा था।
जब हम सांता क्रूज़ में उतरे, तो लालमोहन बाबू ने पहले ही भूरा लिफाफा निकाल लिया था और उसे अपने हाथ में थामे हुए थे। हम डोमेस्टिक लाउंज की ओर बढ़े और इधर-उधर देखने लगे, तभी अचानक एक आवाज़ आई, 'श्री गांगुली?' हमने दाईं ओर देखा तो गहरे लाल रंग की टेरीलीन शर्ट पहने एक आदमी एक दक्षिण भारतीय सज्जन को उत्सुकता से देख रहा था। सवाल पूछने वाला वही था। दक्षिण भारतीय आदमी थोड़ा चिढ़ गया, उसने सिर हिलाया और चला गया। लालमोहन बाबू लाल शर्ट वाले आदमी के पास गए।
उन्होंने एक ही सांस में कहा, 'मैं श्री गांगुली हूं और यह संदेश श्री सान्याल की ओर से है।'
लाल शर्ट पहने व्यक्ति ने पैकेट लिया, सिर झुकाया, 'धन्यवाद' कहा और चला गया। लालमोहन बाबू ने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया था, वे राहत महसूस कर रहे थे और उन्होंने अपने हाथ झाड़े।
हमारा सामान आधे घंटे बाद आया। जब हमने उसे लिया तब 1:20 बज रहे थे। जब तक हम शहर पहुँचे तब तक लगभग दो बज चुके थे। पुलक घोषाल ने हमें लेने के लिए एक कार भेजी थी और उसका नंबर भी बता दिया था। वह सरसों के रंग की स्टैंडर्ड कार निकली। उसका ड्राइवर स्मार्ट और हंसमुख था। वह हिंदी और अंग्रेजी बोल सकता था और उसे इस बात से कोई आपत्ति नहीं थी कि उसे कलकत्ता से आए तीन अजनबियों को लाने के लिए रखा गया है। इसके विपरीत, लालमोहन बाबू को उसने जिस तरह से सलाम किया, उससे लग रहा था कि वह अपने काम से काफी खुश था। उसी ने हमें बताया कि शहर के शालीमार होटल में हमारा कमरा बुक है। पुलक घोषाल हमसे वहाँ 5:30 बजे मिलेंगे। इस बीच, हम कार अपने पास रख सकते थे और जहाँ चाहें वहाँ जाने के लिए स्वतंत्र थे।
फेलुदा ने हमारी यात्रा से पहले बंबई के बारे में काफी कुछ पढ़ लिया था, जैसा कि उनकी आदत थी। उनके अनुसार, जब तक आप किसी जगह के बारे में पहले से कुछ जान नहीं लेते, तब तक आप उसे पूरी तरह से नहीं जान सकते। जिस प्रकार किसी व्यक्ति की पहचान न केवल उसके रूप-रंग और स्वभाव से होती है, बल्कि उसके व्यक्तिगत इतिहास से भी होती है, उसी प्रकार किसी शहर की भी होती है।

बंबई का रूप-रंग और चरित्र फेलुदा के लिए अभी भी अज्ञात था, लेकिन उन्हें इतना पता था कि हमारा होटल केम्प्स कॉर्नर के पास है।
हम हवाई अड्डे से निकल गए। जैसे ही हमारी कार हाईवे से उतरकर शहर की ओर जाने वाली सड़क पर मुड़ी, फेलुदा ने ड्राइवर से बात की। ‘सामने वाली टैक्सी दिख रही है? उसका किराया 3538 है। कृपया उसके पीछे आइए,’ उसने कहा।
‘अरे, क्या चल रहा है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
'किसी चीज़ के बारे में बस थोड़ी सी जिज्ञासा थी,' फेलुदा ने जवाब दिया। हमारी कार ने एक स्कूटर और दो एम्बेसडर कारों को ओवरटेक किया और फेलुदा द्वारा बताए गए फिएट टैक्सी के पीछे आ गई। उसकी पिछली सीट पर बैठा यात्री शीशे से दिखाई दे रहा था। वह लाल शर्ट वाला आदमी था।
मेरा दिल ज़ोर से धड़का। कुछ हुआ नहीं था, मुझे यह भी नहीं पता था कि फेलुदा उस टैक्सी का पीछा क्यों कर रहा था; फिर भी मैं थोड़ा घबरा गया, शायद इसलिए क्योंकि यह सब कुछ अप्रत्याशित था। लालमोहन बाबू ने कुछ नहीं कहा। उन्हें पता था कि फेलुदा से उसके व्यवहार का स्पष्टीकरण मांगने का कोई फायदा नहीं है। उसके इस काम के पीछे का असली कारण सही समय पर सामने आ जाएगा।
हमारा ड्राइवर टैक्सी के पीछे-पीछे चलता रहा। हम नए शहर के नज़ारों का लुत्फ़ उठाने लगे। एक चीज़ जिसने हम सबको चौंका दिया, वह थी लगभग हर सड़क पर हिंदी फिल्मों के बड़े-बड़े होर्डिंग्स और पोस्टर। मुझे याद नहीं आ रहा था कि मैंने किसी और शहर में इतनी बड़ी संख्या में ऐसा कुछ देखा हो। लालमोहन बाबू ने गर्दन उठाकर कई होर्डिंग्स पर लिखे हुए पढ़े। फिर उन्होंने कहा, 'इतने सारे नाम हैं... लेकिन कहानी के लेखक का नाम तो नामोनिशान ही नहीं! क्या ये लोग लेखकों का इस्तेमाल नहीं करते?'
‘लालमोहन बाबू,’ फेलुदा ने उनसे कहा, ‘अगर आप लेखक बनकर नाम कमाना चाहते हैं, तो बॉम्बे आपके लिए सही जगह नहीं है। यहाँ कहानियाँ लिखी नहीं जातीं, बल्कि बनाई जाती हैं। यह एक वस्तु है, एक उपभोक्ता उत्पाद है, बाकी सब की तरह। मुझे बताइए, लक्स साबुन बनाने वाले का नाम कौन जानता होगा? ज़्यादा से ज़्यादा, शायद कोई कंपनी का नाम जानता हो। आपको बस इस बात से खुश रहना चाहिए कि आपको अपनी मेहनत का फल मिल रहा है। अपना पैसा लीजिए और चुप रहिए। शोहरत की चिंता छोड़ दीजिए।’

‘मैं समझ गया…’ लालमोहन बाबू काफी चिंतित लग रहे थे। ‘आपका मतलब है कि बंगाल प्रसिद्धि दिलाएगा और बंबई धन-दौलत पैदा करेगा?’
'बिल्कुल,' फेलुदा ने कहा।
इस समय तक हम एक ऐसे इलाके से गुज़र रहे थे जिसे फेलुदा ने महालक्ष्मी बताया था। जल्द ही हम उसे पीछे छोड़ आए। अब जिस टैक्सी का हम पीछा कर रहे थे, वह दाईं ओर मुड़ गई। 'अगर आपको अपने होटल जाना है, महोदय, तो मुझे सीधे आगे जाना चाहिए,' हमारे ड्राइवर ने हमें बताया।
‘नहीं, दाईं ओर मुड़ो,’ फेलुदा ने उसे निर्देश दिया।
हम दाईं ओर मुड़े और उसी टैक्सी का पीछा करते रहे। कुछ ही मिनटों बाद, वह एक इमारत के मुख्य द्वार से अंदर चली गई। फेलुदा ने हमारे ड्राइवर को गेट के बाहर रुकने को कहा। हम तीनों बाहर निकले। लगभग उसी क्षण, लालमोहन बाबू ने हिचकी जैसी आवाज निकाली।
कारण स्पष्ट था। हम एक विशाल इमारत के सामने खड़े थे। उसकी दीवार पर, बड़े- बड़े काले अक्षरों में लिखा था: शिवाजी किला।

तीन

मैं उस चिन्ह को देखकर इतना अचंभित हो गया कि कुछ क्षणों के लिए मैं बोल ही नहीं पाया। 'यह तो सचमुच टेलीपैथी है!' लालमोहन बाबू ने कहा।
फेलुदा ने कुछ नहीं कहा। वह केवल इमारत को ही नहीं देख रहा था, बल्कि चारों ओर पैनी नज़रें गड़ाए हुए था। बाईं ओर कई समान ऊँची इमारतें थीं, जिनमें से प्रत्येक में कम से कम बीस मंजिलें थीं। दाईं ओर की इमारतें पुरानी और कम ऊँची थीं। उन इमारतों के बीच के अंतराल से समुद्र दिखाई दे रहा था।
हमारा ड्राइवर हमें हैरानी भरी निगाहों से देख रहा था। फेलुदा ने उसे रुकने को कहा और गेट से अंदर चला गया। लालमोहन बाबू और मैं बाहर खड़े रहे, थोड़ा शर्मिंदा महसूस कर रहे थे।
फेलुदा लगभग तीन मिनट में लौट आया। उसने ड्राइवर से कहा, 'अब चलो शालीमार होटल चलते हैं।'
हमने एक और यात्रा शुरू की। फेलुदा ने सिगरेट जलाई और कहा, 'बहुत संभव है कि तुम्हारा पैकेट सत्रहवीं मंजिल पर चला गया हो।'
‘हे भगवान, क्या आप जादूगर हैं? आपने सिर्फ तीन मिनट में पता लगा लिया कि वह आदमी पैकेट लेकर कहां गया?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
‘यह अंदाज़ा लगाने के लिए सत्रहवीं मंज़िल तक चढ़ने की ज़रूरत नहीं थी कि वह कहाँ गया होगा। भूतल पर लिफ्ट के ऊपर एक बोर्ड लगा हुआ था। जब तक मैं वहाँ पहुँचा, लिफ्ट ऊपर चढ़ना शुरू कर चुकी थी। बोर्ड पर जहाँ-जहाँ लिफ्ट रुकी थी, वहाँ-वहाँ नंबर चमक रहे थे। आखिरी नंबर जो दिखा, वह सत्रह था। अब समझे?’
लालमोहन बाबू ने आह भरी। 'हाँ। मुझे समझ नहीं आता कि मैं सरल स्पष्टीकरण क्यों नहीं सोच पा रहा हूँ।'
हमें होटल पहुँचने में केवल पाँच मिनट लगे। फेलूदा और मुझे पाँचवीं मंज़िल पर एक डबल रूम दिया गया। लालमोहन बाबू का कमरा—एक सिंगल रूम— हमारे कमरे के ठीक सामने था। हमारे कमरे से नीचे सड़क दिखती थी। जब भी मैं खिड़की से बाहर देखता, मुझे गाड़ियों की अंतहीन कतार दिखाई देती। खिड़की

के सामने दो ऊँची इमारतें थीं, जिनके बीच से मुझे समुद्र की झलक दिखती थी। कमरे से बाहर निकले बिना भी यह आसानी से पता चल जाता था कि मुंबई कितना जीवंत और समृद्ध शहर है।
हम सबको बहुत भूख लगी थी। इसलिए, जल्दी से नहाने के बाद, हम दूसरी मंजिल पर स्थित गुलमर्ग नाम के रेस्तरां में गए। जैसे ही हमने अपना ऑर्डर दिया, लालमोहन बाबू ने वो सवाल पूछा जो शायद उनके होंठों पर अटका हुआ था।
‘तो आप भी रोमांच की खुशबू महसूस कर सकते हैं, फेलू बाबू?’
फेलुदा ने उस सवाल का जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उसने दूसरा सवाल पूछा। 'क्या आपने ध्यान दिया कि उस आदमी ने आपसे किताब लेने के बाद क्या किया?' ‘क्या सच में? वो तो बस ऐसे ही चला गया, है ना?’
नहीं। आपने उसे जाते हुए देखा, लेकिन बारीकियों पर ध्यान नहीं दिया। वह आपसे दूर चला गया, फिर रुका और अपनी जेब से कुछ सिक्के निकाले।
‘टेलीफोन!’ मैंने हैरानी से कहा।
'शाबाश, टॉपशे। मुझे लगता है कि उसने फिर एक सार्वजनिक टेलीफोन का इस्तेमाल किया और शहर में किसी को फोन किया। मैंने उसे फिर से तब देखा जब हम अपने सामान का इंतजार कर रहे थे।'
आपने उसे कहाँ देखा?
'क्या आपको टर्मिनल भवन के ठीक बाहर स्थित पार्किंग याद है? जो हमें जहां हम खड़े थे वहां से दिखाई दे रही थी?'
‘हां, हां!’ मैंने चिल्लाकर कहा। लालमोहन बाबू ने कुछ नहीं कहा।
‘वह आदमी एक नीली एम्बेसडर कार में बैठा। उसमें एक ड्राइवर था। उसने कार स्टार्ट करने की कोशिश की, लेकिन पाँच मिनट बाद भी कुछ नहीं हुआ। वह आदमी कार से उतरा और ड्राइवर पर चिल्लाने लगा। मैं उसकी आवाज़ तो नहीं सुन सका, लेकिन उसके चेहरे के हाव-भाव और इशारों से समझ गया कि वह बहुत नाराज़ था। आखिरकार, उसने हार मान ली और कार से दूर चला गया।’
‘टैक्सी लेने के लिए!’ इस बार लालमोहन बाबू बोले।
‘बिल्कुल सही। तो इससे आपको क्या पता चलता है?’
वह आदमी जल्दी में था।
'अच्छा। अपनी आंखें और दिमाग—इन्हें खुला रखना होगा। अगर आप ऐसा करेंगे, तो आपको पता चलेगा कि कुछ तथ्यों का अनुमान लगाना बहुत आसान है। तो, देखिए,

अगर मैं उस टैक्सी का पीछा करने की कोशिश कर रहा था, तो उसके पीछे कोई कारण था।'
‘जी हां, लेकिन आपके मन में वास्तव में क्या चल रहा है?’ लालमोहन बाबू ने सीधे बैठकर और अपनी कोहनियों को मेज पर रखते हुए पूछा।
‘कुछ नहीं। कुछ खास नहीं। मुझे बस एक संदेह है... किसी बात को लेकर थोड़ा सा संदेह है।’
उसके बाद हम दूसरी बातों पर चर्चा करने लगे और उस मामले का दोबारा जिक्र नहीं किया।
लालमोहन बाबू शाम करीब पांच बजे थोड़ी देर आराम करने के बाद हमारे कमरे में आए। हमने चाय मंगाई और उसे पी ही रहे थे कि हमारे दरवाजे पर दस्तक हुई। अंदर आने वाला आदमी यकीनन पैंतीस साल से ज्यादा का नहीं था, लेकिन उसके घने, लहराते बाल पहले ही आश्चर्यजनक रूप से सफेद हो चुके थे।
‘हेलो, लालुदा! कैसी हो? सब ठीक है?’ उन्होंने पूछा। लालुदा! मुझे तो कभी यह ख्याल ही नहीं आया था कि कोई लालमोहन बाबू को ‘लालुदा’ कहकर बुला सकता है। तो ये थे पुलक घोषाल। फेलुदा ने लालमोहन बाबू को अपना पेशा न बताने की चेतावनी दी थी, इसलिए उनका परिचय केवल मित्र के रूप में कराया गया। श्री घोषाल ने फेलुदा को देखा और अचानक बड़े अफसोस से सिर हिलाया। ‘तुम लालुदा के मित्र हो, हमारे अपने ही हो—और देखो, हम यहाँ एक उपयुक्त नायक की तलाश में जूझ रहे हैं। श्री मित्तर, क्या आप हिंदी बोल सकते हैं?’
फेलुदा मुस्कुराया। 'नहीं, महोदय। मुझे हिंदी नहीं आती, और उससे भी बुरी बात यह है कि मैं अभिनय भी नहीं कर सकता। लेकिन आप अभी भी हीरो की तलाश क्यों कर रहे हैं? मुझे लगा था कि आपको अर्जुन मेहरोत्रा मिल गया है।' हां, लेकिन अर्जुन बहुत बदल गया है, वो अब पहले जैसा नहीं रहा। अब तो उसे बेहिसाब मांगें करना आ गया है। मैं इन अभिनेताओं को हीरो नहीं कहता, आप जानते हैं। ये सब अंदर से खलनायक हैं; भले ही वे पर्दे पर हीरो का रोल निभाते हों। निर्माताओं ने इन्हें पूरी तरह बिगाड़ दिया है। खैर, मैं आपको परसों शूटिंग के पहले दिन के लिए आमंत्रित करने आया हूं। शूटिंग की जगह यहां से करीब सत्तर मील दूर है। आपका ड्राइवर उस जगह को जानता है। कृपया जल्दी निकलने की कोशिश करें। श्री गोर—मेरा मतलब मेरे निर्माता—यहां नहीं हैं। वो इस फिल्म को बेचने के लिए दिल्ली, कोलकाता और मद्रास गए हुए हैं। लेकिन उन्होंने मुझे कहा है कि आपका अच्छे से ख्याल रखना।

‘यह स्थान कहाँ है?’
खंडाला और लोनावला के बीच। हम ट्रेन के अंदर शूटिंग करेंगे। अगर पर्याप्त यात्री नहीं होंगे, तो मैं आपसे डिब्बे में बैठने के लिए कहूंगा।
‘ओह, वैसे,’ लालमोहन बाबू ने कहा, ‘हमने शिवाजी का किला देख लिया है।’
उनकी बात सुनकर श्री घोषाल के चेहरे पर तुरंत शिकन आ गई। 'सचमुच? कब?'
‘हम हवाई अड्डे से आ रहे हैं। लगभग दो बजे के आसपास।’
‘मैं समझ गया। इसका मतलब है कि यह घटना दो बजे के बाद हुई।’
'क्या हुआ?'
‘एक हत्या।’
‘क्या!’ हम सब लगभग एक साथ चौंक गए। ‘हत्या’ शब्द में कुछ ऐसा भयावह है कि मुझे अनायास ही कंपकंपी आ गई।
श्री घोषाल ने हमें बताया, ‘मुझे इसके बारे में अभी आधा घंटा पहले ही पता चला। मैं उस इमारत में अक्सर जाता रहता हूँ। श्री गोर वहीं बारहवीं मंजिल पर रहते हैं। अब समझ में आया होगा कि हमें वह नाम क्यों बदलना पड़ा? लेकिन श्री गोर स्वयं बहुत अच्छे इंसान हैं। क्या आप अंदर गए थे?’
फेलुदा ने कहा, 'मैं गया तो था, लेकिन सिर्फ लिफ्ट तक। मैं उसमें चढ़ा नहीं।'
हे भगवान! हत्या उसी लिफ्ट के अंदर हुई। शव की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। मुझे लगता है कि वह किसी गुंडे जैसा दिखता है। त्यागराजन नाम का एक आदमी तीसरी मंजिल पर रहता है। करीब तीन बजे उसने लिफ्ट का बटन दबाया। लिफ्ट ऊपर से नीचे आई। त्यागराजन ने फिर उसमें चढ़ने की कोशिश की और देखा कि क्या हुआ था। उस आदमी के पेट में चाकू से वार किया गया था। भयानक घटना! 'क्या उस समय के आसपास किसी और को लिफ्ट में आते-जाते नहीं देखा गया था?' फेलुदा ने पूछा।
नहीं, लिफ्ट के पास गलियारे में कोई नहीं था। लेकिन दो ड्राइवर बाहर इंतज़ार कर रहे थे, उन्होंने पाँच-छह लोगों को इमारत के अंदर जाते देखा। उनमें से एक ने लाल कमीज़ पहनी हुई थी, दूसरे के कंधे पर बैग था और उसने भूरे रंग की...
फेलुदा ने हाथ उठाकर उसे रोका। 'वह दूसरा आदमी मैं ही था। और अधिक जानकारी की कोई आवश्यकता नहीं है।'

मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। क्या अब फेलुदा हत्या के मामले में फंसने वाला था?
श्री घोषाल ने तसल्ली देते हुए कहा, ‘खैर, आप चिंता न करें। लालुदा, आप भी। आपने अपनी कहानी में लिखा है कि शिवाजी महल में एक तस्कर रहता है, तो क्या हुआ? बंबई में ऐसा कोई अपार्टमेंट नहीं है जिसमें एक या दो तस्कर न रहते हों। उन्होंने अभी तक सिर्फ ऊपरी परत हटाई है—असली सच्चाई तक पहुँचने में उन्हें बहुत समय लगेगा। पूरा शहर तस्करों के हाथों में है।’
फेलुदा का चेहरा काफी गंभीर लग रहा था। लेकिन जैसे ही एक और आदमी हमारे पास आया, उसका चेहरा बदल गया। जब हमने दरवाजे पर एक और दस्तक सुनी, तो श्री घोषाल अपनी कुर्सी से उठे और बोले, 'यह विक्टर होगा', और दरवाजा खोला। मध्यम कद का एक आदमी अंदर आया। उसका शरीर कोड़े की तरह दुबला-पतला और लचीला था। ‘मैं आपको इनसे मिलवाता हूँ। लालुदा, ये हैं विक्टर पेरुमल, हांगकांग में प्रशिक्षित कुंग-फू विशेषज्ञ!’
श्री पेरुमल मुस्कुराए और सभी से हाथ मिलाया।
श्री घोषाल ने आगे कहा, “वह थोड़ी-बहुत अंग्रेजी बोल सकते हैं, और बेशक, वह हिंदी भी बोल सकते हैं, हालांकि वह दक्षिण भारत से आते हैं। वह सिर्फ कुंग-फू ही नहीं सिखाते, बल्कि एक कमाल के स्टंटमैन भी हैं। दरअसल, वह उस दृश्य को फिल्माने वाले हैं जिसमें नायक के भाई को घोड़े से कूदकर चलती ट्रेन में जाना है। विक्टर को उस अभिनेता की तरह मेकअप किया जाएगा जो भाई का किरदार निभा रहा है।”
विक्टर की मुस्कान में कुछ ऐसा सहज और दिल को छू लेने वाला था कि मैं तुरंत ही उससे प्रभावित हो गया। इसके अलावा, मुझे स्टंटमैनों के लिए बहुत सम्मान है। नायकों को उनके द्वारा किए गए प्रदर्शन के लिए सारी प्रशंसा मिलती है, लेकिन ये स्टंटमैन ही हैं जो हर दिन बहुत कम पैसों के लिए अपनी जान जोखिम में डालते हैं। उनकी सराहना करना तो बनता ही है।
विक्टर पेरुमल ने कहा, 'हां, मुझे कुंग-फू आता है, और मोक्का-इरी भी।' मोक्का-इरी? ये क्या था? फेलुदा ने भी कहा कि उसे नहीं पता। लालमोहन बाबू से पूछना बेकार था क्योंकि वो तो मुख्यतः वही पढ़ते हैं जो वो खुद लिखते हैं, और कुछ नहीं।
विक्टर ने समझाया। उन्होंने बताया कि मोक्का-इरी एक प्रकार की युद्ध कला है जिसमें शरीर को हाथों पर संतुलित करते हुए पैरों को हवा में उठाकर चलना

पड़ता है। जाहिर है, इसे हांगकांग में केवल छह महीने पहले ही शुरू किया गया था। इसकी उत्पत्ति जापान में हुई थी।
‘क्या आपकी फिल्म में यह मोक्का-इरी शामिल होगा?’ लालमोहन बाबू ने थोड़ी झिझक के साथ पूछा। श्री घोषाल मुस्कुराए और सिर हिलाया। ‘नहीं, नहीं,’ उन्होंने कहा, ‘कुंग-फू को संभालना काफी मुश्किल है। नवंबर की शुरुआत से ही हम ग्यारह लोगों के लिए सुबह-शाम प्रशिक्षण सत्र आयोजित कर रहे हैं। आपने सिर्फ इसके बारे में लिखा है, लेकिन हमें व्यावहारिक समस्याओं से निपटना होगा, लालुदा। लेकिन जो दृश्य आप कल देखेंगे, उसमें कोई कुंग-फू नहीं होगा। हालांकि, उसमें स्टंटमैन के कुछ नाटकीय दृश्य जरूर होंगे। हम आपकी कहानी से एक शानदार फिल्म बनाएंगे, लालुदा, आप चिंता न करें।’
विक्टर और श्री घोषाल के जाने के बाद, फेलुदा ने जाकर सभी खिड़कियाँ खोल दीं। देखते ही देखते, हमारा कमरा वाहनों की आवाज़ से भर गया, हालाँकि पाँचवीं मंज़िल पर यह आवाज़ इतनी तेज़ नहीं थी कि परेशान करने वाली हो। हममें से किसी को भी एयर कंडीशनर की आदत नहीं थी, इसलिए हमने उसे चालू नहीं किया और खिड़कियाँ बंद रखीं। शोर से कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। आख़िरकार, खुली खिड़कियों से सिर्फ़ शोर ही नहीं आ रहा था; ताज़ी हवा भी आ रही थी। फेलुदा सोफे पर लौट आया और कुछ गंभीरता से बोला, 'लालमोहन बाबू, जिस रोमांच की आप बात कर रहे थे, उसकी गंध असहनीय होती जा रही है। आपको वह पैकेट पहुंचाने के लिए राजी नहीं होना चाहिए था। अगर मैं उस समय आपके साथ होता, तो मैं आपको मना कर देता।'
लालमोहन बाबू थोड़े निराश दिखे। 'मैं क्या कर सकता था? उस आदमी ने कहा कि उसे अब भी मेरी कहानियों में दिलचस्पी है। उसने मुझसे कहा कि अगली कहानी उसी के लिए रखूँ। उसके बाद मैं कैसे मना कर सकता था?'
फेलुदा ने कहा, 'आमतौर पर, अगर किसी यात्री के पास कोई पैकेट होता है, तो हवाई अड्डे पर सुरक्षा अधिकारी उसे खोलकर अंदर देखते हैं। आप उन्हें बिल्कुल हानिरहित लगे होंगे, इसलिए उन्होंने ध्यान नहीं दिया। अगर उन्होंने देखा होता, तो भगवान ही जाने उन्हें क्या मिलता। कौन जानता है कि उस पैकेट और हत्या के बीच कोई संबंध है या नहीं?'
लालमोहन बाबू ने गला साफ किया। ‘जी हाँ, लेकिन एक किताब कैसे...?’ उन्होंने कहना शुरू किया।

मान लीजिए कि यह कोई किताब नहीं थी? या किताब से कुछ अधिक थी? मुगल काल में बादशाह कभी-कभी अपनी अंगूठियों में जहर रखते थे। आपने इसके बारे में जरूर सुना होगा। अब, अगर किसी अंगूठी में जहर भरा हो, तो क्या आप उसे सिर्फ अंगूठी कहेंगे? तब तो वह जहर का भंडार भी होगी, है ना? खैर, आपने अपना कर्तव्य निभा दिया है, इसलिए मुझे नहीं लगता कि आप किसी खतरे में हैं। ‘क्या आपको ऐसा लगता है?’ अंततः लालमोहन बाबू के चेहरे पर मुस्कान आ गई। ‘बिल्कुल। और वैसे भी, अगर आप खतरे में हैं, तो हम भी हैं। हम सब एक ही धागे से बंधे हैं, है ना? अगर कोई उस धागे को खींचेगा, तो हम तीनों को ही नुकसान होगा!’
लालमोहन बाबू उछलकर खड़े हो गए, कुंग-फू फाइटर की तरह अपना बायां पैर हवा में ऊंचा उछाला और बोले, 'तीनों मस्क eteers के लिए तीन जयकारे! हिप-हिप!' फेलुदा और मैं भी इसमें शामिल हो गए। हमने कहा, 'हुर्रे!'

चार

हम शाम छह बजे के करीब होटल से निकले। हम सभी का मानना था कि जब तक किसी शहर को पैदल घूमकर न देखा जाए, तब तक उसे ठीक से जाना नहीं जा सकता। हमने जोधपुर, वाराणसी, दिल्ली और गंगटोक में भी इसी तरह घूमा था। तो फिर मुंबई में ऐसा क्यों न करें?
थोड़ी दूर दाईं ओर केम्प्स कॉर्नर था। वहाँ हमें एक शानदार फ्लाईओवर दिखाई दिया। यह एक पुल की तरह था, जो विशाल खंभों पर टिका हुआ था। इस पर और इसके नीचे दोनों तरफ वाहन चल रहे थे। हमने पुल के नीचे से सड़क पार की और गिब्स रोड पर चले गए। फेलुदा ने हमारी दाईं ओर एक सड़क की ओर इशारा करते हुए कहा कि यह हैंगिंग गार्डन्स की ओर जाती है। जिस पहाड़ी पर ये उद्यान बने थे, उसे मालाबार हिल कहा जाता था।
समुद्र तक पहुँचने से पहले हमें एक मील और चलना था। भीड़भाड़ वाले ट्रैफिक से बचते हुए हमने सड़क पार की और खुद को एक पत्थर की दीवार के पास पाया। दीवार की ऊँचाई मेरी कमर तक थी। उस दीवार के पीछे समुद्र की लहरें गरज रही थीं और दीवार से टकरा रही थीं।
हमारे बाईं ओर की सड़क पूर्व की ओर जाती थी, फिर मुड़कर दक्षिण की ओर मुड़ जाती थी और अंत में डूबते सूरज की धुंधली रोशनी में गगनचुंबी इमारतों की कतारों के बीच जाकर खत्म होती थी। हमें जो चाप दिखाई दे रहा था, उसे मरीन ड्राइव कहा जाता था।
‘यहाँ तस्कर हों तो कोई बात नहीं,’ लालमोहन बाबू ने ऐलान किया, ‘उस समुद्र और पहाड़ियों को देखो... मुझे कहना पड़ेगा कि बंबई एक शानदार शहर है!’
हम पत्थर की दीवार के किनारे-किनारे मरीन ड्राइव की ओर चलने लगे। हमारे बाईं ओर सड़क पर गाड़ियाँ चींटियों की कतारों की तरह चल रही थीं। कुछ मिनट बाद, लालमोहन बाबू ने एक और टिप्पणी की।
उन्होंने पूछा, 'मुझे लगता है कि मेट्रोपॉलिटन डेवलपमेंट अथॉरिटी यहां उतनी सक्रिय नहीं है, है ना? वे हर समय सड़कों की खुदाई तो नहीं करते रहते?' ‘क्यों? क्या आप ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि यहाँ गड्ढे नहीं हैं?’

'हां। एयरपोर्ट से निकलते ही मैंने इसे महसूस किया। मैं कार में सफर कर रहा था, लेकिन कोई झटका नहीं लगा, कोई धक्के नहीं लगे। कमाल है!'
मैंने समुद्र किनारे एक भीड़भाड़ वाला इलाका देखा। यह कलकत्ता में शहीद मीनार के आसपास के इलाके जैसा लग रहा था, जैसे रविवार को होता है। जैसे- जैसे हम पास पहुंचे, फेलुदा ने बताया कि इसे चौपाटी कहते हैं। जाहिर है, यह हमेशा भीड़भाड़ वाला रहता है। वहां कई स्टॉल लगे हुए थे। शायद वे भेलपुरी, चाट और आइसक्रीम जैसे स्नैक्स बेच रहे थे।
मेरा अनुमान बिल्कुल सही निकला। ऐसा लग रहा था मानो कोई बड़ा मेला लगा हो। ऐसा लग रहा था मानो मुंबई शहर के लगभग सभी लोग वहाँ आ गए हों। लालमोहन बाबू ने हमें भेलपुरी खिलाने की पेशकश की। हम तुरंत मान गए, क्योंकि उनके पास बहुत पैसा आने वाला था और वे आसानी से भुगतान कर सकते थे। भेलपुरी के पैकेट मिलने पर हम भीड़-भाड़ वाली जगह छोड़कर समुद्र तट पर जाकर बैठ गए। मेरी घड़ी के अनुसार पौने सात बज रहे थे, लेकिन आसमान अभी भी गुलाबी चमक रहा था। हमारी तरह कई और लोग भी समुद्र तट पर आराम कर रहे थे। लालमोहन बाबू ने भेलपुरी खत्म की, हाथ हवा में लहराया, संस्कृत का एक श्लोक जपने लगे और फिर अचानक रुक गए। अखबार का एक पन्ना शायद पास बैठे किसी समूह से उड़कर उनकी ओर आ गिरा था। अब वह उनके चेहरे पर चिपक गया था, जिससे उन्हें कुछ देर के लिए घुटन महसूस हुई।
उसने उसे हाथ से छुड़ाया, उस पर सरसरी नजर डाली और जैसे ही उसने 'शाम की खबर' कहा, तभी फेलुदा ने उसे उसके हाथ से छीन लिया।
‘आपने अखबार का नाम तो देखा, लेकिन क्या आपने शीर्षक नहीं देखा?’ फेलुदा ने पूछा।
हम सब अखबार पर झुक गए। शीर्षक था, 'अपार्टमेंट की लिफ्ट में हत्या।' इसके नीचे मृत व्यक्ति की तस्वीर थी। नहीं, यह लाल कमीज वाला आदमी नहीं था। रिपोर्ट के अनुसार, हत्या दोपहर दो बजे से ढाई बजे के बीच हुई। हत्यारा अभी तक फरार था, लेकिन पुलिस ने अपनी जांच शुरू कर दी थी। मृतक का नाम मंगलराम सेठी था। वह काफी समय से काला बाजार और तस्करों के धंधे में शामिल था और पुलिस को उसकी तलाश थी। लिफ्ट के अंदर हाथापाई के निशान मिले थे। और एकमात्र सुराग जो मिला था, वह शव के पास पड़ा एक कागज का टुकड़ा था। उस पर एक नाम लिखा था। नाम था...
'र-र-र-घ्ह!'

लालमोहन बाबू के गले से एक अजीब सी कराह निकली। मैंने उन्हें झट से गले लगा लिया, कहीं वे बेहोश न हो जाएं। ऐसा करने का पूरा कारण था। रिपोर्ट में अंत में लिखा था कि लिफ्ट में मिले कागज के टुकड़े पर लिखा था, 'श्री गांगुली, सांवले, छोटे कद के, गंजे, मूंछ वाले।'
रिपोर्ट पढ़ते ही लालमोहन बाबू ने कागज छीन लिया, फेलुदा के हाथ से झट से निकाल लिया, उसके कई टुकड़े कर दिए और हवा में उड़ा ले गए।
‘देखो तुमने क्या कर दिया! तुमने इस खूबसूरत, साफ-सुथरे समुद्र तट को कचरे से भर दिया है,’ फेलुदा ने शिकायत की।
लालमोहन बाबू अभी भी कुछ बोल नहीं पा रहे थे। अब फेलुदा को सख्त लहजा अपनाना पड़ा। 'क्या तुम्हें सच में लगता है कि उस विवरण से पूरा शहर समझ जाएगा कि तुम्हारे बारे में बात हो रही है?'
लालमोहन बाबू चिंतित दिख रहे थे। फिर उन्होंने गहरी सांस ली और आखिरकार बोल पड़े, 'लेकिन... लेकिन... आप समझ सकते हैं कि इसका क्या मतलब है, है ना? आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि हत्यारा कौन है?'
फेलुदा ने कुछ सेकंड तक उसे टकटकी लगाकर देखा, फिर धीरे से बोला, 'लालुदा, तुमने मेरे साथ चार साल बिताए हैं। फिर भी, तुमने शांत और तर्कसंगत तरीके से सोचना नहीं सीखा है, है ना?'
‘क्यों, क्यों—वो लाल शर्ट—?’
‘इसमें क्या है? मान भी लें कि लाल शर्ट वाले आदमी ने ही वो कागज़ का टुकड़ा गिराया था, तो इससे क्या साबित होता है? कौन कहता है कि वही कातिल है? ज़रा सोचिए। आपसे मिलने और आपसे वो पैकेट लेने के बाद, उसे उस कागज़ के टुकड़े को रखने की कोई ज़रूरत नहीं थी। तो, जब लिफ्ट में चढ़ते समय उसे वो कागज़ अपनी जेब में मिला, तो उसने उसे वहीं फेंक दिया। ये तो बिलकुल तर्कसंगत और सरल व्याख्या है। क्या इस पर विश्वास करना इतना मुश्किल है?’
लालमोहन बाबू को तसल्ली देने का कोई इरादा नहीं था। उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा, “फेलू बाबू, इन सब बातों को छोड़ो। अगर मेरा नाम और हुलिया किसी लाश के पास पड़ा मिला है, तो मुझे निश्चित रूप से परेशान किया जाएगा। मुझे सब कुछ होता हुआ दिख रहा है। मेरे पास बचने का एक ही रास्ता है। ज़ाहिर है, मेरे गंजे सिर पर बाल नहीं उगेंगे। मेरी लंबाई नहीं बदलेगी; न ही मेरे रंग में कोई बदलाव आएगा। बस मेरी मूंछें ही बची हैं। मैं उन्हें कल हटा दूंगा।”

‘मैं समझ गया। और आपको क्या लगता है कि हमारे होटल में रहने वाले लोग क्या सोचेंगे? क्या आपको लगता है कि उनमें से कोई भी शाम की खबरें नहीं पढ़ता? ज्यादातर लोग—नब्बे प्रतिशत—हत्या का जिक्र करने वाली कोई भी खबर पढ़ लेंगे। यह मानवीय स्वभाव है। अगर आप अचानक अपनी मूंछें मुंडवा लें, तो सबकी निगाहें—और शक—आप पर ही टिक जाएंगी!’
इस समय तक, लाल आसमान बैंगनी रंग में बदल चुका था। जब वह रंग धीरे-धीरे धूसर हो गया और पश्चिमी आकाश में बादलों के बीच से एक शाम का तारा टिमटिमाता हुआ दिखाई दिया, जो मरीन ड्राइव पर हजारों जगमगाती रोशनी से प्रतिस्पर्धा करने का साहस दिखा रहा था, तब हम रेतीले समुद्र तट से उठे, धूल झाड़ी और चौपाटी के भीड़भाड़ वाले स्टॉलों की ओर चल पड़े। फिर हम मुख्य सड़क पर गए और टैक्सी लेकर होटल वापस आ गए।
हमें चाबियां लेने के लिए रिसेप्शन डेस्क पर रुकना पड़ा। मैंने देखा कि जब लालमोहन बाबू ने रिसेप्शनिस्ट से चाबी लेने के लिए हाथ बढ़ाया, तो उन्होंने अपना चेहरा दूसरी तरफ कर लिया। लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हुआ। रिसेप्शन डेस्क के सामने, लॉबी में सात लोग बैठे थे, जिनमें से कुछ विदेशी थे। उनमें से तीन लोग 'ईवनिंग स्टैंडर्ड' पढ़ रहे थे। इसके पहले पन्ने पर उसी हत्या की खबर और पीड़ित की तस्वीर छपी थी। यह बहुत ही असंभव लग रहा था कि 'स्टैंडर्ड' की खबर में छोटे कद के, गंजे, सांवले और मूंछों वाले श्री गांगुली का जिक्र न हो।

[redacted]

[redacted], [redacted] [redacted] [redacted]

फेलुदा ने अपनी मशहूर टेढ़ी मुस्कान दी और सिर हिलाया।
‘आपसे मिलकर खुशी हुई, महोदय,’ पटवर्धन ने हाथ बढ़ाते हुए कहा, ‘आपने वहां बहुत अच्छा काम किया।’
लालमोहन बाबू अब थोड़ा आराम कर सकते थे। फेलुदा के मित्र होने के नाते उनकी स्थिति में निश्चित रूप से सुधार हुआ था। फिर भी, उन्हें कई सवालों के जवाब देने थे। हम बातचीत करने के लिए प्रबंधक के कमरे में गए।
पटवर्धन ने हमें बताया कि शव पर कई उंगलियों के निशान मिले थे, लेकिन पुलिस ने अभी तक किसी को गिरफ्तार नहीं किया था। लाल कमीज पहने उस व्यक्ति का पता हवाई अड्डे तक लगाया गया था। पुलिस ने उस टैक्सी का पता लगा लिया था जिसका उसने इस्तेमाल किया था, लेकिन वे उस व्यक्ति की पहचान नहीं कर पाए थे। उनका मानना था कि हत्या उसी व्यक्ति ने की थी और लालमोहन बाबू के नाम वाला कागज का टुकड़ा उसकी जेब से गिर गया था। लालमोहन बाबू ने जो बताया उससे उनका यह विश्वास और पुख्ता हो गया। पटवर्धन ने कहा, 'यह स्पष्ट था कि वह श्री गांगुली से मिलने हवाई अड्डे गए थे। हमने कल सांता क्रूज़ में उतरने वाले हर विमान की यात्री सूची की जाँच की, जब तक कि हमें कलकत्ता की उड़ान में आपका नाम नहीं मिल गया। फिर हमने सभी होटलों में पूछताछ की और अंत में पता चला कि श्री एल. गांगुली ने शालीमार होटल में चेक-इन किया था।'
असल में पटवर्धन यह पता लगाना चाहता था कि लालमोहन बाबू का इस पूरे मामले से क्या संबंध था और उस कागज़ पर उनका नाम और विवरण क्यों था। लालमोहन बाबू ने श्री सान्याल के बारे में बताया। पटवर्धन ने पूछा, 'यह सान्याल कौन है? आप उसे कितना जानते हैं?'
लालमोहन बाबू ने उन्हें वह सब कुछ बताया जो उन्हें पता था, लेकिन पूछे जाने पर उन्हें यह स्वीकार करना पड़ा कि उनके पास सान्याल का पता नहीं है।
अंत में इंस्पेक्टर पटवर्धन ने ठीक वैसे ही उपदेश दिया जैसे फेलुदा ने दिया था। उन्होंने कहा, ‘इस तरह आजकल निर्दोष लोगों का इस्तेमाल तस्करी के सामान को स्थानांतरित करने के लिए किया जा रहा है। हमें पता चला है कि काठमांडू से कुछ कीमती गहने भारत आए हैं, जिनमें नानासाहेब का प्रसिद्ध नौलखा हार भी शामिल है।’
मैं नानासाहेब नाम के एक व्यक्ति को जानता था, जिन्होंने 1857 के सिपाही विद्रोह के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। क्या पटवर्धन उसी व्यक्ति की बात कर रहे थे?

‘मेरा मानना है कि आपको जो पैकेट दिया गया था उसमें कोई चोरी की वस्तु थी,’ पटवर्धन ने हमें बताया। ‘दो गिरोह एक ही चीज़ के पीछे पड़े होंगे। एक ने इसे कलकत्ता से भेजा। मुझे संदेह है कि दूसरे गिरोह के किसी सदस्य को इसके आने की खबर मिल गई और वह शिवाजी महल के आसपास मंडरा रहा था। उसने लाल शर्ट वाले पर हमला किया और लाल शर्ट वाले ने उसे मार डाला।’
लालमोहन बाबू को लगा था कि उन्हें या तो फांसी दी जाएगी या उम्रकैद की सजा होगी, सिर्फ इसलिए कि संदिग्ध हत्यारे के पास उनका नाम और हुलिया था। जब पुलिस ने उन्हें भविष्य में सावधान रहने की सलाह के अलावा कुछ नहीं दिया, तो लालमोहन बाबू का व्यवहार एकदम बदल गया। वे उत्साहित हो गए और उनकी आँखों में फिर से चमक आ गई।
श्री घोषाल दस बजे के बजाय ग्यारह बजे पहुंचे। जब हमने उन्हें पुलिस के साथ हुई अपनी मुठभेड़ के बारे में बताया, तो उन्होंने कहा, 'हां, मुझे इसी बात का डर था। कल शाम के अखबार पढ़ते ही मेरा दिल बैठ गया। उन्हें जो कागज का टुकड़ा मिला, उसमें लालूदा से मिलते-जुलते सारे विवरण थे—फिर भी यह सब मेरे लिए पूरी तरह से रहस्य बना हुआ है!'
तब लालमोहन बाबू ने उन्हें श्री सान्याल के बारे में बताया। श्री घोषाल ने पूछा, 'यह कौन सा सान्याल है? क्या यह अही सान्याल है? मध्यम कद, धंसी हुई आंखें, ठोड़ी पर गड्ढा?'
'पता नहीं। मैंने उसकी ठुड्डी नहीं देखी, उसकी दाढ़ी थी। शायद वह पहले क्लीन शेव्ड था।'
‘मैंने उसे दो साल पहले देखा था। पता नहीं वो वही आदमी था या नहीं। उसने कुछ समय बॉम्बे में काम किया, यहाँ तक कि कुछ फिल्में प्रोड्यूस भी कीं। जहाँ तक मुझे याद है, दोनों फिल्में फ्लॉप रहीं।’
वह एक पुरुष के रूप में कैसा था?
मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है, लेकिन मैंने कभी किसी को उनके बारे में कुछ बुरा कहते नहीं सुना।
'उस स्थिति में, शायद उस पैकेट में कुछ भी गलत नहीं था जो उसने मुझे दिया था।'
‘देखो, लालुदा, हमें सावधान रहने के लिए इसलिए कहा जाता है क्योंकि आजकल तस्करी के मामले अक्सर सुनने को मिलते हैं। लेकिन पहले, क्या हम दूसरों के लिए पैकेट और पार्सल नहीं ले जाते थे? मेरा मतलब है, उन लोगों के लिए भी

जिन्हें हम अच्छी तरह से नहीं जानते थे? कभी कोई समस्या नहीं हुई, थी क्या?’
हम चारों उसी कार में गए जिसमें हम कल गए थे, और जल्द ही महालक्ष्मी स्थित स्टूडियो पहुँच गए। जैसे ही हम कार से उतरे, श्री घोषाल ने कहा, 'कल की शूटिंग को लेकर रेलवे के साथ कुछ दिक्कतें आ रही थीं। इसलिए श्री गोर को सूचित करना पड़ा, और वे कल शाम की फ्लाइट से कलकत्ता से आ गए। मेरे साथ आइए, मैं आप सबको उनसे मिलवा देता हूँ।'
‘क्या शूटिंग कल होगी?’ लालमोहन बाबू ने थोड़ी अनिश्चितता से पूछा। 'बिल्कुल। बिल्कुल। चिंता मत करो—सब कुछ सुलझ गया है।'
हमें एक कार्यशाला जैसी दिखने वाली जगह पर ले जाया गया जिसकी छत टिन की थी। इसका इस्तेमाल कभी-कभी शूटिंग के लिए किया जाता था; लेकिन आज, कुंग-फू का अभ्यास चल रहा था। एक बड़े गद्दे पर, विक्टर पेरुमल के मार्गदर्शन में, कई लोग कूद रहे थे, लात मार रहे थे और गिर रहे थे। लगभग बारह फीट दूर एक आदमी बेंत की कुर्सी पर बैठा था। उसकी उम्र शायद चालीस के आसपास थी।
श्री घोषाल ने कहा, ‘चलिए मैं आपको इनसे मिलवाता हूँ। ये हमारे निर्माता श्री गोर हैं... और ये लेखक श्री गांगुली हैं... और श्री मिटर... और... तुम्हारा नाम क्या है, प्यारे बच्चे?’
‘तपेशरंजन मित्तर।’
श्री गोर के गाल सेबों जैसे थे, सिर के बीचोंबीच एक चमकदार गंजापन था और उनकी आंखें भूरी थीं। उनका पेट भी काफी निकला हुआ था, लेकिन शायद यह हाल ही में बढ़ा था। इतने तंग कपड़े कोई स्वेच्छा से तो नहीं पहन सकता। परिचय होते ही श्री घोषाल गायब हो गए, क्योंकि पहले दिन की शूटिंग से पहले उन्हें कई काम निपटाने थे। 'मैं डेढ़ बजे वापस आऊंगा,' उन्होंने हमसे विदा लेते हुए कहा, 'आप सब मेरे साथ दोपहर का भोजन करेंगे।'
श्री गोर ने अतिरिक्त कुर्सियाँ माँगीं और अत्यंत आतिथ्य सत्कार दिखाया। उन्होंने लालमोहन बाबू के बगल में एक कुर्सी ली और बंगाली में कहा, 'आपनी एलेन बोले आमी खूब खुशी होलम। (मुझे बहुत खुशी है कि आप आ सके।)'
‘वाह, आप तो शानदार बंगाली बोलते हैं!’ लालमोहन बाबू ने उत्साह से कहा, शायद गोर द्वारा उन्हें दिए जाने वाले पैसों की वजह से उनकी प्रशंसा थोड़ी अतिरंजित हो गई थी।

श्री गोर ने हमें बताया, ‘मेरे पिता कैनिंग स्ट्रीट में एक व्यवसाय चलाते थे। मैंने डॉन बॉस्को में तीन साल तक पढ़ाई की। फिर मेरे पिता का देहांत हो गया और मैं अपने चाचा के साथ रहने के लिए मुंबई आ गया। तब से मैं यहीं रह रहा हूँ। लेकिन फिल्म निर्माण के क्षेत्र में यह मेरा पहला प्रयास है।’ शायद श्री गोर की बंगाली भाषा से प्रभावित होकर, लालमोहन बाबू ने उन्हें सान्याल के आने से लेकर इंस्पेक्टर पटवर्धन के साथ हुई बातचीत तक, सारी घटना बता दी। श्री गोर ने सहानुभूति जताते हुए जीभ चटकाई और कहा, 'श्री गांगुली, आजकल किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता। आप एक प्रतिष्ठित लेखक हैं; यह सोचकर मुझे शर्म आती है कि आप तस्करी का सामान ढोने का काम करते थे!'
अब फेलुदा भी बातचीत में शामिल हो गया।
‘मैंने सुना है कि आप शिवाजी महल में रहते हैं?’ उसने कहा।
हां। मैं पिछले कुछ महीनों से वहीं था। भयानक हत्या। मैं कल शाम की फ्लाइट से लौटा और लगभग ग्यारह बजे घर पहुंचा। उस समय भी सड़क पर भारी भीड़ थी। अगर किसी ऊंची इमारत में हत्या होती है, तो यह हमेशा एक बड़ी समस्या होती है।
‘अह... क्या आप जानते हैं कि सत्रहवीं मंजिल पर कौन रहता है?’ ‘सत्रहवीं...सत्रहवीं...’ श्री गोर को याद नहीं आ रहा था। ‘मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो आठवीं मंजिल पर रहता है—एन.सी. मेहता; और दूसरी मंजिल पर डॉ. वज़ीफ़दार हैं। मेरा फ्लैट बारहवीं मंजिल पर है।’
फेलुदा ने और कुछ नहीं पूछा। वैसे भी, श्री गोर जाने के लिए उत्सुक लग रहे थे। उन्होंने कहा, 'मुझे बहुत सारे काम निपटाने हैं। फिल्म बनाना एक जटिल काम है, आप जानते हैं। हमेशा कुछ न कुछ समस्या तो रहती ही है।' हमने जो सुना था, उससे लग रहा था कि अगले दिन की शूटिंग वाकई बहुत जटिल होने वाली थी। एक ट्रेन किराए पर ली गई थी। यह माथेरान से शुरू होकर खंडाला और लोनावला के बीच के लेवल क्रॉसिंग पर पहुंचेगी। श्री गोर को रेलवे कंपनी को किराया देने के लिए माथेरान जाना था। जाहिर है, ट्रेन में एक पुराने जमाने का फर्स्ट क्लास डिब्बा था। श्री गोर उसमें बैठेंगे और उसी ट्रेन से शूटिंग स्थल तक जाएंगे। उन्होंने आमंत्रित किया, 'अगर आप मेरे साथ ट्रेन में दोपहर का भोजन करें तो मुझे बहुत खुशी होगी।' उन्होंने पूछा, 'क्या आप शाकाहारी हैं?'

'नहीं - नहीं। नॉन-वेज, नॉन-वेज!' लालमोहन बाबू ने कहा।
आप क्या लेना चाहेंगे? चिकन या मटन?
‘हमने कल चिकन खाया था। चलो कल मटन खाते हैं। क्या कहते हो, फेलू बाबू?’ 'जैसी आपकी इच्छा,' फेलुदा ने उत्तर दिया।
हालांकि फेलुदा श्री गोर और लालमोहन बाबू की बातचीत सुन रहे थे, लेकिन उनकी नज़र बार-बार कुंग-फू का अभ्यास कर रहे समूह पर जा रही थी। विक्टर पेरुमल का धैर्य और लगन सराहनीय थी। यह स्पष्ट था कि जब तक हर हरकत परिपूर्ण नहीं हो जाती, वे हार नहीं मानेंगे। एक-दो प्रशिक्षु पहले से ही बेहद अच्छा प्रदर्शन कर रहे थे।
विक्टर भी बीच-बीच में फेलुदा की ओर देख रहा था, शायद फेलुदा की आँखों में दिख रही प्रशंसा से प्रेरित होकर। जब मिस्टर गोर चले गए, तो विक्टर ने फेलुदा को इशारा किया और उसे पास आने को कहा। फेलुदा ने अपनी सिगरेट बुझाई और विक्टर और उसके आदमियों के पास चला गया।
‘चलो, श्रीमान मिटर। कोशिश करो। इतना मुश्किल नहीं है!’ विक्टर ने कहा। प्रशिक्षु दूर हट गए। विक्टर ने हल्का सा उछलकर अपना दाहिना पैर सिर के ऊपर उठाया और फिर अजीब तरीके से आगे की ओर किक मारी। अगर कोई उसके सामने खड़ा होता, तो उसे ज़रूर चोट लगती और शायद वह गिर भी जाता। फेलुदा गद्दे पर चढ़ा और तैयार होने के लिए कुछ देर इधर-उधर कूदा। विक्टर लगभग छह फीट की दूरी पर खड़ा हुआ और बोला, ‘कोशिश करो और अपना पैर मेरी तरफ किक मारो!’ विक्टर को यह नहीं पता था कि 'एंटर द ड्रैगन' देखने के बाद, फेलुदा ने लगभग एक महीना घर पर बिताया था, और बीच-बीच में अपने पैरों को हवा में ऊँचा उछालता रहता था, ठीक वैसे ही जैसे उसने कुंग-फू योद्धाओं को करते देखा था। उसने यह सब महज़ मनोरंजन के लिए किया था, लेकिन इससे उसे कुछ अनुभव मिल गया था।
‘एक - दो - तीन!’ विक्टर चिल्लाया। पल भर में, फेलुदा का पैर क्षैतिज रूप से बाहर निकला और विक्टर एक कदम पीछे हटकर गद्दे पर गिर पड़ा। हालाँकि, मुझे पता था कि फेलुदा का पैर विक्टर के शरीर से नहीं टकराया था।
अगले पांच मिनट तक, सभी ने विक्टर पेरुमल और प्रदोश मित्तर के बीच कुंग-फू का प्रदर्शन देखा। मैं बार-बार विक्टर के प्रशिक्षुओं को देखने से खुद को रोक नहीं पा रहा था, जिन्होंने छह सप्ताह से अधिक समय तक कूदना, लात मारना और गिरना सीखा था। वे जानते थे कि यह सब करने में कितनी मेहनत लगती है। यह

देखकर तसल्ली हुई कि उनके चेहरों पर ईर्ष्या से ज़्यादा प्रशंसा झलक रही थी। जब उन पांच मिनटों के अंत में, दोनों प्रतिभागियों ने हाथ मिलाया और एक-दूसरे की पीठ थपथपाई, तो दर्शक स्वतः ही तालियाँ बजाने लगे।

छह

लगभग दो बजे, हम वर्ली स्थित कॉपर चिमनी रेस्टोरेंट में पुलक घोषाल और संवाद लेखक त्रिभुवन गुप्ते के साथ दोपहर का भोजन करने गए। रेस्टोरेंट खचाखच भरा हुआ था, लेकिन श्री घोषाल ने हमारे लिए एक टेबल आरक्षित कर रखी थी।
‘पुलक,’ लालमोहन बाबू ने पूछा, ‘तुम्हारी फिल्म का नाम क्या है?’
मुझे भी नाम को लेकर जिज्ञासा थी, लेकिन मुझे श्री घोषाल से पूछने का मौका नहीं मिला। मुझे बस इतना पता था कि फिल्म का नाम 'द बैंडिट्स ऑफ बॉम्बे' नहीं रखा जाएगा।
श्री घोषाल ने कहा, ‘ललूदा, तुम कल्पना भी नहीं कर सकतीं कि नाम को लेकर हमें कितनी परेशानी हुई है। हमने जो भी नाम चुना, वह या तो पहले से इस्तेमाल हो चुका था, या किसी और ने पंजीकृत करवा रखा था। तुम यहाँ गुप्तेजी से पूछ सकती हो कि उन्होंने उपयुक्त नाम को लेकर कितनी रातों की नींद हराम की है। बस तीन दिन पहले—अचानक, अप्रत्याशित रूप से—यह नाम मेरे दिमाग में आया। जैसे कोई चिंगारी फूट पड़ी हो!’
‘हाई-वोल्टेज स्पार्क? आपकी फिल्म का नाम है 'ए हाई-वोल्टेज स्पार्क?' लालमोहन बाबू ने धीमी आवाज में पूछा।
श्री घोषाल जोर से हंस पड़े, जिससे आस-पास की मेजों पर बैठे लोग मुड़कर उन्हें घूरने लगे। 'क्या तुम पागल हो, लालुदा? तुम्हें लगता है कि ऐसा नाम चलेगा? नहीं, मैं अचानक आए एक विचार की बात कर रहा था, एक कल्पना की उपज की। मेरा नाम है जेट बहादुर।'
‘एह?’
‘जेट बहादुर। शहर से निकलने से पहले ही आपको हर जगह होर्डिंग्स लगे हुए दिखेंगे। आपकी कहानी के लिए इससे बेहतर नाम हो ही नहीं सकता। ज़रा सोचिए। एक्शन, रफ़्तार, रोमांच... ये तीनों ही आपको 'जेट' शब्द में मिल जाएंगे। साथ ही, इसमें 'बहादुर' भी है। हमने सिर्फ़ इसी नाम और कलाकारों के दम पर फ़िल्म को हर जगह हिट करवा दिया!’

लालमोहन बाबू के चेहरे पर मुस्कान आ गई थी, लेकिन श्री घोषाल की व्याख्या सुनकर उनकी खुशी थोड़ी फीकी पड़ गई। शायद वे सोच रहे थे: नाम और कलाकार? क्या सिर्फ यही बातें मायने रखती हैं? क्या कहानी की सराहना कोई नहीं करता?
श्री घोषाल ने पूछा, ‘क्या आपने मेरी कोई पिछली फिल्म देखी है?’ उन्होंने आगे कहा, ‘लोटस थिएटर में ‘तीरंदज’ चल रही है। आप आज शाम का शो देख सकते हैं। मैं मैनेजर को बता दूंगा, वो आपके लिए रॉयल सर्कल में तीन टिकट रखवा देगा। यह एक अच्छी फिल्म है, इसने रजत जयंती मनाई है।’
हममें से किसी ने भी उनकी कोई फिल्म नहीं देखी थी। लालमोहन बाबू स्वभाव से जिज्ञासु थे, इसलिए हमने श्री घोषाल का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। अगर मुंबई में दोस्त न हों तो शामें कभी-कभी लंबी और उबाऊ हो जाती थीं। कार हमारे पास ही रहती थी। ज़रूरत पड़ने पर वह हमें लोटस तक ले जाती थी।
जब हम खाना खा रहे थे, तभी रेस्टोरेंट का एक आदमी आया और उसने श्री घोषाल से कुछ कहा। हमारे आने के बाद से हर वेटर के चेहरे पर दिख रही गर्मजोशी भरी मुस्कान से यह स्पष्ट था कि श्री घोषाल यहाँ अक्सर आते थे। जाहिर है, मुंबई जैसे शहर में एक सफल निर्देशक का स्वागत किया जाता था।
श्री घोषाल ने झट से लालमोहन बाबू की ओर रुख किया। 'लालौदा, आपको फोन पर बुलाया जा रहा है।'
लालमोहन बाबू ने अभी-अभी चम्मच से पुलाव उठाया था। शुक्र है कि उन्होंने उसे अभी तक मुंह में नहीं डाला था। अगर डाल देते तो उनका गला ज़रूर घुट जाता। हुआ यूं कि जैसे ही उन्होंने झटका खाया, चावल के कुछ दाने चम्मच से उछलकर मेज़पोश पर गिर गए; लेकिन इससे ज़्यादा कोई नुकसान नहीं हुआ।
श्री घोषाल ने समझाया, 'श्री गोर आपसे बात करना चाहते हैं। उनके पास आपके लिए कोई अच्छी खबर हो सकती है।'
लालमोहन बाबू चले गए और कुछ मिनट बाद लौट आए। उन्होंने चाकू और कांटा उठाते हुए हमसे कहा, 'श्री गोर ने मुझे चार बजे अपने घर बुलाया है। लगता है मुझे कुछ पैसे मिलने वाले हैं—हा हा हा!'
इसका मतलब था कि शाम तक दस हजार रुपये लालमोहन बाबू की जेब में पहुँच जाएँगे। 'कल दोपहर का खाना तुम ही खिलाओगे!' फेलुदा ने उससे कहा, 'और तांबे की चिमनी से काम नहीं चलेगा, मैं तुम्हें बता दूं। हमें सोने की चिमनी ढूंढनी चाहिए!'

रुमाली रोटी, पुलाव, नरगिसी कोफ्ता और कुल्फी का भोजन समाप्त करके जब हम रेस्टोरेंट से निकले, तब पौने तीन बज चुके थे। श्री घोषाल और श्री गुप्ते स्टूडियो लौट आए। कुछ संवाद अभी भी लिखे जाने बाकी थे। श्री घोषाल ने हमें बताया कि संवाद लिखने में हमेशा समय लगता है, क्योंकि हर शब्द में चमक और आकर्षण होना चाहिए। श्री गुप्ते ने अपने मुंह से सिगार हटाए बिना बस मुस्कुरा दिया। मैंने गौर किया कि हालांकि वे फिल्म के सारे संवाद लिखते हैं, लेकिन खुद बहुत कम बोलते हैं।
हमने कुछ पान खरीदा और वापस कार में बैठ गए। 'शालीमार?' हमारे ड्राइवर ने पूछा।
फेलुदा ने कहा, 'गेटवे टू इंडिया देखे बिना कलकत्ता लौटना मूर्खता होगी। कृपया हमें ताज महल होटल ले चलिए।'
“जी सर,” ड्राइवर ने जवाब दिया। वह समझ गया था कि हमारे पास बहुत समय है और हम सिर्फ़ जगह देखना चाहते हैं। इसलिए उसने हमें शहर घुमाया और विक्टोरिया टर्मिनस, फ्लोरा फाउंटेन, टेलीविजन स्टेशन और प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय दिखाया, और फिर लगभग साढ़े तीन बजे गेटवे टू इंडिया पहुँच गया। हम गाड़ी से उतर गए।
गेटवे के पीछे अरब सागर था। मैंने उसमें ग्यारह जहाज गिने, बड़े और छोटे। यहाँ सड़क बहुत चौड़ी थी। गेटवे के सामने बाईं ओर शिवाजी की घोड़े पर सवार प्रतिमा थी। हमारे बाईं ओर विश्व प्रसिद्ध ताज महल होटल था। हम उसे अंदर से देखे बिना वहाँ से नहीं जा सकते थे। बाहर से ही वह बेहद शानदार था। ठंडी लॉबी में कदम रखते ही मेरा सिर चकराने लगा। मैं कहाँ आ गया था? मैंने पहले कभी इतने अलग-अलग समुदायों के इतने सारे लोगों को नहीं देखा था। ऐसा लग रहा था कि अरब लोग दूसरे विदेशी पर्यटकों से कहीं ज़्यादा थे। लेकिन क्यों? जब मैंने फेलुदा से पूछा, तो उसने बताया कि वे बेरूत नहीं जा सकते थे। इसलिए वे सब छुट्टियाँ मनाने के लिए बंबई आ गए थे। उनके देश में तेल होने की वजह से उन्हें पैसों की कोई दिक्कत नहीं थी।
हम कार में वापस जाने से पहले लगभग पाँच मिनट तक लॉबी में घूमे। जब हम आखिरकार शिवाजी महल पहुँचे और लिफ्ट का बटन दबा रहे थे, तब तक चार बजकर दो मिनट हो चुके थे।

हम बारहवीं मंजिल पर पहुँचे। वहाँ अलग-अलग दिशाओं में तीन दरवाजे थे। बीच वाले दरवाजे पर 'जी. गोर' लिखा हुआ था। घंटी बजाने पर वर्दी पहने एक कर्मचारी ने दरवाजा खोला।
‘कृपया अंदर आइए!’ उन्होंने कहा। जाहिर है, हमारा इंतजार हो रहा था।
जैसे ही हम अंदर दाखिल हुए, श्री गोर के दिखाई देने से पहले ही हमें उनकी आवाज़ सुनाई दी। 'अंदर आइए, अंदर आइए!' उनकी आवाज़ ने हमारा स्वागत किया। फिर हमने उन्हें मुस्कुराते हुए एक संकरे रास्ते से आते देखा। 'आपका दोपहर का खाना कैसा था?'
‘बहुत बढ़िया!’ लालमोहन बाबू ने जवाब दिया।
श्री गोर का बैठक कक्ष अद्भुत था। इतना विशाल कि मुझे लगता है कि कलकत्ता स्थित हमारे घर का लगभग पूरा भूतल उसमें समा जाता। एक तरफ खिड़कियों की कतार थी, जिनसे समुद्र का नज़ारा दिखता था। सारा फर्नीचर महंगा था—हर एक की कीमत शायद दो-तीन हज़ार रुपये रही होगी। इनके अलावा, पूरे कमरे में कालीन बिछा था, दीवारों पर चित्रकारी थी और छत से झूमर लटका हुआ था। कमरे के एक कोने में एक विशाल किताबों की अलमारी थी। उसमें रखी किताबें इतनी चमकदार थीं कि मानो अभी-अभी खरीदी गई हों।
मैं और फेलुदा एक गद्देदार सोफे पर बैठ गए। लालमोहन भी उसी तरह की गद्देदार कुर्सी पर बैठ गए। तभी एक बहुत बड़ा कुत्ता कमरे में आया और बीचोंबीच खड़ा हो गया। वह पहले कुर्सी को और फिर सोफे को देखने लगा। लालमोहन बाबू का चेहरा पीला पड़ गया। फेलुदा ने हाथ बढ़ाकर उंगलियां चटकाईं। कुत्ता तुरंत उनके पास चला गया। बाद में मुझे पता चला कि वह ग्रेट डेन नस्ल का कुत्ता था।
‘देखो! देखो!’
कुत्ता फेलुदा को छोड़कर एक दरवाजे की ओर चला गया। श्री गोर ने हमारे बैठने तक इंतजार किया, फिर कुछ क्षणों के लिए हमसे दूर चले गए। अब वे हाथ में एक लिफाफा लिए कमरे में लौटे और लालमोहन बाबू के बगल में दूसरी कुर्सी पर बैठ गए।
उन्होंने लालमोहन बाबू से कहा, 'मैं इसे आपके लिए तैयार रखना चाहता था, लेकिन मुझे तीन महत्वपूर्ण कॉल लेने पड़े, इसलिए मुझे समय नहीं मिला।'

उसने लिफाफा लालमोहन बाबू को दिया, जिन्होंने कांपते हाथों को संभालते हुए उसे सहजता से ले लिया। फिर उन्होंने अपना हाथ उसमें डाला और सौ-सौ रुपये के नोटों का एक बंडल निकाला।
'कृपया इन्हें गिनें,' श्री गोर ने सलाह दी।
‘क्या उन्हें सी-काउंट करें?’
‘ज़रूर। आपको लेना ही होगा। वहाँ सौ नोट होने चाहिए।’ लालमोहन बाबू की गिनती पूरी होते-होते हमारे सामने चांदी की चाय की एक प्लेट रख दी गई। एक घूंट पीते ही मुझे पता चल गया कि यह बेहतरीन दार्जिलिंग चाय है।
'मैंने आपके बारे में वास्तव में कुछ भी नहीं सीखा है,' श्री गोर ने फेलुदा की ओर मुड़ते हुए कहा।
‘इसमें सीखने जैसा कुछ नहीं है। मैं श्री गांगुली का दोस्त हूं, बस इतना ही।’
नहीं, महोदय। यह काफी नहीं है। आप कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं। आपकी आंखें, आपकी आवाज, आपका कद, आपकी चाल, आपका शरीर—कुछ भी साधारण नहीं है। अगर आप मुझे अपने बारे में नहीं बताना चाहते, तो ठीक है। लेकिन अगर आप कहते हैं कि आप श्री गांगुली के सिर्फ दोस्त हैं, तो मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकता!
फेलुदा मुस्कुराया, अपनी चाय की चुस्की ली और विषय बदल दिया। उसने कहा, 'मैं देखता हूं कि आपके पास बहुत सारी किताबें हैं।'
'हां, लेकिन मैं उन्हें पढ़ता नहीं हूं। वे किताबें तो सिर्फ दिखावे के लिए हैं। तारापोरेवाला बुक शॉप का एक स्थायी ऑर्डर है... वे मुझे हर अच्छी किताब की एक प्रति भेजते हैं जो प्रकाशित होती है।'
मुझे तो वहां एक बंगाली किताब भी दिख रही है!
वाह, फेलुदा की आंखें कितनी तेज थीं! दूर से ही उसने अंग्रेजी किताबों की कतारों के बीच एक अकेली बंगाली किताब को पहचान लिया था।
श्री गोर हँसे। ‘सिर्फ बंगाली ही नहीं, श्री मित्तर, मेरे पास हिंदी, मराठी, गुजराती—हर भाषा की किताबें हैं। मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो हिंदी, बंगाली और गुजराती पढ़ सकता है। वह इन सभी भाषाओं में उपन्यास पढ़ता है और मेरे लिए सारांश तैयार करता है। मैंने तो श्री गांगुली के उपन्यास की रूपरेखा भी पढ़ी है। देखिए, श्री मित्तर, फिल्म बनाने के लिए...’

टेलीफोन की घंटी बजने लगी, जिससे उनका काम रुक गया। श्री गोर उठे और दरवाजे के पास तीन टांगों वाले स्टूल पर रखे सफेद टेलीफोन का जवाब देने के लिए चले गए।
हेलो... जी हाँ, रुकिए। श्री गांगुली, आपके लिए एक कॉल है।
लालमोहन बाबू ने एक बार फिर करवट बदली। मुझे उम्मीद थी कि बार-बार करवट बदलने से उनके दिल को कोई नुकसान नहीं होगा।
‘क्या यह पुलक है?’ उसने टेलीफोन की ओर जाते हुए पूछा।
‘जी नहीं, महोदय। मैं इस व्यक्ति को नहीं जानता,’ श्री गोर ने उत्तर दिया।
‘हेलो,’ लालमोहन बाबू ने रिसीवर पर कहा। फेलुदा ने उन्हें तिरछी नजर से देखा।
'नमस्ते नमस्ते । । ।?'
लालमोहन बाबू ने हैरानी से हमारी ओर देखा। 'कोई कुछ बोल क्यों नहीं रहा!' श्री गोर ने कहा, 'लाइन कट गई होगी।' लालमोहन बाबू ने सिर हिलाया। 'नहीं, मुझे कई आवाजें सुनाई दे रही हैं, लेकिन कोई कुछ बोल नहीं रहा है।'
फिर फेलुदा गया और उससे रिसीवर ले लिया। 'हेलो, हेलो!'
फिर उसने भी अपना सिर हिलाया और कहा, 'जो भी था, उसने फोन नीचे रख दिया!' ‘कितना अजीब! आखिर कौन हो सकता है?’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा।
श्री गोर ने हमसे कहा, 'चिंता मत करो, बॉम्बे में इस तरह की घटनाएं अक्सर होती रहती हैं।'
फेलुदा खड़ा ही रहा। हमने भी इशारा समझकर उठ खड़े हुए। लालमोहन बाबू उस रहस्यमय फोन कॉल को लेकर कुछ खास चिंतित नहीं दिखे, शायद इसलिए क्योंकि उनकी जेब में दस हजार रुपये पड़े थे।
उन्होंने सहज भाव से कहा, 'हम आज शाम लोटस थिएटर में पुलक की एक फिल्म देखने जा रहे हैं।'
'जी हां, आपको जरूर देखना चाहिए। पुलक बाबू बहुत अच्छे निर्देशक हैं। मुझे पूरा यकीन है कि जेट बहादुर भी बॉक्स ऑफिस पर बड़ी सफलता हासिल करेगी!' श्री गोर हमें बाहर तक छोड़ने के लिए सामने के दरवाजे पर आए। 'कल दोपहर के भोजन के बारे में मत भूलना। मुझे उम्मीद है कि आपके पास आने-जाने का साधन होगा?'
हमने उन्हें आश्वस्त किया कि श्री घोषाल ने सभी व्यवस्थाएं कर ली हैं। हमारे पास पूरे दिन के लिए एक कार उपलब्ध रहेगी।

हम सीढ़ियों पर उतरे और लिफ्ट का बटन दबाया। 'अब आपको पता चल गया होगा कि इन लोगों के पास कितना पैसा है!' फेलुदा ने लालमोहन बाबू से कहा।
'हां। दरअसल, मैंने उसमें से कुछ अपनी जेब में भी रखा है!'
'सच है, लेकिन ये तो कुछ भी नहीं। इन लोगों के लिए एक लाख रुपये भी हास्यास्पद रूप से छोटी रकम है। क्या आपने ध्यान दिया कि उसने आपसे रसीद पर हस्ताक्षर नहीं करवाए? इसका मतलब है कि आपकी जेब उसके काले धन से भरी हुई है। आपने अंधकार की दुनिया में अपना पहला कदम रख दिया है!'
लिफ्ट ऊपर से नीचे आई और एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ रुक गई। 'फेलू बाबू, आप चाहे जो भी कहें, अगर किसी की जेब में बहुत सारा पैसा हो, चाहे वह काला हो या सफेद...'
लालमोहन बाबू की बात अधूरी रह गई। फेलुदा ने लिफ्ट का दरवाजा खोलकर अंदर प्रवेश किया। एक तेज़ खुशबू बाहर आई—यह गुलबहार की खुशबू थी। हम सभी इसे पहचान गए, खासकर लालमोहन बाबू। इस खुशबू ने उन्हें अवाक कर दिया।
हम फेलुदा के पीछे-पीछे लिफ्ट में गए, हमारे दिल की धड़कनें तेज़ हो रही थीं। कुछ पल बाद मैंने खुद को रोके बिना नहीं कहा, 'मुझे यकीन है कि इस देश में बहुत से लोग गुलबहार का इस्तेमाल करते हैं। श्री सान्याल अकेले तो नहीं हो सकते!'
जवाब देने के बजाय, फेलुदा ने सत्रहवीं मंजिल का बटन दबा दिया। हम पाँच और मंजिल ऊपर चढ़ गए।
बाकी मंजिलों की तरह, इस मंजिल पर भी लिफ्ट के पास तीन दरवाजे थे। बाईं ओर वाले दरवाजे पर 'एच. हेकरोथ' लिखा था। फेलुदा ने बुदबुदाते हुए कहा, 'यह तो जर्मन नाम है।' दाईं ओर वाले दरवाजे पर 'एन.सी. मनसुखानी' लिखा था। वह ज़रूर सिंधी होगा। बीच वाले दरवाजे पर कोई नाम नहीं था।
‘वह फ्लैट खाली है,’ लालमोहन बाबू ने कहा।
'ज़रूरी नहीं,' फेलुदा ने जवाब दिया, 'हर कोई नेम-प्लेट का इस्तेमाल नहीं करता। असल में, मुझे लगता है कि इस फ्लैट में कोई रहता है।'
लालमोहन बाबू और मैंने उत्सुकता से उसकी ओर देखा।
'अगर किसी डोरबेल का इस्तेमाल कुछ समय से नहीं हुआ है, तो उसका स्विच धूल से सना होना चाहिए। लेकिन इसे देखिए। फिर बाकी दोनों को देखिए और मुझे बताइए कि क्या उनमें कोई अंतर है।'

मैंने स्विच को गौर से देखा। फेलुदा सही कह रहा था। वह एकदम चमक रहा था, उस पर धूल का कोई निशान नहीं था।
‘क्या तुम इसे दबाने वाले हो?’ लालमोहन बाबू ने कांपती हुई आवाज में पूछा। फेलुदा ने घंटी नहीं बजाई। इसके बजाय उसने जो किया वह और भी हैरान करने वाला था। वह ज़मीन पर लेट गया और दरवाज़े और ज़मीन के बीच की छोटी सी जगह से सूंघने लगा। मैंने उसे दो-तीन बार गहरी सांस लेते देखा, जिसके बाद वह उठा और बोला, 'कॉफी। मुझे कॉफी की तेज़ गंध आ रही है।'
फिर उसने कुछ ऐसा किया जो कम आश्चर्यजनक नहीं था। लिफ्ट लेने के बजाय, वह सीढ़ियों से नीचे भूतल पर उतर गया। रास्ते में हर मंजिल पर रुकता और कम से कम आधा मिनट इधर-उधर देखता। पता नहीं वह क्या ढूंढ रहा था।
जब हम आखिरकार इमारत से बाहर निकले, तब पांच बजकर दस मिनट हो चुके थे।
हम बॉम्बे में कुछ ही समय के लिए थे, लेकिन निस्संदेह, हम पहले ही एक जटिल रहस्य में उलझ चुके थे।

सात

‘अगर मैं आपसे कुछ सवाल पूछूं, तो क्या आपको कोई आपत्ति होगी?’ फेलुदा ने लालमोहन बाबू से पूछा। हम करीब दस मिनट पहले शिवाजी किले से अपने होटल लौटे थे। रिसेप्शनिस्ट ने हमें बताया था कि जब हम बाहर थे, तब किसी ने लालमोहन बाबू को फोन किया था, लेकिन उनका नाम या संदेश नहीं छोड़ा।
‘यह पुलक ही होगा, जो बार-बार मुझसे संपर्क करने की कोशिश कर रहा है,’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘कोई और नहीं हो सकता।’
अब उसने फेलुदा की ओर मुड़कर कहा, 'अगर मैं पुलिस की पूछताछ को सफलतापूर्वक संभाल सकता हूं और उसमें सफल हो सकता हूं, तो मुझे आपके सवालों से क्या आपत्ति होनी चाहिए?'
‘बहुत खूब। आपको सान्याल का पहला नाम नहीं पता, है ना?’
नहीं। मुझे उनसे पूछने का मौका ही नहीं मिला।
'क्या आप उसका वर्णन कर सकते हैं? मुझे एक पूर्ण और स्पष्ट वर्णन चाहिए—न कि आपकी किताबों में इस्तेमाल होने वाला लापरवाही भरा वर्णन!'
लालमोहन बाबू ने गला साफ किया और भौंहें चढ़ा लीं।
‘उसकी लंबाई होगी...देखते हैं...’
क्या आप हमेशा किसी व्यक्ति की ऊंचाई को सबसे पहले ध्यान में रखते हैं? 'हां, अगर वह औसत से असाधारण रूप से छोटा या लंबा हो...'
‘क्या सान्याल बहुत छोटा था?’
'नहीं।'
‘काफी लंबा?’
'नहीं।'
तो चलिए अभी उसकी लंबाई के बारे में बात नहीं करते। मुझे उसके चेहरे के बारे में बताइए।'
मैंने उसे देर शाम देखा था। और मेरे लिविंग रूम का बल्ब भी कोई खास तेज नहीं है, वह सिर्फ चालीस वाट का है।'
कोई बात नहीं। मुझे बताओ कि तुम्हें क्या याद है।

'एक चौड़ा चेहरा। उसकी आँखें... आह... उसने चश्मा पहना हुआ था। उसकी दाढ़ी थी — काफी घनी—और उसकी दाढ़ी से जुड़ी हुई एक मूंछ...'
‘आपका मतलब फ्रेंच दाढ़ी से है?’
‘नहीं, मुझे लगता है कि यह अलग था। यह उसकी बगल की मूँछों से भी जुड़ा हुआ था।’
‘ठीक है, आगे बढ़ो।’
‘उसके बाल... सफ़ेद-काले रंग के थे। हाँ, बिल्कुल वैसे ही थे, और उसके बाल दाईं ओर से... नहीं, नहीं, बाईं ओर से बँधे हुए थे।’
'दाँत?'
'बिल्कुल सही। नकली दांत नहीं लग रहे थे।'
'आवाज़?'
न ज्यादा गहरा, न ज्यादा पतला। बीच का सा।
'ऊंचाई?'
मैंने कहा था ना। मीडियम।
‘क्या उसने आपको फोन नंबर नहीं दिया था? क्या उसने यह नहीं कहा था कि यह बॉम्बे में उसके दोस्त का नंबर है, और यह दोस्त बहुत मददगार आदमी है?’
'अरे हाँ! मैंने कहा, मैं तो बिल्कुल भूल ही गई थी। मैं पुलिस को बता सकती थी, लेकिन जब वह इंस्पेक्टर मुझसे इतने सारे सवाल पूछ रहा था, तब भी मैं पूरी तरह भूल गई थी।'
कोई बात नहीं, तुम मुझे बता सकते हो।
‘रुको, मुझे देखने दो…!’ लालमोहन बाबू ने अपना बटुआ खोला और उसमें से नीले रंग का एक मुड़ा हुआ कागज़ निकाला। फेलुदा ने उसे ध्यान से देखा, क्योंकि उस पर सान्याल की लिखावट थी। फिर उसने कागज़ को अपने बटुए में रख लिया और मुझसे कहा, ‘टॉपशे, क्या तुम वह नंबर पता कर सकते हो—ऑपरेटर को बता देना कि यह 253418 है।’
मैंने फोन उठाया और ऑपरेटर से बात की। फिर मैंने फोन फेलुदा को दे दिया। ‘हेलो,’ फेलुदा ने कहा, ‘क्या मैं श्री देसाई से बात कर सकता हूँ?’
कितना अजीब है! पता चला कि देसाई नाम के किसी भी व्यक्ति ने कभी उस नंबर का इस्तेमाल नहीं किया था। फोन उठाने वाले व्यक्ति का नाम पारेख था, और उसने बताया कि वह पिछले दस सालों से उसी नंबर का इस्तेमाल कर रहा था।

फेलुदा ने रिसीवर रखते हुए कहा, 'लालमोहन बाबू, सान्याल को अपनी अगली कहानी बेचने का ख्याल ही छोड़ दीजिए। वह आदमी बेहद संदिग्ध लग रहा है, और मुझे लगता है कि उसने आपको जो पैकेट दिया है वह भी कम संदिग्ध नहीं है।' लालमोहन बाबू ने अपना सिर खुजाया और आह भरी। 'सच कहूँ तो, फेलू बाबू,' उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा, 'पता नहीं क्यों, मुझे भी वह आदमी पसंद नहीं था!'
फेलुदा की आवाज़ में तीखापन आ गया। 'पता नहीं क्यों? मुझे ये मुहावरा बिल्कुल पसंद नहीं। तुम्हें असली वजह पता होनी चाहिए; इसे मज़ाक समझकर टाल मत दो। चलो, समझाने की कोशिश करो। तुम्हें सान्याल क्यों पसंद नहीं था?' लालमोहन बाबू को फेलुदा के तीखे लहजे से कोई आपत्ति नहीं थी; उन्हें इसकी आदत सी हो चुकी थी। वास्तव में, उन्होंने स्वयं यह स्वीकार किया कि उनके लेखन में सुधार मुख्यतः इसलिए हुआ क्योंकि फेलुदा उनकी गलतियों को बताने में संकोच नहीं करते थे।
अब वह सीधा बैठ गया। उसने कहा, ‘पहली बात तो यह कि बोलते समय उस व्यक्ति ने सीधे मेरी ओर नहीं देखा। दूसरी बात, वह धीमी आवाज़ में बोल रहा था—जैसे कि वह किसी गुप्त योजना पर चर्चा करने आया हो। इतनी धीमी आवाज़ में बोलने की क्या ज़रूरत थी? तीसरी बात...’
यहां उनकी आवाज धीमी पड़ गई। अगले कुछ मिनटों तक लालमोहन बाबू ने तीसरे कारण को याद करने की बहुत कोशिश की, लेकिन असफल रहे।
लोटस थिएटर में शाम का शो साढ़े छह बजे शुरू होने वाला था। इसलिए हम होटल से छह बजे ही निकल गए। गाड़ी में सिर्फ लालमोहन बाबू और मैं ही बैठे, क्योंकि फेलुदा ने कहा कि उन्हें कुछ काम है। उनके बैग से उनकी नीली नोटबुक निकल आई; मुझे बताने की ज़रूरत नहीं थी कि उन्हें किस तरह के काम में व्यस्त रखना था।
लोटस सिनेमा वर्ली में था, इसलिए हमें वहीं वापस जाना पड़ा। लालमोहन बाबू काफी घबराए हुए लग रहे थे। जिस फिल्म को हम देखने वाले थे, उससे पता चलता कि श्री घोषाल किस तरह के निर्देशक हैं। उन्होंने मुझसे कहा, 'अगर उनकी तीन फिल्में एक के बाद एक सफल रही हैं, तो वे इतने बुरे तो नहीं हो सकते, है ना? तपेश, तुम्हारा क्या ख्याल है?'
मैं क्या कह सकती थी? यही तो मैं खुद को दिलासा देने के लिए कह रही थी।

श्री घोषाल प्रबंधक को सूचित करना नहीं भूले थे। रॉयल सर्कल में हमारे लिए तीन टिकट आरक्षित किए गए थे। हालांकि, चूंकि यह एक रिपीट शो था, इसलिए मुख्य सभागार में काफी सीटें खाली थीं।
इंटरमिशन से पहले ही हमें एहसास हो गया था कि तीरंदज एक ऐसी फिल्म है जो सिरदर्द पैदा कर सकती है। लालमोहन बाबू और मैंने अंधेरे में एक-दूसरे को देखा। मुझे हंसी आ रही थी, लेकिन साथ ही जेट बहादुर के भविष्य के बारे में सोचते ही चिंता भी सताने लगी। लालमोहन बाबू आगे क्या करेंगे?
जब मध्यांतर के दौरान बत्तियाँ जलीं, तो लालमोहन बाबू ने आह भरी। उन्होंने भावुक होकर कहा, ‘पुलक, तुम और मैं एक ही शहर, एक ही इलाके से हैं। क्या इतने सालों में तुमने बस यही करना सीखा है?’ फिर थोड़ी देर रुककर उन्होंने मेरी ओर मुड़कर कहा, ‘पुलक दुर्गा पूजा के दौरान हर साल नाटक करता था। जहाँ तक मुझे याद है, वह बी.कॉम में फेल हो गया था। भला ऐसे व्यक्ति से और क्या उम्मीद की जा सकती है?’
जैसे ही बत्तियाँ दोबारा धीमी हुईं, हम सभागार से निकल गए। मुझे डर था कि कहीं पुलक घोषाल खुद या उनका कोई आदमी लॉबी में बाहर न मिल जाए। लेकिन वहाँ कोई नहीं था।
‘अगर वो मुझसे पूछेगा तो मैं यही कहूंगा कि ये बहुत बढ़िया था,’ लालमोहन बाबू ने तय किया। ‘सच कहूं तो, तपेश, अगर मुझे गोरे से वो सारे ताज़े, साफ-सुथरे नोट न मिले होते तो मुझे बहुत दुख होता!’
हमारी कार सिनेमाघर के सामने खड़ी थी। लालमोहन बाबू तुरंत कार की ओर नहीं गए। इसके बजाय वे एक छोटी सी किराने की दुकान पर गए और नमकीन का एक पैकेट, बिस्कुट के दो पैकेट, छह संतरे और लेमन ड्रॉप्स का एक पैकेट खरीदा। उन्होंने कहा, 'कभी-कभी मुझे होटल के कमरे में बहुत भूख लगती है। ये चीजें काम आएंगी।'
हम हाथ में तरह-तरह के पैकेट लिए कार में वापस लौटे। जैसे ही मैंने दरवाजा खोला, हम दोनों को ज़बरदस्त झटका लगा। कार गुलबहार की तेज़ गंध से भरी हुई थी। जब हम यहाँ आए थे तब तो यह गंध बिल्कुल नहीं थी। यह गंध पिछले डेढ़ घंटे में ही आई थी।
“मेरा सिर चकरा रहा है, तपेश। यह तो वाकई डरावना है, है ना? मुझे पूरा यकीन है कि सान्याल की हत्या कर दी गई है। और हम उसकी सुगंधित आत्मा से परेशान हैं!” लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा।

[illegible]
'[illegible]'
[illegible]
‘[illegible]’
'[illegible]'
‘Inspector Patwardhan mentioned a Nanasaheb. Which Nanasaheb did he mean?’
'[illegible]'
‘[illegible]’
[illegible]
‘[illegible]’
'[illegible]'

‘हे भगवान, क्या मैंने वही हार सौंप दिया?’ लालमोहन बाबू की आवाज चिंता से भर उठी। वह लगभग चिल्ला पड़े।
‘ज़रा सोचिए। अगर आपने ऐसा किया, तो आपका नाम इतिहास में हीरे के अक्षरों में दर्ज हो जाएगा!’
लेकिन... लेकिन... उस स्थिति में, यह वहीं पहुँच गया है जहाँ इसे जाना था। अब यह पुलिस की ज़िम्मेदारी है कि यह देश से बाहर न जाए। आप इतने चिंतित क्यों हैं? क्या आप इन तस्करों को खुद पकड़ना चाहते हैं?
फेलुदा के जवाब देने से पहले ही टेलीफोन बजने लगा। लालमोहन बाबू पास ही खड़े थे, इसलिए उन्होंने फोन उठा लिया।
‘हैलो... जी हां, मैं बोल रहा हूं!’
तो वो कॉल उन्हीं के लिए थी। शायद पुलक घोषाल का कॉल था। नहीं, ऐसा नहीं था। बिलकुल नहीं हो सकता। श्री घोषाल कभी ऐसी कोई बात नहीं कह सकते जिससे लालमोहन बाबू का मुंह खुला रह जाए और हाथ इतना कांपने लगें। मैंने उन्हें रिसीवर कान से हटाते हुए देखा। रिसीवर भी कांप रहा था।
फेलुदा ने उसे उससे छीन लिया और अपने कान से लगा लिया। हालाँकि, शायद कुछ सुनाई न देने के कारण, उसने उसे लगभग तुरंत ही वापस कान पर रख लिया। 'क्या यह सान्याल था?' उसने पूछा।
लालमोहन बाबू ने सिर हिलाने की कोशिश की, लेकिन स्पष्ट रूप से यह भी उनके लिए मुश्किल था। शायद उनके शरीर की हर मांसपेशी जम गई थी।
‘उसने क्या कहा?’
‘क-क-कहा,’ लालमोहन बाबू ने खुद को झटकते हुए और खुद को संभालने की बहादुरी भरी कोशिश करते हुए कहा, ‘कहा कि अगर मैंने अपना मुंह खोला तो वो मेरा पेट फाड़ देगा!’
'ठीक है वह अच्छा है।'
‘ये क्या!’ लालमोहन बाबू ने फेलुदा को हैरानी से देखा। मुझे भी फेलुदा की बात अटपटी लगी। फेलुदा ने जल्दी से समझाया, ‘सिर्फ़ कभी-कभार उस तेज़ इत्र का इस्तेमाल करना काफ़ी नहीं था। मेरा मतलब है, उससे कोई सुराग नहीं मिलता था। मैं पक्का नहीं कह सकता था कि सान्याल खुद बॉम्बे आया था या यहाँ कोई उस इत्र का इस्तेमाल कर रहा था। अब मैं पक्का कह सकता हूँ।’
‘लेकिन वह मुझे क्यों परेशान कर रहा है?’ लालमोहन बाबू ने हताशा से रोते हुए कहा।

‘अगर मुझे यह पता होता, लालमोहन बाबू, तो कोई रहस्य ही नहीं रहता। अगर आपको उस सवाल का जवाब चाहिए, तो आपको थोड़ा धैर्य रखना होगा।’

आठ

उस शाम लालमोहन बाबू ने अपने खाने से खेलते हुए कहा कि उन्हें भूख नहीं है। फेलुदा ने कहा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि लालमोहन बाबू ने उस दोपहर कॉपर चिमनी में सबसे ज्यादा खाना खाया था।
पिछली रात हम सब खाने के बाद पान खरीदने बाहर गए थे। आज रात लालमोहन बाबू ने होटल से बाहर जाने से इनकार कर दिया। ‘भीड़भाड़ वाली सड़कों पर कौन बाहर जाना चाहेगा? मुझे यकीन है कि सान्याल के आदमी होटल पर नज़र रख रहे हैं। अगर मुझे किसी ने देख लिया तो उनमें से कोई एक सीधे मुझ पर चाकू से हमला कर देगा।’
अंत में, फेलुदा अकेले ही बाहर चले गए। लालमोहन बाबू मेरे साथ हमारे कमरे में ही बैठे रहे और लगातार बुदबुदाते रहे, 'आखिर मैंने वो पैकेट क्यों स्वीकार किया?' थोड़ी देर बाद, उन्होंने अपनी इस दुर्दशा के लिए किसी और बात को दोष देना शुरू कर दिया: 'मुझे हिंदी फिल्म के लिए कहानी क्यों लिखनी पड़ी?' आखिरकार, मैंने उन्हें कहते सुना, 'मैंने क्राइम थ्रिलर लिखना शुरू ही क्यों किया?'
कुछ ही मिनटों में फेलुदा वापस आया और उसने हमें अपने साथ लाया हुआ पान दिया। उसने लालमोहन बाबू से पूछा, “क्या आप अपने कमरे में अकेले सो पाएंगे?” लालमोहन बाबू ने कोई जवाब नहीं दिया। फेलुदा ने तसल्ली देते हुए कहा, “देखिए, गलियारे के आखिर में एक छोटा सा कमरा है। आपने देखा होगा ना? उस कमरे में हमेशा एक बेल बॉय रहता है। इसके अलावा, होटल के कुछ कर्मचारी रात भर ड्यूटी पर रहते हैं। यह शिवाजी महल नहीं है।”
शिवाजी किले का जिक्र सुनते ही लालमोहन बाबू एक बार फिर कांप उठे। हालांकि, करीब दस बजे उन्होंने हिम्मत जुटाकर हमें शुभ रात्रि कहा और अपने कमरे में लौट गए।
उसके जाने के तुरंत बाद मैं सोने चला गया। पुलक घोषाल की फिल्म ने मुझे बहुत थका दिया था—पूरे शहर में घूमने से भी कहीं ज़्यादा। मुझे पता था कि

फेलुदा जागता रहेगा। उसकी नोटबुक बेडसाइड टेबल पर पड़ी थी। उसने दिन भर में कई बार उसमें लिखा था। शायद अब वह कुछ और लिखेगा।
पहले मैं कभी-कभी सोने के सही समय को याद रखने की कोशिश करता था। लेकिन हर बार नाकाम रहा। आज रात भी कुछ अलग नहीं था। मुझे ठीक से याद नहीं कि मैं कब सोया, लेकिन मुझे वो पल याद है जब मैं जागा। कोई दरवाज़ा ज़ोर-ज़ोर से खटखटा रहा था और घंटी बार-बार बजा रहा था। मैं बिस्तर पर बैठ गया। फेलुदा का लैंप अभी भी जल रहा था; मेरी घड़ी में पौने एक बज रहे थे। फेलुदा उठे और दरवाज़ा खोला। लालमोहन बाबू कमरे में धड़ाम से अंदर आ गए।
वह हांफ रहा था, लेकिन डरा हुआ नहीं लग रहा था। जब उसने बात की, तो उसके शब्द जिज्ञासा भरे थे, लेकिन उनमें ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे घबराहट पैदा हो।
‘यह तो घोटाला है!’ उसने हैरानी से कहा। ‘मैं आपको बता रहा हूँ, यह सरासर घोटाला है!’
'अंदर आओ और बैठ जाओ,' फेलुदा ने कहा।
नहीं, नहीं, मैं बैठने के लिए बहुत उत्साहित हूँ। देखो, ये रहा वो मशहूर हार, वो कीमती गहने जो मुझे सौंपने थे!
लालमोहन बाबू ने फेलुदा के सामने जो रखा था, वह एक किताब थी। एक मशहूर किताब, अंग्रेजी में लिखी हुई। मैंने हाल ही में लैंसडाउन रोड की एक दुकान की खिड़की में उसकी एक प्रति देखी थी। वह श्री अरबिंदो की 'लाइफ डिवाइन' थी।
फेलुदा भी बस देखता रह गया। लालमोहन बाबू ने आगे कहा, “और देखो, इसकी जिल्द खराब है। पहले तीस पन्नों के बाद अगले कुछ पन्ने आपस में चिपके हुए हैं। अगर किसी ने इस किताब के लिए अच्छे खासे पैसे दिए हैं, तो एक-एक पैसा बर्बाद हो गया है। पुडुचेरी का कोई जिल्दसाज इतनी घटिया जिल्द कैसे बना सकता है?”
लेकिन... अगर यह असली पैकेट है, तो आपने उस दिन मिस्टर रेड शर्ट को क्या दिया था?
‘आपको यकीन नहीं होगा। सोचिए मैंने क्या किया? मैंने अपनी ही एक किताब उसे दे दी! जी हाँ, ‘द बैंडिट्स ऑफ बॉम्बे’! दरअसल, मैंने पुलक को अपनी पांडुलिपि की एक प्रति भेजी थी। तो मैंने सोचा कि अब मैं उसे अपनी शुभकामनाओं और हस्ताक्षर के साथ किताब की एक प्रति दे दूँ। दरअसल, मेरे

बैग में तीन और प्रतियाँ हैं, हर एक भूरे कागज में लिपटी हुई। मुझे पता है कि मेरे प्रशंसक पूरे देश में हैं... सोचा कि बॉम्बे में शायद कुछ से मिल जाऊँ, इसलिए अतिरिक्त प्रतियाँ ले आई। और उन्हीं में से एक को मैंने... हा हा हा!’
मैंने लालमोहन बाबू को इतने लंबे समय से इतना खुश नहीं देखा था। फेलुदा ने उनसे किताब ली, उस पर सरसरी नज़र डाली और पूछा, 'लेकिन सान्याल की धमकी का क्या? क्या उसने आपको फोन पर धमकी नहीं दी थी? यह 'दिव्य जीवन' से कैसे मेल खाता है?'
लालमोहन बाबू ने हार मानने से इनकार कर दिया। ‘खैर, कौन जाने कि वो सान्याल खुद ही था या नहीं? फोन पर आवाज पहचानना हमेशा मुमकिन नहीं होता, है ना? हो सकता है कोई सनकी मज़ाक कर रहा हो। मुंबई में कुछ भी हो सकता है। मतलब, अगर तीरंदज जैसी फिल्म पच्चीस हफ़्तों से ज़्यादा चल सकती है... तो और क्या कहूँ?’
'ठीक है, लेकिन कार में रखे उस परफ्यूम का क्या?'
‘वो? मुझे यकीन है कि हमारे ड्राइवर ने ही उसे लगाया होगा। वो तो एक फैशनेबल नौजवान है। क्या आपने उसका हेयरस्टाइल नहीं देखा? लेकिन जब हमने उससे सवाल पूछने शुरू किए, तो वो शर्मिंदा हो गया और परफ्यूम लगाने की बात मानने से इनकार कर दिया।’
तो फिर, सारे रहस्य सुलझ गए। अब आप आराम कर सकते हैं और चैन की नींद सो सकते हैं।
जी हां, मैं जरूर करूंगी। जब मैं सोने गई तो मुझे सिरदर्द हो रहा था, इसलिए मैंने दर्द निवारक दवा निकालने के लिए अपना बैग खोला। उसी से मुझे यह अद्भुत खोज मिली। खैर, अब जब सब ठीक हो गया है, तो मैं यह किताब आपके पास छोड़ रही हूं। शायद आपको आध्यात्मिक विषयों के बारे में पढ़ना चाहिए, इससे आपको कोई नुकसान नहीं होगा। शुभ रात्रि!
लालमोहन बाबू चले गए, और मैं वापस अपने बिस्तर पर चला गया।
‘ज़रा सोचिए, आपको जटायु की लिखी किताब की एक प्रति थमा दी जाए, जबकि आप 'दिव्य जीवन' की उम्मीद कर रहे थे। फेलुदा, आपको क्या लगता है उस व्यक्ति को कैसा लगा होगा?’

‘गुस्से में,’ फेलुदा ने तकिए पर सिर रखते हुए जवाब दिया। लेकिन उसने बत्ती बंद नहीं की। मुझे यह देखकर काफी हंसी आई कि उसने अपनी नीली नोटबुक एक तरफ रख दी और श्री अरबिंदो की किताब के पन्ने पलटने लगा।
मुझे लगता है कि इसी क्षण मुझे दोबारा नींद आ गई।

नौ

अगले दिन हमें पुणे की ओर जाने वाली सड़क पर खंडाला और लोनावला के बीच स्थित एक समतल पुलिया तक जाना था। वहीं पर फिल्म का अंतिम निर्णायक दृश्य फिल्माया जाना था। कुल मिलाकर फिल्म में ग्यारह 'एक्शन' दृश्य थे। पुलक घोषाल आखिरी दृश्य से शुरुआत करने वाले थे।
पूरे दृश्य की शूटिंग एक दिन में नहीं हो सकती थी। इसमें पूरे पाँच दिन लग जाते। हमने तय किया था कि अगर पहले दिन का अनुभव अच्छा रहा तो हम हर दिन शूटिंग देखेंगे। ट्रेन पाँचों दिन दोपहर एक से दो बजे के बीच एक घंटे के लिए उपलब्ध रहेगी। लेकिन डाकुओं के समूह के लिए रखे गए घोड़े और नायक के लिए रखी गई लिंकन कन्वर्टिबल कार किसी भी समय इस्तेमाल की जा सकती थी। वह दृश्य कुछ इस प्रकार था:
खलनायक ने असली इंजन चालक की जगह ले ली थी और ट्रेन चला रहा था। ट्रेन के एक डिब्बे में नायिका और उसके चाचा को बंधक बनाकर रखा गया था, उनके हाथ-पैर बंधे हुए थे। नायक एक मोटरकार में ट्रेन का पीछा कर रहा था। उसी समय, नायक का जुड़वा भाई—जिसे बचपन में डाकुओं ने अगवा कर लिया था और अब वह खुद डाकू बन चुका था—अपने पूरे गिरोह के साथ ट्रेन पर हमला करने के लिए निकला था। वह ट्रेन के इतने करीब पहुँच जाएगा कि घोड़े से सीधे उसमें कूद जाएगा। लगभग उसी समय, नायक भी अपनी कार में ट्रेन के पास पहुँच जाएगा और वहाँ पहुँचकर डाकू और खलनायक (जो इंजन चालक होने का नाटक कर रहा था) को लड़ते हुए देखेगा। खलनायक मारा जाएगा। आगे क्या होगा? . . . सब कुछ फिल्मी पर्दे पर सामने आएगा!
ऐसा प्रतीत होता है कि अंतिम दृश्य के तीन अलग-अलग संस्करण शूट किए जाने वाले थे। फिर निर्देशक यह तय करते कि स्क्रीन पर कौन सा संस्करण सबसे अच्छा दिखता है और उसे ही रखते हुए बाकी दो को हटा देते।
श्री घोषाल सुबह-सुबह थोड़ी देर के लिए आए। हमने उन्हें बताया कि हम जाने के लिए तैयार हैं और सभी व्यवस्थाएं पूरी हो चुकी हैं। उन्होंने कहा,

'लालूदा, मैं तुम्हें देखकर ही समझ गया कि तुम्हें तीरंदज फिल्म देखकर बहुत आनंद आया!'
पिछली रात की घटनाओं को याद करते हुए लालमोहन बाबू बीच-बीच में मुस्कुराते नज़र आ रहे थे। श्री घोषाल ने उनकी मुस्कान देखी और उसका कारण गलत समझ बैठे। लालमोहन बाबू ज़ोर से हँसे और बोले, 'शाबाश, मेरे बेटे! सोचो, कलकत्ता के हमारे गोरपार का एक लड़का इतनी बड़ी उपलब्धि हासिल कर सकता है! तुमने सबको दिखा दिया... हा हा!'
चूंकि हम सारा दिन बाहर रहने वाले थे, इसलिए फेलुदा ने मुझे खाने-पीने का सारा सामान हैंड लगेज में रखने को कहा। हमने संतरे, बिस्कुट और मिठाइयाँ, जो लालमोहन बाबू ने एक दिन पहले खरीदी थीं, पैक कीं और उन्हें कार में रख दिया। फिर लालमोहन बाबू ने होटल मैनेजर के पास अपना सारा पैसा जमा कर दिया और उससे रसीद ले ली। उन्होंने हमसे कहा, 'कौन जाने, कहीं कोई असली डाकू इन अभिनेताओं के साथ न मिल जाए?'
फेलुदा थोड़ी देर के लिए बाहर गया था—उसने कहा कि सिगरेट खरीदने गया था। उसकी सिगरेट पूरी तरह खत्म हो गई थी, और जिस जगह हम जा रहे थे, वहाँ मीलों तक शायद कोई दुकान न हो। उसके वापस आने के कुछ ही देर बाद हम निकल पड़े। गाड़ी में अभी भी गुलबहार की महक आ रही थी।
ठाणे स्टेशन मुंबई से लगभग पच्चीस किलोमीटर दूर था। वहाँ से सड़क दाहिनी ओर मुड़कर राष्ट्रीय राजमार्ग से जुड़ती थी और पुणे की ओर जाती थी। खंडाला उसी सड़क पर अस्सी किलोमीटर आगे था। उस सुबह मौसम बहुत सुहावना था। तेज़ हवा के झोंकों से आसमान में बिखरे बादल इधर-उधर तैर रहे थे और सूरज बार-बार उनके बीच से झाँककर शहर को अपनी रोशनी से नहला रहा था। श्री घोषाल पहले ही मौसम के बारे में बता चुके थे। कहा जा रहा था कि यह आउटडोर शूटिंग के लिए 'आदर्श' है। लालमोहन बाबू न सिर्फ मौसम से, बल्कि आस-पास के हर दृश्य से प्रसन्न थे। उन्होंने कहा, 'अब मुझे विदेश जाने की चिंता नहीं! मुंबई इतनी खूबसूरत जगह है, भला कौन इंग्लैंड जाना चाहेगा? आपने बसें देखी हैं? एक भी बस खचाखच भरी नहीं है, एक भी बस से लोग बाहर नहीं लटक रहे हैं। अरे वाह, इन लोगों में कितनी ज़बरदस्त नागरिक भावना है!'
हमें ठाणे पहुँचने में लगभग एक घंटा लगा, हम लगभग सवा नौ बजे पहुँचे। हमारे पास काफी समय था, इसलिए हम एक चाय की दुकान पर रुके और मसाला चाय पी। हमारे ड्राइवर, स्वरूपलाल, भी हमारे साथ आ गए।

ठाणे से निकलने के कुछ ही मिनटों बाद मुझे एहसास हुआ कि हम पश्चिमी घाट की पहाड़ियों के समानांतर यात्रा कर रहे हैं। जो रेलवे ट्रैक मैंने पहले देखा था, वह गायब हो चुका था। वह उत्तर दिशा में कल्याण की ओर चला गया था। कल्याण से वह वापस मुड़कर दक्षिण की ओर माथेरान से होते हुए पुणे की ओर जाता। हमारा लेवल क्रॉसिंग उस खास रास्ते के लगभग बीच में स्थित था। हमारी यात्रा शांतिपूर्ण रही, बस एक बार लालमोहन बाबू संतरे के बीज से अटक गए। फेलुदा पूरी यात्रा के दौरान चुप रहे— उनके चेहरे से यह समझना नामुमकिन था कि वे क्या सोच रहे हैं। मुझे अपने अनुभव से पता था कि जब वे चुप हो जाते थे, तो इसका मतलब यह नहीं था कि वे किसी बात को लेकर चिंतित थे। लगभग साढ़े बारह बजे हम खंडाला से गुज़रे। एक मील आगे ही हमें बहुत सारे लोग दिखाई दिए। ऐसा लग रहा था मानो सड़क किनारे कोई मेला लग गया हो। जैसे- जैसे हम पास पहुँचे, मुझे गाड़ियों की इतनी बड़ी संख्या देखकर हैरानी हुई। आखिर मेले में इतनी सारी गाड़ियाँ क्यों? तभी मेरी नज़र एक और चीज़ पर पड़ी—घोड़े! अब मुझे समझ आया कि यह 'मेला' श्री घोषाल की टीम थी, जो जेट बहादुर की शूटिंग शुरू करने के लिए यहाँ इकट्ठा हुई थी। वहाँ कम से कम सौ लोग इधर-उधर घूम रहे थे; और बहुत सारा सामान और अन्य साजो-सामान था... कैमरे, रिफ्लेक्टर, लाइटें, बड़ी-बड़ी दरी... यह एक बहुत बड़ा आयोजन था।
हमारे ड्राइवर ने एक एम्बेसडर और एक बस के बीच की जगह में गाड़ी घुसाई और वहीं पार्क कर दी। जैसे ही हम बाहर निकले, श्री घोषाल हमारा अभिवादन करने के लिए आगे आए। उन्होंने सफेद टोपी पहन रखी थी और उनके गले में दूरबीन जैसी कोई चीज लटकी हुई थी।
‘सुप्रभात! सब ठीक है?’ उसने पूछा।
हमने सिर हिलाया। ‘सुनिए,’ उन्होंने आगे कहा, ‘मेरे पास श्री गोर का संदेश है। वे माथेरान गए हैं—मुझे लगता है कि कुछ रेलवे अधिकारियों से बात करने और शायद कुछ भुगतान करने के लिए। वे खुद यहाँ आएंगे, या तो उसी ट्रेन से जिसमें हम जा रहे हैं, या कार से। ट्रेन के आते ही आपको बता दिया जाएगा। वैसे भी, चाहे श्री गोर समय पर पहुँचें या न पहुँचें, आप तीनों को प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठ जाना। क्या यह बात स्पष्ट है?’
'बिल्कुल सही,' फेलुदा ने कहा।
प्रतीक्षा करते हुए हमारी मुलाकात कुछ अन्य कर्मचारियों से हुई। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि बॉम्बे फिल्म इंडस्ट्री में इतने सारे

बंगाली काम करते हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि उनमें से एक ने फेलुदा को पहचान लिया। फेलुदा का नाम सुनते ही कैमरामैन दाशु घोष ने अपनी भौंहें सिकोड़ लीं। 'मित्तर? क्या आप वही जासूस हैं—?'
‘जी हां,’ फेलुदा ने जल्दी से कहा, ‘लेकिन कृपया इसे अपने तक ही रखना।’ ‘क्यों? तुम हमारी शान हो। जब एलोरा में वह मूर्ति—’
फेलुदा ने अपनी उंगली होठों पर रखी। दाशु घोष ने धीमी आवाज में पूछा, 'क्या आप किसी मामले के सिलसिले में यहां आए हैं?'
नहीं, नहीं। मैं यहाँ अपने एक दोस्त के साथ छुट्टी मनाने आया हूँ।
दशु घोष इक्कीस साल तक बंबई में रहे थे। इसके बावजूद, वे नियमित रूप से बंगाली किताबें पढ़ते थे और जटायु की दो-तीन किताबें पढ़ चुके थे। उस दिन उनके साथ दो और कैमरामैन काम कर रहे थे। वे भारत के अन्य हिस्सों से आए थे। श्री घोषाल के साथ काम करने वाले चार सहायकों में से दो बंगाली थे। लेकिन अभिनेताओं में से कोई भी बंगाल से नहीं था। अर्जुन मेहरोत्रा के अलावा, खलनायक की भूमिका में मिकी थे। उनका उपनाम नहीं था, वे सिर्फ मिकी थे। बंबई में उस समय उभरते हुए खलनायकों में उन्हें सर्वश्रेष्ठ माना जाता था। कहा जाता था कि उन्होंने सैंतीस फिल्मों के लिए अनुबंध पर हस्ताक्षर किए थे, लेकिन उनमें से उनतीस फिल्मों की पटकथा बदली जा रही थी, सिर्फ लड़ाई के दृश्यों की संख्या कम करने के लिए। शुक्र है कि जेट बहादुर में सिर्फ चार ही लड़ाई के दृश्य थे। अगर इससे ज्यादा होते, तो श्री घोषाल और श्री गोर बड़ी मुसीबत में पड़ जाते।
यह सब हमें प्रोडक्शन मैनेजर सुदर्शन दास से पता चला। वे ओडिशा के रहने वाले थे। दाशु घोष की तरह वे भी कई वर्षों तक मुंबई में रहे थे; लेकिन जेट बहादुर फिल्म पूरी होते ही उन्होंने कटक लौटने और उड़िया फिल्मों का निर्देशन शुरू करने की योजना बनाई।
फेलुदा दूसरे समूह के पास चले गए। डाकुओं का किरदार निभाने वाले सभी कलाकार मुख्य दृश्य के लिए मेकअप और पोशाक पहन रहे थे। अचानक, मैंने देखा कि उनमें से एक व्यक्ति फेलुदा से बात कर रहा था। उत्सुकतावश, मैं आगे बढ़ा और उनकी आवाज़ सुनकर समझ गया कि वह कोई और नहीं बल्कि कुंग-फू मास्टर विक्टर पेरुमल थे। उनका मेकअप हीरो के जुड़वां भाई जैसा था। उनका काम था दौड़ते घोड़े से कूदकर ट्रेन की छत पर उतरना। फिर उन्हें छह डिब्बों को पार करके इंजन में घुसना था, जहाँ उन्हें खलनायक मिकी से लड़ना था और उसे

मारना था। इसके बाद उनका हीरो से एक नाटकीय टकराव होना था, जो बीस साल पहले अपने जुड़वां भाई से बिछड़ गया था।
लालमोहन बाबू ने भव्य इंतज़ाम देखे और चुप हो गए। उन्हें वास्तव में खुश होना चाहिए था क्योंकि सारा काम उनकी कहानी के इर्द-गिर्द ही केंद्रित था। उन्होंने मुझे अपने भाव बताए: 'मुझे कुछ अजीब सा लग रहा है, तपेश,' उन्होंने समझाया। 'कभी-कभी तो मुझे शक्ति का अहसास होता है, यह सोचकर कि मैंने वह कहानी लिखी है जिसके कारण इतना काम, इतनी जटिल व्यवस्थाएँ, इतना खर्च हुआ है! फिर भी, कभी-कभी मुझे बहुत से लोगों को इतनी परेशानी देने का थोड़ा सा अपराधबोध भी होता है। और मैं यह नहीं भूल सकता कि यहाँ लेखक को कोई पहचान नहीं मिलती। इस यूनिट में कितने लोग जटायु का नाम जानते हैं, बताइए?' मैंने उसे दिलासा देने की कोशिश की। 'अगर फिल्म सफल हुई, तो हर कोई तुम्हारा नाम जान जाएगा!'
'मुझे ऐसी ही आशा है!' जटायु ने आह भरी।
अपना मेकअप पूरा कर चुके डाकू अपने घोड़ों पर सवार होकर इधर-उधर भाग रहे थे। सभी घोड़े पहले एक बड़े बरगद के पेड़ के नीचे इकट्ठा थे। कुल नौ घोड़े थे।
एक मिनट बाद, एक विशाल सफेद लिंकन कन्वर्टिबल कार आई, जिसकी रंगीन खिड़कियां ऊपर उठी हुई थीं। उसमें नायक और खलनायक सवार थे। उस दिन नायिका की कोई ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि उसके हाथ-पैर बंधे हुए दृश्य बाद में स्टूडियो में फिल्माए जाने थे। मैंने सोचा, अच्छा ही हुआ। दोनों पुरुष सितारों ने ही दर्शकों में काफी हलचल मचा दी थी। नायिका की उपस्थिति से मामला और बिगड़ जाता।
सुदर्शन दास ने हमें चाय दी थी। हम खाली प्याले लौटा ही रहे थे कि अचानक लाउडस्पीकर पर एक कर्कश आवाज सुनाई दी: 'ट्रेन आ रही है! ट्रेन आ गई है! सब तैयार हो जाओ!'

दस

एक पुराने ज़माने का इंजन ज़ोर-ज़ोर से धुआँ उगलता हुआ दिखाई दिया। उसके पीछे आठ डिब्बे थे। वह ठीक एक बजने से पाँच मिनट पहले लेवल क्रॉसिंग पर रुक गया।
दूर से ही हम देख सकते थे कि ट्रेन में केवल एक ही प्रथम श्रेणी का डिब्बा था। बाकी डिब्बों में पहले से ही यात्री मौजूद थे—ट्रेन के माथेरान से निकलते ही उन्हें वहाँ बिठा दिया गया था। उनमें पुरुष, महिलाएं और बच्चे, सभी उम्रदराज लोग थे। ट्रेन के आते ही श्री घोषाल बेहद व्यस्त हो गए। हम उन्हें एक कैमरे से दूसरे कैमरे की ओर, नायक से खलनायक की ओर और एक सहायक से दूसरे सहायक की ओर भागते हुए देख सकते थे। यहाँ तक कि लालमोहन बाबू को भी यह मानना पड़ा कि फिल्म केवल निर्माता के पैसे से ही नहीं बनती। अर्जुन मेहरोत्रा—नायक—तैयार थे। वे अपनी कार चला रहे थे और उन्होंने चश्मा लगा रखा था। उनके बगल में उनका मेकअप मैन और दो अन्य लोग बैठे थे, शायद उनके साथी। एक खुली छत वाली जीप भी तैयार थी। उसमें एक तिपाई पर कैमरा लगा था। विक्टर और उसके साथी अपने घोड़ों के साथ पहले ही निकल चुके थे। वे चलती ट्रेन से संकेत का इंतजार करेंगे और फिर एक खास पहाड़ी से नीचे उतरेंगे। उसके बाद वे ट्रेन के साथ-साथ सरपट दौड़ते हुए दिखाई देंगे। मैंने मिकी को इंजन की ओर जाते देखा, उसके साथ श्री घोषाल का एक सहायक भी था।
हमें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। मिस्टर गोर का कोई अता-पता नहीं था। क्या वो ट्रेन में थे? इसका कोई पता नहीं चल सकता था।
भीड़ अब तक तितर-बितर हो चुकी थी, लेकिन किसी ने हमें यह नहीं बताया था कि क्या करना है। लालमोहन बाबू बेचैन होने लगे। उन्होंने पूछा, 'क्या हो रहा है, फेलुदा बाबू? क्या हमें पूरी तरह भुला दिया गया है?'
‘खैर, हमें फर्स्ट क्लास के डिब्बे में बैठने के लिए कहा गया था, और ऐसा केवल एक ही डिब्बा है। तो हमें उसमें बैठ जाना चाहिए... लेकिन चलिए दो मिनट और इंतजार करते हैं।’

दो मिनट पूरे होने से पहले ही इंजन ने सीटी बजाई, और हमने सुदर्शन दास को हमें पुकारते हुए सुना: 'देखिए, सज्जनों! इधर आइए!'
हम अपने बैग पकड़े हुए प्रथम श्रेणी के डिब्बे की ओर भागे। श्री दास हमारे साथ डिब्बे के दरवाजे तक गए। उन्होंने कहा, 'मुझे व्यवस्थाओं के बारे में कुछ पता नहीं था। किसी ने मुझे बस इतना बताया कि श्री गोर आधे घंटे में आ जाएंगे। पहला शॉट लगने के बाद, यह ट्रेन यहीं वापस लौट जाएगी।'
हम डिब्बे में दाखिल हुए, जहाँ एक बेंच पर एक बड़ी बोतल रखी थी और साथ में चार सफेद गत्ते के डिब्बे भी थे। हर डिब्बे पर सफारी रेस्टोरेंट का नाम छपा था। दूसरे शब्दों में कहें तो, यही हमारा दोपहर का भोजन था। श्री गोर की व्यस्तता के बावजूद उनकी देखभाल और ध्यान देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया।
एक और सीटी बजी, फिर ट्रेन झटके से चलने लगी। हम सब बाहर की गतिविधियों को देखने के लिए तैयार हो गए। यह एक बिल्कुल नया अनुभव होने वाला था, इसलिए मैं बहुत उत्साहित था।
ट्रेन अब रफ्तार पकड़ रही थी। पटरी के दाहिनी ओर एक सड़क थी। हमारे बाईं ओर, बहुत जल्द, पहाड़ियाँ दिखाई देंगी। डाकू बाईं ओर से आएंगे, और नायक दाहिनी ओर से।
थोड़ी देर बाद, जब ट्रेन तेज़ चलने लगी, तो कैमरे वाली जीप सड़क पर आती हुई दिखाई दी। उसके पीछे हीरो की कार थी। अब हीरो अकेला था, उसके साथी जा चुके थे। कैमरा उसकी ओर था। कैमरामैन के अलावा जीप में तीन और लोग थे। उनमें से एक श्री घोषाल का सहायक था। वह माइक्रोफोन से हीरो को निर्देश दे रहा था: 'बाईं ओर देखो!' और 'अब दाईं ओर देखो!'
श्री घोषाल स्वयं दूसरे कैमरे को संभाल रहे थे, जिसे एक डिब्बे के अंदर रखा गया था। तीसरा कैमरा ट्रेन के पिछले हिस्से की ओर, आखिरी डिब्बे की छत पर लगा था।
हीरो उतनी तेज़ गाड़ी नहीं चला रहा था, जो मुझे थोड़ा निराशाजनक लगा। लेकिन फेलुदा ने बताया कि फिल्म में, कैमरे की गति कम कर दी गई थी ताकि इस खास दृश्य को फिल्माया जा सके, इसलिए गाड़ी की गति काफी तेज़ दिखाई देगी। उन्होंने आगे कहा, 'इसके अलावा, वह कार उतनी धीमी गति से नहीं चल रही है जितना आप सोच रहे हैं, क्योंकि वह हमारी ट्रेन के साथ तालमेल बिठाने के लिए चल रही है; और ट्रेन काफी तेज गति से चल रही है, है ना?'

सही है। मैंने इस बारे में सोचा ही नहीं था।
कुछ ही मिनटों में हीरो की कार और जीप हमारे डिब्बे के पास से गुज़रकर आगे सड़क पर चली गईं। चूंकि यह एक पुराने ज़माने का डिब्बा था, इसलिए खिड़कियों पर सलाखें नहीं थीं। मैं बाहर झुककर देखना चाहता था कि बाकी का दृश्य कैसे फिल्माया जा रहा है, लेकिन फेलुदा ने मुझे रोक दिया। 'अगर तुम जेट बहादुर को सिनेमाघर में देखने जाओ और खुद को स्क्रीन पर ट्रेन से बाहर झुकते हुए पाओ, तो तुम्हें कैसा लगेगा?'
मुझे अपना सिर बाहर निकालने की इच्छा को रोकना पड़ा। फिर मैंने उठकर दूसरी तरफ की खिड़की के पास बैठने का फैसला किया। उठते ही गुलबहार की खुशबू मेरी नाक में घुस गई।
अचानक मुझे एहसास हुआ कि फेलुदा अब मेरे साथ नहीं था। वह उछलकर डिब्बे के दूसरे छोर पर चला गया था। उसकी निगाहें बाथरूम के दरवाजे पर टिकी थीं और उसका हाथ जैकेट की जेब में था।
‘कोई फायदा नहीं, श्रीमान मिटर। अपनी बंदूक मत निकालिए—एक रिवॉल्वर पहले से ही आपकी ओर तनी हुई है!’ एक आवाज ने कहा।
हमारे बाईं ओर का दरवाज़ा खुला। एक आदमी अंदर आया और बाहर निकलने का रास्ता रोककर खड़ा हो गया। उसके हाथ में एक रिवॉल्वर थी। मैंने उसे पहले कहाँ देखा था? अरे हाँ, ये तो वही लाल शर्ट वाला आदमी था! लेकिन आज उसने अलग कपड़े पहने थे, और उसके चेहरे पर एक क्रूर भाव था जो उस दिन नहीं था जब हमने उसे हवाई अड्डे पर देखा था। अब उसे देखकर मुझे कोई शक नहीं रहा कि यह आदमी एक हत्यारा है, और वह बिना किसी झिझक के किसी को भी मार सकता है। उसकी रिवॉल्वर सीधे फेलुदा पर तनी हुई थी।
बाथरूम का दरवाजा, जो थोड़ा खुला हुआ था, पूरी तरह खुल गया और पूरा कमरा गुलबहार की खुशबू से भर गया।
‘सान…सान…’ लालमोहन बाबू ने धीरे से बुदबुदाया, फिर उनकी आवाज धीमी पड़ गई। उनका पूरा शरीर भय से सिकुड़ गया था।
‘जी हां, मैं सान्याल हूं,’ अजनबी ने कहा, ‘और मेरा असली काम आपसे है, श्री गांगुली। आप ही तो ये पैकेट यहां लाए हैं, है ना? अपना थैला खोलिए और मुझे दे दीजिए। अगर आपने नहीं दिया तो क्या होगा, ये बताने की मुझे जरूरत नहीं है।’
‘पी-पी-पैकेट...?’

‘आप जरूर जानते होंगे कि मैं किस पैकेट की बात कर रहा हूँ? मैं उस दिन कलकत्ता हवाई अड्डे पर आपसे सिर्फ आपकी अपनी किताब की एक प्रति देने के लिए तो नहीं मिला था, है ना? चलिए, मुझे असली पैकेट दीजिए।’
'आप गलत समझ रहे हैं। वह पैकेट मेरे पास है, श्री गांगुली के पास नहीं।' ट्रेन से इतना शोर हो रहा था कि सबको अपनी बात सुनाने के लिए ऊंची आवाज में बोलना पड़ रहा था; लेकिन फेलुदा धीरे और स्थिर स्वर में बोला। फिर भी, उसके शब्द सान्याल के कानों तक पहुंचे और चश्मे के पीछे उसकी आंखें चमक उठीं। ‘तुमने ‘लाइफ डिवाइन’ के इतने पन्ने नष्ट कर दिए। क्या इससे तुम्हें कोई विशेष लाभ हुआ?’ फेलुदा अभी भी शांत भाव से बोल रहा था, उसके शब्द संयमित थे।
‘निम्मो,’ सान्याल ने गुंडे की ओर तिरछी नज़र से देखते हुए कड़े स्वर में कहा, ‘अगर यह आदमी कोई गड़बड़ करे तो इसे खत्म कर देना। अपने हाथ ऊपर रखना, मिस्टर मिटर।’
‘क्या तुम बहुत बड़ा जोखिम नहीं उठा रहे हो?’ फेलुदा ने पूछा। ‘तुम हमें रिहा नहीं करोगे, चाहे तुम्हें जो चाहिए वो मिल ही जाए? तुम वैसे भी हमारा अंत करने वाले हो। लेकिन ट्रेन के रुकने के बाद तुम्हारा क्या होगा? क्या तुमने इसके बारे में सोचा है?’
‘ये तो आसान है,’ सन्याल के चेहरे पर एक शैतानी मुस्कान आ गई। ‘यहाँ मुझे कोई नहीं जानता। इस ट्रेन में इतने सारे यात्री हैं—तुम्हें क्या लगता है कि मैं उनके बीच गायब नहीं हो सकता? तुम्हारी लाशें यहीं पड़ी रहेंगी, और मैं दूसरे डिब्बे में चला जाऊँगा। बात इतनी ही सरल है।’
फेलुदा और मैंने पहले भी कई मुश्किल हालातों का सामना किया था और इससे मुझे यह सीख मिली थी कि आसानी से हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। लेकिन, इस समय, हालांकि मैं शांत रहने की पूरी कोशिश कर रहा था, एक चीज़ मुझे बार-बार डरा रही थी। वह था निमो का चेहरा। मैंने ऐसे किरदारों के बारे में सिर्फ पढ़ा था। उसकी आँखों में घोर द्वेष झलक रहा था। उसने दरवाज़ा बंद कर लिया था और अब उस पर टिका हुआ था। उसकी बढ़िया सूती कढ़ाई वाली कमीज़ हवा में लहरा रही थी; ट्रेन के हिलने-डुलने से उसका दाहिना हाथ थोड़ा काँप रहा था, लेकिन रिवॉल्वर अभी भी फेलुदा की तरफ तनी हुई थी।
सान्याल धीरे-धीरे आगे बढ़ा। उस गंध से मेरी नाक जलने लगी थी। उसकी नज़र फेलुदा के बैग पर टिकी थी। यह एयर इंडिया का बैग था, जो सान्याल के सामने

एक बेंच पर रखा था। लालमोहन बाबू मेरे पीछे खड़े थे, इसलिए मैं उनके चेहरे के हाव-भाव नहीं देख पा रही थी। लेकिन ट्रेन के शोर के बावजूद, मैं उनकी तेज़ साँसें सुन सकती थी, जैसे कोई अस्थमा का मरीज़ साँस ले रहा हो। ट्रेन अपनी रफ्तार से आगे बढ़ रही थी। इसका मतलब था कि गोलीबारी तय योजना के मुताबिक ही हो रही थी। क्या मिस्टर गोर को इस बात का जरा भी अंदाजा था कि उन्होंने कितनी बड़ी गड़बड़ कर दी है?
सन्याल बैठ गया, बैग उठाया और उसका कुंडा दबाया। लेकिन वह नहीं खुला। बैग लॉक था।
‘चाबी कहाँ है? वो कहाँ है?’ सान्याल का पूरा चेहरा अधीरता और गुस्से से बिगड़ गया था। ‘तुमने उसे कहाँ रख दिया?’
'मेरी जेब में,' फेलुदा ने शांत भाव से उत्तर दिया।
‘कौन सी जेब?’
'सही।'
फेलुदा ने अपना रिवॉल्वर वहीं रखा था। मुझे पता था।
सन्याल गुस्से से लाल होकर खड़ा हो गया। कुछ क्षणों की अनिश्चितता के बाद, वह अचानक मेरी ओर मुड़ा। 'इधर आओ!' वह दहाड़ा।
फेलुदा ने मेरी तरफ देखा। मैं समझ गया कि वह चाहता था कि मैं वही करूं जो मुझे कहा गया था।
जैसे ही मैं फेलुदा की ओर बढ़ने लगा, एक अलग सी आवाज़ मेरे कानों में पड़ी। यह सिर्फ़ ट्रेन की आवाज़ नहीं थी। मुझे सरपट दौड़ते घोड़ों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। मुझे पता भी नहीं चला कि ट्रेन पहाड़ियों तक पहुँच चुकी थी, जो अब बाईं ओर फैली हुई थीं। जब तक मैं फेलुदा की जेब में हाथ डाल पाता, डाकुओं का गिरोह धूल उड़ाता हुआ तेज़ी से पहाड़ी से नीचे उतर रहा था।
मेरी उंगलियां सबसे पहले रिवॉल्वर तक पहुंचीं, फिर चाबी से छू गईं।
'उसे दे दो,' फेलुदा ने मुझसे कहा।
मैंने चाबी सान्याल को दे दी। फेलुदा के हाथ अभी भी ऊपर उठे हुए थे।
सान्याल ने थैला खोला। बाकी सब चीज़ों के ऊपर लाइफ डिवाइन रखी थी। सान्याल ने उसे बाहर निकाला।
खिड़की के बिल्कुल पास घोड़ों के खुरों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। एक नहीं, बल्कि कई घोड़े पहाड़ी से नीचे दौड़ते हुए आए थे और अब पटरी के किनारे- किनारे ट्रेन के साथ-साथ सरपट दौड़ रहे थे।

सन्याल ने पन्ने तेज़ी से पलटे, जब तक कि वह उस जगह नहीं पहुँच गया जहाँ कई पन्ने आपस में चिपके हुए थे। फिर उसने कुछ अजीबोगरीब किया। पन्ने पलटने के बजाय, वह उन्हें खरोंचने और नोचने लगा। अचानक, एक पन्ना फट गया, जिससे एक चौकोर 'खोखला' हिस्सा दिखाई दिया। कई पन्नों के बीच से एक निश्चित भाग काटकर वह खोखला हिस्सा बनाया गया था।
सन्याल ने उसमें झाँका और उसके चेहरे का भाव तुरंत बदल गया। यह सचमुच देखने लायक था। पता नहीं वह क्या मिलने की उम्मीद कर रहा था, लेकिन उस खोखले में लगभग आठ सिगरेट के टुकड़े, एक दर्जन इस्तेमाल की हुई माचिसें और काफी मात्रा में राख थी।
फेलुदा ने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि आपको बुरा नहीं लगेगा, लेकिन मैं इसे ऐशट्रे के रूप में इस्तेमाल करने से खुद को रोक नहीं पाया।'
अब सान्याल इतनी जोर से चिल्लाया कि मुझे यकीन था कि पूरी ट्रेन उसकी आवाज सुन सकती थी।
‘तुम्हें लगता है कि तुम इससे बच निकलोगे? असली चीज़ कहाँ है?’
‘कौन सी चीज़ें?’
‘अरे बदमाश! क्या तुम्हें पता नहीं मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ?’ 'बिल्कुल। लेकिन मैं चाहता हूं कि आप इसे स्पष्ट रूप से बताएं।'
‘यह कहाँ है?’ सान्याल ने फिर दहाड़ लगाई।
‘मेरी जेब में।’
‘कौन सी जेब?’
‘बाएं वाला।’
अब डाकू खिड़की के ठीक बाहर थे। पहाड़ी बहुत करीब आ गई थी। खिड़की से बहुत सारी धूल अंदर आ रही थी।
'तुम हो!'
मुझे पता था कि मुझे एक बार फिर आदेश दिया जाएगा।
‘बस वहीं खड़े मत रहो—उसकी जेब से निकालो!’
इस बार मुझे फेलुदा की बाईं जेब में हाथ डालना पड़ा। जो चीज़ मुझे मिली, वैसी मैंने पहले कभी अपने हाथों में नहीं पकड़ी थी। वह मोतियों और हीरों से जड़ा एक हार था। मैंने सोचा, ऐसा अद्भुत आभूषण तो केवल राजाओं और सम्राटों के लिए ही उपयुक्त होगा।

‘मुझे दे दो!’ सान्याल की आँखों में एक बार फिर चमक आ गई थी, क्रोध से नहीं, बल्कि लालच और प्रसन्नता से।
मैंने उसकी ओर हाथ बढ़ाया। फेलुदा ने अपने हाथ ऊपर उठाए रखे। लालमोहन बाबू कराह रहे थे। डाकू...
टकरा जाना!
किसी भारी चीज़ से गाड़ी पर ज़ोरदार टक्कर हुई, जिससे वह थोड़ी हिल गई। अगले ही पल, निमो ज़मीन पर लोट रहा था। किसी ने खिड़की से पैर अंदर डालकर उसे ज़ोर से लात मारी थी। उसके हाथ में मौजूद बंदूक चल गई, गोली छत पर लगे एक बत्ती पर लगी और उसे तोड़ दिया। पलक झपकते ही, फेलुदा ने अपने हाथ नीचे किए और अपनी रिवॉल्वर निकाल ली।
फिर बाईं ओर का दरवाजा दोबारा खुला और डाकू के वेश में एक आदमी हमारी गाड़ी में चढ़ गया। हम तीनों उसे जानते थे।
‘धन्यवाद, विक्टर!’ फेलुदा ने कहा।

ग्यारह

सन्याल एक बेंच पर धड़ाम से बैठ गया। वह एक बार फिर कांप रहा था—लेकिन इस बार क्रोध से नहीं, भय से। वह जानता था कि अब बचने का कोई रास्ता नहीं है। इसी बीच, किसी को जरूर कुछ गड़बड़ महसूस हुई होगी और उसने रस्सी खींच दी होगी, क्योंकि ट्रेन अचानक रुक गई। रस्सी खींचे बिना ट्रेन रुकती ही नहीं। कुछ ही सेकंड में, हमें एक अजीब सी अफरा-तफरी सुनाई दी। कई आवाजें एक ही नाम पुकार रही थीं: 'विक्टर! विक्टर! विक्टर, तुम कहाँ चले गए?'
मुझे श्री घोषाल की आवाज़ सुनाई दी। विक्टर पेरुमल ने गड़बड़ कर दी थी। उसे ट्रेन की छत पर कूदना था। लेकिन उसने ऐसा करने के बजाय हमारे डिब्बे में छलांग लगा दी।
फेलुदा दरवाजे से बाहर झुककर बोला, ‘श्रीमान घोषाल! इधर आइए!’ श्रीमान घोषाल बेहद परेशान और व्याकुल नज़र आ रहे थे। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि इतने जटिल दृश्य की शूटिंग में किसी भी तरह की देरी से भारी नुकसान हो सकता था, शायद तीस हजार रुपये तक का।
‘विक्टर, तुम्हें क्या हुआ है? क्या तुम पूरी तरह से पागल हो गए हो?’ उसने पूछा।
फेलुदा ने कहा, 'श्री घोषाल, अगर आपकी फिल्म में किसी को जेट बहादुर कहलाने का हकदार माना जाए, तो वह विक्टर पेरुमल ही हैं।'
‘इसका क्या मतलब है?’ श्री घोषाल ने पूछा। अब वे असमंजस में दिख रहे थे, लेकिन असमंजस से कहीं अधिक उन्हें झुंझलाहट हो रही थी।
‘इसके अलावा,’ फेलुदा ने आगे कहा, ‘उस तस्कर की भूमिका इस आदमी को मिलनी चाहिए थी, न कि तुम्हारे परमेश कपूर नाम के अभिनेता को।’
‘आप क्या बकवास कर रहे हैं, श्री मित्तर? यह आदमी कौन है?’ श्री घोषाल ने सान्याल की ओर देखा।
तब तक सड़क पर दो वाहन दिखाई दे चुके थे। एक पुलिस जीप थी और दूसरी पुलिस वैन। जीप हमारे डिब्बे के बगल में आकर रुकी। इंस्पेक्टर पटवर्धन उससे बाहर निकले।

श्री घोषाल के प्रश्न के उत्तर में, फेलुदा सान्याल के पास गया, उसकी दाढ़ी और मूंछें पकड़कर खींचकर अलग कर दीं, फिर उसकी विग और चश्मा भी उतार दिया। फेलुदा ने टिप्पणी की, 'अगर मैं आपके शरीर से वह गंध हटा पाता, श्री गोर, तो मुझे बहुत खुशी होती। अफसोस की बात है कि यह काम तो फेलु मित्तर भी नहीं कर सकता।'
'ललूदा, तुम्हें किसने बताया कि अगर फिल्म के निर्माता को गिरफ्तार कर लिया जाए तो फिल्म अधूरी रह जाएगी?'
यह सवाल श्री घोषाल ने पूछा था। सच कहें तो, लालमोहन बाबू ने कुछ भी नहीं बोला था। वे बस वहीं बैठे थे, उदास और गुमसुम लग रहे थे। कोई भी समझ सकता था कि वे जेट बहादुर के भविष्य को लेकर चिंतित थे।
श्री घोषाल ने आगे कहा, ‘कोई भी हमारी फिल्म को रोक नहीं सकता। गोर चाहे जेल जाए—या नरक जाए—या कहीं भी—लेकिन क्या आप नहीं देखते, वह बॉम्बे में अकेला निर्माता नहीं था? चुन्नी पंचोली हैं; वह एक साल से ज़्यादा समय से मुझसे उनके लिए फिल्म बनाने के लिए गुहार लगा रहे हैं। मैं फिर से काम शुरू कर दूंगा, मेरी बात याद रखना। बॉम्बे छोड़ने से पहले ही आप मुझे एक नए बैनर तले फिल्म की शूटिंग करते हुए देखेंगे।’
उस दिन, डेढ़ बजे गोलीबारी पूरी तरह से बंद हो गई थी। गोर और निमो को गिरफ्तार कर हथकड़ी पहना दी गई थी। नानासाहेब का नौलखा हार पुलिस की हिरासत में था।
फेलुदा को पहले दिन की शूटिंग के दौरान ही गड़बड़ी का आभास हो गया था। सुबह जब उन्होंने सिगरेट खरीदने जाने का बहाना बनाया था, तो असल में वे पटवर्धन से बात करने गए थे। गोर ने कलकत्ता में बारह साल बिताए थे। वे डॉन बॉस्को के ही नहीं, बल्कि सेंट जेवियर्स के भी छात्र रहे थे। इसलिए वे बंगाली बहुत अच्छी तरह बोल सकते थे, हालांकि बंबई में उन्हें अंग्रेजी के अलावा सिर्फ हिंदी और मराठी बोलते हुए ही सुना गया था।
हम खंडाला में एक डाक बंगले के बरामदे में बैठे थे। वह जगह बहुत सुंदर थी और हवा में हल्की ठंडक थी। मैंने सुना था कि मुंबई से लोग अक्सर ताज़ी हवा के लिए खंडाला आते हैं। सफारी रेस्टोरेंट द्वारा दिए गए डिब्बों में जो खाना (नान और मटन दो प्याज़ा) हमें मिला था, वह हम खा चुके थे। अब साढ़े चार बज रहे थे, इसलिए हम चाय और पकौड़े खा रहे थे।

श्री घोषाल कुछ देर हमारे साथ बैठे, फिर दूसरी मेज पर चले गए जहाँ अर्जुन मेहरोत्रा बैठे थे। मेहरोत्रा थोड़े उदास लग रहे थे, शायद इसलिए क्योंकि निस्संदेह उस दिन के असली हीरो प्रदोश मित्तर थे। यूनिट के कई लोगों ने— जिनमें खलनायक मिक्की भी शामिल था—फेलुदा से ऑटोग्राफ मांगा था।
एक दूसरा हीरो भी था, और निःसंदेह वह विक्टर पेरुमल था। पता चला कि गोलीबारी शुरू होने से पहले फेलुदा ने उससे बात की थी। उसने कहा था, 'जब तुम पहाड़ी से नीचे आते हुए ट्रेन के पास पहुंचो, तो फर्स्ट क्लास डिब्बे पर नज़र रखना। अगर तुम्हें कुछ भी संदिग्ध दिखे, तो दरवाज़े से अंदर आ जाना।' विक्टर ने फेलुदा को हाथ ऊपर उठाए खड़ा देखा था। इससे उसे तुरंत समझ आ गया कि मदद की ज़रूरत है, और वह तुरंत हरकत में आ गया।
आश्चर्य की बात यह है कि उस तरह के वीरतापूर्ण कार्य के बाद भी विक्टर बिल्कुल विचलित नहीं हुआ। वह अपने साथियों के साथ बंगले के सामने वाले छोटे से मैदान में कुंग-फू का अभ्यास कर रहा था, मानो कुछ हुआ ही न हो। ‘असल बात तो ये है कि...’ लालमोहन बाबू ने आखिरकार बोलना शुरू किया। लेकिन फेलुदा ने उन्हें बीच में ही रोक दिया। ‘असल बात ये है कि आपको अभी भी कुछ पता नहीं है, क्या यही बात है?’
लालमोहन बाबू ने विनम्रता से मुस्कुराते हुए सिर हिलाया।
'सब कुछ स्पष्ट करना मुश्किल नहीं होना चाहिए। लेकिन, इससे पहले कि मैं ऐसा करूं, आपको गोर के बारे में बताया जाना चाहिए और यह समझना चाहिए कि उन्होंने कैसे काम किया।'
सबसे पहले तो यह याद रखना ज़रूरी है कि वह असल में एक तस्कर था, हालाँकि वह खुद को एक सम्मानित फिल्म निर्माता के रूप में पेश करने की कोशिश कर रहा था। उसने आपकी कहानी पर फिल्म बनाने का फैसला किया। आपने उस कहानी में लिखा था कि शिवाजी महल नाम की इमारत में एक तस्कर रहता है। ज़ाहिर है, इससे कुछ चिंता पैदा हुई। गोर यह पता लगाना चाहता था कि शिवाजी महल में रहने वाले असली लोगों के बारे में आपको कितनी जानकारी है, क्योंकि वह खुद भी उनमें से एक था और तस्कर था। इसलिए उसने सान्याल का वेश धारण किया और आपके घर गया। लेकिन आपसे बात करने के बाद उसे एहसास हुआ कि आप पूरी तरह से निर्दोष और हानिरहित हैं, और आपकी पूरी कहानी सरासर काल्पनिक थी। शिवाजी महल का ज़िक्र महज़ एक संयोग था।

गोर को तसल्ली हुई, लेकिन तभी उसके मन में ख्याल आया कि वो चोरी का हार ट्रांसफर करने के लिए तुम्हारा इस्तेमाल कर सकता है। इसलिए उसने उसे एक किताब में छिपा दिया और अपने ही गिरोह के किसी सदस्य को देने की कोशिश की— शायद शिवाजी महल की सत्रहवीं मंजिल पर रहने वाले किसी व्यक्ति को। अगर तुम पकड़े जाते, तो तुम सान्याल को दोषी ठहराते, गोर को नहीं। है ना? इस तरह गोर सान्याल की आड़ में सुरक्षित रूप से छिप सकता था।
लेकिन, बात बिगड़ गई। तुमने गोर के आदमी को पाँच मिलियन का हार नहीं, बल्कि अपनी ही पाँच रुपये की एक किताब सौंपी थी। मिस्टर रेड शर्ट—या निमो, अगर तुम चाहो तो—शिवाजी महल गया और सत्रहवीं मंज़िल पर एक फ्लैट में वह पैकेट ले जा रहा था, तभी लिफ्ट में एक विरोधी गुट के आदमी ने उस पर हमला कर दिया। निमो ने उसे मार डाला और निर्देशानुसार पैकेट ऊपर ले गया। फिर, जिसने भी पैकेट खोला, उसे पता चला कि उसमें हार नहीं था। गोर को सूचना मिली और वह तुरंत लौट आया। उसे सब पता था। इसलिए उसे दो काम करने थे—एक, उसे हार वापस लाना था; और दो, उसे हमसे छुटकारा पाना था। सौभाग्य से, हमने हार पुलिस को नहीं सौंपा था। हमसे मिलते ही गोर को एहसास हुआ कि किसी न किसी तरह सान्याल को फिर से सामने आना होगा। अगर सान्याल ने तुम्हें वह पैकेट दिया था, तो केवल सान्याल ही उसे तुमसे वापस ले सकता था। तब किसी को गोर पर शक नहीं होता।
लेकिन वो परफ्यूम...?
‘रुको, रुको, मैं उसी पर आ रहा हूँ। गुलबहार का इस्तेमाल करना गोर की धूर्तता का सिर्फ एक उदाहरण था। उसने कलकत्ता में पहले से ही ज़मीन तैयार कर रखी थी। जब भी आपको वह इत्र महक आता, आप सान्याल के बारे में सोचते और अपने आप ही दोनों को जोड़ लेते। आपको यकीन हो गया था, है ना, कि सान्याल बंबई में हर जगह आपका पीछा कर रहा है?’
'हाँ।'
‘ठीक है। अब ज़रा पीछे मुड़कर सोचो। उस दिन जब हम उसके फ्लैट पर गए थे, गोर हमें लिविंग रूम में छोड़कर कुछ मिनटों के लिए गायब हो गया था। ऐसा लग रहा था जैसे वह तुम्हारे पैसे लेने गया हो। क्या यह सही नहीं है?’
'हाँ।'
‘इतने कम समय में चुपके से निकलकर लिफ्ट में उस परफ्यूम की कुछ बूँदें छिड़कना मुश्किल तो नहीं रहा होगा, है ना? जब मैं ऊपर से नीचे तक हर मंज़िल

पर गया, हर जगह सूंघा और फिर भी लिफ्ट के बाहर उस खुशबू का कोई निशान नहीं मिला, तो मैं तुरंत समझ गया कि उस परफ्यूम को लगाने वाला कोई भी व्यक्ति लिफ्ट में नहीं आया था। इसे जानबूझकर वहाँ रखा गया था। इसी तरह, जब हमारी कार लोटस सिनेमा के बाहर खड़ी थी, तो गोर अपने किसी आदमी से खिड़की से हाथ डालकर सीटों पर कुछ बूँदें छिड़कने को कह सकता था। कितना आसान था!’
हाँ, फेलूदा के समझाने के बाद सब कुछ आसान लगने लगा था। लालमोहन बाबू को पूरी कहानी समझ आ चुकी थी, लेकिन फिर भी वे खुश नहीं दिख रहे थे। यह देखकर मुझे हैरानी हुई। उनके चेहरे पर मुस्कान क्यों नहीं थी? आखिरकार, श्री घोषाल के एक सवाल ने सब कुछ बदल दिया।
चाय खत्म हो चुकी थी और पूरी टुकड़ी वापस जाने की तैयारी कर रही थी। सूरज पहाड़ियों के पीछे छिप चुका था और अब काफी ठंड हो गई थी। मुझे ठंड लगने लगी और मैंने देखा कि श्री घोषाल व्यस्तता से हमारी ओर आ रहे हैं।
‘ललूदा, जेट बहादुर के सभी पोस्टर और होर्डिंग शुक्रवार को लगाए जा रहे हैं। लेकिन मुझे अभी कुछ जानना जरूरी है,’ उन्होंने कहा।
'यह क्या है?'
'आप अपना नाम किस रूप में बताना चाहेंगे? मेरा मतलब है, क्या हम आपका असली नाम इस्तेमाल करें या आपका छद्म नाम?'
‘यह “छद्म नाम” ही असली नाम है, मेरे दोस्त!’ लालमोहन बाबू ने बड़ी मुस्कान के साथ जवाब दिया। ‘और इसे ज-अ-ता-य-यू लिखा जाना चाहिए!’

वॉकिंग डेड का रहस्य

एक

‘क्या तुमने मुझे एक बार नहीं बताया था कि तुम गोसाईपुर में किसी को जानते हो?’ फेलुदा ने लालमोहन बाबू से पूछा।
हम तीनों (तीनों दोस्त) विक्टोरिया मेमोरियल देखकर नदी की ओर पैदल आ रहे थे। प्रिंसिप घाट के पास गुंबदों के नीचे बैठकर हम ताजी हवा का आनंद ले रहे थे और दालमुट खा रहे थे। शाम के पाँच बज रहे थे।
‘जी हां,’ लालमोहन बाबू ने जवाब दिया, ‘तुलसी बाबू। तुलसीचरण दासगुप्ता। वो मेरे स्कूल में गणित और भूगोल पढ़ाते थे। अब वो सेवानिवृत्त हो चुके हैं और गोसाईपुर में रहते हैं। उन्होंने मुझे कई बार अपने यहाँ आने के लिए कहा है। उन्हें मेरी किताबें बहुत पसंद हैं। दरअसल, वो खुद भी बच्चों के लिए लिखते हैं। उनकी कुछ कहानियाँ संदेश में प्रकाशित हुई थीं। लेकिन आपको अचानक गोसाईपुर में इतनी दिलचस्पी क्यों हो गई है?’
‘वहां से जीवनलाल मल्लिक नाम के किसी व्यक्ति ने मुझे पत्र लिखा। उनके पिता का नाम श्यामलाल मल्लिक है। मेरा मानना है कि मल्लिक परिवार कभी गोसाईपुर के जमींदार थे।’
‘जीवनलाल मल्लिक ने क्या लिखा था?’
‘वह अपने पिता को लेकर चिंतित है। उसे लगता है कि कोई उनकी हत्या की साजिश रच रहा है। अगर मैं जाकर इस मामले पर कुछ रोशनी डाल सकूं, तो वह बहुत आभारी होगा और मुझे मेरी फीस भी दे देगा।’
मुझे पता था कि पत्र आज सुबह आया था, लेकिन उसके अंदर क्या लिखा था, इसका मुझे कोई अंदाजा नहीं था। अब मुझे याद आया कि पत्र पढ़ने के बाद फेलुदा सोच में डूबा हुआ चुपचाप सिगरेट पी रहा था।
‘क्यों न हम सब चलें?’ लालमोहन बाबू काफी उत्साहित लग रहे थे। ‘देखिए, हम दोनों इस समय खाली हैं, है ना? इसके अलावा, मुझे लगता है कि पिछले दिनों की इतनी भागदौड़ भरी यात्राओं के बाद एक छोटे से गाँव की सैर हमें अच्छी लगेगी।’

सच कहूँ तो, मैं भी जाने की सोच रहा था। श्री मल्लिक ने कहा कि वे मुझे अपने घर में नहीं ठहरा सकते—लगता है कोई समस्या है। उन्होंने तीन मील दूर रहने वाले एक रिश्तेदार से बात की है। मैं उनके साथ रह सकता हूँ, लेकिन फिर मुझे हर दिन रिक्शा से आना-जाना पड़ेगा। मुझे लगा कि पैदल दूरी के भीतर कहीं रहना शायद ज़्यादा आसान होगा। इसीलिए मुझे आपके दोस्त का ख्याल आया। 'मेरा दोस्त बहुत खुश होगा, खासकर अगर उसे पता चले कि आप मेरे साथ आने वाले हैं। वह आपका बहुत बड़ा प्रशंसक है।'
अगले दिन लालमोहन बाबू ने अपने मित्र को पत्र लिखा, और फेलुदा ने जीवनलाल के पत्र का उत्तर दिया। तुलसी बाबू इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने तुरंत जवाब में लिखा कि गोसाईपुर साहित्य समिति लालमोहन बाबू और फेलुदा के लिए एक संयुक्त स्वागत समारोह आयोजित करना चाहती है। लालमोहन बाबू इस विचार से रोमांचित हो गए, लेकिन फेलुदा ने साफ मना कर दिया। उन्होंने दृढ़ता से कहा, 'कृपया मुझे स्वागत समारोहों से दूर रखें। किसी को पता नहीं चलना चाहिए कि मैं वास्तव में कौन हूँ और गोसाईपुर क्यों आ रहा हूँ। कृपया अपने मित्र से कहें कि वह किसी को न बताए।'
लालमोहन बाबू ने कुछ अनिच्छा से यह संदेश आगे पहुँचाया और कहा कि वे स्वागत समारोह से बेहद प्रसन्न हैं। इस अवसर को ध्यान में रखते हुए उन्होंने एक नीले रंग का कढ़ाईदार कुर्ता भी पैक किया था।
हमें कटवा जंक्शन तक ट्रेन लेनी थी, और फिर वहाँ से सात मील दूर गोसाईपुर जाने के लिए बस लेनी थी। तुलसी बाबू बस स्टॉप के पास एक किराने की दुकान पर हमारा इंतज़ार करने वाले थे। उनका घर वहाँ से महज़ दस मिनट की दूरी पर था। वहाँ जाते समय मैंने बस से एक पालकी देखी। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि मुझे पता ही नहीं था कि पालकी अभी भी इस्तेमाल में हैं। फेलुदा और लालमोहन बाबू भी इसी तरह अचंभित रह गए।
‘मुझे आश्चर्य होता है कि ये लोग किस सदी में जी रहे हैं?’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा। ‘उम्मीद है गोसाईपुर में बिजली होगी। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि यह इलाका इतना दूरदराज है।’
बस के कंडक्टर को पता था कि हमें कहाँ उतरना है। उसने किराने की दुकान से पहले बस रोक दी और चिल्लाया, 'गोसाईपुर! गो-ओ-साई-पु-उ-र!' हमने उसे धन्यवाद दिया और जल्दी से नीचे उतर गए।

मुस्कुराते हुए हमारा अभिवादन करने के लिए आगे आए बुजुर्ग सज्जन को देखकर साफ पता चल रहा था कि वे पूर्व शिक्षक रहे होंगे। उनके हाथ में एक पुराना, फटा-पुराना काला छाता था, पैरों में भूरे रंग के कैनवस के जूते थे, नाक पर चश्मा टिका था और बगल में नेशनल ज्योग्राफिक पत्रिका की एक बहुत पुरानी प्रति थी। उन्होंने कुर्ता और छोटी धोती पहनी हुई थी। फेलुदा से परिचय कराए जाने पर उन्होंने आँख मारी और कहा, 'मैंने वही किया जो आपने कहा था। मेरा मतलब है, मैंने आपके बारे में किसी को नहीं बताया। आप तो सिर्फ एक पर्यटक हैं, आप कई सालों से कनाडा में रह रहे हैं, अब आप एक भारतीय गाँव देखना चाहते हैं। मैंने ऐसा इसलिए सोचा क्योंकि मुझे लगा कि आपको शायद कुछ सवाल पूछने पड़ें या कुछ अनजानी जगहों पर जाना पड़े। एक पर्यटक जिज्ञासु और अनजान दोनों हो सकता है। आप जो भी कहें या जहाँ भी जाएँ, किसी को बुरा नहीं लगेगा।'
‘अच्छा। मुझे उम्मीद है कि आपके पास कनाडा पर कुछ किताबें होंगी जिन्हें मैं पढ़ सकूँ?’ फेलुदा ने मुस्कुराते हुए पूछा।
‘चिंता मत करो,’ तुलसी बाबू मुस्कुराए। फिर उन्होंने जटायु की ओर मुड़कर कहा, ‘मेरे दोस्त, मैंने तुम्हारे लिए शुक्रवार को एक कार्यक्रम रखा है। यह एक छोटा सा अनौपचारिक समारोह होगा—कुछ गाने और नृत्य होंगे, फिर तुम्हें प्रशस्ति पत्र दिया जाएगा और भाषण होंगे। बैरिस्टर सुरेश चकलेदार अध्यक्षता करेंगे। प्रशस्ति पत्र एक युवा लड़का लिख रहा है, लेकिन उसकी सामग्री—मेरा मतलब है, असल शब्द—मेरे हैं, हा हा।’
‘इसकी कोई जरूरत नहीं थी... आपको ऐसा करने की जरूरत नहीं थी...’ लालमोहन बाबू ने विनम्रता दिखाने की कोशिश की।
‘हम ऐसा करना चाहते थे। ऐसा हर रोज नहीं होता कि कोई सेलिब्रिटी हमसे मिलने आए!’
फेलुदा ने कहा, 'हमने रास्ते में एक पालकी देखी। क्या यहाँ आज भी उसका इस्तेमाल परिवहन के साधन के रूप में होता है?'
तुलसी बाबू एक छोटे बछड़े को छाते से धक्का देकर रास्ते से हटाने के लिए रुके। फिर उन्होंने फेलुदा की ओर देखा और कहा, 'जी हां। अगर आपको पालकी चाहिए, तो यहां मिल जाएगी। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती। हम अतीत की हर तरह की चीजें मुहैया कराने में माहिर हैं। क्या आपको वर्दीधारी, भाले और ढाल लिए हुए पहरेदार चाहिए? वे यहां मिल जाएंगे। हुक्का तैयार करने वाला

आदमी? वह भी यहां मिल जाएगा। पंखा खींचने वाला? तेल के दीपक? जी हां, हमारे पास वो भी हैं!'
लेकिन आपके पास बिजली के कनेक्शन तो हैं ही, है ना?
'ओह हाँ। हर घर में बिजली है, सिवाय उस घर के जहाँ इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है।'
'आपका क्या मतलब है?'
‘वह घर जहाँ श्री मल्लिक रहते हैं।’
हम सभी आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगे।
'श्यामलाल मलिक?' फेलुदा ने पूछा।
जी हाँ, महोदय। गोसाईपुर में कोई दूसरा मल्लिक नहीं है। वे पहले स्थानीय ज़मींदार हुआ करते थे। श्यामलाल के पिता, दुरलभ सिंह, एक बेहद निर्दयी व्यक्ति थे। लोग उनसे डरते थे। श्यामलाल खुद ज़्यादा समय तक ज़मींदार नहीं रहे, क्योंकि तब तक सरकार ने ज़मींदारी व्यवस्था से संबंधित कानूनों में बदलाव कर दिया था। हालाँकि, वे कलकत्ता चले गए, एक प्लास्टिक फैक्ट्री बनाई और खूब पैसा कमाया। फिर, एक दिन, वे अंधेरे में घर आए और बत्ती जलाने की कोशिश की। उन्हें नहीं पता था कि स्विचबोर्ड में एक ढीला, खुला तार था। वे बाल-बाल बिजली के झटके से मरते-मरते बचे! कुछ हफ़्ते अस्पताल में बिताने के बाद, उन्होंने अपना कारोबार अपने बेटे को सौंप दिया, गोसाईपुर लौट आए और अपने घर का बिजली का कनेक्शन कटवा दिया। अगर वे यहीं रुक जाते, तो शायद कुछ समझदारी होती। लेकिन उन्होंने आधुनिक या "पश्चिमी" हर चीज़ को हटाने का फैसला किया। उन्होंने सिगार पीना छोड़ दिया और हुक्का पीने लगे। उन्होंने फाउंटेन पेन का इस्तेमाल बंद कर दिया, टूथब्रश की जगह नीम की टहनियों का इस्तेमाल करने लगे, घर में अंग्रेजी में लिखी हर किताब और सारी दवाइयां फेंक दीं। अब वे पूरी तरह आयुर्वेदिक दवाओं पर निर्भर हैं। इन सब से सिर्फ स्थानीय आयुर्वेदिक डॉक्टर तारक कविराज को ही फायदा हुआ। और हां, श्यामलाल की कार भी बिक चुकी है। अब वे पालकी का इस्तेमाल करते हैं। उनके घर में एक पुरानी पालकी थी। उन्होंने बस उसकी मरम्मत करवाकर उसे रंगवाया। पालकी उठाने के लिए उन्होंने चार लोगों को रखा है। उन्होंने और भी कई चीजें शुरू कर दी हैं... मुझे यकीन है कि आप सब खुद देख लेंगे।
'हां, शायद मैं आऊंगा। मैं यहां इसलिए हूं क्योंकि उनके बेटे ने मुझे आने के लिए कहा था।'

मुझे पता है कि उनका बेटा उनसे मिलने आया है, लेकिन उन्होंने आपको यहां क्यों बुलाया?
क्या आपको पता है कि कोई श्यामलाल मल्लिक की हत्या की योजना बना रहा है? क्या आपने कोई अफवाह या गपशप सुनी है?
तुलसी बाबू यह सुनकर काफी हैरान रह गईं। ‘अरे नहीं! मैंने तो इस बारे में कुछ सुना ही नहीं है। लेकिन अगर कोई उसे हटाना चाहता है, तो आपको यह पता लगाने के लिए ज्यादा दूर देखने की जरूरत नहीं है कि वह कौन है।’
'आपका क्या मतलब है?'
“वही आदमी जिसने आपको पत्र लिखा था। उसके और उसके पिता के बीच बिलकुल भी बनती नहीं है। वैसे, मैं जीवनलाल को दोष नहीं देता। ऐसे पिता से निपटना आसान नहीं होता जिनके विचार इतने अटपटे हों। आखिर, जब जीवनलाल मिलने आता है तो उसे उसी घर में रुकना पड़ता है। यह किसी को भी पागल करने के लिए काफी है।”
हम शाम चार बजे से कुछ पहले तुलसी बाबू के घर पहुँचे। उनकी पत्नी का कुछ साल पहले देहांत हो गया था और उनके बेटे कलकत्ता में काम करते थे। उनकी इकलौती बेटी थी, जिसकी शादी हो चुकी थी। वह अजीमगंज में रहती थी। तुलसी बाबू यहाँ अकेले रहते थे, उनके साथ गंगा नाम की एक नौकरानी रहती थी। उन्होंने मुस्कुराते हुए हमसे कहा, “ऐसी जगह पर कोई अकेला रह तो सकता है, लेकिन अकेलापन महसूस करने का कोई मौका ही नहीं। मेरे पड़ोसी और गाँव के दूसरे दोस्त अक्सर आते-जाते रहते हैं। हम एक-दूसरे का बहुत ख्याल रखते हैं।”
हमारे पहुँचते ही गंगा को चाय बनाने के लिए कहा गया था। फेलुदा अच्छी गुणवत्ता वाली चाय का एक पैकेट लाया था। बस यही एक चीज़ थी जिसके बारे में वह बहुत नखरे करता था। कुछ मिनट बाद, गंगा ने हमें सामने के बरामदे में चाय परोसी, साथ में पोहा और नारियल की प्लेटें भी थीं, जो ग्रामीण बंगाल में शाम का एक आम नाश्ता है।
भूतल पर दो शयनकक्ष थे, जिनमें से एक तुलसी बाबू का था। हमें पहली मंजिल पर एक बड़ा कमरा दिया गया था। उसमें तीन पलंग लगे हुए थे। उसका एक दरवाजा छत की ओर खुलता था।

फेलुदा ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा, 'मैंने जीवनलाल से कहा था कि मैं उससे साढ़े पांच बजे मिलने आऊंगा, इसलिए मुझे उसका अंधेरा और गंदा घर ढूंढना पड़ेगा।'
मैं तुम्हें खुद वहाँ ले जाऊँगा, चिंता मत करो। श्यामलाल का घर यहाँ से सिर्फ पाँच मिनट की दूरी पर है। लेकिन मुझे उम्मीद है कि तुम जल्दी वापस आओगे? मुझे शाम को कुछ लोगों के आने की उम्मीद है। वे लालमोहन बाबू से बात करना चाहते हैं, और उसके बाद मैं तुम्हें आत्माराम बाबू से मिलवाने ले जाना चाहूँगा।
‘Atmaram Babu? Who’s he?’
‘कुछ लोग उन्हें इसी नाम से पुकारते हैं। उनका असली नाम मृगांका भट्टाचार्य है। वे मृतकों से बात कर सकते हैं, आत्माओं और प्रेतों को अपने पास बुला सकते हैं... आप जानते हैं, इस तरह की चीजें। वे हमारे इलाके के आकर्षणों में से एक हैं। लेकिन मुझे लगता है कि उनके पास वाकई कोई खास शक्ति है। मैं इस बात को हल्के में नहीं लेता।’
मैं उनसे पूछना चाहता था कि उन्हें ऐसा क्यों लगा, लेकिन पूछ नहीं सका, क्योंकि उसी क्षण हमें पालकी फिर से दिखाई दी। तुलसी बाबू का बरामदा मुख्य सड़क की ओर खुलता था। पालकी गाँव की ओर जा रही थी। जैसे ही वह करीब आई, तुलसी बाबू ने कहा, 'अरे, लगता है इसमें जीवनलाल हैं!'
एक आदमी खिड़की से बाहर झाँक रहा था। पालकी उठाने वाले उसे ठीक उसी अंदाज़ में उठा रहे थे जैसा कि किताबों में लिखा होता है, और एक अजीब सी लयबद्ध आवाज़ कर रहे थे। पालकी नीचे रखते ही आवाज़ बंद हो गई। अंदर बैठा आदमी बड़ी मुश्किल से बाहर निकला। पतलून और कमीज़ पहने हुए, वह बाहर निकलते समय बेहद अजीब लग रहा था।
‘श्री मिटर?’ उसने फेलुदा की ओर मुस्कुराते हुए पूछा।
'हाँ।'
मैं जीवनलाल मल्लिक हूँ।
'नमस्कार। ये मेरे दोस्त लालमोहन गांगुली हैं, और वो मेरे चचेरे भाई तपेश हैं। आप तुलसी बाबू को जानते ही होंगे, है ना?'
जी हाँ। नमस्कार। उह... क्या आप मेरे घर आ सकते हैं?

लालमोहन बाबू अपने आगंतुकों का इंतजार करने के लिए वहीं रुक गए। मैं और फेलुदा, जीवनलाल मल्लिक के साथ चले गए। वह सड़क छोड़कर बांस के झुरमुट से होकर चलने लगे, शायद शॉर्टकट लेने के लिए।
उन्होंने कहा, 'मुझे फोन करने के लिए थाने जाना पड़ा।'
क्या इसीलिए आपको पालकी लेनी पड़ी?
जीवनलाल ने फेलुदा को तिरछी नज़र से देखा। 'क्या तुलसी बाबू ने तुम्हें मेरे पिता के बारे में सब कुछ बता दिया?'
'हां, हमें पता चल गया कि बिजली का झटका लगने से उस पर क्या असर होता है।' ‘शुरुआत में हालात इतने बुरे नहीं थे। वह बिजली से बिल्कुल भी कोई वास्ता नहीं रखना चाहता था। यह बात समझ में आती थी। लेकिन अब... वह बिल्कुल ही नामुमकिन हो गया है। आपको जल्द ही समझ आ जाएगा कि मेरा क्या मतलब है।’ 'क्या आप अक्सर यहां आते हैं?'
'हर दो महीने में एक बार, व्यापारिक मामलों पर चर्चा करने के लिए।'
'क्या आपका मतलब है कि आपके पिता अभी भी अपने व्यवसाय में रुचि रखते हैं?' 'अरे नहीं। लेकिन मैं हार नहीं मानना चाहती। मैं उसे वापस सामान्य स्थिति में लाने की कोशिश करती रहूंगी।'
क्या आपको कोई सफलता मिली?
नहीं, अभी तक तो नहीं।

दो

श्री मल्लिक का घर स्पष्ट रूप से काफी पुराना था, लेकिन अच्छी तरह से रखरखाव किया गया था। यह इतना बड़ा था कि इसे महल तो नहीं, लेकिन हवेली कहा जा सकता था। जैसे ही हम मुख्य द्वार से अंदर गए, मुझे दाईं ओर एक तालाब दिखाई दिया। घर के पीछे कई पेड़ थे जिनसे बगीचे का आभास होता था। केवल चारदीवारी ही ऐसी लग रही थी जिसकी मरम्मत काफी समय से नहीं हुई थी। यह कई जगहों से टूटी हुई थी, जिससे दरारें दिखाई दे रही थीं। इसमें बनी बड़ी-बड़ी दरारों से पौधे उग आए थे।
द्वार पर एक पहरेदार ढाल और भाला पकड़े खड़ा था, मानो किसी ऐतिहासिक नाटक के लिए तैयार हुआ हो। पुराने ज़माने की वर्दी पहने और उतना ही अजीब दिखने वाला एक भारवाहक, मुख्य द्वार पर हमें एक सलीके से सलाम कर रहा था। सब कुछ गंभीरता से हो रहा था, और घर के अंदर का माहौल बिल्कुल भी खुशनुमा नहीं था, लेकिन दोनों आदमी इतने हास्यास्पद लग रहे थे कि मुझे लगभग हंसी आ गई। हमें बैठक कक्ष में ले जाया गया। उसमें कोई फर्नीचर नहीं था। फर्श पर एक गद्दा बिछा हुआ था, जिस पर एक बेदाग चादर थी। हम उस पर जाकर बैठ गए। दीवार पर हिंदू देवी-देवताओं और रामायण के दृश्यों की कुछ तस्वीरें लगी थीं। दीवार पर किताबों की अलमारियां थीं, लेकिन बंगाली भाषा की लगभग आधा दर्जन किताबों के अलावा वे खाली थीं।
‘क्या आपको पंखा चाहिए? अगर हां, तो मैं दशु से आपके लिए इसे खींचने को कह सकता हूं,’ जीवनलाल ने कहा।
पहले तो मैंने ध्यान नहीं दिया था, लेकिन अब मैंने ऊपर देखा तो मुझे एक पंखा दिखाई दिया—दो चटाइयाँ जिन पर बड़ी-बड़ी झालरें लगी थीं—जो एक लोहे की छड़ से लटका हुआ था। छड़ छत पर लगे दो हुकों से लटकी हुई थी। छड़ से बंधी एक रस्सी बाहर बरामदे तक जाती थी, जो हमारे बाईं ओर के दरवाजे के ऊपर वाली दीवार से होकर जाती थी। मैंने ऐसे पंखों के बारे में सिर्फ पढ़ा था। शायद दाशु नाम का नौकर बरामदे में बैठकर रस्सी खींचता था, जिससे पंखा इधर-उधर

झूलता था और हवा चलती थी। लेकिन यह अक्टूबर की शाम थी। हममें से किसी को भी पंखे की ज़रूरत नहीं थी।
‘मैं तुम्हें कुछ दिखाता हूँ। क्या तुम बता सकते हो कि यह क्या है?’ जीवनलाल ने अलमारी खोलकर कपड़े का एक चौकोर टुकड़ा निकालते हुए कहा। इसकी खासियत यह थी कि इसका एक कोना एक छोटे पत्थर से बंधा हुआ था।
फेलुदा ने भौंहें चढ़ाईं, फिर कपड़े को हवा में कुछ बार घुमाया। 'टॉपशे, एक मिनट के लिए खड़े हो जाओ।'
मैं उठा। फेलुदा मुझसे कुछ ही दूरी पर खड़ा था और उसने कपड़े को एक बार फिर घुमाया। फिर उसने उसे मेरी ओर ऐसे फेंका जैसे वह मछली पकड़ने का जाल हो। पत्थर से बंधा हुआ कपड़ा पल भर में मेरी गर्दन में लिपट गया।
‘ठग!’ मैंने चिल्लाकर कहा।
फेलुदा ने मुझे ठगों के बारे में बताया था। वे ऐसे डाकू थे जो यात्रियों पर इसी तरह हमला करते थे और फिर उनका सामान लूट लेते थे। एक झटके में फंदा कसने और अपने निर्दोष पीड़ितों को मारने के लिए वे अक्सर काफी होते थे। फेलुदा ने सिर हिलाया, कपड़ा ले लिया और पूछा, 'तुम्हें यह कहाँ से मिला?' ‘किसी ने आधी रात को खुली खिड़की से इसे मेरे पिता के कमरे में फेंक दिया।’ 'कब?'
‘मेरे यहां आने से कुछ दिन पहले।’
‘पहरेदार क्या कर रहे थे?’
‘पहरेदार?’ जीवनलाल हँस पड़ा। ‘वे अपने मालिक को खुश करने के लिए सज-धज कर बैठते हैं, लेकिन बस इतना ही। वे सब के सब एकदम आलसी हैं। इसके अलावा, वे जानते हैं कि उनके मालिक काफी बूढ़े हो चुके हैं, और उन्हें नियंत्रित करने वाला कोई नहीं है।’
‘यहां और कौन रहता है?’
‘मेरी दादी माँ। वो इन पुराने तौर-तरीकों से पूरी तरह खुश हैं। फिर हैं भोलानाथ बाबू। वो एक तरह से मैनेजर हैं—दरअसल, वो खरीदारी से लेकर मेरे पिताजी के छोटे-मोटे काम करने, ज़रूरत पड़ने पर डॉक्टर को बुलाने, गाँव में न मिलने वाली चीज़ें लाने के लिए पास के कस्बे जाने तक, सब कुछ संभालते हैं… सब कुछ। एक रसोइया, दो गार्ड और एक कुली के अलावा कोई और नहीं है। वे यहीं रहते हैं। पालकी के चारों कुली और पंखा खींचने वाला गाँव से ही आते हैं।’

‘भोलानाथ बाबू मूल रूप से कहाँ से आए थे?’
‘वह इसी गांव का रहने वाला है। उसका परिवार हमारा किरायेदार था। उसके पूर्वज किसान थे। लेकिन वह स्कूल गया था, और मेरा मानना है कि वह एक होशियार छात्र था। अब उसकी उम्र लगभग साठ साल है।’
‘क्या ये तुम्हारे दादाजी हैं?’ फेलुदा ने दीवार पर लगी एक तस्वीर की ओर इशारा करते हुए पूछा। ये एक ऐसे व्यक्ति का चित्र था जिसकी मूंछें बहुत ही आकर्षक थीं। मैंने अब तक इस पर ध्यान नहीं दिया था। वे एक कुर्सी पर बैठे थे, एक हाथ में चांदी के हैंडल वाली छड़ी थी और दूसरा हाथ संगमरमर की मेज पर टिका हुआ था। उनकी आँखों में एक ठंडा और कठोर भाव था।
‘Yes, that is Durlabh Singh Mallik.’
‘वह जमींदार जिससे हर कोई डरता था?’
'हां, मुझे डर है कि ऐसा ही है। उनमें करुणा या दया का कोई अंश नहीं था।'
एक वेटर दो गिलास और एक कप तश्तरी में रखकर ट्रे में लाया और ट्रे हमारे सामने रख दी। फेलुदा ने उनमें रखे गर्म पेय पर एक नज़र डाली और कहा, 'क्या इसका मतलब यह है कि तुम्हारे पिता अभी भी चाय पीते हैं?'
नहीं, नहीं। ये कॉफ़ी है, और ये मेरी है। मैं हमेशा एक कप और नेस्कैफ़े का एक डिब्बा लाता हूँ। उसे दूसरे कप और तश्तरियाँ नहीं मिलीं, इसलिए आपको गिलास दिए गए हैं। मुझे उम्मीद है कि आपको कोई आपत्ति नहीं होगी।
'नहीं, बिलकुल नहीं। मैंने दक्षिण भारत में पीतल के गिलासों में कॉफी पी है।'
ऊपर से आती तेज़ खटखटाहट की आवाज़ सुनकर फेलुदा ने ऊपर देखा। 'क्या तुम्हारे पिताजी लकड़ी की चप्पल पहनते हैं?'
'ओह हाँ। क्या यह जूते पहनने से कहीं अधिक स्वाभाविक नहीं है?'
'हां, मुझे लगता है ऐसा ही है। मुझे बताओ, क्या सिर्फ कपड़े के इस टुकड़े ने ही तुम्हें यह सोचने पर मजबूर किया कि कोई तुम्हारे पिता की हत्या की योजना बना रहा है, या इसके पीछे कोई और वजह थी?'
इसके जवाब में, जीवनलाल ने अपनी जेब से कागज का एक टुकड़ा निकाला और फेलुदा को दे दिया। उस पर पेंसिल से बड़े और स्पष्ट अक्षरों में निम्नलिखित शब्द लिखे थे:
आपको अपने पूर्वजों के पापों का प्रायश्चित करने के लिए मृत्युदंड दिया गया है। मरने के लिए तैयार रहें।

‘यह 5 अक्टूबर को आया, मेरे यहां आने से एक दिन पहले। इसे कटवा में पोस्ट किया गया था, जिससे हमें वास्तव में कुछ पता नहीं चलता, क्योंकि गोसाईपुर से कोई भी वहां जाकर इसे पोस्ट कर सकता था।’
यदि आपको कोई आपत्ति न हो, तो क्या आप हमें बता सकते हैं कि "पूर्वजों के पाप" का क्या अर्थ हो सकता है?
“खैर, जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया था, श्रीमान मिटर, मेरे दादाजी अपने किरायेदारों के साथ बहुत बुरा व्यवहार करते थे। मुझे नहीं पता कि किस विशेष अपराध का जिक्र किया जा रहा है।”
‘तुम पुलिस के पास क्यों नहीं गए?’
जीवनलाल ने कहा, ‘इसके दो कारण थे। पहला, यहां के लोग आपको पहचान नहीं पाएंगे। इसलिए, उम्मीद है कि जिसने भी वह नोट लिखा होगा, उसे सतर्क रहने की जरूरत महसूस नहीं होगी। दूसरा, अगर मैंने पुलिस को बुलाया होता, तो मैं उनका मुख्य संदिग्ध बन जाता।’
फेलुदा और मैंने दोनों ने हैरानी से उसकी तरफ देखा। जीवनलाल ने जल्दी से समझाया, 'सब जानते हैं कि जब से मेरे पिता में यह बदलाव आया है, तब से मेरे उनके साथ संबंध ठीक नहीं रहे। मैं अभी भी शहर में रहता हूँ, मुझे कुछ आधुनिक सुविधाओं के बिना रहना नामुमकिन लगता है। मैं मानता हूँ कि मेरे पिता के साथ जो हुआ, उससे उन्हें सिर्फ शारीरिक आघात ही नहीं लगा, बल्कि मानसिक आघात भी पहुँचा। असल में हुआ ये था कि एक शाम हम दोनों साथ लौटे और अपने लिविंग रूम में गए, जो अंधेरा था। मेरे पिता ने स्विचबोर्ड ढूँढने की कोशिश की और एक बिजली के तार से उन्हें झटका लगा। मैं भागा और पाँच सेकंड में मेन स्विच बंद कर दिया। लेकिन, किसी कारण से, उन्हें लगा कि मैंने जल्दी कार्रवाई नहीं की। ये पाँच साल पहले की बात है। लेकिन उस घटना के बाद से, उन्होंने मुझ पर भरोसा करना बंद कर दिया है। कभी-कभी हमारे बीच तीखी बहस होती है। एक बार मुझे गुस्सा आ गया और मैंने जलता हुआ मिट्टी के तेल का दीपक गद्दे पर फेंक दिया, जिससे स्वाभाविक रूप से आग लग गई... और फिर तो हंगामा मच गया। खबर फैल गई, और सब सोचने लगे कि मैं अपने पिता को बहुत नापसंद करता हूँ।' इसीलिए मैंने पुलिस को फोन नहीं किया। इसके अलावा, मैं आपकी प्रतिष्ठा से वाकिफ था और जानता था कि आपने अपने पिछले मामलों को कितनी कुशलता से संभाला था। इसलिए मुझे लगा कि आपसे संपर्क करना ही सबसे अच्छा रहेगा।'

हमने अपनी कॉफी खत्म कर ली। वही वेटर एक तेल का दीपक लेकर आया और उसे एक कोने में रख दिया। जीवनलाल ने पूछा, 'क्या आप मेरे पिताजी से मिलना चाहेंगे?'
'हां, मुझे ऐसा करना चाहिए।'
हम उठे और ऊपर की ओर चल दिए। नौकरों द्वारा जलाए गए कुछ दीये और लालटेन सीढ़ियों को रोशन करने में ज़रा भी कारगर नहीं थे। वास्तव में, घर का अधिकांश हिस्सा अंधेरे में डूबा हुआ था। जीवनलाल ने अपनी जेब से एक छोटी टॉर्च निकाली और कहा, 'इसे भी चुपके से अंदर लाना पड़ा। उसे टॉर्च से नफ़रत है।'
हमने श्यामलाल मल्लिक को गद्दे पर बैठे हुए पाया, उनके हाथ में हुक्का था और वे तकिए के सहारे झुके हुए थे। उनका चेहरा अपने पिता से काफी मिलता- जुलता था। अगर वे घनी मूंछें बढ़ा लेते, तो शायद वे दुरलभ सिंह की तरह सख्त दिखते। जब वे बोलते थे, तो मुझे समझ आ जाता था कि अगर वे कभी गुस्सा होकर ऊंची आवाज में बोलने लगें, तो उनसे दूर रहना ही बेहतर होगा।
‘अब आप जा सकते हैं,’ उन्होंने अपनी गहरी आवाज़ में कहा। जिनसे वे बात कर रहे थे, वे गद्दे के एक कोने पर बैठे थे। जीवनलाल ने उनका परिचय तारक कविराज, आयुर्वेदिक चिकित्सक के रूप में कराया। वे उठे और हमें नमस्कार किया, लेकिन तुरंत चले गए।
फेलुदा का परिचय होते ही श्यामलाल मल्लिक ने पूछा, ‘एक जासूस आखिर क्या कर सकता है?’ उनकी आवाज़ में बेहद झुंझलाहट थी। ‘दुर्लभ सिंह की आत्मा ने मुझे पहले ही बता दिया है कि मेरा दुश्मन मेरे ही घर में है। मैंने यह कागज़ पर लिख रखा है। एक दिवंगत आत्मा सब कुछ देख सकती है... कोई भी उससे सच्चाई नहीं छिपा सकता। शहर का एक जासूस मेरे लिए और क्या कर सकता है?’
जीवनलाल बेहद हैरान दिख रहा था। जाहिर है, वह दुर्लभ सिंह की आत्मा के बारे में कुछ नहीं जानता था।
उन्होंने पूछा, ‘क्या तुम मृगांका भट्टाचार्य के घर गए थे?’
‘नहीं, मैं उसके पास क्यों जाता?’ उसके पिता गरजते हुए बोले। ‘वह खुद मेरे पास आया था। मैंने उसे बुलाया था। मुझे यह जानना था कि कौन मुझे इतना कष्ट पहुँचाने की कोशिश कर रहा है। अब मुझे पता चल गया है।’
‘वह आपसे कब मिलने आया था?’
‘तुम्हारे आने से एक दिन पहले।’

'आपने मुझे नहीं बताया।'
Shyamlal Mallik made no reply. He began smoking.
‘क्या हम देख सकते हैं कि दुरलभ सिंह ने आपको क्या बताया?’ फेलुदा ने विनम्रता से पूछा। श्यामलाल मल्लिक ने सिगरेट पीना बंद कर दिया और उसे घूर कर देखा।
‘तुम्हारी उम्र कितनी है?’ उसने अचानक पूछा। फेलुदा ने उसे उम्र बता दी। ‘मैं तुम्हारी धृष्टता से चकित हूँ। क्या तुम्हें सच में लगता है कि तुम एक दिवंगत आत्मा द्वारा लिखे गए संदेश के आध्यात्मिक महत्व को समझ पाओगे? क्या यह ऐसी कोई चीज़ है जिसे हर किसी को दिखाया जाना चाहिए?’
'मुझे क्षमा करें,' फेलुदा ने नरमी से कहा। 'मैं बस इतना जानना चाहता हूँ कि क्या आपके दिवंगत पिता ने आपको बताया था कि आप अपनी वर्तमान कठिनाइयों से कैसे बाहर निकल सकते हैं।'
मैं आपको बता सकता हूँ कि उसने क्या कहा। लिखित सामग्री देखने की कोई आवश्यकता नहीं है। उसने बस इतना कहा कि करने के लिए केवल एक ही काम था: दुश्मन से छुटकारा पाना।
कुछ मिनटों तक हममें से कोई भी कुछ नहीं बोल सका। फिर जीवनलाल ने धीरे से कहा, 'तुम मुझे जाने के लिए कह रहे हो?'
मैंने तुम्हें यहाँ आने के लिए कब कहा था?
जीवनलाल ने हार मानने से इनकार कर दिया। उसने कहा, ‘बाबा, आप भोलानाथ बाबू पर मुझसे कहीं ज़्यादा भरोसा करने लगे हैं। क्या आप उनके परिवार का इतिहास भूल गए हैं? दुरलभ सिंह के आदमियों ने उनके घर में आग लगा दी थी क्योंकि उनके पिता समय पर किराया नहीं दे पाए थे। और—’
‘मूर्ख!’ श्यामलाल मल्लिक चिल्लाया। ‘भोलानाथ उस समय तो बस एक छोटा बच्चा था। क्या तुम यह कहना चाह रहे हो कि उसने अपने बदले की योजना बनाने के लिए लगभग साठ साल इंतजार किया? तुम कितने बेवकूफ हो सकते हो?’
इस बिंदु पर, हमने वहां से जाने का फैसला किया। 'चलिए मैं आपको वापस छोड़ देता हूं,' जीवनलाल ने कहा। 'मुझे नहीं लगता कि आप अंधेरे में शॉर्टकट ले पाएंगे।' घर से बाहर निकलते हुए उन्होंने आगे कहा, 'मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि वह आपका इस तरह अपमान करेगा। मुझे बहुत खेद है।'
‘चिंता मत करो,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। ‘एक जासूस को सबसे पहले जो चीज सीखनी पड़ती है, वह है सहनशीलता। मैं अपमान और तिरस्कार सहने का आदी हूँ। मुझे

तुम्हारी ज्यादा चिंता है। जीवन बाबू, तुम्हें एक बात समझ लेनी चाहिए। शक की सुई तुम पर ही लगने की संभावना ज्यादा है क्योंकि वह गुमनाम पत्र भोलानाथ की ओर इशारा करता है।’
लेकिन जब वह कपड़ा और चिट्ठी पहुंची, तब मैं कलकत्ता में था, श्री मिटर। ‘तो क्या हुआ? मुझे कैसे पता चलेगा कि गोसाईपुर में तुम्हारा कोई साथी नहीं है?’
‘क्या तुम भी मेरे खिलाफ हो रहे हो?’ जीवनलाल बेहद परेशान लग रहा था। नहीं। अभी, जीवन बाबू, मैं किसी पर आरोप नहीं लगा रहा हूँ; न ही मैं किसी की निर्दोषता के बारे में कोई अनुमान लगा रहा हूँ। लेकिन मुझे आपसे एक सवाल पूछना है। भोलानाथ बाबू किस तरह के इंसान हैं?
कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद, जीवनलाल ने उत्तर दिया, "बहुत भरोसेमंद और विश्वसनीय। मुझे यह स्वीकार करना होगा। लेकिन निश्चित रूप से इसका मतलब यह नहीं है कि मुझ पर संदेह किया जाए?" उनकी आवाज़ में थोड़ी घबराहट थी। फेलुदा ने हाथ उठाया। उन्होंने शांत भाव से कहा, 'जीवन बाबू, आपको मेरी स्थिति को समझना चाहिए। मुझे पूरी स्थिति का निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ आकलन करना होगा। आपको बस धैर्य रखना होगा। इस मामले में न तो आपके पास और न ही मेरे पास कोई विकल्प है। हमें तब तक इंतजार करना होगा जब तक मुझे सच्चाई का पता न चल जाए। मैं आपको केवल इतना ही आश्वासन दे सकता हूं कि जो भी निर्दोष होगा, मैं उसकी रक्षा अवश्य करूंगा।'
जीवनलाल ने कोई जवाब नहीं दिया। अंधेरे में उसका चेहरा देखना और यह बताना असंभव था कि फेलुदा की बातों से उसे तसल्ली मिली थी या नहीं। बांस के झुरमुट से बाहर निकलते ही फेलुदा ने उससे कुछ और पूछा। 'क्या तुम्हारे पिताजी कभी घर के बाहर नंगे पैर चलते हैं?'
'घर के बाहर? कभी नहीं। अरे, वो तो घर के अंदर भी अपने जूते नहीं उतारता। तुम क्यों पूछ रहे हो?'
मुझे उसके पैरों पर मिट्टी के निशान दिखाई दिए। और... क्या वह मच्छरदानी का इस्तेमाल नहीं करता?
'बिल्कुल। यहां हर कोई मच्छरदानी का इस्तेमाल करता है। उन्हें करना ही पड़ता है।'
'शायद आपने ध्यान नहीं दिया होगा, लेकिन उसका चेहरा, गर्दन और बांहें मच्छरों के काटने के निशानों से भरी हुई थीं।'

'सच में? नहीं, मैंने ध्यान नहीं दिया। यह अजीब है, क्योंकि वह निश्चित रूप से जाल का इस्तेमाल करता है।'
‘तो शायद जाल फटा हुआ है। क्या आप कृपया जाँच कर सकते हैं?’

तीन

तुलसी बाबू और लालमोहन बाबू हमारा इंतजार कर रहे थे। बिजली की रोशनी दोबारा देखकर मुझे बहुत राहत मिली।
लालमोहन बाबू ने कहा, 'क्या आप कल्पना कर सकते हैं, इस छोटे से गाँव में भी मुझे बीस ऐसे लोग मिले जिन्होंने मेरी पचास प्रतिशत से अधिक पुस्तकें पढ़ी थीं? बेशक, उनमें से कई ने उन्हें स्कूल पुस्तकालय से लिया था, लेकिन जिन्होंने कुछ प्रतियाँ खरीदी थीं, उन्होंने उन पर मेरे हस्ताक्षर करवाए थे।'
‘बहुत बढ़िया। यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई, लालमोहन बाबू।’ तुलसी बाबू ने फेलुदा की ओर मुड़कर कहा, ‘चलिए आत्माराम से मिलते हैं। हम कल बाट-काली मंदिर देख सकते हैं।’
‘बट-काली मंदिर? आखिर यह क्या है?’
‘एक और स्थानीय आकर्षण। जिस बांस के झुरमुट से आप अभी गुज़रे हैं, उसमें एक पुराना और वीरान काली मंदिर है। यह दो सौ साल पुराना है। इसमें कभी काली की मूर्ति रही होगी, लेकिन अब वह नहीं है। इसमें दर्जनों चमगादड़ रहते हैं, इसीलिए लोग इसे चमगादड़-काली मंदिर कहते हैं। जब यह मंदिर उपयोग में था, तब यहाँ काफी चहल-पहल रही होगी।’
‘ठीक है। वैसे, क्या आपका आत्माराम इसी गाँव से है?’
नहीं, लेकिन वह कुछ समय से यहाँ रह रहा है। दो साल पहले उसकी विशेष शक्ति का पता चला। इसके अलावा, वह ज्योतिष और हस्तरेखा शास्त्र भी जानता है। कलकत्ता से लोग अक्सर उससे सलाह लेने यहाँ आते हैं।
क्या वह कोई शुल्क लेता है?
'हां, शायद वो ऐसा करता हो। लेकिन मैंने कभी नहीं सुना कि वो स्थानीय लोगों से कोई शुल्क लेता हो। वो सोमवार और शुक्रवार को आत्माओं से संपर्क करने का अनुष्ठान करता है। आज हम उससे मिलने जाएंगे।'
'सब ठीक है चलो चलते हैं।'

मुझे समझ आ गया था कि मृगांका भट्टाचार्य किसी न किसी तरह फेलुदा की जांच का हिस्सा बन चुकी थीं। हम एक बार फिर घर से निकल पड़े।
आस-पास के सभी घरों में बत्तियाँ जल रही थीं, फिर भी बाहर घना अंधेरा था, शायद बड़ी संख्या में पेड़ों की वजह से। चाँद अभी तक नहीं निकला था। दूर से झींगुर, उल्लू और सियार अपनी नियमित आवाज़ में गाने लगे थे, जिससे मुझे लगा कि ऐसी जगह पर श्यामलाल मल्लिक की पालकी और उनके तेल के दीयों की टिमटिमाती रोशनी ही ज़्यादा सुशोभित करती है। लालमोहन बाबू ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा कि उन्होंने रहस्य और रोमांच से भरी ऐसी जगह पहले कभी नहीं देखी। उन्होंने कहा, 'तुझे पता है, तपेश, मैंने अपने अगले उपन्यास के लिए ग्वाटेमाला को चुना था; लेकिन अब मुझे लगता है कि मैं इसे गोसाईपुर में बदल दूँगा।'
‘सचमुच?’ फेलुदा ने यह बात सुनकर हंसते हुए कहा। ‘लेकिन तुमने तो ठग का फंदा भी नहीं देखा। क्या तुम इससे ज्यादा रोमांचक कुछ सोच सकते हो?’
‘फेलू बाबू, तुम क्या बात कर रहे हो?’
फेलुदा ने संक्षेप में समझाया। उन्होंने गुमनाम पत्र का भी जिक्र किया। ‘अगर श्री भट्टाचार्य ने दुरलभ सिंह की आत्मा को बुलाकर सच्चाई प्रकट करवाई, तो आपको कहीं और देखने की जरूरत नहीं है, श्री मित्तर,’ तुलसी बाबू ने टिप्पणी की, ‘श्यामलाल मल्लिक का शत्रु उसके घर में ही होना चाहिए।’ इसके बाद किसी ने कुछ नहीं कहा, क्योंकि हम श्री भट्टाचार्य के घर पहुँच चुके थे। इस घर में भी बिजली का कनेक्शन नहीं था। शायद लालटेन की धुंधली रोशनी में आत्माओं को पृथ्वी में पुनः प्रवेश करना आसान लगता था। मृगांका भट्टाचार्य एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति निकले। उनकी उम्र का अंदाज़ा लगाना नामुमकिन था। उनके बाल कम हो गए थे, लेकिन सफ़ेद नहीं हुए थे। उनकी नैन-नक्श तीक्ष्ण थे, और उनकी त्वचा चिकनी थी, सिवाय आँखों और मुँह के आसपास के हिस्से के। वे एक दीवान पर बैठे थे, उनके सामने तीन कुर्सियाँ और दो बेंच थीं। ज़ाहिर है, वे श्यामलाल मल्लिक की तरह फर्नीचर से परहेज़ नहीं करते थे। लगभग पच्चीस साल का एक युवक एक बेंच पर बैठा ज्योतिष पत्रिका के पन्ने पलट रहा था। बाद में पता चला कि वह श्री भट्टाचार्य का भतीजा नित्यानंद था। वह अपने चाचा को आत्माओं का अभिवादन करने में मदद करता था।

तुलसी बाबू ने श्री भट्टाचार्य के पैर जल्दी से छुए और कहा, 'ये मेरे कलकत्ता के दोस्त हैं। मैं इन्हें यहाँ इसलिए लाया हूँ ताकि ये उस शख्स से मिल सकें जिस पर गोसाईपुर को इतना गर्व है।'
श्री भट्टाचार्य ने अपनी निगाहें उठाकर हमारी ओर देखीं। फिर उन्होंने कुर्सियों पर नज़र डाली। हम तीनों बैठ गए। तुलसी बाबू खड़े ही रहे।
श्री भट्टाचार्य ने अपनी आँखें बंद कर लीं, सीधे बैठ गए, पद्मासन में पैर मोड़ लिए। कुछ क्षण बाद, उन्होंने अचानक अपनी आँखें खोलीं और कहा, 'सोलह, तीन, तेरह। आप में से किसके नाम के पहले अक्षर ये हैं?'
हम सब उसे देखते रह गए, एकदम अचंभित। कुछ देर रुकने के बाद फेलुदा ने सबसे पहले बोलना शुरू किया। उसने कहा, 'जी हां, मेरा पूरा नाम प्रदोष चंद्र मित्तर है, और आप बिल्कुल सही हैं। प, स, म वर्णमाला के सोलहवें, तीसरे और तेरहवें अक्षर हैं।'
मुझे इस बात पर काफी हैरानी हुई। तुलसी बाबू ने तो हमारा नाम तक नहीं लिया था। श्री भट्टाचार्य ने फेलुदा के नाम के पहले अक्षर कैसे जाने? मैंने देखा कि तुलसी बाबू ने श्री भट्टाचार्य को प्रशंसा भरी नजरों से देखा। फिर उन्होंने पूछा, 'क्या आप उनके पेशे का अंदाजा लगा सकते हैं?'
इसी बीच, एक और व्यक्ति—संभवतः कोई ग्राहक—कमरे में दाखिल हो गया। फेलुदा स्वाभाविक रूप से किसी अजनबी के सामने अपना पेशा ज़ाहिर नहीं करना चाहता था। इसलिए उसने जल्दी से कहा, 'अरे, ऐसा करने की कोई ज़रूरत नहीं है।' तुलसी बाबू को अपनी गलती का एहसास हुआ और वह शर्मिंदा दिखने लगा। उन्होंने विषय बदलते हुए कहा, 'मैं उन्हें शुक्रवार को वापस ले आऊंगा। हम आज तो सिर्फ आपसे मिलने आए हैं।'
श्री भट्टाचार्य ने फेलुदा की ओर स्थिर दृष्टि से देखा। 'आप तो बस सत्य की खोज कर रहे हैं, है ना? चिंता करना छोड़िए, महोदय, अगर मैं ऐसा कहूँ तो कोई भी मेरे कहने का अर्थ नहीं समझेगा।'
इसके तुरंत बाद हमने विदा ली और निकल पड़े। चलते-चलते लालमोहन बाबू ने कहा, ‘उसकी छठी इंद्री बहुत तीव्र है, और वह पहेलियों में बात कर सकता है। कमाल है!’
सामने से कोई व्यक्ति एक हाथ में लालटेन लिए आ रहा था। उसके चलने पर लालटेन हिल रही थी, जिससे उसकी परछाईं ज़मीन पर पड़ रही थी। तुलसी बाबू ने अपने हाथ में पकड़ी मशाल उठाई, उस आदमी के चेहरे पर रोशनी डाली और कहा,

'भट्टाचार्य से मिलने जा रहे हो? तुम तो उनसे अक्सर मिलने जाने लगे हो, है ना?'
वह आदमी मुस्कुराया, एक पल के लिए झिझका, फिर बिना कुछ कहे अपने रास्ते चला गया।
तुलसी बाबू ने हमें बताया, ‘वह भोलानाथ बाबू थे, भट्टाचार्य के नवीनतम भक्त। मेरा मानना है कि भट्टाचार्य एक बार उनके घर गए थे और एक आत्मा से बात की थी। किस आत्मा से, यह मैं नहीं कह सकता।’
तुलसी बाबू के रसोइए गंगा ने उस रात बहुत ही बढ़िया खाना बनाया, जिसमें मूंग दाल, तीन तरह की सब्ज़ियाँ और अंडा करी शामिल थी। खाने के बाद, हमारे मेज़बान ने हमें अपने स्कूल शिक्षक के जीवन की कहानियाँ सुनाईं। जब हमने उन्हें शुभ रात्रि कहा और सोने चले गए, तब साढ़े नौ बजे थे, हालाँकि ऐसा लग रहा था जैसे आधी रात हो गई हो। हम अपने बिस्तर और मच्छरदानी साथ लाए थे। फेलूदा ने कहा कि वह ओडोमोस का इस्तेमाल करेंगे और मच्छरदानी की ज़रूरत नहीं समझेंगे। मैंने देखा था कि श्री भट्टाचार्य के घर से लौटने के बाद से वह एकदम चुप हो गए थे। पिछले कुछ घंटों में उन्होंने गंगा के खाने की तारीफ़ करने के अलावा और कुछ नहीं कहा था। आखिर वह क्या सोच रहे थे? लालमोहन बाबू ने एक लालटेन जलाकर अपने बिस्तर के पास रख दी। उन्होंने कहा कि उन्हें अपने स्वागत समारोह के लिए भाषण तैयार करने के लिए रोशनी की ज़रूरत है। वे मुख्य बत्ती जलाकर हमें परेशान नहीं करना चाहते थे।
मैं फेलुदा से कुछ ऐसा पूछे बिना सो नहीं सका जो मुझे बहुत परेशान कर रहा था।
‘फेलुदा, उस आदमी ने तुम्हारे नाम के पहले अक्षर कैसे पहचान लिए? और उसे तुम्हारे पेशे के बारे में भी पता था!’
'हां, ये वो सवाल हैं जो मैं खुद से पूछ रहा हूं। मुझे अभी तक कोई जवाब नहीं मिला है, टॉपशे। कभी-कभी... कुछ लोगों में असाधारण शक्तियां होती हैं जिन्हें तर्कसंगत रूप से समझाया नहीं जा सकता।'

चार

अगली सुबह हम लंबी सैर पर निकले और पूरे गाँव का भ्रमण किया। स्थानीय क्लब, जगारानी, एक नाटक का पूर्वाभ्यास कर रहा था। हमें पूर्वाभ्यास देखने के लिए आमंत्रित किया गया था। बहुत से लोग कनाडा के जीवन के बारे में उत्सुक थे, इसलिए फेलुदा ने इस विषय पर एक संक्षिप्त व्याख्यान दिया। फिर हम गोसाईपुर के इकलौते मूक कलाकार बेनीमाधव से मिले। उन्होंने शुक्रवार को हमसे मिलने और अपनी प्रतिभा दिखाने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने कहा, 'मैं बिना किसी सहारे के सीढ़ियाँ चढ़ सकता हूँ... मैं आपको दिखा सकता हूँ कि तूफान में फंसे व्यक्ति का क्या हाल होता है... मैं अपने चेहरे के भावों को छह अलग-अलग चरणों में बदल सकता हूँ - उदास से खुश!'
शाम को तुलसी बाबू हमें पास के गाँव में लगे मेले में ले गए। जब हम खूब आनंद लेकर लौटे, तब तक लगभग छह बज चुके थे। सूरज डूब चुका था, लेकिन अंधेरा नहीं हुआ था। फेलुदा ने कहा कि वह जीवनलाल मल्लिक से मिलना चाहेंगे। तुलसी बाबू हमारा इंतज़ार करने के लिए घर चले गए।
हमारे घर के मुख्य द्वार तक पहुंचने से पहले ही जीवनलाल अपने घर से बाहर आ गया था।
‘मैंने तुम्हें अपने बेडरूम की खिड़की से आते देखा,’ उसने बताया। ‘क्या कोई नई बात सामने आई है?’ फेलुदा ने पूछा।
'नहीं।'
‘क्या मैं आपका बगीचा देख सकता हूँ?’
'बिल्कुल।'
वह 'बगीचा' असल में बगीचा नहीं था: कहने का तात्पर्य यह है कि वहाँ न तो फूलों की क्यारियाँ थीं और न ही घास का मैदान। वह बस एक बड़ा, खुला इलाका था जिसमें कई ऊँचे पेड़ खड़े थे। फेलुदा ने उसका ध्यान से निरीक्षण करना शुरू किया। मुझे नहीं पता था कि वह क्या खोज रहा था। मैंने देखा कि वह एक जगह रुका और कुछ मिनटों तक ज़मीन को घूरता रहा। थोड़ी देर बाद, पहली मंज़िल की बालकनी से एक आवाज़ आई: 'कौन है वहाँ? पेड़ों के बीच क्या कर रहे हो?'

यह जीवनलाल की दादी थीं। 'कोई बात नहीं, दादी!' उसने चिल्लाकर जवाब दिया। 'मैं और मेरे दोस्त ही हैं।'
‘ओह। मुझे बगीचे में लोग घूमते-फिरते दिखते रहते हैं। भगवान जाने वे क्या करते हैं।’
‘क्या उसे ठीक से दिखाई देता है?’ फेलुदा ने पूछा।
'नहीं, वह ठीक से नहीं सुन पाती; और जब तक कोई चिल्लाकर न कहे तब तक वह सुन भी नहीं सकती।'
मुझे नहीं लगता कि कोई बगीचे की देखभाल करता है?
'नहीं, ऐसा नहीं है। भोलानाथ बाबू अपनी तरफ से पूरी कोशिश करते हैं, लेकिन जाहिर है कि यह काफी नहीं है।'
क्या रात में पहरेदार इस पर नजर रखते हैं?
‘रात में? आप मज़ाक कर रहे होंगे। यहाँ कोई भी गार्ड अपनी ड्यूटी निभाने के लिए जागते रहने का सपना भी नहीं देखेगा।’
‘सामने का दरवाजा बंद है, है ना?’
'हां, बिल्कुल। यह भोलानाथ बाबू का काम है। लेकिन जब मैं यहां होता हूं, तो मैं सामने का दरवाजा बंद कर देता हूं और चाबी अपने पास रखता हूं।'
‘मैं अभी तक भोलानाथ बाबू से नहीं मिला हूँ। क्या आप उन्हें बुला सकते हैं?’ जीवनलाल ने अपने एक सेवक से भोलानाथ बाबू को बुलाने और हमारे लिए नींबू पानी लाने को कहा। हम तालाब के किनारे बाहर बैठे थे। हाल ही में हुई मानसून की बारिश से तालाब पूरी तरह भर गया था। अब वह शालुक के फूलों से ढका हुआ था।
कुछ ही मिनटों में भोलानाथ बाबू आ गए। उन्होंने धोती और कमीज पहनी हुई थी, लेकिन उनका पहनावा किसी आम किसान से कम नहीं था। मैं आसानी से कल्पना कर सकता था कि वे खेत में काम कर रहे हैं, ज़मीन जोत रहे हैं।
फेलुदा ने उससे बात करना शुरू किया। दूर से आती हल्की संगीत की धुन के अलावा कहीं कोई शोर नहीं था। अगर वह संगीत न होता, तो यह मानना बिल्कुल आसान होता कि हम सौ साल से भी ज़्यादा समय पीछे चले गए हैं।
‘क्या मृगांका भट्टाचार्य इस घर में सिर्फ एक बार आए थे?’ फेलुदा ने पूछा। 'हाल ही में, हाँ। सिर्फ एक बार।'
‘आपका मतलब है कि वह पहले भी श्री मल्लिक से मिल चुके हैं?’

'हां, कुछ बार। मुझे लगता है कि गुरु ने उनसे अपनी कुंडली बनवाने को कहा था।'
‘और क्या उसने ऐसा किया?’
'मुझें नहीं पता।'
'हाल ही में उन्हें यहाँ आने के लिए किसने प्रेरित किया? उन्हें आने के लिए किसने कहा?'
‘मास्टर ने ऐसा किया। उह... डॉक्टर और मैंने दोनों ने उनसे कहा था कि इससे मदद मिल सकती है।’
‘आप श्री भट्टाचार्य से नियमित रूप से मिलने जाते हैं, है ना?’
'जी श्रीमान।'
क्या आप उसकी शक्तियों पर विश्वास करते हैं?
भोलानाथ बाबू ने अपना सिर झुकाया। “मैं क्या कहूँ, महोदय? मेरी एक बेटी थी — लक्ष्मी, उसका नाम था। देवी के समान सुंदर और उसके शिष्टाचार भी उतने ही अच्छे थे। लेकिन... जब वह केवल ग्यारह वर्ष की थी, उसे हैजा हो गया और... उसकी मृत्यु हो गई। मैं पूरी तरह टूट गया था। फिर श्री भट्टाचार्य मेरे पास आए और बोले, “क्या आप उससे सुनना चाहते हैं कि वह कैसी है?””
भोलानाथ बाबू रुक गए और अपनी धोती के एक कोने से अपनी आँखें पोंछीं। फिर बड़ी मुश्किल से खुद को संभाला और आगे बोले, “उसने उससे बात की। वह आई और उसने कहा कि उसे शांति मिल गई है और वह जहाँ है वहाँ बहुत खुश है, इसलिए मुझे उदास होना बंद कर देना चाहिए। मेरा मतलब है, उसने ये सब सीधे-सीधे नहीं कहा, लेकिन ये शब्द कागज़ पर लिखे हुए थे। मैं... उस दिन से... मैं...” उनका गला फिर भर आया।
फेलुदा ने उससे और सवाल नहीं किए। उसने विषय बदलते हुए पूछा, 'क्या आप उस समय मौजूद थे जब श्री भट्टाचार्य ने मृत दुरलभ सिंह से संपर्क किया था?' 'हां, लेकिन मैं कमरे में नहीं था। मालिक नहीं चाहता था कि उसकी मां को पता चले, इसलिए उसने मुझे दरवाजे पर खड़े होकर उस पर नजर रखने को कहा था। कमरे में श्री भट्टाचार्य, उनके भतीजे नित्यानंद और मालिक मौजूद थे।'
‘क्या आपने कुछ सुना?’
“मैंने बहुत कम सुना, महोदय। पहले दस मिनट तक वे बिल्कुल चुप रहे। फिर, दूर से एक सियार की आवाज आई, और मुझे याद है कि उसी क्षण मैंने मालिक की आवाज सुनी। उन्होंने कहा, “क्या तुम वहाँ हो? क्या कोई आया है?” लेकिन उसके बाद

मैंने कुछ नहीं सुना। जब सब खत्म हो गया, तो मैं श्री भट्टाचार्य को घर ले गया।”
फेलुदा ने अपना नींबू पानी खत्म किया और एक चारमीनार जलाई। 'दुर्लभ सिंह मल्लिक के आदमियों ने तुम्हारे घर में आग लगा दी थी। क्या तुम्हें याद है?' कुछ देर रुकने के बाद, भोलानाथ बाबू ने दो शब्द कहे: 'मैं करता/करती हूँ।' क्या तुम बदला नहीं लेना चाहते? क्या तुमने कभी पुराने हिसाब-किताब निपटाने के बारे में नहीं सोचा?
मैंने फेलुदा को पहले भी ऐसे तीखे सवाल पूछते सुना था। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था कि बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि कोई व्यक्ति ऐसे सवालों पर कैसी प्रतिक्रिया देता है।
भोलानाथ बाबू ने चुपचाप सिर हिलाया। फिर उन्होंने कहा, 'बिल्कुल नहीं। गुरुजी पिछले कुछ वर्षों में बदल गए होंगे, लेकिन निश्चित रूप से मैं उनसे अधिक दयालु या उदार किसी और को नहीं जानता।'
फेलुदा के पास उससे पूछने के लिए और कोई सवाल नहीं थे।
कुछ सेकंड बाद भोलानाथ बाबू ने पूछा, 'क्या मैं अब जा सकता हूँ, महोदय?' भोलानाथ बाबू ने आगे कहा, 'अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं श्री भट्टाचार्य के घर दोबारा जाना चाहूँगा, महोदय।'
‘अरे नहीं, आप जाइए। आपकी मदद के लिए धन्यवाद।’ भोलानाथ बाबू चले गए। जीवनलाल बेचैन होने लगा। ‘क्या बात है, जीवन बाबू?’ फेलुदा ने पूछा।
‘कुछ नहीं। बस मुझे यह जानने की उत्सुकता है कि आपने कोई प्रगति की है या नहीं।’ जाहिर तौर पर वह खुद को लेकर चिंतित थे।
‘भोलानाथ बाबू मुझे बहुत अच्छे इंसान लगे,’ फेलुदा ने जवाब दिया। इससे जीवनलाल और भी ज्यादा परेशान हो गया।
‘आपका मतलब है कि मैं…?’ उसने शुरू किया।
नहीं, नहीं। मुझे भोलानाथ बाबू पसंद थे। इसका यह मतलब नहीं है कि मैं आपको नापसंद करता हूँ। देखिए, सच कहूँ तो, मैं अभी तक किसी नतीजे पर नहीं पहुँचा हूँ। मुझे कुछ बातों पर संदेह है, लेकिन वे किसी बात को साबित करने के लिए काफी नहीं हैं, खासकर तब जब मुझे समझ नहीं आ रहा कि उनका मुख्य समस्या से क्या संबंध है। मुझे कुछ होने का इंतज़ार करना होगा, कुछ ऐसा जो—’ उनकी बात बीच में ही काट दी गई।

‘कौन है वहाँ? जीवन, क्या तुम हो?’ जीवनलाल की दादी ने फिर से चिल्लाकर कहा।
हम उनकी आवाज़ केवल इसलिए सुन पाए क्योंकि वहाँ बहुत सन्नाटा था।
फेलुदा तुरंत उठा और बगीचे के पिछले हिस्से की ओर दौड़ने लगा। हम भी उसके पीछे-पीछे गए। लालमोहन बाबू पानी को घूर रहे थे और गुनगुना रहे थे। वे भी अचानक रुक गए और हमारे साथ आ गए।
हमने फेलुदा को परिसर की दीवार में बने एक छेद के पास खड़ा पाया। दीवार का एक हिस्सा टूटकर गिर गया था।
वह दीवार पर टॉर्च की रोशनी डाल रहा था।
‘क्या तुमने किसी को देखा?’ जीवनलाल ने पूछा।
'हां, लेकिन इतनी करीब से नहीं कि उसे पहचान सकूं। वह उस गैप से निकल गया।' अगले तीस मिनट हमने पूरे इलाके की छानबीन की। हजारों मच्छर हमारा पीछा करते रहे, साथ ही उतने ही झिंगुर भी लगातार चहचहाते रहे। अंत में जो मिला वह बेहद रहस्यमय था। बिल्कुल आखिरी छोर पर, शायद आखिरी पेड़ के नीचे, जमीन में एक बड़ा गड्ढा था। जाहिर है, इसे हाल ही में खोदा गया था। जीवनलाल, जो हमारी ही तरह हैरान दिख रहे थे, कोई स्पष्टीकरण नहीं दे सके। 'छिपा हुआ खजाना!' लालमोहन बाबू ने कहा। 'किसी ने अभी-अभी निकाल लिया है।'
लेकिन जीवनलाल ने सिर हिलाया। ‘नहीं,’ उसने कहा, ‘हमारे परिवार में किसी ने कभी कोई खजाना नहीं छिपाया। अगर उन्होंने छिपाया होता तो मुझे पता चल जाता। मेरा मतलब है, कहानियां और अफवाहें तो फैल ही जातीं।’
फेलुदा की टिप्पणी भी उतनी ही रहस्यमयी लग रही थी। 'जीवन बाबू, क्या मैंने नहीं कहा था कि मैं किसी घटना के घटित होने का इंतजार कर रहा था? मुझे लगता है कि अब वह घटित हो चुकी है।'
इसके बाद हम घर लौट आए। रात के खाने के बाद, लालमोहन बाबू और मैं जल्दी सोना चाहते थे। जीवनलाल के बगीचे में कुछ पौधे कांटेदार थे, इसलिए उन्हें चोटें और खरोंचें आ गई थीं। डेटॉल लगाने के बाद, उन्होंने कहा कि वे सोने के लिए तैयार हैं। मैं भी सोने के लिए तैयार थी।
फेलुदा ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो बिल्कुल भी थका हुआ नहीं लग रहा था। उसने अपनी नोटबुक खोली, अपने हाथों, पैरों और चेहरे पर ओडोमोस लगाया और तकिए के सहारे बिस्तर पर लेट गया। तुलसी बाबू पान की थाली लेकर अंदर आए।
लालमोहन बाबू को जम्हाई आने लगी, लेकिन फेलुदा ने हमारे मेज़बान की ओर देखकर उनसे एक सवाल पूछा, तो वह रुक गए।

उन्होंने कहा, 'मुझे बताइए, तुलसी बाबू, अगर आप किसी अच्छे और ईमानदार आदमी को दूसरों को धोखा देने का तरीका बताएं, और वह आदमी वास्तव में उस तरीके को अमल में लाए, तो क्या आप उसे तब भी अच्छा और ईमानदार कहेंगे?'
तुलसी बाबू घबराई हुई लग रही थीं। 'हे भगवान, श्री मित्तर, मुझे पहेलियाँ और रहस्य सुलझाने में बिल्कुल भी महारत हासिल नहीं है। लेकिन चूंकि आप पूछ ही रहे हैं, अगर वह आदमी सचमुच अच्छा है, तो वह इतना नीच काम तो नहीं करेगा? और अगर उसने ऐसा किया... तो नहीं, मैं उसे अब अच्छा नहीं कहूंगी।'
‘आह। आपको देखकर मुझे खुशी हुई और मैं इस बात से सहमत हूं।’
मैं इतना थका हुआ था कि फेलुदा की रहस्यमयी बातों के बारे में सोचने की फुर्सत ही नहीं थी। इसलिए मैं बिस्तर पर लेट गया, पर नींद नहीं आई। मेरा दिमाग सवालों से भरा हुआ था: श्यामलाल मल्लिक के पैरों में मिट्टी क्यों लगी थी? वह गुमनाम चिट्ठी और फंदा किसने भेजा था? आज शाम उसकी माँ ने बगीचे में किसे देखा था? वह गड्ढा किसने खोदा था और उसमें क्या था? श्यामलाल हमें वह कागज क्यों नहीं दिखाना चाहता था जिस पर किसी आत्मा ने लिखा था? पता नहीं कब मुझे नींद आ गई। जब मैंने आंखें खोलीं तो अंधेरा ही था। फिर मुझे एहसास हुआ कि मैं किसी चीख से जागा था। शायद वह चीख लालमोहन बाबू की थी, क्योंकि वह मच्छरदानी हटाकर अपने बिस्तर पर बैठे थे।
मैंने पूछा, ‘क्या हुआ?’
‘एक सपना... एक भयानक सपना! हे भगवान, यह कितना डरावना था। जानते हो मैंने क्या देखा? मेरा स्वागत समारोह हो रहा था और मेरे दादाजी वहाँ थे, मेरे गले में फूलों की माला पहना रहे थे। “देखो, मैंने तुम्हें कितनी खूबसूरत माला पहनाई है!” उन्होंने कहा। मैंने देखा और... और... देखा कि वे फूल नहीं थे, बल्कि खून से लथपथ छोटे-छोटे इंसानी सिर थे! क्या तुम इसकी कल्पना कर सकते हो?’
‘लालमोहन बाबू, भोर होते ही इस खूबसूरत पल में आपको इतना भयानक सपना क्यों देखना पड़ा?’ फेलुदा ने पूछा।
अचानक मुझे एहसास हुआ कि फेलुदा उठ चुका है। मैंने उसे छत की ओर जाने वाले दरवाजे से अंदर आते देखा। जाहिर है, वह योगाभ्यास कर रहा था।
‘मैं क्या करूँ, फेलू बाबू? ये सब स्वागत समारोह की बातें, मृत पूर्वजों से बात करना, और पुराने काली मंदिर... ये सब बातें मेरे दिमाग में उलझ गई हैं!’

वापस बिस्तर पर जाने का कोई फायदा नहीं था। मैं उठा और चुपचाप छत पर चला गया। तुलसी बाबू शायद अभी भी सो रहे होंगे। चाँद अभी भी चमक रहा था, लेकिन उसकी रोशनी फीकी पड़ गई थी। मैंने कुछ तारों को टिमटिमाते देखा, लेकिन वे ज्यादा देर तक नहीं टिक सकते थे। पूर्वी आकाश अभी-अभी गुलाबी होने लगा था। आज सुबह मैंने टूथब्रश इस्तेमाल करने के बजाय नीम की टहनी चबाने का फैसला किया था। फेलुदा ने कहा था कि यह कहीं ज्यादा सेहतमंद है। इसलिए मैंने पिछली रात से तैयार रखे टुकड़ों में से एक टुकड़ा उठाया और जैसे ही उसे अपने मुंह में डाला, तभी कोई सामने के दरवाजे पर आया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा:
‘श्रीमान मिटर! जल्दी आइए। कृपया, महोदय... श्रीमान मिटर!’
हम सीढ़ियों से नीचे भागे। वहाँ भोलानाथ बाबू थे। ‘कल रात…’ हमें देखकर उनकी आँखें फूल गईं, ‘हम पर चोरों ने हमला किया। उन्होंने मुझे बाँध दिया और मालिक को भी बाँधकर मुँह बंद कर दिया। वे दो थे। उस बड़े संदूक में जो कुछ भी था… सारा पैसा… सब गायब हो गया। किसी तरह सिर्फ़ जीवन बाबू बच गए। उन्होंने आकर मुझे खोला और आपको बुलाने को कहा। कृपया, महोदय, आप तुरंत आइए!’

पाँच

श्यामलाल मल्लिक को कोई चोट नहीं आई थी, लेकिन दो घंटे तक हाथ-पैर बंधे रहने से वे बुरी तरह हिल गए थे। वे अपने कमरे में गद्दे पर बैठे थे और खाली निगाहों से आसमान को घूर रहे थे। मैंने उन्हें बुदबुदाते सुना, 'अगर मुझे इस तरह बांधना ही था, तो मुझे मार क्यों नहीं डाला?' मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उन्हें पता था कि उनका सारा पैसा चला गया है।
फेलुदा ने श्यामलाल के कमरे की अच्छी तरह तलाशी ली। केवल बड़ा संदूक ही खुला था। बाकी सब कुछ अपनी जगह पर था। संदूक की चाबी उसके तकिए के नीचे रखी रहती थी। भोलानाथ बाबू, जो पहली मंजिल पर सोते थे, उन पर सोते समय हमला हुआ। स्वाभाविक रूप से, वे किसी भी तरह का विरोध नहीं कर पाए। सामान ढोने वाला व्यक्ति सोता रहा, कोई भी उसके कमरे के पास नहीं गया। एक पहरेदार कहीं बाहर गया हुआ था, और दूसरे के सिर पर भारी छड़ से वार किया गया था, जिससे वह कई घंटों तक बेहोश रहा। जीवनलाल की दादी घर के पिछले हिस्से में रहती थीं। सौभाग्य से, उन्हें इस घटना की कोई जानकारी नहीं थी।
हमने भोलानाथ बाबू और नौकरों से पंद्रह मिनट बात की, लेकिन जीवनलाल का कोई अता-पता नहीं था। 'क्या वह पुलिस को बुलाने गया है?' फेलुदा ने पूछा।
‘मुझे नहीं पता, महोदय,’ भोलानाथ बाबू हिचकिचाते हुए बोले, ‘उन्होंने मुझे आपके घर भेजा था और मैंने उन्हें बाहर जाते देखा था, लेकिन उसके बाद से मैंने उन्हें नहीं देखा है।’
बिना कुछ कहे, फेलुदा सीढ़ियों की ओर दौड़ पड़ा, और मैं और लालमोहन बाबू उसके पीछे-पीछे गए। हम नीचे भूतल पर उतरे, एक आंगन पार किया और पीछे के दरवाजे से बगीचे में चले गए। सूरज अभी-अभी निकला था, और हल्की धुंध छाई हुई थी। घास और पत्तियां सुबह की ओस से भीगी हुई थीं। कौवे, मैना और कुछ अन्य पक्षी जिन्हें मैं पहचान नहीं सका, अपने-अपने काम में लग गए थे।
हम बगीचे से होते हुए आगे बढ़े, लेकिन कुछ ही मिनटों में हमें रुकना पड़ा। एक कटहल के पेड़ के नीचे एक आदमी लेटा हुआ था। मैंने उसकी नीली कमीज़,

सफ़ेद पजामा और चप्पलें पहचान लीं। वह जीवनलाल मल्लिक थे। फेलुदा तेज़ी से आगे बढ़े और उन्हें देखने लगे।
‘हे भगवान!’ वह भयभीत होकर चिल्लाया और पीछे हट गया।
‘फेलू बाबू!’ लालमोहन बाबू ने शव से कुछ फीट दूर पड़ी एक वस्तु की ओर इशारा करते हुए पुकारा।
‘मुझे पता है, मैंने इसे देखा है। कृपया इसे मत छुओ। इसी से जीवनलाल की हत्या की गई थी।’
यह एक चौकोर कपड़ा था, जिसके एक कोने पर पत्थर बंधा हुआ था। भोलानाथ बाबू हमारे पीछे-पीछे बाहर आए और उन्हें सब कुछ समझ आ गया।
‘मुझे इस पर विश्वास नहीं हो रहा!’ वह चिल्लाया और ऐसा लग रहा था जैसे वह बेहोश होने वाला हो।
फेलुदा ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, “हिम्मत रखो। यह हताश होने का समय नहीं है। तुम्हें पुलिस को सूचना देनी चाहिए। अगर तुम चाहो तो लालमोहन बाबू तुम्हारे साथ चलेंगे। किसी को भी शव या हथियार को नहीं छूना चाहिए। यह घटना अभी हाल ही में घटी होगी। शायद हत्यारा अभी भी आसपास ही है। तुरंत जाओ, लेकिन ध्यान रखना कि तुम्हारे मालिक को इस हत्या के बारे में पता न चले।”
फेलुदा बाड़े की दीवार की ओर दौड़ा और उसमें बने गैप के सामने रुक गया। फिर हम दोनों उसमें से निकल गए और खुद को उस बाँस के झुरमुट के सामने पाया, जिससे होकर हम यहाँ अपनी पहली रात को गुजरे थे। सौ गज के दायरे में कोई घर नहीं था। हम बाँस के झुरमुट में घुस गए। कोने में छिपी हुई वह इमारत क्या थी? ओह, शायद वह वही पुराना काली मंदिर था जिसका जिक्र तुलसी बाबू ने किया था।
एक व्यक्ति मंदिर के पास खड़ा हमें देख रहा था। उसने आगे आकर पूछा, 'आप लोग इतनी जल्दी क्यों उठ गए?' वह तारक कविराज थे, जो एक आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं।
‘क्या तुमने नहीं सुना?’ फेलुदा ने पूछा।
‘क्या सुना?’
‘बूढ़े श्री मल्लिक—’
'क्या!'

नहीं, नहीं, ऐसा नहीं है जैसा आप सोच रहे हैं। श्री मल्लिक ठीक हैं, लेकिन कल रात उनके घर में चोरी हो गई और... उनके बेटे की हत्या कर दी गई है। लेकिन बूढ़े आदमी को यह बात नहीं पता, इसलिए कृपया उन्हें मत बताइए।
तारक कविराज जल्दी से आगे बढ़ गया। कुछ क्षण बाद, हमने वापस लौटने का फैसला किया। अपराधी स्पष्ट रूप से भाग चुका था।
हम चुपके से बगीचे में लौट आए। इसके बाद मैंने जो देखा—या यूँ कहें कि जो नहीं देखा—उससे मेरी आँखें फटी रह गईं और मैं सोचने लगा कि क्या मैं सपना देख रहा हूँ। क्या यह सचमुच सच हो सकता है?
कटहल के पेड़ के नीचे की ज़मीन खाली थी। जीवनलाल का शव गायब हो चुका था, और साथ ही कपड़े का टुकड़ा भी।
लालमोहन बाबू कुछ ही दूरी पर खड़े थे, बुरी तरह कांप रहे थे। उन्हें बोलने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ी: ‘भ-भोलानाथ बाबू और मैं घर वापस गए, लेकिन उन्होंने कहा कि वे अकेले ही पुलिस स्टेशन जाएंगे। मैंने उन्हें जाने दिया, और फिर मैं आपको ढूंढने के लिए इस तरफ आया, लेकिन तभी मैंने देखा...’ ‘…क्या शव गायब हो गया था?’
जी-जी।
फेलुदा फिर भागा, लेकिन दूसरी दिशा में। इस बार हम उस आखिरी छोर तक पहुँचे जहाँ हमें ज़मीन में गड्ढा मिला था। अब हमें एहसास हुआ कि बगीचे के पीछे एक और बड़ा तालाब था, साथ ही दीवार में एक और बड़ा छेद भी था। इसमें कोई शक नहीं कि शव को उस छेद से घसीटकर तालाब में फेंका गया था। मैंने देखा कि जिस पेड़ के नीचे गड्ढा खोदा गया था, वह आम का पेड़ था।
हम वापस उसी रास्ते से लौटे और घर में वापस चले गए, पीछे की सीढ़ियों का इस्तेमाल करके पहली मंजिल पर गए।
‘जीवन! जीवन!’ हमने उसकी दादी को पुकारते सुना। ‘अब वो कहाँ चला गया? क्या मैंने उसे अभी-अभी नहीं देखा था?’
हमने सफेद साड़ी पहने उस बूढ़ी औरत को अपने कमरे से बाहर आते देखा। झुर्रियों से भरा उसका चेहरा धंसा हुआ लग रहा था, बाल बहुत छोटे कटे हुए थे और आंखें मोटे लेंस के पीछे छिपी हुई थीं। मैंने सोचा, उसकी उम्र कम से कम अस्सी तो होगी ही।
फेलुदा उससे बात करने के लिए आगे बढ़ा। 'जीवनलाल को बाहर जाना पड़ा। क्या आपको किसी चीज की जरूरत है? शायद मैं आपके लिए ला सकता हूँ?'

'आप कौन हैं?'
मैं उनका मित्र हूं। मेरा नाम प्रदोष है।
‘मैंने आपको पहले कभी नहीं देखा, है ना?’
नहीं। मैं शहर से सिर्फ दो दिन पहले ही आया हूँ।
‘कलकत्ता से?’
जी हाँ। क्या मैं आपके लिए कुछ लाऊँ? आपको जीवनलाल किसलिए चाहिए था?’ बुढ़िया अचानक अनिश्चित सी हो गई। उसने अपना चेहरा ऊपर उठाया, चारों ओर देखा और थोड़ी बेबसी से बोली, ‘मुझे याद नहीं आ रहा। मुझे वह किसलिए चाहिए था? मुझे अब कुछ भी याद नहीं है।’
हम उसे खुद से कुछ बुदबुदाते हुए छोड़कर श्यामलाल के कमरे की ओर चल पड़े। डॉक्टर उसके साथ थे और उसकी नब्ज़ देख रहे थे। श्यामलाल ने अपनी माँ की तरह ही बेबसी से पूछा, 'जीवन कहाँ गया?' डॉक्टर ने हत्या के बारे में कुछ भी कहने से साफ इनकार कर दिया था।
‘क्या तुम नहीं चाहते थे कि वह कलकत्ता वापस जाए?’ फेलुदा ने पूछा। ‘कलकत्ता वापस? तुम्हारा मतलब है कि वह मुझे बिना बताए चला गया? वह कैसे गया? पालकी में?’
नहीं। कोई भी पालकी में बैठकर कलकत्ता तक नहीं जा सकता। आप यह बात अच्छी तरह जानते हैं।
‘क्या तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो?’ श्यामलाल की आवाज में नाराजगी झलक रही थी।
‘मैं अकेला नहीं हूँ, श्री मल्लिक,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। ‘पूरा गाँव आपका मज़ाक उड़ाता है। क्या आपको यह एहसास नहीं है कि आपकी वर्तमान जीवनशैली किसी के लिए भी अच्छी नहीं है, खासकर आपके लिए? अगर आपके पास बंदूकधारी पहरेदार होता, तो वह पुराने और कुंद भाले वाले पहरेदार से कहीं ज़्यादा कारगर होता। बताइए, क्या यह सदमा उतना ही बुरा नहीं है जितना आपको वर्षों पहले बिजली का झटका लगा था? समय को पीछे ले जाने की कोशिश करने से कुछ हासिल नहीं होता, श्री मल्लिक। आप बीते हुए समय को वापस नहीं ला सकते। यह संभव ही नहीं है।’
मुझे उम्मीद थी कि श्यामलाल मल्लिक भड़क उठेंगे और फेलुदा को तुरंत बाहर जाने का आदेश देंगे। लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने ऐसा नहीं किया।

वास्तव में, उन्होंने कुछ भी नहीं बोला। उन्होंने बस आह भरी और सामने वाली दीवार को घूरते रहे।

छह

‘हे भगवान! मेरा चेहरा देखो!’ लालमोहन बाबू ने अपने शेविंग मिरर में देखते हुए कहा। हमारे चेहरे बिल्कुल एक जैसे दिख रहे थे। हम सभी मच्छरों के काटने से भरे हुए थे।
तुलसी बाबू ने कहा, 'मुझे आपको पहले ही चेतावनी दे देनी चाहिए थी। यहां मच्छर बहुत ज्यादा परेशान करते हैं। दरअसल, गोसाईपुर की यही एक कमी है।' ‘नहीं,’ लालमोहन बाबू ने कहा, ‘पूरा गाँव तो नहीं, है ना? मुझे लगता है कि ये सिर्फ़ मल्लिक परिवार का वो बगीचा है। वहीं पर ज़्यादातर मच्छर पनपते हैं, वहीं पर वे सबसे ज़्यादा खतरनाक होते हैं।’
दोपहर के भोजन के बाद हम अपने कमरे में वापस आ गए थे। पुलिस आ चुकी थी और उसने अपनी जांच शुरू कर दी थी। फेलुदा एक बार फिर चुप हो गया था। शायद जीवनलाल की हत्या इतनी अप्रत्याशित थी कि उसने उसकी सारी योजनाएँ गड़बड़ा दी थीं। अगर जीवनलाल की हत्या चोरों ने की थी, तो पुलिस उन्हें पकड़ने की बेहतर स्थिति में थी। फेलुदा अकेले कुछ नहीं कर सकता था।
प्रभारी निरीक्षक, सुधाकर प्रमाणिक नाम के एक व्यक्ति ने पहले ही उससे बात कर ली थी। उसने फेलुदा के बारे में सुना तो था, लेकिन उसके प्रति उसके मन में कोई खास सम्मान नहीं था। वह शव के गायब होने को लेकर विशेष रूप से नाराज़ था।
‘तुम जैसे नौसिखिए जासूसों को सिस्टम और तरीकों पर बिल्कुल भरोसा नहीं है, है ना?’ उसने चिढ़कर कहा। ‘मैं तुम्हारे जैसे लोगों को जानता हूँ, मैंने पहले भी निजी जासूसों के साथ काम किया है। अगर तुम्हें शव वहीं छोड़ना था, तो तुमने किसी को उसकी रखवाली के लिए क्यों नहीं लगाया? अब हमें पीछे वाले तालाब की खुदाई करनी होगी। अगर उससे भी काम नहीं बना, तो हमें यहाँ के बाकी सभी तालाबों और झीलों के साथ भी ऐसा ही करना पड़ेगा... और यहाँ ग्यारह तालाब हैं। यह सब तुम्हारी गलती है, मिस्टर मिटर। तुम्हें शव को लावारिस छोड़कर इतनी जल्दी नहीं जाना चाहिए था।’

फेलुदा चुपचाप उसकी बातें सुनता रहा, उसने अपना बचाव करने के लिए एक शब्द भी नहीं कहा। थोड़ी देर बाद उसने जो कहा, उससे इंस्पेक्टर और भी चिढ़ गया। फेलुदा ने पूछा, 'क्या आप भूतों पर विश्वास करते हैं?' इंस्पेक्टर प्रमाणिक ने उसे घूरकर देखा, फिर सिर हिलाकर कहा, 'मैंने सुना था कि आप अपने काम को गंभीरता से लेते हैं। अब यह स्पष्ट है कि ऐसा नहीं है।'
फेलुदा ने समझाया, ‘मुझे आपसे पूछना ही पड़ा, क्योंकि अगर आप हत्यारे को नहीं पकड़ पाए, तो मुझे श्री भट्टाचार्य से मदद लेनी पड़ेगी। शायद वे जीवनलाल मल्लिक की आत्मा से संपर्क कर सकें? यकीनन मृत व्यक्ति की आत्मा सच्चाई बता पाएगी?’
‘क्या आप हार स्वीकार करते हैं, श्रीमान मिटर? क्या आप हार मान रहे हैं?’ नहीं। मैं अपनी जांच जारी नहीं रख सकता... हां, मैं यह स्वीकार करता हूं... लेकिन अगर श्री भट्टाचार्य मेरी मदद करें, तो मैं अपराधी को न्याय के कटघरे में ला सकता हूं। मुझे इस बात का पूरा यकीन है।
क्या आप एक मृत व्यक्ति और एक जीवित व्यक्ति के बीच अंतर बता सकते हैं? श्रीमान प्रमाणिक, मुझे नहीं लगता कि मुझे आपके सभी सवालों का जवाब देने की ज़रूरत है, खासकर इसलिए क्योंकि मेरी पुलिस में भर्ती होने की कोई इच्छा नहीं है। अगर मैं भूत-प्रेतों की बात कर रहा हूँ, तो यह केवल इसलिए है क्योंकि मेरे तरीके आपके तरीकों से बिल्कुल अलग हैं।
‘ओह? क्या आपको भोलानाथ पर शक करने का कोई कारण नहीं है?’
‘मुझे बस यही शक है—नहीं, मुझे यही डर है—कि आप उसके परिवार के इतिहास को सुनकर और यह सोचकर कि उसके पास कोई मकसद था, उसे तुरंत गिरफ्तार कर लेंगे। अगर आप ऐसा करते हैं, इंस्पेक्टर, तो आप बहुत बड़ी गलती करेंगे।’ इंस्पेक्टर हँसा और खड़ा हो गया। ‘क्या तुम्हें पता है तुम्हारी समस्या क्या है?’ उसने झुंझलाहट से जीभ चटकाते हुए कहा। ‘तुम बेवजह उलझनें खड़ी कर रहे हो। यह बहुत सीधा-सादा मामला है। ज़रा सोचो। क्या यह स्पष्ट नहीं है कि जिसने भी वह संदूक खोला, उसे चाबी कहाँ रखी है, यह पता था? अगर वह कोई साधारण चोर होता, तो वह उसे तोड़कर ही खोल लेता? भोलानाथ ने पैसे लिए और भाग रहा था, तभी जीवनलाल ने उसे पकड़ लिया। भोलानाथ ने शायद उसे मारने की योजना नहीं बनाई थी, लेकिन मजबूरी में उसे ऐसा करना पड़ा। फिर वह तुम्हें फोन करने चला गया, ताकि शक उस पर न पड़े। वह कहता है कि उसे भी बाँध दिया

गया था, और जीवनलाल ने आकर उसे खोला। लेकिन क्या वह इसे साबित कर सकता है? हमें कैसे पता चलेगा कि वह झूठ नहीं बोल रहा है?’
‘बहुत खूब। लेकिन वो सारा पैसा कहाँ गया? भोलानाथ ने उसका क्या किया?’ ‘हमें इसकी तलाश करनी होगी, श्री मिटर। शव मिलते ही हम भोलानाथ को गिरफ्तार कर लेंगे। वह सब कुछ बता देगा... हाँ, वह हमें सब कुछ बता देगा, चिंता मत करो।’
मुझे भोलानाथ बाबू को दोषी मानना अच्छा नहीं लग रहा था, लेकिन इंस्पेक्टर की बात मुझे समझ में आ रही थी। मुझे यह समझ नहीं आ रहा था कि फेलुदा इसे नज़रअंदाज़ क्यों कर रहा था। जैसे ही इंस्पेक्टर सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा, उसने उसे पुकारा, 'जीवनलाल की आत्मा आज रात श्री भट्टाचार्य के घर में बात करेगी। अगर तुम आओगे तो शायद कुछ सीख जाओगे!'
तुलसी बाबू ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जो जीवनलाल की आत्मा की चिंता से अधिक अगले दिन होने वाले स्वागत समारोह को लेकर चिंतित थे। अगर तब तक हत्यारा पकड़ा नहीं गया, तो स्वागत समारोह रद्द करना पड़ेगा। स्वाभाविक रूप से, किसी का भी मन गाने-बजाने और भाषण देने का नहीं होगा। लालमोहन बाबू ने यह बात मान ली थी और उन्हें यह कहते हुए सुना गया, 'मुझे कोई आपत्ति नहीं है। आखिर मैं तो मर्डर मिस्ट्री ही बेचता हूँ, है ना? यहाँ तो एक असली हत्या और एक असली रहस्य है। अगर स्वागत समारोह नहीं हो पाता, तो किसे परवाह है?'
उन्होंने यह कहा, लेकिन उनके मन से स्वागत समारोह का विचार नहीं निकल रहा था। मैंने उन्हें कई बार अपने भाषण की पंक्तियाँ बुदबुदाते हुए और फिर तुरंत खुद को रोकते हुए देखा।
‘क्या आप श्री भट्टाचार्य को बता सकते हैं कि हम आज शाम उनसे मिलने आ रहे हैं?’ फेलुदा ने तुलसी बाबू से कहा। ‘उन्हें बता दीजिए कि हम उनके अन्य ग्राहकों के साथ कतार में इंतजार नहीं कर सकते। उन्हें हमें प्राथमिकता देनी होगी।’
इस बार तुलसी बाबू को एहसास हुआ कि फेलुदा श्री भट्टाचार्य से परामर्श करने को लेकर वाकई गंभीर थे। वह बहुत हैरान दिखे।
फेलुदा ने उनसे कहा, 'मैंने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की है। अब मैं श्री भट्टाचार्य की मदद के बिना आगे नहीं बढ़ सकता।'

मैंने फिर से उस बात पर गौर किया जो उन्होंने मुझे खुले दिमाग से सोचने के लिए कही थी। दुनिया भर में हर दिन दर्जनों ऐसी घटनाएं होती हैं जिन्हें वैज्ञानिक समझा नहीं पाते। इसका मतलब यह नहीं कि वे सभी झूठी कहानियां हों। अभी हाल ही में मैंने उरी गेलर नाम के एक व्यक्ति के बारे में पढ़ा था जो स्टील के कांटों और चम्मचों को घूरकर सिर्फ अपनी इच्छाशक्ति से उन्हें मोड़ सकता था। जाने-माने वैज्ञानिकों ने उन्हें देखा था, फिर भी कोई नहीं जानता था कि उन्होंने यह कैसे किया। शायद मृगांका भट्टाचार्य भी गेलर जैसे ही कोई व्यक्ति थे?
तुलसी बाबू ने अपनी घड़ी देखी। उन्होंने कहा, 'अभी साढ़े पाँच बज रहे हैं। मुझे लगता है कि हम दोनों को साथ जाकर अपनी बात रखनी चाहिए।'
‘बहुत खूब,’ फेलुदा ने उठते हुए कहा। ‘क्यों न तुम दोनों टहलने चलो?’
मुझे यह विचार बहुत अच्छा लगा। लालमोहन बाबू ने बताया था कि गोसाईपुर में अक्टूबर की शाम कितनी सुहावनी हो सकती है, और मैं भी थोड़ी सैर करना चाहता था। इसलिए जैसे ही फेलुदा और तुलसी बाबू श्री भट्टाचार्य से बात करने गए, हम निकल पड़े।

सात

दो दिन पहले गाँव बिलकुल अलग लग रहा था। आज, घर से निकलते ही मुझे अजीब सी बेचैनी महसूस होने लगी। मैं लापता शव के बारे में सोचना बंद ही नहीं कर पा रही थी। हो सकता है वो हमारे रास्ते में आने वाली किसी भी झाड़ी या पेड़- पौधे के पीछे पड़ा हो... नहीं, नहीं, मुझे इस बारे में नहीं सोचना चाहिए, मैंने खुद को दृढ़ता से समझाया।
हमें बांसों का झुरमुट मिल गया और हम उसमें घुस गए। यहाँ काफ़ी अँधेरा था, और जिस डरावने एहसास से मैं जूझने की कोशिश कर रहा था, वह और भी बढ़ गया। लेकिन तभी मैंने मूक अभिनय कलाकार बेनीमाधव को हमारी ओर आते देखा। किसी तीसरे व्यक्ति को देखकर मुझे थोड़ी हिम्मत मिली। 'अरे, आप कहाँ जा रहे हैं?' उन्होंने दोस्ताना लहजे में पूछा। 'मैं आपके घर जा रहा था। क्या मैंने आपको शुक्रवार को आकर अपना अभिनय दिखाने का वादा नहीं किया था?' ‘मुझे पता है,’ लालमोहन बाबू ने जवाब दिया, ‘लेकिन जो कुछ हुआ उसके बाद हममें से किसी का भी प्रदर्शन देखने का मन नहीं है। मेरा मतलब है, किसे पता था कि इतनी भयानक घटना घटेगी? हम सब चिंतित और परेशान हैं। आप समझते हैं ना?’
'बिल्कुल, बिल्कुल। आप अभी कलकत्ता वापस तो नहीं जा रहे हैं, है ना?'
नहीं, हमें यहां तीन दिन और रहना चाहिए।
‘अच्छा। तो अब आप कहाँ जा रहे हैं?’
‘ऐसा कुछ खास नहीं है। क्या कुछ ऐसा है जो हमें देखना चाहिए? आपको हमें बताना चाहिए!’
‘क्या आपने बातकाली मंदिर देखा है? यह सत्रहवीं शताब्दी में बनाया गया था। यह चमगादड़ों से भरा हुआ है, लेकिन बाहरी दीवारों पर अभी भी कुछ नक्काशी बची हुई है। मेरे साथ आइए, मैं आपको दिखाता हूँ।’
मैंने उसे यह नहीं बताया कि मैंने आज सुबह मंदिर देखा था। उस समय, ज़ाहिर है, मेरे पास दीवारों पर बनी नक्काशी को देखने का समय नहीं था।

हम तीन मिनट में वहाँ पहुँच गए। मेरे रोंगटे फिर से खड़े होने लगे। दिन के समय आना कहीं बेहतर होता। मंदिर के बगल में एक बरगद का पेड़ था। उसकी जड़ों ने छत को जकड़ लिया था, जिससे छत में दरारें पड़ गईं और वह गिरने लगी। ‘यहीं पर वे बलिदान चढ़ाते थे, महोदय,’ बेनिमाधव ने बरगद के पेड़ के तने के पास एक जगह की ओर इशारा करते हुए कहा।
‘बलिदान?’ लालमोहन बाबू ने दबी हुई आवाज में पूछा।
जी हाँ, महोदय। मानव बलि। क्या आपने गोसाईपुर के कुख्यात डाकू नेदो डकात के बारे में नहीं सुना? वह काली की पूजा करता था और यहाँ बलि देता था। अरे वाह, उस पर तो पूरी किताब लिखी जा सकती है! क्या आप अंदर जाना चाहेंगे? क्या आपके पास टॉर्च है?
‘अंदर? नहीं, मुझे नहीं लगता। क्या आपने नहीं कहा था कि यह चमगादड़ों से भरा हुआ है? इसके अलावा, हम टॉर्च भी नहीं लाए हैं।’
नहीं, चमगादड़ अब शाम की सैर पर निकल गए होंगे... हा हा। अगर आप उन्हें देखना चाहते हैं तो आपको वापस आना पड़ेगा—'
नहीं! हमें उनसे मिलने की कोई इच्छा नहीं है, धन्यवाद।
‘ठीक है। देखो, मैंने माचिस जला ली है। क्या मैं बीड़ी पी सकता हूँ?’
'जी हां, बिल्कुल। जितनी चाहें उतनी सिगरेट पीजिए।'
बेनीमाधव ने अपनी बीड़ी जलाई और माचिस की तीली को टूटे हुए दरवाजे के पास रखा। उसकी टिमटिमाती रोशनी में जो मैंने देखा, उससे मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। लालमोहन बाबू ने भी उसे देखा था।
‘ज-ज-जी-जी-जी—’ वह हकलाते हुए बोला।
यह जीवनलाल का शव था। इसमें कोई शक नहीं था। मंदिर के अंदर एक खंभे के पीछे से उसकी नीली कमीज और सफेद पायजामा झाँक रहा था। मैंने उसकी बाईं भुजा की एक झलक भी देखी। उसने आज सुबह घड़ी पहनी हुई थी। अब घड़ी गायब थी।
‘देखो, किसी ने अपने कपड़े यहाँ छोड़ दिए हैं!’ बेनीमाधव ने हैरानी से कहा और कपड़े उठाने के लिए आगे बढ़ने लगा, शायद उन्हें उनके मालिक को लौटाने के इरादे से।
‘नहीं!’ लालमोहन बाबू ने उसे तुरंत पीछे खींच लिया। ‘वो एक लाश है। हमें पुलिस को बताना चाहिए!’
ये शब्द सुनते ही मूक कलाकार एकदम चुप हो गया। फिर उसने हमें अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। हमने देखा कि एक ही पल में उसके चेहरे का भाव आश्चर्य से भय

में बदल गया; फिर वह मुड़ा और एकदम खामोशी से भाग गया। हमने भी वहाँ एक पल भी न बिताने का फैसला किया और जितनी तेज़ी से हो सके, तुरंत घर लौट आए। फेलुदा पहले ही लौट चुका था। उसने मेरी तरफ एक संक्षिप्त नज़र डाली और कहा, 'तुम इतने पीले क्यों दिख रहे हो? जल्दी तैयार हो जाओ। हमें पंद्रह मिनट में श्री भट्टाचार्य के घर वापस जाना है।'
मैंने देखा कि फेलुदा को देखकर लालमोहन बाबू ने अपना संयम वापस पा लिया था।
‘फेलू बाबू,’ उसने शांत स्वर में घोषणा की, ‘हमें एक महत्वपूर्ण खोज मिली है। जीवनलाल का शव उस पुराने काली मंदिर के अंदर पड़ा है। क्या आप पुलिस को बताने वाले हैं, या उन्हें शव की खोज जारी रखने देंगे?’
लालमोहन बाबू को इंस्पेक्टर से तुरंत ही नफरत हो गई थी। इसलिए वह इंस्पेक्टर के लिए कुछ भी आसान करने के पक्ष में नहीं थे।
‘क्या तुम सचमुच मंदिर में गए थे?’ फेलुदा ने पूछा।
नहीं; हमने शव को छुआ भी नहीं। लेकिन हमने जो देखा, उसमें कोई संदेह नहीं हो सकता।
ठीक है। मैं अभी इंस्पेक्टर से मिला था। वह शायद श्री भट्टाचार्य के घर आएंगे। हम उनसे मिलने पर उन्हें बता देंगे।
हम दस मिनट में निकल गए। तुलसी बाबू ने कहा कि उन्हें श्री चकलेदार से मिलने जाना होगा, ताकि उन्हें यह चेतावनी दे सकें कि अगले दिन जिस समारोह की अध्यक्षता उन्हें करनी थी, वह शायद रद्द हो सकता है।
उन्होंने कहा, 'आप आगे बढ़िए, मैं बाद में आपके साथ आ जाऊंगा।'
श्री भट्टाचार्य के घर जाते समय, फेलुदा ने हमें बताया कि वह जीवनलाल की आत्मा से संपर्क करने के लिए कितने उत्सुक थे। उन्होंने खुद यह काम सबसे पहले करने की पेशकश की थी, भले ही इसका मतलब तीन अन्य ग्राहकों को बाहर इंतजार कराना हो।
आज शाम उनके कमरे में दीवान की जगह एक मेज थी। उसके चारों ओर पाँच कुर्सियाँ रखी थीं। मेज पर एक तेल का दीपक था। श्री भट्टाचार्य एक कुर्सी पर बैठे थे। उनके दाहिनी ओर एक राइटिंग पैड और एक पेंसिल रखी थी। मेज के पीछे दो छोटे स्टूल और एक बेंच थी। नित्यानंद बेंच पर बैठे थे।
हमने तीन कुर्सियाँ लीं। चौथी कुर्सी तुलसी बाबू के लिए खाली छोड़ दी गई।
‘क्या हमें तुलसीचरण का इंतजार करना चाहिए?’ श्री भट्टाचार्य ने पूछा।

'चलो उसे पांच मिनट का समय देते हैं,' फेलुदा ने जवाब दिया।
‘बहुत खूब। मुझे पता था... तुम्हें मेरे पास आना ही पड़ेगा,’ श्री भट्टाचार्य की गहरी आवाज़ गूंज उठी। ‘मुझे उसी दिन एहसास हो गया था, जब मैंने पहली बार तुम्हें देखा था। मैं समझ गया था कि तुम विज्ञान की इस अत्यंत विशिष्ट शाखा का उपहास नहीं करोगे, क्योंकि यह वास्तव में विज्ञान ही है। केवल अज्ञानी, केवल वे लोग जो सत्य तक पहुँचने के विभिन्न तरीकों के बारे में कुछ नहीं जानते, मेरे तरीकों का उपहास करते हैं और उन पर हंसते हैं। विज्ञान में सच्चा विश्वास रखने वाला व्यक्ति—तुम्हारे जैसा—खुले दिमाग से सोचता है। वह उपहास नहीं करता।’
विज्ञान और सत्य की इन सारी बातों से मुझे थोड़ी ऊब होने लगी थी। उसने शुरुआत क्यों नहीं की?
उन्होंने आगे कहा, ‘आप सभी जीवनलाल से मिल चुके हैं, और उनका अभी-अभी निधन हुआ है। इन्हीं दो कारणों से मुझे आज के सत्र के सफल होने की आशा है। उनकी आत्मा को अभी तक अपने सभी सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर परलोक में विलीन होने का समय नहीं मिला है। वह अभी भी हमारे आस-पास ही मंडरा रही है, हमारे बुलावे की प्रतीक्षा कर रही है। वह जानती है कि वह हमारे निमंत्रण को अस्वीकार नहीं कर सकती। मुझे पता है कि हमें बस एक शब्द कहना है, और वह हमारे साथ होगी। वह अमर है, और वह न केवल अतीत और वर्तमान से, बल्कि भविष्य से भी अवगत है। वह मेरे माध्यम से बोलेगी, वह इस कागज के पन्ने पर सत्य को प्रकट करेगी, ठीक वैसे ही जैसे हम...’
फेलुदा ने उन्हें बीच में ही रोक दिया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वे कैसे बोल पा रहे थे, क्योंकि मेरा गला भी सूखने लगा था, और मुझे लगता है कि लालमोहन बाबू को भी ऐसा ही महसूस हो रहा होगा। श्री भट्टाचार्य की आवाज़ में एक सम्मोहक आकर्षण था जो विस्मय उत्पन्न करता था।
फेलुदा ने कहा, 'हर कोई देखना चाहेगा कि तुम क्या लिखते हो, लेकिन मेरे अलावा बाकी सब तुम्हारे सामने बैठे हैं। क्या तुम्हें बुरा लगेगा अगर मैं तुम्हारा लिखा हुआ पढ़कर सुनाऊं?'
नहीं, बिलकुल नहीं। तुम आत्मा से क्या पूछना चाहते हो?
‘तीन बातें—घर में किसने चोरी की, जीवनलाल की हत्या किसने की और उसकी हत्या कब हुई।’
‘बहुत खूब। आपको जल्द ही जवाब मिल जाएंगे,’ श्री भट्टाचार्य ने कहा।

आठ

पांच मिनट बीत गए, लेकिन तुलसी बाबू का कोई अता-पता नहीं था। श्री भट्टाचार्य ने काम पर लगने का फैसला किया।
कृपया अपने हाथों को हथेली नीचे की ओर करके मेज पर रखें। आपकी छोटी उंगलियां आपके पड़ोसी की उंगलियों को छूनी चाहिए।
हमने निर्देशानुसार अपने हाथ रखे। तुरंत ही लालमोहन बाबू की कांपती उंगलियों से एक थपथपाहट की आवाज़ आने लगी। शायद वे तबला बजा रहे थे। मैंने देखा कि उन्होंने अपने हाथों को स्थिर करने के लिए दांत भींच लिए।
श्री भट्टाचार्य की आँखें बंद थीं, लेकिन उनके होंठ हिल रहे थे। वे संस्कृत का एक श्लोक पढ़ रहे थे। एक मिनट बाद, वे रुक गए। कमरे में सन्नाटा छा गया। दीपक टिमटिमा रहा था। उसकी लौ के चारों ओर तीन कीड़े मंडरा रहे थे। हमारी बड़ी और कांपती हुई परछाइयाँ दीवारों पर पड़ रही थीं, लगभग छत को छू रही थीं। मैंने फेलुदा को तिरछी नज़र से देखा। उसका जबड़ा कसा हुआ था, और वह पूरी तरह भावहीन चेहरे के साथ श्री भट्टाचार्य को घूर रहा था। श्री भट्टाचार्य स्वयं मूर्ति की तरह स्थिर बैठे थे। उन्होंने पेंसिल उठा ली थी, जो अब खाली कागज़ पर टिकी हुई थी।
फिर उनके होंठ कांपने लगे। माथे पर पसीने की बूँदें फूट पड़ीं। लालमोहन बाबू ने फिर से तबला बजाना शुरू कर दिया, बिलकुल अनायास। मैं समझ सकता था कि क्यों। कमरे का माहौल बेहद रहस्यमय था। मेरा दिल उतनी ही तेज़ी से धड़क रहा था जितनी तेज़ी से लालमोहन बाबू की उंगलियां कांप रही थीं।
‘जीवनलाल...जीवनलाल...जीवनलाल!’ श्री भट्टाचार्य ने धीमी आवाज़ में पुकारा। उनके होंठ मुश्किल से हिले।
‘क्या तुम वहाँ हो? क्या तुम आ गए हो?’
इस बार, हमें आश्चर्य हुआ कि प्रश्न हमारे पीछे से आ रही एक आवाज़ ने पूछे।
यह नित्यानंद की आवाज़ थी। अब मुझे उनकी भूमिका समझ में आई। वे अपने चाचा की ओर से बोल रहे थे। शायद श्री भट्टाचार्य के लिए ऐसे समय में बोलना असंभव था।

‘हां,’ फेलुदा ने कहा। यह शब्द श्री भट्टाचार्य ने पैड पर लिखा था। उनकी आंखें अभी भी बंद थीं। मैंने उनके हाथों को ध्यान से देखा।
‘तुम कहाँ हो?’ नित्यानंद ने पूछा।
श्री भट्टाचार्य ने लिखा, 'यहाँ, बिल्कुल पास में।' फेलुदा ने उन शब्दों को पढ़कर सुनाया।
हम आपसे कुछ सवाल पूछना चाहते हैं। क्या आप उनका जवाब दे सकते हैं?
'हाँ।'
‘तुम्हारे पिता के संदूक से पैसे किसने चुराए?’
मैंने किया।
क्या तुमने अपने हत्यारे को देखा?
'हाँ।'
‘क्या आपने उसे पहचाना?’
'हाँ।'
'कौन था?'
‘मेरे पिता।’
लेकिन हमें यह पता नहीं चल पाया कि हत्या कब हुई, क्योंकि फेलुदा अचानक खड़ा हो गया और बोला, 'बस, इतना काफी है।' फिर वह मेरी ओर मुड़ा और बोला, 'टॉपशे, बाहर गलियारे से वह लालटेन ले आओ। मुझे कुछ ठीक से दिखाई नहीं दे रहा है।' मैं काफी चौंक गया और उठकर लालटेन ले आया।
फेलुदा ने श्री भट्टाचार्य द्वारा लिखे गए कागज के टुकड़े को उठाया, उस पर लिखे कुछ शब्दों पर सरसरी नजर डाली और कहा, 'श्री भट्टाचार्य, आपकी आत्मा भले ही इस दुनिया से चली गई हो, लेकिन उसे अभी तक सच्चाई का ज्ञान नहीं हुआ है। उनके उत्तरों में कुछ विसंगतियां हैं।'
श्री भट्टाचार्य ने फेलुदा को घूरकर देखा, मानो उसे मुट्ठी भर धूल में मिला देना चाहते हों, लेकिन फेलुदा बिल्कुल भी विचलित नहीं हुआ। उन्होंने आगे कहा, “उदाहरण के लिए, उससे पूछा जा रहा है कि संदूक किसने खोला और पैसे निकाले। वह कहता है, “मैंने”, यानी जीवनलाल ने। लेकिन वह संदूक खाली था, श्री भट्टाचार्य। उसमें कोई पैसा नहीं था।”
जैसे जादू से श्री भट्टाचार्य के चेहरे से क्रोध गायब हो गया। वे कुछ अनिश्चित से दिखने लगे। फेलुदा ने आगे कहा, 'मैं यह बात कुछ विश्वास के साथ कह सकता हूँ क्योंकि संदूक जीवनलाल मल्लिक ने नहीं, बल्कि प्रदोष चंद्र

मित्तर ने खोला था। जीवनलाल ने आधी रात को मेरे लिए सामने का दरवाजा खोलकर और चाबी कहाँ रखी है, यह बताकर मेरी मदद की। उसने अपने पिता और भोलानाथ बाबू को बाँधने में भी मेरी मदद की। खैर, संदूक में पैसों की जगह हमें यह मिला।' उन्होंने जेब में हाथ डाला और कागज का एक और टुकड़ा निकाला।
‘बूढ़े श्री मल्लिक ने मुझे इसे दिखाने से इनकार कर दिया था। लेकिन मुझे इसकी सख्त जरूरत थी क्योंकि मुझे मृगांका भट्टाचार्य के इरादों पर गंभीर संदेह था। उनसे मिलते ही मेरा शक बढ़ गया। उन्होंने ऐसा दिखावा किया कि उन्होंने किसी अलौकिक शक्ति से मेरा नाम और पेशा जान लिया है। सच्चाई तो यह है कि तुलसी बाबू ने उन्हें पहले ही बता दिया था कि मैं कौन हूँ और क्या करता हूँ। क्या मैं सही कह रहा हूँ, तुलसी बाबू?’
मुझे अचानक एहसास हुआ कि तुलसी बाबू भी हमारे साथ आ गए हैं, हालांकि मैंने उन्हें आते हुए नहीं देखा था। वे बेहद शर्मिंदा लग रहे थे और समझाने की कोशिश करने लगे: 'जी जी, मुझे खेद है... देखिए... मैं चाहता था कि आप पर मेरी अच्छी छाप पड़े, इसलिए मैंने...'
फेलुदा ने उसे रोकने के लिए हाथ उठाया। ‘मैं आपको दोष नहीं देता, तुलसी बाबू। आप वो होने का दिखावा नहीं करते जो आप नहीं हैं। लेकिन ये आदमी करता है। खैर, जब मुझे एहसास हुआ कि श्री भट्टाचार्य मुझे प्रभावित करने के लिए सिर्फ नाटक कर रहे हैं, तो मैंने उस कागज को हासिल करने का निश्चय कर लिया जिसे श्यामलाल मल्लिक किसी को दिखाना नहीं चाहते थे। श्यामलाल के बारे में मेरे मन में भी कुछ शंकाएँ थीं, जिन्हें मुझे लगा कि यह कागज स्पष्ट करने में मदद करेगा।’
श्री भट्टाचार्य को अब बहुत पसीना आ रहा था। फेलुदा ने कागज को दीपक के पास लाकर कहा, ‘दुर्लभ सिंह की आत्मा ने कुछ प्रश्नों के उत्तर दिए थे। प्रश्न बोले गए थे, लेकिन यह अनुमान लगाना मुश्किल नहीं है कि क्या पूछा गया था। लिखित उत्तर अच्छे संकेत हैं। अब मैं आप सभी को प्रश्न और दिए गए उत्तर पढ़कर सुनाता हूँ। यदि मैं कुछ गलत कहूँ, तो मुझे आशा है कि श्री भट्टाचार्य मुझे सुधार देंगे।’
श्री भट्टाचार्य इतनी तेज़ी से साँस ले रहे थे कि लौ तेज़ी से टिमटिमा रही थी। फेलुदा पढ़ने लगे, ‘पहला प्रश्न था: “मेरा शत्रु कौन है?” उत्तर: “वह तुम्हारे घर में है।” “क्या वह मुझे मारना चाहता है?” “नहीं।” “तो वह क्या चाहता है?” “पैसा।” “मैं अपने पैसे को उससे कैसे बचाऊँ?” “इसे अपनी छाती

में मत रखो।” “मुझे इसे कहाँ रखना चाहिए?” “इसे ज़मीन के नीचे गाड़ दो।” “कहाँ?” “अपने बगीचे में।” “बगीचे में कहाँ?” “सबसे दूर वाले छोर पर— आखिरी आम के पेड़ के नीचे—दीवार में बने छेद के पास।”’
फेलुदा ने कागज़ वापस अपनी जेब में रख लिया। ‘उसके पैरों पर लगे कीचड़ के निशान और चेहरे पर मच्छरों के काटने के निशान से पता चलता था कि श्यामलाल मल्लिक ने कुछ समय बगीचे में बिताया था। अब मुझे पता चल गया है कि उसने ऐसा क्यों किया था। उसने श्री भट्टाचार्य के निर्देशों का पालन किया, बस उसे लगा कि ये निर्देश उसके मृत पिता ने दिए हैं। श्री भट्टाचार्य श्यामलाल के पास मौजूद धन के बारे में जानते थे और काफी समय से उसे चुराने की योजना बना रहे थे। लेकिन उन्हें पता था कि जब तक बूढ़ा और भरोसेमंद भोलानाथ अपने मालिक के साथ है, तब तक यह असंभव है। पहले तो उन्होंने श्यामलाल के मन में भोलानाथ के खिलाफ जहर घोलने की कोशिश की। अफसोस, यह कारगर नहीं हुआ। फिर, चमत्कारिक रूप से, श्री भट्टाचार्य को एक नया अवसर मिला। श्यामलाल ने खुद उन्हें अपने घर बुलाया और एक आत्मा से संपर्क करने के लिए कहा। श्री भट्टाचार्य ने इस मौके का फायदा उठाकर एक तीर से दो निशाने साधे। उन्होंने श्यामलाल को यह विश्वास दिला दिया कि उसके अपने ही घर में कोई उसका दुश्मन बन गया है, और उन्होंने संदूक से धन निकलवाकर ऐसी जगह रखवा दिया जहाँ वह आसानी से पहुँच सके।’ श्यामलाल ने बगीचे में अपना पैसा गाड़ने पर कोई आपत्ति नहीं जताई, क्योंकि यह चीजों को सुरक्षित रखने का एक प्राचीन तरीका था, जो उसे पूरी तरह से स्वीकार्य था, जैसा कि श्री भट्टाचार्य को भी पता था। इसलिए उसने सारा पैसा एक अलग बक्से में रखा और उसे आखिरी आम के पेड़ के नीचे गाड़ दिया। कल—
अचानक हुई एक आवाज़ से वह रुक गया। नित्यानंद अचानक उछलकर खड़ा हो गया और दरवाज़े से बाहर कूद गया। लेकिन वह ज़्यादा दूर नहीं जा सका। मज़बूत बाहों ने उसे बड़ी आसानी से पकड़ लिया और वापस कमरे में धकेल दिया। तभी उनका मालिक खुद अंदर आ गया। वह इंस्पेक्टर प्रमाणिक था।
‘हमें डिब्बा मिल गया है, श्री मिटर,’ उसने कहा, ‘सब कुछ सही सलामत है। उसने इसे एक पुराने संदूक में कुछ कपड़ों के नीचे छिपा रखा था। कांस्टेबल!’
एक कांस्टेबल आगे बढ़ा और मेज पर एक काफी बड़ा स्टील का बक्सा रख दिया।

‘अरे, ढक्कन टूट गया है!’ फेलुदा चिल्लाया। फिर उसने उसे उठाया। बक्सा सौ- सौ रुपये के नोटों के बंडलों से भरा हुआ था। मैंने अपने जीवन में कभी इतना पैसा नहीं देखा था।
‘लेकिन...लेकिन...हत्या का क्या?’ श्री भट्टाचार्य ने हताशा से चिल्लाते हुए कहा। ‘मैंने जीवनलाल की हत्या नहीं की!’
‘नहीं, मुझे पता है तुमने नहीं किया,’ फेलुदा ने तीखे स्वर में कहा। ‘मैंने किया। हत्या का विचार भी मेरा ही था। श्री भट्टाचार्य, मैंने तुम्हारा लालच, छल और धूर्तता को नष्ट कर दिया है। धोखाधड़ी का तुम्हारा धंधा अब खत्म हो गया है, क्योंकि इस गाँव में हर कोई जल्द ही जान जाएगा कि तुमने आज क्या हासिल किया है। बताइए, क्या आपने कभी किसी को जीवित आत्मा से बात करते सुना है? अंदर आइए, जीवन बाबू!’
सब लोग स्तब्ध रह गए और जीवनलाल सामने के दरवाजे से कमरे में दाखिल हुआ। श्री भट्टाचार्य के होंठों से एक तीखी चीख निकली और वे झट से खड़े हो गए। कांस्टेबल ने तुरंत उन्हें हथकड़ी पहना दी।
इंस्पेक्टर प्रमाणिक को बस एक ही शिकायत थी। 'मिस्टर मिटर, आपने हमसे दो झीलें खुदवाने का काम क्यों करवाया? हमारा कितना समय बर्बाद हुआ!'
नहीं, नहीं, कृपया ऐसा मत कहिए। यह दिखावा करना ज़रूरी था कि जीवनलाल की सचमुच हत्या कर दी गई है और हम उसके शव की तलाश कर रहे हैं। भला हम भट्टाचार्य को इतनी अच्छी तरह से कैसे बेनकाब कर पाते?
पता चला कि फेलुदा ने पूरी योजना बारीकी से बनाई थी। जब हम दोनों 'लाश' को छोड़कर भोलानाथ और लालमोहन बाबू घर वापस गए, तो जीवनलाल उठकर घर के एक पुराने भंडारगृह में घुस गया। उसकी दादी ने उसे देख लिया था, लेकिन फेलुदा ने बड़ी जल्दी से मामले को दबा दिया। शाम को वह चुपके से श्री भट्टाचार्य के घर जाने के लिए निकला, ताकि झाड़ियों में छिपकर सही समय पर बाहर आ सके; लेकिन दुर्भाग्य से, हम उसी समय बांस के झुरमुट से गुजर रहे थे, जिसके कारण वह पुराने मंदिर में घुस गया और एक बार फिर लाश होने का नाटक करने लगा।
उस रात खाना खाने के बाद, तुलसी बाबू फेलुदा के पास आए और थोड़ा उदास होकर बोले, 'क्या आप मुझसे नाराज़ हैं, श्री मित्तर?'
‘गुस्सा? बिलकुल नहीं। बल्कि, तुलसी बाबू, मैं आपका बहुत आभारी हूँ। अगर आपने उस आदमी को मेरा नाम न बताया होता, तो वह मेरे नाम के पहले अक्षरों को

लेकर पहेली बनाने की हिम्मत न करता, और मुझे उसकी शक्तियों पर शक करने का कोई कारण न होता। आपने मेरी बहुत मदद की।’
कुछ मिनट बाद जीवनलाल मल्लिक वहाँ पहुँचे। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'मेरे पिताजी मुझसे फिर बात कर रहे हैं!'
‘उसने क्या कहा?’
“आज शाम जब मैं उनके पैर छूने गया, तो उन्होंने मुझसे ऐसे स्नेह से बात की जो उन्होंने वर्षों से नहीं दिखाया था। उन्होंने मुझसे यह भी पूछा कि हमारा व्यवसाय कैसा चल रहा है, और वे सचमुच रुचि दिखा रहे थे। मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा था!”
लालमोहन बाबू मछली का सिर चबाने में व्यस्त थे। अब उन्होंने चबाना समाप्त किया और अपना मुंह खोला।
‘तो… कल?…’ उसने तुलसी बाबू की ओर देखते हुए हिचकिचाते हुए पूछा।
'हां, बिल्कुल। यह निश्चित रूप से आगे बढ़ेगा। सब कुछ तैयार है।'
‘बहुत बढ़िया। मेरा भाषण भी तैयार है। फेलू बाबू, क्या आप कृपया इस पर एक नज़र डाल लेंगे?’

[illegible]

एक

कलकत्ता के पैराडाइज़ सिनेमाघर में पुलक घोषाल की फिल्म के पच्चीस सप्ताह पूरे होने के तीन दिन बाद, एक पुरानी मार्क 2 एम्बेसडर कार हमारे घर के सामने आकर रुकी और लगातार हॉर्न बजाती हुई भयानक आवाज़ कर रही थी। यह कोई साधारण हॉर्न नहीं था। इससे जो आवाज़ आ रही थी, वह बहुत तेज़ थी, मानो संगीत की धुनों का पूरा समूह हो।
पुलक घोषाल बंबई के फिल्म निर्देशक थे, और पैराडाइज़ थिएटर में चल रही उनकी फिल्म लालमोहन बाबू की लिखी कहानी पर आधारित थी। हमें पता था कि लालमोहन बाबू इस अवसर पर एक कार खरीदने की सोच रहे थे, लेकिन हमें यह नहीं पता था कि यह इतनी जल्दी हो जाएगा। दरअसल, उन्होंने सिर्फ कार ही नहीं खरीदी थी, बल्कि एक ड्राइवर भी रख लिया था क्योंकि वे खुद गाड़ी चलाना नहीं जानते थे। उन्हें गाड़ी चलाना सीखने की भी कोई इच्छा नहीं थी। वास्तव में, वे यह बात बार-बार कहते थे, यहाँ तक कि एक दिन फेलुदा को उनसे पूछना पड़ा, 'क्यों नहीं?' तब लालमोहन बाबू ने इसका स्पष्टीकरण दिया। बताया कि पाँच साल पहले उन्होंने एक दोस्त की कार से ड्राइविंग सीखना शुरू किया था। सिर्फ दो दिन बाद ही, उनके दिमाग में एक शानदार कहानी चल रही थी। लेकिन, जब वे पहले गियर से दूसरे गियर में जा रहे थे, तो कार ने इतना ज़ोरदार झटका दिया कि एक नए उपन्यास की कहानी उनके दिमाग से उड़ गई और फिर कभी वापस नहीं आई।
‘मुझे अब भी इसके खोने का अफसोस है, मैं आपको बता रहा हूँ!’ लालमोहन बाबू ने आह भरी।
सफेद कमीज और खाकी पतलून पहने उनके ड्राइवर ने गाड़ी से उतरकर लालमोहन बाबू के लिए दरवाजा खोला। लालमोहन बाबू फुटपाथ पर उतरने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन धोती के पिछले हिस्से में उनके पैर फंस गए और वे लगभग अपना संतुलन खो बैठे, फिर भी उनके चेहरे पर मुस्कान बरकरार रही। वहीं, फेलुदा गंभीर दिख रहे थे। उन्होंने तभी बोलना शुरू किया जब हम तीनों अंदर बैठ गए।

'जब तक तुम उस भयानक हॉर्न को किसी सरल और सभ्य हॉर्न से नहीं बदलोगे, तब तक तुम्हारी कार को हमारी रजनी सेन रोड में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाएगी,' फेलुदा ने उससे कहा।
लालमोहन बाबू थोड़े उदास दिखे। 'हां, मुझे पता था कि मैं जोखिम ले रहा हूं। लेकिन जब दुकान वाले ने डेमो दिया... तो बस, यह बहुत लुभावना हो गया। आखिर यह जापानी है, आप जानते ही हैं।'
फेलुदा ने कहा, 'यह कान फाड़ देने वाला और दिमाग खराब करने वाला है। मुझे बिल्कुल अंदाजा नहीं था कि हिंदी फिल्में इतनी जल्दी असर डाल सकती हैं। और आपकी कार का रंग भी उतना ही कष्टदायक है। मुझे दक्षिण भारतीय फिल्मों की याद दिलाता है!'
‘कृपा करके, श्री मित्तर!’ लालमोहन बाबू ने हाथ जोड़कर विनती की, ‘मैं कल वह हॉर्न बदल दूंगा, लेकिन मुझे उसका रंग रहने दीजिए। मुझे वह हरा रंग बहुत सुकून देता है।’
फेलुदा ने हार मान ली और चाय मंगवाने ही वाला था कि लालमोहन बाबू ने उसे बीच में ही रोक दिया। ‘चाय बाद में पी लेंगे। पहले चलो गाड़ी में घूमने चलते हैं। जब तक मैं तुम्हें और मास्टर तपेश को अपनी गाड़ी में घुमा न दूं, मुझे चैन नहीं आएगा। कहाँ जाना चाहोगे?’
फेलुदा ने कोई आपत्ति नहीं जताई। उसने एक पल सोचा और कहा, 'मैं चाहता हूँ कि टॉपशे चारनॉक की कब्र देखे।'
‘चार्नोक? जॉब चार्नोक?’ लालमोहन बाबू ने पहले नाम का उच्चारण ‘जॉब’ करते हुए पूछा।
‘नहीं,’ फेलुदा ने उत्तर दिया।
‘नहीं? क्या और भी चार्नॉक हैं?’
'हां, मुझे यकीन है कि ऐसे लोग हैं, लेकिन कलकत्ता शहर की स्थापना केवल एक ही चार्नोक ने की थी।'
‘हाँ। मैं वही हूँ... मेरा मतलब है...’
‘उनका नाम जॉब था—उच्चारण जोब। जॉब वह काम है जिसके लिए आपको वेतन मिलता है। जोब एक पुरुष का नाम है। ज्यादातर लोग इस नाम का गलत उच्चारण करते हैं। आपको बेहतर पता होना चाहिए।’
फेलूदा का नया जुनून पुराना कलकत्ता था। इसकी शुरुआत फैंसी लेन की यात्रा से हुई, जहाँ उन्हें एक हत्या की जाँच के लिए जाना पड़ा। जब उन्हें पता चला

कि 'फैंसी' शब्द भारतीय शब्द 'फांसी' से आया है, जिसका अर्थ है फांसी, और दो सौ साल पहले इसी इलाके में नंदा कुमार को फांसी दी गई थी, तो फेलूदा को कलकत्ता के इतिहास में गहरी दिलचस्पी हो गई। पिछले तीन महीनों में उन्होंने इस विषय पर अनगिनत किताबें पढ़ीं, दर्जनों तस्वीरें देखीं और दर्जनों नक्शों का अध्ययन किया। परिणामस्वरूप, मुझे भी कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ, मुख्य रूप से विक्टोरिया मेमोरियल में दो दोपहरें बिताने से। फेलुदा के अनुसार, यद्यपि कलकत्ता दिल्ली और आगरा की तुलना में एक 'नया' शहर था, फिर भी इसके महत्व को कम नहीं आंका जा सकता था। यह सच था कि कलकत्ता में ताजमहल, कुतुब मीनार, जोधपुर और जैसलमेर जैसे किले या बनारस की विश्वनाथ की गली जैसी कोई प्रसिद्ध गली नहीं थी।
‘लेकिन ज़रा सोचो, टॉपशे,’ फेलुदा ने मुझसे कहा था, ‘एक दिन एक अंग्रेज गंगा के किनारे एक ऐसी जगह पर बैठा था जो सचमुच एक जंगल था, मक्खियों, मच्छरों और साँपों से भरा हुआ, और उस आदमी ने सोचा कि वह उसी जगह पर एक शहर बसाएगा। और फिर, देखते ही देखते, जंगल साफ़ हो गया, इमारतें बन गईं, सड़कें बन गईं, गैस की बत्तियाँ दिखाई देने लगीं, घोड़े उन सड़कों पर सरपट दौड़ने लगे, पालकी चलने लगीं, और सौ साल में, वह नई जगह महलों के शहर के नाम से जानी जाने लगी। वही शहर अब किस हालत में है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं बस इतिहास की बात कर रहा हूँ। अब, कुछ लोग सड़कों के साइनबोर्ड बदलना चाहते हैं, उनके नाम बदलना चाहते हैं और इतिहास को मिटाना चाहते हैं। लेकिन क्या यह सही है? या, क्या यह संभव है? ठीक है, मान लेते हैं कि अंग्रेजों ने जो किया वह पूरी तरह से अपनी सुविधा के लिए था। लेकिन अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया होता, तो आज आपका फेलु मित्तर क्या करता? ज़रा उस दृश्य की कल्पना कीजिए... आपका फेलुदा, प्रदोष चंद्र मित्तर, निजी जासूस...’ किसी जमींदार के दफ्तर में क्लर्क के रूप में काम करते हुए, बहीखाते पर झुके हुए, कलम चलाते हुए, जहाँ "फिंगरप्रिंट" शब्द का मतलब केवल किसी दस्तावेज पर आदमी के अंगूठे का निशान होता था!
हम बीबीडी बाग गए, जिसे कभी डलहौजी स्क्वायर के नाम से जाना जाता था। इसका नाम लॉर्ड डलहौजी के नाम पर रखा गया था, जो कभी भारत के गवर्नर-जनरल थे और भारतीय राज्यों को अपने राज्य में मिलाने और रेलवे और टेलीग्राफ की शुरुआत करने के लिए प्रसिद्ध थे। जॉब चार्नोक का मकबरा—जिसे कलकत्ता में बनी पहली ईंटों की इमारत कहा जाता है—बीबीडी बाग में स्थित दो सौ साल

पुराने सेंट जॉन चर्च के परिसर में था। लालमोहन बाबू ने इसे देखा और कहा, 'रोमांचकारी!' लेकिन शायद इसका कुछ कारण आसमान में छाए काले, अशुभ बादल और गरजती बिजली भी थी। उन्होंने मकबरे पर लगी संगमरमर की पट्टिका को घूरते हुए कहा, 'देखो, इस पर 'जॉब' नहीं, 'जोबस' लिखा है। ऐसा क्यों?'
फेलुदा ने समझाया, 'जोबस, जॉब का लैटिन रूप है, क्या तुम नहीं देख सकते कि उस पट्टिका पर जो कुछ भी लिखा है वह लैटिन में है?'
'नहीं, महोदय। मुझे बस इतना ही दिख रहा है कि यह अंग्रेजी नहीं है और यह मेरी समझ से परे है। उसके नाम के ऊपर D-O-M क्यों लिखा है?'
‘इसका अर्थ है डोमिनस ओमनीम मैजिस्टर। यानी ईश्वर सभी चीजों का स्वामी है। नीचे दिए गए शब्दों को देखिए। क्या मैं आपका ध्यान विशेष रूप से एक शब्द की ओर आकर्षित करूँ? मार्मोर। आप बंगाली शब्द मार्मर तो जानते ही होंगे, है ना? वह और यह “मार्मोर” दोनों का अर्थ एक ही है— संगमरमर। इससे भी अधिक रोचक बात यह है कि मार्मर शब्द संस्कृत से नहीं आया है। यह एक फ़ारसी शब्द है। हालाँकि, यदि आप मार्मरसौध कहते हैं—जिसका अर्थ है संगमरमर का स्तंभ — तो यह वास्तव में हास्यास्पद है क्योंकि “सौध” एक संस्कृत शब्द है। तो हम अपनी ही भाषा में फ़ारसी और संस्कृत शब्दों को बिना जाने-समझे ही बड़ी आसानी से मिला देते हैं। उदाहरण के लिए—’
फेलुदा अपना भाषण पूरा नहीं कर पाए, क्योंकि उनके बोलते ही अचानक बिना किसी चेतावनी के एक भयंकर धूल भरी आंधी शुरू हो गई। (लालमोहन बाबू ने इसे 'प्रलयकारी' कहा।) मैंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था। हम सब लालमोहन बाबू की हरी एम्बेसडर कार की ओर दौड़े और उसमें घुस गए। ड्राइवर हरि ने तुरंत कार स्टार्ट की और एस्प्लेनेड की ओर तेज़ी से बढ़ने लगा। पहली बार मैंने शहीद मीनार को धूल की चादर से पूरी तरह ढका हुआ देखा। मैं हवा की गति का अंदाज़ा नहीं लगा सका क्योंकि सभी खिड़कियाँ कसकर बंद थीं। लेकिन मैंने देखा कि चनाचूर बेचने वालों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक लंबा, पतला बेंत का स्टैंड मैदान की दिशा से हवा में घूमता हुआ आया, हमारे सामने खड़ी एक डबल डेकर बस के ऊपरी डेक से टकराया और अगले ही पल कर्ज़न पार्क की ओर उड़ गया। जैसे ही हम पार्क स्ट्रीट के पास पहुँचे, हमें पता चला कि ट्राम नहीं चल रही थीं क्योंकि एक पेड़ ट्रामलाइन पर गिर गया था। फेलुदा हमें पार्क स्ट्रीट का पुराना कब्रिस्तान दिखाना चाहता था, लेकिन तूफान के कारण उसने अपना इरादा बदल दिया। अगर हम गए होते, तो शायद हम एक ऐसी घटना के साक्षी बन

पाते जिसकी खबर अगले दिन सुबह अखबारों में छपी थी। 24 जून को आए उस भयानक तूफान (हवा की गति 145 किलोमीटर प्रति घंटा) के दौरान, साउथ पार्क स्ट्रीट के कब्रिस्तान में एक पेड़ जड़ से उखड़ गया। इससे नरेंद्र नाथ बिस्वास नाम के एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गए। प्रेस रिपोर्ट में इस बात का जिक्र नहीं था कि श्री बिस्वास इतनी देर शाम उस प्राचीन कब्रिस्तान में क्या कर रहे थे।

दो

अगली सुबह बारिश हो रही थी। दोपहर बाद ही बारिश रुकी। फेलुदा को कलकत्ता और हावड़ा का एक पुराना नक्शा मिल गया था, जो 1932 का था। खिचड़ी और आमलेट खाने के बाद, उसने एक पान मुंह में ठूंसा, एक चारमीनार जलाई और नक्शा खोला। हमारे बैठक कक्ष में उसे ठीक से देखने के लिए, हमें सारा फर्नीचर हटाना पड़ा और फर्श पर नक्शे के लिए पर्याप्त जगह बनानी पड़ी। नक्शे का आकार 6 फीट x 6 फीट था।
हम जब पुरानी सड़कों और गलियों का मुआयना करते हुए चारों ओर घूम रहे थे, तभी लालमोहन बाबू आ गए। फेलुदा कह रहे थे, ‘रजनी सेन रोड ढूंढने की कोशिश मत करना। उन दिनों यह पूरा इलाका सचमुच जंगल था!’ मैंने देखा कि लालमोहन बाबू गहरे नीले रंग की पतलून और पीले रंग की कमीज पहने हुए थे। उन्होंने घोषणा की, ‘कल तूफान में छिहत्तर पेड़ गिर गए। और मैंने वही किया है जो आपने मुझे करने को कहा था। मेरी कार में नया हॉर्न लगा है, जो आपको हिंदी फिल्मों की याद नहीं दिलाएगा, मैं आपको यकीन दिलाता हूं।’
हमें बाहर जाने की जल्दी नहीं थी, इसलिए हमने चाय पी ली। फिर हम लालमोहन बाबू की कार में निकले और मैंने खुद तूफान से हुई तबाही देखी। मैंने प्रेस रिपोर्ट देखी थी जिसमें उखड़े हुए पेड़ों की संख्या बताई गई थी, लेकिन मुझे यकीन नहीं हो रहा था। अब जब हम पार्क स्ट्रीट पहुंचे, तब तक मैंने उन्नीस पेड़ गिने—कुछ जगहों पर तो उनकी कई शाखाएँ ज़मीन पर गिरी हुई थीं। उनमें से तीन तो अकेले सदर्न एवेन्यू में ही थे। यह बहुत ही भयावह था, हालाँकि गिरी हुई कई शाखाओं को हटा दिया गया था।
जैसे ही हम पार्क स्ट्रीट कब्रिस्तान के प्रवेश द्वार पर पहुँचे (फेलूदा ने हमें कैमक स्ट्रीट पहुँचने पर ही बताया कि हम कहाँ जा रहे हैं), मेरी नज़र लालमोहन बाबू पर पड़ी। वे कुछ उदास लग रहे थे। फेलूदा ने उनसे जिज्ञासा भरी नज़रों से देखा। लालमोहन बाबू ने बताया, ‘1941 में, मैं रांची में था। वहाँ मैंने एक अंग्रेज को दफ़नाते हुए देखा। जब ताबूत को

कब्र में उतारा गया और मिट्टी के ढेले फेंके गए... उफ़, उनकी आवाज़ कितनी भयानक थी!’
फेलुदा ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, 'तुम्हें यहाँ वह आवाज़ नहीं सुननी पड़ेगी। इसकी कोई संभावना नहीं है। पिछले एक सौ पच्चीस वर्षों में इस कब्रिस्तान में किसी को दफनाया नहीं गया है।'
चौकीदार का कमरा प्रवेश द्वार के दाहिनी ओर था। दिन के समय कोई भी कब्रिस्तान में प्रवेश कर सकता था, इसलिए संभवतः चौकीदार के पास करने के लिए कुछ खास नहीं होता था। फेलुदा ने कहा, 'उसे बस इतना सुनिश्चित करना होता है कि कोई संगमरमर की पट्टिका चुरा न ले जाए। असली इतालवी संगमरमर की अच्छी कीमत मिलती है। चौकीदार!'
वह आदमी अपने कमरे से बाहर आया। उसकी शक्ल देखकर तुरंत समझ आ गया कि वह बिहार का रहने वाला है। वह तंबाकू चबा रहा था; शायद उसने अभी-अभी उसे अपने मुंह में डाला था।
‘क्या कल यहाँ कोई बंगाली बाबू घायल हो गया था? क्या वह गिरते हुए पेड़ की चपेट में आ गया था?’
'जी श्रीमान।'
‘क्या हम वह धब्बा देख सकते हैं?’
‘उस रास्ते पर चलते जाइए...बिल्कुल अंत तक। फिर अगर आप बाईं ओर मुड़ेंगे, तो आपको वह दिख जाएगा। पेड़ अभी भी वहीं पड़ा है।’
हम उस पक्के रास्ते पर चल पड़े जिसका इशारा उन्होंने किया था—जो घास से ढका हुआ था—और कब्रों की कतारों के बीच से गुज़रे। वे सभी बारह या चौदह फीट ऊँची थीं। कुछ दूरी पर, हमारे दाहिनी ओर, एक कब्र थी जो तीन मंजिला घर जितनी ऊँची थी। फेलुदा ने कहा कि यह शायद विद्वान विलियम जोन्स की कब्र थी। यह कलकत्ता की सबसे ऊँची कब्र थी।
प्रत्येक मकबरे पर सफेद या काले संगमरमर की पट्टिका लगी थी, जिस पर मृतक की जन्मतिथि, मृत्युतिथि और कुछ अन्य तथ्य अंकित थे। कुछ बड़ी पट्टिकाओं पर व्यक्ति के पूरे जीवन का संक्षिप्त विवरण था। अधिकांश मकबरे स्तंभों की तरह खड़े थे। उनके आधार चौड़े थे, लेकिन ऊपर उठते-पहुँचते वे पतले होते गए। 'ये बुर्का पहने भूत हैं!' लालमोहन बाबू ने कहा। एक तरह से वह सही थे, सिवाय इसके कि ये भूत बिल्कुल स्थिर थे। वे डरावने पहरेदारों की तरह थे, जो ताबूत में बंद, जमीन के नीचे दफन व्यक्ति की रक्षा कर रहे थे।

‘क्या आप जानते हैं कि इन स्तंभों को अंग्रेजी में क्या कहते हैं? हर एक को ओबिलिस्क कहते हैं,’ फेलुदा ने मुझे बताया। लालमोहन बाबू ने यह शब्द लगभग पाँच बार दोहराया। मैं गुजरते हुए पट्टियों पर सरसरी नज़र डाल रहा था और उन पर लिखे नाम ज़ोर से पढ़ रहा था: जैक्सन, वाट्स, वेल्स, लार्किन, गिबन्स, ओल्डहैम...! कुछ कब्रों पर एक ही परिवार का नाम लिखा था—ज़ाहिर है कि वे सभी लोग आपस में रिश्तेदार थे। अब तक मैंने जो सबसे पुरानी तारीख देखी थी, वह 28 जुलाई 1779 थी, जो फ्रांसीसी क्रांति से बारह साल पहले की थी।
जब हम रास्ते के आखिरी छोर पर पहुँचे, तब मुझे कब्रिस्तान की विशालता का एहसास हुआ। पार्क स्ट्रीट पर वाहनों की आवाज़ काफी धीमी हो गई थी। फेलुदा ने बाद में मुझे बताया कि उस कब्रिस्तान में दो हज़ार से ज़्यादा कब्रें थीं। लालमोहन बाबू ने कब्रिस्तान के पास लोअर सर्कुलर रोड पर बने एक अपार्टमेंट ब्लॉक की ओर इशारा करते हुए कहा कि वह वहाँ कभी नहीं रहेंगे, चाहे कोई उन्हें ऐसा करने के लिए एक लाख रुपये भी दे दे।
उखड़ी हुई वह 'पेड़' असल में एक विशाल आम के पेड़ की एक बड़ी, घनी शाखा निकली। वह ज़मीन पर गिर पड़ी और इस प्रक्रिया में एक मकबरे के बड़े हिस्से को नष्ट कर दिया। कई छोटी शाखाएँ भी इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं।
हम क्षतिग्रस्त मकबरे की ओर चले।
उससे उठने वाला स्तंभ बाकी स्तंभों से छोटा था, मुश्किल से लालमोहन बाबू के कंधों तक पहुँच रहा था। यह स्पष्ट था कि पेड़ से टकराने से पहले ही यह जर्जर अवस्था में था। शाखा के गिरने से जो हिस्सा बच गया था, वह कई जगहों से फट गया था। प्लास्टर उखड़ गया था और अंदर की ईंटें दिखने लगी थीं। शाखा ने संगमरमर की पट्टिका के कुछ हिस्सों को भी तोड़ दिया था। टूटे हुए टुकड़े घास पर बिखरे पड़े थे। हाल ही में हुई बारिश ने पूरे इलाके को गीला और कीचड़ भरा कर दिया था, लेकिन इस कब्र के पास का कीचड़ कब्रिस्तान के बाकी हिस्सों से कहीं ज्यादा खराब लग रहा था। 'वाह, कमाल है!' लालमोहन बाबू ने कहा। 'पट्टिका पर 'भगवान' शब्द अभी भी लिखा हुआ है - मेरा मतलब है, वह हिस्सा जो अभी भी सही सलामत है। देखो!'
‘हां, और आप उस लाइन के नीचे साल देख सकते हैं, है ना?’ फेलुदा ने कहा।
‘ओह हाँ। 185—अंतिम अंक टूटा हुआ है। उस “ईश्वर” का संबंध सभी चीजों के स्वामी से होना चाहिए।’

‘क्या तुम्हें ऐसा लगता है?’ फेलुदा के सवाल ने मुझे उसकी ओर देखने पर मजबूर कर दिया। वह भौंहें चढ़ाए खड़ा था। ‘तुमने बाकी पट्टियों को ध्यान से नहीं देखा है। अगली पट्टी को देखो।’
अगली कब्र पर एक बड़ी पट्टिका लगी थी। उस पर लिखा था:
कैप्टन पी. ओ'रेली, एच.एम. 44 वीं रेजिमेंट की स्मृति में, जिनका निधन 25 मई, 1823 को 38 वर्ष की आयु में हुआ।
‘नाम के ठीक नीचे तारीख लिखी है, देखा? अधिकांश पट्टियों पर यही पैटर्न है। इसके अलावा, क्या आपने किसी अन्य पट्टी पर “भगवान” शब्द देखा?’
फेलुदा सही था। मैंने कम से कम तीस अलग-अलग पट्टियों पर लिखे शिलालेख पहले ही पढ़ लिए थे, लेकिन उनमें से किसी में भी ईश्वर का उल्लेख नहीं था। ‘क्या आपका मतलब यह है कि मृत व्यक्ति का नाम “भगवान” था?’ लालमोहन बाबू जानना चाहते थे।
नहीं, मुझे नहीं लगता कि किसी को कभी “भगवान” कहा जाता है, हालांकि कुछ हिंदू ईश्वर या भगवान कहलाते होंगे। पट्टिका को ध्यान से देखिए। “G” के बाईं ओर एक बड़ा खाली स्थान है। इसका मतलब सिर्फ यही हो सकता है कि उस तरफ कोई शब्द या अक्षर नहीं था। लेकिन “d” के बाद क्या लिखा था, यह बताना असंभव है क्योंकि वह हिस्सा अब घास पर पड़ा है। मुझे लगता है कि मृतक के उपनाम के पहले तीन अक्षर g, o और d थे, जैसे गॉडफ्रे या गोडार्ड।
‘तो फिर क्यों न हम इन टुकड़ों को इकट्ठा करके सजा दें…’ लालमोहन बाबू ज़मीन पर पड़ी टूटी शाखाओं और पत्तों की ओर चलने लगे। जैसे ही वे मकबरे के पास पहुँचे, अचानक उनका पैर फिसल गया और वे आगे की ओर लुढ़क गए, मानो किसी गड्ढे में गिर गए हों। लेकिन इससे पहले कि वे गिर पाते, फेलुदा ने अपनी लंबी भुजाएँ फैलाकर उन्हें पकड़ लिया और ज़मीन पर वापस खड़ा कर दिया। मैं हैरान था। उस जगह पर गड्ढा कैसे हो सकता है? ‘यह तो अजीब लगता है,’ फेलुदा ने टिप्पणी की। ‘मेरा मतलब है, तूफान में जो गिरा था वह आम के पेड़ की शाखा थी, है ना? तो ये बाकी पत्ते यहाँ क्या कर रहे हैं? ये सब आम के पत्ते तो नहीं हैं!’
लालमोहन बाबू पहले से ही कब्रिस्तान में होने से थोड़ा असहज महसूस कर रहे थे। और अब ये! उन्होंने अपने कपड़े झाड़े, बुदबुदाए, 'ये तो हद हो गई!' और शायद खुद को संभालने के लिए हमारी तरफ पीठ करके खड़े हो गए।

‘टॉपशे, इन पत्तियों और छोटी शाखाओं को हटाने में मेरी मदद करो। सावधान रहना!’ फेलुदा ने कहा।
हमने उस इलाके को साफ किया, ज़मीन में बने गहरे गड्ढे से बचते हुए बहुत सावधानी बरती। तुरंत ही यह स्पष्ट हो गया कि कब्र के बगल में लगभग दो फुट गहरी एक खाई थी। फेलुदा शायद सच्चाई का अंदाज़ा लगा लेता, लेकिन मैं यह पता नहीं लगा सका कि खाई हमेशा से वहाँ थी या किसी ने हाल ही में खोदी थी।
अब फेलुदा ने अपना ध्यान ज़मीन पर पड़े संगमरमर के टुकड़ों पर लगाया। हमने बारह टुकड़े उठाए और उन्हें आपस में जोड़ा, ठीक वैसे ही जैसे हम घास पर कोई जिगसॉ पज़ल जोड़ रहे हों। अंतिम चित्र कुछ इस तरह दिखता था:
थॉमस-विन की स्मृति में, जिनका निधन 24 अप्रैल, 8, वर्ष 70 को हुआ था। 'गॉडविन!' फेलुदा चिल्लाया। 'उस आदमी को गॉडविन कहा जाता था। "ओबट" का अर्थ "ओबिटस" है, जिसका अर्थ है मृत्यु। "एईटी" का अर्थ "एटेटिस" है, जिसका अर्थ है उम्र। अब, सवाल यह है. . .'
'मैं कहता हूँ!'
लालमोहन बाबू की अचानक तेज आवाज से मैं चौंक गया। जैसे ही हम उनकी ओर मुड़े, उन्होंने एक काली, चपटी और चौकोर वस्तु ऊपर उठाई। 'क्या आपको लगता है कि सैंतीस रुपये में ब्लू फॉक्स में तीन लोगों के खाने का बिल भर जाएगा?'
‘तुम्हें क्या मिला?’
फेलुदा और मैं उत्सुकतावश उसके साथ शामिल होने के लिए आगे बढ़े।
लालमोहन बाबू के बाएं हाथ में एक काला बटुआ था। उनके दाहिने हाथ में तीन दस रुपये के, एक पांच रुपये का और एक दो रुपये का नोट था। बटुआ और पैसे दोनों भीगे हुए थे। लालमोहन बाबू ने अपना डर दूर कर लिया था और अब काफी खुश दिख रहे थे। उन्हें पता था कि उन्हें फेलुदा के लिए एक महत्वपूर्ण सुराग मिल गया है।
फेलुदा ने उससे बटुआ छीन लिया और उसके विभिन्न खानों से सब कुछ बाहर निकाल लिया। उसमें से चार अलग-अलग चीजें निकलीं:
(1) विजिटिंग कार्डों का एक बंडल। प्रत्येक पर 'एन.एम. बिस्वास' नाम छपा था, लेकिन कोई पता या टेलीफोन नंबर नहीं था। 'उस प्रेस रिपोर्ट में गलती हुई थी। उसमें उनका नाम नरेंद्र नाथ लिखा था! लेकिन यह नरेंद्र मोहन होना चाहिए,' फेलुदा ने टिप्पणी की।

(2) पुराने अखबारों से दो कतरनें। पहली में उल्लेख किया गया था कि पार्क स्ट्रीट में एक कब्रिस्तान बनाया गया था; और दूसरी में ओचटरलोनी स्मारक के निर्माण की सूचना दी गई थी - जिसे अब शहीद मीनार कहा जाता था।
इसका मतलब यह था कि दोनों ही चित्र डेढ़ सौ या दो सौ साल पुराने थे। 'श्री बिस्वास को ये प्राचीन चित्र कहाँ से मिले? मुझे बहुत जिज्ञासा है,' फेलुदा ने कहा।
(3) पार्क स्ट्रीट स्थित ऑक्सफोर्ड बुक कंपनी का एक कैश-मेमो, जिसमें 12.50 रुपये का लेनदेन दिखाया गया है।
(4) एक सादा सफेद कागज का टुकड़ा। किसी ने उस पर बॉलपॉइंट पेन से कुछ लाइनें खींची थीं। वे शब्द मुझे समझ नहीं आए। केवल एक चीज जो मैं पहचान सका वह था विक्टोरिया नाम।
‘मैंने अभी कुछ दिन पहले ही इस स्मारक पर एक लेख पढ़ा था!’ लालमोहन बाबू ने उत्साह से कहा। ‘जहाँ तक मुझे याद है, लेखक का नाम बिस्वास था। जी हाँ, बिल्कुल सही। बिस्वास!’
‘आपको यह लेख कहाँ से मिला?’
‘किसी पत्रिका में, या तो लेखानी या विचित्रपत्र में। मैं घर पहुँचकर देख लूँगा।’
लालमोहन बाबू की याददाश्त भरोसेमंद नहीं थी, इसलिए फेलुदा ने इस मामले को आगे नहीं बढ़ाया। उसने शब्दों को अपनी नोटबुक में लिख लिया, कागज के उस टुकड़े को बाकी सामान के साथ बटुए में वापस रख दिया और उसे अपनी जेब में डाल लिया। फिर उसने क्षतिग्रस्त मकबरे के आसपास की ज़मीन की अच्छी तरह से तलाशी लेने में पाँच मिनट बिताए। उसे जो दो चीज़ें मिलीं, उन्हें भी उसने अपनी जेब में रख लिया। उनमें से एक भूरे रंग का जैकेट बटन था और दूसरी एक गीली फॉर्म-बुक, जो आमतौर पर घुड़दौड़ देखने जाने वाले लोगों के हाथों में देखी जाती है।
‘चलिए चौकीदार से बात कर लेते हैं, फिर हमें घर जाना होगा। आसमान में फिर से बादल छाने लगे हैं,’ फेलुदा ने कहा।
‘क्या आप बटुआ लौटा देंगे?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
'ज़रूर। मुझे पता लगाना होगा कि उन्हें किस अस्पताल में ले जाया गया है।
फिर मैं उनसे मिलने जाऊँगा, शायद कल।'
और मान लीजिए कि वह व्यक्ति मर गया हो?

‘हम इस आधार पर उसकी संपत्ति पर कब्ज़ा नहीं कर सकते। यह अनैतिक होगा। इसके अलावा, सैंतीस रुपये में ब्लू फॉक्स में आप ज़्यादा से ज़्यादा चाय और सैंडविच ही खरीद सकते हैं। इसलिए रात के खाने के सपने देखना छोड़ दें।’ हम वापस मुड़े और मकबरों की कतारों के बीच से होते हुए प्रवेश द्वार की ओर वापस चलने लगे। फेलुदा चुप था। उसने एक चारमीनार जला रखी थी। हालाँकि उसने हाल ही में धूम्रपान कम कर दिया था, लेकिन अगर उसे कहीं भी कोई रहस्य का आभास होता, तो लगभग अनजाने में ही वह अपने मुँह में एक सिगरेट डाल लेता था। हम रास्ते के आधे रास्ते तक पहुँच चुके थे कि फेलूदा अचानक रुक गया। मुझे तुरंत समझ नहीं आया कि क्यों। इसलिए मैंने उसकी नज़र का पीछा किया और कुछ ऐसा देखा जिससे मेरी धड़कनें थम सी गईं। मैं भी वहीं रुक गया।
गुंबददार मकबरे के सामने—पट्टिका पर मृतक का नाम 'मिस मार्गरेट टेम्पलटन' लिखा था—घास पर, एक पुरानी ईंट के ऊपर, एक सिगरेट पड़ी थी, जो अभी भी जल रही थी। उसका केवल एक चौथाई हिस्सा ही पिया गया था। उससे धुएं की एक पतली लकीर उठ रही थी। हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी—शायद बारिश होने वाली थी। इसीलिए धुआं दिखाई दे रहा था।
फेलुदा ने सिगरेट उठाई और कहा, 'गोल्ड फ्लेक।' लालमोहन बाबू ने कहा, 'चलो घर चलते हैं।' मैंने कहा, 'क्या मुझे जाकर देखना चाहिए कि वह आदमी अभी भी यहीं है या नहीं?'
अगर उस आदमी का यहाँ रुकने का कोई इरादा होता, तो वह सिगरेट हाथ में लिए इंतज़ार करता; या फिर वह उसे घास पर गिराकर अपने पैर से बुझा देता। वह उसे इस हालत में नहीं छोड़ता। नहीं, वह साफ़ तौर पर भाग गया है, और वह जल्दी में था।
फिर हम आगे बढ़े और चौकीदार का कमरा ढूंढ लिया। लेकिन वह खाली था। कुछ मिनट बाद, वह एक झाड़ी के पीछे से निकला, धीरे-धीरे अपने कमरे में वापस गया और बोला, 'मैंने अभी-अभी एक चूहे को भगाया है!'
तो वो चूहे के अंतिम संस्कार की व्यवस्था करने के लिए झाड़ियों के पीछे गया था! फेलुदा सीधे काम पर लग गया।
‘सबसे पहले घायल व्यक्ति को किसने देखा? मेरा मतलब है, उस व्यक्ति को जिसे पेड़ से टक्कर लगी थी?’ उसने पूछा।
चौकीदार ने स्वीकार किया कि उसने ही सबसे पहले उस व्यक्ति को देखा था।
दरअसल, पेड़ गिरने के समय वह कब्रिस्तान में नहीं था। वह पार्क स्ट्रीट

गया था अपनी एक कमीज़ को बचाने के लिए जो हवा से उड़कर उस दिशा में चली गई थी। लौटते समय उसे घायल व्यक्ति मिला। वह उस व्यक्ति को जानता था, क्योंकि वह हाल ही में कई बार कब्रिस्तान गया था।
‘क्या कल यहाँ कोई और भी आया था?’
‘मुझे नहीं पता, बाबू। जब मैं अपनी कमीज लेने दौड़ा, तो यहाँ कोई नहीं था।’ लेकिन इन मकबरों के पीछे छिपना संभव है, है ना?
चौकीदार ने इस संभावना को स्वीकार किया। मैं भी यही सोच रहा था कि लुका- छिपी खेलने के लिए यह कितनी बढ़िया जगह होगी। शायद पूरे शहर में सबसे अच्छी जगह!
जब चौकीदार को नरेन बिस्वास मिले, तो वह गली में जाकर एक राहगीर साहब से बात कर रहा था। साहब के बयान से ऐसा लग रहा था मानो उन्हें सेंट जेवियर्स के कोई पादरी मिले हों। उन्हीं साहब ने टैक्सी बुलाई और श्री बिस्वास को अस्पताल पहुंचाने का इंतजाम किया।
‘क्या आपने आज किसी को अंदर आते देखा? थोड़ी देर पहले?’
'कुछ ही देर पहले?'
'हाँ।'
नहीं, उसने किसी को नहीं देखा था, क्योंकि वह द्वार के आस-पास कहीं नहीं था। वह उस झाड़ी के पीछे था, मरे हुए चूहे का अंतिम संस्कार कर रहा था। चूहे का अंतिम संस्कार हो जाने के बाद भी वह तुरंत अपने कमरे में नहीं लौट सका, क्योंकि उसे शौच जाना था।
क्या आप रात में यहां हैं?
जी बाबू। लेकिन रात में इस जगह की रखवाली करने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि लोग यहां आने से बहुत डरते हैं। एक समय लोअर सर्कुलर रोड के पास वाली दीवार टूट गई थी; लेकिन अब नहीं, रात में कोई भी कब्रिस्तान में आने की हिम्मत नहीं करता।
'तुम्हारा नाम क्या है?'
‘Baramdeo.’
‘मैं समझ गया। ये लो!’
‘नमस्कार, दादाजी!’
फेलुदा ने चौकीदार के हाथ में दो रुपये का नोट थमा दिया था। समय बीतने के साथ ही इस साधारण से कार्य का फल मिलने वाला था।

तीन

‘गॉडविन...? थॉमस गॉडविन?’
अंकल सिद्धू के माथे पर छह झुर्रियाँ दिखाई दीं।
मैं अंकल सिद्धू को ज्ञानकोश कहता हूँ। फेलुदा उन्हें फोटोग्राफिक मेमोरी वाला व्यक्ति कहता है। दोनों ही उपाधियाँ उन पर खूब सटीक बैठती हैं। वे जो कुछ भी पढ़ते, देखते या सुनते हैं—अगर उन्हें वह काफी रोचक लगे — तो उसे कभी नहीं भूलते। फेलुदा को समय-समय पर उनसे सलाह लेनी पड़ती है। आज भी वे यही कर रहे थे।
हर सुबह, भोर होते ही, अंकल सिद्धू झील पर टहलने जाते हैं। वे कुछ मील चलते हैं और साढ़े छह बजे तक घर लौट आते हैं। वे कभी भी अपनी सैर नहीं छोड़ते, यहाँ तक कि बारिश के दिनों में भी। वे बस बाहर निकलते समय एक छाता ले लेते हैं। लौटकर वे अपने दीवान पर बैठ जाते हैं और दिन भर वहीं बैठे रहते हैं। वे केवल नहाने और खाना खाने के लिए ही उठते हैं। फिर वापस आ जाते हैं। उनके सामने एक मेज है, जिस पर किताबों, पत्रिकाओं और अखबारों का ढेर लगा है। अंकल सिद्धू कभी कुछ नहीं लिखते। न पत्र, न हिसाब-किताब, यहाँ तक कि अपने कपड़ों की सूची भी नहीं, जब उनका धोबी उन्हें धोने के लिए ले जाता है। वे बस पढ़ते रहते हैं। उनके पास टेलीफोन नहीं है। अगर उन्हें हमसे संपर्क करना होता है, तो वे अपने नौकर जनार्दन के माध्यम से संदेश भेजते हैं। हमें उनका संदेश दस मिनट में मिल जाता है।
अंकल सिद्धू ने कभी शादी नहीं की। पत्नी की जगह वे किताबों के साथ रहते हैं। “मेरी पत्नी, मेरा बच्चा, मेरी माँ, पिता, भाई, बहन, डॉक्टर, गुरु... जीवन में आप जिसके बारे में सोच सकते हैं, सब कुछ यहीं मेरी किताबों के बीच है। किताबें ही मेरा परिवार हैं, मेरे दोस्त हैं!” उनका दावा है। पुराने कलकत्ता में फेलुदा की रुचि के लिए वे कुछ हद तक जिम्मेदार हैं। लेकिन अंकल सिद्धू को सिर्फ इस शहर का ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया का इतिहास पता है।

उन्होंने काली चाय की चुस्की ली और मन ही मन 'गॉडविन' नाम दोहराया। फिर उन्होंने कहा, 'उस नाम का ज़िक्र होते ही शायद शेली के ससुर की याद आ जाए। लेकिन मुझे एक गॉडविन याद है जो भारत आया था। आपके गॉडविन की मृत्यु कब हुई?'
‘1858.’
'और जब वह पैदा हुआ था?'
‘1788.’
हां, शायद ये वही गॉडविन हैं जिनके बारे में मैं सोच रही हूं। 1858 में—या शायद 1859 में—कलकत्ता रिव्यू में एक लेख छपा था। इसे थॉमस गॉडविन की बेटी ने लिखा था। उनका नाम शर्ली था। नहीं... नहीं, उनका नाम शार्लोट था। हां, बिल्कुल सही। शार्लोट गॉडविन। उन्होंने अपने पिता के बारे में लिखा था। हां, अब मुझे सब याद आ रहा है... हे भगवान, ये तो एक असाधारण कहानी है, मेरे प्यारे फेलू! शार्लोट ने उनके बुढ़ापे में उनके साथ क्या हुआ, इसका जिक्र नहीं किया, इसलिए मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता। लेकिन जब वे पहली बार भारत आए थे, तब उन्होंने जो किया... वो किसी उपन्यास जैसा लगता है। आप लखनऊ गए हैं ना?
फेलुदा ने सिर हिलाया। लखनऊ में ही उन्होंने सम्राट औरंगजेब की चोरी हुई अंगूठी का रहस्य सुलझाया था। यही वह मामला था जिसने उन्हें एक प्रतिभाशाली जासूस के रूप में स्थापित किया।
‘तो आप सआदत अली के बारे में जानते हैं?’ अंकल सिद्धू ने आगे पूछा।
'हाँ।'
उस समय, सआदत अली लखनऊ के नवाब थे। दिल्ली में सल्तनत लगभग समाप्त हो चुकी थी। शाही जीवन की शान-शौकत लखनऊ में ही मिल सकती थी। सआदत ने अपनी युवावस्था में कलकत्ता में समय बिताया था। वे कुछ अंग्रेजों को जानते थे, उनकी भाषा थोड़ी-बहुत सीख ली थी और उनके तौर-तरीकों को पूरी तरह अपना लिया था। आसफ-उद-दौला की मृत्यु के बाद, वज़ीर अली लखनऊ के नवाब बने। सआदत उस समय बनारस में थे और उदास थे। उन्हें उम्मीद थी कि आसफ के बाद उन्हें लखनऊ की गद्दी मिलेगी। लेकिन वज़ीर अली बिल्कुल निकम्मे निकले। अंग्रेज उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सके। सिर्फ चार महीनों में ही उन्होंने उनके शासन का अंत कर दिया। यह मत भूलिए कि उस समय ईस्ट इंडिया कंपनी का लखनऊ में काफी दबदबा था। हर नवाब को उनके सामने झुकना पड़ता था। इसलिए जब उन्होंने

वज़ीर को हटाया, तो उन्होंने सआदत को लाकर नया नवाब बना दिया। सआदत अंग्रेजों से इतने खुश हुए कि उन्होंने अवध का आधा हिस्सा उन्हें दे दिया। लखनऊ की गलियाँ अंग्रेजों और अन्य यूरोपीय पुरुषों से भरी रहती थीं। नवाब की सेना में अंग्रेज और डच अधिकारी थे। वहाँ यूरोपीय व्यापारी, यूरोपीय डॉक्टर, चित्रकार, नाई और यहाँ तक कि स्कूल शिक्षक भी थे। लेकिन कुछ ऐसे भी थे जो किसी खास काम के लिए नहीं आए थे। उनका एकमात्र उद्देश्य पैसा कमाना था। वे नवाब को प्रभावित करने और किसी भी तरह से उनसे पैसे वसूलने की कोशिश करते थे। इसी श्रेणी में थॉमस गॉडविन भी आता था। वह इंग्लैंड का एक नौजवान था—उसका घर ससेक्स या सफ़ोक में था... या शायद सरे में? मुझे याद नहीं। खैर, उसने नवाब की दौलत के बारे में सुना और लखनऊ आ गया। वह दिखने में सुंदर और बोलने में माहिर था। उसे ब्रिटिश रेजिडेंट, मिस्टर चेरी को प्रभावित करने में देर नहीं लगी। चेरी ने उसे परिचय पत्र दिया और गॉडविन सादात अली के दरबार में पहुँच गया। सादात ने उससे पूछा कि उसकी खासियत क्या है। थॉमस ने सुना था कि नवाब को यूरोपीय खाना पसंद है और वह एक अच्छा रसोइया था। इसलिए उसने कहा कि वह एक माहिर रसोइया है और नवाब के लिए खाना बनाना चाहेगा। ‘आगे बढ़ो!’ सादत ने कहा। थॉमस ने इतना बेहतरीन खाना बनाया कि सादत अली ने तुरंत उसे शाही रसोई में रसोइया नियुक्त कर दिया। नवाब जहाँ भी जाते, उनके साथ एक मुस्लिम रसोइया और थॉमस गॉडविन ज़रूर होते थे। जब गवर्नर-जनरल लखनऊ आते थे, तो सादात उन्हें नाश्ते पर आमंत्रित करते थे, क्योंकि उन्हें पता था कि अगर गवर्नर-जनरल उनसे प्रसन्न हुए तो उन्हें लाभ होगा। एकमात्र व्यक्ति जिस पर वे भरोसा कर सकते थे, वह थे गॉडविन। और अगर थॉमस नवाब को कोई नया व्यंजन बनाकर प्रसन्न कर देते, तो उन्हें उचित इनाम मिलता था। ध्यान रहे, सिर्फ़ दो मोहर नहीं, हम लखनऊ के नवाब की बात कर रहे हैं। उनकी उदारता उनके रुतबे के अनुरूप थी। तो आप कल्पना कर सकते हैं कि थॉमस गॉडविन कितना पैसा कमाते थे। अगर पैसा अच्छा न होता, तो वे रसोई में काम न करते। वे उस तरह के व्यक्ति नहीं थे।
अंततः, उन्होंने लखनऊ छोड़ दिया और नवाबों के अधिकार क्षेत्र से बाहर निकल आए। वे कलकत्ता आए और जेन मैडॉक नाम की एक महिला से शादी कर ली। वह एक सेनापति की बेटी थीं। तीन महीने के भीतर ही गॉडविन ने चौरंगी के बीचोंबीच अपना खुद का रेस्तरां खोल लिया। उनका कारोबार काफी अच्छा चल रहा था। लेकिन

फिर वही हुआ जो होना ही था। आखिर, अच्छे दिन हमेशा के लिए तो नहीं रहते, है ना?
गॉडविन को जुए का शौक लग गया था। जब वे लखनऊ में थे, तो अक्सर मुर्गे की लड़ाई या तीतरों की लड़ाई पर पैसे लगाते थे। उन्होंने खूब पैसा कमाया, लेकिन उतना ही गंवाया भी। अब कलकत्ता में, उनका वही शौक फिर से जाग उठा... उनकी बेटी ने अपने लेख में इससे ज्यादा कुछ नहीं लिखा। जहाँ तक मुझे याद है, यह लेख उनके निधन के कुछ ही महीनों बाद प्रकाशित हुआ था। इसलिए, जाहिर है कि शार्लोट गॉडविन अपने पिता की कमजोरियों के बारे में विस्तार से नहीं लिख सकती थीं, खासकर उस उम्र और समय में। खैर, अगर आप वह लेख पढ़ना चाहते हैं, तो आपको वह एशियाटिक सोसाइटी में मिल जाएगा। उसमें आपको और भी कई जानकारियाँ मिलेंगी।
इतनी दिलचस्प कहानी सुनकर फेलुदा और मैं कुछ पल चुप रहे। आखिरकार अंकल सिद्धू ने चुप्पी तोड़ी।
उन्होंने पूछा, 'लेकिन थॉमस गॉडविन में यह अचानक दिलचस्पी क्यों?'
‘मैं जल्द ही समझा दूंगा,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। ‘उससे पहले, मुझे कुछ और जानना है। क्या आपने नरेंद्र बिस्वास के बारे में सुना है, जो पुराने कलकत्ता पर लिखते हैं?’
वह कहाँ लिखते हैं?
'मुझें नहीं पता।'
अगर वो किसी कम प्रसिद्ध पत्रिका के लिए लिखते हैं, तो मुझे नहीं लगता कि मैंने उनके लेख देखे होंगे। मैंने पत्रिकाएँ पढ़ना लगभग बंद कर दिया है— मतलब, अपनी रोज़मर्रा की पत्रिकाओं के अलावा। लेकिन आप क्यों पूछ रहे हैं? फेलुदा ने पिछले दिन की घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन किया। उन्होंने कहा, 'मैं यह जानना चाहता हूं कि अगर कोई व्यक्ति गिरते हुए पेड़ की चपेट में आकर जमीन पर गिर जाता है, तो उसका बटुआ कम से कम बीस फीट दूर क्यों मिलना चाहिए।'
'हम्म।'
अंकल सिद्धू कुछ पल सोच में डूबे रहे। फिर बोले, “कल हवा की रफ्तार नब्बे मील प्रति घंटा थी। अगर वो बटुआ उसकी कमीज की जेब में था, तो दौड़ते समय वो उससे गिर गया होगा। हवा उसे और दूर तक ले गई होगी। दौड़ते समय ही वो पेड़ उस पर गिर गया होगा। इसमें रहस्य क्या है?”

‘वह व्यक्ति गॉडविन की कब्र के ठीक बगल में गिर गया।’
'तो क्या हुआ?'
'कब्र के पास एक गड्ढा था, मानो किसी ने जमीन खोदना शुरू कर दिया हो।'
इस बार अंकल सिद्धू की आँखें फटी रह गईं। ‘क्या! कब्र खोदना? ये तो वाकई बहुत बुरी खबर है। सच कहूँ तो, अविश्वसनीय है। मैंने सुना है कि नए शव खोदे जाते हैं और मेडिकल कॉलेजों को बेचे जाते हैं। उससे कुछ पैसे तो मिल जाते होंगे। लेकिन कोई दो सौ साल पुराने शव का क्या करेगा? उसमें तो बस कुछ हड्डियाँ ही मिलेंगी। न तो उसका कोई पुरातात्विक महत्व होगा और न ही कोई पुनर्विक्रय मूल्य! क्या आपको यकीन है कि इस जगह की खुदाई हाल ही में हुई है?’
नहीं, पूरी तरह से निश्चित नहीं हूँ। बारिश ने फावड़े के सभी निशानों को मिटा दिया था, लेकिन फिर भी...
अंकल सिद्धू फिर चुप हो गए। लेकिन अंत में उन्होंने सिर हिलाकर कहा, 'नहीं, फेलू, मेरे बेटे। मुझे लगता है तुम व्यर्थ की खोज में लगे हो। क्या इस समय तुम्हारे पास कोई असली मामला नहीं है जिस पर काम करना हो? क्या इसीलिए तुम मनगढ़ंत कहानी बना रहे हो?'
फेलुदा ने अपनी मशहूर टेढ़ी मुस्कान दी, लेकिन कुछ नहीं कहा। अंकल सिद्धू ने आगे कहा, 'अगर गॉडविन परिवार का कोई सदस्य यहाँ बचा होता, तो शायद वह कुछ जानकारी दे पाता। लेकिन मुझे नहीं लगता कि आपको कोई मिलेगा। आखिर, सभी अंग्रेज़ परिवार बारवेल या टाइटलर जैसे नहीं थे, जिनके वंशज क्लाइव के समय से ही भारत में रह रहे थे!'
इसी समय फेलुदा ने अपना तुरुप का पत्ता खेला।
‘थॉमस गॉडविन की मृत्यु के बाद उनका परिवार तीन पीढ़ियों तक यहीं रहा। मुझे यह बात पक्के तौर पर पता है।’
‘सच में?’ अंकल सिद्धू ने हैरानी से पूछा। दरअसल, अंकल सिद्धू के घर जाने से पहले हमने उस सुबह लोअर सर्कुलर रोड के एक दूसरे कब्रिस्तान में डेढ़ घंटा बिताया था। वह पार्क स्ट्रीट वाले कब्रिस्तान के बाद बना था और अभी भी इस्तेमाल में था।
फेलुदा ने कहा, 'हमने शार्लेट गॉडविन की कब्र देखी। उनकी मृत्यु 1886 में 67 वर्ष की आयु में हुई थी।'

‘क्या उनका उपनाम गॉडविन लिखा था? इसका मतलब है कि वे अविवाहित रहीं। आह, वे एक अच्छी लेखिका थीं!’
‘शार्लोट के बगल में उसके भाई डेविड की कब्र थी। उसकी मृत्यु 1874 में हुई थी।’ फेलुदा ने अपनी नोटबुक निकाली और एक सूची पढ़ने लगा, ‘वह किडरपोर में किड एंड कंपनी में मुख्य सहायक थे। उनके बगल में उनके बेटे, लेफ्टिनेंट कर्नल एंड्रयू गॉडविन, अपनी पत्नी एम्मा के साथ दफन हैं। एंड्रयू की मृत्यु 1882 में हुई थी। उनके बेटे चार्ल्स को उनके बगल में दफनाया गया है। वह एक डॉक्टर थे, और उनकी मृत्यु 1920 में हुई थी।’
‘शाबाश! तुम्हारी गहन शोध और लगन के लिए पूरे अंक।’ अंकल सिद्धू बेहद प्रसन्न लग रहे थे। ‘अब तुम्हें पता लगाना होगा कि क्या उनके परिवार का कोई सदस्य जीवित है और कलकत्ता में रहता है। क्या तुम्हें टेलीफोन डायरेक्टरी में गॉडविन नाम मिला?’
‘सिर्फ एक। मैंने उस नंबर पर फोन किया था। उस गॉडविन का थॉमस से कोई लेना- देना नहीं है।’
आपको शायद थोड़ा और गहराई से देखना होगा। कौन जाने, शायद कोई कड़ी मिल जाए? वैसे, मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है कि आप उसे कैसे ढूंढ पाएंगे। लेकिन अगर आप ढूंढ लेते हैं, तो हमें थॉमस गॉडविन नाम के इस दिलचस्प किरदार के बारे में कुछ और पता चल सकता है। कब्र खोदने की ये सारी बातें मुझे सरासर बकवास लगती हैं। खैर, आपको शुभकामनाएँ!

चार

घर लौटने पर मैंने दोपहर तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की; उसके बाद मेरा धैर्य टूट गया और मैंने फेलुदा से पूछे बिना नहीं रह सकी, 'नरेन बिस्वास के बटुए में एक कागज का टुकड़ा था। उस पर क्या लिखा था?'
फेलुदा ने कुछ पूछताछ की और पता चला कि श्री बिस्वास को पार्क अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उसने शाम को वहां जाकर श्री बिस्वास का सामान उन्हें लौटाने का फैसला किया।
मेरे सवाल पर फेलुदा ने अपनी नोटबुक खोली और मुझे दे दी। 'अगर तुम इसे समझ पाओगे, तो तुम्हें नोबेल पुरस्कार अवश्य मिलेगा!'
मुझे उसकी नोटबुक के रेखांकित पृष्ठ पर निम्नलिखित शब्द लिखे हुए मिले: बी/एस 141 एसएनबी डब्लूजी विक्टोरिया और पी.सी. (44?) के लिए
विक्टोरिया के पत्रों के संबंध में, एमएन, ओयू, जीएए, एसजे, डब्ल्यूएन से संपर्क करें।
मैंने मन ही मन कहा, 'मैं नोबेल पुरस्कार से बस चूक गया!' फिर मैंने ज़ोर से कहा, 'लगता है इस आदमी को महारानी विक्टोरिया में दिलचस्पी है, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि "विक्टोरिया और पी.सी." का क्या मतलब है।'
'पी.सी. का मतलब प्रिंस कंसोर्ट हो सकता है। यानी प्रिंस अल्बर्ट।'
‘ओह। लेकिन मुझे इसके अलावा कुछ भी समझ नहीं आ रहा है।’
‘नहीं? आप “के लिए” और “कोशिश करना” शब्दों का अर्थ तो अवश्य जानते होंगे?’ फेलुदा के हावभाव से साफ था कि उसे भी शब्दों का सही इस्तेमाल करने में कामयाबी नहीं मिली थी। सच कहूँ तो, अंकल सिद्धू की बात में दम था। शायद फेलुदा बेवजह कोई रहस्य ढूंढने की कोशिश कर रहा था। लेकिन जैसे ही मैंने यह सोचा, मुझे आधी जली सिगरेट याद आ गई और अचानक मेरे पेट में अजीब सी बेचैनी होने लगी। हमें देखकर कब्रिस्तान से कौन भाग गया था? आखिर वो उस गीली और तूफानी शाम में वहाँ क्या कर रहा था?
यह तय हुआ था कि लालमोहन बाबू हमें शाम चार बजे लेने आएंगे और पार्क अस्पताल ले जाएंगे। वे समय पर एक पत्रिका पकड़े हुए आ गए। ‘मैंने आपसे क्या

कहा था, महोदय? देखिए, ये विचित्रपत्र की एक प्रति है, और ये नरेन बिस्वास का लेख है। इसमें स्मारक की तस्वीर है, लेकिन छपाई कुछ खास अच्छी नहीं है।’ लेकिन... देखिए, लेखक का नाम नरेंद्र नाथ बिस्वास है, नरेंद्र मोहन नहीं। क्या ये कोई अलग व्यक्ति है?
‘नहीं,’ फेलुदा ने कहा, ‘मुझे लगता है कि समस्या उन विजिटिंग कार्ड्स में है। शायद उन्होंने उन्हें किसी छोटी, घटिया प्रिंटिंग प्रेस में छपवाया होगा जहाँ “एन.एन.” की जगह “एन.एम. बिस्वास” छप गया हो। मुझे पूरा यकीन है कि उन्होंने प्रूफ चेक नहीं किया होगा। हमें उनके बटुए में वो कटिंग्स मिलीं, और अब नरेन बिस्वास का एक लेख भी छपा है... इसे महज एक संयोग तो नहीं कहा जा सकता?’
फेलुदा ने लेख को सरसरी तौर पर पढ़ा और फिर पत्रिका को एक साइड टेबल पर रख दिया। 'उसकी भाषा बुरी नहीं है, लेकिन उसने जो कहा है वह कोई नई बात नहीं है। हमें यह पता लगाना होगा कि क्या लेखक वही नरेन बिस्वास है जो उस पेड़ से घायल हुआ था।'
बाबा पार्क अस्पताल के एक डॉक्टर, डॉ. शिकदार को जानते थे। वे हमारे घर कुछ बार आ चुके थे, इसलिए वे फेलुदा को भी जानते थे। फेलुदा द्वारा कार्ड भेजने के महज पाँच मिनट बाद ही हमें डॉ. शिकदार के कार्यालय में बुलाया गया।
आप यहां किसलिए आए हैं? कोई नया मामला?
फेलुदा को जानने वाले लोग उनसे यह सवाल हमेशा पूछते हैं, अगर वह कहीं भी अप्रत्याशित रूप से दिखाई देते हैं, भले ही उनके आने का कारण किसी मामले से संबंधित न हो।
फेलुदा मुस्कुराया। 'मैं आपके एक मरीज को कुछ लौटाने आया हूँ।'
'कौन?'
श्री बिस्वास। नरेन बिस्वास। परसों...
लेकिन वो चला गया। बस कुछ घंटे पहले। उसका भाई उसे लेने अपनी कार से आया था। वे चले गए हैं।
‘सच में? लेकिन अखबारों में तो यही लिखा था...’
उन्होंने क्या कहा? कि वह गंभीर रूप से घायल हो गए थे? प्रेस रिपोर्टर अक्सर बढ़ा-चढ़ाकर बातें करते हैं। अगर किसी पर पूरा पेड़ गिर जाए, तो ज़ाहिर है वह बच नहीं पाएगा। श्री बिस्वास को तो एक अपेक्षाकृत छोटी शाखा ही लगी थी। उन्हें शारीरिक चोट से ज़्यादा सदमे के लिए इलाज की ज़रूरत थी।

उनकी दाहिनी कलाई में चोट आई थी, और उनके सिर पर कुछ टांके लगे थे, बस इतना ही।
‘क्या आप मुझे कुछ बता सकते हैं? क्या ये वही नरेन बिस्वास हैं जो पुराने कलकत्ता के बारे में लिखते हैं?’
'जी हां, बिलकुल वही। ज़ाहिर है, मुझे यह जानने की उत्सुकता थी कि वह कब्रिस्तान में क्यों थे। तो उन्होंने बताया कि वह पुराने कलकत्ता पर कुछ शोध कर रहे थे। मैंने उनसे कहा कि उन्हें एक अच्छा विषय मिल गया है। आज के कलकत्ता से जितना दूर रहा जाए, उतना ही अच्छा है।'
‘क्या आपको उसकी चोटें सामान्य लगीं?’
‘अहा! अब जाकर बात बनी! यह तो किसी जासूस के लायक सवाल था।’
फेलुदा अपनी शर्मिंदगी छिपा नहीं सका। 'नहीं, मेरा मतलब है... क्या उसने खुद कहा था कि एक पेड़ गिर गया और...?'
‘देखो, पेड़ का एक बड़ा हिस्सा सचमुच नीचे गिर गया, है ना? इसमें तो कोई शक नहीं है। और वह आदमी आस-पास ही था। क्या इस पर सवाल उठाने का कोई कारण है?’ क्या उसे कुछ संदिग्ध लगा?
नहीं, बिलकुल नहीं। उन्होंने कहा कि उन्होंने सचमुच पेड़ को टूटते और गिरते हुए देखा और सुना था... ज़ाहिर है, यह ठीक-ठीक अंदाज़ा लगाना मुमकिन नहीं था कि उसकी शाखाएँ कितनी दूर तक फैली थीं। लेकिन... हाँ, जब उन्हें होश आया, तो उन्होंने दो-तीन बार "वसीयत" शब्द बोला। मुझे नहीं पता कि इसमें कोई रहस्य है या नहीं। मुझे तो ऐसा नहीं लगता, क्योंकि उन्होंने वसीयत का ज़िक्र सिर्फ़ एक बार किया था। उसके बाद उन्होंने इस बारे में कुछ नहीं कहा।
क्या आपको उनका पूरा नाम पता है?
‘क्या उस अखबार की रिपोर्ट में इसका जिक्र नहीं था? नरेंद्र नाथ बिस्वास।’ 'मेरा एक और सवाल है—कृपया मुझे क्षमा करें, मैं आपका काफी समय ले रहा हूँ — क्या आपको याद है कि उसने कैसे कपड़े पहने थे?'
‘ज़रूर। एक कमीज़ और एक पतलून। मुझे उनका रंग भी याद है—कमीज़ सफ़ेद थी और पतलून बिस्किट के रंग की। ध्यान रहे, ये ग्लेक्सो बिस्किट नहीं थे, बल्कि क्रीम क्रैकर्स थे... हा हा हा!’
उसके बाद, फेलुदा ने डॉक्टर शिकदार से श्री बिस्वास का पता लिया और हम अस्पताल से निकल गए। श्री बिस्वास न्यू अलीपुर में रहते थे। हम सीधे वहीं

चले गए। आमतौर पर, न्यू अलीपुर में घर ढूंढना आसान नहीं होता, जब तक कि आपको उसका सटीक पता न हो, लेकिन लालमोहन बाबू के ड्राइवर को कलकत्ता की गलियों की अच्छी जानकारी थी। हमें श्री बिस्वास का घर ढूंढने में तीन मिनट से ज्यादा समय नहीं लगा।
इमारत दो मंजिला थी। यह लगभग बीस साल पहले बनी होगी। मुख्य द्वार के बाहर एक काली एम्बेसडर कार खड़ी थी। नंबर प्लेट पर दो नाम लिखे थे: एन. बिस्वास और जी. बिस्वास। हमने घंटी बजाई। एक नौकर ने दरवाजा खोला।
‘क्या नरेन बिस्वास घर पर हैं?’
वह अस्वस्थ है।
क्या वो बिल्कुल भी आगंतुकों से मिलने के लिए तैयार नहीं है? मुझे उससे मिलना है। थोड़ी सी
'तुम किसे ढूँढ रहे हो?'
नौकर के पीछे खड़े किसी व्यक्ति ने यह सवाल पूछा था। लगभग चालीस वर्ष का एक व्यक्ति आगे बढ़ा। उसकी दाढ़ी साफ थी और आँखें भूरी थीं। उसने पजामे के ऊपर एक छोटी सी कमीज पहनी हुई थी और उसके कंधों पर सूती शॉल लिपटा हुआ था। मैं श्री नरेन बिस्वास की एक वस्तु लौटाना चाहता हूँ। यह उनका बटुआ है। उन्होंने इसे पार्क स्ट्रीट कब्रिस्तान में गिरा दिया था।
‘ओह, मैं समझ गया। मैं उनका भाई हूँ। कृपया अंदर आइए। दादाजी बिस्तर पर हैं। उनके शरीर पर अभी भी पट्टियाँ बंधी हैं। वे बात कर सकते हैं, लेकिन ऐसी दुर्घटना... मेरा मतलब है, यह एक बड़ा सदमा है...!’
पहली मंजिल पर जाने वाली सीढ़ियों के पीछे एक शयनकक्ष था। श्री बिस्वास उस कमरे में अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे। वे अपने भाई से अधिक सांवले दिखते थे और उनकी घनी मूंछें थीं। उनका सिर पट्टी से ढका हुआ था, लेकिन यह बताने की आवश्यकता नहीं थी कि पट्टी के नीचे उनका सिर लगभग गंजा था।
उन्होंने अपने बाएं हाथ में पकड़ा अखबार नीचे रख दिया और प्रणाम करते हुए सिर झुकाया। उनके दाहिने हाथ की कलाई पर पट्टी बंधी थी, इसलिए शायद उनके लिए दोनों हाथों से ठीक से नमस्कार करना मुश्किल था। उनके भाई कमरे से बाहर चले गए। मैंने उन्हें नौकर को बुलाकर दो और कुर्सियाँ लाने के लिए कहते सुना। नरेन बिस्वास के कमरे में केवल एक ही कुर्सी थी, जो मेज के सामने, बिस्तर से थोड़ी दूर पर रखी थी।
फेलुदा ने श्री बिस्वास का बटुआ निकाला और उन्हें सौंप दिया।

‘ओह। धन्यवाद। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने इतनी मेहनत की...!’ उसने कहा। ‘नहीं, इसमें कोई परेशानी नहीं थी, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ,’ फेलुदा ने अत्यंत विनम्रता से कहा। ‘हम बस संयोगवश वहाँ थे, और मेरे एक दोस्त ने इसे ढूँढ लिया, इसलिए...’
श्री बिस्वास ने अपने बाएं हाथ से बटुआ खोला और उसके खानों पर सरसरी नजर डाली। फिर उन्होंने फेलुदा की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा। 'क्या आप... कब्रिस्तान में थे?'
फेलुदा हँस पड़ा। ‘मैं भी आपसे यही पूछने वाला था। आप कलकत्ता के इतिहास पर कुछ काम कर रहे हैं, है ना?’
श्री बिस्वास ने आह भरी। 'हां, मैं था। लेकिन मुझे पर्याप्त दंड मिल चुका है। मुझे नहीं लगता कि पवन देवता चाहते हैं कि मैं यह सब जारी रखूं।' विचित्रपत्र में छपा लेख...?
हां, मैंने ही इसे लिखा है। स्मारक पर? हां, यह मेरी ही रचना है। मैंने अन्य जगहों पर भी लिखा है। पिछले साल तक मेरे पास नौकरी थी। अब मैं सेवानिवृत्त हो चुका हूं। मुझे खुद को व्यस्त रखना ही होगा, है ना? आप जानते हैं, मैं कभी इतिहास का छात्र था। मुझे हमेशा से इस विषय में रुचि रही है। जब मैं कॉलेज में था, एक दिन मैं क्लाइव का घर देखने के लिए बाग बाजार से दमदम तक पैदल गया था। क्या आपने कभी उसे देखा है? वह हाल तक वहीं था - एक बंगले की तरह बना हुआ घर। उसकी सामने की दीवार पर ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रतीक चिन्ह बना हुआ था।
‘क्या आप प्रेसिडेंसी कॉलेज गए थे?’
डेस्क के ऊपर दीवार पर एक ग्रुप फोटो लगी थी। उस पर लिखा था, 'प्रेसिडेंसी कॉलेज, पूर्व छात्र संघ, 1953'।
श्री बिस्वास ने हमें बताया, ‘सिर्फ मैं ही नहीं, मेरा बेटा, मेरा भाई, मेरे पिता, यहाँ तक कि मेरे दादाजी भी प्रेसिडेंसी गए थे। यह एक पारिवारिक परंपरा है। अब मुझे यह स्वीकार करने में शर्म आती है कि हम दोनों, गिरिन और मैंने, स्वर्ण पदक जीते थे।’
'शर्मिंदा? आपको शर्म क्यों आनी चाहिए?'
‘खैर, इससे हमें कुछ हासिल तो नहीं हुआ, है ना? हमने जीवन में क्या हासिल किया? मैंने नौकरी की और गिरिन ने अपना कारोबार संभाला। बस इतना ही। हमें कोई नहीं जानता, लोगों के लिए हमारे नाम का कोई मतलब नहीं है।’

फेलुदा तस्वीर को ध्यान से देखने के लिए उसके पास गया। अब उसकी नज़र मेज पर पड़ी। एक नीली नोटबुक खुली पड़ी थी। पन्ने पर केवल दस पंक्तियाँ लिखी थीं, इससे ज़्यादा नहीं।
‘आपका नाम नरेंद्र नाथ है या नरेंद्र मोहन?’ फेलुदा ने पूछा। ‘...माफ़ कीजिए?’
शायद श्री बिस्वास कुछ खो गए थे। फेलुदा को अपना सवाल दोहराना पड़ा। इससे श्री बिस्वास मुस्कुराए और थोड़ा हैरान भी दिखे। 'जहां तक मुझे पता है, मेरा नाम नरेंद्र नाथ है। क्या आपके पास यह मानने का कोई कारण है कि यह मेरा नाम नहीं है?'
आपके विजिटिंग कार्ड पर एन. एम. बिस्वास लिखा है।
अरे, वो? वो तो प्रिंटिंग की गलती है। जब मैं किसी को भी ऐसा कार्ड देता हूँ, तो मैं हमेशा "M" को "N" में बदल देता हूँ। मैं कुछ नए कार्ड छपवा सकता था, लेकिन कभी मौका ही नहीं मिला। सच कहूँ तो, मुझे कार्ड की ज़रूरत नहीं है। मैं अपने पर्स में कुछ कार्ड इसलिए रखता हूँ क्योंकि आजकल मैं संग्रहालयों में जा रहा हूँ, और कभी-कभी मुझे वहाँ के कुछ अधिकारियों से मिलना पड़ता है। वैसे, क्या आप उस पुराने कब्रिस्तान के बारे में लिखने वाले हैं? उम्मीद है नहीं! मैं आप जैसे युवा प्रतिद्वंद्वी से कभी मुकाबला नहीं कर सकता।
‘नहीं, मैं लिखता नहीं हूँ,’ फेलुदा ने उठते हुए कहा। ‘मैं तो बस सीखने में ही खुश हूँ। वैसे, मेरी एक विनती है। जब आप अपना शोध कर रहे हों, अगर आपको गॉडविन नाम के किसी परिवार का ज़िक्र मिले, तो कृपया मुझे बता दीजिएगा। इससे मुझे बहुत मदद मिलेगी।’
‘गॉडविन?’
'जी हां। थॉमस गॉडविन को पार्क स्ट्रीट कब्रिस्तान में दफनाया गया था। दरअसल, जिस पेड़ से आपको चोट लगी, उसी पेड़ ने गॉडविन की कब्र को भी नुकसान पहुंचाया है।'
'वास्तव में?'
'लोअर सर्कुलर रोड स्थित दूसरे कब्रिस्तान में पांच और गॉडविन को दफनाया गया था।'
'बहुत अच्छा, अगर मुझे कुछ पता चलता है तो मैं आपको जरूर बता दूंगा। लेकिन इसके लिए मुझे आपका पता चाहिए।'

फेलुदा ने उसे अपना एक कार्ड दे दिया।
‘निजी जासूस?’ श्री बिस्वास काफी आश्चर्यचकित लग रहे थे। ‘क्या यही आपका पेशा है?’
'हाँ।'
‘मैं समझ गया। मैंने सुना था कि कलकत्ता में निजी जासूस होते हैं। लेकिन आज पहली बार मैं किसी निजी जासूस से मिला हूँ!’

पाँच

चौरंगी जाते समय मैंने फेलुदा से कहा, 'तुमने उससे विक्टोरिया के बारे में क्यों नहीं पूछा?' हम लालमोहन बाबू की कार में थे और वह हमें ब्लू फॉक्स रेस्टोरेंट में चाय और सैंडविच खिलाने के लिए बेताब थे। किसने सोचा था कि उस रेस्टोरेंट की एक मुलाक़ात सब कुछ बदल देगी?
फेलुदा ने जवाब दिया, 'खैर, मुझे नहीं लगता कि श्री बिस्वास को यह जानकर खुशी होती कि मैंने उनके कागजात पढ़े और वे शब्द पढ़े। हो सकता है कि वे कोई गुप्त कोड या ऐसी कोई नाटकीय बात न हों, लेकिन निश्चित रूप से निजी संदर्भ के लिए संक्षिप्त शब्दों का प्रयोग किया गया था। यह भी संभव है कि उन्हें किसी और को दिखाने का इरादा न हो।'
'हां, ऐसा है।'
लालमोहन बाबू कुछ उदास लग रहे थे। फेलुदा ने यह बात गौर कर ली थी। उन्होंने पूछा, 'क्या बात है? तुम्हारी आंखें इतनी खोई-खोई क्यों लग रही हैं?' लालमोहन बाबू ने आह भरी। “मैंने पुलक के लिए एक शानदार कहानी सोची थी। यह एक और सफल फिल्म होनी ही थी—लेकिन उन्होंने आज लिखा कि आजकल हिंदी फिल्मों में रोमांच और लड़ाई दर्शकों को आकर्षित नहीं कर पा रहे हैं। हर कोई भक्तिमय विषय वाली फिल्में चाहता है। यह चलन 'जय संतोषी मां' की सफलता के बाद शुरू हुआ। सोचो ज़रा!”
तो क्या हुआ? तुम्हारी समस्या क्या है? क्या तुम्हारे मन में ईश्वर और धर्म के लिए कोई भावना नहीं है?
लालमोहन बाबू ने जवाब देना ज़रूरी नहीं समझा। उन्होंने बस मुँह बनाया, 'नरक! नरक!' कहा और चुप हो गए। इसका कारण पुलक घोषाल का पत्र नहीं था, बल्कि वह दृश्य था जो हमें बाईं ओर दिखाई दे रहा था। हमारी गाड़ी बिरला तारामंडल को पार कर चौरंगी में प्रवेश कर चुकी थी। मिट्टी का एक विशाल टीला मैदान को छिपाए हुए था। हाल ही में लालमोहन बाबू ने भूमिगत रेलगाड़ी को 'नरक रेल' कहना शुरू कर दिया था।

गाड़ी लगातार गड्ढों में गिरती जा रही थी। हर बार ऐसा होने पर लालमोहन बाबू कांप उठते थे। आखिरकार उन्होंने कहा, 'मेरी गाड़ी के स्प्रिंग उतने खराब नहीं हैं जितना आप सोच रहे होंगे। जब हम रेड रोड से गुजरेंगे—और वह सड़क बिल्कुल गड्ढों से मुक्त है—तब आपको पता चलेगा कि इन झटकों के लिए गाड़ी जिम्मेदार नहीं है।'
नहीं, हमें शिकायत नहीं करनी चाहिए। कम से कम हम पक्की सड़क पर तो हैं। दो सौ साल पहले ये सड़कें देहाती गलियों जैसी थीं, एक भी पक्की नहीं थी। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं?
‘उस समय सड़कों पर एम्बेसडर कारें नहीं चलती थीं। और सड़कें इतनी भीड़भाड़ वाली भी नहीं थीं।’
नहीं। वहां इतने ज्यादा लोग तो नहीं थे, लेकिन बड़ी संख्या में सफाई करने वाले पक्षी दिखाई दे रहे थे।
‘सफाई करने वाले पक्षी?’
जी हाँ। उन दिनों वे उतने ही आम थे जितने आज कौवे और गौरैया हैं। वे बड़े पक्षी थे, लगभग साढ़े चार फुट ऊँचे। वे सड़कों पर पड़े कूड़े-कचरे को चोंच मारते फिरते थे। अगर उन्हें गंगा में कोई शव बहता हुआ दिख जाता, तो वे उस पर बैठ जाते और नदी में मुफ्त की सवारी कर लेते।
‘ओह, यह तो बहुत भयानक है! यह सब बहुत ही जंगली और बर्बर रहा होगा। कितना भयावह!’
फिर भी, उसी शहर में, जहाँ वे पक्षी विचरण करते थे, गवर्नर-जनरल का घर, सेंट जॉन चर्च, पार्क स्ट्रीट कब्रिस्तान, थिएटर रोड में थिएटर और कई अन्य इमारतें थीं जहाँ अंग्रेज रहते थे। उस क्षेत्र को व्हाइट टाउन के नाम से जाना जाता था। मूल भारतीयों को वहाँ रहने की अनुमति नहीं थी। उत्तरी कलकत्ता को ब्लैक टाउन के नाम से जाना जाता था।
‘ओह, यह सुनकर तो मेरा खून खौल उठता है!’ लालमोहन बाबू ने कहा।
जैसे ही हम पार्क स्ट्रीट में मुड़े, फेलुदा ने ड्राइवर से ब्लू फॉक्स पहुंचने से पहले ही रुकने को कहा। उसने बताया, 'मुझे उस किताबों की दुकान पर कुछ देखना है।'
लालमोहन बाबू को ऑक्सफोर्ड बुक कंपनी में कोई दिलचस्पी नहीं थी, क्योंकि वे उनकी किताबें नहीं बेचते थे। उन्होंने हमसे कहा, 'कॉलेज स्ट्रीट की दुकानें और बल्लीगंज की ब्लैक बुकशॉप जिंदाबाद!'

फेलुदा दुकान में दाखिल हुआ, अलमारियों पर सरसरी नज़र डाली और फिर काउंटर पर जाकर खड़ा हो गया। काउंटर पर स्टेशनरी की कई कतारें सजी थीं—लाल और नीली नोटबुक, फाइलें, डायरी, एंगेजमेंट पैड। फेलुदा ने एक नीली नोटबुक उठाई और उसकी कीमत देखी। 12.50 रुपये। हमने ठीक वैसी ही नोटबुक नरेन बिस्वास की मेज पर देखी थी।
‘क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ?’ एक दुकानदार आगे आया।
‘क्या आपके पास महारानी विक्टोरिया के पत्रों का संग्रह है?’ फेलुदा ने पूछा।
'महारानी विक्टोरिया? नहीं, महोदय। लेकिन अगर आप हमें प्रकाशक का नाम बता सकें, तो हम इसे आपके लिए प्राप्त कर सकते हैं। अगर यह मैकमिलन या ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय है, तो हम उनके कलकत्ता कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं।'
फेलुदा ने एक पल सोचा। फिर उसने कहा, 'ठीक है। मैं तुम्हें बाद में बताऊंगा।'
हम फिर से पार्क स्ट्रीट पर आ गए। हमारी कार अब ब्लू फॉक्स के सामने खड़ी थी। हम रेस्टोरेंट की ओर चलने लगे।
‘रुको!’ फेलुदा ने अपनी जेब से नोटबुक निकालते हुए कहा। ‘अगर मुझे इस भीड़ में चलते रहना पड़ा तो मैं पढ़ नहीं पाऊंगा।’
कुछ सेकंड बाद, उसने नोटबुक बंद की और फिर से चलने लगा। 'क्या तुम्हें कुछ मिला?' मैंने पूछा।
'चलिए पहले जाकर बैठ जाते हैं,' फेलुदा ने जवाब दिया।
जब हम आखिरकार बैठ गए, तो लालमोहन बाबू ने हमें बताया कि उन्होंने वह रेस्टोरेंट क्यों चुना था। उन्होंने कहा कि उन्हें सिर्फ 'ब्लू फॉक्स' नाम पसंद आया था। वे इससे पहले कभी वहां नहीं गए थे; असल में, उन्होंने पार्क स्ट्रीट के किसी भी रेस्टोरेंट में कभी खाना नहीं खाया था। उन्होंने कहा, 'देखिए, मैं गोरपार में रहता हूं। मेरे प्रकाशक कॉलेज स्ट्रीट में हैं। इस इलाके में आकर खाना खाने का मौका या जरूरत कहां है?'
जब वेटर ने चाय और सैंडविच का हमारा ऑर्डर ले लिया, तो फेलुदा ने अपनी नोटबुक दोबारा निकाली और मेज पर रख दी। फिर उसने उसे खोलकर कहा, 'पहली पंक्ति मुझे अब भी समझ नहीं आ रही है। लेकिन मुझे लगता है कि मैंने दूसरी पंक्ति का हल निकाल लिया है। ये सभी अक्षर विदेशी प्रकाशकों के नाम हैं।'

मैंने पूछा, ‘कौन से अक्षर?’
‘MM, OU, GAU, SJ और WN क्रमशः मैकमिलन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, जॉर्ज एलन एंड अनविन, सिडगेविक एंड जैक्सन, वेडेनफेल्ड एंड निकोलसन हैं।’ ‘हे भगवान!’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा। ‘आपने बिना एक बार भी अटके इतने सारे विदेशी नाम कैसे बोल दिए? भगवान आपकी जुबान को सलाम करे!’
‘यह स्पष्ट है कि श्री बिस्वास ने या तो महारानी विक्टोरिया के पत्रों के संग्रह के बारे में इन प्रकाशकों को पहले ही लिख दिया था, या लिखने वाले थे। लेकिन उन्हें इतनी परेशानी उठाने की ज़रूरत नहीं थी। ब्रिटिश काउंसिल या राष्ट्रीय पुस्तकालय से संपर्क करके उनसे मदद मांगना कहीं अधिक सरल होता। हो सकता है कि वे कुछ पत्रों को सीधे ही पढ़ पाते।’
फेलुदा ने सैंडविच रखने के लिए मेज पर जगह बनाने के लिए नोटबुक वापस अपनी जेब में रख ली। फिर उसने एक चारमीनार जलाई। लालमोहन बाबू उंगलियों से ताल मिलाते हुए एक पश्चिमी धुन गुनगुनाने लगे। फिर वे रुके और बोले, 'चलो कहीं बाहर चलते हैं। मेरा मतलब है, शहर से बाहर। जब भी हम ऐसा करते हैं, तुम्हें कोई न कोई केस मिल जाता है और मुझे शानदार प्लॉट मिल जाते हैं। लेकिन हम कहाँ जाएँ? कोई ऊबड़-खाबड़ और जंगली जगह होनी चाहिए। मैदानों में कहीं नहीं—कोई ऐसी जगह नहीं जो हरी-भरी, दलदली, सुस्त और शांत हो। हमें चाहिए...' ठीक इसी समय हमारे सैंडविच आ गए, इसलिए लालमोहन बाबू अपनी बात पूरी नहीं कर पाए। हम सब बहुत भूखे थे। लालमोहन बाबू ने एक बड़े से सैंडविच का एक टुकड़ा उठाया, तीन बार चबाया और अचानक रुक गए। फिर मैंने देखा कि उनकी आँखें चौड़ी हो गईं और वे बुदबुदाए, 'ईश्वर की जय हो! ईश्वर की जय हो!' इसके परिणामस्वरूप, रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े उनके मुँह से निकलकर मेज पर गिर गए।
हुआ यूं कि: मैं और फेलुदा बाहर सड़क की ओर मुंह करके खड़े थे। लालमोहन बाबू रेस्टोरेंट के अंदर देख रहे थे। पीछे की तरफ एक छोटा सा चबूतरा बना हुआ था। साफ था कि शाम को वहां कोई लाइव बैंड परफॉर्म करता होगा। चबूतरे पर एक बोर्ड लगा था। यही बोर्ड था जिसने लालमोहन बाबू को इतना हैरान कर दिया था। उस पर बैंड का नाम लिखा था। उसके नीचे ये शब्द थे: गिटार - क्रिस गॉडविन।
फेलुदा ने वेटर को बुलाने के लिए अपनी उंगलियां चटकाईं।
क्या आपके यहां रात में लाइव संगीत होता है?

'जी श्रीमान।'
‘क्या मैं आपके मैनेजर से बात कर सकता हूँ?’
उसका इरादा क्रिस गॉडविन का पता हासिल करना था, और उसने पहले ही एक कहानी बना ली थी। जब मैनेजर हमारी टेबल पर आया, तो फेलुदा ने कहा, 'बालीगंज पार्क में श्री मनसुखानी के घर में शादी है। उन्हें एक बैंड की ज़रूरत है। मैंने आपके रेस्टोरेंट में बजने वाले बैंड के बारे में बहुत सुना है। क्या आपको लगता है कि वे शादी में बजाने के लिए राज़ी होंगे?'
‘क्यों नहीं? वे इसी तरह से अपना जीवन यापन करते हैं!’
‘क्या क्रिस गॉडविन बैंड के लीडर हैं? क्या आप कृपया मुझे उनका पता दे सकते हैं?’
मैनेजर ने कागज के एक टुकड़े पर पता लिखा और उसे फेलुदा को दे दिया। उस पर लिखा था: 14/1 रिपन लेन।
किसी और दिन होता तो खाना खत्म करने और थोड़ी देर बातचीत करने में हमें बहुत ज़्यादा समय लग जाता। लेकिन आज हमने बहुत कम समय बिताया। फेलुदा ने सिर्फ़ एक सैंडविच खाया। उसने कहा कि उसे अब भूख नहीं है। लालमोहन बाबू ने बड़ी तेज़ी से काम किया और फेलुदा की थाली में बचे हुए दो सैंडविच और अपनी थाली के तीन सैंडविच चट कर गए। खाना खत्म करते हुए उन्होंने कहा, 'जब हमें सारे पैसे देने ही हैं तो अच्छा खाना क्यों बर्बाद करें?'
14/1 रिपन लेन के पास पहुँचते ही मेरा दिल बैठ गया। मैं सदात अली के दरबार की शान-शौकत की कहानियाँ भूल नहीं पाया था। रिपन लेन में उस घर का बाहरी हिस्सा इतना बदसूरत और घिनौना था कि यह विरोधाभास मुझे बेहद भयावह लगा। फेलुदा ने कहा कि मुझे आश्चर्य नहीं होना चाहिए। चार-पाँच पीढ़ियों में एक धनी और समृद्ध परिवार घोर गरीबी में डूब सकता है; उन्हें झेलनी पड़ सकने वाली कठिनाइयों का कोई अंत नहीं है। गली के घर छोटे नहीं थे—हर घर में तीन-चार मंजिलें थीं। लेकिन मुझे उनमें से किसी में भी कदम रखने का मन नहीं कर रहा था। लालमोहन बाबू ने कहा कि उन्हें तो यह स्पष्ट रूप से लगता था कि हर घर में भूत-प्रेत का साया है। फेलुदा ने 14/1 के बाहर एक पानवाले से बात करने का फैसला किया, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हम सही जगह पर आए हैं। क्या इस घर में गॉडविन नाम का कोई व्यक्ति रहता है?
‘गुद्दीन साहब? कौन से? वो जो संगीत बजाते हैं?’
'हां, लेकिन क्या कोई दूसरा भी है?'

‘वो रहे बूढ़े आदमी। मार्किस साहब। मार्किस गुडिन।’
'कौनसी मंजिल। । ।?'
'दूसरा। तीसरे पर अर्किस साहब हैं।'
‘अरकिस और मार्किस? क्या वे भाई हैं?’ लालमोहन बाबू जानना चाहते थे।
नहीं, बाबू। अर्किस साहब अर्किस साहब हैं। मार्किस गुडिन हैं... दूसरी मंजिल पर जाइए। आपको वो मिल जाएंगे।
फेलुदा ने अर्किस और मार्किस पर हो रही चर्चा को बीच में ही छोड़ दिया और इमारत के अंदर चले गए। हम भी उनके पीछे-पीछे गए।
मैं सही था। इमारत का भीतरी हिस्सा उसके बाहरी हिस्से से बेहतर नहीं था। जून की शाम होने के कारण, साढ़े छह बजे भी बाहर उजाला था; लेकिन सीढ़ियों के पास घना अंधेरा था। निडर होकर, फेलुदा तेज़ी से सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। उसके पास एक विशेष क्षमता है—वह अंधेरे में ज़्यादातर लोगों से कहीं बेहतर देख सकता है। लालमोहन बाबू ने रेलिंग को कसकर पकड़ लिया और बड़ी मुश्किल से आगे बढ़े। 'मैंने बिल्ली चोरों के बारे में तो सुना था,' वह बुदबुदाया। 'यह पहली बार है जब मैंने किसी बिल्ली जासूस को देखा है!' दूसरी मंज़िल आश्चर्यजनक रूप से शांत थी। हमें बहुत धीमी आवाज़ में संगीत सुनाई दे रहा था, शायद रेडियो पर बज रहा था। सीढ़ियाँ जहाँ खत्म होती थीं, वहाँ एक दरवाज़ा था, जिसके पीछे एक बालकनी थी। दरवाज़े से थोड़ी रोशनी अंदर आ रही थी। उस रोशनी में मोज़ेक फर्श पर बने पैटर्न दिखाई दे रहे थे। हमारे बाईं ओर एक कमरा था, लेकिन वह खाली और अँधेरा था। उससे आगे एक और कमरा था। उसमें बत्ती जल रही थी और उसकी रोशनी दहलीज से बाहर गलियारे में पड़ रही थी। जहाँ रोशनी पड़ रही थी, वहाँ एक काली बिल्ली कुंडली मारकर बैठी थी और सीधे हमारी ओर देख रही थी। हमारे ऊपर, तीसरी मंज़िल से, एक आदमी की आवाज़ सुनाई दी। फिर मुझे लगा जैसे किसी ने खाँसी भरी आवाज़ में कुछ खाँसा हो।
‘चलो घर चलते हैं!’ लालमोहन बाबू ने आग्रह किया। ‘यह रिपन लेन का कब्रिस्तान है!’
फेलुदा दूसरे कमरे की ओर गया।
‘घर पर कोई है?’ उसने पुकारा।
कुछ सेकंड के लिए सन्नाटा छा गया। फिर किसी ने कहा, 'कौन है?'

फेलुदा ने दोबारा बोलने से पहले हिचकिचाया। वही आवाज़ फिर सुनाई दी, इस बार थोड़ी अधीरता के साथ। 'अंदर आओ! मैं बाहर नहीं निकल पा रहा।'
‘क्या आप अंदर जाना चाहते हैं? या हमें बस चले जाना चाहिए?’
फेलुदा ने लालमोहन बाबू के सवाल को अनसुना कर दहलीज पार कर ली। वह पतंग की तरह था। हम बस उसकी पूंछ थे। वह चला गया; हम उसके पीछे-पीछे टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर चलते रहे।
‘अंदर आओ!’ आवाज ने आदेश दिया।

छह

हम तीनों अंदर दाखिल हुए। यह एक मध्यम आकार का बैठक कक्ष था। दरवाजे के ठीक सामने एक पुराना सोफा था, जो तीन जगह से फटा हुआ था और फटे हुए हिस्सों से उसकी रुई दिखाई दे रही थी। सोफे के सामने संगमरमर की सतह वाली एक मेज रखी थी। कम से कम, कभी तो यह संगमरमर जैसी दिखती होगी। हमारे बाईं ओर एक प्राचीन किताबों की अलमारी थी, जिसमें लगभग पंद्रह पुरानी किताबें थीं। इस अलमारी के ऊपर पीतल का एक फूलदान रखा था, जिसमें धूल से सने प्लास्टिक के फूलों का एक गुच्छा था। उनके रंग का अंदाज़ा लगाना नामुमकिन था। दीवार पर एक फ्रेम वाली तस्वीर टंगी थी, लेकिन शीशे पर इतनी मोटी धूल जमी थी कि तस्वीर धुंधली हो गई थी। हो सकता है वह घोड़े की तस्वीर हो, या हो सकता है ट्रेन की।
सोफे के बगल वाली दूसरी मेज पर एक फिलिप्स रेडियो रखा था—संभवतः फेलुदा से भी पुराना। हैरानी की बात यह थी कि वह अभी भी चल रहा था, क्योंकि उसमें से हल्की-हल्की संगीत की आवाज़ आ रही थी। तभी, एक पतला, पीला हाथ, जिस पर नसें उभरी हुई थीं, आगे बढ़ा और उसे बंद करने के लिए एक नॉब घुमाया। उस हाथ का मालिक सोफे पर बैठा था और हमारी ओर टकटकी लगाए देख रहा था। उसकी गोद में एक तकिया था। उसका बायां पैर एक स्टूल पर टिका था। उसकी त्वचा के रंग से स्पष्ट था कि उसके पूर्वजों में से कोई एक ब्रिटिश रहा होगा। उसके कुछ बाल जो अभी तक सफेद नहीं हुए थे, सुनहरे थे। उसकी आँखों का रंग देखना मुश्किल था, क्योंकि छत से लटकता बल्ब शायद पच्चीस वाट से अधिक का नहीं था।
‘मुझे गठिया की बीमारी है, इसलिए मैं हिल-डुल नहीं सकता,’ उस आदमी ने समझाया। ‘मुझे अपने नौकर की मदद लेनी पड़ती है, और वह बेवकूफ जब भी मौका मिलता है, निकल जाता है।’
फेलुदा ने हमारा परिचय कराया और सीधे मुद्दे पर आ गया। अगर दूसरे आदमी को हमारे अचानक आने से कोई नाराज़गी थी भी, तो उसने ज़ाहिर नहीं की।
हम तो बस कुछ जानकारी लेने आए हैं। क्या आप थॉमस गॉडविन के वंशज हैं, जो उन्नीसवीं सदी के आरंभ में भारत आए थे?

उस आदमी ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और सीधे फेलुदा की ओर देखा। अब मैं देख सकता था कि उसकी आँखें फीकी नीली थीं। उसने कुछ सेकंड तक घूरकर देखा, फिर बोला, 'अब, तुम्हें मेरे परदादा के बारे में कैसे पता चला?'
‘तो मेरा अनुमान सही है?’
'हां, लेकिन अभी और भी है। दरअसल, मेरे पास एक ऐसी चीज है जो कभी थॉमस गॉडविन की थी। कम से कम मेरी दादी ने तो यही बताया था। डेढ़ सौ साल... बाप रे!'
‘अरे, क्या गड़बड़ है?’
‘वो बदमाश अराकिस—धोखेबाज, सरासर ठग! उसने कल रात ही मुझसे वो ले लिया था। कहा था कि आज लौटा देगा। उनकी मीटिंग आज शाम को है। आज गुरुवार है ना? ठीक है। ऊपर से तरह-तरह की अजीब आवाजें सुनाई देंगी। बस कुछ मिनट और रुकिए, फिर शुरू हो जाएगा।’
कमरा पहले से ज़्यादा अँधेरा लग रहा था। क्या यह मेरी उलझन की वजह से था? या रात होने की वजह से? नहीं, बिजली कड़क रही थी। आसमान में बादल छा गए थे। इसलिए कमरे का अँधेरा होना स्वाभाविक था।
फेलुदा एक बिना भुजाओं वाली कुर्सी पर श्री गॉडविन के सामने बैठे थे। लालमोहन बाबू उनके बगल में एक आरामकुर्सी पर बैठे थे, लेकिन वे सहज नहीं लग रहे थे। वे बेचैन थे और अपनी कुर्सी पर बार-बार करवटें बदल रहे थे, जिससे शायद यह संकेत मिलता था कि कुर्सी में कीड़े लगे हुए थे। फेलुदा श्री गॉडविन को घूर रहे थे। बिना कुछ बोले ही वे मानो कह रहे हों, 'आप जो चाहें कह सकते हैं। मैं सुनने के लिए यहाँ हूँ।'
श्री गॉडविन ने कहा, “यह हाथीदांत का एक संदूक है, और इसमें कुछ चीजें हैं। दो पुरानी पाइप, एक चांदी की नसवार की डिब्बी, एक चश्मा और रेशम में लिपटा एक पार्सल। शायद इसमें कोई किताब भी हो—मैंने कभी देखने की जहमत नहीं उठाई। हमारे पास और भी बहुत सी प्राचीन वस्तुएं थीं। मेरा बेटा—वह आवारा — सब कुछ बेच चुका है। उसने कॉलेज छोड़ दिया, गांजा पीना शुरू कर दिया और फिर इस घर से तरह-तरह की चीजें चुराने लगा। मुझे नहीं पता कि उसने संदूक क्यों नहीं लिया। शायद वह ले जाता, लेकिन उसकी किस्मत पलट गई, इसलिए उसे ले जाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। उसने एक संगीत समूह बना लिया है। हम उसकी कमाई पर गुज़ारा करते हैं, अगर इसे गुज़ारा कहा जा सकता है। लेकिन मैं कौन होता हूँ बोलने वाला या अपने बेटे को दोष देने वाला? इसमें से ज़्यादातर

मेरी ही गलती थी। मैंने सुना है कि थॉमस गॉडविन ने जुए में अपनी सारी संपत्ति गंवा दी। मुझे भी यही समस्या थी।”
श्री गॉडविन रुक गए। उनकी सांसें तेज़ चल रही थीं, शायद इसलिए कि उन्होंने काफी देर तक बात की थी। फिर वे दर्द से कराह उठे। उनके गठिया के दर्द से उन्हें स्पष्ट रूप से तकलीफ हो रही थी। लेकिन उन्होंने फिर से बोलना शुरू कर दिया:
जब मैं जवान था, एक बार इंग्लैंड गया था। मेरे चाचा लंदन के मिडलैंड बैंक में कैशियर थे। तीन महीने—बस इतना ही मैं वहाँ रह पाया। मुझे ठंड बर्दाश्त नहीं हुई। वहाँ का खाना भी मुझे पसंद नहीं आया। मुझे सिर्फ भारतीय खाना खाने की आदत थी। इसलिए मैं कलकत्ता लौट आया। फिर मेरी शादी हो गई। मेरी पत्नी का दस साल पहले देहांत हो गया। अब मेरे पास सिर्फ क्रिस्टोफर है। मैं उससे—शायद दिन में सिर्फ एक बार मिलता हूँ। कभी-कभी तो वो भी नहीं। जब वो घर पर होता है, तो अपने कमरे में रहता है और गिटार बजाता रहता है। हाँ, वो अच्छा गिटार बजाता है।
हमारे सिर के ऊपर एक अजीब सी आवाज़ शुरू हो गई थी। टैप, टैप, टैप, टैप। टैप, टैप। यह रुक-रुक कर आती, फिर शुरू हो जाती। परछाइयाँ हिलने लगीं, क्योंकि आवाज़ के साथ छत से लटकती बत्ती भी हिलने लगी थी। अब मैं लालमोहन बाबू की तरह डर गया था। मैं कभी ऐसे घर में नहीं गया था, न ही ऐसा कमरा देखा था; न ही किसी से ऐसी कहानियाँ सुनी थीं। आखिर ऊपर क्या हो रहा था?
मिस्टर गॉडविन ने ऊपर देखने की जहमत भी नहीं उठाई। उन्होंने हमें सीधे- सादे शब्दों में बताया, 'यह मेज है, यह उछल रही है। चार धोखेबाज इसके चारों ओर बैठे हैं। उनका दावा है कि इसमें किसी मृत व्यक्ति की आत्मा समा गई है, इसीलिए यह उछल रही है।'
'कौन हैं वे?'
‘अराकिस के करीबी लोग। भूत-प्रेत अध्ययन समिति। दो यहूदी, एक पारसी और अराकिस। उन्होंने मुझे अपने साथ मिलाने की कोशिश की, लेकिन मैंने मना कर दिया। एक दिन, अराकिस के सामने, मैंने थॉमस गॉडविन के बारे में कुछ कहा। तो उन्होंने कहा कि वे उनसे मेरी मुलाकात करवा सकते हैं। मैंने कहा, बिलकुल नहीं! देर-सवेर, मैं उनसे मिलूंगा ही। फिर, कल, अराकिस ने कहा...’
मिस्टर गॉडविन रुक गए। मेज फिर से हिलने लगी थी।
लेकिन उसने आपसे वह ताबूत क्यों लिया?

'हां, मैं उसी पर आ रहा हूं। उन्होंने कहा कि वे मेरी उपस्थिति के बिना भी थॉमस गॉडविन की आत्मा से संपर्क कर सकते हैं। उन्हें बस एक ऐसी वस्तु चाहिए थी जो कभी उनकी रही हो। उस आवाज से लगता है कि वे सफल हो गए हैं।' टैप, टैप, टैप... मेज फिर से उछली।
‘क्या यह सारा कारोबार अंधेरे में चल रहा है?’ फेलुदा यह जानना चाहता था। 'हर धोखाधड़ी वाला कारोबार अंधेरे में ही किया जाता है,' श्री गॉडविन ने व्यंग्य से भरी आवाज में जवाब दिया।
क्या हम ऊपर जा सकते हैं?
ये शब्द सुनकर लालमोहन बाबू ने तुरंत अपनी कुर्सी की भुजाओं को पकड़ लिया, जिससे उनकी असहमति स्पष्ट हुई। श्री गॉडविन के जवाब से उन्हें कुछ तसल्ली मिली।
श्री गॉडविन ने कहा, 'वे आपको उस कमरे में नहीं जाने देंगे। यह विशेषाधिकार केवल सदस्यों के लिए है। अराकिस का एक नौकर है; वह प्रवेश द्वार की रखवाली करता है। लेकिन, अगर कोई आत्मा से संपर्क करने में उनकी मदद चाहता है, तो उसे अंदर जाने की अनुमति है। अग्रिम में बीस रुपये और आत्मा के प्रकट होने पर सौ रुपये अतिरिक्त।'
'अच्छा ऐसा है । । ।'
फेलुदा उठ खड़ी हुई। 'धन्यवाद, श्री गॉडविन। आपने बहुत मदद की। बहुत-बहुत धन्यवाद। अगर हमने आपको परेशान किया हो तो क्षमा करें।'
'शुभ रात्रि।'
मिस्टर गॉडविन की पीली, पतली बांह एक बार फिर रेडियो की ओर बढ़ी।
हम बाहर सीढ़ियों पर आ गए। फेलूदा ने आगे जो किया, उससे मैं पूरी तरह से हैरान रह गया। अंधेरा इतना घना था कि लालमोहन बाबू के चेहरे के भाव देखना और उनकी प्रतिक्रिया का अंदाज़ा लगाना मुश्किल था। नीचे जाने के बजाय, फेलूदा अगली मंज़िल की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा।
‘फेलू बाबू, तुम क्या कर रहे हो? ये सीढ़ियाँ ऊपर जाती हैं, नीचे नहीं!’ लालमोहन बाबू ने हड़बड़ी में कहा।
‘अरे, डरो मत!’ जवाब आया।
हमें दरवाजे पर श्री अराकिस का नौकर लुंगी पहने हुए मिला।
‘क्या आप किसी की तलाश कर रहे हैं?’ उसने पूछा।

फेलुदा ने कहा, ‘हम यहाँ सिर्फ आपकी मदद करने आए हैं।’ मैंने देखा कि उसने पाँच रुपये का नोट निकाला और उस आदमी को दे रहा था, जो काफी हैरान दिख रहा था। फेलुदा थोड़ा और पास गया और उसके कान में फुसफुसाया: ‘बस मुझे बता दो कि क्या वह कमरा चारों तरफ से बंद है—मेरा मतलब उस कमरे से है जहाँ तुम्हारा मालिक अपने दोस्तों के साथ बैठा है।’
शायद पैसों का जादू अपना असर दिखाने लगा था। उस आदमी ने हमें बताया कि वहाँ दो दरवाजे थे। गलियारे की ओर वाला दरवाजा बंद था, लेकिन दूसरा दरवाजा शयनकक्ष में खुलता था। वह दरवाजा खुला हुआ था।
फेलुदा ने आगे कहा, ‘आपको कुछ करने की ज़रूरत नहीं है। बस हमें बेडरूम का पता बता दीजिए। अगर आप नहीं बताएँगे तो मुसीबत हो जाएगी। हम पुलिस से हैं। ये सज्जन इंस्पेक्टर हैं।’
लालमोहन बाबू झट से अपने पंजों पर खड़े हो गए और उनकी लंबाई दो इंच बढ़ गई। इस चबूतरे पर एक बत्ती जल रही थी। फेलुदा ने नोट नौकर के हाथ में थमा दिया, जिसने उसे अपने आप पकड़ लिया।
‘मेरे साथ आओ। लेकिन…’
‘कोई किंतु-परंतु नहीं। हम आपके मालिक के एक मित्र की तलाश में हैं, इसलिए हमें उससे बात करनी ही होगी। आपको या श्री अराकिस को कोई नुकसान नहीं होगा, मैं आपको आश्वासन देता हूं।’
'कृपया मेरे पीछे आइए।'
शयनकक्ष अंधेरा था, और खुले दरवाजे के दूसरी तरफ का कमरा भी अंधेरा था। हम उस कमरे की ओर बढ़े। चारों ओर सन्नाटा था। लेकिन, कुछ ही देर पहले हमने मेज के तीन बार हिलने की आवाज सुनी थी। यह स्पष्ट था कि आत्माओं से संपर्क करने वाला समूह थॉमस गॉडविन की आत्मा के आने का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। लालमोहन बाबू इतनी जोर-जोर से और दर्द से हांफ रहे थे कि मुझे डर लग रहा था कि कहीं इससे समूह को हमारी मौजूदगी का पता न चल जाए। फेलुदा शायद दरवाजे के पास आ गया था। कहीं से केरोसिन की गंध आ रही थी। एक बिल्ली म्याऊं की आवाज आई। शायद वह नीचे वाले कमरे में बैठी काली बिल्ली थी।
'थो-मास गॉडविन! थो-ओ-मास गॉडविन!'
नाम को दो बार कर्कश और विकृत आवाज में पुकारा गया। यह एक कराह की तरह लग रहा था। जाहिर है, इसी तरह वे किसी आत्मा को आमंत्रित कर रहे थे।
क्या आप हमारे साथ हैं? क्या आप हमारे साथ हैं?

कोई जवाब नहीं। कोई आवाज़ नहीं। आधा मिनट बीत गया। फिर वही सवाल दोहराया गया, इस बार और भी ज़ोर से:
‘थॉमस गॉडविन... क्या आप हमारे साथ हैं?’
‘Ye-es! Ye-es!’
मेरे बगल में, मुझे एक टांग ज़ोर से कांपती हुई महसूस हुई। नहीं, किसी मेज़ की टांग नहीं, बल्कि एक आदमी की टांग। सटीक कहें तो, यह लालमोहन बाबू का घुटना था।
‘हां। मैं आ गया हूं। मैं यहां हूं!’
हालांकि आवाज में 'यहाँ' कहा गया था, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे वह काफी दूर से बोल रही हो।
समूह ने फिर से सवाल पूछना शुरू कर दिया। 'क्या आप खुश हैं? क्या आपको शांति मिल रही है?'
‘नहीं-नहीं!’ जवाब आया।
'तुम क्यों दुखी हैं?'
फिर सन्नाटा छा गया। श्री अराकिस और उनके दोस्तों ने लगभग एक मिनट तक इंतजार किया और फिर वही सवाल दोहराया: 'आप दुखी क्यों हैं?'
‘मैं... मैं... चाहता हूँ... मैं चाहता हूँ... मैं अपना... अपना ताबूत चाहता हूँ!’
इस टिप्पणी के बाद कुछ अजीबोगरीब घटनाएँ घटीं। बगल वाले कमरे से किसी ने दिल दहला देने वाली चीख मारी—घबराहट से भरी चीख—और अगले ही पल किसी ने मेरी आस्तीन ज़ोर से खींची। मेरे कान में एक आवाज़ फुसफुसाई: 'चलो, टॉपशे!' बाहर खड़ा गार्ड हमें इतनी तेजी से बाहर निकलते देख इतना अचंभित हो गया कि उसने न तो हमें रोका और न ही सीढ़ियों से नीचे हमारे पीछे आया। एक मिनट बाद, हम रिपन लेन को पीछे छोड़ चुके थे और रॉयड स्ट्रीट पर खड़ी अपनी कार की ओर बढ़ रहे थे।
लालमोहन बाबू ने कहा, 'वह एक विशेष शो था। अगर कोई फिल्म में ऐसा ही कुछ दिखाता, तो वह बॉक्स ऑफिस के सारे रिकॉर्ड तोड़ देता!'
इस प्रशंसा का कारण सीधा-सादा था। फेलुदा के हाथ में अब हाथीदांत का एक संदूक था, जो नवाब सदात अली ने थॉमस गॉडविन को उपहार में दिया था।

सात

अगली सुबह, फेलूदा ने खुद मुझे अपने कमरे में बुलाया। पिछली रात लालमोहन बाबू ने हमें छोड़ने के बाद, फेलूदा ने आधे घंटे के भीतर नहाकर अपना खाना खत्म कर लिया था। फिर वह सीधे अपने कमरे में चले गए और दरवाजा बंद कर लिया। मुझे ठीक से नींद नहीं आई थी। यह स्पष्ट था कि हम एक विचित्र रहस्य में उलझ गए थे। यह किसी भूलभुलैया में खो जाने जैसा था... शायद लखनऊ की भूलभुलैया से भी कहीं अधिक जटिल। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं; मेरी एकमात्र उम्मीद फेलूदा पर टिकी थी। लेकिन क्या फेलूदा को इस भूलभुलैया से निकलने का रास्ता पता था?
मैंने उसे अपने बिस्तर पर बैठा पाया। उसके सामने थॉमस गॉडविन का ताबूत रखा था। ताबूत का सामान बिस्तर पर बिखरा पड़ा था। उसमें दो सफेद पाइप थे जिनमें तंबाकू भरा जा सकता था—लेकिन वे उन सभी पाइपों से अलग थे जो मैंने पहले देखे थे; एक नसवार की डिब्बी; सोने के फ्रेम वाला एक चश्मा; और चार लाल चमड़े की जिल्द वाली नोटबुक। हर नोटबुक के कवर पर सुनहरे अक्षरों में 'डायरी' लिखा हुआ था। जिस रेशम के कपड़े में उन्हें लपेटा गया था, वह एक तरफ पड़ा था, साथ ही वह नीला रिबन भी जिससे पार्सल बंधा था। फेलुदा ने मुझे एक नोटबुक देते हुए कहा, 'पहला पन्ना पलटो—ध्यान से!'
‘अरे वाह, ये तो शार्लेट गॉडविन की डायरी है!’
जी हाँ। ये सब उनकी डायरियाँ हैं, 1858 से 1862 तक की। उनकी लिखावट उनकी भाषा की तरह ही स्पष्ट और सुगम है। मुझे पूरी रात इसे पढ़ने में लग गई। सोचिए, यह अनमोल वस्तु रिपन लेन के एक अंधेरे कोने में पड़ी थी! अविश्वसनीय!
मैंने पहले पन्ने को घूर कर देखा, उसे पलटने की हिम्मत नहीं हुई, क्योंकि मैं देख सकता था कि हर पन्ना नाजुक और भंगुर था।
फेलुदा ने कहा, 'अराकिस ने वह डायरी खोली।'
'आपको कैसे मालूम?'

‘अगर आप पन्ने को जल्दी और लापरवाही से पलटते हैं, तो ऊपर का दायाँ कोना अक्सर टूट जाता है। देखो!’ फेलुदा ने झटपट करके दिखाया। ‘इसके अलावा,’ उन्होंने आगे कहा, ‘यहाँ, इस रिबन को देखो। यह कुछ जगहों से काफी घिस गया है, क्योंकि यह सौ साल से भी अधिक समय तक बंधा और उलझा रहा था। लेकिन देखो, घिसे हुए हिस्सों के अलावा, रिबन कुछ जगहों से कुचला और मुड़ा हुआ है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक नई गाँठ बाँधी गई थी। जिसने भी इसे खोला, उसने ठीक उसी जगह पर गाँठ बाँधने की ज़हमत नहीं उठाई। अगर उसने ऐसा किया होता, तो पक्का पता लगाना और भी मुश्किल होता।’
‘तुम्हारी उंगली पर काला धब्बा क्यों है?’ मैंने पूछा। फेलुदा के कमरे में घुसते ही मैंने इसे देख लिया था।
‘यह एक और सुराग है, लेकिन मैं इसे बाद में समझाऊंगा। यह उस नसवार के डिब्बे से मिला है।’
मैंने हांफते हुए पूछा, 'डायरी ने तुम्हें क्या बताया?'
‘वे थॉमस गॉडविन के जीवन के अंतिम कुछ वर्षों की बात करते हैं। उस समय तक वह कंगाल और चिड़चिड़े हो चुके थे। उनका एक बेटा मर चुका था, और वह अपने दूसरे बेटे डेविड से न तो प्यार करते थे और न ही उस पर भरोसा करते थे। वास्तव में, वह किसी पर भी भरोसा नहीं करते थे, यहाँ तक कि शार्लोट पर भी नहीं। फिर भी शार्लोट उनसे प्यार करती थी, उनके लिए प्रार्थना करती थी और यथासंभव उनकी देखभाल करती थी। उन्होंने जुए में सब कुछ गंवा दिया था। शार्लोट स्थानीय अंग्रेज़ महिलाओं के लिए सिलाई करके और कालीन बनाकर थोड़ा-बहुत पैसा कमाती थी। गॉडविन ने नवाब से मिले अधिकांश महंगे उपहार बेच दिए थे। उनके पास केवल तीन चीजें बची थीं—वह संदूक, वह नसवार की डिब्बी जो उन्होंने शार्लोट को रखने की अनुमति दी थी, और तीसरी वह पहली वस्तु थी जो सआदत अली ने उन्हें उपहार में दी थी।’
‘क्या उसने वह चीज़ शार्लोट को दी?’
नहीं, उन्होंने इसे किसी को नहीं दिया। मरने से पहले उन्होंने अपनी बेटी से कहा था कि इसे उनके शरीर के साथ ही दफनाया जाए। शार्लोट ने उनकी अंतिम इच्छा पूरी की और इससे उन्हें बहुत सुकून मिला।
‘वह वस्तु क्या थी?’
शार्लोट इसे “पिताजी का अनमोल पेरिगल रिपीटर” कहती हैं।
‘अरे? यह आखिर क्या है?’

फेलुदा ने कहा, “इस मामले में तो तुम्हारा फेलुदा भी असमंजस में है। मेरी डिक्शनरी के अनुसार, रिपीटर का मतलब बंदूक—जैसे पिस्तौल—या घड़ी हो सकता है। पेरिगल शायद निर्माता का नाम हो। अंकल सिद्धू को भी ठीक से पता नहीं है। मैं आज सुबह तुम्हारे उठने से पहले उनके घर गया था। अब मुझे विकास चक्रवर्ती से बात करनी होगी और देखना होगा कि क्या वह इस मामले पर कुछ रोशनी डाल सकते हैं।”
विकास चक्रवर्ती पार्क स्ट्रीट स्थित पार्क ऑक्शन हाउस में काम करता था। फेलुदा उसे अच्छी तरह जानता था। दोनों की जान-पहचान तब हुई जब फेलुदा को एक मामले के सिलसिले में जांच के लिए ऑक्शन हाउस जाना पड़ा था। उसे कई बार वहां जाना पड़ा था।
‘मैं कुछ दिन पहले ही उस दुकान के पास से गुजरा था। खिड़की में बहुत सारी पुरानी घड़ियाँ और कलाई घड़ियाँ प्रदर्शित थीं। मुझे दृढ़ विश्वास है कि गॉडविन की रिपीटर एक घड़ी थी, बंदूक नहीं।’
इसके बाद फेलुदा ने मुझे शार्लेट गॉडविन की डायरी में पढ़ी हुई बातों के बारे में और विस्तार से बताया। जाहिर तौर पर, शार्लेट ने अपनी एक भतीजी का जिक्र किया था। उन्होंने उसे 'मेरी प्यारी चतुर भतीजी' कहकर संबोधित किया था। इस भतीजी ने कुछ ऐसा किया था जिससे उसके दादा थॉमस नाराज हो गए थे। लेकिन थॉमस ने मरने से पहले उसे माफ कर दिया और उसे अपना आशीर्वाद दिया। शार्लोट ने अपने भाइयों, डेविड और जॉन के बारे में भी बात की थी। हमने लोअर सर्कुलर रोड स्थित कब्रिस्तान में डेविड की कब्र देखी थी, जॉन इंग्लैंड लौट आया था और वहीं उसने आत्महत्या कर ली थी। शार्लोट को इसका कारण नहीं पता था।
लालमोहन बाबू थोड़ी देर बाद आए। उन्होंने हमसे कहा, “कल तक मैं दुविधा में था। पुलक ने मुझे अपनी अगली फिल्म के लिए एक नई कहानी लिखने को कहा था—जो भक्तिमय विषय पर आधारित हो। इसलिए मैं तय नहीं कर पा रहा था कि घर पर रहकर लिखना शुरू करूँ या आपके साथ रहकर देखूँ कि यह मामला कैसे आगे बढ़ता है। कल जो हुआ उसके बाद, मुझे कोई शक नहीं कि मैं चला जाऊँगा। रोमांच धर्म से बेहतर है। वैसे, क्या आपको उस ताबूत में कुछ मिला?”
'हां। मुझे लगभग एक सौ पच्चीस साल पुरानी डायरियाँ मिलीं। उनमें लिखा था कि अगर थॉमस गॉडविन की कब्र खोदी जाए, तो शायद उसमें पेरिगल रिपीटर मिल जाए।'

‘पीटर? कौन सा पीटर?’
चलो बाहर चलते हैं। तुम्हारे पास कितना पेट्रोल है?
‘दस लीटर। मैंने आज सुबह ही अपनी कार में पेट्रोल भरवाया था।’
'अच्छा। हमें बहुत यात्रा करनी है।'
जैसे ही हम पार्क ऑक्शन हाउस में दाखिल हुए, फेलुदा ने frowning किया। ‘श्री मित्तर! आप कैसे हैं? अंदर आइए। लगता है आज मेरा भाग्य अच्छा है। क्या आप किसी नए मामले के सिलसिले में आए हैं?’ श्री चक्रवर्ती हमारा अभिवादन करने के लिए आगे आए। वे थोड़े मोटे थे, पान से उनके गाल फूले हुए थे। उनकी शक्ल-सूरत देखकर मुझे तुरंत लगा कि वे उत्तरी कोलकाता से हैं। फेलुदा ने कहा, 'मुझे लगता है कि आपकी किस्मत बहुत अच्छी रही है। मैंने हाल ही में आपकी दुकान की खिड़की में लगभग आठ घड़ियाँ देखीं - बड़ी और छोटी। क्या आपने वे सभी बेच दीं?'
‘घड़ियाँ? आपको घड़ी चाहिए? किस तरह की? दीवार घड़ी, या अलार्म घड़ी?’ फेलुदा अभी भी इधर-उधर देख रहा था। मुझे सहज ही पता चल गया था कि श्री चक्रवर्ती उस तरह के व्यक्ति नहीं थे जो इतने लंबे और जटिल नाम वाली घड़ी के बारे में कुछ जानते हों। फिर भी, फेलुदा ने उनसे पूछ लिया।
‘रिपीटर? यह शायद किसी तरह की अलार्म घड़ी होगी,’ उसने जवाब दिया, ‘लेकिन मुझे नहीं पता कि पेरिगल का क्या मतलब है। लेकिन चिंता मत करो, मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो घड़ियों के बारे में बहुत कुछ जानता है। मैंने सुना है कि उसके घर में ढाई सौ घड़ियाँ हैं। वह घड़ियों का दीवाना है।’
‘सच में? वह कौन है?’
श्री चौधरी, महादेव चौधरी।
‘एक बंगाली?’
हाँ, लेकिन मुझे लगता है कि उनका पालन-पोषण पश्चिमी भारत या शायद उत्तर भारत में हुआ है। उनकी बंगाली उतनी अच्छी नहीं है। असल में, वे ज़्यादातर अंग्रेज़ी ही बोलते हैं। वे बहुत ही समझदार आदमी हैं। मेरा मानना है कि यहाँ आने से पहले वे बॉम्बे में थे। वे जो भी चीज़ हाथ लगती है, उसे खरीद लेते हैं, बशर्ते वह कोई प्राचीन वस्तु हो। वे घड़ियाँ जो आपने पहले यहाँ देखी थीं, अब सब उनके घर में हैं। वे वाकई बहुत जानकार हैं। आप जाकर उनसे बात क्यों नहीं करते? उन्होंने अखबारों में विज्ञापन दिया है। क्या आपने नहीं देखा?

‘कौन सा विज्ञापन?’
'यदि किसी के पास बेचने के लिए कोई प्राचीन घड़ी हो, तो उसे श्री चौधरी से संपर्क करना चाहिए।'
‘तो वह अवश्य ही बेहद धनी होगा!’
जी हाँ, महोदय। उनके पास कपड़ा मिलें, सिनेमाघर, चाय बागान, जूट मिलें, घुड़दौड़ के घोड़े, आयात-निर्यात का कारोबार है... आप नाम बताइए!
क्या आपको पता है कि वह कहाँ रहता है?
जी हाँ। कलकत्ता के अलीपुर पार्क में उनका एक घर है, और एक और घर गंगा नदी के किनारे ग्रामीण इलाके में है। मुझे लगता है उनकी सूती चक्की कहीं आस-पास ही है। वे शायद इस समय कलकत्ता में ही होंगे, लेकिन मेरा सुझाव है कि आप शाम को उनसे मिलने जाएं। अभी वे अपने दफ्तर में होंगे... रुकिए, मैं जाकर उनका पता ले आता हूँ।
हमने महादेव चौधरी का पता लिया और नीलामी घर से निकल गए। फेलुदा ने कहा, 'क्यों न आप मुझे राष्ट्रीय पुस्तकालय के एस्प्लेनेड रीडिंग रूम में छोड़ दें और वापस पार्क स्ट्रीट कब्रिस्तान चलें? देखें कि क्या कुछ बताने लायक है?'
‘रिपोर्ट?’ लालमोहन बाबू की आवाज़ अचानक लड़खड़ा गई। ‘जी हाँ। आपको बस गॉडविन के मकबरे पर एक नज़र डालनी है। आज आपको वह इलाका काफी सूखा मिलेगा; पिछले कुछ दिनों से बारिश नहीं हुई है, है ना? चारों ओर देख लीजिए, फिर वापस आकर मुझे ले जाइए। हम कहीं दोपहर का खाना खा लेंगे। दोपहर के खाने के लिए घर वापस जाने का समय नहीं होगा... आज हमें बहुत काम करना है। यह मत भूलिएगा कि हमें रिपन लेन भी लौटना है।’
फेलुदा श्री गॉडविन के ताबूत को भूरे कागज में लपेटकर लाया था और उसे अपनी बगल में दबाकर ले जा रहा था।
‘दिन के उजाले में तो डरने की कोई वजह नहीं है,’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘अंधेरा होने के बाद ही कब्रिस्तान जाना. . . मुश्किल हो जाता है!’
'अगर तुम्हारा दिमाग अंधविश्वासों से भरा न होता, तो तुम भूतों और आत्माओं से दिन के किसी भी समय नहीं डरते!' फेलुदा ने कहा।
रीडिंग रूम जाते समय हमारी कार ट्रैफिक जाम में कुछ देर के लिए फंस गई। जाम हटने का इंतजार करते हुए लालमोहन बाबू ने कहा, 'यह घड़ी, या कलाई घड़ी, या जो भी आप ढूंढ रहे हैं... क्या यह जेब घड़ी हो सकती है?'

मुझे नहीं पता। मेरा मतलब है, अभी तक नहीं।
'अगर यह कोई पुरानी जेब घड़ी है, तो मेरे पास वैसी ही एक है।'
‘यह किसका था?’
‘मेरे दादाजी की। मेरे पास तीन चीजें हैं जो कभी उनकी थीं। एक घड़ी, एक छड़ी और एक पगड़ी। स्वर्गीय प्यारचरण गांगोपाध्याय। मैं कहता हूँ, आपको क्या लगता है, “प्यारचरण” नाम कहाँ से आया होगा?’
‘कहीं नहीं। यह हमेशा से यहीं, इसी देश में थी। आप एक लेखक हैं, और आपको “प्यारी” का अर्थ नहीं पता? यह राधा का ही दूसरा नाम है, बस इतना ही।’ ‘धन्यवाद, महोदय। खैर, मैं आपको वह घड़ी देना चाहता हूँ।’ फेलुदा काफी हैरान रह गया। ‘मुझे? क्यों?’
‘खैर, मैं आपको कुछ देना चाहता था—आप जानते हैं, अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिए। आखिरकार, आपने मेरी हिंदी फिल्म की सफलता में इतना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। और यह कार उसी का परिणाम है। अब, अगर आप इस घड़ी को देखें, तो कौन जाने, शायद आपको पता चले कि यह पेरिपीटर है, या कुछ और।’
नहीं, ऐसा संभव नहीं है। लेकिन आपके प्रस्ताव के लिए मैं बहुत आभारी हूँ। मैं वादा करता हूँ कि आपकी घड़ी का बहुत अच्छे से ख्याल रखा जाएगा। ज़ाहिर है, मैं इसे हर दिन नहीं पहन सकता—खासकर तब जब यह इतनी पुरानी है और उन्नीसवीं सदी की है। लेकिन मैं इसे नियमित रूप से चाबी भरूंगा। क्या यह अभी भी चलती है?
'खूबसूरती से।'
लालमोहन बाबू और मैं फेलुदा को रीडिंग रूम में छोड़कर जब कब्रिस्तान पहुँचे, तब तक लगभग बारह बज चुके थे। वहाँ अपना काम खत्म करके हम उसे लेने जाएँगे और निज़ाम के यहाँ मटन रोल खाने चलेंगे। यही फेलुदा की योजना थी और उसकी तरफ से दावत होगी। लेकिन दोपहर के भोजन से पहले हमें रिपन लेन वापस जाकर ताबूत लौटाना होगा।
पार्क स्ट्रीट पर अब वाहनों की आवाजाही काफी कम थी। इसलिए कब्रिस्तान में सन्नाटा पसरा हुआ था। हम मुख्य द्वार से अंदर गए और चौकीदार बरमदेव को ढूंढने लगे। वह कहीं नजर नहीं आया और हमारे पुकारने पर भी नहीं निकला। शायद वह किसी झाड़ी के पीछे छिपकर किसी मरे हुए चूहे का अंतिम संस्कार करने चला गया हो।

हम कब्रिस्तान के बीच से गुज़रने वाले रास्ते पर चल पड़े। हालाँकि फेलुदा और मैंने लालमोहन बाबू के डर का मज़ाक उड़ाया, और फेलुदा ने तो उसे महज़ अंधविश्वास बताकर खारिज कर दिया, लेकिन मुझे मानना पड़ा कि वहाँ का माहौल कुछ डरावना सा था। सिर्फ़ कब्रें ही नहीं, बल्कि पेड़ों, झाड़ियों और घनी वनस्पतियों की भरमार भी उस भयावह वातावरण को और बढ़ा रही थी। फिर भी, लालमोहन बाबू की प्रतिक्रियाएँ कुछ ज़्यादा ही लग रही थीं। आख़िरकार, दिन का उजाला था और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वह इतना डरा हुआ क्यों था। वह धीरे-धीरे चल रहा था, तिरछी नज़रों से कब्रों को देख रहा था और लगातार कुछ बुदबुदा रहा था, मानो कोई मंत्र जप रहा हो। वह क्या कह रहा था? मुझे उसके शब्द सुनने के लिए कान लगाने पड़े। वाकई, वे शब्द सुनने लायक थे।
‘कृपया, श्रीमान पामर, कृपया, श्रीमान हैमिल्टन, और आप भी, मिस स्मिथ; कृपया हमारी गर्दनें मत तोड़िए, कृपया हमें अपना काम करने दीजिए। आपने हमें बहुत कुछ दिया है, बहुत कुछ लिया है, बहुत कुछ सिखाया है, यहाँ तक कि हमारी खूब पिटाई भी की है... श्रीमान कैंपबेल, श्रीमान एडम, और—अरे, मैं तो आपका नाम भी ठीक से नहीं बोल पा रही!—लेकिन फिर भी, मैं आप सभी से विनती करती हूँ, अगर आप मुट्ठी भर धूल के बराबर हैं, तो वैसे ही रहिए... धूल से धूल, धूल... धूल...!’
मैं खुद को और रोक नहीं सका। ‘तुम किस बारे में बात कर रहे हो? धूल के बारे में ये सब क्या है?’ मैंने पूछा।
प्रिय तपेश, मैंने बचपन में इन सब के बारे में पढ़ा था। मिट्टी से ही तुम बने हो, मिट्टी में ही मिल जाओगे। ये सभी लोग मिट्टी में विलीन हो गए हैं। ‘तो फिर डरने की क्या बात है?’
‘यह तो एक कवि ने लिखा है। कवि जो लिखते हैं, वह हमेशा सही नहीं होता, है ना?’
हम बाईं ओर मुड़े। गिरा हुआ पेड़ अभी भी ज़मीन पर पड़ा था, और ज़मीन अब सूखी थी। लेकिन थॉमस गॉडविन की कब्र के चारों ओर काफी मिट्टी फैली हुई थी। ‘धूल...धूल...धूल...!’
लालमोहन बाबू रोबोट की तरह उस शब्द का जाप करते रहे—शायद हिम्मत जुटाने के लिए—और गॉडविन की समाधि की ओर बढ़े। फिर वे रुके, हांफते हुए बोले, ‘स्क-स्क-स्केल-स्केल-स्केल-!’ और तुरंत ही गिर पड़े पेड़ की तरह मिट्टी के टीले पर जा गिरे।

[illegible]

आठ

लालमोहन बाबू को आँखें खोलने के लिए मुझे उन्हें कम से कम दस बार हिलाना पड़ा। अगर वो होश में नहीं आते तो मैं सचमुच मुसीबत में पड़ जाता, क्योंकि मैं पहले कभी ऐसी स्थिति में नहीं फंसा था। आखिरकार लालमोहन बाबू उठे, अपने कपड़े झाड़े और बोले कि डर लगने पर लेखक दूसरों की तुलना में अधिक आसानी से बेहोश हो जाते हैं, क्योंकि उनकी कल्पना शक्ति अन्य लोगों की तुलना में कहीं अधिक होती है।
‘तुम्हारे चचेरे भाई ने अंधविश्वास के बारे में जो कहा वह सरासर बकवास है। मुझे ऐसी कोई... समस्या नहीं है!’ उसने मुझसे कहा।
हमने एक पल भी बर्बाद नहीं किया और फेलुदा को लेने के लिए तुरंत कब्रिस्तान से निकल पड़े। उन्होंने रीडिंग रूम में अपना काम खत्म कर लिया था। अगर उन्होंने काम खत्म नहीं भी किया होता, तो भी मुझे पता था कि हमारी कहानी सुनने के बाद वे सब कुछ छोड़कर हमारे साथ कब्रिस्तान वापस आ जाते। उन्होंने देखा कि कब्र खोदी गई थी, जिससे खोपड़ी दिखाई दे रही थी। फिर उन्होंने कब्र के आसपास के इलाके की अच्छी तरह से तलाशी ली—लेकिन उन्हें एक फावड़े के अलावा कुछ नहीं मिला। वह फावड़ा कब्र से मात्र दस फीट की दूरी पर पड़ा था।
इस बार हमारी मुलाकात बरमदेव से हुई। उन्होंने बताया कि वे लोअर सर्कुलर रोड पर कोने में स्थित अपने भतीजे की पान की दुकान पर कोई ज़रूरी संदेश देने गए थे। उन्हें कब्र खोदे जाने के बारे में कुछ भी पता नहीं था। उनका मानना था कि जिसने भी यह काम किया है, वह पिछली रात दीवार फांदकर कब्रिस्तान में घुसा होगा। तब फेलुदा ने उनसे मदद मांगी और उस बड़े गड्ढे को मिट्टी और गिरे हुए पत्तों से भर दिया। हमारे जाने से पहले, फेलुदा ने बरमदेव से कहा कि वे इस बारे में किसी और से बात न करें।
पार्क स्ट्रीट से हम सीधे रिपन लेन की ओर चले गए।
जब हम 14/1 पर पहुँचे और सीढ़ियों से ऊपर जाने वाले थे, तब थोड़ी देर हो गई।
एक युवक नीचे उतर रहा था, उसके हाथ में एक लंबा चमड़े का डिब्बा था—गिटार

का डिब्बा। वह लगभग पच्चीस साल का लग रहा था और पार्क स्ट्रीट के आसपास, खासकर शाम के समय, दिखने वाले अन्य युवकों जैसा ही दिख रहा था। इसलिए आगे वर्णन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह व्यक्ति क्रिस गॉडविन ही होना चाहिए था। वह ब्लू फॉक्स में अपना प्रदर्शन समाप्त करने के बाद देर रात तक रिपन लेन नहीं लौटेगा।
उनके जाने के बाद हम ऊपर की ओर चल दिए। पहली मंज़िल पहले की तरह शांत नहीं थी। श्री गॉडविन के बैठक कक्ष से तेज़ आवाज़ें हमारे कानों तक पहुँच रही थीं। हमने उनमें से एक आवाज़ पहचान ली। दूसरी आवाज़ शायद श्री अराकिस की थी। पहली आवाज़ डांटने और धमकाने वाली थी। दूसरी आवाज़ शिकायत करने और सभी आरोपों से इनकार करने वाली थी। दोनों बार-बार 'ताबूत' शब्द का इस्तेमाल कर रहे थे।
फेलुदा गलियारे से नीचे उतरा और दरवाजे पर दस्तक दी। तभी, तीन शब्द गोली की तरह निकले: 'कौन है?'
हम कमरे में दाखिल हुए। दूसरे सज्जन की त्वचा पीली थी, उसमें हल्का पीलापन था और उस पर झाइयाँ थीं। उनका सिर गंजा था और उनके दो सोने के दाँत थे। उनकी उम्र शायद साठ के आसपास थी। फेलुदा सीधे मिस्टर गॉडविन के पास गए और अपने हाथों में मौजूद पार्सल खोला। उन्होंने कहा, 'कल मैं इसे अपने साथ ले जाने से खुद को रोक नहीं पाया। यह मेरे शोध में बहुत मददगार होगा।'
मिस्टर गॉडविन कुछ सेकंड तक बस देखते रहे, फिर जोर से हंस पड़े।
‘तो तुमने उन्हें बेवकूफ बना दिया, तुमने उन्हें बेवकूफ बना दिया! वे मूर्ख! धोखेबाज, जालसाज, ठग!’ फिर उसने दूसरे आदमी की ओर देखा और तीखे व्यंग्य से भरी आवाज में बोला, ‘टॉम गॉडविन की आत्मा उस ताबूत के साथ चली गई, क्या? क्या यह टॉम गॉडविन की आत्मा है? यह सज्जन? आपको क्या लगता है? देखिए, यह श्री अराकिस हैं, मेरे ऊपर वाले फ्लैट के पड़ोसी। वही आदमी जिसकी मेज हर गुरुवार को इधर-उधर उछलती है और मेरी पूरी शाम खराब कर देती है।’ श्री अराकिस ताबूत को मूर्खतापूर्ण ढंग से घूर रहे थे। फिर उन्होंने चुपचाप फेलुदा की ओर देखा और अपनी वही मूर्खतापूर्ण निगाह दरवाजे की ओर घुमा ली। वे उसकी ओर बढ़ने लगे, लेकिन रुक गए। फेलुदा ने उनका नाम पुकारा था।
‘श्री अराकिस!’

उस आदमी ने फेलुदा की ओर देखा। फेलुदा ने शांत भाव से कहा, 'मुझे लगता है कि उस ताबूत में रखी वस्तुओं में से एक अभी भी आपके पास है।'
‘बिल्कुल नहीं!’ अराकिस गरजते हुए बोला। ‘वैसे भी, तुम्हें इसके बारे में कैसे पता चलेगा? मार्कस, उस बक्से को खोलकर देखो कि उसमें से कुछ गायब तो नहीं है।’
तो श्री गॉडविन का पहला नाम मार्कस था। इससे आर्किस-मार्किस का रहस्य सुलझ गया।
मार्कस गॉडविन ने ताबूत खोला और उसके अंदर रखी चीज़ों को देखा। फिर उन्होंने कुछ शर्मिंदा भाव से कहा, 'अरे, श्रीमान मिटर, सब कुछ बिल्कुल सही सलामत लग रहा है!'
'क्या आप कृपया वह नसवार की डिब्बी निकाल सकते हैं? शार्लोट गॉडविन ने अपनी डायरी में इसका वर्णन किया था और कहा था कि यह पन्ना, माणिक और नीलम से जड़ी हुई थी।'
मिस्टर गॉडविन ने डिब्बा बाहर निकाला और उसे गौर से देखा।
‘क्या अब आपको समझ आ रहा है कि यह एक सस्ता, नया स्नफ़ बॉक्स है, जिसे बस काले रंग से रंगा गया है? श्री अराकिस ने इसे प्राचीन वस्तु जैसा दिखाने की कोशिश की है!’
पांच मिनट के भीतर, श्री अराकिस ऊपर वाले फ्लैट से असली चीज़ ले आए। श्री गॉडविन ने कहा, 'मैं भगवान की कसम खाता हूँ, अगर अगले गुरुवार को तुम्हारी मेज से कोई आवाज़ आई, तो मैं पुलिस को सूचना दे दूँगा!' श्री अराकिस शर्म से चेहरा लाल किए हुए चोर की तरह कमरे से चुपके से निकल गए।
‘धन्यवाद, श्री मिटर,’ श्री गॉडविन ने राहत की सांस लेते हुए कहा। ‘क्या आपको अंदाजा है कि शार्लोट गॉडविन की डायरियाँ कितनी अनमोल हैं?’
नहीं। मुझे तो पता भी नहीं था कि ताबूत में ऐसी डायरियाँ हैं। सच कहूँ तो, श्रीमान मिटर, मुझे अपने पूर्वजों के बारे में ज़रा भी जानने की जिज्ञासा नहीं है। असल में, अब मुझे किसी भी चीज़ में कोई जिज्ञासा नहीं रही। मैं बस मौत का इंतज़ार कर रहा हूँ। मेरे पास बस वो बिल्ली है जिसे मैं अपना कह सकता हूँ। पहले मैं एक दोस्त के घर पोकर खेलने जाया करता था। अब गठिया की वजह से वो भी बंद हो गया है।
‘ऐसे में शायद आपसे कुछ सवाल पूछने का कोई मतलब नहीं है।’
'क्या सवाल?'

‘आपके परदादा का नाम डेविड था, है ना, और उन्हें लोअर सर्कुलर रोड पर स्थित कब्रिस्तान में दफनाया गया था?’
'हाँ।'
‘क्या डेविड का कोई भाई या बहन था?’
‘पता नहीं। मेरे पूर्वजों में से एक ने आत्महत्या कर ली थी। मुझे याद नहीं कि वह डेविड का भाई था या नहीं।’
‘क्या डेविड के बेटे—यानी आपके दादाजी—का नाम एंड्रयू था?’
'हां, वह सेना में था।'
‘शार्लोट अपनी एक भतीजी के बारे में बात कर रही है। वह या तो तुम्हारे दादा की बहन थी, या...’
मेरे दादाजी अपने माता-पिता की इकलौती संतान थे।
‘तो फिर वह कोई चचेरा भाई ही होगा।’
‘मैं चचेरे भाई-बहनों के बारे में कुछ नहीं बता सकती। मेरी याददाश्त काफी कमजोर हो गई है। इसके अलावा, हमारे समुदाय में परिवार एक साथ नहीं रहते। हम अपनी-अपनी राह पर चलते हैं, इसलिए हम बिखर जाते हैं—आपके बंगाली संयुक्त परिवारों के विपरीत!’
हम सोसाइटी सिनेमा के सामने निज़ाम के रेस्टोरेंट में बैठे थे। मटन रोल की प्लेट पर, फेलुदा ने लालमोहन बाबू से पूछा, 'नरेन बिस्वास के बारे में आपकी क्या राय है? मेरा मतलब है, एक व्यक्ति के रूप में?'
लालमोहन बाबू ने चबाना समाप्त किया, निगला और कहा, 'अरे वाह, वह तो काफी अच्छे आदमी लग रहे थे! मुझे लगा कि उनकी शक्ल-सूरत में कुछ तो बहुत ही प्रभावशाली था।'
'हां, पहले तो मैंने भी यही सोचा था।'
‘अब आप ऐसा नहीं सोचते?’
नहीं, लेकिन यह कहना जरूरी है कि एक खामी किसी व्यक्ति के पूरे व्यक्तित्व को बर्बाद नहीं करती—या नहीं करनी चाहिए। फिर भी, उसने एक गंभीर अपराध जरूर किया है।
लालमोहन बाबू और मैंने खाना बंद कर दिया।
‘क्या आपको उसके बटुए में मिली वो अखबार की कतरनें याद हैं? आज मैंने खुद देखा कि उन्हें एक सौ पचास या शायद दो सौ साल पुराने अखबार से ब्लेड से निकाला गया था, जिसे राष्ट्रीय पुस्तकालय के वाचनालय में बड़ी सावधानी से

संरक्षित किया गया था। मुझे लगता है कि ऐसे अपराध के लिए उस आदमी को जेल होनी चाहिए!’
मैंने कल्पना करने की कोशिश की कि नरेन बिस्वास वाचनालय में अपनी सांस रोककर चुपके से उन रिपोर्टों को काट रहे होंगे, पुस्तकालय अधिकारियों की निगाहों से बच रहे होंगे... लेकिन मैं उस दृश्य की कल्पना नहीं कर सका। किसी व्यक्ति को देखकर यह अनुमान लगाना वास्तव में असंभव है कि वह क्या करने में सक्षम हो सकता है।
फेलुदा ने आगे कहा, ‘यह एक तरह की बीमारी है। कुछ लोगों को बिना पकड़े गए इस तरह के अपराध करने में बेहद आनंद मिलता है। वे खुद को दूसरों से ज्यादा चालाक समझते हैं और खुद पर बहुत गर्व महसूस करते हैं। यह सब बहुत दुखद है।’ मटन रोल खत्म करने के बाद हमने लस्सी मंगाई। उसी समय फेलुदा ने बिल मांगा। ढाई बज रहे थे। हमें मिस्टर चौधरी से मिलने से पहले तीन घंटे और बिताने थे, जिनके बारे में कहा जाता था कि उन्हें घड़ियों का बहुत शौक था। मुझे पता था कि फेलुदा तब तक हार नहीं मानेगा जब तक पेरिगल रिपीटर का मामला सुलझ नहीं जाता।
लालमोहन बाबू ने कहा, 'मुझे बताओ, क्या प्राचीन कलकत्ता में वे सफाई करने वाले पक्षी भोजन की उम्मीद में दीवारों पर बैठकर आवाज लगाते थे?'
हम सड़क की ओर खुलने वाली खिड़की के पास बैठे थे। उसके ऊपर की चौखट पर एक कौआ बैठा जोर-जोर से कांव-कांव कर रहा था। इसीलिए लालमोहन बाबू ने यह सवाल पूछा था।
‘नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता,’ फेलुदा ने उत्तर दिया, ‘लेकिन वे निश्चित रूप से परिसर की दीवारों और रेलिंग पर बैठते थे। उस समय के पुराने चित्रों में इसके पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं।’
मुझे तो यह भी नहीं पता कि वे पक्षी दिखते कैसे थे!
‘हम चिड़ियाघर जा सकते हैं; यह पता लगाने का एक तरीका है। या हम कॉर्पोरेशन स्ट्रीट से जा सकते हैं। नगरपालिका भवन की सामने वाली दीवार पर उसका प्रतीक चिन्ह बना हुआ है। उसमें एक सफाई करने वाले पक्षी का चित्र है। मैं आपको दिखा सकता हूँ।’
‘क्या आप इसे अभी भी कॉर्पोरेशन स्ट्रीट कहते हैं?’ लालमोहन बाबू ने मुस्कुराते हुए पूछा।

ओह, क्षमा करें। इसका नया नाम हो गया है, है ना? मेरा मतलब सुरन बनर्जी से था...।
फेलुदा रुक गया। उसकी आँखों का भाव बदल गया था। उसने अपनी जेब से नोटबुक निकाली और उस पर सरसरी नज़र डाली। फिर बिल न आने पर वह बेचैन होने लगा। 'वेटर!' फेलुदा ने अधीरता से पुकारा, जो उसके लिए असामान्य बात थी।
बिल आने और भुगतान हो जाने के बाद, हम तुरंत कार में वापस बैठ गए। फेलुदा ने ड्राइवर को रास्ता बताया। जैसे ही हम सुरेन बनर्जी रोड पर पहुँचे, फेलुदा हर इमारत का नंबर देखने लगे। सभी इमारतों पर नंबर साफ़-साफ़ नहीं लिखा था— कलकत्ता के घरों की यही एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति होती है। उन्होंने ड्राइवर से कहा, 'चलते रहो, अगर तुम्हें 141 नंबर दिखे तो मुझे तुरंत बताना।'
अचानक मुझे कुछ याद आया। 141 एसएनबी। सुरेंद्र नाथ बनर्जी। मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा।
‘देखो! यहाँ 141 हैं।’
गाड़ी रुक गई। इमारत के बाहर एक बोर्ड लगा था। उस पर लिखा था, 'बोर्न एंड शेफर्ड'। बकवास! हमने इसे ढूंढ लिया था।
लालमोहन बाबू और मैं फेलुदा के साथ अंदर गए। ऊपर जाने के लिए लिफ्ट थी।
बाहर निकलते ही हम पहली मंजिल पर बने स्वागत कक्ष में पहुँच गए। एक कर्मचारी ने हमारा अभिवादन किया। फेलुदा ने सवाल पूछने से पहले थोड़ा संकोच किया। उसने जो भी कहा, वह मूर्खतापूर्ण ही लगा।
‘अह... क्या आपके पास विक्टोरिया की कोई तस्वीरें हैं?’ उसने अंत में कहा। ‘विक्टोरिया मेमोरियल?’
'नहीं, महारानी विक्टोरिया।'
मुझे खेद है कि नहीं। हमारे पास केवल उन्हीं लोगों की तस्वीरें हैं जो भारत आए थे। इनमें एडवर्ड अष्टम की तस्वीर है, जब वे वेल्स के राजकुमार थे, और जॉर्ज पंचम की, जब वे दिल्ली दरबार में आए थे...
‘क्या उनकी तस्वीरें अभी भी उपलब्ध हैं?’
'हां, लेकिन कोई तैयार प्रिंट उपलब्ध नहीं है। हमारे पास नेगेटिव हैं, इसलिए अगर कोई ऑर्डर देता है तो उनसे प्रिंट बनाए जा सकते हैं। हमारे पास 1854 से लेकर अब तक खींची गई सभी तस्वीरों के नेगेटिव मौजूद हैं।'
‘क्या! 1854?’

‘बोर्न एंड शेफर्ड दुनिया का दूसरा सबसे पुराना फोटोग्राफिक स्टूडियो है।’
लेकिन इसका मतलब है कि आपके पास हजारों-हजारों नकारात्मक बातें हैं!
जी हाँ। अगर आप मेरे साथ चलें, महोदय, तो मैं आपको सब कुछ दिखा सकता हूँ। दीवार पर टंगी वह तस्वीर देखिए? वह 1880 में स्मारक के शिखर से ली गई थी। मैंने अब तक इस पर ध्यान नहीं दिया था, लेकिन अब मेरी नज़र सीधे इस पर पड़ी। तस्वीर का आकार शायद 1 फुट x 5 फुट था। इसमें कलकत्ता शहर वैसा ही दिख रहा था जैसा लगभग सौ साल पहले स्मारक से दिखता था। इसमें डलहौज़ी चौक, एस्प्लेनेड और फिर उत्तर की ओर फैला हुआ एक निर्बाध दृश्य था। चर्च के शिखर हर इमारत से ऊंचे थे। दूर-दूर तक कोई ऊंची इमारत नज़र नहीं आ रही थी। यह एक शांत और सुकून भरा शहर था, इसमें कोई शक नहीं था।
फिर हमें उस कमरे में ले जाया गया जहाँ नेगेटिव रखे गए थे। मेरी आँखें फटी रह गईं। अलमारियाँ लगभग फर्श से छत तक फैली हुई थीं। प्रत्येक अलमारी चौकोर भूरे बक्सों से भरी हुई थी, जिन पर तारीख और उनमें रखी सामग्री का विवरण लिखा हुआ था।
फेलुदा ने अलमारियों का मुआयना किया और कुछ खजूरों को गौर से देखा। फिर उसने अपनी घड़ी पर नज़र डाली और कहा, 'तुम दोनों टहलने क्यों नहीं जाते? एक घंटे में वापस आ जाना। मुझे यहाँ कुछ काम करना है।'
हम लिफ्ट की ओर वापस गए। लालमोहन बाबू ने कहा, 'तुम्हारे चचेरे भाई की इच्छा ही मेरा आदेश है। मैं उसे कभी मना नहीं कर सकता। उसका व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली है! खैर, चलो फ्रैंक रॉस चलते हैं।'
हमने कार को सुरन बनर्जी रोड पर पार्क किया और चौरंगी रोड से ग्रैंड होटल की ओर पैदल चल दिए। मुझे नहीं पता था कि लालमोहन बाबू दवा की दुकान पर क्यों जाना चाहते थे, और न ही मुझे जानने की ज़रूरत थी। हमारा एकमात्र उद्देश्य समय बिताना था।
हम भीड़ भरी सड़कों से आगे बढ़ते रहे, कोशिश कर रहे थे कि किसी से टकरा न जाएं। थोड़ी देर बाद, लालमोहन बाबू ने पूछा, 'क्या तुम्हें कुछ अंदाजा है कि तुम्हारा चचेरा भाई क्या सोच रहा है?'
मुझे यह स्वीकार करना पड़ा कि मुझे इस बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी। मैं केवल इतना ही अनुमान लगा सकता था कि फेलुदा के अलावा किसी और ने

शार्लोट गॉडविन की डायरी पढ़ी थी और इसका थॉमस गॉडविन की कब्र खोदे जाने से किसी न किसी तरह का संबंध था।
‘क्या आप जानते हैं कि शरीर को दफनाए जाने के दो सौ साल बाद भी कंकाल बरकरार रह सकता है?’ लालमोहन बाबू ने मुझसे पूछा।
उनके सवाल ने मुझे फेलूदा द्वारा बताई गई जॉब चार्नॉक की कब्र की कहानी याद दिला दी। मैंने वह कहानी लालमोहन बाबू को भी सुनाई। चार्नॉक की मृत्यु के दो सौ साल बाद, सेंट जॉन चर्च के एक पुजारी को अचानक जमीन के नीचे दबी किसी चीज पर शक होने लगा। क्या चार्नॉक को सचमुच वहीं दफनाया गया था, या किसी ने सिर्फ एक कब्र का पत्थर लगा दिया था? उनका शक इतना बढ़ गया कि पुजारी ने कब्र खुदवा दी। पहले तो उनके आदमियों ने चार फीट खोदा, लेकिन कुछ नहीं मिला। फिर उन्होंने और गहरा खोदा, और कुछ फीट नीचे खोदने पर एक कंकाल का हाथ बाहर निकला। पुजारी ने तुरंत कब्र को वापस भरवा दिया।
हम फ्रैंक रॉस में दाखिल हुए। लालमोहन बाबू काउंटर तक गए। जैसे ही उन्होंने कहना शुरू किया, 'मसूड़ों के लिए एक फोरहैंस, फैमिली साइज', मैंने दुकान में एक आदमी को आते देखा और उसे पहचान लिया। वह नरेन बिस्वास के भाई, गिरिन बिस्वास थे। उन्होंने हमें तुरंत नहीं पहचाना। मैंने देखा कि मुस्कुराने से पहले उन्होंने दो-तीन बार हमारी तरफ देखा। उनके हाथों में एक बड़ा पार्सल था। उस पर हांगकांग ड्राई क्लीनर्स लिखा हुआ था। 'नमस्ते!' उन्होंने कहा। 'मैं अपने भाई के लिए कुछ दवाइयां खरीदने आया हूं।'
‘वह कैसा है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
‘बेहतर, धन्यवाद। वैसे, उस दिन आपके साथ जो दूसरे सज्जन थे... मुझे लगता है कि वो जासूस प्रदोष मित्तर हैं? मेरे भाई ने बताया था। मैंने उनका नाम सुना था। दरअसल, मैं सोच ही रहा था...’ गिरिन बिस्वास रुक गए। उनके चेहरे पर शिकन थी और वे कुछ सोच में डूबे हुए लग रहे थे। फिर उन्होंने कहा, ‘वो आमतौर पर घर पर कब होते हैं?’
मैंने जवाब दिया, 'यह कहना मुश्किल है, लेकिन आपको हमारा नंबर टेलीफोन डायरेक्टरी में मिल जाएगा। हमारे घर आने से पहले आप उन्हें फोन कर सकते हैं।'
‘हम्म। मैं तो... छोड़ो, मैं उन्हें फोन कर लूंगी। श्री मिटर को बता देना कि जरूरत पड़ने पर मैं उनसे मिलने आऊंगी... हा हा!’

हमने भी विनम्रतापूर्वक उनकी 'हे हे!' की आवाज का जवाब दिया और दुकान से निकल गए।
फिर हम न्यू मार्केट में घूमे, सारी दुकानें देखीं और मोतीशील स्ट्रीट से होते हुए सुरेन बनर्जी रोड की ओर वापस जाने लगे। फेलुदा बॉर्न एंड शेफर्ड्स के पास कार के बगल में इंतज़ार कर रहा था। उसने अपना काम उम्मीद से जल्दी खत्म कर लिया था।
मैंने उसे गिरिन बिस्वास के साथ हमारी मुलाकात के बारे में बताया। 'सच में?' फेलुदा ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। 'उन्होंने क्या कहा?'
मुझे पता था कि अस्पष्ट बात करना ठीक नहीं होगा, इसलिए मैंने फेलुदा को हमारी बातचीत के बारे में विस्तार से बताया। मैंने ड्राईक्लीनर्स से आए पार्सल का भी जिक्र किया। फेलुदा ने चुपचाप मेरी बातें सुनीं।
‘क्या आपका काम हो गया? उम्मीद है सब ठीक रहा होगा?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। 'ओह जी हाँ, एकदम बढ़िया। वह जगह सचमुच सोने की खान है। और मैंने दुकान से श्री चौधरी को फोन किया। उनकी आवाज़ मखमल जैसी मधुर थी। वे घर लौट आए हैं और अब हमारी पक्की मुलाकात तय हो गई है।'

नौ

मैंने पहले भी घंटियों की आवाज़ सुनी थी, लेकिन जैसे ही हम शाम छह बजे महादेव चौधरी के घर में दाखिल हुए, कई घड़ियाँ एक साथ बजने लगीं। एक के बाद एक घड़ी से आने वाली आवाज़ बहुत ही अनोखी थी। मैंने पहले कभी ऐसी आवाज़ नहीं सुनी थी।
‘हे भगवान!’ लालमोहन बाबू ने हैरानी से कहा। ‘क्या हम स्वर्ग के द्वार से प्रवेश कर रहे हैं? कितना अद्भुत स्वागत है!’
हम श्री चौधरी से तुरंत नहीं मिल सके। उनके एक कर्मचारी हमें एक छोटे से कार्यालय में ले गए और बताया कि हमें प्रतीक्षा करनी होगी, क्योंकि श्री चौधरी व्यस्त थे। उस छोटे से कमरे में भी दो सुंदर घड़ियाँ थीं—एक दीवार पर और दूसरी किताबों की अलमारी पर।
जब आखिरी घंटी की आवाज़ बंद हुई, तो पूरे घर में एक अजीब सी खामोशी छा गई। यह एक विशाल, आधुनिक इमारत थी। संगमरमर का फर्श इतना चमक रहा था कि अगर मैं नीचे देखता, तो मुझे उसमें अपना चेहरा प्रतिबिंबित होता हुआ दिखाई देता। कुछ क्षण बाद, मुझे एक आवाज़ सुनाई दी। यह घर के भीतर से आ रही थी। फेलुदा ने कहा कि यह महादेव चौधरी की आवाज़ थी, हालाँकि यह कहना मुश्किल था कि यह मखमली थी या नहीं। लेकिन, जब आवाज़ अचानक तेज़ हुई और चीखने लगी, तो मखमलीपन का सारा अंश गायब हो गया।
महादेव चौधरी किसी को बहुत गुस्से से डांट रहे थे। हम तीनों ने अपनी सांस रोक ली और मजबूरी में उनकी बातें सुनने लगे। दूसरा व्यक्ति अभी भी धीरे बोल रहा था, इसलिए हम उसकी बात नहीं सुन पा रहे थे। लेकिन जल्द ही, चौधरी की आवाज़ फिर से गूंजी: 'मैं इस तरह के मामलों में कभी एडवांस नहीं देता, लेकिन तुम्हारे ज़िद पर मैंने तुम्हें पैसे दे दिए। और अब तुम कह रहे हो कि तुमने वो पैसा खर्च कर दिया है? सच कहूं तो, मुझे तुम्हारी एक भी बात पर यकीन नहीं है। वैसे भी, इतने छोटे से काम के लिए मुझे इतना पैसा क्यों देना चाहिए? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा! लेकिन... ठीक है, मैं पैसे दे दूंगा। मुझे सामान दो दिन के अंदर चाहिए। इस बार कोई बहाना नहीं चलेगा। समझ आया?'

इन टिप्पणियों के बाद पूरी तरह सन्नाटा छा गया। फिर हमें कदमों की आहट सुनाई दी, जो सामने के दरवाजे की ओर जाती हुई प्रतीत हुई। एक मिनट बाद, श्री चौधरी का कर्मचारी वापस आया। उसने कहा, 'कृपया मेरे पीछे आइए।'
श्री चौधरी का पूरा रूप-रंग—सिर से पैर तक—सचमुच मखमली था। शाम के छह बजे भी उनके गाल चिकने और चमकदार थे। मैंने मन ही मन सोचा, ‘पक्का वो दिन में दो बार शेव करते होंगे!’ लालमोहन बाबू ने बाद में बताया, ‘अगर कोई मक्खी उनके गाल पर बैठ भी जाती, तो वो फिसल जाती!’
जिस विशाल बैठक कक्ष में हम थे, वह अपने मालिक की तरह ही चमकदार और साफ-सुथरा था। कहीं भी धूल का एक कण भी नहीं था, और उसके कोने-कोने में चींटियाँ और तिलचट्टे बिल्कुल नहीं थे।
श्री चौधरी ने सोने का सिगरेट होल्डर होठों तक उठाया, कश लिया और फेलुदा की ओर देखा। 'तो? क्या तुम वो घड़ी लाए हो?' उन्होंने पूछा।
हम सब उस सवाल को सुनकर चौंक गए। 'घड़ी? कौन सी घड़ी?' फेलुदा ने कहा। ‘क्या आपने मुझसे घड़ी के सिलसिले में मिलने की बात नहीं कही थी? मुझे लगा आपने अखबारों में मेरा विज्ञापन देखा होगा और इसीलिए आप फोन कर रहे थे।’ ‘मुझे क्षमा करें, श्री चौधरी,’ फेलुदा ने उनसे कहा, ‘मैंने आपका विज्ञापन नहीं देखा। मुझे कुछ जानकारी चाहिए। यह घड़ी से संबंधित हो सकती है। मुझे बताया गया है कि आप इस विषय में बहुत कुछ जानते हैं, इसलिए मैं...’
मखमली सतह पर सिलवटें दिखाई देने लगीं। श्री चौधरी अपनी कुर्सी पर थोड़ा हिले-डुले, उनके चेहरे पर हल्की झुंझलाहट झलक रही थी। 'मेरे पास ज्यादा समय नहीं है, श्री मित्तर। मैं शहर छोड़ने वाला हूँ। कृपया संक्षेप में बात करें।'
‘पेरिगल रिपीटर क्या होता है? बस यही जानना चाहता हूं।’
मखमली कपड़ा अचानक पत्थर जैसा हो गया। सिगरेट होल्डर उसके मुंह से कुछ इंच की दूरी पर टिका हुआ था। श्री चौधरी की आंखें स्थिर थीं, बिना पलक झपकाए फेलुदा पर टिकी हुई थीं।
‘आपको यह नाम कहाँ से मिला?’
उन्नीसवीं सदी के एक अंग्रेजी उपन्यास में।
कई बार फेलुदा झूठ बोलने से भी नहीं हिचकिचाता था, अगर इससे उसे परिणाम प्राप्त करने में मदद मिलती थी। मैंने उसे पहले भी ऐसा करते देखा था। 'मुझे

पता है कि रिपीटर या तो बंदूक हो सकती है या घड़ी। मैंने यह एक शब्दकोश में देखा था। लेकिन पेरिगल के बारे में मुझे कोई कुछ नहीं बता सकता।'
श्री चौधरी अब भी फेलुदा को घूर रहे थे। जब उन्होंने बोलना शुरू किया, तो उनकी आवाज़ में जो कोमलता थी, वह अब तीखी हो गई थी। 'श्री मित्तर, अगर आपको कोई अपरिचित शब्द दिखाई दे, तो क्या आप हमेशा उसका अर्थ जानने के लिए बिल्कुल अजनबी लोगों के पास जाते हैं?'
'हां, यदि आवश्यकता हो तो।'
मुझे लगा था कि श्री चौधरी इस मामले में अत्यावश्यक आवश्यकता के बारे में जानना चाहेंगे। लेकिन, ऐसा कोई प्रश्न पूछने के बजाय, वे फेलुदा को घूरते रहे। कुछ सेकंड बाद उन्होंने जो टिप्पणी की, उससे मेरी धड़कन तेज़ हो गई, कानों में ज़ोर से गूंजने लगी, ठीक उसी तरह जैसे बगल की मेज पर रखी घड़ी की टिक-टिक की आवाज़ गूंज रही थी।
‘आप एक जासूस हैं, है ना?’
मुझे फेलुदा के धैर्य पर आश्चर्य हुआ। उनके जवाब आने में लगभग पाँच सेकंड का विलंब हुआ। लेकिन जब उन्होंने बोलना शुरू किया, तो उनकी आवाज़ एकदम सहज थी। 'मैं देखता हूँ कि आपको अच्छी जानकारी है!'
'मुझे ऐसा करना ही होगा, श्री मिटर। मेरे पास ऐसे लोग हैं जो जानकारी इकट्ठा करते हैं और मुझे भेजते हैं।'
'लगता है आप मेरा पूछा हुआ सवाल भूल गए हैं। शायद आपको जवाब नहीं पता। अगर आपको जवाब पता है, लेकिन आप बताना नहीं चाहते, तो मैं चलता हूँ। आपका समय बर्बाद करने का कोई फायदा नहीं है।'
‘बैठ जाइए, श्रीमान मिटर!’
फेलुदा उठ खड़ा हुआ था, इसीलिए उसने आदेश दिया था। मैंने लालमोहन बाबू पर एक नज़र डाली। वह ऐसे लग रहे थे मानो उनके शरीर में बिल्कुल भी ताकत न बची हो और उन्हें उठने के लिए किसी की मदद की ज़रूरत पड़ेगी।
श्री चौधरी ने कहा, 'कृपया बैठ जाइए।'
फेलुदा बैठ गया।
महादेव चौधरी ने हमें बताया, ‘रिपीटर एक बंदूक है। लेकिन अगर आप इसमें “पेरिगल” जोड़ दें, तो यह एक घड़ी बन जाती है। एक जेब घड़ी। फ्रांसिस पेरिगल। एक अंग्रेज। अठारहवीं सदी के अंत में, दुनिया में पेरिगल जितने

कुशल घड़ीसाज़ बहुत कम थे। दो सौ साल पहले, सबसे अच्छी घड़ियाँ इंग्लैंड में बनती थीं, स्विट्जरलैंड में नहीं।’
‘आज के समय में पेरिगल रिपीटर की कीमत कितनी होगी?’
'मिस्टर मिटर, आप कभी भी इतनी महंगी घड़ी नहीं खरीद सकते।'
'हाँ मुझे पता है।'
'मैं कर सकता हूं।'
मुझे भी यह पता है।
तो फिर आप इसकी कीमत क्यों जानना चाहते हैं?
‘सरल जिज्ञासा।’
‘बेकार की जिज्ञासा। इसका कोई फायदा नहीं।’
श्री चौधरी ने अपनी सिगरेट का आखिरी कश लिया, उसे होल्डर से निकाला और कांच की ऐशट्रे में बुझा दिया। फिर वे खड़े हो गए।
‘तुम्हें जो जानकारी चाहिए थी, वो मिल गई। अब तुम जा सकते हो। कलकत्ता में सिर्फ एक ही पेरिगल रिपीटर है। मैं उसे लेने जा रहा हूँ, तुम नहीं... प्यारेलाल!’
वही आदमी वापस आया, जिसने आगमन पर हमारा स्वागत किया था। जब हम कमरे से बाहर निकल रहे थे, तभी उसकी मधुर, मखमली आवाज़ एक बार फिर सुनाई दी: 'मेरे पास एक अलग तरह का रिपीटर है, श्री मिटर। इसकी आवाज़ घड़ी की तरह सुरीली नहीं है।'
‘वह आदमी इस कहानी का नायक प्रतीत होता है!’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की। हम अलीपुर पार्क से वापस आ रहे थे। कार की खिड़कियाँ बंद थीं, क्योंकि फिर से बारिश शुरू हो गई थी। जजेस कोर्ट रोड पहुँचते ही बारिश शुरू हो गई थी। फेलुदा ने कोई जवाब नहीं दिया। वह खिड़की से बाहर घूर रहा था। लालमोहन बाबू ज्यादा देर चुप नहीं रह पाते थे। उन्होंने फिर बोलना शुरू किया, 'शायद मुझे उसे हीरो के बजाय विलेन कहना चाहिए। लेकिन आपने अक्सर मुझसे कहा है कि अपराध की जांच में कोई भी शक से परे नहीं होता। कोई भी विलेन हो सकता है। इसलिए मैंने वह शब्द इस्तेमाल नहीं किया। वैसे, मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा कि मुझे शक क्यों करना चाहिए। एक कब्र खोदी गई है—लेकिन क्या यह कोई आपराधिक कृत्य है?'
फिर भी फेलुदा चुप रहे। लालमोहन बाबू थोड़े अधीर हो गए। ‘क्या बात है, फेलु बाबू? क्या आप हार मान रहे हैं? अगर आप ऐसा करते हैं, तो हमारा क्या होगा?

पहले तो उस आदमी का व्यवहार ऐसा था... ऐसा... कि मेरे हाथ-पैर कांप गए! और फिर वो सारी घड़ियाँ बज रही थीं। अब आप एक शब्द भी नहीं बोल रहे, मौसम खराब है, सड़कों पर गड्ढे हैं...!’
फेलुदा ने आखिरकार अपना मुंह खोला। 'आप बिल्कुल गलत हैं, श्री गांगुली। मैंने हार नहीं मानी है। अगर आपको किसी जटिल भूलभुलैया से निकलने का रास्ता मिल जाए, तो क्या आप हार मान लेंगे?'
‘क्या आपको कोई रास्ता मिल गया है?’
'हां, लेकिन मुझे अब भी नहीं पता कि दूसरे छोर पर क्या है। कुछ भी सरल और सीधा नहीं है। हमें आगे बढ़ना होगा और अंत तक पहुंचने से पहले सभी उतार-चढ़ावों का सामना करना होगा।'
घर पहुँचने के बाद भी हल्की-हल्की बारिश होती रही। लालमोहन बाबू ने अगली सुबह जल्दी लौटने का वादा करके विदा ली। उन्होंने कहा, ‘फेलू बाबू, मुझे नहीं लगता कि आप मेरी मदद के बिना काम चला सकते हैं। सोचिए, बसों में सफर करने में कितना समय बर्बाद होगा!’
दिन में पहले, जब हम दोपहर का भोजन कर रहे थे, मैंने देखा कि फेलुदा अपनी नोटबुक में कुछ लिख रहा था। रात के खाने के बाद मैं उसके कमरे में गया और पता चला कि वह क्या लिख रहा था। मुझे उससे बात करनी ही थी, क्योंकि मैं उसके बारे में काफी चिंतित था। महादेव चौधरी को देखने और सुनने के बाद, मेरी चिंता जायज़ थी। जब भी मुझे उसका चेहरा याद आता, मेरा दिल ज़ोर से धड़कता। लालमोहन बाबू उसे चाहे हीरो कहें या विलेन, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। मेरे लिए, वह एक भयानक इंसान था। उसका बाहरी रूप भले ही मखमली जैसा चिकना हो, लेकिन अंदर से वह रेगिस्तान में उगने वाले कैक्टस की झाड़ी की तरह खुरदुरा और चुभने वाला लगता था।
लेकिन फेलुदा बिल्कुल भी चिंतित नहीं दिखे। वे अपनी नोटबुक में बने एक चित्र को ध्यान से देख रहे थे। जब मैं उनके कमरे में दाखिल हुआ, तो उन्होंने वह चित्र मुझे देते हुए कहा, 'इस पेड़ और इसकी शाखाओं को देखो!' यह कुछ इस तरह दिखता था:

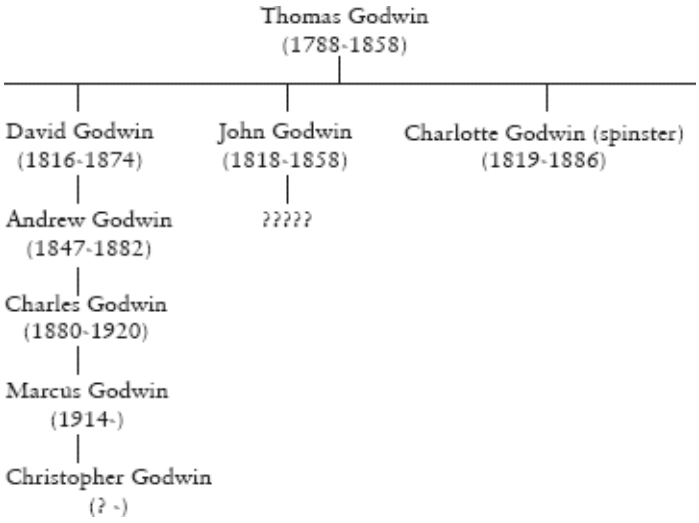

'क्या दाहिनी ओर का हिस्सा कुछ खाली-खाली नहीं दिख रहा?' फेलुदा ने पूछा। ‘लेकिन ऐसा होना तो तय था। शार्लेट ने शादी तो नहीं की थी, है ना?’
नहीं, मैं शार्लेट के बारे में नहीं सोच रहा हूँ। उसका मामला तो सीधा-सादा है। समस्या जॉन नाम के आदमी के साथ है। वह खास शाखा नज़र से छिपी हुई है।
लेकिन मैंने दूसरी तरफ से कुछ देखा है। अगर मैं उसे ठीक से देख सकूँ, तो शायद इस मामले पर कुछ रोशनी पड़ सके। शायद कल सुबह।
फेलुदा फिर से पहेलियों में बात कर रहा था। यह उसकी आदत थी। मुझे पता था कि अगर मैं उससे कुछ पूछता भी तो वह कुछ नहीं समझाता।
जब हम बातें कर रहे थे तभी बारिश रुक गई। अचानक, मुझे आश्चर्यचकित करते हुए, फेलुदा उछलकर खड़ा हो गया।
मैंने पूछा, ‘क्या तुम बाहर जा रहे हो?’
'जी श्रीमान।'
'क्या जहां?'
मुझे ड्यूटी पर रहना होगा।
'कर्तव्य?'
'हां, मैं आज रात पहरा दे रहा हूं।'
अचानक मुझे एहसास हुआ कि फेलुदा ने अपने शिकार के जूते निकाल लिए हैं। जब भी मैं उन जूतों को देखता हूँ, मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं क्योंकि वे फेलुदा के पिछले सभी कारनामों से जुड़े हुए हैं। आज रात, अगर वह कब्रिस्तान जाने की योजना बना रहा था, तो वे जूते सबसे उपयुक्त जूते साबित होंगे।

‘क्या तुम… क्या तुम… कब्रिस्तान जा रहे हो?’ मैंने पूछा। मेरी आवाज थोड़ी लड़खड़ा गई थी।
‘हाँ, और कहाँ?’
क्या आप अकेले जा रहे हैं?
‘चिंता मत करो। मैं एक साथी ले जाऊंगा। मेरा रिपीटर।’
फेलुदा ने अपनी कोल्ट.32 पिस्तौल निकाली और उसे अपनी जेब में रख लिया। मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं आया। 'तुम्हें क्या लगता है वहाँ क्या होगा? वह कब्र तो पहले ही खोदी जा चुकी है। अगर किसी को घड़ी मिली भी होगी, तो वे उसे ले गए होंगे।'
नहीं। जिसने भी कब्र खोदने की कोशिश की, खोपड़ी देखते ही भाग गया। वह इतना डर गया था कि आगे काम नहीं कर सका। वरना, वह अपना फावड़ा पीछे नहीं छोड़ता। वह या तो उसे वापस ले जाता, या कहीं छिपा देता।
मुझे ऐसा विचार कभी आया ही नहीं था।

दस

पता नहीं फेलुदा कब घर लौटा। अगली सुबह जब मैं उठा और नीचे आया तो सवा सात बज रहे थे। फेलुदा का दरवाजा बंद था। शायद वो अभी भी सो रहा था। आखिर, वो लगातार दो रातों से सोया ही नहीं था।
उसने सुबह नौ बजे अपना दरवाजा खोला। वह नहा चुका था और दाढ़ी बना चुका था।
उसके चेहरे पर थकान का नामोनिशान भी नहीं था। जब उसने मुझे देखा, तो उसने अंगूठा हिलाकर इशारा किया कि रात भर कब्रिस्तान में कुछ भी नहीं हुआ था।
लालमोहन बाबू साढ़े नौ बजे पहुंचे।
‘देखो, तुम्हें पसंद आता है या नहीं!’ उसने कहा।
वादे के मुताबिक, वह अपने दादाजी की घड़ी ले आया था। यह चांदी की घड़ी थी, जो चांदी की चेन से जुड़ी हुई थी।
‘यह तो बहुत सुंदर है!’ फेलुदा ने लालमोहन बाबू से घड़ी लेते हुए कहा। ‘एक समय था जब कूके-केल्वे घड़ी निर्माता के रूप में काफी प्रसिद्ध थे।’ ‘लेकिन आप यही तो नहीं ढूंढ रहे हैं, है ना?’ लालमोहन बाबू ने थोड़ी खेद भरी आवाज में पूछा। ‘यह घड़ी कलकत्ता में बनी है।’
'हां, लेकिन क्या आप सचमुच इसे मुझे देना चाहते हैं?'
'मेरी शुभकामनाओं और बधाईयों के साथ। मैं आपसे साढ़े तीन साल बड़ा हूँ, इसलिए आपको मेरी शुभकामनाओं पर आपत्ति नहीं होनी चाहिए!'
'धन्यवाद।'
फेलुदा ने घड़ी को अपने रूमाल में लपेटकर अपनी जेब में रख लिया। फिर वह टेलीफोन की ओर बढ़ा, लेकिन इससे पहले कि वह टेलीफोन तक पहुँच पाता, किसी ने हमारे दरवाजे की कुंडी खटखटा दी।
मैंने दरवाजा खोला तो देखा कि गिरिन बिस्वास बाहर खड़े हैं। उन्होंने एक दिन पहले इशारा तो दिया था, लेकिन मुझे सच में उम्मीद नहीं थी कि वे इतनी जल्दी आ जाएँगे। वे काम पर जाने के लिए तैयार थे, सूट पहने हुए थे और हाथ में ब्रीफकेस था।

उन्होंने कहा, 'कृपया मेरे इस तरह अचानक आने पर बुरा न मानें। मैंने आपका नंबर डायल करने की कोशिश की, लेकिन कॉल नहीं लग रहा था। मैंने कम से कम दस मिनट तक डायल किया होगा!' श्री बिस्वास थोड़े घबराए हुए और परेशान लग रहे थे।
नहीं, मुझे क्या आपत्ति है? अगर टेलीफोन चल रहा हो तो यह किसी चमत्कार से कम नहीं है, है ना? आप यहाँ किसलिए आए हैं?
श्री बिस्वास एक कुर्सी पर बैठ गए। लालमोहन बाबू और मैं दीवान पर वापस चले गए, और फेलुदा सोफे पर बैठ गया।
श्री बिस्वास ने अपने गीले माथे को रुमाल से पोंछते हुए कहा, 'मैं तय नहीं कर पा रहा था कि किससे मदद मांगू। सच कहूं तो मुझे पुलिस पर ज्यादा भरोसा नहीं है। जब से आप हमसे मिलने आए हैं...'
'समस्या क्या है?'
श्री बिस्वास ने अपना गला साफ किया। फिर उन्होंने कहा, 'मेरे भाई को पेड़ से चोट नहीं लगी थी।'
अगले कुछ पल खामोशी में बीत गए। आखिरकार फेलुदा ने खामोशी तोड़ते हुए कहा, 'नहीं? आखिर हुआ क्या?'
'उस पर जानबूझकर हमला किया गया था। उसके सिर पर किया गया वह प्रहार उसे जान से मारने का प्रयास था।'
शांत भाव से, फेलुदा ने चारमीनार का अपना पैकेट निकाला और श्री बिस्वास को दिया, जिन्होंने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया। फिर फेलुदा ने अपने लिए एक पैकेट निकाला और कहा, 'लेकिन आपके भाई को तो पूरा यकीन है कि यह एक पेड़ था।' 'ऐसा इसलिए है क्योंकि वह अपने बेटे का नाम रखने की बजाय मरना पसंद करेगा।' ‘उसका अपना बेटा?’
‘प्रशांत। उनका बड़ा बेटा। छोटा बेटा इंग्लैंड में है।’
‘प्रशांत क्या करता है?’
‘यह बताना ज़्यादा आसान होगा कि वह क्या नहीं करता। वह हर तरह की गैरकानूनी गतिविधियों में शामिल है। पिछले तीन-चार सालों में वह बदल गया है। मेरी भाभी—यानी प्रशांत की माँ—का 1970 में निधन हो गया। करीब एक महीने पहले, मेरे भाई प्रशांत के व्यवहार से तंग आ गए और उसे अपनी वसीयत से बेदखल करने की धमकी दी। उन्होंने कहा कि वह अपनी सारी संपत्ति अपने दूसरे बेटे सुशांत को दे देंगे।’

‘मैं समझ गया। प्रशांत आपके ही घर में रहता है, है ना?’
‘वह रह सकता था—निश्चित रूप से उसे हमारे साथ रहने का अधिकार है, और उसके लिए एक कमरा भी है। लेकिन वह नहीं रहता। यह बताना मुश्किल है कि वह कहाँ रहता है। वह एक गिरोह का हिस्सा है। सभी नीच अपराधी हैं। मुझे लगता है कि अगर वह भयानक तूफान न आया होता तो वह उस दिन अपने पिता की हत्या कर देता।’ ‘इस सब के बारे में आपके भाई का क्या कहना है?’
‘वह यही कहता है कि यह पेड़ की वजह से हुआ। वह यह मानना ही नहीं चाहता कि उसके बेटे की वजह से उसे चोट लगी होगी। लेकिन मुझे यह कहना ही पड़ेगा। प्रशांत मेरा भतीजा हो सकता है, लेकिन अगर आप उसे रोकने के लिए कुछ नहीं करेंगे, तो वह फिर से हत्या करने की कोशिश करेगा।’
'अगर नरेन बिस्वास नई वसीयत बनाते हैं, तो उनके बेटे को उनकी हत्या करके कुछ भी हासिल नहीं होगा, है ना?'
नहीं, लेकिन आर्थिक लाभ ही एकमात्र मकसद नहीं हो सकता। हो सकता है वह गुस्से में आकर अपना आपा खो दे। लोग अक्सर बदला लेने और हिसाब बराबर करने के लिए हत्याएं करते हैं, है ना? इसके अलावा, मेरा भाई अपनी वसीयत नहीं बदलेगा। वह ठीक से सोच नहीं सकता। श्री मिटर, आपको अंदाजा भी नहीं है कि माता-पिता का प्यार कितना गहरा हो सकता है।
मैं इतने समय से घर पर ही था, लेकिन आज मुझे कुछ दिनों के लिए शहर से बाहर जाना पड़ रहा है। यह मेरे व्यवसाय के सिलसिले में है। इसलिए मैं आपके पास आया हूँ। अब अगर आप कृपा करके...
‘श्री बिस्वास,’ फेलुदा ने अपनी सिगरेट की राख ऐशट्रे में झाड़ते हुए कहा, ‘मुझे यह बताते हुए बहुत दुख हो रहा है कि मैं पहले से ही एक दूसरे मामले में व्यस्त हूँ। आपके भाई को किसी न किसी रूप में सुरक्षा मिलनी चाहिए, लेकिन अगर वह यह ज़िद करता रहा कि उस पर पेड़ गिरा था, तो दुनिया की कोई भी पुलिस उसकी मदद नहीं कर सकती।’
गिरिन बिस्वास चले गए। उनके आने से पहले हम सब काफी खुश थे क्योंकि कई दिनों के बाद धूप खिली थी। गिरिन बिस्वास ने हमारा मूड खराब कर दिया। 'कितना अजीब है!' फेलूदा ने उसके जाने के बाद टिप्पणी की, और अंत में उसने वह फोन कॉल किया जो वह श्री बिस्वास के आने पर करने वाला था।
‘Hello, Suhrid? This is Felu.’
सुहरिद सेनगुप्ता और फेलुदा कॉलेज में सहपाठी थे।

सुनिए। एक बार मैंने आपके घर में प्रेसिडेंसी कॉलेज पत्रिका की एक प्रति देखी थी। यह कॉलेज की शताब्दी के उपलक्ष्य में प्रकाशित एक विशेष अंक था।
मुझे लगता है कि यह आपके भाई की थी। संभवतः 1955 में प्रकाशित हुई थी। क्या आपको लगता है कि वह अभी भी उनके पास होगी? ... अच्छा। क्या आप काम पर जाने से पहले इसे अपने नौकर के पास छोड़ सकते हैं? मैं लगभग साढ़े दस बजे आकर इसे ले आऊँगा। ठीक है? बहुत-बहुत धन्यवाद।
हमने चाय खत्म की और निकल पड़े। फेलुदा को तीन जगहों पर जाना था—नरें बिस्वास, बॉर्न एंड शेफर्ड और पार्क स्ट्रीट कब्रिस्तान। मुझे नारें बिस्वास का नाम सुनकर हैरानी हुई। फेलुदा ने समझाया, ‘क्योंकि मैं उनके भाई की कही बात को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता। इसलिए मुझे श्री बिस्वास से एक बार फिर मिलना चाहिए। आप दोनों को बाद में कब्रिस्तान जाने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि मैं आप दोनों को आज रात के जागरण में साथ आने के लिए कहूँगा। आपको वहाँ आधी रात के सन्नाटे में माहौल देखना और महसूस करना चाहिए। वरना आप एक असाधारण अनुभव से वंचित रह जाएँगे।’
‘जय संतोषी मां!’ लालमोहन बाबू ने कहा। थोड़ी देर बाद उन्होंने आगे कहा, ‘बताइए, क्या ‘सन ऑफ संतोषी’ को ‘सन ऑफ टार्ज़न’ की तरह नहीं बनाया जा सकता?’ इसका मतलब यही हो सकता था कि वे अभी भी पुलक घोषाल के प्रस्ताव के बारे में सोच रहे थे।
नरेन बिस्वास की शारीरिक स्थिति में काफी सुधार हुआ था। उन्होंने बताया कि उन्हें अब दर्द नहीं हो रहा है और कुछ दिनों में उनकी पट्टी हटा दी जाएगी। फिर भी, वे खुश नहीं दिख रहे थे। वास्तव में, वे काफी उदास और निराश लग रहे थे।
फेलुदा ने कहा, 'मैं आपसे कुछ सवाल पूछना चाहता हूँ। मुझे ज्यादा समय नहीं लगेगा।' श्री बिस्वास ने उन पर संदेह भरी नजर डाली और पूछा, 'अगर आपको बुरा न लगे तो क्या मैं पूछ सकता हूँ कि क्या आप कोई जांच कर रहे हैं? मुझे पता है कि आप एक जासूस हैं, तो...'
'हां, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। अगर आप सच को छिपाने की कोशिश नहीं करेंगे तो इससे मुझे बहुत मदद मिलेगी।'
श्री बिस्वास ने अपनी आँखें बंद कर लीं, मानो वे किसी आंतरिक पीड़ा से जूझने की कोशिश कर रहे हों। शायद उन्हें यह आभास हो गया था कि फेलुदा के सवालों का जवाब देना उनके लिए आसान नहीं होगा।

फेलुदा ने बात शुरू करते हुए कहा, 'जब आपको अस्पताल में होश आया, तो आपने वसीयत का जिक्र किया था।'
श्री बिस्वास ने अपनी आंखें नहीं खोलीं।
'आपने ऐसा क्यों किया?'
इस बार नरेन बिस्वास ने अपनी आँखें खोलीं। बोलने से पहले उनके होंठ थोड़े काँपे और हिले। 'क्या मैं आपके प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाध्य हूँ?' 'नही बिल्कुल नही।'
‘उस स्थिति में, मैं ऐसा नहीं करूंगा।’
फेलुदा चुप रहा। हम भी चुप रहे। श्री बिस्वास ने नज़रें फेर लीं। कुछ क्षण बाद फेलुदा ने कहा, 'अच्छा, मुझे आपसे कुछ और पूछना है।'
मुझे चुप रहने का अधिकार है।
'जी हां, आपको निश्चित रूप से यह अधिकार है।'
'कुंआ?'
‘विक्टोरिया कौन है?’
‘विक्टोरिया?’
‘अह... मुझे यहाँ एक बात स्वीकार करनी होगी। मैंने आपके बटुए की सामग्री देखी। उसमें एक कागज़ का टुकड़ा था...’
‘आह... हा हा हा!’ हमें आश्चर्यचकित करते हुए, श्री बिस्वास अचानक ज़ोर से हंस पड़े। ‘यह तो बहुत पुरानी कहानी है। मैं तो लगभग इसे भूल ही गया था। देखिए, जब मैं काम कर रहा था, तब मेरे एक सहकर्मी एंग्लो-इंडियन थे। उनका नाम नॉर्टन था, जिमी नॉर्टन। उन्होंने एक बार मुझे बताया कि उनके घर में कई पत्र हैं, जो सभी उनकी दादी ने लिखे थे। मैंने उन्हें कभी नहीं देखा। जाहिर है, उनकी दादी विद्रोह के समय बहरामपुर में थीं—उनकी उम्र लगभग सात साल थी। पत्र बहुत बाद में लिखे गए थे, लेकिन उनमें उन्होंने अपने बचपन के अनुभवों का जिक्र किया था। चूंकि आजकल ऐसे विषयों में लोगों की रुचि है और किताबें लिखी जा रही हैं, इसलिए मैंने नॉर्टन से कहा था कि मैं उन्हें कुछ विदेशी प्रकाशकों के पते दे दूंगा। नॉर्टन को खुद इन सब चीजों के बारे में कुछ नहीं पता था। रुकिए, मुझे वह कागज़ का टुकड़ा ढूंढने दीजिए।’
श्री बिस्वास ने मेज की ऊपरी दराज खोलने के लिए हाथ बढ़ाया और अपना बटुआ निकाला। उसमें उन्हें कागज की पर्ची मिली।

‘लो, देखो! बॉर्न एंड शेफर्ड। मैं जिमी से कहना चाहता था कि वह बॉर्न एंड शेफर्ड से पता करे कि क्या उनके पास उसकी दादी की कोई पुरानी तस्वीरें हैं। और बाकी विभिन्न प्रकाशकों के संक्षिप्त नाम हैं। मुझे जिमी नॉर्टन को यह कागज़ देने का मौका ही नहीं मिला। उसे पीलिया हो गया और वह छह सप्ताह तक बीमार रहा। उसके बाद उसने अपनी नौकरी छोड़ दी।’
फेलुदा उठ खड़ा हुआ। 'धन्यवाद, श्रीमान बिस्वास, बस इतना ही। हालांकि, एक बात है जो मुझे बेहद अफसोसजनक लगती है।'
'यह क्या है?'
‘भविष्य में, यदि आप किसी पुस्तकालय में काम करते हैं, तो कृपया किसी पुरानी किताब या पत्रिका से कुछ भी फाड़ें या काटें नहीं। बस यही मेरा अनुरोध है। अलविदा।’
हम कमरे से बाहर निकल गए। श्री बिस्वास किसी से भी आंखें मिलाने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे।
नरेन बिस्वास से हम बेनी नंदन स्ट्रीट में फेलुदा के मित्र सुहरिद सेनगुप्ता के घर गए। उनके नौकर ने फेलुदा को एक मोटी किताब सौंपी। यह प्रेसिडेंसी कॉलेज पत्रिका का शताब्दी विशेष अंक था। बॉर्न एंड शेफर्ड जाते समय फेलुदा ने पत्रिका को बहुत ध्यान से पढ़ा और पता नहीं क्यों, उन्होंने कम से कम तीन बार कहा, 'ज़रा सोचो!'
फेलूदा को बॉर्न एंड शेफर्ड में अपना काम निपटाने में सिर्फ दस मिनट लगे। वह एक बड़ा लाल लिफाफा लेकर बाहर आया। जाहिर है, उसमें एक बड़ी तस्वीर थी, या शायद एक से अधिक तस्वीरें थीं।
‘यह किसकी तस्वीर है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
‘विद्रोह,’ फेलुदा ने जवाब दिया। लालमोहन बाबू और मैंने एक-दूसरे की ओर देखा। फेलुदा के जवाब का स्पष्ट अर्थ था कि वह तस्वीर—या तस्वीरें—आम जनता के लिए नहीं थीं।
फेलुदा ने कहा, 'चलो कब्रिस्तान चलते हैं, लेकिन तुम दोनों को मेरे साथ अंदर जाने की जरूरत नहीं है। मैं बस यह देख लूंगा कि सब ठीक है या नहीं।' लालमोहन बाबू के ड्राइवर ने कार को कब्रिस्तान के सामने खड़ा कर दिया। जैसे ही फेलुदा कब्रिस्तान के गेट से गुजरा, मैंने चौकीदार बरमदेव को उसे एक शानदार सलाम करते देखा।

कुछ ही मिनटों में फेलुदा वापस आया और कार में बैठ गया। उसने कहा, 'ठीक है।' तब तय हुआ कि हम उसी रात साढ़े दस बजे कब्रिस्तान वापस जाएंगे।
मुझे अंदर से यह आभास हो रहा था कि हम अपने नाटक के अंतिम चरण के बहुत करीब हैं।

ग्यारह

मैं और फेलुदा रहस्य सुलझाने के लिए सिक्किम, लखनऊ, राजस्थान, शिमला, वाराणसी जैसे कई स्थानों की यात्रा कर चुके थे और हर जगह हमें ढेरों रोमांच का अनुभव हुआ था। लेकिन मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि इस बार कलकत्ता से बाहर कदम रखे बिना ही हम इतने रोंगटे खड़े कर देने वाले अनुभव में फंस जाएंगे।
लालमोहन बाबू ने अंतिम दिन को 'काला दिन' कहा, लेकिन बाद में इसे बदलकर 'काला रात' कर दिया। जब उन्होंने मुझसे पूछा तो मुझे उनसे सहमत होना पड़ा कि हम पहले कभी ऐसी मुश्किल में नहीं पड़े थे।
लालमोहन बाबू हमेशा समय के पाबंद थे, लेकिन जब से उन्होंने कार खरीदी थी, तब से वे समय की पाबंदी को लेकर और भी सख्त हो गए थे। उस रात जब वे हमारे घर लौटे, तो उन्होंने दरवाज़े पर खटखटाहट करने के बजाय तेज़ी से दस्तक दी। फेलूदा और मैंने खाना खा लिया था और तैयार थे। मैंने अपने शिकार के जूते पहने हुए थे। मेरे जूते तो मैंने पिछले साल ही खरीदे थे; फेलूदा के जूते ग्यारह साल पुराने थे। शायद वे अच्छी हालत में नहीं थे क्योंकि मैंने उन्हें एक जूते के तले को ठीक करते और उसकी मरम्मत करते देखा। अब वे थोड़ा लंगड़ा रहे थे। शायद उन्हें किसी मोची के पास जाना चाहिए था। अगर आने वाली रात खतरों से भरी हो, तो लंगड़ाकर चलना ठीक नहीं होता, है ना?
दरवाजे पर दस्तक सुनते ही हम उठ खड़े हुए। फेलुदा के कंधे पर भूरे रंग का चमड़े का थैला था। बॉर्न एंड शेफर्ड के लाल लिफाफे का एक हिस्सा उसमें से झाँक रहा था। उसने हमें गहरे रंग के कपड़े पहनने का निर्देश दिया था। लालमोहन बाबू ने काला सूट पहना हुआ था।
वह हमारे बैठक कक्ष में दाखिल हुआ और बोला, ‘तुम्हें यकीन नहीं होगा कि आधुनिक चिकित्सा क्या-क्या कर सकती है। मेरे डॉक्टर ने मुझे एक ऐसी गोली के बारे में बताया जो नसों को आराम देती है—उसके नाम में दो “x” हैं! उनके कहने पर मैंने रात के खाने के बाद एक गोली ली, और अभी से मैं ऊर्जा से भर गया हूँ और दुनिया का सामना करने के लिए तैयार हूँ। प्यारे तपेश, चाहे कुछ

भी हो जाए, हम अंत तक लड़ेंगे, है ना?’ उसे नहीं पता था कि उसे किससे लड़ना है, और न ही मुझे।
फेलुदा ने तय किया कि हमारी कार कब्रिस्तान के मुख्य द्वार से कुछ दूरी पर खड़ी की जानी चाहिए। उन्होंने कहा, 'अगर इसका रंग आपके काले कपड़ों से मेल खाता, तो मुझे कोई चिंता नहीं होती।' सेंट जेवियर्स से आगे रॉडन स्ट्रीट चौराहे पर पहुँचने से पहले ही ड्राइवर हरि को कार रोकने के लिए कहा गया। फेलुदा ने कहा, 'आप दोनों आगे जाइए, मुझे हरि को कुछ निर्देश देने हैं।' हमने गाड़ी वहीं छोड़ दी और पैदल चलने लगे। पता नहीं फेलुदा के क्या निर्देश थे, लेकिन हरि के हावभाव से साफ था कि वह हमारी गतिविधियों में बेहद दिलचस्पी ले रहा था और उनमें शामिल होने के लिए पूरी तरह से तैयार था। कुछ ही मिनटों में फेलुदा वापस आ गया। उसने लालमोहन बाबू से कहा, ‘आपको इतना अच्छा ड्राइवर मिल गया, आप बहुत भाग्यशाली हैं। वह बेहद भरोसेमंद लगता है। अब जब मैंने उसे कुछ जिम्मेदारियां सौंप दी हैं, तो मुझे काफी राहत मिली है।’
‘क्या जिम्मेदारियां?’
'अगर सब कुछ ठीक रहा तो कुछ भी नहीं। अगर ऐसा नहीं हुआ तो बहुत कुछ हरि पर निर्भर करेगा।'
फेलुदा ने इससे ज्यादा कुछ भी कहने से इनकार कर दिया।
लोहे का बड़ा गेट खुला हुआ था। ऐसा क्यों? जब मैंने फेलूदा से पूछा, तो उसने फुसफुसाते हुए जवाब दिया, 'आम तौर पर रात के इस समय यह बंद रहता है। लेकिन आज रात एक खास इंतज़ाम है। आप देख रहे हैं ना, कंपाउंड की दीवार के किनारे पर कांच के टुकड़े लगे हुए हैं। उस पर चढ़ना खतरनाक होता। लेकिन बरमदेव कहाँ है?'
चौकीदार के कमरे में एक बत्ती टिमटिमा रही थी, लेकिन ऐसा नहीं लग रहा था कि वहाँ कोई है। हमने कमरे के आसपास तलाशी ली, लेकिन कोई नहीं मिला। पार्क स्ट्रीट से आ रही हल्की रोशनी में, मुझे फेलुदा के चेहरे पर शिकन दिखाई दी। इसका मतलब था कि चौकीदार को अपने कमरे में होना चाहिए था। फेलुदा ने उससे यही समझौता किया था।
हमने और समय बर्बाद न करने का फैसला किया और आगे बढ़ गए, लेकिन इस बार बीच वाले रास्ते से नहीं। फेलुदा ने कुछ कदम चले, फिर बाईं ओर मुड़ गया। हम कब्रों के बीच से आगे बढ़ने लगे। तेज़ हवा चल रही थी। आसमान में बादल छलक

रहे थे। उनके बीच से एक हल्का सा आधा चाँद पल भर के लिए झाँक रहा था। जब वह दिखाई देता, तो संगमरमर की पट्टियों पर लिखे नाम कुछ पलों के लिए ही नज़र आते, फिर गायब हो जाते। जब हम आखिरकार एक बड़ी कब्र के पीछे पहुँचे, तो चाँद फिर से निकल आया, और मैंने नाम देखा, सैमुअल कुथबर्ट थॉर्नहिल। यह कब्र एक लंबी, नुकीली मीनार जैसी नहीं थी। यह एक चबूतरे जैसी थी, जो खंभों से घिरी हुई थी और उस पर एक गुंबद बना हुआ था। इसके पीछे तीन लोग आसानी से छिप सकते थे। वहाँ पूरी तरह से अँधेरा था—मुख्य सड़क की रोशनी उस जगह तक नहीं पहुँच रही थी। हालाँकि, अगर मैं अपनी दाईं ओर देखता, तो मुझे बाकी कब्रों के बीच से गेट का एक हिस्सा दिखाई देता।
फेलुदा ने बोलना शुरू किया, शायद इसलिए क्योंकि उसे पूरा यकीन था कि हमारे अलावा कब्रिस्तान में कोई नहीं है। लेकिन उसने अपनी आवाज़ धीमी रखी। 'क्या आप इसे थोड़ा छिड़क सकते हैं?' उसने लालमोहन बाबू से पूछा और उन्हें ढक्कन लगी एक बोतल दी। उसने वह बोतल अपने कंधे के थैले से निकाली थी।
‘छिड़काव?’
'हां, यह कार्बोलिक एसिड है। इससे सांप दूर रहेंगे।'
लालमोहन बाबू ने जैसा कहा गया वैसा ही किया और एक मिनट बाद लौट आए। उन्होंने कहा, 'वाह, राहत की बात है! यहां तक कि घबराहट कम करने वाली गोली भी सांपों के मेरे डर को दूर नहीं कर पाई।'
‘भूतों के प्रति तुम्हारा डर कहाँ गया? क्या वह खत्म हो गया है?’
बिल्कुल।
पास ही मेंढक टर्रा रहे थे। झींगुर चहचहा रहे थे। उनमें से एक ने थॉर्नहिल की कब्र के ठीक बगल में अपना घर बना लिया था। कहीं-कहीं बादल अभी भी इधर-उधर आ-जा रहे थे। शायद कुछ बादल दूसरों से ज़्यादा घने थे, इसीलिए हमारे चारों ओर अंधेरा धीरे-धीरे गहराता जा रहा था। नतीजतन, कब्रों के पत्थर एक काले पिंड में विलीन होते जा रहे थे। फिर, जैसे ही चंद्रमा गायब हुआ, वे एक-दूसरे से अलग हो गए और धुंधले रूप से फिर से दिखाई देने लगे।
फेलुदा ने च्युइंग गम का एक पैकेट निकाला और हमें देने के बाद थोड़ा सा खुद भी च्युइंग गम मुंह में डाल लिया।
वाहनों की आवाज़ धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। मैंने सेकंड गिने और महसूस किया कि लगभग आधे मिनट से मुझे मेंढकों, झींगुरों और हवा के अचानक झोंकों से पत्तों की सरसराहट के अलावा कुछ भी सुनाई नहीं दिया था।

‘आधी रात!’ लालमोहन बाबू ने फुसफुसाते हुए कहा।
आधी रात क्यों? अभी कुछ ही मिनट पहले, मैंने चांदनी में अपनी घड़ी देखी थी।
तब ग्यारह बजकर पच्चीस मिनट हुए थे।
मुझे पूछना ही पड़ा, 'जब आधी रात नहीं हुई है तो आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?' ‘ओह, मैंने ऐसा सिर्फ इसलिए कहा क्योंकि... क्योंकि आधी रात में एक खास... कुछ तो होता है, है ना?’
‘क्या चीज?’
‘कब्रिस्तान में आधी रात, समझे? यह तो खास है। मैंने इसे कहीं पढ़ा था।’ ‘तुम्हारा मतलब है कि तभी भूत-प्रेत निकलते हैं?’
लालमोहन बाबू ने जवाब देने के बजाय एक अजीब सी आवाज़ निकाली जो फुफकार में बदल गई। मेरे बगल से आती एक हल्की सी आवाज़ से मुझे पता चला कि फेलुदा ने सिगरेट जलाई थी, लेकिन लौ को अपने हाथ से छिपा रखा था। फिर उन्होंने सिगरेट जलाई, कश लिया और बिना हाथ हटाए थोड़ा धुआँ बाहर निकाला।
बादल घने होते जा रहे थे। वाहनों की आवाज़ पूरी तरह बंद हो गई थी। हवा भी थम सी गई थी। हर शोर, हर आवाज़ गायब हो गई थी। झींगुर और मेंढक सो गए थे। मेरा शरीर ठंडा पड़ गया था, गला सूख रहा था। मैंने होंठ चाटने की कोशिश की, लेकिन वे सूखे ही रहे।
एक उल्लू ने ज़ोर से हू हू किया। लालमोहन बाबू ने तुरंत अपने कान हाथों से ढक लिए। धीरे-धीरे फेलुदा उठ खड़ा हुआ।
पास ही कहीं एक कार रुकी थी। यह ठीक-ठीक बताना असंभव था कि वह कहाँ खड़ी थी, लेकिन मेरा अंतर्ज्ञान कहता था कि आवाज़ पार्क स्ट्रीट से नहीं, बल्कि पश्चिम की ओर रॉडन स्ट्रीट से आई थी। रॉडन स्ट्रीट की ओर कोई गेट नहीं था। वहाँ केवल कंपाउंड की दीवार थी, जिसके किनारे पर टूटे हुए कांच के टुकड़े लगे हुए थे। मैंने कार का दरवाज़ा ज़ोर से बंद होने की आवाज़ सुनी।
हमारी निगाहें गेट पर टिकी रहीं। लालमोहन बाबू बोलने के लिए मुंह खोलने ही वाले थे कि फेलूदा ने हाथ बढ़ाकर उनके कंधे को हल्के से दबाकर उन्हें रोक दिया। गेट से कोई अंदर नहीं आया।
शायद आधी रात को अचानक कार के आने का कोई वाजिब कारण हो। उस इलाके में इतने सारे घर और रिहायशी अपार्टमेंट थे। शायद कोई देर रात के शो के बाद घर लौट आया हो। मेरी दिली इच्छा थी कि ऐसा ही हो। तब हमें कार की बिल्कुल भी चिंता करने की ज़रूरत नहीं होगी।

लेकिन फेलुदा सीधा खड़ा था, उसकी तनावग्रस्त पीठ दीवार से सटी हुई थी। उसके सामने एक खंभा था। चारों ओर घना अंधेरा था। हमें कोई नहीं देख सकता था। लेकिन हम उन्हें कैसे देख पाते? अगर वे यहाँ होते तो?
एक मिनट बाद, मुझे एहसास हुआ कि कुछ भी देखने की कोई ज़रूरत नहीं थी। हमें अपनी आँखों का इस्तेमाल करने की ज़रूरत नहीं थी। हमारे कान ही हमें बता रहे थे कि क्या हो रहा है।
धड़ाम... धड़ाम... धड़ाम... धड़ाम!
कोई ज़मीन खोद रहा था। आवाज़ कुछ देर तक आती रही। हम सब साँस रोककर सुनते रहे।
धड़ाम... धड़ाम...!
यह रुक गया। अब हमें एक रोशनी दिखाई दी। दूर स्थित दो स्तंभों के बीच से एक धुंधली रोशनी गुज़री और घास पर पड़ी। वह स्थिर नहीं थी, बल्कि हिल रही थी, लहरा रही थी, घास पर खेल रही थी। यह स्पष्ट रूप से किसी टॉर्च से आ रही थी।
अचानक, वह गायब हो गया।
‘वे दीवार फांदकर चढ़ गए!’ फेलुदा ने दांत भींचते हुए कहा। ‘मैं भी उनके पीछे जाऊंगा!’ अब वह कार के दोबारा स्टार्ट होने का इंतजार कर रहा था।
पूरा एक मिनट बीत गया। फिर एक और मिनट। और फिर एक और मिनट।
'अजीब बात है!' फेलूदा ने टिप्पणी की।
रॉवडन स्ट्रीट या पार्क स्ट्रीट से कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। जो कार आई थी, वह अभी भी उसी जगह पर खड़ी थी। आखिर चल क्या रहा था?
दो मिनट और बीत गए। बादल फिर से छंट गए। चांद दोबारा दिखाई दिया। आसपास कोई नहीं था।
‘इसे पकड़ो, टॉपशे!’ फेलुदा ने अपना कंधे का थैला मुझे थमा दिया और घास पर कदम रखा। फिर वह उस दिशा में बढ़ने लगा जहाँ हमने मशाल की रोशनी देखी थी। उसके बारे में चिंता करने की कोई वजह नहीं थी—उसकी जेब में उसकी कोल्ट.32 पिस्तौल थी। बहुत जल्द, वह दहाड़ने वाली थी और इस कब्रिस्तान की खामोशी को चीर डालने वाली थी।
लेकिन... फेलुदा अभी भी लंगड़ा रहा था। उसके एक जूते से उसे साफ तौर पर तकलीफ हो रही थी। लंगड़ापन हल्का था, लेकिन था जरूर। पता नहीं क्यों उसे अपना जूता खुद ठीक करने की कोशिश करनी पड़ी।

हम इंतजार करते रहे। फेलुदा की रिवाल्वर की गर्जना कहाँ गई? सन्नाटा छाया रहा।
‘गलती!’ लालमोहन बाबू ने कर्कश स्वर में कहा। ‘तुम्हारे चचेरे भाई ने बहुत बड़ी गलती कर दी!’
मैंने उसे आगे बोलने से रोकने के लिए साँप की तरह फुफकारा। फेलुदा अँधेरे में गायब हो गया था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उन सभी कब्रों के पीछे क्या चल रहा है। यह क्या था? किसी तरह की आवाज़? नहीं, मैंने शायद कल्पना की होगी।
घड़ी में घंटे की घंटी बजी। आधी रात हो गई। घड़ी कहाँ हो सकती है? सेंट पॉल चर्च में? हवा उसी दिशा से आ रही थी। कभी-कभी, अगर पश्चिम से हवा चलती, तो बालीगंज में हमारे घर से हमें अलीपुर चिड़ियाघर में शेरों की दहाड़ सुनाई देती थी।
ओह। एक कार स्टार्ट हो रही थी।
एक और दरवाजा ज़ोर से बंद हुआ। फिर उसने इंजन स्टार्ट किया और गाड़ी चल पड़ी। हम और इंतज़ार नहीं कर सकते थे। मुझे डर तो नहीं लग रहा था, लेकिन मैं ज़रूर घबरा गया था। हम दोनों उठ खड़े हुए। लालमोहन बाबू कुछ बुदबुदा रहे थे, लेकिन मैंने उन पर ध्यान न देने का फैसला किया। समय नहीं था।
हम जितनी तेज़ी से चल सकते थे, चलने लगे, कब्रों के बीच से रास्ता टटोलते हुए। हम एक कब्र के पास से गुज़रे जिस पर 'मैरी एलिस' लिखा था। लालमोहन बाबू मेरी कमीज़ का पिछला हिस्सा पकड़े हुए थे। हमारे पैरों के नीचे की घास अभी भी गीली और ठंडी थी।
अगली पट्टिका जो मुझे दिखाई दी, उस पर 'जॉन मार्टिन' लिखा था। फिर सिंथिया कोलेट का नाम आया। कैप्टन इवांस। उसके बाद एक ओबिलिस्क था। काले संगमरमर की पट्टिका पर...
कुरकुरे!
मैंने किसी चीज़ पर पैर रख दिया था। मैंने पैर हटाया और नीचे देखा। चाँद फिर से निकल आया था। मैंने उस वस्तु को उठाया।
यह चारमीनार का पैकेट था, और यह खाली नहीं था। इसमें काफी सारी सिगरेटें बची हुई थीं। हर एक सिगरेट कुचली हुई थी।
फेलुदा!

इसके बाद क्या हुआ, मैं बता नहीं सकती। मुझे बस इतना याद है कि मेरे मुंह पर हल्का दबाव पड़ा और लालमोहन बाबू की दबी हुई चीख सुनाई दी।

बारह

जब मुझे होश आया, तो सबसे पहले मुझे लगा कि मैं पुरी के समुद्र तट पर लेटा हुआ हूँ। समुद्र के किनारे ही ऐसी तेज़ हवा का अनुभव किया जा सकता है। मेरे कान और नाक ठंडे पड़ गए थे। मेरे बाल हवा में उड़ रहे थे।
लेकिन समुद्र कहाँ था? पानी? रेत? गरजती लहरें? एक आवाज़ आई... लेकिन वह निश्चित रूप से समुद्र की आवाज़ नहीं थी। मैं एक कार की पिछली सीट पर बैठा था, जो अंधेरे में एक सुनसान सड़क पर चल रही थी। मेरे दाहिनी ओर लालमोहन बाबू बैठे थे। मेरे बाईं ओर एक बिल्कुल अजनबी बैठा था। मैंने उस आदमी को पहले कभी नहीं देखा था। ड्राइवर ने पगड़ी पहन रखी थी। उसके बगल में एक और आदमी बैठा था। कोई बात नहीं कर रहा था।
जैसे ही मैंने अपना सिर उठाया, मेरे बाईं ओर बैठा आदमी मुझे घूरने लगा। वह कुछ-कुछ बदमाश जैसा लग रहा था। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। भला वह क्यों कहता? हम निहत्थे थे और उससे उसे कोई खतरा नहीं था। फेलुदा के पास हथियार था। वह इस गाड़ी में नहीं था। मुझे नहीं पता था कि वह कहाँ हो सकता है। उसने मुझे अपना बैग थमा दिया था। वो कहाँ था?
वह मेरे सिर के पीछे, पिछली विंडस्क्रीन के ठीक सामने वाली जगह में था। उसकी पट्टी मेरे गाल को छू रही थी।
‘आधी रात!’ लालमोहन बाबू ने कहा। मैंने उन्हें तिरछी नज़र से देखा। उनकी आँखें अभी भी बंद थीं।
'मध्यरात्रि! लेकिन! जय माँ, माँ संतोषी! . . . मध्यरात्रि ।. .!'
मेरे बाईं ओर बैठे व्यक्ति ने धमकी देते हुए कहा, 'चुप रहो!'
मेरी आँखें फिर से भारी हो गईं। सब कुछ फिर से अंधेरा हो गया। कार की आवाज़ धीरे-धीरे गायब हो गई।
जब मैंने दोबारा आंखें खोलीं, तो मुझे लगा कि मैं किसी मंदिर में हूँ। नहीं, मंदिर नहीं। यह ज़रूर कोई गिरजाघर होगा। ये घंटियाँ पीतल की नहीं बनी थीं। इनसे एक अजीब सी धुन निकल रही थी।

लेकिन यह न तो मंदिर था और न ही गिरजाघर। दरअसल, यह किसी का ड्राइंग रूम था। छत से एक झूमर लटका हुआ था, लेकिन जलाया नहीं गया था। कमरे में ज़्यादा रोशनी नहीं थी। बस एक मेज पर रखा लैंप था, जो मखमली गद्दे वाले सोफे के बगल में था। मैं भी मखमली गद्दे वाले दूसरे सोफे पर बैठा था। नहीं, बैठा नहीं था। लेटा हुआ था। मेरे बगल में लालमोहन बाबू बैठे थे। उनकी आँखें अभी भी बंद थीं। फेलूदा दूसरी तरफ एक कुर्सी पर बैठे थे। उनका चेहरा गंभीर लग रहा था। उनके माथे का दाहिना हिस्सा चोटिल और सूजा हुआ था। हमारे बाईं ओर एक आदमी खड़ा था, जिसे हम प्यारेलाल के नाम से जानते थे। उसके हाथ में एक रिवॉल्वर थी, एक कोल्ट.32। शायद वह फेलूदा की थी।
कमरे में तीन और आदमी खड़े थे। सब हमारी तरफ देख रहे थे, पर कुछ बोल नहीं रहे थे। शायद बोलने वाला आदमी अभी तक आया ही नहीं था। कमरे का सबसे बड़ा सोफा—काले मखमल से ढका हुआ—अभी भी खाली था। शायद किसी का इंतज़ार कर रहा था। शायद श्री चौधरी का। लेकिन यह अलीपुर का कोई आलीशान आधुनिक घर नहीं था। यह बहुत पुराना घर था। छत लगभग तीस फीट ऊंची लग रही थी। उसकी सारी कड़ियां लोहे की बनी थीं। दरवाजा इतना विशाल था कि उसमें से घोड़ा भी निकल सकता था।
और भी बहुत कुछ था। घड़ियाँ। कुछ सीधी खड़ी थीं, कुछ दीवार पर टंगी हुई थीं। खड़ी घड़ियों में से एक की ऊँचाई एक औसत कद के आदमी जितनी थी, या शायद उससे भी ज़्यादा। इन्हीं घड़ियों ने थोड़ी देर पहले घंटी बजाई थी। सुबह के दो बज रहे थे।
मैंने फेलुदा की आँखों में सिर्फ एक बार देखा था। उनकी आँखों में जो भाव था, वह कह रहा था, 'चिंता मत करो। मैं यहाँ सब कुछ संभाल लूँगा।' मैं फेलुदा के चेहरे के भावों को पढ़ना सीख चुका था। इसलिए मुझे कुछ हद तक तसल्ली मिली।
'सुप्रभात, श्रीमान मिटर!'
मुझे उन शब्दों को बोलने वाले व्यक्ति को ढूंढने में कुछ ही सेकंड लगे। वह दीपक के ठीक पीछे वाले दरवाजे से अंदर आया था। उसकी आवाज़ में अभी भी मखमलीपन था। वास्तव में, वह पहले से भी ज़्यादा मधुर लग रही थी। इसका एक कारण था। अब पलड़ा उसी के हाथ में था, फेलुदा के हाथ में नहीं।

‘ये क्या है? क्या तुमने इसे अच्छे से तलाशा है, प्यारेलाल?’ उसने फेलुदा के कंधे पर रखे थैले को देखते हुए पूछा। पता नहीं कैसे, वो थैला वापस फेलुदा के पास पहुँच गया था।
प्यारेलाल ने अपने मालिक को बताया कि थैले में कागज़, एक नोटबुक और तस्वीरों के अलावा कुछ नहीं था। उन्हें एक बोतल मिली थी, लेकिन उसे हटा दिया गया था।
श्री चौधरी ने बड़े ही आकर्षक अंदाज में कहा, ‘श्री मित्तर, मुझे खेद है कि आपको यहाँ घसीटकर आना पड़ा, कृपया बुरा न मानें।’ ‘चूंकि आप उस पेरिगल रिपीटर में इतनी दिलचस्पी ले रहे थे, इसलिए मैंने सोचा कि जब वह घड़ी मेरे हाथों में आएगी तो आप वहाँ मौजूद रहना पसंद करेंगे। बलवंत, क्या तुमने घड़ी साफ कर ली है?’
उनमें से एक व्यक्ति ने सिर हिलाकर उसे बताया कि सफाई का काम लगभग पूरा हो चुका है, इसे जल्द ही कमरे में लाया जाएगा।
श्री चौधरी ने आगे बताया, ‘यह दो सौ वर्षों से एक कब्र में पड़ा हुआ था। विलियम ने मुझे पहले कुछ नहीं बताया। उसने बस इतना कहा कि उसके पास एक पेरिगल है, लेकिन उसे लाने में बहुत समय लग रहा है। फिर, जब मैंने उस पर दबाव डाला, तो उसने स्वीकार किया कि यह जमीन के नीचे दबा हुआ था, इसलिए देरी हो रही थी। चूंकि यह एक शव के साथ दबा हुआ था, इसलिए मैंने अपने आदमियों को इसे मेरे पास लाने से पहले अच्छी तरह से साफ करने और धूल झाड़ने का आदेश दिया। मैंने उन्हें डेटॉल से पोंछने के लिए भी कहा।’
फेलुदा श्री चौधरी की ओर सीधे देख रहा था। उसके चेहरे से यह बताना असंभव था कि वह क्या सोच रहा था। लालमोहन बाबू और मुझे क्लोरोफॉर्म का नशा दिया गया था। फेलुदा के सिर पर चोट लगी थी और वह बेहोश हो गया था।
'मिस्टर मिटर, आपको इस खास घड़ी के बारे में कैसे पता चला?'
उन्नीसवीं सदी में किसी द्वारा लिखी गई डायरी से। यह उस व्यक्ति की बेटी की डायरी थी जिसके पास वह घड़ी थी।
‘एक डायरी? पत्र नहीं?’
नहीं। यह एक डायरी थी।
श्री चौधरी ने विदेशी सिगरेट का एक पैकेट, साथ ही एक सोने का लाइटर और होल्डर निकाला था।

‘क्या तुम विलियम को नहीं जानते?’ उसने सिगरेट होल्डर में सिगरेट डालते हुए पूछा।
नहीं, मैं विलियम नाम के किसी व्यक्ति को नहीं जानता।
श्री चौधरी के डन्हिल लाइटर के सिरे पर एक लौ दिखाई दी। 'तो उस डायरी में जो कुछ आपने पढ़ा, क्या वह आपको लालची बनाने के लिए काफी था?'
‘लालची? नहीं, श्री चौधरी, लालच पर तो सिर्फ आपका ही अधिकार है।’ श्री चौधरी के मखमली चेहरे पर उदासी छा गई। दो उंगलियों के बीच जकड़ा सिगरेट होल्डर थोड़ा कांप रहा था।
‘मुझसे बात करते समय सावधान रहें, श्रीमान मिटर!’
‘जब मैं सच बोलता हूँ तो मुझे इस बात की परवाह नहीं होती कि मैं किसी से कैसे बात करता हूँ। मैं बस यह सुनिश्चित करना चाहता था कि घड़ी गॉडविन की कब्र से न हटे। अगर आप जैसा आदमी रख सकता है...’
फेलुदा अपनी बात पूरी नहीं कर सका। एक आदमी कमरे में आया, जिसके हाथ में रेशमी रुमाल पर रखी कोई वस्तु थी। जैसे ही श्री चौधरी ने उसे उठाया, मेरे बगल में बैठे लालमोहन बाबू कराहने और खांसने लगे।
‘म-म-माय-माय-माय-!’
उसने अभी-अभी अपनी आँखें खोली थीं और श्री चौधरी के हाथ में वह वस्तु देखी। यह ऐसी चीज थी जिससे लालमोहन बाबू भलीभांति परिचित थे।
श्री चौधरी के साथ जो हुआ, उसका वर्णन करना असंभव है। एक बार फेलुदा ने मुझे बताया था कि संगीत के सात प्रमुख स्वर इंद्रधनुष के सात रंगों से संबंधित होते हैं, लेकिन मुझे यह बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि किसी व्यक्ति का चेहरा इतनी जल्दी रंग बदल सकता है और इतने सारे रंगों से गुजर सकता है। न ही मैंने कभी किसी की आवाज को हर सेकंड अलग स्वर पर पहुंचते सुना था।
उसके मुँह से निकली गालियाँ सुनना मुश्किल था, दोहराना नामुमकिन। फिर भी, फेलुदा बिल्कुल शांत रहा। मैं समझ गया कि यह सब उसी का किया-धरा है। दोपहर में जब वह कब्रिस्तान गया था, तभी उसने यह सब किया होगा। लेकिन क्या इसका मतलब यह था कि असली पहरा था ही नहीं?
पागलों की तरह, श्री चौधरी ने कुक-केल्वे घड़ी को अपने बगल में पड़ी एक खाली कुर्सी पर फेंक दिया। 'विलियम को बुलाओ!' वह दहाड़े, 'और मुझे वह रिवॉल्वर दो!'

प्यारेलाल ने रिवाल्वर श्री चौधरी को सौंप दी और कमरे से बाहर निकल गया।
श्री चौधरी ने कुछ बार 'बदमाश!' और 'धोखेबाज!' बुदबुदाया। फिर वे उठ खड़े हुए और बेचैनी से इधर-उधर घूमने लगे।
कुछ ही क्षणों में प्यारेलाल पीछे के दरवाजे से अंदर आ गया। उसके साथ एक और आदमी था जिसके कंधे तक लंबे बाल थे और ठुड्डी तक लटकती हुई मूंछें थीं।
उसने पतलून, कमीज और सूती जैकेट पहन रखी थी।
‘ये कौन सी घड़ी है जो तुमने खोजी है?’ श्री चौधरी गरजते हुए बोले। वे एक बार फिर सोफे पर बैठे थे, रिवॉल्वर को पकड़े हुए, उनकी निगाहें अभी भी फेलुदा के चेहरे पर टिकी हुई थीं।
‘श्री चौधरी, मैंने आपको वही लाया है जो मुझे मिला था,’ नए आए व्यक्ति ने विनती करते हुए कहा। ‘आप जैसे विशेषज्ञ को मैं भला कैसे धोखा दे सकता हूँ?’ ‘उस पत्र का क्या हुआ? क्या उसमें झूठ लिखा था?’ श्री चौधरी की आवाज से पूरा कमरा कांप उठा।
‘मुझे कैसे पता चलेगा, श्री चौधरी? यही तो एकमात्र चीज़ थी जिस पर हम भरोसा कर सकते थे। देखिए, यह रहा।’
उस आदमी ने एक पुराना पत्र निकाला और श्री चौधरी को दे दिया। श्री चौधरी ने उसे लिया, सरसरी नज़र डाली और फिर चिड़चिड़ाकर फेंक दिया। उसी क्षण फेलुदा ज़ोर से हंस पड़ा। उसकी हंसी शुद्ध आनंद से उपजी थी। मैंने उसे इतने लंबे समय से इतनी खुशी से हंसते नहीं सुना था।
‘हंसने की क्या बात है, श्री मित्तर?’ महादेव चौधरी चिल्लाए। फेलुदा ने बड़ी मुश्किल से खुद को संभाला और जवाब दिया, ‘मैं इसलिए हंस रहा हूं क्योंकि आपकी सारी नाटकीय योजनाएँ धरी की धरी रह गईं!’
श्री चौधरी हाथ में बंदूक लिए उठे और चुपचाप फेलुदा की ओर चल पड़े। फर्श पर बिछे मोटे कालीन ने उनके कदमों की आवाज दबा दी।
तो आपको लगता है कि मेरा नाटक खत्म हो गया है? मुझे कैसे पता चलेगा कि असली घड़ी आपके पास नहीं है? आप कब्रिस्तान में कितनी बार गए हैं। आज शाम भी, आप विलियम से बहुत पहले वहाँ थे। अगर आपके पास वह घड़ी है, तो क्या आपको लगता है कि मैं उसे आपसे लिए बिना आपको जाने दूँगा? हो सकता है आपने उसे कहीं छिपा दिया हो, लेकिन आपको उसे खुद निकालना होगा और मुझे सौंपना होगा। समझे, श्रीमान मिटर? भले ही घड़ी न हो, भले ही वह पत्र झूठ से भरा हो, आपको क्या लगता है कि मैं आपको क्यों छोड़ दूँगा? हर बात में दखल देने की आपकी आदत

मेरे लिए बहुत असुविधाजनक है। इसलिए यह मत सोचिए कि नाटक खत्म हो गया है। नहीं, श्रीमान मिटर। यह तो अभी शुरू हुआ है!
जब फेलुदा बोलता था, तो उसकी आवाज़ में एक ऐसा स्वर होता था जिसे मैं तुरंत पहचान लेता था। वह हमेशा किसी मामले के चरम पर पहुँचने पर उस स्वर का प्रयोग करता है। लालमोहन बाबू कहते हैं कि यह उन्हें तिब्बती तुरही की आवाज़ की याद दिलाता है।
‘आप गलती कर रहे हैं, श्री चौधरी,’ उन्होंने कहा। ‘अब नाटक मेरे हाथों में है, आपके नहीं। अब से इसका निर्देशन मैं ही करूंगा। मैं ही तय करूंगा कि कौन बड़ा अपराधी है—आप या वह विलियम नाम का आदमी…!’
अचानक कमरे में अफरा-तफरी मच गई। विलियम ने एक ज़ोरदार छलांग लगाई, अपने सामने खड़े प्यारेलाल को धक्का देकर गिरा दिया और बाहर निकलने की ओर भागा। श्री चौधरी ने गोली चलाई, लेकिन गोली विलियम से कुछ ही फीट दूर से निकल गई। गोली एक खड़ी घड़ी के डायल पर लगी और उसे पूरी तरह चकनाचूर कर दिया। सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, क्षतिग्रस्त घड़ी तुरंत बजने लगी।
बाकी दो आदमी विलियम को पकड़ने के लिए दौड़े, लेकिन वे ज्यादा दूर नहीं जा सके। उनके रास्ते में हथियारबंद लोगों का एक समूह खड़ा था। उन्होंने सबको रोक दिया और कमरे में घुसकर विलियम को वापस अंदर धकेल दिया। हमें यह बताने की जरूरत नहीं थी कि उस समूह का नेतृत्व करने वाला व्यक्ति एक पुलिस इंस्पेक्टर था। उसके पीछे पांच कांस्टेबल थे और उनके कंधों के ऊपर से लालमोहन बाबू के ड्राइवर हरि दत्ता का उत्सुक और जिज्ञासु चेहरा झाँक रहा था।
‘शाबाश, श्री दत्ता!’ फेलुदा ने कहा।
इंस्पेक्टर ने फेलुदा की ओर देखते हुए पूछा, 'आप फेलु मित्तर हैं, है ना? यहाँ आखिर क्या चल रहा है? मैं श्री चौधरी को तो जानता हूँ, लेकिन यह आदमी कौन है जो भागने की कोशिश कर रहा था?'
सवाल का जवाब देने से पहले, फेलुदा श्री चौधरी के पास गए और उनसे उनकी रिवॉल्वर छीन ली। चौधरी इतने हैरान रह गए कि उन्होंने विरोध करने के लिए कुछ नहीं किया।
‘धन्यवाद, श्रीमान चौधरी,’ फेलुदा ने कहा। ‘कृपया सोफे पर वापस बैठ जाइए। वहाँ से आपको इस नाटक का अंतिम दृश्य देखना आसान लगेगा। वैसे भी, काला मखमल आप पर बहुत जँच रहा है! और श्रीमान विलियम—’, फेलुदा की नज़रें चौधरी से हट

गईं, ‘उस विग और नकली मूंछ में आप बिल्कुल अपने परदादा जैसे लग रहे हैं। क्या आप कृपया इन्हें उतार देंगे?’
एक कांस्टेबल ने विलियम के बाल और मूंछें खींचीं। दोनों आसानी से निकल गए, और हमने - अत्यंत आश्चर्य के साथ - देखा कि विलियम की जगह खड़ा व्यक्ति नरेन बिस्वास का भाई, गिरिन बिस्वास था।
‘अब बताइए, श्रीमान बिस्वास,’ फेलुदा ने कहा, ‘आपका पूरा नाम क्या है?’ ‘क्या आपको मेरा नाम पहले से नहीं पता?’
‘ऐसा लगता है कि आपके दो नाम हैं। दोनों मिलकर आपका पूरा नाम बनाते हैं, है ना? आपका नाम विलियम गिरिन्द्रनाथ बिस्वास है। क्या यह सही है? कम से कम, प्रेसिडेंसी कॉलेज की पत्रिका में स्वर्ण पदक विजेताओं की सूची में तो आपका नाम इसी तरह लिखा है। और आपके भाई का नाम माइकल नरेंद्रनाथ बिस्वास है। उनके विजिटिंग कार्ड पर “एम” का मतलब “माइकल” है, है ना? चूंकि आप आमतौर पर अपने बंगाली नामों का इस्तेमाल करते हैं, इसलिए आपके भाई ने अपने कार्ड पर “एम.एन.” के बजाय “एन.एम.” छपवाया होगा। क्या मैं सही कह रहा हूँ?’ गिरिन बिस्वास चुप रहे। फेलुदा स्पष्ट रूप से सही थे। 'तुम्हारा भाई तुम्हें क्या कहकर बुलाता है?'
‘क्यों? इससे तुम्हें क्या लेना-देना है?’
‘बहुत खूब। अगर तुम किसी को नहीं बताओगे, तो मैं बता दूँगी। वो तुम्हें “विल” कहकर बुलाता है। अस्पताल में जब उसे होश आया, तो उसने दो बार तुम्हारा ही नाम लिया। है ना?’
फेलुदा ने अपने बैग से एक बड़ा लाल लिफाफा निकाला। उसमें से एक तस्वीर निकली। 'इन लोगों को देखिए, श्री बिस्वास। देखिए कि क्या आप इन्हें पहचानते हैं। शायद आपके घर में यह तस्वीर न हो। लेकिन बोर्न एंड शेफर्ड में इसकी एक प्रति थी।'
तस्वीर में एक दंपत्ति दिख रहे थे। संभवतः यह तस्वीर उनकी शादी के तुरंत बाद ली गई थी। पुरुष हूबहू गिरिन बिस्वास जैसा दिख रहा था। महिला स्पष्ट रूप से ब्रिटिश थी।
‘क्या आप इन लोगों को जानते हैं?’ फेलुदा ने आगे कहा, ‘ये सज्जन पार्वती चरण हैं—पी.सी. बिस्वास, आपके परदादा। उनके कपड़ों से साफ पता चलता है कि वे ईसाई बन गए थे। ये महिला थॉमस गॉडविन की पोती विक्टोरिया हैं। उन्होंने ही वह पत्र लिखा था। दरअसल, उन्होंने शादी से पहले ही अपनी तस्वीर खिंचवाई

थी। बोर्न एंड शेफर्ड के पास उसकी एक प्रति भी है। विक्टोरिया को आपके परदादा से प्यार हो गया था, जो एक जन्मजात ईसाई थे। इस वजह से वह अपने दादा थॉमस गॉडविन की नजरों से गिर पड़ीं। हालांकि, मरने से पहले उन्होंने विक्टोरिया को माफ कर दिया और उन्हें अपना आशीर्वाद दिया। एक साल बाद विक्टोरिया और पार्वती चरण की शादी हो गई।’
इसका मतलब यह है कि टॉम गॉडविन का नाम कलकत्ता के एक नहीं बल्कि दो परिवारों से जुड़ा है—एक रिपन लेन में और दूसरा न्यू अलीपुर में। इससे भी अधिक रोचक बात यह है कि दोनों परिवारों के पास पुराने दस्तावेज थे जिनमें टॉम की घड़ी का जिक्र था। एक विक्टोरिया का पत्र था; दूसरा थॉमस गॉडविन की बेटी शार्लोट की डायरी थी।
कितना अद्भुत! सच में, सच्चाई कल्पना से भी कहीं अधिक विचित्र थी। पता चला कि विक्टोरिया द्वारा लिखे गए पत्रों का एक बंडल नरेन बिस्वास के घर में एक पुराने संदूक में पड़ा था। यह दशकों से वहीं पड़ा रहा, लेकिन किसी ने भी पत्रों को पढ़ने की जहमत नहीं उठाई। जब नरेन बिस्वास ने कलकत्ता के इतिहास का अध्ययन करना शुरू किया, तो एक दिन उन्हें वह बंडल मिला और उन्होंने एक-एक पत्र पढ़ा। इसी तरह उन्हें पेरिगल रिपीटर के बारे में पता चला और उन्होंने अपने भाई गिरिन को इसके बारे में बताया।
ये सारी बातें धीरे-धीरे सामने आने लगीं, जैसे-जैसे फेलुदा ने गिरिन बिस्वास से सवालों की बौछार जारी रखी। श्री बिस्वास थोड़े असहज दिखने लगे, लेकिन फेलुदा अभी रुके नहीं थे। अचानक ही उन्होंने पूछा, 'क्या आपको घुड़दौड़ देखने जाने की आदत है, श्री बिस्वास?'
श्री चौधरी ने गिरिन बिस्वास के कुछ कहने से पहले ही बोलना शुरू कर दिया। उन्होंने गरजते हुए कहा, 'उसने मुझसे एडवांस लिया था! और फिर वो सारा पैसा रेस में हार गया, है ना? अब वो मुझे कुक-केल्वे घड़ी लाकर देता है। निकम्मा आदमी!'
फेलुदा ने श्री चौधरी की बात अनसुनी कर दी। 'इसका मतलब है कि आपको टॉम का एक गुण विरासत में मिला है। क्या इसीलिए आप इतना बड़ा जोखिम उठाने को तैयार थे?'
गिरिन बिस्वास ने जोरदार जवाब दिया। 'श्री मिटर, आप एक बात भूल रहे हैं। कोई भी अपनी संपत्ति को कब्र में दफना सकता है। लेकिन, दफनाने के सौ साल

बाद, कोई भी उस पर व्यक्तिगत दावा नहीं कर सकता। वह घड़ी अब टॉम गॉडविन की संपत्ति नहीं है।'
मुझे इस बात की जानकारी है। अब यह घड़ी राज्य की संपत्ति है। आप भी इस पर अपना मालिकाना हक नहीं जता सकते। सच तो यह है कि आपने सिर्फ कब्रिस्तान से चोरी करने की कोशिश नहीं की। आपने कुछ और भी किया है। वह भी एक आपराधिक अपराध है।
‘क्या अपराध?’ गिरिन बिस्वास ने चुनौती भरे लहजे में पलटवार किया।
फेलुदा ने अपनी जेब से एक छोटी सी वस्तु निकाली। 'मुझे देखने दो। क्या यह बटन तुम्हारी जैकेट से निकला है? क्या तुमने इसे कुछ दिन पहले ही हांगकांग लॉन्ड्री में साफ नहीं करवाया था?'
फेलुदा ने अपने हाथ में पकड़े छोटे बटन की तुलना श्री बिस्वास की जैकेट पर लगे अन्य बटनों से की। 'हाँ, यह बिल्कुल मेल खाता है!' उसने कहा।
तो इससे क्या साबित होता है? कि मैं कब्रिस्तान गया था? बिल्कुल गया था। मैं इससे इनकार नहीं कर रहा हूँ।
'अगर मैं कहूँ कि यह जैकेट तुम्हारी नहीं, बल्कि तुम्हारे भाई की है, तो क्या तुम इससे इनकार करोगे?'
‘क्या! आप बिलकुल बकवास कर रहे हैं, श्रीमान मिटर!’
नहीं। अगर कोई बकवास कर रहा है, तो वो तुम हो। तुम कल हमारे घर आए थे और हमसे झूठ का पुलिंदा बोला था। अब फिर वही कर रहे हो। जो जैकेट तुमने पहनी है, वो तुम्हारे भाई की है। तूफ़ान से ठीक पहले जब वो कब्रिस्तान गया था, तब उसने यही जैकेट पहनी थी। उसने गॉडविन की कब्र खुदी जा रही थी, और तुम्हें वहाँ देखा। उसने तुम्हें रोकने की कोशिश की। तुमने उसके सिर पर वार किया—किसी भारी डंडे या ऐसी ही किसी चीज़ से। नरेन बिस्वास बेहोश हो गया। तुम शायद उसे मार ही डालते, लेकिन उसी पल तूफ़ान शुरू हो गया। तुमने भागने की कोशिश की। पेड़...
गिरिन बिस्वास ने फेलुदा की बात काटते हुए कहा, 'क्या आप कह रहे हैं कि मेरा भाई झूठा है? क्या उसने खुद नहीं कहा था कि एक शाखा टूट गई और...?'
फेलुदा को रोकना नामुमकिन था। वह बोलते रहे, ‘...पेड़ की एक शाखा टूट गई। वह टूटकर तुम्हारी पीठ पर गिर पड़ी। तुमने जैकेट नहीं पहनी थी। इसलिए तुमने अपने भाई की जैकेट उतारकर अपने ज़ख्मों को छुपाने के लिए पहन ली। तभी उसका

बटन टूट गया और तुम्हारे भाई का बटुआ जेब से फिसल गया। तुम्हारी अपनी पतलून की जेब से, पिछली दौड़ का फॉर्म-बुक...’
श्री बिस्वास ने एक बार फिर दरवाजे की ओर जाने की कोशिश की, लेकिन असफल रहे। इस बार फेलुदा ने खुद उन्हें पकड़ लिया और उनकी जैकेट उतार दी। उनकी कमीज के नीचे पट्टी साफ दिखाई दे रही थी।
‘तुम्हारे भाई ने तुम्हें बचाने के लिए कई झूठ बोले, है ना? वह तुम्हारी बहुत परवाह करता है। शायद जरूरत से ज्यादा।’
फेलुदा ने कुक-केल्वे द्वारा बनाई गई घड़ी और विक्टोरिया द्वारा लिखा गया पत्र उठाया। फिर उसने उन्हें अपने थैले में डाल दिया और श्री चौधरी की ओर मुड़ा, जो पूरी तरह से अवाक खड़े थे। 'आज रात, मैं आप सभी की घड़ियों की आधी रात की घंटी बजने की आवाज़ सुनने का मौका चूक गया। लेकिन कौन जानता है, शायद मुझे कभी यह मौका मिल जाए!'
लालमोहन बाबू को तीसरी कोशिश के बाद ही होश आया। मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि वह दोबारा बेहोश हो गए थे और नाटक के सबसे अहम दृश्य को देखने से चूक गए।
फेलुदा ने कहा, ‘महादेव चौधरी जैसे लोगों को काबू में रखना बहुत मुश्किल है। पुलिस भी कुछ नहीं कर सकती। उनके जैसा आदमी हिटलर जैसा है। वो जब चाहे लोगों को रिश्वत देकर अपने वश में कर सकता है।’
हम अब गंगा के किनारे बैठे थे। यह घाट श्री चौधरी के आलीशान घर से मात्र पाँच मिनट की दूरी पर था। पूर्वी आकाश में उजाला होने लगा था—सूरज निकलने ही वाला था। भगवान ही जानते थे कि अगर हरि दत्ता ने फेलुदा के दिए हर निर्देश का सावधानीपूर्वक पालन न किया होता तो हमारा क्या हाल होता। (‘क्या होता? मौत!’ लालमोहन बाबू ने कहा।)
जिस कार में हमें जबरदस्ती बिठाया गया था, उसका उसने पीछा किया और फिर सीधे पुलिस के पास चला गया। ऐसा काम केवल एक दृढ़ निश्चयी और असाधारण जिम्मेदारी की भावना रखने वाला व्यक्ति ही कर सकता था। लालमोहन बाबू ने हरि द्वारा कहीं से लाए गए मिट्टी के बर्तन से चाय की चुस्की ली और कहा, 'तो अब आपने देख लिया कि नई कार के कितने फायदे होते हैं!'
‘जी हाँ, बिलकुल,’ फेलुदा ने जवाब दिया। ‘पिछले तीन दिनों में हमने आपकी कार का कई बार इस्तेमाल किया है। शहर लौटने पर मुझे दो और जगहों पर जाना है।

उसके बाद, मैं वादा करता हूँ कि कम से कम कुछ दिनों के लिए आपकी कार का इस्तेमाल नहीं करूँगा!’
‘दो जगहें? आप कहाँ जाना चाहते हैं?’
सबसे पहले, हमें नरेन बिस्वास से मिलना है। हमें उन्हें बताना होगा कि क्या हुआ है, और विक्टोरिया का पत्र उन्हें लौटाना होगा।
और दूसरा स्थान?
‘साउथ पार्क स्ट्रीट कब्रिस्तान।’
‘फिर से?’
‘क्या आपको अंदाजा है कि मुझे हर कदम कितनी सावधानी से उठाना पड़ा? इस वजह से मैं उन आदमियों से ठीक से लड़ भी नहीं पाई!’
फेलुदा ने अपने बाएं पैर से शिकार का जूता उतारा। फिर उसने उसमें हाथ डालकर एक नकली तला निकाला, जिसके नीचे एक छोटा सा डिब्बा था। उसमें, रुई में सावधानीपूर्वक लपेटी हुई, एक अद्भुत वस्तु थी जो तमाम उथल-पुथल के बावजूद टूटे हुए डायल को छोड़कर अब तक अक्षुण्ण थी।
क्या हमें इसे वापस उसकी सही जगह पर नहीं रखना चाहिए?
फेलुदा की उंगलियों से लटकती हुई घड़ी नवाब सदात अली द्वारा थॉमस गॉडविन को उनके उत्कृष्ट खाना पकाने के लिए दिया गया पहला पुरस्कार था—इंग्लैंड के सर्वश्रेष्ठ घड़ीसाज़ों में से एक, फ्रांसिस पेरिगल द्वारा बनाई गई एक रिपीटर पॉकेट घड़ी। दो सौ वर्षों तक यह अपने मालिक के कंकाल के बगल में ज़मीन में दबी रही। फिर भी, जैसे ही उगते सूरज की पहली किरण इस पर पड़ी, यह जगमगा उठी और हमारी आँखों को चकाचौंध कर दिया।

[redacted]

एक

लालमोहन बाबू ने अपनी किताब से नज़रें उठाकर कहा, 'राममोहन रॉय के पोते का एक सर्कस था। क्या आपको यह पता था?'
फेलुदा पीछे की ओर झुके हुए थे, उनका चेहरा रुमाल से ढका हुआ था। उन्होंने अपना सिर हिलाया।
पिछले दस मिनट से हमारी कार भूसे के गट्ठों से लदे एक विशाल ट्रक के पीछे खड़ी थी। ट्रक न केवल हमारा रास्ता रोक रहा था, बल्कि उससे इतना घना काला धुआँ निकल रहा था कि हम सब घुटन महसूस कर रहे थे। हमारे ड्राइवर ने कई बार हॉर्न बजाया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। ट्रक के पीछे डूबते सूरज और फूलों की पेंटिंग के अलावा कुछ भी न देख पाने से मैं थक चुका था, और ट्रक आमतौर पर जो कहते हैं, वही सब मुझे दिख रहा था: 'टा टा', 'हॉर्न बजाइए', 'अलविदा' और 'धन्यवाद'। लालमोहन बाबू भी उतने ही ऊबे और थके हुए थे, और उन्होंने 'द सर्कस इन बंगाल' नाम की एक किताब पढ़ना शुरू कर दिया था। उनकी अगली किताब सर्कस पर आधारित होने वाली थी, इसलिए उन्होंने फेलुदा की सलाह मानकर इस विषय पर थोड़ा पढ़ने का फैसला किया था। दरअसल, हम दिन में पहले रांची में रुके थे और वहाँ 'द ग्रेट मैजेस्टिक सर्कस' के पोस्टर देखे थे। बताया जा रहा था कि सर्कस हजारीबाग पहुँचता है, जहाँ हमें जाना था। अगर हमें किसी शाम फुर्सत मिली तो हमने सर्कस देखने जाने का फैसला किया था।
सर्दी अभी शुरू ही हुई थी। हम सभी को थोड़ी छुट्टी चाहिए थी। लालमोहन बाबू की नवीनतम पुस्तक—द वैम्पायर ऑफ वैंकूवर—पिछले महीने प्रकाशित हुई थी और तीन सप्ताह में दो हज़ार प्रतियां बिक चुकी थीं, जिससे वे स्वाभाविक रूप से बहुत खुश थे। फेलुदा ने पुस्तक के शीर्षक पर आपत्ति जताते हुए कहा था कि वैंकूवर एक विशाल आधुनिक शहर है, जो पिशाचों के लिए बिल्कुल भी उपयुक्त स्थान नहीं है। इस बार लालमोहन बाबू ने फेलुदा की आपत्ति को खारिज करते हुए कहा कि उन्होंने विश्व मानचित्र देखा है और वैंकूवर उन्हें सबसे उपयुक्त नाम लगा है।

फेलुदा भी फिलहाल खाली थे। उन्होंने पिछले सितंबर में बिहार में एक केस सुलझाया था। उनके मुवक्किल, सर्वेश्वर सहाय, फेलुदा के काम से इतने प्रसन्न हुए थे कि उन्होंने हमें हजारीबाग स्थित अपने घर पर आमंत्रित किया था। वे वहां स्थायी रूप से नहीं रहते थे। उनका घर ज्यादातर समय खाली ही रहता था। वहां एक चौकीदार था, जिसकी पत्नी खाना बनाती थी। हम वहां दस दिन रुक सकते थे। हमें सिर्फ खाने का खर्च देना होता।
यह प्रस्ताव इतना अच्छा था कि हम इसे ठुकरा नहीं सकते थे। हमने लालमोहन बाबू की नई एम्बेसडर कार से सड़क मार्ग से जाने का फैसला किया। उन्होंने कहा, 'देखते हैं लंबी दूरी में यह कैसा प्रदर्शन करती है।' हम आसनसोल और धनबाद होते हुए जा सकते थे, लेकिन हमने खड़गपुर और रांची होते हुए जाने का विकल्प चुना। फेलूदा ने खड़गपुर तक कार चलाई, फिर ड्राइवर ने कमान संभाल ली। हम शाम को रांची पहुंचे और अंबर होटल में रात बिताई। आज सुबह हम रांची से नौ बजे निकले थे, उम्मीद थी कि हम सवा दस बजे तक हजारीबाग पहुंच जाएंगे। लेकिन लॉरी की वजह से हमें निश्चित रूप से देरी होने वाली थी।
पांच मिनट तक लगातार हॉर्न बजाने के बाद, लॉरी आखिरकार हटी और हमें आगे जाने दिया। राहत की सांस लेते हुए, हमने गहरी सांसें लीं जब हमारी कार खुली सड़क पर निकली। सड़क के किनारे लंबे पेड़ लगे थे, जिनमें से कई पर बुनकर पक्षियों के घोंसले थे। खिड़की से बाहर देखने पर मुझे दूर पहाड़ियों की एक श्रृंखला दिखाई देती थी। सड़क के किनारे छोटी-छोटी पहाड़ियाँ थीं। हम बीच-बीच में उनसे गुजरते रहे। लालमोहन बाबू ने यह सब देखा और दो-तीन बार 'सुंदर! सुंदर!' बुदबुदाया। फिर वे टैगोर का एक गीत गुनगुनाने लगे, और पहले से कहीं ज्यादा मजाकिया लग रहे थे। वे सुर-ताल से बिल्कुल बेखबर थे, और हमेशा ऐसे गीत चुनते थे जो बिल्कुल अनुपयुक्त होते थे। उदाहरण के लिए, नवंबर की इस ठंडी सुबह में, उन्होंने एक ऐसा गीत शुरू किया जो वसंत के नए आनंद की बात करता था। उन्होंने एक बार मुझे अपनी यह समस्या बताई थी। जाहिर है, कलकत्ता छोड़ते ही और प्रकृति के करीब आते ही उन्हें गीत गाने का मन करता था; लेकिन गीतों का उनका भंडार सीमित होने के कारण, वे हमेशा कोई उपयुक्त गीत नहीं सोच पाते थे।
लेकिन एक बात ऐसी थी जिसके लिए मुझे उनका शुक्रिया अदा करना ही था। पिछले चौबीस घंटों में उन्होंने मुझे बंगाल के सर्कस के बारे में कई ऐसी बातें बताईं जो मुझे पता नहीं थीं। सौ साल पहले, बंगालियों के स्वामित्व वाले

सर्कस पूरे देश में मशहूर थे। इनमें सबसे प्रसिद्ध प्रोफेसर प्रियनाथ बोस का 'द ग्रेट बंगाल सर्कस' था। भारतीय कलाकारों के अलावा, इसमें अमेरिकी, रूसी, जर्मन और फ्रांसीसी कलाकार भी शामिल थे। महिलाएं भी इसमें हिस्सा लेती थीं। गस बर्न्स नाम का एक अमेरिकी कलाकार बाघ के साथ काम करता था। दुर्भाग्य से, प्रोफेसर बोस के निधन के बाद, सर्कस की बागडोर संभालने वाला कोई नहीं था। उनका सर्कस बंद हो गया, जैसा कि बंगाल के कई अन्य सर्कसों के साथ हुआ।
‘हजारीबाग में यह भव्य और राजसी इमारत... मुझे आश्चर्य है कि यह कहाँ से आई है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
‘यह दक्षिण भारत ही होना चाहिए,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। ‘ऐसा लगता है कि अब उस क्षेत्र में उनका एकाधिकार है।’
‘उनका ट्रैपीज़ कितना अच्छा है? मैं यही जानना चाहता हूँ!’
अपनी नई किताब में, जिसे वह लिखने की योजना बना रहे थे, ट्रैपीज़ की अहम भूमिका होने वाली थी। एक कलाकार हवा में झूलते हुए दूसरे का हाथ पकड़कर उसे जानलेवा इंजेक्शन देने वाला था। उनके नायक, प्रखर रुद्र को अपराधी को पकड़ने के लिए ट्रैपीज़ कलाकारों से कुछ तरकीबें सीखनी पड़तीं। जब लालमोहन बाबू ने हमें ये बातें बताईं, तो फेलुदा ने व्यंग्यपूर्वक कहा, 'शुक्र है, कम से कम एक चीज़ तो सीखने को बची है!'
‘72 किमी’ लिखा हुआ एक बोर्ड पार करने के तुरंत बाद हमें दूसरी एम्बेसडर कार दिखाई दी। वह सड़क के किनारे खड़ी थी और उसका बोनट ऊपर उठा हुआ था। उसका ड्राइवर कार पर झुका हुआ था, जो सड़क से आंशिक रूप से ही दिखाई दे रहा था। एक अन्य सज्जन हमें बेतहाशा हाथ हिला रहे थे। लालमोहन बाबू के ड्राइवर ने ब्रेक पर पैर रख दिया।
‘अह... क्या आप हजारीबाग जा रहे हैं?’ उस आदमी ने पूछा। उसकी उम्र लगभग चालीस के आसपास थी, रंग साफ था और उसने चश्मा पहन रखा था।
'हां, हम हैं,' फेलुदा ने उत्तर दिया।
‘मेरी कार... समस्या गंभीर लग रही है, आप देख रहे हैं। तो मुझे आश्चर्य है कि...?’
'अगर आप चाहें तो हमारे साथ आ सकते हैं।'
'आपकी मेहरबानी। मैं एक मैकेनिक का इंतजाम करके उसे टैक्सी से वापस लाने की कोशिश करूंगा। मुझे नहीं लगता कि मैं और कुछ कर सकता हूं।'

क्या आपके पास कोई सामान है?
'बस एक छोटा सा सूटकेस है, लेकिन मैं इसे बाद में अपने साथ ले जा सकता हूँ। मुझे वापस आने में पैंतालीस मिनट से ज्यादा नहीं लगेंगे।'
'तो पर आजा।'
उस व्यक्ति ने अपने ड्राइवर को अपने फैसले के बारे में बताया, फिर हमारी कार में बैठकर दोबारा कहा, 'आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।' इसके बाद उन्होंने बिना पूछे ही अपने बारे में बहुत कुछ बताया। उनका नाम प्रीतिन्द्र चौधरी था। उनके पिता महेश चौधरी रांची में वकील थे। दस साल पहले वे सेवानिवृत्त होकर हजारीबाग में रहने लगे थे। वहां हर कोई उन्हें अच्छी तरह जानता था। ‘क्या आप कलकत्ता में रहते हैं?’ फेलुदा ने उससे पूछा।
'जी हां। मैं इलेक्ट्रॉनिक्स में हूं। क्या आपने इंडोविजन के बारे में सुना है?'
मुझे याद आया कि मैंने इसी नाम के एक नए टेलीविजन के विज्ञापन देखे थे।
श्री चौधरी इसके निर्माताओं के लिए काम करते थे।
उन्होंने आगे कहा, “कल मेरे पिता सत्तर वर्ष के हो जाएंगे। मेरा एक बड़ा भाई है। वह पहले ही हजारीबाग पहुंच चुका है, और मेरी पत्नी और बेटी भी। दरअसल, मैं दिल्ली में था, इसलिए लगभग नहीं आ पाया। लेकिन मेरे पिता ने मुझे एक टेलीग्राम भेजा जिसमें लिखा था, “मुझे आना ही होगा”, इसलिए मैं यहां हूं। क्या आप कृपया एक मिनट के लिए गाड़ी रोक सकते हैं?”
कार रुक गई। श्री चौधरी ने अपने कंधे के बैग से एक छोटा कैसेट रिकॉर्डर निकाला और पेड़ों के बीच गायब हो गए। कुछ मिनटों में वे वापस आए और बोले, 'मैंने एक फ्लाईकैचर की आवाज़ सुनी। सौभाग्य से वह अभी भी वहीं थी। पक्षियों की आवाज़ रिकॉर्ड करना मेरे लिए एक तरह का जुनून बन गया है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।'
उनके आखिरी शब्द कार रोकने के लिए आभार व्यक्त करने के लिए थे। हैरानी की बात यह थी कि उन्होंने अपने बारे में इतना कुछ बताया, फिर भी उनमें हममें कोई दिलचस्पी नहीं दिखी।
हमने उसे हजारीबाग के मुख्य इलाके में स्थित यूरेका ऑटोमोबाइल्स के बाहर छोड़ दिया। उसने फिर से कहा, 'आपका बहुत-बहुत धन्यवाद' और गाड़ी से उतर गया। फिर अचानक मुड़कर पूछा, 'वैसे, आप कहाँ ठहरेंगे?'

फेलूदा को अपनी बात सुनाने के लिए ज़ोर से बोलना पड़ा, क्योंकि आस-पास बहुत सारे लोग जमा थे और किसी बात पर उत्साह से बातें कर रहे थे। हमें थोड़ी देर बाद इस उत्साह का कारण पता चला।
'मैं आपको रास्ता नहीं बता सकता, क्योंकि हजारीबाग में यह हमारी पहली यात्रा है। मैं बस इतना ही बता सकता हूँ कि यह घर श्री सहाय का है और यह जिला बोर्ड के विश्राम गृह से ज्यादा दूर नहीं है।'
'अच्छा, तो फिर यह हमारे घर से सात मिनट से ज़्यादा दूर नहीं हो सकता। क्या आपके पास टेलीफ़ोन है?'
‘हां—742।’
'अच्छा।'
मेरा नाम मिटर है। पी.सी. मिटर।
‘मैं समझ गया। मैंने तो आपका नाम भी नहीं पूछा। क्षमा करें।’
हमने अलविदा कहा और अपने-अपने रास्ते चले गए। फेलुदा ने कहा, 'शायद वह नया उत्पाद लॉन्च करने को लेकर तनाव में है।'
लालमोहन बाबू ने संक्षेप में कहा, 'अजीबोगरीब'।
ज़िला बोर्ड का विश्राम गृह ढूँढ़ना मुश्किल नहीं था। श्री सहाय का घर कुछ ही दूरी पर था। हमारी कार रुकी और हमने गेट के बाहर हॉर्न बजाया, जिसके ऊपर बोगनविलिया की रंग-बिरंगी शाखाएँ लटकी हुई थीं। तुरंत ही एक छोटे कद का अधेड़ उम्र का आदमी निकला और गेट खोल दिया। फिर वह एक तरफ खड़ा हो गया और हमें सलाम किया। हम एक लंबी सड़क पर गाड़ी चलाते हुए एक बंगले के सामने रुके। गेट खोलने वाला आदमी दौड़कर हमारा सामान लेने आया। पता चला कि वह चौकीदार, बुलाकीप्रसाद था।
गाड़ी से उतरते ही मुझे एहसास हुआ कि चारों ओर कितनी शांति थी। बंगला एक विशाल परिसर से घिरा हुआ था (लालमोहन बाबू ने उसे देखते ही कहा, 'कम से कम तीन एकड़ का होगा!')। एक तरफ सुंदर फूलों की क्यारियों वाला बगीचा था। दूसरी तरफ कई बड़े-बड़े पेड़ खड़े थे। मैंने उनमें आम और इमली के पेड़ पहचान लिए। परिसर की दीवार के उस पार, दूर, लगभग दो मील की दूरी पर कनारी पहाड़ियाँ थीं।
यह घर तीन लोगों के लिए आदर्श लग रहा था। तीन सीढ़ियाँ बरामदे तक जाती थीं, जिसके पीछे तीन कमरे थे। बीच वाला कमरा बैठक था, और बाकी दो शयनकक्ष थे।

लालमोहन बाबू ने पश्चिम की ओर मुख वाला कमरा चुना क्योंकि उन्हें लगा कि इससे उन्हें हर शाम सूर्यास्त का सुंदर दृश्य दिखाई देगा।
हमने अभी सामान खोलना शुरू ही किया था कि बुलाकीप्रसाद एक ट्रे में चाय के तीन कप लेकर अंदर आए और कुछ ऐसा कहा जिससे हम सबने सब कुछ छोड़ दिया और उन्हें घूरने लगे।
उन्होंने कहा, 'जब आप बाहर जाएं, महोदय, तो कृपया बहुत सावधानी बरतें।' ‘क्यों? क्या जेबकतरे घूम रहे हैं?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। ‘नहीं, साहब। ग्रेट मैजेस्टिक सर्कस का एक बाघ भाग गया है।’ क्या! आखिर ये आदमी किस बारे में बात कर रहा था? बुलाकीप्रसाद ने हमें सारी जानकारी देने में जरा भी संकोच नहीं किया। उसी सुबह एक विशाल बाघ अपने पिंजरे से भाग निकला था। उसे नहीं पता था कि यह कैसे हुआ, लेकिन पूरा शहर दहशत में था। सर्कस का मुख्य आकर्षण यही बाघ था। मुझे रांची में देखे गए सभी पोस्टरों पर बाघ की तस्वीर याद आ गई। फेलुदा ने तो उसके प्रशिक्षक का नाम भी देखा था। ‘एक मराठी आदमी,’ उसने कहा, ‘उसका नाम करंदीकर है।’
यह खबर सुनकर लालमोहन बाबू कुछ पल चुप रहे। फिर उन्होंने कहा, “ये तो टेलीपैथी का कमाल है। यकीन मानिए, मैं सोच रहा था कि क्या मैं अपनी किताब में कुछ ऐसा लिख सकता हूँ? मतलब, सर्कस से बाघ का भाग जाना कितना रोमांचक होता है, है ना? लेकिन आप, फेलू बाबू, बिल्कुल गुमनाम रहना। अगर उन्हें पता चल गया कि आप जासूस हैं, तो वे आपको ही उस जानवर को ढूंढने के लिए कहेंगे, मेरी बात याद रखना!”
फेलुदा और मैं दोनों ही जो कुछ हमने सुना उससे इतने हैरान थे कि हममें से किसी ने भी यह बताना ज़रूरी नहीं समझा कि वह शब्द वास्तव में 'गुप्त' था। हालाँकि, उसे डरने की कोई ज़रूरत नहीं थी। फेलुदा बिना किसी ठोस कारण के कभी भी किसी को अपने पेशे के बारे में नहीं बताता था।
बुलाकीप्रसाद ने हमें यह भी बताया कि पहले सर्कस शहर के बीचोंबीच स्थित कर्ज़न पार्क नामक एक पार्क में आयोजित होता था। लेकिन इस साल किसी कारणवश वे शहर के एक छोर पर स्थित एक खुले मैदान में चले गए, जिसके आगे एक जंगल फैला हुआ था। बाघ को जंगल में जाने के लिए बस मुख्य सड़क पार करनी पड़ती थी। जंगल में छोटे-छोटे आदिवासी गाँव थे, इसलिए वह आसानी से उनके पालतू जानवरों को खा सकता था।

हजारीबाग पहुँचने के कुछ ही मिनटों के भीतर हमें इतनी सनसनीखेज खबर सुनने की कल्पना भी नहीं थी। लेकिन यह बड़े अफसोस की बात थी कि हम सड़कों पर बिना किसी जंगली जानवर से सावधान हुए चल नहीं सकते थे। चाय खत्म होने के बाद लालमोहन बाबू ने सुझाव दिया कि दोपहर में सर्कस जाकर पता लगाना अच्छा रहेगा कि आखिर हुआ क्या था।
'जब आप सर्कस देखने की बात करते हैं, तो क्या आपका मतलब शो देखने जाना है?' फेलुदा ने पूछा।
'नहीं, ऐसा नहीं है। मैं वास्तव में मालिक से मिलने की सोच रहा था। वह हमें सब कुछ बता पाएंगे, है ना?'
'जी हां। लेकिन, श्री जटायु, ऐसा करने के लिए आपको निश्चित रूप से फेलू मित्तर की सहायता की आवश्यकता होगी।'

दो

बुलाकीप्रसाद की पत्नी ने दोपहर के भोजन में अरहर दाल और चिकन करी बनाई। हमने उसका भरपूर आनंद लिया और फिर कार से निकल गए। लालमोहन बाबू की तरह ही फेलुदा भी भागे हुए बाघ के बारे में जानने के लिए उत्सुक था। निकलने से पहले उसने स्थानीय पुलिस स्टेशन में फोन किया। पिछले मामले में उसे बिहार पुलिस के साथ काम करना पड़ा था, और हजारीबाग में सर्वेश्वर सहाय का नाम सर्वविदित था। फोन उठाने वाले इंस्पेक्टर राउत ने फेलुदा का नाम पहचान लिया, जैसे ही उसने अपना परिचय दिया और फोन करने का कारण बताया। मौजूदा हालात में सर्कस मालिक से मिलने के लिए हमें पुलिस की मदद की ज़रूरत थी। इंस्पेक्टर राउत ने कहा, 'हमारा एक आदमी मुख्य द्वार के बाहर तैनात है। वह आपको अंदर जाने देगा।' फेलुदा ने उन्हें बताया कि वह केवल जिज्ञासावश वहाँ जाना चाहता है, कोई जाँच शुरू करने के लिए नहीं।
सर्कस जाते समय हमने देखा कि गली के कोनों पर पुरुषों के समूह जमा थे और आपस में जोश से बातें कर रहे थे। एक बड़े चौराहे के पास, कोई ढोल बजा रहा था और चेतावनी भरे नारे लगा रहा था। फेलुदा सिगरेट का एक पैकेट खरीदने के लिए एक छोटी सी दुकान पर रुका। दुकानदार ने उसे बताया कि हजारीबाग के उत्तर में स्थित दाहिरी नामक गाँव के पास बाघ देखा गया था, लेकिन किसी तरह के नुकसान की कोई खबर नहीं थी।
सर्कस के करीब पहुँचते ही तंबू देखकर मेरा दिल अचानक खुशी से झूम उठा। मुझे बचपन में फेलुदा जिन सर्कसों में ले जाया करता था, वे सब याद आ गए। ग्रेट मैजेस्टिक सर्कस का नीले और सफेद धारीदार तंबू बहुत साफ-सुथरा था, जिसका मतलब था कि वे वाकई पेशेवर थे और अपने काम में माहिर थे। तंबू के ऊपर एक पीला झंडा लहरा रहा था और परिसर की बाड़ और मुख्य द्वार के बीच झंडियों की कतारें बड़े करीने से लगाई गई थीं। टिकट काउंटर के पास सैकड़ों लोग धक्का-मुक्की कर रहे थे। बाघ के बिना भी शो जारी रहने वाला था। कई अन्य पोस्टरों में दिखाया गया था कि सर्कस में और क्या-क्या देखने को मिलेगा।

उन्हें बनाने वाला कलाकार कोई खास प्रतिभाशाली तो नहीं लग रहा था, लेकिन उसने जो कुछ भी बनाया था, वह जिज्ञासा और उत्साह जगाने के लिए काफी था। ड्यूटी पर तैनात कांस्टेबल को हमारे बारे में पता चल गया था। उसने फेलुदा को सलाम किया और हमें तुरंत अंदर जाने दिया। कांस्टेबल ने कहा, 'श्री कुट्टी—यानी मालिक—को सूचित कर दिया गया है। वे अपने कमरे में आपका इंतजार कर रहे हैं।'
तंबू के पीछे एक खुला स्थान था। यह स्थान नालीदार टिन की चादरों से बनी एक दीवार पर समाप्त होता था। श्री कुट्टी का कारवां उस दीवार के ठीक पीछे खड़ा था। तंबू की तरह ही, यह भी साफ-सुथरा और अच्छी तरह से रखा हुआ था। दोनों तरफ खिड़कियों की कतारें थीं। इन पर आकर्षक डिज़ाइन वाले पर्दे लगे थे, जिनसे होकर सूरज की रोशनी अंदर आती थी और फर्नीचर पर धब्बे बनाती थी। हमें आते देख श्री कुट्टी उठे और हमसे हाथ मिलाया। फिर उन्होंने एक छोटे सोफे की ओर इशारा किया। वे लगभग पचास वर्ष के लग रहे थे, हालांकि उनके बाल पूरी तरह सफेद हो चुके थे। जब वे मुस्कुराते थे, तो कारवां के अर्ध-अंधेरे में उनके दांत चमकते थे। वे स्पष्ट रूप से उनके अपने दांत थे, नकली नहीं। जैसे ही हम बैठे, फेलुदा ने समझाया कि उन्होंने पुलिस से किसी काम के लिए नहीं, बल्कि ग्रेट मैजेस्टिक सर्कस के बारे में बहुत कुछ सुना था और उनका शो देखने के लिए फोन किया था। उन्होंने कहा, 'कितने अफसोस की बात है कि हम आपका सबसे बेहतरीन शो नहीं देख पाएंगे!' फिर उन्होंने लालमोहन बाबू का परिचय एक प्रसिद्ध लेखक के रूप में कराया, जिन्हें सर्कस में रुचि थी और वे इस पर एक किताब लिखना चाहते थे।
श्री कुट्टी ने सिर हिलाया। उन्होंने हमें बताया, ‘सर्कस में आने से पहले मैंने कलकत्ता में एक शिपिंग कंपनी में छह साल काम किया। मुझे बंगाली लोग पसंद हैं। वे सर्कस की असली भावना को समझते और सराहते हैं। कृपया हमारे बाघ के न होने से निराश न हों। देखने के लिए और भी बहुत कुछ है। कल हमारा एक विशेष शो था। कई जानी-मानी हस्तियों को आमंत्रित किया गया था। मैं अब आपको आमंत्रित कर रहा हूँ, आप हमारे किसी भी शो में आ सकते हैं।’
‘धन्यवाद,’ लालमोहन बाबू ने अप्रत्याशित रूप से कहा। ‘यह कैसे हुआ? मेरा मतलब है, बाघ...?’
श्री कुट्टी ने कहा, “यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है, श्री गांगुली। पिंजरे का दरवाजा ठीक से बंद नहीं था। बाघ ने उसे धक्का देकर खोल दिया। वैसे तो वह

खुले में नहीं निकल पाता, लेकिन किसी ने शॉर्टकट बनाने के लिए पार्टीशन का एक हिस्सा हटा दिया था और फिर उसे वापस लगाना भूल गया। इसलिए बाघ उस गैप से बाहर निकल गया। मैंने जिम्मेदार व्यक्ति का पता लगाने और यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए हैं कि ऐसा दोबारा न हो।”
‘क्या बंबई में एक बाघ इसी तरह भाग निकला था?’ फेलुदा ने पूछा। ‘हाँ, राष्ट्रीय सर्कस से। वह वास्तव में बंबई की सड़कों पर निकल आया था, लेकिन रिंगमास्टर ने उसे ज्यादा दूर जाने से पहले ही पकड़ लिया था।’
श्री कुट्टी ने हमें भागे हुए बाघ के बारे में कुछ और बताया। बताया जाता है कि उसे कम से कम पचास अलग-अलग लोगों ने देखा था। कई स्रोतों से खबरें आई थीं। एक महिला ने उसे अपने आंगन में घुसते देखा और तुरंत बेहोश हो गई। बाघ ने उसे क्यों और कैसे बिना नुकसान पहुंचाए छोड़ दिया, यह पता नहीं चल पाया था। फिर एक नेपाली व्यक्ति था जिसने बाघ को सड़क पार करते देखा था। संयोग से वह उस समय स्कूटर चला रहा था। बाघ को देखकर घबराकर उसने अपना स्कूटर सीधे एक खंभे से टकरा दिया और अब तीन पसलियां टूटने के कारण अस्पताल में भर्ती है।
‘ज़रूर आपके पास कोई रिंगमास्टर होगा?’ लालमोहन बाबू ने पूछा।
जी हां, करंदीकर। लेकिन कुछ समय से उनकी तबीयत ठीक नहीं है। आप जानते ही हैं, उनकी उम्र लगभग चालीस साल है। उन्हें अक्सर गर्दन में दर्द होता है, लेकिन इसके बावजूद वे प्रदर्शन करते रहते हैं। मैंने उन्हें लाखों बार डॉक्टर से मिलने के लिए कहा है, लेकिन वे सुनते ही नहीं। इसलिए, लगभग एक महीने पहले, मैंने चंद्रन नाम के एक और प्रशिक्षक को नियुक्त किया। वे केरल के रहने वाले हैं और अपने काम में बहुत कुशल हैं। जब करंदीकर की तबीयत खराब होती है, तो वही रिंगमास्टर की भूमिका निभाते हैं।
‘कल के विशेष शो में बाघ के साथ किसने प्रस्तुति दी?’ फेलुदा जानना चाहता था।
‘करंदीकर। वो ठीक लग रहा था। एक खास करतब है जो सिर्फ वही कर सकता है। चंद्रन ने कभी नहीं किया। करंदीकर अपने हाथ बाघ के मुंह में डालता है, उसे चौड़ा खोलता है, फिर अपना सिर उसमें डाल देता है। दुर्भाग्य से, कल कुछ गड़बड़ हो गई। उसने दो बार कोशिश की, लेकिन बाघ ने अपना मुंह खोलने से इनकार कर दिया। दोबारा कोशिश करने के बजाय, करंदीकर ने हार मान ली और अपना

शो खत्म कर दिया। कुछ लोगों ने तालियां बजाईं, लेकिन कई लोगों ने उसका मजाक उड़ाया और उस पर हूटिंग की।’
‘क्या तुमने इसके बारे में कुछ नहीं किया?’
'बिल्कुल। वह सत्रह साल से मेरे साथ है, लेकिन कल रात मुझे उससे बहुत सख्ती से बात करनी पड़ी। अब वह कह रहा है कि वह सर्कस छोड़ देगा। यह उसके और हमारे दोनों के लिए बहुत दुर्भाग्यपूर्ण होगा। मुझे लगता है कि वह कम से कम तीन साल और आसानी से प्रदर्शन कर सकता है। ग्रेट मैजेस्टिक के साथ काम करने से वह काफी मशहूर हो गया है।'
‘क्या आपकी टीम का कोई भी सदस्य बाघ को ढूंढने नहीं गया?’
‘करंदीकर को जाना चाहिए था, लेकिन उन्होंने तलाशी दल के साथ किसी भी तरह का संबंध रखने से साफ इनकार कर दिया। इसलिए मैंने चंद्रन को वन विभाग के लोगों के साथ भेजा।’
‘क्या हम करंदीकर से मिल सकते हैं?’ लालमोहन बाबू ने बड़े साहस से पूछा। ‘आप कोशिश कर सकते हैं, लेकिन इसकी कोई गारंटी नहीं है कि वह आपसे मिलने के लिए राजी होंगे। उनका मिजाज बहुत ही बदलता रहता है। मैं अपने सेवक मुरुगेश से कहूंगा कि वह आपको उनके तम्बू तक ले जाए।’
मुरुगेश बाहर खड़ा था। जब हमने श्री कुट्टी को धन्यवाद दिया और उनके काफिले से निकले तो वह हमारे साथ आया।
रिंगमास्टर का तंबू दो हिस्सों में बंटा हुआ था। एक हिस्सा बैठक के रूप में इस्तेमाल होता था। दूसरा हिस्सा स्पष्ट रूप से उसके सोने का स्थान था। हमें आश्चर्य हुआ कि जैसे ही उसे हमारे आने की सूचना मिली, वह अपने 'शयनकक्ष' से बाहर आ गया। उसे देखते ही मुझे समझ आ गया कि एक बाघ अपने आदेश का पालन क्यों करता है। मैंने शायद ही कभी किसी को इतना शारीरिक रूप से मजबूत देखा हो। वह फेलुदा जितना लंबा था, लेकिन उसका शरीर कहीं अधिक मांसल था। गोरी त्वचा पर उसकी काली मूंछें उसे और भी अधिक शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करती थीं। उसकी आँखें कुछ दूर की सोचती थीं, लेकिन कभी-कभी बोलते समय उनमें भावनाओं की चमक आ जाती थी। उसने हमें बताया कि वह अंग्रेजी और हिंदी के अलावा मराठी, तमिल और मलयालम भी बोल सकता है। फेलुदा ने उससे अंग्रेजी में बात करने का फैसला किया।
श्री करंदीकर ने सबसे पहले पूछा कि क्या हमें किसी अखबार ने भेजा है। शायद लालमोहन बाबू के हाथों में मौजूद नोटबुक और पेंसिल ने इस सवाल को जन्म

दिया। फेलुदा को जवाब देने से पहले सोच-समझकर शब्द चुनने पड़े। 'मान लीजिए कि हम अखबार के रिपोर्टर हैं। क्या इससे कोई फर्क पड़ेगा? मेरा मतलब है, क्या आपको प्रेस से बात करने में कोई आपत्ति होगी?' फेलुदा ने पूछा।
'अरे नहीं। बिल्कुल नहीं। मुझे उनसे बात करके खुशी होगी। लोगों को यह बताया जाना चाहिए कि अगर बाघ अपने पिंजरे से भाग गया, तो इसमें उसके पुराने प्रशिक्षक की कोई गलती नहीं थी। इस सर्कस के मालिक को पूरी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। एक बाघ दो अलग-अलग प्रशिक्षकों की बात नहीं मानता। वह केवल एक ही प्रशिक्षक की बात मानता है। दूसरे प्रशिक्षक के आने के कुछ ही समय बाद सुल्तान चिड़चिड़ा होने लगा था। मैंने यह बात श्री कुट्टी को समझाई थी, लेकिन उन्होंने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। अब मुझे उम्मीद है कि वह परिणाम से खुश होंगे।'
‘तुम अपने बाघ को ढूंढने क्यों नहीं गए?’
‘मैं ऐसा क्यों करूं? उन्हें उसे फिर से ढूंढने दो!’ उसने गहरी पीड़ा भरे स्वर में कहा।
लालमोहन बाबू ने फेलुदा के कान में कुछ फुसफुसाया। इसका मतलब था कि वह श्री करंदीकर से कुछ पूछना चाहते थे, लेकिन पूछने से डर रहे थे। फेलुदा ने तुरंत अनुवाद कर दिया।
'अगर दूसरे असफल हो जाते हैं, या किसी कारणवश आपकी उपस्थिति बिल्कुल आवश्यक हो जाती है, तो क्या आप जाएंगे?'
'जी हां, बिल्कुल! अगर मुझे पता चलता है कि कोई मेरे सुल्तान को मारने की सोच रहा है, तो मैं ज़रूर जाकर उसे बचाने की कोशिश करूंगा। मैं उसे परिवार के सदस्य की तरह मानता हूं—नहीं, मैं तो उसे परिवार के सदस्य से भी ज़्यादा अपना मानता हूं।'
मैं भी उनसे कुछ पूछना चाहता था। लेकिन हुआ यूं कि मुझे पूछने की जरूरत ही नहीं पड़ी। फेलुदा ने मुझसे पहले ही बोल दिया।
क्या कभी किसी बाघ ने तुम्हारा चेहरा खरोंचा है?
“हां, लेकिन वो सुल्तान नहीं था। ग्रेट मैजेस्टिक में शामिल होने से पहले मैं गोल्डन सर्कस में काम करता था। वो उनका ही एक बाघ था। उसने मेरे चेहरे पर पंजे मारे; मेरे एक गाल और नाक पर बुरी तरह चोट लगी थी।” फिर उसने अपनी कमीज़ उतार दी। उसके शरीर पर अनगिनत निशान देखकर हम दंग रह गए। भगवान ही जाने कितनी बार उस पर हमला हुआ होगा।

हमारे जाने से पहले, फेलुदा ने उससे आखिरी सवाल पूछा। 'क्या तुम यहीं रहना जारी रखोगे?'
‘मुझे नहीं पता। एक सर्कस में एक छोटा सा तंबू सत्रह साल से अधिक समय से मेरा घर रहा है। अब... शायद मुझे कुछ अलग ढूंढना पड़ेगा। कौन जाने?’ लालमोहन बाबू बाकी सभी जानवरों को देखना चाहते थे। उन्होंने इस बारे में श्री कुट्टी से पहले ही बात कर ली थी। श्री करंदीकर से विदा लेने के बाद, मुरुगेश हमें उस जगह ले गए जहाँ जानवरों को रखा गया था। वहाँ दो और बाघ, एक बड़ा भालू, एक दरियाई घोड़ा, तीन हाथी और छह घोड़े थे। सुल्तान का पिंजरा एक तरफ रखा था। उसकी खामोशी में कुछ अजीब सा सन्नाटा छाया हुआ था।
जब हम घर लौटे तो पाँच बज चुके थे। थोड़ी देर बाद बुलाकीप्रसाद चाय लेकर आए और हमें बताया कि हमारी अनुपस्थिति में श्री चौधरी के घर से कोई आया था। उन्होंने कहा कि वे थोड़ी देर बाद फिर आएंगे।
प्रितिंद्र चौधरी साढ़े छह बजे पहुंचे। तब तक सूरज डूब चुका था और तापमान काफी गिर चुका था। हम सभी ने अपने ऊनी पुलओवर पहन लिए थे।
‘आपने मुझे बताया ही नहीं कि आप एक जासूस हैं!’ प्रितिन बाबू ने बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से कहा। ‘जब मैंने अपने पिता को आपके बारे में बताया, तो उन्होंने कहा कि उन्हें पता था कि आप आ रहे हैं। आपके मुवक्किल, श्री सहाय, उन्हें जानते हैं। उन्होंने संयोगवश आपके आने का जिक्र किया था। मैं अब आपको कल हमारे पिकनिक पर आमंत्रित करने आया हूँ। बाबा चाहते हैं कि आप सभी आएं।’
‘पिकनिक?’ लालमोहन बाबू ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
‘मैंने तुम्हें बताया नहीं था? कल बाबा का जन्मदिन है, इसलिए हम सब राजरप्पा में पिकनिक मनाने जा रहे हैं। हम वहाँ दोपहर का भोजन करेंगे। अगर तुम लगभग नौ बजे अपनी कार से हमारे घर आ जाओ, तो हम सब एक साथ निकल सकते हैं। हमारे घर का नाम कैलाश है। यह यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं है, मैं तुम्हें रास्ता बता दूँगा। और,’ उन्होंने आगे कहा, ‘अगर तुम नौ बजे से थोड़ा पहले आ जाओ, तो तुम मेरे पिताजी के तितलियों और पत्थरों के संग्रह को देख पाओगे।’
राजरप्पा हजारीबाग से पचास मील दूर था। यहाँ एक झरना और छिन्नमस्ता मंदिर नामक एक प्राचीन काली मंदिर था। यह अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए

प्रसिद्ध था। हमने इसके बारे में पहले सुना था और वास्तव में अपनी यात्रा के दौरान वहाँ जाने की योजना भी बनाई थी।
‘लेकिन…’ लालमोहन बाबू ने संदेह से कहना शुरू किया, ‘क्या आपने बाघ के बारे में नहीं सुना?’
‘जी हां, बिल्कुल,’ प्रितिन बाबू हंसते हुए बोले, ‘लेकिन घबराने की कोई बात नहीं है। मेरा भाई निशानेबाज है। वह अपनी बंदूक साथ ले जाएगा। वैसे भी, बाघ उत्तर की ओर चला गया है। राजरप्पा हजारीबाग के दक्षिण में, रामगढ़ के पास है। आप निश्चिंत रहिए।’
फेलुदा ने उन्हें धन्यवाद दिया और कहा कि हम साढ़े आठ बजे उनके घर पहुँचेंगे। प्रितिन बाबू ने हमें आवश्यक दिशा-निर्देश दिए और चले गए। ‘मुझे आश्चर्य है कि इस घर का नाम कैलाश क्यों है?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। ‘शायद इसलिए कि इसके मालिक का नाम महेश है,’ फेलुदा ने जवाब दिया। ‘महेश, शिव का ही दूसरा नाम है, है ना? चूंकि शिव कैलाश पर्वत पर निवास करते हैं, इसलिए महेश चौधरी ने अपने घर का नाम भी वही रख दिया।’
बाहर घना अंधेरा छा चुका था। लेकिन हमने बत्तियाँ नहीं जलाईं क्योंकि चाँद निकल आया था और हम बरामदे में उसकी रोशनी में बैठना चाहते थे। पता नहीं क्यों, लालमोहन बाबू धीरे-धीरे ‘छिन्नमस्ता’ शब्द बुदबुदा रहे थे। फिर अचानक ‘छिन—’ पर रुक गए क्योंकि फेलुदा ने हाथ उठा दिया था।
हम कुछ पल चुपचाप बैठे रहे। बाहर झींगुरों की लगातार आवाज़ के अलावा कोई शोर नहीं था। तभी दूर से एक अलग सी आवाज़ आई। उसे सुनकर मेरा खून जम गया, क्योंकि मैंने उसे पहले भी सुना था। वह एक बाघ की दहाड़ थी। हमने उसे तीन बार सुना।
सुल्तान कहीं से पुकार रहा था। केवल एक अनुभवी शिकारी ही बता सकता था कि वह कितनी दूर है और किस दिशा से पुकार रहा है।

तीन

मैंने सोचा था कि बाघ के भाग जाने की खबर हमारे प्रवास की सबसे यादगार घटना होगी। लेकिन किसे पता था कि कुछ और ही घटेगा, और फेलुदा उससे इस कदर जुड़ जाएगा? महेश चौधरी का 23 नवंबर का जन्मदिन मैं लंबे समय तक नहीं भूल पाऊंगा। और राजरप्पा के दृश्य, विशेष रूप से छिन्नमस्ता मंदिर, जो अपने विचित्र रूप से सुंदर शुष्क और पथरीले पृष्ठभूमि के बीच खड़ा है, हमेशा मेरी स्मृति में जीवंत रहेंगे।
लेकिन मुझे पिछली शाम की बात करनी होगी। बाघ की दहाड़ सुनकर लालमोहन बाबू का चेहरा पीला पड़ गया। हालांकि, जैसे ही मैं उन्हें हमारे कमरे में सोने का सुझाव देने वाला था, उन्होंने कहा कि वे ठीक हैं, लेकिन क्या उन्हें पांच सेल वाली बड़ी टॉर्च मिल सकती है? इसका कारण यह था कि उन्होंने कहीं सुना था कि अगर बाघ की आंखों में कुछ सेकंड से ज़्यादा तेज़ रोशनी पड़े तो वह पीछे हट जाता है। अपने कमरे में जाने से पहले उन्होंने कहा, 'ध्यान रहे, अगर बाघ मेरी खिड़की के बाहर दहाड़े, तो मुझे नहीं पता कि मुझमें खिड़की खोलकर टॉर्च की रोशनी उसके चेहरे पर डालने की हिम्मत होगी या नहीं। लेकिन बुलकीप्रसाद ने मुझे बताया है कि उसके पास हथियार है और वह जंगली जानवरों से नहीं डरता।'
सौभाग्य से, अगर बाघ आधी रात को हमारे पास आ भी जाता, तो उसने दहाड़ने का फैसला नहीं किया; इसलिए सब ठीक था।
अगली सुबह हम ठीक साढ़े आठ बजे कैलाश पहुँच गए। लालमोहन बाबू ने घर को देखते ही कहा, 'इस कैलाश में जो शिव निवास करते हैं, वे ज़रूर अंग्रेज़ होंगे!' फेलुदा और मैं उनकी बात से सहमत थे। हालाँकि यह घर दस साल पहले ही बना था, लेकिन देखने में यह पचास साल पहले ब्रिटिश काल में बने घर जैसा लग रहा था।
एक चौकीदार ने हमारे लिए गेट खोला। हम अंदर गए और परिसर के एक कोने में गाड़ी खड़ी कर दी। वहाँ तीन गाड़ियाँ थीं। प्रितिन बाबू की काली एम्बेसडर, एक सफेद फिएट और एक पुरानी पीली पोंटियाक।

‘देखो, फेलू बाबू, मुझे सुराग मिल गया!’ लालमोहन बाबू ने उत्साह से कहा।
उन्हें लॉन के किनारे एक कागज़ का टुकड़ा मिला था। श्री सहाय के घर की तरह, कैलाश के घर के एक तरफ बगीचा था।
‘जब कोई रहस्य ही न हो तो सुराग कैसे मिलेगा?’ फेलुदा हँसा।
मुझे पता है, लेकिन इस पर जो लिखा है उसे देखो। क्या यह कुछ रहस्यमय नहीं लगता?
यह किसी बच्चे की अभ्यास पुस्तिका से फटा हुआ एक पन्ना था। उस पर वर्णमाला के कुछ अक्षर लिखे हुए थे। इसमें कोई रहस्य नहीं था। जिसने भी इसे लिखा था, वह अक्षर 'X' का बहुत शौकीन लगता था। उस पर लिखा था:
एक्सएलएनसी
एक्स्ट्रा लार्ज
एक्सपीडीएनसी
एनएमई
OICURMT
फेलुदा ने मुस्कुराते हुए उसे अपनी जेब में रख लिया।
बरामदे के पास एक बहुत बुजुर्ग मुस्लिम वेटर खड़ा था। उसने 'सलाम, हुजूर' कहा और हमें अंदर ले गया। अंदर आते ही हमें एक जानी-पहचानी आवाज़ सुनाई दी। ड्राइंग रूम में कदम रखते ही हमने प्रीतिंद्र चौधरी को देखा। वे आगे बढ़कर हमारा गर्मजोशी से स्वागत करने लगे: 'अरे, अंदर आइए। आपका आना बहुत बड़ी मेहरबानी है!'
हमने उनका अभिवादन किया और फिर दीवारों को घूरते हुए वहीं खड़े रह गए। दीवारों पर फ़्रेम वाली पेंटिंग की जगह, फ़्रेम वाली तितलियाँ लगी हुई थीं। हर फ़्रेम में आठ तितलियाँ थीं, जिन्हें बड़ी सावधानी से पिन लगाकर खूबसूरती से सजाया गया था। ऐसे आठ फ़्रेम थे, जिनमें कुल चौंसठ तितलियाँ थीं, हर तितली अपने पंख फैलाए हुए, मानो उड़ने के लिए तैयार हो। पूरा कमरा उनके चमकीले रंगों से जगमगा रहा था।
कलेक्टर स्वयं सोफे पर बैठे थे। हमें कमरे में आते देख वे मुस्कुराते हुए उठ खड़े हुए। जवानी में वे आकर्षक और शारीरिक रूप से मजबूत रहे होंगे। वे अब भी लंबे थे और सीधे खड़े थे। उनका रंग गोरा था, दाढ़ी साफ थी और उन्होंने बढ़िया धोती, रेशमी कुर्ता और भारी कढ़ाई वाली कश्मीरी शॉल ओढ़ी हुई थी। उनकी नाक पर बिना फ्रेम का चश्मा लगा हुआ था।

प्रितिन बाबू को केवल फेलुदा का नाम पता था, इसलिए लालमोहन बाबू और मेरा परिचय फेलुदा के माध्यम से ही हुआ। महेश चौधरी कुछ कह पाते, उससे पहले ही लालमोहन बाबू ने कहा, 'आपको जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं, महोदय!'
श्री चौधरी हँसे। “शुक्रिया, शुक्रिया! मुझे समझ नहीं आता कि मुझ जैसे बूढ़े आदमी को अपना जन्मदिन क्यों मनाना चाहिए, लेकिन यह सब मेरी बहू ने ही आयोजित किया था। देखिए, उसने मुझे सजने-संवरने के लिए भी कहा। लेकिन मुझे बहुत खुशी है कि आप आ सकीं। उम्मीद है आपको हमारी के डैश आईलैश ढूंढने में कोई परेशानी नहीं हुई होगी?”
लालमोहन बाबू और मैं उसे अवाक होकर देखते रहे। लेकिन फेलुदा ने एक पल के लिए ही अपनी भौहें उठाईं और फिर कहा, 'नहीं, महोदय, हमें यह बहुत आसानी से मिल गया।'
'अच्छा। मुझे पता था कि तुम मेरा मतलब समझ जाओगे। तुम्हें कोड और सिफर से निपटने की आदत होगी। हालांकि, तुम्हारे दोस्त अभी भी उलझन में दिख रहे हैं।'
फेलुदा को समझाने के लिए अपनी छोटी नोटबुक और कलम निकालनी पड़ी और कोड लिखना पड़ा। उन्होंने लिखा, 'के—पलक।' मुस्कुराते हुए उन्होंने कहा, 'अब जल्दी से ये शब्द बोलो।' लालमोहन बाबू तुरंत तेजी से 'के पलक, के पलक' बोलने लगे और अचानक रुककर बोले, 'ओह, ओह, मुझे समझ आ गया। ये कैलाश जैसा ही लगता है, है ना?'
मुझे हंसी आ गई। तभी मैंने कमरे के बीचोंबीच फर्श पर बैठी लगभग पांच साल की एक छोटी बच्ची को देखा, जिसकी गोद में एक गुड़िया थी। उसके हाथ में एक चिमटी थी। वह बार-बार उससे गुड़िया के माथे को दबा रही थी, शायद यह दिखाने के लिए कि वह उसकी भौहें निकाल रही है।
श्री चौधरी ने कहा, 'यह मेरी पोती है। यह एक प्रतिभाशाली बच्ची है।'
‘अच्छा समझ गया। तुम्हारा मतलब है कि उसका नाम बीबी है?’ फेलुदा ने पूछा। इस बार तो मैं भी समझ गया कि डबल-बी का मतलब बीबी ही हो सकता है। फेलुदा और मैं घर पर अक्सर शब्दों के खेल खेलते थे, इसलिए यह समझना मुश्किल नहीं था।
‘जी हाँ। मुझे शब्दों से खेलना अच्छा लगता है,’ महेश चौधरी ने समझाया। ‘मैं अपने भाई को बुला लाता हूँ,’ प्रीतिन बाबू ने कहा और कमरे से बाहर चले गए।
हम बैठ गए। श्री चौधरी हल्के से मुस्कुरा रहे थे और सीधे फेलुदा की ओर देख

रहे थे। फेलुदा ने बिना किसी झिझक के उनकी ओर देखा और बदले में मुस्कुरा दिया।
‘वाह वाह वाह!’ श्री चौधरी ने अंत में कहा। ‘सर्वेश्वर सहाय ने आपकी बहुत प्रशंसा की थी। इसलिए जब मुझे पता चला कि आप यहाँ हैं, तो मैंने ट्रे को आपको बुलाने के लिए कहा। श्री मिटर, मेरा जीवन रहस्यों से भरा है। देखते हैं कि आप इनमें से कोई रहस्य सुलझा पाते हैं या नहीं।’
‘ट्रे? क्या आपका मतलब आपके तीसरे बेटे से है?’
‘फिर से सही।’
मुझे शब्दों के खेल भी पसंद हैं।
‘बहुत बढ़िया। मेरा बड़ा बेटा—जिसे मैं ऐस कहता हूँ—कभी-कभी मेरी सांकेतिक भाषा समझ लेता है, लेकिन ट्रे तो बिलकुल ही नासमझ है। वैसे, आप कितने समय से जासूस के रूप में काम कर रहे हैं?’
लगभग आठ साल।
‘मैं समझ गया। श्री गांगुली के बारे में क्या? वह क्या करते हैं?’
वह जटायु के छद्म नाम से हत्या संबंधी रहस्य उपन्यास लिखते हैं।
'सचमुच? क्या बढ़िया संयोजन है! एक रहस्य पैदा करता है, दूसरा उन्हें नष्ट करता है।'
फेलुदा ने टिप्पणी करते हुए कहा, 'मैं आपके पत्थरों और तितलियों के संग्रह को देख सकता हूँ, लेकिन क्या आप कुछ और भी इकट्ठा करते थे?'
एक कोने में रखे कांच के बक्से में चट्टानें और पत्थर प्रदर्शित थे। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि पत्थर इतने अलग-अलग प्रकार और रंगों के हो सकते हैं। लेकिन फेलुदा का क्या मतलब था? श्री चौधरी काफी हैरान दिखे और उन्होंने पूछा, 'आप अन्य संग्रहों के बारे में क्यों पूछ रहे हैं? मैं और क्या-क्या इकट्ठा कर सकता था?'
'छोटी बीबी जिस चिमटी का इस्तेमाल कर रही है, वह काफी पुरानी लग रही है।' ‘वाह! वाह!’ श्री चौधरी ने कहा। ‘आपकी नज़रें तो कमाल की हैं! लेकिन आप बिल्कुल सही हैं। मैं भी डाक टिकटें इकट्ठा करता था, और ये मेरी चिमटियाँ थीं। आज भी, मैं कभी-कभी गिबन्स कैटलॉग देखता हूँ। डाक टिकट संग्रह मेरे जीवन का पहला जुनून था। जब मैं वकील था, तो मेरे एक मुवक्किल, डोराबजी ने मुझे अपना डाक टिकट एल्बम यह दिखाने के लिए दिया कि वह कितना आभारी है। तब

तक डाक टिकटों में उनकी रुचि शायद खत्म हो गई होगी, वरना वे इसे ऐसे ही न दे देते। इसमें कई दुर्लभ और कीमती डाक टिकटें थीं।’
यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैंने खुद भी डाक टिकटें इकट्ठा करना शुरू कर दिया था, और मुझे पता था कि फेलुदा भी बचपन में यही किया करता था।
‘क्या हम वह एल्बम देख सकते हैं?’ फेलुदा ने पूछा।
कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद श्री चौधरी ने कहा, 'क्षमा करें?' वे अचानक थोड़े चिंतित हो गए थे। फिर उन्होंने खुद को संभाला।
‘एल्बम?’ उसने कहा। ‘नहीं, मुझे खेद है कि मैं आपको इसे नहीं दिखा सकता। यह खो गया है।’
'खो गया?'
'हाँ। क्या मैंने अभी-अभी तुम्हें नहीं बताया कि मेरी ज़िंदगी रहस्यों से भरी है? रहस्य... या तुम उन्हें त्रासदी भी कह सकते हो। लेकिन आज जैसे अच्छे दिन में इसके बारे में बात न करें... चलो, ऐस, मैं तुम्हें मिलवाती हूँ!' प्रितिन बाबू अपने भाई के साथ वापस लौटे थे। भाई उनसे काफी बड़े थे, लेकिन दोनों भाइयों में काफी समानता थी। 'ऐस' दिखने में आकर्षक थे, हालांकि थोड़े मोटे थे।
श्री चौधरी ने कहा, 'ट्रे शायद आपको माइक के बारे में बहुत कुछ बता सकता है। ऐस केवल अभ्रक के बारे में बात कर सकता है। उसका अभ्रक का कारोबार है। उसका असली नाम अरुणेंद्र है। उसका कार्यालय कलकत्ता में है, लेकिन काम के सिलसिले में उसे अक्सर हजारीबाग आना पड़ता है।'
फेलुदा ने कहा, ‘नमस्कार, आप ऐस हैं और प्रितिन बाबू ट्रे हैं। क्या वो ड्यूस है?’ वो चांदी के फ्रेम में लगी एक तस्वीर को देख रहे थे। ये एक पारिवारिक समूह तस्वीर थी, जो कम से कम पच्चीस साल पहले ली गई थी। महेश चौधरी और उनकी पत्नी दो छोटे लड़कों के साथ खड़े थे। एक तीसरा, काफी छोटा लड़का, उनकी पत्नी की गोद में था। खड़े हुए दोनों लड़कों में से छोटा लड़का ही ड्यूस होना चाहिए।
‘जी हां, आप सही कह रहे हैं,’ श्री चौधरी ने उत्तर दिया, ‘लेकिन आपको उनसे मिलने का मौका शायद कभी न मिले, क्योंकि वे गायब हो चुके हैं।’
ऐस—अरुण बाबू—ने संक्षेप में बताया: 'उनका नाम बीरेन था। वे उन्नीस साल की उम्र में इंग्लैंड जाने के लिए घर छोड़ गए और फिर कभी वापस नहीं लौटे।'

‘हमें इस बारे में निश्चित रूप से पता नहीं है, है ना?’ श्री चौधरी ने संशयपूर्ण लहजे में कहा।
‘अगर उसने ऐसा किया होता, बाबा, तो आपको इसके बारे में जरूर पता होता?’
‘कौन जाने? उसने पिछले दस सालों में मुझे एक भी पंक्ति नहीं लिखी!’ श्री चौधरी की आवाज में दर्द झलक रहा था।
इसके बाद किसी ने कुछ नहीं कहा। माहौल अचानक गंभीर हो गया। शायद श्री चौधरी ने यह महसूस कर लिया था। वे खड़े हुए और खुशी से बोले, 'चलिए, मैं आपको आसपास घुमा देता हूँ। अखिल और शंकर अभी तक नहीं आए हैं, है ना? तो हमारे पास थोड़ा समय है।'
‘आपको उठने की जरूरत नहीं है, बाबा,’ अरुण चौधरी ने कहा। ‘मैं उन्हें ऊपर ले जा सकता हूँ।’
'नहीं, महोदय। यह मेरा घर है; मैंने इसकी योजना बनाई और इसे बनवाया। इसलिए, मैं इसे अपने आगंतुकों को दिखाऊंगा।'
हम उनके पीछे-पीछे ऊपर गए। वहाँ तीन शयनकक्ष थे और एक सुंदर चौड़ा बरामदा था जहाँ से उत्तर दिशा की ओर सड़क दिखाई देती थी। दूर से कनारी पहाड़ियाँ धुंधली सी दिखाई दे रही थीं। श्री चौधरी का शयनकक्ष बीच में था। बाकी दो शयनकक्ष फिलहाल भरे हुए थे। एक में अरुण बाबू थे और दूसरे में प्रीतिन बाबू अपनी पत्नी और बेटी के साथ थे। हमें बताया गया कि भूतल पर एक अतिथि कक्ष था। महेश चौधरी के मित्र अखिल चक्रवर्ती उसमें ठहरे हुए थे।
मैंने श्री चौधरी के शयनकक्ष में और भी तितलियाँ और पत्थर देखे। एक कोने में किताबों की अलमारी में लगभग एक जैसी दिखने वाली नोटबुक की कतारें लगी थीं। श्री चौधरी ने फेलुदा को उन्हें देखते हुए पकड़ा और बताया कि ये उनकी डायरी हैं। उन्होंने चालीस वर्षों तक नियमित रूप से डायरी लिखी थीं। बिस्तर के पास रखी मेज पर एक आदमी की छोटी सी फ्रेम वाली तस्वीर थी, लेकिन वह परिवार के किसी सदस्य की नहीं थी। लालमोहन बाबू ने उसे तुरंत पहचान लिया।
'आह, यह मुक्तानंद है, है ना?'
‘जी हां। मेरे दोस्त अखिल ने मुझे यह दिया था,’ श्री चौधरी ने जवाब दिया। फिर उन्होंने फेलुदा की ओर मुड़कर कहा, ‘उसके समर्थन में तीन महाद्वीप हैं।’

‘बिल्कुल सही!’ लालमोहन बाबू काफी उत्साहित लग रहे थे। ‘वह एक प्रसिद्ध तांत्रिक साधु हैं। एशिया, यूरोप और अमेरिका—हर जगह उनके अनुयायी हैं।’ ‘आपको उनके बारे में इतनी जानकारी कैसे है? क्या आप स्वयं उनके भक्त हैं?’ ‘अरे नहीं। लेकिन मेरे पड़ोसियों में से एक है। उसने मुझे अपने गुरु के बारे में बताया था।’ पहली मंज़िल पर देखने लायक और कुछ नहीं था। जैसे ही हम नीचे उतरने लगे, मुझे एक कार के आने की आवाज़ सुनाई दी। श्री चौधरी जिन दो आदमियों का इंतज़ार कर रहे थे, वे जल्द ही आ गए। उनमें से एक की उम्र लगभग महेश चौधरी जितनी ही थी। उसने साधारण धोती और कुर्ता पहना हुआ था और कंधों पर एक सादा गहरे भूरे रंग का शॉल लपेटा हुआ था। यह स्पष्ट था कि उसका कानून की जटिल दुनिया से कभी कोई वास्ता नहीं रहा था; और न ही वह ज़रा भी पश्चिमी तौर-तरीकों से प्रभावित लग रहा था। दूसरा आदमी काफ़ी छोटा था, शायद चालीस से कम उम्र का। वह बहुत ही समझदार और बुद्धिमान लग रहा था। जैसे ही उसने श्री चौधरी को देखा, वह तेज़ी से आगे आया और उनके पैर छुए। बड़े सज्जन के हाथ में मिठाई का एक डिब्बा था। उन्होंने उसे प्रितिन बाबू को देते हुए कहा, ‘देखो, महेश, मेरी बात सुनो। पिकनिक का विचार छोड़ दो। समय बिल्कुल भी शुभ नहीं है, और फिर उस बाघ का भी ध्यान रखना है।’ अगर वह छिन्नमस्ता मंदिर जाने का फैसला करे तो क्या होगा?
श्री चौधरी हमारी ओर मुड़े। ‘कृपया मुझे आप लोगों से परिचय कराने की अनुमति दें। ये व्यक्ति, जिन्हें हर जगह खतरा और संकट ही दिखाई देता है, मेरे बहुत पुराने मित्र अखिल बंधु चक्रवर्ती हैं। ये पहले स्कूल शिक्षक थे। अब ज्योतिष और आयुर्वेद में रुचि रखते हैं। और ये हैं शंकरलाल मिश्रा। मुझे ये नौजवान बहुत प्रिय है। आप कह सकते हैं कि मैं इन्हें अपने बिछड़े हुए बेटे की जगह मानता हूँ।’
हमने एक-दूसरे को नमस्कार किया, और फिर सब लोग जाने की तैयारी करने लगे। अखिल चक्रवर्ती ने आखिरी बार पूछा, 'तो कोई मेरी चेतावनी पर ध्यान नहीं देगा?'
‘नहीं, मेरी प्यारी,’ श्री चौधरी ने उत्तर दिया। ‘मैंने सुना है कि बाघ का नाम सुल्तान है। इसका मतलब है कि वह मुसलमान है। चिंता मत करो, वह किसी हिंदू मंदिर में जाना नहीं चाहेगा। वैसे, श्री मिटर, अगर हो सके तो सर्कस ज़रूर देखना। हमें परसों निमंत्रण मिला था। मैं छोटी बीबी और उसकी माँ के

साथ गई थी। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि भारतीय सर्कस ने इतनी तरक्की कर ली है। खासकर बाघ वाले करतब तो बहुत ही शानदार थे।’
लेकिन क्या अंत में कुछ गड़बड़ नहीं हुई थी?
'हां, लेकिन इसमें रिंगमास्टर की कोई गलती नहीं थी। जानवरों का भी मिजाज बदलता रहता है, है ना? बाघ का मिजाज ठीक नहीं था, बस इतना ही। आखिर वह एक सजीव प्राणी है, कोई मशीन नहीं जो बटन दबाते ही चलने लगे।'
‘हाँ, लेकिन देखो जानवर का क्या हाल हो गया है,’ अरुण बाबू ने टिप्पणी की। ‘हर तरफ दहशत फैली हुई है। उस बाघ को मार देना चाहिए। अगर यह कोई विदेशी सर्कस होता तो ऐसा कभी नहीं होता।’
उसके पिता ने रूखी मुस्कान के साथ कहा, 'हाँ, तुम्हारे हाथ बंदूक उठाने के लिए ज़रूर खुजली कर रहे होंगे। कोई भी सोचेगा कि तुम वन्यजीव विनाश समिति के अध्यक्ष हो!'
राजरप्पा जाने से पहले हमारी मुलाकात एक और व्यक्ति से हुई। वह प्रीतिन चौधरी की पत्नी नीलिमा देवी थीं। अपने परिवार के बाकी सदस्यों की तरह वह भी बेहद खूबसूरत थीं।

चार

राजरप्पा हजारीबाग से अस्सी किलोमीटर दूर था। रामगढ़ पहुँचने पर हमें बाएँ मुड़ना पड़ा, जिससे हम गोला नामक स्थान से होकर गुजरे। गोला के आगे भेरा नदी थी। सभी कारों को यहीं छोड़ना पड़ा और नदी को पैदल पार करना पड़ा। राजरप्पा नदी के दूसरी ओर था, बस थोड़ी ही दूर पैदल चलना था।
शंकरलाल मिश्रा के पास कार नहीं थी, इसलिए वे हमारे साथ चले। दो भारवाहक भी समूह में शामिल हो गए थे। उनमें से एक बुजुर्ग नूर मोहम्मद थे, जो श्री चौधरी के साथ तब से थे जब उन्होंने वकील के रूप में काम शुरू किया था। दूसरे लंबे और हट्टे-कट्टे जगत सिंह थे, जो अरुण चौधरी की राइफल और कारतूस ले जा रहे थे।
श्री मिश्रा बहुत ही मिलनसार और सहज स्वभाव के थे। उन्होंने अपने बारे में जो बताया, उससे ऐसा लगा कि उनके जीवन में भी कोई रहस्य छिपा है। उनके पिता दीनदयाल मिश्रा, महेश चौधरी के चौकीदार थे। पैंतीस साल पहले, जब शंकर सिर्फ चार साल का था, दीनदयाल अचानक एक दिन लापता हो गए। दो दिन बाद, एक लकड़हारे को उनका शव लगभग आठ मील दूर एक जंगल में मिला। उनकी हत्या किसी जंगली जानवर ने की थी। किसी को नहीं पता था कि वे जंगल क्यों गए थे। वहाँ एक पुराना शिव मंदिर था, लेकिन दीनदयाल को कभी वहाँ जाते हुए नहीं देखा गया था।
महेश चौधरी को दीनदयाल के बच्चे पर दया आ गई। वे उसे अपने घर ले आए और अपने बेटे की तरह उसका पालन-पोषण करने लगे। समय के साथ, शंकर एक बहुत ही होनहार छात्र साबित हुआ। उसने छात्रवृत्ति प्राप्त की और रांची विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। फिर उसने रांची में शंकर बुक स्टोर नाम से एक किताबों की दुकान खोली। हाल ही में, उसने हजारीबाग में एक शाखा खोली थी। वह दोनों शहरों के बीच अक्सर यात्रा करता रहता था।
किताबों का जिक्र सुनकर लालमोहन बाबू ने पूछा, 'आप अपनी दुकान में किस तरह की किताबें रखते हैं?'

श्री मिश्रा ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, 'हर तरह की किताबें, जिनमें क्राइम थ्रिलर भी शामिल हैं। हमने आपकी किताबें अक्सर बेची हैं।'
कुछ क्षण बाद, फेलुदा ने पूछा, 'महेश चौधरी का दूसरा बेटा आपकी ही उम्र का रहा होगा। क्या यह सही है?'
‘कौन, बीरेन? वो मुझसे छोटा था, बस कुछ ही महीनों का। हम साथ में स्कूल जाते थे और एक ही कक्षा में पढ़ते थे। तीनों भाई उच्च शिक्षा के लिए कलकत्ता गए, लेकिन बीरेन को इसमें कभी कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। वो हमेशा बेचैन रहता था, रोमांच का शौकीन था। मुझे हैरानी नहीं हुई जब उसने उन्नीस साल की उम्र में घर छोड़ दिया।’
क्या उनके पिता तांत्रिकों और साधुओं में विश्वास करते हैं?
‘पहले तो वो ऐसा नहीं करते थे। लेकिन सालों में उनमें बहुत बदलाव आ गया है। मैंने खुद तो नहीं देखा, लेकिन सुना है कि उनका स्वभाव बहुत गुस्सैल हुआ करता था। हो सकता है कि वो अब साधुओं के पास न जाते हों, लेकिन आज... मेरा मानना है कि राजरप्पा जाने का कारण छिन्नमस्ता का वो मंदिर है।’
'आप क्यों कहते हो कि?'
'वह इसके बारे में बात नहीं करता, लेकिन मैं उसके साथ पहले भी कई बार राजरप्पा जा चुका हूं। मैंने देखा है कि मंदिर जाने पर उसके चेहरे के भाव कैसे बदल जाते हैं।'
क्या इसका संबंध उसके अतीत की किसी घटना से हो सकता है?
‘मुझे नहीं पता। मुझे उनके अतीत के बारे में बहुत कम जानकारी है। यह मत भूलिए कि मैं तो सिर्फ उनके चौकीदार का बेटा था, कभी भी परिवार का हिस्सा नहीं था।’
लगभग साढ़े दस बजे, तीन कारें भेरा नदी के किनारे रुकीं। हमारी कार सबसे आखिर में थी, प्रितिन चौधरी की कार के ठीक पीछे। हमने उन्हें टेप रिकॉर्डर हाथ में लिए हुए कार से उतरते देखा और वे हमारे बाईं ओर पेड़ों के बीच गायब हो गए। महेश चौधरी पहली कार में थे। वे भी उतरे और हमारी ओर आए। उन्होंने कहा, 'नदी पार जाने से पहले एक कप कॉफी पी लेते हैं। राजरप्पा यहाँ से ज्यादा दूर नहीं है। जल्दी करने का कोई फायदा नहीं है।'
हम नदी की ओर चल पड़े। अब उसमें ज़्यादा पानी नहीं था, लेकिन मानसून के बाद अक्सर उसमें घुटनों तक पानी भर जाता था, जिससे उसे पार करना मुश्किल हो जाता था। अभी भी वह काफ़ी तेज़ बह रही थी, अलग-अलग आकार और रंगों की कई

चट्टानों पर से गुज़रते हुए, उनकी सतह को चिकना और घिसती हुई, मानो दामोदर नदी में गिरने की जल्दी में हो। राजरप्पा उस जगह पर खड़े थे जहाँ भेरा नदी दामोदर नदी से मिलती थी।
नीलिमा देवी ने एक फ्लास्क खोला और कागज़ के कपों में कॉफी डालने लगीं। हम सबने भी कॉफी पी ली। केवल प्रितिन बाबू ही वहाँ नहीं थे। शायद उन्हें पक्षियों की आवाज़ें रिकॉर्ड करने के लिए जंगल में और अंदर जाना पड़ा होगा। पेड़ों पर तरह-तरह के पक्षी चहचहा रहे थे।
मैंने अपने आगमन के बाद से मिले हर नए किरदार को गौर से देखा और उसका अध्ययन करने की कोशिश की। फेलुदा ने मुझे ऐसा करना सिखाया था, हालांकि उनकी नज़रें उन बारीकियों को पकड़ लेती थीं जिन्हें मैं अनजाने में नज़रअंदाज़ कर देता था।
हमारे समूह में सबसे छोटी बच्ची ने अपनी गुड़िया को एक सपाट पत्थर पर रखा था और उससे बातें कर रही थी: 'चुपचाप बैठ जाओ, नहीं तो मैं तुम्हें नदी में फेंक दूंगी। तुम्हें यह पसंद नहीं आएगा, है ना?'
अरुण बाबू ने अपनी कॉफ़ी खत्म की, कप फेंक दिया और फिर एक झाड़ी के पीछे गायब हो गए। थोड़ी देर बाद उठते हुए हल्के धुएं से मुझे पता चला कि वह अपने पिता की उपस्थिति में धूम्रपान नहीं करते थे।
महेश चौधरी नदी के किनारे चुपचाप खड़े होकर उसके उफनते पानी को निहार रहे थे। उनके हाथ पीठ के पीछे बंधे हुए थे।
फेलुदा ने दो छोटे पत्थर उठाए और यह देखने के लिए एक को दूसरे से टकरा रहा था कि क्या वे चकमक पत्थर हैं, तभी अखिल चक्रवर्ती उसके पास आए और बोले, 'क्या आप जानते हैं कि आप किस राशि के अंतर्गत पैदा हुए हैं?'
जी हाँ, श्रीमान। कुंभ राशि। एक जासूस के लिए यह अच्छा है या बुरा?’ नीलिमा देवी ने एक जंगली पीला फूल उठाया और उसे अपने बालों में लगा लिया। फिर उन्होंने लालमोहन बाबू की ओर देखा और कुछ ऐसा कहा जिससे वह अपना सिर पीछे करके हँसने लगे। लेकिन, एक पल बाद ही, वह अचानक रुक गए, हाँफने लगे और एक तरफ कूद गए। इस बार नीलिमा देवी की हँसी फूट पड़ी। ‘वह तो बस एक हानिरहित गिरगिट था!’ उन्होंने कहा। ‘कहीं आप उनसे डरते तो नहीं?’
मैंने शंकरलाल को चारों ओर देखा, लेकिन पाया कि वह नदी पार कर चुके थे और दूसरी तरफ भगवा वस्त्र पहने एक व्यक्ति से बात कर रहे थे। कुछ मिनट पहले ही

पर्यटकों से भरी एक बस नदी पार कर चुकी थी। भगवा वस्त्र पहने साधु भी उन्हीं में से एक रहे होंगे।
हमने अपनी कॉफ़ी खत्म की और प्रितिन बाबू वापस आ गए। अब नदी पार करने का समय था। सबने अपने कपड़े कुछ इंच ऊपर उठा लिए। छोटी बीबी ने नूर मोहम्मद की पीठ पर बैठने का फैसला किया, और मैंने लालमोहन बाबू को रुकते, आँखें बंद करते और कुछ बुदबुदाते हुए देखा, फिर उन्होंने एक पत्थर पर कदम रखा। दूसरी तरफ पहुँचने से पहले उनका संतुलन कम से कम तीन बार बिगड़ने वाला था। फिर सूखी ज़मीन पर सुरक्षित उतरते हुए उन्होंने कहा, 'अरे, किसने सोचा था कि यह इतना आसान होगा?'
यहाँ और भी पेड़ थे, हालाँकि इतने नहीं कि इसे जंगल कहा जा सके। फिर भी, लालमोहन बाबू जिस तरह से बार-बार घबराकर पीछे मुड़कर देख रहे थे, उससे मैं समझ गया कि वे बाघ को भूले नहीं थे। कुछ ही मिनटों में हम एक मोड़ पर मुड़े और रुक गए। ऐसा लगा जैसे कोई पर्दा हट गया हो और राजरप्पा सामने आ गए हों। लालमोहन बाबू ने इतनी ज़ोर से 'वाह!' कहा कि दो छोटे पक्षी उड़ गए।
उनके ऐसा कहने का पूरा कारण था। हम जहाँ खड़े थे, वहाँ से मुझे दोनों नदियाँ दिखाई दे रही थीं। बाईं ओर छोटी नदी भेरा थी, और दाईं ओर नीचे दामोदर नदी बह रही थी। वहाँ एक झरना था, जो अभी दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन मुझे उसकी आवाज़ सुनाई दे रही थी। पानी से विशाल चट्टानें उभरी हुई थीं, जो विशाल कछुओं जैसी लग रही थीं। दूर से जंगल शुरू हो रहा था, जिसके आगे पहाड़ियों की एक हल्की नीली रेखा दिखाई दे रही थी। यह सचमुच एक मनमोहक दृश्य था।
मंदिर मात्र बीस गज की दूरी पर था। यह स्पष्ट रूप से काफी प्राचीन था, लेकिन इसके कुछ हिस्सों का हाल ही में जीर्णोद्धार किया गया था। हमें बताया गया कि कुछ ही दिन पहले काली पूजा के लिए यहाँ एक भैंस की बलि दी गई थी। 'मुझे यकीन है कि यहाँ कभी मानव बलि भी दी जाती होगी!' लालमोहन बाबू ने मेरे कान में फुसफुसाया। हो सकता है कि वह सही ही कह रहे हों।
बस से आए यात्रियों में से किसी को भी आसपास के नज़ारों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। सभी लोग मंदिर के सामने इकट्ठा हो गए थे। शंकरलाल महेश चौधरी के बारे में सही कह रहे थे। मैंने उन्हें मंदिर के द्वार पर खड़े होकर अंदर की ओर देखते हुए देखा। वे लगभग एक मिनट तक वहीं रुके रहे, हालांकि अंदर इतना

अंधेरा था कि मूर्ति लगभग दिखाई ही नहीं दे रही थी। फिर वे वहां से हट गए और धीरे-धीरे दूसरों के पीछे चल दिए।
कुछ ही मिनटों में झरना दिखाई देने लगा। दोनों भारवाहक रेत पर दरी बिछाने लगे।
‘यह तो एक अप्रत्याशित बोनस है, है ना?’ लालमोहन बाबू ने कहा। ‘किसने सोचा था कि हमें अपनी यात्रा के दूसरे दिन ही पिकनिक पर आमंत्रित किया जाएगा?’ 'यह तो बस शुरुआत है,' फेलुदा ने कहा।
'वास्तव में?'
'क्या तुमने कभी शतरंज खेला है?'
‘हे भगवान, नहीं!’
अगर आपने ऐसा किया होता, तो आप मेरा मतलब समझ जाते। जब शतरंज का खेल खत्म होने वाला होता है और बोर्ड पर कुछ ही मोहरे बचे होते हैं, तो दोनों खिलाड़ियों के बीच बिजली के करंट जैसा कुछ दौड़ता है। उनमें से कोई हिलता नहीं है, लेकिन वे इसे अपने शरीर की हर नस से महसूस कर सकते हैं। चौधरी परिवार के सभी सदस्य मुझे इन मोहरों की याद दिलाते हैं। मुझे अभी भी यह नहीं पता कि कौन काला है और कौन सफेद—या कौन राजा है, और क्या कोई बिशप है। हमने मंदिर और मुख्य पिकनिक स्थल के बीच एक जगह चुनी और एक पीपल के पेड़ के नीचे बैठ गए। अभी ग्यारह बजे भी नहीं बजे थे। सभी लोग आराम से इधर-उधर घूम रहे थे। बीबी रेत पर बैठी थी और अखिल चक्रवर्ती उससे बात कर रहा था, अलग-अलग इशारों से कुछ समझा रहा था। नीलिमा देवी दरी पर बैठी थी। मैंने देखा कि उसने अपने बैग से एक किताब निकाली। शायद वह कोई जासूसी उपन्यास था। प्रितिन बाबू यूं ही इधर-उधर घूम रहा था; फिर वह एक छोटे से टीले पर बैठ गया और अपने रिकॉर्डर में एक नई कैसेट डालने लगा। अरुण बाबू ने जगत सिंह से अपनी बंदूक ले ली और महेश चौधरी ने जमीन से एक पत्थर उठाया और उसे तुरंत फेंक दिया।
‘शंकरलाल यहाँ नहीं हैं,’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की।
'हां, वह है, लेकिन कुछ दूरी पर। देखो!'
मैंने फेलुदा की नजर का पीछा किया और देखा कि शंकरलाल मंदिर के पीछे एक पेड़ के नीचे खड़े होकर साधु से बातचीत कर रहे थे।

‘कुछ तो संदिग्ध लग रहा है, है ना?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। मैंने फेलुदा की ओर देखा कि क्या वह मुझसे सहमत है, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, अरुण चौधरी हाथ में बंदूक लिए हमारी ओर आ गया।
‘क्या यह बाघ के लिए पर्याप्त है?’ फेलुदा ने उससे पूछा।
‘सर्कस वाला बाघ यहाँ नहीं आएगा,’ अरुण बाबू हँसे। ‘मैंने इस बंदूक से सांभर मारा है, लेकिन आमतौर पर मैं सिर्फ पक्षियों को मारता हूँ। यह बाईस कैलिबर की बंदूक है।’
'हां, मुझे ऐसा ही लगता है।'
क्या आप शिकार करते हैं?
‘केवल अपराधी।’
‘क्या आप किसी एजेंसी के लिए काम करते हैं? या आप निजी तौर पर काम करते हैं?’
फेलुदा ने उसे अपना एक कार्ड दिया जिस पर 'प्रदोश सी. मिटर, प्राइवेट इन्वेस्टिगेटर' लिखा हुआ था।
‘धन्यवाद,’ अरुण चौधरी ने कहा। ‘हो सकता है मुझे एक दिन इसकी जरूरत पड़ जाए, कौन जानता है?’
फिर वह वहां से चला गया।
मैंने फेलूदा को वही कागज़ का टुकड़ा पकड़े हुए देखा जो हमें कैलाश में लॉन के पास मिला था। इससे मुझे आश्चर्य हुआ, क्योंकि मैंने उसे वह कागज़ निकालते हुए नहीं देखा था।
‘वर्णमाला के अक्षरों में अचानक इतनी दिलचस्पी क्यों?’ लालमोहन बाबू जानना चाहते थे।
‘ध्यान से देखो। ये सिर्फ वर्णमाला के अक्षर नहीं हैं। ये शब्द हैं, पूरे शब्द।’
‘बेतुकी बात! अगर वे ऐसा कर रहे हैं, तो यह कोई अजीब विदेशी भाषा ही होगी।’ 'बिल्कुल नहीं। ये सामान्य अंग्रेजी शब्द हैं, और आप इन्हें अच्छी तरह जानते हैं। इन्हें पढ़कर देखिए।'
लालमोहन बाबू झुककर पत्र पढ़ने लगे।
‘एक्ज़ एल एन सी,’ उसने पढ़ा, ‘एक्ज़ एल। एक्ज़ पी डी... ओह, मैं समझ गया! पहला शब्द “एक्सीलेंसी” है, है ना? इसे जल्दी से पढ़ना होगा। और दूसरा शब्द

“□□□□□□□” □□□ □□□ “□□□□□□□□□□□□□□” □□, □□ □□□□□ □□□□ “□□□□□” □□□ □□□□□ □□ '□' □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□?’

□□□□□ □□□□ □□□□, ‘OICURMT□’ ‘□□□□ □□□□ □□ “□□, □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□”□’

‘□□□! □□□□□ □□□□!’ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□□

□□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□:

□□

□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□

2 □□□□

4 □□ □□□□

—

10

—

□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□, '□□□ □□□□,' □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□

‘□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□-□□ □□□□ □□□ □□ □□□□? □□□□ □□□ □□□, □□□ “□□□□ □□□□ □□□” □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□, □□□ □□□ □□□’

‘□□□ □□, □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□, □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□’ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□, □□ □□□ □□□□ □□, □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□:

□□□□□□□	□□□□□ □□□□□□ □□□□
□□□	□□□□ □□□□ □□□
□□□□□□□□□	□□ □□ □□□□□□ □□□□
□□□□□□□	□□□□□ □□□□
□□□□□ □□□□□□□	□□□□ □□□□

‘□□□□□□□□□?’ □□□□□ □□□□□

‘□□□□ □□□□□ □□□ □□ “□□□□□□□□□” □□□ □□□□ □□, □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□, “□□□□□□□” □□ “□□□□ □□□□” □□□□ □□□□□□□ □□, □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□…’

‘…यह तुम्हें कहाँ मिला?’ एक आवाज़ ने पूछा। महेश चौधरी हमारे पास खड़े मुस्कुरा रहे थे।
'यह तुम्हारे बगीचे के पास पड़ा था,' फेलुदा ने जवाब दिया।
मैं बस... कुछ मनोरंजन ढूंढने की कोशिश कर रहा था।
'हां, मुझे ऐसा ही अंदाजा था।'
हम सभी उठने लगे, लेकिन श्री चौधरी ने कहा, 'कृपया मत उठिए!' और हमारे बगल में बैठ गए।
‘मैं आपको एक और कागज़ दिखाता हूँ,’ उसने कहा। उसके चेहरे पर अब मुस्कान नहीं थी। उसने अपना बटुआ निकाला और उसमें से एक पुराना, मुड़ा हुआ कार्ड निकाला। यह एक तस्वीर वाला पोस्टकार्ड था, जिसमें झील समेत ज्यूरिख शहर का नज़ारा था।
उन्होंने गंभीर स्वर में कहा, 'यह मेरे दूसरे बेटे द्वारा भेजा गया आखिरी पोस्टकार्ड था।' पोस्टकार्ड के दूसरी तरफ कोई संदेश नहीं था। उस पर केवल उसका नाम और पता लिखा था।
श्री चौधरी ने बताया, 'उसने यही करना शुरू कर दिया था। वह मुझे अपनी लोकेशन बताने के लिए पोस्टकार्ड भेजता था। वैसे भी वह कभी ज्यादा पत्र नहीं लिखता था। उसके शुरुआती पोस्टकार्ड में शायद ही कभी दो-तीन लाइनें होती थीं।' उसने फेलुदा से कार्ड वापस लिया और उसे अपने बटुए में रख लिया। फेलुदा ने पूछा, 'क्या तुम्हें कभी पता चला कि तुम्हारा बेटा बीरेन इंग्लैंड में किस तरह का काम करता था?'
नहीं। वह साधारण नौकरी करने वाला व्यक्ति नहीं था। वह एक विद्रोही था, अधिकांश युवाओं से बिल्कुल अलग। और उसका एक आदर्श था। एक और बंगाली, जो सौ साल पहले घर छोड़कर इंग्लैंड चला गया था और एक जहाज पर चालक दल के रूप में काम करता था। अंततः, वह ब्राजील पहुंचा—या शायद मेक्सिको?—और वहां की सेना में भर्ती हो गया। वह कर्नल बन गया और अपने शौर्य और साहस से सभी को बहुत प्रभावित किया।
‘क्या आपका मतलब सुरेश बिस्वास से है?’ फेलुदा ने पूछा। लालमोहन बाबू ने भी नाम पहचान लिया था। उनकी आँखों में चमक आ गई।
‘जी हां,’ उसने जल्दी से कहा, ‘कर्नल सुरेश बिस्वास। उनकी मृत्यु ब्राजील में हुई।’

महेश चौधरी ने आगे कहा, ‘जी हां। मेरे बेटे बीरेन ने उनकी जीवन कहानी पढ़ी थी। वह उनके जैसा बनना चाहता था और उनके जितना ही रोमांच पाना चाहता था। मैंने उसे रोकने की कोशिश नहीं की, क्योंकि मैं जानता था कि मैं रोक नहीं सकता। तो, एक दिन वह गायब हो गया। दो महीने बाद, मुझे यूरोप से उसका पहला पत्र मिला। आप जानते हैं, वह हमेशा इंग्लैंड से ही नहीं लिखता था। ऐसा लगता था कि उसने पूरे यूरोप की यात्रा की थी... हॉलैंड, स्वीडन, जर्मनी, ऑस्ट्रिया। उसने मुझे कभी नहीं बताया कि वह क्या कर रहा है। उसके छोटे- छोटे पत्रों का मतलब बस इतना था कि वह जीवित है। मुझे बहुत दुख हुआ कि वह बिना कुछ कहे मुझे छोड़कर चला गया; साथ ही, मुझे इस बात पर गर्व भी महसूस हुआ कि उसने यह सब अपने दम पर हासिल किया था। फिर... 1967 के बाद, उसने लिखना बिल्कुल बंद कर दिया।’
महेश चौधरी रुक गए और दूर पहाड़ियों को उदास निगाहों से देखने लगे। उन्होंने आह भरते हुए कहा, 'मुझे पता है कि वह कभी मेरे पास वापस नहीं आएगा। मुझे कभी शांति नहीं मिलेगी। मुझ पर श्राप लगा है।'
‘क्या? तुम कब से श्रापों पर विश्वास करने लगे?’
यह एक और आवाज़ थी, और वह धीमी आवाज़ में बोल रही थी। हमने मुड़कर देखा तो पाया कि अखिल चक्रवर्ती भी हमारे साथ आ गए थे।
'अखिल, तुमने सिर्फ मेरी कुंडली देखी,' महेश चौधरी ने शिकायत की। 'तुमने मुझे एक पुरुष के रूप में समझने की जहमत ही नहीं उठाई।'
‘बकवास। इंसान और उसकी कुंडली आपस में जुड़े होते हैं। क्या मैंने तुम्हें 1942 में नहीं बताया था कि तुम्हारे जीवन में एक बड़ा बदलाव आएगा? क्या तुम यह बात भूल गए हो?’ वह फेलुदा की ओर मुड़ा। ‘क्या तुम मेरी बात पर विश्वास करोगे, श्री मित्तर, अगर मैं तुमसे कहूँ कि आज जो यह मिलनसार बूढ़ा आदमी तुम्हें दिख रहा है, उसने एक बार रांची से नेतरहाट जाते समय गुस्से में आकर अपनी कार को एक चट्टान से नीचे धकेल दिया था, सिर्फ इसलिए कि उसका इंजन खराब हो गया था?’
श्री चौधरी धीरे-धीरे उठे। उन्होंने संक्षेप में कहा, 'लोग उम्र के साथ बदलते हैं। यह देखने के लिए ज्योतिषी होने की जरूरत नहीं है,' और वे संभवतः पत्थर ढूंढने के लिए चले गए।
अखिल चक्रवर्ती ने उनकी जगह ली। वे कहानियां सुनाने के मूड में लग रहे थे। उन्होंने बोलना शुरू किया, ‘महेश एक असाधारण व्यक्ति थे। मैं उनका पड़ोसी

हुआ करता था। हम दोनों बिल्कुल अलग-अलग दुनिया से थे। मैं तो बस एक स्कूल शिक्षक था, और वे अपने पेशे में उभरते सितारे थे। मैंने कुछ समय तक उनके बेटों के निजी शिक्षक के रूप में काम किया और उन्हें अच्छी तरह से जान लिया। वे पारंपरिक चिकित्सा में विश्वास नहीं करते थे। अगर उनके किसी बच्चे की तबीयत खराब होती, तो वे आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के लिए मेरे पास आते थे। उन्होंने कभी मुझे यह महसूस नहीं होने दिया कि हम दो अलग-अलग सामाजिक वर्गों से हैं। वे मेरे बेटे के साथ भी उतना ही स्नेह से पेश आते थे जितना अपने बेटे के साथ। उनमें जरा भी घमंड नहीं था।’
‘आपका बेटा क्या करता है?’
‘कौन, अधीर? वो तो इंजीनियर हैं। उन्होंने आईआईटी खड़गपुर से पढ़ाई की, फिर डसेलडोर्फ गए। उन्होंने वहां दस साल बिताए, लेकिन फिर घर लौट आए और...’
एक धमाके की आवाज सुनकर वह रुक गया।
‘चाचा की बंदूक!’ बीबी चिल्लाई। ‘चाचा ने एक तीतर मार डाला है। हम इसे रात के खाने में खाएंगे!’
अखिल चक्रवर्ती उठते हुए बोले, ‘मैं जाकर महेश को ढूंढता हूँ। इस उम्र में उसे पत्थर ढूंढने नहीं जाना चाहिए। भगवान न करे, लेकिन अगर वह फिसलकर पानी के पास गिर गया, तो उसका जन्मदिन...’ वह चले गए।
‘ये तो बिल्कुल भी पिकनिक जैसा नहीं लग रहा!’ नीलिमा देवी ने कहा। उन्होंने अपनी किताब एक तरफ रख दी थी और हमारे साथ आकर बैठ गईं। ‘सब लोग कहाँ गायब हो गए?’
‘चिंता मत करो,’ फेलुदा ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा। ‘जब उन्हें भूख लगेगी और खाने का समय होगा, तब वे सब आ जाएँगे।’
'शायद। तब तक, क्यों न हम एक खेल खेलें?'
‘ताश?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। ‘लेकिन मुझे तो सिर्फ स्क्रू खेलना आता है।’ ‘नहीं, मुझे खेद है कि मैं कोई कार्ड नहीं लाई,’ नीलिमा देवी ने कहा। ‘हमें कुछ ऐसा खेलना होगा जिसे हम मौखिक रूप से खेल सकें।’
‘चलिए जल-पृथ्वी-आकाश का प्रयोग करते हैं। लालमोहन बाबू आसानी से हमारे साथ जुड़ सकते हैं,’ फेलुदा ने सुझाव दिया।
‘इसे कैसे खेलते हैं?’

‘यह वास्तव में बहुत सरल है। मान लीजिए मैं आपकी ओर देखूं और कहूं “पानी!” या “धरती!” या “आकाश!”—और फिर दस तक गिनना शुरू कर दूं। आपको उन दस सेकंड के भीतर उसमें पाए जाने वाले किसी जीव के बारे में सोचना होगा।’
क्या यह बहुत मुश्किल खेल है?
‘कोशिश करो,’ नीलिमा देवी मुस्कुराईं। ‘मुझे तुमसे पहला सवाल पूछने दो।’ ‘ठीक है।’ लालमोहन बाबू ने गहरी सांस ली और पालथी मारकर सीधे बैठ गए। नीलिमा देवी कुछ पल चुपचाप उन्हें देखती रहीं। फिर अचानक चिल्लाईं, ‘आसमान! एक, दो, तीन, चार…’
‘है. . . है. . . है. . .’
' । । । पांच छह सात । । ।'
‘बफ्रोश!’
इस बिल्कुल विचित्र टिप्पणी के बाद छाई विस्मयकारी चुप्पी को तोड़ने वाला पहला व्यक्ति फेलुदा था।
'आखिर बाफ्रोश क्या होता है? शायद किसी दूसरे ग्रह का आकाश का प्राणी?' ‘न-न-नहीं। देखिए, मैंने एक गुब्बारे, एक मेंढक और एक शार्क के बारे में सोचा था। लेकिन मैंने उन सबको आपस में मिला दिया!’
‘एक गुब्बारा? क्या आपको लगता है कि गुब्बारा एक जीवित प्राणी है?’
‘क्यों नहीं? हर जीवित प्राणी को ऑक्सीजन की जरूरत होती है। गुब्बारे को भी।’
‘सच में? खैर, मुझे यह बात पता नहीं थी। मैंने गर्म हवा के गुब्बारों, हाइड्रोजन और हीलियम के गुब्बारों, यहाँ तक कि कोयले से बनी गैस से उड़ने वाले गुब्बारों के बारे में भी सुना है, लेकिन ऑक्सीजन का ज़िक्र मैंने पहली बार किया है। शायद आप जानना चाहें...’
नीलिमा देवी ने बहस रोकने के लिए हाथ उठाया। लेकिन हुआ यूं कि उन्हें ऐसा करने की ज़रूरत ही नहीं थी। ठीक उसी क्षण कुछ ऐसा घटित हुआ जिससे सारी बहसें अपने आप ही रुक गईं।
वह प्रितिन बाबू थे।
बहुत समय पहले, फेलुदा ने मुझे लियोनार्डो दा विंची की एक पेंटिंग दिखाई थी, जिसमें एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाया गया था जिसके चेहरे की हर रेखा में भय और उदासी दोनों अंकित थे। प्रितिन बाबू के चेहरे पर भी वही भाव थे।

वह एक झाड़ी के पीछे से निकला, कुछ लड़खड़ाते कदम बढ़ाए, फिर कांपते हुए जल्दी से बैठ गया। नीलिमा देवी उठीं और अपने पति की ओर दौड़ीं, लेकिन फेलुदा पहले ही वहाँ पहुँच चुका था। प्रितिन बाबू को बोलने की कोशिश करने से पहले कई बार घूंट भरनी पड़ी।
‘ब-ब-ब-बाबा,’ उसने आखिरकार किसी तरह कहा और उस दिशा की ओर इशारा किया जहाँ से वह आया था।

पाँच

महेश चौधरी को जब घर लाया गया, तब तक ढाई बज चुके थे। वे अभी भी बेहोश थे। सिर पर लगी चोट को देखकर लगता है कि वे खड़े-खड़े गिरे थे। जांच करने वाले डॉक्टर ने बताया कि यह दिल का दौरा था। वैसे भी उनका दिल ज़्यादा मज़बूत नहीं था। हो सकता है कि अचानक लगे किसी सदमे के कारण उन्हें दिल का दौरा पड़ा हो। उनकी हालत गंभीर थी; डॉक्टर को उनके ठीक होने की ज़्यादा उम्मीद नहीं थी।
वह एक बड़े पत्थर के पीछे पड़ा मिला। हम जहां बैठे थे, वहां से पत्थर तो दिख रहा था, लेकिन उसके पीछे क्या था, यह नहीं दिख रहा था। हममें से किसी ने भी उसे वहां जाते नहीं देखा था। प्रितिन बाबू, जो पहाड़ी की चोटी पर पेड़ों के बीच जाने के लिए ढलान पर चढ़ गया था, लौटते समय उसे मिला, जब वह खुले में आया और नीचे देखने लगा। पहले तो उसे लगा कि उसके पिता की मृत्यु हो गई है। इसीलिए वह एकदम पीला पड़कर हमारी तरफ भागा था। फेलुदा ने श्री चौधरी की नब्ज़ जाँची और बताया कि वह अभी भी जीवित हैं। उनका सिर ईंट के आकार के पत्थर से टकराया था। उसके चारों ओर खून का एक बड़ा धब्बा था। बाकी सब की तरह मैं भी स्तब्ध था, लेकिन बेहोश पड़े उस आदमी के चारों ओर मंडराती दो सुंदर पीली तितलियों को देखकर मैं खुद को रोक नहीं पाया।
एक मिनट बाद, पहले अरुण बाबू और फिर अखिल चक्रवर्ती हमारे साथ आ गए। शंकरलाल सबसे आखिर में पहुंचे। जैसे ही उन्हें पता चला कि क्या हुआ है, वे तुरंत भावुक हो गए। उस बुजुर्ग के प्रति उनका लगाव और श्रद्धा निर्विवाद थी।
हमारे लिए उन्हें उठाकर नदी पार ले जाना नामुमकिन था। उनके दोनों बेटे तुरंत वापस जाकर एम्बुलेंस लाने के लिए निकल पड़े। उन्हें मेडिकल टीम के साथ लौटने में दो घंटे से ज़्यादा का समय लगा और फिर एम्बुलेंस में अपने पिता को ले जाने में एक घंटा और लग गया। हम सब कैलाश लौट आए और कुछ देर वहीं रुके। चूंकि किसी ने दोपहर का खाना नहीं खाया था, इसलिए नीलिमा देवी ने पिकनिक के लिए लाया हुआ खाना परोसा: पराठे, आलू-दम और कबाब। शुरुआती सदमे

से उबरने के बाद उन्होंने खुद को पूरी तरह से संभाल लिया था। मुझे उनकी तारीफ करनी ही पड़ी।
छोटी बीबी ही अकेली ऐसी थी जिसे हालात की गंभीरता समझ नहीं आ रही थी। वह बार-बार कह रही थी कि उसके दादाजी को बस चक्कर आ गया है और वे जल्द ही उसके साथ खेलने लगेंगे। हम ड्राइंग रूम में इंतज़ार करते रहे। अरुण बाबू अपने पिता के साथ ऊपर ही रहे और प्रितिन चौधरी बीच-बीच में आकर हमारे साथ शामिल हो जाते थे। शंकरलाल मूर्ति की तरह चुपचाप बैठे थे। राजरप्पा से निकलने के बाद से उन्होंने एक शब्द भी नहीं बोला था। अखिल चक्रवर्ती बार-बार यही कह रहे थे: 'मैंने उनसे कहा था कि आज बाहर मत जाओ, लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं मानी!'
हम करीब चार बजे रवाना हुए। फेलुदा ने प्रितिन बाबू से कहा, 'हम कल वापस आएंगे। अगर हम किसी तरह से आपकी मदद कर सकें तो कृपया हमें जरूर बताएं।' 'धन्यवाद।'
अपने घर पहुँचकर हम सबने जल्दी से हाथ-मुँह धोए और फिर सामने वाले बरामदे में जाकर बैठ गए। मैं अब भी सदमे में था। फेलुदा ज़्यादा कुछ नहीं बोल रहा था, जिसका मतलब था कि वह गहरी सोच में डूबा हुआ था। मुझे पता था कि उसे परेशान होना पसंद नहीं आएगा, लेकिन मुझे उससे कुछ पूछना ज़रूरी लगा। 'मैंने डॉक्टर को कहते सुना कि श्री चौधरी को दिल का दौरा अचानक लगे झटके से पड़ा होगा। राजरप्पा में उन्हें झटका कैसे लग सकता है, फेलुदा?'
'अच्छा सवाल है। मैं भी यही सोच रहा था। बेशक, हमें यह बात पक्के तौर पर नहीं पता।'
‘तो हमें बस श्री चौधरी के ठीक होने का इंतजार करना होगा। तब सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा,’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की।
'हां। लेकिन क्या वह ठीक हो जाएगा?' फेलुदा ने संशय भरे लहजे में कहा। महेश चौधरी के बारे में उनकी जिज्ञासा स्पष्ट थी। जब हम ड्राइंग रूम में इंतज़ार कर रहे थे, मैंने उन्हें किताबों और कमरे में रखी हर चीज़ को ध्यान से देखते हुए देखा। उन्होंने यह सब बहुत ही सावधानी से किया, लेकिन मैं समझ गया कि वे जो कुछ भी देख रहे थे, उसे मन में नोट कर रहे थे। चौधरी परिवार के सभी सदस्यों की सामूहिक तस्वीर ने उन्हें सबसे ज़्यादा आकर्षित किया। उन्होंने कम से कम पाँच मिनट तक उसे ध्यान से देखा।

दूर एक गाँव में ढोल बज रहे थे। अचानक मुझे भागे हुए बाघ की याद आ गई। ज़ाहिर है, उसे पकड़ा नहीं गया था, वरना बुलाकीप्रसाद हमें बता देता। बाहर काफी ठंड हो चुकी थी। लालमोहन बाबू ने अपनी टोपी और कसकर खींची और कहा, 'यह महत्वपूर्ण है, है ना?' शायद उन्हें उम्मीद थी कि हममें से कोई उनसे पूछेगा कि उनका क्या मतलब है; लेकिन जब हमने नहीं पूछा, तो उन्होंने आगे बताया, 'जब श्री चौधरी को दिल का दौरा पड़ा, तब हम नीलिमा देवी के साथ थे और वह छोटी बच्ची अपनी गुड़िया से खेल रही थी। लेकिन हमें बाकी लोगों की गतिविधियों के बारे में कुछ नहीं पता, है ना?'
‘हां, हम करते हैं,’ फेलुदा ने जवाब दिया। ‘अरुण बाबू पक्षियों को मारने की कोशिश कर रहे थे, प्रितिन बाबू पक्षियों की आवाजें रिकॉर्ड कर रहे थे, अखिल चक्रवर्ती अपने दोस्त को ढूंढ रहे थे, शंकरलाल एक साधु से बातें कर रहे थे, और दोनों कुली कपास के पेड़ के नीचे बैठकर बीड़ी पी रहे थे।’
'हां, मैंने उन्हें देखा था। लेकिन बाकी लोगों का क्या? वे सब नजरों से ओझल हो गए थे। हमें कैसे पता चलेगा कि वे सच बोल रहे हैं?'
'ऐसा सोचने का कोई कारण नहीं है कि वे ऐसा नहीं हैं। मैं उन्हें अच्छी तरह से नहीं जानता, और मैं उनके साथ संदेहपूर्ण व्यवहार करके शुरुआत करने को तैयार नहीं हूं।'
‘ठीक है, आप सही कह रहे हैं, फेलू बाबू।’
लेकिन लालमोहन बाबू को और भी कुछ बताना था। यह कुछ घंटों बाद, जब हम रात का खाना खा रहे थे, तब पता चला। मैंने देखा कि वह अचानक चौंक गए, अपना माथा पीट लिया और बोले, 'अरे नहीं, नहीं!'
‘क्या बात है, लालमोहन बाबू?’ फेलुदा ने पूछा।
‘मैं आपको एक बात बताना भूल गया था—एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात। मुझे एक और सुराग मिला है, इस बार तो बहुत ही अहम। जैसे ही हम उस जगह के करीब पहुँचे जहाँ शव—माफ़ कीजिए, मेरा मतलब श्री चौधरी से है—पड़ा था, मैं एक वस्तु से टकरा गया। वह प्रितिन चौधरी का टेप रिकॉर्डर था।’
क्या यह आपके पास है?
नहीं। मैंने सोचा था कि मैं इसे बाद में उठा लूंगी और उसे वापस दे दूंगी। लेकिन उस शोर-शराबे और हंगामे में मैं पूरी तरह भूल गई। हालांकि, जब हम लौट रहे थे, तब मुझे याद आया, लेकिन तब तक वह जा चुका था!
'हो सकता है कि इसे खुद प्रितिन बाबू ने उठाया हो?'

नहीं। वह निश्चित रूप से उसके पास कहीं नहीं गया था। इसके अलावा, वह एक झाड़ी के नीचे पड़ा था। अगर मेरा पैर उससे टकराया न होता तो मैं खुद भी उसे नहीं देख पाता।
फेलुदा कुछ कहने ही वाला था कि फोन की घंटी बजने से उसकी बात अधूरी रह गई। यह अरुण बाबू थे। फेलुदा ने संक्षेप में बात की, फोन नीचे रखा और हमारी ओर मुड़ गए।
‘हमें कैलाश वापस जाना होगा। श्री चौधरी को होश आ गया है और वे मुझे बुला रहे हैं।’
कार से उनके घर पहुँचने में हमें महज़ एक मिनट लगा। बीबी को छोड़कर बाकी सब लोग उनके बिस्तर के पास जमा थे। श्री चौधरी सिर पर पट्टी बाँधे, हाथ जोड़कर सीने पर रखे, आधी बंद आँखों से बिस्तर पर लेटे हुए थे। फेलुदा को देखकर उनके होंठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई। फिर उन्होंने धीरे से अपना दाहिना हाथ उठाया और तर्जनी उंगली सीधी की।
‘ए ज-ज-ज-’ उसने बोलने की कोशिश की।
‘मेरे लिए कोई नौकरी?’ फेलुदा ने चिंता से पूछा।
श्री चौधरी ने हल्के से सिर हिलाया। फिर उन्होंने अपनी बीच वाली उंगली भी उठा दी।
‘हम… हम…’ उसने अपनी उंगलियां मोड़ीं और अंगूठा उठाकर हिलाया।
बड़ी मुश्किल से उन्होंने अपना सिर हिलाया और बिस्तर के पास रखी मेज की ओर देखा। उस पर मुक्तानंद की तस्वीर रखी थी। जैसे ही उन्होंने तस्वीर लेने के लिए हाथ बढ़ाया, अरुण बाबू ने उसे उठाकर उन्हें दे दिया। श्री चौधरी ने तस्वीर लेने के बजाय फेलुदा की ओर देखा। अरुण बाबू ने बिना कुछ कहे तस्वीर फेलुदा को दे दी। श्री चौधरी ने आह भरी और फिर से दो उंगलियां उठाईं। उन्होंने एक बार फिर बोलने की कोशिश की, लेकिन उनके मुंह से शब्द नहीं निकले।
कुछ देर बाद उसने कोशिश करना छोड़ दिया और चुपचाप घूरता रहा।

छह

हम अपने कमरे में लौट आए थे। मुक्तानंद की पासपोर्ट साइज़ की तस्वीर अब फेलुदा के पास थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि श्री चौधरी ने उसे यह तस्वीर क्यों दी और उसे नौकरी मिलने की बात क्यों कही। हालांकि, लालमोहन बाबू ने एक अनुमान लगाने की हिम्मत की।
उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि उन्होंने आपसे मुक्तानंद का अनुयायी बनने के लिए कहा था।'
तो फिर उसने दो उंगलियां क्यों उठाईं?
‘शायद उनका मतलब था... मुक्तानंद के अनुयायी होने के नाते, आपके काम में आपकी कुशलता दोगुनी हो जाएगी? ध्यान रहे,’ लालमोहन बाबू ने उदास होकर कहा, ‘मुझे समझ नहीं आ रहा कि फिर उन्होंने आपकी ओर अंगूठा क्यों हिलाया!’
आज सुबह तड़के अखिल चक्रवर्ती ने हमें फोन करके बताया कि पिछली रात हमारे उनके घर से निकलने के दो घंटे बाद महेश चौधरी ने अंतिम सांस ली।
अंतिम संस्कार समाप्त होते-होते ग्यारह बज चुके थे। श्मशान घाट से लौटते समय लालमोहन बाबू ने पूछा, 'फेलू बाबू, अब आप कहाँ जाना चाहते हैं? कैलाश या घर वापस?'
‘मुझे नहीं लगता कि हमें इस समय कैलाश में और समय बिताना चाहिए। वहां बहुत सारे आगंतुक आने वाले हैं। मैं कोई काम नहीं कर पाऊंगी।’
‘आप किस काम की बात कर रहे हैं?’
'जानकारी जुटाना।'
दोपहर के भोजन के बाद, फेलुदा ने अपनी नीली नोटबुक निकाली और उसमें कुछ लिखने लगा। जब उसने लिखना समाप्त कर लिया, तो उसने हमें दिखाया कि उसने क्या लिखा था:
1. महेश चौधरी: जन्म 23 नवंबर 1907; मृत्यु 24 नवंबर 1977 (प्राकृतिक कारण? हृदयाघात? सदमा?)। पहेलियों, डाक टिकटों, तितलियों और चट्टानों के शौकीन। दोराबजी द्वारा दिया गया एक बहुमूल्य डाक टिकट एल्बम खो गया (कैसे?)। दूसरे बेटे से विशेष लगाव था। बाकी दो बेटों के प्रति उनके क्या

भाव थे? शंकरलाल के प्रति गहरा स्नेह। कोई घमंड नहीं। अतीत में उग्र स्वभाव के; शराब पीते थे। बाद के वर्षों में बदले हुए, मिलनसार व्यक्ति बन गए। फिर भी अभिशाप क्यों?
2. उनकी पत्नी: मृत। कब?
3. प्रथम पुत्र: अरुणेंद्र। जन्म (लगभग) 1936। अभ्रक का व्यापार करते हैं। कलकत्ता और हजारीबाग के बीच यात्रा करते हैं। शिकार के शौकीन हैं। ज्यादा बात नहीं करते।
4. दूसरा पुत्र: बीरेंद्र। जन्म (लगभग) 1939। बहुत बुद्धिमान, विद्रोही स्वभाव का। उन्नीस वर्ष की आयु में घर छोड़ दिया। कर्नल सुरेश बिस्वास का आदर करता था। 1967 तक पिता को पत्र लिखता रहा। जीवित है? मृत? पिता को लगा था कि वह लौट आया है।
5. तीसरा बेटा: प्रीतिन्द्र। अरुणेंद्र से कम से कम नौ साल छोटा (आधार: पारिवारिक तस्वीर), यानी जन्म (लगभग) 1945। इलेक्ट्रॉनिक्स में रुचि। पक्षियों की आवाज़ें निकालता है। बहुत बातें करता है, मुख्यतः अपने बारे में। टेप रिकॉर्डर राजरप्पा में छोड़ गया।
6. प्रितिन की पत्नी: नीलिमा। उम्र पच्चीस/छब्बीस। बुद्धिमान, समझदार, संयमित।
7. अखिल चक्रवर्ती: आयु (लगभग) सत्तर वर्ष। पूर्व विद्यालय शिक्षक। महेश का मित्र। ज्योतिष, आयुर्वेद।
8. शंकरलाल मिश्रा: जन्म (लगभग) 1939। बीरेन के समान आयु। महेश के चौकीदार दीनदयाल के पुत्र। दीनदयाल का निधन 1943 में हुआ। प्रश्न: वह जंगल में क्यों गए? महेश ने शंकरलाल का पालन-पोषण किया। पुस्तक दुकान के मालिक। महेश की मृत्यु से व्याकुल।
9. नूर मोहम्मद: आयु सत्तर और अस्सी वर्ष के बीच। चालीस वर्षों से अधिक समय से महेश की सेवा कर रहे हैं।
फेलुदा का यह अनुमान सही था कि बहुत सारे आगंतुक होंगे। दोपहर के भोजन के काफी देर बाद जब हम कैलाश पहुंचे, तो हमें बताया गया कि आखिरी आगंतुक भी अभी-अभी चले गए हैं। श्री चौधरी के दोनों बेटे और अखिल चक्रवर्ती ड्राइंग रूम में थे। प्रितिन बाबू पहले से कहीं ज्यादा बेचैन लग रहे थे। वे एक कोने में बैठे हुए थे, हाथ-पैर हिला रहे थे और उंगलियां चटका रहे थे। अखिल बाबू

बीच-बीच में आहें भर रहे थे और सिर हिला रहे थे। केवल अरुण चौधरी ही शांत और संयमित लग रहे थे। फेलुदा ने उनसे सीधे बात की।
उन्होंने पूछा, 'क्या आप यहां कुछ दिनों के लिए रुकने वाले हैं?'
'तुम क्यों पूछ रहे हो?'
मुझे आपकी मदद चाहिए। आपके पिता ने मुझे एक काम सौंपा है, हालांकि वे काम के बारे में विस्तार से बताने की स्थिति में नहीं थे। मैं बस इतना जानना चाहता हूं: क्या आप में से किसी को उनका मतलब समझ आया?
अरुण बाबू हल्के से मुस्कुराए। “बाबा के जीवित और स्वस्थ रहते हुए भी हममें से कुछ ही लोग उनकी बात समझ पाए थे। कई मायनों में वे एक गंभीर व्यक्ति थे, लेकिन उनमें बचपना भी झलकता था, जिसे शायद आपने खुद भी देखा होगा। मुझे नहीं लगता कि उनके आखिरी शब्दों पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है।”
लेकिन उनके आखिरी शब्द मुझे पूरी तरह से अर्थहीन नहीं लगे।
'नहीं?'
‘नहीं। लेकिन ज़ाहिर है, मैं हर छोटे इशारे का महत्व नहीं समझ पाया। उदाहरण के लिए,’ उन्होंने अखिल चक्रवर्ती की ओर मुड़कर कहा, ‘मुझे नहीं पता कि वह मुझसे वह तस्वीर क्यों लेना चाहते थे। शायद आप मेरी मदद कर सकते हैं? क्या आपने ही उन्हें वह तस्वीर नहीं दी थी?’
अखिल चक्रवर्ती उदास मुस्कान के साथ बोले, “हां, मैंने किया था। मुक्तानंद एक बार रांची आए थे और मैं उनसे मिलने गया था। वे मुझे एक सच्चे इंसान लगे, इसलिए मैंने महेश से कहा: “तुम साधुओं और गुरुओं में कभी विश्वास नहीं करते, लेकिन अगर तुम इनकी तस्वीर अपने पास रखोगे, तो कोई नुकसान नहीं होगा। इनकी पूजा तीन महाद्वीपों में होती है, इनका प्रभाव तुम्हारे लिए अच्छा ही होगा।” लेकिन मुझे पता नहीं था कि उन्होंने इसे अपने शयनकक्ष में रखा हुआ था। मैं कल तक कभी उनके शयनकक्ष में नहीं गया था।”
‘क्या आपको इसके बारे में कुछ पता है?’ फेलुदा ने अरुण बाबू से पूछा, जिन्होंने सिर हिलाकर मना कर दिया।
‘नहीं, मुझे खेद है,’ उन्होंने कहा। ‘दरअसल, मुझे तो पता भी नहीं था कि उनके पास ऐसी कोई तस्वीर है। मैंने इसे कल पहली बार देखा।’
‘मुझे भी कुछ नहीं पता,’ प्रितिन बाबू ने किसी के पूछने से पहले ही बोल दिया।

'बहुत खूब। लेकिन क्या मैं आपसे दो चीजें देने का अनुरोध कर सकता हूँ? इनसे मुझे बहुत मदद मिलेगी।'
'क्या रहे हैं?'
'सबसे पहले मुझे वे पत्र और पोस्टकार्ड चाहिए जो आपके भाई बिरेन ने आपके पिता को भेजे थे।'
‘बीरेन के पत्र?’ अरुण बाबू ने बड़े आश्चर्य से पूछा। ‘आपको उनकी क्या ज़रूरत है?’
मुझे लगता है कि आपके पिता चाहते थे कि मैं वह तस्वीर उनके दूसरे बेटे को दे दूं।
‘कितना अजीब! आपको ऐसा क्यों लगा?’
“अच्छा, तुम्हारे पिता ने तुमसे मुझे तस्वीर देने को कहा और फिर दो उंगलियां उठाईं। तुम सबने यह देखा। हो सकता है कि उनका मतलब “ड्यूस” कहना हो। क्या वे बीरेन को इसी नाम से नहीं बुलाते थे? बेशक मैं गलत हो सकता हूँ, लेकिन फिलहाल मुझे इसी धारणा पर आगे बढ़ना होगा।”
लेकिन तुम बीरेन को कैसे ढूंढोगे?
‘मान लीजिए श्री चौधरी सही थे? मान लीजिए वह लौट आए हैं?’ अरुण बाबू एक पल के लिए खुद को भूल गए और ज़ोर से हंस पड़े। ‘श्री मित्तर, क्या आप जानते हैं कि पिछले पांच सालों में मेरे पिता ने कितनी बार बीरेन को देखने का दावा किया? वह मानना चाहते थे कि वह लौट आए हैं। अगर वह लौट आए होते, तो क्या उन्होंने संपर्क नहीं किया होता? इसके अलावा, बीस साल बाद कोई उन्हें दूर से देखकर कैसे पहचान सकता है? खासकर मेरे पिता जैसे बूढ़े व्यक्ति को, जिनकी नज़र कमज़ोर हो रही है?’
‘अरुण बाबू, कृपया मुझे गलत न समझें। मैं यह नहीं कह रहा कि वह वापस आ गया है। यह आपके पिता का सुझाव था। हालांकि, भले ही वह विदेश में रह रहा हो, मुझे अपना दायित्व निभाना ही होगा। मुझे पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए कि वह कहां है और उसे तस्वीर भेजने की व्यवस्था करनी चाहिए।’
अरुण बाबू थोड़ा नरम पड़ते नजर आए।
‘बहुत अच्छा, श्रीमान मिटर,’ उन्होंने कहा। ‘मैं बिरेन के पत्रों को अपने पिता के पत्रों से अलग कर दूंगा और आपको दे दूंगा।’
'धन्यवाद। दूसरी बात जो मुझे चाहिए वो है श्री चौधरी की डायरियाँ। अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं उन्हें देखना चाहूँगा।'

मुझे उम्मीद थी कि अरुण बाबू इस पर आपत्ति जताएंगे, लेकिन हैरानी की बात है कि उन्होंने ऐसा नहीं किया।
उन्होंने कहा, 'स्वागत है। मेरे पिता की डायरियाँ कोई रहस्य नहीं हैं। लेकिन आपको निराशा होगी।'
'क्यों?'
'मुझे शक है कि किसी ने कभी मेरे पिता की डायरी जितनी नीरस, सामान्य और उबाऊ डायरी रखी होगी। आपको उसमें उनके दैनिक जीवन के सबसे साधारण विवरण के अलावा कुछ नहीं मिलेगा।'
मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैं निराश होने का जोखिम उठाने के लिए पूरी तरह से तैयार हूं।
‘ठीक है, तो ऐसा ही सही। अगर आप चाहें तो अभी डायरी ले जा सकते हैं। मैं आपको पत्र कल दे दूंगा।’
हमने उन्हें धन्यवाद दिया और थोड़ी देर बाद बाहर आए, हम तीनों अखबारों में लिपटे भारी-भारी पैकेट लिए हुए थे। ऐसे सात पैकेट थे, जिनमें महेश चौधरी की डायरियाँ थीं। मैंने सोचा, आज रात फेलुदा को बहुत कम नींद आएगी, क्योंकि डायरियों की कुल संख्या चालीस थी और उन्होंने अगले दिन उन्हें लौटाने का वादा किया था।
जैसे ही हम घर से बाहर निकले और ड्राइववे पर पहुँचे, हमने बीबी को बगीचे में अपनी गुड़िया से खेलते हुए देखा। ऐसा लग रहा था कि वह गुड़िया के बालों में लगाने के लिए कोई फूल ढूंढ रही थी। उसने हमारी ओर सिर घुमाया और अचानक कुछ बोली।
‘दादू ने मुझे बताया ही नहीं!’ उसने शिकायत की।
‘उसने तुम्हें क्या नहीं बताया?’ फेलुदा ने उससे पूछा।
वह यही तो ढूंढ रहा था।
'कब?'
'परसों, उससे पहले वाले दिन, और उससे भी पहले वाले दिन।'
‘तीन दिन?’
मैंने उसे देखते हुए पाया, लेकिन मैंने उससे केवल एक दिन ही पूछा। 'क्या कहा आपने?'

मैंने कहा: “दादू, आपने क्या खोया है?” क्योंकि वह अपने कमरे में थे, और वह अपनी किताबें और मेज पर रखे सारे कागज वगैरह इधर-उधर कर रहे थे, और वह मेरे साथ नहीं खेल रहे थे... इसलिए मैंने उनसे पूछा।’
‘उसने क्या कहा?’
उन्होंने कहा... एक घाट, जो खुलता है और... और जो बंद होता है।'
‘यह तो बिलकुल बकवास है!’ लालमोहन बाबू ने धीमी आवाज़ में बुदबुदाया। फेलुदा ने उसकी बात अनसुनी कर दी। 'क्या उसने तुम्हें कुछ और बताया?' नहीं। नहीं, उन्होंने कहा था कि वे बाद में समझाएंगे, और मुझे सब कुछ बताएंगे... लेकिन उन्होंने नहीं बताया। उनकी मृत्यु हो गई।
बीबी को अपनी गुड़िया के लिए एक फूल मिल गया था। उसने हममें दिलचस्पी खो दी और अंदर जाने के लिए मुड़ गई। हम वहां से चले गए।

सात

चूंकि अब फेलुदा डायरी पढ़ना शुरू करने वाला था, इसलिए लालमोहन बाबू और मैंने शाम चार बजे चाय पीने के तुरंत बाद गाड़ी में घूमने जाने का फैसला किया।
‘अगर हम मुख्य कस्बे की ओर चलें, तो शायद हमें सुल्तान के बारे में ताज़ा खबर मिल जाए,’ लालमोहन बाबू ने मुझसे कहा। ‘हो सकता है तुम्हारे चचेरे भाई को महेश चौधरी की मौत से जुड़ा कोई रहस्य मिल गया हो, लेकिन मुझे लगता है कि भागा हुआ बाघ कहीं ज़्यादा दिलचस्प है।’
हमें बाघ के बारे में खबर लेने के लिए ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ा। हमें एक स्थानीय पेट्रोल पंप पर रुकना पड़ा, जहाँ हमने देखा कि कुछ लोग एक ऐसे व्यक्ति के चारों ओर जमा थे जो बहुत तेजी से बोल रहा था। उसने हाथ उठाया और हवा में पंजा मारा, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि वह बाघ के बारे में बात कर रहा था। लालमोहन बाबू गाड़ी से उतरे और पूछताछ करने के लिए आगे बढ़े। यह आसान नहीं था, क्योंकि उनकी हिंदी बहुत अच्छी नहीं थी। हालाँकि, अंततः हमें जो जानकारी मिली वह यह थी:
हजारीबाग के पूर्व में, विष्णुगढ़ कस्बे के पास एक जंगल था। सुल्तान के नए प्रशिक्षक चंद्रन और वन विभाग के एक शिकारी ने सुल्तान को वहीं पाया। कुछ देर तक ऐसा लगा कि बाघ पकड़े जाने को तैयार है, लेकिन फिर उसने अपना इरादा बदल दिया और चंद्रन को खरोंचकर भाग गया। शिकारी ने उस पर गोली चलाई, लेकिन किसी को नहीं पता कि बाघ घायल हुआ या नहीं। चंद्रन अस्पताल में भर्ती था, लेकिन उसकी चोटें गंभीर नहीं थीं।
‘क्या आप कंदरिकर के बारे में कुछ जानते हैं?’ लालमोहन बाबू ने अपने मुखबिर से पूछा। मुझे उन्हें सुधारना जरूरी लगा। ‘वह कंदरिकर नहीं, बल्कि करंदीकर हैं, लालमोहन बाबू। वह पुराने प्रशिक्षक हैं।’
‘नहीं, मुझे उसके बारे में कुछ नहीं पता,’ उस आदमी ने जवाब दिया, ‘लेकिन मुझे लगता है कि सर्कस की हालत कुछ खास अच्छी नहीं है क्योंकि बाघ वाला मुख्य शो रद्द हो गया है।’

हम दोनों यह जानने के लिए उत्सुक थे कि सुल्तान पर गोली चलाए जाने की खबर पर श्री करंदीकर ने कैसी प्रतिक्रिया दी थी, इसलिए हम पेट्रोल पंप से सीधे ग्रेट मैजेस्टिक होटल चले गए।
आम तौर पर, अगर फेलुदा हमारे साथ होते हैं, तो लालमोहन बाबू पीछे ही रहते हैं। लेकिन आज, वे बड़े सलीके से मुख्य द्वार के बाहर खड़े आदमी के पास गए और बोले, 'कृपया मुझे श्री कुट्टी से बात करवा दीजिए।' पता नहीं उस आदमी ने इस अजीबोगरीब अनुरोध के बारे में क्या सोचा होगा, लेकिन उसने बिना कुछ कहे हमें अंदर जाने दिया। शायद उसने हमें हमारी पहली मुलाकात से पहचान लिया था।
हमें श्री कुट्टी उनके कारवां में मिले, लेकिन उन्होंने जो बताया वह एक और रहस्यमय पहेली जैसा लगा। करंदीकर पिछली रात गायब हो गए थे।
श्री कुट्टी ने कहा, ‘दर्शक बाघ को देखने की मांग कर रहे हैं। मैं खुद जाकर करंदीकर से माफी मांगी। मैंने उनसे वादा किया कि अगर बाघ पकड़ा गया तो मैं किसी और को उसे प्रशिक्षित करने की अनुमति नहीं दूंगा। फिर भी, वह बिना किसी को बताए चले गए। वह कभी-कभार चले जाते थे, लेकिन कुछ ही घंटों में वापस आ जाते थे। इस बार... मुझे नहीं लगता कि वह वापस आएंगे।’
कहने के लिए और कुछ बचा ही नहीं था। हमने श्री कुट्टी को धन्यवाद दिया और सर्कस से निकल गए। बाहर आते ही लालमोहन बाबू ने कहा, 'अब हम सुल्तान को बंदी बनते हुए कभी नहीं देख पाएंगे, तपेश। हमें दोबारा ऐसा मौका कभी नहीं मिलेगा।'
मुझे भी उदासी और निराशा महसूस हो रही थी। इसलिए हमने घर लौटने के बजाय लंबी ड्राइव पर जाने का फैसला किया। उत्तर में कनारी पहाड़ियों की ओर जाएं या दक्षिण में रामगढ़ की ओर, इस पर काफी बहस के बाद, हमने अंत में रामगढ़ जाने का फैसला किया।
‘वहाँ पहाड़ियाँ हैं, क्या आपने उन्हें उस दिन नहीं देखा था? वे भी उतनी ही खूबसूरत हैं,’ लालमोहन बाबू ने टिप्पणी की।
मैंने उसकी बात मान ली और हम रामगढ़ की ओर चल पड़े। हम दोनों को इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि आगे क्या होने वाला है।
जैसे ही हम '11 किलोमीटर' लिखा हुआ एक साइनबोर्ड पार कर रहे थे, गड़बड़ शुरू हो गई। सबसे पहले, लालमोहन बाबू की कार—जिसे उन्होंने केवल छह महीने पहले ही खरीदा था—तीन बार लड़खड़ाई, धीमी हुई और फिर पूरी तरह बंद हो गई। उनका

ड्राइवर जाँच करने के लिए बाहर निकला। वही हमारी एकमात्र उम्मीद था, क्योंकि लालमोहन बाबू को कारों और इंजनों के बारे में कुछ भी नहीं पता था। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था, 'अगर मैं अपने पैरों में कितनी हड्डियाँ और कौन सी मांसपेशियाँ हैं, यह जाने बिना चल सकता हूँ, तो मुझे इस बात की चिंता करने की क्या ज़रूरत है कि मेरी कार अपने चार पहियों पर कैसे चलती है?'
हम कार से उतरे और एक पुलिया पर जाकर बैठ गए। सूरज डूबने ही वाला था और शाम के 5:20 बज रहे थे। आसमान में काले बादलों के गुच्छे थे, जिनके पीछे सूरज उस समय छिपा हुआ था। थोड़ी देर बाद वह एक पल के लिए निकला और फिर लगभग तुरंत ही अस्त हो गया।
‘मुझे लगता है मैंने इसे ठीक कर दिया है, महोदय!’ ड्राइवर ने पुकारा। ‘जब आप तैयार हों, मैं भी तैयार हूँ।’
हम उठे और मैंने अपनी घड़ी देखी। उसमें शाम के 5:33 बज रहे थे। समय का उल्लेख करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि ठीक इसी क्षण हमने सुल्तान को देखा था।
मैं इस घटना का वर्णन और भी नाटकीय ढंग से कर सकता था, लेकिन फेलुदा ने हमेशा मुझे यही सलाह दी है कि प्रभाव पैदा करने के लिए घिसे-पिटे मुहावरों और अन्य अप्रचलित वाक्यों का प्रयोग न करो। वे अक्सर मुझसे कहते हैं, 'अपने वर्णन संक्षिप्त और सरल रखो, और तुम देखोगे कि यह कितना कारगर हो सकता है।' इसलिए मैं यथासंभव संक्षेप में ही घटना का वर्णन करने का प्रयास करूंगा। मैंने इससे पहले भी जंगल में बाघ देखा था, जिसके बारे में मैंने 'द रॉयल बंगाल मिस्ट्री' में लिखा है। उस समय हमारे साथ फेलुदा समेत कई अन्य हथियारबंद लोग थे; और लालमोहन बाबू और मैं एक पेड़ की चोटी पर सुरक्षित बैठे थे। अब हम पेड़ों और जंगल से घिरी एक खुली सड़क के किनारे खड़े थे। जंगल में जंगली भालू ज़रूर होंगे, और अंधेरा तेज़ी से बढ़ रहा था। सबसे बुरी बात यह थी कि फेलुदा हमारे साथ नहीं था।
हमारे दाहिनी ओर पेड़ों से बाघ निकला और सड़क पर आ गया, लगभग पचास गज की दूरी पर। हम तीनों ने उसे एक साथ देखा, क्योंकि हम सब मूर्ति की तरह जम गए थे। ड्राइवर ने दरवाजा खोलने के लिए हाथ बढ़ाया था। वह उसी हाथ को फैलाए वहीं खड़ा रहा। लालमोहन बाबू नाक पोंछने के लिए थोड़ा आगे झुके थे। वह

रुमाल पकड़े उसी मुद्रा में रहे। मैं अपनी जींस से धूल झाड़ रहा था। मेरे हाथ कमर पर ही अटके रहे।
बाघ ने पहले तो हमें नहीं देखा। वह सड़क पार करने लगा, चार कदम चला, फिर अचानक रुक गया और हमारी ओर देखने के लिए अपना सिर घुमाया।
मेरे पैर कांपने लगे और सीने में तेज़ धड़कन होने लगी। फिर भी, मैं बाघ से अपनी नज़रें नहीं हटा पा रहा था। मेरी नज़र के कोने से, मुझे लालमोहन बाबू के शरीर की धुंधली आकृति धीरे-धीरे नीचे जाती हुई दिखाई दी, जिसका मतलब यही हो सकता था कि उनके पैर सुन्न हो रहे थे और उनके शरीर का भार सहन नहीं कर पा रहे थे। फिर मेरी दृष्टि धुंधली होने लगी। बाघ की आकृति अस्पष्ट हो गई और उसकी धारियाँ अचानक कांपने लगीं।
यह कहना असंभव है कि सोंग सुल्तान हमें कितनी देर तक घूरता रहा। समय मानो अंतहीन सा लग रहा था। लालमोहन बाबू इसे आठ से दस मिनट कहते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि यह आठ से दस सेकंड ही था। फिर भी, यह बहुत लंबा समय था।
हमारी ओर देखने के बाद, सुल्तान ने अपना सिर दूसरी ओर घुमाया, दूसरी तरफ गया और जंगल की ओर चल पड़ा। हमने उसे धीरे-धीरे ऊंचे पेड़ों के बीच गायब होते देखा।
अजीब बात यह थी कि सुल्तान के जाने के बाद भी हम लगभग एक मिनट तक वहीं खड़े रहे (लालमोहन बाबू ने कहा पंद्रह मिनट)। फिर गाड़ी में बैठने से पहले हमने सिर्फ तीन शब्द बोले। ड्राइवर ने कहा, 'सर!'; मैंने कहा, 'आ रहा हूँ!'; और लालमोहन बाबू ने कहा, 'जाओ!' सौभाग्य से, ड्राइवर का हौसला बुलंद था। उसने बड़ी शांति से गाड़ी चलाना शुरू किया। जाहिर है, जब वह पहले जमशेदपुर में काम करता था, तब उसने एक बार सड़क किनारे एक बाघ देखा था।
घर लौटने पर हमने देखा कि फेलुदा अभी भी श्री चौधरी की डायरियों में डूबा हुआ था। मुझे पता था कि लालमोहन बाबू उसे हमारे अनुभव के बारे में बताने के लिए बेताब थे, इसलिए मैंने कुछ नहीं कहा। सीधे मुद्दे पर आने के बजाय, उन्होंने भूमिका बनाने का फैसला किया। पहले तो वे एक धुन गुनगुनाने लगे, फिर लापरवाही से बोले, 'बताओ तपेश, बाघों के पैर गद्देदार होते हैं, है ना?' 'हां, मैंने भी यही सुना है,' मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।
‘यह सच ही होगा, क्योंकि हमें उसके कदमों की आहट तो सुनाई नहीं दी, है ना? और हम तो उससे बस कुछ ही फीट दूर थे!’

अफसोस की बात है कि अपनी कहानी को लेकर किए गए इस बड़े प्रचार का फेलुदा पर कोई असर नहीं हुआ। उसने हमारी तरफ देखा तक नहीं। उसने बस एक डायरी एक तरफ रखी, दूसरी उठाई और कहा, 'अगर आपने बाघ देखा है, तो आपको तुरंत वन विभाग को उसके देखे जाने की सही जगह और समय के बारे में बताना चाहिए।'
'समय 5.33 था और स्थान रामगढ़ जाने वाली सड़क पर "11 किमी" के साइनपोस्ट के पास एक पुलिया के नजदीक था।'
अच्छा। बैठक में एक निर्देशिका है। वन विभाग का कार्यालय इस समय बंद रहेगा, लेकिन आप मुख्य वन अधिकारी का आवासीय नंबर ढूंढकर उन्हें सूचित कर सकते हैं। मुझे यकीन है कि उन्हें यह अच्छा लगेगा।
लालमोहन बाबू ने अपने होंठ चाटे। 'आप मुझसे अधिकारी को फोन करने के लिए कह रहे हैं?'
'हां। आपने बाघ देखा, मैंने नहीं।'
‘यह सच है। तो मैं उसे क्या बताऊँ? “वह बाघ जो सर्कस से भाग गया था…”?’
'जी हां, बिल्कुल सही। आगे बढ़ो।'
मुझे डायरेक्टरी में नंबर मिल गया। शायद मुझे ही फोन करना चाहिए था, क्योंकि लालमोहन बाबू ने फोन उठाया, दो बार खांसा और कहा, 'अरे... वो सर्कस जो महान बाघ से बच निकला... ओह सॉरी!'
सौभाग्यवश, फेलूदा ने बगल वाले कमरे से उसकी आवाज़ सुन ली थी। वह दौड़कर अंदर आया, उसके हाथ से रिसीवर छीन लिया और खुद ही जानकारी आगे पहुंचा दी।

आठ

बुलाकीप्रसाद हमारे कमरे में चाय लेकर आया। उसने फेलूदा को सुल्तान को पकड़ने के प्रयास और इस दौरान चंद्रन के घायल होने के बारे में पहले ही बता दिया था। फेलूदा का मानना था कि करांडीकर के अलावा कोई भी बाघ को ज़िंदा नहीं पकड़ सकता था।
लालमोहन बाबू ने अपने कप से एक लंबी, शोर मचाती हुई घूंट ली और पूछा, 'क्या आपको उन डायरियों में कुछ दिलचस्प मिला? या अरुण बाबू सही थे?'
‘तुम बताओ।’ फेलुदा ने एक डायरी खोली और उसे लालमोहन बाबू की ओर बढ़ा दिया। ‘क्लब के स्वनिर्वाचित अध्यक्ष—8.4.46 को बैठक,’ उसने जोर से पढ़ा। ‘ब्रिगेडियर सुदर्शन के यहाँ चाय पार्टी, और दूसरे पृष्ठ पर—शकुर के यहाँ नए मुकदमे की सुनवाई... क्यों, फेलू बाबू, आपको क्या लगता है कि इन सब बातों का कोई महत्व है?’
‘टॉपशे, एक बार देख लो और मुझे बताओ कि तुम्हें कैसा लगा।’
मैं लालमोहन बाबू के कंधे पर झुका हुआ था। अब मैंने डायरी उठा ली।
‘इसे रोशनी के पास लाओ,’ फेलुदा ने आदेश दिया। मैं आगे बढ़ा और उसे सीधे टेबल लैंप के नीचे रख दिया। रोमांच की एक लहर मेरे शरीर में दौड़ गई। डायरी का आकार काफी बड़ा था। मुख्य प्रविष्टियाँ स्याही से लिखी गई थीं, लेकिन पृष्ठ के शीर्ष पर, छपी हुई तिथि के ऊपर, एक मोटी पेंसिल से कुछ लिखा हुआ था। शब्द मुश्किल से पढ़े जा सकते थे।
‘अरे वाह, यह तो किसी प्रकार का संदेश लगता है!’ मैंने हैरानी से कहा। ‘इसे पढ़कर सुनाओ।’
‘दो कारणों से वाहन नष्ट हो गया।’
हे भगवान, और भी पहेलियाँ?’ लालमोहन बाबू चौंक गए। ‘जी हाँ। अब इसे देखिए। यह पहली डायरी है, जो 1938 से शुरू होती है।’ पहले ही पन्ने पर श्री चौधरी ने लिखा था: ‘शंभू पर दो और पाँच का शासन है।’

‘शंभू कौन है?’ लालमोहन बाबू ने आश्चर्य से पूछा। ‘शंभू, महेश की तरह शिव का ही दूसरा नाम है। श्री चौधरी ने अपनी डायरियों में शिव के विभिन्न नामों का प्रयोग किया है।’
‘ठीक है, लेकिन यह “दो और पाँच” के बारे में क्या है?’
क्या आप हिंदुओं द्वारा माने जाने वाले छह घातक पापों के बारे में जानते हैं?
‘The six ripus? Yes, yes. They are . . . let me see . . . kaam, krodh, lobh, maud, moha, matsarya.’
'हां, लेकिन उस क्रम में नहीं। सही क्रम है काम, क्रोध, लोभ, मोह, मौद, मत्सर। इनका क्या अर्थ है?'
‘वासना, क्रोध, लोभ, आसक्ति, शराबखोरी, ईर्ष्या।’
‘ठीक है। तो दो और पांच क्रोध और शराब पीने से संबंधित हैं।’
‘मैं समझ गया, मैं समझ गया। यह आसान है, है ना?’
'हां। अब अगर आप टॉपशे द्वारा पढ़े गए संदेश को देखेंगे, तो आपको उसका मतलब समझ आ जाएगा।'
दरअसल, मैंने पहले ही इसका हल निकाल लिया था। 'दो की वजह से वाहन नष्ट हो गया। क्या इसका मतलब यह हो सकता है कि क्रोध के कारण कार नष्ट हुई? उसके गुस्से के कारण?' मैंने सुझाव दिया।
'शाबाश। लेकिन अभी और भी कुछ है। मैं अभी तक दूसरे संदेश का अर्थ नहीं समझ पाया हूँ, और उसमें भी यही छह अंक शामिल हैं।'
फेलुदा ने उन पन्नों पर निशान लगा रखे थे जिन पर सांकेतिक संदेश लिखे थे। उसने उनमें से एक पन्ना खोला और हमें दिखाया। उस पर लिखा था, ‘2+5=X’।
‘X एक अज्ञात राशि है, है ना?’ लालमोहन बाबू ने पूछा। ‘आप इसे अनदेखा क्यों नहीं कर देते? आप हर अजीब संदेश को कोई न कोई अर्थ क्यों मान रहे हैं?’ ‘अगर कोई व्यक्ति पूरे साल में सिर्फ बीस बार ही कोई सांकेतिक भाषा का प्रयोग करता है—और यह मत भूलिए कि वह उस डायरी में तीन सौ पैंसठ बार लिखता है—तो मुझे यह मानना ही होगा कि हर सांकेतिक भाषा का कोई विशेष अर्थ होता है। मुझे बस यह पता लगाने के लिए और अधिक मेहनत करनी होगी कि वह अर्थ क्या है, बस इतना ही।’
‘क्या डायरी में ऐसा कुछ और नहीं है जिससे मदद मिल सके?’

‘नहीं, लेकिन 2+5=X लिखने के दस दिन बाद एक और संदेश है। देखो!’ मैंने वह संदेश पढ़ा जिसकी ओर फेलुदा ने इशारा किया था: ‘पुराने दोस्त—हर्बल हेयर ऑयल। दो को शांत करता है।’
‘एक ऐसा हेयर ऑयल जो शायद उसके गुस्से को काबू करने में मदद करे? ये तो आसान है, फेलू बाबू। बस, मुझे समझ नहीं आ रहा कि वो इसे पुराना दोस्त क्यों कहता है। शायद वो इसे काफी समय से इस्तेमाल कर रहा हो?’
नहीं। आपने "मित्र" शब्द के बाद लगे "डैश" पर ध्यान नहीं दिया। इसका मतलब केवल यही हो सकता है कि कोई पुराना मित्र किसी न किसी तरह से तेल से संबंधित है।
‘अखिल चक्रवर्ती! वो आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के बारे में तो जानते ही होंगे, है ना? उन्होंने ही तो अपने दोस्त को तेल दिया होगा!’ मैंने हैरानी से कहा।
'बहुत बढ़िया, टॉपशे। अब ये दूसरे संदेश पढ़ो।'
दो संदेश थे। पहला था, 'आज से पाँच का सेवन बंद कर रहा हूँ।' इसका मतलब था कि उसने शराब पीना छोड़ दिया। लेकिन, केवल एक महीने बाद, उसने लिखा: 'भोलानाथ फिर से पाँच का सेवन करने लगा। पाँच से भूलने में मदद मिलती है।'
‘सवाल यह है कि वह इतनी बेसब्री से क्या भूलना चाहता था?’ फेलुदा ने बुदबुदाते हुए कहा। लालमोहन बाबू ने मेरी तरफ देखा, मैंने अपना सिर खुजाया। अब समझ में आ गया कि श्री चौधरी ने क्यों कहा था कि उनका जीवन रहस्यों से भरा है। फेलुदा ने एक और डायरी खोली और हमें एक और संदेश दिखाया। ‘आज मैं पंख की तरह हल्का हूँ। मैंने एसएम का कार्यभार संभाला है। एसएम ही मेरी मुक्ति का मार्ग है।’
‘एसएम तो शंकरलाल मिश्रा ही हैं, है ना?’ मैंने कहा। ‘लेकिन वो पंख जैसे पतले क्यों हैं?’
‘मुझे लगता है इसका सीधा सा मतलब है “बिल्कुल हल्का”,’ फेलुदा ने जवाब दिया। ‘वह खुश था और शायद किसी बात से राहत महसूस कर रहा था। हो सकता है उसके मन से कोई बोझ उतर गया हो। छोटे शंकरलाल की जिम्मेदारी संभालने का इसमें स्पष्ट रूप से बड़ा योगदान था।’
फेलुदा उठे और चहलकदमी करने लगे। मैं डायरियों को घूरता रहा। अगर महेश चौधरी थोड़ा और जीवित रहते, तो फेलुदा और उनका रिश्ता बहुत अच्छा होता। फेलुदा को भी शब्दों के खेल और पहेलियों में उतनी ही दिलचस्पी थी। लालमोहन

बाबू चुपचाप बैठे सोच में डूबे हुए थे। थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा, 'आप अखिल चक्रवर्ती से बात क्यों नहीं करते? वो उन्हें बहुत करीब से जानते थे, है ना? उन्होंने ही उनकी कुंडली बनाई थी, उन्हें आयुर्वेदिक दवाइयाँ दी थीं... यकीनन वो आपको उनकी डायरियों से कहीं ज़्यादा उनके बारे में बता पाएंगे?'
फेलुदा टहलना बंद करके एक चारमीनार सिगरेट जलाई। 'मैं उसके विचारों के माध्यम से उस व्यक्ति को खुद जानने की कोशिश कर रहा था। पेंसिल से लिखे गए उन कुछ संदेशों ने उसे जीवित रखा है।'
‘क्या आपको उनके बेटों के बारे में कुछ पता चला? क्या उन्होंने उनमें से किसी का जिक्र किया?’
‘पहले पंद्रह साल तो कुछ खास नहीं होते। लेकिन बाद में—’ फेलुदा की बात अधूरी रह गई। बाहर एक कार आ गई थी। वह रुकी और गेट पर हॉर्न बजाने लगी।
हम बरामदे में निकले तो देखा कि अरुण बाबू अपनी फिएट कार से बाहर निकल रहे थे। उनके हाथ में एक छोटा सा पैकेट था।
‘मैं श्री सिंह से मिलने जा रहा था—वे हमारे वन अधिकारी हैं,’ उसने बताया। ‘चूंकि आपका घर रास्ते में ही था, तो मैंने सोचा कि रुककर आपको बीरेन के पत्र दे दूं। वैसे तो इन्हें पत्र कहना मुश्किल है, लेकिन आप इन्हें देखना चाहती थीं, इसलिए…’ उसने कंधे उचका दिए।
'अगर मैंने आपको कोई परेशानी दी हो तो मुझे बहुत खेद है। आप पर काफी जिम्मेदारियां होंगी,' फेलुदा ने कहा।
नहीं, नहीं, कोई दिक्कत नहीं है। सच कहूँ तो, मैं समझ ही नहीं पा रहा कि बाबा क्या कहना चाह रहे होंगे। आप उनकी बात समझने की कोशिश कीजिए। वैसे, मैं अपने पिता को बहुत कम जानता था। हजारीबाग की मेरी यात्राएँ हमेशा छोटी ही रही हैं। पहले मैं यहाँ अक्सर शिकार के लिए आता था, लेकिन अब बड़े जानवरों का शिकार प्रतिबंधित है। खैर, शायद कल मौका मिल जाए। देखते हैं। 'आपका क्या मतलब है?'
इसीलिए मैं श्री सिंह से मिलने जा रहा हूँ। मेरा मानना है कि बाघ को रामगढ़ के पास देखा गया है। उसका एक प्रशिक्षक अस्पताल में भर्ती है और दूसरा लापता है। मैंने श्री सिंह से बात कर ली है। मैंने उनसे कहा, "अगर आपको बाघ को मारना ही है, तो मुझे करने दीजिए।" उस पर पहले ही गोली चलाई जा चुकी है। अगर वह घायल हुआ है, तो अब वह बेहद खतरनाक जानवर है।

मैंने यह कहने के लिए अपना मुंह खोला कि बाघ घायल नहीं लग रहा था, लेकिन फेलुदा की एक नजर पड़ते ही मैंने अपना मुंह बंद कर लिया।
‘मैं अपनी.315 पिस्टल साथ ले जा रहा हूँ,’ अरुण बाबू ने आगे कहा। ‘हर तरफ दहशत फैली हुई है। मुझे लगता है कि इसने गाँव में बकरियों के झुंड पर हमला किया है। मुझे नहीं लगता कि जंगल में मारे जाना सर्कस के पिंजरे में बूढ़ा होने से किसी भी तरह से बुरा है। खैर, अगर आपकी दिलचस्पी हो तो आप कल आ सकते हैं। हम सुबह जल्दी निकलेंगे।’
ठीक है। देखते हैं कि मैं इस दूसरे काम में कितनी प्रगति कर पाता हूँ। आपके साथ मेरा जाना इसी पर निर्भर करेगा। वैसे, . . .
अरुण बाबू जाने के लिए मुड़ा। फेलुदा की बातों पर वह वापस मुड़ गया। ‘पिकनिक वाले दिन गोली तुमने ही चलाई थी, है ना?’ फेलुदा ने पूछा।
अरुण बाबू हँसे। ‘मैं समझ गया आप क्या कहना चाहते हैं। आप सोच रहे होंगे कि आखिर हुआ क्या। मैंने गोली चलाई, लेकिन कोई पक्षी मरा नहीं। आपके जासूस वाले दिमाग को यह बात संदिग्ध लग रही है, है ना? सच तो यह है, श्री मित्तर, कि मेरा निशाना चूक गया। वह एक तीतर था। कभी-कभी तो बेहतरीन शिकारी भी अपना निशाना चूक जाते हैं।’

नौ

बीरेन चौधरी द्वारा भेजे गए पत्रों से हमें कुछ भी पता नहीं चला। वे सभी पोस्टकार्ड थे, जिनमें से अधिकांश पर महेश चौधरी के नाम और पते के अलावा कुछ भी नहीं था। कुछ पत्रों पर जल्दबाजी में संदेश लिखे हुए थे और उन पर 'ड्यूस' के हस्ताक्षर थे।
बुलाकीप्रसाद ने नौ बजे खाना परोसा। फेलुदा कुछ डायरियों और अपनी नोटबुक के साथ खाने की मेज पर आया। उसने हमें बताया कि कुछ और सांकेतिक संदेश थे जिन्हें वह अभी तक सुलझा नहीं पाया था। मैंने फेलुदा को उन्हें अपनी नोटबुक में लिखते देखा, वह अपने बाएं हाथ का इस्तेमाल उतनी ही आसानी से कर रहा था जितना अपने दाएं हाथ का। खाना खाते-खाते लालमोहन बाबू ने कहा, 'देखो, फेलु बाबू, लिखना बंद करो; वरना तुम इस शानदार लैंब करी का मज़ा नहीं ले पाओगे।'
‘लालमोहन बाबू, मैं बंदरों के साथ व्यस्त हूँ, इसलिए कृपया मेमनों की बात करके मुझे परेशान न करें।’
फेलुदा गहरी भौंहें चढ़ाए हुए था, लेकिन उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान थी। मुझे उससे स्पष्टीकरण मांगना पड़ा। उसने एक डायरी की एक पंक्ति पढ़कर सुनाई:
‘अग्नि उपासक की महान उदारता। बंदरों के अनुसार, नौ रत्न शाइलॉक की दो हजार मांगों के बराबर हैं।’
लालमोहन बाबू ने जल्दी से बात को रोक लिया। उन्होंने पूछा, 'रांची में पागलखाना है ना? मैंने सुना है रांची के लोग थोड़े... मतलब, थोड़े अजीब हैं!'
फेलुदा ने इस टिप्पणी को नजरअंदाज कर दिया। उन्होंने कहा, 'पारसी अग्नि की पूजा करते हैं, लेकिन बाकी संदेश का कोई मतलब ही नहीं बनता।'
‘शाइलॉक... क्या यह 'द मर्चेंट ऑफ वेनिस' से नहीं है?’ मैंने पूछा। ‘हाँ। यही बात मुझे सोचने पर मजबूर करती है। शाइलॉक ने टॉपशे से क्या माँग की थी?’ ‘एक पौंड मांस?’

'सही है। लेकिन इससे कोई फायदा नहीं होता, है ना?'
‘फेलू बाबू, कृपया इसे छोड़ दीजिए,’ लालमोहन बाबू ने विनती की, ‘कम से कम खाना खाते समय तो छोड़ दीजिए!’
शायद फेलुदा सचमुच थक गया था। इसलिए उसने डायरी और नोटबुक एक तरफ रख दी और कहा कि वह हम दोनों के साथ रात के खाने के बाद टहलने जाना चाहेगा।
जब हम निकले तब चाँद अभी-अभी निकला था। उसकी हल्की पीली रोशनी अभी भी बाकी थी। लेकिन आसमान में बादलों के टुकड़े भी थे, जिन्हें देखकर लालमोहन बाबू ने कहा, 'लगता है चाँदनी ज्यादा देर तक नहीं टिकेगी।' पश्चिम से हवा के झोंके आ रहे थे, जिनके साथ सर्कस बैंड की हल्की-हल्की आवाज़ें भी सुनाई दे रही थीं।
दाईं ओर मुड़ते ही कैलाश नज़र आने लगा। यूकेलिप्टस के पेड़ों की कतार के बीच से घर दिखाई दे रहा था। पहली मंज़िल की एक खिड़की खुली थी और बत्ती जल रही थी। कमरे में कोई बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा था। फेलुदा रुक गया। हम भी रुक गए। आखिर किसका कमरा होगा? वह हिलती-डुलती आकृति आकर खिड़की पर खड़ी हो गई। वह नीलिमा देवी थीं। फिर वह दोबारा दूर चली गईं और इधर-उधर टहलने लगीं। वह इतनी बेचैन क्यों थीं?
हम फिर से चलने लगे। कैलाश नज़रों से ओझल हो गया। हर घर के सामने एक बड़ा सा आंगन था। कहीं न कहीं रेडियो चल रहा था। हमें स्थानीय समाचारों के कुछ अंश सुनाई दे रहे थे। लालमोहन बाबू ने गला साफ किया और टैगोर का एक और बेमेल गीत गुनगुनाना शुरू किया ('आज धान के खेतों में, क्या सूरज और परछाई लुका-छिपी खेल रहे हैं'), तभी मेरी नज़र विपरीत दिशा से आ रहे एक आदमी पर पड़ी। उसने नीले रंग का पुलओवर पहना हुआ था।
जैसे ही वह करीब आया, मैंने उसे पहचान लिया। शंकरलाल मिश्रा ने कहा, 'नमस्कार। मैं आपके घर आने वाला था।' वह कुछ हद तक संभल गया था, लेकिन अभी तक उसके चेहरे पर पहले जैसी खुशी नहीं लौटी थी।
‘क्या कोई बात है?’ फेलुदा ने विनम्रता से पूछा।
मैं... मैं एक निवेदन करना चाहूंगा।
'एक अनुरोध?'
'जी हां। कृपया, श्री मिटर, पूछताछ करना बंद करें। अपनी जांच रोक दें।'
मैं इस तरह के अनुरोध से काफी हैरान रह गया, लेकिन फेलुदा ने शांत भाव से बात की।

'श्री मिश्रा, आप मुझसे ऐसा क्यों करवाना चाहते हैं?'
इससे किसी को कोई फायदा नहीं होगा।
कुछ देर रुकने के बाद फेलुदा हल्के से मुस्कुराए। “मान लीजिए कि मैं आपको बता दूं, इससे मुझे कुछ फायदा होगा? मेरे मन में संदेह होने पर मुझे चैन नहीं मिलता। मुझे उन्हें दूर करना ही होगा, श्री मिश्रा। इसके अलावा, किसी ने अपनी मृत्युशय्या से मुझसे बात की और मुझसे कुछ करने को कहा। मैं उस काम को अधूरा कैसे छोड़ सकता हूँ? मुझे खेद है, श्री मिश्रा, लेकिन मुझे अपनी जांच जारी रखनी होगी। वास्तव में, मुझे आपकी मदद की ज़रूरत है। महेश चौधरी के बारे में अलग-अलग लोग अलग-अलग बातें कह सकते हैं, लेकिन आप उनका बहुत सम्मान करते थे, है ना?”
‘बिल्कुल।’ श्री मिश्रा का जवाब कुछ सेकंड बाद आया, शायद इसलिए कि वे फेलुदा की बात को तुरंत स्वीकार नहीं कर पाए थे। फिर उन्होंने और दृढ़ता से कहा, ‘मैंने ज़रूर किया। लेकिन…’ उनकी आवाज़ बदल गई, ‘क्या उस सम्मान को, उन सभी भावनाओं को, एक ही झटके में नष्ट होने देना चाहिए? वह सब कुछ जो कई वर्षों में बना था… क्या उसे यूँ ही जाने देना चाहिए?’
क्या तुम यही कर रहे थे?
हां। हां, मैंने लगभग ऐसा होने ही दिया था। लेकिन फिर मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ। मैं किसी भी चीज को अपने विश्वासों को नष्ट नहीं करने दूंगा। मैंने यह फैसला कर लिया है, और अब मुझे शांति मिल गई है।
‘तो क्या मैं आपसे मदद की उम्मीद कर सकता हूँ?’
‘ज़रूर। मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?’ श्री मिश्रा लगभग अपने पुराने अंदाज़ में थे। उन्होंने फेलुदा की आँखों में सीधे देखा।
मैं यह जानना चाहता हूं कि महेश चौधरी अपने अन्य दो बेटों के बारे में क्या सोचते थे। आपके अलावा कोई भी मुझे निष्पक्ष आकलन नहीं दे सकता।
मैं आपको सिर्फ वही बता सकती हूं जो मैंने महसूस किया। मुझे नहीं लगता कि श्री चौधरी के मन में बीरेन के अलावा किसी और के लिए कोई स्नेह बचा था। अरुण और प्रितिन दोनों ने उन्हें निराश किया था।
'क्यों?'
मुझे सटीक जानकारी नहीं है, क्योंकि मैं उन दोनों में से किसी के भी बहुत करीब नहीं रहा। लेकिन अरुण ने जुआ खेलना शुरू कर दिया था। श्री चौधरी ने खुद मुझे एक दिन बताया; सीधे तौर पर नहीं, बल्कि अपने खास अंदाज में।

उन्होंने कहा, “अगर अरुण अच्छा होता तो मुझे खुशी होती। लेकिन मुझे चिंता है क्योंकि वह बेहतर हो गया है। मुझे लगता है कि वह अक्सर घुड़दौड़ समुदायों में जाता है।” मुझे समझने में थोड़ा समय लगा, लेकिन आखिरकार मैं समझ गया कि “बेहतर” का मतलब सट्टा लगाने वाला था और “घुड़दौड़ समुदाय” का मतलब सिर्फ घुड़दौड़ था।
‘मैं समझ गया। लेकिन प्रितिन ने उन्हें निराश क्यों किया होगा? यकीनन वह इलेक्ट्रॉनिक्स में काफी अच्छा कर रहे हैं?’
‘इलेक्ट्रॉनिक्स?’ श्री मिश्रा पूरी तरह से आश्चर्यचकित लग रहे थे। ‘क्या उन्होंने आपको यही बताया?’
‘क्यों? क्या उसका इंडोविजन से कोई लेना-देना नहीं है?’
श्री मिश्रा जोर से हंस पड़े। 'अरे बाप रे! प्रितिन एक छोटी सी निजी कंपनी में एक साधारण सी नौकरी करता है, जो उसे सिर्फ इसलिए मिली क्योंकि उसके ससुर सही लोगों को जानते थे। प्रितिन वैसे तो अच्छा आदमी है, लेकिन बेहद अव्यावहारिक और जल्दबाज़ है। खुशकिस्मती से उसकी पत्नी एक अमीर बाप की इकलौती बेटी है। वह कार जिसे आपने उसे चलाते हुए देखा, उसके ससुर की है। वह अपनी पत्नी और बेटी से बाद में यहाँ आया क्योंकि उसे छुट्टी लेने में दिक्कत हो रही थी।'
अब आश्चर्यचकित होने की बारी हमारी थी।
लेकिन, श्री मिश्रा ने आगे कहा, 'पक्षियों और उनकी आवाजों के प्रति उनका जुनून बिल्कुल सच्चा है।'
'मेरे पास एक और प्रश्न है।'
'हाँ?'
‘जब हम राजरप्पा गए थे, तब आपको साधु के वेश में एक व्यक्ति से बात करते हुए देखा गया था। क्या वह बीरेन था?’
श्री मिश्रा स्वाभाविक रूप से ऐसे प्रश्न से चौंक गए, लेकिन उन्होंने जल्दी ही खुद को संभाल लिया। उनका जवाब कुछ रहस्यमय सा था। 'आप बहुत चतुर हैं, श्री मित्तर, मुझे यकीन है कि आप जल्द ही हर रहस्य को सुलझा लेंगे।' ‘यह सवाल पूछने की एक खास वजह है। अगर वाकई वह आदमी बीरेन है, तो मेरे पास कुछ ऐसा है जो उसके पिता चाहते थे कि उसे मिले। मुझे वह उसे सौंपना होगा। क्या आप मुलाकात का इंतजाम कर सकते हैं?’

मैं श्री चौधरी की अंतिम इच्छा पूरी करने की पूरी कोशिश करूंगा, मैं वादा करता हूं... लेकिन मैं आपको इससे ज्यादा कुछ नहीं बता सकता।'
श्री मिश्रा अचानक मुड़े और उसी दिशा में वापस चले गए जहाँ से वे आए थे। मुझे पता ही नहीं चला कि हम कितनी दूर आ गए थे। फेलुदा ने अपनी घड़ी देखी और कहा, 'दस बजकर तीस मिनट हो गए।' हमने वापस जाने का फैसला किया। जब हम कैलाश पहुँचे, तो पूरा घर अँधेरे में डूबा हुआ था। आसमान बादलों से घिरा था, चाँद गायब हो चुका था और दूर से आती हुई आवाज़ें शांत थीं। अचानक ही, फेलुदा ने एक शब्द चिल्लाकर सन्नाटा तोड़ा: 'बंदर!' लालमोहन बाबू ने अपने आप ही सिर घुमाया और पूछा, 'कहाँ?'
‘उस डायरी में,’ फेलुदा ने जल्दी से समझाया। ‘माफ़ करना अगर मैंने तुम्हें चौंका दिया हो, लेकिन मुझे अभी-अभी समझ आया कि उसका मतलब क्या था। वह आदमी कितना बुद्धिमान था! मैं तो उन बंदरों के बारे में बिल्कुल भूल ही गया था जो कैटलॉग बनाते हैं।’
‘फेलू बाबू, आप मेरे साथ ऐसा क्यों कर रहे हैं? बंदर ही काफी बुरे थे, और अब आपको कैटलॉग बनाने वाले बंदर चाहिए? कौन से कैटलॉग?’
‘गिबन्स! गिबन्स! गिबन्स!’ फेलुदा ने अधीरता से चिल्लाया।
बिल्कुल! गिबन्स बंदरों की एक प्रजाति थी। मुझे यह पता था, लेकिन मैं कभी इस बात को जोड़ नहीं पाया था।
‘वह बहुत पैसा कमा लेता,’ फेलुदा ने कहा। ‘कौन?’
‘वह चोर जिसने स्टाम्प एल्बम चुराया।’
लालमोहन बाबू आधी रात तक हमारे कमरे में रहकर फेलुदा को और पहेलियाँ सुलझाते हुए देखते रहे। उन्हें ग्यारह बजे अरुण बाबू को फोन करके एक पहेली का उत्तर पूछना पड़ा। 18 अक्टूबर 1951 को श्री चौधरी ने लिखा था, 'उनका देहांत हो गया।' अरुण बाबू ने फेलुदा को बताया कि उसी दिन उनकी माताजी का देहांत हुआ था और उनका नाम हेरोनमोयी था। इससे उन्हें समझ आ गया कि 'वह' कौन थे।
1958 में की गई कुछ प्रविष्टियों में लिखा था, 'मूर्ख बनो', 'जिद्दी बनो', 'दृढ़ निश्चयी बनो'। ये आदर्श वाक्यों की तरह लगते थे, लेकिन इस संदर्भ में 'बनना' का अर्थ केवल 'बी' यानी बिरेन ही हो सकता था।

1975 में एक पृष्ठ पर लिखा था, 'अ तीन द्वारा शासित है।' स्पष्ट रूप से उनका तात्पर्य छह घातक पापों से था, और 'अ' का अर्थ अरुण था। उनके पिता को लगता था कि वह लालची है।
उनकी मृत्यु से ठीक एक दिन पहले आखिरी प्रविष्टि की गई थी। उसमें बस इतना लिखा था, 'वापस आओ। आशा, लौट आओ।' इसके बाद के सभी पृष्ठ खाली थे।
डायरी लिखने का काम खत्म करते-करते एक बज चुका था। मैं सोने चला गया, लेकिन फेलुदा बंगाल के सर्कस पर लिखी वो किताब पढ़ने लगा जो लालमोहन बाबू ने उसे उधार दी थी। बहुत पहले ही तय हो गया था कि लालमोहन बाबू के बाद फेलुदा उसे पढ़ेगा और खत्म होने पर मुझे दे देगा।
जैसे ही मेरी आंखें भारी होने लगीं, मैंने उसे बोलते हुए सुना।
जब कोई हत्या होती है, तो पुलिस उस जगह पर एक निशान लगा देती है जहां शव मिलता है। क्या आप जानते हैं कि वह क्या होता है?
‘क्या यही वह जगह है?’ मैंने नींद में कहा।
‘बिल्कुल सही। X ही वह जगह है।’
मुझे लगभग तुरंत ही नींद आ गई और मैंने एक भयानक सपना देखा। काली की एक विशाल मूर्ति मेरे सामने खड़ी थी, उसके हाथ-पैर 'X' अक्षर की तरह फैले हुए थे। लेकिन वह मेरी तरफ नहीं देख रही थी। वह अरुण बाबू को घूर रही थी और कह रही थी, 'तीन नियम तुम पर लागू होते हैं, तीन नियम तुम पर लागू होते हैं, तीन नियम तुम पर लागू होते हैं!'
फिर अचानक उसका चेहरा गायब हो गया और उसकी जगह लालमोहन बाबू का चेहरा आ गया। वह खुशी से झूमते हुए कह रहा था, 'एक महीने में तीन हजार प्रतियां बिक गईं... कलमोहन बंगाली, यही मेरा नाम है!'
फिर मैं अचानक चौंककर जाग गया। दरवाजे पर हुई आवाज ने मुझे जगा दिया था। इसके बाद दो आदमियों के आपस में हाथापाई करने की आवाज आई। बाहर बारिश हो रही थी।
मैंने अनायास ही हाथ बढ़ाकर बिस्तर के पास लगे लैंप का स्विच दबा दिया। कुछ नहीं हुआ। मैं भूल ही गया था कि बिहार में भी कलकत्ता की तरह अक्सर बिजली कटौती होती है।
कोई चीज धड़ाम से फर्श पर गिरी। 'टॉपशे, अपनी टॉर्च ले आओ,' फेलुदा की आवाज आई, 'मेरी टॉर्च गिर गई है।'

मैंने अंधेरे में टटोलते हुए आखिरकार अपनी टॉर्च ढूंढ ली, लेकिन उससे पहले मैंने पानी का गिलास गिरा दिया और वह टूट गई।
फेलुदा दरवाजे के पास खड़ा था, उसका चेहरा बेबसी भरे गुस्से से लाल हो रहा था।
‘वह कौन था, फेलुदा? वह तो बच निकला, है ना?’
'हां। मैंने उसका चेहरा नहीं देखा, लेकिन वह लंबा-चौड़ा और तगड़ा था। मुझे लगता है कि मैं जानता हूं कि उसे यहां क्यों भेजा गया था।'
'क्यों?'
'चोरी करने के लिए।'
‘क्या उसने कुछ लिया था?’
'नहीं, लेकिन अगर मैं हल्की नींद वाला व्यक्ति न होता तो वह कुछ बहुत कीमती चीज ले जाता।'
‘कोई कीमती चीज? लेकिन हमारे पास तो कुछ भी कीमती नहीं है, है ना?’
फेलुदा ने मुझे कोई जवाब नहीं दिया। ‘एक बात अब बिल्कुल स्पष्ट है, टॉपशे,’ उसने धीरे से कहा। ‘मैं अकेला नहीं हूँ जो महेश चौधरी की पहेलियों का अर्थ समझ पाया है। लेकिन इस दूसरे आदमी के लिए अब बहुत देर हो चुकी है।’

दस

अगले दिन जब लालमोहन बाबू ने चोर के बारे में सुना, तो उन्होंने कहा, 'मैंने तुमसे कहा था ना कि अपना दरवाजा बंद रखना? इन इलाकों में तो हमेशा से छोटे- मोटे चोर होते रहे हैं!'
‘लालमोहन बाबू, आप अपने दरवाजे को बाघ के डर से बंद रखते हैं, चोरी के डर से नहीं। मान लीजिए, यह बात आप भी समझ लीजिए।’
ठीक है, लेकिन सावधानी बरतने में ही भलाई है, है ना? एक बंद दरवाजा आपको चोर और खूंखार जानवर दोनों से बचाएगा... बुलकीप्रसाद, हमारा नाश्ता कहाँ है? ‘आज सुबह आपको इतनी जल्दी क्यों है?’
‘क्यों, क्या हम सुल्तान की गिरफ्तारी नहीं देखने जा रहे हैं?’
‘उसे कौन पकड़ेगा? करंदीकर गायब हो गया है, है ना?’
हां, लेकिन वो कहीं न कहीं तो जरूर होगा, और मुझे पूरा यकीन है कि उसे अपने बाघ को मारने की योजनाओं के बारे में पता चल गया होगा। वो छिप नहीं पाएगा, फेलू बाबू, मेरी बात याद रखना। सोचो हमें कितना रोमांचक नजारा देखने को मिल सकता है! ओह, हमें ये मौका नहीं गंवाना चाहिए। मुझे समझ नहीं आता कि आप इसे इतनी शांति से कैसे ले सकते हैं।
हमने आठ बजे तक नाश्ता समाप्त कर लिया और डायरी और पत्र लौटाने के लिए कैलाश जाने की तैयारी करने लगे। तभी अखिल चक्रवर्ती अप्रत्याशित रूप से आ गए।
उन्होंने बताया, ‘आपके पड़ोसियों में से एक होम्योपैथ हैं और मेरे दोस्त भी हैं। मैं उनसे मिलने जा रहा था, लेकिन सोचा कि रास्ते में आपका घर ही है, तो आपसे मिलने आ जाऊं।’
‘अच्छा। कृपया बैठ जाइए। मुझे बताइए,’ फेलुदा ने कहा, ‘क्या उस हर्बल तेल ने आपके दोस्त के गुस्से को नियंत्रित करने में मदद की?’
‘हे भगवान, क्या महेश ने अपनी डायरी में इसका जिक्र किया था?’
'हां, अन्य बातों के साथ-साथ।'

‘मैं समझ गया। सच कहूँ तो, महेश को असल में उसकी अपनी इच्छाशक्ति से ही मदद मिली। मैंने देखा कि उसके लिए शराब छोड़ना कितना मुश्किल था, लेकिन उसने कर दिखाया। यह किसी हर्बल तेल या ऐसी ही किसी चीज़ की वजह से नहीं हुआ।’ 'चूंकि आपने "वसीयत" शब्द का जिक्र किया है, तो क्या आप हमें बता सकते हैं कि क्या उन्होंने वसीयत बनाई थी?'
मुझे पूरी जानकारी नहीं है, लेकिन मुझे इतना पता है कि महेश ने अपनी पहली वसीयत बदल दी थी।
मुझे लगता है कि उनके दूसरे बेटे, बिरेन को दूसरी वसीयत से हटा दिया गया था।
‘आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? क्या उन्होंने अपनी डायरी में इसका जिक्र किया था?’
नहीं। मरने से ठीक पहले उन्होंने मुझे बताया था। क्या आपको उनके हाव-भाव याद हैं? उन्होंने दो उंगलियां उठाईं, फिर कहा "हम... हम..." और फिर उन्होंने अपना अंगूठा हिलाया। वे ठीक से "वसीयत" नहीं कह पाए। अगर दो उंगलियों का इशारा "ड्यूस" की ओर था, तो बाकी संदेश का मतलब सिर्फ यही हो सकता है कि ड्यूस को उनकी वसीयत में कुछ भी नहीं मिला था।
‘शानदार! और आप बिल्कुल सही हैं। महेश द्वारा बनाई गई पहली वसीयत में बीरेन का भी हिस्सा था। लेकिन जब उन्होंने लिखना बंद कर दिया, तो महेश ने वसीयत बदलने से पहले पांच साल इंतजार किया और फिर उन्हें पूरी तरह से बाहर कर दिया। बीरेन की चुप्पी से महेश को गहरा दुख हुआ था।’
'अगर बीरेन वापस आ जाते, तो क्या आपको लगता है कि महेश चौधरी दूसरी बार अपनी वसीयत बदलते?'
‘निस्संदेह। मुझे पूरा यकीन है।’
फेलुदा ने अगला सवाल पूछने से पहले एक पल के लिए रुककर कहा, 'क्या आपने कभी सोचा था कि बीरेन साधु बन सकता है?'
‘देखिए, बीरेन की कुंडली मैंने ही बनाई थी। मुझे पता था कि वह कम उम्र में ही घर छोड़ देगा। इसलिए, उसके संसार का त्याग करके साधु बनने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।’
‘एक आखिरी सवाल। उस दिन राजरप्पा में आपने कहा था कि आप अपने दोस्त को ढूंढने जा रहे हैं। लेकिन आप श्री चौधरी के मिलने के काफी देर बाद

घटनास्थल पर पहुंचे। क्या आप रास्ता भटक गए थे? यह कोई बहुत बड़ा या जटिल इलाका तो नहीं है, है ना?’
अखिल चक्रवर्ती मुस्कुराते हुए बोले, 'मुझे पता था कि तुम मुझसे यह सवाल पूछोगे।' 'बिल्कुल सही। यह कोई जटिल इलाका नहीं है, लेकिन तुमने देखा ही होगा कि मुख्य रास्ता दो दिशाओं में बंट जाता है। अगर मैं बाईं ओर मुड़ता तो महेश को आसानी से ढूंढ लेता। लेकिन मैं दाईं ओर मुड़ गया। जानते हो क्यों? बस इसलिए कि अचानक मेरी बचपन की यादें ताजा हो गईं। पचपन साल पहले, मैं इसी जगह पर गया था और एक पत्थर पर अपने नाम के पहले अक्षर और तारीख उकेरी थी। मुझे वह याद आया और मुझे यह देखने की तीव्र इच्छा हुई कि क्या वह अभी भी वहीं है। और वह वहीं थी, साथ ही वे अक्षर भी जो मैंने उकेरे थे: एबीसी, 15.5.23। अगर तुम्हें यकीन नहीं है, तो तुम खुद जाकर देख सकते हो।' कैलाश पहुँचकर हमें पता चला कि अरुण बाबू पहले ही जा चुके थे। बूढ़े नूर मोहम्मद ने बताया कि प्रीतिन बाबू घर पर हैं, और उन्हें सूचित करने के लिए चले गए। कुछ ही क्षणों में वे हमसे मिलने आ गए।
हमने उन्हें डायरियों और पत्रों के पैकेट सौंप दिए और जाने ही वाले थे कि तभी ड्राइंग रूम में कोई और दाखिल हुआ, वो नीलिमा देवी थीं। मैंने देखा कि उनके पति का चेहरा उनके आते ही पीला पड़ गया।
‘मिस्टर मिटर, आपको एक बात जाननी चाहिए,’ उसने कहा। ‘मेरे पति को खुद आपको बताना चाहिए, लेकिन वह बताना नहीं चाहते।’
प्रितिन बाबू ने उनसे विनती भरी नजरों से देखा, लेकिन नीलिमा देवी ने उनकी तरफ देखा तक नहीं। उन्होंने आगे कहा, “जब मेरे ससुर जी उस दिन मिले, तो मेरे पति का टेप रिकॉर्डर गिर गया। मैंने उसे उठाया और अपने बैग में रख लिया। मुझे लगता है कि यह आपके काम आएगा। यह रहा।”
प्रितिन बाबू ने एक बार फिर अपनी पत्नी को रोकने की कोशिश की, लेकिन असफल रहे।
‘धन्यवाद,’ फेलुदा ने कहा और नीलिमा देवी से छोटा, चपटा रिकॉर्डर ले लिया।
फिर उसने उसे अपनी जेब में रख लिया।
प्रितिन बाबू को देखकर ऐसा लग रहा था मानो वह कभी भी टूट जाएंगे।
मुझे ऐसा लग रहा था कि लालमोहन बाबू और मेरी तरह ही फेलुदा भी बाघ को पकड़े जाने का दृश्य देखने में उतना ही दिलचस्पी रखता था। कैलाश से निकलते समय उसने हमारे ड्राइवर को जो निर्देश दिए, उससे मेरी आशंका सही साबित हुई।

हालांकि, लालमोहन बाबू का उत्साह अब कुछ हद तक चिंता से भी ग्रस्त प्रतीत हो रहा था।
‘अरुण चौधरी के पास तो कई बंदूकें हैं। तुमने एक क्यों नहीं मांगी, फेलू बाबू?’ उसने कुछ देर बाद कहा। ‘अगर हमें बाघ दिख गया तो तुम्हारी कोल्ट.32 किस काम आएगी?’
“खैर, अगर कोई मक्खी आकर बाघ पर बैठ जाए, तो मेरी रिवॉल्वर उसे नष्ट करने के लिए काफी होगी, लालमोहन बाबू, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं।”
फिर फेलुदा चुप हो गया, रिकॉर्डर को अपने कान के पास पकड़े हुए ध्यान से सुनने लगा। उसने हमें यह नहीं बताया कि उसने क्या सुना, और हम उससे पूछने की बजाय बेहतर जानते थे।
पिछली रात की बारिश से कई जगहों पर ज़मीन गीली और कीचड़ भरी हो गई थी। जैसे ही हम एक चौराहे के पास पहुँचे, यह स्पष्ट हो गया कि एक कार और अन्य वाहन यहाँ से बाईं ओर मुड़े थे, क्योंकि जंगल की ओर ताज़े टायरों के निशान थे। हमने भी बाईं ओर मुड़कर इन निशानों का पीछा किया। एक मील आगे जाकर, हमने एक बरगद के पेड़ के पास तीन अलग-अलग वाहन खड़े देखे: वन विभाग की एक जीप, अरुण बाबू की फिएट और सर्कस का एक बड़ा ट्रक जिसमें बाघ का पिंजरा था। पाँच-छह आदमी पेड़ के नीचे बैठे थे। उन्होंने हमें बताया कि एक टीम बाघ को खोजने के लिए जंगल में जा चुकी है और उन्होंने हमें सही दिशा दिखाई। मैंने उनमें से एक आदमी को पहचान लिया, क्योंकि मैंने उसे पहले सर्कस में देखा था। फेलुदा ने उससे पूछा कि क्या सुल्तान का प्रशिक्षक बाकी लोगों के साथ गया है। उसने कहा कि नया प्रशिक्षक चंद्रन उनके साथ है, लेकिन करंदीकर का अभी तक कोई पता नहीं चला है।
हम गाड़ी से उतरे और पैदल चलने लगे। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि आगे क्या होने वाला है, लेकिन इतना जरूर पता था कि अरुण बाबू के पास बंदूक है, और वन विभाग का शिकारी भी निस्संदेह इसी तरह के हथियारों से लैस होगा। इसलिए बाघ द्वारा किसी पर हमला करने की आशंका बहुत कम थी। लालमोहन बाबू थोड़े निराश लग रहे थे, शायद इसलिए क्योंकि करंदीकर की जगह चंद्रन वहां मौजूद था।
नम ज़मीन पर बने धुंधले पदचिह्नों ने हमें रास्ता दिखाया। जंगल के इस हिस्से में ज़्यादा पेड़ नहीं थे, इसलिए चलना-फिरना काफ़ी आसान था। एक मोर

ने दो-तीन बार आवाज़ निकाली, जो शायद दूसरे जानवरों को यह चेतावनी थी कि आसपास कोई बाघ है।
दस मिनट बाद, हमें एक अलग सी आवाज़ सुनाई दी। यह निश्चित रूप से बाघ की आवाज़ थी, लेकिन वह दहाड़ नहीं रहा था। यह गुर्राहट जैसी लग रही थी, मानो बाघ किसी बात से चिढ़ गया हो।
हम आगे बढ़ते गए और कुछ ही मिनटों बाद, दो पेड़ों के बीच से गुजरते हुए, हमारी नज़र एक विचित्र दृश्य पर पड़ी। मैं इसे विचित्र इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि सर्कस के अखाड़े के बाहर मुझे ऐसा कुछ देखने को मिलेगा।
जहां हम रुके थे, उससे कुछ ही फीट की दूरी पर तीन आदमी कतार में खड़े थे। उनमें से दो के पास बंदूकें थीं। अरुण चौधरी के हाथ में जो बंदूक थी, वह उठी हुई थी और सामने किसी वस्तु की ओर इशारा कर रही थी।
उनके सामने एक खुला मैदान था, जो सर्कस के अखाड़े जैसा लग रहा था। इस अखाड़े के बीचोंबीच एक आदमी खड़ा था, उसके दाहिने हाथ में एक लंबा चाबुक और बाएं हाथ में एक टूटी हुई शाखा थी। उसके बाएं कंधे पर पट्टी बंधी हुई थी, जिससे लग रहा था कि वह नया प्रशिक्षक चंद्रन था।
चंद्रन ने हमारी तरफ पीठ कर रखी थी। वह धीरे-धीरे और अत्यंत सावधानी से आगे बढ़ रहा था, बीच-बीच में चाबुक चला रहा था। जिस जानवर के पास वह जा रहा था, उससे हम पहले ही मिल चुके थे। वह सुल्तान था, जिसे आखिरी बार रामगढ़ जाने वाली सड़क पर देखा गया था।
थोड़ी दूरी पर चार और आदमी खड़े थे। उनमें से दो के हाथ में एक भारी जंजीर थी, जिसे निस्संदेह सुल्तान के गले में डाल दिया जाता, अगर वह पकड़ा जाता। सबसे आश्चर्यजनक बात सुल्तान का व्यवहार था। वह स्पष्ट रूप से पकड़ा जाना नहीं चाहता था, लेकिन साथ ही भागने की कोशिश भी नहीं कर रहा था। उसकी आँखों में क्रोध या क्रूरता नहीं, बल्कि झुंझलाहट और घोर तिरस्कार झलक रहा था। उसकी धीमी गुर्राहट भी यही संकेत दे रही थी।
चंद्रन हर मिनट करीब आता जा रहा था, लेकिन वह आत्मविश्वास से भरा हुआ नहीं लग रहा था। शायद वह यह भूल नहीं पा रहा था कि उसी जानवर ने उस पर पहले भी हमला किया था। मैंने अरुण बाबू पर एक नज़र डाली। जिस तरह से उसने अपनी बंदूक पकड़ी हुई थी, उससे मुझे कोई शक नहीं था कि अगर सुल्तान ने ज़रा सा भी आक्रामक व्यवहार दिखाया तो वह तुरंत गोली चला देगा। फेलुदा मेरे सामने,

थोड़ा बाईं ओर खड़ा था; और लालमोहन बाबू मेरे बगल में थे। उनका मुंह इतना खुला हुआ था कि ऐसा लग रहा था मानो वह उसे कभी बंद ही नहीं कर पाएंगे। बाद में उन्होंने मुझे बताया कि सर्कस में पहले जो कुछ भी उन्होंने देखा था, वह जंगल में हमने जो तमाशा देखा, उससे पूरी तरह मिट गया था।
जब चंद्रन पाँच गज की दूरी पर आया, तो सुल्तान अचानक अकड़ गया और झुकने लगा। उसी क्षण, फेलुदा उछलकर अरुण बाबू के पास पहुँचा और हाथ बढ़ाकर उसकी बंदूक की दिशा बदल दी। अब बंदूक का निशाना ज़मीन की ओर था।
‘सुल्तान!’
एक गहरी आवाज़ गूंजी। हमारे साथ एक और आदमी आ गया था। जाहिर है, फेलुदा ने उसे आते हुए देख लिया था और देर होने से पहले ही कार्रवाई करने का फैसला किया था।
‘सुल्तान! सुल्तान!’
आवाज धीमी हो गई, और लहजा बहुत ही सौम्य हो गया। वह आदमी आगे बढ़ा और मंच पर आ गया। वह करंदीकर था। उसके हाथ में एक और चाबुक था, लेकिन वह उसे चला नहीं रहा था। वह पास आया और धीमी आवाज में सुल्तान को पुकारने लगा, मानो वह कोई पालतू कुत्ता या बिल्ली हो।
चंद्रन पूरी तरह से हैरान दिख रहा था और पीछे हट गया। अरुण बाबू ने अपने हाथ नीचे कर लिए। वन विभाग का अधिकारी लालमोहन बाबू की तरह ही अवाक रह गया। अगले कुछ मिनटों में जो कुछ हुआ, उसे देखने के लिए जंगल में ग्यारह लोग मौजूद थे। अविश्वसनीय कोमलता और कुशलता से, सुल्तान के पुराने प्रशिक्षक ने उसे शांत किया, उसके गले में जंजीर डाली और फिर उसे उस ट्रक के पास ले गए जहाँ उसका पिंजरा रखा था। बाहर इंतजार कर रहे लोगों ने झट से ट्रक का दरवाजा खोला और उसके सामने एक ऊँचा स्टूल रख दिया। श्री करंदीकर ने एक बार चाबुक चलाया और कहा, 'उठो!' बिना देर किए, सुल्तान दौड़ा, स्टूल पर कूदा और पिंजरे में घुस गया। लोगों ने तुरंत दरवाजा बंद कर दिया।
हम श्री करंदीकर के पीछे-पीछे चल रहे थे और कुछ दूरी पर खड़े थे। जैसे ही बाघ सुरक्षित रूप से अपने पिंजरे में वापस पहुँचा, वे हमारी ओर मुड़े। फिर उन्होंने हमें सलाम किया और दूसरी कारों के पास खड़ी एक टैक्सी की ओर चल दिए। बिना कुछ बोले या किसी की ओर देखे, वे टैक्सी में बैठे और चले गए। ‘शानदार!’ अरुण चौधरी ने कहा। फेलुदा की ओर मुड़ते हुए उन्होंने कहा, ‘धन्यवाद।’

ग्यारह

हम सब कैलाश लौट आए। अरुण बाबू की अनुमति से फेलुदा ने किसी को फोन किया, हालांकि मैं बता नहीं सका कि वह कौन था। फिर वह ड्राइंग रूम में हमारे साथ शामिल हो गया। नीलिमा देवी ने हमें चाय भेजी। हमें बताया गया कि प्रितिन बाबू उन्हें और बीबी को अगले ही दिन कलकत्ता वापस ले जा रहे हैं। सुल्तान के पकड़े जाने की खबर सुनकर अखिल चक्रवर्ती ने कहा, 'काश मैं भी तुम्हारे साथ गया होता!'
अरुण बाबू ने कहा, 'मुझे लगता है कि मैं भी कल वापस चला जाऊंगा, जब तक कि आपको अपनी जांच के लिए मेरी यहां जरूरत न हो।'
नहीं, इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी। मैंने अपनी जांच पूरी कर ली है और आपके पिता की अंतिम इच्छा पूरी करने का इंतजाम भी कर लिया है।
अरुण बाबू ने प्याले के किनारे से फेलुदा को हैरानी भरी नजरों से देखा। 'क्या मतलब, तुम्हें पता है कि बीरेन कहाँ है?' उसने बहुत आश्चर्यचकित होकर पूछा। 'हाँ। तुम्हारे पिताजी सही थे।'
'अर्थ?'
‘बायरन यहाँ है।’
‘In Hazaribagh?’
‘In Hazaribagh.’
‘मुझे यह... अविश्वसनीय लगता है!’ अरुण बाबू ने कहा, उनके लहजे से यह स्पष्ट था कि उन्हें भी इस पर विश्वास करना असंभव लग रहा था।
‘हां, यह बात समझ में आती है,’ फेलुदा ने कहा। ‘लेकिन क्या आप खुद भी इस बात पर विश्वास करने लगे थे?’
अरुण बाबू ने अपना कप मेज पर रख दिया और सीधे फेलुदा की ओर देखने लगे। ‘इतना ही नहीं,’ फेलुदा ने शांत भाव से आगे कहा, ‘तुम्हें डर था कि कहीं तुम्हारे पिता नई वसीयत न बना लें और तुम्हें उसमें से बाहर कर दें, और तुम्हारा हिस्सा बीरेन को दे दें।’

कुछ सेकंड तक कोई नहीं बोला। कमरे का माहौल अचानक तनावपूर्ण हो गया। मेरे बगल में बैठे लालमोहन बाबू ने एक तकिया उठाया और उसे कसकर पकड़ लिया।
प्रितिन बाबू एक कुर्सी पर बैठे थे और एक हाथ से अपना सिर सहारा दे रहे थे। अरुण चौधरी धीरे-धीरे उठे। उनकी आँखें लाल हो गई थीं और कनपटी की नस फड़क रही थी।
‘सुनो, श्रीमान मित्तर,’ वह गरजते हुए बोला, ‘तुम भले ही एक प्रसिद्ध जासूस हो, लेकिन मैं तुम्हें वहाँ बैठकर मुझ पर पूरी तरह निराधार आरोप लगाने नहीं दूँगा। जगत सिंह!’
उसका सहायक एक खुले दरवाजे से कमरे में घुस गया।
‘रुको! अगर तुमने एक कदम भी आगे बढ़ाया तो मैं तुम्हें गोली मार दूंगा,’ फेलुदा ने ठंडे लहजे में रिवाल्वर पकड़े हुए धमकी दी। ‘जगत सिंह, तुम ही हमारे कमरे में घुसे थे, है ना? मैंने तुम्हारे काफी बाल काट लिए हैं। और मुझे पता है कि तुम्हें वहां किसने भेजा था, किस मकसद से।’
जगत सिंह जम गया। अरुण बाबू गुस्से से कांपते हुए फिर से बैठ गया।
‘तुम क्या कहना चाह रहे हो?’ उसने पूछा।
‘ध्यान से सुनो। तुम्हें पता था कि तुम्हारे पिता अपनी वसीयत बदलने की सोच रहे थे। तुम नहीं चाहते थे कि उन्हें पुरानी वसीयत मिल जाए और वे उसे नष्ट कर दें। इसलिए तुमने उनकी चाबी छिपा दी। बीबी ने उन्हें चाबी ढूंढते हुए देखा, और उन्होंने उसे यह भी बताया कि वे क्या ढूंढ रहे थे: “एक घाट... जो खोलता और बंद करता है”। “घाट” से उनका मतलब “क्वे” था। यह ध्यान में रखते हुए कि उन्हें शब्दों के उच्चारण से खेलना पसंद था, मुझे समझ आया कि “क्वे” वास्तव में एक “चाबी” थी, जिसका उपयोग किसी वस्तु को खोलने और बंद करने के लिए किया जा सकता था। शायद वसीयत एक बंद दराज में रखी थी। लेकिन चाबी चुराने के बाद भी तुम संतुष्ट नहीं थे, है ना? तो, उस दिन राजरप्पा में, तुमने मौके का फायदा उठाया और अपना तुरुप का पत्ता खेला। तुम जानते थे कि यह तुम्हारे पिता के लिए एक बहुत बड़ा झटका होगा, जो शायद उनकी जान लेने के लिए काफी हो। अगर ऐसा हुआ, तो तुम्हें फिर किसी बात की चिंता नहीं रहेगी।’ ‘तुम पागल हो। तुम बस बड़बड़ा रहे हो। तुम्हें पता नहीं कि तुम क्या कह रहे हो, मिस्टर मिटर।’
जी हां, मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूं; और मैं गवाह पेश कर सकता हूं। तीन गवाह हैं, हालांकि उनमें से कोई भी यह स्वीकार नहीं करना चाहेगा कि

उन्होंने क्या देखा और सुना है। आपका अपना भाई, अखिल चक्रवर्ती और शंकरलाल... वे सब जानते हैं।
‘तो फिर, श्रीमान मिटर, अगर आपके गवाह बोलने को तैयार नहीं हैं, तो मुझे लगता है कि आप अपना समय बर्बाद कर रहे हैं, है ना? आप अपना मामला कैसे साबित करेंगे?’
‘बिल्कुल सरल शब्दों में। एक चौथा गवाह है जो सच्चाई बताने में जरा भी संकोच नहीं करेगा।’
अचानक, कमरा अजीब आवाज़ों से भर गया। ये आवाज़ें कहाँ से आ रही थीं? कहीं से पक्षियों की चहचाहट सुनाई दे रही थी, और पृष्ठभूमि में एक झरने की आवाज़ गूंज रही थी।
फेलुदा ने चुपचाप एक छोटी सी काली वस्तु मेज पर रख दी। यह प्रितिन चौधरी का टेप रिकॉर्डर था।
“उस दिन आपके भाई ने जो कुछ गलती से देखा और सुना, उसी वजह से उनका रिकॉर्डर एक झाड़ी के पास गिर गया। उनकी पत्नी ने उसे देखा और उठा लिया। उस टेप में पक्षियों की चहचहाहट के अलावा भी बहुत कुछ है।”
अरुण बाबू ने घबराकर सांस ली। उनके चेहरे का बढ़ा हुआ रंग फीका पड़ने लगा था। कुछ ही मिनटों में उनका चेहरा एकदम पीला पड़ गया। फेलुदा ने अपनी रिवाल्वर ऊपर उठाकर उनकी ओर ताने रखी। टेप रिकॉर्डर लगातार चल रहा था। अब पानी की आवाज़ के ऊपर कुछ और आवाज़ें सुनाई देने लगीं।
‘बाबा, आपको ऐसा क्यों लगता है कि बीरेन वापस आ गया है?’ अरुण बाबू की आवाज ने पूछा।
महेश चौधरी ने पूछा, 'अगर एक बूढ़ा व्यक्ति यह मानना पसंद करता है कि उसका लापता बेटा लौट आया है, तो इससे आपको क्या परेशानी होनी चाहिए?'
‘तुम्हें बिरेन को भूल जाना चाहिए। वह कभी वापस नहीं आएगा। मुझे यह पता है। यह बिल्कुल संभव नहीं है।’
‘आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? आप कौन होते हैं मुझे यह बताने वाले कि मुझे किस पर विश्वास करना चाहिए? आपको कोई अधिकार नहीं है—’
मुझे पूरा अधिकार है। मैं नहीं चाहता कि तुम अपने मूर्खतापूर्ण विश्वास के कारण कुछ गलत और अनुचित करो।
‘क्या गलत और अन्यायपूर्ण है?’
मैं तुम्हें मेरा हक छीनने नहीं दूंगा!

###?

‘### ###### ### ###### ### ###### ## ### ##### ###### ### ## ##, ## ###### ## ###### ##### ##### ###### ## ### ###### ### ### ## ##…’

‘### ## ###### ### ### ###, ## ##### ##### ###### ### ### ##### ## ##### ###### ###### ##### ##,’ ##### ###### ## ####### ### ##### ###### ### ###, ##### ##### ####### ###### ####### ###### ##### ### ‘### ##### ###### ### ##### ### ### ## ####### ##### ## ##### ##?’ ######### ### ##### ‘### ####### ##, ###### ##, ### ##! ###### ##### ####### ## ######### ## ######### ###### ########—’

##, “## ######### #####? ### ### ### ###, ## ### ##### ##? ######## ##### ##### ## ## ### ######## ## ##### ### ##### ######? ## ### ######### ###-###### ## ##### ##### ### ## ### ###### ###### ## ## ##### ## ##### ## ## ### ###### ###### ####### ### ## ### ###, ###### ##### ###-### ### ## ## ##### ### ### ###### ######## ## ### ## ###### ## ##### ## ##### ####### ## ### ##### ### ##### ### ##### ###### ## ##### ##? ######## ## ####### ## ### ### ###### ### ######## ## ##### ######## ## ##### ## ## ##### ## ### ###…”

#####, ## ### ######### ## ##### ## ##### ### ##### ##### ####### ## ######### ### ##### ## ### ######## ##### ## #####

###, “######### ##### ## ## ##### ## ###### ### ### ###### ### ## ###### ###### ####### ##### ###### ##, ## ###### ### ## ## ####### ###### ##### ###, ## ##### ###### ## ########## ##### ## ###### ##### ##### ### ## ######## ## ####### ###, ##### ###### ## ##### ### ## ## ## ## ###### ## ## ## ### ###### ##### ###### ## ### ######## ####### ## ##### ### ## ## ###### ####### ##### ##### ##### ## ## ######”

##, ##### ## ##### ### ## ### ###

‘## ####### ##,’ ##### ##### ## ##### ‘## ###### ###### ##### ### ##### ###### ##### ### ##### #######, ## ####### ######## ## ##### ##### ##### ### ## ###,

उसने दीनदयाल को काटने की कोशिश की, तो दीनदयाल बहुत क्रोधित हो गए और उन्होंने उसे एक भारी डंडे से मारा। कुत्ता घायल हो गया। उस रात, बाबा एक पार्टी से काफी देर से लौटे और पाया कि उनका कुत्ता उनके कमरे में उनका इंतजार नहीं कर रहा था, जैसा कि वह हर दिन करता था। नूर मोहम्मद को उन्हें सारी बात बतानी पड़ी। बाबा ने दीनदयाल को बुलाया, और क्रोध में आकर... जब बाबा को गुस्सा आता था, तो आप जानते हैं, वह बिल्कुल ही अलग इंसान बन जाते थे।’
हम फेलुदा के साथ विदा लेने के लिए उठे। अखिल चक्रवर्ती भी खड़े हो गए। ‘क्या आप एक मिनट के लिए हमारे साथ आ सकते हैं?’ फेलुदा ने उससे पूछा। ‘मैं चाहता हूँ कि आप कुछ काम करें। इसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा।’
‘बहुत खूब,’ अखिल चक्रवर्ती ने जवाब दिया। ‘महेश के चले जाने के बाद, मेरे पास यहाँ करने के लिए कुछ बचा ही नहीं है। मेरे पास दुनिया का सारा समय है।’

बारह

अखिल चक्रवर्ती कार में हमसे बात करने लगे। उन्होंने कहा, ‘मैं एक अलग दिशा में चला गया था, लेकिन ज्यादा दूर नहीं गया। दरअसल, मैं जहां खड़ा था, उस पत्थर के पास से, जिस पर मेरे नाम के पहले अक्षर खुदे थे, मुझे हर शब्द सुनाई दे रहा था। मैं महेश से पूछता था कि वह कभी-कभी इतना खो क्यों जाता है और चुप क्यों हो जाता है। वह हंसता और मुझे अपनी कुंडली देखने को कहता था। यह आश्चर्यजनक है, है ना, कि उसके जीवन की इतनी महत्वपूर्ण घटना मुझसे भी छिपी रही? शायद यह मेरी ही गलती है, मैंने उसकी कुंडली का ठीक से अध्ययन नहीं किया।’
जैसे ही हमारी कार हमारे गेट के बाहर रुकी, मुझे एहसास हुआ कि फेलूदा ने कैलाश से किसे बुलाया था। शंकरलाल मिश्रा हमारा इंतजार कर रहे थे।
‘मिशन सफल रहा?’ फेलुदा ने कार से उतरते हुए उससे पूछा। ‘हां,’ श्री मिश्रा ने उत्तर दिया। ‘बीरेन आपसे मिलने आया है।’
हम बैठक कक्ष में दाखिल हुए तो देखा कि राजरप्पा के वही साधु सोफे पर बैठे हैं। हमें देखकर वे उठ खड़े हुए और नमस्कार कहा। भगवा वस्त्र पहने वे लंबे और सुगठित कद-काठी के थे, उनके घने उलझे बाल कमर तक पहुँच रहे थे। घनी दाढ़ी ने उनके चेहरे का अधिकांश भाग ढक रखा था।
श्री मिश्रा ने कहा, 'वह तभी आने को राजी हुआ जब मैंने उसे उसके पिता की अंतिम इच्छा के बारे में बताया। उसे अपने पिता से कोई शिकायत नहीं है।' ‘नहीं,’ बीरेन ने सहमति जताते हुए कहा, ‘लेकिन फिर, मुझे उससे कोई प्यार या लगाव भी नहीं है। शंकर ने मुझे वापस लाने की बहुत कोशिश की। उसे लगा कि अगर मैं अपने पिता और परिवार के अन्य सदस्यों को, भले ही दूर से ही सही, देख लूँगी, तो शायद मैं वापस आना चाहूँगी। इसीलिए मैं उस दिन राजरप्पा में थी। लेकिन अपने परिवार को देखने के बाद मुझे एहसास हुआ कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। मुझे उनकी परवाह ही नहीं रही। मेरे पिता एक जटिल व्यक्ति थे, लेकिन वही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जो मुझे समझते थे। इसलिए, शुरुआत में मैं उन्हें पत्र लिखती थी। लेकिन बाद में...’

‘लेकिन वो चिट्ठियाँ विदेश से तो नहीं भेजी गई थीं, है ना? मुझे नहीं लगता कि तुम कभी देश से बाहर गए थे!’ फेलुदा ने शांत भाव से कहा।
हम सब चौंक गए, लेकिन बीरेन चौधरी ने फेलुदा को भावहीन चेहरे से घूरते रहे।
फिर अचानक, वे मुस्कुराए। ‘शंकर ने मुझे बताया था कि तुम कितने होशियार हो।
मैं तो बस तुम्हारी परीक्षा ले रहा था,’ वे हँसे।
‘बहुत खूब। अब आप अपना भेस उतार सकते हैं,’ फेलुदा ने सुझाव दिया। ‘हो सकता है इससे हजारीबाग के पूरे कस्बे को मूर्ख बनाया जा सके, लेकिन आप मुझे मूर्ख नहीं बना सकते।’
बीरेन चौधरी ने अपनी विग और नकली दाढ़ी उतारते हुए भी हंसना जारी रखा। उनका चेहरा देखकर मैं एक बार फिर चौंक गई। लालमोहन बाबू ने मेरी आस्तीन पकड़ ली और फुसफुसाते हुए कहा, 'कन-कन-कन—' उन्होंने नाम फिर से गलत लिया था, लेकिन मैं इतनी हैरान थी कि उन्हें सुधारने की हिम्मत नहीं हुई। श्री करंदीकर ने हमारी ओर देखा और सिर हिलाया।
अखिल चक्रवर्ती ने चुप्पी तोड़ी। 'आपका क्या मतलब है, श्री मित्तर? बीरेन कभी विदेश नहीं गए? तो फिर उनके पत्रों का क्या मतलब है?'
'श्री चक्रवर्ती, अगर आपके बेटे जैसा कोई दोस्त हो तो विदेश से पत्र भेजना संभव है।'
‘मेरा बेटा? उसका इससे क्या लेना-देना है?’
‘श्री मिटर सही कह रहे हैं,’ बीरेन चौधरी—या मुझे उन्हें श्री करंदीकर कहना चाहिए?—ने उत्तर दिया, ‘अधीर डसेलडोर्फ में थे, है ना? मैंने उन्हें पत्र लिखा और उनसे कई यूरोपीय पोस्टकार्ड मंगवाए। फिर मैं उन पर बाबा का नाम और पता लिखता था, कभी-कभी एक-दो पंक्तियाँ और जोड़ देता था, उन्हें लिफाफों में डालकर अधीर को वापस भेज देता था। फिर वे यूरोप के विभिन्न हिस्सों से उन्हें डाक से भिजवाने की व्यवस्था करते थे। वे खुद भी बहुत यात्रा करते थे। लेकिन जब वे भारत लौट आए, तो स्वाभाविक रूप से मुझे यह सब बंद करना पड़ा।’
‘कितना असाधारण! आपको इतना गुप्त रहने की क्या जरूरत थी?’
फेलुदा ने कहा, 'इसका कोई कारण था। मैं श्री करंदीकर से यह पुष्टि करवाना चाहूंगा कि मेरा अनुमान सही है या नहीं।'
'हाँ?'

‘आप कर्नल सुरेश बिस्वास के जीवन से बहुत प्रभावित और प्रेरित हुए थे, और आप उनके जैसा बनना चाहते थे। मुझे पता था कि कर्नल बिस्वास युवावस्था में ही घर छोड़कर इंग्लैंड और ब्राजील चले गए थे, लेकिन मुझे यह नहीं पता था कि वे पहले बंगाली थे जिन्होंने सर्कस में प्रदर्शन करने के लिए बाघों को प्रशिक्षित करना सीखा था। मैंने कल रात ‘द सर्कस इन बंगाल’ नामक पुस्तक में इसके बारे में पढ़ा। उनकी प्रसिद्धि का एक कारण बाघ का मुंह खोलकर उसमें अपना सिर रखना था।’
लालमोहन बाबू ने एक बार फिर बोलने के लिए अपना मुंह खोला। ‘श्...
‘क्या बात है, लालमोहन बाबू? क्या आप चाहते हैं कि हम चुप रहें?’
‘न-न-नहीं। धिक्कार है मुझ पर, फेलू बाबू, धिक्कार है मुझ पर! मैंने वह किताब आपसे पहले पढ़ी थी, फिर भी मैं उसे नहीं समझ पाया। मैं पागल हो गया हूँ, मैं अंधा हो गया हूँ, मैं...’
‘ठीक है, ठीक है, बाद में आप खुद को दोष दे सकते हैं। अब कृपया मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए।’
लालमोहन बाबू शांत हो गए। फेलुदा ने आगे कहा, 'बीरेन चौधरी अपने हीरो की तरह जंगली जानवरों के साथ काम करना चाहता था। लेकिन एक प्रतिष्ठित परिवार का पढ़ा-लिखा नौजवान सर्कस में बाघों का प्रशिक्षक बनेगा, ऐसी उम्मीद तो नहीं की जा सकती, है ना? महेश चौधरी भले ही आम लोगों से अलग थे, लेकिन वो भी इसे मंज़ूर नहीं करते। बीरेन यह जानता था, इसलिए उसने थोड़ा छल करने का फैसला किया। क्या मैं सही कह रहा हूँ?'
'बिल्कुल,' बीरेन चौधरी ने जवाब दिया।
सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि महेश चौधरी इतने वर्षों बाद भी अपने बेटे को पहचान गए जब वह पहले दिन सर्कस देखने गया था। अरुण बाबू ऐसा नहीं कर पाए, हालांकि उन्होंने आपको कुछ ही फीट की दूरी से देखा था। बाघ के हमले के बाद आपकी नाक की प्लास्टिक सर्जरी करानी पड़ी थी, है ना? इसीलिए आप अपने पिता के घर में रखी पुरानी तस्वीर से भी अलग दिखते हैं।
‘अहा, अब समझ में आया!’ अखिल चक्रवर्ती ने कहा। ‘मुझे आश्चर्य हो रहा था कि सब लोग उसे बीरेन क्यों कह रहे थे, जबकि मैं उसे बिल्कुल भी पहचान नहीं पा रहा था।’
‘खैर,’ फेलुदा ने कहा, ‘अब मुझे आपको यह बताना होगा कि मैं वास्तव में आपको यहाँ क्यों बुलाना चाहता था।’

उन्होंने अपनी जेब से मुक्तानंद की तस्वीर निकाली। फिर वे बीरेन चौधरी की ओर मुड़े। “शायद आपको पता नहीं है कि जब आपके पिता को यकीन हो गया कि आप कभी वापस नहीं लौटेंगे, तो उन्होंने एक नई वसीयत बनाई। उन्होंने उसमें आपका नाम नहीं लिखा। हालांकि, वे आपको पूरी तरह से वंचित नहीं करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने आपके लिए यह तस्वीर छोड़ दी।”
फेलुदा ने तस्वीर को पलटकर फ्रेम से बाहर निकाला। उसमें से एक छोटा सा मुड़ा हुआ सेलोफेन लिफाफा फिसलकर बाहर आया। उसमें कागज के कुछ छोटे-छोटे चौकोर, रंगीन टुकड़े थे।
फेलुदा ने बताया, ‘यहां नौ दुर्लभ और मूल्यवान डाक टिकट हैं, जो तीन अलग-अलग महाद्वीपों से आए हैं। श्री चौधरी को डर था कि उनका एल्बम चोरी हो सकता है, इसलिए उन्होंने सबसे कीमती डाक टिकट निकालकर यहां छिपा दिए थे। पच्चीस साल पहले गिबन्स कैटलॉग में उल्लिखित कीमतों के अनुसार, इनका कुल मूल्य दो हजार पाउंड था।’
'आप यह कैसे जानते हैं?'
‘तुम्हारे पिता की डायरी में एक संदेश था। उन्होंने इन नौ टिकटों को “नौ रत्न” कहा था और गिबन्स को “बंदर”। फिर उन्होंने कहा कि इनकी कीमत “शाइलॉक की दो हज़ार मांगों” के बराबर है। तपेश ने मुझे याद दिलाया कि शाइलॉक ने एक पौंड मांस की मांग की थी। यहीं से मुझे “पाउंड” शब्द का पता चला। लेकिन अब मुझे लगता है कि इन रत्नों की कीमत इससे कहीं अधिक होगी।’
बीरेन चौधरी ने फेलुदा से लिफाफा लिया और उसे घूरने लगा। फिर उसने कहा, 'मैं तो बस एक रिंगमास्टर हूँ, श्रीमान मित्तर। मैं अपना जीवन घुमंतू की तरह बिताता हूँ, हर समय यात्रा करता रहता हूँ। ऐसी चीज़ का मैं क्या करूँ? इसे कहाँ रखूँ? यह तो बहुत बड़ा बोझ होगा! श्रीमान मित्तर, मैं क्या करूँ?' ‘मैं आपकी समस्या समझ सकता हूँ,’ फेलुदा ने उत्तर दिया। ‘सुनिए, आप इन्हें मेरे पास क्यों नहीं छोड़ देते? मैं कलकत्ता में कुछ डाक टिकट विक्रेताओं को जानता हूँ। मैं उनसे बात करूँगा और देखूँगा कि आपको सर्वोत्तम संभव कीमत मिले। फिर मैं आपको पैसे भेज दूँगा। क्या यह ठीक रहेगा? क्या आपको लगता है कि आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं?’
'ओह, बिल्कुल।'
'बहुत अच्छा। लेकिन मुझे आपका पता चाहिए होगा।'

‘□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□,’ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ ‘□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□, □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□’

□□ □□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□, □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□

□□□□□□□□ □□□□ □□□, ‘□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□ “□□□□□□□” □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□? □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□’

‘□□□□□□□,’ □□□□□ □□□□□ □□□□□ ‘□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□!’

□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□

'□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□?' □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□

'□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□, □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□ □ □□□□'

‘□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□?’

‘□□□□□□□□?’ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ ‘□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□?’

***** □□□□□□ *****

sjeet

लेखक का नोट

मैं लंबे समय से अपराध कथाओं का शौकीन पाठक रहा हूँ। मैंने स्कूल के दिनों में ही शर्लक होम्स की सभी कहानियाँ पढ़ डाली थीं। जब मैंने अपने दादाजी द्वारा पचहत्तर वर्ष पूर्व शुरू की गई बच्चों की पत्रिका 'संदेश' को पुनर्जीवित किया, तो मैंने उसके लिए कहानियाँ लिखना शुरू किया। पहली 'फेलुदा' कहानी - एक लघु कथा - 1965 में प्रकाशित हुई। फेलु, निजी जासूस प्रदोष मित्र का उपनाम है। कहानी फेलु के चचेरे भाई तपेश (वॉटसन) के दृष्टिकोण से सुनाई गई है। 'दा' प्रत्यय (जो 'दादा' का संक्षिप्त रूप है) का अर्थ है बड़ा भाई।
हालाँकि फेलुदा की कहानियाँ मुख्य रूप से संदेश के किशोर पाठकों के लिए लिखी गई थीं, लेकिन मैंने पाया कि उनके माता-पिता भी इन्हें पढ़ रहे थे। जल्द ही लंबी कहानियाँ - लघु उपन्यास - भी प्रकाशित होने लगीं, जिनकी पृष्ठभूमि विभिन्न सुरम्य स्थानों में घटित होती थी। कहानी की शुरुआत में ही एक तीसरे पात्र का परिचय कराया गया: लालमोहन गांगुली, जो सस्ते और लोकप्रिय थ्रिलर उपन्यासों के लेखक थे। वे फेलुदा के विपरीत एक पात्र के रूप में काम करते हैं और भरपूर हास्य का संचार करते हैं।
जब मैंने अपनी पहली फेलुदा कहानी लिखी थी, तब मैंने शायद ही कभी सोचा था कि वह इतनी लोकप्रिय हो जाएगी कि मुझे हर साल फेलुदा पर एक उपन्यास लिखना पड़ेगा। युवा पाठकों को ध्यान में रखते हुए जासूसी कहानी लिखना आसान काम नहीं है, क्योंकि कहानियों को 'साफ-सुथरा' रखना पड़ता है। कोई नाजायज प्रेम नहीं, कोई कामुक अपराध नहीं, और हिंसा भी बहुत कम। मुझे उम्मीद है कि वयस्क पाठक इन कहानियों को पढ़ते समय इस बात का ध्यान रखेंगे।
कलकत्ता
फरवरी 1988
सत्यजीत रे

शुरुआत

चलिए बातचीत शुरू करते हैं...
Penguin को Twitter.com@PenguinIndia पर फॉलो करें
हमारी सभी खबरों से अपडेट रहने के लिए Youtube.com/PenguinIndia पर जाएं। Facebook.com/PenguinIndia पर ‘PenguinBooks’ को लाइक करें
लेखक के बारे में और अधिक जानने के लिए और इस तरह की अन्य कहानियों के लिए Penguinbooksindia.com पर जाएं।

[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible], 7 [illegible], [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] - 122 002, [illegible], [illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible]., 375 [illegible], [illegible], [illegible] 10014, [illegible]
[illegible] ([illegible]), 90 [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] 700, [illegible], [illegible] M4P 2Y3, [illegible]
[illegible], 80 [illegible], [illegible] WC2R 0RL, [illegible]
[illegible], 25 [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] 2, [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible] [illegible])
[illegible] ([illegible]), 707 [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] 3008, [illegible]
[illegible] ([illegible]), 67 [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] 0632, [illegible] [illegible] [illegible]
([illegible] [illegible]) ([illegible] [illegible]), [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], 181 [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible], [illegible], [illegible] 2193, [illegible]
[illegible], [illegible] [illegible]: 80 [illegible], [illegible] WC2R 0RL, [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2000 [illegible]
www.penguinbooksindia.com
[illegible] 2015 [illegible]
[illegible] © [illegible] [illegible] 2000, 2004
[illegible] © [illegible] [illegible] 2000, 2004 [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
ISBN: 978-0-143-42503-8
[illegible] [illegible] [illegible] 2015 [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]-[illegible]: 978-9-352-14115-9
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [